☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भंडार

ग्यारवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान	पन्ना नं:
०१ मग्घर २०१८ बिक्रमी	जेठूवाल दरबार	जेठूवाल अमृतसर	००१
०२ मग्घर २०१८ बिक्रमी	जेठूवाल दरबार	जेठूवाल अमृतसर	०१६
०३ मग्घर २०१८ बिक्रमी	जेठूवाल दरबार	जेठूवाल अमृतसर	०२८
०६ मग्घर २०१८ बिक्रमी	जेठूवाल दरबार	जेठूवाल अमृतसर	०४०
०७ मग्घर २०१८ बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे नवित	जेठूवाल दरबार अमृतसर	०५५
०८ मग्घर २०१८ बिक्रमी	गुरबख़्श सिँघ दे नवित	जेठूवाल दरबार अमृतसर	०५६
०९ मग्घर २०१८ बिक्रमी	बूड़ सिँघ भगवान सिँघ	जेठूवाल दरबार अमृतसर	०६६
१० मग्घर २०१८ बिक्रमी		जेठूवाल दरबार अमृतसर	०७६
११ मग्घर २०१८ बिक्रमी	दीदार सिँघ संता सिँघ बाबूपुर	जेठूवाल दरबार	०८४
१२ मग्घर २०१८ बिक्रमी	हज़ारा सिँघ प्यारा सिँघ	जेठूवाल दरबार अमृतसर	०८८
१३ मग्घर २०१८ बिक्रमी	दलीप सिँघ बाबूपुरा	जेठूवाल दरबार अमृतसर	०९६
१४ मग्घर २०१८ बिक्रमी	दलीप सिँघ बाबूपुरा	जेठूवाल दरबार अमृतसर	११०
१५ मग्घर २०१८ बिक्रमी	भाग सिँघ बाबू पुरा	जेठूवाल दरबार अमृतसर	११६
१६ मग्घर २०१८ बिक्रमी	विरसा सिँघ धिरता सिँघ बाबूपुरा	जेठूवाल दरबार	११६
१७ मग्घर २०१८ बिक्रमी	करतार कौर बलवंत कौर बाबूपुरा	जेठूवाल दरबार	१२८
१८ मग्घर २०१८ बिक्रमी	बचन सिँघ बावा सिँघ बाबूपुरा	जेठूवाल दरबार	१३२
	आत्मा सिँघ दे नवित		१३५
१९ मग्घर २०१८ बिक्रमी	किशन सिँघ अल्लड़पिंडी दे नवित	जेठूवाल दरबार	१३६
२० मग्घर २०१८ बिक्रमी	रवेल कौर सवरन कौर बाबू पुरा	जेठूवाल दरबार	१४६
२१ मग्घर २०१८ बिक्रमी	बखशीस सिँघ बचन सिँघ अजीत सिँघ	जेठूवाल दरबार	१६०

1

११

1

११

२२	मग्घर	२०१८	बिक्रमी	छाहणी, महिंदर सिंघ दे नवित	जेठूवाल दरबार		१९६
२३	मग्घर	२०१८	बिक्रमी	सुरजन सिंघ लाल सिंघ दे नवित	जेठूवाल दरबार		१७७
२४	मग्घर	२०१८	बिक्रमी	कुंदन सिंघ प्रीतम सिंघ दे नवित	जेठूवाल दरबार		१८५
२५	मग्घर	२०१८	बिक्रमी	ठाकर सिंघ दे नवित	जेठूवाल दरबार		१९८
२६	मग्घर	२०१८	बिक्रमी	मनी राम हरबंस सिंघ दे नवित	जेठूवाल दरबार		२०१
२७	मग्घर	२०१८	बिक्रमी	सोहण सिंघ महिंदर सिंघ दे नवित	जेठूवाल दरबार		२०७
२८	मग्घर	२०१८	बिक्रमी	बखशीश सिंघ दे नवित दे नवित	जेठूवाल दरबार		२१३
२९	मग्घर	२०१८	बिक्रमी	गिरधारा सिंघ दे नवित	जेठूवाल दरबार	अमृतसर	२१६
०१	पोह	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२१७
०३	पोह	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२३९
२५	पोह	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२४५
२६	पोह	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२५०
२८	पोह	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२९६
०१	माघ	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३०३
०४	माघ	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३१४
०६	माघ	२०१८	बिक्रमी	करतार सिंघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	३२२
०७	माघ	२०१८	बिक्रमी	सुरजण सिंघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	३३१
०७	माघ	२०१८	बिक्रमी	जगीर सिंघ दे गृह	मैणीआं	अमृतसर	३३६
०७	माघ	२०१८	बिक्रमी		डडवां	अमृतसर	३३८
०८	माघ	२०१८	बिक्रमी	जगीर सिंघ दे गृह	सोहल	गुरदासपुर	३५२
०८	माघ	२०१८	बिक्रमी	करम सिंघ दे गृह	नयासाला	गुरदासपुर	३६०
०९	माघ	२०१८	बिक्रमी	महिंदर सिंघ गुरबचन सिंघ दे गृह	नयासाला		३७५

2
११

2
११

०६	माघ	२०१८	बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	कतोवाल	गुरदासपुर	३७६
१०	माघ	२०१८	बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	नवां पिंड	गुरदासपुर	३६०
१०	माघ	२०१८	बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	नवां पिंड	गुरदासपुर	३६५
१०	माघ	२०१८	बिक्रमी	दर्शन सिँघ दे गृह	महराज पुर	गुरदासपुर	३६६
११	माघ	२०१८	बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	सद्दा	गुरदासपुर	४०७
११	माघ	२०१८	बिक्रमी	बूड़ सिँघ दे गृह	वजीर पुर	गुरदासपुर	४१०
११	माघ	२०१८	बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	४१३
१२	माघ	२०१८	बिक्रमी	संत सिँघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	४२४
१२	माघ	२०१८	बिक्रमी	दीदार सिँघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	४२६
१२	माघ	२०१८	बिक्रमी	मनसा सिँघ मेला सिँघ	बाबू पुर	गुरदासपुर	४३५
१३	माघ	२०१८	बिक्रमी	किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी	गुरदासपुर	४४०
१३	माघ	२०१८	बिक्रमी	अच्छर सिँघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी	गुरदासपुर	४४७
१३	माघ	२०१८	बिक्रमी	बीबी दीपो दे गृह	दोस्त पुरा	गुरदासपुर	४४६
१३	माघ	२०१८	बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	शोन	गुरदासपुर	४५१
१४	माघ	२०१८	बिक्रमी	देव सिँघ दे गृह	शोन	गुरदासपुर	४५६
१४	माघ	२०१८	बिक्रमी	धिरता सिँघ दे गृह	कलानोर	गुरदासपुर	४६४
१५	माघ	२०१८	बिक्रमी	धिरता सिँघ दे गृह	कलानोर	गुरदासपुर	४७५
१५	माघ	२०१८	बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	हजात पुरा	गुरदासपुर	४८१
१५	माघ	२०१८	बिक्रमी	चेला सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४८४
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	अमरो देवी दे गृह	जम्मू	जम्मू	४६४
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	तेज भान दे गृह	सेख सर	जम्मू	४६७
१७	माघ	२०१८	बिक्रमी	तेज भान दे गृह	सेख सर	जम्मू	५०७

3 ११

१७	माघ	२०१८	बिक्रमी		सरदारी	जम्मू	५११
१७	माघ	२०१८	बिक्रमी		सेखसर	जम्मू	५१६
१७	माघ	२०१८	बिक्रमी	तेज भान दे गृह	सेख़सर	जम्मू	५१७
१८	माघ	२०१८	बिक्रमी	गूड़ राम दे गृह	शेखशर	जम्मू	५२२
१८	माघ	२०१८	बिक्रमी	सिव सिँघ दे गृह	सेख़सर	जम्मू	५२५
१८	माघ	२०१८	बिक्रमी	फरंगी राम दे गृह		जम्मू	५३०
१८	माघ	२०१८	बिक्रमी	कथा सिँघ दे गृह	मोइल	जम्मू	५३२
१८	माघ	२०१८	बिक्रमी	देवा सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५३८
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी		धंगाली	जम्मू	५४१
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	इन्दर राम दे गृह	धंगाली	जम्मू	५४५
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	वकील सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५४७
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५४८
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	ज्ञान चंद दे गृह	खैरोवाली	जम्मू	५५२
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	दौलत सिँघ दे गृह	नवांचक्क	जम्मू	५५५
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	पूरन चंद दे गृह	मलक कैप	जम्मू	५५६
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	मलक कैप	जम्मू	५५६
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	धरम चंद दे गृह	बाले वाला	जम्मू	५६१
१६	माघ	२०१८	बिक्रमी	गुरदित सिँघ संसार सिँघ	छंब	जम्मू	५६२
२०	माघ	२०१८	बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	छंब	जम्मू	५६६
२०	माघ	२०१८	बिक्रमी	राम कौर दे गृह	छंब	जम्मू	५७२
२०	माघ	२०१८	बिक्रमी	तारा सिँघ दे गृह	दीवान गड़	जम्मू	५७७
२१	माघ	२०१८	बिक्रमी	बाबू राम दे गृह	हंसा	जम्मू	५८५

4
११

4
११

२१	माघ	२०१८	बिक्रमी	देवी सिँघ दे गृह	मघो वाली	जम्मू	५८६
२१	माघ	२०१८	बिक्रमी	राजिंदर सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	५६३
२१	माघ	२०१८	बिक्रमी	सरदार सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	५६६
२१	माघ	२०१८	बिक्रमी	सेवा सिँघ दे गृह	कोटली साह	दौला जम्मू	६००
२१	माघ	२०१८	बिक्रमी	अंगरेज सिँघ दे गृह	सतवारी	जम्मू	६०३
२२	माघ	२०१८	बिक्रमी	मेला राम प्रकाश चंद	जम्मू	जम्मू	६०७
०१	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६११
०२	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६२६
११	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६३८
१२	फग्गण	२०१८	बिक्रमी		इटारसी	मध्ध प्रदेस	६५०
१३	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	हरदित सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६६७
१३	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	सुरिदंर सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६७१
१४	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६८१
१४	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	टोपन राम दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६८६
१४	फग्गण	२०१८	बिक्रमी		इटारसी	मध्ध प्रदेस	६८८
१४	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्ध प्रदेस	६६०
१४	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	भुपाल	मध्ध प्रदेस	६६५
१६	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	मंगल सिँघ दे गृह	भुपाल	मध्ध प्रदेस	७०७
१७	फग्गण	२०१८	बिक्रमी		कानपुर	उतर प्रदेस	७१०
१७	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	अवतार सिँघ दे गृह	कानपुर	उतर प्रदेस	७१०
१८	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	दे गृह शाशत्री नगर	कानपुर	उतर प्रदेस	७१८
१८	फग्गण	२०१८	बिक्रमी	गुरदित सिँघ दे गृह	कानपुर	उतर प्रदेस	७२५

5
११

१८ फग्गण २०१८ बिक्रमी सरधा सिँघ दे गृह कानपुर उतर प्रदेस ७२७

१८ फग्गण २०१८ बिक्रमी दे गृह शाशत्री नगर कानपुर उतर प्रदेस ७२८

१६ फग्गण २०१८ बिक्रमी तारू सिँघ दे गृह कोरा पुर फारम लखीमपुर ७३६

२० फग्गण २०१८ बिक्रमी तारू सिँघ दे गृह कोरा पुर फारम लखीमपुर ७४६

०१ चेत २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ७६७

४ चेत २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू अमृतसर ८११

५ चेत २०१६ सुरैण सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू अमृतसर ८१६

५ चेत २०१६ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू अमृतसर ८२१

५ चेत २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह टांगरा अमृतसर ८२३

५ चेत २०१६ बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह भलाईपुर डोगरां अमृतसर ८३४

६ चेत २०१६ बिक्रमी ऊधम सिँघ दे गृह जलालाबाद अमृतसर ८३६

६ चेत २०१६ बिक्रमी धरम बीर दे गृह जलालाबाद अमृतसर ८४१

६ चेत २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह रामपुर अमृतसर ८४३

७ चेत २०१६ बिक्रमी उतम सिँघ दे गृह वैरोवाल अमृतसर ८५०

७ चेत २०१६ बिक्रमी सरमुख सिँघ गुरमुख सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर ८५७

८ चेत २०१६ बिक्रमी हरी सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर ८७१

८ चेत २०१६ बिक्रमी रूड़ सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर ८७४

८ चेत २०१६ बिक्रमी सुखदेव सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर ८७७

८ चेत २०१६ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह कंग अमृतसर ८८२

६ चेत २०१६ बिक्रमी कुंदन सिँघ दे गृह माल चक्क अमृतसर ८८६

६ चेत २०१६ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद अमृतसर ८६५

१० चेत २०१६ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह नौरंगाबाद अमृतसर ६०३

6
११

१०	चेत	२०१६	बिक्रमी	दारा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	६०६
१०	चेत	२०१६	बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुघे	अमृतसर	६०६
१०	चेत	२०१६	बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	उसमां	अमृतसर	६११
११	चेत	२०१६	बिक्रमी	हरि संगत	चंबल	अमृतसर	६२५
११	चेत	२०१६	बिक्रमी	तेजा सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६३०
१२	चेत	२०१६	बिक्रमी	निरंजण सिँघ करतार सिँघ	चंबल	अमृतसर	६४०
१२	चेत	२०१६	बिक्रमी	चंनण सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६४१
१२	चेत	२०१६	बिक्रमी	केशोराम दे गृह	जंडोके सरहाली	अमृतसर	६४२
१२	चेत	२०१६	बिक्रमी	मक्खण सिँघ दे गृह	जोड़े	अमृतसर	६४७
१३	चेत	२०१६	बिक्रमी	बली सिँघ दे गृह	कैरों	अमृतसर	६५६
१३	चेत	२०१६	बिक्रमी	गंडा सिँघ दे गृह	दराज़के	अमृतसर	६६६
१४	चेत	२०१६	बिक्रमी	समुंद सिँघ दे गृह	माड़ी मेघा	अमृतसर	६७२
१४	चेत	२०१६	बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	नारला	अमृतसर	६८०
१५	चेत	२०१६	बिक्रमी	मनी सिँघ दे गृह	सिधवां	अमृतसर	६८६
१५	चेत	२०१६	बिक्रमी	मोता सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	६६४
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	संगारा सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१००७
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	बीबी पारो दे गृह	खालड़ा	अमृतसर	६०१०
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	सुरजण सिँघ दे गृह	भुच्चर	अमृतसर	६०१४
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	अरजण सिँघ दे गृह	भरोभाल	अमृतसर	१०१८
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	१०३२
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	मंगल सिँघ दरबारा सिँघ	सोहल	अमृतसर	१०३६
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	१०४२

१७ चेत २०१६ बिक्रमी	जगीर सिँघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०४५
१७ चेत २०१६ बिक्रमी	गुरबखश सिँघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०४७
१७ चेत २०१६ बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०५०
१७ चेत २०१६ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०५२
१८ चेत २०१६ बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	झुबाल	अमृतसर	१०५६
१८ चेत २०१६ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	भोजीआं	अमृतसर	१०६६
२० चेत २०१६ बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	डल्ले वाल	अमृतसर	१०७६
२० चेत २०१६ बिक्रमी	हरबंस सिँघ दे गृह	ठीकरा छंना	करनाल	१०८१
२१ चेत २०१६ बिक्रमी	सौदागर सिँघ दे गृह	ठीकरा छंना	करनाल	१०८६
२१ चेत २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	गड़ी लांगरी	करनाल	१०८८
२१ चेत २०१६ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	कौमी फारम	करनाल	१०९२
२२ चेत २०१६ बिक्रमी	चानण सिँघ दे गृह	हंडोला	करनाल	११००
२२ चेत २०१६ बिक्रमी	करनैल सिँघ दे गृह	खरका		११०५

8
११

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

★ पहली मग्घर २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार ★

सचखण्ड सोहे सच दुआरा, सचखण्ड निवासी आप सुहाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। महल अटल उच्च मनारा, सोभावन्त आप सुहाईआ। इक्क इकल्ला कर पसारा, निरगुण आपणा खेल वखाईआ। आदि पुरख आदी धारा, आपणी आप प्रगटाईआ। जुगादि रूप अगम्म अपारा, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाईआ। सचखण्ड सोभनीक, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। परवरदिगार लाशरीक, हरि पुरख निरँजण डेरा लाइंदा। एकँकारा बैठा रहे इक्क अतीत, आदि निरँजण नूर प्रगटाइंदा। अबिनाशी करता ठांडा सीत, श्री भगवान सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे आपणी रीत, सच दुआरे आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आपणी महिमा जाणे अगणत, बेअन्त वड वड्याईआ। आपणा खेल करे आदि अन्त, अन्त आदि आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप प्रगटाईआ। सच प्रगटाया सचखण्ड, सच साचा दया कमाइंदा। आप रखाए आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच मिलाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, नूर नुराना डगमगाइंदा। नाम निधाना अगम्मी छन्द, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। दाता दानी सूरा सरबंग, शाह पातशाह वेस वटाइंदा। आपे होए सदा बख्शंद, मेहरवान आपणा नाउँ धराइंदा। आपे जाणे आपणा पन्ध, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप वड्याइंदा। सच महल्ला साचा घर, हरि साचा आप सुहाईआ। निरगुण निरवैर खोल्ह दर, दर दरवाज़ा आप प्रगटाईआ। निरभउ हो अंदर वड़, भय अवर ना कोए रखाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। शाहो भूप राजन राज बण, तख्त निवासी वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। सचखण्ड निवासी खेल अवल्ला, एकँकारा आप कराइंदा। आदि जुगादि वसणहारा सच महल्ला, दर घर साचे सोभा पाइंदा। निराकारा जोत नूर नूर विच रल्ला, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। आपे फड़े आपणा पल्ला, आपणा संग निभाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, शाहो भूप डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सोहया, सुहाए आप करतार। आपणे जेहा आपे होया, दूसर करे ना कोए विचार। आदि जुगादि नवां नरोआ, मरे ना जम्मे विच संसार। सचखण्ड दुआरे आपणा आपे लै के आए ढोया, वस्त अमोलक एकँकार। एका बीज आपे बोया, आपे पुरख आपे नार, आपणी सेज आपे सोया, आपे बणे कन्त भतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दीपक आपे होया, आपे होए उज्यार। सचखण्ड होए उजाला, निरगुण आपणी जोत जगाईआ। आपे होए सदा प्रितपाला, प्रितपालक बेपरवाहीआ। आदि जुगादी बण रखवाला, दर घर साचे सेव कमाईआ। आपे जाणे आपणा राह सुखाला, आपणा मार्ग आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहाईआ। सचखण्ड सुहाए श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। निरगुण नूर जोत महान, पुरख अकाला डगमगाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणी धार वखाइंदा। निरगुण सरगुण साची कार, किरती आपणी किरत कमाइंदा। त्रै त्रै मेला अपर अपार, पंचम चेला रूप वटाइंदा। सज्जण सुहेला ठांडे दरबार, साची घाड़त घड़त घड़ाइंदा। भाण्डा घड़े अपर अपार, नाम थथवा हथ्थ रखाइंदा। चक्क गेड़े एका वार, दूजी वार ना कोए भुवाइंदा। आपणी किरपा आपे धार, आप आपणा बन्धन पाइंदा। आपे अंदर आपे बाहर, गुपत ज़ाहर रूप वटाइंदा। आपे मात पित करे प्यार, सुत दुलार आप अख्वाइंदा। आपे मंगे बण भिखार, आपे वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आपे शाहो भूप बणे सिक्दार, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे वेखे विगसे करे विचार, आपे आपणा मुख छुपाइंदा। आपे सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, सच सिँघासण आसण लाइंदा। आपे जाणे आपणी कार, आदि जुगादी सेव कमाइंदा। आपे आपणा सुत अनादी कर त्यार, एका हुक्म वरताइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा पसार, साची धार आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाइंदा। साचा राह पुरख अबिनाश, आपणा आप चलाईआ। सुत दुलारे दे धरवास, धीरज धीर रखाईआ। आदि जुगादि देवां तेरा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। जुग जुग चलावां राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। इक्क सुणावां आपणी गाथ, बिन अक्खरां करां पढ़ाईआ। इक्क वखावां आपणी ज़ात, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। इक्क वखावां आपणा खात, अतोट अतुट भराईआ। इक्क वखावां आपणा हाट, साचे हट्ट इक्क

वड्याईआ। इक्क वखावां आपणी खाट, तेरी सेजा इक्क सुहाईआ। तेरी पुछां सदा वात, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। तूं मेरा सज्जण तूं मेरा साक, तूं पिता पूत तूं ही मेरी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। सुत दुलारे चढ़या चा, शब्दी शब्द खुशी मनाइंदा। पुरख अबिनाशी बणया मलाह, साचा बेड़ा आप उठाइंदा। आपणे मार्ग देवे पा, औझड़ राह ना कोए रखाइंदा। आपणा नाउँ दए धरा, एकँकारा आपे गाइंदा। आपणी देवे सच सलाह, सलाहगीर आप हो जाइंदा। मैनूं देवे मेरा थाँ, मेरी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सुत दुलारे वंडी वंड, सतिगुर पूरा आप वंडाईआ। सो पुरख निरँजण साहिब बख्शंद, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। आप बणाए आपणी बणत, घर घर विच लए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए समझाईआ। साचा घर तेरा पसारा, हरि पुरख निरँजण आप जणाया। सचखण्ड वसे आप निरँकारा, थिर घर तेरा दुआरा सुहाया। आदि जुगादि रहे दीदारा, चरन कँवल मिले शरनाया। जुगा जुगन्तर दए हुलारा, आप आपणा मेल मिलाया। दो जहान करे वणजारा, एका हट्ट खुल्हाया। अन्तर रखे इक्क भण्डारा, दिस किसे ना आया। तेरा लहिणा अगम्म अपारा, अलख अगोचर आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाया। आपणा भेव हरि जू खोल्ह, शब्दी शब्द जणाइंदा। तेरा मेरा इक्को तोल, तोलणहारा इक्क हो आइंदा। तेरा मेरा पूरा कौल, कीता कौल ना कदे भुलाइंदा। तेरे अन्तर जावां मौल, आप आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सलाह आपणी आप बणाइंदा। आपे सलाह आपे सलाहकार, आप आपणा मता पकाईआ। आपे जाणे आपणी कार, करता पुरख आप कमाईआ। आपे घर आपे घर बाहर, आपे सचखण्ड वेखे चाँईं चाँईंआ। आपे थिर घर खोल्ह किवाड़, सुत दुलारा दए बहाईआ। आपे वस्त भरे भण्डार, अमोलक झोली पाईआ। आपे जननी जन बण निरँकार, रूप अनूप वेस वटाईआ। दाई दाया सिरजणहार, दर घर साचे सेव कमाईआ। अंस बंस कर त्यार, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। निरगुण अंदर निरगुण रख, निरगुण खेल कराया। निरगुण अन्तर हो प्रतख, आपणा नाउँ धराया। आपणा नाउँ विश्व रख, साची सेव कमाया। आपणा कर आपे पक्ख, आपणा दर वड्याआ। आपणा पर्दा आपे ढक, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपे बण कमलापति, कँवल नैण आप मटकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाया। आपे विश्व विष्न धार, ब्रह्म आपणा रूप जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसार, आपणी खेल खलाईआ। आपे शंकर दए आधार,

संसा रोग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, शब्दी सुत देवे वर, तिन्नां एका तन्द बंधाईआ। एका तन्द तणया ताणा, पुरख अबिनाशी खेल खलाइंदा। आपे जाणे आपणा भाणा, भेव कोए ना पाइंदा। आपणे हथ्थ रख्या आवण जाणा, दिस किसे ना आइंदा। आप सुणाए आपणा गाणा, विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। आपणा भेव खुल्हाए नर, हरि नरायण वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, वर दाता झोली पाईआ। जिस ने घाड़न ल्या घड़्ह, घड़्हन भन्नणहार अख्वाईआ। तिस साहिब शरन जाणा पड़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आप बंधाए आपणा लड़, एका गंढु पुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह समझाईआ। साचा राह हरि जू दस्से, निरगुण निरगुण आप समझाइंदा। तख्त निवासी तख्त बह बह हस्से, आपणी खुशी मनाइंदा। तिन्नां अन्तर आपे वसे, आपणी जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। खोल्हे भेव पुरख अगम्मा, अगम्म वड्डी वड्याईआ। विष्नूं तेरा इक्को मंमां, सो पुरख निरँजण दए चुंघाईआ। ना कोई जाणे उच्चा लम्मा, गिणती गणत विच ना आईआ। ना घड़या ना किसे भन्ना, ना कोई नेत्र वेखण पाईआ। जिस साहिब मैनूं जणा, बणया पिता माईआ। तिस सीर एका घल्ला, अमृत नाम वड्याईआ। बिन रसना जिह्वा पी पी पला, सांतक सति रखाईआ। बिन लड़ फड़ाया पल्ला, फड़या पल्ला छुट्ट ना जाईआ। जिस आपणे प्रेम कीता झल्ला, एका झलक नूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव आपे दस्स, हरि जू दया कमाइंदा। निरगुण रूप अंदर वस, आप आपणी कल धराइंदा। एका नूर कर प्रकाश, जोती जोत डगमगाइंदा। एका भोग इक्क बलास, एका रसया रस वखाइंदा। एका पूरी करे आस, आस आशा नाल मिलाइंदा। एका दस्से साचा साथ, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, आपणा नाम जपाइंदा। विष्नूं तेरा साचा सीर, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। मेरा रूप तेरी तकसीर, मेरी तदबीर नज़र ना आईआ। मेरा प्रेम तेरा जंज़ीर, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मेरा घर तेरी चोटी अखीर, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाईआ। विष्नूं मंगे दान, प्रभ अग्गे झोली डाहया। तूं किरपा करी भगवान, मेरा रूप प्रगटाया। तेरे चरन धूढ़ करां अशनान, साचा नहावण नहाया। तूं आदि जुगादि रखणा मेरा माण, मैं तेरी ओट तकाया। मैं सुणया तेरा धुर फ़रमाण, नाम संदेशा जो घलाया। तेरा रूप अनूप महान, तेरी महिमा कथन विच ना आया। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, साचे तख्त सोभा

पाया। तूं भूपत भूप राज राजान, बेअन्त तेरी वड्याआ। कोटन कोटि विष्नूं तैनूं गाण, तेरे अग्गे सीस झुकाया। धन्न भाग तूं दिता दान, मैं आपणी झोली रिहा भराया। कवण वेला अन्तिम मिलां आण, दर तेरे सोभा पाया। मेरी करी आप पहचान, तूं पहचान विच कदे ना आया। मैं नित गावां तेरा गान, गा गा आपणा शुकर मनाया। मेरी सेवा दस्स श्री भगवान, बण बण सेवक सेव कमाया। तेरी मन्नदा रहां आण, तेरा हुक्म आपणे सिर टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाया। साचा वर श्री भगवाना, एका वार जणाईआ। विष्नूं तेरा खेल महाना, ब्रह्मा शंकर करे कुड़माईआ। तिन्नां देवे सच्चा दाना, त्रैगुण माया झोली पाईआ। लख चुरासी बन्ने गानां, साचा सगन मनाईआ। पंज तत्त करे प्रधाना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाल वखाईआ। रवि ससि करे प्रकाश आपणे भाना, नूर नूर नूर प्रगटाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड वंडाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। शब्द अगम्मी देवे धुर फ़रमाणा, नाद अनाद वजाईआ। जुग चौकड़ी खेल खलाना, आपणी वंड वंडाईआ। ब्रह्मा वेता इक्क पढ़ाना, निअक्खर दए जणाईआ। चारे वेदां गाए गाना, चारे युग समझाईआ। चारे बाणी गाए तराना, चारे खाणी दए वखाईआ। चार वरन रखे आणा, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेल वेख वखाईआ। तेरा खेल निरगुण सरगुण रंग, सो पुरख निरँजण आप जणाया। लख चुरासी वज्जे मृदंग, घट घट मृदंगा आप उठाया। जीव जंत वंडी वंड, वंडणहारा बेपरवाहया। करे खेल सूरा सरबंग, निरभउ आपणी धार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह दए समझाया। जुग चौकड़ी तेरा राह, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। लख चुरासी घाड़न लए घड़ा, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। अन्तिम भन्ने ठीकर दए बणा, ठीकर ख़ाकी ख़ाक समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। युग चौकड़ी कीता परवान, विष्नूं सीस झुकाया। कवण रूप मिलें भगवान, लोकमात फेरा पाया। कवण वस्त देवें दान, लख चुरासी आप वरताया। कवण घर बणें काहन, निरगुण आपणा रूप धराया। कवण वेला लएं पछाण, विछड़े मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भिक्खक झोली रिहा वखाया। भिक्खक देवे दात, वड्डी वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी खेल तमाश, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पावे रास, युग चौकड़ी वंड वंडाईआ। जो उपजे सो होए विनास, थिर कोए रहिण ना पाईआ। आपणा नूर करे प्रकाश, गुर अवतार मात प्रगटाईआ। पंज तत्त देवे साथ, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। एका खोल्हे नाम हाट, बण वणजारा सेव कमाईआ। करे खेल पुरख समराथ,

महिमा कथ आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। साची देवे भगतां वस्त, विश्व आपणी आप प्रगटाईआ। ना कोई जाणे कीट हस्त, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। लहिणा देण चुकाए दस्त बदस्त, लोकमात कर रुशनाईआ। हरिजन रखे आपणे नाम मस्त, मस्ती एका नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रूप वटाईआ। युग युग आपणा रूप धर, आपणी दया कमाईआ। सन्त सुहेले साचे वर, आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुखां चुकाए झूठा डर, माया ममता मोह तुड़ाईआ। गुरसिखां फड़ाए एका लड़, एका घर वखाईआ। युग चौकड़ी जायण हर, लोकमात रहिण ना पाईआ। सेवा करन गुर अवतार, जुग जुग सेव कमाईआ। भगत भगवन्त मंगण दर, दर दर सीस झुकाईआ। सन्त रोवण ज़ारो ज़ार, बिन डिठयां जीवण मुक्त ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाईआ। नव नौ चार जाए बीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहिण ना पाईआ। करे खेल इक्क अतीत, त्रैगुण अतीता सच्चा माहीआ। लख चुरासी करे बिपरीत, बिपर रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम चौकड़ आपणा भेव जणाईआ। अन्तिम चौकड़ खेल न्यारा, निरगुण आप कराया। सेवा ला तेई अवतारा, गुर दस मेल मिलाया। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, एका नाआरा हक़ सुणाया। भगत भगवन्त बोल जैकारा, एका ओट तकाया। लोकमात खोल्ह दुआरा, आपणा नाउं समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए जणाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जाए लँघ, कलयुग हरि जी आप जणाइंदा। गुर अवतार मंगण मंग, प्रभ अग्गे सर्ब झोली डाहइंदा। भगत भगवन्त लाए अंग, अंगीकार आप हो जाइंदा। सन्त मंगण साचा संग, सगला संग ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी होए नंग, उत्ते पड़दा कोए ना पाइंदा। जूठ झूठ भरे विच वरभण्ड, भंडी मगर मगर आप कराइंदा। हरि का नाउँ ना सिमरे कोए बत्ती दन्द, रसना जेहवा ना कोए मिलाइंदा। आपणा पूरा कोए ना करे पन्ध, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। वरन बरन पाए फंद, शरअ शरीअत ना कोए तुड़ाइंदा। ना कोई टुट्टी देवे गंढु, टुट्टी गंढुणहार नज़र ना आइंदा। ना कोए सहाई सूरज चन्द, विष्न ब्रह्मा शिव सिर ना कोए उठाइंदा। करोड़ तेतीसा दिस ना आए भागां मंद, इष्ट देव ना कोए जणाइंदा। गुर अवतार देवण कंड, नूरी मुखड़ा ना कोए वखाइंदा। कलयुग कूड़े चढ़े घमंड, आपणा बल आप धराइंदा। दरोही फिरे विच नव खण्ड, एका खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। साधां सन्तां आत्म करे रंड, हरि जू कन्त ना कोए हंढाइंदा। कोई राम ना खिच्चे कमंद, कृष्ना रथ ना कोए चलाइंदा। ना कोई मुहम्मद देवे संग, मूसा मुख ना कोए वखाइंदा। नानक निरगुण ना चाढ़े कोई चन्द, गोबिन्द

अंग ना कोए लगाइंदा। किसे हथ्थ ना आए परमानंद, निजानंद ना कोए समाइंदा। रसना जिह्वा पायण डण्ड, उच्ची कूक कूक अलाइंदा। त्रैगुण माया लग्गे फंद, फांदी बण ना कोए छुडाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी जीव जंत नार दुहागण होए रंड, कन्त कन्तूहल नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप समझाइंदा। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि विष्नूं करे जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग दा पन्ध मुकाउणा, आप आपणा फेरा पाईआ। चार युग दा हिसाब मकाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल रलाईआ। गुर अवतारां फड़ उठाउणा, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। भगत भगवन्त दर रखाउणा, दर्दी दर्द वंडाईआ। साचे सन्त गले लगाउणा, बेअन्त दया कमाईआ। आपणा मंत आप जपाउणा, आपे नाम आप सहाईआ। आपणा कन्त रूप आप वखाउणा, आपे नार लए प्रनाईआ। आपणी रुत्त बसन्त आप सुहाउणा, पत्त डाली आप महकाईआ। निरगुण रूप जामा पाउणा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। गुर अवतारां मिल मिल सब ने गाउणा, लख लख सुकर मनाईआ। साडी पूरी करे भावनी भाउणा, जो आए आस लगाईआ। चार युग जिस ताईं ताउणा, त्रैगुण अग्नी अग्ग लगाईआ। दिता हुक्म उणंजा पाउणा, पाउणा विच समाईआ। लेखा जाणे अवणा गवणा, हरि कन्त आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

चार युग दा लहिणा वेख वखाईआ। विष्नूं चार युग दा वेखणा लहिणा, कलयुग अन्त खेल रचाया। मेरा मन्नणा इक्को कहिणा, भुल्ल कदे ना जाया। बिन मेरे किसे ना रहिणा, जो आया सो भन्न वखाया। आदि जुगादि युग युग मैं इक्को देणा, देवणहार होर ना कोए रखाया। जिस दा भाणा सब ने सहिणा, आपणा भाणा लए मनाया। जिस दुआरे मेरे बहणा, तिस मार्ग दए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण बिध लए मिलाया। पुरख अबिनाशी दस्से हाल, आपणा हाल जणाईआ। करां खेल काल महांकाल, महांकाल दयां वड्याईआ। लख चुरासी बण दलाल, काया धर्मसाल मुख छुपाईआ। जुग जुग गुरमुख वेखां साचे लाल, हरिभगत लवां उठाईआ। सदा सुहेला बण करां प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। फड़ फड़ गले लगावां कंगाल, कंगालों शाह बणाईआ। जन भगतां करां हल्ल सवाल, लेखा लिखां बिन कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण भगत तेरे दुआरे आईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका हुक्म सुणाया। विष्नूं उठ ध्यान लगा, ध्यान ध्यान नाल मिलाया। जिस तेरी बणत लई बणा, अन्त लेखा दए मुकाया। आपणा गुण दए समझा, अवगुण दिस किसे ना आया। साचे भगत लए प्रगटा, आप आपणी भगती लाया।

जगत विद्या दए भुला, आपणी विद्या आप पढ़ाया। आपे दर्शन देवे आ, दूजा इष्ट ना कोए रखाया। पहलों बख्शे सर्ब गुनाह, फेर आपणे गले लगाया। जे कोई दूजा पुच्छे मेरा भगत अग्गों करे ना, हरि जू वंड ना किसे वंडाया। जे प्रभ मिलणा चरनी डिगो आ, चरन दुआरा इक्क समझाया। जुग जुग निथाव्याँ देवे थाँ, निमाणयां होए सहाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाया। बिन बिरछां देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जुग जुग स्नेहुड़ा देवे सच्चा शहिनशाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त दए समझाया। चार युग खेल अपारा, भगवन भगत दए वड्याईआ। भगत मंगण इक्क दुआरा, एका ओट तकाईआ। एका वसे धाम न्यारा, अवल्लड़ा घर आप सुहाईआ। एका वेखे वेखणहारा, जिस जन बूझ बुझाईआ। भगतन पन्ध मुकायण विच संसारा, थिर घर डेरा लाईआ। थिर घर मिले शब्द सहारा, शब्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। शब्दी अंदर भगतन भेत, अभेदी भेद रखाइंदा। आपे वेखे नेतन नेत, नित नित वेस वटाइंदा। आदि जुगादी चेतन चेत, अबिनाशी अचुत्त खेल खलाइंदा। कर किरपा इक्को वार करया सच्चा हेत, आप आपणा हित समझाइंदा। कबीर जुलाहा नेत्र लए पेख, सचखण्ड दुआरे चरनां उपर सीस टिकाइंदा। वज्जी वधाई वसया देस, परदेस राह तजाइंदा। नज़री आया इक्क नरेश, सीस आपणे ताज टिकाइंदा। ना कोई उथे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, ना कोई झोली अगे डाहइंदा। ना कोई रूप ना कोई रेख, इक्को नूर डगमगाइंदा। नानक दिसया बिन खूंडी भूरी खेस, हथ्थ सतार ना कोए वजाइंदा। बिन रसना करे आदेस आदेस, निरँकार निरँकार निरँकार ढोला गाइंदा। ओथे चले ना कोई पेश, कबीरा निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। मैं तेरा नूर ना सकां वेख, बिन तेरी मेहर मेरा नैण कम्म किसे ना आइंदा। आ प्रभ प्रीतम कन्त सुहेले आपणी नार वेख, लोकमात तुध बिन मेरा जोबन ना कोए हंढाइंदा। मैं तेरे वैराग बण दुहागण खुल्ले छड्डे केस, मेरी मींढी सुहाग ना कोए गुंदाइंदा। मैं थल्ले तक्क के आया विष्नूं सुत्ता उत्ते बाशक सेज, सांगों पांग सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा एका सोभा पाइंदा। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, आपणी दया कमाईआ। सुण सज्जण मीत मेरे छोटे लाल, लालन लाल वंड वंडाईआ। मदन मोहन मूर्ति गोपाल, कपाल ना कोए वड्याईआ। मेरा मन्दिर इक्क धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क समझाईआ। जिथे पोह ना सके काल, महांकाल नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, भगत भगवान रिहा समझाईआ। कबीर तेरी पूरी आशा, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। इक्को एक इक्क भरवासा, एका घर सुहाइंदा। जुग जुग बणया रहे दासी दासा, निरगुण सरगुण सेव

कमाइंदा। लख चुरासी करे हासा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। दर दर फिरे फड़ फड़ कासा, तन अल्फी इक्क हंढाइंदा। आदि जुगादि ना कदे विनाशा, पुरख अबिनाशा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम आवे हार पासा, जित्त कोए ना वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। कलयुग वेला आए अन्त, अन्त आप समझाईआ। प्रगट होए श्री भगवन्त, लोकमात करे रुशनाईआ। आप जणाए आपणा मंत, इक्को इक्क नाम वड्याईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, साहिब लए मिलाईआ। आपे होए पती पतिवन्त, पति आपणी आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे लए मिलाईआ। कबीर अग्गों रिहा पुच्छ, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। सानूं दरस दिता लुक लुक, आपणा भेव ना किसे खुल्हाया। तेरे फ़राक अंदर गए सुक्क, ख़ाकी तत्त ख़ाक मिलाया। तेरे वैराग अंदर गए लुट्ट, आप आपणा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण बिध कलयुग अन्त लएं कराया। कलयुग अन्तिम अवल्लड़ा वेस, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। दस्स के जाए गुर दस्मेश, आपणा डंक वजाईआ। प्रगट होए नर नरेश, निहकलंक नाउँ रखाईआ। सम्बल वसे साचे देस, भेव कोए ना पाईआ। गुरमुख विरला लए वेख, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। लख चुरासी सुंञा होए खेत, गुर पीर अवतार ना कोए सहाईआ। अर्जन सीस पुवाए तत्ती रेत, रेता तत्ती सृष्ट सबाई दए तपाईआ। तेग़ बहादर आपणा सीस लाए आपणे हेत, हित्त आपणा आप जणाईआ। बाल निधाने झूजन खेत, धरत मात मिले वड्याईआ। गोबिन्द आपणे नेत्र पेख, कलयुग लेख दए समझाईआ। अन्तिम आए नर नरेश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा दए चुकाईआ। किस बिध लहिणा चुकाए भगवान, आपणा मार्ग देणा दस्स। किस बिध झुलाए निशान, लोकमात हो प्रगट। किस बिध देवे दान, अन्तर आत्म जोत लट लट। किस बिध करे पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा भेव दस्स। सचखण्ड दुआर दया कमा, श्री भगवान दया कमाईआ। बिन कबरों खेड़ा दिता समझा, समझ समझ नाल मिलाईआ। रमज़ नाल रमज़ रला, रहिमत रहीम कमाईआ। एका हमज़ा रूप आपणा दिता वखा, अल्फ़ ये कर सफाईआ। अरज़ तूल पन्ध मुका, माकूल शरअ जणाईआ। अस्थूल डेरा आपे ढाह, निराकार मिले वड्याईआ। साकार मेला सहिज सुभा, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। कागद कलम ना रखे कोई शाह, अंक अंक ना कोए मिलाईआ। दुआर बंक छप्पर छन्न ना लए कोए छुहा, मन्दिर मस्जिद ना कोए वखाईआ। बिन थाउँ साचे धाम लए बहा, ज़िमी असमान नज़र ना आईआ। बिन सूरज चन्न करे रुशना, बिन तारयां मंडल आप सुहाईआ। बिन पिता मात

गोद लए बहा, बिन मंमां सीर प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क कबीर दए समझाईआ। कबीर इक्क सुण गल्ल, हरि जू आख सुणाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग करदा रिहा वल छल, मेरा भेव किसे ना पाया। भगतां दर्शन दे के आया घड़ी पल, छिन्न भंगर आपणा खेल कराया। सच सिँघासण बैठा मल्ल, सच सिँघासण इक्क सुहाया। गुर अवतारां शब्द सुनेहड़ा घल्ल, आपणा हुक्म मनाया। अन्तिम सुट्टया आपणे खाते डूँग्घी डल्ल, आप आपणे विच छुपाया। जिस नूं कहिन्दे अबचल, अबचल आपणा नगर बणाया। करे खेल सूरा प्रबल, प्रबल आपणी जोत जगाया। आपे लाया आपणा फल, सन्त भगत भगवान मात महकाया। अन्तिम आपणे पाए आपे डल्ल, आपणी खारी लए उठाया। कोई कहे जोती गया रल, कोई कहे सचखण्ड डेरा लाया। पुरख अबिनाशी कहे मैं चरनां हेठां रिहा मिल, चरन सहारा इक्क बणाया। दरस देवां घड़ी घड़ी पल पल, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए समझाया। जुग चौकड़ी सचखण्ड, हरि जू आसण लाइंदा। आपे कर कर आपणी वंड, लोकमात दरस दिखाइंदा। गुरमुख विरला चढ़े चन्द, जिस जन आपणी जोत जगाइंदा। कोटन कोटि बैठे रहे मंग, गिणती गणत ना कोए गणाइंदा। इक्क कबीर वेख्या अंदर लँघ, सच सिँघासण हरि जू सोभा पाइंदा। ना कोई तार सतार वज्जे मृदंग, ना कोई गीत ढोला गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। पुरख अबिनाशी दस्सया भेव, अभेद आप खुल्हाया। जिस दी करदे रहे सेव, सो सेवक रूप धराया। आदि जुगादि सदा नेहकेव, निहचल धाम डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वर आपणा आप समझाया। सुण कबीर कर ध्यान, चार कुण्ट वखाईआ। मेरा मन्दिर सच मकान, मकबरा कोए नज़र ना आईआ। कोटन कोटि मुलां शेख़ मुसइक पीर पैग़म्बर एस खाते डिग्गे आण, निशान सके ना कोए झुलाईआ। कोटन कोटि राम करन प्रणाम, कोटन कोटि कृष्न ध्यान लगाईआ। कोटन कोटि भगत पी पी जाम, अमृत रस रहे पाईआ। जिस किरपा करे आप भगवान, तिस आपणे घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दुआरा दए वखाईआ। कबीर वेख्या हरि दुआर, दुआरा हरि सुहाया। उतर पूरब पच्छिम होए उज्यार, दक्खण नज़र कोए ना आया। करया खेल आप करतार, आपणा भेव आप छुपाया। दोए जोड़ करे निमस्कार, कबीरा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वखाल सच्चा घर, चौथा दर नज़र ना आया । चौथा दर ना प्या दिस, चारों कुण्ट नज़र उठाईआ। मैं बण के आया तेरा सिख, तेरी सिख्या मोहे भाईआ। तूं मेरा लेखा दिता लिख, बिन लिख्या कलम शाहीआ। आप आपणा दरस भेत, क्यों बैठा मुख भुवाईआ।

कर सच्चा इक्को हेत, मैं ढह प्या शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। सुण कबीर खेल न्यारा, हरि जू आप जणाइंदा। दक्खण दिशा अगम्म अपारा, आपणा दर सुहाइंदा। अंदर लुकाए गुर अवतारा, आपणी साया हेठ रखाइंदा। भगत बहाए एस किनारा, साची वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप जणाइंदा। दक्खण दिशा गुर अवतार, भगतां नाल मिलाईआ। जिउँ भावे तिउँ करे प्यार, आप आपणी खेल खलाईआ। कोटन कोटि कबीर एहदे विच छड्डे वाड़, इक्क दूजे नूं नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दक्खण दिशा आप छुपाईआ। कबीर अग्गों प्या रुस्स, लै करवट मुख भुवाया। मैं तेरा दुआरा रिहा पुच्छ, तूं मैथों भेव छुपाया। मैं कर के आया तेरा रुख, तेरे चरन दुआरे डेरा लाया। जिन्ना चिर ना वखाएं मेरी मिटे ना तृष्ना भुक्ख, मेरी शांत ना कोए जणाया। मैं वेखां किथे कबीर बैठे लुक, जिन्हां तेरा नाम ध्याया। तूं लोकमात विच्चों आंदे पुट्ट, सचखण्ड विच बूटा लाया। मैं उन्हां दी शाख़ तेरे दुआरे गई फुट्ट, तेरी महक नाल महकाया। मैं वेखां तेरी रुत्त, बसन्त रूप वटाया। मैं तेरा आया निक्का पुत्त, फड़ गले लै लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर दे वखाया। कबीर वेला अजे दूर, हरि साचा सच जणाईआ। आप वखाए हाज़रा हज़ूर, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। तेरी श्रद्धा करे पूर, निरास रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। कबीर अग्गों कहे बोल, एका बोल सुणाया। चौथी कूट कुण्डा खोल्ह, क्यों मेरा मेरा डुलाया। मेरे नाल क्यों मारे रोल, मैं तेरा रोल कोई ना झोली पाया। तूं जुग जुग करदा रिहा मखौल, तेरा मसखरापण मिट कदे ना जाया। मैं छड्ड के आया धरनी धौल, तेरे घर सिँघासण लाया। मेरे नाल कर कौल, कवण वेले दएं वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाया। सच कबीर रख उडीक, हरि सज्जण सच जणाइंदा। प्रभ दस्से इक्क तरीक, एका लेख लिखाइंदा। तेरा दूसर होए ना कोए शरीक, शिरक्त नाल ना कोए मिलाइंदा। तेरी तोड़ निभे लग्गी प्रीत, प्रीतीवान आप निभाइंदा। तूं रहिणा बैठ अतीत, त्रैगुण अतीता आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम लहिणा चुकणा मन्दिर मसीत, पुरख अबिनाशी आप चुकाइंदा। एका गाउणा सब ने गीत, एका इष्ट आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा आप उठाइंदा। साचा पर्दा जाए उठ, सो पुरख निरँजण आप उठाईआ। कलयुग अन्तिम जाए तुट्ट, निरगुण रूप बेपरवाहीआ। सचखण्ड जो बैठा लुक, लोकमात करे रुशनाईआ। आपणी जाणे आपे पुच्छ, आपणी पुच्छणा आप पुवाईआ। आपणे कोल रखे ना कुछ, जन भगतां झोली दए भराईआ। देवे वड्याई साचे

सुत, सुत दुलारे लए उपजाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, पत्त डाली आप महकाईआ। आपणे बूटे लोकमात लाए एथों पुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलाईआ। साचा खेल आप खलाउणा, हरि सज्जण सच जणाइंदा। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। दक्खण दिशा भेव चुकाउणा, आपणा पर्दा लाहइंदा। भगत दुआरा मात बणाउणा, उतर पूरब पच्छिम दिशा आप खुल्हाइंदा। दक्खण आपे बन्द कराउणा, आपणा आसण आप सजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। कबीर सच दुआरा बणे मात, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। चार कुण्ट दी चार कनात, चार दीवार समझाईआ। दक्खण दिशा वेखे कमलापात, आप आपणा आसण लाईआ। जन भगतां देवे दात, अनमंगी वस्त झोली पाईआ। एका वार भरे खात, घाटा कोए नज़र ना आईआ। एका वार चुकाए वाट, पाँधी पन्ध आप मुकाईआ । एका वार बहाए साची खाट, साची गोदी आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दक्खण दिशा भगत दुआरा लोकमात लए प्रगटाईआ। लोकमात सच दुआर बनाउणा, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। सच सिँघासण आसण लाउणा, आसा मनसा पूर कराइंदा। गुरमुख साचे आप मिलाउणा, आप आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थित वार इक्क जणाइंदा। थित वार निरगुण सरगुण, दोए दोए रूप समाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जाए बण, आदि अन्त भेव ना राईआ। आदि अन्त एका सिफरा ना कोई कन्न, अंक रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वक्त दए समझाईआ। दोआ सिफरा निरगुण धार, सिफ़र सिफ़र विच समाईआ। सिफरिउँ होया एकँकार, एका कल वरताईआ। अठ्ठां तत्तां करे प्यार, एका आठा नाल रलाईआ। दोआ सिफ़रा एका आठा चार युग दा चुक्के भार, चारे अंक दए गणाईआ। वीह सौ अठारां बिक्रमी हो उज्यार, एका नाएं नाल मिलाईआ। एकँकारा कर पसार, नौ दुआरे खोज खुजाईआ। नौ खण्ड बोल जैकार, नौ दर करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह समझाईआ। एका नाइआं इक्को उन्नी, इक्क नौ मेल मिलाया। कबीर तेरी आसा पुंनी, पूरन आसा दए कराया। कलयुग रैण इक्को भिन्नी, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। उन्नी वार खेल अपारा, थित आप जणाईआ। कक्का कर्म ना टले विच संसारा, तत्ता तल्ब ना कोए वखाईआ। कक्का रोवे ज़ारो ज़ारा, छेवें घर पई दुहाईआ। हाहा हस्से मारे नाअरा, पंचम वेखे चाँईं चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। उन्नी कत्तक बीस अठारां, हरि जू खेल रचाया। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी

धार चलाया। लोकमात बणे मुनारा, भगत दुआरा नाउँ रखाया। पुरख अबिनाशी सेवादारा, साची सेव कमाया। कबीर वेखे हरि नज़ारा, नेत्र नैण खुल्हाया। तेरी रहिमत मेरे परवरदिगारा, तेरा भेव किसे ना पाया। वाजां मारे आपणयां यारा, उठो इक्को रिहा समझाया। पारब्रह्म की करे कारा, लोकमात वेस वटाया। जिस दी कढुदे आए वगारा, सो बण वगारी सेव कमाया। जिस दा लाउँदे आए नाअरा, सो भगतां नाअरा रिहा लगाया। जिस दीआं गाउँदे आए वारा, सो भगतां वारां रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रचाया। उठो भगतो जाओ जाग, कबीर हलूणा रिहा लगाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे साडा साक, सो लोकमात फेरा पाईआ। जिस नूं मन्न के बैठे पाकी पाक, परवरदिगार खुदाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे लुकया साडी ज़ात, ज़ात नाल मिलाईआ। सो कलयुग वेखो जन भगतां देवण गया दात, आपणा पन्ध मुकाईआ। नाल रल्लया इक्क रविदास, चुमार जगत चमरेटे मिली वड्याईआ। लिख लिख लेखा करे हास बलास, आपणी खुशी मनाईआ। नाल रलाया इक्क गुरदास, गुर गुर बूझ बुझाईआ। मैनूं दस्स के गया खास, मैं लोकमात जावां चाँईं चाँईंआ। बिन गोपी पावां रास, आपणा नाच नचाईआ। बिन दीप करां प्रकाश, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। बिन भगती वसां पास, पूरब लहिणा लेखे पाईआ। मेरा भगत ना होए उदास, लोकमात मिले वड्याईआ। आपणी हथ्थीं खोल्हां जा के ताक, नौ दुआरे मात खुल्हाईआ। आपणे वेले पुछां जा के वात, आपणा वक्त ना कदे लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। कबीर कहे उठो बल धारो, हरि साचे खेल कराया। लोकमात लग्गा सच दरबारो, दरगाह साची रूप वटाया। चलो चल के करो निमस्कारो, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। जा के मिलो सच परवारो, पुरख अबिनाशी परवार बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाया। सुणो संदेशा मेरे मीत, मित्र प्यारा आप सुणाईआ। सचखण्ड बैठे सुणो गीत, जन भगतां लोकमात हरि गाईआ। जिस ने ढाउणा मन्दिर मसीत, सो मन्दिर लए बणाईआ। जिस चलाउणी भगतां रीत, तिस देवे माण वड्याईआ। जिस तपदे हिरदे करने सीत, सांतक सति वरताईआ। जिस सुनाउणे सुहागी गीत, ढोले सच्चे माहीआ। जिस पत्तत पापी करने पुनीत, दुरमति मैल धुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कारज आप रचाईआ। सचखण्ड बैठे तक्को राह, हरि जू आख सुणाया। इक्क दूजे नाल करो सलाह, साचा बचन जणाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका साह रिहा सुधा, साची थित वार वखाया। एका वार देवे सर्ब पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जो दीसे होए फनाह, ना सके कोए बचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क जणाया। धुर फ़रमाणा रिहा

घल्ल, घड़ी पल ना कोए जणाईआ। इक्क दूजे नाल बहो रल, एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे वेले लए बुलाईआ। आपणा वेला हरि जनाउणा, बिन अक्खर कर पढ़ाईआ। पहलों भगत दुआर बनाउणा, लोकमात कर रुशनाईआ। सच सिँघासण इक्क सुहाउणा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। छत्ती धार लेखे लाउणा, छत्ती छत्ती लए प्रनाईआ। नेत्र नैण जिस दर्शन पाउणा, तिस दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। चरन कँवल जिस सीस झुकाउणा, तिस मिले सच शरनाईआ। सोहँ ढोला जिस ने गाउणा, तिस चोला दए बदलाईआ। हौला भार आप कराउणा, सिर आपणे भार उठाईआ। कीता कौल पूर निभाउणा, कबीर जुलाहा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए लिखाईआ। साचा लेखा लिखे करतार, आपणा कर्म कमाईआ। छब्बी पोह दिवस विचार, देवे वड वड्डी वड्याईआ। चार युग दे विछड़े सद्दे यार, भगत भगतां नाल मिलाईआ। जो आ के बोले कबीर पुकार, सो लेखा दए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए वड्याईआ। सच दुआरा साचा घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। जिस अंदर वड़या चुक्के डर, जगत भय ना कोए वखाइंदा। जिस मिलयां जीवत जाईए मर, मर जीवण एका रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सच अटारी, अटल्ल नाम रखाया। कलयुग अन्त आई वारी, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। चौथे युग दी साची यारी, अठारां चौके बहत्तरां नाल मिलाईआ। खिच्ची तन्द एका वारी, बिन तन्दी तार हलाया। साहिब बख्शंद जोत निरँकारी, निरगुण आपणा खेल खलाया। जन भगतां उत्तों जाए आप बलिहारी, जिन्हां हरि जू मात बुलाया। बिन हरि जू करे ना कोए सच्ची दारी, औखद नाम ना कोए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारी। अगम्म अपार खेल खलंदड़ा, खेलणहार पुरख अकाल। जन भगत दुआरा इक्क सुहंदड़ा, आपे घाले साची घाल। बण सेवक सेव कमंदड़ा, करे सेवा दीन दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रहे सदा खुशहाल। खुशहाल रहे खुशहाला, खुशी खुशी नाल मिलाईआ। खुशी वेखे सिँघ पाला, घर साचे वज्जे वधाईआ। वज्जे वधाई वजाए दीन दयाला, जगत जगदीश सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप रखाईआ। वज्जी वधाई करया हित्त, आपणा हित्त जणाया। बाले मिल्या इक्को मित्त, मीत मुरारा सहिज सुखदाया। आदि जुगादी सच्चा पित्त, साची गोद बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाया। साचा खेल भगत दुआर, भावी भगतां आप मिटाईआ। जो रावी रुड़्या जल धार, रवी आपणा रंग वखाईआ। साँवल सुंदर मीत मुरार, कँवल

नैण वड्याईआ। रैहबर होए दस्त बरदार, आपणा दस्त मिलाईआ। बेखबर होया खबरदार, खबर लए सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आबरू रिहा वधाईआ। भगतां आबरू नाम ताकत, लोकलाज रखाइंदा। मेट मिटाए दुष्ट नास्तिक, नष्ट सर्ब कराइंदा। हरिजन वेखे इक्को अस्तिक, अस्थिल घर बहाइंदा। नूर नुरानी जोत परकाश्त, प्रकाश रूप वटाइंदा। सूरत सच्ची इक्को साबत, साबर आपणा आप वखाइंदा। मुरीदां मुर्शद करे तुआकब, आप आपणी मंज़ल चुकाइंदा। लोकमात करे अबादत, सजदा सीस आप झुकाइंदा। जन जन करे सच रफ़ाकत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। आप मिलाउणा किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। आपे दिता आपणा वर, आपे वेख वखाईआ। आपे गुरमुख सज्जण लए फड़, वारो वारी लए जगाईआ। आपे रातीं सुत्तयां अंदर जाए वड़, आपणा कुण्डा आपे लाहीआ। आपे सुरत सवाणी लए फड़, शब्दी कन्त मनाईआ। आपे आपणी बाणी लए पढ़, आपे खाणी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि खेल कराईआ। आदि जुगादि जाणे अन्त, अन्त खेल कराया। प्रगट जोत श्री भगवन्त, निरगुण नूर डगमगाईआ। गुरमुख नारी मेले साचे कन्त, कन्त कन्तूहल होए सहाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। गढ़ तोड़े हउँमे हंगत, निवण सु अक्खर
१५ इक्क समझाया। जो मिले साची संगत, अन्तिम नाल कबीरे दए बहाया। जिउँ सम्मत सोलां बणाई पंगत, सचखण्ड दुआरे १५
११ साची वस्त दए वरताया। नाता तोड़े ज़ेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज भेव चुकाया। भगत भगवान बिन दूजे दर ना होए मंगत, ११
ना कोई भिच्छया दए वरताया। चार कुण्ट हरि जू कलयुग अन्तिम कीते सारे नंगत, आपणा पर्दा आपणे उत्ते सके ना कोई पाया। रसना कह कह सुणाउदे जंत, जीव जंतां गीत सुणाया। आपणा कोई ना जाणे अन्त, कवण वेले होए सफ़ाया। घर घर फड़ फड़ बैठे नाम धनख, मन रावण रहे मिटाया। बिन नामों झूठी चढ़ी अणख, आपणी अणख रहे वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, लख चुरासी वेख वखाया। आपणी कीती ना किसे कल्याण, काया कष्ट ना कोए गंवाईआ। दूजे वल की करन ध्यान, जिस ध्यायां हथ्थ ना आईआ। अठ्ठे पहर अंदर वड़या रहे शैतान, शरअ शैतान करे लड़ाईआ। पढ़यां आवे ना किसे ज्ञान, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जिस उपर होए आप मेहरवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, इक्को वार सर्ब दए समझाईआ। विश्व रसना नाल गाण, नेत्र विश्व रूप वेखण विच किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग नटुआ नाटक आपणा आप वखाईआ। दक्खण दिशा डूँग्घा खात, हरि जू आप बणाया। जुग जुग वारी वारी खोल्हे ताक, गुर

अवतार बाहर लए कढाया। फड़ फड़ फेर उहदे विच रखे ढाक, उपर आपणा पर्दा पाया। उपर बैठा सुणाउँदा रिहा वाक्, सच संदेशा इक्क अल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हिस्सा आप वंडाया। दक्खण दिशा नाउँ बे दर, वेद कतेब भेव ना राईआ। रसूल मसूल दे ना सके चढ़, कबूल शरअ ना कोए कराईआ। मकतूल कातिल दोवें ना सके फड़, नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार अंदर सके ना वड़, जब तक्क आपणी दया ना आप कमाईआ। जिस नूं लिखाया दर बदर, सो दर दखशन रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इस्में आज़म आज़म तारीफ़ तुलबा तालब पढ़ाईआ। खुदा का नाउँ बड़ा शरीफ़, सुणन बोलण विच ना आईआ। वेखण विच बड़ा बरीक, नज़र ना कोए टिकाईआ। कदे ना बणे किसे दा शरीक, शरअ बण ना करे लड़ाईआ। इक्क खुदाए सच तौफ़ीक, तौबा करे खुदाईआ। कुरान अञ्जील सर्ब हदीस, हदाइत गया सुणाईआ। कोई कहे या अबलीस, अली अल्ला नाअरा कोए लगाईआ। नबी रसूलां वखाए सजदा झुकाए सीस, आपणे चरन कँवल शरनाईआ। आपणी कलाम किसे नूं कर के ना दिती वसीअत, वसीका नवीश बण ना करी लिखाईआ। सब नूं देंदा रिहा नसीहत, जो लोकमात घलाईआ। आपणी लुका के बैठा रिहा असलीअत, असल रूप ना किसे वखाईआ। खुदावंद करीम आपणी आदि जुगादि रखे इक्को काबलीयत, किबले काअबा नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप जणाईआ। नाँ लओ पाओ रौला, भला लुकया छिपया जे बौहड़ पए मौला, मौला रूप वटाओ। जो कर के गया आपणा कौला, मुहम्मद इक्क समझाओ। जिस ने सब दे सिर विच मारना पौला, बेऐब नाम खुदाओ। मुरीदां करे भार हौला, मुर्शद आपे पकड़े बाहों। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे चले आपणे राहो। भगवान कोलों रोकण सन्त, गुरसिख मिलण कोए ना जाईआ। मैथों विछड़या मेरा कन्त, दूजा होर ना कोए हंढाईआ। मैं लहिणा देणा देणा जीव जंत, जो मेरे सिर भार रहे चुकाईआ। अन्त किसे ना मन्नणी मिन्नत, निउँ निउँ ढह ढह पए सरनाईआ। पुरख अबिनाशी लेखा मंगे गणत, अगणत गिण गिण लेखा ना कोए चुकाईआ। सच दस्सो किहनूं कहिन्दे सन्त, कवण सन्त जो हरि सतिगुर झल्ले जुदाईआ। भगवान पास ना जाणा सिख, कलयुग सन्त करन पढ़ाईआ। वेख्यो तुहाड्डा लेखा देवे ना लिख, लख चुरासी दए कटाईआ। असीं बण के बैठे बड़े ढीठ, प्रभ कोलों आपणा मुख भुवाईआ। तुसीं वी कर लओ उहदे वल पीठ, तुहाड्डा मुखड़ा नज़र नाल ना नज़र मिलाईआ। तुसीं गाओ मेरे गीत, मैं आया सच्चा माहीआ। मेरा अंदर ना वेखणा बणया पलीत, पवित्र रूप ना कोए वटाईआ। मैं सुणयां नहीं वेख्या अनडीठ, कवण दुआरे बैठा आसण लाईआ। पढ़ पढ़ के सुणावां गीत, अगला लेखा ना

कोए चुकाईआ। चाहे हारो चाहे जाओ जीत, तुहाढे कर्म तुहाढी देण गवाहीआ। सतिगुर पूरा बिन कर्मां करे ठंडा सीत, कुकर्म चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग झूठी खेड रचाईआ। अदालत करे सदा अदली, अदल आपणे हथ्थ रखाइंदा। सिँघ संगत कोलों जिस कीती बदली, सिँघ नरैण नाउँ धराइंदा। क्या कोई पंडत पांधा वाचे पत्तरी सुट्टे संगली, हिसाब किताब विच किसे ना आइंदा। जो गढ़ी चमकौर बण के निक्कल गया जंगली, सीस तेरे ताज टिकाइंदा। सो साहिब लाए उँगली, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच्चे दरबार क्या कोई करे चुगली, जन भगतां आपणा नाम चोग चुगाइंदा। कोई रहिण ना देवे शहिनशाही मुग़ली, ग़लबा सब दे उपर पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत आप कमाइंदा। सच अदालत करे करतार, सुपरीम कोरट सच्चा माहीआ। गुरमुख बरी करे विच्चों संसार, जमानत आपणी आप दिवाईआ। वकील दलील दोनों गए हार, कानून किताब परां सुटाईआ। छोटी जज्जी वाले होए शर्मशार, जज्ज जज़बा ना कोए भराईआ। तहरीर कर खारज देवे पाड़, मुनसफ इक्को सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत इक्क वखाईआ। सच अदालत श्री भगवान, आदि जुगादि लगाइंदा। किसे मुचलके उपर ना लाए कोए निशान, अष्टाम काला ना कोए कराइंदा। किसे कोलों ना कराए कोई पछाण, गवाह फड़ ना कोए भुगताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी अदालत आपणा कानून, गुर अवतारां मज़बून आप सिखाइंदा। गुर अवतारां लिखाया मज़मून, मजमा आप बणाईआ। कोई कहे नुकता नून, कोई नून गुना रिहा गाईआ। नानक निरगुण बुझया इक्क असूल, असलीयत गया समझाईआ। जो जन करे कबूल, तिस देवे आप सफाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत इक्क रखाईआ। बिन अदालत ना लग्गे डंन, जगत विकार ना कोए मुकाईआ। पिछला तैथों लहिणा लैणा, अग्गे झोली ना कोए रखाईआ। जन्म जन्म तेरा मन्नदे रहे कहिणा, तेरी सेव कमाईआ। असीं नाता छड्डया भाई भैणां, साक सज्जण तजाईआ। दरस कर कर थक्के तेरे नैणां, आपणी ख़ुशी मनाईआ। असां वेस तजाया जगत गहिणा, तेरा प्यार हंढाईआ। तेरा भाणा सिर ते सहिणा, तेरी चले हुक्म रजाईआ। आपणे कोलों तूं की देणा, साडी वस्त साडी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां लहिणा रिहा मुकाईआ। साडी वस्त रख दे हथ्थ, हथ्थ आपणा रहे वखाईआ। जे तूं हैं पुरख समरथ, क्यों साडी वस्त लुकाईआ। पिच्छे मार्ग आया दस्स, हुण क्यों बैठा मुख छुपाईआ। अग्गे असीं हुंदे आए तेरे वस, हुण तैनूं आपणे वस रखाईआ। अग्गे तैनूं लभ्भदे रहे नस्स नस्स, हुण तैनूं आपणे घर भुवाईआ। तूं साडे विच गया फस, असीं घेरा पाया

सच्चे माहीआ। साडी पूरी कर के जाईं आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी वस्त साडे हथ्थ फड़ाईआ। साडी दे दे पिछली दात, अग्गे मंग ना कोए मंगाया। तेरे चरनां रख्या इक्को नात, साचा नाता जोड़ जुड़ाया। तेरे पिच्छे रो रो कटी अन्धेरी रात, नेत्र नैणां नीर वहाया। तेरी गा गा थक्के गाथ, रसना जिह्वा सेव कमाया। धन्न भाग तूं दिता साथ, घर मिल्या बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी झोली दे भराया। पुरख अबिनाशी गया डर, भगतां कोलों भय रखाईआ। चार युग मैं वल छल रिहा कर, अछल अछल खेल खलाईआ। कलयुग अन्त बिन डोरीउँ गुरसिखां ल्या फड़, प्रेम ज़ंजीर बंधाईआ। चार कुण्ट केहड़ी गुठे जावां वड़, राह नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख अग्गे बैठे अड़, आपणा बल रखाईआ। चार युग तेरा नाउँ थक्के पढ़ पढ़, पढ़यां हथ्थ किछ ना आईआ। जे तुट्ठा आपणी किरपा कर, कर किरपा लै मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग समाईआ। गुरसिख ना मूल डराउ, निर्भय मंग मंगाइंदा। तुहाढे मिलण दा मैनूं चाओ, मैं लोकमात फेरा पाइंदा। कर दरस जन्म जन्म दा दुःख मिटाओ, दुःख तुहाढा आपणी झोली पाइंदा। हरिसंगत मिल मिल गीत गाओ, वाहवा गोबिन्द खेल खलाइंदा। जिस दा ना कोई पिता ना कोई माउँ, आप माता पिता सर्ब बण जाइंदा। तिस निउँ निउँ लागो पाउँ, जो सब दे दुःख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल गुरमुखां खुशी मनाइंदा। गुरसिख तेरी वड्डी वड्याई, ब्रह्मा वेता लिखण ना पाईआ। वेद व्यास सुट्टे कलम शाही, आपणा बल ना कोए धराईआ। चार युग देण गवाही, हरि भगतां होए सहाईआ। पिच्छे तारदा आया झीवर जट्ट छींबे नाई, कबीर जुलाहा नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम हरिजन पकड़े थाउँ थाईं, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोए राई, की लहिणा झोली पाईआ। गुरसिखां कोलों पुच्छण भैण भाई, कवण मिल्या तैनूं जगत माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल हरिजन खुशी मनाईआ। हरिजन तेरा वड्डा दरबारा, लोकमात वज्जी वधाईआ। निरगुण आए चल निरँकारा, निराकार वेस वटाईआ। बिन गुरसिखां ना देवे कोई सहारा, लोकमात होई जुदाईआ। बिन भगतां ना देवे कोई भण्डारा, साची वस्त ना कोए वरताईआ। हरिसंगत कोलों मिल्या इक्को प्यारा, प्रेम प्यार झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी बण वणजारा, साचा वणज आप जणाईआ। पिछला कर्ज लथ्था उधारा, मकरूज आपणा फ़र्ज पूर कराईआ। तूल अरज़ पार किनारा, मसूल अग्गे ना कोए लगाईआ। कबूल होए सच दुआरा, महबूब दए वड्याईआ। याकूब करे निमस्कारा, गुरसिख सीस झुकाईआ। अबूतर आप मंगे बण भिखारा, गुरमुख आब हयात प्याईआ। बेताब होया सर्ब संसारा, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरा नाउँ वड्याईआ। तेरा नेत्र नीर वरोले, नैनण नैण वड्याईआ। तेरे बदले तेरा पीर बोले, तेरी धार चलाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे लुकया रहे ओहले, सो पर्दा रिहा उठाईआ। जिस दे गाउँदे रहे ढोले, सो आया सच्चा माहीआ। जिस दे मौल्यां सब जग मौले, सो मौला रूप वटाईआ। गुरमुख उधारे भाले भोले, भोले आपणे गले लगाईआ। पहलों आपणे कंडे तोले, तोला माशा रती ना कोए पाईआ। आपणी वस्त रखे आपणे कोले, दूजे हट्ट ना कदे वकाईआ। कलयुग अन्तिम जट्टां दे कबूल कीते जौं छोले, रुक्खी सुक्खी खा के झट्ट लँघाईआ। सुक्का अन्न खा कदे ना डोले, वड्ड किरसाणा बेपरवाहीआ। कर्म कुकर्म फड़ के सांघा सृष्ट सबाई फोले, हथ्था आपणे हथ्थ वखाईआ। दाणे भो आप वरोले, नाम तंगल उपर चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे खाते पाईआ। वेखो केडा होया खाता, पुरख अबिनाशी आप भराया। बिन दरवाजिउँ बन्द कीता अंदर ताका, आपणा पर्दा पाया। कदे ना आवे घाटा, घाट विच ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख भण्डारा आप भराया।

★ २ मग्घर २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

भगत दुआर करे हरि सेव, निरगुण आपणा नूर प्रगटाईआ। लेखा जाणे अलख अभेव, अल्फ़ ये वेख वखाईआ। लोकमात वखाए साचा मेव, अमृत फल नाउँ धराईआ। रस देवे रसना जेहव, हरि जस जो जन गाईआ। परम पुरख सदा निहकेव, केवल आपणे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन पाईआ। सेवा करे हरि जू ठाकर, दिवस रैण वड्डी वड्याईआ। लेखे रत्त लग्गे तेग़ बहादर, रुत्ती रुत्त आप महकाईआ। हरिजन वेखे सच सौदागर, वणज वणजारा इक्को माहीआ। निर्मल कर्म करे उजागर, जन भगत दए वड्याईआ। लोकमात करे आदर, फड़ बाहों गले लगाईआ। वेस वटाए करीम कादर, करता आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप समझाईआ। सेवा करे श्री भगवान, भगवन दया कमाइंदा। भगत बणाए सच निशान, लोकमात प्रगटाइंदा। जगत देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर पढ़ाइंदा। चरन धूढ़ सच अशनान, साचा सज्जण आप वखाइंदा। वस्त अनमुलड़ी प्रेम दान, प्रेमी आप झोली पाइंदा। आपणा करया पहलों बलीदान, बल आपणा फेर प्रगटाइंदा। गुरमुख सज्जण वेखे विच जहान, नव नौ फेरा पाइंदा। कर किरपा देवे ज्ञान, आपणी बूझ बुझाइंदा। जगत तृष्ना मेट शैतान, शरीअत बन्द आप

कटाइंदा। दर दर घर घर देवे माण, हरि हरि सेव कमाइंदा। अंदर वड़ वड़ होए जाणी जाण, जानणहारा भेव चुकाइंदा। तीर अणयाला मारे बाण, एका चिल्ले नाम चढ़ाइंदा। नाता तोड़ माण अभिमाण, आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन सूरा चतुर सुघड़ सुजान, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सेवा करे पुरख समरथ, समरथ वड्डी वड्याईआ। दो जहानां नट्ठ नट्ठ, लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। एथे ओथे आपणा मार्ग दस्स, वाहवा आपणी धार चलाईआ। हरिसंगत हरि जू होया वस, आपणा बन्धन आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आपणे सीस उठाईआ। सेवा करे सोहे सीस, सीस आपणा नज़र ना आईआ। गोबिन्द मेला इक्क जगदीश, जगदीश होए सहाईआ। लहिणा वेखे बीस इकीस, बीस बीस वज्जे वधाईआ। राह पुच्छे राग छतीस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। साची सेव करे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। आप बणाए साची बणत, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणे रंग समाईआ। कलयुग अन्तिम महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखाईआ। जन भगतां काया चोली रंगे बसन्त, नाम मजीठी इक्क चढ़ाईआ। रसना जिह्वा मणीआं मंत, आत्म परमात्म करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी सेव कराईआ। सेवा करे सेवक बण, लोकमात मात तजाया। जिस बणाए आपणे जन, सो जनणी बणया पिता माया। एका राग सुणाए कन्न, रागी राग मुख शरमाया। एका देवे सच्चा धन, नाम निधाना झोली पाया। आपे बेड़ा रिहा बन्ह, आपणे कंध उठाया। गुरमुख सज्जण जाए मन्न, सो पुरख अबिनाशी रिहा मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाया। सेवा करे बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा कल्याण, काल रूप वटाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे भगवान, सो भगवन वेस वटाईआ। जो देंदा रिहा परवान, सच परवाना दए फड़ाईआ। जिस अंदर सर्ब ज्ञान, सर्ब ज्ञाता आप अख्वाईआ। सो साहिब देवे दान, अनडिठड़ी वस्त आप वरताईआ। जिस नूं कहिन्दे गए काहन, सो काहन बंसरी नाम वजाईआ। जिस दा रखदे गए ध्यान, नैण मूंद सेव कमाईआ। सो प्रगट होया आण, आप आपणा खेल वखाईआ। खेले खेल दो जहान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण सेवक सेव कमाईआ। आपे सेवक बणया सच्चा राणा, राज भूप अख्वाइंदा। जन भगत दुआरे बह बह गाए आपणा गाणा, आपणा राग अल्हाइंदा। आपे मन्ने आपणा भाणा, सिर भाणा आप रखाइंदा। लख चुरासी जीव जंत जुग चौकड़ी तणया ताणा, ताणा पेटा आपे पाइंदा। आपे

जाणे आवण जाणा, आवण जावण आपणा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप चलाइंदा। वाह वाह धार चले अवल्ली, अव्वल अल्ला आप चलाईआ। निरगुण जोत इक्क इकल्ली, अकल कला अख्वाईआ। भगत दुआरे आ के खली, एका आस तकाईआ। गुरमुख मेरा आसण मल्लीं, मेरी सुंजी सेज दे सुहाईआ। तेरे बाझों होई मैं झल्ली, मेरा पल्लू फड़े ना कोए सच गुसाँईआ। सचखण्ड दी साची कली, लोकमात तेरे दर महकाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तेरे प्यार अंदर पली, दूजी वस्त ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप जणाईआ। वाह वाह रंग रंगा करतारा, रंग आपणा आप समझाइंदा। जिस नूं लभ्भदे गए गुर अवतारा, हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस दे दर बणदे रहे भिखारा, बण भिखारी मंग मंगाइंदा। जिस अग्गे कढ्ढदे गए हाढ़ा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण सेव कमाइंदा। सो पुरख निरँजण वाह वाह आया, वैहन्दी धार खेल खलाईआ। जिस दा रूप रंग रेख ना कोई छाया, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। पंज तत्त ना कोई काया, भूतक रूप ना कोए वटाईआ। जिस दा पिता ना कोई माया, ना कोई गोद सुहाईआ। गुर अवतारां जिस नूं गाया, सो चल के आया सच्चा माहीआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। जन भगतां सुहाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस दिवस रैण रैण रैण नाल मिलाईआ। दिवस मंगे गुरमुख चा, गुर गुर वड्डी वड्याईआ। रात मंगण गुर पीर अवतार झोली डाह, दिस किसे ना आईआ। सृष्टी सुत्तयां दो जहानां दए सलाह, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। उठो जा के सेवा लओ कमा, साची सेवा इक्क समझाईआ। चार युग दा अमृत फल मेवा लैणा खा, अंमिउँ रस इक्क चखाईआ। वड देवी देवा रुठ्ठा लैणा मना, दर अग्गे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेव आप कमाईआ। साची सेवा कर मन्ज़ूर, मुहम्मद सीस झुकाइंदा। मेरा कर मुआफ कसूर, दोए जोड़ रसन अलाइंदा। करां मज़दूरी बण मज़दूर, उजरत कोए ना मंग मंगाइंदा। तूं साहिब रहिणा हाज़र हज़ूर, दर तेरा इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। कर लै सेवा अन्तिम कल, सदी चौधवीं गई बिताईआ। जन भगतां अंदर जाणा रल, तेरा लहिणा दए मुकाईआ। जिस शरीअत लाही भगतां खल्ल, सो असलीअत दए सज़ाईआ। जो कलमा कलाम रिहा घल्ल, सो कलमा रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। मुहम्मद वेखे खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। चौदां सदीआं जगत हुलारा, चौदां लोक वड्याइंदा। कलयुग

अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण आप कराइंदा। जन भगत बणाए इक्क दुआरा, चार वरन संग रखाइंदा। दिवस चौदवें मुहम्मद मंगे बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डाहइंदा। कर किरपा मेरे परवरदिगारा, तेरा पर्दा सीस रखाइंदा। सेवा करां विच संसारा, सिर तेरा हुक्म सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिन चौधवें वेख वखाइंदा। चौधवें दिन चौदां लोक, चौदस रैण सुहाईआ। पुरख अबिनाशी सच सलोक, सोहला नाम पढ़ाईआ। भगत दुआरा सतिजुग कोट, सचखण्ड समझाईआ। गृह लग्गे साची चोट, तन नगार वजाईआ। पुरख अगम्म देवे ओट, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। घर निर्मल जगे जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जुग चौकड़ी ओत पोत, बंस सरबंस बणाईआ। बिन भगत किसे उत्ते ना होए मोहत, माया ममता विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग समाईआ। तेरा रंग मेरे मीआं, मैं वेखां परवरदिगारा। तूं आपणी धार रखाईआं नीहां, चार कुण्ट सहारा। तेरे दर लेखा मुक्के साढे तिन्न हत्थ सीआं, रविदास चुमार बणे लिखारा। तेरे मिलण दा इक्को हीआ, तेरे चरन करां निमस्कारा। सर्ब जीआं दा इक्को जीआ, बिन तेरे कोए ना जीवण मुक्त दुआरा। चौदां लोक जो बीज बीआ, फल लग्गे अन्तिम वारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच सहारा। सहारा देवे दस्स, धुर फ़रमाण जणाईआ। चौधवीं रात जाणा नट्ठ, लोकमात फेरा पाईआ। पारब्रह्म दा वेखणा हट्ट, लोकमात खुल्हाईआ। नाता तोड़ तीर्थ तट, मन्दिर मस्जिद डेरा ढाहीआ। निरगुण नूर कर प्रगट, नूर नुराना डगमगाईआ। करे खेल बिन नाड़ी रत्त, रत्ती रत्त ना कोए वखाईआ। करे ज्ञान बिन बुध मति, मन वासना ना कोए समझाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, बिछरत लए मिलाईआ। पूरी करे आस, पूरन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौधवीं सदी वेख वखाईआ। सदी चौधवीं खेल अवल्ला, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सच दुआरे सोभा पाइंदा। लेखा जाणे निहचल धाम अटल्ला, अटल्ल आपणा रूप प्रगटाइंदा। कलयुग अन्तिम लोकमात होया झल्ला, बण झल्ला झलक वखाइंदा। चार युग शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी जिस दीआं करदीआं रहीआं गल्लां, सो आपणा हाल सुणाइंदा। वेला मिलण दा कर लओ हल्ला, हल्का सब दा भार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप समझाइंदा। सेवा करे आ दुआर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। रातीं सुत्तयां कढ्ढे वगार, वगारी आपणा फेरा पाईआ। बिन पुछयां देवे दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। बिन मंग्गयां करे प्यार, प्रेम प्यार आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ। आपणा बल आपे धर, धरनी धरत धवल वड्याआ। निरगुण हो के सरगुण अंदर

वड़, जन भगतां रिहा जगाया। आपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुख साचे रिहा पढ़ाया। आपणी अग्नी आपे सड़, गुरसिख सज्जण रिहा बचाया। आपणा भाणा आपे जर, हरिजन आपणी गोद सुहाया। आपणे दुआरे आपे खड़, आप आपणा रूप वटाया। सन्त सुहेले लोकमात फड़, फड़ पल्लू गंढु बन्ह्‌ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाया। साची सेव करे करतार, नज़र किसे ना आईआ। पंज तत्त लेखा रहे अंदर चार दीवार, तन माटी नाल मिलाईआ। अन्तर अन्तर करे विहार, बण बिवहारी सेव कमाईआ। यारां नाल बणया यार, सत्थर यारड़ा आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। खेले खेल अपर अपारा, अपरम्पर धार चलाइंदा। गोबिन्द उठाया सुत दुलारा, साचा संग निभाइंदा। जन भगतां नाल करे प्यारा, आप आपणा बन्धन पाइंदा। आपे चुक्के इट्टां गारा, गुरसिख अंदर वड़ वड़ सेव कमाइंदा। जो गुरसिख आए चल दुआरा, तिस आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। सेवा करे हरि जू हरि, दिस किसे ना आईआ। गुरसिखां अंदर बैठा वड़, दिवस रैण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेव आप समझाईआ। गुरसिख सेवा करे दुआर, हरि जू अन्तर आसण लाया। जे कोई कहीआं देवे मार, पुरख अबिनाशी बल धराया। जे कोई तगारी चुक्के सीस बन्ह्‌ दस्तार, सिर उपर आपणा हत्थ टिकाया। जे कोई पौड़ी डण्डा चढ़े वारो वार, आपणा डण्डा दए फड़ाया। जे कोई कांडी तेसी दए मार, तिस आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां अंदर वड़ वड़ सेव कमाया। अंदर वड़ हरि रघुनाथ, आपणी दया कमाईआ। बिन डिठयां देवे साथ, साचा संग निभाईआ। लहिणा चुक्के हाथो हाथ, हत्थो हत्थी दए चुकाईआ। जिहनूं पुच्छो सोई कहे वसे मेरे पास, रातीं सुत्तयां मेरे कोल फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मेरा सच्चा भोग बिलास, गुरमुख आत्म सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेव कमाईआ। जे कोई फड़े तेसा आरी रंदा, एका रंदा हत्थ रखाईआ। गुरसिख बणाए आपणा बन्दा, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। दर दुआरे कोई ना रहे गंदा, गंदी वासना दए मिटाईआ। हरिभगत चढ़े साचा चन्दा, चन्द चांदनी मुख शरमाईआ। करे प्रकाश विच ब्रह्मण्डा, वरभण्ड मिले वड्याईआ। करे खेल सूरा सरबंगा, सूरबीर शहिनशाहीआ। जिस दुआरे निशान झुल्ले सत्त रंगा, तिस सति पुरख निरँजण लए मिलाईआ। गुरमुख गाओ सदा सुहागी छन्दा, प्रभ मिल्या इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप वखाईआ। जे कोई फड़े तेसी सत्थर, सत्थरा हत्थ उठाया। कर किरपा मेले मन पत्थर, मन का मणका आप भुवाया। गुरसिख

तेरी सेवा वेख पुरख अबिनाशी आपणे नीर वहावे अथ्थर, नैण नैण नैण भराया। जिस विछाया यारड़ा सत्थर, सो बण बण यार सेव कमाया। भगत दुआरा ना होए भट्ठड़, भट्ठ खेड़ा ना कोए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे नाल मिलाया। हरिजन साचे गए मिल, मिल्या एकँकार। चौदां लोक गए हिल, चौदां तबक होए ख़बरदार। कवण दर प्रभ लाए सिल, भगत दुआरा कर त्यार। जिस नूं कहिन्दे बसन बनवारी कपड़े पहरे नील, रूप अनूप आप धराया। तिस अग्गे करो अपील, जे देवे दया कमाया। वड ख़ालक ख़लक ख़लील, बेख़बर लए जगाया। जोधा सूरबीर छैल छबील, छहबर आपणे नूर दरसाया। लोकमात बणाए सच फ़सील, भगत दुआरा नाउँ रखाया। चार युग दी कट्ठी करे दलील, गुर अवतार जो गए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क वड्याआ। चार युग दी दलील करे इकट्ठी, आपणी दया कमाईआ। लुकया रहे ना कोए जपी तपी हठी, सतीआं सति वेख वखाईआ। करे खेल कमलापती, कँवल नैण नैण मटकाईआ। जुगा जुगन्तर दे दे मती, गुर शब्द ज्ञान दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। साचा खेल गोबिन्द धार, निरगुण सरगुण आप समझाया। चौदां लोक करन विचार, चौदां तबक करे सलाहया। सदी चौधवीं होया ख़बरदार, बेऐब नाम ख़ुदाया। रसूल कबूल करे जो विच संसार, सच सबूत दए वखाया। सो कातिल मकतूल बणे निरँकार, एका खण्डा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाया। कार कमाए करता पुरख, कुदरत कादर वड वड्याईआ। किसे ना आवे साची सुरत, अंदर वड़ वड़ रहे सुरत चढ़ाईआ। कोई ना वेखे अकाल मूर्त, मूर्त अकाल ना कोए रुशनाईआ। कोए ना जाणे नाद तूरत, तुरीआ राग ना कोए सुणाईआ। कोए ना जाणे साची सूरत, सूरत रब्ब ना किसे वखाईआ। कलयुग नाता कूड़ो कूड़त, कूड़ी क्रिया बन्धन पाईआ। जीव जंत होए मूरख, मूढ़ आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे इक्क सालाहीआ। मूर्ख मुग्ध होया संसार, हरि जू भाणा आप वरताया। पढ़ पढ़ पावे ना कोए सार, अंदर वड़ वड़ कोल ना किसे बहाया। चोटी चढ़ चढ़ गए हार, हरि का पन्ध ना किसे मुकाया। नेत्र मीट मीट करन पुकार, सुणे पुकार ना हरि रघुराया। सुरती शब्द करन विचार, शब्द सुरत ना कोए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताया। खेल वरताया अलख, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। जिस दा भाणा गए मन्न, सो भाणे रिहा समाईआ। जिस सेवा लाए सूरज चन्न, कोह करोड़ी चलत फिराईआ। जो लख चुरासी जीव जंत साध सन्त गुर अवतार भाण्डा देवे भन्न, पंज तत्त रहिण कोए ना पाईआ। सो खेल करे श्री भगवन, भगवन

२४
११

सेवा आप कमाईआ। कबीर जुलाहे दिता दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। वेले अन्त करे पछाण, पछोतावा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराईआ। आपणा वेस आपे रख, रख रख खुशी मनाइंदा। आपणे मन्दिर हो प्रतख, आपणे घर सोभा पाइंदा। आपणी बोल इक्क अलख, अलख अगोचर नाअरा लाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे बण बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार वखाइंदा। समरथ धार वेख मौला, आपणी आप जणाईआ। जिस दा नूर अव्वल अल्ला, सो इलाही नूर प्रगटाईआ। सच सिँघासण इक्को मल्ला, इक्को नूर खुदाईआ। निहचल धाम उच्च अटल्ला, एका बंक वड्याईआ। बिस्मिल हो के बिस्मिल रला, विश्व रिहा समाईआ। हक़ हक़ीक़त वेखे इक्क इकल्ला, बेअकल वड वड्याईआ। पावे सार जलां थलां, डूँग्घे सागर फोल फुलाईआ। चौदां लोक पए तरथल्ला, थिर थिर कम्बे सर्ब लोकाईआ। सच संदेश इक्को घल्ला, नर नरेश सुणाईआ। वड्ड अमाम पकड़ो पल्ला, ईमान दए बचाईआ। पीर पैग़म्बर जिस दा कटदा रहे छिला, सजदा सीस झुकाईआ। जिस नूं गाउँदे रहे इल लिला, इलम आलम विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रसूल रिहा समझाईआ। सच रसूल साचा नाअरा, हक़ हक़ लगाया। चौदां चौदां वेख किनारा, चौदां नीर वहाया। दामनगीर बेऐब परवरदिगारा, पल्लू रिहा फड़ाया। करे खेल गुपत ज़ाहरा, ज़हूर शऊर ना कोए जणाया। एका देवे सच सहारा, जन भगतां राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाया। हरि जू भेव चुकाइंदा, चुक्क चुक्क पर्दा लाह। आपणा नूर वखाइंदा, नूर नूर प्रगटा। आपणा घर वसाइंदा, दर घर साचा आप सुहा। आपणा तख्त वड्याइंदा, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाह। आपणा हुक्म चलाइंदा, हुक्मी हुक्म जणा। गुर अवतार सेवा लाइंदा, पीर पैग़म्बर दए सलाह। जगत अडम्बर वेख वखाइंदा, रूप अनूप धरा। पीत पैतम्बर आप सुहाइंदा, सीस जगदीश ताज टिका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाइंदा। आपणा आप हरि जू वेख, घर साचे खुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम भगतां लिखा लेख, दूसर हथ्थ ना कोए वड्याईआ । नाल रलाए दस दस्मेश, दहि दिशा फेरा पाईआ। हरि जू रहे सदा हमेश, ना मरे ना जाईआ। आदि जुगादि करे आपणा वेस, वेस अवल्लड़ा आप रखाईआ। कलयुग अन्तिम भाग लग्गा माझे देस, भगत दुआरे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे माण वड्याईआ। भगत दुआरा खुल्हणा, खोल्हे ग़रीब निवाज़। गुरमुख साचे तोल तुलणा, तोलणहारे रचया काज। हरिसंगत पावे मुलणा, आप आपणा साजण साज। हरि का नाउँ कदे ना भुल्लणा,

दो जहानां देवे राज। लोकमात ना रुलणा, किसे कम्म ना आउणा झूठा काज। भगत दुआरा फलणा फुलणा, भाग लगाए देस माझ। छत्र सीस जगदीश झुलणा, हरिजन रखे लाज। भाग लग्गे साची कुलणा, जिस सतिगुर सुणी साची वाज। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा दाज। हरिजन दाज वस्त अनमुल्ल, अमोलक झोली पाईआ। प्रेम सुगंधी साचा फुल्ल, नाम वासना नाल भराईआ। सति सन्तोख ना जावे डुल, धीरज धीर ना कोए चुराईआ। उजड़या घर जाए वस दुआरा जाए खुल्ह, पुरख अबिनाशी आप खुल्हाईआ। गोबिन्द बूटा जो गया हुल, हरया सिंच फेर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा आप खुल्हाईआ। भगत दुआरा खोल्ह खोल्हे खुलासा, आपणा भेव चुकाया। निरगुण सरगुण वेखे तमाशा, बण नटुआ नाच नचाया। हरिजन पूरी करे आसा, दे दरस तृप्त कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। तारनहारा हरिजन इक्को, आदि जुगादि समाया। साची सिख्या गुरमुख सिखो, गुर सतिगुर आप समझाया। पारब्रह्म प्रभ नेत्र पेखो, जिस डिठयां दुःख रहे ना राया। निराकार निरवैर धरया भेखो, भेखाधारी रूप वटाया। जट्ट बण बण फिरे विच खेतो, जगत खेती वेख वखाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाया। साची सिख्या करो विचार, गुरसिख सिख समझाईआ। पिछला लेखा देवे पाड़, जो चल आए सरनाईआ। अग्गों मिले गोबिन्द यार, प्रेम प्यार निभाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी गोद लए उठाल, साची सेव कमाईआ। आप पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा रूप धराईआ। गुरसिख नेड़ ना आए काल, जो ढह प्या सरनाईआ। भगत दुआरा बणे सच्ची धर्मसाल, चार वरन सीस झुकाईआ। जिस अंदर बहे दीन दयाल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नाल रलाए गुरमुख साचे लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, भल देवे नाम वड्याईआ। साचा मार्ग दिता वखाल, बण पाँधी भुल्ल ना जाईआ। गुरसिख घालण लैणी घाल, घाली घाल ना बिरथा जाईआ। साहिब सतिगुर वसे नाल नाल, दिवस रैण वेख वखाईआ। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। आओ लुटो सच्चा धन माल, पुरख अबिनाशी रिहा लुटाईआ। सच्चे शाह बणो कंगाल, घर साची वस्त टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम रिहा वरताईआ। गुरसिख अग्गों करे सवाल, की कुच्छ रिहा वरताईआ। असीं भुक्खे नंगे बुरा हाल, लोकमात रहे कुरलाईआ। खाण नूं लभ्भे रोटी दाल, दूसर वस्त ना कोए थिआईआ। चारों कुण्ट जगत जंजाल, दिवस रैण लड़ाईआ। माया ममता कीता बेहाल, सुरती सुरत भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वस्त रिहा वरताईआ। कवण वस्त तेरे कोल, गुरमुख पुच्छ पुछाइंदा।

कवण दुआरा देवें खोल्ह, आपणा घर वखाइंदा। कवण रूप जाएं मौल, मौला नाम प्रगटाइंदा। कवण वेला पूरा करें कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म सुणाइंदा। साची वस्त अगम्मी दात, हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिस अमृत प्याए बूंद स्वांत, तृष्ना भुख ना कोए रखाइंदा। जिस दरस दिखाए इक्क इकांत, आप आपणा मेल मिलाइंदा। कलयुग अन्तिम इक्को बन्न्हां चरन नात, नाता फेर ना कोए तुड़ाइंदा। गोबिन्द पूरा करां भविख्त वाक्, भाख्या होर ना कोए समझाइंदा। आपणी करनी देवे साथ, करता साची किरत कमाइंदा। गुरसिख इक्को दस्सां पूजा पाठ, जिस दा भेव कोए ना पाइंदा। सोहँ गाउणी साची गाथ, जगत गाथा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। निकम्मयां पैंडा बड़ा लम्मा, हरि जू आपणे नाल रखाया। पहलां ढोर ढोए लाहया चम्मा, पाणा गंढु वक्त लँघाया। हुण हरि जू अंदर वसे दम दमां, काया दमड़ी मुल्ल ना कोए रखाया। इक्को मिल्या पिता इक्को होई अम्मां, अमढ़ी आपणी गोद सुहाया। कर प्यार दिता साचा मंमां, सीर साचे मुख चुआया। रातीं सुत्तयां मुखड़ा चुम्मां, आप आपणे गले लगाया। तेरा आपणी हथ्थीं फड़या कुंना, जिस विच पाणा गंढु रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे मेल मिलाया। तेरी ग़रीबी मेरा रंग, मेरा नाउँ तेरी वड्याईआ।
२७
११
तेरी सेजा मेरा पलँघ, मेरा प्यार तेरा विछाउणा लेफ तलाईआ। मेरा नाउँ तेरा मृदंग, तेरा मृदंग मेरी शनवाईआ। तेरा घर वेखां लँघ, रातीं सुत्तयां दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे गल लाईआ। धन्न भाग जे मिल्या ग़रीब, पुरख अबिनाशी ख़ुशी मनाइंदा। लोकमात जागे मेरे नसीब, मेरा सिख मोहे ध्याइंदा। मैं दूर वसदा आया करीब, आपणा पन्ध मुकाइंदा। गुरसिख तेरा खेड़ा डिठा अजीब, अज़ब लीला तेरा रूप रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल ग़रीबां ख़ुशी मनाइंदा। ग़रीबां अंदर वसे यार, लुकवीं खेल खलाईआ। आप आपणा आपे हार, हरि जू हारयां लए उठाईआ। जिस ने कंगण करया त्यार, कसीरा कीमत पाईआ। सो वेखण आया यार, रविदास लए मिलाईआ। ब्राह्मण डरदा करे विचार, मेरा कीता हरि जू भुल्ल ना जाईआ। जिस दे घर बणया ठग्ग चोर यार, दिन दिहाढ़े संन्ह लगाईआ। तिस किरपा करी अपार, नौ नौ जन्म मात भुवाईआ। फेर मेलया चरन दुआर, धोई पिछली छाहीआ। दोहां निबेड़ा करे विच संसार, लहिणा देणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीबी रूप आप वटाईआ। ग़रीब पा ख़ाक बणे चाकर, साची सेव कमाइंदा। जन भगतां जिकर करे बण बण ज़ाकर, ज़ेर ज़बर ना कोए लगाइंदा। निरगुण सरगुण करे खातर, ख़तरा होर ना कोए वखाइंदा। दर आयां देवे

आदर, करीम कादर दया कमाइंदा। देवे सबर इक्को साबर, सबूरी सादक नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाइंदा। ग़रीमां ग़रीबी हरि का रूप, रूप अनूप जणाया। मेल मिलावा साचे भूप, भूपत होए सहाया। लहिणा जाणे अन्ध कूप, अन्ध अन्धेर मिटाया। धन्न भाग जे मिल्या पूत, प्रभ आपणी गोद सुहाया। आपे ताणा पेटा सूत, आपे वटणा रिहा चढ़ाया। आपे धागा फड़ फड़ गंढे जूत, तिक्खी रम्बी आर कराया। आपे फड़ फड़ दए कलबूत, उत्ते हथौड़ा ठोकर लाया। वेखो केहड़े कम्म काज आया सूत, हरि जू हरि हरि लए मिलाया। लोकीं कहिण रविदासा ऊत, मति बुध ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीबी आपणी झोली पाया। तेरी ग़रीबी मेरी दात, दाता आपणी झोली पाईआ। तेरा नूर मेरी ज़ात, अज़ात ना कोए वड्याईआ। तेरी विद्या मेरी जमात, इक्को इक्क पढ़ाईआ। तेरा नाता मेरा साक, सैण नज़र कोए ना आईआ। तेरी वस्त मेरा हाट, हट्ट हटवाणा इक्क अख्वाईआ। मेरा नाउँ तेरी गाथ, तेरी गाथ सुणे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीबां अंदर रिहा समाईआ। गुरसिख फिरन ज़ोरो ज़ोरी, आपणा ज़ोर वखाईआ। सिर ते चुक्कण सिमिन्ट बोरी, फिरन वाहो दाहीआ। फिर वी कहिण अजे थोड़ी, मन शांत ना आईआ। भज्जो नट्ठो करन बौहड़ी बौहड़ी, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जिस नूं लभ्भदे फिरदे विच राग गौड़ी, सो गौड़ आपणा रूप वटाईआ। जिस नूं गाउँदा वार पढ़ पढ़ पौड़ी, सो पौड़ा रिहा लगाईआ। लख चुरासी कोलों करे चोरी, बण बण चोर वेख वखाईआ। अनडिठी बद्धी गुरसिखां अंदर डोरी, अठ्ठे पहर हिलाईआ। आपणे नाल जाए तोरी, तुरत आपणा पन्ध मुकाईआ। कोए ना वेखे रैण अन्धेर घोरी, सारे कहिण सतिगुर करी रुशनाईआ। अल्ला राणी बांकी छोहरी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। की करां प्रभ आपणा खेल करे हौली हौली, हवालात रिहा बणाईआ। जिस आपणी पहलों बदली चोली, गुरमुखां चोला दए बदलाईआ। मैं डरदी फिरदी मैनूं कर ना देवे गोली, आपणे भगतां दर बहाईआ। मैं आपणी घुंडी किसे कोल ना खोल्ही, ना दस्सां किसे सुणाईआ। चौदां सदीआं जिस खेली होली, तिस दे हौके रही भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा वेख वखाईआ।

★३ मग्घर २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ★

सन्तां संग सदा हरि वसे, वसणहारा एक। असन्तां कोलों सदा हरि नस्से, लाज ना लाए आपणे भेख। सन्तां मार्ग आपे दस्से, दस्से हरि जू साची टेक। असन्तां कोलों आपे नट्ठे, कोए सके ना वेख। सन्तां संग आपे हस्से, करे खेल

हरि अनेक। असन्तां विच कदे ना फसे, आप छुपाए आपणी रेख। चारों कुण्ट अन्धेरी रैण मसे, नूर दिसे ना औलीए पीर शेख़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा वेस। सन्तां संग सदा दयाला, दीन दयाल दया कमाईआ। जगत जुग अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप रखाईआ। करे खेल ख़लक निराला, ख़ालक वेखे मख़लूक ख़ुदाईआ। सचखण्ड बैठ सच्ची धर्मशाला, धर्म धार दए समझाईआ। चार कुण्ट होए बेहाला, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाईआ। सो सन्त होए परवान, जिस सतिगुर हरि हरि पाया। सो सन्त मूर्ख मूढ़ अंञाण, जिस मिले ना हरि रघुराया। चारों कुण्ट कूड़ तूफ़ान, तोहफ़ा जगत रहे वरताया। बिन डिट्ठयां करन कल्याण, दाता कल्याण नज़र ना आया। ऐवें पा पा दस्सदे खाण, साची ख़बर ना कोए सुणाया। रसना जिह्वा गावण गाण, गाणा राम ना कोए समझाया। शरअ शरीयत ना जानण ईमान, अमाम मेल ना कोए मिलाया। नज़री आए ना राधा काहन, घर गीत ना कोए सुणाया। सीता मिले ना सच्चा राम, कलयुग बण रिहा डराया। अल्ला राणी देवे ना कोए पैग़ाम, पैगम्बर नूर ना कोए रुशनाया। बाहरों निउँ निउँ करन सलाम, अलैकम रूप ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेख वखाया। लख चुरासी खेल तमाशा, तमाशगीर वेख वखाईआ। कलयुग साधां वल वेख वेख करे हासा, वाह वाह आपणी खेल कराईआ। रसना कहिण साडे वसे पासा, घर बैठा सच्चा माहीआ। बण सखीआं पावे रासा, गोपी काहन नचाईआ। कोई कहे मेरा भरया छाबा, नाम अनमुल्ल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग खेल रिहा वखाईआ। कलयुग सन्त जगत इकट्ठे, कलयुग संग निभाया। बिन मारयां आपे ढट्ठे, आपणा मुख भुवाया। खा खा पूजा होए हट्टे कटे, साचा हट्ट ना किसे खुल्हाया। जट्ट धन्ने पाया विच्चों वट्टे, झट्ट आपणा बाहर रखाया। नामे छप्पर छाई सीस रखाए आपणे फट्टे, आउँदा जांदा दिस ना आया। लख चुरासी रलाई घट्टे, कौडी मुल ना कोए पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त वेख वखाया। साचे सन्तां वेखे हरि, आपणी सेवा आप कमाईआ। कवण सन्त जिस मिल्या दर, मिल मेल सच्चे माहीआ। कवण सीस अग्गे रिहा धर, आपा वार वखाईआ। कवण जींवदयां ही गया मर, मन मनशा सतिगुर झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त वेख वखाईआ। साचे सन्त वेखण आया, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाया, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। सब दा लहिणा रिहा चुकाया, देवणहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाइंदा। सन्तां संग वसे निरँकार, सतिगुर रूप वटाईआ। कलयुग

अन्त खेल अपार, अपरम्पर रिहा वरताईआ। सन्त सुहेले लभ्भे यार, यारी यारां नाल रखाईआ। दूर दुराडा आपे भाल, आपणा पन्ध मुकाईआ। पहले सन्त साहिब पिच्छे घालण गए घाल, घाली घाल लेखे पाईआ। अन्त तोड़ जगत जंजाल, जागरत जुगत इक्क समझाईआ। जोत जगे बेमिसाल, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां विच समाईआ। साचा सन्त सतिगुर पाया, जिस भावी मात मिटाईआ। सेवक बण के सेव कमाया, सो सतिगुर संग समाईआ। बिन पढ़यां जिन हरि जस गाया, तिस मिले नाम वड्याईआ। बिन सुणयां जिस राग अलाया, तिस अन्तर वज्जे वधाईआ। बिन डिठयां जिस गले लगाया, सो साहिब सच्चा माहीआ। रातीं सुत्तयां जिस दरस दिखाया, कलयुग लुच्चयां कोलों बचाईआ। दर दर दे कुत्तयां कोलों छुडाया, कोई नौ दर मार ना जाईआ। जन्म जन्म दे रुठयां आप मनाया, आपणी भुल्ल आप बख्शाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तां संग सदा समाईआ। सन्तां अंदर वसे मीत, मित्र प्यारा नाउँ रखाइंदा। काया करे ठांडी सीत, जिस आपणी गोद बहाइंदा। लहिणा चुका हस्त कीट, कीट हस्त एका रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वखाइंदा। हरिजन वखाए आप हरि, लख चुरासी रिहा समझाईआ। जिन्ना मेलया आपणे दर, तिस मिले माण वड्याईआ। जगत विछोड़ा चुका डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। इक्को नाउँ हरी हरि, हरि रंगण दए चढ़ाईआ। हरि कृपाल किरपा देवे कर, जे मन्ने साचा माहीआ। कोझी कमली लाए लड़, अन्धले मार्ग पाईआ। भँवरी डूँघी विच्चों लए फड़, समुंद सागर लए तराईआ। लेखा जाणे चेतन जड़, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सूखम खेल आपे कर, कारन आपणी धार चलाईआ। कलयुग सन्त इक्क दूजे नाल रहे लड़, रसना जिह्वा पई लड़ाईआ। दिवस रैण पोथीआं पढ़ पढ़, थोथी मति कराईआ। इक्क ना मिल्या पुरख नर, नारी रंड दए दुहाईआ। कन्त कन्तूहल ना आवे घर, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। जगत सुहाग गया मर, वेखे सर्ब लोकाईआ। झूठा हार शृंगार रहे कर, हरि कन्त सेज किसे ना भाईआ। अंदरों झूठे बाहरों आउँदा डर, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। बौहड़ी बौहड़ी रहे कर, प्रभ देवणहार सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाईआ। कलयुग सन्त करन पुकार, कूक कूक सुणाया। विश्व करे ना कोए प्यार, वेसवा रूप सर्ब वटाया। बिन हरि कन्त ना देवे कोए आधार, झूठे यार मुख भुवाया। अन्त किसे ना निभे नाल, साचा संग ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां लए मिलाया। साचे सन्त लए मेल, दूजे सन्तां संग तजाईआ। आपणयां सन्तां कोलों कोई ना करे वेहल, प्यार प्यार विच समाईआ। रातीं गुरू ते दिने चेल, चेला

गुरू खेल वखाईआ। साहिब दयाल सज्जण सुहेल, आप आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि साचे सन्तां संग रखाईआ। साचे सन्त लए चुण, हरि जू आपणी चोण कराया। चार युग दा जाणे गुण अवगुण, लहिणा आप मुकाया। सचखण्ड निवासी पुकार सुण, सुण संदेशा आप अलाया। आपे करे छाण पुण, साची सेवा सेव कमाया। कोई ना जाणे समाधी सुन्न, सुन्न समाध ना कोए रखाया। कोई ना जाणे आत्म धुन, धुनी नाद ना कोए वजाया। जूठ झूठ कहिण प्रभ मिल्या हुण, पढ़ पढ़ वाद वधाया। पुरख अबिनाशी जट्ट कोलों फराय घसुन्न, सब दा मुखड़ा दए भुवाया। बिन अग्नी देवे भुन्न, तत्ती वा इक्क वगाया। जिउँ भेडां उत्तों लहे उन, तिउँ साधां खल्ल धर्म राय दए लुहाया। जिहड़े कहिन्दे साडा निरगुण नाल लग्गा फ़ून, दिवस रैण रिहा सुणाया। उह सब दा लाहवे घुण, बण तरखाण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां अंग लगाया। हरि जू सन्त लए लभ्भ, लख चुरासी मात तजाईआ। अठ्ठे पहर विच रिहा फब, आपणे छहबर नाम लगाईआ। गुरमुख फिरन उच्चे पब, घट घट खुशी मनाईआ। तुरदयां फिरदयां मिल गया रब्ब, लभ्भण कोए किते ना जाईआ। बण नैण नाई ल्या सद्द, शब्द संदेशा इक्क घलाईआ। आपणी हथ्थीं दे के जावे अद्ध, भगत दुआरा दए बणाईआ। फेर साधां भन्ने हड्ड, जो झूठे राग अलाईआ। वेखो करे की खेल जट्ट, आपणी मोटी बुध वखाईआ। मोटे ढिड्ड भन्ने जिउँ डड्ड, हड्डी पसली नज़र कोए ना आईआ। बिन कबरों देवे दब्ब, मढ़ी मसाण ना कोए जगाईआ। आपणा भार जाण लद्द, जो झूठा सिर चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे सन्त आप उठाईआ। पहलां उठया हरि जू आप, आपणा रूप धराया। दूजे बणया माई बाप, मात पित खेल खलाया। तीजे वखाई आपणी ज़ात, निरगुण नूर रुशनाया। चौथा वखाया साचा घाट, साचे पत्तण डेरा लाया। पंचम खोल्ह्या इक्को हाट, बण वणजारा सेव कमाया। छेवें देवे साची दात, नाम निधाना झोली पाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण पुच्छे वात, दर घर साचे फेरा पाया। अठवें अठ्ठां तत्तां रख्या इक्क जमात, एका अक्खर आप पढ़ाया। नावें नौ दर वेखे मार झात, ओहला पर्दा आप चुकाया। दसवें खेल पुरख अबिनाश, हरिजन साचे लए मिलाया। चार जुग दे सच नगीने आपणी हथ्थीं लए तराश, साचा मीना रूप वटाया। शिवजी तक्के उपर बैठ कैलाश, नेत्र नैण उठाया। ब्रह्मा आपणी प्रगट करे आस, प्रभ अग्गे हाल सुणाया। इन्दर हो के बैठा उदास, हरि जू की की खेल रचाया। गुर अवतार कहिण साबाश, वाह वाह तेरी माया। लोकमात जन भगतां करे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाया। चलदयां फिरदयां कोल वसे सदा पास, अग्गे पिच्छे सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन

साचे संग निभाया। सिखां घर अंदर वड़न दा सच्चा राह, पहला घर वखाईआ। आवे जावे बेपरवाह, दिस किसे ना आईआ। करया खेल अगम्म अथाह, भेव कोए ना पाईआ। जे कोई नेत्र वेखे पंज तत्त नज़र जाए आ, सिँघ पूरन नाम सुणाईआ। जे कोई अंदर वेखे बैठा शहिनशाह, साचे तख्त सोभा पाईआ। बिन बेड़यों बणयां मलाह, आपणे बेड़े लए चढ़ाईआ। इक्को वार दिती सलाह, दूजी करे ना फेर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त आप मिलाईआ। सोई सन्त सुघड़ सुजान, जिस हरि जू मेल मिलाया। सो दर होए परवान, जिस पर्दा मोह चुकाया। सो जगत होए निशान, जिस निशाना नाम घड़ाया। जिन्हां लेखा लिख्या प्रभ आण, लेखा लेखे विच वखाया। जिन्हां नानक कर के गया परवान, सो परवाने लए उठाया। जिन्हां गोबिन्द दे के गया दान, तिन्हां दात झोली दए वखाया। जिन्हां अन्तर कह के गया कृष्ना काहन, रसना जिह्वा बोल सुणाया। जिन्हां माण दिता राम भगवान, ममता मोह मिटाया। कलयुग अन्तिम कढ्ढे कीते आण, इक्को घर बणाया। कोई लभ्भण ना जाए विच बीआबान, ढूँग्घी कंदर ना फोल फुलाया। कोई बैठे ना विच मसाण, धूणी अग्न ना कोए तपाया। कोई मंगे ना अञ्जील कुरान, वेद पुराण ना कोए मनाया। कोई बाणी ना करे ध्यान, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाया। जिस साहिब होया मेहरवान, मेहर मेहर मेहर नज़र आप कराया। कर किरपा मेलया आण, मिल मिल आपणा शुकर मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सन्त बणाया। साचे सन्त आप जगा, जुग जुग लहण चुकाइंदा। आपणे रंग आप रंगा, कूड़ा रंग धुवाइंदा। बत्ती दन्द आप सलाह, सिफ्त सलाह जणाइंदा। चन्द नौ चन्दी आप चढ़ा, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। तार सतार तन्दी आप वजा, तलवाड़ा नाच नचाइंदा। मृदंग मृदंगी दए सुणा, मृदंगा खेल वखाइंदा। कन्ढ्ढी डेरा बैठा ला, आपणा पन्ध मुकाइंदा। वरभण्डी वंडी रिहा पा, आपणी वंड आप जणाइंदा। भेख भखण्डी दए मिटा, स्वांगी आपणा स्वांग रचाइंदा। इक्को डण्डी दए वखा, एका मार्ग लाइंदा। सृष्टी अन्धी लए उठा, आप आपणा बल धराइंदा। तुरकी हिन्दी लए समझा, सिन्धी नाल मिलाइंदा। होड़ा बिन्दी बणे गवाह, साचा संग रखाइंदा। नार कन्त लए मिला, बसन्त रंग चढ़ाइंदा। बेअन्त रूप आप खुदा, खुदी सर्ब गवाइंदा। राम रूप मात धरा, रहिमत आप कमाइंदा। सही सलामत शहिनशाह, झूठी अलामत सर्ब मिटाइंदा। हरि सन्त साचे लए मिला, मिल मिल आपणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे तन्द सतार वजाइंदा। तन्द सतार बणे जग किल्ली, सारंग नाल बंधाईआ। मन वासना बण के बिली, मिआउँ मिआउँ कर कर रही डराईआ। साधां सुरती वेखो हिल्ली, कूकण देण दुहाईआ। पुरख अबिनाशी भगत दुआरे इट्ट लाउण ना दिती कोई पिल्ली, पीला सब दा रंग कराईआ। पुराणी दिल्ली

वेखो हिल्ली, हिलाउण वाला रिहा हिलाईआ। साधां कोलों लग्गी रहे ना किल्ली, सब दी जड़ उखड़ाईआ। अन्तिम लंगोट होए ढिल्ली, संगल धार ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त वेख वखाईआ। साचे सन्त वेखे सूरबीर वड्ड बलवान। प्रभ आशा मनशा इक्को वार दिती पूर, लोकमात झुल्ले निशान। चल के आया नेड़े जो वसे दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। एका देवे सति सरूर, सति प्याला जाम प्याया। एका देवे नेत्र नूर, नूर नूर नाल प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाया। साचा सन्त जिस बणे विचोला, सच साचे नाल मिलाईआ। सिख गुर दा कोई ना ओहला, गुर गुरसिख बूझ बुझाईआ। जेहड़ा सतिगुर अंदरों होए पोला, सो बैठा मुख छुपाईआ। बाहरों खूब सुणाए गा गा ढोला, जगत राग अलाईआ। अंदर वड़े मन पाए रौला, अगली सुध भुवाईआ। बाहर आए करे तोबा हाए मौला, मेरी तबा दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त विचोले सदा रखाईआ। साचे सन्त संग जो रखे साथ, हरि साची दया कमाइंदा। अक्खीं वेखो इकीआं इकीआं बणाया साथ, इक्क इक्क नाल इक्की इक्की होर मिलाईआ। जे होर मंगण पूरा कर दए घाट, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां दए वड्याईआ। एथे वसण धुरदरगाही सन्त, जिन्हां सतिगुर पुरख मनाया। लोकमात बणी बणत, बणावणहारा आप आया। पार कराए लख चुरासी विच्चों जीव जंत, मन्त्र आपणा नाम पढ़ाया। क्या कोई जाणे पांधा पंडत, पत्तरी वाच क्या समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त आप उपाया। एथे सन्त वसे उह, जिन्हां इक्को ओट रखाईआ। भैणां भाईआं तजया मोह, सतिगुर सच्चा मोह वखाईआ। बिन नेत्रां करी लो, लोयण आप जणाईआ। आप गुरमुखां जोगा गया हो, आपणी वस्त ना कोए रखाईआ। धुरदरगाही लै के आया ढोआ ढो, साची वस्त दए वरताईआ। जो जन इक्क वार चरन गया छोह, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। वेखो की कुच्छ देवे छब्बी पोह, वदी सुदी ना कोए वड्याईआ। गुरसिखां अग्गे आपणा आप देवे कोह, साची घालण घाल वखाईआ। पूरब जन्म जन्म दी मैल देवे धो, आपणी हथ्थीं साफ कराईआ। गुरसिखां दा रोणा आपे देवे रो, गुरसिख कोए रोण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। एथे वसण सन्त सुत, जिन्हां मिली जगत वड्याईआ। मिल्या हरि अबिनाशी अचुत, चेतन रूप वखाईआ। एका वार गया उठ, सब दी नींद दए खुल्हाईआ। बण सोमां अंदर गया फुट्ट, अमृत धार वहाईआ। निर्मल नूर बणया जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। गुरसिखां उत्ते होया आप मोहत, आपणा मोह मिटाईआ। साचे सन्त एहो बहुत, जिन्हां लेखा दिता लिखाईआ।

भेखा धारी फिरदे कोटी कोट, वेस अनेक वटाईआ। पेट पालदे खा खा रोट, दर दर अलख जगाईआ। लाटां वाली तक्कण ओट, लाल बस्त्र तन छुहाईआ। काम वासना भरी ना पोट, मन वासना फिरे हल्काईआ। भंग प्याले पीते घोट, नाम खुमार ना कोए चढ़ाईआ। अक्खीं मीट कहिण साडे खुल्ल्हे सोत, खुल्ही मींढी जगत रहे वखाईआ। बिन ज्ञान हलावण होट, गुरू चेल्यां रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप बणाईआ। एथे वसण साचे सिख, जिन्हां सिख्या हरि सिखाईआ। पारब्रह्म प्रभ लेखा लिख, लिख लिख पाती सर्ब पुचाईआ। लख चुरासी वन्डया हिस्स, हिस्सा आपणा आप कढ्ढाईआ। कर किरपा जिन्हां गया दिस, तिन्हां भाण्डा भरम भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त आप जणाईआ। साचा सन्त धुर दा लाड़ा, लाड़ी मौत ना कदे प्रनाइंदा। पुरख अबिनाशी मल्ल दुआरा, दर घर साचा आप सुहाइंदा। करे खेल अपर अपारा, आप आपणी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां आपणी गोद सुहाइंदा। जगत सन्त ना एथे आए, दर लहिणा ना कोए रखाईआ। भरम भुलेखे सब नूं पाए, माया ममता नाल रलाईआ। जिस दा करदे रहे चेते, सो चित विच ना कदे समाईआ। जिस दा लभ्भदे फिरदे भेते, आपणा भेव ना किसे खुल्हाईआ। गुरमुख विरला झूझे रण गुर चरन खेते, तन आपणा भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सन्त बणाईआ। मुअकर रचना कर के जाए मुक्कर, आपणा मौका ना किसे जणाईआ। युग युग देंदा रहे उतर, जो जन मंग मंगाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप ना बणया किसे दा मित्र, मित्र बणाए सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाईआ। मुरक्कब रच ना करे शुकर, आपणा शुकर मनाया। हरि का खेल नार पुरख ना कोए खुसर, रूप रंग रेख ना कोए जणाया। भेव ना जाणे कोए दूसर, दूसर भेव ना कोए खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाया। स्त्री पुरष ना कोए भेत, हरि इक्को रंग समाया। सब नाल करे सांझा हेत, जो जन चरनी आया। कर प्रेम जन लैणा वेख, सब दी पूरी आस कराया। आपणा पूरा करे नेम, कीता नेम भुल्ल ना जाया। जा फड़या उपर कुण्ट हेम, हेम कुण्ट फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, स्त्री पुरष ना कोए रखाया। स्त्री पुरष इक्को ज़ात, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। जगत जुगत बंधे नात, नाता बिधाता इक्क समझाईआ। इक्क दूजे दी पुच्छण वात, वातावरन आप बणाईआ। जो स्त्री बणे नार कमज़ात, आपणा पुरख भुलाईआ। पुरख अबिनाशी सदा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग सर्ब समाईआ। नारी पुरष

जगत विहार, लख चुरासी बणत बणाइंदा। अंदर वड़ जो वेखे निरँकार, बिन नूर नज़र होर कोए ना आइंदा। पंज तत्त चोला दिता आधार, अंग अंग आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म इक्को इक्क वखाइंदा। मृगान झाड़या मिल्या मरद, मर्द मर्दाना खेल खलाईआ। जिस उलटी कीती नरद, सार पाशा खेल खलाईआ। दुष्ट दमन ठरया सर्द, सब सर्दी दए मिटाईआ। बण दर्दी वंडाई दरद, आपणा दर्द रखाईआ। हलाल होया बिन करद, छुरी प्रेम चलाईआ। फड़ बाहों ल्या वर्ज, आप आपणे गले लगाईआ। मैं आपणा पूरा करां फ़र्ज़, तेरा राह वखाईआ। लोकमात जाणा गरज, लोकमात राह तजाईआ। तेरा होण ना देवां हर्ज, तेरी भगती लेखे पाईआ। तेरा लाहवां सारा कर्ज़, असल सूद नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी हथ्थीं भगतां दी मेटां दरज, विथ कोए रहिण ना पाईआ। गोबिन्द अग्गों करे अरज, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तैनूं आदि जुगादी मरज़, दे लारा दएं तरसाईआ। मैं आपणे जोगा मंगां ना कोई खरच, आपणी झोली ना अग्गे डाहीआ। मैं बालक बण के गया वरच, तेरा प्रेम मेरी वस्त इक्क वड्याईआ। तूं मेरे उत्ते करना तरस, दयावान दया कमाईआ। नित नवित देणा दरस, रूप अनूप वटाईआ। मैं वेखां अर्श फर्श, फ़लक तेरी होए रुशनाईआ। अमृत मेघ देणा बरस, बूंद स्वांत चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगाईआ। हेम कुण्ट दी ना कोई मिसाल, मिसरा लिखण विच कोए ना आईआ। एथे वसे दीन दयाल, उथे दुष्ट दमन रिहा ध्याईआ। दुष्ट दमन बाहों फड़ ल्या उठाल, आपणी सेवा लाईआ। एथे बैठे श्री भगवान, आपणा हुक्म जणाईआ। भेव ना पाए कोई ज्ञान, ज्ञाता नज़र कोए ना आईआ। ना कोई वेखे सच निशान, कवण खेल हरि हेम कुण्ट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आपणे विच रखाईआ। हेम कुण्ट जाईए ठर, आपणा ठरक गंवाया। बिन छन्नों जाईए वड़, आपणा आप भुलाया। साचे मन्दिर जाईए वड़, घर सच्चे सोभा पाया। पुरख अबिनाशी लईए फड़, आप आपणा बन्धन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हेम कुण्ट अदरश, दरस ना किसे कराया। कोटन कोटि हेम कुण्ट, प्रभ चरन राह तकाईआ। पहाड़ पत्थर होए रंड, टुंड सारे नज़र आईआ। साधां सन्तां वेखो बैठे जुंड, जुंडली बन्नू बन्नू राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा चरन सचखण्ड दुआर बणाईआ। हेम कुण्ट वसण काँ कुत्ते, भोग बलास कराईआ। हेम कुण्ट वसन अजूनी रुद्दे, प्रभ दिती इक्क सजाईआ। हेम कुण्ट वसण जो टंगे पुट्ठे, रातीं सुत्तयां नींद ना आईआ। हरि चरन गुरमुख विरले सुत्ते, जिस आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हेम कुण्ट इक्को गोबिन्द दिती वड्याईआ। हेम कुण्ट

फिरन सूहे, झाड़ी झाड़ी ताक लगाईआ। गोबिन्द खोल्हे ना किसे बूहे, घर आपणा ना किसे वखाईआ। निउँ निउँ वेखण अग्गों दिसण चूहे, झाड़ां विच बैठे सीस लुकाईआ। ना बुत्त ना रूहे, रूह बुत्त दोवें देण दुहाईआ। प्रभ ने सुट्टे डूँग्घे कूंएं, ना कोई सके बाहर कढ्ढाईआ। साडी बिल ना कोए छूहे, अगांह हथ्थ ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप जणाईआ। हरि का चरन वड्डा घर, गुरमुख विरले पाया। जिस दर वड़यां चुक्के डर, भय ना कोए रखाया। दर आए जन जाए तर, तारनहार होए सहाया। आपणी हथ्थीं बाहों लए फड़, फड़ फड़ आपणी गोद बहाया। किरपा कृपाल लए कर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगाया। पिसर पिदर जन बणे मादर, मधू जाम प्याईआ। दर आयां देवे आदर, आपणा दरस दिखाईआ। करीम करता हरि जू कादर, कुदरत वेख वखाईआ। सिदक सबूरी वेखे साबर, घर घर फेरा पाईआ। ज़ोरू ज़र वेखे आबरू आबर, आप आपणी दया कमाईआ। गुरमुख विरला जगत बहादर, सच बहादरी इक्क वखाईआ। हरि चरन बणे सौदागर, एका वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ। सज्जे चरन दा इक्क अंगूठा, अंगुसत वेख वखाईआ। खाली भरे फेर ठूठा, अमृत धार वहाईआ। देवे रस इक्क अनूठा, आपणी दया कमाईआ। गुरमुख बणे साचा बूटा, लोकमात हरा कराईआ। ब्रह्म देवे इक्को हूटा, सच हुलारा नाम लगाईआ। पिता पूत खेल वेखे पोता, घर साचे वज्जे वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोता, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। प्रभ देवणहारा इक्को गोता, आपणे ताल विच डुबाईआ। ब्रह्मे सीस लाया जो पंजवां खोता, सो पहलों दए कटाईआ। गुरसिख देवे अमृत बहुता, आपणा चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्याला इक्क वखाईआ। चरन अगूंठा अमृत रस, अमर अमर कराइंदा। जो जन रस लए चक्ख, चिखा अन्त ना कोए जलाइंदा। दे दरस लवे रख, वेले अन्त आप मिलाइंदा। धूह लिआउण तेड़ों लंगोटी कच्छ, कपड़ तन ना कोए हंढाइंदा। कलयुग साधां खा खा थक्के मच्छ, जो जल धार देह कराइंदा। गुरमुखां मार्ग देवे दस्स, साचा राह आप चलाइंदा। अन्तिम वेले आए नस्स, आप आपणी गोद उठाइंदा। सचखण्ड दुआरा जाए वस, जिस घर गुरमुख सोभा पाइंदा। जिन्ना चिर गुरसिख ना कहे बस बस, बसता बन्न्ह ना हिसाब मुकाइंदा। दे के वस्त पए हस्स, आपणी खुशी मनाइंदा। छिन्न अंदर जाए नस्स, आपणा मुख लुकाइंदा। सिँघ पूरन अंदर वस, वास्ता आपणे नाल रखाइंदा। आप गावे भगतां जस, आपणा जस वेद पुराणां कोलों कराइंदा। बिन मिठिउँ देवे रस, चरन कँवल नाल छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अमृत जाम प्याइंदा। साचा अमृत प्रेम रत्त, रत्ती

३७
११

रत्त नाल मिलाईआ। गुरमुख अंदर लैणा घत्त, घात काल ना कोए वखाईआ। तेरे अंदर ब्रह्म मति, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। भगत तेरे दुआरे पई छत्त, छत्ती युग देण गवाहीआ। कलयुग साधां चुक्की अत, सब दी करे सफाईआ। आपणा रख्या डूँग्घा खात, ना सके कोए भराईआ। गुरसिख लभ्भे मार झात, आप आपणे लए उठाईआ। बिन सद्दयां पुच्छे वात, पुच्छ पुच्छ आपणी ख़ुशी मनाईआ। आओ दयो मेरा साथ, सचखण्ड वसो एका थाईंआ। जिथे इक्को इक्क ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। उथे पढ़े ना कोए लुग़ात, अल्फ़ ये ना कोए वखाईआ। प्रभ देवे सच सुग़ात, सोभा आपणे नाम समझाईआ। ना कोई दिवस ना प्रभात, काली रैण ना कोए डराईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई घाट, मन्दिर मस्जिद ना कोए वखाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, मस्तक तिलक ना कोए लगाईआ। इक्को दरस कमलापात, कर दरस तृखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख रखे इक्को जमात, पहली दूजी ना कोए पढ़ाईआ। इक्को जमात इक्को अल्फ़, इक्को इक्क पढ़ाइंदा। आपणा लै के आया हल्फ़, गुरसिख आपणे नाल मिलाइंदा। नारी पुरष ना पावे फ़र्क, बिरध बाल ना वंड वंडाइंदा। मेहरवान कीता तरस, दयावान दया कमाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, लग्गी हवस पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे नाल रखाइंदा। आओ चलो मेरे नाल, प्रभ आपणी दया कमाईआ। तुसीं शाह ते मैं कंगाल, तुहाढ्ढे नाल मेरी रसाईआ। मैं ख़ाक तुसीं रुमाल, पूंझ लैणा वाहो दाहीआ। तुसीं ख़ुशहाल मैं बेहाल, दर दर अलख जगाईआ। गुरसिख तेरा विंगा ना होवे वाल, सिर आपणे भार उठाईआ। आओ रल मिल इक्क दूजे नूं लईए भाल, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। तुसां मेरा करना हल्ल सवाल, पट्टी तुहाढ्ढे हथ्थ फड़ाईआ। आपणी सुरत लैणी संभाल, सूरत साची इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव चुकाईआ। आओ एथों चलीए भज्ज, लोकमात दए दुहाईआ। सचखण्ड दुआरे बहीए सज, घर साचे वज्जे वधाईआ। मैं तुहाढ्ढा दरस करां रज्ज रज्ज, फेर होवे ना कदे जुदाईआ। जगत प्यार विच लाउणा ना अज पज, झूठा नाता भैण भाईआ। इक्क दूजे दा पर्दा लईए कज्ज, गुर चेला रूप वटाईआ। प्रेम प्यार अंदर जाईए बज्झ, ना कोई सके गंढ्ढ खुल्हाईआ। बिन तार सतार अनाद अनादी बण जाईए वज्ज, अनरागी आपणा राग अल्हाईआ। पहलों लोकमात जगत नालों होणा अड्ड, भगत दुआरे आसण लाईआ। फेर विच्चों लए कढ्ढ, आपणे कंध उठाईआ। वारो वारी सचखण्ड आवे छड्ड, आवे जावे बेपरवाहीआ। मिल संगत वंडी वंड, गुरमुख आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाढ्ढा रिहा राह तकाईआ। राह तक्के साचा माही, महिमां भगतां आप जणाइंदा। जुग जुग तुहाढ्ढी वेखी फाही, तुहाढ्ढा फंद ना कोए कटाइंदा।

धू प्रहिलाद देण गवाही, भगवान भगतां पिच्छे फेरा पाइंदा। आओ उठो बणो राही, पाँधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। गोबिन्द बूटा पुट्टया काही, सब दी जड़ उखड़ाइंदा। गुरमुख विरले धोवे शाही, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। झीवर छींबे जट्ट बणो भाई भाई, ज़ात पात सर्ब गवाइंदा। पिछली घाल थाए पाई, अग्गे लेखा ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पकड़े आपे बाहीं, बल आपणा आप धराइंदा। तुहाढ्ढी खातर धरया बल, बावन भेव चुकाया। जोत अंदर जोती रल, जोती जोत डगमगाया। शब्दी धार सुनेहड़ा घल्ल, संसा रोग मिटाया। पूरब जन्म दिता फल, वस्त अमोलक झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आपणा रस चखाया। अमृत पी पाए अमरापद, अमर अमर कराइंदा। जिन्हां दुआरे ल्या सद्द, तिन्हां पार कराइंदा। जगत जुगत दी पार हद्द, सच किनारा इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत जाम इक्क प्याइंदा। वीह सौ वीह सदा बेख़बर, ख़ाब विच किसे ना आईआ। गुर अवतार बैठे कर कर सबर, ना जाम मुख लगाईआ। ईसा मूसा सिर तक्कण काअबा कबर, कबरस्तान निगह टिकाईआ। कवण मर्द मर्दाना होए ज़बर, जीव रीत दए बदलाईआ। सब दी वेखे आबरू अबर, अबज़रवर होवे सच्चा माहीआ। सृष्ट सबाई करे पध्धर, गदर दए मिटाईआ। भगतां पूरी करे सधर, सदका आपणा इक्क जणाईआ। आपे शेर आपे गिद्दड़, आपे सिँघ जम्बक खेल खलाईआ। आपे लुकया रहे पा दलिद्र, दिस किसे ना आईआ। आपे दया कमाए जिउँ ग़रीब निमाणे बिदर, साग अलूणा खाईआ । आपे जन भगतां पिच्छे भाउँदा फिरे इधर उधर, उधर इधर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ । बण विचोला मारे फेरे, दो दो धारा राह चलाइंदा। आपणे गुण दस्सां केहड़े केहड़े, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जिध्धर वेखो झेड़े झेड़े, झेड़ा जगत ना कोए मुकाइंदा। किधर भरे डोबे बेड़े, किधर डुब्बे पार कराइंदा। करे कराए हक़ नबेड़े, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। इक्को जन भगतां आया घेरे, घेरा कोए ना मात तुड़ाइंदा। दूर वसदे आ गए नेड़े, पिछला पन्ध मुकाइंदा। गुरसिखां बिन बेदीउँ लै लए फेरे, लांव जगत ना कोए पढ़ाइंदा। आ के वड़ना खुल्ल्हे वेहड़े, सतिगुर पूरा जो बणाइंदा। गुरसिख बैठे रहे कर के वड्डे जेरे, कवण वेले हरि जू आइंदा। लहणे चुक्कण मेरे तेरे, तेरा उधार ना मोहे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग चढ़ाइंदा। बिन ग्रंथी होए विवाह, वाह वाह हरि जू ख़ुशी मनाईआ। छब्बी पोह साह सुधा, गानां सगन हथ्थ बन्हाईआ। नाम कलीरा देवे पा, प्रेम मौली तन्द बंधाईआ। साची बिन्दी रंग चढ़ा, लाल गुलाला वेख वखाईआ। नेत्र नैणां सुरमा पा, कज्जल धार इक्क वखाईआ। सीस मींढी इक्क गुंदा, कन्त सुहाग लए

प्रनाईआ। रतड़े डोले लए बहा, चार युग कहार बणाईआ। हौली हौली दए सुणा, साचा ढोला आपे गाईआ। मेरी झोली देणी पा, मेरी वस्त ना कोए रखाईआ। मेरे दुआरे कोई ना जावे आ, चार युग अग्गे चरन ना कोए उठाईआ। गुरसिख गुर सतिगुर आपणी उँगली लए ला, आपणा पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड दुआरे दए बहा, देवे माण वड्याईआ। साची सेजा दए वछा, प्रेम विछाउणा इक्क बणाईआ। मेला मेले सहिज सुभा, घर साचे वज्जे वधाईआ। गलवकड़ी बैठे पा, ना सके कोए तुड़ाईआ। नारी कन्त ल्या मना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग समाईआ। नारी कन्त होया प्यार, सचखण्ड साचा सोभा पाइंदा। मेला मिल्या पुरख करतार, करता पुरख दया कमाइंदा। आपे जाणे सच विहार, बिवहारी धार चलाइंदा। सोभावन्त सुलखणी नार, साचे दर बहाइंदा। इक्क कराए सति शृंगार, सोलां शृंगार मुख शरमाइंदा। आपणा देवे दरस दिदार, नैण नैणां नाल मिलाइंदा। गुरमुख नैण होए शर्मसार, चरन कँवल ध्यान रखाइंदा। तेरी ओट मेरे भतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। तेरी ओट मेरे माही, मैं इक्को आस तकाईआ। धन्न भाग तूं प्रनाई, मैं तेरी इक्क अख्वाईआ। जन्म जन्म दी धोई शाही, दुरमति मैल रही ना राईआ। बण निमाणी तेरी सेव कमाई, तूं निमाणयां होएं सहाईआ। बण राणी तेरे घर विच आई, हाणीआं हाण मिलाईआ। जुग दी विछड़ी आप पछाणी, पछोतावा दिता मुकाईआ। कोटन कोटि जन्म तेरी सुणदी रही बाणी, बिन तेरे डिठयां शांत ना आईआ। अठसठ तीर्थ फोलदी रही पाणी, तेरा अमृत ना कोए प्याईआ। कोटन कोटि वार कन्त हंढाया जगत सवाणी झूठी सेज हंढाईआ। जुग चौकड़ी तेरी विहाणी, तेरा भेव कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम होई मेहरवानी, मेहरवान दिती वड्याईआ। आपणी सुणाई अकथ कहाणी, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पल्ला ना कदे छुडाईआ। तेरा पल्लू ल्या फड़, कन्त सुहागी हरि कन्तूहल। तेरे मन्दिर आई चढ़, मैं बाली बुध अनभूल। जद वेखां मैनूं आवे डर, मेरा हीआ जाए डोल। तूं आपणी किरपा इक्को वार कर, मैं रहां सदा अतोल। तेरे चरन नुहावां साचे सर, तेरे चरन जावां मौल। तूं मिल्या मैनूं इक्को वर, मेरा पूरा कीता कौल। लोकमात धीआं पुत्तर जन, जम्मी मरी उपर धौल। अन्त कलयुग तेरे नाल गई मन्न, तुध बिन मेरी सुणे कौण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी ठंडी पौण। दर तेरे दी मैं प्यासी, पीआ पीआ रही कुरलाईआ। लोकमात जीव जंत करन हासी, फिरदी वांग शौदाईआ। इहनां विच्चों कर मेरी बन्द ख़लासी, बन्दीख़ाना दे तुड़ाईआ। तेरी जोत मात प्रकाशी, मेरा अन्धेरा दे गंवाईआ। तूं किसे ना लम्भया पंडत कांशी, मुलां शेख़ राह तकाईआ। तूं लुकया बण घनकपुर

वासी, घनईया तेरी सेव कमाईआ। तेरी उडीक रखी ख़ासी, नेत्र नैण नैण उठाईआ। मैं तेरे बिना होई उदासी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। तेरे विछोड़े नालों चंगी फाँसी, आपणी हथ्थीं फट्टे उत्ते दे चढ़ाईआ। नहीं ते कर चरन दासी, साची सेवा इक्क समझाईआ। जिउँ गुरमुख आत्म होई प्यासी, तिउँ संगत रही बिल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं जोबनवन्त, मेरा जोबन ना किसे हंढाया। मैं आदि जुगादी इक्को कन्त, गुरमुख विरले पाया। कोटन कोटी बणे रहे मंगत, अग्गे झोली रहे डाहया। मैं किसे ना लाया अंगत, अंगीकार ना कोए कराया। गुर अवतारां दिती रंगत, लोकमात रंग चढ़ाया। कलयुग अन्त हरिसंगत बणाई संगत, संग आपणा आप रखाया। आपे बणया हरि प्रबंधक, साची सेवा आप कमाया। आपे बणया हरि जू पंडत, पढ़ पढ़ आपणा भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां रिहा जणाया। दो जहानां सच्चा लाड़ा, इक्को इक्क अख्वाईआ। जुग जुग सारे कढ्ढदे गए हाढ़ा, अग्गे सीस झुकाईआ। निउँ निउँ करदे गए निमस्कारा, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का लाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप वखाईआ। जन भगतां करे सच प्यारा, आपणी भगती आप जणाईआ। मेल मिलाया पहली वारा, सतिजुग साची धार वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, समुंद सागर शाही रही कुरलाईआ। बनास्पत रोवे ज़ारो ज़ारा, अठारां भार दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत आपणे अनन्द समाईआ।

★ ६ मग्घर २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

एका ओट हरि हरि स्वामी, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि सदा निहकामी, निहकर्मी कर्म कमाईआ। घट घट अन्तर अन्तरजामी, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। नाद अनाद सुणाए अगम्मी बाणी, शब्दी शब्द धुन शनवाईआ। अमृत देवे ठंडा पाणी, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। आत्म परमात्म जाण जाणी, जानणहार वड वड्याईआ। एका देवे सच निशानी, नाम निधाना झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी इक्क अख्वाईआ। सच स्वामी हरि भगवन्त, एका रंग समाया। आदि जुगादि महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आया। हरिजन जाणे विरला सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। गढ़ तोड़े हउँमे हंगत, माया ममता मोह चुकाया। तन चाढ़े नाम रंगत, रंग रंगीला इक्क रंगाया। मेल मिलावा साची संगत, हरि सज्जण दए कराया। नाता तोड़े भुख नंगत, साची वस्त झोली पाया। माणस

जन्म ना होए भंगत, लख चुरासी दए कटाया। इक्क जणाए आपणा अनन्दत, निज आत्म कर रुशनाया। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ पढ़ हथ्थ किसे ना आया। जिस जन बणाए आपे बणत, तिस सतिगुर लए मिलाया। करे खेल जुगा जुगन्त, हरिजन साचे लए उठाया। एका नाम मणीआं मंत, मन का मणका दए भुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, सच स्वामी नाउँ धराया। सच स्वामी श्री भगवान, एका रंग समाइंदा। आदि जुगादी धुर फ़रमाण, हरिजन साचे आप सुणाइंदा। काया मन्दिर बैठ मकान, सच सिँघासण आसण लाइंदा। एका नाद शब्द धुन कान, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना आप झिराइंदा। आत्म जोती नूर महान, जोत निरँजण डगमगाइंदा। लेखा जाणे धुर दी बाण, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। खेले खेल दो जहान, दो जहानां वाली अख्वाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्यान, मंडल मण्डप सोभा पाइंदा। हरिजन हरि जू बिन पढ़यां देवे ज्ञान, आत्म ताक आप खुल्हाइंदा। नेत्र खोल्ह इक्क मेहरवान, दोए लोचण बन्द कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी नाउँ धराइंदा। सच स्वामी पारब्रह्म, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। ना मरे ना पए जम्म, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। आप प्रगटाए आपणा नाम, नाउँ निरँकारा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी आपणा भेव चुकाईआ। सच स्वामी आपणा नाउँ रख, हरि साचा खेल खलाइंदा। सचखण्ड दुआरे हो प्रतख, निरगुण आपणा नूर डगमगाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी खेल खलाइंदा। सच स्वामी आदि निरँजण, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान दर्द दुःख भय भंजन, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। जन भगतां देवे नेत्र नाम अंञण, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल धुवाईआ। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, दीनन होए सहाईआ। एथे ओथे दो जहानां साचा सज्जण, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी वड वड्याईआ। सच स्वामी सूरबीर, एका पुरख अख्वाइंदा। इक्क इकल्ला बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आइंदा। बदलणहारा आप तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ वखाइंदा। वेखणहार आप तकसीर, शरअ ज़ंजीर आप कटाइंदा। जल्वा देवे इक्क नूर ज़हूर ज़हीर, ज़ाहरा आपणी खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को स्वामी नाउँ धराइंदा। सच स्वामी बेऐब परवरदिगार, एका एक वड्डी वड्याईआ। मुकामे हक़ वसे सांझा यार, बेऐब नाम खुदाईआ। खेले खेल अपर अपार, अगम्म

अगम्मड़ी धार चलाईआ। राम रूप आप निरँकार, हर घट रमयां सच्चा साँईंआ। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा दिस ना आईआ। सचखण्ड निरगुण जोत कर उज्यार, साचा बंक करे रुशनाईआ। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़, दर दुआरा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। आपे वसे नारी कन्त, कन्त कन्तूहल आपणा खेल कराइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, सच स्वामी आपणे रंग समाइंदा। आपणे रंग रहे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। महल अटल उच्च मनार, सचखण्ड दुआर साचे सोभा पाईआ। ना कोई दीसे चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूरज चन्न ना कोए उज्यार, मंडल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। पृथमी आकाश ना कोए विहार, गगन मंडल ना सोभा पाईआ। एकँकारा इक्क इकल्ला कर पसार, आप आपणा वेख वखाईआ । शाहो भूप बण सिक्दार, शाह सुल्तान नाउँ अख्वाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, साचा हुक्म आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, सच स्वामी सदा सालाहीआ। सच स्वामी सालाहण योग, भेव कोए ना पाइंदा। ना कोई रस ना कोई भोग, बिलास रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई संजोग ना विजोग, विछोड़ा कदे ना हथ्थ रखाइंदा। ना कोई मुक्त ना कोई मोख, आपणी जोत रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता रोग ना कोए जणाइंदा। ना कोई किला ना कोई कोट, मन्दिर मट्ठ ना कोए रखाइंदा। ना कोई नाद शब्द धुन सलोक, गीत गोबिन्द ना कोए अल्हाइंदा। ना कोई नगारा ना कोई चोट, ना कोई ताल तलवाड़ा वजाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को निर्मल जोत, दूजा रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, हरि सच स्वामी खेल कराइंदा। सच स्वामी खेले खेल, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। निरगुण दीपक जोत जगे बिन बाती तेल, हरि पुरख निरँजण आप जगाईआ। एकँकारा वसे धाम नवेल, सचखण्ड दुआरे आसण लाईआ। आदि निरँजण अचरज खेल, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आप कराईआ। श्री भगवान सज्जण सुहेल, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा वक्त वेल, थित वार ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेल, मिल मिल साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, सच स्वामी आपणे घर सोभा पाईआ। साचा घर धुर दरबारा, धुर दरबारी आप बणाइंदा। इक्क इकल्ला वसे एकँकारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। आपे पुरख आपे नारा, कन्त कन्तूहल आपे सेज हंढाइंदा। आपे दाई दाया बण

सच्ची सरकारा, सेवक साची सेव कमाइंदा। आपे जननी जन करे प्रितपाला, पिता पूत गोद सुहाइंदा। आपे वणज आप वपारा, आपे साचा हट्ट खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, सच स्वामी भेव चुकाइंदा। सच स्वामी भेव खोल्ह, अभेद आप जणाईआ। आपणे अंदर आपे मौल, आपणा घर वसाईआ। आपे जाणे आपणा कौल, आपणी करनी आप रखाईआ। आपे तोले आपणा तोल, तोलणहार बेपरवाहीआ। आपे पर्दा आपे ओहल, आपे नूर नुराना डगमगाईआ। आपे वसे सदा कोल, आपे बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी दया कमाईआ। सच स्वामी दया कमा, आपणा रंग वखाया। सुत दुलारा एका जा, शब्दी नाउँ धराया। थिर घर साचे दिता बहा, सिर आपणा हथ्थ रखाया। एका गुण दिता जणा, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। साचा मार्ग इक्क वखा, एका राह चलाया। एका वस्त झोली पा, सच भण्डार भराया। एका ढोला आप सुणा, साचा नाउँ दृढ़ाया। एका चोला आप बदला, रूप अनूप आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे दए वड्याआ। थिर घर वसे शब्दी सुत, पुरख अबिनाशी आप बहाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। घर विच घर सोहे रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। ना कोई काया ना कोई बुत्त, हरि आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी साची वस्त वरताईआ। साची वस्त हरि निरँकार, शब्दी सुत वरताइंदा। त्रै त्रै मेला एका वार, एका गुण वखाइंदा। मेरा रूप निराकार, निरवैर आप जणाइंदा। मेरा नाउँ अगम्मी नाद, अनादी नाद वजाइंदा। तेरा खेल विच ब्रह्मांड, पारब्रह्म समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी बूझ बुझाइंदा। सच स्वामी दस्से राह, एका गुण जणाया। सुत दुलारे बण मलाह, साचा बेड़ा रिहा वखाया। निरगुण निरगुण पकड़े बांह, साची सेव कमाया। करे खेल बेपरवाह, भेव कोए ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह वखाया। साचा राह श्री भगवान, एका वार जणाईआ। निरगुण सरगुण वेख निशान, गुण अवगुण दए समझाईआ। बंस सरबंस कर परवान, वस्त अमोलक हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप बंधाईआ। साची धार चले अपार, अपरम्पर आप जणाइंदा। शब्दी खेल होए विचार, लेखा लेख ना कोए रखाइंदा। भगवन रूप करे अपार, रूप अनूप आप धराइंदा। आपे अंदर आपे बाहर, गुपत ज़ाहर आप हो जाइंदा। आपे पुरख आपे नार, जन जननी आप अख्वाइंदा। आपे सुत दुलारा करे प्यार, साची गोद आप बहाइंदा। आपे विश्व विष्नूं कर त्यार, आपणा रंग वखाइंदा। आपे अमृत ठंडा ठार, सच प्याला आप प्याइंदा। आपे कँवल कँवला हो उज्यार,

नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म पसार, ब्रह्म आपणी वंड वंडाइंदा। आपे शंकर कर उज्यार, साख्यात रूप हो आइंदा। तिन्नां विचोला एका वार, एका घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी वेस वटाइंदा। सच स्वामी वेस अवल्ला, एका एक कराया। वसणहारा सच महल्ला, दर घर साचा आप सुहाया। निरगुण निराकार फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणा गंढु पुवाया। विष्न ब्रह्मा शिव जोती धार रला, नूर नुराना नूर समाया। धुर फ़रमाणा सच संदेश एका घल्ला, एका नाउँ पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाया। साचा भेव आपे दस्स, हरि जू आपणी दया कमाईआ। आपे दिता आपणा रस, रस रसीआ आप हो जाईआ। अन्तर अन्तर आपे वस, आपणा नूर करे रुशनाईआ। आपे जोत आप प्रकाश, आपे रिहा डगमगाईआ। आपे दासी आपे दास, आपे सेवक सेव कमाईआ। आपे शाहो भूप शहिनशाह कहे शाबाश, शाह सुल्तान वड्डी वड्याईआ। आपे वसे सदा पास, आप आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। साचा भेव हरि निरँकारा, आपणा आप जणाइंदा। विष्नूं तेरा विश्व पसारा, साची सेवा इक्क रखाइंदा। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म अधारा, पारब्रह्म समझाइंदा। शंकर तेरी तिक्खी धारा, ना कोई मेट मिटाइंदा। तिन्नां विचोला एकँकारा, एका रंग वखाइंदा। साची सेवा अपर अपारा, हरि साचा सच समझाइंदा। दोए दोए जोड़ कर निमस्कारा, त्रै त्रै एका मंग मंगाइंदा। त्रै त्रै देवे वस्त हरि थारा, थिर घर साचे आप वरताइंदा। त्रै त्रै भर आप भण्डारा, सतो रजो तमो झोली पाइंदा। रजो तमो सतो करन निमस्कारा, निवण सो अक्खर इक्क वखाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, आपणी झोली इक्क जणाइंदा। तूं साहिब देवणहारा, हउँ याचक मंग मंगाइंदा। अतुट तेरा भण्डारा, तोट ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची मंग एका वार मंगाइंदा। साची मंग मंगी धुर दरबार, धुर दरबारी दया कमाईआ। त्रैगुण मेला एका वार, एका घर मिले वड्याईआ। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैनूं कवण करे प्यार, मेरा संग कवण निभाईआ। कर किरपा दे आधार, तेरे हत्थ वड्डी वड्याईआ। चौथा घर तेरा घर बार, ओथे कोए रहिण ना पाईआ। तूं घाड़त घड़या बण ठठयार, साडी बणत बणाईआ। ना कोई वेखे वेखणहार, नज़र विच किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त देणी वरताईआ। पहली वस्त तेरा सचखण्ड दुआरा, दूजे थिर घर मिले वड्याईआ। तीजे उपजाया तेरा शब्दी सुत दुलारा, चौथे विष्न ब्रह्मा शिव होई कुड़माईआ। पंजवें देणा सच सहारा, पंज तत्त नाउँ रखाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कर प्यारा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरे दर जगाई अलख, अलख बेपरवाहया। साडी लैणी पत्त रख, दर तेरे सीस झुकाया। आपणे नालों कीता वक्ख, त्रैगुण माया नाउँ धराया। साडा भाण्डा ना रहे सक्ख, सखणी झोली दे भराया। मैं तेरे चरनां रही तक्क, नेत्र नैणां नीर वहाया। तूं देणा मेरा हक़, साची वंडण वंड वंडाया। पंज तत्त मेरा साथ, सगला संग निभाया। निरगुण सरगुण चलाउणा राथ, बण रथवाही सेव कमाया। आपणा मार्ग देणा दस्स, भेव अभेव खुल्हाया। मेरी पूरी करनी आस, निरास कोए नज़र ना आया। मैं रहां तेरी दास, जुग जुग सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी देणा वर, दर तेरे सीस झुकाया। अबिनाशी करता वड मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। एका वार वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। बिन अक्खर देवे ज्ञान, बिन रसना करे पढ़ाईआ। एका नाद इक्क धुन्कान, एका राग दए सुणाईआ। सच संदेशा सुण लै कान, भुल्ल कदे ना जाईआ। तेरा खेल करां महान, महिमा जगत दयां वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपणे नाँ करन प्रधान, आपणी गंढु पवाईआ। पंज तत्त तेरा निशान, सच निशाना दयां वखाईआ। विष्नूं देवां इक्को दान, वस्त सति झोली पाईआ। ब्रह्मे बख्शां एका माण, ब्रह्म साची वंड वंडाईआ। शंकर देवां इक्क माण, एका शस्त्र हथ्थ फड़ाईआ। बणां विचोला हो मेहरवान, मेरे हथ्थ सच्ची शहिनशाहीआ। तेरा खेल वेखां विच जहान, एका रंग रंगाईआ। लोकमात करां प्रधान, सच प्रधानगी हथ्थ फड़ाईआ। तूं जुग जुग नार बणया रकान, तेरा जोबन जगत सर्ब हंढाईआ। तूं लख चुरासी वड़ें मकान, पंज तत्त किला कोट बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी खेल वेख वखाईआ। धन्न भाग प्रभ दिती दात, त्रैगुण आपणा सीस झुकाया। तूं साहिब मेरा कमलापात, हउँ तेरी सेव कमाया। मेरी ना कोई वक्ख रखीं ज़ात, ना कोई बन्धन बंध बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं निमाणी सीस झुकाया। मैं निमाणी डिग्गी दर, दर आपणी अलख जगाईआ। मेरे साहिब तूं दिता वर, वड तेरी वड्याईआ। लोकमात मिल्या घर, लख चुरासी डेरा लाईआ। सांतक रूप आपे कर, सति सतिवादी गुण समझाईआ। राजस रंग आपे रंग, वेखां खेल चाँई चाँईआ। तामस अग्नी आपे सड़, आपणी अग्न बुझाईआ। लख चुरासी अंदर वड़, वड़ आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्त लए मिलाईआ। त्रैगुण माया मंगी मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। लोकमात वजावां तेरा मृदंग, हथ्थ डोरू डंक उठाया। लख चुरासी अंदर लँघ, आपणा पर्दा देवां पाया। कोई ना सुणे तेरा छन्द, तेरा गीत ना कोए अल्हाया। पंज तत्त देवां परमानंद, रस भोग बलास वखाया। लेखा जाणां ज़ेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणा रंग

चढ़ाया। फेरां दरोही विच ब्रह्मण्ड, गगन पतालां फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्त लएं मिलाया। अन्तिम वेला दस्स भगवान, तेरे अग्गे रही कुरलाईआ। लोकमात फिरां मैं बण अंजाण, बाली बुध धराईआ। लख चुरासी कर परवान, घर घर करां कुड़माईआ। नाल रलावां पंज शैतान, पंजां तत्तां मेल मिलाईआ। मन मति बुध खोल्ह दुकान, जगत वणजारा लवां कराईआ। नौ दर खेलां खेल महान, मेरा भेव कोए ना पाईआ। तूं समरथ सिर हथ्थ रखणा वड मेहरवान, इक्क तेरी ओट रखाईआ। वेले अन्त करीं पहचान, मैं अनभुल भुल्ल ना जाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ इक्को ओट रखाईआ। इक्को ओट रखी आस, आसावंद पूर कराईआ। मेरी करनी बन्द खलास, बन्दी होर ना कोए पाईआ। सद वसां तेरे चरनां पास, चरन शरन मिले शरनाईआ। नाता तुट्टे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर ना कोए वड्याईआ। आदि अन्त मैं तेरी शाख़, साख्यात मेरे माहीआ। तुध बिन बणां नार कमज़ात, कमली कोझी दयां दुहाईआ । कवण वेला मेरा खोल्हें ताक, आपणे घर करें रुशनाईआ। लख चुरासी नाता तुट्टे सज्जण साक, बंधप कोए रहिण ना पाईआ। प्रभ मेलीं पाकी पाक, पत्तत पुनीत तेरी वड्याईआ। मेरी इक्को वार पुछीं वात, मेरे दुखड़े सर्ब मिटाईआ। तूं बैठा रहें इकांत, अकल कला अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाईआ। साची मंग करे पूर, पूरन पुरख समझाया । नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग लोकमात रहिणा ज़रूर, हरि जू ज़रूरत रिहा समझाया। कोटन कोटि जीव जंत लँघाउणे आपणे पूर, पूरा पूर ना कोए कराया। तैथों कोए ना रहे दूर, हर घट तेरा बन्धन पाया। तेरा रंग करे ग़रूर, जिस जन चढ़े सवाया। अन्तिम उडे वांग कफ़ूर, लोकमात रहिण ना पाया। तेरा भण्डारा कीता भरपूर, सिर आपणा हथ्थ रखाया। बिन भगतां माफ़ ना करां किसे दा कसूर, आदि जुगादि दयां सज़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाया। सुण बाल अजाणी बाली बुध, श्री भगवान रिहा समझाईआ। नव नौ चार कारज करना सुद्ध, लख चुरासी खेल खलाईआ। घट घट मन्दिर वड़ना कुद्द, आपणा बल रखाईआ। जुग चौकड़ी करना युद्ध, आपणा बल प्रगटाईआ। नज़र ना आउणा बुत्त, ना कोई वेखे वेख वखाईआ। आप सुहौणी आपणी रुत्त, पत डाली मात महकाईआ। तेरी जड़्ह ना सके कोई पुट्ट, लोकमात ना कोए उखड़ाईआ। तेरा मारया ना कोई सके उठ, ना चले कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त रिहा समझाईआ। वेला अन्त हरि समझाया, एका शब्द अल्हाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी तेरा खेल रचाया, विष्न ब्रह्मा शिव होए सहाईआ। लख चुरासी बन्धन पाया,

ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरी वंड वंडाया, कलयुग खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा दए समझाईआ। नव नौ चार तेरा लहिणा, लहणेदार समझाइंदा। तेरा बस्त्र तेरा गहिणा, तेरे तन हंढाइंदा। तेरा नेत्र तेरे नैणां, तेरा जगत वखाइंदा। अन्तिम तेरा मन्ने कहिणा, आप आपणी दया कमाइंदा। हरि का भाणा सहिणा पैणा, धुर फ़रमाणा हुक्म अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। आपणा भेव खोले भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। हरि जू वेस वटाए जुगा जुगन्त, गुर अवतार नाउँ रखाईआ। आपणी महिमा जाणे अणगिणत, बेअन्त वड्ड वड्याईआ। मेल मिलाए हरिजन साचे सन्त, सति सतिवाद बूझ बुझाईआ। सोभावन्त घर सुहाए जिउँ नार कन्त, कन्त कन्तूहल इक्क अख्वाईआ। चोली चाड़ रंग बसन्त, बसन्त रुत्त इक्क वखाईआ। आपणे हथ्थ रखे आदि अन्त, अन्त आदि आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त दए समझाईआ। तेरा वेला अन्तिम आउणा, त्रैगुण आप समझाया। पारब्रह्म प्रभ रूप वटाउणा, निरगुण नूर कर रुशनाया। जोती जोत डगमगाउणा, रूप रंग ना कोए रखाया। शाह पातशाह नाउँ धराउणा, शहिनशाह वड्डी वड्याआ। राज राजानां वेख वखाउणा, दो जहानां फेरा पाया। विष्न ब्रह्मा शिव उठाउणा, आपणा हुक्म सुणाया। चार युग वेख वखाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पर्दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाया। चार जुग दी पावे सार, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। चारे वेद करे विचार, ब्रह्म वेता नाल मिलाईआ। पुराण अठारां दए अधार, वेद व्यासा भेव खुलाईआ। शास्त्र सिमरत कर उज्यार, उजरत आपणी मंग मंगाईआ। लेख जाणे गुर अवतार, अगम्म पुरख वड वड्याईआ। गीता ज्ञान वेख किवाड़, अठारां अध्याए भेव चुकाईआ। भगत भगवान कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाईआ। एका देवे नाम निधान, निज आत्म करे रुशनाईआ। घर घर दर्शन देवे आण, आपणा आदरश वखाईआ। कलयुग खेल वेखे मेहरवान, आप आपणा बल वखाईआ। ईसा मूसा कर प्रधान, काला सूसा तन छुहाईआ। मुहम्मद नाल अल्ला राणी नार रकान, एका मेला सहिज सुभाईआ। अञ्जील कुरान हदीस परवान, जहान करे पढ़ाईआ। कलमा कलाम उपजा प्रधान, नबी रसूलां दए समझाईआ। मुकामे हक़ इक्क निशान, हक़ हक़ीक़त दए वखाईआ। लाशरीक दए पैग़ाम, पैग़म्बर रूप वटाईआ। आपे जुग जुग करे सलाम, अलैकम आपणी कल वरताईआ। आपे होए बेपहचान, बेनज़ीर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण माया रिहा समझाईआ। त्रैगुण माया सुण कन्न ला, करता पुरख जणाइंदा। पंज तत्त तेरा बंक सुहा, ब्रह्म पारब्रह्म प्रगटाइंदा। आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ा, घर

साचा सोभा पाइंदा। ईश जीव लए मिला, जागरत जोत डगमगाइंदा। साची सेजा सोभा पा, सिँघासण आसण इक्क वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्लाइंदा। तेरा अन्तिम चुक्के पन्ध, वड पाँधी दए चुकाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे सूरा सरबंग, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। निरगुण रूप प्रगट होए ना कोई वखाए रंग, रंग सब दे वेख वखाईआ। हर घट आत्म सेजा वसे पलँघ, सच सिँघासण रिहा सुहाईआ। इक्क वजाए नाम मृदंग, मर्द मर्दाना बेपरवाहीआ। डूँग्घी भँवरी वेखे लँघ, काया कवरी फोल फुलाईआ। लहिणा देणा जाणे सूरज चन्द, रवि ससि वेखे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण तेरा मूल चुकाईआ। तेरा मूल अन्त चुकाउणा, एका वार समझाया। निरगुण आपणा जामा पाउणा, जोत वेस वटाया। निहकलंक नाउँ रखाउणा, ब्रह्मण्ड करे रुशनाया। नाम डंका इक्क वजाउणा, चारों कुण्ट सुणाया। चार वरन आप समझाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लए उठाया। चारे वेदां वेख वखाउणा, चारे युग लए प्रनाया। चारे खाणी पर्दा लौहणा, चारे बाणी लए पढ़ाया। चार यारी पन्ध मुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाया। चार जुग पार किनारा, जुग चौकड़ी पार कराईआ। प्रगट हो विच संसारा, संसार सागर वेख वखाईआ। कवण गुरमुख लग्गा इक्क किनारा, डूँग्घी भँवर पार कराईआ। कौण मिले मित्र प्यारा, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्लाईआ। सुण संदेशा कर ध्यान, त्रैगुण अतीता आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम निहकलंक प्रगट होवे बली बलवान, मात पित ना कोए रखाइंदा। चौदां विद्या होण नादान, चौदां लोक मुख शरमाइंदा। चौदां तबक मन्नण आण, चार कुण्ट मुख भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम खेल कराउणा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। त्रैगुण तेरा पर्दा लौहणा, तेरा घूँगट दए चुकाईआ। गुरमुख सज्जण आप उठाउणा, आपणी बूझ बुझाईआ। हरिजन साचे मेल मिलाउणा, घर मेला सच्चे माहीआ। भगत भगवन्त आप प्रगटाउणा, जग भावी दए गंवाईआ। साचा मार्ग इक्क लगाउणा, चार वरन रहे सरनाईआ। अठारां बरनां डेरा ढाउणा, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। एका ब्रह्म सर्ब समझाउणा, एका पिता एका माईआ। एका गोद सर्ब बहाउणा, लख चुरासी सोभा पाईआ। एका कन्त सर्ब हंढाउणा, लख चुरासी नार बणाईआ। एका इष्ट आप दृढ़ाउणा, गुरदेव इक्क अख्वाईआ। एका नाअरा सब ने लाउणा, इक्क करे पढ़ाईआ। विष्नूं तेरा मेल मिलाउणा, विश्व वेखे थाउँ थाईंआ। ब्रह्मे तेरा संग रखाउणा, पारब्रह्म दए सरनाईआ। शंकर तेरी शरअ चलाउणा, जो घड़या भन्न वखाईआ। आपणा भगत आप बचाउणा, सिर आपणा

हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी विच्चों फड़ उठाउणा, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। रातीं सुत्तयां दरस दिखाउणा, बज़र कपाट खोल्ह खुल्हाईआ। तीजे नेत्र ज्ञान दवाउणा, अन्ध अन्धेर चुकाईआ। अमृत बूंद स्वांत प्याउणा, तृखा भुख मिटाईआ। आप आपणे अंग लगाउणा, अंगीकार आप हो जाईआ। परमानंद विच रखाउणा, निजानंद वज्जे वधाईआ। काया मन्दिर इक्क समझाउणा, बंक दुआरा सोभा पाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। त्रैगुण तेरा डेरा ढाउणा, भगत दुआरे रहिण ना पाईआ। अन्तिम तेरा पन्ध मुकाउणा, राह खैहड़ा नज़र ना आईआ। पुरख अबिनाशी खेल कराउणा, ख़ालक ख़लक वेखे ख़ुदाईआ। राम रूप हर घट नज़री आउणा, एका बंसरी नाम वजाईआ। मुकंद मनोहर लखमी नरायण सीस जगदीश ताज टिकाउणा, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। दस्तगीर आप अखवाउणा, दस्त बरदार करे सर्ब लोकाईआ। मेहबान बीदो बी खैर या अल्ला इलाही नूर आप हो आउणा, एका हक़ वेखे थाउँ थाईंआ। नानक गोबिन्द आपणा संग निभाउणा, आपणा संग निभाईआ। त्रैगुण तेरा पन्ध मुकाउणा, जन भगतां दए सालाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख दिता वर, अन्त आपे पूर कराईआ। अन्त पूरा करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। त्रैगुण लहिणा चुक्के धरनी धौल, धवल ना कोए सहाईआ। गुरमुख रहे ना कोए अनभोल, सतिगुर पूरा दए जगाईआ। आपणा कुण्डा आपे खोल्ह, काया मन्दिर दए वखाईआ। अनहद शब्द वजाए ढोल, अनाद अनादी नाद वजाईआ। अगम्म अगम्मड़ी बाणी बोल, आपणा नाउँ समझाईआ। एका कंडे देवे तोल, दूजा तोल ना कोए तुलाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग खेलया होल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त लहिणा दए मुकाईआ। अन्तिम लहिणा मुकणा, कलयुग काली धार। तेरा बूटा सुक्कणा, रहे ना विच संसार। साहिब सतिगुर इक्को उठणा, नौ खण्ड करे खुआर। सिँघ रूप हरि जू बुक्कणा, इक्को नाम मारे भबकार। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेटणहार। तीर कमानों एका छुटणा, सेवा करे राम अवतार। कलयुग जीवां भाग निखुटणा, पूरन ब्रह्म ना करे कोए विचार। आपणा बूटा आपे पुट्टणा, चार वरन रहे झक्ख मार। काया ख़ाली सब दा ठुठणा, नाम वस्त ना कोए भण्डार। सतिगुर कोलों सब ने रुठणा, कूड़ा करन वणज वपार। पंजां तत्तां पंज तत्त काया चोला लुट्टणा, लुट्ट लुट्ट करन खुआर। गुरमुख विरला लख चुरासी विच्चों फुट्टणा, अमृत वगे ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण करे ख़बरदार। ख़बरदार जाणा जाग, हरि जागरत आप जगाइंदा। कलयुग अन्तिम मिले कन्त सुहाग, कन्त सुहागी मेल मिलाइंदा। चरन लाग धौणा दुरमति दाग़, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जुग जुग दी बुझाउणी लग्गी आग, सांतक सति कराइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखाइंदा। साचे राह जाणा लग्ग, हरि सज्जण सच जणाइंदा। हरिभगत दुआरा लैणा मंग, एका घर वखाइंदा। जन्म जन्म दी तेरी बुझे अग्ग, जुग जुग दी तृष्न मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखाइंदा। साचा राह लैणा पेख, नेत्र नैण खुल्हाईआ। तूं वस ना होई किसे औलीए पीर शेख़, मुलां मुसायक देण दुहाईआ। कोटन कोटि झूझे तेरे खेत, सिर धड़ गए कटाईआ। कोटन कर कर तेरे नाल हेत, शाह पातशाह आपणी पत्त गए गंवाईआ। कोटन कोटि आए तेरी लपेट, ना सके पल्लू छुडाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा भरया ना पेट, तेरी शांत ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा लहिणा चुकाया इक्की जेठ, इक्की इकी एका वार पाईआ। अगों रहिणा भगतां दे चरनां हेठ, फिर सके ना सिर उठाईआ। तेरा भन्नयां कौड़ा रीठ, मिट्ठा रस इक्क चखाईआ। कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं रही बीत, वेला गया हथ्थ ना आईआ। करे खेल पत्तत पुनीत, पत्तत पावण दया कमाईआ। अग्गे चले भगतां रीत, तेरी पिछली होई सफ़ाईआ। सब ने गाउणा इक्को गीत, एको मिले सच्चा माहीआ। नाता तुट्टे हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। चार वरन करे प्रीत, बिप्रीत नज़र कोए ना आईआ। सब दी काया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। दिवस रैण वसे चीत, चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। बैठा रहे इक्क अतीत, इक्क इकल्ला वेस वटाईआ। सतिजुग साची चले रीत, सति पुरख आप चलाईआ। मिल मिल सखीआं गावण गीत, गोबिन्द इक्क मनाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग जो सुत्ता रिहा दे कर पीठ, आपणी करवट लए बदलाईआ। सीस सोहे पीतम्बर पीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह दए जणाईआ। सुण लै राह हरि का दुआर, हरि साचा सच जणाइंदा। हरिजन मात होए उज्यार, लोकमात वड वड्याइंदा। पुरख अबिनाशी सेवादार, जुग जुग भगतां सेव कमाइंदा। ध्रू प्रहिलाद लए उधार, बल बावन खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम कर प्यार, साचे सन्त आप उठाइंदा। भगतां तोड़ मन हँकार, ममता मोह चुकाइंदा। इक्को देवे दरस दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। एका काया काअबा कर त्यार, साचे हुज़रे सोभा पाइंदा। एका राम नाम सहार, सीता सुरती इक्क प्रनाइंदा। एका राधा कृष्न लए उभार, आप आपणे अंग लगाइंदा। एका बंसरी वज्जे विच संसार, एका मुरली हथ्थ उठाइंदा। एका नाम सति करतार, एका वाहिगुरू फतिह गज़ाइंदा। एका सब तों वसे बाहर, दिस किसे ना आइंदा। एका राम रव्या सर्ब संसार, एका आपणा मुख छुपाइंदा। एका नानक निरगुण धार, एका सरगुण रूप वटाइंदा। एका गोबिन्द सुत दुलार, एका कल्गी तोड़ा सीस टिकाइंदा। एका घोड़ा शाह सवार, दूजा अकाल फेरा पाइंदा। एका चतुर्भुज दए दीदार, एका मोहणी रूप वटाइंदा। एका

सिँघ होए अस्वार, अष्टभुज रंग रंगाइंदा। इक्क भवानी करे प्यार, एका दुर्गा वेख वखाइंदा। एका खण्डा तेज कटार, एका ब्रह्मण्डां विच चमकाइंदा। एका वेखे सूरज चन्द सतार, एका धरत धवल सुहाइंदा। लख चुरासी खेले खेलणहार, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। एका नबी करे प्यार, एका उम्मत रसूल मिलाइंदा। एका जुग जुग बेड़ा करे पार, एका विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाइंदा। एका खेल करे करतार, कुदरत आपणा नाच नचाइंदा। एका भगतां दए दीदार, दरसी आपणा दरस वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा घर आप सुहाइंदा। साचा घर सोहे बंक, बंक दुआरी आप सुहाईआ। ना कोई राउ ना कोई रंक, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। ना कोई चिंता ना कोई शंक, संसा कोए रहिण ना पाईआ। ना कोई पांधा ना कोई पंडत, ना कोई ब्रह्मण करे पढ़ाईआ। ना कोई ग्रंथी ना कोई पन्थी देवे संथ, संधया संख ना कोए वजाईआ। ना कोई माला ना कोई तसबी ना कोई मनक, नेत्र मीट ध्यान ना कोए लगाईआ। जिस जन किरपा करे आप भगवन्त, छिन्न भंगर लए तराईआ। सो बणे साचा सन्त, जिस आपणी गोद बहाईआ। पार कराए विच्चों लख चुरासी जीव जंत, एका मन्त्र कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां होए सहाईआ। हरिभगत सहाई दीनां नाथ, दीनन दया कमाइंदा। ठाकर अबिनाशी सगला साथ, पारब्रह्म रखाइंदा। आप जणाए आपणी गाथ, बोध अगाध आप पढ़ाइंदा। लहिणा चुकाए साढे तिन्न तिन्न हाथ, साढे तिन्न तिन्न वंड ना कोए वंडाइंदा । भगत भगवन्त वसे पास, दूजे नगर ना सोभा पाइंदा। एका मंडल एका रास, एका गोपी काहन नचाइंदा। एका गृह एका वास, एका आसण सोभा पाइंदा। एका दासी एका दास, एका सेवक सेव कमाइंदा। एका नूर इक्क प्रकाश, एका घट घट जोत जगाइंदा। एका वेखे खेल तमाश, पृथ्मी आकाश फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी आपणी दया कमाइंदा। सच स्वामी दीन दयाला, एका एक अख्वाया। हरिजन वेखे साचे लाला, लाल अनमुलड़े आप मिलाया। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाया। एका रंग रंगाए शाह कंगाला, शहिनशाह बेपरवाहया। निरगुण सरगुण बणे दलाला, लोकमात होए सहाया। नाता तोड़ काल महांकाला, आप आपणा बन्धन पाया। घर घर विच वखाए सच्ची धर्मसाला, काया मन्दिर आप सुहाया। जोत निरँजण दीपक बाला, आदि निरँजण करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा वड्याआ। हरि भगत तेरी वड्याई, वेद कतेब भेव ना पाइंदा। हरि सन्त तेरी वड्याई, हरि जू तेरे गीत सुणाइंदा। हरि भगत तेरी वड्याई, तेरा विछोड़ा हरि जू कदे ना भाइंदा। हरि सन्त तेरी वड्याई, तेरा कीता ना कोए मेट मिटाइंदा। पारब्रह्म सच्ची शरनाई, शरनागत

इक्क हो जाइंदा। दो जहानां वज्जे वधाई, एथे ओथे सोभा पाइंदा। हरि शब्द होई कुड़माई, सुरती शब्द नार प्रनाइंदा। ना होए कदे जुदाई, जुज़ वंड ना कोए वंडाइंदा। पति मिल्या इक्क रघुराई, रघुपत आपणा संग रखाइंदा। भगतन संग भगतन मेला चाँईं चाँईं, भाई भाईआं नाल मिलाइंदा। निथाव्याँ पकड़े आपे बाहीं, नयासरयां इक्को आस रखाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला सिर रखे ठंडीआं छाईं, समरथ आपणा हथ्थ टिकाइंदा। करे कराए सच नयाईं, अदल अदालत इक्क वखाइंदा। जिउँ नामे धन्ने लभ्भा हरि गुसाँईं, सो गुसाँईं जन भगतां आप जगाइंदा। लोकमात आवे चाँईं चाँईं, आपणा पन्ध मकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, सच स्वामी सर्ब दा मालक, मलकीअत आपणी ना कोए रखाइंदा। आत्म परमात्म सच प्यारा, आसरा अर्शीवाद जणाईआ। गृह मन्दिर हो उज्यारा, घर घर करे रुशनाईआ। जगत संसा रोग निवारा, सोग चिंत ना कोए वखाईआ। अमृत देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना इक्क झिराईआ। सांतक सति वरताए वरतावणहारा, असति रहिण ना पाईआ। ब्रह्म मति इक्क वणजारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अशीर दए समझाईआ। अर्शीवाद आत्म रस, रस रसीआ आप वखाइंदा। जगत विकारा जाए नस्स, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। जिस जन हिरदे जाए वस, सो हिरदा सोभा पाइंदा। जिस जन मार्ग देवे दस्स, सो जन आपणा पन्ध मुकाइंदा। लख चुरासी रही नस्स, हरि हथ्थ किसे ना आइंदा। जगत वड्याई ना चले कोई वस, बेवस खेल खलाइंदा। कर दया करे प्रकाश घर रवि ससि, नूर उजाला गुर गोपाला डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाइंदा। दया कमाए दीनन ठाकर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निहकर्मी कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धुवाईआ। एका नाम कराए सच सौदागर, वणज वणजारा इक्क वखाईआ। भाग लगाए काया गागर, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। दर आयां देवे आदर, जो ढह पए शरनाईआ। आपे बदलणहारा जगत आडर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणी दया कमाईआ। दयावान दयानिध, मेहरवान हरि दाना। सब दे कारज करे सिध, जो चरन करे ध्याना। घर उपजाए नौ निध, गृह मन्दिर इक्क सुहाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी दया कर, सिर रखे हथ्थ मेहरवाना। पंज तत्त काया मुनारा, ऋषी मुनी गए हंढाईआ। गुर अवतारां दए सहारा, आत्म परमात्म रिहा छुपाईआ। सब नूं दुःख लग्गा न्यारा, दुखड़ा सके ना कोए मिटाईआ। लख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ारा, गिरयाज़ारी रहे सुणाईआ। जिस जन करया नाम प्यारा, तिस औखद नाम मिले वड्याईआ। जिस सतिगुर मिल्या इक्क सहारा, दूजा दुःख ना लागे राईआ। पकड़ बाहों करे पार किनारा, अद्ध विचकार ना कोए डुबाईआ।

मेहर नज़र नज़र करे आप करतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर रोग दए मिटाईआ। खिट्टा लग्गा अन्तर रोग, किशना सुखला पक्ख देण दुहाईआ। ना कोई जोग ना वियोग, संजोग ना कोए सुहाईआ। ना कोई हरख ना कोई सोग, ना चिंता कोए मिटाईआ। ना कोई रस ना कोई भोग, भरम्मड़ रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई मिलाए निर्मल जोत, जो दुक्खड़ा दए गंवाईआ। कर किरपा खोल्हे सोत, सोई सुरती लए उठाईआ। आपणा नाम जपाए बिन रसना जिह्वा होट, अजपा जाप दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरीरक रोग वेख वखाईआ। सरीरक रोग हड्ड मास नाड़ी रत्त, रत रत नाल विहाईआ। जीव लेखा पंज तत्त, ईश खेल खलाईआ। आपणा बेड़ा ना सके बन्न्ह, आपणा भार ना कोए उठाईआ। जिस जन हरि सतिगुर देवे नाम धन, सच वस्त इक्क वरताईआ। तिस कोए रोग ना देवे डंन, काया अंदर रहिण ना पाईआ। मिले वड्याई तिस सच्चे जन, जिस हरि जू मिल्या माहीआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, झूठा गढ़ तुड़ाईआ। एका राग सुणाए कन्न, ढोलक छैणा ना कोए वजाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, आपणा नूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्दीआं दर्द आप वंडाईआ। दर्दीआं वंडे दरद, दयावान दयावाना। काया कदे गर्म कदे सर्द, पंज तत्त होए निधाना। बुद्धि निमाणी रही वर्ज, मन होया वड बलवाना। मति कहे मैं लैणा कर्ज़, पिछला मूल चुकाना। जीव ना जाणे आपणा फ़र्ज़, विछड़या भगवाना। मन्दिर मस्जिद गुर दर जा जा सुणाए तर्ज़, तरस करे ना रमइया रामा। बिन हरिभगत मिटे ना किसे हरस, हवस भरी विच जहाना। कर किरपा जिस जन लहिणा देणा चुकाए अर्श फर्श, काया कुरा करे परवाना। आब हयात अमृत मेघ देवे बरस, दर्दी दर्दीआं दुःख मिटाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर रख हथ्थ मेहरवाना। रस भोगदा पंज तत्त, तत्तव तत्त समाया। लेखा जाणे बूंद रत्त, रत्त बूंद खेल खलाया। सर्ब जीआं दा इक्को कमलापत, कँवल नैण बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म प्रगटाया। पारब्रह्म ब्रह्म अचरज खेल, खेलणहार खलाईआ। आपे जाणे आपणा मेल, ना कोई पिता ना कोई माईआ। वसणहारा रंग नवेल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त आपे बणत बणाईआ। पंज तत्त जन जननी जाया, कबीर कहे कौण माई। दस दस मास जिस गर्भ उठाया, इक्क ध्यान लगाई। जीउ पिण्ड इंड ब्रह्मण्ड सजाया, घर विच घर मिली रुशनाई। अन्तिम नाता तोड़ तुड़ाया, होई मात जुदाई। ब्रह्मण पुत्त ब्रह्मणी जाया, पारब्रह्म पिता माई। हरि जू अगम्मी शब्द सुणाया, सच संदेशा एका गाई। मेरा भगत मेरे रंग समाया, रंग वेखो चाँईं चाँईं। कक्ख़ां हेठां देणा लोकाया, सहायता करे आप

गुसाँईं। उच्चा हो के नीव्यां लए तराया, घर जुलाहयां फेरा पाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आपणी गोद बहाई। ना कोई नया ना पुराणा, सदा सद खेल खलाईआ। भगतां संग वसे भगवाना, जुग जुग वड्याईआ। इक्को हरि इक्को घर गायण गाणा, गीत गोबिन्द अलाईआ। हरिभगतां मंने हरि जू भाणा, हरि भाणे भगत समाईआ। दोवें वसण इक्क टिकाणा, एका घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा रिहा बणाईआ। सच दुआरा बणे धाम, धमक चार कुण्ट लगाईआ। वसणहारा इक्को राम, एका कृष्न सहिज सुखदाईआ। एका पैग़म्बर देवे पैग़ाम, कलमा कलाम नूर इलाहीआ। एका नानक बोले सतिनाम, एका गोबिन्द फ़तेह गजाईआ। एका भगतां पूरा करे काम, जगत कामनी मेट मिटाईआ। एका मेटे अन्धेरी शाम, कलयुग रैण रहिण ना पाईआ। एका जपाए साचा नाम, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। एका प्रकाश करे कोटन भान, कोट कोटी दीप डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। जुग जुग खेल अवल्लड़ा करे कराए करनेहार। गुर अवतारां फड़ाए पलड़ा, लोकमात कर उज्यार। भगतां अंदर आपे रलड़ा, देवे दरस अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे सच विहार। सच विहार सच करे बिवहारी, बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण सरगुण जोत कर उज्यारी, लोकमात दए वड्याईआ। लेखा जाणे पिछले चार जुग तेई अवतारी, गुर भगत नाल मिलाईआ। अग्गे खेल अपर अपारी, ख़ालक खेले सच्चा शहिनशाहीआ। एका जोत जगे निरँकारी, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। एका नाम मिले सिक्दारी, शहिनशाह इक्क हो आईआ। एका पाठ एका पूजा इक्क पुजारी, एका इष्ट देव मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। एका इष्ट इक्क गुरदेव, नमो नमो इक्क वड्याईआ। एका दाता अलख अभेव, अलख ना लख्या जाईआ। इक्को करे कराए साची सेव, सेवक सेवा इक्क समझाईआ। इक्को देवा एका देव, एका देवत रूप वटाईआ। एका वसे सदा निहकेव, निहचल आपणा धाम सुहाईआ। एका रसना एका जिहव, एका हरी हरी गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगले जुग आपणा रंग वखाईआ। एका नूर एका रंग, एका घर वसाया। एका सेज इक्क पलँघ, एका रिहा सुहाया। एका नाम इक्क मृदंग, एका रिहा वजाया। एका अमृत एका गंग, एका रिहा नुहाया। एका सूरज एका चन्द, एका रिहा चमकाया। इक्क खण्ड इक्क ब्रह्मण्ड, एका वरभण्ड रूप वटाया। एका जाणे परमानंद, परम पुरख बेपरवाहया। एका गीत एका छन्द, एका गवण रिहा सुणाया। इक्को आदि जुगादि सब नाल जाए हंढ, रूप अनूप आप वटाया। इका जुग चौकड़ीआं देवे गंढु, तन्द तन्द नाल रखाया। इक्को

देवणहारा दंड, जो घड़या सो भन्न वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगले जुग आपणा नाउँ करे सवाया। अगले जुग चले नाउँ, सोहँ सच पढ़ाईआ। वेखे विगसे बेपरवाहो, अलख अगोचर अगम्म अथाहीआ। दो जहानां करे सच न्याउँ, इक्क इकट्ठा दया कमाईआ। लख चुरासी नौ खण्ड सत्त दीप सूरज चन्द देवे परमानंद लेखा जाणे पिता माउँ, बाल अञ्याणे गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ ७ मग्घर २०१८ बिक्रमी प्रीतम सिंघ दे नवित दरबार विच जेठूवाल ★

भगतन संग वसे भगवन्त, भय भयानक सदा सहाईआ। मेल मिलावा साचे सन्त, हरि सतिगुर आप मिलाईआ। जुग जुग बणाए साची बणत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एका नाम जणाए मणीआ मंत, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन साचा मेल मिलाईआ। भगत भगवान इक्को राह, एका दर सुहाइंदा। एका देवे सच सलाह, साचा नाम जणाइंदा। इक्क वखाए सच मकां, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। इक्क जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप समझाइंदा। इक्क इकल्ला देवे थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। एकँकार पकड़े बांह, हरिजन आपणे आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणे रंग रंगाइंदा। भगतन मीता एकँकार, अकल कला वड्याईआ। जुग जुग पैज दए संवार, लोकमात होए सहाईआ। लख चुरासी करे पार, जम की फाँसी तोड़ तुड़ाईआ। नाम उदासी इक्क खुमार, एका रंग वखाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, किरपन आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे माण वड्याईआ। भगतन मीता हरि गोबिन्द, अकल कला अख्वाया। जुग जुग मेटे झूठी चिन्द, चिंता चिखा ना रूप वटाया। दया कमाए गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहया। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, सर सरोवर इक्क वखाया। हरिजन बणाए साची बिन्द, पिता पूत नाउँ वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग वखाया। भगतन मीता हरि निरँकारा, निरगुण निरवैर खेल खलाईआ। जुगा जुगन्तर कर पसारा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, ख़ालक खलक रूप वटाईआ। धाम अवल्लड़ा इक्क दरबारा, दरगाह साची दए वड्याईआ। शब्द

संदेश इक्क जैकारा, एका नाअरा लाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। एका नूर परवरदिगारा, बेऐब बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला हरि भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। एका देवे नाम निधान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म पढ़ाईआ। निरगुण जोत नूर महान, दीपक दीआ करे रुशनाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, आसा तृष्ना दए गंवाईआ। नाम वखाए सच बबाण, मेहरबान आप समझाईआ। आपे होए जाणी जाण, घट घट आपणा रूप वटाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला लए मिलाईआ। भगतन मेला सच दुआर, बंक दुआरी आप कराइंदा। देवे दरस अगम्म अपार, अलख अगोचर सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी कर खुआर, सब दा पन्ध मुकाइंदा। लहिणा देणा गुर अवतार, लोकमात वखाइंदा। भगत भगवन्त कर उज्यार, एका चन्द चढ़ाइंदा। नव नौ खेल अपार, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। सृष्ट सबाई करे विचार, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां संग आप निभाइंदा। भगतां संग साचा मीत, मित्र प्यारा संग निभाईआ। आपे बैठा रहे अतीत, दर घर साचे सोभा पाईआ। नाम जणाए साचा गीत, गीत गोबिन्द आप अल्हाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। वसणहारा धाम अनडीठ, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। आदि जुगादी जाणे आपणी रीत, लेखा लेख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणा भेव चुकाईआ। भगतन भेव देवे दस्स, दहि दिशा उठ धाया। लोकमात हरि आए नस्स, निरगुण वेस वटाया। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, आसा तृष्ना दए मुकाया। लेखे लाए पवण स्वास, जिस जन हरि जू हरि हरि गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन नाम इक्क वड्याआ। भगतन नाम वड्डा वड, हरि वड्डा सच वड्याइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आपणा मेल मिलाइंदा। लोआं पुरीआं कराए पार हद्द, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड वंडाइंदा। इक्क सुणाए साचा नद, अनहद नाद वजाइंदा। अमृत प्याए साची मध, मधुर नैण सेव कमाइंदा। जुग जुग आपणे दुआरे आपे सद्द, सदके वारी घोली घोल घुमाइंदा। कलयुग अन्तिम दे के जावे अद्ध, साचा हिस्सा आप वंडाइंदा। भगत बणाए आपणी यद्द, भगवन आपणा बंस सुहाइंदा। कोटन कोटि भार गए लद्द, हौला भार ना कोए रखाइंदा। अन्तिम पर्दा देवे ना कोए कज्ज, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाइंदा। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। भगत हरि भगवन दुआरे जाए सज, दर घर साचे सोभा पाइंदा। लोक लाज मात तज, तशकर आपणा डेरा लाइंदा। एका चढ़े नाम जहाज़, सतिगुर पूरा आप

चढ़ाइंदा। शब्द अगम्मी मारे आवाज़, आवा गवण ना कोए फिराइंदा। एथे ओथे रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। सीस जगदीश सोहे ताज, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। धुरदरगाही सच्चा राज, शाह पातशाह आप कमाइंदा। जन भगतां देवे इक्को दाज, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत सदा सलाहइंदा। भगत सलाहे हरि भगवन्त, गुण महिमा आप जणाईआ। धन्न वड्याई साचे कन्त, घर मंगल वज्जे वधाईआ। हरिजन चोली रंगे बसन्त, काया कपड़ आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन लेखा दए मुकाईआ। भगवन भगतन लेखा मुक्कणा, कलयुग अन्तिम वार। पारब्रह्म प्रभ एका उठणा, निरगुण नूर करे उज्यार। जूठा झूठा बूटा पुटणा, देवे जड़ उखाड़। बिन अमृत सब ने सुक्कणा, लख चुरासी होए खुआर। सिँघ शेर इक्को बुक्कणा, निरगुण जोत शब्द भबकार। शाह पातशाहां अग्गे झुकणा, ना कोई सके सीस उठाल। गुरमुख हरि जू आपणी गोदी चुक्कणा, चुक्क चुक्क करे प्यार। दो जहानां पैंडा मुक्कणा, पाँधी बण ना चले कोई रफ़तार। साहिब सुल्तान अग्गों पुजणा, भगत भगवान लए उठाल। लख चुरासी दीवा बुझणा, ना सके कोई बाल। लहिणा चुक्के एका दूजणा, तीजे होर ना कोई सवाल। चौथे घर गुरमुख विरले झुजणा, नाता तोड़ काल महांकाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए संभाल। सदा संभाले करे प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम भेव निराल, निरगुण आपणा आप छुपाईआ। जगत जुग अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। सन्त सुहेले लए भाल, गुर चेले वेख वखाईआ। आपे चले नाल नाल, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी जो घालण गए घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत दए वड्याईआ। भगत वड्याआ आप प्रभ, आपणी किरपा धार। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपे दिता दरस दिखाल। दर दुआरे आपे सद्द, किरपा करे आप कृपाल। लख चुरासी नालों कीता अड्ड, इक्क बहाए सच्ची धर्मसाल। बंस बणाए साची यद, विश्व रूप दए वखाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतन बणे सदा प्रितपाल। प्रितपाले सार समालदा, सरगुण निरगुण मित्त। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, लख चुरासी करे हित्त। रूप वटाए आप दलाल दा, प्रगट होवे नित नवित। नाता तोड़ जगत जंजाल दा, इक्क सुहाए साची रुत्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अबिनाशी अचुत। अबिनाशी अचुत दीन दयाला, भगतन संग समाया। कलयुग अन्त अवल्लड़ी चाला, वेद कतेब भेव ना आया। भगत भगवन्त आपे भाला, फड़ आपणा

मेल मिलाया। एका दस्सया राह सुखाला, सोहँ साचा जाप जपाया। नेत्र दर्शन साची माला, साची सेवा हथ्थ मणका मन भुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत लए जगाया। भगत जगाए खोल्हे जाग, आलस निंद्रा ना कोए वखाईआ। आत्म अन्तर इक्क वैराग, वैरागी पुरख आप उपजाईआ। साक सज्जण सैण सईया त्याग, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। मेला मेल ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। एका देवे धुर दी दात, दात अनमुलड़ी आप वरताईआ। आप बुझाए सच करामात, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। अक्खर वक्खर सुणाए गाथ, गाथा एका एक वड्याईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। इक्क खुल्हाए साचा हाट, लोक परलोक देण गवाहीआ। खुशी मनाए त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं वज्जे वधाईआ। भगतां देवे भगवन साथ , विछड़ कदे ना जाईआ। राह तक्के रामा सुत दसराथ, नेत्र नैण उठाईआ। कवण वेला मेला होए ततव आठ, तत्त तत्त गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतन सदा सहाईआ । भगतन सदा सहायक, सो पुरख बली बलवाना। आदि जुगादी सच्चा नायक, भूपत भुप राज राजाना। ना कोई शरअ ना शरायत, लाशरीक इक्क मेहरवाना। ना कोए अन्धेरा ना तरीक, नूरो नूर डगमगाना। आदि जुगादि वसे नज़दीक, निज घर साचा इक्क सुहाना। भगतन करे आप प्रीत, पारब्रह्म वड मर्दाना। कलयुग अन्तिम साची रीत, सतिजुग साचा बन्न्हे गाना। लख चुरासी परखे नीत, हर घट वेख वखाना। गुरमुख विरला गाए गीत, जिस सुणयां धुर तरानां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन संग सदा निभाणा। भगतन संग निभे तोड़, हरि जू मता पकाया। निरगुण चढ़या साचे घोड़, शाह सवार फेरा पाया। दो जहानां आपे दौड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाया। जन भगतां बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ मेघ बरसाया। रस मिठ्ठा करे रीठा कौड़, कूड़ी क्रिया दए गंवाया। जन भगतां कारज जाए सौर, सो पुरख निरँजण सेव कमाया। आपे वेखे करे आपणा गौर, गहर गवर वेस वटाया। सति पुरख निरँजण आपणे हथ्थ पकड़ी डोर, चारों कुण्ट रिहा भुवाया। लेखा चुकाए पंज चोर, ठग्ग कोए रहिण ना पाया। नाता तोड़े अन्ध घोर, साचा नूर करे रुशनाया । माया ममता ना पाए शोर, छौहर आपणा बल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। तारन को हरि इक्को इक्क, आदि जुगादि समाइंदा। तिस साहिब कोल साची भिक्ख, जुगा जुगन्तर आप वरताइंदा। जिउँ भावे तिउँ देवे लिख, तिस दा लेखा ना कोए मिटाइंदा। वड वड्याई गुरमुख विरले पाया सिख, साची सिख्या जिस समझाइंदा। मेल मिलाए आपणा तिस, तीबर इच्छया पूर कराइंदा। एथे ओथे साचा हिस्स, वंडण वंड आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, भगवन आपणी गोद बहाइंदा। भगतन सोहे सच्चे घर, भगवन आप सुहाया। निरभउ चुकाए झूठा डर, भय अवर ना कोए वखाया। आपणी किरपा आपे कर, नर नरायण मेल मिलाया। अंदर मन्दिर आपे वड़, सच सिँघासण सोभा पाया। सन्त सुहेले आपे फड़, आपणी बूझ बुझाया। भगत भगवान लाए लड़, एका पल्लू गंढु वखाया। लेखे लाए नारी नर, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन भगतां होए सहाया। भगत सारे रहे हस्स, आपणी ख़ुशी मनाईआ। वेखो साडे होया वस, घर साचे सेव कमाईआ। आपणी पूरी करे आस, भगतां दर्शन पाईआ। भगतन करे जोत प्रकाश, निरगुण नूर टिकाईआ। सदा सुहेला बण बण वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। करन आया कारज ख़ास, ख्वाहिश इक्को इक्क रखाईआ। भगत दुआरा लवां तराश, आप आपणी वंड वंडाईआ। जुग जुग दी मेरी शाख़, शनाख़त आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे भगतां कढु ना कोए सुराख़, सोई सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उपाईआ। हरिभगत सारे कहिण, वाह वाह शुकर मनाया। हरि जू भगतां आए लैण, निरगुण वेस धराया। साडा चुक्के लैण देण, पिछला कर्ज़ा रिहा मुकाया। आपे दरस पेखे नैण, नैण नैणां नाल मिलाया। सखा सहाई बणे सैण, सज्जण आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतन आप समाया। भगत कहिण हरि जू दास, दर दर फेरा पाईआ। किसे हथ्थ ना आए पृथ्मी आकाश, घर साडे आवे वाहो दाहीआ। बिन भगतां रहे निरास, धीरज धीर ना कोए जणाईआ। साचा करे ना कोए बलास, भोगी बणी सर्ब लोकाईआ। बिन हरिभगत भगवन किसे दर ना करे निवास, मन्दिर दए ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां रंग चढ़ाईआ। भगत कहिण बद्धी डोर, हरि जू आपणे तन्द बंधाया। जिध्धर चाहीए लईए तोर, तोरा मोरा मोह चुकाया। भगवान रखे भगतां लोड़, जुग जुग भगतां होए सहाया। कलयुग अन्तिम टुट्टी लए जोड़, आप आपणा बन्धन पाया। आपणे नाल लए तोर, साचा संग रखाया। जोरावर ना वखाए कोई ज़ोर, जाबर जबर ना रूप वटाया। होए सहाई सदा अन्धघोर, अन्धले राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां मार्ग आप चलाया।

★ ८ मग्घर २०१८ बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे नवित जेठूवाल दरबार विच ★

हरि का नाम निधान, दिस किसे ना आइंदा। हरि का नाउँ बेपहचान, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। हरि का

नाउँ आदि जुगादि खेल महान, पारब्रह्म प्रभ आप खलाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर गए पहचान, भेव अभेव ना कोए खुलाइंदा। गा गा थक्के गान, रसना जिह्वा सर्ब हिलाइंदा। जिस जन किरपा करे आप भगवान, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। नाम अनमुल्ला देवे दान, वस्त अनडिठड़ी आप वरताइंदा। राग सुणाए आपणा कान, अनादी नाद वजाइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, दर घर साचे आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। नाम निधाना निरगुण धार, धार धार विच समाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपार, अलख अगोचर आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। आदि निरँजण भेव न्यार, अनुभव आपणी खेल खलाईआ। अबिनाशी करता निराकार, निरवैर नाउँ धराईआ। श्री भगवान सांझा यार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा बोल आप जैकार, नाउँ निरँकार आप प्रगटाईआ। साचे घर खेल करे अपार, सचखण्ड वासी सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराईआ। आपणा नाउँ आपे रख, निरगुण आपणा खेल खलाइंदा। जुगा जुगन्तर आपे दस्स, गुर अवतार सेव लगाइंदा। अन्तर आत्म आपे वस, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। नूरो नूर करे प्रकाश, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप सलाहइंदा। साचा नाम सिफ्त सलाह, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, आपणा बेड़ा आप उठाईआ। एकँकारा बेपरवाह, निरगुण दाता वेख वखाईआ। आदि निरँजण हो रुशना, नूरो नूर नूर प्रगटाईआ। अबिनाशी करता पकड़े बांह, आप आपणा संग निभाईआ। श्री भगवान होए सहा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। पारब्रह्म प्रभ करे न्याँ, भूपत भूप राज राजान शाह सुल्तान इक्क अख्वाईआ। इक्क जणाए आपणा नाउँ, ना मरे ना जाईआ। वसणहारा हर घट थाउँ, घर घर आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाउँ आप वड्याईआ। हरि का नाउँ वड प्रताप, हरि वड्डा वड्ड रखाइंदा। आदि जुगादी आपे जाणे आपणा जाप, जपणहार आप अख्वाइंदा। दो जहानां लेखा जाणे माई बाप, पिता पूत खेल खलाइंदा। लेखा वेखे दिवस रात, सूरज चन्द पन्ध मुकाइंदा। अक्खर वक्खर गा गा गाथ विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाइंदा। लख चुरासी दे दे दात, गुर अवतार मात प्रगटाइंदा। चरन कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता इक्क रखाइंदा। लहिणा जाणे मस्तक माथ, लेखा आपणे हथ्थ वखाइंदा। देवणहारा साचा साथ, सगला संग निभाइंदा। आप जणाए आपणा पाठ, साची पूजा इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप रखाइंदा। हरि

६०
११

का नाउँ सदा अभुल्ल, भुल्ल कदे ना जाईआ। हरि का नाउँ सदा अतुल, तोल सके ना कोए राईआ। हरि का नाउँ सदा अडुल, ना डोले ना कोए डुलाईआ। हरि का नाउँ ना जाए रुल, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जुग जुग भण्डारा जाए खुल्ह, हरि आपणा नाउँ खुल्हाईआ। करता कीमत ना जाणे कोई मुल, हट्टो हट्ट ना कोए विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप सालाहीआ। आपणा नाउँ आपे दस्स, लोकमात खेल खलाइंदा। जुगा जुगन्तर हो प्रगट, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। जन भगतां देवे साची वथ, नाम अमोलक झोली पाइंदा। अन्तर आत्म इक्को रस, रसना जिह्वा ना कोए चखाइंदा। कोटन कोटि प्रकाश कर रवि ससि, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप उपजाइंदा। आपणा नाउँ नाद धुन, धुन आत्मक आप जणाईआ। गुरमुख विरला लए सुण, जिस हरि हरि आप बुझाईआ। लख चुरासी छाण पुण, भगवन भगत लए मिलाईआ। आपे जाणे साचे गुण, अवगुण ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप वरताईआ। साचा नाउँ साची दात, दाता दानी आप वरताइंदा। लख चुरासी वेखे मार झात, नव नौ फोल फुलाइंदा। भगतन देवे साचा साथ, सगला संग आप निभाइंदा। दरस दिखाए सुत्तयां रात, रातीं रुती थित वड्याइंदा। नाम अगम्मा देवे वड्ड

६१
११

करामात, करनी करता आप जणाइंदा। बन्द कवाड़ी खोल्ह ताक, दीपक दीआ इक्क जगाइंदा। निरगुण सरगुण बण बण सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा। आत्म परमात्म करे पाकी पाक, पतित पुनीत दया कमाइंदा। इक्क सुणाए साची गाथ, नाम निधाना ढोला गाइंदा। लहिणा चुक्के तत्त आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध पन्ध मुकाइंदा। हरि का नाउँ ना कोई ज़ात ना कोई पात, वरन बरन ना वंड वंडाइंदा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सरोवर सर ना सोभा पाइंदा। ना कोई मन्दिर ना कोई मठ्ठ, मस्जिद रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई किनारा ना कोई तट, चार दीवारी बन्द ना कोए कराइंदा। जन भगतां अंदर रिहा वस, आप आपणा आसण लाइंदा। दिवस रैण हस्स हस्स, साची खुशी मनाइंदा। जुग जुग पूरी करे आस, आप आपणा नाउँ समझाइंदा। सेवा करे बण दासी दास, सेवक सेव आप कमाइंदा। अन्तिम करे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। लेखा जाणे पवण स्वास, रसना जिह्वा नाल मिलाइंदा। जगत विकारा करे पाश पाश, जिस जन आपणा नाउँ समझाइंदा। बिन गोपी काहन पाए रास, मंडल मण्डप नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ वखाइंदा। जुग जुग नाउँ अनक कल धार, अनक कला वरताईआ। गुर अवतार करन पुकार, रसना जिह्वा नाल सालाहीआ। भगत भगवन्त बोल जैकार, इक्को नाअरा लाईआ। सन्त साजण

रोवण ज़ारो ज़ार, हरि का नाउँ विछड़ ना जाईआ। गुरमुख ढह ढह धूढ़ी मंगण चरन छार, मस्तक टिक्का इक्क लगाईआ। गुरसिख ढह ढह पए दुआर, दर दर आपणा सीस झुकाईआ। किरपा कर आप निरँकार, एका मंग मंगाईआ। तेरा नाउँ सच भण्डार, साची वस्त इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर एका मन्त्र नाम पढ़ाईआ। नाम मन्त्र जगत पढ़ाया, जुग जुग रीत चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाया, करोड़ तेतीसा बन्धन पाइंदा। गणपति गणेश रिहा सालाहया, अष्टभुज रूप वटाइंदा। चतुर्भुज नाल रलाया, भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार रहे सालाहया, जुग चौकड़ी खेल खलाइंदा। वेद कतेब रहे जस गाया, ब्रह्मा वेता मुख सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपणे विच छुपाइंदा। हरि हरि नाउँ अंदर रख, जुग जुग खेल कराईआ। जन भगतां करे आप प्रतख, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सदा सुहेला करे पक्ख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणा नाउँ वखाए इक्को जस, जस वेद पुराण सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका रंग वखाईआ। आदि आदि पुरख परमात्म, परम पुरख खेल खलाया। थिर घर दुआर खेल रचाया आत्म, आप आपणी वंड वंडाया। हरख़ सोग ना कोए मातम, चिंता रोग ना कोए जणाया। आदि अन्त ना होए घातम, घाउ मूल ना कोए लगाया। लेखा जाणे नूर बातन, ज़हूर आपणा खेल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा नाउँ आप धराया। आदि नाउँ पारब्रह्म, सो पुरख निरँजण वड्याईआ। आपणी कुखों आपे जम्म, आपे बणया पिता माईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे रिहा चलाईआ। आप छुहाए आपणी छप्परी छन्न, घर साचे सोभा पाईआ। आपे जननी आपे जन, आपे जन जणेंदी माईआ। आपे नाउँ सुणयां आपणे कन्न, नाउँ निरँकारा आप सालाहीआ। आपे घड़े आपे देवे भन्न, घड़न भन्नणहार आप अखवाईआ। आपे सूरज आपे चन्न, आपे करे सच रुशनाईआ। आपे काया आपे तन, आपे माटी ख़ाक समाईआ। आपे राग आपे कन्न, आपे गीत गोबिन्द अलाईआ। आपे मनशा आपे मन, आपे वासना विच रखाईआ। आपे नेत्र आपे अन्न्ह, आपे अन्ध अन्धेर समाईआ। आपे देवणहारा डंन, आपणा बन्धन आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाईआ। आत्म परमात्म साचा नाँ, आदि पुरख जणाया। आपे पिता आपे मां, आपे पूत सपूता वेस वटाया। आपे सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आदि आदि आपणा नाउँ धरा, सोहँ ढोला इक्को गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा ओहला विच रखाया। पर्दा ओहला हरि हरि धार, आत्म परमात्म विच रखाईआ। त्रैगुण माया कर शंगर, अद्धविचकार आप बिठाईआ।

पंज चोर करन प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। आशा तृष्ना नार मुटयार, मन मनुआ लए प्रनाईआ। जूठ झूठ अहार, माया ममता संग निभाईआ । कूड़ी क्रिया जगत विहार, जुगती जोग ना कोए कमाईआ। शक्ती भगती करन विचार, बूंद रक्ती खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। आत्म परमात्म अन्तर माया, रूप रंग नज़र ना आइंदा। ना कोई वेखे हरि की छाया, साया कोए ना वेख वखाइंदा। जो आया तिस रसना गाया, गा गा गीत ना कोए मुकाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सर्ब सुणाया, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। जिस जन आपणा नाम बुझाया, सो ढोला सच अलाइंदा। जुग चौकड़ी खेल वखाया, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। आपे बण बण दाई दाया, दो जहानां वेख वखाइंदा। लख चुरासी राह चलाया, साचे मार्ग आपे लाइंदा। गुर अवतार नाल मिलाया, सच संदेशा नाम सुणाइंदा। कोटन कोटि नाउँ लए प्रगटाया, लिख लिख लेख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपणे संग रखाइंदा। जुग जुग गायण हरि हरि गीत, गीत गोबिन्द अलाईआ। आदि जुगादि हरि हरि रीत, अवल्लड़ी आप वखाईआ। कोए मन्दिर कोए मट्ठ कोए मसीत, कोए गुरुदुआर वड्याईआ। अबिनाशी करता बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। धाम अवल्लड़ा ठांडा सीत, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। गुरमुख विरले वसे चीत, जिस जन आपणे रंग रंगाईआ। लख चुरासी परखे नीत, घट घट बैठा सच्चा माहीआ। भुल्ल ना जाए हस्त कीट, शाह सुल्ताना वेख वखाईआ। आपणा नाउँ रखे अनडीठ, दिस किसे ना आईआ। चार वेद पुराण अठारां शास्त्र छे गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गा गा थक्की गीत, गहर गम्भीर भेव कोए ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाईआ। हरि का नाउँ ना कोई सके समझ, समझ विच किसे ना आया । भगतां मारे इक्को रमज़, रैहबर बण बेपरवाहया। झूठी कढ्ढे माया मरज़, रोग दुःख दए गंवाया। जन भगतां पिच्छे आपणा करे हरज़, लोकमात फेरा पाया। जगत विकारां देवे वर्ज, नाम खण्डा इक्क चमकाया। आपणे लेखे विच करे दरज, ना कोई मेटे मेट मिटाया। पुरख अबिनाशी पूरा करे फ़र्ज, फ़रद ज़ुरम ना कोए लगाया। जुग जुग लहिणा देणा चुकाए कर्ज, मकरूज आपणा नाउँ ठहराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराया। आपणा नाउँ साची टेक, एका एक रखाईआ। जन भगतां करे बुध बबेक, रूप आप हो आईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत्त ना कोए लड़ाईआ। कर किरपा खोले भेत, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जगत दिसे बालू रेत, कलर कंध देवे ढाहीआ। जन भगतां करे साचा हेत, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। दरस कराए नेतन नेत, लोचण

नैण आप खुल्हाईआ। लख चुरासी विच्चों वेख, आपणे नाउँ करे पढ़ाईआ। पूरब लहिणा पिछली मेटे रेख, अगला लेखा आप लिखाईआ। गुरमुख झूजे गुर के खेत, गुर चरन सरन शरनाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल शब्द दुशाले लए लपेट, आपणे नाउँ करे सफ़ाईआ। एथे ओथे दो जहान रखे साया हेठ, राए धर्म ना दए सजाईआ। सोहे रुत्त बसन्ती चेत, फ़ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाउँ समझाईआ। नाम अनमुल्ला खोल्हे भेव, अनभउ करे रुशनाईआ। जिस जन लगाए आपणी सेव, तिस मिले मात वड्याईआ। पारब्रह्म अलख अभेव, अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। नाम दृढ़ाए रसना जेहव, जेहवा रसना नाल मिलाईआ। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल धाम आसण लाईआ। जन भगतां आपणा नाउँ देवे साचा मेव, मिट्ठा रस इक्क चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाउँ दए वड्याईआ। जुग जुग नाउँ मात चलाया, सतिजुग त्रेता द्वापर मात हंढाईआ। कलयुग अन्तिम वेख वखाया, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाया, जोती जामा आपे पाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाया, दो जहान वज्जी वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया, गुर अवतार नाल मिलाईआ। नव नौ चार भेव चुकाया, दहि दिशा भेव खुल्हाईआ। रवि ससि धन्दा नेत्र नैण वखाया, कोह करोड़ी चलत ना पन्ध मुकाईआ। आपणा छन्दा आपे गाया, ब्रह्मण्डां आप सुणाईआ। जेरज अंडां पर्दा लाहया, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप वरताईआ। आपणा नाउँ कलयुग अन्त, एका एक वरताईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, हरि सज्जण लए मिलाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। अनहद नादी नाद मंत, धुन आत्मक आप शनवाईआ। माण दिवाए विच्चों जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गढ़ तोड़े हउँमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। मेल मिलाए साची संगत, सगला संग आप हो जाईआ। नाता तोड़े भुख नंगत, वस्त अमोलक झोली पाईआ। माणस जन्म ना होए भंगत, लख चुरासी दए कटाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन इक्को नाम समझाईआ। इक्को नाम लैणा सिख, जन भगतां आप पढ़ाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे तृख, तृष्ना होर ना कोए वधाइंदा। एका पाए साची भिछ, भिखक झोली आप भराइंदा। बिन नेत्र जाए दिस, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप पढ़ाइंदा। साचा नाउँ गुरमुख पढ़, एका अक्खर वड वड्याईआ। सच दुआरे जाणा चढ़, दर दरवाजा इक्क खुल्हाईआ। दर्शन पाउणा इक्को हरि, दूसर ओट ना कोए रखाईआ।

६५
११

सचखण्ड दुआरा साचा घर, जन भगतां मिले वड्याईआ। पुरख अकाल इक्को नर, साची सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम वखाईआ। हरि का नाम सदा अनडिठ, लिखण पढ़न विच ना आया। जन भगतां करे हित्त, नित नवित वेस वटाया। ना कोई वार ना कोई थित, बरस मास ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप वरताया। वरते नाम श्री भगवान, आपणी दया आप कमाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को काहन, लख चुरासी वेख वखाईआ। गुरमुख सखीआं लए पछाण, घट घट आपणा फेरा पाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। चरन धूढ़ कराए अशनान, दुरमति मैल धुवाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, सांतक सति वरताईआ। एका राग सुणाए कान, अनहद नादी नाद वजाईआ। शब्द अगम्मी इक्क बबाण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। सचखण्ड वखाए सच मकान, हरि भूमिका आप बणाईआ। ना कोई ज़िमी ना असमान, सूरज चन्न ना कोए रुशनाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, निरगुण बैठा आसण लाईआ। गुरमुख विरला चरन डिगे आण, जिस आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप दृढ़ाईआ। आपणा नाम हरि दृढ़ा, दृष्टी आप खुल्हाइंदा। जुग चौकड़ी विरड़ा गए पा, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। बिरध बाल रूप वटा, जोबन नाल ना कोए लै जाइंदा। अन्त ढेरी गए ढाह, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कोटन कोटि राम कृष्न अख्वा, लंका गढ़ कोट तुड़ाइंदा। रथ रथवाही बण बण सेव कमा, गीता ज्ञान ज्ञान जणाइंदा। कोटन कोटि ईसा मूसा काला सूसा रंग रंगा, कलमा नबी नबी पढ़ाइंदा। कोटन कोटि मुहम्मद सीस गए झुका, झुक झुक सजदा इक्क कराइंदा। कोटन कोटि कह कह गए इक्क ख़ुदा, ख़ालक ख़लक विच समाइंदा। कोटन कोटि तक्कण राह, नेत्र नैण उठाइंदा। कोटन कोटि कहिण बेऐब परवरदिगार ख़ुदा, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। कोटन कोटि कहिण नूरी जल्वा बेपरवाह, नूरो नूर नूर अख्वाइंदा। नानक निरगुण कहे सच्चा शहिनशाह, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। गोबिन्द ओट इक्क तका, पुरख अकाल मनाइंदा। पूत सपूता नाउँ धरा, सेवक साची सेव कमाइंदा। अन्तिम मंगे इक्क पनाह, चरन दुआरा इक्क समझाइंदा। एका डंक दए वजा, एका फतहि नाम रखाइंदा। सब दा फातया दए पढ़ा, मनक आपणा रंग रंगाइंदा। शरअ शरीअत करे जुदा, ज़ाबर जबर फेरा पाइंदा। आपणा करतब दए वखा, काया कुरा वेख वखाइंदा। ज़िमी असमानां डेरा ढाह, चौदां तबकां पन्ध मुकाइंदा। नबी रसूलां लए उठा, पीर पैग़म्बर नाल मिलाइंदा। मुलां शेख़ मुसायक लए जगा, सुहबत आपणी आप समझाइंदा। कोए अल्ला राणी कर के रिहा बुला, कोए

मीआं वड वड्याइंदा। नानक सतिनाम कह कह रिहा सुणा, गोबिन्द वाहिगुरू रूप वखाइंदा। हरि का नाँ लोकमात किसे दिसे ना, लिख लिख अक्खर सर्ब समझाइंदा। कलयुग अन्तिम सारे फड़न पनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाइंदा। चार जुग दा जगत विहारा, कोटन कोटि नाम प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण निराकार आप कराईआ। आत्म देवे इक्क सहारा, परमात्म लए मिलाईआ। सोहँ शब्द सच जैकारा, दर घर साचे आप सुणाईआ । आदि जुगादि इक्क अवतारा, एका गुर अख्वाईआ। एका नाम सति भण्डारा, सति सतिवादी आप वरताईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो बोले जैकारा, जन्म मरन विच ना आईआ। इक्को नाम इक्क आधारा, एका इक्क नाल मिलाईआ। माणस जन्म ना आए हारा, हार जित रूप वटाईआ। गुरमुख वसे ठांडे दरबारा, दर दरवाजा इक्क खुल्हाईआ। कागद कलम लिख लिख हारा, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। समुंद सागर रोवे ज़ारो ज़ारा, मस रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाम आप वखाईआ। कलयुग अन्तिम सोहँ ढोला, सो पुरख निरँजण गाया। निरगुण नानक रख के गया ओहला, अन्तिम पर्दा दए चुकाया। जिस नूं कहिन्दे रहे मौला, सो मौला वेस वटाया। आपणा पूरा करे कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाया। निरगुण निरगुण बदल्लया चोला, ना कोई पिता ना कोई माया। सच दुआरा इक्को खोल्हा , ख़ालक ख़लक दए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका नाम लए धराया। सोहँ नाउँ धरनी धर, धवल मिले वड्याईआ। किरपा करे नरायण नर, नर नारी बूझ बुझाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी देवे वर, निहकामी निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। सन्त सुहेले सज्जण आपे फड़, जुग विछड़े लए मिलाईआ। निरभउ चुकाए झूठा डर, भय अवर ना कोए वखाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़्ह, स्वछ सरूप वटाईआ। अक्खर वक्खर आपे पढ़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। जन भगतां वखाए इक्को घर, घर मन्दिर सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरे जाणा चढ़, घर साचे मिले वड्याईआ। अद्धविचकार ना जाणा अड़, कलयुग माया पर्दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम सुणाईआ। सुणयां नाउँ हरि गोपाल, गोबिन्द मेल मिलाया। किरपा करी दीन दयाल, दीनन होए सहाया। नाता तोड़ काल महांकाल, आप आपणे रंग रंगाया। जन्म जन्म दे विछड़े भाल, हउँमे ममता मोह चुकाया। एका रंग रंगाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वड्याआ। बिन दमां बणे दलाल, दिलबर आपणी सेव कमाया। बिन छुरीउँ होया हलाल, ऐनलहक़ नाअरा सुणाया । गुरमुख वेखे साचे लाल, लाल अनमुलड़े आप उठाया। सदा सदा करे

प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाया। फल लगाए साचे डाल, पत डाली आप महकाया। कलयुग अन्तिम चले नाल नाल, निरगुण सरगुण संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना आप वखाया। नाम निधाना डूँग्घा सागर, भेव कोए ना पाइंदा। हरि जू रख्या काया गागर, गहर गवर खेल खलाइंदा। गुरमुख विरला बणे सौदागर, जिस जन साचा वणज कराइंदा। दर आयां घर देवे आदर, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। सबर सबूरी बख्शे साबर, सिदक आपणे नाल रखाइंदा। पिसर पिदर बण हरि मादर, पिता पूत गोद उठाइंदा। निर्मल कर्म करे उजागर, जन्म जन्म दी मैल धुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणे नाम रंग रंगाइंदा। हरि का नाउँ साचा रंग, गुरमुख विरले मात चढ़ाया। आत्म सेजा बैठ पलँघ, हरि सतिगुर कन्त हंढाया। अठ्ठे पहर धुन मृदंग, अनहद नाद वजाया। पंच विकारां खण्ड खण्ड, जूठा झूठा मोह मिटाया। गीत गाए सुहागी छन्द, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाया। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाया। आत्म कराए परमानंद, निजानंद भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणा नाम जपाया। जपया नाम जप गुरमुख, गुर गुर मिली वड्याईआ। पंज तत्त काया मिटया दुःख, तत्तव तत्त ना कोए लड़ाईआ। नाता तुटया उलटा रुख, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। उज्जल होया मात मुख, लोक परलोक खुशी मनाईआ। पाया दरश अबिनाशी अचुत, चेतन रूप समाईआ। गुर चरन दुआरे सोहे रुत्त, साची रुत्त आप महकाईआ। जन भगतां कोलों भगत रहे पुच्छ, हरि जू की खेल वरताईआ। लोकमात लख चुरासी नालों बैठा रुस्स, गुरमुख विरले रिहा मिलाईआ। सचखण्ड दुवारिउँ आया उठ, बणया पाँधी हरि जू राहीआ। गुरसिखां उपर रिहा तुट्ठ, दीनन आपणी दया कमाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, निझर झिरना इक्क झिराईआ। जिस देवे दरस तिस लख चुरासी जाए छुट्ट, जन्म मरन विच ना आईआ। कलयुग अन्तिम गुरमुख साचा बूटा पुट्ट, सचखण्ड दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग आपणा रंग चढ़ाईआ। आओ सन्तो दस्सो सच्च, हरि साचा खेल खलाइंदा। काया भाण्डे माटी वेख कच्च, कंचन रंग वखाइंदा। लख चुरासी नौ खण्ड पृथ्मी मन वासना रही नच्च, कलयुग नटुआ स्वांग वरताइंदा। गुरमुख विरला जाए बच, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। हिरदे अंदर जाए रच, नज़र किसे ना आइंदा। सृष्ट सबाई रही मच्च, त्रैगुण अग्नी अग्ग लगाइंदा। हरि का नाउँ ना सके कोई वाच, रसना पढ़ पढ़ सर्ब गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका मन्त्र दो जहानां जंतर सोहँ आत्म परमात्म अन्तर, अन्तर आत्मा मेल मिलाइंदा।

बणया बाढी हरि निरँकारा, हरि अचरज खेल खलाइंदा। आपे बण बण लक्कड़हारा, जंगल जूह फेरा पाइंदा। आपे चीर करे दो फाड़ा, साचा सूत्र नाम लगाइंदा। आपे खिच्चे आपणा आरा, तिक्खी धार आप रखाइंदा। आपे कढ्ढे चार दीवारा, चारों कुण्ट घेरा पाइंदा। आपे लाए इट्टां गारा, आपणी सेव आप कमाइंदा। आप सुहाए बंक दुआरा, नाम छप्परी नाउँ धराइंदा। नामे बणाया महल्ल मुनारा, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। नामे खोल्ह्या आप किवाड़ा, नेत्र नैण नैण वखाइंदा। चारों कुण्ट इक्क निरँकारा, निरगुण नूर डगमगाइंदा। उपर आकाश तणयां ताणा, साची छत्त मात वखाइंदा। वाहवा मीता तेरा भाणा, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। तूं साहिब सच्चा राणा, तेरा तख्त इक्क सुहाइंदा। नामा छीपो कमला कोझा गाए तेरा गाणा, तेरी ओट तकाइंदा। इक्को मंगां लेफ तलाई सह्राणा, जिस उपर तन टिकाइंदा। शब्द अगम्मी कहे श्री भगवाना, हुक्मी हुक्म समझाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल होए महाना, मेहरवान आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी छप्परी आप सुहाइंदा। तेरी छप्परी लक्कड़ी काठ, पाती डाल नाल मिलाईआ। करया खेल पुरख समराथ, आपणा भेव जणाईआ। नामे तेरी पत्त लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बिपरां कोलों कीता वक्ख, तृप्त आप बुझाईआ। साचे मन्दिर जाणा वस, साची छप्परी दए समझाईआ। चरन कँवल आउणा नस्स, मिले सच्ची सरनाईआ। ना कोई रव ना कोई सस, नूर नज़र कोए ना आईआ। जिस दी महिमा गाए अकथ, सो समरथ तेरी सेव कमाईआ। तेरी छपरी मेरा जस, मेरा जस तेरी वड्याईआ। रल मिल दोवें जाईए वस, भरमें भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अगला मार्ग देवां दस्स, भेव अभेद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी छप्परी दए वड्याईआ। धन्न भाग मेरा छोहया छप्पर, नामे सीस झुकाया। ग़रीब निमाणयां गया अप्पड़, आपणा पन्ध मुकाया। तूं माई तूं बपड़, पिता पूत होएं सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, किस कारन थान सुहाया। किस कारन मेरी छपरी छाई, छहबर नाम लगाईआ। चारों कुण्ट वेखे लोकाई, क्यों लुकवीं खेल वखाईआ। तूं भगतां सदा गुसाँई, सगला संग निभाईआ। मैं तेरा दरस वेखां चाँईं चाँईं, चातरक वांग बिल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ ढह प्या शरनाईआ। एका वर देणा भगवान, नामा मंग मंगाइंदा। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, किव लोकमात फेरा पाइंदा। मैं बालक मूर्ख मुग्ध अंञाण, तेरा भेव कोए ना आइंदा। तूं मेरा बणया आप महिमान, घर मेरे फेरा पाइंदा। मैं तैनूं देवां दान, तूं प्रोहत रूप वटाइंदा। इक्क दूजे दी करीए जाण पछाण, साचा वेला वक्त सुहाइंदा। तूं मेरा छप्पर छाया आण, मैं तेरा बंक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नामे एका गुण वखाइंदा।

नामे सुण कर ध्यान, हरि जू आप सुणाया। तेरा वखाया इक्क निशान, आप आपणी दया कमाया। कलयुग अन्तिम खेल करे महान, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। चार जुग लेखा जाणे जीव जहान, भेव अभेद खुल्हाया। छत्ती जुग कर परवान, हरिजन साचे लए मिलाया। लोकमात वखाए सच निशान, सच निशाना नाल रलाया। सचखण्ड निवासी वेखे मार ध्यान, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। तैनूं दिता इक्को दान, कलयुग वरते बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाया। कलयुग अन्तिम जाए आ, हरि जू नामे सच सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी मिले मलाह, साचा भगतां बेड़ा चलाइंदा। हरिजन सज्जण लए जगा, आप आपणा हुक्म सुणाइंदा। सति सतिवादी रंग चढ़ा, दो जहानां खेल कराइंदा। साता दूए नाल मिला, बहत्तर अंक आप वड्याइंदा। भगत दुआरा इक्को वार दए बणा, तेरी छप्परी माण चुकाइंदा। तेरे पिच्छे पहलों गया समझा, हरि भगतां सेव कमाइंदा। कलयुग अन्तिम सच सिंघासण लए विछा, जन भगतां अंदर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छप्पर छन्न आप वखाइंदा।

★ ६ मग्घर २०१८ बिक्रमी बूड़ सिंघ भगवान सिंघ दे नवित जेठूवाल ★

सो पुरख निरँजण मेहरवान, वड्डी वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकारा वड्डा बलवान, बलधारी नाउँ रखाईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता लेखा जाणे दो जहान, आप आपणे रंग समाईआ। श्री भगवान हो प्रधान, सचखण्ड दुआरे आसण लाईआ। पारब्रह्म प्रभ मंगे दान, निरगुण आपणी झोली डाहीआ। खेले खेल सचखण्ड सच्चे मकान, दर घर साचा आप सुहाईआ। दीवा बाती इक्क महान, कमलापाती आप जगाईआ। साचा साकी देवे दान, सच भण्डारा आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, आदि आदि वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण सिफ्त सालाह, एकँकारा सोभा पाईआ। आदि निरँजण नूर रुशना, अबिनाशी करता इक्क वखाईआ। श्री भगवान वसणहारा हर घट थाँ, पारब्रह्म रिहा समाईआ। सच सिंघासण इक्क वड्या, तख्त निवासी सोभा पाईआ। राजन राज आप अख्वा, भूपत भूप वेस वटाईआ। हुक्मी हुक्म आप चला, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। आपणा गेड़ा आप दवा, वेखणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप प्रगटाईआ। आपणी धार आप प्रगटा, हरि आपणा खेल खलाइंदा। निरगुण मेला सहिज सुभा, सगला संग रखाइंदा। दर घर साचे सोभा पा, सोभावन्त खुशी

मनाइंदा। आप आपणा मृदंग वजा, नाम निधाना आपे गाइंदा। वेस अनेक आप करा, आदि जुगादी रूप वटाइंदा। जुग जुग लेखा मात चुका, आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। आपणे रंग आपे राता, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। जुग जुग खेले खेल तमाशा, निरगुण निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा जाणे पृथमी आकाशा, गगन मंडल फेरा पाईआ। लख चुरासी जाणे भोग बलासा, घर घर आपणी सेज सुहाईआ। जन भगतां होए दासी दासा, दासी दास सेव कमाईआ। मंडल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड पाए रासा, आपणी रास आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, आदि जुगादि कराइंदा। सचखण्ड दुआरे वसे इक्क इकल्ला, थिर घर साचा आप सुहाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाए पल्ला, एका डोरी नाम रखाइंदा। जोती शब्दी निरगुण सरगुण आपे रला, आप आपणी कल वखाइंदा। सच संदेश नर नरेश एकँकार एका घल्ला, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, आत्म परमात्म सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा स्वांग वरताइंदा। जुग जुग वरते स्वांगी स्वांग, सगला संग आप हो जाईआ। जन भगतां रखे साची तांघ, नेत्र नैण नैण उठाईआ। लोकमात बणाए सांझ, आप आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। जुग जुग मेला हरि करतार, जन भगतां मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, लख चुरासी खेल खलाइंदा। सन्त सुहेले लए उभार, गुर चेले गोद बहाइंदा। अमृत बख्शे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती नूर कर उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। मन वासना कर खुआर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जलाइंदा। घर विच घर दए वखाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। किरपा करे दीन दयाल, दीनां अनाथां गले लगाइंदा। नाता तोड़ काल महांकाल, साची धर्मसाल आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचा पेख्या, निरगुण किरपा धार। जन्म जन्म दा जाणे लेखया, गुर सतिगुर हरि अवतार। जिस जन देवे साची सिख्या, गुरमुख उज्जल विच संसार। नाम निधाना पाए भिच्छया, वस्त अमोलक एका वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन करे सदा प्यार। हरिजन प्यारा मीतड़ा, हरि जू हरि हरि भाए। काया चोली रंगे चीथड़ा, एका रंग चढ़ाए। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, बिन रसना जिह्वा गाए। पतित पुनीत करे पुनीतड़ा, पतित पापी आप तराय। इक्क सुणाए सुहागी गीतड़ा, अन्तर मन्त्र नाम अलाए। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत रस आप चखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाए। हरिजन

मेला साचे घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या हरि, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जगत विकारा चुक्के डर, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। पुरख अबिनाशी देवे वर, वर दाता सहिज सुभाईआ। इक्को मेला साचे नर, नर नरायण संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ रख समरथ, संसा रोग सर्ब चुकाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। निज घर आत्म कर कर वास, परम आत्म मेल मिलाइंदा। लख खुरासी बन्द खुलास, बन्दीख़ाना आप तुड़ाइंदा। दीपक दीआ कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, रसना जिह्वा जो हरि गुण गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला सच दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। किरपा करे आप करतार, करता पुरख वेस वटाईआ। लख चुरासी जीव जंत पावे सार, बेअन्त भेव खुल्हाईआ। गुरमुख सज्जण लए भाल, आप आपणा पर्दा लाहीआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह होए सहाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, जगत वणजारा नाउँ धराईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद दाता बेपरवाहीआ। नात तोड़ काल महांकाल, आपणी डोरी तन्द बनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग मिलाईआ। हरिजन मिल्या संग, सगला संग तजाया। गृह

७१

११

मन्दिर वज्जे मृदंग, अनहद नादी नाद सुणाया। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, अनन्द मंगल वड्याआ। निरगुण नूर नुराना चन्द, जोती जोत डगमगाईआ। पंज विकारा खण्ड खण्ड, खण्डा नाम उठाया। सुरत सवाणी ना होए रंड, हरि कन्त कन्तूहल हंढाया। दिवस रात इक्को ठंड, अग्नी तत्त ना कोए वखाया। खुशी कराए बन्द बन्द, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। दीन दयाल ठाकर बख्शंद, बख्शिश आपणी दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। तारनहारा इक्को हरि, आदि अन्त अख्वाइंदा। भगत भगवन्त देवे वर, आपणी बूझ बुझाइंदा। इक्क नुहाए साचे सर, चरन सरोवर इक्क वखाइंदा। एका विद्या जाए पढ़, अक्खर वक्खर आप सुणाइंदा। इक्क बंधाए साचे लड़, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप समझाइंदा। हरिजन सच्चा आप समझा, समझ नाल समझ मिलाईआ। फड़ फड़ राहे देवे पा, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। निरगुण जपाए सरगुण नाँ, नाउँ निरँकार आप वखाईआ। साचे धाम दए बहा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। निहकर्मी हरि कर्म कमा, कर्मगत दए मिटाईआ। गुरमुख विरले मेले आपणे थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। बलिहारी विटुह कुरबान जां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। मेल मिलावा सचखण्ड, सचखण्ड निवासी

आप कराइंदा। नाता तोड़ जीउ ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड भेव चुकाइंदा। नाम निधाना इक्को वंड, साची वस्त आप वरताइंदा। माया ममता खण्ड खण्ड, नीकन नीका खेल कराइंदा। नाता तोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मोह मिटाइंदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, अक्खर वक्खर आपे गाइंदा। दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन उठे जाए जाग, हरि जागरत जोत जगाईआ। मन अन्तर उपजे इक्क वैराग, वैरागी रूप वटाईआ। नाता तोड़ सज्जण साक, सगला संग तजाईआ। एका चढ़े साचे राक, शब्द घोड़ा लए दौड़ाईआ। निरगुण सरगुण देवे साथ, साचा संग निभाईआ। आप जणाए पूजा पाठ, एका अक्खर नाम पढ़ाईआ। अमृत सरोवर वखाए मारे ठाठ, निझर झिरना दए झिराईआ। जोत नूर जगे ललाट, मस्तक लेखा आप मुकाईआ। डूँग्घी भँवरी पार कराए घाट, सच किनारा दए वखाईआ। चरन कँवल बंधाए नात, एका देवे सरन शरनाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रही झाक, लख चुरासी नैण उठाईआ। कवण वेला गोबिन्द पूरा करे वाक्, कीता कौल तोड़ निभाईआ। कवण वेला मुहम्मद देवे साथ, चौदां लोक वेख वखाईआ। कवण वेला होए सहाई त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथां लए उठाईआ। कवण वेला मिले रामा सुत दसरथ, दहि दिशा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार कुण्ट वेख वखाईआ। चार कुण्ट तक्के इष्ट, ईश जीव ना कोए मिलाइंदा। भरमे भुल्ली भरम सृष्ट, भरम शरअ ना कोए तुड़ाइंदा। रामा लभ्भे गुर वशिष्ट, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताइंदा। साचा खेल हरि गोबिन्द, अचरज आप वरताईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जन भगतां अमृत आत्म वहाए नीर सागर सिन्ध, एका धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस पुरख समरथ, लोकमात वटाया। आप जणाए आपणी गथ, नाउँ निरँकारा आप समझाया। कलयुग अन्तिम खेल तमाश, त्रैगुण अतीता वेख वखाया। लख चुरासी भोग बिलास, घर घर नाच नचाया। गुरमुख विरले लग्गी प्यास, प्रभ दर्शन राह तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाया। हरिजन उठया कृपानिध, आपणी दया कमाईआ। भगतां करे कारज सिद्ध, करता कीमत आपे पाईआ। आपे जाणे आपणी बिध, दूसर अवर ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला लए मिलाईआ। कलयुग अन्तिम मेल मिलणा, मिल्या पुरख बनवारी। करे खेल श्री भगवाना, भगवन देवे इक्क अधारी। गुरमुख चढ़या साचा चन्ना, निरगुण जोत होए उज्यारी। कलयुग अन्धेरा

जाए भन्ना, चारों कुण्ट होए खुआरी। पतिपरमेश्वर देवे डंना, आई अन्तिम हारी। चोर फड़या गया उपर सन्नां, पुरख अबिनाशी रिहा मारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पैज स्वारी। जन भगतां पैज स्वारदा, जुगा जुगन्तर कार। कलयुग अन्तिम खेल सिरजणहार दा, निरगुण निरगुण लए अवतार। भगत भगवन्त आपे भालदा, लख चुरासी वेख संसार। हाल मुरीदां आपे जाणदा, आपे सुणे पुकार। पूरब लहिणा आप पछाणदा, जुग जुग होए देवणहार। लेखा जाणे दो जहान दा, ब्रह्मण्ड खण्ड करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन उभारे आप हरि, हरि जू दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर देंदा रिहा वर, कलयुग अन्तिम लए उठाईआ। निरगुण सरगुण घाड़न घड़, घाड़त घड़त लेखे लाईआ। भगतां अंदर आपे वड़, आप आपणा दर खुल्हाईआ। सोहँ अक्खर इक्को पढ़, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। दरस दखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूप वटाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, मढ़ी गोर ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेस वटाया। कलयुग अन्तिम वेस अवल्ला, एकँकारा आप कराइंदा। लहिणा देण चुकाए राणी अल्ला, ऐनलहक़ पन्ध मुकाइंदा। बिस्मिल हो हो आपे रला, बिस्मिल आपणा आप वखाइंदा। आदि जुगादी अछल अछला, वल छल आपणा खेल कराइंदा। गुरमुख विरले फड़ाए पल्ला, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम भेव चुकाइंदा। कलयुग अन्तिम भेव चुकाया, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। भगत भगवन्त लए मिलाया, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। नेत्र लोचण नैण दरस कराया, दीद ईद मनाईआ। अमृत मेघ बरस वखाया, सांतक सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। कलयुग अन्त भगत वड्याई, हरि वड्डा वड सालाहइंदा। साचे घर होई कुड़माई, साचा सगन मनाइंदा। सौहरे पेईए एका थाईं, एका घर सोभा पाइंदा। लेखा जाणे धी जुवाई, आप आपणा वेस वटाइंदा। आपे पाँधी आपे राही, आपे दो जहानां फेरा पाइंदा। आपे वसे हर घट थाईं, घट घट आपणा आसण लाइंदा। हरिजन मेला चाँईं चाँईं, चातरक तृखा आप बुझाइंदा। सदा सुहेला देवे ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निथाव्याँ पकड़े आपे बाहीं, निमाणयां गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सेव कमाइंदा। जन भगतां बण सेवादार, सेवक सेव कमाईआ। जुग जुग दा कर्जा दए उतार, पिछला लहिणा झोली पाईआ। अग्गे दस्से साचा हाल, अहिवाल नाल मिलाईआ। इक्क बणाए साची धर्मसाल, धर्म दुआरा नाउँ धराईआ। चार वरन मिले दयाल, दयालता रूप वखाईआ। चार जुग सुरत संभाल, सुरत शब्द शब्द सुरत विच समाईआ। त्रैगुण

माया तोड़ जंजाल, त्रै भवन धनी दए वड्याईआ। जन भगतां दस्से राह सुखाल, एका अक्खर नाउँ पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए प्रगटाईआ। हरिजन सच्चा उपज्या मात, पंज तत्त काया खेल खलाया। आप चलाई आपणी गाथ, एका मन्त्र नाम पढ़ाया। सच वखाया इक्को हाट, हरि जू आप खुलाया। गुरमुख उतरे साचे घाट, आपणा बेड़ा आप चलाया। लहिणा देणा हथ्थो हाथ, साचा वणज इक्क कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। तारनहारा इक्को गुर, पुरख अकाल अख्वाईआ। लेखा जाणे धुर दा धुर, धुरदरगाही बेपरवाहीआ। जन भगतां संग गया जुड़, साची जोड़ी मात बणाईआ। इक्क दूजे दी रखण लोड़, ना होए कदे जुदाईआ। निहकर्मी आपे गया बौहड़, कर्मा फंद कटाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। सच लवाए साचा पौड़, घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह बणे हरि ठाकर, आपणी दया कमाइंदा। वणज कराए बण सौदागर, चार कुण्ट फेरा पाइंदा। करे खेल करता कादर, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। उठो जागो अन्तिम वेला, वाह वाह हरि जू आप जगाईआ। कलयुग अन्तिम सज्जण सुहेला, बण बण सेव कमाईआ। अचरज खेल आपणा आपे खेला, वेद कतेब भेव ना आईआ। आपे जाणे आपणा वेला, जन भगतां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे नाल मिलाईआ। हरिजन मेला श्री भगवान, लोकमात खेल खलाइंदा। आप झुलाए सच निशान, सच दुआरे सोभा पाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ जगत मकान, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। गुरमुख विरले देवे ध्यान, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। अनादी नाद साची धुन्कान, राग रागनी मुख शरमाइंदा। कर प्रकाश कोटन भान, गुरमुख साचे आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप वखाइंदा। साचा मार्ग सिध्धा राह, सतिजुग धार चलाईआ। नौ निधां रहीआं शरमा, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। अठारां सिद्धां मारन धाह, खुल्ल्हड़े केस देण दुहाईआ। त्रैगुण माया मिल्या फाह, फाँसी फंद ना कोए कटाईआ। गुरमुख चढ़या चा, साचा भगत खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या इक्क मलाह, बेड़ा बन्ने दए लगाईआ। गुरसिखां कोलों पुच्छे सलाह, दिवस रैण मता पकाईआ। कोटन कोटि थल अस्गाह, चरनां हेठ दबाईआ। कलयुग अन्तिम दया कमा, साचे भगतां दए वड्याईआ। छत्ती जुग दा लहिणा पा, साची भिच्छया इक्क वरताईआ। सति दुआरा दए बणा, सति सतिवादी सेव कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत दुआर बणे दुआरा, भेव

कोए ना पाइंदा। गुर अवतार कढुदे हाढ़ा, प्रभ अग्गे सीस सर्ब झुकाइंदा। किरपा कर गिरवर गिरधारा, ग़िरयाज़ार सर्ब समाइंदा। आदि जुगादि तेरा पसारा, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। तूं निरगुण ल्या अवतारा, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। दो जहान तेरा सहारा, लोआं पुरीआं राह तकाइंदा। तेरा नाम मृदंग नगारा, आदि जुगादि गुर अवतार वजाइंदा। तूं करया खेल न्यारा, निरगुण जोत डगमगाइंदा। जन भगतां लगाया अखाड़ा, साची खेल वेख वखाइंदा। तेरा रूप अपर अपारा, दिस किसे ना आइंदा। तूं सब दा सांझा यारा, पीर पैग़म्बर तेरा राह तकाइंदा। धन्न भाग हरि भगत कीता प्यारा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। साढे तिन्न दा इक्क मनारा, तिन्न तिन्न बंध बंधाइंदा। तिन्नां लोकां पार किनारा, त्रैगुण माया डेरा ढाहइंदा। सिँघ शेर बण रखवाला, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। गुरमुख उठाए फड़ कंगाला, नाम ख़ज़ाना आप वरताइंदा। कर किरपा करे मालो माला, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां संग आप निभाइंदा। भगतां संग देवे साथ, साची सेव कमाईआ। इक्क इकल्ला खोल्ह हाट, साची वस्त रिहा टिकाईआ। हरिजन वेखे मार झात, दूसर नज़र किसे ना आईआ। कलयुग रैण अन्धेरी रात, रातीं सुत्तयां सर्ब विहाईआ। जिस जन खोल्हे आपणा ताक, सो जन सतिगुर दर्शन पाईआ। सृष्ट सबाई माटी ख़ाक, अन्त ख़ाकी ख़ाक वखाईआ। झूठा नाता सज्जण साक, मात पित भाई भैण बंधप सुत ना कोए रखाईआ। सतिगुर पूरा पूरा करे भविख्त वाक्, वाक् वाक् नाल मिलाईआ। बेऐब खुदाई पाकी पाक, ख़ालक ख़लक रिहा समाईआ। साहिब सुहेला कमलापात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर बहाईआ। साचे घर हरिजन बहणा, सतिगुर पूरा आप बहाइंदा। पहला दरस दिखाए नैणां, दूजा जगत मोह चुकाइंदा। तीजे जन भगतां मन्ने कहिणा, भुल्ल कदे ना जाइंदा। चौथे पद सदा रहिणा, इक्को दर वखाइंदा। पंचम नाद धुन वखाए नैणां, आपणा नाद आप वजाइंदा। छेवें छप्पर छन्न कोए ना रहिणा, जो उपजे सो भन्ने थिर कोए रहिण ना पाइंदा। सत्तवें सति सतिवादी भाणा सहिणा, हरि भाणे सद समाइंदा। जन भगतां चुकाए लहिणा देणा, देणा लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा दाता इक्क अख्वाइंदा।

बिस्त्रे मरग चिट्टा बस्त्र, बिस्त्रा एका एक वखाईआ। धाम वखाया इक्क असथिर, थिर आपणा घर वड्याईआ। निशान झुलाए इक्को हरि, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। जगत निशानयां चुका डर, जो सतिगुर सरन आए सरनाईआ। एका सेजा गुरसिख

गुर बैठे चढ़, दर साचे खुशी मनाईआ। पल्लू पल्ला ल्या फड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रातीं सुत्तयां आपणी गोद बहाईआ। बहाए गोदी करे लाड, जिउँ बालक मात सखाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। जगत अन्धेरा डूँग्घी खाड, हरि सतिगुर होए सहाईआ। कोटन कोटि भार गए लाद, बिन सतिगुर पार ना कोए कराईआ। रातीं सुत्तयां देवे दाद, दीद ईद दरस दिखाईआ। बिन यादों रखे याद, भुल्ल कदे ना जाईआ। कलयुग अन्त दे के जावे आध, हिस्सा लोकमात वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक्क वखाईआ। सच निशाना धर्म खण्ड, सर्म खण्ड भेव चुकाया। कर्म खण्ड ना देवे दंड, एका डंका नाम वजाया। ज्ञान खण्ड टुट्टा घमंड, हरि आपणे रंग रंगाया। सचखण्ड वज्जे मृदंग, गुरमुख सच्चा सोभा पाया। आदि जुगादि जुग जुग इक्को अनन्द, अनन्द मंगल एका गाया। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, ब्रह्मण्ड रूप ना कोए वखाया। जन भगतां होए आप बख्शंद, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाया।

★ १० मग्घर २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

इन्द इन्दरासण रिहा डोल, पुरख अबिनाशी खेल खलाईआ। करोड़ तेतीसा गठड़ी रिहा फोल, आपणे अन्तर ध्यान लगाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाईआ। इक्क दूजे नूं रहे बोल, ताअना मेहणा रहे सुणाईआ। चार जुग करदे रहे घोल, आपणा बल रखाईआ। पारब्रह्म संग ना होया कोई कौल, सगला संग ना कोए वखाईआ। हरि कलयुग अन्तिम प्रगट होया उपर धौल, धवला हौला भार कराईआ। निरगुण बदले आपणा चोल, चोला संग ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। अन्तिम तोले साचा तोल, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करोड़ तेतीसा रिहा कुरला, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सुरपति राजा इन्द रिहा सुणा, वाहवा तेरी वड्डी शहिनशाहीआ। अन्तिम होणा आ सहा, तेरी ओट तकाईआ। चार कुण्ट ना दिसे राह, साचा पन्ध ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। करोड़ तेतीसा रिहा रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साचा देवे ना कोए ढोआ ढो, मेला मेल ना कोए मिलाईआ। हरि का नाउँ बीज ना ल्या बो, साचा फल ना कोए वखाईआ। आपणा आप बैठे खो, वेला अन्त रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। सुरपति इन्द कर ध्यान, नेत्र नैण उठाइंदा। चारों कुण्ट सुंञ मसाण, दहि दिशा अन्धेरा छाइंदा। ना कोई मन्दिर सच मकान, सच सिँघासण ना सोभा पाइंदा। आपणे गृह होया हैरान, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सुरपति इन्द हो निरास, निर्धन रूप वटाया। कोए ना करे पूरी आस, करोड़ तेतीसा मुख छुपाया। सच वस्त ना रही मेरे पास, साचे घर ना कोए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। साचा खेल करे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। शब्द संदेशा देवे एका वार, एका गुण समझाईआ। सुरपति इन्द कर ख़बरदार, देव लोक दए जणाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अन्तिम कलयुग खेल अपार, निरगुण निरवैर आप कराईआ। छोटा बाला कर त्यार, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। भाणा मन्नणा पए धुर दरबार, सद भाणा इक्क वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल गुण अवगुण लए विचार, अवगुण वेखे थाउँ थाईंआ। जुग चौकड़ी गई हार, मनवन्तर संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। सच संदेशा इक्को हरि, एका वार सुणाइंदा। लेखा जाणे दर बदर, दर दर आपणी खेल खलाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस धर, रूप अनूप वटाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, भन्नणहार आप हो जाइंदा। करोड़ तेतीसा सुरपति आपे फड़, आपणा बन्धन पाइंदा। इक्क वखाए साचा घर, दर दरवाजा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, एका एक जणाईआ। सोलां मग्घर खेल महान, बेपरवाह आप वखाईआ। दस अठ्ठ इक्क ज्ञान, अठ्ठ दस मेल मिलाईआ। नड्ड नड्ड वेखे दो जहान, दो जहानां फेरा पाईआ। छोटा बाला कर परवान, सच परवाना दए फड़ाईआ। एका राग सुणाए मेहरवान, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। पुरी इन्द होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। सब दा छुट्टे पीण खाण, रातीं सुत्तयां नींद ना आईआ। करे खेल की भगवान, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। लोकमात असीं देंदे रहे दान, जीव जंत सेव कमाईआ। आपणी कर ना सके कल्याण, लोकमात वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साडा लहिणा रिहा चुकाईआ। सानूं मन्नदे रहे देव, निउँ निउँ सीस झुका। करोड़ तेतीस हुंदी रही सेव, घर घर इष्ट मना। हरि का कोई ना जाणे भेव, अन्तिम लेखा दए मुका। आदि जुगादि सदा निहकेव, एकँकारा इक्क बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम देवे आप सजा। करोड़ तेतीसा शब्द ज्ञान, एका वार जणाईआ। उठो वेखो मार ध्यान, हरि करता खेल वखाईआ। भूमिका छड्डो आप अस्थान,

अस्थिल कोए रहिण ना पाईआ। चार जुग लैंदे रहे दान, अन्तिम संग ना कोए रखाईआ। लहिणा मंगे श्री भगवान, हुक्मी हुक्म इक्क वरताईआ। खाली हथ्थ सर्ब कुरलाण, झोली नाम ना कोए भराईआ। चारों कुण्ट दिसे वैरान, साचा दर ना कोए सुहाईआ। कलयुग अन्तिम आई हाण, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाईआ। पितर बण बण बहन्दे रहे महिमान, घर घर महिमानी खाईआ। अन्तिम लेखा लए हरि जू आण, लहिणा कोए रहिण ना पाईआ। बालक फड़े गए नादान, ना चले कोए चतुराईआ। पंडत पांधे मुख छुपाण, इष्ट देव ना कोए सहाईआ। सिल पूजस होए हैरान, पूजा पाठ मुख भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दए चुकाईआ। सुरपति इन्द हो निरासा, एका धाह लगाइंदा। कोए ना दिसे जित्त पासा, सगला संग ना कोए रखाइंदा। पुरी इन्दर ख़ाली कासा, वस्त सच ना कोए वरताइंदा। भोग बिलास करदे रहे हासा, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा । अन्तिम करे आप शनाख़ा, शख्सीअत आपणी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। इन्दर नेत्र नीर विरोल, निराकार रिहा ध्याईआ। चार जुग मेरा वज्जा ढोल, लोकमात मिली वड्याईआ। आपणा हट्ट बैठा खोल्ह, वस्त जगत वरताईआ। तेरा नाउँ ना मेरे कोल, अन्त रिहा पछताईआ। मैं जाता तूं बदल्लया चोल, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। सच दुआरा ल्या खोल्ह, हरिजन साचे संग रखाईआ। इक्को अक्खर दिता बोल, आत्म परमात्म ढोला गाईआ। दो जहानां बण विचोल, लोआं पुरीआं रिहा बदलाईआ। असीं तेरे पिच्छे मारदे रहे रोल, जीव जंत भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ एका मंग मंगाईआ। एका मंगे मंग बण भिखारा, खाली झोली अग्गे डाहइंदा। तूं निर्धन देवें सद सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। मेरा बेड़ा विच मँझधारा, पार ना कोए कराइंदा। करोड़ तेतीसा नाता छुटया झूठे यारा, सगला संग ना कोए निभाइंदा। चारों कुण्ट हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए बचाइंदा। तुध बिन अवर ना कोए सहारा, सहायक नज़र कोए ना आइंदा। मेरी नईया तेरा किनारा, तुध बिन पार ना कोए वखाइंदा। मैं भुल्ला सदा अवगुणहारा, तूं बख्शंद सदा अख्वाइंदा। भुल्ल आए तेरे दुआरा, आपणी भुल्ल बख्शाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप जणाइंदा। सुण धार हरि निरँकार, एका वार जणाईआ। इन्दर तेरी सुण पुकार, प्रभ आपणा राह वखाईआ। निरगुण जोत करे उज्यार, लोकमात वड्डी वड्याईआ। सेवक बण अगम्म अपार, जन भगतां सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी वेख विचार, कलयुग अन्तिम खुशी मनाईआ। साचा बंक कर त्यार, राउ रंक दए वड्याईआ। एका डंक वज्जे संसार, चार वरन दए सुणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा दए सुणाईआ। सच संदेशा हरि निरँकार, शब्दी शब्द सुणाया। अन्तिम तेरा लहिणा दए निवार, देणा कोए नज़र ना आया। तेरा वेखे सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। बाहों पकड़ दए उतार, तेरा पन्ध मुकाया। करे खेल आप करतार, करता पुरख वेख वखाया। छोटे बाले कर प्यार, साचा मार्ग दए जणाया। तख्त बहाए आप निरँकार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। करोड़ छिआनवें सेवादार, अमृत धार चुआया। करोड़ तेतीसा जाए हार, लख चुरासी विच भुवाया। जन्म लए विच संसार, मात गर्भ आप फिराया। ना कोई मेटे मेटणहार, लिख्या लेख ना कोए गंवाया। जुग जुग करदा आया कार, करता पुरख वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह शब्द जणाया, एका धार समझाईआ। करोड़ तेतीसा रहिण ना पाया, सुरपति इन्द नाल मिलाईआ। लोकमात जन्म दवाया, मात गर्भ फिराईआ। अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखाया, दूसर भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। एका सुणया हरि फ़रमाना, चिंतावान इन्द। हुक्म देवे शाह सुल्ताना, गहर गम्भीर गुणी गहिन्द। करोड़ तेतीसा टुट्टा माणा, माण टुट्टा सुरपति इन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साहिब बख्शिंद। बख्शणहारा हरि गोपाला, आदि जुगादि समाया। जुगा जुगन्तर खेल निराला, निरगुण सरगुण वेख वखाया। लख चुरासी करे प्रितपाला, अवण गवण फेरा पाया। विष्न ब्रह्मा शिव दस्से राह सुखाला, आप आपणा नाउँ जपाया। सुरपति होया अन्त बेहाला, नेत्र नैण ना सके उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी माया। सुरपति इन्द कर विचार, इक्क ध्यान लगाईआ। किरपा कर मेरी सरकार, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। मैं भिक्खक खड़ा दुआर, एका भिच्छया मंग मंगाईआ। रंग माणया अपर अपार, रंग राग विच समाईआ। एका विसरया मीत मुरार, जित विसरया थाउँ कोए नज़र ना आईआ। पुरी इन्दर होई खुआर, तेरी ख़बर ना कोए सुणाईआ। मैं आपणा आप गया हार, तेरी सार कदे ना पाईआ। तूं साहिब डुब्बदे पाथर लवें तार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। मैं अपराधी गुनाहगार, मूर्ख मुग्ध ना कोए चतुराईआ। इक्क बलास कर प्यार, हास रास समाईआ। तुध बिन सारे होए छार, अन्त संग ना कोए निभाईआ। पत ना दिसे किसे डाल, कली कली रही कुमलाईआ। पुरी इन्द ना कोए बहार, पतझड़ आपणा रंग वटाईआ। तुध बिन कोए ना वखाए सच्ची गुलज़ार, गुलशन रूप ना कोए वटाईआ। बुलबुल रोवे ज़ारो ज़ार, कहकहा ना कोए लगाईआ। अन्तिम दिसया कंडा खार, साची महक ना कोए महकाईआ। तूं सुत्तयां मारी मार, नेत्र नैण ना सक्या कोई उठाईआ। निरगुण मात लै अवतार, मेरी मन्नत गंवाईआ। छोटा बाला कर त्यार,

साचे घोड़े दिता चढ़ाईआ। पुरी इन्द वड़या शाह सवार, आपणा फेरा पाईआ। एका बोल सोहँ जैकार, मेरी शक्ती खिच्च वखाईआ। मेरी भगती किसे ना आई कार, तुध बिन ना कोए वड्याईआ। मैं नेत्र नैण ना सकां उठाल, मेरे नैण रहे सरमाईआ। तूं छोटे बाले दिते सखाल, मैं बिरध तेरी सार ना पाईआ। तुध बिन शाह होया कंगाल, चारों कुण्ट दयां दुहाईआ। अन्तिम मेरा मन्न इक्क सवाल, तेरी होए ना कदे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। साचा मार्ग हरि जू दस्से, आपणी खुशी मनाइंदा। सचखण्ड निवासी सच घर बह बह हस्से, आपणा रंग वखाइंदा। सुरपति इन्द करोड़ तेतीसा चारों कुण्ट नस्से, नस्स नस्स पन्ध ना कोए मुकाइंदा। आपणी करनी आपे फसे, ना कोई फंद तोड़ तुड़ाइंदा। निरबल हो हो आपे ढट्ठे, साचा बल ना कोए जणाइंदा। इक्को वार होए इक्ट्ठे, एका तन्द बंधाइंदा। बिन मारयां आपणे सत्थर लथ्थे, सत्थर हेठ ना कोए वछाइंदा। अन्त पत्त ना कोई रखे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। फड़ फड़ पत्थर दीवारां उपर रखे, करोड़ ततीस सर्ब मनाइंदा। अन्तिम मुल ना प्या कौडी घट्टे, कीमत करता ना कोए वखाइंदा। दमढ़ी दम ना कोए वट्टे, साचे हट्ट ना कोए विकाइंदा। इक्क सिख दे सारे बणाए पट्ठे, करोड़ तेतीसा अग्गे लाइंदा। रिड़दे आवण अग्गे पिच्छे वट्टे, ठाकर वट्टयां नाल खेल कराइंदा। अन्तिम पाए आपणे भट्ठे, अग्नी एका जोत लगाइंदा। मात गर्भ विच आपे सट्टे, दस दस मास अग्न तपाइंदा। नाता जोड़ बूंद रत्ते, रक्त आपणा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइंदा। इन्दर सुणया हरि फ़रमाणा, हरि जू हरि जणाया। चरन ध्यान लगाए बण निमाणा, निउँ निउँ सीस झुकाया। तूं शाह पातशाह सच्चा राणा, हउँ सेवक सेव कमाया। आदि जुगादी तेरी आणा, भुल्ल कदे ना जाया। अन्तिम दस्स सच टिकाणा, एका राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाया। हरि समझाए आपणा गुण, एका एक जणाईआ। हरि का भेव जाणे कवण, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों चुण, हरिजन साचे अन्त प्रगटाईआ। छत्ती जुग दी पुकार सुण, भगत भगवन्त लए उठाईआ। जीव जंत छाण पुण, हरिजन साचे बाहर कढ्ढाईआ। इक्क सुणाए नाद धुन, धुन आत्मक आप वजाईआ। जिउँ कबीर जुलाहा ताणा पेटा रिहा बुण, तिउँ गुरमुख गुर गुर सेव कमाईआ। दरस दखाए फुन फुन, आप आपणी दया कमाईआ। आपे सरगुण आपे निरगुण, निराकार आप हो जाईआ। सब दी चोटी देवे मुंन, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। भेडां वांग लाहे उन, देवे अन्त सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। आपणा भेव हरि जू खोल्ह, एका वार सुणाइंदा। भगतां वसे भगवन्त कोल, विछड़

कदे ना जाइंदा। कलयुग अन्तिम गया मौल, निरगुण सरगुण विच समाइंदा। सुरपति तेरे कोलों रखे ओहल, नेत्र नैण नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क समझाइंदा। साचा राह दस्से हरि, हरि आपणा भेव छुपाया। हरिभगतां दे जाणा दर, दर दुआरा दए वखाया। तेरी बांह लैण फड़, सिर तेरे हथ्थ टिकाया। मैं भगतां कोलों रिहा डर, बैठा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह दए वखाया। इन्दर बैठे सीस झुका, एका मंग मंगाईआ। भगतां राह दे समझा, कवण दुआरे फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा जणा, एका गुण वखाईआ। जिन्हां मिल्या बेपरवाह, सो भगत मात हो जाईआ। जिस दुआरे सेवा रिहा कमा, सो दुआरा सोभा पाईआ। भगतां अंदर रिहा समा, आप आपणा आसण लाईआ। मैनूं मिलण दा जे मन चाअ, पहलां भगतां कोल फेरा पाईआ। जे तैनूं नाल लैण रला, समझण आपणा भाईआ। फेर सिख्या देण समझा, एका ढोला गाईआ। सोहँ अक्खर देण पढ़ा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए आप वड्याईआ। कवण कूट जावां नस्स, लोकमात राह तकाया। तेरी माया विच ना जावां फस, बेअन्त तेरी वड्याआ। मेरी पूरी करनी आस, मैं इक्को आस रखाया। तेरे भगतां होवां दास, दर आपणा सीस झुकाया। मेरी करन बन्द खुलास, तेरे नाल लैण मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम दए समझाया। साचा धाम लोकमात, निरगुण आप जणाईआ। जिथे लेखा लिखे बिन कलम दवात, संग रखे ना कोए शाहीआ। सो साहिब कमलापात, जन भगतां दए वड्याईआ। नेत्र लोचण नैण खोल्ह लैणा झाक, झाकी एका वार झलक वखाईआ। बाहरों दिसे तन ख़ाक, अंदर वसे बेपरवाहीआ। जिस नूं गोबिन्द मन्नया सच्चा सज्जण साक, पुरख अकाल वेस वटाईआ। जिस खुल्हाया तेरा हाट, वेले अन्त बन्द कराईआ। अन्त वखाए आपणा घाट, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। जन भगतां देवे दात, अनमुलड़ी आप वरताईआ। तूं वी मिलणा ओस जमात, प्रभ मिलण दी आस जे तकाईआ। बिन भगतां पुच्छे ना किसे दी वात, कोटन कोटि बैठे राह तकाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क समझाईआ। साचे राह साचा पन्ध, हरि पाँधी आप जणाइंदा। इक्को गीत गाउणा छन्द, गीत सुहागी आप सुणाइंदा। भगतां अन्तिम इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द वखाइंदा। टुट्टी देवे गंढ, गंढणहारा आप हो जाइंदा। लख चुरासी सुत्ता दे कर कंड, गुरमुख विरले वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप समझाइंदा। साचा घर वेखणा जा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। अठ्ठे पहर गुरमुखां मिलण दा रखे

८१ ११

चाअ, चाल निराली इक्क रखाईआ। निरगुण बण बण सेव रिहा कमा, साची सेवा सीस उठाईआ। भगत दुआरा रिहा बणा, सतिजुग साचा राह चलाईआ। डुब्बदे पाथर रिहा तरा, जो चरन आए सरनाईआ। एका देवे नाम सलाह, सलाहगीर नाल मिलाईआ। रहिमत करे आप खुदा, खुदी तकब्बर सर्ब मिटाईआ। साबर सबर दए मुका, सबूरी आपणी इक्क बंधाईआ। ज़ेर ज़बर दए मिटा, नुकता कोई रहिण ना पाईआ। बेख़बर ख़बर लए आ, आप आपणा फेरा पाईआ। भगत दुआरा रिहा सुहा, तिन्नां लोकां माण चुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए उठा, सुरपति राजा इन्द नाल मिलाईआ। आपणी हथ्थीं करे सफा, सफ़ा सब दी सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी बण बेवफा, वफात सब दी दए कराईआ। करे वफात पढ़े फाता, फतहि आपणा डंक वजाईआ। छत्ती जुग करदा रिहा खेल तमाशा, भेव कोई ना आईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां दिता सच्चा साथा, सगला संग आप हो आईआ। छत्ती जुग दा वन्डया इक्क अहाता, चार कुण्ट लकीर लगाईआ। अंदर बह बह देवे दाता, देंदयां तोट ना राईआ। सच समग्गरी भरे ख़ाता, जगत शाह रहे कुरलाईआ। बहत्तर भगत पंज तत्त काया बहत्तर नाड़ी फुटीआं शाख़ां, निरगुण सरगुण गुर गुर रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण नाता तोड़ जातां पातां, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप सालाहीआ। हरिजन वसे सदा संग, सगला संग निभाया। आत्म सेजा इक्क पलँघ, नूरी सेज हंढाया। शब्द अनादी नाद मृदंग, बिन मृदंगा आप वजाया। साचे गृह आपे लँघ, बह बह आपणा हाल सुणाया। कर दरस आपणा जाणे परमानंद, अनन्द अनन्द विच रखाया। भगतां गाए साचे छन्द, आपणा सोहला नाल गाया। बिन भगतां होए रंड, हरि जू कम्म किसे ना आया। उठ वेख सुरपति इन्द, हरि जू अचरज खेल वरताया। गुरमुख बणाए आपणी बिन्द, आप आपणी गोद उठाया। एथे ओथे हरख सोग ना कोई चिन्द, चिंता चिखा ना कोए जलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाया। भगतन मेला साचे घर, हरि साचा आप कराईआ। सुरपति राजा इन्द रिहा डर, मेरी होणी अन्त जुदाईआ। शंकर सीस चरनां रिहा धर, गल पल्लू एका पाईआ। ब्रह्मा मंगे इक्को वर, चरन शरन मिले शरनाईआ। शंकर अग्गे रिहा खड़, संसा रोग नाल रलाईआ। मैं तेरी सेवा रिहा कर, तूं साची सेव लगाईआ। पुरख अबिनाशी निरभउ वखाए डर, भय आपणा इक्क जणाईआ। जो उपजे सो जाए हर, हरि सब नूं जाए खाईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैग़म्बर खा, हरि जू अजे शांत ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ लए चला, फड़ फड़ आप प्रगटाईआ। निरगुण बण बण दए सलाह, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। लोआं पुरीआं

ब्रह्मण्डां खण्डां पावे राह, ब्रह्म आपणा नाउँ धराईआ। कोटन कोटि रवि ससि चमका, अन्त चांदना दए खपाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड प्रगटा, अन्त करे सफाईआ। कोटन कोटि गगन मंडल सुहा, अन्तिम सब दा लेख चुकाईआ। इक्को भगत मिलण दा रखे चा, दूजी प्रीत ना किसे लगाईआ। बेप्रीत बणया रहे बेपरवाह, जो घड़या भन्न वखाईआ। जन भगतां गीत रिहा गा, आपणा ढोला आप सुणाईआ। सतिजुग साची रीत रिहा चला, चिल्ला फड़या हथ्थ सच्चे शहिनशाहीआ। इक्को कमान रिहा खिच्चा, खिच्च दो जहान लगाईआ। आपणा आप ना सके कोई बचा, विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाईआ। जन भगतां चढ़या चा, घर मिल्या सच्चा माहीआ। फड़ के सेवा रिहा लगा, नस्स किते ना जाईआ। जन्म जन्म दा विछोड़ा ल्या कटा, जुग जुग दी कटी फाहीआ। पहला दूजा तीजा पौड़ा ल्या लगा, चौथे घर बहाईआ। सस्से उपर होड़ा आप लगा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। हाहा हरि का रूप रिहा समा, हरी हरि खेल कराईआ। उपर टिप्पी आपणे अंग लगा, सिफरा सिफर नाल उडाईआ। हँ ब्रह्म पारब्रह्म आप अख्वा, अक्खर अक्खर करे सफाईआ। पत्थर बण सच्चा शहिनशाह, लख चुरासी करे रगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सहि ना सके जुदाईआ। भगतां ना करे जुदा, जुदाई जगत आप कराईआ। आपणा आप कीता फिदा, फितरत सब आपणी आप मुकाईआ। निरगुण राह सिध्धा दिता चला, आदि जुगादि इक्को गुर अख्वाईआ। बण सतिगुर सेव कमा, साची सेवा आप वखाईआ। जन भगतां देवे नाम दृढ़ा, दृढ़ विश्वास आपणा आप जणाईआ। कैलाश पर्बत रिहा शरमा, नैण धरत उपर टिकाईआ। मेरा माण दिता गवा, करया वेस बेपरवाहीआ। गुरसिखां दिता उठा, हथ्थ गुरज इक्क फड़ाईआ। छोटे बाले दिता ढाह, ब्रह्मा होश भुलाईआ। फिर सके ना कोई उठा, मेरा बल ना कोई वधाईआ। की करां किधरे जावां, कवण दुआरे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां संग आपणा रंग वखाईआ। नानक सतिगुर गम्भीर गहर, इक्को गुण वड्याईआ। जींवदयां करामात दस्सणी कहर, अन्त किसे ना दए वखाईआ। पंज तत्त काया चोला झूठा शहर, संग ना कोई रखाईआ। आसा तृष्ना काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग रखे लहर, लहर लहर नाल मिलाईआ। गुर का भेव ना जाणे कोई ऐर ग़ैर, शरीअत करे लड़ाईआ। जिस जन करे आपणी मेहर, सो जन साची बूझ बुझाईआ। मन मुखता झूठा झेड़ा छेड़ा छेड़, हिन्दू मुस्लिम वंड वंडाईआ। आपणी हथ्थीं लहिणा गया निबेड़, लहिणा लहणे झोली पाईआ। पंज तत्त काया चोला माटी ढेर, धरनी ख़ाक उत्ते गया टिकाईआ। होए सुआह मुड़ के आए ना फेर, नानक प्रीत ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त चोला

करामात ना कोई वखाईआ। पंज तत्त चोला गया छड्ड, आपणा खेल खलाया। रक्त बूंद बणया नाड़ी मास हड्ड, काया गढ़ खेल खलाया। निरगुण सरगुण नालों होया अड्ड, आपणा आप राह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक मिल्या इक्क घर, पंज तत्त संग ना कोई रखाया। पंज तत्त ना कोई प्यार, अग्गे संग ना कोई जाईआ। नानक सब तों वसे बाहर, भेव कोई ना पाईआ। कोई कहे कालू पुत्त कोई कहे तृप्ता दए अधार, कोई कहे नार खुशी मनाईआ। कोई कहे पिता पूत करे उज्यार, लोकमात वड्डी वड्याईआ। नानक सब नूं कर के गया खुआर, एका पुरख अकाल वड्याईआ। जिस पुत्तर धी ना करया प्यार, सो आपणा पंज तत्त चोला संग लै ना जाईआ। निरगुण जोत मिली जोत धार, जोत जोत विच समाईआ। नानक वर पाया हरि कन्त भतार, घर साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड सोहया बंक दुआर, महल अटल इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त चोला संग ना कोई रखाईआ।

★ ११ मग्घर २०१८ बिक्रमी दिदार सिँघ सन्ता सिँघ पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ★

८४
११

इक इक्क खेल समरथ, साहिब साहिब खेल खिलाया। इक्क इक्क महिमा अकथ, साहिब साहिब गुण गाया। इक्क इक्क हरि मार्ग दस्स, साहिब साहिब राह चलाया। इक्क इक्क हरि देवे वथ, साहिब साहिब झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। इक्क इक्क पुरख अकाल, एका इक्क अख्वाईआ। इक्क इक्क साहिब दीन दयाल, इक्को इक्क वड्डी वड्याईआ। इक्क इक्क वसे धाम निराल, इक्को इक्क सोभा पाईआ। इक्क इक्क अवल्लड़ी चाल, इक्को इक्क वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ। इक्को इक्क हरि दुआरा, एका इक्क आप प्रगटाइंदा। इक्को इक्क वेखणहारा, इक्क इक्क वेख वखाइंदा। इक्को इक्क सेवादारा, इक्को इक्क सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। इक्क सेवा चाकर बणे पाख़ाक, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। इक्क साहिब सुल्तान बणे दासी दास, आपणी उदासी आप गंवाईआ। इक्क मेहरवान सद रखे आस, भगत वछल वड्डी वड्याईआ। इक्क सतिगुर पावे साची रास, सच दुआरा आप सुहाईआ। इक्क निरगुण सद वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। इक्क लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, इक्क लेखा सर्ब मुकाईआ। इक्क मन जोत कर प्रकाश, दो जहान करे रुशनाईआ। इक्क वेखे खेल तमाश, इक्क आपणा

मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। इक्क पुरख इक्क अबिनाश, एका घर सुहाइंदा। एका साहिब सर्ब गुणतास, एका रूप हरि दूसर होर ना कोई रखाइंदा। इक्क लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, इक्क ख़ाली हथ्थ फिराइंदा। इक्क इक्क घट घट अंदर रखे वास, इक्क नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हरि इक्क इक्क नाल मिलाइंदा। इक्क नाल एका मेल, एका गुण जणाईआ। एका बाती एका तेल, एका गुर करे रुशनाईआ। एका सज्जण इक्क सुहेल, एका सगला संग निभाईआ। एका वसे सद नवेल, बेअन्त बेपरवाहीआ। एका गुरू एका चेल, एका जुग जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। एका दाता एका दात, देवणहार इक्क अख्वाइंदा। एका संग एका साथ, सगला संग इक्क हो आइंदा। एका पिता एका मात, एका पूत सोभा पाइंदा। एका बस्त्र एका खाट, एका आसण आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। एका हरि एका दर, एका सगला संग रखाईआ। इक्क नरायण इक्क नर, इक्क घर बैठा सोभा पाईआ। एका घाड़न रिहा घड़, एका घड़ु घड़ु भन्न वखाईआ। एका चोटी बैठा चढ़, एका डूँग्घी भँवर समाईआ। एका विद्या रिहा पढ़, एका पढ़ पढ़ रिहा गाईआ। एका हवन रिहा सड़, एका अग्न तत्त बुझाईआ। एका जम्मे पए मर, एका जन्म मरन विच ना आईआ। एका वसे साचे घर, एका एक घर घर अलख जगाईआ। एका निरभउ रखाए सर्ब डर, एका भय ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाईआ। इक्क गुर इक्क अवतार, इक्क शब्द रूप समाइंदा। इक्क हुक्म इक्क वरतार, इक्क हुक्मी हुक्म भुवाइंदा। इक्को लेख इक्क लिखार, एका लिख लिख बणत बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। एका धार एका जोत, एका नूर नूर रुशनाईआ। एका किला एका कोट, एका आसण सोभा पाईआ। एका मात एका पूत, एका पिता पूत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इक्क नाल मिलाईआ। इक्क नाल मिल्या इक्क, अंक अंक मिलाया। दो जहानां देवे एको टेका, टेक आपणी दए समझाया। आदि जुगादी साचा लेखा, लिख लिख आपणा दए समझाया। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा पेशा, दूसर भेव कोए ना राया। इक्को ठाकर इक्क करे आदेसा, एका निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। इक्को करता इक्को करीम एका कर्म कांड बणाईआ। इक्को दाता राज़क रिज़क रहीम, इक्को घर घर रिहा पुचाईआ। इक्को आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे तक्सीम, साची वंड इक्क वंडाईआ।

एका करे खेल अज़ीम, एका अजमत आप प्रगटाईआ। एका देवणहारा तालीम, ताज़ीम इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। इक्को पीर इक्क परवरदिगारा, इक्क मुर्शद नाउँ धराइंदा। इक्क गहर गम्भीर सांझा यार, इक्क नज़र किसे ना आइंदा। इक्क ज़ाहर इक्क ज़हूर इक्क शाह गफ़ूर, इक्क बेऐब नाउँ धराइंदा। इक्क सर्बकला भरपूर, इक्क गुण अवगुण ना कोई जणाइंदा। इक्क नेड़े इक्क वसे दूर, इक्क घट घट आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इक्को इक्क अख्वाइंदा। इक्को इक्क हरि अख्वा, आखर आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी वेस वटा, वेसवा जगत लए नचाईआ। लख चुरासी मुजरा वेखे शहिनशाह, बहत्तर नाड़ तार सतार वजाईआ। पंज विकार जगत संगार तबला दए वजा, ताल ताल नाल वजाईआ। माया ममता घूँगट दए उठा, नेत्र नैण ना कोई शरमाईआ। जगत हवस कज्जल देवे पा, काली धार चलाईआ। मोह ममता सब दे अग्गे पल्लू देवे डाह, मन मनसा नाल मिलाईआ। घर घर दर दर फेरा पा, जगत ढोला दए सुणाईआ। जो दीसे तिस नूं सज्जण लए मना, सगला संग ना किसे संग निभाईआ। इक्क वेसवा लख चुरासी पाए फाह, नार बण ना सेव कमाईआ। बिन अग्नी देवे दाह, एका अग्ग लगाईआ। अन्तिम हड्डीआं करे स्वाह, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। झूठा यार ना बणे कोई गवाह, पल्लू सर्ब जाण छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, स्वांगी आपणा खेल रचाईआ। स्वांगी नटुआ बण बण नट, हरि हरि खेल खलाइंदा। साधां सन्तां हथ्थां उत्ते मारे हथ्थ, आपणा हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। जुग चौकड़ी कोटन कोटि राह दस्स दस्स, लख चुरासी आप फसाइंदा। सब दे कोलों आप गया नस्स, हथ्थ किसे ना आइंदा। किसे मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर मट्ठ शिवदुआले ना जाए फस, फांदी बण फंद ना कोई पाइंदा। सब दी चोटी गया झस्स, एका रगड़ा नाम लगाइंदा। लख चुरासी नालों होया अड्ड, आपणा वक्खरा धाम बणाइंदा। सच निशाना बैठा गड्ड, इक्को इक्क झुलाइंदा। ना कोई जाणे पार हद्द, अद्धविचकार सर्ब कुरलाइंदा। जे कोई कहे पारब्रह्म पुरख अबिनाशी दर घर साचे लए सद्द, लख लख शुकर मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को इक्क आपणे नाल सुहाइंदा। इक्क इकल्ला इक्क करतार, अनक कला इक्क अख्वाईआ। इक्क मन्दिर इक्क दुआर, एका नगर सोभा पाईआ। एका भूप इक्क सिक्दार, शाह पातशाह इक्क अख्वाईआ। इक्क हुक्म इक्क वरतार, एका हुक्मे हुक्म भुवाईआ। एका पुरख एका नार, एका साची सेज हंढाईआ। एका रंग रलीआं माणे बण भतार, एका आपणी खुशी मनाईआ। एका नूर जोत उज्यार, एका शब्द नाद सुणाईआ। एका पावे सब दी सार, एका एक आपणा आप जपाईआ। जुग चौकड़ी

खेल अपार, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। नौ नौ कर विहार, ब्रह्मा विष्न शिव दए समझाईआ। सुरपति इन्द कर ख़बरदार, साचा मार्ग इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर वज्जे वधाईआ। एका घर वज्जया नाद, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। एका घर उपज्या राग, चार कुण्ट करे शनवाईआ। एका हरि पलटया स्वांग, स्वांगी सब दा स्वांग खपाईआ। एका भगत मंगी मांग, एका भगवन पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाईआ। धार चलाए अन्तिम कल, कलकाती आप मिटाईआ। नौ नौ चार करे वल छल, अछल अछल भेव ना राईआ। चौथे युग वड प्रबल, आपणा बल लए प्रगटाईआ। हरि सज्जण जन भगत बूटा गया फल, पत्त डाली आप महकाईआ । बण सुगंधी अंदर गया रल, लुकवीं खेल वखाईआ। लोकी पुच्छण की गल्ल, गल्ल दस्सण विच ना आईआ। बिन दीपक जोती गई बल, तेल बाती ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा रिहा चुकाईआ। अन्तिम लहिणा सब दा चुक्के, चूक रहे ना राईआ। लग्गी जड़ सब दी पुट्टे, पुट्ट पुट्ट आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख विरला मात उठे, जिस सतिगुर आप उठाईआ। भगत वछल जन सन्तां उपर तुट्ठे, देवे माण वड्याईआ। करे प्रकाश साची कूटे, कूड़ कुटम्ब तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इक्क नाल मिलाईआ। इक्क नाल मिल्या इक्क, इक्क इक्क नाल तराईआ। ग्यारां मग्घर लेख लिख, भगत दए वड्याईआ। लेखे लग्गा साचा सिख, जिस सिख्या हरि मन भाईआ। जन्म जन्म दी मिटे तृख, तृष्ना रहे ना राईआ। नाम दान पाए भिक्ख, साची भिच्छया आप वरताईआ। आप वंडाए आपणा हिस्स, साचा हिस्सा आपणी झोली पाईआ। नेत्र किसे ना आवे दिस, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग्यारां मग्घर दए वड्याईआ। ग्यारां मग्घर पुरख समरथ, हरि हरि काज कराया। इन्दर नेत्र रोवे अथ्थ, कणी कणी बरसाया। करोड़ तेतीसा मेरा टुट्टा साथ, संग कोई रहिण ना पाया। लोकमात जन भगत दुआरा गया वस, हरि जू आप वसाया। अठ्ठ पहर वसे पास, विछड़ कदे ना जाया। जुग जुग दी साडी करनी कीती नास, साडा बल ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा आप कराया। भगत दुआरे पाई छत्त, छत्ती जुग पन्ध मुकाया। गोबिन्द तेरी लेखे लग्गी रत्त, रत्त रत्त नाल मिलाया। तेरा विचोला कमलापति, पुरख अकाल बेपरवाहया। भगतां पत्त लैणी रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। रविदास चुमारे तेरा लहिणा सीआं साढे तिन्न हथ्थ, हथ्थ हथ्थ नाल मिणाया। एका वार कर इकट्ठ, जुग जुग दा लहिणा आप मुकाया। साचा सूत्र तन्द पट, ताणा पेटा इक्को पाया। कबीर जुलाहा रिहा हस्स, वाह वाह हरि जू खेल रचाया।

आपणी हथ्थीं पाणा देवां झट्ट, साची पाण दए वखाया। आपणी खड्डी विच लए रख, आपणा हथ्था नाम फुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाया । तन्द नाल बंधा तन्द, वट्ट एका एक चढ़ाईआ। भगतां संग ज्ञान तन्द, सोहँ मेला मेल मिलाईआ। अन्तर अन्तर इक्को छन्द, एका एक पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत दए वड्याईआ। मन वासना कढ्ढे बाहर, तन विच रहिण ना पाया। सेवा करां सच विचार, साचा राह वखाया। सिर ते चुक्या इट्टां गारा भार, दुरमति मैल पार कराया। अंदर वड़या निराकार, आपणा रंग वखाया । सिँघ संगत कीता ख़बरदार, खुशी आपणे हथ्थ रखाया। तेरे सीस धरया ताज, गुरू महाराज वेस वटाया। सो साहिब रच रच काज, हरि भगतां कार कमाया। गोबिन्द लहिणा देणा चुकाए देस माझ, मज़दूरी सब दे हथ्थ फड़ाया। रातीं सुत्तयां रखे लाज, ग़रीब निवाज़ दया कमाया। मन वासना जो चले जहाज, हरिसंगत विच्चों बाहर कढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। मन आशा जग तृष्ना दूर, तृखा रहे ना राईआ। जिस गोबिन्द पिच्छे मर गए जीव झूर झूर, सो गोबिन्द मिल्या माहीआ। जिस मन मारया तन तोड़या गरूर, हाज़र हज़ूर दरस दिखाईआ। सतिगुर सब दे मुआफ करे कसूर, कसर कोए रहिण ना पाईआ। सिँघ नरायण सेवा कीती बण मज़दूर, उजरत सब दी हथ्थो हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद सहाईआ ।

८८
११

★ १२ मग्घर २०१८ बिक्रमी हज़ारा सिँघ प्यारा सिँघ बलाका सिँघ आसा सिँघ जेठूवाल दरबार विच ★

कैलाश होया कलेश, हरि केशव आप कराइंदा। शंकर रिहा वेख, नेत्र नैण उठाइंदा। मेरी मिटदी जाए रेख, वेला अन्त नेड़े आइंदा । निरगुण धरया साचा भेख, रूप रंग ना कोई वखाइंदा। जिस साहिब नूं करी आदेस, सो साहिब खेल कराइंदा। तिस अग्गे चले ना कोई पेश, जोरू जर ना कोई वखाइंदा। साचा साहिब नर नरेश, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। कैलाश मारे धाह, रो रो पुकारया। करे खेल बेपरवाह, अन्त कोई ना पा रिहा। निरगुण नूर जोत जगा, लोकमात करे उज्यारया। सरगुण दए जगा, आपणी आप वंड वंडा रिहा। एका मार्ग दए वखा, ब्रह्मण्डां खण्डां आप हिला रिहा। सच मृदंगा दए सुणा, नाम निधाना एका गा रिहा। सच निशाना दए चढ़ा, सति सतिवादी सोभा पा रिहा। जुग जुग दी खेल दए मिटा, आपणी खेल आप करा रिहा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी बणदे रहे गवाह, जीवां जंतां नाल रला ल्या। अन्तिम लेखा देणा प्या, लिख्या लेख ना

कोई मिटा रिहा। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणा रिहा। शंकर तेरा पन्ध मुका, शरअ आपणी आप जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप करा रिहा। शंकर वेख कैलाश, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरी कोई ना करे पूरी आस, आसा आसा नाल मिलाईआ। नाता तुट्टा पृथ्मी आकाश, गगन मंडल ना कोई वड्याईआ। लख चुरासी ना कोई साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। कैलाश ख़ाली वेख सिंघासण, सिंघ नज़र कोई ना आइंदा। करया खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी आपणी चाल चलाइंदा। प्रगट हो घनक पुर वासन, एका आपणा बल रखाइंदा। दो जहानां खेल तमाशन, ब्रह्मण्डां खण्डां नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव हरि निरँकार, आदि पुरख चुकाईआ। शंकर होणा ख़बरदार, बेख़बर आप जगाईआ। नाता तुट्टे विच संसार, साक सज्जण सैण ना कोई अख्वाईआ। इष्ट देव आई हार, गुरदेव ना कोई मनाईआ। खड़ग खण्डा ना कोई कटार, त्रिसूल निशाना ना कोई लगाईआ। जटा जूट आई हार, सेहरा सीस ना कोई वखाईआ। बाशक तशक ना कोई शृंगार, कंठ माला ना कोई पहनाईआ। नार सुहागण ना कोई उधार, लेखा सब दा रिहा मुकाईआ। जगत विछोड़ा अन्तिम वार, शाह पातशाह रिहा सुणाईआ। सच संदेशा हरि सुणाया, एका शब्द अडोल। शंकर निउँ निउँ सीस झुकाया, अग्गे सके ना कोई बोल। तूं साहिब मैं तेरी सेव कमाया, सदा वसां तेरे कोल। तेरा कीता ना कदे भुलाया, तेरा नाउँ गया मौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम तोलना साचा तोल। तोल तोले हरि, हरि जू आखर आप सुणाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग दिता वर, साचे तख्त आप बहाया। आपे तेरा घाड़न ल्या घड़, घड़ घड़ भाण्डे वेख वखाया। आपे अंदर गया वड़, निरगुण जोत कर रुशनाया। आपे लाए साची जड़्ह, आपे लए उखड़ाया। जुग चौकड़ी सन्त भगत भगवन्त सब नूं लए फड़, लेखा कोए रहिण ना पाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे चढ़, कैलाश चरन हेठ दबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क समझाया। साचा राह शाह सुल्तान, एका वार जणाईआ। एका अक्खर नाम ज्ञान, एका वार करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर वसाईआ। एका वस्त दिता दान, साचा नाम झोली पाईआ। एका गृह कर परवान, दर साचा इक्क सुहाईआ। एका खेल करे भगवान, खेलणहार शहिनशाहीआ। जुग जुग आपणी रखे आण, सिर आपणा हुक्म मनाईआ। जुग चौकड़ी कर कल्याण, पाँधी साचा पन्ध मुकाईआ। थिर रहे ना कोई विच मकान, जो घड़या भन्न वखाईआ। शंकर तेरा वेला पुजे आण, तेरा लहिणा दए

मुकाईआ। नेत्र नैण मार ध्यान, ध्यान ध्यान नाल रलाईआ। करे खेल श्री भगवान, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव अभेद समझाईआ। अन्तिम लेख मुकावणा, मुकावणहार करतार। शंकर तेरा वक्त चुकावणा, वेला जाणे आप निरँकार, जो घड़या भन्न वखावणा, घड़न भन्नणहार अगम्म अपार। तेरा लेखा तेरी झोली पावणा, अन्त भरे तेरा भण्डार। तेरा खाता पूर करावणा, जुग चौकड़ी कर्ज़ा दए उतार। अग्गे साका फिर चलावणा, सच करे विहार। गुरमुख साचे आप उठावणा, लोकमात कर प्यार। साचा राह इक्क वखावणा, महल अटल उच्च मिनार। साचा नाम इक्क दृढ़ावणा, अक्खर अक्खर कर त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। साचा खेल करे करतार, करता आप जणाईआ। नौ नौ चार उतरे पार, उरार पार आप कराईआ। अन्तिम लहिणा दए उतार, नेत्र नैणां दए वखाईआ। साची पुरी पावे सार, पारब्रह्म वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा लेखे विच लगाईआ। सुण संदेश श्री भगवान, शंकर नीर वहाइंदा। दोए जोड़ करे प्रणाम, पीआ प्रीतम इक्क मनाइंदा। हउँ बालक बाल निधान, दर दर इक्को मंग मंगाइंदा। एका बख्श चरन ध्यान, चरनोधक टिक्का मस्तक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन झोली अग्गे डाहइंदा। निर्धन होया बलहीण, ज़ोर जाबर ना कोए वड्याईआ। नेत्र वेख वेख थक्के अर्श फर्श जमीन, ज़ालम होई सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ एका मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी उठ सुल्तान, एका हुक्म सुणाइंदा। तूं बणया रिहा हुक्मरान, आपणा हुक्म मनाइंदा। जीव जंत झलाउँदे रहे तेरा निशान, शंकर त्रिसूल हत्थ रखाइंदा। चार युग तैनूं मन्नदे आए बलवान, तेरा बल ना कोई वेख वखाइंदा। तूं भुलया गुण निधान, गुण आपणा आप वधाइंदा। अन्तिम लेखा देणा प्या विच जहान, अग्गे हो ना कोई छुडाइंदा। निरगुण आया इक्को विच मैदान, फड़ फड़ सारे आपे ढाहइंदा। जिस उपजाए सो करे वैरान, आप आपणा खेल खिलाइंदा। करोड़ तेतीसा आई हाण, सुरपति इन्द पन्ध मुकाइंदा। शंकर तेरा नाता तुट्टा पीण खाण, अग्गे रख भोग ना कोई लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग दी रीती आप मुकाइंदा। जुग जुग रीती शंकर रंग, हरि सतिगुर आप समझाईआ। रामा मंगे तैथों मंग, बण अवतार झोली डाहीआ। तूं बण बण बैठा सूरा सरबंग, आपणा बल रखाईआ। तूं वसया अन्धेरे अन्ध, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। इक्को लम्भया हरि खावंद, ख़ाहिश इक्क जगत वधाईआ। अन्तिम कोई ना देवे अनन्द, परमानंद ना कोई वखाईआ। एकँकारा देवणहारा दंड, जुग जुग आपणा हुक्म सुणाईआ। अन्तिम तेरा मुक्या पन्ध, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। जो तेरा नाउँ

गाउँदे रहे बत्ती दन्द, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अन्तिम आत्म सब दी होणी रंड, जगत रंडेपा दए मुकाईआ। तूं आपणी ढक ना सक्या कंड, दो जहानां उपर पर्दा कवण पाईआ। तूं फिरें हाल मंद, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जो तेरा गाउँदे छन्द, आपणा बेड़ा रहे रुड़ाईआ। बिन हरि झूठी सिर ते चुक्की पंड, हौला भार ना कोई कराईआ। अन्तिम होणा खण्ड खण्ड, देवे हरि सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप वरताईआ। जटा जूट धार तन वेख भिबूत, भुब्बां मार कुरलाया। मैं क्यों बणया कपूत, एका आपणा पुरख भुलाया। कोए ना करे कारज सूत, सगला संग ना कोए रखाया। अन्तिम आवा गया ऊत, बेड़ा पार ना कोई कराया। ना सच्चा ना कोई झूठ, झूठा सच्चा आपे वेख वखाया। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत्त, चारों कुण्ट फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाया। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। अन्तिम छड्डुणा पए टिकाना, वेला वक्त मुकाईआ। अग्गे मिले ना निशाना, पिच्छा नज़र कोई ना आईआ। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सतिजुग साचा राह चलाणा, साची कार कमाईआ। गुरमुख साचे कर प्रधाना, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। साचा ढोला इक्को गाणा, इक्को करे पढ़ाईआ। शिव पुरी बंक सुहाना, शाह पातशाह होए सहाईआ। शंकर लेखा अन्त मुकाना, लिख लिख लेख दए समझाईआ। सब नूं मन्नणा पए भाणा, सद भाणे अंदर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। हुक्म सुणया हरि नरेश, निराकार जणाया। जटा जूट खुल्ह़े केस, केसाधारी वेख वखाया। अग्गे चले ना कोई पेश, पर्दा सके ना कोई पाया। करे खेल नर नरेश, नर नरायण वेस वटाया। निरगुण कर अवल्लड़ा वेस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह चलाया। शंकर उठे दोए जोड़, चरन कँवल शरनाईआ। पारब्रह्म हथ्थ तेरे डोर, जिउँ भावे तिउँ चलाईआ। तुध बिन बंधप ना कोई होर, सज्जण कोई नज़र ना आईआ। आदि जुगादि तेरी लोड़, तुध बिन थाए ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरे सिर ते रख हथ्थ, मंगे चरन पनाह। एका देणी साची वथ्थ, बख्शीं सर्ब गुनाह। साचा मार्ग देणा दस्स, एका तेरा नाम ध्या। अन्तर मेरे जाणा वस, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाह। मेरी पूरी करनी आस, वड दाते बेपरवाह। तेरे दर तों जाए ना कोई निरास, तूं देवणहार इक्क खुदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची वस्त झोली पा। पुरख अबिनाशी रिहा दस्स, आपणा भेव खुल्ह़ाईआ। मेरा चले ना कोई वस, निरगुण बल ना कोई रखाईआ। एका मार्ग देवां दस्स, साचा राह समझाईआ। लोकमात जाणा नट्ठ, आपणा

पन्ध मुकाईआ। हरि जू वसे भगतां पास, साचा संग रखाईआ। सेवा करे बण दासी दास, चाकर ख़ाक आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह रिहा समझाईआ। शंकर सुण सलाह, शब्दी शब्द जणाया। लोकमात जाणा साचे थाँ, थान थनंतर रिहा वखाया। भगत भगवन्त रिहा जणा, जागरत जोत करे रुशनाया। जुग जुग दे विछड़े रिहा मिला, फड़ फड़ आपणी गोद बहाया। कादर करीम करता बण ख़ुदा, बेऐब रूप वटाया। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, दर आयां होए सहाया। दो जहानां करे सच न्याँ, साचे तख़्त बैठ सच्चा शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा चुकाया। आपणा पर्दा आपे चुक्क, चुक्क चुक्क रिहा समझाईआ। शंकर जिस नूं कहिन्दे रहे बैठा लुक, सो आपणा रूप वटाईआ। जिस नूं कहिन्दे अबिनाशी अचुत, सो अबिनाशी खेल खलाईआ। जिस नूं कहिन्दे सुहाए रुत्त, सो आपणी रुत्त सुहाईआ। जिस नूं कहिन्दे भगतां बणाए साचे पुत्त, सो भगत रिहा उठाईआ। जिस नूं कहिन्दे सब दी जड़्ह देवे पुट्ट, सो पुट्ट पुट्ट रिहा वखाईआ। जिस नूं कहिन्दे जाए लुट्ट, सो घर घर लुट्ट रिहा मचाईआ। जिस नूं कहिन्दे दर्शन कीत्यां आवण जावण जाए छुट्ट, सो गेड़ा रिहा मुकाईआ। जिस नूं कहिन्दे वसे सचखण्ड किले कोट, सो दर घर साचे सोभा पाईआ। जिस दी रखदे रहे ओट, सो कलयुग अन्तिम भगतां ओट तकाईआ। चार जुग दे कढ्ढे खोट, खोटी मत्त ना कोई रखाईआ। जन्म जन्म दे आल्हणे डिग्गे फड़े बोट, फड़ आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा दए सुणाईआ। सच संदेशा सुणाए बात, बातन हरि जणाईआ। लोकमात मार झात, हरि झाकी इक्क वखाईआ। करे खेल पुरख समराथ, भेव अभेद जणाईआ। जन भगतां जणाए इक्क जमात, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ। ना कोई कलम ना कोई दवात, ना कोई पंडत रिहा सखाईआ। कर किरपा देवे आपणी दात, घर भगतां झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शंकर रिहा समझाईआ। शंकर सुण ला कर कन्न, बिन कन्नां आप सुणाइंदा। इक्को कहिणा लैणा मन्न, हरि जू आप जणाइंदा। अन्तिम मिलणा सब नूं डंन, थिर कोई रहिण ना पाइंदा। जो घड़या सो देवे भन्न, आपणी चाल आप चलाइंदा। कलयुग खेल करे श्री भगवान, निरगुण जोत डगमगाइंदा। गुरमुख चढ़ाए साचा चन्द, लोकमात आप चमकाइंदा। भगतां बेड़ा बन्न्ह, आपणे कंध उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा मुलां शेख़ मुसायक हरि देवे डंन, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सलाह इक्क समझाइंदा। सच सलाह देवे सलाहगीर, एका एक करे पढ़ाईआ। शंकर लोकमात घत्त वहीर, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। शिव पुरी होई दिलगीर, दिलबर सके ना कोई मिलाईआ। हुण वेला

अन्त अख़ीर, आखर वेखे सर्ब लोकाईआ। कोई ना बदल देवे तकदीर, तकसीर सके ना कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। सच संदेशा सुण इक्क वार, एका इक्क जणाईआ। तेरा दरस्सां सच सहार, सच सहारा इक्क वड्याईआ। लोकमात जाणा भगत दुआर, भगत दुआरा इक्क वखाईआ। जिथे वसे एकँकार, आपणा रूप छुपाईआ। दिस ना आए विच संसार, लख चुरासी रिहा भुलाईआ। तूं जा के करीं निमस्कार, मेरे भगतां सीस झुकाईआ। जे तेरे नाल करन प्यार, अन्तिम तेरा पल्ला देण छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। हरि सुणाया सुणया शिव, शंकर आपणा आप जणाइंदा। तूं साहिब वड्डा वड देवी देव, तेरा इष्ट सर्ब मनाइंदा। मैं लग्गा रिहा तेरी सेव, साची सेवा मंग मंगाइंदा। तूं दाता दानी अलख अभेव, अगोचर तेरा भेव कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका वस्त मंग मंगाइंदा। मंगां मंग तेरे भगत दुआर, दर आपणी अलख जगाईआ। कवण वेला जावां वक्त विचार, कवण थित मिले वड्याईआ। कवण नेत्र पावां सार, घड़ी पल वंड वंडाईआ। कवण मुख करे विहार, किशना सुखला देण गवाहीआ। कवण चन्द होए उज्यार, चन्द चांदनी लए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका थित दए समझाईआ। एका वार एका थित, असथिल आप जणाइंदा। भगवन करे भगतां हित्त, भगतां मार्ग आप जणाइंदा। लेखा जाणे साचे खेत, साचा खेड़ा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप वखाइंदा। वार थित छब्बी पोह दिहाढ़ा, जन भगत मिले वड्याईआ। सच दुआरा बह निरँकारा, सचखण्ड रूप बणाईआ। चार युग दी वेखे कारा, गुर अवतार जो गए कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जो लाया , सेवा सब दी सेव वखाईआ। लहिणा देणा देवे इक्को वारा, एका वस्त वरताईआ। हुक्मी हुक्म खेल न्यारा, शाह पातशाह दया कमाईआ। सब दा लेखा देवे वारो वारा, बाकी कोई नज़र ना आईआ। दर बुलाए गुर अवतारा, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। की कर के आए आए संसारा, करता कीमत सब दी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा भेव दए खुल्हाईआ। सब दा खोल्हे भेव वेखे प्रताप, वड प्रतापी खेल खलाया। तुसीं मैनूं मन्नदे रहे आप, पर आपा क्यों जपाया। तुसीं मैनूं मन्नदे रहे माई बाप, बण बण माई बाप क्यों आपणा हुक्म चलाया। तुसीं करदे रहे मेरा जाप, क्यों आपणा जाप जपाया। मैं इक्क इकल्ला सब दा रखां हिसाब, भुल्ल कदे ना जाया। मैं स्नेहुड़ा दे दे लिखाई जगत किताब, साशतर सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी अञ्जील कुरान नाम धराया। मैं खेल वखाया दिवस रात, सूरज चन्द चढ़ाया। मैं लख चुरासी थापण

थाप, जुग जुग आपणा राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा दए समझाया। सब दा लहिणा जाए हर, शंकर भुल्ल ना जाईआ। चल के आउणा सब ने दर, भगत दुआर वज्जे वधाईआ। हरि जू हरि इक्को वार सारे लैणे फड़, इक्क दूजे नाल कोई कर ना सके सलाहीआ। आपणा नाउँ जो लोकमात गए धर, मेरा नाम भुलाईआ। बिन हथ्थकड़ी लैणे फड़, दोवें जोड़ पैण शरनाईआ। चरनां हेठां रखण धड़, काया माटी ख़ाक कम्म किसे ना आईआ। जो दसरथ राम रहया पढ़, तिस राम ना होए सहाईआ। जिस नंद जसोधा काहन ल्या वर, तिस हरि काहन मिलण ना जाईआ। जिस नानक पंज तत्त पल्लू ल्या फड़, तिस नानक निरगुण नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा रिहा मुकाईआ। शंकर वेला हुण मुकदा, प्रभ साचा दए वखाईआ। लख चुरासी बूटा सुक्कदा, सुक्का हरा ना कोई कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणी वड्याई अंदर मुक्कदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा निशाना कदे ना उकदा,। शंकर कहे मेरे भगवान, मेरी मन्न अरज़ोईआ। तूंही दिता इक्को दान, आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी सेवा करी विच जहान, जो घड़या भन्न वखाईआ। अन्तिम मिटदा जाए निशान, मैं जगत निशाना रिहा मिटाईआ। कर किरपा कर परवान, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। चरन धूढ़ सच्चा अशनान, आसा पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी टुट्टी गंढु पवाईआ। श्री भगवान कहे समरथ, तेरी पूरी होई अरदास। भगत दुआरे जाणा नस्स, हरिभगत पुच्छण तेरी वात। तूं आपणी जा के दस्स, कर बचन बलास। जे तेरे उत्ते पै गया भगतां शक्क, तेरी करे ना कोई बन्द ख़लास। ओथे नबेड़ा हक़्क़ो हक़, सब दी पुच्छे वात। जे सच पुच्छें तेरा फल गया पक्क, अन्तिम रखणा तोड़ ताक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा भविख्त वाक्। शंकर पिछला छड्ड दे खैहड़ा, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरा ख़ाली होणा वेहड़ा, भाग ना कोई लगाइंदा। गुरमुखां बन्ने हरि जू बेड़ा, गुरसिख आप उठाइंदा। जे पुच्छे मैं दस्सां केहड़ा केहड़ा, छोटे बाले अग्गे लाइंदा। जिस ने वखाया तेरा डेरा, सो सिँघ जगदीश नाउँ रखाइंदा। तिस उपर करी आप प्रभ मेहरा, मेहर नज़र इक्को पाइंदा। खेल खलाए सिँघ शेरा, शेर रूप आप हो आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पाया घेरा, चारों कुण्ट आप फिराइंदा। करे हक़्क़ो हक़ नबेड़ा, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गेड़ा आप दवाइंदा। आपणा गेड़ा देवे करतार, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। तेरा अन्त देवे संवार, जन भगतां नाल मिलाईआ। शिव पुरी करनी ना फिर विचार, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरी वारी कदे ना आईआ। ओथे गुरमुख बण बहे सच्ची सरकार, सो पुरख निरँजण आपणा

हुक्म मनाईआ। सतिजुग साची चले धार, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। सोहँ शब्द बोल जैकार, जै जै कार वेखे सर्ब लोकाईआ। भगतां रंग रंगे करतार, रंग रंगीला इक्को माहीआ। तेरा वसीला बणन विच संसार, आपणे नाल लैण मनाईआ। बणाया कबीला आप निरँकार, बिरध बाल जवान नाल रलाईआ। करे मेला अन्तिम वार, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ।

शिव कहे मेरी होए पूजा, पूजस पूज पूज जगत ख़ुशी मनाईआ। मेरी इच्छया ना कोई दूजा, दूई आपणे विच वधाईआ। हरि का भेव ना कोई सूझा, सुरती सुरत ना कोई भवाईआ। हरि का खेल सदा गूझा, लेखा लिख्त ना कोई वखाईआ। सब दा ठूठा करे मूधा, जिस भरया सो ख़ाली दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। शंकर कहे मैं भोला नाथ, इक्को गुर अख्वाइंदा। बाशक तशका मेरे साथ, गल माला सोभा पाइंदा। लख चुरासी उतारां आपणे घाट, जो घड़या भन्न वखाइंदा। अन्तिम सुट्टे डूँघे खात, खाता नज़र किसे ना आइंदा। इक्को भुलया हरि जू साक, साचा सज्जण ना कोई मिलाइंदा। आपणी इच्छया कर बहु बिध भांत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव छुपाइंदा। शिव कहे मैं वसां कैलाश, आपणा बल धराईआ। मेरी कर ना सके कोई तलाश, उच्चे टिल्ले सोभा पाईआ। मेरी कोई ना जाणे वाट, वातावरन ना कोई वखाईआ। मैं सब दा करदा घात, मेरा घात ना कोई कराईआ। पारब्रह्म कहे मैं पुरख अबिनाश, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। सब दा करां विनास, विष्न चले ना कोई चतुराईआ। ब्रह्मा होया रहे उदास, शंकर लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भोले नाथ रिहा समझाईआ। सुण नाथ नाथ भोले, भोले भाओ मनाइंदा। निरगुण वसया रिहा तैथों ओहले, तेरी नज़र विच ना आइंदा। शिव पुरी तैनूं पाया डोले, चार जुग कहार बणाइंदा। चौकड़ी तोरे हौली हौले, आपणा पन्ध मुकाइंदा। अन्तिम पर्दा तेरा खोल्ह्रे, इक्को गुण समझाइंदा। जो तेरे अंदर वड़ के बोले, सो आपणा हुक्म वरताइंदा। तूं गाएं आपणे ढोले, मैं ढोला फिर सुणाइंदा। तूं जीव जंत तोले, मैं बण तोला तेरा भार उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर इक्को गल्ल समझाइंदा। शंकर तैनूं झुके सीस, चार जुग वड्याईआ। अन्तिम कल वेखो जगदीश, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी पीसण ल्या पीस, चक्की जगत चलाईआ। अन्तिम ख़ाली होया ख़ीस, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे हदीस, इक्क करे पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा सब दा रिहा मुकाईआ।

★ १३ मग्घर २०१८ बिक्रमी दलीप सिँघ बाबूपुर
जेठूवाल दरबार विच ★

सो पुरख निरँजण हरि अतीत, आदि जुगादि समाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसे धाम अनडीठ, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। एकँकारा जुग जुग करे सच प्रीत, परम पुरख खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर आप सुहाइंदा। साचा दर आदि निरँजण, निराकारा आप सुहाईआ। अबिनाशी करता दर्द दुःख भय भञ्जण, निरभउ वड वड्याईआ। श्री भगवान साचा सज्जण, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, आपणा खेल आप कराईआ। पारब्रह्म हरि खेल अपारा, आदि जुगादि कराइंदा। निरगुण नूर हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। रूप अनूप साहकारा, शहिनशाह आपणा आप प्रगटाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा। आपे जाणे धुर फ़रमाणा, सच संदेशा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणे घर सोभा पाइंदा। साचे घर श्री भगवान, एका एक सोभा पाइंदा। जोती नूर नूर महान, जोती जोत डगमगाइंदा। साचे तख्त बहे नौजवान, तख्त निवासी आसण लाइंदा। निरगुण रूप रूप महान, रंग ना कोई वखाइंदा। एकँकारा साचा काहन, दर साचा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दुआर सोभावन्त, सो पुरख आप सुहाईआ। इक्क इकल्ला दस्से महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। करे खेल नार कन्त, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी धार चलाईआ। वेस वटाए जुगा जुगन्त, जुग जुग आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी खेल आप खलाईआ। आदि पुरख खेल अवल्ला, एका एक कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। आपणे दीपक आपे बला, नूर नुराना डगमगाइंदा। सच संदेश नर नरेश शब्द अगम्मी एका घल्ला, आपणा नाम जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण एका मल्ला, पुरख अबिनाशी आसण लाइंदा। पुरख अबिनाशी वसे घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। निराकार रूप धर, निरवैर खेल खलाईआ। निरगुण आपणा घाड़न घड़, आपणी बणत आप बणाईआ। आपे वेखे आपा खड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचा सचखण्ड, सचखण्ड निवासी सोभा पाइंदा। आपे जाणे आपणी वंड, वंडणहार आप अख्वाइंदा। आपे जाणे आपणा छन्द, नाउँ निरँकारा

आपे गाइंदा। आपे जाणे आपणा पन्ध, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। जुग जुग पाँधी मुकाए पन्ध, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। वेख वखाए कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं मंडल मण्डप फेरा पाईआ। नूर जाणे सूरज चन्द, रवि ससि रुशनाईआ। धरत धवल करे खण्ड खण्ड, पृथ्मी आकाश फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि वेस वटाईआ। पृथ्मी आकाश खेल अपार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। निरगुण रूप कर उज्यार, सरगुण साचा संग निभाइंदा। आदि जुगादी इक्को कार, इक्को इक्क कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार, सगला संग आप निभाइंदा। एका देवे नाम अधार, सच अधारा आप रखाइंदा। एका तन करे शंगार, भूशन बस्त्र सोभा पाइंदा। आपणा नैण दए उग्घाड़, नेत्र लोचण आप खुलाइंदा। एका जोत कर उज्यार, दीपक दीआ आप जगाइंदा। एका शब्द नाद धुन्कार, एका आत्म आप वजाइंदा। एका अमृत ठंडा ठार, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। एका घर करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद खेल कराइंदा। आपे जाणे आपणी सच रफतार, आपणी सेहत आप बणाइंदा। लेखा जाणे सदा जुग चार, जुग चौकड़ी फोल फुलाइंदा। लहिणा जाणे गुर अवतार, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। सन्त साध पावे सार, आप आपणा वेस वटाइंदा। गुरमुख सज्जण लए उभार, लख चुरासी बन्धन तुड़ाइंदा। गुरमुखां चले नाल नाल, जुग जुग विछड़ कदे ना जाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया खेल कमाल, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, अजूनी रहित वेस वटाइंदा। अजूनी रहित अनभउ प्रकाश, निरवैर वड्डी वड्याईआ। जुग जुग होए भगतां दास, जन भगतां सेव कमाईआ। नाता तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन मंडल डेरा ढाहीआ। साचे गृह पावे रास, गोपी काहन आप अख्वाईआ। सदा सुहेला वसे पास, सरनगति राम सरनाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, उनन्जा पवण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस पुरख अगम्म, अलख अगोचर आप वटाइंदा। निरगुण जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। मात गर्भ ना पए जम्म, जूनी जून ना कोई फिराइंदा। ना कोई पवण ना कोई दम, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। ना कोई जननी ना कोई जन, गोदी गोद ना कोई बहाइंदा। ना कोई बुध मति मन, पंज तत्त ना कोई रखाइंदा। ना कोई रसना ना कोई कन्न, दोए नैण ना कोई मटकाइंदा। आदि जुगादि श्री भगवान, निरगुण साचे तख्त सोभा पाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मण्डप ना कोई वखाइंदा। ना कोई तन्दी ना कोई तन्द, तार सतार ना कोई वजाइंदा।

आदि जुगादी इक्को अनन्द, सो पुरख निरँजण आपणे घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, जुग जुग वेख वखाइंदा। जुग जुग वेखे हरि करतार, कुदरत कादर खेल खलाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, लोकमात एका डंक वजाईआ। भगतन कर सच प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म इक्क समझाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, एका बन्धन नाम पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ दए समझाईआ। साचा नाम एकँकार, आपणा आप प्रगटाया। आपे जोत आपे शब्दी धार, रूप अनूप आप धराया। आपे विष्न करे अकार, आपे ब्रह्मा पारब्रह्म वखाया। आपे शंकर दए सहार, सिर आपणा हथ्थ रखाया। तिन्नां विचोला बण गिरधार, गिरवर आपणी सेव कमाया। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाया। निरगुण निराकार होया साहकार, सरगुण आपणा रंग वखाया। वंडी वंड अपर अपार, आपणा भेव दिता खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा नाउँ दए समझाया। एका नाम एका ओम, एका एकँकार इक्क जणाईआ। दोइम, दोए दोए धारा धार वेख वखाईआ । दोइम संग होया सोइम, त्रै त्रै लेखा लेख जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्क वड्याईआ। आदि पुरख इक्को हरि, एका घर सुहाइंदा। आपे दिता आपणा वर, आपणी झोली आप भराइंदा। दूजा रूप आपे धर, विष्न खेल खलाइंदा। विष्नूं वेखे आपे खड़, आपणे रंग समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूआ एका घर बहाइंदा। एका दूआ नाम मृदंग, मेहरवान आप वजाईआ। आपे जाणे आपणा अनन्द, परमानंद विच समाईआ। एका गा सुहागी छन्द, विष्न करे पढ़ाईआ। तेरा मेरा इक्को बन्द, एका बन्धन पाईआ। सोहँ रूप सदा अखण्ड, खण्डा खड़ग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ दए समझाईआ। सोहँ नाउँ एका दर, एका वंड वंडाईआ। एका पुरख एका नर, एका बणे पिता माईआ। एका दानी दाता देवे वर, एका झोली रिहा भराईआ। एका हरि जू वेखे खड़, आप आपणा नैण खुल्हाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्तव तत्त ना कोई रखाईआ। ना कोई विद्या रिहा पढ़, चौदां विद्या ना कोए गाईआ। आपणा नाउँ आपे धर, आपे बणे सिफ्त सालाहीआ। विष्न दिता इक्को वर, आदि जुगादि वज्जे वधाईआ। इक्क दूजे दा पल्लू फड़, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। करया खेल नरायण नर, नर हरि सच्चा शहिनशाहीआ । निरभउ चुकाया सर्ब डर, भय अवर ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ धार इक्क जणाईआ। विष्नूं उपज्या सोहँ धार, निरगुण खेल खलाया। घर विच घर करे प्यार, आप आपणा मेल मिलाया। आपे भूप आप सिक्दार, आपे रईयत रूप

वटाया। आपे शब्द जाणे सच्ची सरकार, आपे चोबदार बण बण सेव कमाया। आपे शहिनशाह जाणे सच्ची सरकार, आपणा हुक्म वरताया। आपे दाता दानी देवे भण्डार, आपे आपणी झोली रिहा डाहया। करे खेल अगम्म अपार, हरि का भेव किसे ना पाया। विष्नूं करे सच प्यार, भगवान तेरा संग रखाया। एका दर मंगां दरबार, दर बैठा सीस झुकाया। तेरा मेरा रूप अपार, सोहँ ढोला एका गाया। बदल्लया चोला आप करतार, चोआ चन्दन सीस टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाया। विष्नूं मंगे मंग, भगवन अग्गे झोली डाहीआ। तेरा रूप मेरा रंग, तेरी धार मेरी वड्याईआ। तेरा नाउँ मेरा संग, संग सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि पुरख बेपरवाहीआ। आदि पुरख दिता वर, विष्न मंग मंगाया। आपणा नाउँ आपे पढ़, आपे रिहा गाया। आपणे मन्दिर आपे खड़, आपे रिहा सुहाया। आपणे पौड़े आपे चढ़, आपणा आसण लाया। आपणी इच्छया आपे फड़, आपणा मेल मिलाया। विष्नूं भगवान वसे इक्को घर, घर साचा आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। विष्नूं झोली डाह, एका आस तकाईआ। साची वस्त देणी पा, तोट रहे ना राईआ। एका गुण देणा समझा, कवण गुण तेरा जस गाईआ। एका वक्त देणा समझा, कवण वेला सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेहरवान हरि होया मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। एका देवे आपणा दान, दाता दानी आप वरताइंदा। सच संदेशा सुण ला कान, एका वार जणाइंदा। तेरा खेल करां महान, साची सेवा इक्क लगाइंदा। तेरे गृह अमृत रखा आण, कँवल कँवला आप भराइंदा। तेरी उपजे ब्रह्म सन्तान, सति पुरख निरँजण आप उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त एका वार, श्री भगवान आप वरताईआ। एका विष्न इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। एका शंकर मेले आण, शंका कोए रहिण ना पाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर वज्जे वधाईआ। एका गीत एका गाण, एका राग दए सुणाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, सच संदेशा आप घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्नूं एका गुण वखाईआ। आदि बणया विष्नूं भगवान, विश्व खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी सेवा लाए विच जहान, ब्रह्मा शिव नाल मिलाइंदा। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, ब्रह्मवेता आप पढ़ाइंदा। चारे कुण्ट कर प्रधान, चौथे पद खेल खलाइंदा। चारे अक्खर दे ध्यान, चारे वेद आप पढ़ाइंदा। चारे जुग करे कल्याण, चार वरनां बन्धन पाइंदा। चारे खाणी खेल महान, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज नाल मिलाइंदा। चारे बाणी कर कल्याण, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप सुणाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरते वरतार, वरतावणहार इक्क हो जाईआ। त्रैगुण माया तेरा भण्डार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। ब्रह्मे वंड अपर अपार, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। लख चुरासी कर त्यार, घट घट आपणी जोत जगाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रहिणा ख़बरदार, बेख़बर रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रखणा याद, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फिर फिर मात हंढाईआ। लख चुरासी सुणे फरयाद, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता वेस वटाईआ। नाम अगम्मी देवे दाद, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। आपे रहे सदा विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप वखाईआ। अनहद इक्क वजाए नाद, अनादी धुन आप सुणाईआ। शब्द जणाई बोध अगाध, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। आपे जाणे सन्त साध, जगत साधना दए समझाईआ। आपे वेखे वाद विवाद, पंज तत्त काया फोल फुलाईआ। आपे जाणे आपणा राग, अनरागी राग अल्हाईआ। आपे जाणे रसना जिह्वा स्वाद, अनरस आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका विष्न दए वड्याईआ। नव नौ चार खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सतिजुग वरते विच संसारा, सति सति लेखा आप रखाइंदा। एका नाम इक्क आधारा, एका घर सोभा पाइंदा। एका वणज इक्क वणजारा, एका हट्ट
१०० ११
विकाइंदा। एका गुरू इक्क दुआरा, इष्ट देव इक्क अख्वाइंदा। निरगुण खेल करे अपारा, सरगुण आपणा रूप धराइंदा। लोकमात आए वारो वारा, वार अठारां जोत जगाइंदा। ब्रह्मे सुत करे प्यारा, सन्त कुमार गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न तेरी खेल वखाइंदा। सतिजुग अन्तिम जाए बीत, त्रेता आपणा रूप वटाईआ। राम रामा हो अतीत, रमिआ हर घट थाईंआ। जन भगतां काया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। चरन कँवल बख्शे सच प्रीत, साची रीती इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खला, लख चुरासी वेख वखाइंदा। द्वापर आपणा रूप धरा, दोए दोए वेख वखाइंदा। मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप अख्वा, कँवल नैण आप मटकाइंदा। ग़रीब निमाणे गले लगा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। दुष्ट हँकारी दए खपा, बण सेवक सेव कमाइंदा। चौदां लोक रिहा समा, चौदां लोक आपणे विच छुपाइंदा। त्रिलोकी खेल रिहा करा, नाथ अनाथा आप उठाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जुग जुग फेरा पा, कोटन राम कृष्न वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस वटा, काला सूसा तन छुहाइंदा। मुकामे हक़ इक्क खुदा, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणा कर आप जुदा, आप आपणी वंड वंडाइंदा। आपणे उत्तों हो फ़िदा, फ़ितरत आपणी आप गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस नूर इलाही, नूर नुराना आप धराइंदा। रैहबर बणे आप मलाही, बण मलाह सेव कमाइंदा। एका नौबत रिहा वजाई, दो जहानां आप सुणाइंदा। एका ढोला रिहा गाई, ऐनलहक़ आप अलाइंदा। एका वसे साचे थाईं, थान थनंतर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, विष्न विश्व इक्क समझाइंदा। साचे घर दस्तगीर, शाह पातशाह सोभा पाईआ। इक्क तौफ़ीक ख़ुदा अख़ीर, बेनज़ीर वड्डी वड्याईआ। शरअ शरीअत ना कोई जंज़ीर, ज़ाहरा रूप आप धराईआ। वड्डा वड पीरन पीर, पीर पैग़म्बर दए सलाहीआ। दस्तगीर गुणी गहीर, दस्त बरदार ना कदे अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, विश्व रूप आप समाईआ। विश्व रूप परवरदिगार, सांझा यार अख्वाइंदा। हक़ हक़ीक़त करे विचार, हक़ हक़ नाअरा लाइंदा। लाशरीकत बणे विच संसार, लाशरीक नाउँ धराइंदा। तहरीक करे आपणी वार, जगत तारीक आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। खेल वखाए हरि जू ख़ालक, ख़लक रिहा समाईआ। लेखा जाणे जल आतस, आब आब फोल फुलाईआ। निरगुण नूर नूर परकाश्त, परम पुरख बेपरवाहीआ।
१०१ हरि का भेव ना पावे कोई स्यासत, आदि अन्त ना कोए वखाईआ। लख चुरासी रखे आपणी हरास्त, एका बन्धन नाम पाईआ। कोई कर ना सके शरारत, शरअ विच ना कोए बन्नाईआ। जिस जन आपणी दस्से मारफ़त, सच महिराब दए वखाईआ। इक्क दूजे दा करे तुआरफ, मुर्शद मुरीद करे पढ़ाईआ। साचा कलमा करे सिफ़ारश, नबी रसूल दए गवाहीआ। भेव ना पाए कोई आरफ, उलफत विच कदे ना आईआ। आपे बणे आपणा सालस, सच सालसी आप कमाईआ। नूर नुराना इक्को ख़ालस, राम रहीम वड्डी वड्याईआ। ना कोई निंद्रा ना कोई आलस, ग़फ्लत विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को साहिब वड्डी वड्याईआ। इक्को साहिब आदि जुगादि, निरगुण खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी सुण फरयाद, लख चुरासी वेख वखाइंदा। गुर अवतारां देवे दाद, भगत भगवन्त आप प्रगटाइंदा। साचे सन्तां देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। जुग चौकड़ी पढ़ाए आपणी गाथ, साची गाथा आप वखाइंदा। आप चलाए साचा राथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया आपणे घाट, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग मुक्की वाट, पाँधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विश्व एका गुण समझाइंदा। विष्न एका हरि का गुण, एका वार जणाईआ। अन्त पुकार लए सुण, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी छाण पुण, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

अन्त दए वखाईआ। विश्व हरि अन्त जनाउणा, एका एक समझाइंदा। निरगुण रूप वेस वटाउणा, लोकमात खेल कराइंदा। निहकलंका नाउँ रखाउणा, वेद व्यासा गीत गाइंदा। गोबिन्द कौल पूर कराउणा, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। ईसा आस झोली पाउणा, असलीअत आप वखाइंदा। मक्का काअबा वेख वखाउणा, वड अमाम वेस वटाइंदा। पंडत पांधा आप समझाउणा, पढ़ पुस्तक आप सुणाइंदा। तिलक ललाटी आप लगाउणा, त्रसूल पन्ध वखाइंदा। शरअ शरीअत इक्क जणाउणा, कलमा नबी इक्क सिखाइंदा। मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाउणा, सति सति आप वरताइंदा । डंका फतिह इक्क वजाउणा, सब दा डर चुकाइंदा। चार जुग दे गुर अवतार एका घर बहाउणा, घर साचा इक्क समझाइंदा। पूरब लेखा सब तों लैणा, लेखा लेख ना कोए मिटाइंदा। विष्नूं वेखणा अन्तिम नैणां, प्रभ तेरा संग निभाइंदा। इक्को बस्त्र एका गहिणा, एका तन हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त कन्त भगवन्त आपणा भेव खुल्हाइंदा। अन्तिम भेव जाणा खुल्ह, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ । लख चुरासी पाए मुल, करता कीमत आप चुकाईआ। सति दुआरा जाए खुल्ह, साचे भगतां लए जगाईआ। चरन प्रीती घोली घुल, घोली घुल सेव कमाईआ। आप सुणाए आपणी बोली, जगत बुलारा ना कोए लगाईआ। मेल मिलाए हौली हौली, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। भाग लगाए उपर धवली, धरत धवल मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं तेरा संग निभाईआ। विष्नूं तेरा अन्त कल्याण, एका इक्क जणाइंदा। आपणा नाउँ रख विष्नूं भगवान, लोकमात फेरा पाइंदा। सोहँ देवे सच ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। काया मन्दिर सच मकान, शिवदुआला मट्ठ इक्क वखाइंदा। काया कअबा पढ़े कुरान, सारे हुजरे सोभा पाइंदा। गुरुदुआरा इक्क वखान, घर घर विच गुरू मिलाइंदा। गृह अमृत पीण खाण, तृष्ना भुख मिटाइंदा। एका दरस श्री भगवान, दूसर ओट ना कोए जणाइंदा । जन्म जन्म दी चुक्के काण, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। नाम बिठाए इक्क बबाण, लोआं पुरीआं पार कराइंदा। सचखण्ड वखाए भूमका अस्थान, अस्थिल दुआरा आप वड्याइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। लख चुरासी होए वैरान, जो घड़या भन्न वखाइंदा। कलयुग उठे सूरबीर बलवान, आपणा बल धराइंदा। शाह सुल्ताना आवे हान, राज राजानां ख़ाक मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं अन्त मेल मिलाइंदा। विष्नूं अन्तिम मेल मिलावा, लोकमात वखाईआ। चार जुग दा मुके दाअवा, दावत देवे सच्चा माहीआ। तेरा मेरा इक्को नावां, एका रंग वखाईआ। मेरी ताकत तेरीआं बाहवां, तेरीआं भुजां नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणे हथ्थ रख वड्याई, हरि हरि खेल

कराया। जन्म जन्म दे विछड़े रिहा मिलाई, पूरब लहिणा झोली पाया। नेत्र लोचण नैणां दरस रिहा दिखाई, दरस अमोघ आप कराया। तृष्ना हरस रिहा मिटाई, हवस होर ना कोए वखाया। अमृत आत्म जाम रिहा प्याई, नीर सीर इक्क वहाया। कलयुग पन्ध रिहा मुकाई, आपणा हुक्म सुणाया। सतिजुग उठे चाँईं चाँईं, सतिगुर पूरा रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाया। कलयुग अन्तिम होणा दूर, दूर दुराडा रिहा समझाईआ। तेरा नाता तुट्टे कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। तूं साध सन्त बणाए मूर्ख मूढ़, श्री भगवन्त ना कोए मिलाईआ। तूं घर घर खिचिआ नूर, अन्धेरा अन्धेर छाईआ। लख चुरासी कर कर बैठी कसूर, हरि का नाम भुलाईआ। काया काअबा तन तपे तन्दूर, त्रैगुण अग्नी लाईआ। मन वासना बणे मज़ूर, मन की वासना ना कोए मिटाईआ। मन अंदर होया गरूर, गुरबत भरी सर्ब लोकाईआ। बुद्धि देवे ना कोए शऊर, शोहरत मिले ना माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम रिहा कूक, एका कूक लगाईआ। जीव जंतां रिहा फूक, अग्नी तन तपाईआ। पंडत पांधे ग्रंथी पन्थी मुलां शेख़ मुसायक कहिण घर विच वड़या भूत, प्रेत निकल कदे ना जाईआ। गल जंजू पाया कच्चे सूत, साचा तन्द ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

१०३ ११ कलयुग वेखे खेल सबाईआ। कलयुग कूड़ा रिहा नच्च, चार कुण्ट डोरू वाहया। किसे घर ना दिसे सच्च, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। माया ममता अंदर गई रच, हरि का नाम नज़र किसे ना आया। माण रखाया माटी भाण्डे कच्च, झूठी गगरी रहे वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस धराया। कलयुग कूड़ कुड़यारा बल, लख चुरासी रिहा वखाईआ। ज्ञानीआं ध्यानीआं विदवानीआं जाए छल, अछल अछल इक्क वखाईआ। किसे चैन ना लैण देवे पल, घड़ी पल वेख वखाईआ। फल ना दिसे किसे डाल, सिंमल रुक्ख रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया वेख वखाईआ। कलयुग क्रिया जगत पसारा, पिसर पिदर ना कोए मनाइंदा। राम नाम ना कोए सहारा, कान्हा कृष्ना ना कोए मनाइंदा। नाम बंसरी ना कोए जैकारा, साची सुर ना कोए सुणाइंदा। साची सखीआं ना करे कोए प्यारा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। चारों कुण्ट होया अन्धयारा, साचा राह ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया वेख वखाइंदा। कलयुग क्रिया गुरुदुआर मन्दिर मट्ठ, मस्जिद खेल कराईआ। अंदर बैठे चोर ठग्ग, ठग्ग ठगौरी रहे पाईआ। हरि का नाउँ सुणाउँदे बाहर शाह रग, अंदर नाम टिकण ना पाईआ। आपणी बुद्धि करी कग्ग, रसना काग वांग कुरलाईआ। अंदर लग्गी माया अग्ग, बाहरों तपश ना कोए बुझाईआ।

काम क्रोध अंदर गए बज्झ, काम चेसटा ना कोए मिटाईआ। ममता भरया तन मास हड्ड, नाड़ी नाड़ी दए दुहाईआ। ख़ाली झोली बैठे अड्ड, जीवां जंतां लुट्ट लुट्ट खाईआ। आप डिग्गे डूँघी खड्ड, ना कोई सके बाहर कढाईआ। कलयुग तेरी होई हद्द, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। जीवां जंतां पीती झूठी मदि, नाम खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। पारब्रह्म नालों ब्रह्म होया अड्ड, ईस जीव ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग खेल थाउँ थनंतर, चार कुण्ट वखाईआ। घर घर लग्गी इक्को बसन्तर, ना सके कोए बुझाईआ। पढ़ पढ़ थक्के दुर्गा मन्त्र, बारां अक्षर रहे सुणाईआ। नमो देव साचा तंतर, त्रैलोक करे शनवाईआ। सतिनाम ना कोए बणतर, सति सति ना कोए मिलाईआ। फ़तह डंका ना कोए सुणे अन्तर, मन वासना दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग खेल वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा हस्स, आपणा बल वखाइंदा। लख चुरासी कीती वस, पल्लू ना कोए छुडाइंदा। राजे राणे गए ढट्ठ, शाह सुल्तान ना सिर उठाइंदा। ना कोई तीर्थ ना कोई तट, सर सरोवर ना कोए सुहाइंदा। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेखी नट्ठ नट्ठ, त्रबैणी आपणा खेल खलाइंदा। साधां सन्तां तुट्टा जत, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। धीआं भैणां रहे तक्क, नेत्र नैण ना कोए शरमाइंदा। कलयुग फल गया पक्क, वेला अन्तिम
१०४ आइंदा। गगन पतालां हिल्ली छत्त, दो जहान डगमगाइंदा। चौदां तबक होए भट्ठ, साचा खेड़ा ना कोए वसाइंदा। जोती १०४
११ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। कलयुग रंगया इक्को रंग, चार वरन रंगाईआ। ११
लख चुरासी जीव जंत वेसवा रूप झूठी सेज माण पलँघ, बैठे खुशी मनाईआ। किसे ना आया परमानंद, निज़ानंद ना कोए रसाईआ। मदिरा मास खा खा गंद, हरि का नाम गए भुलाईआ। निरगुण जोत ना चढ़या चन्द, सूरज चन्द वेख वखाईआ। पैंडा मुक्कया ना जीउ पिण्ड ब्रह्मण्ड, पार किनारा नज़र कोए ना आईआ। मिल मिल सखीआं गाए छन्द, हरि का ढोला ना कोए सुणाईआ। अन्तिम सब नूं मिलणा दंड, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग कूड़ होए खण्ड खण्ड, हरि जू एका खण्डा नाम उठाईआ। लेखा जाणे चण्ड प्रचण्ड, अष्टभुज राह तकाईआ। आदि भवानी मंगे मंग, आपणी झोली दए डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, चतुर्भुज वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम करना भंग, कूड़ी करया सफ़ा उठाईआ। साचे भगतां पाउणी ठंड, आपणी दया कमाईआ। खुशी कराउणी बन्द बन्द, बन्दी तोड़ हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगतां देणा इक्क सहारा, एका दया कमावणी। कलयुग अन्तिम पार किनारा, गुरमुखां पूरी करनी भावनी। चारों कुण्ट हाहाकारा, गुरमुखां एका वार सुणावणी। मिले मेल हरि कन्त

भतारा, आपे पकड़े सच्चा दामनी। लेखा जाणे गुपत ज़ाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे सच्ची जामनी। ज़ामन बणे हरि निरँकार, लोकमात भार उठाईआ। कामनी काम कर खुआर, क्रोध लोभ दए मिटाईआ। सांतक सति धीरज दे विच संसार, नीर सीर इक्क प्याईआ। पीर फ़कीर करन पुकार, बेनज़ीर तेरी वड्याईआ। तकदीर तकसीर बदल आप करतार, तदबीर तेरी तोहे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न विश्व दए वखाईआ। विष्न वेखणी शिव धार, अन्त आप जणाईआ। लख चुरासी करे प्यार, जीव जंत होए सहाईआ। दूती दुष्ट करे खुआर, सूफ़ी सन्त लए मिलाईआ। भगत भगवन्त लए उभार, बेअन्त खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्त भगत प्रगटाउणा, एका भगती ला। चार वरन इक्क रंग रंगाउणा, ज़ात पात दए खपा। एका बरन सर्ब बनाउणा, बरन अठारां पन्ध मुका। एका सरन सर्ब तकाउणा, एका ओट दए समझा। एका इष्ट सर्ब मनाउणा, एका नज़र आए खुदा। एका कलमा सर्ब पढ़ौणा, कायनात कर रुशना। एका तुलबा जगत अख्वाउणा, तालब होए शहिनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगा। हरिजन साचा आप जगाउणा, जगत जुगत वड्याईआ। चार युग दा लेख मकाउणा, पूरब लेखा झोली पाईआ। बण बण दासी दास सेव कमाउणा, सेवक सेवा इक्क रखाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सति सतिवादी होए सहाईआ। भगत भगवन्त आप वडिआउणा, भगवन देवे माण वड्याईआ। राग छत्ती भेव ना आउणा, नारद मुन गाए सुरस्ती माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव रखे हथ्थ, वेद कतेब किसे ना आया। पारब्रह्म पुरख समरथ, जुग जुग आपणी खेल कराया। लख चुरासी पाए नथ्थ, नौ खण्ड पृथ्मी रिहा नचाया। जन भगतां मार्ग एको दस्स, एका राह चलाया। दरस दखाए हस्स हस्स, घर घर फेरा पाया। आपणा पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बण पाँधी वेख वखाया। हरि भगत उतारे आपणे घाट, घाटा कोए नज़र ना आया। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ना कोई वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका विष्नूं गुण दए समझाया। विष्न अन्त वेख महल्ला, हरि महिफ़ल मात लगाईआ। पुरख अबिनाश इक्क इकल्ला, अकल कला वड्याईआ। जल थल महीअल आपे रला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर रिहा समाईआ। जुग जुग भगतां फड़ाउँदा आया पल्ला, धू प्रहिलाद नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम अछल अछला, वल छल खेल कराईआ। लख चुरासी अंदर बणया झल्ला, बौरा रूप वटाईआ। जन भगतां फड़ाया आपणा पल्ला, आपणी गंढु पुवाईआ। सच दुआर वसे महल्ला, जिस दर मेला रिहा कराईआ। जोती धार शब्दी रला, रूप

रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। कोई कहे मेरा अल्ला, कोई वाहिगुरू कह कह सीस झुकाईआ। कोई कहे मेरा राम वसे जला थला, घट घट रिहा समाईआ। कोई कहे मेरा काहन कृष्न मक्खण खा खा पला, बन बिन्दरा फेरा पाईआ। पारब्रह्म कहे आदि जुगादि मैं इक्क इकल्ला, जुग जुग वेस वटाईआ। जन भगतां राह दस्स सुखल्ला, साचा मार्ग लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं भगवान खेल कराईआ। विष्नूं भगवान कल अन्तिम आउणा, अन्त अन्त जणाइंदा। लिख्या व्यास पूर कराउणा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध मकाउणा, गोबिन्द ढोला आप सुणाइंदा। नानक आशा आशा विच मिलाउणा, आप आपणे अंग लगाइंदा। निहकलंक नाउँ रखाउणा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। सम्बल नगर डेरा लाउणा, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाइंदा। बोध अगाध ढोला गाउणा, ढोलक छैणा ना कोए वजाइंदा। सतिजुग मार्ग आप लगाउणा, साचा राह आप चलाइंदा। कलयुग भगतां नाल रलाउणा, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। साता दूआ अंक मिलाउणा, अंक अंक वेख वखाइंदा। आपणा अदद आप बणाउणा, तदाद ना किसे जणाइंदा। दूजी ना कोई मदद मंगाउणा, ओट ओट ना कोए रखाइंदा। आपणा ढोला आपे गाउणा, पिछला राग ना कोए अलाइंदा। सतिजुग साचा राह चलाउणा, सति सतिवादी खेल कराइंदा। भगत भगवन्त वेख वखाउणा, दर साचे सोभा पाइंदा। अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाउणा, दूजी विद्या ना कोए पढ़ाइंदा। बज़र कपाटी तोड़ तड़ाउणा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। निरगुण दीपक दीआ इक्क जगाउणा, तेल बाती ना कोए पाइंदा। निझर झिरना इक्क झिराउणा, अमृत रस चखाइंदा। सच दुआरे आप बहाउणा, जिस दुआरे सेव कमाइंदा। छत्ती जुग दा पन्ध मुकाउणा, छत्ती छत्ती संग रखाइंदा। छत्ती राग मुख शरमौणा, हरिजन तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा आप वड्याइंदा। भगत दुआरा छत्ती जुग, पिछली याद कराईआ। कलयुग औंध गई पुग, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। आपणी चोग लई चुग, विष्नूं भण्डारा दिता वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत दुआरा लोकमात, मातृ भूमी आप सुहाइंदा। सन्त भगत इक्क जमात, एका पट्टी नाम पढ़ाइंदा। एका संथा एका गाथ, एका सबक सिखाइंदा। इक्को कलम इक्क दवात, इक्को अक्खर पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। भगत दुआरा सोहे जग, हरि जागरत जोत जगाईआ। जो जन शरनाई गया लग्ग, जन्म मरन विच ना आईआ। कर्म कांड दी मिटे अग्ग, कर्म कुकर्म ना कोए सजाईआ। सति सरूपी बन्ने तग, तकदीर दए बदलाईआ। बिन काअबे कराए हज्ज, काया हुजरा इक्क वखाईआ। निरगुण नूर इलाही रब, रब्बीउल आपणा नूर

दरसाईआ। भगत दुआरे बहे फब, फ़ातया पढ़े सर्ब लोकाईआ। मुहम्मद तक्के विच राह अद्ध, बैठा सीस झुकाईआ। कवण वेला मेरा खुदा मैनूं लए सद्द, कलमा कलाम सुणाईआ। जबराईल मेकाईल असराफील अज़राईल रहे भज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। अल्ला राणी कहे मेरा कबूल होवे हज्ज, मेरा मीआं चले मेरी रज़ाईआ। चौदां लोक बैठी तज, उम्मत नज़र कोए ना आईआ। बण निमाणी बैठी अड्ड, मेरी सार कोए ना पाईआ। पीर पैग़म्बर औलीए शेख़ गए लद, आपणा पल्लू गए छुडाईआ। मैं पार ना करां हद्द, किनारा नज़र कोए ना आईआ। मेरा साहिब गया छड्ड, इक्को इक्क सच्चा गुसाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। अल्ला राणी करे विचार, चौदां तबक पई दुहाईआ। मुहम्मद इच्छया गई हार, हाहाकार मचाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख थक्की शाहीआ। अञ्जील कुरान करन गिरयाज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल मौला, राम रहिमान आप कराइंदा। चौदां सदीआं रखदा रिहा ओहला, आपणा पर्दा ना कोए उठाइंदा। मुहम्मद चुक्की फिरदा रिहा डोला, बण कहार सेव कमाइंदा। आपणा पाउँदा रिहा रौला, हक़ जनाब नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। तेरा खेल मीआं मीत, अल्ला राणी दए दुहाईआ। तूं लख चुरासी वेखें नीत, घर घर बैठा वेख वखाईआ। मैं तेरे नाल करां प्रीत, तूं बिप्रीत क्यों रिहा वखाईआ। मैं गावां तेरे गीत, नित तेरा राह तकाईआ। मैं छड्ड के आई मसीत, मुलां कोए नाल ना लिआईआ। तेरी अचरज वेखी रीत, गरीबां लएं तराईआ। तूं इक्को रंग रखें हस्त कीट, कीट कीटां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा मोहे वर, मेरी आशा पूर कराईआ। मेरी आसा कर पूर, पूरन स्वामीआं। मैं आई दर हज़ूर, निहचल निहकामीआं। मेरा तुट्टा माण ग़रूर, निउँ निउँ करां सलामीआं। मैनूं दर घर कर मन्ज़ूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे उपर कर मेहरबानीआं। मेहरवान कर मेहर नज़र, मेरी नईया रही डुलाईआ। मैं तेरा पूरा करां फ़र्ज़, आपणी ग़रज़ ना कोए रखाईआ। तेरा राग गावां तर्ज़, बण तरीमत सेव कमाईआ। चौदां लोक आवां वरज़, शरअ शरीअत दयां तुड़ाईआ। तेरयां भगतां होण ना देवां हर्ज, कर्ज़ा सब दा दयां मुकाईआ। दोए जोड़ करां अरज, अर्ज़ी इक्को वार पाईआ। मैं अर्शों आई फर्श, मेरी ख़ाक उडी छाहीआ। मेरे उत्ते कर तरस, बण निमाणी रही कुरलाईआ। आपणा आब हयात बरस, बेआब रही तड़फाईआ। मैनूं दे दे आपणा कर्ज़, मकरूज़ होई सौदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण रिहा समझाईआ। अल्ला सुण हक़ निवाज़, इलाही आप सुणाइंदा। तेरी पूरी होई निमाज़,

निउँ निउँ सीस वेख वखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साजण रिहा साज, साचा राह चलाइंदा। सति सतिवादी चले इक्क जहाज़, हरिजन साचे आप चढ़ाइंदा। अस्व घोड़े चढ़या ताज, दुल दुल अली आप दौड़ाइंदा। अवण गवण त्रैभवण रिहा भाज, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाइंदा। लेखा जाणे ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे आप उठाइंदा। धुरदरगाही देवे राज, सीस ताज इक्क टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा सच सलाह, सलाहगीर आप सुणाईआ। जे लैणी अन्त पनाह, सच दुआर दए वखाईआ। मेरे भगत बख़्शण तेरा गुनाह, एका अक्खर देण पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग रिहा वखाईआ। साचा मार्ग दस्से राह, दहि दिशा वेख वखाइंदा। जन भगतां मेला लए मिला, मिल मिल आपणा खेल वखाइंदा। सज्जण सुहेला शहिनशाह, शाह पातशाह हुक्म अल्लाइंदा। कलयुग अन्त बणे मलाह, सतिजुग बेड़ा आप उठाइंदा। भगतां पकड़नहारा बांह, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अल्ला राणी एका घर वखाइंदा। एका घर भगत दुआरा, हरि जू हरि समझाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर वड वड्याईआ। देवे माण विच संसारा, माया ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। गृह मन्दिर सोभावन्त, लोकमात वड्याआ। हरि जू आप बणाए बणत, भगवन सेव कमाया। विच बहाए साचे सन्त, गुरमुख नाउँ प्रगटाया। दरस दिखाए इक्क इकन्त, इकांत नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां अन्तर डेरा लाया। भगतां अंदर गया वड़, आउँदा जांदा नज़र ना आईआ। आपणे पौड़े गया चढ़, उपर पौड़ा एका लाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, करे सच पढ़ाईआ। आपणा नूर आपे धर, नूर करे रुशनाईआ। आपणे मन्दिर आपे खड़, घर घर विच सोभा पाईआ। आपे पुरख आपे नर, नर नरायण खुशी मनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल कर, ईश जीव सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां अंदर रिहा समाईआ। भगत अंदर सच सिँघासण, हरि हरि आप लगाया। करे खेल पुरख अबिनाशण, अबिनाशी करता वेस वटाया। खेले खेल खेल तमाशन, ख़ालक ख़लक रूप समाया। भगतां करे पूरी आसण, निरासा कोए रहिण ना पाया। अन्तिम करे बन्द ख़लासण, लख चुरासी पन्ध मुकाया। मात गर्भ फेर ना फासण, जिस जन नेत्र दर्शन पाया। लेखे लग्गे रसन स्वासण, जिस जन रसना जिह्वा गाया। पार किनारा पृथ्मी आकाशण, सचखण्ड दुआरे आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि इक्को हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए दो जहानां खड़, एथे ओथे ओथे एथे सदा सद सद होए सहाया। हुक्मे

अंदर हुक्मी धार, हुक्मी हुक्म विच भुवाईआ। करोड़ तेतीसा कोटन वार, कोटन कोटि वेस वटाईआ। कोटन कोटि खड़े इन्दर दुआर, दर बैठे सीस झुकाईआ। कोटण मंगण बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। कोटन कोटि बण सिक्दार, सीस छत्तर गए झुलाईआ। अन्तिम सब दा लहिणा लए निरँकार, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। करोड़ तेतीसा मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तेरा दिसे सदा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। तेरी सेजा मिले पलँघ, साची सेजा इक्क सुहाईआ। तेरा नाम वज्जे मृदंग, इक्क मृदंगा वजाईआ। तेरा दुआरा आए लँघ, चरन कँवल मिले शरनाईआ। तूं साहिब सदा बख्शंद, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। कोटन कोटि दर दरवेश रहे मंग, एका मंग झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करोड़ तेतीसा उत्तम ज़ात, पवण पवण विच रखाइंदा। आपे पिता आपे मात, आपे फड़ फड़ गोद बहाइंदा। आपे देवणहारा दात, आपे ख़ाली झोली वखाइंदा। आप निभाए आपणा साथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग समाइंदा। करोड़ तेतीसा एका रंग, एका वार चढ़ाइंदा। ना कोए वेखे नेत्र संग, आउँदा जांदा दिस ना आइंदा। जीव जंत गा गा थक्के छन्द, फड़ फड़ घर ना कोए बहाइंदा। पितर मनौदे रहे पांडे पिण्ड, पंडत बण पिण्डी ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप जणाइंदा। करोड़ तेतीसा साची सेवा, सेवक सेवा सच समझाईआ। अमृत फल मिल्या मेवा, एका मुख पुवाईआ। करे खेल अलख अभेवा, अलख अनक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे सोभा पाईआ। माणस जन्म उत्तम अपार, हरि जू आप बणाया। निरगुण आवे सरगुण लै अवतार, माणस रूप वटाया। अन्तर कर जोत उज्यार, बाहर पंज तत्त काया चोला हंढाया। जगत वेखे जगत विहार, भगतां भगवन नज़री आया। सो मानस जन्म अपर अपार, जिस मानस रूप विच हरि हरि डेरा लाया। राम कृष्न करन निमस्कार, गुर इष्ट देव मनाया। ईसा मूसा मुहम्मद करन सलाम, सजदा सीस झुकाया। नानक गोबिन्द करन प्रणाम, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाया। माणस जन्म वड बलवान, बल बावन हरि जू मानस जन्म वटाया। करोड़ तेतीसा इक्क ज्ञान, इक्को इक्क पढ़ाया। दोहां विचोला श्री भगवान, दूजा विच ना कोई आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरमुख देवत देव आप वखाया। देवत देव सुर नर मुन जन गण गंधर्ब, किन्नर यच्छप दए वड्याईआ। सर्ब जीआं दा इक्को हरि, एका रूप वखाईआ। मन वासना अंदर जीव रहे डर, हरि भय सर्ब चुकाईआ। माणस देवत जायण बण, जिस मिल्या हरि रघुराईआ। सीस झुकायण दोवें गण, दुआरपाल जो सेव कमाईआ। विष्नूं धारे

आपणा बल, भगवन सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवत देवत गुरमुख देव देवा सर्ब देव आत्म परमात्म ज़ाहर बातन आपणा रंग वखाईआ।

★ १४ मग्घर २०१८ बिक्रमी दलीप सिँघ बाबू पुरा जेठूवाल दरबार विच ★

भगत वछल भगवान, आदि जुगादि समाइंदा। दाता दानी वड मेहरवान, जुगा जुगन्तर खेल खलाइंदा। वेखे विगसे दो जहान, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। लख चुरासी हो प्रधान, लोकमात फेरा पाइंदा। नाम निधाना इक्क ज्ञान, अन्तर मन्त्र आप पढ़ाइंदा। धर्म वखाए इक्क निशान, सच निशाना आप झुलाइंदा। नाद अनादी हरि धुन्कान, धुन आत्मक आप अलाइंदा। पवण पाणी सेव कमाण, हवा अग्नी नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल खेल खलाइंदा। भगत वछल हरि भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। लेखा जाणे भगत भगवन्त, भगवन आपणी धार वखाईआ। एका नाम मणीआ मंत, मन मणका दए भुवाईआ। तोड़े गढ़ हउँमे हंगत, माया ममता मोह चुकाईआ। काया चाढ़े साची रंगत, रंग रंगीला एका माहीआ। मेल मिलावा साची संगत, हरिसंगत रिहा समाईआ। इक्क इकल्ला लख चुरासी बणे मंगत, गुर अवतारां रिहा वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए बणत, घाड़न आपणा घाड़ घड़ाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल खेल कराईआ। भगत वछल हरि करतारा, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सारा, वेस अनेक वटाइंदा। जेरज अंड दए सहारा, उत्भुज सेत्ज संग निभाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप न्यारा, निराकार आप अख्वाइंदा। नाद धुंन सच जैकारा, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। ब्रह्म ब्रह्माद वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र लोचण नैण ना कोए वखाइंदा। साचे मन्दिर हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। दीआ बाती एका धारा, कमलापाती आप जगाइंदा। बूंद स्वांती ठंडी ठारा, अमृत जाम प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल खेल कराइंदा। भगत वछल गिरवर गिरधार, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, शाह सुल्ताना नाउँ धराईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लख चुरासी वेख वखाईआ। सन्त साजण लए उभार, साचा सईया इक्क वखाईआ। भगतां मीता विच संसार, साची रीता आप चलाईआ। ठांडा सीता एकँकार, अग्नी तत्त

ना कोए रखाईआ। नाम वस्त अनमुल्ल भण्डार, वड भण्डारी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल बेपरवाहीआ। भगत वछल बेपरवाह, बेऐब नाउँ रखाइंदा। साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाह, साचा हुक्म आप चलाइंदा। दीन दुनी वेखे थाउँ थाँ, दीनन आपणी दया कमाइंदा। ऋषी मुनी भेव जाणे ना, अछल अछल आपणा भेव आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल आपणे रंग रंगाइंदा। भगत वछल हरि रंग राता, रंग रंगीला इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादि साची गाथा, जुगा जुगन्तर करे पढ़ाईआ। नाम निधाना देवे दाता, गुर अवतारां झोली पाईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, अकल कला अख्वाईआ। नित नवित कर कर हित्त जन भगतां पुच्छे वाता, लोकमात फेरा पाईआ। बणया रहे सच्चा पित माता, बालक वेखे बाल सखाईआ। चरन कँवल बंधाए नाता, बख्शे सरन सच्ची शरनाईआ। करे खेल बहु बिध भाता, आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल खेल खलाईआ। भगत वछल हरि खेल अवल्ला, एका इक्क कराइंदा। वसणहार सच महल्ला, सचखण्ड सोभा पाइंदा। जोती धार आपे रला, नूर नुराना डगमगाइंदा। सच सिंघासण एका मल्ला, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। सति संदेशा इक्को घल्ला, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, पलक झलक आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल वेख वखाइंदा। भगत वछल वेखणहार, भगवन दया कमाईआ। जुग जुग विछड़े मेले विच संसार, मेलणहार आप हो जाईआ। गुर चेले सोहण इक्क दुआर, दर दरवाज़ा आप वखाईआ। डुब्बदे पाथर देवे तार, पाहन आपणा चरन छुहाईआ। राउ रंक करे प्यार, जो जन आए सरनाईआ। आत्म ब्रह्म दए अधार, पारब्रह्म मिलाईआ। मन वासना कर खुआर, सांतक सति कराईआ। एथे ओथे दो जहानां पावे सार, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल सहिज सुखदाईआ। भगत वछल सहिज सुखदाई, एका रंग समाइंदा। आदि जुगादि हरिजन वेखे चाँईं चाँईं, लोकमात फेरा पाइंदा। कृपानिध किरपन पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, आप आपणी गोद बहाइंदा। समरथ देवे सदा ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल आपणा संग निभाइंदा। भगत वछल सगला संग, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। जुग जुग भगत दुआरा लए मंग, आवे जावे बेपरवाहीआ। ना कोई ओहला ना कोई कंध, पर्दा विच ना कोए रखाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, सोहला आपणा आप जणाईआ। खुशी कराए बत्ती दन्द, बन्दी बन्द ना कोए पाईआ। नेत्र देवे नैण अन्ध, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। भगतन अन्तर पावे ठंड, अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां होए सहाईआ। सदा सहाई पुरख करतार, आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी बीते कोटन वार, कोटी कोट खेल खलाइंदा। कोटन कोटि गुर अवतार, जुगा जुगन्तर सेव लगाइंदा। हुक्मी हुक्म सच वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। अन्तिम कट के जाण सर्ब वगार, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। लख चुरासी जाए हार, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। माया ममता कर प्यार, हउँमे हंगता बन्धन पाइंदा। भुक्खा नंगता दर भिखार, लोकमात आपणी अलख जगाइंदा। इक्क भगत हरि भगवन्त करे प्यार, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। पुरख अबिनाशी पावे सार, नित नवित वेस वटाइंदा। जगत सागर विच्चों करे पार, काया गागर जोत जगाइंदा। निमख निमख ना मारे मार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। परखे पारखू आप निरँकार, नाम कसवट्टी एका लाइंदा। सच कुठाली देवे गाल, सति सुहागा नाल मिलाइंदा। आपे चले नाल नाल, पाँधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल दया कमाइंदा। जुग जुग भगती मार्ग दे, लोकमात राह चलाईआ। जुग जुग शब्द संदेशा दे, नाम निधान पढ़ाईआ। जुग जुग अमृत बरसे मेंह, मेघला रूप वटाईआ। जुग जुग भगतन लाए नेंह, नेहुं आपणा आप वखाईआ। अन्त कोई ना जाणे थाउँ थेह, कवण घर वसया साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सहाईआ। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, छिन्न भंगर खेल कराइंदा। दर्शन दे दे जाए नस्स, फिर हथ्थ किसे ना आइंदा। अग्गे चले ना कोई वस, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग पाए आपणा शक्क, संसा आपणा रूप वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर त्रैगुण अतीता, त्रै लोकां वेख वखाईआ। त्रिलोकी नाथा ठांडा सीता, सोलां कलां मिली वड्याईआ। जीवां जंतां परखे नीता, देवणहार सज़ाईआ। बिदर सुदामे मिल्या मीता, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। कलयुग अन्त खेल अनडीठा, लिखण पढ़न विच ना आईआ। हरि का खेल ना मरया ना जीता, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा भेव छुपाईआ। धाम अवल्ले बैठ रहे अतीता, त्रैगुण पोह ना सके राईआ। लेखा जाणे हस्त कीटा, लख चुरासी वेख वखाईआ। भगत वछल पतित पुनीता, पतित पावण नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत वछल शाह सुल्ताना, इक्क इकल्ला सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवाना, श्री असधुज वेस वटाईआ। नाम निधाना निरंतर गानां, नर नरायण आप बन्राईआ। सति सतिवादी देवे धुर फ़रमाणा, सच संदेशा इक्क जणाईआ। खेले खेल मर्द मर्दाना, नाम मर्दानगी इक्क वड्याईआ। धर्म धीरज सच निशाना, तीरन तीर इक्क वखाईआ। गुणी गहीर बली

बलवाना, बेनज़ीर वेस वटाईआ। जन भगतां करे आप परवाना, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिभगत मेला भगत वछल, विश्व आपणी खेल जणाइंदा। लख चुरासी अछल अछल, वल छल धारी भेव ना आइंदा। लेखा जाणे जल थल, महीअल आपणा रूप दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरि जू उठया उठे जाग, जगावणहारा आप जगाईआ। कर किरपा धोवे दुरमति दाग़, दूई दलिद्र दए मिटाईआ। दीपक दीआ जगाए चिराग, चांद चांदनी मुख शरमाईआ। अग्नी अग्ग बुझाए आग, सांतक सति वरताईआ। मन उपजाए इक्क वैराग, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। घर बैठयां करे लाड, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आपणी गोद सुहाईआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल सहिज सुखदाईआ। भगत वछल गहर गम्भीर, गुणवन्ता खेल खलाइंदा। जन भगतां देवे साची धीर, धीरज आपणा नाउँ वरताइंदा। अन्त चोटी चाढ़े इक्क अख़ीर, आख़र आपणे विच मिलाइंदा। अमृत बख्शे साचा सीर, रसना मुख आप चुआइंदा। शरअ शरीअत कट ज़ंजीर, लख चुरासी फंद तुड़ाइंदा। दाता दानी वड पीरन पीर, पीड़ सब दी आप वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल खेल कराइंदा। भगत वछल खेले खेल, खेलणहार इक्क अख्वाया। जन्म जुग दे विछड़े मेल, आपणा बन्धन पाया। निरगुण सरगुण बणया सज्जण सुहेल, नाता बिधाता इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाया। भगतन मेला आपणे घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। भय भयानक चुक्कया डर, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। पुरख पुरखोतम पाया दर, घर साचे वज्जे वधाईआ। एका पल्लू ल्या फड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। एका पौड़े जाणा चढ़, दूजा डण्डा ना कोए रखाईआ। एका अक्खर लैणा पढ़, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला आपणे घर मिलाईआ। आपणा घर सुहाए बंक, बंक दुआरी वेख वखाइंदा। नाता तोड़ राउ रंक, रंक राउ एका घर वसाइंदा। निरगुण सरगुण बणाए बणत, जगदीश आपणी दया कमाइंदा। एका नाम एका मंत, मन्त्र आपणा नाम समझाइंदा। लेखा जाणे साचे सन्त, सतिगुर आपणी खेल कराइंदा। भगतां मेला जुगा जुगन्त, जुग करता वेख वखाइंदा। कलयुग लेखा जाणे अन्त, अन्तिम दृष्टी इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन संग सदा समाइंदा। भगतन संग सदा समाया, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। भगतां ढोला आपे गाया, आपणा ढोला भगतां रिहा सुणाईआ। भगतां चोला आप बदलाया, आपणा चोला भगतां

११३
११

दए समझाईआ। भगतां ओहला आप मिटाया, आपणा ओहला भगतां कोलों दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल सच्चा शहिनशाहीआ। भगत वछल सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। आप चलाए आपणे राह, साचे मार्ग आपे लाइंदा। इक्क जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा हुक्म सुणाइंदा। हरिजन वेखे थाउँ थाँ, दर दर आपणा फेरा पाइंदा। करे कराए सच न्याँ, साचा अदल आप कमाइंदा। जुग विछड़े पकड़े बांह, पकड़ी बांह ना कोए छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल सेव कमाइंदा। भगत वछल करे सेवा, सेवक आपणा रूप जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेवा, अलख ना लख्या जाईआ। वड वड्डा देवी देवा, देवत सुर रखे शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। भगत वछल हरि साचा रंग, जन भगतां आप वखाइंदा। गृह आत्म सेज पलँघ, साची खाट सोभा पाइंदा। नाम नगारा नौबत मृदंग, तुरीआ राग अल्हाइंदा। कर प्रकाश सूरज चन्द, कोटन कोटि महिताब चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत जनां हरि वेख वखाइंदा। भगत जनां हरि जाणी जाण, जानणहार आप हो आईआ। वेखणहारा जगत मकान, काया कोठड़ी फोल फोलाईआ। लख चुरासी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट करन ध्यान, ध्यान विच ध्यान ना कोए रखाईआ। दर दर घर घर मन्दिर मस्जिद मट्ठ सुणन ज्ञान, ज्ञान गुरू ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां होए सहाईआ। भगतां होए सहा, दया कमाइंदा। साचे मार्ग ला, दरस दिखाइंदा। अन्ध अन्धेर गवा, जोत जगाइंदा। जन्म जन्म दा कटे फाह, माणस जन्म लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल दया कमाइंदा। भगत वछल हरि दीन दयाला, दयानिध वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, सति सतिवादी नाउँ रखाईआ। हथ्थ रखाए काल महांकाला, जुगा जुगन्तर हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल निराला, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोधा सूर बण बली बलवाना, बल आपणा आप वखाईआ। जीव जंत वेखे मार ध्याना, अन्तर आपणा वेख वखाईआ। भगतां करे आप परवाना, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मेल मिलाया हरि जू हरि, आपणी दया कमाइंदा। पूरब जन्म दा दिता वर, कलयुग अन्तिम मूल चुकाइंदा। सन्त सुहेले आपे फड़, घर साचे आप बहाइंदा। लेखा जाणे अंदर वड़, लिख्त लेख ना कोए रखाइंदा। आपणा अक्खर आपे पढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन साचा उठया, कलयुग

अन्तिम वार। पुरख अबिनाशी तुठया, देवे दरस दीदार। नाम भण्डार दए अतुटया, वरते वरतावे विच संसार। मनमुखां भाग निखुटया, दर दुआरयों दए निकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप भगवान, हरि भगवन खेल अवल्लड़ा, आखर आप कराईआ। जन भगत फड़ाए पलड़ा, पल्लू एका रिहा वखाईआ। सच सिँघासण आपे मलड़ा, तख्त निवासी साचे तख्त आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल वेस वटाईआ। भगत वछल हरि वेस वटाया, कलयुग अन्तिम वार। हरिजन साचे लए जगाया, जागरत जोत कर उज्यार। जिस जन आपणे नाल मिलाया, लख चुरासी विच्चों कढुया बाहर। जिस जन आपणा दरस कराया, ईद चन्द होया शर्मशार। जिस जन आपणा रंग रंगाया, रंग चढ़े ना दूजी वार। जिस जन आपणा अनन्द कराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां लए उभार। साचे भगत उभारदा, कलयुग सेव कमा। बिन करनी फड़ फड़ तारदा, दीनन दया कमा। बिन मरनी फड़ फड़ मारदा, जगत तृष्ना मिटा। बिन शरनी सरन निवारदा, आप आपणे चरन लगा। कलयुग अग्नी फड़ फड़ ठारदा, अमृत मेघ बरसा। हरिसंगत दिवस दिता सतारां हाढ़ दा, सगला संग तजा। लेखा जाणे पुरख नार दा, बालां बिरधां वेख वखा। जीव जंत आपे गालदा, जून अजूनी दए भुवा। भेव जाणे मुरीदां हाल दा, मुर्शद बण बेपरवाह, अन्तिम दस्सया राह सुखाल दा, सोहँ ढोला एका गा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां लए वड्या। भगत वड्डा वड्डी वड्याई, लोकमात वज्जे वधाईआ। भगत वडा हरि करी कुड़माई, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। भगत वड्डा घर वज्जी वधाई, हरि साचा राग सुणाईआ। भगत वड्डा हरि मिटी जुदाई, मिल्या मेल साचे माहीआ। भगत वड्डा हरि मिल्या चाँईं चाँईं, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां होए सहाईआ। भगतां संग सदा हरि सज्जण, सज्जरा साक बणाइंदा। पिछला लेखा सारे तज्जण, जिन आपणा दरस दिखाइंदा। कर दरस घर साचे रज्जण, नेत्र नैण मिलाइंदा। चरन धूढ़ कराए मजण, दुरमति मैल धुवाइंदा। भाण्डे भरम भउ भज्जण, जो गुर चरन ओट रखाइंदा। सदा सुहेला आए परदे कज्जण, नाम दोशाला हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां संग आप निभाइंदा। भगतां संग साची आस, आसावंद रखाईआ। कलयुग अन्त बुझी प्यास, पुरख अबिनाशी खुशी मनाईआ। मैं बहत्तरां होया दास, बण दास सेव कमाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों इक्को मेरा कम्म ख़ास, ख़ालस रूप दयां वखाईआ। बिन काया कपड़ वसां पास, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। लेखा जाणा पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फेरा पाईआ। जन भगतां कर कर तलाश, नौ खण्ड पृथ्मी चरनां हेठ दबाईआ।

बण तरखाण हरिजन ल्या तरास, तङ्गा तङ्गा दा सूत्र लाईआ। हरिभगत ना होए विनाश, अबिनाशी आपणे नाल मिलाईआ। झूठा संसा करे फाश फाश, जगत अन्धेरा दए गंवाईआ। जिस जन गाया रसन स्वास, रस रसना दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। हरिभगत तेरा साचा माण, हरि जू आप रखाइंदा। तेरे पिच्छे पिच्छे फिरे भगवान, घर घर फेरा पाइंदा। फड़ फड़ सुत्तयां देवे ज्ञान, आपणा नाउँ जपाइंदा। आपे बणया रहे महिमान, महिमानी प्रेम गुरमुखां कोलों खाइंदा। आपे बणया रहे बेपहचान, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप सालाहइंदा। भगत सलाहे हरि निरँकार, जुग जुग वेस वटाईआ। इक्क इक्क फड़ फड़ जाए तार, तार तार नाल मिलाईआ। मन्दिर चढ़ चढ़ पाए सार, अंदर वड़ वड़ खुशी मनाईआ। डर डर खेल करे विच संसार, लुक लुक आपणा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी धर धर वेस, धरनी दया कमाइंदा। इक्क इक्क एको रिहा वेख, इक्क एका मेल मिलाइंदा। फिर वसे आपणे देस, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। कलयुग अन्तिम अवल्लड़ा वेस, हरि लोकमात कराइंदा। हरिजन रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आप तपया अग्नी जेठ, गुरमुखां अमृत मेघ बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल सेव कमाइंदा। सेवा करन आया भगवान, कमी कोए रहिण ना पाईआ। साचे भगतां कर पहचान, पच्छिम उतर दक्खण पूरब वेख वखाईआ। देवत सुर सर्ब गाण, गंधर्ब रहे जस गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, नेत्र नैण उठाईआ। गुर अवतार ला ला कान, सुण सुण ढोला खुशी मनाईआ। करया खेल श्री भगवान, लोकमात वज्जी वधाईआ। जुग जुग दे भगत कट्ठे कीते आण, एका गंढु बंधाईआ। सति सतिवादी हो मेहरवान, दोए दोए रूप खेल कराईआ। साता दूआ कर प्रधान, अंक अंक नाल मिलाईआ। बहत्तरां देवे इक्क अस्थान, साची भूमका सोभा पाईआ। भूपत भूप राज राजान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सति सरूप निगहबान, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ।

★ १५ मग्घर २०१८ बिक्रमी भाग सिँघ बाबूपुर जेठूवाल दरबार विच ★

जगत मिटी भाण्डा घुम्यार, जगत विहार चलाईआ। साची मिट्टी परख ना सके विच संसार, अंग अंग ना कोए मिलाईआ। फड़ थथवा मारे मार, उपर चक्क भुवाईआ। कूड़ा करकट कर त्यार, विष्टा नाल मिलाईआ। कच्चे भाण्डे लए उसार,

इक्क दूजे उपर टिकाईआ। पहलों प्रभ अग्गे करे निमस्कार, मेरा आवा देणा पकाईआ। हावा रहे ना मेरे यार, मैं तेरी ओट तकाईआ। तूं घड़या सर्ब संसार, मैं घड़ प्याले हथ्थ रिहा फड़ाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, एका वार समझाईआ। जिस भाण्डे अग्नी मिल कर सतिकार, सो सति सति रूप वटाईआ। जिस भाण्डे अंदर विष्टा दिता डार, सो भाण्डा टुट्टया आपणा अंग कटाईआ। जिस भाण्डे आपणा तन रख्या बाहर, सो कच्चा पिला नाउँ रखाईआ। जो बैठा रिहा विच बण सरदार, आपणा बल रखाईआ। अग्नी वेख ना गया हार, नेत्र नैण ना कोए शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। जगत घुम्यार भाण्डा घड़, अग्नी विच रखाइंदा। फेर ना सके अंदर वड़, डरदा नेड़ ना आइंदा। पुरख अबिनाशी जीव जंत लख चुरासी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज जो भाण्डा ल्या घड़, सो मात गर्भ अंदर वड़ वड़ खेल कराइंदा। सो अबिनाशी ना जाए सड़, अग्ग कोलों ना जाए डर, थथवा लै ना मुख भुवाइंदा। कूड़ा किरकट ना देवे डार, रक्त बूंद करे प्यार, नारी पुरख सेज स्वार, जगत विचोला वेस वटाइंदा। साचे आवे विच्चों हरिभगत करे त्यार, आपणी हथ्थीं आप टणकाइंदा। अंदरों आवाज़ आई तूं ही निरँकार, एका राग सर्ब सुणाइंदा। जगत भाण्डा जोर दी ठोकर ना सके कोई मार, मार मार ठोकर बबरी बबरी हो जाइंदा। गुरसिख ठोकर मारे संसार, उज्जल मुख कराइंदा। पारब्रह्म दी साची कार, भेव कोए ना पाइंदा। कर्म कुकर्म निहकर्म वंड वंडे वंडणहार, एका तोला आप अख्वाइंदा। जुग जुग गेड़ा गेड़े गेड़नहार, जीव जंत खेल कराइंदा। जगत घुम्यार भाण्डे घड़ वेचे विच बाज़ार, दव्वनी दव्वनी हट्ट विकाइंदा। हरि आपणे भाण्डे आपे घड़ आपे लए संभाल, हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। माटी भाण्डे होए बेहाल, जीव जंत वंड वंडाइंदा। कोई फड़ फड़ रिन्ने विच दाल, अठ्ठे पहर अग्ग लगाइंदा। पारब्रह्म आपणे भाण्डे आपे लए फड़, आपणी वस्तू विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लख चुरासी आपणे हुक्म चलाइंदा। हरि का भाण्डा काया माटी, पंज तत्त मेल मिलाइंदा। किसी कीमत मिले ना किसे हाटी, हट्टो हट्ट ना कोए विकाइंदा। पहलों कलयुग रखे उत्ते अग्ग, अग्नी हवन कुण्ड तपाईआ। फिर दस मास छड्डे ढक, उपर पर्दा पाईआ। फिर बाहर कढ्ढे रख, जगत विच फिराईआ। फिर बण कूकर लए चट्ट, जूठ झूठ नाल रलाईआ। फिर विके बज़ार हट्ट, सौहरे पेईए कीमत पाईआ। कर किरपा जिस सतिगुर ल्या आपणे हथ्थ, तिस देवे माण वड्याईआ। पुरख नार इक्को माण, निमाणयां होए सहाईआ। नार पुरख इक्को ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। पुरख पुरखोतम वड मेहरवान, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। नार पुरख इक्क मकान, एका घर सुहाईआ। पुरख नार इक्क ध्यान, लिव अन्तर आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवान,

बण बण सालस सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। तारन को हरि आया इक्क, इक्क इकल्ला खेल खलाइंदा। आपणी किरपा लेखा देवे लिख, जन भगतां लेख जणाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे तृख, कर्म कर्म दा रोग मिटाइंदा। नेत्र नैण आए दिस, दिशा दिशा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण खेल खलाइंदा। नर नरायण तारे नर नार, नर हरि वड्डी वड्याईआ। दर घर साचे कर प्यार, प्रेम प्रीती इक्क निभाईआ। साची रीती अपर अपार, अपरम्पर रिहा चलाईआ। एका घर सच्चा दरबार, एका दर दए वड्याईआ। एका रंग रंगणहार, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। इक्क वसीला विच संसार, आदि जुगादि होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग वखाईआ। हरिजन रंग इक्को पेख, पेख खुशी मनाईआ। साहिब सुल्तान अवल्लड़ा वेस, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। तिस साहिब को सदा आदेस, जिस डिठयां सर्ब दुःख मिट जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क चलाईआ। साचा राह चले पन्थ, पारब्रह्म प्रभ आप चलाइंदा। एको नाम साचा संख, चार वरन आप सुणाइंदा। एका शब्द साचा ग्रन्थ, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह चले मार्ग, एका पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी बणे पारख, आपणी परख ना किसे कराईआ। भगतां बणे भगवन सालस, सच सालसी रिहा कमाईआ। लख चुरासी विच्चों वेखे ख़ालस, ख़ालस रूप दए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। नार पुरख हरि देवे तार, तारनहारा आया। जिस दी गाथा गाउँदे रहे जुग चार, जस वेद पुराण सुणाया। जिस दा हुक्म मन्नदे रहे गुर अवतार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाया। जिस नूं ब्रह्मा विष्न शिव करदे रहे निमस्कार, दर दर बैठे अलख जगाया। जिस दा गीत गाउँदे रहे वारो वार, रसना जिह्वा सालाहया। जिस नूं अठसठ तीर्थ मन्नदे रहे साचा यार, सो यारड़ा वेस वटाया। निरगुण निरवैर लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाया। नारी पुरख उतरे घाट, पार किनारा इक्क जणाईआ। हरिसंगत तेरी मुक्की वाट, अग्गे पन्ध ना कोए वधाईआ। सच खटोला मिले खाट, शब्द बबाणे लए बिठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। ज़ात पात ना कोए नाता, नित नित आपणी खेल कराइंदा। सतिजुग साचे साची गाथा, हरि साचा सच पढ़ाइंदा। चार वरन इक्को गाथा, एका वार चलाइंदा। एको पूजा एका पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। एको पुरख इक्क अबिनाशा, एका संग निभाइंदा। एको खेल इक्क तमाशा, वेखणहारा इक्क हो आइंदा।

एको संग एको हरि साथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग निभाइंदा। साचा संग निभे संसार, बण संसारी सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी कर कर पार, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। गुफ़त शनीद करे गुफ़तार, तार सतार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत रिहा समझाईआ। हरि भगतां आप समझा, एका समझ रखाईआ। झूठी मरज़ जगत मिटा, एका नाअरा दए पढ़ाईआ। साची तर्ज आपे गा, सोहँ ढोला रिहा सुणाईआ। पिछला बख्शे सर्ब गुनाह, अगला लेखा लेखे विच रखाईआ। भाईआं संग भाई रला, भगत भगवान दए वड्याईआ। सच दुआरा दए बणा, बावण एका ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। बावन पुंने आस, निराश ना कोए वखाईआ। भगत वसण भगतां पास, एका घर बहाईआ। करया खेल पुरख अबिनाश, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्त ना कोए होए निरास, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत लए मिलाईआ। भगत मिलाए भगत दुआर, भगवन सेव कमाया। चौथे जुग पाई सार, चौथे पद बहाया। जगत मंज़ल पार किनार, हद्द आपणी आप वंडाईआ। मानस जन्म ना जाए हार, जिस जन सद आपणे चरन बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआर रिहा सुहाया। भगत दुआर भगत महल्ल, हरि भगतन नाल बणाईआ। सदा सदा सद रहे अटल्ल, अटल्ल मिली वड्याईआ। भगतां लग्गा सच फल, सृष्ट सबाई दए वखाईआ। पिच्छे बहे सिंघासण मल, अग्गे भगतां रिहा रखाईआ। आप होया भगतां वल, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सृष्ट सबाई जाए हल्ल, हौली हौली रिहा हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, भगत दुआरा आप उपजाईआ।

★ १६ मग्घर २०१८ बिक्रमी विरसा सिंघ धिरता सिंघ बाबूपुरा जेठूवाल दरबार विच ★

हरि भगत सच्ची प्रभात, राग प्रभाती रिहा जस गाईआ। भगत भगवन्त इक्क इकांत, एका कार कमाईआ। सहिज गुण गुणवन्ता देवे दात, दाता दानी आप वरताईआ। अनन्द मंगल सुणाए गाथ, गावणहारा बेपरवाहीआ। जगत जुग देवे साथ, सहिज सहिज पन्ध मुकाईआ। मन्त्र अन्तर पूजा पाठ, बसन्तर दए बुझाईआ। जुगां जुगन्तर बण बण सच्चा नाथ, अनाथां होए सहाईआ। त्रैगुण अतीता तत्तव तत्त चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। खेले खेल खेल तमाश, दो जहानां वेस वटाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, हरिजन साचे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, मेहरवान आप हो जाईआ। सच प्रभाती रही गा, एका ढोला गाया। सचखण्ड निवासी वेख चढ़या चाअ, चाउ घनेरा इक्क जणाया। धन्न भाग मिल्या सच्चा थाँ, थान थनंतर सोभा पाया। पुरख अगम्म पकड़ी बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सदा सद रखे ठंडी थाँ, छहबर एका वार लगाया। जन भगतां पिता मां, भगत भगवन्त खेल खलाया। साचे सन्तां नाल रला, साचा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। सच प्रभाती रही नच्च, आपणा स्वांग वरताईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या सच्च, साची गाथ पढ़ाईआ। त्रैगुण माया मिटी आंच, अग्नी अग्ग बुझाईआ। काया माटी लेखे लाया कच्च, काची गगरी सोभा पाईआ। जन भगतां अंदर गया रच, रच रच आपणा रूप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। सच प्रभाती नेत्र खोल्ह, नैण नैण उठाईआ। पुरख पुरखोतम वसया कोल, सगली चिंत मटाईआ। मैं उठ उठ वजावां ढोल, साचे भगतां दयां सुणाईआ। सच बसन्ती रुत्त बण फुलवाड़ी गया मौल, घर घर डेरा लाईआ। पूरा करे कीता कौल, कँवल नैण सच्चा शहिनशाहीआ। तोलणहारा साचा तोल, नाम कंडा हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रहे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। सच प्रभाती चढ़या रंग, रंगी रंग वटाईआ। सेजा सोहे सच पलँघ, भूशन बस्त्र नाल मिलाईआ। नाम निधान वज्जे मृदंग, मृदंगा हथ्थ उठाईआ। गृह मन्दिर हरि जू आया लँघ, नज़र किसे ना आईआ। जगत द्वैती ढाई कंध, एका धक्का लाईआ। भगत साचे सुणाया छन्द, आत्म परमात्म वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सच प्रभाती वेखे निरगुण जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। सचखण्ड वसे किले कोट, किला कोट इक्क वखाइंदा। नाद अगम्मी लाए चोट, चोटी चढ़ के नाद वजाइंदा। जन्म जन्म दा कढ्ढे खोट, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। भगतां रखे आपे ओट, ओट भगतां आप तकाइंदा। आलणयो डिग्गे चुक्के बोट, साची गोद आप बहाइंदा। देवे नाम भण्डार अतोट, एका वार वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। सच प्रभाती अमृत रस, एका मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी देणा दरस, कवण दुआरे मिले चाँईं चाँईंआ। पन्ध मुकावां जावां नस्स, बणां पाँधी राही आ। कवण करे मेरी पूरी आस, तृष्ना दए मिटाईआ। मैं वेख थक्की पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फेरा पाईआ। कोई ना लभ्भा सच्चा घाट, तीर्थ तट देण दुहाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद वेखे हट्ट, साचा नाम ना कोए विकाईआ। तेल बाती लट लट, अष्टभुज रही जगाईआ। शिवदुआले ख़ाली मट्ठ, तेरा नाउँ कोई ना गाईआ। अन्त दुआरे तेरे गई ढट्ठ, ढह ढह सीस झुकाईआ। ना कोई बुध

ना कोई मत्त, मति मतवाली फिरे दयां दुहाईआ। ना धीरज ना कोई सति, आपणी बैठी पति गंवाईआ। कलयुग जीवां चुक्की अत्त, चारों कुण्ट रहे कुरलाईआ। गृह गृह उब्बले झूठी रत्त, रत्ती रत्त नज़र ना आईआ। मैं ढोलक छैणयां संखां अंदर गई फस, जगत रबाब सतार रहे वजाईआ। मेरी रैण अन्धेरी होई मस, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। मैं निमाणी कर के बह गई बस्स, बस हार जित तेरे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जगत प्रभाती रही कुरलाईआ। जगत प्रभाती मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाया। मेरा अमृत रस मेरे विच सके ना कोई पा, तेरे चरनां ना कोए मिलाया। आपणा आपणा ढोला रहे गा, तेरा नाद ना किसे वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाया। दर मंगां भिक्ख दे असीस, इक्को आसरा तेरा तकाया। तूं साहिब सच्चा जगदीश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहया। मैं मन्नां तेरी हदीस, सिर चरनां उपर टिकाया। मैं वेखे राग छतीस, बतीस संग ना कोए निभाया। चारों कुण्ट बैठे ख़बीश, ख़बर तेरी ना कोए सुणाया। शाह पातशाह दर दर वेखे ना झुल्ले छत्र सीस, साचा हुक्म ना कोए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा दुक्खड़ा दे मिटाया। मैं दुक्खी होई अभागण, मेरा भाग ना कोए रखाईआ। अमृत वेले उठ उठ जागण, अमृत रस मुख ना कोए चुआईआ। बिन तेरे हँस बणे कागन, काग वांग रहे कुरलाईआ। मैं दर दर फिरां बैरागण, तेरा वैराग रिहा तड़फाईआ। तुध बिन करे ना कोए सुहागण, जगत रंडेपा रिहा सताईआ। कर किरपा बण जा साजण, मेरे सज्जण सच्चे माहीआ। मैं चल के आई हाजण, मक्का काअबा इक्क तकाईआ। तूं सुणया ग़रीब निवाज़ण, ग़रीब निमाणयां दया कमाईआ। मैं कोझी कमली पाजण, लजपत तेरे हथ्थ फड़ाईआ। मेरे भाग सोए जागण, घर मिले मेरा साँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे झोली डाहीआ। मेरा भाग जाए खुल्ह, किरपा कर गुण निधाना। मेरी करता पाए कीमत मुल, लहिणा चुक्के विच जहाना। तेरा नाउँ सलाहकुल, ख़ालक ख़लक वड प्रधाना। मैं तेरे कंडे जावां तुल, तूं धुरदरगाही मर्द मर्दाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाना। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका वार समझाईआ। चार जुग तत्त तत्तव तूं आपणा रूप रही वखा, लोकमात फेरा पाईआ। कोटन कोटि तीर्थ नहावण रही करा, कोटन कोटि पूजा पाठ पढ़ाईआ। कोटन कोटां सजदा रही करा, कोटन कोटां वुज़ू नमाज़ पढ़ाईआ। कोटन कोटां बांग रही दुआ, कोटन कोटां नाअरा रही सुणाईआ। कोटन कोटि नाद संख हथ्थ फड़ा, लोकमात दएं वड्याईआ। कोटन कोटां अग्नी ताअ, कोटन कोटां जल धार वखाईआ। कोटन कोटां घरों कढा, जंगल जूहां विच फिराईआ। कोटन

कोटां देवे सलाह, अमृत वेला इक्क वड्याईआ। उठ प्रभाती जो लए ध्या, प्रभ मिले चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम सारे होए फ़नाह, सीस सके ना कोए उठाईआ। तेरी झोली पाए जगत गुनाह, गुनाहगार तेरा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाईआ। गुनाहगार तूं बणी जग, तेरा रंग नज़र ना आइंदा। तेरे विच सृष्ट सबाई लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। सब नूं भुलया तेरा आचार चज्ज, उठ उठ राम ना कोए ध्याइंदा। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर सारे रहे भज्ज, भावनी भउ ना कोए मिटाइंदा। आपणा गृह रहे तज, तेरा गृह ना कोए सुहाइंदा। बिन हरि साचे दर ना कोई बहे सज, साचा घर नज़र किसे ना आइंदा। बिन भगतां तेरी कोई ना रखे लज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाइंदा। सुण प्रभाती मन्न लै कहिणा, कहिणा कहिण ना जाईआ। कलयुग अन्तिम देवे लहिणा, लहिणा झोली पाईआ। सच श्रृंगार बस्त्र गहिणा, बस्त्र भूशन दए समझाईआ। साचे भगतां दर्शन करना नैणां, नेत्र नैण शरमाईआ। अमृत सोमा एका वहणा, दुरमति मैल धुवाईआ। भगत भगवन्त दर इक्को बहणा, एका घर वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ प्रभाती दए वड्याईआ। सुण प्रभाती साची गल्ल, हरि साचा सच जणाइंदा। जुग चौकड़ी करदा रिहा वल छल, आपणा भेव ना किसे समझाइंदा। जन्म कर्म दा देंदा रिहा फल, भगती भगतां झोली पाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रबल, आपणा बल धराइंदा। हरि भगत दुआरा बैठा मल, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण निरगुण निरगुण लोकमात आया चल, अटल्ल अचल्ल महल्ल आप सुहाइंदा। ग़रीब निमाणयां अंदर गया रल, रल मिल आपणी खेल वखाइंदा। ना कोई घड़ी ना कोई पल, थित वार ना वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क समझाइंदा। साचा राह इक्को दस्सां, दस्स दस्स ख़ुशी मनाईआ। भगत दुआरे आपे वसां, वस वस वक्त लँघाईआ। तीर निराला इक्को कसां, नाम निशान उठाईआ। जगत विकार चरनां हेठां झस्सां, दुःख दर्द दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुण अवगुण दए समझाईआ। गुण अवगुण जुग जुग धार, जुग करता आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी बीते चार, नव नौ चार वेख वखाइंदा। जगत क्रिया गुण हार, कूड़ा किर्म बण बण खाइंदा। मानुख मानुख ना करे प्यार, माणस माणस मुख भुवाइंदा। दीन मज़्हब होया विभचार, सच आचार ना कोए जणाइंदा। धर्मखण्ड ना कोए दुआर, कर्मखण्ड ना कोए वड्याइंदा। बाणी ब्रह्मण्ड ना कोए धुन्कार, जेरज अंड ना कोए जगाइंदा। सरमखण्ड रोवे ज़ारो ज़ार, नीर नेत्र ना कोए शरमाइंदा। सचखण्ड हरि वसणेहार, वस वस आपणा रूप धराइंदा। जुगा जुगन्तर पावे सार, लोकमात वेख वखाइंदा। बण बण आए गुर अवतार,

भगत भगवन्त खेल खलाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, नौ सत्त फेरा पाइंदा। मन मति बुध खोल्ह किवाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाइंदा। कलयुग अन्तिम हरि रंग राता, राती रुत्ती रुत्त सुहाईआ। गुरमुख विरला आप पछाता, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। जन भगतां देवे नाम दाता, नाम झोली पाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को ज्ञाता, ज्ञान बोध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खलाया, हरि भगतां आप उठाईआ। सच प्रभाती दए बणाया, परम आरती इक्क वखाईआ। महांसारथी बण के आया, साचा रथ चलाईआ। पारख बण बण वेख वखाया, पाथर कंचन लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आप हो जाईआ। सच प्रभाती रखणा याद, यादव बंस दिता खपाईआ। रावण सुणी ना कोए फरयाद, लंका गढ़ तुड़ाईआ। सुंभ नसुंभ ना जाणी हाद, माण अभिमाण मिटाईआ। जुग जुग खेल खेल ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाईआ। गुरमुख विरले करां लाड, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, भगतां भगती इक्क सिखाईआ। धर्म निशाना देवां गाड, लोकमात वज्जे वधाईआ। बण बण साचा सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। कर किरपा खोलां ताक, दीवा बाती इक्क टिकाईआ। चरन प्रीती पूजा पाठ, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। नेत्र दर्शन तीर्थ ताट, अठसठ रहे शरमाईआ। दर आउणा पन्ध मुक्के चौदां लोक हाट, चौदां तबक फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। साचा भेव हरि खलाउणा, एका वार जणाइंदा। आपणा कीता जिस बख्शाउणा, बख्शिश इक्को इक्क वखाइंदा। चल दुआरे साचे आउणा, सच दुआरा आप बणाइंदा। भगतां अग्गे सीस झकाउणा, बिन भगतां पार ना कोए कराइंदा। मैं फिरां विच अवण गवणा, लख चुरासी अंदर डेरा लाइंदा। मैं फिरां विच उनन्जा पवणा, जल थल महीअल वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क सुहाइंदा। हस्त कीट विच मेरा वासा, घट घट रिहा समाईआ। भगत जनां सद होया दासा, नित नित सेव कमाईआ। साचा भगत साचे घर करे प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश नाल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम देवे वर, हरिजन साचे आप उठाईआ। मैथों वड्डा मेरा भगत, जिस दी सेवा आप कमाइंदा। मेरे विच ना कोई शक्ति, शक्ती भगतां हथ्थ फड़ाइंदा। निरगुण दा इक्को वक्त, जग वेला भगतां नाल सुहाइंदा। मैं कदे ना करां तरस, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भगत मिले भगवान, भावी जगत मिटाईआ। सच प्रभाती दयां ज्ञान, एका वार

१२३
११

समझाईआ। हरिजन साचे लए पहचान, आपणा नेत्र नैण खुलाईआ। दर दरवेश बण बण मंगण दान, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अन्त तेरी करन कल्याण, कालख टिक्का धोवण शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण रिहा वखाईआ। प्रभाती करे पुकार, निउँ निउँ सीस झुकाया। तेरे भगत वेखां कवण दुआर, कवण कूटे फेरा पाया। नौ खण्ड पृथ्मी फिर फिर गई हार, मेरा पन्ध ना किसे मुकाया। मैं कर कर थक्की हार शृंगार, मींढी सीस सीस गुंदाया। नैण रख रख कज्जल धार, मोहणी रूप रूप धराया। प्रभ मिल्या ना मीत मुरार, मेरी सेज ना कोए सुहाया। मैं दुक्खड़े कटे जुग चार, जगत विछोड़े मोहे सताया। रातीं नींद ना आवे रोवां धाहां मार, घड़ी पल गिण गिणाया। प्रभाती वेला प्रभ करे सच प्यार, मेरा दुःख दए गंवाया। चार कुण्ट मन्दिर मस्जिद फिर फिर आई वारो वार, दर दर फेरा पाया। अग्गों सारे देण दुरकार, कूकर बैठे रौला पाया। अंदर दिसे ना तेरा प्यार, बाहरों रसना रहे हिलाया। मैं चल के आई तेरे दरबार, तेरे चरनां धूढ़ ख़ाक रमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा दुखड़ा दे गंवाया। पुरख अबिनाशी मेहरवान, मेहर नज़र टिकाईआ। तेरी अन्त करां कल्याण, कलयुग पन्ध मुकाईआ। तेरा अमृत रस पीण खाण, तेरी झोली पाईआ। तेरे अन्तर इक्क ज्ञान, सोहँ शब्द करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१२४ आपणा मार्ग आप वखाईआ। हरि जू दया धार, हिरदे इक्को आस रखाईआ। तेरे चरन जावां बलिहार, शरन मिले वड्याईआ। १२४
११ मैं निमाणी कर प्यार, पाणी भर भर सेव कमाईआ। अठ्ठे पहर रहां ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए जणाईआ। जोती ११
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा रिहा सुणाईआ। सुण प्रभाती इक्को बात, हरि बातन आप जणाइंदा। जन भगतां दिती साची दात, दाता दानी आप वरताइंदा। अठ्ठे पहर पढ़न मेरी गाथ, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। इक्को चरन साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। तेरी अन्तिम पुच्छण वात, वातावरन इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचे भगतां इक्को वेला, एका रंग समझाईआ। संधया प्रभाती ना कोई सुहेला, रातीं सुत्तयां भुल्ल ना जाईआ। एका रंग रहे गुरू गुर चेला, चेला गुर रूप वटाईआ। घड़ी पल सज्जण सुहेला, साह साह रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह रिहा वखाईआ। जगत प्रभाती हो हैरान, आपणी लए अंगड़ाईआ। किस बिध हरि जू दिता दान, जन भगतां नाम वरताईआ। अठ्ठे पहर रहे तेरा ध्यान, भुल्ल कदे ना जाईआ। रातीं सुत्तयां करें पछाण, घर घर लईं उठाईआ। आलस निंद्रा विच देवें माण, आपणी गोद बहाईआ। उठ प्रभाती ना मैनूं गाण, दिवस रैण तेरी ओट

तकाईआ। संधया सके ना कोए पहचान, जगत आसण ना कोए विछाईआ। पूजा पाठ ना कोए ध्यान, पाठक बण ना लए वड्याईआ। आत्म परमात्म इक्को ज्ञान, सोहँ सच रसाईआ। प्रभ मिलयां सर्ब दुःख नट्ठ जाण, कोए नेड़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां लए मिलाईआ। साचे भगत मिलण दा जे जन चाअ, चाकरी इक्क वखाइंदा। नंगीं पैरीं जाणा आ, पाँधी पन्ध मुकाइंदा। दूरों निउँ निउँ सीस झुका, नेत्र नैण नैण शरमाइंदा। रसना सोहँ ढोला लैणा गा, गावणहारा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। जन भगत मेला विच संसार, हरि मिल मिल आप कराया। छत्ती जुग दा सच विहार, छत्ती छत्ती नाल कराया। छत्ती उच्चा हो उज्यार, छत्ती राग वेख वखाया। प्रभाती रोंदी रही जुग चार, नेत्र नैणां नीर वहाया। सुख शांती मिली ना विच संसार, संसा सके ना कोए चुकाया। भगवान भगतां मिलदा रिहा लुक लुक यार, साख्यात नज़र ना आया। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैभवन धनी वेस वटाया। निरगुण निरगुण लै अवतार, सरगुण आपणा राह वखाया। सेवा करे अपर अपार, अपरम्पर सेव कमाया। सच दुआरा कर त्यार, साचा बंक दए वड्याआ। प्रभाती वेला रखे इक्को वार, एका रंग चढ़ाया। बूंद स्वांती ठंडी ठार, अृमत आत्म दए प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप चढ़ाया। अन्तिम रंग चढ़ना मात, हरि साचा सच जणाईआ। पोह छब्बी मिलणी दात, दाता दानी आप वरताईआ। प्रभाती तेरी पिछली मिटे रात, तिन्न पहर तिन्नां जुगां नाल मिलाईआ। चौथे पहर चौथे पद दी गाथ, पुरख अबिनाशी इक्क सुणाईआ। वस्त अमोलक देवे हथ्थो हाथ, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। बहत्तरां करे पूरी आस, सत्तरां साचा गुण समझाईआ। चुहत्तर चले मात शाख़, पत डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रभाती दए समझाईआ। सच प्रभाती ना रहिणा सौं, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। पंजां प्यारयां तेरी वस्त लैणी खोह, आपणी हथ्थीं आप लुटाइंदा । चार वणजारयां देवे ढोआ ढो, साचा हट्ट आप खुल्हाइंदा। बहत्तर भगत अग्गे हो, हरि आपणा दरस दखाइंदा। सत्तरां संग आपे छोह, साचा रंग रंगाइंदा। चुहत्तरां मन वासना देवे कोह, कोहतूर नूर प्रगटाइंदा। हरिसंगत करे साचा मोह, माया ममता मोह मिटाइंदा। गुरसिखां जोगा आपे हो, आपणा तन गवाइंदा। निरगुण सरगुण खेल दो, दो जहानां वेख वखाइंदा। भाग लगाए छब्बी पोह, आपणा पाला सर्ब मिटाइंदा। लख चुरासी छोल्यां भोह, करता कीमत कोए ना पाइंदा। चारों कुण्ट सर सरोवर तट किनार आवे बो, साचा बीज ना कोए बिजाइंदा । आपणे जिहा आपे हो, हरि भगतां आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। चले धार जगत

१२५ ११

निराली, निरगुण आप चलाईआ। निरवैर फिरे हथ्थां ख़ाली, ख़ालक ख़लक रिहा समझाईआ। आपे आया पन्थ दा वाली, पाँधी बण बण पन्ध मुकाईआ। जन भगतां पिच्छे घाल घाली, रत्ती रत्त लेखे लाईआ। आपे दर दर बणे सवाली, जन भगत दुआरे फेरा पाईआ। करे खेल दो जहानां वाली, वाहवा आपणी कार कमाईआ। चार युग बूटे लाए बण बण माली, अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। लग्गी प्रीत निभे नाली, लोकमात ना कोए तुड़ाईआ। निरगुण सरगुण बणया पाली, बण सेवक सेव कमाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाली, मुर्शद बणया बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त बिना ना वज्जे ताली, लोकमात हरि का नाउँ तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। हरि बूटा भगत डाली, प्रेम वासना फल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क प्रभाती दए बणाईआ। अठ्ठे पहर भगत प्रभाती, भावना होर ना कोए रखाइंदा। अमृत देवे बूंद स्वांती, सांतक सति कराइंदा। जागत सोवत दरस देवे दिवस राती, दिवस रैण ना वंड वंडाइंदा। घर घर मेला कमलापाती, कँवल नैण खेल खलाइंदा शब्द संदेश साची पाती, बिन लिखयां आप पहुंचाइंदा। नाम निधाना इक्को गाथी, पढ़ पढ़ गाथा आप सुणाइंदा। एथे ओथे सच्चा साथी, हरि सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभाती वेला आप समझाइंदा। प्रभाती वेला प्रभ जाए लभ्भ, लाभदायक अख्वाईआ। जगत तृष्ना मिटे सब, सबर सबूरी इक्क बंधाईआ। नाम प्याला प्याए मध, मधु रस चखाईआ। नाद अनादी वजाए अनहद, हद्द पार कराईआ। चरन दुआरे आपणे सद्द, सदके घोली वार वखाईआ। आप बणाए आपणी यद, पिता पूत ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क प्रभाती दए वड्याईआ। भगत प्रभाती अठ्ठे पहर, पहरा हरि रखाइंदा। नेड़ ना आवे कोई ऐर ग़ैर, ग़ैरत रूप आप वटाइंदा। सचखण्ड वसाए साचे शहर, शरअ बन्धन ना कोए पाइंदा। अठ्ठे पहर इक्को लहर, एका धारा नाम चलाइंदा। जूठ झूठ ना विस ज़हिर, ज़ाहरा रूप आप वटाइंदा। करे खेल गम्भीर गहर, गुणी गहीर दया कमाइंदा। ना कोई तर्ज ना कोई बहर, रागी राग ना कोए अलाइंदा। जिस जन आपणी करे मेहर, तिस जन आपणे विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रभाती इक्क बणाइंदा। सच प्रभाती सतिगुर चरन, चरन कँवल चित लाया। नाता तुट्टे मरन डरन, मरन डरन ना भउ रखाया। साहिब सतिगुर वरनी वरन, वर इक्को हरि जू पाया। दीन दयाल तरनी तरन, तारनहारा गुर अख्वाया। गुरमुख विरले पौड़े चढ़न, हरि जू पौड़ा नाम लगाया। मनमुख जीव सारे डरन, नेत्र नैण ना कोए उठाया। हरिजन अक्खर इक्को पढ़न, हरि जू आप पढ़ाया। मनमुख जीव सारे लड़न, लड़ लड़ वक्त लँघाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि प्रभाती दए वखाया। आओ सिखो वेखो प्रभाती,

प्रभ साचा आप वखाईआ। जिस दी वेद पुराण शाशतर सिमरत गा गा थक्के साकी, सो साख्यात रूप वटाईआ। जिस दी गुर अवतार शब्द संदेसा लिखदे रहे पाती, सो पत्तर लिख लिख रिहा समझाईआ। जिस दी संधया करदे रहे आरती, दीपक दीआ आप जगाईआ। जिस दी महिमा करदी रही हिन्दी उर्दू फ़ारसी, शायर शायरां नाल मिलाईआ। जिस दी गुर अवतार करदे रहे आड़्ती, नाम वट्टा हट्ट रखाईआ। सो साहिब आया सारथी, सब दे सारथ पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत प्रभाती इक्क वखाईआ। भगत प्रभाती लैणी जाण, जानणहार जणाइंदा। जिस सतिगुर सच्चा मिले आण, सो प्रभाती सोभा पाइंदा। जिस जन जम दी चुक्के कान, लख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि प्रभाती आपणे रंग वखाइंदा। सच प्रभाती सतिगुर प्यार, प्रेम प्रेम वड्याईआ। दुतीआ दुतर देवे तार, दोए दोए वेख वखाईआ। सोवत सोया सुत्तयां दरस दीदार, उठयां करे नाम पढ़ाईआ। जग रुस्सयां मेले मेलणहार, जगत गुसिआं दए गंवाईआ। घर घुथिआं घर विच देवे वाड़, फड़ फड़ बाहों राहे पाईआ। मात गर्भ पुट्ठे टंगिआं लाए पार, मनुक्ख आपणे नाल मिलाईआ। कर्मां लुट्टयां देवे पैज संवार, कर्म कांड ना कोए वखाईआ। बिन पुच्छयां देवे दरस दीदार, पूरब लहिणा झोली पाईआ। कलयुग बूटे सुक्कयां अमृत देवे डाल, क्यारी हरी सिंच आप कराईआ। जन भगतां पिच्छे घालण घाल, आपणा तन भगतां भेंट चढ़ाईआ। फिर हल्ल कीआ सवाल, आपणा सवाल ना कोए बताईआ। भाल्यां किसे ना आवे विच भाल, भाल थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत प्रभाती नाल मिलाईआ। भगत प्रभाती होए प्रभात, परम पुरख हरि पाया। जुगां जुगन्तर साचा साक, बण सज्जण संग निभाया। इक्को दीपक इक्को ताक, इक्क महल्ल टिकाया। इक्को पती कमलापात, पति पतिवन्ता नाउँ धराया। इक्को वस्त इक्को हाट, इक्को वणज कराया। इक्को पूजा इक्को पाठ, एका रिहा पढ़ाया। इक्को तीर्थ इक्को ताट, तट किनारा इक्क रखाया। पारब्रह्म कहे मेरा वड्डा भाग, मेरयां भगतां मेरा संग निभाया। बिन भगतां ना जगे मेरा चिराग, नूर करे ना कोए रुशनाया। बिन भगतां मेरी कोए ना गाए गाथ, मेरा नाम ना किसे वड्याआ। बिन भगतां मेरी कोई ना दस्से ज़ात, जहूर मेरा ना कोए रुशनाया। एसे कारन मैं होया दास, बण सेवक सेव कमाया। कोटन कोटि उपाए पृथ्मी आकाश, बिन भगतां प्रेम ना किसे रखाया। आदि जुगादि ना होवां विनास, आपणी दिशा इक्क रखाया। जन भगतां वसां सदा पास, विछड़ कदे ना जाया। जे कोई मेरा अन्तर वेखे कर कर पाश पाश, टुक्कड़ा टुक्कड़ा भगती रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत प्रभाती आप बणाया। हरिभगत तेरी प्रभात, पारब्रह्म अख्वाईआ। ना दिवस ना रात,

घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। रुत्त रुतड़ी ना कोई ज़ात, बरस मास ना कोए रखाईआ। जैं वेखें तैं दिसे साथ, आप आपणा संग निभाईआ। आपणा करे आपे घात, जन भगतां पैज रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे मात वड्याईआ।

★ १७ मग्घर २०१८ बिक्रमी करतार कौर बलवन्त कौर बाबू पुरा जेठूवाल दरबार विच ★

हरि आपे भगत आप भगवन्त, भगती रूप आप अख्वाईआ। आपे साध आप हरि सन्त, सांतक सति आप हो जाईआ। आपे नार आपे कन्त, नर नरायण आप अख्वाईआ। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणी खेल कराईआ। आपे नाद धुंन आपे मंत, आपे रागी राग अलाईआ। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नण आप हो जाईआ। आपे रव्या लख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणा आसण लाईआ। आपे रुत्तड़ी रुत्त बसन्त, पत डाली आप महकाईआ। आपे महिमा होए अगणत, आपे लिख लिख लेख समझाईआ। आपे भुख आपे नंगत, आपे तृष्ना रिहा वधाईआ। आपे दरवेश दर बणे मंगत, आप घर घर अलख जगाईआ। आपे जेरज आपे अण्डज, उत्भुज सेत्ज आपणा खेल खिलाईआ। आपे बोध ज्ञाता पंडत, आपे हरफ़ हरफ़ रिहा सलाहीआ। आपे करे सर्ब खण्डत, खण्डा खड़ग आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ। आपे भगत आप भगवान, आपे साची खेल खलाइंदा। आपे जीव जंत जहान, आपे जुग जुग वेस वटाइंदा। आपे दाता आपे दान, देवणहारा आप अख्वाइंदा। आपे गोपी आपे काहन, मंडल रास आप रचाइंदा। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान, समुंद सागर आपे वेख वखाइंदा। आपे शब्द नाद धुंन कान, आपे राग रागनी खेल खलाइंदा। आपे शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, सुलाहकुल आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। आपे भगत आपे भाओ, निरभओ आपणा खेल खलाईआ। आपे प्रेम आपे चाओ, आपे मिल मिल खुशी मनाईआ। आपे वसे हर घट थाउँ, आपे लुक लुक मुख छुपाईआ। आपे नगर खेड़ा वसाए ग्राउँ, गृह गृह आपणा आप धराईआ। आपे पकड़णहारा बाहों, आपे धक्का रिहा लगाईआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे बालक रूप वटाईआ। आपे करे सच न्याउँ, आपे हुक्मी हुक्म सुणाईआ। आपे वसे थल अस्गाहों, जल थल आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपे भगत आपे नाम, आपणी करनी आप कराइंदा। आपे अमृत आपे जाम, भर प्याला आप प्याइंदा। आप रहीम आप राम, आपे रम रम खेल खिलाइंदा।

आपे करता आपे काम, आपे भुगत वेस वटाइंदा। आपे जुगता बण बण दए कलाम, आपे निउँ निउँ सलाम बुलाइंदा। आपे रवि ससि तेज भान, आपे नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे ज़िमी आप असमान, खाकी खाक हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धराइंदा। आपे भगत आपे रंग, रंग रंगीला आप अख्वाईआ। आपे सेज आप पलँघ, आपे जुग जुग रिहा हंढाईआ। आपे डोर आप पतंग, आपे गुडीआं रिहा चढ़ाईआ। आपे नाद आप मृदंग, सच मृदंगा आप सुणाईआ। आपणे मन्दिर आपे लँघ, हरि आपे वेख वखाईआ। आपे गीत आपे छन्द, आपे गा गा खुशी मनाईआ। आपे रस आप अनन्द, महां अनन्द आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप दृढ़ाईआ । आपे भगत आप सपूत, आपे आपणी खेल कराइंदा। आपे ताणा पेटा सूत, आपे आपणी बणत बणाइंदा। आपे सुत दुलारा पूत, आपे दाई दाया सेव कमाइंदा। आपे आदि जुगादि रहे ऊत, बिन भगतां कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। आपे भगत आपे मित्त, मित्र प्यारा आप अख्वाईआ। आपे प्रेम आपे हित्त, नित नवित आप वखाईआ। आपे काया आपे खेत, आपे अमृत मेघ बरसाईआ। आपे रुत्त बसन्ती चेत, आपे ख़िजां रूप वटाईआ। आपे वसे नेतन नेत, दूर दुराडा आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणा भेत, भेव होर ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आपे भगत आपे कार, हरि करनी आप कमाइंदा। जगत जुग सच विहार, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरख़ सोग तों वसे बाहर, चिंता दुःख ना कोए वखाइंदा। इक्को जोग अगम्म अपार, अलख निरँजण आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग लाइंदा। भगतां देवे इक्को जोग, जोगी जुगत आप जणाईआ। जन्म जन्म दा कटे रोग, रोगीआं रोग गंवाईआ। मेल मिलाए धुर संजोग, बण संजोगी वेख वखाईआ। नाम निधान चुगाए चोग, सोहँ हँसा मोती मुख रखाईआ। नाम निधाना अगाध बोध, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। कर्म कांड प्रभ आपे सोध, जन भगतां लए तराईआ। कलयुग अन्तिम पहली करे मोहत, मोह ममता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। आपे भगत आपे दास, दासी बण बण सेव कमाइंदा। आपे वसे सदा पास, घर साचे सोभा पाइंदा। आपे पुरख आप अबिनाश, अबिनाशी पद आप हो जाइंदा। आपे मंडल आपे रास, आपे सूरज चन्द नचाइंदा। आपे गुण आपे तास, सर्ब गुणवन्ता आपणा खेल खलाइंदा। आदि जुगादि ना होए निरास, निरास्ता रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां मार्ग इक्क वखाइंदा। आपे जगत आपे राह, रैहबर बण बण सेव

१२६
११

१३०

११

कमाईआ। जुग चौकड़ी मिलण दा रखे चाअ, चाओ घनेरा सच्चे माहीआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, फड़ फड़ बेड़ा आप तराईआ। कोट जन्म दे बख्शे गुनाह, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दरगाह साची देवे पनाह, चरन कँवल शरनाईआ। करे कराए सच न्याँ, साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाहीआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाईआ। निथाव्याँ देवे थाँ, निउटयां इक्को ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सालाहीआ। आपे भगत आपे गुण, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। जुग जुग पुकार रिहा सुण, जुग करता सच्चा माहीआ। लख चुरासी छाण पुण, नौ सत नौ सत वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां देवे नाद धुन, धुन आत्मक इक्क सुणाईआ। लेखा जाणे कुलो कुल, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। आपे भगत आपे दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। आपे जोत नूर निराकार, आपे पंज तत्त डेरा लाईआ। आपे नाम शब्द खुमार, आपे अमृत धार वहाईआ। आपे सांतक सति ठंडा ठार, आपे अग्न रूप वटाईआ। आपे जुग जुग लै अवतार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। आपे लख चुरसी करे ख़बरदार, बण बण सेवक सेव कमाईआ। आपे भगतां करे सच प्यार, भगवन आपणी दया कमाईआ। हरिजन मेला एका वार, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। गुर चेले सोहण बंक दुआर, दर दर खुशी मनाईआ। करे प्रकाश जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे थाउँ थाईंआ। आपे भगत आपे रूप, आपे राग रंग अल्हाईआ। आपे निरगुण सति सरूप, आपे सरगुण रूप वटाईआ। आपे हवण आपे धूप, आपे सुगंधी रिहा समाईआ। आपे वसे चारे कूट, दहि दिशा आपे फेरा पाईआ। आपे जूठ आपे झूठ, आपे सच सुच्च दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आपे भगत आपे सुख, सुख सागर आप अख्वाइंदा। आपे मानस आप मनुक्ख, मानव आपणी खेल कराइंदा। आपे दस दस मास बह लुक्क, आपणा पर्दा आपे पाइंदा। आपे निरगुण सरगुण हो के पए उठ, आपणा बल आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइंदा। आपे भगत आपे धर्म, धरनी धवल धरत वड्याईआ। आपे कर्म आपे कुकर्म, निहकर्मी आप हो जाईआ। आपे लज्जया आपे शर्म, हया आपणे अंग वखाईआ। आपे भय आपे भेव आपे भरम, आपे भयानक रूप वटाईआ। आपे जीवन आपे मरन, आपे मर मर जीव प्रगटाईआ। आपे करनी आपे करन, करता पुरख आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। आपे भगत आपे नेम, आपे साची कार कमाइंदा। आपे अग्नी आपे हेम, आपे खण्ड बह बह ध्यान लगाइंदा। आपे बानर आपे

१३०

११

बेन, आपे बह बह ख़ुशी मनाइंदा। आपे सागर आपे सैन, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। आपे भगत आपे दात, दर साचे आप वरताईआ। आपे मज़्ब आपे ज़ात, आपे शरअ वंड वंडाईआ। आपे खण्डां ब्रह्मण्डां वसे कायनात, आपे लोक परलोक रिहा समाईआ। आपे घट घट वेखे मार झात, आपे रूप रंग ना कोई वखाईआ। आपे खेल करे बहु बिध भांत, आपे जुग जुग वेस वटाईआ। आपे बैठा रहे इक्क इकांत, सच महल्ले सोभा पाईआ। आपे भगतां पुच्छे वात, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। आपे जाणे पूजा पाठ, आपे पढ़ पढ़ करे पढ़ाईआ। आपे तीर्थ आपे ताट, सर सरोवर आप अख्वाईआ। आपे पार किनारा घाट, आपे पत्तण सच्चा माहीआ। जन भगतां मुक्के वाट, आपणा पन्ध मुकाईआ। शब्द विछाउणा साची खाट, पुरख अबिनाशी सेज वछाईआ। दीपक जगे इक्क ललाट, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आपे भगत आपे रस, अनरस आपणी खेल कराइंदा। आपे पूरी करे आस, आसा निरासा हो हो मुख छुपाइंदा। आपे पवण आप स्वास, आपे अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। आपे शाहो आप शाबाश, आपे सहि सहि हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराइंदा। आपणा बल हरि जू धर, लोकमात वड्याईआ। जुग चौकड़ी जाए हर, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार सेवा कर, अन्तिम मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खलाया, आदि अनादी धार। जुग चौकड़ी वेख वखाया, कोटन कोटि जुग बीते विच संसार। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाया, शिव शंकर करे प्यार। लख चुरासी बन्धन पाया, आत्म परमात्म खेल अपार। गुर अवतार काया चोला सर्ब हंढाया, आवण जावण वारो वार। धुर फ़रमाणा ढोला इक्को गाया, नाद धुन जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे खेल अपार। जुग जुग करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आप कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, अन्त नज़र कोई ना आईआ। कलयुग वरते विच संसारा, चार कुण्ट लए अंगड़ाईआ। धूंआँधार होए अन्धयारा, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। जीव जंत रोवे ज़ारो ज़ारा, गिरयाज़ार सुणाईआ। चारों तरफ आए हारा, जित रूप ना कोई वटाईआ। हरि का मिले ना नाम अधारा, हरि की पौड़ी ना कोई चढ़ाईआ। फड़ फड़ धक्के जीव गंवारा, पढ़ पढ़ लिख्त ना कोई मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। साचा खेल श्री भगवान, आपणा आप कराइंदा। लख चुरासी मार ध्यान, जीव जंत वेख वखाइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुजान, पूरब जन्म संग निभाइंदा।

१३१
११

अठ्ठे पहर करे ध्यान, प्रभ दर्शन राह तकाइंदा। कवण मेल मिलाए आण, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा।

★ १८ मग्घर २०१८ बिक्रमी बचन सिँघ बावा सिँघ बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ★

मेल मिलाया किरपा निध, दीनन दया कमाईआ। बिन भगती कारज कीता सिद्ध, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणे मिलण दी साची बिध, हरि जू आप समझाईआ। नाता तोड़ नौ निध, अठारां सिद्ध पन्ध मुकाईआ। भगतां फड़ी साची जिद, बिन मिलयां चैन ना आईआ। इंड ब्रह्मण्ड जीओ तेरा पिण्ड, पिण्डी होर ना कोई रखाईआ। तेरा अमृत सागर सिन्ध, तेरी धार चलाईआ। तूं साहिब सदा बख्शिंद, तेरे हथ्थ वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे सच्चे शरनाईआ। सच शरनाई दे भगवान, हरिजन साचा मंग मंगाइंदा। तेरे चरन धूढ़ अशनान, अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाइंदा। तेरा दरस वड प्रधान, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। तेरा तरस वड मेहरवान, मेरा कर्म मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत एका मंग मंगाइंदा। हरिभगत मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तेरे दर ना जावां संग, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। तेरी शरन इक्क अनन्द, मेरे सज्जण सच्चे माहीआ। नित गावां तेरा छन्द, दूजा राग ना कोई अल्हाईआ। तूं मुकाउणा मेरा पन्ध, मैं तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अबिनाशी कर ध्यान, नेत्र नैण उठाया। कवण सूरबीर बलवान, जिस आपणा हुक्म चलाया। चल के आ मिल विच जहान, दो जहानां पन्ध चुकाया। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, तेरा इक्को नाम मोहे सुखाया। नेड़ ना आए पंज शैतान, शरअ बन्धन ना कोई पाया। तेरा इक्को दिसे अमान, अमाम हरि जू नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भगत इक्को आस रखाया। मेरी आस करदे पूरी, पूरन गुर अवतारा। तेरे बिनां सर्ब मजबूरी, झूठी मज़दूरी विच जहाना। एका देणा नूर नूरी, नूरो नूर नूर नुराना। आपे चल के आउणा हज़ूरी, हाज़र हज़ूर सच्चे सुल्ताना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा दाना। श्री भगवान सुण अवाज़, अवरा संग तजाया। जन भगतां रखां लाज, लोकमात फेरा पाया। इक्को देवां सच्चा दाज, वस्त अमोलक झोली पाया। दर दर करे तेरा काज, काज कर कर सेव कमाया। निरगुण रूप हो हो जावां भाज, भज्ज भज्ज आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला थाउँ थाया। हरिजन उठे कर कर विचार, आपणी

दया कमाईआ। सचखण्ड विच्चों आया बाहर, थिर घर कुण्डा लाहीआ। सुंन अगम्मी पर्दा पाड़, निरगुण रूप वटाईआ। पवण पवण हो अस्वार, अवण गवन तजाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ लताड़, विष्न ब्रह्मा शिव समझाईआ। करोड़ तेतीसा करे पुकार, गिरयाज़ार सुणाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सब नूं रिहा तजाईआ। सचखण्ड निवासी सब नूं तज, आपणा खेल कराया। लोकमात हरि आया भज्ज, निरगुण रूप वटाया। जन भगतां रखे साची लज, लाजावन्त शरमाया। कर किरपा पर्दा देवे कज्ज, नाम दुशाला हरि जू पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। भगतां खातर लोकमाती, निरगुण वेस वटाइंदा। आपे वेखे मार झाती, झाकी अवर ना कोई रखाइंदा। बन्द किवाड़ा खोल्ह ताकी, दीवा बाती आप जगाइंदा। मेल मिलावा कमलापाती, कँवल नैण आप मटकाइंदा। नाम निधाना साची दाती, अक्खर अक्खर झोली पाइंदा। धुरदरगाही साची दाती, सो पुरख निरँजण आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दुआरे सेव कमाइंदा। सेवक बणया हरि जू ठाकर, आपणा रूप वटाईआ। लेखा जाणे करीम कादर, कुदरत रूप समाईआ। नाम निधाना अक्खर हजारा दरूद दादर, सबक साबत आप जणाईआ। दो जहानां देवे आदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां होए सहाई, सहिज सहिज सुखदाया। लोकमात करे कुड़माई, आपणा बन्धन पाया। घर साचे वज्जे वधाई, मिल मिल सखीआं मंगल गाया। वर मिल्या इक्को माही, सेज झूठी दए तजाया। जन्म जन्म दी मेटे छाही, छहबर आपणा नाम लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां संग आप समाया। भगतां संग रमिआ हरि राम, सेवक सेव कमाईआ। लोकमात बणया अन्त गुलाम, बण सेवक सेव कमाईआ। आपे देवे सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर रूप वटाईआ। आपे बोल अलैकम सलाम, असल आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां एका वसल दए समझाईआ। एका वसल इक्क वजूद, वाहिद आपणा खेल कराइंदा। एका बण सच महबूब, सच मुहब्बत इक्क कमाइंदा। एका देवे आपणा सच सबूत, साबत सूरत इक्क जणाइंदा। एका जाणे सच हदूद, हद्द एका एक वंड वंडाइंदा। एका भगतां आपणे अंदर कीता महिदूद, दूसर हथ्थ किसे ना आइंदा। एका लहिणा देवे असल नाल सूद, सूद लाल सूद मिलाइंदा। निउँ निउँ सलाम करे याकूब, ऐली शाह सीस झुकाइंदा। बेऐब नाम खुदाई महवबूद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाइंदा। भगतां रंग रिहा वखाल, वक्खरी धार चलाईआ। किरपा कर दीन दयाल, दीनन गले लगाईआ। चरन कँवल वखाए सच्ची धर्मसाल, बंक

१३३
११

दुआर सोभा पाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, हरि मुर्शद रूप वटाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे एका हरि, भगवान मेल मिलाया। जन भगतां देवे इक्को वर, एका घर वरताया। आदि जुगादी चुक्के डर, जम का भउ चुकाया। दरश दखाए अग्गे खड़, निरगुण सरगुण होए सहाया। सरगुण निरगुण शब्दी पल्लू फड़, फड़ फड़ पल्लू अंग बंधाया। डूँघी कंदर आपे वड़, घर घर वेख वखाया। साचे पौड़े आपे चढ़, चढ़ हरिजन पन्ध मुकाया। आपे तोड़ हँकारी गढ़, गढ़ साचा राह इक्क वखाया। हरिजन मेला आपणे घर, घर घर विच लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत दए वड्याआ। हरिभगत सद वड्याइंदा, सज्जण सतिगुर मीत। भगतां अन्तिम वेख वखाइंदा, निरगुण रूप बैठ अतीत। भाण्डे भरम भउ भनाइंदा, अचरज चलाई रीत। मन्दिर मस्जिद मट्ठ ना कोई वखाइंदा, हरि चरन सच्ची प्रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन काया करे ठंडी सीत। हरिजन काया पाए ठंड, सांतक सति वरताया। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, अनन्द मंगल गुण गाया। रसना जिह्वा गाए छन्द, साचा ढोला आप सुणाया। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत दए वड्याआ।

१३४ १३४

११ ११

सारे खण्ड हरि दी कार, करता कारे लाईआ। राह विच बिठाए पहरेदार, साची सेव समझाईआ। जो जन आए मेरे दुआर, तिस करनी नाम पढ़ाईआ। रहिणी बहणी अपर अपार, कहिणी साची देण समझाईआ। लज्जया शर्म अपर अपार, नेत्र नैण इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। चार कुण्ट करन पुकार, चार जुग जगत सुणाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क दरबार, सचखण्ड बैठा आप लगाईआ। धुर फ़रमाणा दए अपार, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। जिस जन हरि के दुआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सिख्या करे पढ़ाईआ। चारे कुण्ट बोल जैकार, जै जै नाद वजाईआ। निउँ निउँ सीस करन निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। वाह वाह साहिब मेरे दातार, तेरे दर तेरी वड्याईआ। असीं बह बह गए हार, साडा पन्ध ना कोई मुकाईआ। कबीर जुलाहा दे के गया सहार, एका गुण समझाईआ। तुहाढ्ढी करनी देवे आधार, पिछला लेखा दए मुकाईआ। निरगुण निराकार आवे विच संसार, राह खेड़े वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां करे इक्क प्यार, साची रीती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग अन्तिम आए हरि, निरगुण रूप वटाया।

भगत भगवन्त लए फड़, आपणी दया कमाया। इक्क फड़ाए साचा लड़, पल्लू नाल बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग अन्तिम आए हरि, निरगुण रूप वटाया। भगत भगवन्त लए फड़, आपणी दया कमाया। इक्क फड़ाए साचा लड़, पल्लू नाल बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस वटाया। कलयुग अन्तिम आए निरँकार, निरगुण वेस वटाइंदा। इक्को नाम बोल जैकार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त करे प्यार, भगतां आप जगाइंदा। फड़ फड़ लै जाए आपणे नाल, राह विच ना कोई अटकाइंदा। आपणे दर दए बहाल, घर साचा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका रंग वखाइंदा। भगत वसे भगवान पास, भावी भय ना कोई जणाइंदा। इक्क दूजे दी मिल जाए रास, रासी होर ना कोई वखाइंदा। इक्क दूजे दी पूरी करन आस, निरास कोई नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन पढ़यां बिन गायां बिन वेखयां आपणा दरस दखाइंदा। हरिभगत की पढ़े पढ़ाई, साची विद्या ना कोए पढ़ाईआ। इक्को हरि होई कुड़माई, दूजा साक ना कोई बणाईआ। अठ्ठे पहर वज्जे वधाई, ढोल मृदंग रहे जस गाईआ। जिस दा हरि जू बणयां नैण नाई, घर घर आ आ सेव कमाईआ। सो भगत सेज सुखदाई, जिस सुख अन्तर रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल अटल करे रुशनाईआ।

१३५
११

★ आत्मा सिँघ दे नवित ★

जगत वलों गया , नाता जगत तुड़ाया। अग्गों मिल्या हरि जू हरि, आपणा दरस कराया। बहत्तरां भगतां विच्चों दिता पहला वर, सिर तेरे हथ्थ टिकाया। छब्बी पोह वखाउणा घर, भगत दुआरा जो बणाया। एथे ओथे चुक्के डर, डर कोई रहिण ना पाया। अन्त बंधाए आपणे लड़, पल्लू नाम बंधाया। साचे पौड़े जाणा चढ़, पुरख अबिनाशी लए चढ़ाया। सचखण्ड दुआरे जाणा वड़, सिँघ पाल बैठा राह तकाया। आ वीर मेरे नाल रल, रल मिल इक्को हरि मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म मरन रिहा कटाया। जन्म मरन हथ्थ परमात्मा, पुरख पुरख वड्याईआ। लेखा जाणे सिँघ आत्मा, आत्म सिँघ विच समाईआ। वेस वटाया गुपत बातना, ज़ाहर दए वड्याईआ। भगत भगवन्त आया राखना, रक्षक बण बण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण मरन मरन जीवण आपणे हथ्थ रखाईआ। लाड़ी मौत गई हार, काल हुक्म सुणाया। सतिगुर पूरे दिता तार, मुर्दा फिर उठाया। चरन कँवल कराए

प्यार, प्यार प्यार नाल रलाया। बहत्तरां विच्चों छब्बी पोह तों पहले जन्म कोई ना जाए हार, मानस देह ना कोई तजाया। आपणा करे कराए सच विहार, फिर अगला राह वखाया। अग्गों मिले आप निरँकार, निरगुण आपणा रूप वटाया। जन भगतां लए उठाल, साची गोद बहाया। साहिब साहिब सदा सदा दयाल, दीनन आपणे गले लगाया। गुरमुख कदे ना खाए काल, जमकाल नेड़ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म विच बदलाया।

★ १६ मग्घर २०१८ बिक्रमी किशन सिँघ दे नवित पिण्ड अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ★

फड़या दामन जाए छुट्ट, छुट्टी जगत वलों दवाईआ। सचखण्ड दा बूटा पुट्ट, लोकमात लहराईआ। साहिब सतिगुर आपे तुट्ठ, पूरन बूझ बुझाईआ। गंगा कंगण जो खादा लुट्ट, लुट्टी वस्त लए कढ्ढाईआ। रविदास चम्मयारा आसण पुट्ट, सच ख़ज़ाना दए वखाईआ। शाह पातशाह रहे कुट्ट, खलड़ी खल्ल लुहाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली बुत्त, रो रो दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पल्लू नाम फड़ाईआ। साचा पल्लू फड़या लड़, बन्धन एका इक्को पाईआ। ठग्ग चोर यार चुक्के डर, भय भयानक नज़र ना आईआ। अग्नी गया सड़, हवन कुण्ड तपाईआ। जन्म जन्म लोकमात गया मर, मर मर जन्म विच बदलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़, पढ़ पढ़ आपणा वक्त लँघाईआ। आवण जावण खेल कर, जून अजून वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दामन इक्क वखाईआ। साचा दामन दामनगीर, दर्दी दर्द वंडाइंदा। चोरां यारां ठग्गां कटे भीड़, औझड़ राह पन्ध मुकाइंदा। नाम अनडिठड़ा मार ज़ंजीर, आपणा बन्धन बन्द पुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दामन आप फड़ाइंदा। दामन फड़या कवण जोर, ज़ोरू नाल रलाईआ। पूरब जामा ठग्ग चोर, नौ नौ जन्म रिहा ध्याईआ। मात गर्भ डर डर अन्ध घोर, धूणी अग्न तपाईआ। करे पुकार मेरी तोहे लोड़, तुध बिन अवर ना कोई सहाईआ। मैं पतंगा तूं साची डोर, तुध बिन अवर ना कोई उडाईआ। मैं ठग्ग निमाणा झूठा चोर, चोरी तेरा कंगन कराईआ। ग़रीबां नाल ना रख्या खोर, निथाव्याँ दिती ना कोई सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दामन वेख वखाईआ। ना कोई कीता कूड़ विहारा, कूड़ी क्रिया ना कोई कमाईआ। तेरा कंगन लुटया दिन दिहाढ़ा, आप आपणा बल रखाईआ। गंगा गंगोतरी करया प्यारा, चम्मयारा रिहा सुणाईआ। ओस इक्क कसीरा दिता कर न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ। चम्मयार कसीरा दिता हथ्थ, बह आपणा आसण लाया। मैं गंगा माता दिता दस्स, अग्गे

१३७
११

भेंट चढ़ाया। उस अग्गों कढ्ढुया आपणा हथ्थ, समरथ खेल कराया। नक्क वेख सुहाग नथ्थ, सोहणा जोबन मैं तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताया। गंगा हथ्थ दिता उलार, जोबन आपणा आप प्रगटाईआ। मेरे भगत दा इक्क प्यार, मेरे तन समाईआ। मेरे तन दा सच शृंगार, भगत रंग वखाईआ। तूं विचोला बणया विच संसार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। बनारस थेटा पाउणी सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। ब्रह्मण कहे सुण गंगा मात, एका वार सुणाया। चम्मयार दिती कसीरा दात, सो तेरी झोली पाया। मैं दूर दुराडी कट के आया वाट, तेरा पन्ध मुकाया। मेरा पूरा करे कवण घाट, पिच्छे पुत्तर धीआं रिहा तरसाया। मैं मंगा तेरी नथ्थ दा इक्क बलाक, दर साचा मंग मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा स्वांग आप वरताया। मेरे बलाक मेरी नथ्थ, हथ्थ किसे ना आईआ। आदि जुगादि मैं भगतां वस, आदि शक्ति रूप वटाईआ। तूं आपणी इच्छया आया दस्स, जगत वासना नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरी वस्त तेरी झोली पाईआ। कवण वस्त मेरी, मोहे देणा बतलाईआ। जगत मात ना कर डेरी, ढह प्या शरनाईआ। रविदास चम्मयारे कौडी इक्क बथेरी, कंगन कम्म किसे ना आईआ। ढोए ढोर चमढ़ी रिहा उधेड़ी, पाणा गंढ्ढुण सेव कमाईआ। उस दी गल्ल दस्सां केहड़ी केहड़ी, मूँह चमड़े नाल छुहाईआ। दन्दां नाल खिच्चे डोरी, खिच्च खिच्च तोपा लाईआ। मैं वारने गया कर के आया ढेरी, लहिणा देणा हिसाब मुकाईआ। मैं आपणे पिच्छे मारी फेरी, रविदास पिच्छे ना पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। गंगा कहे तूं दस्सया सच्च, मैं तेरा शुकर मनाया। धन्न भाग मेरी पूरी करी आस, भगत कसीरा मेरी झोली पाया। मैं जुग जुग रखां आपणे पास, तन आपणे नाल छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा धन्दा आप वखाया। भगत कसीरा तेरे हथ्थ, तेरी झोली दिती भराईआ। कंगण भगत वास्ते दिता रख, मेरे हथ्थ फड़ाईआ। मैं मंगया इक्क बलाक, तूं ना ना कर कर नैण शरमाईआ। रविदास चुमारा कवण साक, चमरेटा कुल नीच अख्वाईआ। मैं ब्रह्मण सच्चा पाकी पाक, पवित मेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। चम्मयार चम्मढ़ी मेरा चम्म, चमक रंग ना कोए वखाईआ। मेरा कहिणा रिहा मन्न, मन्न मन्न खुशी मनाईआ। दिवस रैण कहे धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। करे वसेरा छप्पर छन्न, महल अटल ना आस रखाईआ। पाणा गंढे घड़ी घड़ी पल पल, आपणी टुट्टी गंढु आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वरताईआ। आपणा खेल

करे करतार, एका गुण जणाया। कंगण लै जा कर प्यार, रविदास चम्मयार रिहा तकाया। जुग जुग दा मेरा उधार, मैं अन्त रिहा मुकाया। बण विचोला विच संसार, गंगा मात एह समझाया। पर्दा ओहला ना कोए विचार, साचा ढोला एका गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कंगण हथ्थ फड़ाया। कंगण फड़या हथ्थ, आपणे दामन नाल बंधाईआ। गंगा माता दिता दस्स, तेरी वस्त आपणी झोली पाईआ। रविदास कोल ना जावां नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराईआ। गंगा कहे निरगुण धार, एका शब्द जणाईआ। पंडत भुल्ल ना बण गंवार, ब्रह्म रूप ना कोए छुपाईआ। अवगुण कर ना विच संसार, गुण आपणा मूल चुकाईआ। माणस जन्म जन्म ना हार, वेला गया हथ्थ ना आईआ। मेरा कर्जा देणा उतार, रविदास चुमारे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा सुणाईआ। पंडत कहे हथ्थ आया कंगण, आपणा बल जणाईआ। तेरे कोलों ना आया मंगण, तूं आपे हथ्थ फड़ाईआ। कंगन दे ना होई नगण, घाटा कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ । गंगा कहे सुण लै गल्ल, ब्रह्मण ब्रह्मणी जाया। भगत नाल ना करना वल छल, छल हरि जू कदे ना भाया। अन्तिम देणा पए फल, पुरख अबिनाशी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा जणाया। सुणया हुक्म तेरा फ़रमाणा, आपणा कन्न लगाईआ। मैं लुट्टया वड्डा घराणा, लुट्ट मेरे हथ्थ आईआ। दूर दुराडा मेरा टिकाणा, गंगा मुड़ के फेर ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणा वेस वखाईआ। इक्को कंगण ल्या लुट्ट, लुट्टया वड्डा घर बार। हथ्थ विच्चों ना जाए छुट्ट, मैं मारी पहली मार। माणस जन्म सुहाए रुत्त, दुःख आवे ना दूजी वार। सुख भोगण धीआं पुत्त, मेरा चले सच रुज़गार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। कंगण चोर मारया डाका, गंगा मात रही कुरलाईआ। उधर रविदास तक्के वाटां, कवण वेला संदेशा देवे मेरी माईआ। ब्रह्मण पाया दोहां घाटा, आपणा बल वखाईआ। आपणे गृह आया नाठा, मिशराणी लए जगाईआ। आ वेख गंगा माता दिता अमृत बाटा, साचा कंगण हथ्थ वखाईआ। जन्म जन्म दा पूरा कीता घाटा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लोकी कट के आउँदे वाटां, मैं खट्टी खट्ट के आया तेरा माहीआ। तूं डूँग्घा खोद खाता, इके वार दयां भराईआ। तेरा मन्दिर सोहे हाता, हद्द साची दयां बणाईआ। तूं ब्रह्मणी उच्ची जाता, मैं ब्रह्मण रूप वटाईआ। मैं वेद शास्त्र सिमरत पढ़ पढ़ सुणावां गाथा, तूं गंगा माई ध्याईआ। दोहां बणया साचा साथा, घर साचे खुशी वखाईआ। आ रल मिल गाईए इक्को पाठा, वाह वाह वड्डी तेरी वड्याईआ। साडे

पिच्छे खोल्या हाटा, रविदास चम्मयार नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वखाईआ। पंडत पुच्छे घर मिशराणी, मिसर जी हाल सुणाओ। पिछली दस्सो सच कहाणी, कवण बिध एह वस्तू पाओ। पंडत कहे मैं नित उठ पढ़दा बाणी, प्रभ मिल्या अगम्म अथाहो। रविदास चम्मयारा पाणा गंढे कूने पा पाणी, मैनूं लावण लग्गा दाओ। मैं जोबनवन्त गंगा वेख्या सच्चा हाणी, मैनूं वेख चढ़या चाओ। अग्गों कहे मैं बणां तेरी राणी, तूं फड़ ला मेरी बाहों। मैं तैथों डरदयां किहा मेरे घर वसे मिशराणी, अग्गे तैनूं मिले ना थाउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहो। मिशराणी कहे दस्स प्रीतम प्यारे, गंगा कवण रूप वटाईआ। गंगा वहे सदा जल धारे, रूप रेख ना कोए वखाईआ। कोटन कोटि जीव जा जा करन निमस्कारे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कोटन कोटि सूरया देव छट्टे रहे मारे, चुलीआं नाल जल चढ़ाईआ। कोटन कोटि करन हाढ़े, साध सन्त धूंणीआँ ताईआ। कोटन कोटि खुबे गारे, ना कोई सके बाहर कढ्ढाईआ। कोटन कोटी बण बण बैठे लाड़े, गंगा माई ना किसे प्रनाईआ। तूं दस्स किस बिध मेल मिल्या तेरा किनारे, तट कवण मिली वड्याईआ। कवण रूप करे शृंगारे, कवण नैण नैण मिलाईआ। कवण रसना वाजां मारे, कवण बत्ती दन्द सलाहीआ। कवण कहे मेरे कन्त प्यारे, आ मिल साचे माहीआ । मैं तेरे पंडत जी कम्म जाणा सारे, भुल्ल रहे ना राईआ। तूं घर घर ज़जमानां दे पाउँदा रिहा छुहारे, कोटी कोट सगन लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण मेहर नज़र तेरे उत्ते पाईआ। की दस्सां तैनूं सच्च, मैं सच्चा सच सुणाइंदा। मैं पन्ध मुकाया नस्स नस्स, इक्को आस रखाइंदा। मैनूं गंगा मिले हस्स हस्स, दर इक्को ख़ुशी रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। पंडत जी मैं वेखां तेरा रंग, रंग तेरा ना मोहे भाईआ। जगत समाजे जोड़या संग, इक्क दूजा बन्धन दिता पाईआ। तूं कहें गंगा मंगे तेरा कारज अनन्द, तेरा कारज ना मोहे भाईआ। तूं झूठी पाउँदा डण्ड, डण्डावत तेरी नज़र ना आईआ। एथे बच्चिआं फुलीआं रिहा वंड, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। कवण बिध गंगा माता गई मन्न, कंगण तेरे हथ्थ फड़ाईआ। फड़ कंगण तूं किस बिध करया धन्न धन्न, रसना जिह्वा गाईआ। मैं जाणा गंगा नेत्र अन्न्, जिन तेरी सार ना पाईआ। मैं तेरी नार चाहुंदी तैनूं देवां डंन, जो मेरा रिहा तकाईआ। इक्को सुण लै ला के कन्न, मैं साची रही सुणाईआ। एह नहीं साडे घर दा धन्न, राजयां घर सोभा पाईआ। किरपन दी इक्को मन्न, निर्धन दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। पंडत जी जाओ पाओ मुल्ल, कीमत कवण चुकाईआ । जगत सराफ़ दुआरा गया खुल्, कसवट्टी हथ्थ उठाईआ। दर दर फिरे

माया ममता गया भुल्ल, तोले मासे तोल तुलाईआ। नाम कंगण जाए रुल, मूर्ख थाएँ ना कोए टिकाईआ। अग्गों सारे कहिन्दे बोल, दोए जोड़ करन शरनाईआ। साडे कोल ना कोई तोल, जो इस तोला दए बणाईआ। राज राजान दुवारा फोल, तेरा हिसाब दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वल छल आपणी धार चलाईआ। ब्रह्मण गया राज दरबार, दर अग्गे सीस झुकाइंदा। दोए जोड़ करे निमस्कार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। तूं शाह पातशाह सच्ची सरकार, तेरा दर मोहे भाइंदा। सौदागर बण सेवा करां अपर अपार, साचा कंगण भेंट चढ़ाइंदा। तुसी कीमत पाउणी इक्को वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खेल कराइंदा। राजन वेख होया दयाल, कंगण शकंगण रूप वटाईआ। कोटन कोटि हीरे लाल, पोह ना सकण राईआ। ना कोई परखे बण दलाल, जगत दलाली ना कोए कमाईआ। ना कोई लपेटे विच रुमाल, नूर नूर ना कोए छुपाईआ। सारी मजलस होई खुशहाल, खुशी खुशी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना पूर कराईआ। जगत तृष्ना होए पूर, धन्न दौलत झोली पाया। तेरा कंगण होया मन्जूर, मज़दूरी दए चुकाया। तूं बड़ा सूरा सूरबीर, बीरता तेरी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। साचा कंगण ल्या रख, कीमत आप चुकाईआ। आपणे कोल रख्या वक्ख, वक्खरी धार वखाईआ। घर आ दिता दस्स, मोहणी रिहा समझाईआ। इस विच ना कोई शक्क, शकाइत होर ना कोए लगाईआ। दरगाह साची दा साचा हक़, हक़ तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं पाउणा आपणे हथ्थ, लाल मैहन्दी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। फड़या कंगण नेत्र वेख, मन होया चाओ घनेरा। उस वणजारे लवां पेख, जिस नगरी पाया फेरा। मैं इस दा लवां भेत, इस घड़नहारा केहड़ा। कवण राजन नाल करे हेत, आपणा बन्ने बेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे हेरा फेरा। राणी कहे सुण राजा, तेरी रइयत वड्डी वड्याईआ। जिस ने करया तेरा काजा, तेरे नाल खुशी मनाईआ। मैं नेत्र पेखां जिस ने साजण साजा, कंगण घाड़त ल्या घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह वेख वखाईआ। मैं वेखां कवण मज़दूर, मज़दूरी रिहा कमाईआ। जो चल के आया हज़ूर, साची वस्त भेंट चढ़ाईआ। एहदा नूर वड्डा कोहतूर, नुराना नूर नूर रुशनाईआ। मैं उस दा ख़ज़ाना करां भरपूर, जो जोड़ी दए मिलाईआ। मैं दरस करां ज़रूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा आप मुकाईआ। राणी कहे सुण साचे भूप, तेरी भूमी मिले वड्याईआ। तेरा हुक्म रहे चार कूट, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। मैं उस दा वेखणा रूप, जो कंगण रिहा घड़ाईआ। मैं आपणा बणावां

पूत, जे दूजा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा पर्दा आप चुकाईआ। राजा कहे सुण ध्यान, ध्यान नाल मिलाईआ। इक्को इक्क कर परवान, साची वस्त तेरे हथ्थ फड़ाईआ। दूजा दिसे ना कोए निशान, घाड़त घड़ ना कोए वखाईआ। मैं तेरा रख्या वड्डा माण, आपणे तन ना मूल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाईआ। राणी कहे मेरा कोई ना वस, मेरे मन चैन ना आईआ। जिन्ना चिर ना देवें दस्स, मोहे निंद्रा मूल ना भाईआ। तेरे नाल ना बोलां हस्स, आपणी करवट लवां बदलाईआ। जे गुसे होवें तां जावां नट्ठ, तेरी माटी ख़ाक मिलाईआ। जे अग्गों करें हठ, बण वज़ीर करां लड़ाईआ। जिंना चिर ना देवें दस्स, मैं बणी रहां सौदाईआ। मेरी पूरी होवे आस, मेरी बहीआ रही कुरलाईआ। मैं दोहां बाहवां ना करां निरास, इक्को रंग वखाईआ। सज्जा खब्बा मेरा हाथ, पंज उँगलां मिली वड्याईआ। इक्क दूजे दा रखण साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। जे मैं राणी वसां ना तेरे पास, तूं राजा बण मेरे कम्म किसे ना आईआ। मैनूं मेरयां दोहां हथ्थां दा सच्चा साथ, घर मन्दिर बैठे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। राजन अन्तर कर विचार, सुध बुध भुलाईआ । इक्क लवावां सच दरबार, सब नूं दयां सुणाईआ। जो कंगण ल्यावे बण सुन्यार, कीमत दयां मुकाईआ।
१४१ मेरा घर दा बणया रहे शृंगार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। मेरी रुठ ना जाए नार, दुहागण रूप ना मात वटाईआ। मेरे १४१
११ सीस ना रहे दस्तार, मेरा नेत्र नैण शरमाईआ। वज़ीर अमीर सारे ल्याओ भाल, जो कंगण दए लिआईआ। कोए ना छड्डो शाह कंगाल, घर घर फेरा पाईआ। अग्गों कहे सनाम ब्रह्मण बाल, पिछली गल्ल समझाईआ। जो दे के गया विच रुमाल, तिस ब्रह्मण लओ मंगाईआ। उह हल्ल करे सवाल, दूजा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मृदंग वजाईआ। राजन किहा वाह वाह, वाह वाह खुशी मनाया। जाओ पकड़ो बांह, बाहों पकड़ दर मंगाया। जे अग्गों करे नाह, फड़ फड़ दयो सज़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जुगत वेख वखाया। गंगा माई फड़ाया गंगू ब्रह्मण, गंगा राम सार ना आईआ। रविदास विचोला बणाया ज़ामन, ज़ामनी अन्त ना तोड़ निभाईआ । मारी मार कामनी कामन, काम हिरस इक्क वखाईआ। हरि जू फड़या ना सच्चा दामन, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। नेत्र रोवे पंडत ब्रह्मण, दर दरबार बैठा शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब सज़ाईआ। जगत ब्रह्मण कर विचार, राजन आख सुणाइंदा। राणी करे गिरयाज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। कंगण दूजा दे दे एका वार, होर मंग ना कोए मंगाइंदा। धन दयां अतुट भण्डार, तेरा घर भराइंदा। मुख मोड़ जे जाए हार, तन सीस ११

कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणा झोली पाइंदा। पंडत ब्रह्मण गया डर, आपणा आप वेख वखाईआ। राज राजान ल्या फड़, ना सके कोए छुडाईआ। बिन मौतों जाणा मर, मौत रही डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण माण वड्याईआ। ब्रह्मण डरया कर ख्याल, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। मेरे सिर ते कूके काल, काल नगारा सीस वजाइंदा। मेरा हल्ल ना होए सवाल, सवाली बण बण झोली डाहइंदा। कोए ना बणे सच दलाल, जगत दलाली ना कोए कमाइंदा। बिन छुरीउँ होया हलाल, हलवा ख़ीर ना कोए पकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मी हुक्म खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। ब्रह्मण दिसे ना कोए किनारा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा, नैण नैण नैण शरमाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारा, धूढ़ी ख़ाक मस्तक लाईआ। मैं मूर्ख मुग्ध बण गंवारा, आपणी पति लई गंवाईआ। दस्सां सच इक्क विहारा, पिछला भेव रिहा खुल्हाईआ। बनारस बैठा रविदास चम्मयारा, पाणे गंढे सेव कमाईआ। ओन कसीरा दिता इक्को वारा, मैं गंगा भेंट चढ़ाईआ। गंगा माता कीता सच विहारा, हथ्थ शकंगण दए फड़ाईआ। जा के देणा रविदास चुमारा, एका वार सुणाईआ। मैं लै के आया तेरे दुआरा, हरि का भेव ना पाईआ। बिन रविदास ना करे कोई छुटकारा, ना कोई कंगण दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां दए वड्याईआ। राजा कहे कवण चम्मयार, रविदास नाउँ धराइंदा। कवण कूट करे प्यार, कवण धाम डेरा लाइंदा। मैं चल के करां दीदार, नेत्र दर्शन पाइंदा। मेरा कारज दए सुवार, दुःख सुख विच बदलाइंदा। मैं डण्डौत करां निमस्कार, चरनी सीस टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप वखाइंदा। पंडत कहे मेरे नाल चल, एका चलत वखाया। भगत दुआरा लईए मल्ल, आपणा पन्ध मुकाया। ढोरां लौंहदा वेखीए खल्ल, आपणी हथ्थीं सेव कमाया। हरि जू भुल्ले ना घड़ी पल, अठ्ठे पहर रिहा ध्याया। सृष्ट सबाई कर कर वल छल, आपणा आप रिहा छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगती मार्ग एका लाया। आए चल भगत दुआर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, शाह पातशाह रहे सलाहीआ। दर दरवेश बणे भिखार, झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिध नाता जोड़ जुड़ाईआ। रविदास अग्गों प्या हस्स, हँस मुख सलाहया। मैं निमाणा मेरा कोई ना चले वस, राज राजाना सीस झुकाया। मेरी सेवा दयो दस्स, जे कोई मरया ढोर लवां उठाया। चरन दुआरे गया ढठ्ठ, गल्ल विच पल्लू पाया। राजन मेरी रखीं पत, मैं तेरी भेंट कुच्छ कर ना सक्या राया। मैं चार पहर अंदर पंज पैसे लवां वट्ट, आपणे

बच्चिआं झट्ट लँघाया। जे कोई पैसा रहि जाए घट्ट, किसे कोल मंगण कदे ना जाया। मैं सौदा लवां इक्को हट्ट, बण वणजारा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां संग आप रखाया। ऐ राजन मैं जगत कंगाल, कंगाली मेरे मन विच भाईआ। जगत कंगाली बण दलाल, मेरा संग निभाईआ। मेरा सौदा हक़ हलाल, दूजी वस्त ना कोई उठाईआ। मैं तेरी सेवा लवां घाल, आपणी हथ्थीं तेरे चरनां दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ख़िमा ग़रीबी सन्तां भगतां विच टिकाईआ। ग़रीबी वेख राजन राज, आपणा माण तजाया। सिर तों लाह के आपणा ताज, चरनां विच रखाया। तेरे पाटे चीथड़े रखण मेरी लाज, लाजावन्त होए शरमाया। तूं करना साडा काज, दर तेरे फेरा पाया। तूं मन्नदा गुरू महाराज, मैं तैनूं गुरू मन्नाया। मेरा टुट्टदा जाए साक, मेरी नारी दए दुहाया। मेरी सुंञी दिसे खाट, आसण कोई ना सोभा पाया। मैं कट के आया वाट, तेरी ओट तकाया। मेरा पूरा कर दे घाट, तूं देवणहार सबाया। मेरा ख़ाली भरदे खात, खाता आपणे दे वखाया। इक्क वार वेख मार झात, मैं राजन तेरे दर ते सीस झुकाया। मेरा टुट्टदा जाए साथ, मेरी नारी दे मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाया। रविदास कहे सुण राजन शाह, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। मैं तप्पड़ फूड़ी बैठा विछा, आपणी आर हथ्थ उठाईआ। जुत्ते गंढां बण मलाह, पतन डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा इक्क रखाईआ। मेरी सेवा टुट्टी गंढां, टुट्टे जुतिआं प्रीत लगाईआ। दिवस रैण मंग इक्को मंगां, प्रभ तेरी शरन शरनाईआ। तेरे भगतां चरन धूढ़ी तन आपणा रंगां, रंग रंगीला रंग चढ़ाईआ। इक्क ब्रह्मण आया बनारस संगा, आपणा संग निभाईआ। मैं इक्क कसीरा कर के दिता नंगा, कौडी रूप वटाईआ। भेंटा देणा जा के गंगा, मेरी ख़ुशी होवे माईआ। लोकां वास्ते मैं माढ़ा बन्दा, तैनूं कबूल करे मेरा माहीआ। जे मैं चल के जावां मुका के पैंडा, पिच्छे धीआं पुत्तर रहे कुरलाईआ। मेरा साहिब दयाल दूर दुराडिआं बैठयां सुणदा, जो आपणी रहे सुणाईआ। लेखा जाणे गुण अवगुण दा, भेव ना कोई लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ। गंगा राम मार के धाह, धरनी नीर वहाइंदा। मेरे मस्तक लग्गी छाह, लग्गी छाह ना कोई मिटाइंदा। मैं भुलया तेरा राह, तेरी ओट ना कोई तकाइंदा। मैं तेरा कंगण ल्या लुका, राजन हथ्थ फड़ाइंदा। राजण राणी आंदी व्याह, प्रेम प्यार दरसाइंदा। तिस हथ्थीं दिता पा, आपणी ख़ुशी मनाइंदा। अग्गों कर गई ना, इक्क जोड़ा मोहे भाइंदा। जिन्ना चिर ना लएं मिला, साचा सुख नज़र कोए ना आइंदा। मैनूं फड़ के ल्या बुला, जलाद ख़ंज़र हथ्थ उठाइंदा। मैं डर के तेरा राह दिता बता, चल दुआरे तेरे आइंदा। मेरे पिछले बख़्श गुनाह,

अग्गे एका मंग मंगाइंदा। मैनूं उस दा पल्लू देणा फड़ा, जो पल्लू तेरे नाल बंधाइंदा। राजन पूरी आस देणी करा, निरासा दर ना कोई जणाइंदा। रविदास चम्मयार दए सलाह, दोहां इक्को गुण वखाइंदा। मेरी तपड़ी फूड़ी पल्लू देओ उठा, साची सेव समझाइंदा। थल्ले गंगा वगे बेपरवाह, कोटन कोटि कंगण विच रलाइंदा। जेहड़ा मिलदा लओ मिला, दूजे आपणे हेठ दबाइंदा। आपणी हथ्थीं किरत कमा, आपणे घर घर बह बह खाइंदा। गंगा राम दए समझा, एका नाम दृढ़ाइंदा। अग्गे मार्ग देवे पा, आपणे नाल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आप वधाइंदा। रविदास फड़ाया पंडत दामन, दामनगीर इक्क अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम होवां जामन, ज़ामनी पूर कराईआ। रैण अन्धेरी मेट शामन, साचा चन्द चढ़ाईआ। करे प्रकाश कोटन भानन, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। जगत नाता तोड़ अभिमानन, माण दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दामन इक्क वखाईआ। दामनगीर बण चम्मयार, चोआ चन्दन इक्क वखाइंदा। तेरा लेखा विच संसार, लिख लिख पाती आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम होए आधार, अन्ध अन्धेर ना फेरा पाइंदा। पुरख अबिनाशी पावे सार, जम की फाँसी फंद कटाइंदा। पंडत कांशी गया हार, जगत विद्या जगत रुढ़ाइंदा। मन उदासी होई छार, शाही मस्तक ना कोई धुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धार धार नाल मिलाइंदा। कहे रविदास हौसला रख, हौली हौली समझाईआ। कलयुग अन्तिम करे साडा पक्ख, दोहां लए मिलाईआ। मेरा तेरा लहिणा चुकाए तेरी कुल्ली कक्ख, घर तेरे फेरा पाईआ। नौ जन्म मात गर्भ, फिर फिर जन्म दवाईआ। अन्तिम कल हो प्रगट, प्रभ आपणे नाल मिलाईआ। जन्म जन्म दा मेटे फट्ट, दूई दुरमति दए गंवाईआ। आपे चुक्के आपणे हथ्थ, साची गोदी लए बहाईआ। गंगा माता बुलाक जे ना दिता नथ्थ, अन्तिम आपणी हथ्थीं नथ्थ सुहाग दए तुड़ाईआ। त्रबैणी नैणी आए नट्ठ, रविदास चम्मयारा नाल मिलाईआ। आपे बह के साचे घाट, आपणा खेल दए वखाईआ। रविदास धोवे चरन नाथ, पुरख अबिनाशी आप धुआईआ। गंगा राणी मंगे साथ, भगतां अग्गे झोली डाहीआ। प्रभ जी बणया नटुआ नाट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। मैं तक्कदी रही अग्गे घाट, आपणा नैण उठाईआ। मैं भुल्ली प्रभ दे भगतां साथ, मेरे उत्ते नज़र ना पाईआ। मैं राह तक्कां कमलापात, कमली होए दयां दुहाईआ। मेरी पुच्छे आ के वात, वातावरन दयां सुणाईआ। ओह इक्की सिखां नाल बन्न के बैठा नात, ओह नाता गया तुड़ाईआ। मैं बणी नार कमज़ात, आप आपणा सकी ना भेंट चढ़ाईआ। इक्क कसीरा दे के दात, आपणा माण वखाईआ। तिस कसीरे पिच्छे तिन्नां दा होया नास, राजा राणी रहे कुरलाईआ। भगत पुच्छे साची बात, सच सच इक्क जणाईआ। लड़ फड़ाया कमलापात, बन्धन

१४४ ११

आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दामन दामन नाल फड़ाईआ। दामन फड़या दामनगीर, दिलदार दया कमाइंदा। लेखा चुक्या जगत फकीर, हरक्त आपणी आप समझाइंदा। बदली लोकमात तकदीर, तदबीर आपणी आप वखाइंदा। दरस देवे बेनज़ीर, नज़र मेहर आपे पाइंदा। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, आखर आपणा मेल वखाइंदा। गुरसिख ना होए दिलगीर, दिल दी दर्द आप मिटाइंदा। लिख लिख चिट्टे उत्ते मारे काली लकीर, जगत जंज़ीर आप कटाइंदा। एथे ओथे कटे भीड़, सगला संग निभाइंदा। दस गुरू गुरू गरंथ बन्नृ के गए बीड़, पुरख अकाल गुरसिखां बीड़ बनाइंदा। भगत भगवन्त मिल मिल कटण भीड़, सगला संग निभाइंदा। इक्क दूजे नूं मिलण पैंडा चीर, चेतन आपणा आप जणाइंदा। जिस नूं कहिन्दे उच्च दा पीर, हो हो नीवां सेव कमाइंदा। मालवा कहे गुरसिख मेरा बीर, माझा कहे वीर वीरां संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोआबा वेखे दो दो आबा ऐहबाब रबाब इक्क सुणाइंदा। वज्जे रबाब बिन तन्दी तन्द, तार सतार ना कोई वखाईआ। रविदास गाया भगवन्त छन्द, भगवन रविदास रिहा वड्याईआ। ब्रह्मण टुट्टी देवे गंढु, गंढु डोरी नाल बंधाईआ। आपणी आर रम्बी आपे चण्ड, चण्डका रूप वखाईआ। कढ्ढे वासना झूठी मंद, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। इक्क वखाए परमानंद, परम पुरख वखाईआ। दामनगीर साहिब बख्शंद, पल्लू हथ्थ फड़ाईआ। तारा सिँघ गाया छन्द, प्रभ छन्द नाल छन्द मिलाईआ। वज्जण दिता ना कोई डण्ड, नार पुरख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली करतूत कम्म कीता सूत, बण तरखाण श्री भगवान सूत्र इक्को वार लगाईआ। सूत्र ला के फेरया आरा, तिक्खे दन्द आप रखाइंदा। इक्को मारया फड़ कुहाढ़ा, दो दो फाड़ कराइंदा। करया खेल अपर अपारा, आपणी वार दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ तारा तार वखाइंदा। सिँघ तारा साचा सुत, सुत सुत बन्धन पाया। जगत नाता जाए तुट, सतिगुर आपणा आप बंधाया। पंज तत्त काया चोला जे जाए छुट्ट, मुड़ के लए ना कोए मिलाया। पुरख अबिनाशी सुहाया कोट, किला काया गढ़ बणाया। उपर चढ़ लगाई चोट, नाम नगारा इक्क सुणाया। भगवन्त भगत भावनी ओत पोत, पुत्तर धी कम्म किसे ना आया। अन्तिम मिलणा निर्मल जोत, दूजी वंड ना कोए वंडाया। हरि जू भगतां रखे ओट, भगतां आपणी ओट रिहा दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दामन नाम फड़ाया।

गुरू उत्ते रुमाला धर, बिन नेत्र वेखयां रहे गाईआ। गुरू उत्ते रख रुमाल, रसना जिह्वा रहे हिलाईआ। चारों कुण्ट वेख वेख आपणे आप नूं कहिण कमाल, मैं विद्या बड़ी पाईआ। चवर फड़ के बैठे धर्मसाल, सज्जे खब्बे चवर झुलाईआ। गुरू दस्से सुखाल हाल, सिख सतिगुर रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रेम नाल बंधाईआ। किशन सिँघ तेरा तुरीआ प्रेम, तुरत तुरत कराइंदा। आदि जुगादी सच्चा नेम, नियत वेख निभाइंदा। भुल्ल ना जाए कुण्ट हेम, बह बह आसण ध्याइंदा। वेखणहारा नेत्र नैण, नैनण नैण वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां बण बण सैण, कोधरा भोग लगाइंदा। शब्द अगम्मी गा गा गायन, तार सतार वजाइंदा। भगत भगवन्त इक्ठे बहण, एका घर सुहाइंदा। इक्क दूजे दा लहण देण, हिसाब किताब ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रेम विच बंधाइंदा। प्रेम अंदर प्यार गया बज्झ, हरि जू नाता आप बंधाया। इक्क दूजे दा पर्दा बैठे कज्ज, नज़र कोए ना आया। भगत भगवान इक्क दूजे दा करन हज्ज, हाजी नज़र कोए ना आया। इक्क दूजे अग्गे बहण सज, नेत्र नैणां नाल मिलाया। सिफ्ती सिफ्त नगारा जाए वज्ज, वाहवा आपणा गीत गाया। अर्श फर्श दोवें तज, अद्धविचकारे मेल मिलाया। इक्क दूजे उत्ते कर कर तरस, आपणा विछोड़ा आप कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्यार रूप आप अख्वाया। प्यार रूप हरि परवारा, पारब्रह्म बणाईआ। भगतां वखाए इक्क दुआरा, एका घर वड्याईआ। तिन्नां लोकां पार किनारा, चौथा घर रिहा समझाईआ। मिल मिल सखीआं मंगलाचारा, गीत गोबिन्द अलाईआ। हरिजन हरि जू वर पाया कन्त भतारा, कँवल नैण सच्चा माहीआ। सुहाए बंक सोहे दुआरा, दुतर तरया आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, भगतां अंदर प्यार रख, आपणा मार्ग आपे दस्स, सुत्तयां ल्या उठाईआ।

प्यार अन्तर खोल्ह जाग, जुगत ना किसे जणाइंदा। बिन वेखयां आए वैराग, गुरसिख रो रो नीर वहाइंदा। बिन सज्जणो बणयां साक, आपणा संग निभाइंदा। फड़ बाहों खोल्ह्या ताक, आपणा घर वखाइंदा। जो जन चरन कँवल लए झाक, झाकी जगत सर्ब गवाइंदा। जिस जन मस्तक धूढ़ी लाए ख़ाक, तिस ख़ालक मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम आपणा नेम रखाइंदा। प्रेम नेम भगत दुआर, नौ खण्ड पृथमी नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख वेखे गुरुदुआर, दूसर गृह ना कोए वड्याईआ। सन्त वेखे कर प्यार, सतिगुर सरन सच्ची शरनाईआ। गुरसिख आए चल दुआर, आपणा पन्ध मुकाईआ। सतिगुर पूरा अग्गों करे प्यार, आपणी गोदी बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१४६ ११

आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पैज दए संवार, प्रेम नीती इक्क रखाईआ। साल बताली सत्त दिन, पहली आरजू रिहा समझाईआ। सेव कराई गिण गिण, आपणी दया कमाईआ। दरस दखाया भिन्न भिन्न, रूप अनूप वटाईआ। नज़र ना आए कोई चन्न, चिखा जगत जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा रिहा वखाईआ। दिन सत्त बताली साल, पूरब लहिणा आप जणाइंदा। माणस जन्म घाली घाल, गोबिन्द रंग रंगाइंदा। गढ़ी चमकौर मार ध्यान, गुर सतिगुर वेख वखाइंदा। गुरसिक्खी विच्चों बणाया काहन, इक्को नज़री आइंदा। आपणे तन नालों लाह कृपान, तेरे तन पहनाइंदा। फेर दिता इक्क ज्ञान, इक्को शब्द सुणाइंदा। तेरे सीस ताज धरां महान, आपणा रूप वटाइंदा। तेरा वेखां सच निशान, लोकमात झुलाइंदा। खेल करां विच मैदान, रण भूमी वेख वखाइंदा। लेखे लावां बाल नादान, आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। संगत सिँघ नेत्र रो, गुर गोबिन्द अग्गे सीस झुकाइंदा। मैं चरन तेरे नाल गया छोह, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। तख्त ताज नाल ना मेरा मोह, ममता मोह ना कोए वखाइंदा। दिल चाहुंदा तेरे पिच्छे तन मन आपणा देवां कोह, रत्ती रत्त तेरे लेखे लाइंदा। तेरे विछोड़े विच ना जावां सौं, सुख होर ना कोई सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। तेरी सेवा करां फेर परवान, लोकमात मिले वड्याईआ। हुण देवां सच्चा दान, सीस तेरे ताज टिकाईआ। मैं आपणा गुरसिख वेखां काहन, कोटन काहन रहे शरमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन प्रणाम, बैठे सीस झुकाईआ। तेरे हत्थ फड़ाया बाण, तीर चिल्ला इक्क उठाईआ। तेरा रहां निगहबान, सिर तेरे हत्थ रखाईआ। कलयुग खेल करां महान, भेव कोए ना पाईआ। वल छल लुट्टया सर्ब जहान, लुकवीं खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। सिँघ संगत दोए जोड़, पल्लू गल विच पाया। तूं साहिब शाह सवार चढ़े घोड़, मैं तेरे घोड़ रासां हत्थ उठाया। तेरे नाल जावां दौड़, दौड़ आपणा पन्ध मुकाया। तेरा घोड़ा सन्त मारे पौड़, मैं धूढ़ी ख़ाक रमाया। बिन तेरे दरस बुझे ना मेरी औड़, तृप्त ना कोए कराया। मैं वेख्या कर के गौर, तुध बिन नज़र ना कोए टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाता आप बंधाया। गोबिन्द कहे सुण प्यारे, प्यार प्यार नाल वटाईआ। तेरे साल जो बीते विच संसारे, पंज तत्त काया चोला हंढाईआ। करां खेल अपर अपारे, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम आए किनारे, बैठे पन्ध मुकाईआ। तेरी पैज फेर सुवारे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। कवण रंग गुर रंगाउणा, सतिगुर दे समझाया।

१४७ ११

कवण रूप वेस वटाउणा, लोकमात फेरा पाया। कवण घर आस रखाउणा, नेत्र नैण राह तकाया। कवण बिध पूरी करें भाउणा, भावणी होर ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाया। गोबिन्द अन्तिम आउणा मात, माणस रूप वटाईआ। उन्नी साल ना रलणा किसे जमात, बाली बुध वेख वखाईआ। बताली साथ उतरना घाट, आपणा घाट दए समझाईआ। पन्ध मुकाउणा नाठ नाठ, पाँधी साचे राह चलाईआ। आपणा काया कर कर घात, घाली घाल सेव कमाईआ। जंगल विच कटणी रात, जूहां विच सीस छुपाईआ। अन्तिम आपे पुच्छे वात, बाहों पकड़ लए उठाईआ। जिस सीस रख्या ताज, देवे माण वड्याईआ। जन्म जन्म दी रखे लाज, लाजावन्त आप हो जाईआ। माणस मानुख साजण साज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। वेस वटाए आप निरँकारा, निरगुण खेल कराईआ। गोबिन्द शब्द बोल जैकारा, नाम गोबिन्द रूप वटाईआ। एका घर खेल न्यारा, गुर चेला आप जणाईआ। मेल मिलावा सुत दुलारा, पुरख अकाल होए सहाईआ। फेर पावे तेरी सारा, जन्म अजन्म लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वेख वखाईआ। साचा खेल श्री भगवान, आपणा वेख वखाईआ। गोबिन्द दे के चलया दान, अन्तिम गोबिन्द झोली पाईआ। नाल रखाए श्री भगवान, रूप रंग रेख ना कोए वड्याईआ। दर दुआरे देवे माण, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। सत्त इक्क ना कोए निशान, कोटन कोटि जुग रहे विहाईआ। जुग चौकड़ी कर परवान, जन भगतां संग रखाईआ। कलयुग अन्तिम आपणी कृपान रख म्यान, काया गात्रे विच टिकाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, सच भण्डार रिहा वरताईआ। सति सन्तोखी फड़ निशान, दर घर साचे रिहा झुलाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े मेले आण, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। बिरध बाल जवान वेखे मार ध्यान, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। मन हँकार तोड़ दिता ज्ञान, पूजा पाठ ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया लए मिलाईआ। आपणी इच्छया करया मेला, पूरब लहिणा चुकाया। वसया घर गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द खेल खलाया। तख्त निवासी इक्क इकेला, कलयुग वेला आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताज हथ्थ टिकाया। हथ्थ रख्या ताज, दया कमाईआ। करया खेल ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे लए मिलाईआ। जगत सुत्तयां मारी वाज, सोया आप उठाईआ। फड़ फड़ बाहों रचया काज, काज़ी ग्रन्थी ना कोए मनाईआ। आपणे हथ्थीं साजण साज, हरि सज्जण ल्या मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क सत्त एका वार लेखे पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, बिछरत लए मिलाईआ।

★ २० मग्घर २०१८ बिक्रमी रवेल कौर सवरन कौर बाबूपुर दे नवित जेठूवाल ★

सचखण्ड खेल अगम्म अपार, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। थिर घर नाद शब्द धुन्कार, अलख अगम्मड़ा आप प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण बैठ सच सच्चे दरबार, दरगाह साची आसण लाईआ। हरि पुरख निरँजण आप आपणा बल धार, बलिहारी आप अख्वाईआ। एकँकार निराकार निरगुण दाता वड वड्याईआ। आदि निरँजण नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता पावे सार, आपणा भेव आप जणाईआ। श्री भगवान हो त्यार, सच निशाना लए झुलाईआ। पारब्रह्म बण मीत मुरार, दर घर साचा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड हरि निरँकार, एका आसण लाइंदा। थिर घर खेल अपर अपार, अनादी नाद नाद वजाइंदा। करता पुरख करनेहार, साची करनी आप कमाइंदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण मेला मेल मिलाइंदा। नारी कन्त खेल अपार, बेअन्त आप वखाइंदा। आदि अन्त वसणहारा ठांडे दरबार, जुगा जुगन्त वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्को हरि, आपणी धारा आप चलाइंदा। आदि पुरख एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। आप आपणा कर पसारा, अनभउ प्रकाश प्रगटाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, महल अटल सोभा पाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, शाह सुल्तान नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आदि पुरख हरि भेव अवल्ला, एका रंग समाइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। आदि जुगादि अछल अछला, वल छल आपणी खेल कराइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। आपणे दीपक आपे बला, तेल बाती ना कोए पाइंदा। आपणा संदेश आपे घल्ला, आपे सुण सुण खुशी मनाइंदा। आपणा फड़या आपे पल्ला, मिल मिल आपणा संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एको हरि, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। आपणा रूप हरि करतार, इक्क इकल्ला आप प्रगटाईआ। दर घर साचे हो त्यार, दर दुआरा आप सुहाईआ। आपणा बल आपे धार, आपणा जोबन आप हंढाईआ। आपणे रंग रहे निरँकार, नूर नुराना सच्चा शहिनशाहीआ। मात पित ना कोए अधार, बालक गोद ना कोए सुहाईआ। जोती जोत जोत उज्यार, अजूनी रहित वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, करे खेल बेपरवाहीआ। खेल करे बेपरवाह, आपणा रंग वखाइंदा। दरगाह साची बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। सच निशाना हथ्थ उठा, श्री भगवान आप झुलाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणा, करता पुरख कार कमाइंदा। शाहो भूप बण शहिनशाह, साचे तख्त सोभा पाइंदा। दर दरवेश सीस झुका, आप

आपणी अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा पुरख अबिनाशा, आपणा आप कराइंदा। साचा खेल पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कराईआ। आपणी कुक्खों आपे जम्म, आप आपणी गोद सुहाईआ। पवण सुवास ना कोए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। हरख सोग ना कोई गम, चिंता रोग ना कोए सताईआ। आपे घड़े आपे लए भन्न, घड़न भन्नणहार वड वड्याईआ। पंज तत्त ना काया तन, त्रैगुण तत्त ना कोए वखाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। इष्ट देव ना कोए रिहा मन्न, निउँ निउँ सीस ना रिहा झुकाईआ। ना कोई जनणी ना कोए जन, दाई दाया ना कोए अख्वाईआ। करे खेल श्री भगवन, आप आपणा शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, घर साचे सोभा पाईआ। साचे घर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आसण लाइंदा। आदि जुगादि महिमा अगणत, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। आपे जाणे आपणी बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाइंदा। करे खेल आदि अन्त, मध आपणी धार चलाइंदा। आपे नाम आपे मंत, आपे निष्अक्खर जाप जपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाइंदा। आपणी रचना रच करतार, घर साचे खुशी मनाईआ। निरगुण निरगुण करे प्यार, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। नारी कन्त बण भतार, कन्त कन्तूहल सेज सुहाईआ। रंग रलीआं माणे अगम्म अपार, दिस किसे ना आईआ। करता पुरख करे साची कार, करनी किरत आप कमाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुपत ज़ाहर रूप समाईआ। जनणी जन बण निरँकार, सुत दुलारा इक्क वखाईआ। शब्दी नाउँ धर अपार, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। सचखण्ड दुआरे जणया सुत, हरि शब्दी नाउँ रखाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, भेव कोए ना पाइंदा। आपणी गोद ल्या चुक्क, तख्त निवासी गोद सुहाइंदा। आदि जुगादि रखे इक्को ओट, दूजी आस ना कोए जणाइंदा। कर किरपा भरी पोट, तृष्ना भुख ना कोए वधाइंदा। रूप वखाए निर्मल जोत, नूर नुराना डगमगाइंदा। धुन अनादी एका चोट, अनहद तार हिलाइंदा। थिर घर साचा किला कोट, साची वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे वंडी वंड, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। करे खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड करे कुड़माईआ। थिर घर वासी शब्दी अनन्द, अनन्द मंगल एका पाईआ। रसन वखाए परमानंद, परम पुरख बेपरवाहीआ। गीत सुहागी ढोला गाए छन्द, नाउँ निरँकारा आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा आप सुहाईआ। थिर घर साचा लग्गा भाग, सो पुरख निरँजण आप लगाया। निर्मल जोत जगे चिराग, तेल बाती ना कोए रखाया। सुत

दुलारा गया जाग, पारब्रह्म उठाया। इक्क उपजाया आपणा वैराग, वैरागी रूप आप वटाया। एका बध्धा साचा ताग, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। इक्क वखाया सच जहाज़, श्री भगवान आप चलाया। इक्क जणाया साचा राज, थिर घर साचे सोभा पाया। इक्क इकल्ला पूरा करे काज, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द वेख वखाया। शब्द सुत उठया सूरा, हरि साचे आप उठाया। आप बणाया सर्बकल भरपूरा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। एका बख्शे साची तूरा, तुरीआ राग अलाया। एका जोत साचा नूरा, नूरो नूर डगमगाया। एका बचन करे पूरा, कीता कौल पूर कराया। एका वसे हाज़र हज़ूरा, हरि हरि आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख रिहा समझाया। आदि पुरख रिहा समझा, सुण शब्द सुत बाल नादान। सचखण्ड बैठा बेपरवाह, करे खेल महान। थिर घर तेरा दए वसा, किरपा कर आप मेहरवान। एका हुक्म दए जणा, सुणाए धुर फ़रमाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान जणाया एका नाम अडोल, सुत दुलारा मार्ग पाया। आपणा पर्दा खोल्ह, साचा राह जणाया। आदि जुगादी इक्क अतोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अनमोल। अनमोल खेल हरि अवल्ला, अव्वल आप कराईआ। इक्क फड़ाया आपणा पल्ला, साचा संग निभाईआ। सच संदेश इक्को घल्ला, एका वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव खोल्ह निरँकार, शब्दी सुत जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, तेरी साची सेव लगाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर पसार, तेरा घर वसाइंदा। रवि ससि कर उज्यार, मंडल मण्डप नाल रलाइंदा। गगन गगनंतर खेल अपार, तेरी चरनां धूढ़ रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा रिहा दस्स, हरि जू आपणी दया कमाईआ। थिर घर तेरे जावां वस, तेरे नाउँ दयां वड्याईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, एका नूर करे रुशनाईआ। वेखां तेरा खेल तमाश, साची खेल आप कराईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखां तेरी रास, स्वांगी साचा स्वांग वरताईआ। लेखा जाणा पृथ्मी आकाश, तेरा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण रिहा समझाईआ। एका गुण श्री भगवान, आपणा आप जणाइंदा। आदि पुरख वड मेहरवान, आपणी दया आप कमाइंदा। सुत शब्द उठ बलवान, प्रभ साची सेवा लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, तेरी झोली पाइंदा। त्रैगुण माया देवां दान, एका वार वरताइंदा। पंज तत्त वखा निशान, सच निशाना इक्क जणाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, तेरा हुक्म वरताइंदा । खेलां खेल ज़िमी असमान, गगन मंडल फेरा पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव

१५१
११

वेखां मार ध्यान, तेरी गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा आप समझाइंदा। सच संदेशा पुरख अबिनाश, एका वार जणाईआ। लख चुरासी खेल तमाश, साची वंड वंडाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वसे तेरे पास, तेरा रंग रंगाईआ। पवण पवणी दे स्वास, आपे साची सार पाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, सरगुण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग रिहा वखाईआ। शब्द दुलारा दोए जोड़, हरि चरनी सीस झुकाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को तेरी लोड़, होर आस ना कोए रखाइंदा। चरन प्रीती ना देवीं तोड़, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। आदि जुगादि मैनूं तेरी लोड़, तुध बिन अवर ना ओट रखाइंदा। धन्न भाग तूं गया बौहड़, थिर घर मेरा सोभा पाइंदा। मैं तेरा सुत दुलार जम्मया कौर, शाह पातशाह तूं अख्वाइंदा। मेरी तेरे हथ्थ डोर, जिउँ भावे तिउँ चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा विछोड़ा ना मोहे भाइंदा। शब्द सुत करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए अधार, तुध बिन सांतक सति ना कोए वरताईआ। त्रैगुण माया ना कोए भण्डार, पंज तत्त ना कोए जणाईआ। लख चुरासी ना कोए श्रृंगार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज ना रंग वखाईआ। सूरज चन्न ना कोए उज्यार, मंडल मण्डप ना वेख वखाईआ। इक्को मंगां तेरा दरस दीदार, चरन कँवल सच्ची शरनाईआ। निरगुण निरगुण करां सच गुफ़तार, गुफ़त शनीद खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख देणा वर, एका रहां तेरी शरनाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे दान, दाता दानी आप हो जाइंदा। एकँकारा देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आदि निरँजण वेखे मार ध्यान, जोती जाता वेख वखाइंदा। श्री भगवान वखाए निशान, सच निशाना आप झुलाइंदा। अबिनाशी करता जाणी जाण, जानणहार भेव खुल्हाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। शब्द सुत सुण बाल निधान, एका वार जणाइंदा। हुक्म मन्नणा धुर फ़रमाण, सच संदेशा आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल करता पुरख, पुरख पुरखोतम आप कराईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, हरख सोग ना वेस वटाईआ। बाल अंञाणे उत्ते खाधा तरस, आपणी दया कमाईआ। तेरा खेल अर्श फर्श, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रुशनाईआ। चौदां लोक तेरा अदरश, चौदां तबक वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी देवां तेरा कर्ज़, मकरूज आपणा नाउँ धराईआ। आदि जुगादि निभावां फ़र्ज़, जुग जुग सेव कमाईआ। मेरा नाउँ तेरा राग साची तर्ज़, दो जहानां एका गाईआ। तेरा होण ना देवां हरज़, सदा सदा सद सहाईआ। सचखण्ड बैठा सुणां अर्ज़, आरज़ू इक्को इक्क वखाईआ। मेरे मिलण

दी रखीं गर्ज़, गुरबत होर ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त झोली पाईआ। शब्द सुत सुणया कन्न, हरि जू आप सुणाया। बण निमाणा गया मन्न, निउँ निउँ सीस झुकाया। इक्को कहे धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाया। एका गुण दस्स भगवान, शब्दी मंग मंगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव निशान, निरगुण सरगुण आप प्रगटाइंदा। त्रैगुण माया खेल महान, पंज तत्त नाच नचाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, ईश जीव वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म खेल महान, ब्रह्म पारब्रह्म प्रगटाइंदा। नाद धुंन सच्ची धुन्कान, अनादी नाद शब्द सुणाइंदा। अमृत अन्तर पीण खाण, सर सरोवर आप बणाइंदा। निरगुण नूर जोत महान, जोत निरँजण डगमगाइंदा। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, नाड़ बहत्तर बन्धन पाइंदा। काया माटी कर परवान, जगत हाटी वेख वखाइंदा। पंचम नाद नाद धुन्कान, ब्रह्माद नाद सुणाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंज शैतान, पंजां शरअ इक्क जणाइंदा। आशा तृष्ना कर बलवान, घर घर डेरा लाइंदा। मन मनुआ राज राजान, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। सति सतिवादी हो मेहरवान, हरि साची सेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बाल अंञाणा संग निभाइंदा। लख चुरासी करां त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाईआ। विष्नूं देवे इक्क आधार, विश्व रूप वटाईआ। दर दर घर घर पावे सार, नव नौ फेरा पाईआ। ब्रह्मा करे ब्रह्म अकार, ईश जीव खेल खलाईआ। शंकर अन्तिम दए सँघार, आपणा बल धराईआ। तिन्नां विचोला सिरजणहार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कर किरपा मेरे निरँकार, एका भेव देणा खुल्हाईआ। किस बिध तेरा मेला होवे संसार, तेरा दर्शन कवण दुआरे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। आपणा पर्दा हरि जू लाह, निरगुण आप जणाइंदा। जुग जुग आवां वेस वटा, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। ब्रह्म नाल पारब्रह्म मिला, ब्रह्म आपणे अंग लगाइंदा। आपणा नाद शब्द धुन सुणा, ढोला तेरा आप जणाइंदा। पर्दा ओहला आप उठा, बण विचोला सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आपणा भेव रिहा दस्स, दीनन दया कमाईआ। निरगुण सरगुण पूरी करे आस, रूप अनूप वटाईआ। पंज तत्त काया जोत कर प्रकाश, गुर अवतार नाउँ धराईआ। लख चुरासी खेल तमाश, निज घर बैठा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। तेरा भेव निरगुण रूप, नज़र किसे ना आइंदा। तूं साहिब सच्चा सति सरूप, रंग रेख ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादि वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाइंदा। लख चुरासी वसें कलबूत, कल आपणी आप रखाइंदा। मैनूं आपणा दस्स

सच सबूत, जिस घर तेरा मेला बिन तुध नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। मेरा सबूत इक्को इक्क, आदि पुरख समझाया। साची सिख्या लैणी सिख, बिन अक्खर रिहा पढ़ाया। बिन वस्तू देवां भिक्ख, एका वस्त आपणा नाउँ झोली पाया। बिन कलम सयाही दयां लिख, मेरा लिख्या लेख ना किसे मिटाया। आदि जुगादि ना जावां दिस, नेत्र नैण नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह रिहा वखाया। पुरख अबिनाशी इक्को राह, आपणा आप जणाईआ। लोकमात करां खेल बण बेपरवाह, बेड़ा आप चलाईआ। लख चुरासी वेखां थाउँ थाँ, दर दर घर घर फेरा पाईआ। जन भगतां लवां आप उठा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण जोत इक्क जगा, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। नाद धुन शब्द वजा, अनरागी राग सुणाईआ। अमृत आत्म जाम प्या, निझर झिरना दयां झिराईआ। स्वछ सरूपी दरस करा, भाण्डा भरम भनाईआ। जन्म जन्म दी हिरस मिटा, पूरन आस कराईआ। मैनूं मिलण दा जिस जन चाअ, भगत दुआरे आए फेरा पाईआ। मेरा भगत दए समझा, प्रभ वसे केहड़े थाईंआ। बण विचोला दए मिला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका घर बहाईआ । काया मन्दिर एका ढोला देवे गा, आत्म परमात्म लए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर रिहा वखाईआ । मेरा घर भगत अंदर, होर दिशा ना वंड वंडाया। मेरा नाउँ एका मन्त्र, हरिभगत रिहा जस गाया। मेरा नाउँ बणाए मन्त्र, लोकमात दए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर रिहा वखाया। मेरा घर भगत घड़, पंज तत्त दए वड्याईआ । जुग जुग अंदर जावां वड़, आपणा कुंडा लाहीआ। बलधारी कोई ना सके फड़, राज राजानां नैण शरमाईआ। जन भगतां दरस दखावां अग्गे खड़, आप आपणा रूप वटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग ना कोई वड्याईआ। ना जन्मा ना जावां मर, जन्म मरन ना कोई रखाईआ। आदि जुगादी इक्को हरि, जुग जुग वेस वटाईआ। भगतां अंदर जोत धर, साचे दीपक करां रुशनाईआ। नाम निधाना अक्खर पढ़, गीत गोबिन्द सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल पुरख अबिनाशा, आपणी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाशा, नौ नौ चार वंड वंडाइंदा। भगतां करां पूरी आसा, भगवान रूप वटाइंदा। दो जहानां देवां साथा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराइंदा। लहिणा देणा चुकावां मस्तक माथा, पूरब कर्मां वेख वखाइंदा। इक्क चढ़ावां साचे राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह चलणा जग, हरि जू आप जणाईआ। जुग चौकड़ी वेखण भज्ज भज्ज, निरगुण सरगुण

वेस वटाईआ। जन भगतां पर्दा लए कज्ज, समरथ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी हरिजन दुआरे बह सज, रूप अनूप वटाईआ। प्रेम प्यार अंदर जाए बज्झ, साची रीती इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह श्री भगवाना, भगवन आपणी खेल कराइंदा। शब्दी सुत दे परवाना, नाम निधाना इक्क जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महाना, विष्न ब्रह्मा शिव लगाइंदा। त्रैगुण दिता इक्को दाना, पंचम बन्धन पाइंदा। लख चुरासी कर निशाना, जीव जंत वेख वखाइंदा। भगतां बन्ने साचा गाना, भगती तन्द इक्क बंधाइंदा। अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म समझाइंदा। दरस दखाए श्री भगवाना, आपणा पर्दा लाहइंदा। खण्ड ब्रह्मण्ड वेखे मार ध्याना, जेरज अण्डज वेस वटाइंदा। साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, आपणा बल वधाइंदा। वसणहारा सचखण्ड, थिर घर साचा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी कल अकल कलधार, पुरख अकाल वरताईआ। करे खेल दीन दयाल, दीनन रच्छया आप कमाईआ। आपणे हथ्थ रखाए काल महांकाल, त्रैभवन धनी वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पूरा करे सवाल, दर बैठे सीस झुकाईआ। जुग जुग बणे रहिण कंगाल, शाह पातशाह वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाईआ। आपणे रंग रत्ता निरँकार, रत्ती रत्त ना कोई रखाइंदा। गतमित जाणे सर्ब संसार, दूसर ओट ना कोई रखाइंदा। जुग चौकड़ी वंडणहार, वंडणहार आप अख्वाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करे कार, कलयुग वेख वखाइंदा। सेवा ला गुर अवतार, इक्को नाद शब्द सुणाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मार्ग ला, अन्त आपे मेट मिटाईआ। गुर अवतार लए प्रगटा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण दए सलाह, साचा हुक्म सुणाईआ। भगतां बणे आप मलाह, साचा बेड़ा कंध उठाईआ। डूँघी भँवरी पार करा, जगत सागर लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां होए सहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर भगतन तार, आपणा रंग चढ़ाया। निउँ निउँ दोए जोड़ करन निमस्कार, तेई अवतार बैठे नैण शरमाया। ईसा मूसा नेत्र नैण रोवण ज़ारो ज़ार, गिरयाज़ार सुणाया। मुहम्मद धाहां रिहा मार, चौदां तबक रिहा कुरलाया। नानक गाए इक्क निरँकार, तार सतार रबाब वजाया। गोबिन्द बणया सुत दुलार, पुरख अकाल गोद सुहाया। करे खेल आप निरँकार, जुग जुग वेस वटाया। सेवा लाए अपर अपार, साची सेवा आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप वखाया। गुर अवतार मार्ग ला, जीवण मरन गए समझाईआ। अन्तिम कह के गए मिले बेपरवाह, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। शाह

पातशाह, सच्चा शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। सब मंगदे गए पनाह, लोकमात ओट तकाईआ। अन्तिम पीर पैग़म्बर औलीए शेख़ होणे फ़नाह, बिस्मिल रूप समाईआ। पंज तत्त चोली काया दिसे किसे ना, गुर अवतार गए तन हंढाईआ। पुरख अबिनाशी वसे सभनी थाँ, घट घट आपणी जोत जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पकड़े बांह, जन भगतां होए सहाईआ। नित नवित रूप वटा, अबिनाशी अचुत दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। देवे माण हरि करतारा, कुदरत कादर खेल खलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर भगतां करदा आया प्यारा, जुग जुग आपणे नाल रलाइंदा। एका दूआ पार किनारा, बण माही पत्तन पार कराइंदा। ध्रू प्रहिलाद करे निमस्कारा, बल निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। अमरीक रोवे ज़ारो ज़ारा, जनक इक्को ओट रखाइंदा। हरी चन्द दे सहारा, नार तारां पार कराइंदा। बिदर वखाया इक्क अखाड़ा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सुदामे देवे चरन प्यारा, द्रोपद लज्जया आप रखाइंदा। जै देओ देवे इक्क सहारा, पाती डाल आप महकाइंदा। लेखा जाणे रविदास चम्मयारा, सैण नाई रूप वटाइंदा। अजामल गनका पार किनारा, पूतना पर्दा आपे पाइंदा। बधक अवगुण ना विचारा, गुण आपणा आप वखाइंदा। कबीर जुलाहा करे पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। बेणी देवे इक्क प्यारा, त्रलोचण आपणे रंग रंगाइंदा। बिन हरि कोई ना उतरे पारा, लख चुरासी ना पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां दर सुहाइंदा। भगतां दर आए भगवान, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। गा गा थक्के वेद शास्त्र सिमरत पुराण, हरि का गुण कहिण ना जाईआ। जिस जन किरपा करे महान, आपणी बूझ बुझाईआ। दर घर दर्शन देवे आण, तृष्ना भुख रहे ना राईआ। साची सक्खी मिले काहन, काया मंडल रास रचाईआ। नाम बिठाए इक्क बिबाण, सच बिबाणे लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शब्द कहे सुण मेरे हरि, तेरा भेव कोई ना आया। आदि जुगादि मैं रिहा डर, निउँ निउँ सीस झुकाया। तूंही देवणहारा वर, मेरी आशा पूर कराया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पार कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन कोटि वार हंढाया। कोटन कोटि गुर अवतार बैठे तेरे दर, दर बैठे अलख जगाया। पुरख अबिनाशी ख़ाली झोली भर, अतोट अतुट कराया। तूं सब नूं देवणहारा वर, बेअन्त तेरी वड्याईआ। नानक पाया इक्को घर, चरन दुआरा तेरा सुहाया। पल्लू तेरा ल्या फड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। तेरे पौड़े गया चढ़, सचखण्ड डेरा लाया। तेरा नाउँ ल्या पढ़, निरँकार निरँकार रिहा जस गाया। लोकमात विच गया वड़, जीवां जंतां आप समझाया। पुरख अबिनाशी शरनी जाओ पढ़, लिख लिख लेख बोध अगाध सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

आपणा खेल आप समझाया। नानक निरगुण बोल जैकार, सरगुण नानक दए समझाईआ। पंज तत्त नानक करे विचार, निरगुण नानक आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे अगम्म अपार, अगम्मड़ी खेल कराईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़े वसया बाहर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त दए समझाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, नानक निरगुण सर्ब जणाइंदा। पुरख अबिनाशी जामा पाउणा, लोकमात वेस वटाइंदा। निहकलंक नाउँ रखाउणा, दिस किसे ना आइंदा। अगम्मी ढोला आपे गाउणा, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। कलयुग अन्तिम जाए आ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। प्रगट होवे बेपरवाह, जोती जोत करे रुशनाईआ। निहकलंका नाउँ रखा, राउ रंकां लए जगाईआ। साचा डंका इक्क वजा, चार वरन करे पढ़ाईआ। अठारां बरन लए समझा, चौदां विद्या मूल चुकाईआ। चौदां तबकां फेरा पा, चौदां लोक दए हिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रला, एका तत्त दए समझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुका, जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग मार्ग देवे ला, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। दो जहाना नौबत नाम वजा, सुहबत आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर भेव कोए ना पाईआ। हरि जू खेल आप कराउणा, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम भाग लगाउणा, सम्बल नगर दए सुहाईआ। साढे तिन्न हथ्थ बंक आप बनाउणा, महल अटल करे रुशनाईआ। जुग जुग दे विछड़े मेल मिलाउणा, हरिजन लए मिलाईआ। साचे भगतां दर बहाउणा, दर आयां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। भगत भगवन्त वेखे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। निरभउ चुकाए भय डर, आप आपणी दया कमाया। लख चुरासी विचों लए फड़, हरिजन आपणे नाल मिलाया। किला तोड़ हँकारी गढ़, माया ममता मोह चुकाया। लेखा जाणे चोटी जड़, पत्त डाली आप महकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन तारे भगतन मीता, भगवन दया कमाईआ। सन्त सुहेला ठांडा सीता, अग्नी तत्त नेड़ ना आईआ। गुरमुख करे पतित पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। गुरसिख धाम वखाए अनडीठा, अनडिठड़ी कार चलाईआ। सतिजुग वखाए साची रीता, मन्दिर मसीतां ना कोए वड्याईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। भगत भगवन्त दरसाए इक्क अतीता, त्रैगुण बन्धन दए तुड़ाईआ। एका नाउँ माण गंवाए अठारां अध्याए गीता, शास्त्र सिमरत मुख भुवाईआ। नाम निधान जिस जन पीता, जम दंड ना देवे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां होए सहाईआ। कलयुग

अन्तिम हरि जू भगत, हरी हरि आप बणाइंदा। आप प्रगटाए आपणे वक्त, थित वार ना कोए रखाइंदा। आपे जाणे आपणी शक्ति, शख्सीअत भेत किसे ना आइंदा। वसे बाहर बूंद रक्त, बूंद रक्त आपणे रंग रंगाइंदा। लख चुरासी खेल जगत, जुग करता आप कराइंदा। भगतां देवे निरगुण दरस, सरगुण वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम मेटे हरस, तृष्ना जगत बुझाइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, सांतक सति कराइंदा। कृपानिध करे तरस, अबिनाशी ठाकर फेरा पाइंदा। लख चुरासी विच्चों परख, हरिजन आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द इक्क समझाइंदा। सुत दुलारे सुण ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे भगवान, भगवन रूप वटाईआ। साचे भगत लए पहचान, आप आपणी बूझ बुझाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। लोकमात करे प्रधान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्क वखाए सच निशान, दो जहानां रिहा झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्डी वड्याईआ। देवे माण वड्याई वड, हरि वड्डा दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आपणा बन्धन पाईआ। शब्द सुणाए बोध अगाध, अगाध बोध करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे सन्त साध, सिदक सबूरी आप निभाईआ। भगतां तारे आदि जुगादि, जुग जुग सेव कमाईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम देवे दाद, साची वस्त आप वरताईआ। जन भगतां करे लाड, जिउँ बालक माता गोद सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए तराईआ। कलयुग अन्तिम आया अन्त, अन्त रहिण ना पाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, साचे भगतां लए जगाईआ। दरस दखाए वार अनन्त, अकल कला वड्याईआ। नाता तोड़ जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। माणस जन्म बणाई बणत, देवत सुर रहे शरमाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरि सरन मिली सरनाईआ। काया चोली चाढ़े रंगत, रंगया रंग उतर ना जाईआ। जो जन दुआरे आए मंगत, साची भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां होए सदा सहाईआ। जुग जुग भगतां बणया राखा, सेवक सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम देवे साथा, सगला संग निभाईआ। त्रिलोकी नंदन वेख तमाशा, त्रै त्रै मूल चुकाईआ। लेखा जाण पृथ्मी आकाशा, मंडल मण्डप डेरा ढाहीआ। विष्न शिव ब्रह्मा विनाशा, अबिनाशी इक्को इक्क अख्वाईआ। जन भगतां होए दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत रिहा सुहाईआ। भगत सुहाया भगती रंग, हरि सज्जण वेख वखाइंदा। आत्म अन्तर इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, निरगुण जोत डगमगाइंदा। भगतां करे खुशी बन्द बन्द, बन्दीखाना

तोड़ तुड़ाइंदा। नाम दात इक्को वंड, घर बह बह ख़ुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त विच समाइंदा।

हरि जू धार शब्दी नाउँ, हरि हरि आप प्रगटाईआ। आदि जुगादि वसे सच थाउँ, हरि साचा आप बहाईआ। दो जहान करे न्याउँ, जुग जुग वेस वटाईआ। खेले खेल जिउँ पुत्तर माउँ, बालक रूप वखाईआ। पुरख अकाल पकड़े बाहों, सदा सदा भुवाईआ। हुक्मे अंदर हुक्मी न्याउँ, हुक्म हाकम रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा शब्द रूप वटाईआ। आपे शब्द आपे जोत, जोती जाता आप अख्वाइंदा। आपे किला आपे कोट, आपे सचखण्ड आसण लाइंदा। आपे नाद आपे चोट, धुन नगारा आप वजाइंदा। आपे सरन आपे ओट, शरनगत आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप शब्द प्रगटाइंदा। निरगुण जोत निराकार, निरवैर खेल खलाईआ। अजूनी रहित अगम्म अपार, रूप रंग रेख ना कोए वड्याईआ। सचखण्ड खेल अपार, पुरख अकाल रिहा खलाईआ। दाता दानी बण दातार, साची वस्त आप वरताईआ। आपे बण बण मंगे भिखार, पारब्रह्म प्रभ आपणी झोली डाहीआ। आपे बणे विचोला अगम्म अपार, आपणी सेवा आप कमाईआ। आपे करे सच प्यार, आपणी सेज आप हंढाईआ। आपे पुरख आपे नार, दाई दाया रूप वटाईआ। आपे जणे सुत दुलार, आपणी गोद बहाईआ। शब्दी नाउँ रख निरँकार, आपणा रंग चढ़ाईआ। थिर घर वसदा रहे अपार, जिस घर शब्द रिहा समाईआ। सचखण्ड वसे आप करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार शब्द रूप वखाईआ। पति पत्नी दोए उदास, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जगत वस्त ना साडे पास, पुत्तर धी ना वज्जी वधाईआ। अग्गे दिसे ना कोए साथ, जगत निशान ना कोए चलाईआ। भाग निखुट्टे मस्तक माथ, तकदीर रही शरमाईआ। नाता जुड़या तत्त आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध रही कुरलाईआ। दर दर कर कर थक्के तलाश, साचा राह ना कोए लगाईआ। पूरी होई ना अजे आस, निरास वेखी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। पुत्तर धी जगत नाता, बन्धन बंध बंधाया। पुत्तर बिन ना सोहे माता, पिता माण ना कोए रखाया। चारों कुण्ट दिसे अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। साहिब तुट्ठे प्रभ देवे दाता, वस्त अमोलक झोली पाया। कर किरपा पूरा करे घाटा, घाटा कोए नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाया। मेहरवान देवे सुख, सुख सांतक

इक्क वरताईआ। किसना सुकला वेखे पख, डूँग्घी भँवरी फोल फुलाईआ। उज्जल करे मात मनुक्ख, एका वस्त वरताईआ। वास कराए उलटा रुख, गर्भ देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लेखे विच लगाईआ। देवे दात दात अनमुल्ल, मुल कोए ना लाइंदा। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्ता खेल खलाइंदा। जगत दीवा ना होए गुल्ल, बुझया दीपक आप जगाइंदा। प्रभ डाली लग्गे फुल्ल, जगत बूटा आप महकाइंदा। जो जन दुआरे आए भुल्ल, तिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मातलोक ना जाए रुल, करता कीमत आपे पाइंदा। भगत दुआरा गया खुल्ह, वस्त वणजारा आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पति पत्नी जगत तराइंदा।

★ २१ मग्घर २०१८ बिक्रमी बख्शीश सिँघ बचन सिँघ अजीत सिँघ जेठूवाल दरबार विच ★

पारब्रह्म प्रभ छैल छबील, छहबर नाम लगाइंदा। बसन बनवारी बस्त्र नील, अम्बर सुअम्बर आप रचाइंदा। देवे दात बण वकील, सच वकालत आप वखाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों सच्चा खेल, अपरम्पर आपणा मेल मिलाइंदा। अर्जन माण गंवाया भील, बिन कृष्न कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। गुरमुख मंगणा दर दुआर, दर दरवाज़ा हरि खुल्हाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा दए उतार, देणा कोए रहिण ना पाईआ। डुब्बदे पाथर लाए पार, पाहन चरन छुहाईआ। अग्नी सड़दे देवे ठार, अमृत मेघ बरसाईआ। बिन नैणां देवे दरस दीदार, नैतर नैण आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त हथ्थ रखाईआ। गुरसिख मंग हरि का नाउँ, हरि साचा आप वरताइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाहो, बेपरवाह खेल कराइंदा। जुग जन्म दे विछड़े फड़ फड़ मेले बाहों, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। निर्धन निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची साचा धाम सुहाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला पुरख अगम्म सिर रखे ठंडी छाउँ, समरथ आपणा हथ्थ आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। उठो सिखो मंगो राग, हरि रागी आप जणाईआ। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे आग, हवन हवना ना कोए वखाईआ। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान रखे लाज, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई कर त्याग, हरिजन साचे लए प्रनाईआ। पुरख पुरखोतम गया जाग, भगत भगवन्त लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप जणाईआ। उठ गुरसिख मंग दात, मेहरवान आप वरताइंदा। लख चुरासी विच्चों उत्तम करे जात, जात आपणी नाल

मिलाइंदा। काया डूँघर भरे खात, सच ख़ज़ाना इक्क वरताइंदा। निरवैर कराए पार घाट, अद्धविचकार ना कोए रखाइंदा। साची सेज सुहाए खाट, आत्म अन्तर आप विछाइंदा। सरन सरनाई साचा नात, साक सज्जण सैण आप बंधाइंदा। अन्त अन्त पुच्छे वात, आदि आदि वेख वखाइंदा। नाम निधान सुणाए गाथ, गोबिन्द आपणा गीत अलाइंदा। सगल वसूरे जायण लाथ, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। मिटे रैण अन्धेरी रात, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाइंदा। इक्क इकल्ला मिले कमलापात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। उठ सिख झोली डाह, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। अनमुलड़ी दात रिहा वरता, दिस किसे ना आईआ। जन्म जन्म दे बख्शे गुनाह, पतित पापी पार कराईआ। एका देवे सति सलाह, सलाहगीर रूप वटाईआ। हरि जू मिले साचे थाँ, थान थनंतर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा आप खुलाईआ। गुरसिख उठ मंग भण्डार, हरि भण्डारी आप वरताइंदा। लख चुरासी दए नवार, गेड़ा गेड़ा आप दवाइंदा। त्रैगुण अतीता पावे सार, त्रै भवन धनी वेख वखाइंदा। ठांडा सीता इक्क दरबार, सच दुआरे सोभा पाइंदा। कर्म कांड दए निवार, ब्रह्म ब्रह्मांड वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां एह समझाइंदा। गुरमुख सज्जण रहे सुण, हरि साचा सच जणाईआ। इक्को राग इक्को धुन, एका नाद वजाईआ। पारब्रह्म तेरे कौण जाणे गुण, गुणवन्त सच्चा शहिनशाहीआ। लख चुरासी कर छाण पुण, हरिजन साचे लए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे दर सुहाईआ। गुरमुख अग्गों कहिन्दे बोल, एका बचन सुणाया। तूं पहलों तोल आपणा तोल, साडा तोल नजर किसे ना आया। जुग जुग आपणा मन्दिर लोकमात गया खोल्ह, सृष्ट सबाई राह चलाया। लुक लुक बैठें सदा अडोल, दिस किसे ना आया। तेरे पिच्छे करदे कोटन कोटी घोल, तेरा पन्ध ना कोए मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा कराया। पुरख अबिनाशी दयावान, एका वार जणाईआ। मैं देवणहार श्री भगवान, जुग जुग रिहा वरताईआ। लख चुरासी वेखां मार ध्यान, पुरीआं लोआं फेरा पाईआ। गुरमुख विरले कर परवान, आपणे नाल मिलाईआ। नाम निधाना दे ज्ञान, अन्तर करां पढ़ाईआ। सति निशाना दो जहान, एका दयां वखाईआ। गृह मन्दिर महल्ल मकान, उच्च अटल्ल वड वड्याईआ। तख्त निवासी बण बलवान, साचे तख्त सोभा पाईआ। आदि जुगादी हुक्मरान, धुर संदेशा हुक्म सुणाईआ। दो जहानां रखां आण, भुल्ल कोए ना जाईआ। गुर अवतारां दे दे माण, लोकमात करां पढ़ाईआ। एका बख्शां चरन ध्यान, चरन शरन सच्ची शरनाईआ। कर किरपा देवां दान, दात अनमुलड़ी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा

खुलाईआ। मंगो दात साचा वर, अबिनाशी करता आप जणाइंदा। जन्म कर्म दा चुक्के डर, भय अवर ना कोए वखाइंदा। एका अक्खर लैणा पढ़, साचा मन्त्र आप समझाइंदा। एका मन्दिर जाणा वड़, दूजे दर ना फेरा पाइंदा। एका निरगुण फड़ना लड़, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। एका पौड़े जाणा चढ़, पुरख अबिनाशी आप चढ़ाइंदा। एका कन्त फड़ना लड़, नार सुहागण आप बणाइंदा। निहकर्मी कर्म दए कर, कुकर्मी पार कराइंदा। गुरमुख मरनी ना जाए मर, जीवण मुक्त आप वखाइंदा। मुक्ती आपणे चरनां हेठां धर, गुरसिख आपणे नाल रलाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग मेरा भाणा रहे जर, भाणे विच सर्ब वखाइंदा। मेरे अग्गे कोई ना गया अड़, काया भाण्डे सर्ब भनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाइंदा। गुरमुख सज्जण करन दलील, मन मनसा मात रखाईआ। कवण बणे जगत वकील, साडी मिसल दए चलाईआ। अन्त अर्जन लुट्टया फड़ के भील, सूरबीर ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख एका मंग मंगाईआ। गुरसिख मंगण साची मंग, एका वार जणाईआ। जे तुट्ठां ते काया रंग, रंग आपणा नाम चढ़ाईआ। दिवस रैण इक्क अनन्द, अठ्ठे पहर वज्जे वधाईआ। जगत तृष्ना मुक्के गंद, वासना कोए नज़र ना आईआ। पंच विकारा कर खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग हथ्थ फड़ाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा ध्यान रिहा लगाईआ। गुरमुख तेरी सच अरदास, हरि हरि आपणी झोली पाइंदा। करे खेल खेल तमाश, खेलणहारा वेस वटाइंदा। मात पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। लेखा जाणे बे बे आस, पार किनारा आप वखाइंदा। लख चुरासी कर तलाश, गुरमुख साचे मेल मिलाइंदा। आपे देवे साचा साथ, सगला संग निभाइंदा। भगतन मेला एका घाट, एका तट सुहाइंदा। पन्ध मुकाए झूठी वाट, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। निरगुण सरगुण वेखे मार झात, झाकी आपणी आपे पाइंदा। करे प्रकाश अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर आप गवाइंदा। लहिणा देणा तोड़ ज़ात पात, शरअ बन्धन ना कोए वखाइंदा। दरस दिखाए इक्क इकांत, अकल कल वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप समझाइंदा। गुरमुख सज्जण रखदे तांघ, एका ओट तकाईआ। तूं निरगुण रचया आपणा स्वांग, स्वांगी खेल वखाईआ। साची वस्त रहे मांग, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। लख चुरासी विच्चों काढ, गर्भ हवन ना कोए तपाईआ। सरन सरनाई मिले दाद, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। मेला रहे आदि जुगादि, जुग जुग वेख वखाईआ। एका तेरा नाउँ लए अराध, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। पार किनारा करनी हाद, साचे मन्दिर लै चढ़ाईआ। वेले अन्त ना जाणा छाड, एका मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, कीता कौल पूर निभाईआ। पुरख अबिनाशी नेत्र खोल्, एका वार तकाया। हरिजन साचे लवां विरोल, नाम मधाणा पाया। एका कंडे देवां तोल, बण तोला सेव कमाया। गुरमुखां रखां सदा अडोल, लोकमात वेख वखाया। सच वस्त जो मेरे कोल, देवां आप वरताया। सोहँ ढोला एका बोल, आत्म परमात्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। गुरसिख अग्गों रिहा सुणां, सुण मेरे सच्चे माहीआ। सोहँ गा चढ़े ना चाअ, रसना जिह्वा हिलाया। जिन्ना चिर ना पकड़ें बांह, सांतक सति ना कोए वरताया। जे तुद्धा प्रभ दरस दिखा, तेरा दर्शन मोहे भाया। जन्म जन्म दी हिरस मिटा, अमृत मेघ बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां रिहा समझाया। गुरसिख साचे रख धीर, धीरजवान जणाइंदा। तेरा लेखा अन्त अखीर, आखर हरि जू आप मुकाइंदा। तेरी आपणे अंदर रखे तस्वीर, मस्सवर बण बण सेव कमाइंदा। इके वार सब दी बदले तकदीर, जिस जन आपणे चरन लगाइंदा। कर किरपा कटे भीड़, औखा राह ना कोए वखाइंदा। एका रंग रंगाए शाह हकीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। किरपा कर गुण निधान, गुरसिख मंग मंगाईआ। कवण वेला देवें दान, दयावान दया कमाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। हउँ बालक बाल नादान, तेरी सार ना पाईआ। जुग जुग तेरा खेल महान, गुर अवतार सेव कमाईआ। तूं सर्ब जीआं दा सच्चा काहन, लख चुरासी रिहा प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला मेल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, एका रंग वखाइंदा। लख चुरासी कोलों रिहा नस्स, नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख हिरदे जावां वस, सच सिँघासण आप बणाइंदा। कर कर आपणा प्रकाश, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। कर कर साचा भोग बलास, भस्मड़ आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। रूप अनूप आप प्रगटा, परम पुरख वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम सेव कमा, सेवक बण बण फेरा पाईआ। भगत दुआरा लए सजा, साजण बणे सच्चा माहीआ। हरिजन साचे लए बुला, आप आपणे दर सुहाईआ। वस्त अमोलक इक्को वार झोली देवे पा, साची झोली सर्ब भराईआ। छब्बी पोह दिवस सुहा, दोए दोए लेखा आप चुकाईआ। जन भगतां कटे जम का फाह, जगत फाँसी आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दानी दात दाता इक्क वरताईआ। अठ्ठ तत्त जिस पाई सार, सर्ब सुख उपजाया। दसवें घर कर प्यार, पुरख अबिनाशी दरस कराया। अठ्ठ दस जोड़ संसार, अंक अंक नाल मिलाया। इक्क इकल्ला एकँकार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध खेल खलाया। जिस जन

बख्शे चरन दुआर, सो जन लोकमात वड्याआ। जिस जन खोल्हे बन्द कवाड़, आत्म ताकी कुण्डा लाहया। जिस जन बाहों पकड़ लए उठाल, आप आपणी गोद बहाया। जिस जन चले नाल नाल, साचा संग निभाया। जिस जन शाहों करे कंगाल, नाम ख़ज़ाना इक्क वरताया। जिस जन दिवस रैण करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जिस जन दरगाह साची देवे माण, दर घर साचे आप बहाया। जिस जन देवे धुर फ़रमाण, सति संदेशा इक्क सुणाया। सो भगत मिले भगवान, भगती रंग इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप उपाया। पहला भगत भगत प्रहिलाद, परलो नेड़ कदे ना आईआ। दूजे ध्रू दिती दाद, नानक दादक ना कोए वड्याईआ। तीजे बल दिता साथ, सगला संग निभाईआ। चौथे अमरीक रख्या हाथ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंजवें जनक लेखा इकांत, अकल कला समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन भगवन संग रखाईआ। छेवें हरी चन्द उज्यार, सत्तवें तारा राणी यार, अठ्ठवें बिदर करे सुधार, नावें सुदामा जाए तार, दसवें द्रोपद करे विचार, यारवें जै देव लाए पार, बारवें रविदास बणाए यार, तेरवें सैण लए उठाल, चौधवें कबीर करे प्रितपाल, पंदरवें धन्ना जट्ट दए वखाल, सोलवें तरलोचण शाह बणाए कंगाल, सतारवें अजामल देवे ठार, अठारवें बैणी गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गनका पूतना बधक जगत खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ दस दस अठ्ठ नठ्ठ नठ्ठ जुग जुग सति सति एका तत्त वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर छुट्टया साथ, सगला संग तजाया। राम कृष्न तजया त्रिलोकी नाथ, निरगुण खेल खलाया। रवि ससि भुल्लया दिवस रात, चन्द चांदनी मुख छुपाया। लेखा चुक्कया पूजा पाठ, पढ़ पढ़ धीर ना कोए धराया। पुरख अबिनाश खेल तमाश, लोकमात आप कराया। वेस वटा पृथ्मी आकाश, गगन मंडल रिहा सुहाया। कलयुग अन्तिम सब कोलों हो उदास, भगतां दुआरे फेरे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल खला, वेखे चाँईं चाँईंआ। रातीं सुत्तयां गुरसिख लए जगा, जुगती आपणे हथ्थ वखाईआ। आपणी प्रेम रत्त नाल दए नुहा, जगत नीर ना कोए रखाईआ। कर कर सेवा चढ़या साह, दिवस रैण सेव कमाईआ। लख चुरासी कोई वेखे ना, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणा खेड़ा आपे गया ढाह, गुरमुखां खेड़ा रिहा बणाईआ। एसे कारन सिँघ पूरन ल्या प्रना, पूरन परमेश्वर विच समाईआ। पुत्तर धीआं नाता ल्या तुड़ा, जगत मोह ना ल्या वधाईआ। गुरमुखां फड़ फड़ बांह, आपणे अग्गे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाईआ। सेवा करन दा इक्को मौका, छत्ती दिन जणाया। बिन भगती तरना सौखा, मार्ग इक्क लगाया।

गुरसिख जे इस नूं जाणे औखा, औखा घाट नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा वेख वखाया। सेवा करन दा साचा वक्त, छत्ती दिन वंड वंडाईआ। पाल सिँघ फसया मोह जगत, जुगत गया भुलाईआ। प्रभ लेखे लाई रक्त, पूरब लहिणा झोली पाईआ। आप सुहाया उस दा वक्त, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त होए सहाईआ। पाल सिँघ दी कर प्रितपाल, आपणी दया कमाइंदा। रातीं सुत्तयां दए नुहाल, दुरमति मैल धुवाइंदा। माया झूठी जगत जंजाल, जीव जंत कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छत्ती दिवस दा साचा फल, गुरसिखां झोली पाइंदा। सेवा करे जो आ दुआर, जुग छत्ती मिले वड्याईआ। पुरख अबिनाशी बणया रहे मित्र यार, यारड़ा सत्थर आप हंढाईआ। गुरसिख भुल्ले जो विच संसार, मूर्ख मुग्ध रूप वटाईआ। तिस करे आप प्रितपाल, होए संग सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अंग बणाईआ। पंज प्यारे हरि का अंग, अंगीकार बणाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, सूरबीर वेस वटाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड, लोकमात रचन रचाइंदा। जगत जुग प्रभ टुट्टी गंढु, साचा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका दर सुहाइंदा। पंज प्यारे वक्त सुहाउणा, वक्त वक्त रिहा विहाईआ। हरि जू विहार बिवहार दरसाउणा, बिवहारी सेव कमाईआ। जिस दुआरे हरि आपणी कार कमाउणा, सो कार सब नूं भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आपे रिहा सुहाईआ। सतिगुर पूरा इक्क गुलाम, जुग जुग सेव कमाईआ। जन भगतां अंदर वड़ वड़ करे प्रणाम, आपणा सीस झुकाईआ। बिन जाणयां होवे जाणी जाण, बिन पुछयां लए बुलाईआ। जे गुरसिख ना करे पछाण, आप आपणा दरस वखाईआ। कदे धरे रूप बिरध कदे बाल जवान, कदे आपणा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप कमाईआ। भगतन सेवा साची किरत, करता किरत कमाइंदा। कोई कहे सुरत निरत, निरगुण आपणा भेव छुपाइंदा। कोई कहे अकाल मूर्त, मूर्त अकाल आपणी धार जणाइंदा। भगवान कहे मैं भगतां मेटी हरस, हरस होर ना कोए वधाइंदा। जुग जुग करां तरस, आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाइंदा। गुरसिख मालक सच घर दा, निरगुण झाड़ू बरदार अख्वाईआ। घट्टा हूंझे आपणे दर दा, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। जुग जुग भगतां कोलों डरदा, भगत दुआरे फेरा पाईआ। भगतां पिच्छे लख चुरासी नाल लड़दा, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। बिन सद्दयां घर विच वड़दा, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरसिख आत्म पौड़े आपे चढ़दा, आपणा पन्ध मुकाईआ। अंदर बह बह इक्को अक्खर पढ़दा, करे सच पढ़ाईआ। ना जन्मे ना कदे मरदा, भगतां

संग रखाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला बणया रहे बरदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ।

★ २२ मग्घर २०१८ बिक्रमी छाहणी मलूवाल महिंदर सिंघ बाठ दे नवित जेठूवाल दरबार विच ★

जिस जन होए आप मेहरवान, तिस आपणी दया कमाईआ। नाम भगती देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। सति धर्म दा सच निशान, शाह पातशाह दए वखाईआ। सचखण्ड दुआरा सच मकान, अस्थिल चुबारा दए जणाईआ। इक्क इकल्ला बैठ श्री भगवान, हरिजन साचे वेख वखाईआ। एका नाद शब्द धुन कान, गृह मन्दिर आप वजाईआ। लख चुरासी विच्चों कर प्रधान, आपणे अंग लगाईआ। पंज तत्त काया देवे माण, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। चरन धूढ़ सच अशनान, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। दो जहानां रखे माण, निमाणयां होए सहाईआ। शब्द निराला मारे बाण, अणयाला तीर चलाईआ। माया ममता लोभ मोह तोड़ अभिमान, हउँमे हंगता दए गंवाईआ। एका राग सुणाए कान, अनरागी नाद वजाईआ। घट घट अन्तर जाणी जाण, अनुभव आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। साची सेवा हरिजन रंग, सो पुरख निरँजण आप रंगाइंदा। आत्म सेजा सच पलँघ, हरि पुरख निरँजण आसण लाइंदा। शब्द नाद धुन सच मृदंग, एकँकारा आप वजाइंदा। निरगुण नूर साचा चन्द, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता साचा छन्द, बोध अगाध सुणाइंदा। श्री भगवान सूरा सरबंग, सच निशाना इक्क उठाइंदा। पारब्रह्म सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां देवे इक्क अनन्द, अनन्द मंगल आप वखाइंदा। जगत जुग हरि टुट्टी गंढु, एका बन्धन नाम रखाइंदा। गीत सुहागी सुणाए छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप जणाइंदा। साची सेवा हरि करतार, आदि जुगादि वड्याईआ। जन भगतां देवे कर प्यार, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, अपरम्पर वेख वखाईआ। सन्त सुहेले लए उभार, जुग जुग देवे वड्याईआ। गुरमुखां देवे नाम अधार, धीरज धीर धराईआ। गुरसिखां खोल्हे बन्द कवाड़, बज़र कपाटी कुण्डा लाहीआ। कर किरपा अमृत देवे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। मेट मिटाए अन्ध अन्धयार, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। आप वखाए ठांडा दरबार, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। महल अटल उच्च मनार, पुरख अबिनाशी आसण लाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवातर, निरगुण सरगुण

खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाईआ। साची सेवा एकँकार, ओकंकार खेल खलाइंदा। लख चुरासी पावे सार, घट घट वेख वखाइंदा। डुब्बदे पाथर लए तार, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। गुरसिख सज्जण लए उभार, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। नेत्र नैण खोल्ह कवाड़, लोचन आप जणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्माद हो उज्यार, पारब्रह्म वेख वखाइंदा। लेखा जाणे सन्त साध, सतिगुर आपणा रंग वटाइंदा। आदि जुगादी इक्क अनाद, जुग जुग आप वजाइंदा। लेखा जाणे बोध अगाध, अनुभव आपणा रूप वखाइंदा। सन्त सुहेले साचे लाध, गुर चेले मेल मिलाइंदा। दरगाह साची करे लाड, पूत सपूत वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा जिस समझाइंदा। साची सेवा गुरसिख धार, गुर गुर आप जणाईआ। सतिगुर सज्जण कर प्यार, हरिजन साचे लए मिलाईआ। नेत्र लोचण दरस अपार, अगम्म अगोचर आप वखाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, जोत निरँजण डगमगाईआ। अनहद नाद शब्द धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणाईआ। पंचम सखीआं मंगलाचार, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। सखा सुहेला हो त्यार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुर चेला पाए आपे सार, वेखे थाउँ थाईंआ। काया गढ़ बंक दुआर, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। डूँघी भँवरी पाए सार, काया कवरी फोल फुलाईआ। पंच विकारां कर खुआर, माया ममता मोह मिटाईआ। एका राग सुणाए आपणी वार, छत्ती राग रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाईआ। साची सेवा हरिजन लग्ग, आपणा आप मिटाया। जन्म जन्म दी बुझी अग्ग, तृष्ना भुख गंवाया। हँस होया कग, काग हँस रूप वटाया। नाम प्याला पीए मध, दिवस रैण खुमार कराया। एका शब्द सुणाए अनहद, हद्द आपणी पार कराया। दर दुआरे आपे सद्द, गुरसिख साचे लए उठाया। लख चुरासी विच्चों कर कर अड्ड, आप आपणा मेल मिलाया। आपे जाणे आपणी यद, भगत भगवन्त खेल कराया। भगतां वेख होए गद गद, आप आपणा भेव जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क रखाया। साची सेवा सतिगुर चरन, आदि जुगादि मिले वड्याईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, लोचण नैण पर्दा लाहीआ। नात तोड़े मरन डरन, आवण जावण फंद कटाईआ। इक्क वखाए साची शरन, पुरख अकाल मेल मिलाईआ। लहिणा देणा चुक्के उपर धरती धरन, धरत धवल पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क बुझाईआ। साची सेवा सतिगुर ओट, एका ओट रखाया। सतिगुर कढ्ढे काया खोट, झूठा नाता दए तुड़ाया। आप उठाए आलणयों डिग्गे बोट, आप आपणी गोद बहाया। इक्क जगाए निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गंवाया। सुहाए बंक काया कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। देवे नाम इक्क अतोट,

निखुट कदे ना जाया। फड़ चढ़ाए साची चोट, उच्च महल्ले आप बहाया। भगतां बणया आपे गोत, साचा नाता आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाया। साची सेवा चरन ध्यान, चरन कँवल चित लाईआ। नेत्र दरस श्री भगवान, तृष्ना भुख मिटाईआ। गुरमुख सखी मिले हरि साचा काहन, घर मंडल रास रचाईआ। रवि ससि होए हैरान, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। करे खेल श्री भगवान, हरिजन आपणे आप उठाईआ। एका देवे साचा दान, नाम भगती झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जुग जुग हुक्म हरि निरँकारा, निरगुण आप वरताइंदा। सचखण्ड बैठ सच्चे दरबारा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। शब्दी शब्द बण लिखारा, धुर संदेशा आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे निमस्कारा, करोड़ तेतीसा निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। लख चुरासी वेखे वारो वारा, लोकमात फेरा पाइंदा। अलख अगम्म अगोचर बेपरवाह हो त्यारा, निराका रूप धराइंदा। पंज तत्त तत्त दए अधारा, ब्रह्म मति इक्क समझाइंदा। मित्त गत जाणे निरँकारा, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग वेखे वेखणहारा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। चौदां लोकां खोल्ह किवाड़ा, आप आपणा नैण उठाइंदा। चौदां तबकां मारे मारा, एका हुक्म वरताइंदा। लेखा जाणे गुर अवतारा, जुग जुग साची सेव लगाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, बोध अगाध अल्हाइंदा। लिख लिख गए विच संसारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म करे विचारा, चारे वेदां धार जणाइंदा। शास्त्र सिमरत कर त्यारा, त्रैगुण अतीता खेल खलाइंदा। पुराण अठारां बण वणजारा, जगत सौदा हट्ट विकाइंदा। गीता ज्ञान खोल्ह भण्डारा, भगत भगवान इक्क समझाइंदा। ईसा मूसा कर त्यारा, साचा नाअरा इक्क अल्हाइंदा। मुकामे हक़ हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अवल्ला, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। सचखण्ड वसणहारा सच महल्ला, लोकमात वेख वखाईआ। सति संदेश नर नरेश एका घल्ला, कायनात करे पढ़ाईआ। बिस्मिल रूप हो हो आपे रला, घट घट रिहा समाईआ। पावे सार जला थला, डूँघी कंदर समुंद सागर फेरा पाईआ। नूरी नूर रखाया अल्ला, आलमीन दए दुहाईआ। मुहम्मद फड़ाया एका पल्ला, एका कलमा नबी सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, आदि पुरख आप कराइंदा। हक़ हक़ीक़त इक्क जैकारा, लाशरीक आप सुणाइंदा। वाहद रूप कर न्यारा, निज घर आपणे आसण लाइंदा। हजारा दरूद साची धारा, एका इक्क पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साची सेवा आप समझाइंदा। गुर अवतार साची सेवा, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। पीर पैग़म्बर वेखे वड देवी देवा, दो जहान वेस वटाईआ। भगत भगवन्त आत्म रस देवे साचा मेवा, गुण अवगुण ना कोए रखाईआ। सन्त तराय दया कमाए हरि निहकेवा, निहचल आपणे धाम बहाईआ। आदि जुगादि अलख अभेवा, गुरमुख साचे लए उठाईआ। नाम जपाए रसना जिह्वा, गुरसिख सेवा लाईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक थेवा, धुर ललाट दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कराईआ। साची सेव कराए करतार, करता किरत कमाईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपार, जुग करता वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी उतरे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। नव नौ चार गया हार, वेला अन्त रिहा समझाईआ। सृष्ट सबाई रोवे ज़ारो ज़ार, गिरयाज़ार सर्ब लोकाईआ। नौ खण्ड होवे हाहाकार, सत्त दीप ना धीर धराईआ। वरन बरन करन पुकार, साची सरन ना कोए रखाईआ। अठसठ धाहां रहे मार, तट किनारे पई दुहाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ ना कोए आधार, जगत स्यासत करे लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे वेखणहार, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। जीव जंत होया विभचार, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। नाता तुट्टा पुरख नार, कन्त कन्तूहल ना कोए वड्याईआ। पिता पूत ना करे प्यार, भइया भैणां ना वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया फसया सर्ब संसार, गुरमति बैठी मुख छुपाईआ। मनमति होई नार मुटयार, घर घर जोबन रही हंढाईआ। साधां सन्तां करे खुआर, आपणे नाल रलाईआ। सूरबीर जोद्धे सुट्टे मूँह दे भार, ना कोई सके सीस उठाईआ। शाह सुल्तानां सिर पाई छार, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। चारों कुण्ट जूठ झूठ वणज वपार, साचा हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। गुर अवतार ना मददगार, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। नारद फिरे वारो वार, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। कलयुग मिल्या इक्को यार, हथ्थ नाल हथ्थ मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग मिल्या नारद आ, मिल मिल खुशी मनाईआ। इक्क सुनेहड़ा दए सुणा, आपणा ढोला गाया। तैनूं मैं रिहा समझा, दर तेरे फेरा पाया। तेरा अन्तिम वेला गया आ, लुकया कोए नज़र ना आया। मुहम्मद बैठा डेरा ढाह, चौदां तबक रिहा शरमाया। अल्ला राणी बैठी मुख छुपा, नेत्र नैण ना कोई उठाया। तेरा वसदा खेड़ा रिहा ढाह, तेरा कर्म ज़ोर वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। मुहम्मद कहे सुण नारद मुन, तूं चोटी आपणी क्यों मुंनाईआ। जुग जुग तेरा वड्डा गुण, तूं घर घर फेरा पाईआ। धन्न भाग तूं सुणावे आपणा गुण, तेरे गुण वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वेख वखाईआ। नारद कहे सुण रे मीत, आपणा हाल सुणाया। ना मैं पाक ना पलीत, पतित आपणे संग निभाया।

जुग जुग सब नूं रिहा जीत, घर घर ठगौरी पाया। चोटी मुंन के चलाई आपणी रीत, चोटी सब दी दयां मुंनाया। मेरा साहिब इक्क अनडीठ, जो मैनूं रिहा फिराया। नित गावां उहदे गीत, रसना जिह्वा ना कोए हिलाया। मैं फिर के आया मक्का काअबा मसीत, उच्चे हुज़रे शाह नवाब नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क समझाया। पुरख अबिनाशी सेवा ला, एका हुक्म समझाईआ। चौदां तबक वेख थाँ, नंगी पैरीं फेरा पाईआ। कवण एका ढोला रिहा गा, सदा बांग इक्क सुणाईआ। कवण साची वज़ू रिहा वखा, दुरमति मैल धुआईआ। कवण सजदा सीस रिहा झुका, कवण निउँ निउँ धूढ़ी मस्तक लाईआ। कवण सच मसला हेठां रिहा विछा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा इक्क रखाईआ। मेरी सेवा लाई इक्क खुदा, हुक्मी हुक्म मनाया। चौदां तबक राह मैं वेख्या सिध्धा, राह विच ना कोई अटकाया। कोई हूर ना पावे गिध्धा, मिल सखीआं मंगल गाया। कूड़ पकवाण सब ने रिध्धा, साची महिफ़ल ना कोए बहाया। तेरा ईमान कर के बैठा ज़िदा, आपणी ज़िंदगी रिहा गंवाया। चौदां सदीआं विच दस्स होया किड्डा, कवण कद्द रिहा बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा इक्क लगाया। लग्गी सेवा आया दुआर, चार कुण्ट फेरा पाईआ। वेख जावां मुहम्मद तेरे यार, यारी यारां नाल वखाईआ। पार कर जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। लेखा जाणा डूँग्घी गार, समुंद सागर भँवरी रिहा समाईआ। सच सुनेहड़ा दे दे अन्तिम वार, प्रभ साचे दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा वेख वखाईआ। मैं सेवा करां बण बलकारा, बल हरि जू आप दवाइंदा। चारों कुण्ट वेख्या संसारा, सहिंसा कोई ना मेरा चुकाया। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले वेखे इट्टां गारा, हरि जू जोत ना कोई जगाया। गुर अवतार दे दे गए लारा, लोकमात राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वखाया। मुहम्मद कहे सुण संदेशा, मेरा तन मन रिहा शरमाईआ। साहिब मेरा नर नरेशा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। कलयुग मैं कमाया आपणा पेशा, जो हरि जू सेव लगाईआ। तिस साहिब करनी आदेसा, सीस चरनां उत्ते टिकाईआ। तूं क्यों भुलया मेरा चेता, चौदां सदीआं वक्त लँघाईआ। फुल फुलवाड़ी मेरा पक्कया खेता, एका वार वढ्ढ वखाईआ। तुध बिन कोई ना जाणे मेरा भेता, मेरा भेव तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क तेरी ओट तकाईआ। नारद कहे मैं जा के दस्सां, चरन कँवल सीस झुकाईआ। दूर दुराडे बह बह हस्सां, आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा इक्क रखाईआ। दूर दुराडा रिहा बोल, आपणा बचन सुणाया। किस बिध आवां तेरे कोल, शाह पातशाह

सच्चे शहिनशाहया। सच वस्त ना मेरे कोल, कित बिध तेरा दर्शन पाया। मैं आदि जुगादि रहां अडोल, सच सिँघासण रिहा सुहाया। मुहम्मद नाल मैं कर के अया कौल, तेरा संदेशा दयां सुणाया। राह तेरा तक्के उपर धौल, नेत्र नैण उठाया। तूं मौला रूप गयों मौल, आपणा मुख छुपाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा बरदा दर तेरे ते आया। बरदा बण सवाली, एका मंग मंगाईआ। तेरे दर तों जाए कोई ना ख़ाली, बेअन्त तेरी वड्याईआ। सर्ब जीआं दा आपे पाली, बण सेवक सेव कमाईआ। जुग जुग देवे नाम दलाली, बण वणजारा वेख वखाईआ। तेरा नूर निरगुण जोत अकाली, अकल कला तेरी वड्याईआ। लख चुरासी सच्चा माली, घर घर बूटा रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप लगाईआ। सुण नारद हरि रिहा दस्स, दूर दुराडे पन्ध मुकाया। मुहम्मद चले ना कोई वस, वेला अन्तिम आया। निरगुण हो के लोकमात जावां वस, निरवैर खेल कराया। जन भगतां आपे होया दास, बण बण दासी सेव कमाया। लोकमात करां पूरी आस, आप आपणी बूझ बुझाया। लहिणा देणा चुक्के पृथमी आकाश, गगन मंडल पन्ध मुकाया। लेखा ला पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दी साख, हरिभगत नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाया। मुहम्मद करां पूरी आसा, एका आस जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक वेखे चाँईं चाँईंआ। प्रगट होए पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणा बल धराईआ। आपे जाणे हार पासा, जित्त आपणे हथ्थ रखाईआ। शंकर वेखे उपर कैलाशा, सोया आप जगाईआ। ब्रह्मे देवे ब्रह्म धरवासा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। विष्नूं मेला शाहो शाबाशा, शाह पातशाह होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी पूरी आस कराईआ। पूरी आस करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, इक्क इकल्ला फेरा पाइंदा। मुरीद मुर्शद इक्क दूजे दे मददगार, सगला संग निभाइंदा। सत्थर वेखे साचा यार, सुंञी सेज आप हंढाइंदा। जन्म जन्म दी पावे सार, कर्म कर्म दा मोह तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम सेवा आप कमाइंदा। अन्तिम सेवा आपे कर, निरगुण जोत सेव लगाईआ। निराकार निरवैर फिरे दर दर, बण दरवेश अलख जगाईआ। गुरमुख सज्जण लए फड़, सुरती शब्द डोर बंधाईआ। सरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण निरगुण लए उठाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, काया कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सच महल्ले आपे चढ़, सच सिँघासण दए सुहाईआ। दीवा बाती आपे कर, नूर करे रुशनाईआ। सच्चा साथी आपे बण, घर घर विच संग निभाईआ। हरिजन वेखे साचे जन, जन जननी रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम बेड़ा बन्न्, मँझधार पार कराईआ। राए धर्म ना देवे

डंन, लाड़ी मौत नेड़ ना आईआ। गुरमुख चाढ़े साचा चन्न, दर घर साचे करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सेव कमाईआ। साची सेवा अन्तिम कर, कुलवन्ता आप कराइंदा। लख चुरासी भुलाए कर वल छल, गुरमुख साचे आप उठाइंदा। अंदरे अंदर गया रल, जोती जोत जोत रलाइंदा। दीपक दीपक गया बल, तेल बाती ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाइंदा। आपणी सेवा आपे ला, साचा हुक्म सुणाया। लोकमात बण मलाह, निरगुण निरगुण आप उठाया। हरिजन साचे लए जगा, जागरत जोत कर रुशनाया। एका धाम दए बहा, साचा अस्थान मिले वड्याआ। एका ढोला लैणा गा, एका नाम दृढ़ाया। एका मन्दिर देणा बणा, एका बंक सुहाया। एका इष्ट देणा वखा, एका ओट शरनाया। एका अमृत देणा प्या, एका तीर्थ अशनान कराया। एका पीर लैणा मना, एका मुर्शद रूप वटाया। एका जंजीर देणा पा, शरअ जंजीर देणा कटाया। शाह हकीर एका रंग रंगा, एका घर देणा वखाया। सच तौफ़ीक इक्क खुदा, मिहबान मेहरवान मेहरवान मेहरवान दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप कमाया। साची सेवा करे भगवान, कलयुग अन्त वज्जी वधाईआ। हरिजन साचे कर परवान, भगत भगवन्त नाउँ धराईआ। घट घट अंदर वेखे मार ध्यान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। जिस जन दीआ आपणा दान, दीनन हो सहाईआ। दरस दिखाया दर घर आण, माया पर्दा आप उठाईआ। आत्म सुरती कर पहचान, अकाल मूर्ति लए मिलाईआ। अमृत रस पीण खाण, निझर दए झिराईआ। आवण जावण चुक्की काण, जिस बख्शे सच शरनाईआ। साचा मन्दिर सच मकान, सति पुरख निरँजण आप बणाईआ। छत्ती युग करे कल्याण, नौ चार वज्जे वधाईआ। भगत भगवन्त खेल महान, लोकमात कराईआ। सच भूमका सच अस्थान, साचा संग आप निभाईआ। बण बण बहे सईया राम, कान्हा कृष्ना रूप वटाईआ। ईसा मूसा दे पैग़ाम, मुहम्मद सुणाए कलाम इलाहीआ। नानक निरगुण कहे सतिनाम, गोबिन्द वाहिगुरू फ़तेह गजाईआ। रसना कह कह गए श्री भगवान, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। कलयुग अन्त होए मेहरवान, निहकलंका नाउँ धराईआ। गोबिन्द सूरा वेखे आण, लोकमात वड्डी वड्याईआ। साचे भगत करे परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। साची भगती देवे दान, आपणी वस्त झोली पाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, जगत विद्या ना कोए सुणाईआ। एका ओट रखे आण, दूजी होर ना कोए सरनाईआ। करे खेल विष्नूं भगवान, विश्व आपणी धार चलाईआ। आत्म परमात्म कर कल्याण, कलमा आपणा आप सुणाईआ। ईश जीव दे ज्ञान, जगत जगदीश होए सहाईआ। सतिजुग ढोला सारे गाण, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। हरिभगत बठाए सच बबाण, नाम बबाणा इक्क लिआईआ। अन्तिम

चुक्के जम की काण, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगती सेवा आप कमाईआ। भगतन सेवा सच दुआर, दर दरवेश आप कराइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वेख उच्च मनार, जगत मनारे सारे ढाहइंदा। करया खेल अगम्म अपार, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जन्म जन्म दा लहिणा देणा कर्ज उतार, जन भगतां झोली आप भराइंदा। साचा मन्दिर कर त्यार, डूँग्घी कंदर वेख वखाइंदा। नौ दुआरे जगत विहार, जगत वासना मोह मिटाइंदा। साची दिशा पावे सार, आपणा हिस्सा आप रखाइंदा । जिस दा किसा सुणदे रहे विच संसार, सो सज्जण फेरा पाइंदा। जिस दा पेशा भगतां देवे तार, जुग जुग वेस वटाइंदा। सो पुरख निरँजण जन भगतां निउँ निउँ करे निमस्कार, आपणा सीस झुकाइंदा। भगत दुआरा वसदा रहे जुग चार, नौ चार चार नाल मिलाइंदा। जिस जन सेवा करी आण, दुआर तिस जन आपणी करनी झोली पाइंदा। आप गुरसिखां दी कटे वगार, बण वगारी दर दर फेरा पाइंदा। जे कोई अग्गों दए दुरकार, आपणी भुल्ल बख्शाइंदा। गुरसिख तेरा भुल्ले ना हरि प्यार, बध्धा प्यार चोटां खाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग घल्लदा रिहा गुर अवतार, अन्तिम आपणा फेरा पाइंदा। रल मिल वक्त रिहा गुज़ार, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। जे कोई कहे पुरख करतार, पुरख आपणा रंग रंगाइंदा। जे कोई कहे पूरन यार, यारी यारां नाल निभाइंदा। जे कोई गोबिन्द कहे शाह अस्वार, गोबिन्द सूरा खेल कराइंदा । जे कोई कहे शहिनशाह सच्ची सरकार, शाह पातशाह आपणा नाउँ वड्याइंदा। जे कोई कहे चरन धूढ़ी छार, हउँ बौह बौह खुशी मनाइंदा। रुस ना जाए मेरा गुरसिख यार, गुरसिख बिन मैनूं थाँ कोए नज़र ना आइंदा। एसे कारन बणाया उच्च मनार, बहत्तर भगतां विच बहाइंदा । सत्तरां वखाए पहरेदार, चुहत्तरां एका अक्ख खुलाइंदा। पंजां पंजां दे अधार, पंचम झोली आप भराइंदा। चौथे जुग दे चार यार, आपणे नाल मिलाइंदा। लोकमात तक्क सहार, भगतां ओट रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन किरपा नज़र किसे ना आइंदा। किरपा करे सर्ब गुणवन्त, गुण आत्म दए जणाईआ। गुरसिख हरि जू नारी मिले कन्त, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका नाउँ मणीआ मंत, अजपा जाप कराईआ। गढ़ तोड़ हउँमे हंगत, हँ ब्रह्म दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। किरपा करे दीन दयाल, दयानिध अख्वाइंदा। गुरमुख सज्जण साचे भाल, लख चुरासी फंद कटाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। अनहद अनादी वज्जे ताल, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। दीपक जोती इक्को बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। सदा सदा सद चले नाल, विछड़ कदे ना

जाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। दयानिध गहर गुण सागर, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरगुण ठाकर, ठोकर नाम लगाईआ। कर प्रकाश काया गागर, गगरीआ करे रुशनाईआ। दर आयां घर देवे आदर, इक्क आदरश वखाईआ। करता करीम साचा कादर, नूर नुराना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान सच्चा शहिनशाहीआ। आत्म सिमरन आत्म रंग, परमात्म वेख वखाईआ। काया सेजा सच पलँघ, सति पुरख निरँजण सेज सुहाईआ। नाद धुन वज्जे मृदंग, अनहद राग अलाईआ। अमृत आत्म धारा गंग, निझर झिरना इक्क झिराईआ। दिवस रैण इक्क अनन्द, परमानंद समाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, गुर सतिगुर बन्धन पाईआ। पंच विकारां खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। निरगुण जोत चढ़ाए साचा चन्द, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाईआ। माणस जन्म चुक्के पन्ध, मात गर्भ फेर ना आईआ। सतिगुर मिले साहिब बख़्शंद, गुरमुख लए तराईआ। जगत जवानी रही हंढ, अन्त बुढेपा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां होए सहाईआ। भगत सहाई श्री भगवान, आदि जुगादि अख्वाइंदा। जुग जुग खेल करे महान, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। गुरमुख सज्जण मात पछाण, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। नाम निधाना देवे ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। सच वखाए इक्क निशान, सच दुआरे आप झुलाइंदा। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाण, बोध अगाधी नाद वजाइंदा। साचा मन्दिर सच मकान, काया अंदर आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। काया अंदर घर विच घर, घर साचा आप सुहाईआ। गुरमुख विरले मिले वर, जिस आपणी दया कमाईआ। अमृत सरोवर नुहाए सर, दुरमति मैल दए धुवाईआ। निरभउ चुकाए झूठा डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। काया अंदर सच दुआर, हरि साचा सच जणाइंदा। आत्म ताकी खोल्ह कवाड़, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। साची हाटी इक्क वणजार, नाम वणजारा फेरा पाइंदा। होका देवे इक्को वार, आपणी अलख जगाइंदा। मिल मिल सखीआं करन विचार, पंचम मीता राग अल्हाइंदा। वसणहारा ठांडे दरबार, घर साचा आप सुहाइंदा। दस्म दुआरी हो त्यार, नौ दुआरे पन्ध चुकाइंदा। सुरती शब्दी करे प्यार, शब्द सुरत मेल मिलाइंदा। नज़री आए इक्क करतार, करता कादर वेस वटाइंदा। लहिणा देणा पूरब जन्म लए विचार, कर्म कुकर्मां वेख वखाइंदा। सचखण्ड बैठ सच्ची सरकार, शाह पातशाह सोभा पाइंदा। जिस जन करे आप प्यार, आप

आपणा रंग रंगाइंदा। सिमरन पाठ जाणे निरँकार, पूजा पाठ आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। पूजा पाठ जगत विहारा, रसना जिह्वा आप कराईआ। जिस जन मिले आप निरँकारा, निरगुण आपणा दरस कराईआ। फड़ फड़ बाहों करे पार किनारा, साची नईया लए चढ़ाईआ। चरन कँवल इक्क सहारा, समरथ दए वड्याईआ। हरि का नाउँ लिखण पढ़न तों वसे बाहरा, कोटन कोटि नाम रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस जन मिले आप समरथ, संसा सर्ब चुकाइंदा। पंच विकारा देवे मथ, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। गृह मन्दिर अंदर शब्द नाद धुन सुणाए अकथ, बाणी बोध आप दृढ़ाइंदा। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठ, जिस जन हरि जू नज़री आइंदा। सच सरोवर मिले तीर्थ तट, गुर सरन चरन गुरमुख अशनान कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र पूजा पाठ इक्को वार समझाइंदा। सिमरन मन्त्र नाम रस, नाम विहूणयां आप जणाईआ। जन भगतां सदा होए वस, जुग जुग फेरा पाईआ। निराकार निरवैर साचा मार्ग एका दस्स, एका घर वखाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गुरमुखां गाए आपे जस, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। लहिणा देण चुकाए हथ्थो हथ्थ, जगत उधार ना कोए कराईआ। जो जन शरनाई जाए ढट्ठ, तिस लहिणा दए मुकाईआ। नाता तोड़ तत्त अठ्ठ, नौ दर लेखा लेखे पाईआ। पल्ले बन्ने नाम गट्ठ, साची गट्ठड़ी इक्क वखाईआ। वसणहारा घट घट, स्वछ सरूपी रूप धराईआ। कोटन कोटि नाम रहे रट्ट, रसना जिह्वा सेव कमाईआ। गुरमुख विरले मिटया द्वैती फट्ट, एका घर वज्जी वधाईआ। चौदां लोक रहे नट्ठ, लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिमरन इक्क रखाईआ। साचा सिमरन आत्म परमात्म, परम पुरख रखाइंदा। जन भगतां होए दास दासन, बण सेवक सेव कमाइंदा। नाता तोड़ पृथ्मी आकाशन, गगन मंडल डेरा ढाहइंदा। गुरमुख आत्म सेजा करे भोग बलासन, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। साचे मन्दिर पावे रासन, गोपी काहन आप नचाइंदा। गुरमुख गुरसिख पूरी करे आसण, नानक गोबिन्द वेस वटाइंदा। शाहो भूप सर्ब गुण ताशन, गुणवन्ता वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिमरन आप बणाइंदा। साचा सिमरन विच जहान, जीवण जुगत जणाईआ। जिस जन उपर सतिगुर पूरा होए मेहरवान, आपणा भेव खुल्हाईआ। जन भगतां देवे साचा दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सिमरन भजन भज भज वेख वखाईआ। रसना जिह्वा रही भज्ज, दिवस रैण गुण गाया। हरि

भगत दुआरे बैठा सज, आपणा मूल चुकाया। दीन दयाल ठाकर स्वामी निहकर्मी पर्दा लए कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। साहिब दयाल चढ़ाए सच जहाज़, जगत बेड़ा आप चलाया। गुरमुखां करे आपे काज, निरगुण सरगुण वेस वटाया। एथे ओथे रखे लाज, लाजावन्त बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर मेहर नज़र बेनज़ीर, हरिजन लए उठाया। महां पुरख इक्को दाता, आदि जुगादि समाइंदा। जुग जुग खेले खेल पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिखां बन्ने साचा नाता, एका बन्धन नाम पाइंदा। अन्तर आत्म जणाए इक्को गाथा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सदा सुहेला देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। लेखा जाणे पूजा पाठा, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। रातीं सुत्तयां घर घर पुच्छे वाता, निरगुण सरगुण फेरा पाइंदा। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख खेल कराइंदा। सति पुरख श्री भगवान, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। जुग जुग खेले खेल महान, जुग करता बेपरवाहीआ। भगतां देवे भगती दान, नाम निधाना झोली पाईआ। लख चुरासी वेखे मार ध्यान, घट घट अंदर डेरा लाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर सुहाईआ। एका शाहो भूप सुल्तान, एका हरि जू नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सदा सालाहीआ। सदा सालाहे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता दया कमाइंदा। खेले खेल खेल तमाश, गगन मंडल फेरा पाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर निवास, घर घर आपणी जोत जगाइंदा। कोटन कोटि दीपक कर प्रकाश, बिन बाती तेल डगमगाइंदा। जन भगतां पूरी करे आस, आप आपणा अंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरिजन साचे आप तराइंदा। तारनहारा पारब्रह्म, परम पुरख वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, जन्म मरन विच ना आईआ। निरगुण जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। ना कोई घड़े ना देवे भन्न, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान आप हो जाईआ। दयावान आदि निरँजण, एका पुरख अख्वाइंदा। नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल धुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा रंग वखाइंदा। हरि पुरख पुरख करतारा, आपणी करनी आप कराईआ। जुग जुग विछड़े मेलणहारा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। एका खोल्ह सच दुआरा, दर दरवाज़ा दए वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख अन्त कोए ना पाईआ। चारे वेद करन पुकारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गीता ज्ञान करे गिरयाज़ारा, शास्त्र सिमरत देण दुहाईआ। अञ्जील कुराना

करे पुकारा, तीस बतीसा भेव ना आईआ। खाणी बाणी वेखे वेखणहारा, वेखणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड महल्ले आपे चढ़, थिर घर वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, इक्क इकल्ला आप समाइंदा। सुन्न अगम्मी पावे सारा, धूंआँधार वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, आप आपणी सेव लगाइंदा। लख चुरासी वेख अखाड़ा, आपणा नाच नचाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां पावे सारा, लोआं पुरीआं डगमगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, साचा हुक्म आप वरताइंदा। लेखा जाणे रवि ससि सतारा, नूर नूर आप धराइंदा। पृथ्मी आकाश दए सहार, आप आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, जन भगतां पार कराइंदा। भगत उधारनहार, जुग जुग दया कमाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड वासी सच्चा शहिनशाहीआ। डुब्बदे पाथर लए तार, जिस जन आपणा चरन छुहाईआ। सदा सुहेला बण दलाल, जगत दलाली आप कमाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। आपे करे आपणा हल्ल सवाल, दूसर भेव कोए ना आईआ। कोटन कोटि जीव जंत हरि हरि थक्के भाल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँग्घी कंदर हथ्थ किसे ना आईआ। जिस जन आप होए कृपाल, आप आपणा मेल मिलाईआ। सन्त भगत भगवन्त नार कन्त, साची सेजा एका एक सुहाईआ। आत्म सेजा रंग बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। गुरमुख नारी मिले हरि जू कन्त, एका घर बहाइंदा।

★ २३ मग्घर २०१८ बिक्रमी सुरजण सिँघ, लाल सिँघ जेठूवाल दरबार विच ★

जुग जुग दी साची घाल, सो पुरख निरँजण आप कमाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, निरवैर वेस वटाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड आपे भाल, पुरीआं लोआं वेख वखाइंदा। हरिभगत मेले साचे लाल, लाल अनमुलड़े आप उठाइंदा। जगत जुग चले अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना आइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा खेल कराइंदा। एथे ओथे दो जहानां चले नाल नाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। एका नाद एका ताल, शब्दी राग इक्क सुणाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर सोभा पाइंदा। एका नूर श्री भगवान, जोती जाता डगमगाइंदा। एका लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए रूप आप धराइंदा। एका साचे सन्तां देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका गुरमुखां देवे ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। एका गुरसिख करे पहचान, बेपहचान आपणा रूप वटाइंदा। एका ग़रीब

निमाणयां देवे माण, निताणयां गोद बहाइंदा। एका जम की कटे काण, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। एका अमृत देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुख मिटाइंदा। एका निरगुण जोत नूर करे प्रधान, रूप अनूप आप वखाइंदा। एका बण बण बहे साचा काहन, गुरमुख सखी आप प्रनाइंदा। एका मारे तीर निराला बाण, अणयाला आप चलाइंदा। एका वेखे भूमका अस्थान, भूपत भूपी वंड वंडाइंदा। एका नर हरि वेखे आण, वेखणहारा दिस ना आइंदा। एका घट घट जाणी जाण, एका आपणा मुख छुपाइंदा। एका वेखे हाणी हाण, साचा मेला आप कराइंदा। इक्क वखाए पद निरबाण, सच दुआरा आप खुल्हाइंदा। भगतां सेवा कर भगवान, आपणी सेवा लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची घाल थाएँ पाइंदा। घाले घाल पुरख करतार, अचरज खेल रचाईआ। निरगुण निरवैर लै अवतार, अजूनी रहित वेस वटाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे दुआर, थिर घर आपणी बणत बणाईआ। सुन्न अगम्मी कर कर पार, विष्न ब्रह्मा शिव जगाईआ। सुरपति राजा दए हुलार, करोड़ तेतीसा लए उठाईआ। जुग चौकड़ी हो न्यार, नव नौ आपणा रूप वटाईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, हुक्मी हुक्म सर्ब भुवाईआ। भगत भगवन्त दर बण भिखार, बैठे सीस झुकाईआ। सन्त निउँ निउँ करन निमस्कार, निवण सु अक्खर इक्क वड्याईआ। गुरमुख चरन धूढ़ी मंगण ख़ाक, ख़ाकी तन गंवाईआ। गुरसिख वेखण सच्चा साक,

१७८

११
पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जन भगतां खोल्हे आपे ताक, आपणा कुण्डा आपे लाहीआ। आपे सेजा सोए खाट, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। आपे दूर दुराडा पन्ध कटे वाट, आपणा पैंडा आप मुकाईआ। आपे लेखा जाणे दिवस रात, घड़ी पल ना कोए समझाईआ। जुगा जुगन्तर जन भगतां पुच्छे वात, वास्तक आपणा रूप वटाईआ। शब्द अनाद धुन सुणाए साची गाथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। इक्क जणाए साचा पाठ, बिन रसना जिह्वा गाईआ। इक्क किनारा तीर्थ ताट, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। एका पत्तण एका घाट, एका बैठा साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी घाल आपे लेखे पाईआ। मेरी घाल पए लेखे, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। लख चुरासी भरम भुलेखे, भाण्डा भरम ना कोए भनाइंदा। साहिब सुल्तान नर नरेशे, नर नरायण खेल कराइंदा। लेखा जाणे ओथे एथे, दो जहानां फेरी पाइंदा। जुग जुग जन भगतां रखे चेते, चेतन आपणा रंग रंगाइंदा। लख चुरासी वढ्ढे खेते, बण किरसाण फेरा पाइंदा। बण तरखाण लाए वेंते, इक्को सूत्र हथ्थ उठाइंदा। नेत्र रोवण विष्न ब्रह्मा शिव पुत्त जेठे, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। आदि जुगादि ना आया तेरा भेते, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणे लेखे, आपणा लेखा भगतां झोली पाइंदा। कीती घाल होए मन्ज़ूर, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी मैं करदा रिहा कसूर,

जन भगतां दे सजाईआ। जा के पुच्छो कोलों मनसूर, क्यों पुट्ठड़ी खल्ल लुहाईआ। जिस नूं लोकी कहिन्दे दूर, सो दूर दुराडा नेड़े आईआ। आपणा भरे साचा पूर, बण मलाह सेव कमाईआ। गुरसिख जे कोई अग्गों देवे घूर, निउँ निउँ आपणा वक्त लँघाईआ। मैं आपणा लेखा लाउणा ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। ना कोई माण ते ना ग़रूर, बण दरवेश फेरा पाईआ। जन भगतां कटण आया जूड़, दूजी जोड़ी ना कोए जुड़ाईआ। साधां सन्तां तन तपे वांग तन्दूर, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। अंदर वड़ वड़ रहे झूर, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। आत्म मिले ना साचा नूर, प्रकाश प्रकाश ना कोए वड्याईआ। जूठ झूठ विहाझया मूर्ख मूढ़, कंचन सच ना कोए रखाईआ। अन्तिम नाता कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया रहे समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी घाल भगतां कोलों पूर कराईआ। पुरख अबिनाशी आपणी घाल, जन भगतां कोलों पूर कराइंदा। निरगुण आ आ करे सवाल, आपणी झोली अग्गे डाहइंदा। लोकमात मैं कंगाल, बिन गुरमुखां मेरी सार कोए ना पाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद मड्ढ होया बेहाल, मेरा अंग ना कोए छुहाइंदा। तीर्थ तट वेख किनार, नेत्र नैण मेरा शरमाइंदा। पुरख नार करन विभचार, हरि का रूप ना कोए जणाइंदा। चारों कुण्ट हाहाकार, धीरज धीर ना कोए वखाइंदा। मन्न मन्न थक्के गुर अवतार, सिर हथ्थ ना कोए रखाइंदा। पढ़ पढ़ थक्के वेद चार, पुराण अठारां रसना जिह्वा सालाहइंदा। गीता ज्ञान कर पुकार, दस अठ्ठ मेल मिलाइंदा। अञ्जील कुरान ना सके कोए विचार, काया कुरा ना फोल फुलाइंदा। खाणी बाणी वसे सब तों बाहर, शब्द हाणी ना कोए मिलाइंदा। साधां सन्तां भर भर थक्के पाणी सर्ब संसार, जाणी जाण नज़र ना आइंदा। सुण सुण कहाणी होए अवाज़ार, सुरती राणी शब्द शाह ना कोए मिलाइंदा। गुरमुख विरले हरि सतिगुर करे आप परवानी, परम पुरख फेरा पाइंदा। जन भगतां बणया सच्चा दिल जानी, आप आपणे रंग रंगाइंदा। नाता तोड़ चारे खाणी, चारे बाणी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी घाल आपे पूर कराइंदा। मेरी घाल भगत दुआर, पुरख अबिनाशी रिहा जणाईआ। साचे सन्तो करो विचार, सति सतिवादी वेख वखाईआ। गुरमुख खोल्हो नैण किवाड़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। गुरसिख करो सच प्यार, जगत प्यार दयो तजाईआ। हरि जू आया चल दुआर, बण दरवेश फेरा पाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, सत्त समुंदर मस रही कुरलाईआ। जुग चौकड़ी रोवे ज़ारो ज़ार, वेला गया हथ्थ ना आईआ। गुर अवतार ना सकण सुरत संभाल, पुरख अबिनाशी खेल खलाईआ। जीव जंत लोकमात ना कोई वेखे मार ध्यान, नाम ज्ञान ना कोए समझाईआ। रसना पढ़ पढ़ करन कल्याण, काया काअबा ना कोए जणाईआ। निर्धन होया आप भगवान, सरधन गुरमुख रूप प्रगटाईआ। अन्तिम

कल चरनी डिगा आण, मंगे सरन शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी घाल आप वखाईआ। मेरी घाल जुगो जुग, जुग करता आप जणाइंदा। लख चुरासी विच्चों चुग, आपणा मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे मन मति बुध, बुध बबेकी आप कराइंदा। कारज करे आपे सुद्ध, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। ठग्ग चोर यार ना कोए लए लुट्ट, नाम धन इक्क वरताइंदा। माणस भाग ना जाए निखुट्ट, मानव आपणी गोद बहाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। इक्क वखाए साची ओट, चरन कँवल ध्यान जणाइंदा। साचा भगत इक्को बहुत, लख चुरासी कम्म किसे ना आइंदा। कलयुग अन्त आप बणाया आपणा ओत पोत, छत्ती जुग दे विछड़े मेल मिलाइंदा। आपणी शाख़ आपे प्या फुट्ट, पत्त डाली आप लहराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पा घाल खुशी मनाइंदा। खुशी मनाए श्री भगवन्त, जन भगत दुआरे फेरा पाईआ। धन्न भाग मेरी बणी बणत, गुरमुख मिल्या चाँईं चाँईंआ। गुरसिख सच्चा साजण सन्त, जिस जन आपणा दरस कराईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फिरदे कोटन कोटि अनन्त, अनन परकार रूप वटाईआ। गढ़ तुट्टा ना हउँमे हंगत, हरि मिली ना सच सरनाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार करदे जंगत, आसा तृष्ना नाल बंधाईआ। किसे हथ्थ ना आए पंडत, पढ़ पढ़ विद्या वक्त गंवाईआ। दीन दयाल इक्क अखण्डत, अखण्ड आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर कर घाल खुशी मनाईआ। खुशी मनाए हरि करतारा, बण सेवक सेव कमाईआ। लोकमात बणया वणजारा, एका हट्ट खुल्हाईआ। चौदां लोक करन निमस्कारा, चौदां तबक सीस झुकाईआ। चौदां विद्या नैण शर्मसारा, लोचण सके ना कोए उठाईआ। पारब्रह्म सुणाया इक्क जैकारा, जै जै आपणा नाउँ प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यारा, निरवैर खेल कराईआ। हँ ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म हरि वेस वटाईआ। जन भगतां पावे लोकमात सारा, महांसारथी आप हो आईआ। कलयुग अन्तिम पार किनारा, तट तीर्थ दए दुहाईआ। राउ रंक होए खुआरा, सांतक सति ना कोए रखाईआ। इक्को भगत करे हरि प्यारा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। निरगुण सरगुण आए दुआरा, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। डुबदयां लाए पार किनारा, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। गोबिन्द सत्थर हंढाया इक्को यारा, पुरख अकाल सेज वछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी घाल सत्थर रिहा वखाईआ। आपणी घाल भूमी सत्थर, भूपत भूप जणाइंदा। गुरसिख नेत्र वरोले आपे अथ्थर, नाम मधाणा इक्को पाइंदा। हरिजन बणाए साची बणतर, बसन बनवारी खेल कराइंदा। आदि जुगादि साचा मन्त्र, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। लेखा जाण गगन गगनंतर, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। भगत प्यार बुझाए बसन्तर, सांतक सति कराइंदा। सर्ब जीआं बिध

१८०
११

जाणे अन्तर, आत्म अन्तर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाइंदा। भगत जनां दर साची सेवा, बण सेवक आप कमाईआ। जुग जुग दा अमृत मेवा, जन भगत दुआरे खाईआ। अलख अगोचर अगम्म अभेवा, आदि जुगादि सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। करे खेल भगत भगवान, भावी आपणे सिर रखाइंदा। भगतां देवे सच निशान, लोकमात आप झुलाइंदा। जुग चौकड़ी कर परवान, कलयुग अन्तिम मेल मिलाइंदा। सच धर्म दा इक्क निशान, सति सतिवादी आप उठाइंदा । छत्ती जुग होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। छत्ती राग करन ध्यान, हरि ध्यान विच ना आइंदा। पैंती अक्खर करन कल्याण, करता आपणी सेव समझाइंदा। छत्तीआं अक्खर आप करे परवान, शास्त्र सिमरत ना गणत गणाइंदा। छत्तीआं अक्खर जन भगतां देवे दान, आपणी वस्त आप वरताइंदा। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, ज्ञान गरू आप हो जाइंदा। जन भगत दुआरे बणे महिमान, पुरख अबिनाशी फेरा पाइंदा। गुरसिख वेखे सच्चा काहन, नेत्र नैण नैण मटकाइंदा। सोहँ धुंन मधुर गायण, मध माता आप सुणाइंदा। नानक दादक साक सैण, सौहरे पेईए वेख वखाइंदा। मात पित भाई भैण, पिता पूत खेल कराइंदा। आपे जाणे नुकता ग़ैन, ऐन आपणी अक्ख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां वेख वखाइंदा। भगतन वेख चढ़े हरि चाअ, चातरक आपणी तृष्न बुझाईआ। आपणा सिँघासण दए तजा, भगत सिँघासण दए सुहाईआ। भगतां काजन आप रचा, नद्व नद्व सेव कमाईआ। ग़रीब निवाज़न आपणा आप कर फ़िदा, फ़ितरत आपणी दए गंवाईआ। इक्को राह वखाया सिध्धा, सुखमन टेडी बंक ना कोए जाईआ। दस्म दुआरी बह बह पाए गिध्धा, आपणा ताल वजाईआ। गुरसिख तेरे जिहा ना कोई वड्डा, प्रभ तेरी रहे शरनाईआ। तेरा भार आपणे सीस लद्दा, सिर आपणे गट्ठड़ी रिहा उठाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करदा रिहा ज़िदा, भगत भगवान दे सज़ाईआ। कलयुग अन्तिम आपणे हथ्थ रखाई आपणी बिध्धा, कर किरपा लए मिलाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी दा भोजन रिध्धा, जन भगतां दए खुआईआ। ना कोए जाणे आटा मैदा, जौं छोले ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण सेवक सेव कमाईआ। नौ सौ चरानवें चौकड़ी जुग दा भोजन, हरि भगवन भगतां आप खुवाइंदा । कोई ना चढ़ के वेखे जोजन, चढ़ चढ़ पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कोटन कोटि साध सन्त सोचण, हरि सोच विच ना आइंदा। कोटन कोटि बन्नू बन्नू लंगोटण, तीर्थ तट डेरा लाइंदा। कोटन कोटि भंग प्याले घोटण, जगत रगड़ा इक्क वखाइंदा। कोटन कोटि फिर फिर थक्के कपाल मोचन, आपणा कपाल ना कोए खुल्हाइंदा। कोटन कोटि फिरदे प्रभ दा भाणा रोकण, ना कोई रोके

१८१
११

रोक रुकाइंदा। जन भगत रखे इक्को ओटन, प्रभ चरन ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण सेवक सेव कमाइंदा। मेरी करो पूरी आस, पारब्रह्म रिहा जणाईआ। मेरा भगत मेरा प्रकाश, बिन भगत ना कोए रुशनाईआ। मेरा सन्त मेरी रास, होर वस्त ना कोए जणाईआ। मेरा गुरसिख मेरा दास, मिल मिल साचा वक्त लँघाईआ।मेरा गुरसिख मेरी शाख़, लोकमात रिहा महकाईआ। जुग जुग मेरा पर्दा भगत लैण ढाक, जो मेरा नाउँ ध्याईआ। मैं प्रगट होवां साख्यात, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम खेल तमाश, त्रैगुण अतीता आप कराईआ। साचे भगत बणाई इक्क जमात, जमा माईनस ना कोए वखाईआ। उन्नी कत्तक दिती दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। कर दर्शन नाता तुटया पूजा पाठ, पाठशाला ना कोए पढ़ाईआ। बिन नईया पार उतारे घाट, साचा सईया होए सहाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत दआरे फेरा पाईआ। भगत दुआरे आया, कर किरपा गुण निधान। आपणा भेख आप वटाया, निरगुण आप बण शैतान। शरअ शरीअत दए तुड़ाया, चार जुग दी चुक्के काण। गुर अवतार लए बुलाया, देवे धुर फ़रमाण। पिछला लेखा लए बकाया, भुल्ल ना जाए गुण निधान। साचा बंक इक्क सुहाया, महल अटल उच्च मकान। भगत दुआरा नाउँ रखाया, चौदां तबक करन सलाम। पीर पैग़म्बरां रिहा जगाया, प्रगट होया वड्डा अमाम। कायनात वेख वखाया, लख चुरासी करे गुलाम। हरिजन साचे लए जगाया, आपे पाए आपणी आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, भगत वसाए साचे घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

गुरमुख बस्त्र रखे बन्न्ह, हरि गठड़ी आप उठाईआ। मिल्या भार कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। हरिजन चढ़े साचा चन्न, चन्द चांदनी रही शरमाईआ। राग सुणाए इक्को कन्न, अनादी नाद वजाईआ। मनसा अंदर गया मन्न, मन भावना पूर कराईआ। बण बण हरि जू जननी जन, हरिजन साचे लए उपाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त काया माटी तन, तन माटी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे बस्त्र आप उठाईआ। साचा बस्त्र काया कपड़, सतिगुर पूरा आप उठाइंदा। छत्ती जुग ना सकण अप्पड़, हरि का भेव ना कोई पाइंदा। आदि जुगादी माई बपड़, पिता पूत वेस वटाइंदा। जुग जुग लिख लिख देंदा रिहा पत्तर, शब्द निधान सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम वेख्या इक्को वत्तर, बण किरसाणा हल्ल चलाइंदा। राउ रंक ग़रीब निमाणे फड़ फड़ कीते पध्धर, साची सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे सध्धर, सादा आपणा रूप वटाइंदा। लेखा जाणे खण्ड भद्र, भावी भउ हरि समझाइंदा। गुरमुख

१८३
११

तेरा प्रेम खद्दर, तन्दी तन्द नाल बंधाइंदा। ताणे अंदर पेटा पेटे अंदर ताणा, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। कर किरपा खोल्या जंदर, काया ताक आपे लाहइंदा। आपे वड़ के बैठा डूँग्घे खण्डर, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बस्त्र आप सुहाइंदा। साचा बस्त्र सुहाए सूसा, सूसी आपणे तन पहनाईआ। लेखा जाणे ईसा मूसा, संग मुहम्मद लए जगाईआ। गुर अवतारां करे ख़ाली ख़ीसा, जन भगतां दए भराईआ। नेड़े आउँदा जाए बीसा, आपणा पन्ध मुकाईआ। नेत्र रोवण राग छतीसा, दिवस रैण देण दुहाईआ। साचा तन ना धोवे कोई छींबा, साची खुम्ब ना कोए चढ़ाईआ। काया माटी झूठा तूम्बा, सच तूम्बड़ी ना कोए वखाईआ। अंदर कँवल होया मूधा, ना देवे कोए उलटाईआ। चार कुण्ट हरि जू ढूंडा, दिस किसे ना आईआ। सरगुण बण के हथ्थ विच रख्या खूंडा, आप आपणा खेल कराईआ। निरगुण बण के बैठा रिहा ऊंधा, आपणा नैण ना किसे चमकाईआ। ना मरया ना जीऊंदा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुरसिख तेरे खद्दर आपणा कपड़ सीउँदा, सीं सीं आपणी खुशी मनाईआ। करे कराए जो मन भाउँदा, भावी आपणे हथ्थ रखाईआ। दिवस रैण जन भगतां ढोले गाउँदा, ताल सुर ना कोए रखाईआ। रातीं सुत्तयां घर घर भाउँदा, बण बण सेवक सेव कमाईआ। गुरमुख तेरे प्यार अंदर हरि जू आपे नुहाउँदा, आपणे प्यार तेरा अशनान कराईआ। तेरे काया मन्दिर अंदर आपणी सेज वछाउँदा, उत्ते तेरा कपड़ दए वछाईआ। आपे वेखे आउँदा जांदा, सदा सुहेला चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कपड़ आप बणाईआ। साचा कपड़ तणयां ताणा, बण पौली सेव कमाइंदा। सखीआं नाल गावे गाणा, काना कन्न नाल लगाइंदा। आपे जाणे आपणा आवण जाणा, एधर उधर फेरा पाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, गुरमुख एका रंग चढ़ाइंदा। तन्द तन्द तन्द कर परवाना, बन्द बन्द खुशी कराइंदा। अनन्द अनन्द अनन्द इक्क मकाना, चन्द चन्द चन्द आप चमकाइंदा। टुट्टी गंढु गंढु गंढु दए परवाना, नाम निधाना हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, ताणा पेटा खेवट खेटा आपणा आप जणाइंदा। हरि जू खद्दर लए ख़रीद, आपणी कीमत पाईआ। एका कट के दए रसीद, जन्म मरन दए चुकाईआ। अठ्ठे पहर दर्शन दीद, नेत्र नैणां नज़री आईआ। गुरसिख गुर शब्द होया शहीद, शरअ कोए नेड़ ना आईआ। साहिब सुल्तान वसे नज़दीक, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। जिस दी गुर अवतार रखदे गए उडीक, सो साहिब फेरा पाईआ। छत्ती जुग दी इक्क तारीक, हरि भगतां रिहा समझाईआ। कोई ना बणे दूजा शरीक, लाशरीक खेल वखाईआ। झूठी मेटे सृष्ट तरीक, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। जन भगत दुआरे अंदर रखे आपणी जीत, उच्च महल्ले बणत बणाईआ। गुरसिख

सौण अंदर हरि जू मरे उत्ते सीत, पाला पोह पोह ना सके राईआ। छब्बी पोह वेखणा ठीक, ठीकरा भरम दए भनाईआ। बिन अग्नी तत्त होया वांग सीख, सिखर चोटी चढ़ के अलख जगाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दे गाउण गीत, घर साचे वज्जे वधाईआ। जन भगतां तुट्टे नाता मन्दिर मसीत, घर मिले सच्चा माहीआ। सतिजुग चले साची रीत, सतिगुर पूरा आप चलाईआ। करे खेल इक्क अनडीठ, चार बाणी बैठी मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वणज आप कराईआ। साचा खद्दर लए मुल्ल, करता कीमत आपे पाइंदा। आपे रखे आपणे तुल, दूजे हट्ट ना किसे विकाइंदा। जन भगतां बणाई इक्को कुल, दूजा बंस ना कोए वधाइंदा। पुरख अकाल निरगुण नूर होया सुल्हकुल, चार जुग दे विछड़यां सुलह आप कराइंदा। दर दुआरे जो आए भुल्ल, तिस आपणे रंग रंगाइंदा। सतिजुग फुलवाड़ी रही फुल, हरि जू बूटा आप उगाइंदा। भगत दुआरा गया खुल्ह, हरि जू भगतां पिच्छे फेरी पाइंदा। गुरमुख सज्जण ना जाए रुल, लोकमात आप उठाइंदा। आदि जुगादि रहे अडुल, ना डोले ना कोए डुलाइंदा। जगत अन्धेर झक्खड़ रिहा झुल, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करता कीमत आपे पाइंदा। ख़रीद खद्दर करे परख, पारखू हरि जी आया। ना कोई सोग ना कोई हरख, खोटे खरे आपणी गोद बहाया। जिस जन उपर कीता तरस, तार सतार इक्क सुणाया। जन्म जन्म दी मेटी हरस, आपणा दरस कराया। अमृत मेघ इक्को बरस, तृष्ना भुख मिटाया। गुरसिखां पूरा करे हर्ज, हरजाना इके वार भराया। आपणे कोल ल्यांदे कलयुग माया विच्चों वर्ज, दर आपणा इक्क रखाया। निरगुण करन आया आपणा पूरा फ़र्ज़, फ़रद ज़ुरम ना कोए रखाया। वेखो खेल करे असचरज, आपणा माण भगतां हथ्थ फड़ाया। आपणे खाते कीते दरज, दर्दी दर्द वंडाया। जुग चौकड़ी दा लाहया कर्ज़, मकरूज आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करता कीमत इक्क वखाया। खद्दर ख़रीद रखे कोल, हट्टो हट्ट ना कदे विकाईआ। पूरब जन्म दा कीता कौल, इकरार रिहा निभाईआ। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी चरनां हेठ रखाईआ। कर किरपा आत्म अन्तर जाए मौल, मौला आपणा रूप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ।

मन्दिर बणाया भगतन बस्ती, बिस्त्रा इक्क विछाईआ। आपणी मिटाए हरि जू हस्ती, गुरमुखां दए वड्याईआ। गुरसिख तेरी माया ससती, हरिसंगत उते दए वरताईआ। सदा सदा चढ़ाए मस्ती, मस्त रंग वखाईआ। साहिब ठाकर इक्को शक्ती,

शाकर हो समझाईआ। सतिजुग चुक्के कोए ना अरथी, अथवा आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरी साची माया, आपणी बरसी उत्ते लगाईआ। अद्धी माया छब्बी पोह, जन भगतां भोजन आप छकाइंदा। अद्धी माया बस्त्र ढो, ढोआ चन्दन आप महकाइंदा। जगत विचोला आपे हो, साची सेव कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप बणाइंदा। गुरमुख माया बणे सिँघासण, संख आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल शाहो शाबासन, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसन, आशा मनशा वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची माया अद्ध अद्ध हिस्सा वेखे चाँईं चाँईंआ।

★ २४ मग्घर २०१८ बिक्रमी कुंदन सिँघ, प्रीतम सिँघ दे नवित जेठूवाल, ★

सो पुरख निरँजण चढ़या चाअ, चाओ घनेरा इक्क रखाईआ। हरि पुरख निरँजण वेस वटा, हरि जू आपणी खेल कराईआ। एकँकारा फेरा पा, निरगुण निरवैर सेव कमाईआ। आदि निरँजण जोत जगा, नूर नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता ढोला गा, जन भगतां रिहा सुणाईआ। श्री भगवान निशान झुला, दो जहान दए वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिला, आपणा रंग रंगाईआ। सच सिँघासण इक्क सुहा, सचखण्ड दए वड्याईआ। थिर घर आपणा राग अला, शब्दी नाद सुणाईआ। करे खेल बेपरवाह, दीनन आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी इक्क मलाह, जुग करता वेस वटाईआ। आपणी कर के आया सच सलाह, सुल्हकुल सच्चा शहिनशाहीआ। लोकमात प्रगटाउणा साचा नाँ, जन भगत नाउँ रखाईआ। लेखा जाणे हँस काँ, काग हँस वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण पकड़े बांह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेव आप कमाईआ। सो पुरख निरँजण चढ़या रंग, रंग रंगीला वेख वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण वेखे अनन्द, अनन्द मंगल आपे गाइंदा। एकँकारा खुशी बन्द बन्द, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आदि निरँजण चढ़या चन्द, जोती जाता हरि प्रगटाइंदा। श्री भगवान गाए छन्द, अबिनाशी करता राग अलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मेटया पन्ध, ब्रह्म आपणी गोद बहाइंदा। जुग चौकड़ी खण्ड खण्ड, एका खण्डा नाम चमकाइंदा। आदि जुगादी कर कर वंड, वंडण साची वेख वखाइंदा। दीन दयाल साहिब बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप रखाइंदा। सो पुरख निरँजण सुणाए राग, अनरागी आप सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क वैराग, भगत विछोड़ा सहि ना सके राईआ। एकँकारा सृष्ट सबाई कर त्याग, हरिसंगत लए मिलाईआ। आदि निरँजण गया जाग, जागरत जोत

कर रुशनाईआ। अबिनाशी करता गुरमुख बणाए सज्जण साक, नाता बिधाता इक्क रखाईआ। श्री भगवान खोल्ह्या ताक, दो जहान वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दिता साथ, आप आपणी गोद बहाईआ। जुग जुग सुणाउँदा आया पूजा पाठ, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप समझाईआ। सो पुरख निरँजण खुशी मना, घर साचे सोभा पाइंदा। हरि पुरख निरँजण हरिभगत आपणा भेव दए जणा, जानणहार आप हो आइंदा। एकँकारा एका घर वखा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। आदि निरँजण सगन मना, घर साचे सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता सच सिँघासण रिहा डाह, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। जन भगतां मात दए वड्या, श्री भगवान सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म लए मिला, मेलणहार आप हो जाइंदा। जुग चौकड़ी खेल रिहा खिला, आपणा भेव ना किसे समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा ला, करोड़ तेतीसा आप भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाइंदा। साची सेवा आपे कर कर, हरि करता वेख वखाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लोकमात आउँदा रिहा डर डर, आपणा मुख छुपाईआ। शाह पातशाह ना सके कोई फड़, फड़ फड़ दए सज़ाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण आपणा घाड़न घड़ घड़, सरगुण लेख मुकाईआ। सचखण्ड महल्ले आपे चढ़ चढ़, चढ़दी कला आप जणाईआ। आपणा नाउँ अक्खर आपे पढ़ पढ़, पिछली भुल्ले सर्ब पढ़ाईआ। भगत भगवान बन्न्हे लड़ लड़, एका पल्लू रिहा वखाईआ। जुग चौकड़ी सारे मन्नदे रहे हरि हरि, हरि हरि पूजा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, कलयुग अन्तिम आप कराईआ। जुग चौकड़ी सब नूं देंदा रिहा लारा, आपणा भेव ना किसे खुल्हाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सर्ब पुकारा, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। जुग जुग खेल हरि निरँकारा, निरगुण आप कराइंदा। जुग चौकड़ी हो उज्यारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन वार कीता पार किनारा, कोटन कोटि रूप वटाइंदा। नव नौ चार मारे मारा, मारनहार आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल श्री भगवान, पूरब आप जणाईआ। नामे दिता एका दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। देहुरा फेरया हरि जू आण, पंडत पांधे मुख भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। आपणा भेव आपे दस्स, हरि जू खेल कराइंदा। भगतां अन्तर रिहा वस, दिस किसे ना आइंदा। जुग जुग करे पूरी आस, जगत तृष्ना मोह चुकाइंदा। शरन शरनाई करे दास, दासी दास वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, दर घर साचे सोभा पाइंदा। दर घर साचा हरि मेहरवान, एका एक सुहाईआ। नामे मिल्या बीठलो काहन, रूप अनूप दए दरसाईआ। मोई गांए जवाई आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गांए ज्वाल ना मिटी तरास, तृष्ना मेरी ना कोए बुझाईआ। नामा मंगे तेरा साथ, विछोड़ा झल्ल ना सके राईआ। अग्नी जल अन्तिम काठ, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। ना कोई देहुरा ना कोई माठ, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई दिसे भट्ठ, खेड़ा रिहा ना कोए वसाईआ। मेरा पूरा करदे घाट, मैं इक्को ओट तकाईआ। मैं नित नित तक्कां तेरी वाट, नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाईआ। नामे घर आया हरि बाल, बाली बुध वखाईआ। इक्क कटोरा दुद्ध प्याल, दोधी दन्दी रिहा समझाईआ। मेरी करनी सदा प्रितपाल, मैं तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। नामे दुद्ध दिता कटोरा, कुटीआ आप सुहाइंदा। मैं तेरा तूं होया मोरा, भेव भाउ ना कोए जणाइंदा। मैनूं सोहणा लग्गा बांका छोहरा, नंनी नंनी गुफ़तार सुणाइंदा। मैं बणन वाला तेरा घोड़ा, आपणी पीठ तोहे उठाइंदा। तेरा मेरा जुड़या जोड़ा, पुत्तर धी ना मंग मंगाइंदा। तुध बिन होर ना कोई लोड़ा, दर इक्को तेरा सुहाइंदा। जे नहीं मिलणा जवाब दे दे कोरा, वल छल ना कोए रखाइंदा। तेरी मेरी इक्को डोरा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। तेरे उत्ते मेरा ज़ोरा, तेरा ज़ोर मेरा अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाइंदा। नामे रंगा रंग गुलाला, हरि जू आख सुणाईआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, मेरा भेव कोए ना पाईआ। जन भगतां पिच्छे हो हो फिरां बेहाला, बेहबल आपणा रूप वटाईआ। आपणा कर के लोकमात मूँह काला, जन भगतां उज्जल दयां कराईआ। नामे तेरी बणावां सच्ची पाठशाला, आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण रिहा जणाईआ। नामा कहे सुण छोटे बाले, बाली बुध तेरी वड्याईआ। किस बिध बणे मेरी धर्मसाले, कवण बाडी दए बणाईआ। इट्टां गारा ना कोई शहितीर बाले, सेवक कोए नज़र ना आईआ। पिओ पुत्त असीं दोवें कंगाले, धन्न दौलत ना कोए रखाईआ। कौण नामे पिच्छे घालण घाले, मेरी छप्परी दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रुद्द के नामे कोलों पल्ला छुडाईआ। पुरख अबिनाशी निरगुण रुद्द, सरगुण मुख भुवाया। मैं फिर के आवां चारे कुण्ट, दहि दिशा वेख वखाया। कोई साहिब जे पए तुट्ठ, तेरा छप्पर दए बणाया। तेरे कोल ना आ के मारां झूठ, सच सच दयां सुणाया। तेरा लेखे लावां दुद्ध पीता घुट्ट, सीर तकसीर नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नामे कोलों मुख छुपाया।

१८८

११

नामा रातरी गया सौं, नींदर नैणां विच आईआ। पुरख अबिनाशी दर दुआरे रिहा भौं, दिस किसे ना आईआ। भगत वड्याई हरि का गौं, बिन भगत हरि ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रैण साची सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को रात, आपणे लेखे पाइंदा। भगत देवे साची दात, वंडणहारा आप वंडाइंदा। आपणी उत्तम करी ज़ात, भगतां नाम सलाहइंदा। बहत्तर वार करामात, निहकर्मी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। इक्को रात बहत्तर रूप, पारब्रह्म वटाईआ। नामे कारज करया सूत, छप्पर छन्न सुहाईआ। आपे ताणा पेटा सूत, आपे कपड़ रिहा हंढाईआ। आपे पिता आप पूत, आपे सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची छप्परी दए बणाईआ। साची छप्परी बणी छन्न, संसा हरि चुकाया। नामा मन गया मन्न, मन मनसा मोह मिटाया। धन्न भाग मेरा साहिब गया मन्न, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। पुरख अबिनाशी अग्गों राग सुणाया इक्को कन्न, अनादी नाद अलाया। बहत्तर नाड़ कर प्रकाश, चढ़ाया चन्न, नूरो नूर डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। नामा अग्गे करे सवाल, सुण सज्जण मेरे मीत। किस बिध खेल करी कमाल, मेरी परख ना सके नीत। कवण रूप बण दलाल, साची वस्त ल्यांदी ख़रीद। कवण बाढी कर त्यार, चार कुण्ट रखाई सीध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं तेरी करां ओहो दीद। आपणा रूप दस्स निरँकार, जिस बिध मेरी छप्पर छुहाईआ। जे ना दस्सें रोवां ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। रातीं सुत्तयां कीता प्यार, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। मैं चाहुंदा तेरा वेखां सच विहार, जिस कारन भगतां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। मेरा भेव ना पुच्छ बाल, हरि सतिगुर आप सुणाइंदा। सब दे सिर ते कूके काल, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जन भगतां पिच्छे घालण घाल, आपणी सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, नाम दलाली इक्क रखाइंदा। लेखा जाण शाह कंगाल, सब दा लहिणा झोली पाइंदा। तेरे मन्दिर दीपक दिता बाल, लोकमात ना कोए बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप छुपाइंदा। नामे अग्गों कर लई ज़िद, इक्को मंग मंगाईआ। आपणे मिलण दी दस्स दे बिध, कवण बिध लएं मिलाईआ। कवण रूप कारज कीता सिद्ध, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। मेरा भेव ना जाणे कोए, हरि हरि आख सुणाइंदा। निरगुण रूप हर घट सोए, नेतर नैण नज़र ना आइंदा। लख चुरासी फड़ फड़ कोहे, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जन भगतां जुग जुग देवे ढोए, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। साचा बीज

सति सतिवादी आपे बोए, फुल फलवाड़ी आप महकाइंदा। आपणे जिहा आपे होए, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। गुर अवतार दे दे गए घोए, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कर किरपा जिस मुख अमृत चोए, तिस सांतक सति कराइंदा। अन्तिम सारे गए रोए, नेत्र नैणां नीर वखाइंदा। कोई बणन मालक त्रै त्रै लोए, त्रिलोकी नाथ सोभा पाइंदा। कोई अठसठ मुखड़ा रिहा धोए, नेत्र ज्ञान ना कोए खुल्हाइंदा। कोई मन्दिर मस्जिद मट्ठ बैठे बूहे ढोए, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाइंदा। कोई शरअ शरीअत डुब्बे डूँघे खूहे, पार किनारा ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को तत्त आप जणाइंदा। नामे सुण ला साचा तत्त, हरि तत्तव आप जणाया। मेरी सिख्या ब्रह्म मति, पारब्रह्म मिलाया। मेरी बिन्द साची रत्त, भगत नाउँ वड्याआ। जुग जुग रखां मात पत, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपणे ख़ज़ाने लवां घत्त, दूसर हट्ट ना किसे विकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा छुपाया। नामा कहे जे तेरा भगत, क्यों पर्दा रिहा रखाईआ। जे बालक मैं तेरी रक्त, क्यों पूंजी रिहा छुपाईआ। हुण मिल्या फेर शायद लभ्भे ना वक्त, बिन पुच्छयां जाण ना देईआ। तूं वल छल कर के भुलाया सारा जगत, तेरा भगत तेरी बैठा ओट तकाईआ। तूं आपणी दस्स दे हरक्त, जिस बिध मेरी छप्परी छाईआ। मैं जाणां सारी तेरी बरक्त, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। किस कारन घड़ी घड़त, घड़ घड़ आपणा रंग वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा जणाईआ। श्री भगवान कहे सुण नामे, इक्को शब्द सुणाया। तेरे घर हुण बणया सेव कमाई वांग कामे, जगत मज़ूरी ना कोए रखाईआ। तेरे रातीं सुत्तयां धारे बहत्तर जामे, दर तेरे सेव कमाईआ। ख़ुशी ख़ुशी गाउँदा रिहा गाणे, आपणा गीत आप अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द रिहा समझाईआ। बहत्तर जामे वेस वटाया, एका रैण मिली वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण रंग चढ़ाया, घर साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड निवासी सेव कमाया, लोकमात फेरा पाईआ। नेत्र नैणां किसे दिस ना आया, बैठा मुख छुपाईआ। तेरी छप्परी रिहा बणाया, सीस महल्ल ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। नामा कहे मैं पढ़े वेद पुराण, शास्त्र सिमरत खोज खुजाया। किसे विच्चों मिल्या ना तेरा कोई निशान, रूप रंग नज़र ना आया। अक्खर कहिण श्री भगवान, अंग अंग नाल मिलाया। पढ़ पढ़ थक्की मेरी ज़बान, मापिआं ज़बरदस्ती पढ़ाया। अज्ज सुणी तेरी कलाम, कलमा इक्को मोहे भाया। नामे मिल्या तेरा नाम, नामा तेरे रंग समाया। तेरे दरस पीता जाम, तृष्ना भुख रहे ना राया। मैं बरदा तेरा ग़ुलाम, सद तेरी सेव कमाया। मैं वेखां तेरा सच नज़ाम, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका मार्ग, रिहा समझाया। नामे मेरी महिमा छत्ती राग, मिल मिल मंगल गाईआ। इक्को इक्क सर्ब वैराग, वैरागी इक्क रखाईआ। गा गा कोई ना करे त्याग, त्रैगुण सब दे उपर पाईआ। जन भगतां सुणे आप फ़रयाद, फ़र्ज जुरम ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे जुगादि आदि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सुरस्ती सुत नारद वजाया नाद, छत्ती रागां रसना जिह्वा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दयां समझाईआ। छत्ती राग करन पुकार, रागनीआं नाल मिलाईआ। कोई ना मिले हँस हँसां डार, कागी काग नज़री आईआ। जुग जुग सुणदा रहे फ़रयाद, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। छत्ती जुग लडाया लाड, हरिभगत करे कुड़माईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आपणी गोद बहाईआ। तेरी छप्परी रखे याद, छन्न इक्को इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण रिहा वखाईआ। सुण नामे मेरी बात, हरि बातन आप जणाइंदा। आदि जुगादि बैठा रहां इक्क इकांत, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। जन भगतां देवां नजात, निज घर आपणा फेरा पाइंदा। आपणा नाउँ सुणावां गाथ, इक्को पट्टी नाम पढ़ाइंदा। एथे ओथे देवां साथ, सगला संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नामे एका गुण जणाइंदा। नामे सुण अन्तर, अन्तरीव आप जणाईआ। साहिब दयाल दा इक्को मन्त्र, गुरू अवतार मन्त्री लए बणाईआ। जुग जुग देवे आपणा जंतर, तन काया अंदर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा वखाईआ। नामे सुण साहिब दा हाल, बेहाल आप सुणाइंदा। करे खेल दीन दयाल, दीनन आपणी गोद बहाइंदा। सदा सदा करे प्रितपाल, प्रितपालक वेस वटाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, आप आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग छत्ती वेख वखाइंदा। छत्ती जुग दा छत्ती राग, छे तीस दए वड्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल तमाश, खेलणहारा वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण नूर कर प्रकाश, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ। नामे कलयुग अन्तिम आउणा, हरि साचे सच जणाया। तेरा लहिणा झोली पाउणा, लेखा लेखा दए मुकाया। आपणा रूप फेर वखाउणा, अनूप खेल कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाया। कलयुग अन्तिम बहत्तर जामे, आपणा रूप वखाईआ। करे खेल श्री भगवाने, भगवन आपणी धार चलाईआ। तेरी छप्पर जगत निशाने, इक्को इक्क वखाईआ। दर दर घर घर गाउँदे गाणे, प्रभ नामे दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम जामा पा, जन भगतां सेव कमाईआ। बहत्तर रूप लए वटा, बहत्तर नाड़ी कर रुशनाईआ। छत्ती जुग दा

लहिणा दए चुका, छत्ती राग भेव ना आईआ। छे तीस पन्ध मुका, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। तेरा मन्दिर दिता आप सुहा, रैण नज़र किसे ना आईआ। कलयुग खेल करे बेपरवाह, बण सेवक सेव कमाईआ। जन भगत दुआरा दए बणा, लोकमात दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नामा कहे सुण हरि भगवान, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। कर किरपा देणा दान, मैं इक्को मंग मंगाईआ। कलयुग तेरा अन्तिम वेखां आण, तेरे नाल होए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ख़ाली झोली दए भराईआ। दे वर मेरे करतार, तेरे अग्गे वास्ता पाया। तूं भगतां मीत मुरार, विछड़ कदे ना जाईआ। रातीं सुत्तयां मेरी छन्न कीती त्यार, सेवा करदा नज़र ना आया। मैं वेखां कलयुग अन्तिम वार, कवण बिध भगतां होएं सुहाया। बहत्तर रूप किवें धरें विच संसार, जोती जोत डगमगाया। छत्ती जुग दा लहिणा देवें किवें उतार, छत्ती राग मोह तुड़ाया । कवण सोहे बंक दुआर, गृह मन्दिर मिले वड्याआ। सेवा करे आप निरँकार, बण बण सेवक सेव कमाया। बहत्तर नाड़ी पार किनार, छत्ती जुग दा पन्ध मुकाया। छत्ती दिवस विच संसार, बण महांसारथी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नामा इक्को मंग मंगाया। सुण नामे मेरे लाडले सुत, सुत्तयां तेरी खेल रचाईआ। कलयुग सुहाउणी साची रुत्त, रुत्तड़ी आपणा रंग वटाईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुत्त, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सचखण्ड दा बूटा लोकमात लाए पुट्ट, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। पंज तत्त काया विच्चों मर के फेर जाए उठ, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। कर किरपा जाए तुठ्ठ, रूप अनूप आप वखाईआ। बाहरों दिसे पंज तत्त काया बुत्त, अंदर बैठे सच्चा माहीआ। जे कोई अग्गों लए पुच्छ, रसना कह ना किसे समझाईआ। आपणे कोल ना रखे कुछ, जन भगतां दए वड्याईआ। तेरा छप्पर छुहाया लुक, जन भगत दुआरा आपणी हथ्थीं दए बणाईआ। आपणी साखों आपे फुट्ट, पत डाली आप लहराईआ। जुग चौकड़ी रिहा गुपत, नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त भगत खाणी बाणी हरि की करदी रही सिफ्त, सिफ़रा सब नूं दए वखाईआ। दोए दोए जोड़ रहे विलक, प्रभ अग्गे वास्ता पाईआ। कोटन कोटि चढ़ के गए तिलक, दर दुआरा नज़र ना आईआ। कोटन कोटि डर के गए खिसक, हरि का भय सहि ना सके कोए राईआ। कोटन कोटि रख के गए इष्ट, गुर गुर ध्यान लगाईआ। करते खेल रचाया सृष्ट, सृष्टी आपणे धन्दे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नामे दए समझाईआ। सुण नामे अगली बात, हरि इक्को इक्क जणाइंदा। भगतां संग मेरा साक, दूजा सैण ना कोए रखाइंदा। भगत दुआरा मेरा ताक, दूजा कुंडा ना कोई लाहइंदा। भगत पढ़ाई मेरा वाक, दूजा अक्खर

ना कोए सुणाइंदा। भगत प्यार मेरा घाट, दूजा किनारा ना कोए रखाइंदा। भगतन मेला मेरी वाट, जुग जुग पन्ध मुकाइंदा। बिन भगतां मेरी कोई ना पुछे वात, हरि जू कम्म किसे ना आइंदा। नामे तेरी इक्क रात, कलयुग अन्तिम छत्ती जुग दा लेख चुकाइंदा। बहत्तरां देवे एका साथ, बण साथी संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआरा हरि बणाउणा, बल बावन नाल रलाया। पिछला लेखा सर्ब मकाउणा, शिव शंकर दर मंगाया। इन्द इन्दरासण मेट मिटाउणा, हुक्मी हुक्म वरताया। ब्रह्मा अन्तिम पन्ध मुकाउणा, ब्रह्म वेता दऐ समझाया। धू लेखा झोली पाउणा, दर आपणे दए वड्याआ। साचा खेल आप कराउणा, ख़ालक ख़लक वेख बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण रिहा जणाया। कलयुग अन्तिम खेल अवल्ला, इक्को इक्क कराईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, निरगुण रूप धराईआ। पावे सार जला थला, डूँघी कंदर वेख वखाईआ। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, लख चुरासी फोल फुलाईआ। महल्ल बणाए इक्क अटल्ला, अटल्ल दए वड्याईआ। बल संदेश एका घल्ला, हुक्मी हुक्म फिराईआ। लोकमात आया झल्ला, आपणी झलक जणाईआ। अन्तिम जोती जोत रला, रल मिल खुशी वखाईआ। साहिब ठाकर तेरा फड़या पल्ला, फड़या लड़ छुट्ट ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाईआ। तिन्न जुग तीजे लोक, सितल डेरा लाया। नैण मूंद तेरा सुणदा रिहा सलोक, कन्न ध्यान लगाया। इक्को तेरी रखी ओट, एका आस वखाया। अन्तिम मिलणा निरगुण जोत, जोती जोत लए मिलाया। साचे मन्दिर बहणा किले कोट, कंचन गढ़ इक्क वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पाताल लोक वेस वटाया। सितल लोक तेरी रखी आस, नेत्र नैण तरसाईआ। कवण वेला मेरी बुझे प्यास, पीआ प्रीतम लए मिलाईआ। तेरे लेखे लग्गे स्वास, स्वांती बूंद मंग मंगाईआ। लहिणा तुट्टे पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशा पार कराईआ। मैं तेरा बण के रहां दास, नित नवित तेरी सेव कमाईआ। तूं पातशाहां दा पातशाह, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी पूरी आस कराईआ। तिन्न जुग बीते तेरी याद, तैनूं याद मेरी ना आईआ। मैं सुणया तूं सुणदा भगतां फरयाद, मेरी फ़रयाद तेरे कन्न किसे ना पाईआ। मैं जाणां तूं भगतां करें लाड, आपणी गोद बहाईआ। कर किरपा मैनूं सितल लोक चों काढ, वितल वेखे दए दुहाईआ। कोटन कोटि भार गए लाद, आपणा पन्ध मुकाईआ। निरगुण सुणा आपणा नाद, तेरे नाद वज्जे वधाईआ। आदि जुगादी पुरख पुरखोतम खेले खेल विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह प्या तेरी शरनाईआ। देवे वर श्री भगवन्त, आपणी

दया कमाइंदा। लोकमात बणाए बणत, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मिले वड्याई विच जीव जंत, लख चुरासी मोह चुकाइंदा। अन्त लेखे लाए तेरा अन्त, भगवन्त खेल कराइंदा। तेरी चोली चढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। हरि का भेव ना पाए कोई पंडत, चौदां विद्या मुख भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप समझाइंदा। कलयुग अन्त जे करें प्यार, एका अर्ज़ मेरी अरज़ोईआ। सतिजुग तख्तों दिता उतार, सितल लोक दिता बहाईआ। तिन्न जुग विछोड़ा झल्लया मेरे यार, तेरी आस तकाईआ। अन्त मेलें विच संसार, मेल मिलावा आप कराईआ। मैं शाहां दा शाह सरदार, तेरी सरदारी मोहे भाईआ। अन्तिम जावां तेरे चरन दुआर, हड्डीआं बालण मात जलाईआ। तिन्न जुग दी कूड़ी कार, तिन्न तिन्न दे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी लैणी मन्न अरज़ोईआ। मन्नीं अरज मेरी अरदास, अर्शी प्रीतम प्यारे। मैं वसां तेरे पास, तेरे वेखां खेल न्यारे। तेरे मंडल वेखां रास, गोपी काहन बणे नचारे। तूं भगतां पुजाएं आस, तेरे नाउँ बणन वणजारे। तूं रूप वटाएं साख्यात, सखी सरवर मेरी सरकारे। तेरा प्रकाश होए कायनात, नौ खण्ड तेरे जैकारे। हरिभगत लँघण आपणे घाट, अन्तिम लेखे कलयुग किनारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श चरन प्यारे। पुरख अबिनाशी अग्गों बोल, एका सुखन सुणाया। साचे कंडे तोलां तोल, बण के तोला वेख वखाया। हरिभगत साचे लवां वरोल, लख चुरासी मधाणा पाया। सच दुआरा देवां खोल, एका वणज कराया। जन भगतां उत्तों आपा घोल, आपणा सीस भेंट चढ़ाया। निरगुण बण के रहां अडोल, ना मरां ना जाया। सदा सदा सद वसां कोल, घर घर सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाया। मेरी निमस्कार मेरे सतिगुर, चरन कँवल शरनाया। भगतां मेला रखे धुर, धुर दी बाण जणाया। कलयुग अन्तिम वेखे चढ़ के घोड़, शब्दी घोड़ा इक्क दौड़ाया। दो जहानां लाए पौड़, आपणा डण्डा आप उठाया। लख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़, घर घर फेरा पाया। जन भगतां जाए बौहड़, रातीं सुत्तयां लए उठाया। जन्म जन्म दी बुझाए औड़, अमृत मेघ बरसाया। नामे वखाउणा नाल गौर, नेत्र नैण खुल्हाया। पुरख अबिनाशी जन भगतां दुआरे फिरे बण बण भौर, भौरा हो हो गूंज गुंजाया। हरिभगत बणाए सुत दुलारे कौर, शाह पातशाह वेस वटाया। आपणे हथ्थ रखे डोर, डोरी आपणे तन्द बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाया। हरिजन मिल के किथे बहण, एका दे समझाईआ। कलयुग होई काली रैण, घर घर दए दुहाईआ। माया राणी बण बण डैण, साधां सन्तां रही खाईआ। जे कोई अग्गों आए लैण, दर बैठी खुशी मनाईआ। ना कोई भाई ना कोई भैण, साक

सैण ना कोए अख्वाईआ। ना कोई नेत्र ना कोई नैण, अक्ख प्रतख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार देणा वर, कवण घर लएं बहाईआ। साचा घर हरि बणाउणा, बणत आपणी आप जणाइंदा। बहत्तरां आपणा रूप वखाउणा, सत्तरां गंढु पुवाइंदा। चुहत्तरां जगत आप रुशनाउणा, एका रोशनी नूर वखाइंदा। पंचम पंचम रंग चढ़ाउणा, सच मृदंग सुणाइंदा। चार चार दी गंढु पवाउणा, बद्धी गंढु ना कोए खुल्हाइंदा। हरिसंगत इक्क अनन्द रखाउणा, अनन्द आपणा नाम जणाइंदा। कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाउणा, छत्ती राग भेव ना पाइंदा। छत्ती जुग दा लेख मुकाउणा, शाह पातशाह मूल मुकाइंदा। भगत दुआरा इक्क सुहाउणा, हरि साचा सेव कमाइंदा। गुरमुख साचे सेवा लाउणा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा आप सुहाइंदा। पहलों बणाए भगत दुआर, आपणी सेव कमाईआ। दूजे बणे पहरेदार, रातीं उठ उठ वेख वखाईआ। तीजे वाजां लवे मार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। चौथे घर देवे वाड़, प्रभ मेला सच्चे माहीआ। पंचम खेल करे न्यार, पंच मोह चुकाईआ। छेवें छप्पर कीता त्यार, नामे छप्परी आप छुहाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण साची कार, भगत दुआरे आप वखाईआ । हरिजन साचे अंदर वाड़, नौ दुआरे पन्ध चुकाईआ। तिन्नां लोकां चरनां हेठ लताड़, उपर आपणा आसण लाईआ। छब्बी पोह दिवस विचार, गुर अवतारां लए बुलाईआ। आओ वेखो आपणे यार, जो यारी रहे निभाईआ। सब नूं लहिणा देणा पए विच संसार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। भगतां हरि जू सेवादार, नेत्र वेख सेव कमाईआ। पहली कीती सब दी वेखे घाल, कीती घाल लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरे दए वड्याईआ। भगत दुआरे मिलणा माण, माणस देवत सर्ब सालाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। गुर अवतार वेखण भगतां संग वसे भगवान, अठ्ठे पहर संग रखाईआ। चलो मिल के मंगीए दान, जे कुछ देवे झोली पाईआ। चार जुग बणे रहे अञ्याण, हरि आपणा बैठा भेव छुपाईआ। कोई कहे राम कृष्न भगवान, मरे मर जम्मे मिटी ख़ाक समाईआ। कोई कहे ईसा मूसा दए पैग़ाम, पैग़म्बर नूर इलाहीआ। कोई कहे मुहम्मद प्याए जाम, आबेहयात उठाईआ। कोई कहे नानक करे कर्म, नेहकामी काम कराईआ। कोई कहे गोबिन्द पकड़े दाम, दामनगीर अख्वाईआ। नानक सब नूं ला के गया इलज़ाम, बिन हरि कोई रहिण ना पाईआ। जुग जुग करदे रहे कलाम, जो हरि जू रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त वेख वखाईआ। आदि बणाया आपणा दुआरा, अन्त भगतां दए वड्याईआ। लोकमात तक्कया इक्क सहारा, जन भगतां ओट रखाईआ। घर जम्मया आप तरखाणा, तिक्खी धार आपणी चलाईआ। आपणी रसना बणाई

साणां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। उठो वेखो करो ध्यान, वड ध्यानी आप जणाइंदा। भगत दुआरा लओ पछाण, दो जहानां आप जणाइंदा। दीपक जगे इक्क महान, तेल बाती ना कोई रखाइंदा। जिस दे गाउँदे गए गाण, सो भगतां सोहले गाइंदा। जिस दा रखदे आए माण, सो भगतां ओट तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा आप सुहाइंदा। भगत दुआर करी जिस सेवा, तिस सिमरन ना कोई कराईआ। अमृत फल खुवावे मेवा, आपणी हथ्थीं चोग चुगाईआ। किरपा करे अलख अभेवा, अभेद अभेव जणाईआ। हरि साहिब दयाल वड देवी देवा, दीनन आपे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लए तराईआ। भगत दुआरे जो आया चल, छत्ती दिवस दए वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रहे हल्ल, सब दी रिहा जड़ उखड़ाईआ। हरिसंगत हरि चरन दुआरा बैठी मल्ल, मल खेप रही धुआईआ। ब्रह्म प्यार अंदर गए रल, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। किसे ने सीस उठाई डल, कोई कहीआं रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा लेखे लाईआ। भगत दुआरे जो जन आया, तिस लहिणा झोली पाइंदा। जिउँ नामे हरि जू छप्पर छाया, तिउँ भगतां महल्ल छुहाइंदा। गुपत ज़ाहर खेल कराया, भेव कोए ना पाइंदा। फड़ के बाहों पार कराया, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। उच्चा चढ़ के वेख वखाया, गुरसिख भुल्ल कोए ना जाइंदा। तिन्नां लोकां चरनां हेठ दबाया, उपर आपणा भार जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे नाल मिलाइंदा। आओ भगतो रल मिल वसीए, असचरज खेल अपार। इक्क दूजे नूं आपणा हाल दस्सीए, निरगुण सरगुण कर प्यार। जगत माया चरनां हेठ झस्सीए, दुक्खड़ा रहे ना कोई दिन चार। मनमुखां कोलों उठ उठ नट्ठीए, वसीए सच दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत करे आधार। उठो सिखो जाईए भज्ज, भजन बन्दगी ना कोए रखाइंदा। ना कोई आचार ना कोई चज्ज, इक्को आपणा दरस कराइंदा। नेत्र करो साचा हज्ज, मक्का काअबा मुख शरमाइंदा। पुरख अबिनाशी रखे लज्ज, वेले अन्त गोद बहाइंदा। हरिसंगत पर्दा लए कज्ज, नाम दोशाला इक्क उठाइंदा। इक्को घर बहणा सज, साचा राह आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा आप वड्याइंदा। भगत दुआरे जिस जन वड़ना, वड्डी भरन कोए ना जाईआ। कर दरस इक्को वार तरना, बंध ना कोए पाईआ। चरन सरन वखाए साची शरना, सरनगति बेपरवाहीआ। गुरमुख आपणे जिहा करना, हरि सतिगुर दया कमाईआ। जन्म मरन दा चुक्के डरना, लाड़ी मौत ना भय वखाईआ। सतिगुर दुआरे हरिजन खड़्ना, दर घर साचे मिले वड्याईआ। एथे ओथे दो जहान पुरख अबिनाशी अग्गे किसे

ना अड़ना, आपणा बल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा आप वसाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सेवक सेवक सेवक सेवादार सेव कमाईआ।

हरिसंगत लए प्रभू परदखणा, प्रतख रूप वटाईआ। बिन तुहाढे प्यार फिरे सक्खणा, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। तुसां पर्दा मेरा ढकणा, एका ओट रिहा तकाईआ। छत्ती जुग दा रंडेपा मेरा कटणा, मैं सहि ना सकां जुदाईआ। तुहाढे पिच्छों कदी ना हटणा, भावें लड़े सर्ब लोकाईआ। स्वांगी स्वांग रचाया बण बण नटना, नट्ठूआ बण बण सेव कमाईआ। इक्को नाम तुमारा रटणा, रट रट आपणी खुशी मनाईआ। इक्को लाहा साचा खटणा, भगत दुआरे सेव कमाईआ। जिस नूं कहिन्दे जम्मया पटना, पुरी अनन्द गया वसाईआ। उस गुरमुखां कोलों कदे ना नट्ठणा, आपणा पल्ला रिहा फड़ाईआ। आपणी हथ्थीं लगावे वटना, गुरमुख साचा रंग चढ़ाईआ। काया चोला सब दा फटणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ। आओ सिखो लईए फेरे, फेरी हरि जू पाईआ। शरअ शरीअत चुक्के झेड़े, झेड़ा जगत रिहा मुकाईआ। आओ वसीए साचे खेड़े, साचा खेड़ा आप बणाईआ। हक़ो हक़ करे नबेड़े, हक़ हक़ीक़त वेख वखाईआ। साधां सन्तां पाए डेरे, चारों कुण्ट पई लड़ाईआ। कोई ना चाढ़े साचे बेड़े, जगत नईआ सर्ब चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे रिहा समझाईआ। आओ सिखो बणाईए बणत, इक्क दूजे नाल प्यार। इक्क दूजे दे बणो कन्त, आपे पुरख आपे नार। तुहाढी डोली चुक्के भगवन्त, बणे मात कहार। आपणी महिमा सुणाए अगणत, लावां पढ़े इक्को वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। चौथी लांवा पुरख अबिनाशी पाया, गुरमुखां वज्जी वधाईआ। हरि जू घर व्यावण आया, होई मात कुड़माईआ। साची डोली नाल ल्याया, एका रंग रंगाईआ। साचा भूशन दए पहनाया, आप आपणा दए समझाईआ। साचा कंगन हथ्थ उठाया, वेखे सर्ब लोकाईआ। साचा चन्दन तिलक लगाया, चन्द चांदनी शरमाईआ। सौहरे पेईए साचा छन्दन इक्को गाया, सोहँ ढोला राग सुणाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढुन आया, आपणे पल्लू नाल बंधाईआ। जगत रंडेपा खण्डन आप कराया, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। आपणा पैंडा आप मुकाया, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड दुआरा आप सुहाया, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दिवस दए वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रचना आप रचाईआ।

हरिसंगत तेरा सच प्यार, पारब्रह्म प्रभ आप निभाईआ। आपणे सिर तों लाह दस्तार, गुरमुखां सिर टिकाईआ। केसां चवर करे विच दरबार, धूढ़ी आपणे मस्तक लाईआ। जुग जन्म दा रोग निवार, चिंता सोग दए मिटाईआ। हरख सोग तों करे बाहर, आपणा रंग दए चढ़ाईआ। लोक परलोक दए सहार, सिर उत्ते हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणा सीस ताज रखाईआ। गुरसिख बणे सिर दा ताज, शाह पातशाह आप बणाइंदा। गोबिन्द गया साजन साज, सच रंग आप चढ़ाइंदा। फेर बणे ग़रीब निवाज़, बण ग़रीब सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां माण रखाइंदा। भगत साचा माण ताण, हरि जू आप बणाईआ। भगत मेरा पीण खाण, तृष्ना भुख मिटाईआ। भगत मेरा नाद गान, राग रागनी रहे शरमाईआ। भगत मेरा मन्दिर मकान, जिस घर वसां चाँईं चाँईंआ। भगत मेरा धूढ़ अशनान, आपणी झोली पाईआ। भगत मेरा नाता दो जहान, दूजा संग ना कोई जाईआ। भगत भगवन्त रल मिल बहण जिउँ गोपी काहन, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। भगत अन्त लगाया इक्क निशान, जगत निशाना आप बणाईआ। देवत सुर सारे गान, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। गुर अवतार कर ध्यान, वाह वाह भगत तेरी वड्याईआ। जिन्हां मिल्या आप भगवान, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां आप तराईआ। गुरमुख तेरी सिफ्त निशानी, लोकमात वखाईआ। पिच्छों सारे गाउँदे कहाणी, वेला वक्त सर्ब गंवाईआ। पिच्छों सारे पढ़न बाणी, की सतिगुर गया समझाईआ। छाछ विरोलण जगत पाणी, मक्खण हथ्थ किसे ना आईआ। धन्दे ला ला जाए चार खाणी, आपणी ख़ाहिश ना किसे समझाईआ। गुरमुख लभ्भे सच्चा हाणी, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ।

जिस कारन हरि आया मात, सो कारन दए समझाईआ। हरिसंगत साची दयो दात, प्रभ झोली रिहा डाहीआ। भगत दुआरा वेखां मार झात, आपणा नैण उठाईआ। लख चुरासी दिसे झूठा साक, अन्त संग कोई ना जाईआ। मैं आपणा कर के आया घात, रूप रंग ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रिहा मंग मंगाईआ। दयो मंग दरस दान, दाता हरि मंगाइंदा। मैं भगत दुआरा वेख्या आण, जुग जुग ख़ुशी मनाइंदा। मेरी सेवा करन परवान, बण परवाना आपणा आप जलाइंदा। दिवस रैण गावां गाण, गुरमुख भुल्ल कदे ना जाइंदा। कलयुग मिल्या हाणी हाण,

गुरमुख मुख मोहे भाइंदा। सृष्ट सबाई होई गलतान, आप गैर रूप वटाइंदा। घर घर दरोही फिरी शैतान, शरअ ज़ंजीर ना कोई कटाइंदा। गुरमुख विरला करे ध्यान, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। आउणा जाणा करना परवान, परम पुरख मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआर वजाए मृदंग, मृदंगा आपणे हथ्थ रखाइंदा।

★ २५ मग्घर २०१८ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे नवित जेठूवाल दरबार विच ★

निरगुण रचया आपणा काज, जन भगतां पैज संवार। नामे तेरी रखी लाज, कलयुग अन्तिम वार। वेस वटाया ग़रीब निवाज़, हरिजन लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। नामे हरि जू दिता दरस, दहि दिशा दए वखाईआ। तेरी करे पूरी आस, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। साची दिती इक्को रास, निरगुण आप वरताईआ। जन भगतां करे बन्द खुलास, बन्धन आपणा आपे पाईआ। जन्म जन्म दी मिटाए प्यास, तृष्ना भुख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नामे झोली पाईआ। नामे उठ मार ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरी छप्परी जगत निशान, भगत दुआरा आप सुहाइंदा। निरगुण वेखे आपे आण, भेव कोए ना पाइंदा। जिस जन देवे आप ज्ञान, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए हैरान, हरि का भेव कोई ना आइंदा। चारे खाणी बाणी नैण शरमाण, नेत्र नैण ना कोई उठाइंदा। माण तुट्टा जगत ज्ञान, ध्यान ध्यान ना कोई जणाइंदा। रसना बोले ना कोई ज़बान, ज़रा ज़रा सर्ब कटाइंदा। अन्तिम सब दी वेखे कल्याण, दो जहानां फोल फुलाइंदा। जन भगतां देवे साचा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपणे दर कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात झुलाइंदा। दर्दीआं दर्द वंडे आण, दुःख दर्द आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को छप्पर लेखे लाइंदा। नामे तेरा इक्को छप्पर, तैनूं दए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी आपणा वेखे एका टब्बर, बहत्तर भगत मेल मिलाईआ। नाल रला के सिँघ शेर बब्बर, एका भबक रिहा लगाईआ। नेत्र रोवण ज़िमीं असमान अम्बर, नीर नीर वहाईआ। धीरज करे ना कोई सबर, सफ़ा सब दी रिहा उठाईआ। निरगुण हो के लग्गा मगर, नज़र किसे ना आईआ। उच्चे टिबिउँ करे पध्धर, जन भगतां करे सफाईआ। जन भगतां पूरी करे सधर, साख्यात दरस दिखाईआ। दर घर आयां देवे आदर, आदरश इक्क जणाईआ। लेखे लग्गा खून तेग बहादर हरि बहादरी रिहा वखाईआ। गोबिन्द सूरा बण बण सागर, गुरमुख सरोवर रिहा नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर दए

वड्याईआ। उठ नामे नेत्र खोल्ह, नैण नैणां आप जणाईआ। चारों कुण्ट वज्जा ढोल, लख चुरासी रिहा सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ बोलया बोल, जन भगतां रिहा सुणाईआ। जिस दे पिच्छे सृष्ट सबाई नाल करदे रहे घोल, सो गुरमुखां उत्तों आपा आप घोल वखाईआ। निरगुण बण बण वसे कोल, सरगुण लए मिलाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रखदा रिहा पर्दा ओहल, कलयुग देवे लाहीआ। लख चुरासी आप विरोल, हरिजन साचे लए कढ्ढाईआ। एथे ओथे रखे अडोल, अडुल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नामे एका गुण जणाईआ। नामा अग्गों प्या हस्स, हस्स हस्स खुशी मनाइंदा। तूं जुग जुग भगतां कोलों आया नस्स, छिन्न छिन्न आपणा रूप वटाइंदा। कलयुग अन्तिम गया फस, राह खैहड़ा नज़र कोए ना आइंदा। आपणी करनी गया ढट्ठ, करता पुरख आपणा ज़ोर ना कोए जणाइंदा। जुग जुग करदा रिहा हठ, सगला संग ना कदे निभाइंदा। भगत तेरी माला रहे रट, रट रट पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कलयुग खेल कीआ समरथ, समरथ धार चलाइंदा। जुग जन्म दे विछड़े लए रख, आप आपणा रंग रंगाइंदा। कर किरपा मेलया हथ्थ नाल हथ्थ, हथ्थो हथ्थ खेल कराइंदा। इक्क सुणाई साची गाथ, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। इक्क वखाया तीर्थ तट, सर

१६६ सरोवर आप नुहाइंदा। निरगुण रूप हो प्रगट, प्रभ आपणा वेस वटाइंदा। जन भगत दुआरा खोल्ह हट्ट, साचा वणज नाम १६६

११ कराइंदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद जाणे ढट्ठ, वेले अन्त ना कोए बचाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश अन्तिम बणने सारे जट्ट, ११

जाबर आपणा जोर वखाइंदा। मणका मणका माला कोई ना लए रट, अठोतरी इकोतरी ना गणत गणाइंदा। डूँग्घे खाते देवे सट्ट, फेर बाहर ना कोए कढाइंदा। एका नाम देवे वथ, आत्म परमात्म रंग रंगाइंदा। चार जुग चले जस, जस वेद पुराण अल्हाइंदा। सब दी करनी लए खस, करता आपणा हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार कह कह गए बस बस, बसता सब दा आप बंधाइंदा। लिख लिख मार्ग गए दस्स, अग्गे हो ना कोए उठाइंदा। पंज तत्त काया चोला छड्ड के गए नट्ठ, मुड़ के फेर कोए ना आइंदा। नानक कह के गया अंगद चरनी जाणा ढट्ठ, अंगद अमरदास राह वखाइंदा। अमरदास रामदास वसे घट घट, जोती जोत जोत जगाइंदा। राम दास अर्जण लाई अनहद सट्ट, शब्दी शब्द ताल वजाइंदा। अर्जन गोबिन्द अंदर हो प्रतख, हरि गोबिन्द खेल कराइंदा। हरिगोबिन्द हरिराय लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। हरिराय हरिकृष्न होया वस, पंज तत्त काया वंड वंडाइंदा। हरिकृष्न तेग़ बहादर अंदर गया डट, सृष्ट सबाई राह चलाइंदा। तेग़ बहादर आपणी वस्त पुरख अकाल दी झोली घत्त, लख लख शुकर मनाइंदा। गोबिन्द कहे पुरख समरथ, अजूनी रहित वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल वेख नामे, निरगुण आप वखाईआ।

तेरे पिच्छे बहत्तर जामे, जन भगत लए उठाईआ। आपे रखे आपणे खाने, दर आपणे बन्द कराईआ। आप सुणाए आपणे गाणे, गावणहार आप हो जाईआ। इक्क सतार वजाए जिउँ नानक संग मर्दाने, मर्द मर्दानगी आप वखाईआ। गोबिन्द सुट्ट के गया तिन्न कांने, तिन्नां तत्तां अग्नी लाईआ। वेले अन्त ना कोए पछाणे, नदेड़ वज्जी वधाईआ। करे खेल श्री भगवाने, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। मेरा रखे सच्चा माणे, अभिमान दए गंवाईआ। तख्तों लाहे राजे राणे, सब रइयत लए बणाईआ। गुर अवतार चलाए आपणे भाणे, जुग जुग लेखा वेख वखाईआ। जन भगतां करे आप पछाणे, वेखणहारा वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाईआ। नामा कहे तूं बेपरवाह, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जल थल खेल तेरा अस्गाह, समुंद सागर वेस वटाइंदा। जुगा जुगन्तर वेस वटा, रूप अनूप आप धराइंदा। गगन गगनंतर सोभा पा, रवि ससि नूर चमकाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वसा, आपणा आसण लाइंदा। लोकमात जोत जगा, वरभण्डी वेख वखाइंदा। जेरज अंडी फेरा पा, उत्भुज सेत्ज रंग चढ़ाइंदा। जन भगतां वासना गंदी दए कढा, एका आपणा नाम पढ़ाइंदा। साची चण्डी इक्क चमका, चण्ड चण्डोल मुकाइंदा। आत्मा रंडी लए प्रना, आपणे अंग लगाइंदा। डूँग्घी कन्ढी पार करा, डूँग्घा सागर वेख वखाइंदा। थक्की मांदी गले लगा, जन्म जन्म दे रोग गवाइंदा। बण बण पाँधी पन्ध मुका, आपणी मंज़ल आप वखाइंदा। जगत सुहागी छन्द एका गा, संसा रोग मिटाइंदा। बन्दीख़ाना आप तुड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर बहाइंदा। नामे वेख सच महल्ला, हरि साचे आप बणाया। भगतां जोती आपे रला, जोती जोत जोत समाया। सच संदेश इक्को घल्ला, नर नरेश आप सुणाया। कलयुग अन्तिम फड़ फड़ पल्ला, आपणे नाल बंधाया। जन्म जन्म दा मेटया सला, संसा रोग गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर आप वखाया। साचा दर खोल्ह दुआर, दामनगीर दया कमाईआ। आलमगीर ना करे कोए विचार, उल्मा इलम ना कोए वखाईआ। करे खेल आप करतार, निराकार सच्चा शहिनशाहीआ। सच महल्ला कर त्यार, त्रैगुण डेरा रिहा ढाहीआ। हरिजन साचे विच बठाल, पहरेदार आप हो जाईआ। नेड़ ना आए किसे काल, जम काल ना कोए सजाईआ। सदा सद करे प्रितपाल, प्रितपालक होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे आप सफाईआ।

जन भगतां देवे आप ज़मानत, साची ज़िमनी आप भराइंदा। कूड़ी क्रिया ना कोए अलामत, जूठ झूठ ना कोए वखाइंदा। चार जुग दी करी ना कोई ख्यानत, साची वस्त आप वखाइंदा। लख चुरासी देवे लाहनत, लाहनत तौक गल बंधाइंदा।

मनमुख जीव होए बेपहचानत, पहचान विच किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। भगतां देवे आप सफ़ाई, सफ़ा सब दी रिहा उठाईआ। आपणी अदालत आपे देवे गवाही, कोई लिखे ना कलम शाहीआ। इक्को वार लहिणा दए चुकाई, पिछला जुरम ना कोई वखाईआ। जन्म जन्म दी फाँसी दए कटाई, रस्सा आपणी हथ्थीं आप वढाईआ। बहत्तर सत्तर चुहत्तर मेल मिलावा सके भाई, इक्को पिता माण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत नाल मिलाईआ। जन भगतां अन्तिम करे इन्साफ, वाअदा खलाफ़ ना कदे अख्वाइंदा। लख चुरासी दो जहानां अंदर करके आया शगाफ़, आपणा राह ना किसे जणाइंदा। लख चुरासी साध सन्त जीव जंत किसे ना आवे भाख्या भाख, अनभउ दृष्टी कोए ना वेख वखाइंदा। सारे विके कलयुग हाट, कीमत करता ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप तराइंदा। जन भगतां करे साचा अदल, अदली अदल कमाया। जुग जुग आउँदा रिहा बदल बदल, आपणी बदली आपणे हथ्थ रखाया। आपे जाणे आपणी मंज़ल, मकसूद आपणा डेरा लाया। कर किरपा जिस नूं पावे आपणा कज्जल, तिस नेत्र दए खुल्हाया। कोटन कोटि कर के पज़ल, अन्तिम मूँह दे भार सुटाया। ख़ाली कीते वांग वञ्झल, साचा नाअरा ना कोए सुणाया। इक्को रखी आपणी आंझल, माया ममता मोह वधाया। आपणे घर लागे झूठी क्रिया रहिण ना देवे गवांढण, दूर दुराडी दए धकाया। गुरमुख नार होए सुहागण, जिस पतिपरमेश्वर इक्क प्रनाया। अठ्ठे पहर रहे वैरागण, बिरहों तत्त इक्क जणाया। गीत गाए सदा सुहागण, गोबिन्द ढोला इक्क अल्हाया। मेरा साहिब सुणे मेरी फ़रयादन, निरगुण निउँ निउँ चरनां सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां लए सालाहया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना गाया।

★ २६ मग्घर २०१८ बिक्रमी मनी राम, हरबंस सिँघ दे नवित जेठूवाल ★

धन्न वड्याई भगत जन, हरि सज्जण मेल मिलाया। धन्न वड्याई भगत जन, हरि सतिगुर सच्चा पाया। धन्न वड्याई भगत जन, जग आपणा पन्ध मुकाया। धन्न वड्याई भगत जन, लोकमात साचा चन्द चढ़ाया। धन्न वड्याई भगत जन, गृह मन्दिर इक्क सुहाया। धन्न वड्याई भगत जन, पतिपरमेश्वर इक्को गाया। धन्न वड्याई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल खलाया। धन्न वड्याई भगत जन, घर पाया इक्क दुआर। धन्न वड्याई भगत जन, रसना गाया इक्क निरँकार। धन्न वड्याई भगत जन, नाता तोड़या सर्ब संसार। धन्न वड्याई भगत जन,

गृह मिल्या पुरख करतार। धन्न वड्याई भगत जन, सो पुरख निरँजण करे सच प्यार। धन्न वड्याई भगत जन, भाण्डा भरम भउ भन्नाया। धन्न वड्याई भगत जन, मन चाओ घनेरा हरि जू दर्शन पाया। धन्न वड्याई भगत जन, जुग जुग दा गेड़ा अन्त कटाया। धन्न वड्याई भगत जन, तेरा मेरा मोह चुकाया। धन्न वड्याई भगत जन, हरि नेरन नेरा नज़री आया। धन्न वड्याई भगत जन, दो जहानां डेरा ढाहया। धन्न वड्याई भगत जन, आपणा बेड़ा बन्न चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल कराया। धन्न वड्याई भगत जन, घर पाया श्री भगवान। धन्न वड्याई भगत जन, लोकमात मिल्या माण। धन्न वड्याई भगत जन, हरि का नाउँ सुणया कान। धन्न वड्याई भगत जन, गृह मन्दिर मिल्या सच मकान। धन्न वड्याई भगत जन, निरगुण सरगुण दर दर वेखे आण। धन्न वड्याई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड मेहरवान। धन्न वड्याई जन भगत, भगती पन्ध मुकाया। धन्न वड्याई जन भगत, बूंद रक्ती लेखे लाया। धन्न वड्याई जन भगत, आत्म शक्ती परमात्म जोड़ जुड़ाया। धन्न वड्याई जन भगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी गोद बहाया। धन्न वड्याई जन भगत, जागरत जोत होए उज्यार। धन्न वड्याई जन भगत, हउँमे रोग दए निवार। धन्न वड्याई जन भगत, धुर संजोग होया करतार। धन्न वड्याई जन भगत, अमृत पीआ ठंडा ठार, धन्न वड्याई जन भगत, भगत नाम सुणया सच्ची धुन्कार। धन्न वड्याई जन भगत, कूड़ी क्रिया करे खुआर। धन्न वड्याई जन भगत, आत्म दरसी देवे दरस दीदार। धन्न वड्याई जन भगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। धन्न वड्याई भगत जन, जणया पुरख अलख। धन्न वड्याई भगत जन, हरि निरगुण रूप देख्या प्रतख। धन्न वड्याई भगत जन हरि जू पर्दा ल्या ढक्क। धन्न वड्याई भगत जन, निरगुण निरवैर आपणी गोदी ल्या चक्क। धन्न वड्याई भगत जन, सदा सदा सिर रखे हथ्थ। धन्न वड्याई भगत जन, मिल्या मेल पुरख समरथ। धन्न वड्याई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे हिरदे गया वस। धन्न वड्याई भगत जन, हरि पाया पुरख अबिनाश धन्न वड्याई भगत जन, नाता तुट्टा पृथ्मी आकाश। धन्न वड्याई भगत जन, लेखे लग्गा पवण स्वास। धन्न वड्याई भगत जन, माणस जन्म होया रास। धन्न वड्याई भगत जन, जन्म जन्म दी पूरी होई आस। धन्न वड्याई भगत जन, मेल मिलाया शाहो शाबाश। धन्न वड्याई भगत जन, निरगुण जोत करे प्रकाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे खेल तमाश। धन्न वड्याई जन भगत, घर पाया हरि गोबिन्द। धन्न वड्याई जन भगत, कलयुग अन्तिम मिटी चिन्द। धन्न वड्याई जन

भगत, अमृत पीआ सागर सिन्ध। धन्न वड्याई जन भगत, माण गंवाया सुरपति इन्द। धन्न वड्याई जन भगत, हरि मिल्या गुणी गहिन्द। धन्न वड्याई जन भगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्ब बख्शंद। धन्न वड्याई जन भगत, पाया हरि दुआर। धन्न वड्याई जन भगत, विसरया संसार। धन्न वड्याई जन भगत, पुरख अबिनाशी लए उधार। धन्न वड्याई जन भगत, बन्द ख़लासी होई अन्तिम वार। धन्न वड्याई जन भगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे साची कार। साची कार करता पुरख, करनेहार कमाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख़, हिरस हवस ना कोए वधाईआ। इक्क जणाए आपणा आदरस, इष्ट आपणा नूर उपाईआ। लेखा जाणे सर्ब सृष्ट, साख्यात बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां माण वड्याईआ। हरि भगतां हरि वड्डा माण, एका ओट जणाइंदा। दिवस रैण वेखे मार ध्यान, पारब्रह्म ब्रह्म दया कमाइंदा। आदि जुगादी चतुर सुजान, बाल बिरध जुवान ना रूप वटाइंदा। एका मन्दिर बैठ मकान, लख चुरासी वेख वखाइंदा। एका नाम शब्द ज्ञान, जीव जंत सर्ब पढ़ाइंदा। एका चरन कँवल ध्यान, शरन शरनाई इक्क वखाइंदा। एका हुक्म इक्क फ़रमाण, धुर फ़रमाणा इक्क समझाइंदा। एका राज इक्क राजान, एका रइयत वेख वखाइंदा। एका होए जाणी जाण, घट घट आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। जन भगतां करी इक्क सलाह, एका मता पकाया। कलयुग अन्त अन्धेरा गया छा, साचा, चन्द नज़र ना आया। कोटन कोटि हरि जू नाँ धरा, जीवां जंतां गया वखाया। लभ्भ लभ्भ थक्के थाउँ थाँ, किसे दुआरे हथ्थ किसे ना आया। डूँघे सागर वड़ वड़ वेख्या हथ्थ ना आए थल अस्गाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप छुपाया। सारे भगत कर सलाह, इक्क अवाज़ उठाईआ। आओ लभ्भीए हरि मलाह, बेड़ा बन्ने देवे लाईआ। इक्क जपाए आपणा नाँ, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। निमाणयां निताणयां पकड़े बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, कागों हँस उडाईआ। सदा सुहेला सिर देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कोट जन्म दे बख्शे गुनाह, हरि नज़र इक्को वार पाईआ। चरन कँवल देवे थाँ, दर घर साचा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा दए मुकाईआ। भगत जन हो इक्ट्ठे, एका घर वसाया। कर सलाह निरगुण अग्गे डटे, आपणा बल धराया। जुग जुग तेरे विछोड़े फट्टे, साचा फट्ट ना बन्द कोए कराया। तेरे पिच्छे तन सीस कटे, अंग अंग अंग भन्नाया। तेरे पिच्छे पूजे वट्टे, पत्थरां सीस झुकाया। तेरे पिच्छे साक सैण सारे छड्डे, नाता जगत मोह तुड़ाया। तेरे पिच्छे पंज तत्त काया विच्चों कढ्ढे, काम क्रोध

लोभ मोह हँकार तजाया। तेरे पिच्छे छोटे बाले बण के रहे नढ्ढे, आपणा जोबन ना मात वखाया। चार जुग तूं फड़ फड़ सानूं छड्डें, निरगुण सरगुण वेस वटाया। फिर लुक जाए अन्धेरी खड्डे, तेरा भेत किसे ना पाया। कलयुग अन्तिम दर तेरे अग्गे दोवें हथ्थ बद्धे, चरनी सीस निवाया। असीं आए तेरे सद्दे, होर वासना ना कोए रखाया। नाम तेरे दे गाने बद्धे, साचा सगन मनाया। जन्म जन्म विच फिरे भज्जे, मात गर्भ पन्ध मुकाया। कवण वेला हरि परदे कज्जे, सदा होए सहाया। अन्तिम रखे साची लज्जे, कोझे कमले गले लगाया। सदा रहे साडे खब्बे सज्जे, पिच्छे अग्गे फेरा पाया। नौबत नाम इक्को वज्जे, दूजा राग ना कोए सुणाया। दीपक जोत इक्को जगे, जागरत जोत करे रुशनाया। कर दरस असीं रहीए रज्जे, तृष्ना होर ना कोए रखाया। इक्को नाम प्याए साची मधे, अवर प्याला ना हथ्थ उठाया। चार कुण्ट साहिब सतिगुर इक्को गज्जे, दूजा रहिण कोए ना पाया। जो घड़या सो अन्तिम भज्जे, प्रभ आपणा खेल रचाया। अन्तिम चढ़ीए तेरे जहाज़े, जगत जहाद रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर दे वखाया। तेरे पिच्छे कीता इक्ठ्ठ, इक्को वाज उठाईआ। तेरे चरन गए ढठ्ठ, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। तूं वसणहारा घट घट, घर घर जोत रुशनाईआ। साडी कीमत दाम वट्ट, तन तेरी भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुण साडी अरज़ोईआ। भगत आए चल दुआर, आपणा पन्ध मुकाया। जुग जुग मिलदे रहे तैनूं वारो वार, नित नित वेख वखाया। काग़ज़ कलम गाउँदी आई वार, सलोक सोहले नाल रलाया। सारे मंगदे रहे बण भिखार, तेरे अग्गे झोली डाहया। छिन्न मातर दे के दरस दीदार, फिर आपणा मुख छुपाया। हुण असीं कट्ठे होए जुग जुग दे विछड़े यार, इक्को मता पकाया। खा खा धक्के होए ख़बरदार, बेख़बर कोए रहिण ना पाया। कर कर सबर गए हार, तूं बेसबरा तेरा सबर किसे हथ्थ ना आया। कर कर थक्के सर्ब विचार, तेरा पन्ध ना कोए मुकाया । कलयुग आई अन्तिम वार, तूं रहिमत राम कमाया। जन्म दिता विच संसार, आपणा बन्धन पाया। असीं कट्ठे होए इक्को वार, इक्को साह सुधाया। भज्ज ना जाए हरि निरँकार, चारों कुण्ट घेरा पाया। बहत्तर नाड़ तेरी सतार, पंज तत्त काया चोला रिहा खड़काया। अंदर लुकया रहें बण गुनाहगार, अवगुण साडे मथ्थे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा संग ना कोए छुडाया। भगत जन होए त्यार, आपणा बल रखाईआ। कलयुग अन्तिम दिता वंगार, प्रभ नस्स किते ना जाईआ। डागां सोटे फड़ के आए बाहर, साक सज्जण मात तजाईआ। इक्को मारया बोल जैकार, सोहँ ढोला गाईआ। सोहँ सुण के होया बेज़ार, दर्दी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। अग्गों निउँ के कहे पुकार, आपणा सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम मैं भगतां कोलों गया हार,

मेरी चले ना कोए वड्याईआ। आपणा गृह आपणा मन्दिर दिता त्याग, त्यागी रूप वटाईआ। जन भगत बणाए आपणा सुहाग, साची खुशी मनाईआ। निरगुण रच रच आपे काज, करता पुरख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार रिहा समझाईआ। सुण भगत इक्को बात, एका वार जणाइंदा। तुहाढे पिच्छे कीता आपणा घात, तन मन साची भेंट चढ़ाइंदा। नाता तोड़ जगत ज़ात, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। कूड़ी मेट अन्धेरी रात, रैण साचा चन्द चमकाइंदा। निरगुण हो कमलापात, दरगाह साची सोभा पाइंदा। लोकमात बणाए प्रभात, प्रभ आपणा वेस वटाइंदा। जन भगतां पुच्छे वात, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। भगतन भेव गया खुल, हरि सतिगुर आप खुलाईआ। आपणे गृह पावीं मुल, कीमत करता आप चुकाईआ। सरन सरनाई जो गए घुल, कीती घाल लेखे लाईआ। धाम वखाए इक्क अडुल, डोल कदे ना जाईआ। हरि भगत बणाई साची कुल, कुलवन्त आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन रिहा समझाईआ। हरिजन साची सच विचार, सतिगुर आप जणाइंदा। तेरा लेखा रहे जुग चार, चार चार नौ नाल मिलाइंदा। साचा मन्दिर इक्क दरबार, धुर दरबारी आप सजाइंदा। अंदर बहे आप निरँकार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। नेत्र नैण दए दीदार, दरसी दरस कराइंदा। इक्को वार सुणे पुकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वड्याइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच्ची सरकार, अदल आदल आप कमाइंदा। तुहाढ्ढा बचन मेरी गुफ़तार, गुफ़त शनीद खेल खलाईआ। तुहाढ्ढा प्यार मेरा विहार, मेरी सतार सर्ब लोकाईआ। तुहाढ्ढी सरंगी वज्जे वारो वार, सरंगा सुनणहार इक्क हो जाईआ। मृदंगा मृदंग वजाए अपार, जन भगतां आप सुणाईआ। भगत आए भगत रंग, हरि भगवन नाल रखाईआ। पहलों बणाए सेज पलँघ, पावा चूल आप ठुकाईआ। फेर वजाए तार सतार मृदंग, नाद अनाद सुणाईआ। फेर वेखे आप लँघ, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। फेर चढ़ाए भगत चन्द, लोकमात करे रुशनाईआ। माणस जन्म दे दे अनन्द, अन्तिम आपणे विच मिलाईआ। कर खेल विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड करे रुशनाईआ। जुग जुग वंडां हरि जू वंड, लिख लिख हिसाब मुकाईआ। टुट्टी फेर गंढु, लोकमात लए प्रगटाईआ। नाम सुणाए साचा छन्द, एका गुण जणाईआ। काया कर खण्ड खण्ड, नाता दए तुड़ाईआ। इक्क वखाए सच अनन्द, आपणे अनन्द समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगती रंग वखाईआ। भगत आया भगत गया, हरि हरि खेल खलाइंदा। भगत मोया भगत रिहा, रहि रहि वेख वखाइंदा। छत्ती जुग जाण बीत, अगली गाथा दए समझाईआ। चौकड़ी चलदी रहे हरि की रीत, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। कोटन कोटि

नाउँ धर सुणाउँदे रहे गीत, आपणी करदा रहे वड्याईआ। जन भगत बणाए आपणे मीत, मित्र प्यारा आप हो जाईआ। अन्त वखाए धाम अनडीठ, अनडिठड़ा रंग चढ़ाईआ। जिस गृह भगवन्त वसे अतीत, तिस घर भगतां लए बहाईआ। ना ठंडा ना सीत, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। इक्को प्रेम इक्को प्रीत, एक प्रीआ नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे विच समाईआ। विछोड़े अंदर बड़ा वैराग, वैरागी वैराग जणाइंदा। बिन विछड़यां ना होए तांघ, आस आस ना कोए रखाइंदा। विछोड़े अंदर पलटे स्वांग, स्वांगी आपणा रूप वटाइंदा। विछोड़े अंदर खुल्ले जाग, नेत्र नैण नींद ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोड़े विछोड़े अंदर इक्को बिरहों ब्रिजवासी आप रखाइंदा। बिरहों वैराग ना उपजे अंदर, जोड़ विछोड़ा नज़र ना आईआ। अठ्ठे पहर जन भगत वसण हरि के मन्दिर, हरि जू संग समाईआ। कोई ना पढ़ीए फेर मन्त्र, अन्तर तेरा रंग रंगाईआ। नाता टुट्टे गगन गगनंतर, मिले सच सच्ची शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद आपणे चरन बहाईआ। सचखण्ड मिले निवासा, साचा थान सुहाइंदा। इक्को वार पूरी करे आसा, दूजी आस ना कोए जणाइंदा। जिस जन एथे देवे चरन भरवासा, ओथे आपणी गोद बिठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सचखण्ड निवासा, निवास आपणा इक्क जणाइंदा। गुरूआं विच्चों एका गुर, हरि जू आप जणाया। निरगुण नाद दिती सुर, रागी राग अलाया। आत्म परमात्म नाता जोड़, जगत जुगत वखाया। दस गुर नानक जुड़या जोड़, डोरी डोरी नाल बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर ताज गुर इक्क बणाया। बाकी वसण थिर घर, आपणा आसण लाईआ। शब्दी शब्द मिल्या वर, घर वज्जदी रहे वधाईआ। एकँकार सचखण्ड दुआर बैठा चढ़, तख्त निवासी सोभा पाईआ। आपणा चरन थिर घर धर, सोभावन्त सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम दए सुहाईआ। भगत प्यार ताकतवर, इक्को बल रखाइंदा। जुग जुग भगवन रिहा डर, जन भगतां सेव कमाइंदा। इक्क धन्ने पत्थर विच्चों ल्या फड़, प्रहिलाद थम्म चों बाहर कढाइंदा। तुहाढ्ढे वेंहदयां अग्नी गया सड़, फिर किथों आइंदा। भगतां देवणहारा वर, आपणा बन्धन पाइंदा। निरगुण हो के अंदर गया वड़, पंज तत्त काया घेरा पाइंदा। डूँघी कंदर अन्धेरा वेख ना जाए डर, भय भयानक ना कोए रखाइंदा। पौड़ी पौड़ी जाए चढ़, आपणे मन्दिर चरन टिकाइंदा। आपणी किरपा आपे कर, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। गुरसिख रातीं सुत्तयां दर्शन लैण कर, घर घर विच नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कोलों रिहा डर, एसे कारन रातीं सुत्तयां आप उठाइंदा। गुरसिख मेरे सज्जणा, उठ आ के दे दीदार। मेरा पर्दा

२०६
११

किसे ना कज्जणा, मैं होवां जगत खुआर। इक्को तेरे दर ते बह बह सजणा, अठ्ठे पहर रहे खुमार। मेरा नाद तेरे दुआरे वज्जणा, दूजा सुणे ना कोए विच संसार। तेरा दरस कर कर सतिगुर रज्जणा, आपणा रोग लए निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे सच प्यार।

★ २७ मग्घर २०१८ बिक्रमी सोहण सिँघ, महिंदर सिँघ दे नवित जेठूवाल ★

हरि भगतां सदा इक्को माण, परम पुरख शरनाईआ। चरन कँवल सच ध्यान, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। शब्द अनादी इक्को गान, अनहद तार हिलाईआ। नेत्र नैण दरस भगवान, एका मंग मंगाईआ। नाता तोड़ जगत जहान, पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। माया ममता मोह छोड़ अभिमान, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। इक्को राग सुण सुण कान, मनसा मन खपाईआ। धुर संदेशा ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहान, इक्को आस तकाईआ। सचखण्ड मिले सच मकान, दरगाह साची धाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। भगतन मीत एकँकारा, अकल कला अख्वाइंदा। सचखण्ड सोहे बंक दुआरा, निराकार नूर धराइंदा। अनभउ प्रकाश हो उज्यारा, अजूनी रहित डगमगाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाह पातशाह सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म इक्क वरतारा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, बोध अगाध अलाइंदा। जुगा जुगन्तर पावे सारा, लख चुरासी वेख वखाइंदा। भगतन करे सति प्यारा, सति सतिवादी भेव जणाइंदा। बज़र कपाटी खोल कवाड़ा, धूंआँधार सर्ब मिटाइंदा। पंचम वखाए इक्क अखाड़ा, एका घर सोभा पाइंदा। सज्जण मीत बण मुरारा, आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तारनहारा इक्क, इक्को इक्क वड्याईआ। धुर संजोगी लेख दए लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। नाम निधाना पाए साची भिक्ख, वस्त अमोलक आप वरताईआ। चार कुण्ट दहि दिशा निरगुण निरवैर आए दिस, घट घट आपणा रूप वखाईआ। गुरमुख सज्जण वेखे साचा सिख, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जन्म जन्म दी मेटे तृख, तृष्ना भुख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। भगतन मीता एकँकार, अकल कला अख्वाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लै अवतार, जुग जुग वेख वखाइंदा। कलयुग पावणहारा सार, काया कपड़ फोल फोलाइंदा। लख चुरासी विच्चों लए उभार, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कोटन कोटि गा गा थक्के विच संसार, रागी राग

ना कोए अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां संग समाइंदा। भगतन संग रिहा समा, सांतक सति सति वरताईआ। रहिमत रहीम आप कमा, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। एका कलमा दए पढ़ा, बण सच अमाम भेव खुलाईआ। इक्क महल्ला दए वसा, मुकामे हक़ शहिनशाहीआ। एका नौबत दए वजा, एका डंका हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुर्शद मुरीद वेख वखाईआ। मुर्शद मुरीद दे सहारा, दर्दी दर्द वंडाइंदा। चौदां तबकां पावे सारा, आप आपणा भेव जणाइंदा। पीर पैग़म्बर वेख परवरदिगारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। हक़ हक़ीक़त बोल जैकारा, लाशरीक खेल खलाइंदा। इक्क तौफ़ीक इक्क दुआरा, एका घर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। भगत वखाए साचा रंग, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, हरि पुरख निरँजण सेज सुहाईआ। डूँग्घी कवरी आपे लँघ, एकँकार सोभा पाईआ। आपे जाणे आपणा अनन्द, आदि निरँजण बेपरवाहीआ। निरगुण निराकार गाए छन्द, अबिनाशी करता राग अलाईआ। दाता जोधा सूरा बण आप सरबंग, श्री भगवान बल वखाईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, पारब्रह्म नूर वखाईआ। जुग जुग बेड़ा देवे बन्न, ब्रह्म आपणा भेव खुलाईआ। ईश जीव जाणे कम्म, जगदीश वड्डी वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, लख चुरासी वेख वखाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां बेड़ा आपे बन्न, जग सागर पार कराईआ। लेखा जाणे पंज तत्त तन, मन मति बुध भेव खुलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार दे दे डंन, आशा तृष्ना दए मिटाईआ। एका राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। आप वसे हरि छप्पर छन्न, जन भगतां साचे घर बहाईआ। जुग जुग भाणा आपणा मन्न, हरिजन साची सेव कमाईआ। दिस ना आए नेत्र अन्न, ज्ञान नेत्र ना कोए खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर जन भगतां लए तराईआ। जुगा जुगन्तर भगतन मित्त, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। नित नवित करे हित्त, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। प्रगट हो अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा रंग वखाइंदा। लेखा जाणे पंज तत्त काया बुत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोज खुजाइंदा। आपे वसे धाम अनडिठ, जगत नैण नज़र ना आइंदा। गुरमुख विरला लए पेख, जिस जन आपणा भेव खुलाइंदा। आपे मेटणहारा लिखी रेख, लेखा आपणा आप जणाइंदा। आत्म परमात्म खोले भेत, द्वैती पर्दा आपे लाहइंदा। दरस दखाए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। फुल्ल फुलवाड़ी रुत्त बसन्त वखाए चेत, अग्नी जेठ ना कोए तपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वड्याइंदा। भगत वड्याई श्री भगवान, जुग जुग मात कराईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, निरगुण नूर

करे रुशनाईआ। जोती जाता दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। गुर अवतार दे दे माण, लोकमात करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी सति बबाण, ब्रह्मण्ड खण्ड उडाईआ। भगत भगवन्त कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। एका राग सुणाए कान, दूजी सुर ना कोए अल्ह़ाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका दीपक दए जगाईआ। एका इष्ट श्री भगवान, दूजी दृष्ट ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल मिलाईआ। जन भगतन मेलणहारा हरि, आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम देवे वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए वटाइंदा। दरस दखाए अग्गे खड़्, स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। भगत जनां हरि बाहों फड़, आपणे संग चलाइंदा। डूँग्घी भँवरी आपे वड़, घर घर आपणा आसण लाइंदा। साचे पौड़े जाए चढ़, दस्म दुआरी सोभा पाइंदा। निरगुण अक्खर इक्को पढ़, सरगुण आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप तराइंदा। भगतां देवे इक्को तत्त, ततव इक्क जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे मति, गुण अवगुण ना कोए रखाइंदा। चरन कँवल बंधाए नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द वखाइंदा। मेल मिलावा कमलापति, कँवल नैण वेख वखाइंदा। नाता तोड़ ज़ात पात, साची यात्रा नाम कराइंदा। पंच विकारा कर कर घात, पंचम नाद शब्द धुन सुणाइंदा। पंचम मीता इक्को गाथ, साचा अक्खर आप पढ़ाइंदा। करे खेल पुरख समराथ, हरिजन साचे आप उठाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, लहिणा देणा झोली पाइंदा। कलयुग अन्तिम मुक्के वाट, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। हरिभगत लगाए आपणे घाट, सच किनारा इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नईया नाम चलाइंदा। इक्को नईया नाम नौका, निरगुण मात चलाईआ। जन भगतां नाल करे ना धोखा, सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। हरिजन मिलण दा इक्को मौका, दूजा फेर जगत ना आईआ। प्रभ मिलण दा मार्ग सौखा, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। किसे हथ्थ ना आए चौदां लोका, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। लख चुरासी खाए चोटां, दर दर दए दुहाईआ। जन भगत रखाई इक्को ओटा, प्रभ मिले सच्चा माहीआ। निर्मल जोत जगाए जोता, जोती जोत करे रुशनाईआ। भव सागर खाए ना गोता, डूँग्घी भँवरी ना कोए रुड़्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। भगत जनां हरि आप उठाउणा, कलयुग अन्तिम वार। जुग जन्म दा लेख मुकाउणा, जुग चौकड़ी पावे सार। निहकर्मी वड कर्म कमाउणा, कर्म कांड तों वसे बाहर। वरन बरनी डेरा ढाउणा, चार वरन करे खुआर। हरन फरन नेत्र खलाउणा, नेतन नेत दरस दीदार। गीत

गोबिन्द इक्को गाउणा, एका एकँकार। साचा मन्दिर इक्क वखाउणा, काया बंक खोल्ह कवाड़, दीपक दीआ इक्क जगाउणा, निरगुण जोत अगम्म अपार। धुन अनादी शब्द सुणाउणा, अनहद वजाए सतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए अधार। भगत उधारे आप प्रभ, आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणा बन्धन पाईआ। उलटी करे कँवल नभ, अमृत झिरना दए झिराईआ। सति सन्तोखी नाम मदि, इक्को वार प्याईआ। सच निशाना इक्को गड्ड, दर दुआर दए झुलाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, हरिभगत लए मिलाईआ। नाता तोड़ अन्धेरी खड्ड, गृह मन्दिर दए बहाईआ। जगत तृष्ना झूठी वढ्ढ, एका करे नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां सच्चा सहाईआ। सति पुरख निरँजण होया ख़बरदार, निरगुण आपणी लए अंगड़ाईआ। सचखण्ड महल्ले हो उज्यार, थिर घर आपणा फेरा पाईआ। थिर घर साचे खोल्ह किवाड़, आपणा रंग वखाईआ। चरन कँवल कँवल चरन कढ्ढ कढ्ढ बाहर, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। सुन्न अगम्मी खेल अपार, बेऐब आप कराईआ। आपणी इच्छया कर विचार, शब्द सुत वड्याईआ। शब्दी शब्द दए सहार, एका गुण वखाईआ। एका गुण अगम्म अपार, अपरम्पर वेख वखाईआ। अलख अगोचर हो त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। अलख अगोचर हो त्यारा, घर साचे सोभा पाइंदा। भगतन मीता बण वणजारा, लोकमात वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमशकारा। कोटन कोटि निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे चुक्क, जुग जुग करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पैंडा गया मुक्क, कलयुग कूके दए दुहाईआ। पंच विकारा रिहा बुक्क, आपणा बल रखाईआ। सन्त साध बैठे लुक, सिर सके ना कोए उठाईआ। जूठ झूठ जड़्ह रिहा पुट्ट, बूटा सके ना कोए लगाईआ। काम क्रोध रिहा कुट्ट, मूँह दे भार सुटाईआ। ठग्ग चोर रहे लुट्ट, दिवस रैण पई लड़ाईआ। गुरमुख विरला इक्को रखे साची ओट, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। जगत तृष्ना कढ्ढ खोट, आशा इक्को इक्क वधाईआ। निर्मल अन्तर जगे जोत, हरि जोत होए रुशनाईआ। नाता टुट्टे वरन गोत, ब्रह्म इक्को नज़री आईआ। सति धीरज नाम लंगोट, गुर सतिगुर दए बंधाईआ। आत्म तृष्ना भरे पोट, सांतक सति सति वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां गोद उठाईआ। जन भगतां रखे साची गोद, आपणी दया कमाइंदा। साचा नाम अगाध बोध, बोध अगाधा आप पढ़ाइंदा। हरि जू हिरदा आपे सोध, सुध वासना आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पार कराइंदा। जन भगतां बेड़ा करे पार, मँझधार ना कोई रड़्हाईआ। कलयुग

अन्तिम लै अवतार, निरगुण हो सेव कमाईआ। सरगुण करया ख़बरदार, एका शब्द धुन शनवाईआ। जुग जुग भगत लए उभार, लुक लुक लऐ मिलाईआ। उठ उठ मेरे विछड़े यार, जुग चौकड़ी गई विहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। लहिणा देणा मुके गुर अवतार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। पीर पैग़म्बर औलीए हार, दस्तगीर ना कोई वड्याईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। वड्ड अमामा हो त्यार, वड दमामा दए वजाईआ। पढ़े कलमा अपर अपार, हजारा दरूद भेव ना राईआ। सच सलामा दस्स संसार, अलैकम आपणी खेल वखाईआ। बैतल हो परवरदिगार, मकद्दस पर्दा लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए उठाईआ। जन भगत उठाया किरपा कर, किरपन दया कमाइंदा। जन्म जन्म दा लहिणा दिता घर, घर घर विच फेरा पाइंदा। मानस जन्म ना जाए हर, लख चुरासी लेखे पाइंदा। आप बंधाए आपणे लड़, एका पल्लू नाम फड़ाइंदा। सोहँ अक्खर जाणा पढ़, आत्म परमात्म मेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप समझाइंदा। साचे भगत साचा नाउँ, हरि निरँकारा आप जणाईआ। होए सहाई सभनीं थाउँ, थान थनंतर वेख वखाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस उडाईआ। करे कराए सच न्याउँ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हरिजन मेले फड़ फड़ बाहों, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, पिता पूत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरि भगतां गोद बहाईआ। हरिभगत दया आप कमा, कामल मेल मिलाया। रहिमत इक्क कर खुदा, सही सलामत लए बचाया। दो जहानां ना होए जुदा, आप आपणी गोद बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे संग रखाया। हरिभगत अग्गों करे पुकार, प्रभ साचे सच जणाईआ। अन्तिम वेला तेरे नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। लोकमात कवण निशान, कवण गृह मिले वड्याईआ। कवण वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण उठाईआ। कवण बिध जिस गाण, रसना जिह्वा हलाईआ। कवण मन्दिर मिले मकान, जिस घर दए बहाईआ। कवण वेला दरस देवे आण, मिटे सर्ब जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। आपणा भेव दस्स भगवान, एका एक जणाईआ। लोकमात बणावां सच निशान, वेखे सर्ब लोकाईआ। तिन्नां लोकां पावां आण, त्रिलोकी चरनां हेठ दबाईआ। साचा मन्दिर इक्क निशान, चार वरन दयां वखाईआ। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। भगत दुआरा इक्क परवान, छत्ती जुग दा पन्ध मुकाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल महान, जुग जुग आपणा वेख वखाईआ। कोटन कोटि सीता राम, गए फेरी पाईआ।

कोटन कोटि गोपी काहन, मंडल रास गए रचाईआ। कोटन कोटि रवि ससि भान, बैठे मुख छुपाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव हो प्रधान, गए पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार दे दे ज्ञान, लिख लिख लेखा गए समझाईआ। कोटन कोटि जुग बीते विच जहान, कोहलू चरखा चक्की चक्क भुवाईआ। करे खेल श्री भगवान, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। भगतां हरि जू वेखे आण, भेव कोए ना पाईआ। दर घर साचे देवे माण, निमाणयां गले लगाईआ। लख चुरासी विच्चों कर पछाण, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, सांतक सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका घर वखाईआ। एका घर हरि चरन, शरन सच्ची शरनाया। नाता टुट्टे मरन डरन, जन्म मरन विच ना आया। साहिब सुल्तान तरनी तरन, गुरमुख साचे लए तराया। करता पुरख करनी करन, कुदरत कादर वेख वखाईआ। नाता तोड़ वरन बरन, ज़ात पात दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन इक्को घर बहाया। मानस मनुक्ख मानव, जगत जुग चतुराईआ। देवी देव दानव, एका खेल वखाईआ। मानस वसे पंज तत्त ग्रामन, काया खेड़ा सोभा पाईआ। मानुक्ख मेटे अन्धेरी शामन, मन मति मोह चुकाईआ। मानव होए सतिगुर ज़ामन, आप आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। मानश पंज तत्त काया रंग, रंग रत्ता आप चढ़ाईआ। मनुख आत्म सेज पलँघ, घर घर विच रिहा हंढाईआ। मानव शब्दी डोर पतंग, आकाश प्रकाश उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। मानस काया पंज तत्त नाता, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल कराइंदा। मनुक्ख निरगुण मिली दाता, सरगुण बन्धन पाइंदा। मानव नूर पुरख बिधाता, घर घर विच आप सुहाइंदा। इक्को घर खेल तमाशा, त्रैगुण अतीता त्रै त्रै वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे संग आप हो जाइंदा। बानर भाओ बेमुख, बेदर्दी दर्द ना कोए रखाइंदा। उलटा चढ़े गर्भ रुख, रुख़ सच्चा ना कोई बदलाइंदा। दस दस मास धूआं धुख, अग्नी हवन तपाइंदा। अंदर बाहर ना मिले सुख, सांतक सति सति कराइंदा। साहिब सतिगुर बैठा लुक, दरस ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बानर मानस रूप वखाइंदा।

★ २८ मग्घर २०१८ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे नवित जेठूवाल दरबार विच ★

सुर नर मुन जन इन्दर सोचदे, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खोजदे, जुग जुग आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार रसना बोलदे, कह कह हरि गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग समाईआ। सुर नर मुन जन इन्द इन्दरासन तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन सलाह, घर साचे गया मुख छुपाईआ। गुर अवतार जपण नाँ, नाउँ निरँकारा इक्क सालाहीआ। आदि जुगादि खेल बेपरवाह, भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। सुर नर मुन जन इक्को ओट, आदि पुरख तकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे सोच, सोच विच हरि ना आईआ। गुर अवतार रख रख ओट, एका पुरख गए मनाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण जोत, निराकार खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार चलाईआ। सुर नर मुन जन देवत रखी आस, इक्क ध्यान लगाया। विष्न ब्रह्मा शिव प्यास, अमृत मेघ हरि बरसाया । गुर अवतार मंग प्रकाश, बैठे ध्यान लगाया। आदि जुगादी खेल तमाश, त्रैभवन धनी आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाया। सुर नर मुन जन देवत चरन ध्यान, नेत्र नैण नैण लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठ उठ गाण, गीत गोबिन्द अल्ाईआ। गुर अवतार मंगण दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, एका दर सुहाईआ। जुग जुग निरगुण हो प्रधान, पारब्रह्म खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा धन्दा आप जणाईआ। सुर नर मुन जन देवत इन्द रहे पढ़, हरि अक्खर इक्क पढ़ाया। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ फड़ लड़, आपणा पल्लू नाल बंधाया। गुर अवतार वेखण चढ़ चढ़, महल अटल इक्क रुशनाया। दरस दखाए अग्गे खड़्, निरगुण आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राग आप अल्ाया। सुर नर मुन जन एका राग, गृह मन्दिर बह बह गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वजायण नाद, सुर ताल इक्क रखाईआ। गुर अवतार गायण बोध अगाध, इक्को इक्क पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी साजण साज, आप आपणा भेव खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सुर नर मुन जन इक्को दर, दर दरवाजा इक्क जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लै लै वर, घर साचे खुशी मनाइंदा। गुर अवतार मेला नरायण नर, नर हरि साची बूझ बुझाइंदा। पंज तत्त तत्त काया घड़, घर घर विच आप वसाइंदा। निर्मल जोत इक्को धर, दीपक दीआ आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। सुर नर मुन जन हरि जू खेल, आपणा आप कराईआ। विष्न

ब्रह्मा शिव कर कर मेल, मेल विछोड़ा दए समझाईआ। गुर अवतारां सज्जण सुहेल, सगला संग निभाईआ। आपे वसे धाम नवेल, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। सुर नर मुन जन इक्को मंग, एका वार मंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव अंदर लँघ, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतारां रखे संग, सगला संग निभाईआ। आप बैठ सच पलँघ, सचखण्ड साची सेज सुहाईआ। आदि जुगादि इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए समझाईआ। साचा खेल हरि निरँकार, निरगुण आप जणाइंदा। गुर अवतार सेवादार, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म मनाइंदा। रिख मुन देवत सुर दे अधार, आप आपणा रंग वखाइंदा। जुगा जुगन्तर हो त्यार, आपणा वेस वटाइंदा। लख चुरासी पावे सार, घट घट फोल फुलाइंदा। भगत भगवन्त लए उभार, आपणे रंग रंगाइंदा। नेत्र लोचण नैण दरस दीदार, स्वच्छ सरूपी आप कराइंदा। एका नाद शब्द धुन्कार, गृह मन्दिर आप वजाइंदा। इक्क वखाए सुहावा ताल, सति सरोवर आप नुहाइंदा। जुगा जुगन्तर घालण घाल, घाली घाल लेखे पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। अन्त नेड़ ना आए काल, जम फास आप कटाइंदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, सच बबाणे आप चढ़ाइंदा। गण गंधर्ब देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव सारे अद्धविचकारे गाण, निउँ निउँ सर्ब सीस झुकाइंदा। भगत भगवन्त करे परवान, आप आपणी गोद सुहाइंदा। कलयुग अन्त खेल महान, आप आपणे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत सदा वड्याइंदा। हरिभगत तेरी सुण वड्याई, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। कवण वेला साडी करे कुड़माई, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। झल्ली ना जाए सदा जुदाई, विछड़यां मर जाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गिण गिण वक्त लँघाई, अन्तिम वेला गया आईआ। कर किरपा साडी पकड़ बाहीं, मंगी तेरी सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर इक्को हत्थ टिकाईआ। देवत सुर करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। झल्लया जाए ना विछोड़ा साचे यार, सत्थर सेज ना सोभा पाइंदा। किरपा कर इक्क वार, एका मंग मंगाइंदा। चरन कँवल बण भिखार, ख़ाली झोली अग्गे डाहइंदा। कर किरपा देणा दरस दीदार, नेत्र नैण सर्ब तरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ बालक मंग मंगाइंदा। गुर अवतार सारे कहिण, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तुध बिन कदे ना आवे चैन, जुगा जुगन्तर तेरा राह तकाईआ। सुख देवे ना कोए रैण, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। तूं साहिब इक्को सज्जण सैण, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। एका दरस देणा नेत्र नैण, होए ना कदे जुदाईआ। तेरे चरन कँवलां मिले बहण, बह बह ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ दया कमा, आपणा भेव जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग संग निभा, गुर अवतारां वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगा, साचा हुक्म मनाइंदा। सुर नर मुन जन आप उपा, मार्ग पन्ध चलाइंदा। कलयुग अन्तिम लहिणा दए मुका, लेखा सब दे हथ्थ फड़ाइंदा। आपणे भगत लए उठा, आप आपणी बणत बणाइंदा। लख चुरासी विच्चों जगा, आलस निंद्रा मोह मिटाइंदा। साचा ढोला इक्क सुणा, नाम निधाना आप जणाइंदा। ओहला पर्दा आपे लाह, आपणा दरस कराइंदा। आपणा चोला पहलों बदला, गुरमुखां चोला फेर बदलाइंदा। साचा सोहला आपे गा, जन भगतां आप पढ़ाइंदा। गोला बण बण सेव कमा, उठ उठ रौला कोए ना पाइंदा। हौली हौली रिहा मिला, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। पाथर सिला रिहा तरा, सिलसिला आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुसा गिला कोई जाणे ना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को अक्खर आप समझाइंदा। सारे सुणो करो ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान, आपणी खेल वखाईआ। हरिभगत करे परवान, पूरब लेखा झोली पाईआ। एका देवे नाम दान, अनमुलड़ी दात वरताईआ। दरगाह साची देवे माण, दर घर साचे आप बहाईआ। लोकमात सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। जुग जुग सुर नर मुन जन विष्न ब्रह्मा शिव सारे गाण, लोकमात जन भगत मिली वड्याईआ। गुर अवतार कहिण तेरा भेव ना जाणे कोए भगवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जन भगत घर घर खुशी मनाण, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। दर दर्शन दिता आण, दर्दी दर्द वंडाईआ। जिस दी करदे रहे कल्याण, सो काया दए पलटाईआ। जिस दा रखदे रहे माण, सो अभिमाण दए गंवाईआ। जिस दा राग सुणदे रहे कान, सो राग दए सुणाईआ। जिस दा धरदे रहे ध्यान, सो आपणा दरस दिखाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे सच्चा काहन, बण बण काहन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। आओ वेखो भगतन मीता, आपणा रंग रंगाइंदा। सतिजुग चलाए साची रीता, थित वार ना कोए वखाइंदा। इक्को नाम जणाए अनडीठा, अनडिठ आपणा हुक्म वरताइंदा। दीन दयाल ठंडा सीता, सांतक सति सति कराइंदा। त्रैभवन धनी त्रैगुण अतीता, त्रै त्रै आपे पन्ध मुकाइंदा। पत्तत पावन पतित पुनीता, पतित उधारन खेल कराइंदा। लेखा जाणे हस्त कीटा, नीच नीचां वेख वखाइंदा। पूरब लहिणा जाणे बीता, अगला आपणे हथ्थ वखाइंदा। जुग चौकड़ी पीसण पीठा, कीती घाल लेखे लाइंदा। गुरमुख सज्जण इक्क अतीता, हरि शरनी शरन बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप तराइंदा। आओ वेखो भगती रंग, हरि सतिगुर आप चढ़ाईआ। नाम निधान सति मृदंग, सति सतिवादी आप वजाईआ। जुग जुग दी टुट्टी गंढु, एका गंढु पुवाईआ।

हरि चढ़ाए साचे चन्द, सूरज चन्द मुख शरमाईआ। जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, बण पाँधी फेरा पाईआ। गीत सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला गाईआ। हरिभगत नंगी ना होवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी भागां मंद, हरि नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। भगतन मेला सच दुआर, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। करे खेल आप करतार, निहकर्मी कर्म कमाईआ। भव सागर करे पार, दर घर साचे दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा माण दवाईआ। हरिजन हरिजू माण वधाया, वाधा विच संसार। राग अनादा इक्क सुणाया, सोहँ शब्द जैकार। घाटा कोई रहिण ना पाया, तोलया तोल अपर अपार, दाना बीना एका आया, इक्क इकल्ला एकँकार। सत्त रंग नाल निशान ल्याया, सति सतिवादी हो त्यार। सचखण्ड लोकमात बणाया, जन भगतां कर प्यार। भगत दुआरा इक्क सुहाया, सोभावन्त कर त्यार। सच सिँघासण दए विछाया, विष्नूं रूप हरि निरँकार। आपणा विशा दए समझाया, आत्म परमात्म इक्क अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लए उभार।

२१६ ११

★ २६ मग्घर २०१८ बिक्रमी गिरधारा सिँघ दे नवित जेठूवाल दरबार विच ★

जगत सागर डूँग्घा किनारा, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। अन्त ना कोई पारावारा, भेव ना जाणे राईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, निराकार आप कराईआ। ख़ालक ख़लक तों वसे बाहरा, रूप रंग ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस आप वटाईआ। डूँग्घा सागर जगत ताल, नव नौ खेल खलाईआ। सृष्ट सबाई होई बेहाल, हाल मुरीद ना कोई जणाईआ। पंज तत्त वेखे काया माटी खाल, दर दर फोल फुलाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, इक्क नगारा रिहा वजाईआ। गुरमुख विरला घालण रिहा घाल, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप धराईआ। डूँग्घा सागर जगत संसार, सहिँसा रोग ना कोई चुकाइंदा। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयार, अन्ध अन्धेर ना कोई गवाइंदा। जूठा झूठा वणज वपार, लख चुरासी हट्ट वखाइंदा। नौ चार रोवे ज़ारो ज़ार, नव नौं चार ना धीर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वखाइंदा। नव नौ चार कर पुकार, एका मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सेवा कर कर गुर अवतार, कोटन कोटि गए मुख छुपाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर पसार, बैठे सेव कमाईआ। कोटन कोटि नाद धुन्कार,

शब्दी शब्द गए जस गाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादि सचखण्ड वसे साचा माहीआ। लिखण पढ़न तों होया बाहर, खाणी बाणी भेव ना आईआ। आदि अन्त ना पाई सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। हरि सार ना पाए कोए, आदि अन्त ना किसे जणाया। आपे जिहा आपे होए, दूजा अवर ना कोई बणाया। जुग चौकड़ी देवे ढोए, एका मन्त्र नाम प्रगटाया। निरगुण सरगुण बीज बोए, आत्म अन्तर जोती जोत रुशनाया। करे प्रकाश साची लोए, नूर नूर नूर रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। जुग जुग खेल श्री भगवान, आदि पुरख आप वखाईआ। जुग चौकड़ी हो बलवान, बल आपणा दए जणाईआ। सति सतिवादी दे दे दान, नाम निधाना झोली पाईआ। रूप अनूपा गोपी काहन, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। गृह गृह मन्दिर वेख मकान, घट घट आसण लाईआ। नाम अणियाला तीर निशान, दो जहानां आप चलाईआ। लख चुरासी हो प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाईआ। एका अक्खर सच ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ाईआ। एका राग सुणाए कान, एका धुन करे शनवाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी आप जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। जुग जुग आपणा पर्दा लाह, लहिणा मात चुकाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। जन भगतां देवे इक्क सलाह, इक्को नाम जपाइंदा। फड़ फड़ राहे देवे पा, साचा मार्ग इक्क रखाइंदा। आवण जावण पन्ध मुका, आप आपणे रंग रंगाइंदा। सहिंसा रोग दए गवा, सुख सागर विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग हरि करतार, करता पुरख आप रंगाईआ। नेत्र नैण दरस दीदार, देव आत्म लए मिलाईआ। जुग जुग लेखा विच संसार, लोकमात चुकाईआ। भगतन मेला इक्क दरबार, दर घर साचे लए मिलाईआ। सज्जण सुहेला एकँकार, आपणी कल धराईआ। भगतां अन्त करे प्यार, भगवन्त होए सहाईआ। मणीआ मंत सोहँ जैकार, इक्को वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विस वख झूठी दए गंवाईआ।

★ पहली पोह २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

निरगुण रूप पुरख समरथ, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। आदि जुगादि चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। शब्द अनादि अनादी गाथ, सच दुआरे आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा खेल

खिलाईआ। अनुभव खेल पुरख अबिनाश, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। जोती जोत कर प्रकाश, नूरो नूर डगमगाइंदा। आपे खेले खेल तमाश, खेलणहार भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। साची धार हरि निरँकार, आदि पुरख आप चलाईआ। सचखण्ड दुआरा कर त्यार, सच सिँघासण लए सुहाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, तख्त निवासी आसण लाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाईआ। सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, शाह पातशाह खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण बण प्रधाना, आप आपणा हुक्म जणाइंदा। एकँकारा हो मेहरवाना, रूप अनूप आप धराइंदा। आदि निरँजण जोत महाना, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वड बलवाना, बल आपणा आप रखाइंदा। श्री भगवान उठाए निशाना, सच निशाना आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेल महाना, आपणा आप खिलाइंदा। शाहो भूप बण राज राजाना, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा कर परवाना, सच सिँघासण आसण लाइंदा। सोभावन्त होए मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। एका राग इक्क तराना, आदि अनादी आप वजाइंदा। सोहे मन्दिर सच मकाना, महल अटल आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी कार आप कमाइंदा। साची कार करता पुरख, आपणी आप कमाईआ। सचखण्ड दुआरे कर परख, वेस अवल्ला आप वटाईआ। आपे नूर आपे दरस, वेखणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आप सुहाईआ। सचखण्ड सुहाए सोभावन्त, इक्क इकल्ला एकँकार। निरगुण नूर श्री भगवन्त, अजूनी रहित हो उज्यार। करे खेल नारी कन्त, हरि जू बण बण कन्त भतार। आपे चाढ़े रंग बसन्त, आपे होए वेखणहार। आप बणाए आपणी बणत, साचे मन्दिर बैठ दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार खेल अवल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। सचखण्ड वसाए सच महल्ला, सति सतिवादी आप बणाइंदा। सच सिँघासण इक्को मल्ला, पुरख अबिनाशी डेरा लाइंदा। निरगुण निरगुण फड़ फड़ पल्ला, साचा सगन मनाइंदा। जोती जोत आपे रला, नूर नूर नूर समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे साची कार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, हरि पुरख निरँजण लए मनाईआ। एकँकारा इक्क आधार, एका गृह वज्जे वधाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, नूर नुराना नूर दरसाईआ। श्री भगवान खेल अपार, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण भिखार, आपणी झोली आपणे अग्गे डाहीआ। आपे देवणहार दातार, दाता दानी आप हो जाईआ। सचखण्ड

दुआरे खेल करतार, करता पुरख आप कराईआ। ना कोई होए वेखणहार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे खेल कराईआ। दर घर साचे खेल करतारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। दाता दानी बण वरतारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, आपणी झोली अग्गे डाहइंदा। इक्क अलख बोल जैकारा, अलख निरँजण नाद वजाइंदा। चारों कुण्ट एका धारा, एका राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड खेल श्री भगवान, आपणा आप कराईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, दयावान वड्डी वड्याईआ। निरगुण निराकार निरवैर निगहबान, इक्क इकल्ला वेख वखाईआ। दर दरवेश नर नरेश मंगे दान, भिखक झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दाता भिखारी आपणा रूप वटाईआ। आपे दाता आप भिखारी, हरि आपणी मंग मंगाइंदा। आपे वस्त जोत निरँकारी, आपे साचे घर टिकाइंदा। आपे वणज आप वपारी, आपे साचा हट्ट सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपणे हथ्थ फड़ाइंदा। आपणी वस्त पुरख समरथ, आपे आप वरताईआ। निरगुण अंदर निरगुण रख, निरगुण करी कुड़माईआ। निरगुण सज्जण निरगुण साक, निरगुण बंधप एका पाईआ। निरगुण पतित निरगुण पाक, निरगुण पुनीत नाउँ धराईआ। निरगुण जोत निरगुण ज़ात, जोती जाता निरगुण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपणे विच टिकाईआ। निरगुण अंदर निरगुण वड़, आपणा खेल कराया। सचखण्ड महल्ले आपे चढ़, आपणा पर्दा दए उठाया। आपणा नाउँ आपे पढ़, नाउँ निरँकारा आप सुणाया। आपणे अग्गे आपे खड़, आपणा दरस आप वखाया। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा खेल रचाया। सचखण्ड खेल हरि करतार, करता पुरख आप कराईआ । रूप धर धर पुरख नार, नर नरायण सेज सुहाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुपत ज़ाहर भेव ना राईआ। दाई दाया बण आप निरँकार, आपणी सेवा आप कमाईआ। जननी जन अगम्म अपार, बणे धन्न जणेंदी माईआ। सुत दुलारा कर उज्यार, शब्दी नाउँ रखाईआ। एका करे सच प्यार, साची गोद सुहाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। पिता पूत करे प्यार, पीत पीतम्बर दए सुहाईआ। आपणा अडम्बर रच करतार, आपे वेख वखाईआ। सच सुअम्बर पुरख नार, निरगुण निरगुण रिहा हंढाईआ। ना कोई वेखे विगसे पावे सार, रूप रंग रेख ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सुत दुलारा शब्दी बाल, हरि जू आप उपाया। सचखण्ड दुआर करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाया।

सदा सुहेला वसे नाल, विछड़ कदे ना जाया। आप जणाए आपणी चाल, चाल अवल्लड़ी इक्क प्रगटाया। सुत दुलारे साची घालण घाल, हरि जू आख सुणाया। इक्को बणना सति दलाल, सति सतिवादी वेख वखाया। सुत दुलारा करे सवाल, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। सच दुआरे दे बठाल, गृह मन्दिर इक्क जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग रिहा वखाया। सुत दुलारे बाल नादान, हरि शब्द करे जणाईआ। सचखण्ड मेरा सच निशान, तेरा मन्दिर दयां बणाईआ। थिर घर बणावां इक्क मकान, तेरी वंड वंडाईआ। कर किरपा देवां दान, बण दाता झोली पाईआ। आदि जुगादि वेखां मार ध्यान, भुल्ल कदे ना जाईआ। मेरा नाउँ तेरा गाण, तेरा गीत वड्डी वड्याईआ। मेरा चरन तेरा माण, तेरा माण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचे हरि, सुत शब्द दिता समझाईआ। सुणया संदेशा श्री भगवान, हरि शब्दी सीस झुकाया। मैं बाली बुध बाल अञ्याण, तेरा भेव कोए ना आया। थिर घर वेखां तेरा मकान, जिस धाम दएं बहाया। अठ्ठे पहर तेरे चरन कँवल ध्यान, नेत्र नैणां राह तकाया। तूं रहिणा निगहबान, इक्को ओट रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बालक मंग मंगाया। मंगां दान झोली डाह, मेहरवान मेहरवाना। साची भिच्छया देणी पा, गुणवन्त गुण निधाना। साची सिख्या देणी सिखा, मार्ग पन्थ इक्क रखाना। आपणा लिख्या लेखा देणा वखा, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श चरन ध्याना। पुरख अबिनाशी हो मेहरबान, आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड तेरा इक्क मकान, थिर घर मेला सहिज सुभाईआ। आदि जुगादि सच निशान, तेरे हथ्थ फड़ाईआ। करां खेल इक्क महान, अपरम्पर दए वड्याईआ। तूं सुणना कर ध्यान, सच संदेशा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत एका गुण वखाईआ। एका गुण श्री भगवन्त, हरि जू आप जणाया। तेरी बणाई इक्को बणत, दूजा संग ना कोए रलाया। मेरा नाउँ तेरा मंत, निष्अक्खर आप पढ़ाया। आदि जुगादी महिमा अगणत, भेव कोए ना आया। थिर घर तेरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाया। इक्को वार बणया मंगत, दूजी वार मंगण ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। हथ्थ रख करतार, देवे माण वड्याईआ। तेरा लेखा लेख अपार, लिखण पढ़न विच ना आईआ। तेरी रचना करां अगम्म अपार, अलख अगोचर खेल कराईआ। तेरी सेजा तेरा रूप माणे बण भतार, कन्त नार आप हो जाईआ। निरगुण रूप निराधार, निराकार वेस वटाईआ। थिर घर खेले खेल अपार, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाईआ। भेव

अभेदा पुरख अकाल, आपणा भेव खुलाइंदा। सुत दुलारे साचे लाल, साची सेवा इक्क लगाइंदा। तेरे अन्तर खेल करां कमाल, अनुभव आपणा नूर वखाइंदा। मेरा नूर जल्वा जलाल, आदि जुगादि डगमगाइंदा। थिर घर वसे तेरी धर्मसाल, सच दुआरा आप बणाइंदा। आपे वेखे तेरा हाल, आप आपणा पन्ध मुकाइंदा। फल लगाए तेरे डाल, विश्व तेरा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत सुण लै पूत, पिता पुरख करे जणाईआ। मेरा नाउँ चारों कूट, तेरा डंका करे शनवाईआ। तेरा रूप ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी वेख वखाईआ। विश्व तेरा होए रूप, विष्नूं ब्रह्मा लए जाईआ। शंकर रहे सदा अवधूत, हरि जू आपणी बणत बणाईआ। पंज तत्त खेल कलबूत, काया कपड़ खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए समझाईआ। सुण शब्द मेरे सुत दुलारे, हरि जू आख सुणाया। करां खेल अपर अपारे, दर तेरे सोभा पाया। रवि ससि कर उज्यारे, तेरी किरन किरन रुशनाया। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड पसारे, तेरा बन्धन पाया। विष्न ब्रह्मा शिव कर पनिहारे, साची सेवा इक्क लगाया। एका हुक्म इक्क वरतारे, एका मार्ग दयां वखाया। एका वस्त अमोलक भण्डारे, एका वार झोली पाया। एका वार करां पसारे, कोटन कोटि रूप वटाया। एका वार करां सँघारे, जो घड़या भन्न वखाया। एका वार बोल जैकारे, शब्द अनादी राग अलाया। तेरा खेल होए संसारे, सो पुरख निरँजण आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाया। शब्द सुत होया हैरान, हरि जू भेव कोए ना आया। कवण दुआर देवे फ़रमाण, आपणा हुक्म सुणाया। मैं इक्क इकल्ला बाल अञ्याण, ब्रह्मण्ड खण्ड खेड़ा किवें दयां वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा मार्ग आप वखाया। अनभुव हरि जू मार्ग दस्स, आपणा भेव खुलाया। सति सरूप हो प्रतख, निरगुण दरस दिखाया। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव आपणे अंदर ढक, उपर पर्दा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण रिहा वखाया। एका गुण दस्से भगवान, भगवन दया कमाईआ। शब्दी सुत वड्ड बलवान, तेरा बल आप प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, तेरी सेव लगाईआ। दर दरवेश मंगण दान, बैठे सीस झुकाईआ। एका वस्त कर परवान, त्रैगुण तेरे हथ्थ फड़ाईआ। पंचम तत्त बणाए काहन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाल रलाईआ। लख चुरासी हो प्रधान, नव नौ चार वंड वंडाईआ। एका राग नाद धुन्कान, धुन आत्मक करे शनवाईआ। विष्नूं करे इक्क ध्यान, चरन कँवल सच्ची शरनाईआ। ब्रह्मा मंगे सच्चा दान, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। शंकर चरन कँवल करे ध्यान, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा

समझाईआ। उठ सुत बल धार, हरि जू आप सुणाया। करां खेल अपर अपार, तेरी सेवा इक्क लगाया। एका हुक्म होए दातार, ना कोई मेटे मेट मिटाया। गगन मंडल ला अखाड़, रवि ससि नाच नचाया। त्रैगुण माया भर भण्डार, विष्न ब्रह्मा संग निभाया। लख चुरासी कर त्यार, घड़ घड़ भाण्डे वेख वखाया। एका नाम सच ब्रह्मा वेता झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग रिहा वटाया। साचा मार्ग हरि चलाउणा, आपणा भेव दए जणाईआ। विष्न विष्नूं रंग वखाउणा, करे खेल बेपरवाहीआ। ब्रह्मा ब्रह्म रूप उपजाउणा, ईश जीव करे कुड़माईआ। शंकर अन्तिम हुक्म वरताउणा, थिर घर कोए रहिण ना पाईआ। एका राग आप सुनाउणा, चारे वेद दए समझाईआ। चारे जुगां वंड वंडाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाउँ धराईआ। चारे बाणी राग अलाउणा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाईआ। चारे वरनां वंड वंडाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे कुड़माईआ। चारे कुण्ट वेख वखाउणा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण खेल कराईआ। चार यारी बन्धन पाउणा, ना सके कोई तुड़ाईआ। जुग जुग मात वेस वटाउणा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। एका आपणा नाउँ प्रगटाउणा, नाउँ निरँकारा इक्क जणाईआ। भगत भगवन्त आप उठाउणा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। नौ दुआरे खोज खुजाउणा, दर दर आपणी अलख जगाईआ। डूँग्घी भँवरी फेरा पाउणा, काया कवरी वड वड्याईआ। सुखमन टेडी बंक पन्ध मुकाउणा, ईड़ा पिंगल डेरा ढाहीआ। निरगुण नूर चन्द चमकाउणा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। आत्म सरोवर इक्क वखाउणा, अमृत निझर झिरना आप झिराईआ। सुरती शब्दी मेल मिलाउणा, अकाल मूर्त वेख वखाईआ। अनहद नादी नाद वजाउणा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाउणा, एका ढोला सच्चे माहीआ। आत्म सेजा साची सेज हंढाउणा, घर घर मेला मेल मिलाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म एका रंग रंगाउणा, जुग जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत रिहा समझाईआ। सुत दुलारा कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। तूं शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह वड अख्वाइंदा। हुक्मी हुक्म तेरा वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। कवण रूप खेल करे विच संसार, हउँ इक्को मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी अलख अगम्म, बोध अगाध जणाईआ। आदि जुगादी दस्से कम्म, आपणा भेव खुल्हाईआ। ना मरा ना पवां जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। जुगा जुगन्तर बेड़ा बन्न्ह, लख चुरासी गेड़ भुवाईआ। सचखण्ड वसां बिन छप्परी छन्न, चार दीवार ना कोई बणाईआ। होए प्रकाश बिन सूरज चन्न, मंडल मण्डप ना कोई वड्याईआ। ना कोई राग ना कोई कन्न, तार सतार ना कोई हिलाईआ। ना कोई जननी ना कोई जन, पिता पूत ना कोई अख्वाईआ।

करे खेल श्री भगवान, आपणा भेव आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा गुण वखाईआ। आदि पुरख भेव जणाया, निष्अक्खर आखर बोल। जुग जुग आपणा दए समझाया, निरगुण तोले तोल। लख चुरासी लए उपजाया, घट घट अन्तर आत्म मौल। पंज तत्त काया वेख वखाया, अठ्ठ तत्त पूरा करे कौल। नौं दुआरे रंग चढ़ाया, दसवें बैठा रहे अडोल। जुग जुग आपणा मार्ग लाया, प्रगट होए उपर धरनी धरत धवल धौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे साचा कौल। करे कौल हरि इकरार, इक्को सनद लिखाईआ। जुग जुग भेजां गुर अवतार, लोकमात करन पढ़ाईआ। चारे खाणी कर पुकार, चारे बाणी करन जणाईआ। चारों कुण्ट कर विचार, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाईआ। आपणा खेल पुरख अबिनाशा, एका वार जणाइंदा। जुग जुग वेखां खेल तमाशा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। गुर अवतारां दे भरवासा, लोकमात घलाइंदा। गृह गृह मन्दिर पावे रासा, घट घट नाच नचाइंदा। जन भगतां पूरी करे आसा, निरासा कोए नज़र ना आइंदा। आपणा भेव दस्सां खुलासा, इक्को अक्खर नाम पढ़ाइंदा। दो जहान कर प्रकाशा, लोआं पुरीआं डगमगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर दासा, साची सेवा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत सुण लै बात, हरि बातन आप जणाईआ। जुग चौकड़ी चले मेरी गाथ, गुर अवतार करन पढ़ाईआ। जुग जुग मेटां अन्धेरी रात, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। शब्द सुत अग्गों बोल, एका वार जणाया। जुग चौकड़ी तोलें तोल, आपणी सेव कमाया। तूं सचखण्ड बैठा रहें अडोल, तेरा अन्त कोए ना आया। कवण रूप हर घट जाएं मौल, घर घर आपणी जोत जगाया। कवण बिध रखें पर्दा ओहल, दिस किसे ना आया। कवण नाद दर दर पएं बोल, आपणा नाउँ सुणाया। जुग चौकड़ी कर कर वेखें घोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला लएं मिलाया। हरि जू वेला अन्तिम दस्से, एका इक्क जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल वेख वेख हस्से, बेअन्त बेपरवाहीआ। दो जहानां निरगुण नस्से, निरवैर फेरा पाईआ। गुर अवतारां अन्तर वसे, दिस किसे ना आईआ। लख चुरासी अंदर फसे, आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त दए जणाईआ। आपणा अन्त दस्से भगवान, एका एक हुक्म जणाया। नव नौ चार होए प्रधान, लोकमात वेस वटाया। नाउँ निधाना दे ज्ञान, ईश जीव लए पढ़ाया। गुर अवतार जोत महान, जोती नूर करे रुशनाया। काया मन्दिर इक्क मकान, सचखण्ड दुआर दए बणाया। गृह मन्दिर देवे धुर फ़रमाण,

अनहद नादी नाद वजाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुके आण, थिर कोए रहिण ना पाया। विष्नूं मंगे हरि जू अग्गे दान, ख़ाली झोली रिहा वखाया। ब्रह्मा वेता करे कल्याण, मुख मुखड़ा रिहा सालाहया। शंकर वेखे इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाया। आपणा भेव हरि भगवन्त, एका वार जणाईआ। जुग चौकड़ी बणाउणी बणत, कोटन कोटि रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बणे बणत, रामा कृष्ना खेल खलाईआ। शास्त्र सिमरत भेव अनन्त, पुराण अठारां सदा जस गाईआ। गीता ज्ञान जणाए कन्त, कन्त कन्तूहल वेख वखाईआ। अन्त करे सब दा अन्त, मेटणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जाए बीत, हरि जू आप बिताइंदा। भगत भगवन्त गाए गीत, गोबिन्द अक्खर आप सालाहइंदा। आदि जगादी साची रीत, जुग करता आप चलाइंदा। भगत जनां बण इक्को मीत, मित्र प्यारा वेख वखाइंदा। धाम वखाए इक्क अनडीठ, दरगाह साची पर्दा लाहइंदा। चेतन हो के वसे चीत, चित वित ठगौरी कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। पतित पापी करे पुनीत, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा पर्दा लाहइंदा। कलयुग सतिजुग त्रेता द्वापर जाए लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग डाहे सेज पलँघ, घर घर आपणा आसण लाईआ। जूठ झूठ वजाए मृदंग, कूड़ा डौरू इक्क उठाईआ। माया ममता इक्क अनन्द, घर घर दए वखाईआ। सच सुच्च ना कोए चन्द, कूड़ी रैण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए समझाईआ। कलयुग खेल हरि अवल्ला, इक्को इक्क जणाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। दीपक नूर नूर नुराना आपे बला, जल्वा जलाल आप हो जाइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, ईसा मूसा वेस वटाइंदा। कलमा कायनात एका घल्ला, इलाही कलाम आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राग आप अल्हाइंदा। आपणा राग परवरदिगार, एका एक अल्हाईआ। अहिबाब रबाब वजाए सतार, सदा सलामत शहिनशाहीआ। एका हुक्म इक्क वरतार, एका अल्फ़ करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल मौला, आपणी धार चलाइंदा। आपे जाणे आपणा कौला, कीता कौल पूर कराइंदा। मुहम्मद उपजाए उपर धौला, अहिमद रंग वखाइंदा। एका गाए साचा ढोला, नबी रसूलां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आप उठा, भेव दए जणाईआ। नानक निरगुण जोत जगा, निरँकार करे रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क

वखा, एका घर जणाईआ। एका मन्त्र दए पढ़ा, अन्तर इक्क लिव लाईआ। एका बस्त्र दए पहना, एका रंग चढ़ाईआ। एका शमशीर दए फड़ा, तिक्खी धार रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पा, लोकमात करे रुशनाईआ। चार वरनां दए जणा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल समझाईआ। निरगुण नूर नानक धार, निरँकार आप प्रगटाइंदा। खेले खेल अपर अपार, अनुभव आपणा रंग वखाइंदा। शब्द नाद नाद धुन्कार, ब्रह्माद आप सुणाइंदा। अन्तिम लेखा विच संसार, पूत सपूता आप चुकाइंदा। पुरख अकाल ख़बरदार, बेख़बर आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। सुण शब्द चतुर सुजाण, हरि साचा सच जणाया। नव नौ चार मिटे निशान, कलयुग अन्तिम वेख वखाया। लख चुरासी होए हैरान, हरि का भेव किसे ना पाया। नानक गोबिन्द मंगे दान, प्रभ अग्गे झोली डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त दए सुहाया। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि अन्त दए जणाईआ। गुर अवतारां पन्ध मुकाउणा, बण बण पाँधी फेरा पाईआ। भगत भगवन्त दर मंगाउणा, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सन्त कन्त गोद बहाउणा, एका घर दए वड्याईआ। गुरमुख मुख मुख सलौहणा, सतिनाम कर पढ़ाईआ। गुरसिख सिख इक्क उपजाउणा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। लोक परलोक वेख वखाउणा, अवण गवण फेरा पाईआ। चौदां तबकां पर्दा लौहणा, चौदां लोक डेरा ढाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ उठाउणा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। एका डंका नाम वजाउणा, दो जहान करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त रिहा जणाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आए, हरि अन्त दए कराया। निरगुण रूप जामा पाए, निहकलंक नाउँ रखाया। वेद व्यास गया लिखाए, ईसा एका मंग मंगाया। नानक गोबिन्द डंका गए वजाए, सृष्ट सबाई इक्क समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप जणाया। आपणा हरि जू दस्से राह, शब्दी शब्द जणाया। लेखा लिख्त विच ना जाए आ, लिख लिख लेख ना किसे मुकाया। चारे वेद रहे शरमा, हरि का भेव कोए ना पाया। पुराण अठारां नेत्र नैण ना सके उठा, पर्दा सके ना कोए चुकाया। गुर अवतार गए गा गा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सालाहया। खाणी बाणी कहे बेपरवाह, परवाह आपणा रिहा चलाया। भगत मंगण इक्को नाँ, प्रभ अग्गे झोली डाहया। सन्त मंगण साचा थाँ, चरन कँवल ध्यान लगाया। गुरमुख धूढ़ी ख़ाक रहे रमा, मस्तक टिक्का इक्क छुहाया। गुरसिख राह रहे तका, नेत्र नैण नैण उठाया। कवण वेला हरि जू फेरी लए पा, आप आपणा पन्ध मुकाया। जुग विछड़े लए मिला, आप आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया।

कलयुग अन्तिम खेल करना, कादर करीम रिहा जणाईआ। जुग जन्म दा भगत वरना, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी चुकाए मरना डरना, राए धर्म ना दए सजाईआ। अनसुरती एका पल्लू फड़ना, सुरती सुरत दए भुवाईआ। डूँग्घी कवरी आपे वड़ना, निरगुण हो हो सेव कमाईआ। सच महल्ले आपे चढ़ना, गुरसिख आत्म सेज सुहाईआ। अंदर वड़ वड़ शब्द पढ़ना, आपणे नाउँ करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त दए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम जाए आ, आपणा पन्ध मुकाया। पुरख अबिनाशी प्रगट होवे बेपरवाह, नूर कर रुशनाया। इक्क जपाए आपणा नाँ, सो पुरख निरँजण हो रुशनाया। चार जुग दा लहिणा दए मुका, जुग चौकड़ी नाल मिलाया। नानक गोबिन्द कहिणा पूरा दए करा, हरि जू आपणी सेव कमाया। जन भगतां लहिणा देणा दए चुका, पूरब लेखा आप मुकाया। साचा गहिणा तन देवे पहना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त दए सुहाया। कलयुग वेला अन्त सुहाउणा, सवै जोत करे रुशनाईआ। चार वरन दा डेरा ढाउणा, अठारां बरन रहिण ना पाईआ। चारे खाणी वेख वखाउणा, चारे बाणी बूझ बुझाईआ। सब दा हाणी इक्क मिलाउणा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस दा सानी कोई नज़र ना आउणा, नेत्र नैण ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे हरि, हरी दुआर फेरा पाया। जिस कोलों मंगदे रहे वर, वर दाता बेपरवाहया। जिस नूं कहिन्दे रहे निरभउ ना कोई भय डर, भय सब दा रिहा मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम फेरा पाया। कलयुग अन्तिम फेरा पा, भेव दए खुलाईआ। कूड़ी क्रिया दए मिटा, जूठ झूठ रहे ना राईआ। राजा प्रजा दए खपा, एका खपर हथ्थ उठाईआ। त्रैगुण अग्नी दए तपा, जोती अग्नी आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए मुकाईआ। सब दा लेखा जाए मुक्क, मुकाउणहार करतारा। प्रभ का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे विच संसारा। लख चुरासी भाग गया निखुट्ट, ना कोई करया सच वणज वपारा। चारों कुण्ट पैणी लुट्ट, दहि दिशा धूंआँधारा। झूठा बूटा देवे पुट्ट, लग्गा रहे ना अन्तिम वारा। करे खेल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म सच्ची सरकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। अपर अपार हरि का खेल, चार वेद भेव ना आईआ। करे प्रकाश बिन बाती तेल, निरगुण जोत डगमगाईआ। जन भगतां सज्जण सुहेल, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा निशाना श्री भगवाना हो मेहरवाना, रविदास चम्मयारे हथ्थ फड़ाईआ। रविदास चम्मयारे लिख्या लेख, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। शाह पातशाह मिटदी जाए रेख, थिर कोए

रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि पूजा कर कर थक्के गणपति गणेश, अष्टभुज देवी देव शंकर रहे मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करतार, चतुर्भुज वेख वखाइंदा। चार जुग दी जाणे कार, तेई अवतारां आप उठाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद खोल्ह कवाड़, अल्ला राणी मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। नानक गोबिन्द कर प्यार, चरन कँवल इक्क वखाइंदा। अठारां भगतां दे अधार, अधिआत्म रंग रंगाइंदा। परम आत्म हो उज्यार, लोकमात फेरा पाइंदा। निहकलंक लै अवतार, जोती जाता डगमगाइंदा। सम्बल नगर धाम उज्यार, नूर नुराना आप उपाइंदा। खड़ग खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा। वंडे वंडां विच संसार, वंडणहारा दिस ना आइंदा। भेख पखण्डा करे खुआर, सच सुच्च आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह श्री भगवन्त, आपणा आप चलाईआ। हरिजन मेल नार कन्त, दर घर साचे लए मिलाईआ। लेखा जाणे भगत भगवन्त, भगवन आपणी खेल कराईआ। कलयुग वेला आया अन्त, निहकलंक नाउँ रखाईआ। आपणी महिमा जाणे अगणत, बेअन्त वड वड्याईआ। गुरमुख वेखे साचे सन्त, लख चुरासी फोल फुलाईआ। एका देवे नाम मंत, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाईआ। मेल मिलावा साची संगत, सगला संग आप हो जाईआ। नाता तोड़ जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। पंच विकारा करे खण्डत, नाम खण्डा इक्क वखाईआ। गुरसिख बोध अगाधा पंडत, जिस जन आपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां होए सहाईआ। भगतां होए राखा, हरि जू आपणी सेव कमाइंदा। सतिजुग साची गाए गाथा, गा गा आपणा रंग रंगाइंदा। हरि का भेव ना पाए त्रिलोकी नाथा, कोटन कोटि राम सीस झुकाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद आपणा कर ना सके पूरा घाटा, साचा तोल ना कोए वखाइंदा। करे खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताइंदा। निरगुण हो हो फिरे नाठा, गुरमुख सुत्तयां आप जगाइंदा। आओ रल मिल करीए बातां, आपणी कहाणी आप सुणाइंदा। नाता तुटणा ज़ाता पाता, इक्को ब्रह्म सर्ब समझाइंदा। इक्को तीर्थ इक्को ताटा, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। इक्को अमृत इक्को बाटा, दूजा प्याला ना कोए बणाइंदा। इक्को वणज इक्को हाटा, वस्त हरि जू इक्क वरताइंदा। इक्क किनारा इक्को ताटा, इक्को घाट पार वखाइंदा। इक्को नूर इक्को लाटा, इक्को जोत डगमगाइंदा। इक्को पिता इक्को माता, पिता पूत इक्क उपाइंदा। इक्को दीन इक्को दाता, देवणहार इक्क हो जाइंदा। इक्को साहिब कमलापाता, जुग जुग वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जगाइंदा। जन भगतां हरि

जगाए, जुग जुग अवल्लड़ी कार। कलयुग अन्तिम वेख वखाए, निरगुण निरगुण लए अवतार। जुग चौकड़ी विछड़े लए मिलाए, पूरब लहिणा कर्म विचार। आपणा पर्दा दए चुकाए, देवे दरस अगम्म अपार। गोबिन्द बेड़ा लए तराय, ना कोई डोबे विच मँझधार। आपणे कंधे लए उठाए, गुरमुख चले हौले भार। साचा मार्ग आप जणाए, दरगाह साची धाम न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा करे विच संसार। सेवा करे ठाकर स्वामी, हरिजन ठोकर नाम लगाइंदा। घट घट हरि जू अन्तरजामी, घर घर वेख वखाइंदा। रातीं सुतिआं सुणाए आपणी बाणी, छत्ती राग भेव ना आइंदा। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ ना कोई भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जगाइंदा। भगत सुहेला उठया, उठया विच संसार। साहिब सतिगुर पूरा तुठया, देवे दरस दीदार। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो रिहा लुकया, निरगुण रूप निरँकार। कलयुग अन्तिम शेर हो के बुक्कया, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। कलयुग बूटा जाणा पुट्टया, अन्त रहे ना विच संसार। शाह सुल्तानां फड़ फड़ कुट्टया, मारे शब्दी मार। दिन दिहाढ़े जाए लुट्टया, ना दिसे कोई सहार। गुरमुख विरला गोद चुक्या, जिस जन करे प्यार। उठ गुरमुख साजण सुत्तया, तेरी सतिगुर पाए सार। सोहे बसन्त साची रुत्तया, खिड़े इक्क गुलजार। फल लग्गे डाली पत्तयां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए प्यार। भगत उधारी उठया, इक्क इकल्ला एकँकार। रातीं सुत्तयां आप जगा ल्या, दे दे दरस दीदार। जुग जुग दे रुस्सयां आप मना ल्या, कर किरपा अपर अपार। बिन पुछयां घर बहा ल्या, पूरब जन्म दा करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। हरि करतार खेल कर, ख़ालक दए वखाईआ। जन भगतां चुकाए दूजा डर, भउ अवर ना कोई रखाईआ। इक्क नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धुवाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, निवण सु अक्खर दए समझाईआ। सोहँ अक्खर जाणा पढ़, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। आपणे मन्दिर जाणा चढ़, घर घर विच वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण सेवक सेव कमाईआ। सेवक बणया शाह सुल्तान, साची सेव मात कमाईआ। साचे भगत कर परवान, अंग अंग नाल मिलाईआ। सति सतिवादी सच निशान, दो जहानां दए झुलाईआ। साता दूआ खेल महान, बहत्तर एका रंग वखाईआ। त्रै त्रै लोक होण हैरान, हरि जू कवण रूप वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, चारे कुण्टां नैण उठाईआ। सुरपति इन्द तुट्टा माण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। करोड़ तेतीसा सर्ब पछतान, वेला गया हथ्थ ना आईआ। कलयुग प्रगट होया श्री भगवान, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। जन भगतां देवे माण, साडा माण रिहा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ।

शाह पातशाह खेल करा, आपणा रंग जणाइंदा। भगत दुआरा मात प्रगटा, प्रगट आपणा आप समझाइंदा। सचखण्ड दुआरा दए बणा, सचखण्ड वासी आसण लाइंदा। गुर अवतार दर लए बुला, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। भगत भगवन्त राह दए वखा, बण रैहबर खेल कराइंदा। सच विहारा करता कादर दए जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार आप कराइंदा। सच विहारा करता कादर करतार, भेव अभेद जणाईआ। छब्बी पोह दिवस विचार, लोकमात दए वड्याईआ। साचे तख्त बह सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाईआ। चार जुग दा लेखा दए निवार, बाकी कोई रहिण ना पाईआ। गुर अवतार करन विचार, विचार विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका नाम वजाईआ। एका डंका जाए वज्ज, वजावणहार आप निरँकारा। कूड़ी क्रिया कलयुग जाए तज्ज, जूठा झूठा उडे अन्ध अन्धयारा। सतिजुग साची सेजा चढ़े भज्ज, धरत मात करे प्यारा। जन भगतां पर्दा देवे कज्ज, बख्शे चरन सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करे कराए साची कारा। साची कार हरि गोबिन्द, आपणी आप कराईआ। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, चिंता चिखा दए गंवाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। अमृत आत्म देवे सिन्ध, सागर आपणा रूप वटाईआ। हरिजन बणाए अनादी बिन्द, पिता पूत लए मिलाईआ। तख्तों लाहे सुरपति राजा इन्द, गुरमुख दए वड्याईआ। शंकर छड्डे आपणा पिण्ड, पिण्डी फेर ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए आप सहाईआ। शिव शंकर होए उदास, उदासी कोए ना मात मिटाइंदा। साची वस्त ना कोई पास, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। जो उपजे सो होवे नास, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। साचे भगत कर प्रकाश, हरि जू माण दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर तेरा पन्ध मुकाइंदा। ब्रह्मा वेता कर विचार, आप आपणा रिहा भुलाईआ। मेरे मनवन्तर गए हार, महिमा कोई रहिण ना पाईआ। नव नौ बीते जुग चार, आपणा पन्ध मुकाईआ। अन्तिम लहिणा मंगे निरँकार, भुल्ल कदे ना जाईआ। पुरी ब्रह्म ना रहे पसार, पारब्रह्म करे सफ़ाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, लोकमात दए वड्याईआ। सतिजुग साची चले कार, करनी करता आप कमाईआ। गुरमुख सज्जण लए भाल, देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। चरन कँवल जन साची ओट , प्रभ शरन सच्ची शरनाईआ। आलणयो डिग्गे चुक्क बोट, आप आपणी गोद बहाईआ। झूठी वासना कढ्ढे खोट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए गंवाईआ। नाम भण्डारा दए अतोट, निखुट कदे ना जाईआ। पंज तत्त काया

वेखे किला कोट, नौ दुआरे खोज खुजाईआ। गृह मन्दिर जगाए निर्मल जोत, घर घर विच करे रुशनाईआ। रातीं सुत्तयां खोल्ह सोत, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। हरि का शब्द वरन गोत, ज़ात पात जोत रुशनाईआ। तन नगारे लग्गे चोट, अनहद शब्द नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे सच शरनाईआ। हरि शरनाई चरन धूढ़, धूढ़ी मस्तक लाया। काया चोली रंग चढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाया। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन आपणा नाम जपाया। घर उपजे शब्द अनादी तूर, पंचम राग नाद सुणाया। सतिगुर सच्चा हाज़र हज़ूर, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। फड़ फड़ तारे सारा पूर, बेड़ा लोकमात चलाया। दाता दानी जोधा सूर, बीर बीरता आपणे हथ्थ रखाया। सर्बकला भरपूर, भण्डारा भरपूर दए वखाया। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, सच सुच्च जोड़ दए जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे इक्क शरनाया। हरि शरनाई होए गत, गति मित आप जणाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, तत्ती वा ना लागे राईआ। सति सन्तोख देवे धीरज जत, मन मति बुध दए गंवाईआ। घर उपजाए ब्रह्म मति, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। मेल मिलावा कमलापति, कँवल नैण दरस दिखाईआ। पंचम विकारा लहे सथ्थ, सत्थर एका दए विछाईआ। नज़री आए घट घट, घट घट रव्या सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे सच शरनाईआ । सच शरनाई सतिगुर चरन, इक्को इक्क जणाइंदा। मिले वड्याई उपर धवल, हौला भार कराइंदा। उलटा करे नाभ कँवल, फड़ झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शरनाई इक्क वखाइंदा।

हरि फ़रमाण गुर की बाणी, गुरू ग्रन्थ गुर वड्याईआ। गोबिन्द होया जाण जाणी, सब नूं गया समझाईआ। जिस जन पाउणा पद निरबाणी, पढ़ पढ़ हरि लिव लाईआ। जो जन पढ़ पढ़ जाणे जगत कहाणी, तिस ठौर कोए ना पाईआ। हरि का नाउँ अमृत बाणी, गुर अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू ग्रन्थ रिहा समझाईआ। गुरू ग्रन्थ हरि का उपदेश, नानक अंगद अंग लगाया। साहिब दाता नर नरेश, अमरदास रिहा समझाया। रामदास कहे हरि रहे हमेश, ना मरे ना जाया। गुर अर्जन करे आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाया। धन्न साहिब जिस तूं वसया देश, धन्न धन्न तेरी वड्याआ। जुग जुग तेरा लिखि लिख थक्के लेख, अन्त किसे ना पाया। गोबिन्द ला के गया मेख, ना कोई सके उखड़ाया। हरि जू अन्तिम आवे सम्बल देश, निहकलंका नाउँ रखाया। दो जहानां लए वेख, आपणा

भेव ना किसे खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। गुरू ग्रन्थ बोध अगाध ज्ञान, जीवां जंतां करे पढ़ाईआ। सिफ्ती सिफ्त सालाहन, पारब्रह्म सच शरनाईआ। भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख इक्को गायण, गा गा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू ग्रन्थ गुर मीत दए वड्याईआ। गुरू ग्रन्थ गुर सूरा, चार वरन जणाया। जिस धाम प्रगट होए हाज़र हज़ूरा, आपणा रंग दए वखाया। कर किरपा नेड़े आए जो दिसे दूरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे नाल मिलाया। गुरसिख प्यार हरि प्रशादि, गुर किरपा आप वरताईआ। मानस जन्म मिली दाद, दाता दानी आप दवाईआ। भगत भगवान सच्ची याद, जुगा जुगन्तर भुल्ल ना जाईआ। आदि अन्त सुणे फ़रयाद, वेस अनेक रूप वटाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणा बन्धन पाईआ। बहत्तर नाड़ वेखे तिन्न सौ सठ्ठ हाड, रक्त बूंद फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि आप बणाईआ। सति प्रसादि होए सीत, सीतल धार रखाइंदा। हरिजन हरि जू सच प्रीत, प्रीतीवान आप निभाइंदा। धाम वखाए इक्क अनडीठ, अनडिठी रीत चलाइंदा। सोहँ शब्द सुहागी गीत, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि आप वरताइंदा। सति प्रसादि सति लग्गे भोग, हरि साचा आप लगाइंदा। हरिजन मेला धुर संजोग, हरि संजोगी आप कराइंदा। जन्म जन्म दा कटे रोग, कर्म कर्म दुःख मिटाइंदा। देवे दरस दर अमोघ, रूप अनूप आप वखाइंदा। इक्क सुणाए सच सलोक, साचा सोहला आपे गाइंदा। अन्तिम चरनां हेठ दब्बे मुक्त मोख, आप आपणी गोद बहाइंदा। मेल मिलाए निर्मल जोत, जोती जोत विच समाइंदा। सचखण्ड बहाए साचे कोट, एका मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीत प्रसादि जिस खुवाइंदा। सीत प्रसादि लाउणा रसना, रसक रस वखाईआ। हिरदे अंदर हरि जू वसणा, वस वस आपणा भेव खुल्हाईआ। साचा मार्ग इक्को दस्सणा, गुर गोबिन्द लए मिलाईआ। चरन दुआर बह बह हस्सणा, एका खुशी वखाईआ। कलयुग विकार कोलों नस्सणा, नस्स नस्स आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि दए खुवाईआ। सति प्रसादि रसना खाणा, जिह्वा गुण जणाइंदा। एथे ओथे मिले माणा, निमाणयां राह चलाइंदा। हरिभगत हरि आप पहिचाणा, पहिचाण विच किसे ना आइंदा। गुरमुखां हरि जू गा गा गा गाणा, आपणा वक्त लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि देवे वंड, अन्तिम आत्म पाए ठंड, अग्नी तत्त तत्त समझाइंदा। अग्नी तत्त जाए बुझ, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। हरिजन भेव खुल्हाए गुज्झ, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। सुरत शब्द इक्को

थाँ जाए रुज्झ, घर घर विच मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच प्रसादि वरताईआ। निरगुण रूप निराकार, आदि पुरख वड्याईआ। सच महल्ला कर त्यार, उच्च अटल्ला आप सुहाईआ। पुरख अकाल भेव न्यार, अजूनी रहित बेपरवाहीआ खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। सति सतिवादी हो त्यार, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। चार कुण्ट ना कोई दीवार, दीवा बत्ती ना कोई रुशनाईआ। नाद धुंन ना कोई जैकार, रागी राग ना कोई सुणाईआ। मंडल मण्डप ना कोई सहार, रवि ससि ना कोई चमकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोई अखाड़, रूप रंग ना कोई वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोई प्यार, त्रै मुख ना कोई वखाईआ। पंज तत्त ना कोई पसार, जल थल महीअल ना कोए वड्याईआ। जंगल जूह ना कोए उजाड़ पहाड़, समुंद सागर ना कोए प्रगटाईआ। गुर पीर ना कोई अवतार, साध सन्त ना कोई रखाईआ। खाणी बाणी ना कोई विहार, अवण गवण ना कोए फिराईआ। राजा राणी ना कोई दुआर, रईयत रूप ना कोई वटाईआ। हुक्मी हुक्म ना कोई हुक्मरान, शाह पातशाह ना कोई अख्वाईआ। सूरज चन्द ना ज़िमी असमान, धरत धवल ना कोई बणाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। साचा तख्त इक्क महान, सति सतिवादी आप बणाईआ। पावा चूल ना घड़े कोई तरखाण, बण बाढी सेव कमाईआ। उपर बैठ श्री भगवान, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दए वड्याईआ। सचखण्ड सच दुआरपाल, आप हो जाइंदा। सच सिँघासण हरि करतारा, करता आप कराइंदा। महल अटल उच्च मनारा, असथिल आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप उपाइंदा। सचखण्ड दुआरा किला कोट, हरि साची बणत बणाईआ। निर्मल जगाए इक्क जोत, नूर नुराना डगमगाईआ। दूसर रखे ना कोई ओट, पारब्रह्म बेअन्त वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरे साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। एकँकार कर पसार, आप आपणा रंग रंगाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, जोती जोत रुशनाइंदा। अबिनाशी करता मीत मुरार, आप आपणा संग निभाइंदा। श्री भगवान वसे ठांडे दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। सच सिँघासण अपर अपार, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा रंग रंगाइंदा। सचखण्ड हरि छैल छबीला, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। कोई रंग ना जाणे काला पीला, नीला सूहा वेस ना कोए धराईआ। आपे प्रगटे आपणा कर कर

हीला, मात पित ना कोए रखाईआ। ना कोए बंस ना कबीला, बन्धन बंधप ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड वसे एकँकार, अकल कला अख्वाइंदा। आदि जुगादी खेल अपार, भेव कोए ना पाइंदा। आपणी इच्छया आपे धार, आपे वेख वखाइंदा। आपणा नाउँ रख निरँकार, नर निरँकारा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा साचा बंक, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा वेस वटाईआ। आपे बण बण नारी कन्त, साची सेज आप सुहाईआ। आपे मणीआं आपे मंत, गीत गोबिन्द आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा वड्डा वड, हरि जू आप उपाइंदा। आप लडाए साचा लड, आपणा खेल आप कराइंदा। आप जाणे आपणी यद्द, आपणा बंस आप रखाइंदा। आपे पीए आपणी मदि, आपणा रस आपणे विच टपकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरे हरि जू चढ़या, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सच सुल्तान बण बण खड़्या, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। निरगुण पल्लू निरगुण फड़या, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण विद्या निरगुण पढ़या, एका एक करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि कदे ना मरया, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़या, ना मरे ना जाईआ। निरभउ कदे ना डरया, भय भयानक सर्ब वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घाड़न आपे घड़या, घड़ घड़ आपे वेख वखाईआ। आपणा घाड़न घड़े घड़त, घड़ घड़ वेख वखाइंदा। आपे जड़े आपणी जड़त, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। आपे जाणे आपणी किरत, बण बण किरती सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड अंदर साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। सचखण्ड अंदर साची दात, दाता दानी आप वरताईआ। करे खेल खेल तमाश, खेलणहारा वेख वखाईआ। निरगुण निरगुण पावे रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। आपणी पूरी करे आपे आस, आप आपा नाल मिलाईआ। आपे सोहे पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी यद्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा राह चलाईआ। सचखण्ड सजे बेपरवाह, आपणी धार चलाइंदा। एका देवे सच सलाह, सति सतिवादी हुक्म वरताइंदा। आपणा खेल आप करा, आपे वेख वखाइंदा। इक्को घर धी जवाई, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। आपे वेखे चाँईं चाँईं, आप आपणी खुशी मनाइंदा। आपे पकड़े उठ उठ बाहीं, आप आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच गुसाँईं, गहर गम्भीर आपणा खेल खलाइंदा। गहर गम्भीर वसे

सचखण्ड, शाह सुल्तान नाउँ धराइंदा। आपे वंडे आपणी वंड, वंडणहार आप हो जाइंदा। आपे जाणे आपणा अनन्द, अनन्द विच रखाइंदा। आपे सूरबीर सूरा सरबंग, सूत्रधारी आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा आसण, हरि जू आप लगाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशन, घर साचे वज्जे वधाईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाशन, गगन मंडल ना कोए रखाईआ। ना कोई पवण ना स्वासण, नाद अनाद ना कोए शनवाईआ। ना कोई भोग ना बलासण, भस्मड़ आपणा रंग रंगाईआ। निज घर करे आपे वासण, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे दए वड्याईआ। सचखण्ड अंदर थिर घर, घर घर विच आप उपाइंदा। जुगा जुगन्तर वेस कर, निरगुण सरगुण खेल खलाइंदा। हरिजन साचे लए फड़, आप आपणा बन्धन पाइंदा। भगतन भगवन्त घाड़न घड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड हरि खेल अपारा, लोकमात दए वड्याईआ। जुग जुग लै अवतार विच संसारा, संसार सागर फोल फुलाईआ। जन भगतां देवे इक्क अधारा, अन्तर मन्त्र करे पढ़ाईआ। गगन गगनंतर खोल्ह किवाड़ा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। चरन कँवल सच प्यारा, बख्शे सच शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन वड्याई लोकमात, हरि साचा सच रखाइंदा। एका देवे नाम दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। शब्द अगम्मी सुणाए गाथ, रागी राग ना कोए अल्हाइंदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, बाकी कोए रहिण ना पाइंदा। होए सहाई अनाथां नाथ, नाथ अनाथां दया कमाइंदा। आदि अन्त वसे साथ, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत विचोला सुणाए ढोला, साचा सोहला आप जणाइंदा। साचा सोहला हरि का गीत, काया मन्दिर अंदर इक्क अल्हाईआ। अठ्ठे पहर चरन प्रीत, चरन भिखारी आप बणाईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, दर घर साचे लए मिलाईआ। पतित पापी कर पुनीत, काया ठंडी सीत वखाईआ। नाता तोड़ ऊँच नीच, हस्त कीट धाम अनडीठ दए वखाईआ। सदा सुहेला वसे चीत, चेतन आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड वसे एकँकार, अकल कल धारीआ। जुग जुग जन भगतां करे प्यार, लोकमात पैज संवारीआ। डुब्बदे पाथर लाए पार, एका देवे नाम अधारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारीआ। अगम्म अथाह बेपरवाह, बेअन्त नाउँ धराइंदा। हरिजन साचे लए जगा, आपणी बूझ बुझाइंदा। त्रैगुण माया फंद कटा, एका बन्धन पाइंदा। गीत सुहागी एका सुणा, अनहद नाद वजाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी

२३४
११

खोज खुजा, पारब्रह्म मिलाइंदा। धुर दी वादी जन भगतां लए तरा, हरिजन आपणे संग रखाइंदा। अन्तिम लहिणा देणा दए चुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप उठाइंदा। जन भगतां देवे एका दान, दाता दानी आप वरताईआ। साचा मेला गोपी काहन, सखी साहिब लए मिलाईआ। कलयुग अन्त करे परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, गोहझ ज्ञान आप जणाईआ। एका मारे तीर निशान, अणयाला तीर चलाईआ। साचा मन्दिर वखाए मकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां वेखे चाँईं चाँईंआ। भगत जनां हरि साचा चाओ, जुग जुग आप रखाइंदा। आप उठाए फड़ फड़ बाहों, बण सेवक सेव कमाइंदा। एथे ओथे करे न्याउँ, अदल आदल इक्क वखाइंदा। लेखा जाणे अगम्म अथाहो, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे नाल मिलाइंदा। हरिजन अन्तिम पकड़े बांह, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। आपणी उँगली लए ला, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे सीस झुका, जिस दुआरे गुरमुख जाईआ। पारब्रह्म प्रभ होए सहा, साहिब सुल्तान वड्डी वड्याईआ। सुन अगम्मी डेरा ढाह, देवे पन्ध मुकाईआ। थिर घर साचे कुण्डा लाह, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। शब्दी शब्द लए मिला, घर वज्जदी रहे वधाईआ। सन्त भगत थिर घर बहा, चरन कँवल बख्शे शरनाईआ। सचखण्ड वसे आप शहिनशाह, सच सिँघासण सोभा पाईआ। तख्त निवासी सीस ताज टिका, पंचम मुख मुख सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे साचा हरि, थिर घर भगतां रिहा बहाईआ। थिर घर वसे हरिजन, हरि जू आप वसाया। नाता तोड़े पंज तत्त तन, तन लेखा मूल चुकाया। आत्म परमात्म बेड़ा बन्नु, एका वार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त सच दुआर सुहाया। सचखण्ड वसे हरि निरँकारा, निरगुण रूप रखाईआ। थिर घर देवे भगत दुआरा, हरिजन साचे लए बहाईआ। इक्को मन्दिर इक्को घर बाहरा, घर घर विच लए प्रगटाईआ। आदि अन्त हरि वेखणहारा, वेखे विगसे खुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यारा, बण निर्धन सेव कमाईआ। गुरमुख अन्तिम खड़े दुआरा, आप आपणी गोद उठाईआ। शब्द बबाण अगम्म अपारा, लोआं पुरीआं पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन दर इक्क वखाईआ। उठो वेखो भगत दुआर, हरि भगवन आप बणाया। छत्ती जुग दा कर्ज उतार, मकरूज आपणा फ़र्ज निभाया। तूल अरज ना कोए विचार, चारे कूटां रंग रंगाया। साढे तिन्न हथ्थ अग्गे मीनार, मिण मिण आपणी वंड वंडाया। लिख्या लेख रविदास चम्मयार, काया माटी चम्म कम्म किसे ना आया। अंदर वसे हरि निरँकार, घट घट आपणी सेज हंढाया। तिन्नां लोकां खेल अपार, सोलां

दस दस वंड वखाया। आपे वसे सब तों बाहर, अभेव अभेद छुपाया। जन भगतां राह तक्के मीत मुरार, नेत्र नैण नैण उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत वसाए आपणे घर, घर घर विच लए बहाया। घर ठाकर घर अबिनाशी, घर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। घर ब्रह्म घर जोत प्रकाशी, घर ईश जीव मिलाईआ। घर पवण घर स्वासी, घर रसना सेव कमाईआ। घर पंडत घर कांसी, घर विद्या करे पढ़ाईआ। घर गगन मंडल आकाशी, घर ब्रह्मण्ड रिहा जणाईआ। घर नछत्र गृह राशी, घर मास रुत्त थित वेख वखाईआ। घर मेला शाहो शाबाशी, हरिजन साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, लोकमात जन भगतां फड़, आपणा मेला लए मिलाईआ। भगत जन नाता लोकमात, अन्त अन्त तुड़ाईआ। जगत मेट अन्धेरी रैण रात, साचा चन्द इक्क चमकाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी पुच्छे वात, निर्धन निर्धन लए उठाईआ। बोध अगाध सुणाए गाथ, अन्तर आत्म करे पढ़ाईआ। अन्तिम वेले देवे साथ, साचा संग निभाईआ। नाता तोड़े तत्त आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। थिर घर बहाए साचे घाट, पत्तन मिले सच्चा माहीआ। लहिणा चुक्के आण बाट, जूनी जून ना कोए भुवाईआ। सचखण्ड निवासी जन भगतां कटे वाट, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। आपे जाणे आपणा खेल तमाश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। भगत भगवन्त इक्क दूजे दे वसण पास, विछड़ कदे ना जाईआ। हरि जू आपणा कम्म इक्को रख्या खास, ख़ालस हरिजन लए उठाईआ। सचखण्ड दी साची रास, भगत भगवन्त दए वखाईआ। सिँघ तारा क्यों होए निरास, वेले अन्त ना कोए जुदाईआ। कर किरपा कटी जम की फास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। घर दीपक घर जोत प्रकाश, घर वज्जदी रहे वधाईआ। चलदयां फिरदयां कारज होया रास, कीती किरत ना कोए कमाईआ। साहिब सतिगुर होया दास, दास बण बण सेव कमाईआ। भगत भगवन्त दी साची शाख, लोकमात रहे लहराईआ। अन्तिम दरस दिखाए कमलापात, कँवल नैण नैण मटकाईआ। गुरमुख गुर गुर इक्को ज़ात, ज़ात अज़ाती ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, भगत बहाए चरन दुआरा, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा राजन राजा, शाहो भूप सति सरूप अन रंग रूप अनक कल धारी जोत निरँकारी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एक टेक आप अख्वाईआ। सचखण्ड हरि की धार, सच सच समाईआ। कोटन कोटि ध्रू आए वारो वार, पुरख अबिनाशी खेल खलाईआ। आप उपजाए आपे लए संभाल, आप आपणे विच समाईआ। करे खेल श्री भगवान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जुग जुग जन भगतां देवणहारा दान, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। हरिभगत बणाए

२३६
११

साचे काहन, सचखण्ड दुआरे दए बहाईआ। जुग चौकड़ी रहे निगहबान, एका आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धू आपणे विच छुपाईआ। टल्लीआं टल्ल रहे खड़का, हरि जू कारे लाया। संख असंख रहे वजा, रसना जिह्वा नाद सुणाया। अनहद नाद ना लए कोए गा, बिन सतिगुर पूरे राज ना कोए खुल्हाया। कोटन कोटि सीस रहे झुका, कर कर सजदा आपणा पीर मनाया। चारों कुण्ट ख़ाली दिसण थाँ, बेनज़ीर हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए बेनिशां, निशाना आपणा रिहा झुलाया। बेनिशान झुलाए निशाना, तीर अंदाज़ वड वड्याईआ। कोटन कोटि गोपी कान्हा, मंडल रास रचाईआ। कोटन कोटि ईसा मूसा मंगण दाना, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कोटन कोटि करन सलामां, इस्लामा अलैकम सब नूं रिहा बुलाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लेखा जाणे दो जहानां, घट घट आपे वेख वखाईआ। जन भगतां वखाए इक्क पद निरबाणा, थिर घर साचे दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मति मतंतर आपणी रचन रचाईआ। निरगुण इच्छया बणे सरीर, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। त्रै गुण माया वज्जे जंजीर, कला कला नाल मिलाईआ। अंदर वड़े बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आईआ। हथ्थ फड़ नाम शमशीर, आपणा बल धराईआ। आपे होया तकसीर, तकदीर तदबीर आपणी खेल कराईआ। आपे लख चुरासी घत्त वहीर, घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पंज तत्त लए प्रगटाईआ। पंज तत्त ना हरि अधीन, किला कोट ना कोए वड्याईआ। आपे वसे प्राचीन, चैन कदे ना पाईआ। प्रगट हो वखावे आपणा सीन, सयाह फाम फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया कोटन कोटि लख चुरासी जीव जंत रिहा उपाईआ। पंज तत्त साहिब ना रखे आस, जगत ठीकर इक्क बणाया। जिस ठीकर अंदर निरगुण नूर करे प्रकाश, सो ठीकर माण रखाया। नानक हरि का होया दास, हरि जू नानक रंग चढ़ाया। पंज तत्त होया प्रकाश, काया खेड़ा इक्क वसाया। अन्तर धन्न स्वास स्वास, रसना जिह्वा जगत गुण गाया। अन्तिम पंज तत्त काया नास, आपणी अंदर इच्छया ल्या प्रगटाया। साहिब सुल्तान शाह पातशाह आदि जुगादि खेले खेल तमाश, साचा खेल आप कराया।

गोबिन्द इच्छया गोबिन्द घर, पुरख अकाल आप समाईआ। कर कूकर ना फेरीं दर दर, घर घर ना अलख जगाईआ। साहिब सतिगुर प्रगट होवे इक्को वार, अनक कल धराईआ। गोबिन्द बण के गया लिखार, लिख लिख सृष्ट समझाईआ।

कल कल्की आवे अवतार, मेरा लहिणा दए चुकाईआ। लोकमात लाए सच दरबार, दो जहानां करे सच्ची शहिनशाहीआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैग़म्बर कढ्ढदे रहे वगार, बण सेवक सेव कमाईआ। सो अन्तिम लहिणा देणा सब दा दए उतार, बाकी नज़र कोए ना आईआ। इक्को ढईआ सुत्ता रहे पैर पसार, लोकमात ना लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द धारा गोबिन्द घर, घर साचे सदा समाईआ। पंच शब्द सुणया धुन कान, हरि जू आप सुणाया। उपर चढ़ ना वेख्या मकान, जिस दुआरे रिहा वजाया। घर विच मिल्या नूर महान, अन्ध अन्धेर मिटाया। बुद्धि बबेक होया ज्ञान, अक्खर अक्खर आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाद शब्द धुन राग अलाया। सुणाई धुन अनाहद, हदूद अरबा आप वंडाईआ। पैंडा मुक्कया थोड़ा अद्ध, मंज़ल मंज़ल राह तकाईआ। सुण नाद होया गद गद, अग्गे आस ना कोई तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मदि जाम प्याईआ। मदि जाम जो पीए प्याला, प्यावणहार प्याइंदा। अग्गे मिले दीन दयाला, कर दया गोद बहाइंदा। रंग चढ़ाए इक्क गुलाला, उतर कदे ना जाइंदा। मार्ग दस्से इक्क सुखाला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। पारब्रह्म पंज तत्त हो निराला, ब्रह्म आपणी उँगली लाइंदा। निरगुण नूर कर उजाला, जोत निरँजण डगमगाइंदा। घर विच घर वखाए सच धर्मसाला, अंदर मन्दिर कुण्डा लाहइंदा। सच सिँघासण बैठ आप कृपाला, कर किरपा वेख वखाइंदा। तन दिसे ना कोई माला, मन मणका ना कोई भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप चढ़ाइंदा। अग्गे अग्गे मुक्के वाट, सतिगुर पूरा आप मुकाईआ। फेर खोल्ले आपणा ताक, पहली ताकी बन्द कराईआ। हरिजन अग्गे वेखे मार झात, नैतर नैण नैण उठाईआ। निरगुण नज़री आए कमलापात, सच सिँघासण सोभा पाईआ। गुरू चेला करे ना कोई बात, रसना रस ना कोई वखाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाईआ। इक्को वेखे खेल तमाश, पुरख अबिनाशी रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप वखाईआ। अग्गे हो के जाए वध, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। कोटन कोटि साध सन्त आपणा भार गए लध्ध, हौला भार ना कोई कराइंदा। कोटन कोटि बैठे अद्ध, पार किनारा ना कोई कराइंदा। कोटन कोटि डिग्गे डूँघी खड्ड, साचा चन्द ना कोई चढ़ाइंदा। कोटन कोटि मार्ग गए छड्ड, हरि का अन्त कोई ना पाइंदा। जिस जन कर किरपा आपणे घर लए सद्द, सो जन सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मक्का काअबा इक्क वखाए साचा हज्ज, हुजरा आपणा आप सुहाइंदा।

★ ३ पोह २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

सति सतिवादी सच दरबार, सचखण्ड निवासी आप लगाइंदा। सच सिंघासण बैठ सच्ची सरकार, शाहो भूप खेल कराइंदा। तख्त निवासी एकँकार, अकल कल वेस वटाइंदा। बिन रंग रूपी हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। धुर फ़रमाणा सच वरतार, हुक्म हुक्म आप सुणाइंदा। दर दरवेशा बण भिखार, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। दाता दानी बण वरतार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। करे खेल अपर अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। जुग चौकड़ी कर ध्यान, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण पावे सार, एकँकारा रंग वटाइंदा। अजूनी रहित जोती जाता हो त्यार, अबिनाशी करता नाल मिलाइंदा। श्री भगवान खोल्ह कवाड़, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसार, निराकार वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आप सुहाईआ। निरगुण निरवैर बण मलाह, आपणा बेड़ा आप उठाईआ। सच महल्ले इक्क सलाह, सलाहकार आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। सचखण्ड दुआरे सच दरबारा, दरगाह साची आप सुहाइंदा। नर नरेश बण सिक्दारा, शाह पातशाह हुक्म वरताइंदा। जुग चौकड़ी कर पार किनारा, पारब्रह्म प्रभ पन्ध मुकाइंदा। पाँधी बणया रहे विच संसारा, कोटन कोटि रूप धराइंदा। सच संदेश धुर जैकारा, धुर दी बाणी आप अल्हाइंदा। रागां नादां वसे बाहरा, आप आपणे रंग समाइंदा। बोध अगाधी साची धारा, हरि निरँकारा आप चलाइंदा। हुक्मी हुक्म वरतारा, साची सेवा आप रखाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतारा, गोदी गोद आप बहाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यारा, साख्यात रूप वटाइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, काया ताकी खोल्ह खुल्हाइंदा। बण बण साकी शब्द प्यारा, नाम प्याला जाम प्याइंदा। साचे राकी शाह अस्वारा, अस्व घोड़ा आप दुड़ाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार किनारा, लोकमात वेख वखाइंदा। वरभण्डी खेल करे न्यारा, ब्रह्मण्डी राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप वड्याइंदा। सचखण्ड साचे सच दरबार, धुर दरबारी आप लगाईआ। आदि जुगादी खेल अपार, जुग करता वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, महांसारथी बण बण रथ चलाईआ। नाउँ निरँकारा कर त्यार, तार सतार इक्क हिलाईआ। अनुभव खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। महल अटल उच्च मनार, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुपत ज़ाहर आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा

सच दरबारा, दर्द दुःख भय भंजन आप लगाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, आदि निरँजण जोती नूर डगमगाइंदा। जुगां जुगन्तर पावे सारा, रूप अनूप आप धराइंदा। लख चुरासी खोल्ह किवाड़ा, घर घर आपणी जोत टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा मता पकाइंदा। सचखण्ड साचे सच सलाह, सति सतिवादी आप कराईआ। कवण रूप बण मलाह, सति सतिवादी फेरा पाईआ। जुग जुग लावां साचा राह, बण रैहबर सेव कमाईआ। नाउँ निरँकारा नाम पढ़ा, जीव जंत करां जणाईआ। सति सन्तोखी धीरज धरा, आत्म ब्रह्म मिलाईआ। काया किला कोट वसा, गृह मन्दिर करां रुशनाईआ। हरिजन साचे आप प्रगटा, आपणी बूझ बुझाईआ। भगवन भेव दयां खुल्हा, भावी नेड़ कोए ना आईआ। आपणी शक्ती इक्क वखा, बूंद रक्ती लेखे लाईआ। इक्क व्यक्ति नज़री जाए आ, दूसर होर ना कोई शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार आपणा मता पकाईआ। सच दरबार साचा मता, पुरख अबिनाशी आप पकाइंदा। आदि जुगादि ठंडा तत्ता, एका रंग वखाइंदा। इक्को धार चेतन सता, चेतन रूप आप जणाइंदा। सच रखाए ब्रह्म मता, ब्रह्म आपणी अंश बणाइंदा। जानणहारा मित्त गता, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। प्रगट होए नित नविता, जुग जुग वेस वटाइंदा । कोए ना जाणे वार थिता, घड़ी पल ना कोई रखाइंदा। जन भगतां बणया साक सज्जण मीता, दूजा संग ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। आपणा राह आपे ला, हरि जू खुशी मनाईआ। लोकमात वखाए थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। हरिजन साचे पकड़े बांह, जुग जुग मेल मिलाईआ। स्वच्छ सरूपी दरस दिखा, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। निरगुण नूर जोत जगा, जागरत जोत करां रुशनाईआ। अनहद नादी नाद वजा, धुन आत्मक करां शनवाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी पर्दा लाह, पारब्रह्म दयां मिलाईआ । आदि जुगादी सेव कमा, जन भगतां लवां मनाईआ। ढाडी बण बण राग सुणा, आपणा ताल दयां वखाईआ। बण बण पाँधी फेरा पा, दर दर वेस वटाईआ। बोध अगाधी गीत सुहागी छन्द लए गा, हरिजन माण देवे वड्याईआ। पाँधी बण बण आवे सच्चा शहिनशाह, घर घर फेरा पाईआ। जुग जुग दे विछड़े लवां मिला, गल आपणा पल्लू रखाईआ। रातीं सुत्तयां ल्यां उठा, आलस निंद्रा दयां खुल्हाईआ। पिछला विछोड़ा दूर करा, अगला जोड़ा दयां जुड़ाईआ। नाम घोड़ा हथ्थ फड़ा, फड़ बाहों उपर चढ़ाईआ। दो जहानां पौड़ा इक्को ला, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सस्से उपर होड़ा ला, निरगुण सरगुण खुशी मनाईआ। हाहा अक्खर आप बणा, टिप्पी हं रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दरबारा हरि निरँकारा, आदि जुगादि आप लगाईआ। सचखण्ड लग्गा दरबार, धुर दरबारी आप

२४०
११

लगाया। जुग चौकड़ी पावे सार, नव नौ चार पन्ध मुकाया। लहिणा जाए तेई अवतार, गुर दस दस वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, हरिजन साचे आप जगाया। सचखण्ड दुआरे एका रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। लोकमात वेखण सच पलँघ, जन भगतां आसण लाइंदा। इक्को नाद वज्जे मृदंग, ताल तलवाड़ा ना कोई रखाइंदा। इक्को अमृत साची गंग, गंगा गोदावरी मुख शरमाइंदा। इक्को मन्दिर जाणा लँघ, दूजा राह ना कोए वखाइंदा। इक्को गाउणा सुहागी छन्द, इक्को आत्म परमात्म वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वखाइंदा। हरिजन वेख वड्डी वड्याई, हरि वड्डा आप सलाहइंदा। पुरख अबिनाशी करी कुड़माई, लोकमात फेरा पाइंदा। करे खेल बेपरवाही, बेअन्त नाउँ धराइंदा। महल अटल रिहा सुहाई, गृह साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप तराइंदा। जन भगतां अन्तिम एका वर, पुरख अकाल झोली पाईआ। सतिजुग खुल्हाए साचा दर, धुर दरबार वज्जी वधाईआ। साढे तिन्न हथ्थ घाड़न घड़, रविदास चम्मयारा नाल मिलाईआ। कबीर उच्चे टिल्ले आपे चढ़ चढ़, इक्को अक्खर आपे पढ़, पारब्रह्म मिली शरनाईआ। नानक निरगुण मेला सच घर, सचखण्ड दुआर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। हरिभगत तेरा सच महल्ला, हरि साचा सच सुहाइंदा। जुग जुग वसे इक्क इकल्ला, दिस किसे ना आइंदा। तेरी जोत आत्म रला, रल मिल आपणा मंगल गाइंदा। लख चुरासी भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सद समझाइंदा। जन भगत जन जाणा समझ, हरि साचा सच जणाइंदा। मेरा प्रेम साची रमज, रमज रमज विच रखाइंदा। नूर नुराना खेल कमल, अलनेक वेख वखाइंदा। ऐका जाणे अर्श फर्श, मुकामे हक़ डगमगाइंदा। कलयुग अन्तिम कीता आपणा तरस, रहिमत रहीम आप कमाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, दर दर घर घर आपणा दरस दिखाइंदा। अमृत मेघ इक्को बरस, अग्नी तत्त बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप समझाइंदा। साची समझ सिख्या गुर, गुण विद्या इक्क वड्याईआ। मेल मिलाया लिख्या धुर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। आप मिलाए आपणी सुर, सुरती शब्द संग समाईआ। गुरमुख गुरसिख गए जुड़, जुड़या जोड़ बेपरवाहीआ। गुरसिखां दी सतिगुर नूं सदा लोड़, बिन सिखां कम्म किसे ना आईआ। निरगुण चढ़ चढ़ आपणे घोड़, सरगुण वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम गया बौहड़, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। किसे हथ्थ ना आए ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता नज़र ना आईआ। करी बिध अवर की और, पुरख अबिनाशी खेल कराईआ। सम्बल

नगर आया दौड़, दूर दुराडा साचा माहीआ। लख चुरासी वेखे कर कर गौर, आपणा रूप ना किसे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जगाईआ। जन भगत जग गया जाग, जुगती हरि जणाइंदा। आत्म परमात्म इक्क वैराग, बिरहों चोट लगाइंदा। शब्द अगम्मी मारे वाज, आलस निंद्रा मोह मिटाइंदा। अन्ध अन्धेर जगे चिराग, नूर नुराना नूर धराइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सोहँ हँसा नाम जपाइंदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल आप धुवाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, एका बन्धन नाम पाइंदा। एथे ओथे करे लाड, दो जहानां वेख वखाइंदा। सच निशाना इक्को गाड, लख चुरासी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग दा पन्ध मुकाइंदा। जुग जुग तेरा अन्तिम पन्ध, हरि पाँधी आप मुकाईआ। छत्ती राग छत्ती जुग गाया छन्द, छत्ती छत्ती वंड वंडाईआ। छत्ती अंदर परमानंद, छे तीस रिहा समझाईआ। तीस छे टुट्टी गंढु, एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। छे तीस रागनी राग, रघुवत रहे मनाईआ। जुग चौकड़ी करे राज, आपणा नाद सुणाईआ। रसना जिह्वा मार अवाज़, जीव जंत उठाईआ। अनन्द कारज कर कर काज, जगत जोड़ रहे जुड़ाईआ। अन्तर साजण ना ल्या साज, ग़रीब निवाज़ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा खेल कराईआ। छत्ती राग छत्ती जुग, छत्ती छत्ती बन्धन पाया। अन्तिम औध गई पुग्ग, वेला वक्त रिहा समझाया। सब दा लेखा जाणा मुक्क, बाकी कोए नज़र ना आया। जुग चौकड़ी जो बैठा रिहा लुक, नाउँ निरँकार आपणा नाउँ धराया। कलयुग अन्तिम पए बुक्क, शब्द भबक इक्क वखाया। शाहो भूप हरि पए उठ, उठ उठ आपणा बल धराया। जन भगतां उपर जाए तुठ्ठ, दीन दयाल बेपरवाहया। अमृत प्याए साचा घुट्ट, अंमिउँ रस मुख चुआया। इक्क वखाए किला कोट, बंक दुआर सुहाया। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूर नुराना डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जुग जुग लेखा आपणे हथ्थ, हरि जू आप रखाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रतख, निरगुण वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त आपे रख, आप आपणा बन्धन पाइंदा। सति सतिवादी मार्ग दस्स, साचा राह इक्क चलाइंदा। निर्धन हो के होया वस, आप आपणा माण मिटाइंदा। आपणा खेड़ा कर के भट्ठ, जन भगतां खेड़ा आप वसाइंदा। आपणी गेड़ उलटी लट्ठ, सृष्ट सबाई आप भुवाइंदा। पुरख अकाल हो प्रगट, परम पुरख हुक्म चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप सालाहइंदा। जन भगत सलाहे आप हरि, हरि जू सेव कमाया । निरगुण हो के देवे वर, दर दरवेश फेरा पाया। हरिजन वसे साचे घर, घर मन्दिर इक्क सुहाया। त्रैभवन

धनी चुकाए डर, अवण गवण ना कोए वखाया। सति सतिवादी घाड़न घड़, घड़ घड़ आपे वेख वखाया। निरगुण हो के अंदर जाए वड़, रूप अनूप आप छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा आप वड्याआ। भगत बहाए सति दुआर, सच दुआरा आप बणाईआ। निरगुण होए पहरेदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। सन्त सुहेले अंदर वाड़, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। नाता तोड़ नौ दुआर, दर दसवें आप बहाईआ। नर नरायण करे प्यार, नार कन्त खुशी वखाईआ। पिता पूत गोद सहार, बालक माता नाल मिलाईआ। ख़ालक ख़लक परवरदिगार, बेऐब दए मिटाईआ। सालस बणे विच संसार, निरगुण आपणी सेव कमाईआ। ख़ालसा ख़ालस कर त्यार, हरिभगत नाउँ धराईआ। छत्ती जुग दा कर्ज उतार, छत्ती छत्ती वंड वंडाईआ। छत्ती फुट्ट उच्चा मनार, सतिजुग रुत्त वखाईआ। सोला दस खेल न्यार, दस आपणा बन्धन पाईआ। उपर बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा दए समझाईआ। दर बुलाए गुर अवतार, शब्द संदेशा इक्क घलाईआ। ईसा मूसा कर भिखार, मुहम्मद दर दरवेश वखाईआ। अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। त्रैगुण करे गिरयाज़ार, पंज तत्त सार कोए ना पाईआ। अष्टभुज होए बेहाल, सिँघ अस्वार ना कोए जणाईआ। चतुर्भुज बण कंगाल, दर आ अलख जगाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल निराल, लिखण पढ़न विच ना आईआ। सतिजुग साची बणा धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क वखाईआ। नाता तुट्टा शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। दीन मज़्हब ना कोए सवाल, शरअ शरीअत ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आप सलाहीआ। भगत सालाहे आप सुल्ताना, सतिजुग साची गाथ जणाईआ। एका राग इक्क तराना, इक्क सुर ताल वजाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका इष्ट गुर वड्याईआ। एका खेल श्री भगवाना, गुर गुर रहे खुशी मनाईआ। छत्ती जुग दा पन्ध मुकाना, नव नौ चार रहिण ना पाईआ। हरिजन हरि करे परवाना, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। छब्बी पोह बन्ह्णा गानां, एका तन्द नाम उठाईआ। करे खेल मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप जणाईआ। प्रगट हो विष्नूं भगवाना, विश्व आपणा रंग जणाईआ। काल महांकाल दोए बाल नादाना, आपणे चरनां हेठ दबाईआ। इक्को वार दए धुर फ़रमाणा, दो जहानां दए सुणाईआ। लख चुरासी हरि जू कान्हा, इक्को वार लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन्त भगत खेल खलाईआ। भगत कहे सुण निरँकार, दोए जोड़ शरनाईआ। तूं जुग जुग करदा रिहा खुआर, लोकमात भुआईआ। जिस ने तैनूं मन्नयां यार, तिस मिली जगत सज़ाईआ। तूं लुकया रिहों सचखण्ड दरबार, तेरा दरस कोए ना पाईआ। तेरे भगतां नूं कहिन्दे रहे गंवार, मूर्ख मुग्ध नाउँ धराईआ। तूं बेपरवाह बणया साचा यार, तेरी यारी सानूं अन्त

ना भाईआ। जिस पिच्छे पए मार, सो यार ना कोए वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरे पिच्छे लग्ग लग्ग गए हार, तूं पल्लू ना किसे फड़ाईआ। आपणी कर के ग्यों कार, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कवण बिध तेरी मिले शरनाईआ। भगत कहे सुण हरि जू मीत, साची सच जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गाए तेरे गीत, तेरे पिच्छे मिली सज़ाईआ। तूं वसया सदा धाम अनडीठ, आप आपणा रूप छुपाईआ। जुग चौकड़ी गए बीत, तेरा विछोड़ा मुक्क ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जिस बिध दर तेरे सोभा पाईआ। सतिजुग त्रेता दुअपर नाम जप, जप जप पन्ध मुकाया। काया अग्नी हवन तप तप, आपणा आप जलाया। डूँघे ताल जल विच फस फस, आपणा आप मिटाया। जंगल जूह उजाड़ फिरे नस्स नस्स, तूं हथ्थ किसे ना आया। रसना गा गा थक्की तेरा जस, तेरा गीत ना किसे मुकाया। जिस नूं आपणी झलक गया दस्स, सो जगत नाता गया तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण बिध दर तेरा नज़री आया। कबीर कहे तूं बड़ा ढीठ, अछल अछल तेरी वड्याईआ। जुग जुग सुत्ता रिहों दे कर पीठ, आपणी करवट ना अजे बदलाईआ। तैनूं लभ्भदे फिरदे विच मन्दिर मसीत, मन्दिर मट्ठ फेरा पाईआ। अठसठ तेरी वेखी रीत, जल पाणी नाल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गया बीत, बीती कहाणी ना तूं किसे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे भगतां मिले तेरी शरनाईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, इक्को गुण जणाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल महान, हरि ख़ालक आप कराइंदा। हरिजन वेखां मार ध्यान, इक्को वार उठाइंदा। दर दर घर घर दरस देवां आण, दर्दीआं दर्द वंडाइंदा। सच संदेशा धुर फ़रमाण, आदि जुगादी अक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म करे कल्याण, सोहँ नाता जोड़ जुड़ाइंदा। लोकमात सच निशान, जन भगतां आप बणाइंदा। छत्ती जुग कर कल्याण, काल फास सर्ब कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण झोली पाइंदा। साची वस्त झोली पा, हरि साचे सच जणाईआ। कलयुग अन्त बणां मलाह, निरगुण रूप धराईआ। साचे भगतां लवां उठा, आपणी दया कमाईआ। एका घर दयां वखा, दूजी ओट ना कोए शरनाईआ। सच दुआरा दयां बणा, छत्ती छत्ती पन्ध मुकाईआ। हरिजन साचे विच बहा, साचे घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण रिहा जणाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। निहकलंक जामा पाउणा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, गोबिन्द मेला मेल मिलाइंदा। गुर चेला एका रंग रंगाउणा, रंग मजीठी आप चढ़ाइंदा। जन भगत दुआर

इक्क सुहाउणा, दर दरवाज़ा आप खुलाइंदा। सच निशान जगत झुलाउणा, सति सतिवादी हथ्थ उठाइंदा। कर किरपा आपणा दरस दिखाउणा, जप तप ना कोए रखाइंदा। कीता कौल पूर निभाउणा, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप मिलाइंदा। पूरा करे कीता कौल, एका एकँकारा। जन भगत वड्याई देवे उपर धौल, धरत धवल दए सहारा। निरगुण सुरती जाए मौल, हरि शब्दी हो उज्यारा। अकाल मूर्त लेखा चुकाए पर्दा ओहल, प्रगट हो विच संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुहाए भगत दुआरा। भगत दुआरा हरि भगवान, लोकमात प्रगटाईआ। सतिजुग दा सच निशान, सति सतिवादी आप वखाईआ। दुःख दर्द सर्ब मिट जाण, कल कलेश रहे ना राईआ। शाह भूप मन्नण आण, राज राजान सीस झुकाईआ। किरपा करे श्री भगवान, सिर भगतां हथ्थ टिकाईआ। दिवस रैण करे ध्यान, चार कुण्ट होए सहाईआ। शरन शरनाई बख्शे माण, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। नाम निधाना देवे ज्ञान, जोती जोत नूर रुशनाईआ। साहिब सुल्तान मिले काहन, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी सारे गाण, भगत भगवन्त ख़ुशी मनाईआ। कलयुग अन्त कर परवान, परम पुरख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे वड़, सच दरबारा आप वखाईआ। सच दुआरा सति सतिवाद, सति पुरख निरँजण आप लगाया। इक्को नाम बोध अगाध, अगाध बोध आप सुणाया। जन भगतां सुणी आप फरयाद, आप आपणी दया कमाया। कलयुग अन्तिम देवे दाद, दुःख दर्द ना कोए वखाया। फड़ फड़ कढ्ढे डूँग्घी अन्धेरी खाड, हरि जू आपणी सेव कमाया। निरगुण सरगुण करे लाड, सदा सुहेला गोद बहाया। सच दरबार बणाए याद, जुग चौकड़ी नाम उपाया। कादर करता रखे लाज, कुदरत आपणा रंग वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाया।

★ २५ पोह २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

आदि जुगादी बुढ्ढा नढ्ढा बलवान, हरि एका रंग समाइंदा। सचखण्ड निवासी साचे तख्त बैठ खेल करे महान, भेव कोए ना पाइंदा। धुर दरबारी एका देवे धुर फ़रमाण, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। गुर अवतार करो ध्यान, नेत्र नैण सर्ब खुल्हाइंदा। भगत उठो बाल नादान, पारब्रह्म आप समझाइंदा। नव नौ चार दी चुक्की काण, वेला अन्त समझाइंदा। निरगुण रूप प्रगट होए श्री भगवान, लोकमात वेस वटाइंदा। उलटी दात देवे गुण निधान, जिस दा लेख ना कोई वखाइंदा। छब्बी पोह दिवस महान, शाह पातशाह आप सुहाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दो जहान सर्ब पछताण,

नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। गुरमुख विरले चतुर सुघड़ सुजान, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा लेखा जन भगतां हथ्थ फड़ाइंदा।

हरि भगतां हरि माण दवाउणा, बिन भगती दया कमाईआ। निरगुण शक्ती विच टिकाउणा, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। बूंद रक्ती पन्ध मुकाउणा, सुण बेनन्ती होए सहाईआ। साची नारी कन्त मिलाउणा, विछड़ कदे ना जाईआ। सच दुआरे आप बहाउणा, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। लोकमात मात प्रगटाउणा, प्रभ आपणा खेल वखाईआ। सच सिँघासण आसण लाउणा, सति सतिवादी वड वड्याईआ। आपणा वस ना किछ रखाउणा, जन भगतां होए सदा सहाईआ। होए निमाणा गल विच पल्लू पाउणा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जुग जुग गुर अवतारां राह वखाउणा, नेत्र नैण नैण खुल्लाईआ। आपणा पर्दा आप चुकाउणा, पर्दानशीं होए बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन तेरा रखे माण, अभिमान रहे ना राया। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, लोकमात दए वड्याआ। छत्ती जुग जो बणया रिहा बाग़बान, जुग जुग बूटा लाया। गुर अवतारां देंदा रिहा जो ज्ञान, नाम संदेशा इक्क सुणाया। कलयुग अन्तिम वेखे आण, हरिजन साचे आप उठाया। चरन कँवल बख्शे इक्क ध्यान, धरनी धरत धवल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा झोली पाया। पूरब लहिणा पाए झोली, झूला आपणा आप झुलाईआ। निरगुण जोत बणे गोली, जन भगतां सेव कमाईआ। बेअन्त कह कर जिस नूं गुर अवतार मारदे रहे बोली, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। भगत दुआरा रिहा खोल्ली, अन्तिम सब नूं दए वखाईआ। उपर चढ़ के खेले होली, लोक परलोक खेल कराईआ। लख चुरासी अंदरों पोली, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। गुरमुख नारी घोल घोली, सीस जगदीश इक्क झुकाईआ। बिन तोल हरि जू पूरे तोल तोली, अतुल आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल खिलाउणा, खेले अगम्म अपार। छब्बी पोह दिवस सुहाउणा, बीस अठारां कर प्यार। सच दुआरा इक्क सुहाउणा, जन भगतां पैज स्वार। सन्त सुहेले रंग चढ़ाउणा, उतर ना जाए विच संसार। गुरमुखां आपणी गोद बहाउणा, कोई फड़ ना कढ्ढे बाहर। गुरसिख बाला उँगली लाउणा, चारों कुण्ट करे उज्यार। जन्म जन्म दा दुःख मिटाउणा, लख चुरासी गेड़ नवार। साचा सुख इक्क उपजाउणा, आप आपणी किरपा धार। आपणा आप भगतां वस कराउणा, जिस नूं कबीर जुलाहा कूक कूक कर गया पुकार। नानक जिस दर सीस

झुकाउणा, सो प्रगट होया आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। भगतां देवे माण, भगत वड्याईआ। छत्ती जुग दा लेख परवान, धुर फ़रमाणा दए सुणाईआ। निरगुण सरगुण खेल महान, दोए दोए वेस वटाईआ। बहत्तर जन इक्क निशान, सच निशाना आप उठाईआ। सत्तरां मिल्या एका काहन, एका कन्त सोभा पाईआ। चुहत्तरां वेखे इक्क मकान, सत्त चार खुशी मनाईआ। छब्बी पोह कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। गुर अवतार कर ध्यान, हरि जू की खेल रचाईआ। भगत सुणन ला ला कान, चार जुग पिछले हाल सुणाईआ। मुहम्मद चरन डिग्गे आण, गुरमुखां अग्गे झोली डाहीआ। मैं भुलया बाल नादान, रहिमत कर मेरे खुदाईआ। मेरी सिफ्त ना करे ज़बान, बेसिफ्त तेरी वड्याईआ। तूं शरअ मेरा ईमान, मेरा कलमा तेरा नाउँ पढ़ाईआ। बिन तेरे मेरा काअबा होया वैरान, हुज़रा कोए ना मात सुहाईआ। मैं सुणयां तूं भगतां देवें दान, अनमुलड़ी दात रिहा वरताईआ। मैं भगत दुआरे डिगा आण, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तीस बतीस पुकारे मेरी कुरान, कुरा कोई नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देदे साचा वर, मिले चरन तेरे शरनाईआ। हरि जू अग्गों रिहा दस्स, एका हुक्म जणाईआ। मैं भगतां हो गया वस, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। छब्बी पोह आउणा नस्स, एका रुत्त सुहाईआ। मेरयां सिखां दे चरनां जाणा ढह, जे लैण तैनूं बचाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मैं बणया रिहा पुरख समरथ, गुर अवतारां सेवा लाईआ। कलयुग अन्तिम भगतां करया इक्क इक्ठ, एका मता पकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साडे घेरे फस, निकल किते ना जाईआ। कबीर जुलाहा रिहा हस्स, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। मैं जाणां तूं कीती बस, सानूं तार दूजी नज़र ना किते उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कबीर जुलाहे नेत्र खोल्ह, हरि जू आख सुणाया। मैं इके कंडे तोलया तोल, गुरमुख तेरे नाल रलाया। देवां वड्याई उपर धवल, जिस आपणा दरस दिखाया। होए बाल ना रहीं अनभोल, मेरा भेव किसे ना पाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग मार के आउदा रिहा रोल, रो रो सब ने वक्त गंवाया। कलयुग अन्तिम चुकाया पर्दा ओहल, एका आपणा डंक सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा रचाया। रचे खेल हरि निरँकारा, निरगुण वड्डी वड्याईआ। छब्बी पोह सुहाए दिहाड़ा, दिवस रैण ना कोई वड्याईआ। एका ढईया पार किनारा, नईआ मात आप चलाईआ। साचा सईआ सिरजणहारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। पकड़े बहीआं विच संसारा, हरिजन साचे आप उठाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका वक्त दए जणाईआ।

भगत भगवन्त साची कार, बण बण सज्जण आप कमाईआ। आपणा पासा गया हार, जन भगतां दए वड्याईआ। बिन भगतां ना होए उज्यार, हरि जू कम्म किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम कर विचार, आपणी इच्छया लई प्रगटाईआ। जिहड़े कटदे रहे वगार, बण वगारी सेव कमाईआ। जिहड़े मेरे पिच्छे खांदे रहे मार, आपणी खल्ल लुहाईआ। जिहड़े रोंदे रहे जारो जार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जिहड़े पाणा गंढुदे रहे चम्मयार, बण बण सेवक सेव कमाईआ। जिहड़े डुब्बदे रहे गंगा धार, जल जल देण वहाईआ। जिहड़े जंगलां विच लैंदे रहे मेरा दीदार, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। जिहड़े लुकदे रहे डूँघी गार, अंदरे अंदर वड़ वड़ ध्यान लगाईआ। जिहड़े बेअन्त बेअन्त गए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तिन्हां दा वंडण आया भार, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। सारे इक्त्ठे करे इक्को वार, एका घर वखाईआ। बिन नेत्र देवे दीदार, दरसी आपणा दरस वखाईआ। बण शाह मकरूज कर्ज़ा दए उतार, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। आपणा सबूत दए विच संसार, साबत आपणा रूप वटाईआ। ना कोई कलबूत करे विचार, नज़र किसे ना आईआ। रूपोश होया रिहा साचा यार, मुख नक़ाब पर्दा दए उठाईआ। मदहोश करे गमख़ार, ग़मी खुशी नाल मिलाईआ। ख़ामोश बणया रिहा जुग चार, आपणा नाउँ ना किसे जणाईआ। रोस करदा रिहा आप करतार, गुर अवतारां दोष लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज अपणी खेल रचाईआ। अचरज खेल करे करतार, अनुभव धार चलाया। भगत भगवन्त पावे सार, अबचल नगर वसाया। दो जहानां करे प्यार, लोकमात वड्याआ। जुग जुग लहिणा दए उतार, देवणहार आप अख्वाया। मन्नया कहिणा गुरमुख प्यार, गुर गुर हट्ट वटाया। साचा सुख इक्क दरबार, दर दरवाज़ा हरि खुल्हाया। छत्ती जुग दा इक्क मनार, शाह पातशाह आप बणाया। भगतां नाल करे प्यार, प्रेम प्यार इक्क सिखाया। सन्तां वखाए इक्क किवाड़, साचा कुण्डा आपे लाहया। गुरमुखां फिरे पिच्छे अगाड़, अग्गा पिच्छा आप सुहाया। गुरसिखां चले नाल नाल, आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला मार्ग आप लगाया। अगला मार्ग जाए लग्ग, चार वेद नैण शरमाईआ। गुर अवतार लभ्भदे गए हद्द, पार किनारा नज़र कोए ना आईआ। कोटन कोटि नाम पढ़ पढ़ गए छड्ड, लोकमात सुणाईआ। आपणा आपणा निशाना गए गड्ड, जगत जुग झुलाईआ। अन्तिम सब नूं लोकमात विच्चों देवे कढ्ढ, आपणी झोली आपणी वस्त आपे पाईआ। एका आपणा नाउँ लगाए सद, नाअरा निरँकारा इक्क सुणाईआ। भगत सुहेले करे अड्ड, गुर चेले लए मिलाईआ। आपणी बणाए साची यद्द, विष्नूं आपणा रंग वखाईआ। एका नाम प्याए मदि, दिवस रैण खुमार रखाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार गए लद्द, लोकमात फेरा पाईआ। जिस भेजे सो लए सद्द,

थिर कोए रहिण ना पाईआ। अन्तिम पर्दा लए कज्ज, जोती जोत विच मिलाईआ। किसे दे हुक्म अंदर ना जाए बज्झ, सब हुक्मे रिहा फिराईआ। कलयुग अन्तिम ग़रीब निमाणयां अंदर बहे सज, जन भगत दुआरा आप बणाईआ। बिन डोरीउँ जाए बज्झ, प्रेम बन्धन एका पाईआ। आप गवाई लोक लाज, जन भगतां लाज लए रखाईआ। आपे मारे आपणी आवाज़, लख चुरासी विच्चों लए जगाईआ। आपे रच के आपणा काज, करता पुरख वेख वखाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे गुरू महाराज, महांबली बेपरवाहीआ। सो गुरमुखां दे सिर ते रखे ताज, देवे सच्ची शहिनशाहीआ। जिस नूं कहिन्दे रहे ग़रीब निवाज़, सो बण ग़रीब जन भगतन सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप सालाहीआ। हरिजन तेरी सिफ्त सालाह, सलाहगीर ना कोए जणाइंदा। तुध बिन लभ्भे ना किसे मेरा राह, कोटी कोट ठोकर खाइंदा। कोटी कोट रहे गा, रसना जिह्वा सर्ब हलाइंदा। कोटी कोट रहे ध्या, ध्यान नाल ध्यान मिलाइंदा। कोटी कोट कहिण तूं पिता मां, हउँ बालक तेरा कुरलाइंदा। बिन भगतां देवां ना किसे थाँ, चरन दुआर ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच दुआरा हरि निरँकारा, उच्च महल्ला इक्क अटल्ला भगत भगवान आप बणाइंदा। उच्च महल अटल मुनारा, हरि जू आप बणाया। लख चुरासी नालों कर किनारा, भगतां अंदर डेरा लाया। उच्ची बोल इक्क जैकारा, सोहँ ढोला इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कागद कलम तेरा लेखा सर्ब मुकाया। कागद कलम की सके गा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गुर अवतार अन्त सके ना पा, बेअन्त कह कह गए विच लोकाईआ। साध सन्त मंगण चरन पनाह, इक्को आस रखाईआ। पीर पैग़म्बर दस्तगीर ध्यान रहे लगा, नेत्र नैण उठाईआ। किसे हथ्थ ना आवे बेपरवाह, बेदर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। कलयुग अन्तिम फेरा पा, आपणी अलख आप जगाईआ। गुरमुख सज्जण लए जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सिर आपणा हरि हथ्थ टिका, सच टिकाणे दए बहाईआ। नाम बबाणे आप चढ़ा, माण निमाणे लए उडाईआ। सच दुआरा आप सुहा, गुरसिखां लए बहाईआ। बेमुहाणा होया आप खुदा, खुदी सब दी दए गंवाईआ। राजा राणा तख्तों लाह, गुरमुख साचे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच निशान, चवी हथ्थ कर परवान, साढे तिन्न हथ्थ देवे दान, इटारसी संगत कर परवान, सच दुआरे दए चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बणाए इक्क विधान, विधी आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ २६ पोह २०१८ बिक्रमी हरिभगत दुआर जेठूवाल दरबार विच ★

श्री भगवान रखी याद, अभुल्ल भुल्ल ना जाईआ। सति सचखण्ड दुआर सुणी फ़रयाद, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। निरगुण खेल जाणे आदि, अन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। नाद अनादी वजाए नाद, तार सतार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख भुल्ल ना जाईआ। हरिजन तेरी रखी याद, सचखण्ड खेल अपारा। लेखा जाणे जुग जुगादि, जुगा जुगन्तर हो उज्यारा। पावे सार सन्त साध, भगतन नाम अधारा। मोहण माधव हरि जू माध, बेअन्त वसे धाम न्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। रखी याद श्री भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड बैठ तख्त महान, तख्त निवासी दया कमाईआ। थिर घर आपणा वेखे आण, महल अटल कर रुशनाईआ। एका शब्द सुत बलवान, पूत सपूता नाल रखाईआ। बंस सरबंस कर ध्यान, आपणी कुल जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे माण, बख्शे शरन सच्ची शरनाईआ। त्रै त्रै माया कर प्रधान, पंचम रंग रंग वखाईआ। लेखा जाणे दो जहान, अनडिठड़ा धाम सुहाईआ। शाह पातशाह राज राजान, भूपत भूप वेख वखाईआ। धुर फ़रमाणा हुक्मरान, एका एक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे भुल्ल ना जाईआ। सो पुरख निरँजण सचखण्ड, सच दुआरा आप सुहाइंदा। आपे जाणे आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। आपे होए परमानंद, परम पुरख खेल खलाइंदा। आपे गीत आपे छन्द, गा गा आपणी खुशी मनाइंदा। आपणे मन्दिर आपे होए बन्द, आप आपणा बन्धन रखाइंदा। आपे सूरज आपे चन्द, बण सूरज चन्द आप प्रगटाइंदा। आपे साहिब दयाल सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची याद ना कदे भुलाइंदा। याद रखे बेपरवाह, आपणी दया कमाइंदा। आदि पुरख कर सलाह, आपणी खेल कराइंदा। शब्द दुलारा नाल रला, शब्द धार प्रगटाइंदा। त्रै त्रै मेला सहिज सुभा, त्रै त्रै रंग वखाइंदा। पंचम पंचम जोड़ जुड़ा, चार चार वेख वखाइंदा। एका घर सोभा पा, सोभावन्त डगमगाइंदा। आदि अन्ता बण खुदा, नूरो नूर नूर समाइंदा। मुकामे हक़ आसण ला, सच सिँघासण आप वड्याइंदा। छत्र सीस आप झुला, तख्त निवासी तख्त आसण लाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म जणा, हुक्मी हुक्म खेल खलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा ला, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। नव नौ चार वंड वंडा, जेरज अंड मोह वधाइंदा। उत्भुज सेत्ज आप समा, आपणा भेव छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा कीता भुल्ल ना जाइंदा। कदे ना भुल्ले कीता कौल, कँवल नैण वड्डी

वड्याईआ। जोती जोत रिहा मौल, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रख्या पर्दा ओहल, विष्न ब्रह्मा शिव भेव ना पाईआ। करया खेल उपर धौल, धरनी देवे माण वड्याईआ। लख चुरासी अंदर मौल, पंज तत्त काया सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप समझाईआ। साची धार हरि निरँकार, एका वार सुणाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, लोकमात कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए अधार, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। ईश जीव इक्क अधार, जगदीश करे कुड़माईआ। सीस ताज सच्ची सरकार, दो जहानां हुक्म चलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार, लोआं पुरीआं वेखे चाँईं चाँईंआ। रवि ससि कर उज्यार, किरन किरन नाल मिलाईआ। नाम नाद शब्द धुन्कार, ब्रह्माद वज्जे वधाईआ। आदि जुगादि साची कार, करता आपणे हथ्थ रखाईआ। सेवा ला गुर अवतार, लख चुरासी सेव कमाईआ। साचा वणज कर वपार, एका हट्ट खुल्लाईआ। तीर्थ तट वेख किनार, जल थल महीअल रिहा समाईआ। घट घट वसे वसणहार, दिस किसे ना आईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। राती रुत्त ना कोई तिथी वार, घड़ी पल ना कोई समझाईआ। अबिनाशी अचुत्त सच्ची सरकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप भुल्ल कदे ना जाईआ। आदि अन्त ना भुल्ले भगवन्त, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी देवे नाम एका वस्त, जीव जंत कर पढ़ाईआ। लेखा जाणे साध सन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। आपे मेले नारी कन्त, नर नरायण खुशी मनाईआ। एका चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। दो जहान बणाए बणत, एथे ओथे खुशी मनाईआ। एका जाणे आदि अन्त, आदि अन्त आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा रूप वखाईआ। अभुल्ल रूप आप करतार, करनी करता आप कमाइंदा। वाह वाह खेल करे सच विहार, सच्चा खेल खलाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे वारो वार, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। गुर अवतारां दए अधार, लोकमात राह चलाइंदा। नाम शब्द वणज वपार, चौदां लोक शब्द वखाइंदा। चार कुण्ट पावे सार, दहि दिशा फोल फोलाइंदा। नट्ठ नट्ठ जाए पार किनार, अठसठ आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कीता आप समझाइंदा। आदि पुरख हरि करे कारा, एका रंग जणाईआ। लख चुरासी कर पसारा, घट घट जोत रुशनाईआ। पंज तत्त लगा अखाड़ा, निरगुण निरगुण नाच नचाईआ। नाड़ बहत्तर वजा तलवाड़ा, राग राग नाल मिलाईआ। छत्ती राग जगत वणजारा, रसना जिह्वा गाईआ। हरि का खेल सब तों न्यारा, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा रूप समझाईआ। आदि पुरख आदि रचना रच, आपणा खेल खलाया। थिर घर

दुआर बणाया सच्च, शब्दी सुत बहाया। लख चुरासी अंदर नच्च, बण नटुआ स्वांग वखाया। सरगुण खोल् एका हट्ट, एका बणत दए बणाया। जोत निरँजण लट लट, पुरख अबिनाशी करे रुशनाया। भाग लगाए पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलाया। नाम निधाना डोरी पाए नथ्थ, हरि बन्धन इक्क रखाया। पंचम बह बह ढोला गाए जस, जस आपणा आप सुणाया। बिन दन्दां पए हस्स, पुरख अबिनाशी बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आदि रिहा समझाया। मेरा आदि हरि निरँकार, एका रूप सुणाईआ। सचखण्ड दुआर कर त्यार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। हरिजन जोत कर उज्यार, तेल बाती नाल लगाईआ। निर्मल जोत कर उज्यार, सूरज चन्द ना कोई रुशनाईआ। मंडल मण्डप ना कोई सहार, गगन गगनंतर ना कोई वड्याईआ। गुर पीर अवतार ना कोई मददगार, धरत धवल ना कोई जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोई पसार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। शब्द नाद ना कोई धुन्कार, रागी राग ना कोई गाईआ। सीस ताज ना कोई दस्तार, बस्त्र तन ना कोई सुहाईआ। धरनी करे ना कोई पुकार, लख चुरासी ना कोई बणाईआ। प्रतख हो आप निरँकार, सचखण्ड साचा धाम सुहाईआ। आपणे नालों आपा वक्ख कर करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे गृह दए वड्याईआ। आप आपणी वंडे वंड, वंडणहार गोपाल। करे खेल सूरा सरबंग, दीना नाथ दीन दयाल। आपणे गृह चढ़ाए चन्द, चन्न नूरो नूर उज्यार। रसना गीत सुणाए छन्द, बिन तन्दी तन्द सतार। आपे होए दयाल बख्शंद, पुरख अबिनाशी बेऐब परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा जाणे सच विहार। सच विहार आपे कर, हरि करता कर्म कमाईआ। शब्द दुलारे दे दे वर, एका शब्द माण रखाईआ। विष्नूं तेरी गोद दिता धर, ब्रह्मा विष्न लए प्रगटाईआ। सुन्न अगम्मी आपे वड़, शंकर रंग वखाईआ। तिन्ने चेले आपे फड़, आपणी इच्छया माई दए बणाईआ। लख चुरासी घाड़न घड़, ब्रह्मे झोली पाईआ। सचखण्ड दुआरे चढ़, विष्नूं दए समझाईआ। शंकर सुणो इक्क गल्ल, गल फाँसी रिहा लगाईआ। मेरा खेल धाम अचल, अटल्ल मिले वड्याईआ। सरगुण अंदर जोत रिहा रल, आदि जुगादि जुग जुग रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव समझाईआ। आपणा भेव हरि जू दस्स, एका वार जणाया। ब्रह्मा विष्नूं शिव आए नस्स, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। असीं तेरे प्यार गए फस, बन्धन सके ना कोई तुड़ाया। साडी पूरी करनी आस, ख़ाली झोली मंग मंगाया। तेरे चरनां होवे दास, दूजा दर ना कोई सुहाया। तेरी जोत होए प्रकाश, नूरो नूर आपणा डगमगाया। वेला अन्त दस्स मेरे माही कवण वेले करें बन्द ख़लास, साडा लहिणा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, निउँ निउँ सीस झुकाया। देवे वर श्री भगवन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। मेरा खेल सदा बेअन्त, भेव कोए ना पाईआ। लख चुरासी वेखां जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी नाल मिलाईआ। गुर अवतार मेला सन्त, भगवन्त कर कर धाईआ। आपणा नाम सुणावां छंत, रसना जिह्वा हरि जस गाईआ। हरिजन मेला साचे कन्त, नारी कन्त खुशी मनाईआ। लेखा जाणा आदि अन्त, मध आपणी धार चलाईआ। गुर अवतार बणा बणा बणत, सेवा सेवक इक्क समझाईआ। लख चुरासी तोड़े गढ़ हउँमे हंगत, माया ममता दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यार, हरि शब्दी इक्क समझाईआ। वंडां वंड बण निगहबान, आपणी वंड आप कराईआ। जेरज अंड कर प्रधान, उत्भुज सेत्ज खेल खिलाईआ। चारे खाणी देवां माण, चारे बाणी लवां पढ़ाईआ। चारे वेद कर परवान, चार कुण्ट डंक वजाईआ। चार वरन खेल महान, लोकमात वेख वखाईआ। चार जुग इक्क निशान, निरगुण सरगुण दए झुलाईआ। जुग जुग आपे वेखे आण, रूप अनूप वेस वटाईआ। लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। सुणना रखणा याद, हरि साचा सच जणाईआ। आप लगाया निरगुण आदि, अन्त लहिणा दए मुकाईआ। लोकमात सुणे फरयाद, निरवैर पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ। अन्तिम लेखा श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, वंडण वंड वंडाइंदा। गुर अवतारां दे दे दान, लोकमात प्रगटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे खेल अञ्याण, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। भगतां देवे सदा दान, साची भगती इक्क समझाइंदा। सति दुआरे कर परवान, सचखण्ड आप बणाइंदा। परम पुरख हरिजन घर सुहान, मूर्ख मूढ़ गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग आप रंगाउणा, हरि साचा सच जणाईआ। नव नौ चार पन्ध मुकाउणा, सरगुण सेवा लाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, पुरख अबिनाशी करे खेल बेपरवाहीआ। आपणा बल आप धराउणा, बल आपणा आप जणाईआ। सचखण्ड दुआरे बह के मता पकाउणा, दूजा संग ना कोए रलाईआ। साचा ताज सीस टिकाउणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड दा सच निशान सति सतिवादी आप झलाउणा, दर घर साचा आप सुहाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाउणा, नाद अनादी नाद सुणाईआ। बण पाँधी पन्ध मुकाउणा, आप आपणा अन्त जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। अन्तिम वेला जाए आ, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्नूं तेरा लेखा आपणे विच लए लुका, आप आपणा मूल मुकाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म जाए समा, पारब्रह्म गोद बहाइंदा।

शंकर तेरा संसा देवे लाह, तन भिबूती ना कोए रमाइंदा। चार जुग दा एका चौकड़ एका वार वेखे एका थाँ, थान थनंतर खोज खुजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जो बणदा रिहा मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाइंदा। गुर अवतारां दया कमा, फड़ फड़ मार्ग आपे पाइंदा। भगतां देंदा रिहा सज़ा, लोकमात अग्न तपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। अन्तिम वेला आउणा जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। प्रगट होए सूरा सरबग, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। शब्द अनाद वजाए नद, थिर घर साचे खुशी मनाईआ। गुर अवतारां लए सद्द, चार जुग जो सेव कमाईआ। आप बहाए अड्डो अड्ड, वंडणहार सच्चा शहिनशाहीआ। आपणयां चरनां हेठों लए कढ्ढ, डूँग्घा खाता लए फोल फुलाईआ। ना कोई हड्ड मास नाड़ी दिसे रत्त, पंज तत्त ना कोए जणाईआ। ना कोई बुध ना कोई मति, ब्रह्म मति ना कोए जणाईआ। एका नूर कर प्रकाश, घर एका आप वखाईआ। करे खेल आप तमाश, पृथ्मी चले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अभेद भेव रिहा समझाईआ। आपणा भेव हरि निरँकार, आदि पुरख जणाया। जुग चौकड़ी बीते वारो वार, थिर कोए रहिण ना पाया। नौ नौ पन्ध आप विचार, चार चार खेल खलाया। त्रै त्रै देवे अधार, पंचम पंच मोह रखाया। निरगुण निरगुण कर त्यार, सरगुण सरगुण रंग चढ़ाया। सचखण्ड सुहाए बंक दुआर, सच सिँघासण सोभा पाया। चरन कँवल कर त्यार, थिर घर साचे आप टिकाया। शब्दी शब्द करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाया। तूं कादर करता बेऐब परवरदिगार, तेरा जल्वा मोहे भाया। सिफ्त सालाही साचा यार, सिफ्त विच कदे ना आया। तेरी मुहब्बत करां एका वार, अन्त तुट कदे ना जाया। तेरी सुहबत गावां जुग चार, जुग चौकड़ी नाल मिलाया। तेरा मन्दिर इक्क दुआर, गृह बैठा सोभा पाया। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, जगदीश सीस टिकाया। मैं वेखां खेल संसार, लोकमात फेरा पाया। गुर अवतारां बण यार, पीर पैग़म्बरां नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए जणाया। खोल्ह भेव अभेद हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आपणा घाड़न आपे घड़, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, निअक्खर करे पढ़ाईआ। आपणी मरनी आपे मर, जन्म मरन विच ना आईआ। आपणी तरनी आपे तर, तारनहार सृष्ट सबाईआ। आपणी शरनी आपे पढ़, सृष्ट सबाई रिहा झुकाईआ। आपणी चोटी आपे खड़, वेखे थाउँ थाईंआ। सचखण्ड दुआर किला गढ़, चार दीवार ना कोए बणाईआ। निर्मल जोत इक्को धर, आदि पुरख करे रुशनाईआ। निरभउ ना रखे कोई डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। मूर्त अकाल इक्को हरि, अजूनी रहित वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल

आप समझाईआ। आपणा खेल आपे दस्सां, हरि हरि आप जणाइंदा। आदि जुगादि एका घर वसां, घर आपणा आप सुहाइंदा। दो जहान फिरां नस्सां, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। जन भगतां अंदर आपे वसां, महल अटल आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा स्वांग आप समझाइंदा। हरि स्वांगी वरते स्वांग, आपणी बूझ बुझाईआ। जुग जुग रखे साची तांघ, लोकमात राह तकाईआ। गुरमुख हरिजन मंगण एका मांग, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। रसना जिह्वा ना कोए बत्ती दन्द, मन वासना ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए वखाईआ। लेखा हरि करतार, करनी करता आप जणाइंदा। सचखण्ड मेरा विहार, साचे तख्त सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी हो उज्यार, लख चुरासी रंग रंगाइंदा। आपणी जोत कर उज्यार, पंज तत्त काया विच टिकाइंदा। कोटन कोटि कोट किरनां विच्चों एका किरन कढ्ढां बाहर, गुर अवतार नाउँ धराइंदा। एका देवां नाम गुफ़तार, दीद शनीद खेल वखाइंदा। लोचण नैण दरस दीदार, दीद ईद इक्क समझाइंदा। नाद धुन शब्द जैकार, सुन्न मुन आप खुल्हाइंदा। मुन जन विच संसार, आपणी गोद बहाइंदा। रिख मुन कर पनहार, चाकर चाकरी खेल खलाइंदा। भाण्डे घड़ बण ठठियार, भन्नणहार आप हो जाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पहरेदार, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस सर्ब झुकाइंदा। पीर पैग़म्बर कढ्ढ कढ्ढ गए वगार, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाइंदा। जुग जुग आवण वारो वार, ईसा मूसा सेव कमाइंदा। कोटन कोटि वार आए तेई अवतार, लिख लिख लेख ना कोई जणाइंदा। कोई त्रिलोकी करे प्यार, कोई शब्द शब्द सुणाइंदा। कोई मछ कछ जल धार तारीआं रहे मार, रूप अनूप ना कोई वड्याइंदा। करे खेल अगम्म अपार, हरि का भेव किसे ना आइंदा। ब्रह्मा लिख लिख थक्का वेद चार, वेद व्यासा पुराण अठारां सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान, कान्हा कृष्ना भगत समझाइंदा। चार कुण्ट बीआबान दिसे ना राह, निरगुण नाम ना कोई झुलाइंदा। सोलां सोलां गया समझा, विद्या विद्दत आपणी कल धराइंदा। ईसा मूसा कहिण महिबां, महिबान बीदो आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका कलाम, इक्क कलाम एका इस्म इक्क अमाम, आलमीन वेख वखाइंदा। इस्म आज़म अलाही नूर, नूर नुराना आप जणाईआ। पीर पैग़म्बर बैठे दूर, नेड़े कोए ना सके आईआ। चारों कुण्ट प्या फतूर, प्रभ फतवा दए लगाईआ। नानक निरगुण हो मजबूर, प्रभ अग्गे कर गया अरज़ोईआ। तुध बिन कोई ना करे मुआफ कसूर, दुरमति मैल ना कोई धुआईआ। कलयुग अन्त आउणा ज़रूर, निहकलंक तेरी वड्याईआ। तेरा भण्डारा सदा भरपूर, अतोट अतुट वरताईआ। तेरे पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, शमस आपणी खल्ल लुहाईआ। कबीर डुबा गंगा पूर, मिली मात सज़ाईआ। प्रहिलाद मंग दरस हज़ूर, नेत्र नैण खुल्हाईआ। तूं

सब दी आशा करी पूर, पूरी इच्छया एका वार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड बैठा खुशी मनाईआ। सचखण्ड खेल अवल्ला, एका एक कराइंदा। निरगुण मल्लया सच महल्ला, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। आपणी जोती आपे रला, जोती जोत डगमगाइंदा। एका फड़ाया आपणा पल्ला, नारी कन्त खेल कराइंदा। आपणे नूर रहे बिस्मिला, बिस्मिल आपणा रंग वखाइंदा। एका नाद सुनेहड़ा घल्ला, एका राग सुणाइंदा। नाम सति एका मिला, चाल निराली इक्क रखाइंदा। आपणा घर आपे मल्ला, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। थिर घर साचा हरि बणया टिल्ला, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा। शब्दी शब्द सुत कहे झल्ला, दिस किसे ना आइंदा। आदि जुगादि कदे ना हिल्ला, जुग जुग गेड़ा आप भुआइंदा। कोई रंग ना जाणे काला पीला, नीला रूप ना कोई बणाइंदा। आदि जुगादि छैल छबीला, बिरध बाल ना वेस वटाइंदा। आपणे मिलण दा आपे हीला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण आप सुहाए आपणा सच कबीला, आपे बह बह ख़ुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आप वड्याइंदा। सचखण्ड हरि चढ़या चाअ, आपणी खुशी मनाईआ। जिस चौकड़ी जिस नाउँ रहे गा, कोटन कोटि रूप वटाईआ। गुर अवतार मंगदे रहे पनाह, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पीर पैग़म्बर मन्नदे रहे जिस दी रजा, राजक रहीम इक्क खुदाईआ। भगत भगवन्त लाउदे रहे सदा, इक्क आवाज़ लगाईआ। सन्त तक्कदे रहे राह, नेत्र नैण उठाईआ। गुरमुख तेरा ध्यान रहे लगा, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। गुरसिख मस्तक धूढ़ी टिक्का रहे ला, चरन मिले सच्ची शरनाईआ। रहिमत करे बेपरवाह, बेनज़ीर दया कमाईआ। ग़फ्लत विच आए ना कदे खुदा, उल्फ़त विच ना आए खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे खुशी मनाईआ। सचखण्ड दुआरे तेरा रंग, हरि जू आप रंगाया। निरगुण सेज निरगुण पलँघ, निरगुण रिहा हंढाया। निरगुण नारी बणे कन्त, निरगुण कन्त खुशी मनाया। निरगुण नाम निरगुण मृदंग, निरगुण निरगुण आपणा डंक सुणाया। निरगुण नूर निरगुण चन्द, निरगुण नूर नुराना डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा खेल रचाया। रचया खेल हरि जू हरि, आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी देंदा रिहा वर, आपणा हुक्म सुणाईआ। अन्तिम सद्दे साचे घर, एका सदा नाम लगाईआ। वारो वारी पुच्छां रिहा कर, अभुल भुल कदे ना जाईआ। लोकमात आपणी जोत धर, लख चुरासी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड सच दरबार, हरि जू हरि लगाया। चरनी आओ गुर अवतार, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया। सतिजुग त्रेता द्वापर विच संसार, कलयुग की की हुक्म चलाया। विष्न ब्रह्मा

शिव होणा खबरदार, सच संदेशा रिहा जणाया। विष्नूं तेरा दिसे ना कोई भण्डार, सच भण्डारा नज़र कोए ना आया। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म ना कोई उज्यार, नूर नुराना मुख शरमाया। शंकर तेरी नंगी ना दिसे कटार, मनमुख जीव ना कोए मिटाया। सन्त कुमार होए बेदार, पुरख अबिनाशी आप जगाया। बराह धरनी चुक्कया भार, तेरा भार सके ना कोई हौला कराया। यगै पुरष करे विचार, मेरा संग ना कोई रखाया। हाव ग़रीव आई हार, चौथा जुग दए दुहाया। निरँकार होया उज्यार, नरायण आपणा मुख भुवाया। कपल मुंनी करे पुकार, खाणी बाणी ना कोए समझाया। दत्ता त्रै रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। रिखभ ढह ढह करे निमस्कार, मुख आपणा रिहा छुपाया। पृथू कहे तेरा पनिहार, सिर तेरी सेव कमाया। मत्तसय कहे तेरे हुक्म अंदर फिरां यार, जल सागर डेरा लाया। कछप कवण देवे आधार, मिन्दिरा पर्बत सीस उठाया। मोहणी कीता खेल अपार, रूप अनूप आप धराया। हँस बोल इक्क जैकार, सोहँ सो साचा ढोला रसना गाया। नर सिँघ खेल कर अपार, छोटे बाले माण दुवाया। अन्तिम उह वी गया हार, रसना गुण ना कोई समझाया। धू कर ध्यान, हरी आपणा रंग चढ़ाया। नरायण देवे इक्क ध्यान, गज बन्धन आप कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बल बावन खेल आपे कर, सचखण्ड दुआरे साचे रिहा बुलाया। आओ उठो बाल नादान, हरि साचा सच जणाईआ। ब्रह्मण तेरा खेल जहान, एकँकारा नज़र नैण ना आईआ। राम बणया जोधा बलवान, बाण एका तीर चलाईआ। पंज तत्त मिटया निशान, लोकमात नज़र ना आईआ। इक्क राम सर्ब मेहरबान, जो घट घट रिहा समाईआ। इक्क राम वड बलवान, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। वेद व्यासा तेरा लेख, हरि हरि आप मुकाया। कान्हा कृष्ना कर कर भेख, गीता ज्ञान दृढ़ाया। अन्त मिटी सब दी रेख, अन्त कोई रहिण ना पाया। हरि का रूप मुच्छ दाढ़ी ना केस, पंज तत्त ना कोई वखाया। आदि जुगादि रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आए नरेश, एका नाम सच्चा संदेश दए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेऐब परवरदिगारया। बेऐब परवरदिगार, हक़ हक़ जणाईआ। लाशरीक हो त्यार, तहिरीक इक्क वखाईआ। हक़ीक़त जाणे शाह अस्वार, बेपरवाह बेपरवाहीआ। तारीफ़ करे परवरदिगार, तुआरफ़ अवर ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईसा मूसा इक्क सुणाए हदीसा, एका कलमा आप पढ़ाईआ। एका कलमा पढ़ाए अमाम, अली आपणा रूप कराइंदा। लेखा जाणे दिवस शाम, धुर बाणी आपणा खेल खलाइंदा। जोती नूर अलाही कलाम, कायनात आप सुणाइंदा। आपे देवे सच पैग़ाम, सच संदेशा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। पीर

पैग़म्बर वेख हरि, बेदर्द रिहा समझाईआ। किसे ना मिले कोई दर, बेदर फिरे लोकाईआ। निरभउ चुकाए सब दा डर, एका आपणा आप वखाईआ। पीर पैग़म्बर घाड़न घड़, मुलां शेख़ लए समझाईआ। एका अल्फ अंदर पढ़, एका ये लए पढ़ाईआ। नुकता नून एका घर, नून गुंना रंग वटाईआ। हमज़ा सब नूं करे सर, सार किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाम पढ़ाईआ। एका नाम देवे दाऊद, एका वार दया कमाईआ। बेऐब ना होया नेशतो नाबूद, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। आदि जुगादि सदा महबूब, मुहब्बत ख़ाना इक्क खुलाईआ। जिस दी कोई ना जाणे हदूद, हद्द किसे ना पार वंडाईआ। आपणा जाणे सच अरूज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। ना कोई दिशा ना कोई कूट, हुजरा कोए नज़र ना आईआ। ना कोई बुत्त ना कोई कलबूत, रूह पाक ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दुआरे देवे इक्क सबूत, साख्यात आपणा नूर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। ईसा मूसा खेल अवल्ला, आलमीन कराइंदा। मुहम्मद फड़ाया आपणा पल्ला, एका गंढु पुवाइंदा। चौदां तबक एका महल्ला, एका नूर दरसाइंदा । दीपक जोत एका बला, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची क्रिया आप सुणाइंदा। साची क्रिया साचा पुरख, प्रखोतम आप बणाईआ। सृष्ट सबाई कर कर परख, वड पारखू वेस वटाईआ। पंज तत्त उत्ते करे तरस, निरगुण सरगुण जोत करी रुशनाईआ। अमृत मेघ एका बरस, सांतक सति सति वरताईआ। आपणा कीता पूरा फ़र्ज़, बेपरवाह सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राग एका तर्ज़, तार सतार इक्क वजाईआ। एका तर्ज़ एका तन्दी, इक्क सितार हिलाइंदा। इक्क टिकाणा दस्से बन्दी, बन्दीख़ाना आप तुड़ाइंदा। एका साहिब होए बख़्शंदी, बख़्शिश आपणे हथ्थ वखाइंदा। एका राह एका पगडण्डी, अन्तिम आपणे घर चढ़ाइंदा। एका देवे पवण ठंडी, उनन्जा पवण मुख शरमाइंदा। एका देवे नाम सुगंधी, सतिनाम आप प्रगटाइंदा। लेखा चुक्के जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाइंदा। पीआ प्रीतम पाए फंदी, आपणे प्रेम विच बंधाइंदा। लख चुरासी आत्म गंदी, परमात्म नज़र किसे ना आइंदा। बिन हरि लख चुरासी रंडी, कन्त सुहाग ना कोई हंढाइंदा। एका गुर चलाए डण्डी, सतिगुर मात वड्याइंदा। गुर गोबिन्द अन्तिम मेटे भेख पखण्डी, जूठ झूठ रहिण ना पाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी देवे रंदी, एका रंदा हथ्थ उठाइंदा। कबीर सुणाए एका छन्दी, साचा ढोला आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। गुर अवतारां होया इक्ठ, हरि जू ख़ुशी मनाइंदा। चार जुग बिन ढाहिऊँ गए ढट्ठ, हरि जू हार जित आपणे हथ्थ वखाइंदा। जिस दा नाऊँ गा गा आए गाथ, लोकमात समझाइंदा। जिस

दे चढ़ के आए रथ, सो महांसारथी वेख वखाइंदा। आओ वसो मेरे पास, सच दुआरा इक्क खुलाइंदा। जिस दी गोपी काहन पाउँदे रास, सो आपणा आपणा नाच नचाइंदा। जिस दा लेखा पृथ्मी आकाश, मंडल मण्डप सोभा पाइंदा। जिस दा नूर होए प्रकाश, गगन गगनंतर आप चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां दर बुलाइंदा। गुर अवतार आए दर, दोए दोए जोड़ सीस झुकाया। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, गल पल्लू एका पाया। तेरे हुक्म अंदर फिरदे रहे घर घर, लोकमात वेस वटाया। इक्को रख्या तेरा डर, होर डर ना कोई रखाया। तेरे चरन दुआरे डिगे दड़, सिर लैणा हथ्थ रखाया। कर किरपा लैणा फड़, मेरे साहिब सच्चे शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सिर एका वार सत्थर रखाया। गुर अवतार कर विचार, प्रभ अग्गे देण सलाहीआ। तेरी सेव करी जुग चार, तूं पुरख बण बण हउँ नार घोली घोल घुमाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, उच्ची कूक कूक गए पुकार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। नानक निरगुण सदा अटल्ले आया अन्तिम जग गोबिन्द कहे मैं साचा सुत दुलार, मेरा इक्को पिता माईआ। आदि जुगादि रहे जुग चार, जुग चौकड़ी खेल रचाई ना मरे ना जाईआ। उहदा नाउँ पुरख अकाल, सदा सदा करे प्रितपाल, सुत दुलारे गोद बहाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, आप आपणी घाल लए घाल, हरि का भेव कोए ना पाईआ। असीं कहिन्दे रहे सुवाली बण बण बेहाल, बेहालां उपर आपणी दया कमाईआ। एथे ओथे दो जहानां श्री भगवान करे प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। नानक कहे पुरख खेल करे कमाल, दिस किसे ना आईआ। भगतां वसे सदा नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे खुशी मनाईआ। नानक कोलों सारे रहे पुच्छ, एका मंग मंगाईआ। सानूं भेव दस्स कुछ, की भगतां कोल रखे प्रभ सच्चा शहिनशाहीआ। असीं चरनां हेठ बैठे लुक, साडा जोर ना कोई जाईआ। साडा पैंडा गया मुक्क, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। चार कुण्ट बूटा गया सुक्क, हरा सिंच ना कोई कराईआ। नेत्र नैण ना सकण झुक, जीवां जंतां वलों शरमाईआ। खाली दिसण बिन हरि नामे बुत्त, पंज विकार करे लड़ाईआ। आशा तृष्ना पाई लुट्ट, माया ममता होई हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नानक निरगुण कहे, सुणो मीत मुरार। भगतां मिलण दा सदा चाअ, प्रभ रखे सिरजणहार। जुग जुग बेड़ा लए तरा, डुब्बे ना विच संसार। कोटन कोटि रूप वटा, फड़ फड़ बाहों लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। नानक दस्स कवण तेरा मीत, गुर अवतार रहे जणाईआ। कवण बिध चले रीत, भगतां मिले वड्याईआ। असीं दस्स के आए प्रभ वसे मन्दिर मसीत, गुरदुआरा डेरा लाईआ।

कबीर कहे मेरा प्रभ वसे धाम अनडीठ, दिस किसे ना आईआ। सदा सुहेला इक्क अतीत, ना मरे ना जाईआ। अठ्ठे पहर गाउँदा गीत, कबीर कबीर कहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। उठो भाई करो प्यार, भाईआं नाल मिलाईआ। भाई भगत सदा सच दुआर, होए शब्द कुड़माईआ। रल मिल करीए इक्क पुकार, पुरख अबिनाशी जोत जगाईआ। प्रभ लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतार, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जुग जुग फड़ फड़ रिहा तार, तारनहार दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम आई हार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ना कोई दिसे मीत मुरार, सब बैठे मुख भवाईआ। नानक ना करे कोई विचार, नाम सति ढोला ना गाईआ। हँ ब्रह्म ना कोई धार, पारब्रह्म ना कोए शरनाईआ। ऐनल हक़ ना कोई पुकार, मुकामे हक़ ना कोई खुदाईआ। राम राम ना कोई सतार, सीता सुरत ना कोई शरनाईआ। राधा कृष्न ना कोई दीदार, बंसरी नाम ना कोई वजाईआ। गुफ्त शनीद ना कोई गुफ़तार, वेद भेद ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। सारे सद्दे एका घर, हरि जू अकड्ड कराया। आपणा भेव देवे वर, वर दाता आप हो जाया। बिन मरनी गया मर, जन्म मरन बन्धन ना कोए रखाया। लख चुरासी अंदर वड़े घर घर, घर घर डेरा लाया। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कर, कलयुग अन्तिम वेखण जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाया। आपणा भेव दस्से भगवन्त, पर्दा आप उठाईआ। वेख्या खेल जुगा जुगन्त, हरि नज़र किसे ना आईआ। सब ने किहा बेअन्त बेअन्त, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण नूर नूर नुरंत, निहचल धाम करे रुशनाईआ। कलयुग वेला आया अन्त, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। चार जुग दे सन्त भगत, हरि भगती मार्ग लाया। इक्क इक्क तारया वेले अन्त, वेला आपणे हथ्थ जणाया। लेखे लाई बूंद रक्त, रत्ती रत्त रंग चढ़ाया। लेखा जाणे आदि शक्ति, शक्ती शक्ति भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फरमाणा रिहा सुणाया। गुर अवतार बहत्तर नाड़ा, ताणा पेटा आप तणाईआ। पंज तत्त अंदर खेल महाना, निरगुण रूप वटाईआ। शब्द नाम सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणाईआ। खेल खेल खेलया विच जुग चार, चौकड़ी आपणा रंग वखाईआ । वारो वारी तारे विच संसार, एका वार सर्ब करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ध्रू प्रहिलाद वेख वखाईआ। ध्रू प्रहिलाद लिख्या लेखा, लेख अपर अपारा। बावन कढुया भरम भुलेखा, बल खेल निराला। सतिजुग साचे चाढ़े वेंता, पुरख अबिनाशी दीन दयाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चले अवल्लड़ी चाला। ध्रू प्रहिलाद कर कर पार, बावण

२६०
११

अन्त सहाईआ। बावण मंग मंगी एका वार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तेरे चरन जावां बलिहार, तूं दिता पताल बहाल, अतल वितल सितल कर खुआर, मेरी खुदी मात गंवाईआ। मैं जाणा उच्च मनार, महल अटल सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। धन्न भाग तेरे चरनी धूढ़ी मिली छार, तेरी रंगत मेरे मस्तक नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ नेत्र नैण उठाईआ। तेरी चरनी डिगा दर, दर मिली मात वड्याईआ। राज भाग तेरा सब, मेरी काया तेरी हरस मिटाईआ। तेरा अमृत मेरी नभ, कँवल नैण मुख पाईआ। कवन वेला दर्शन देवें फेर झब्ब, मेला मिले सच गुसाँईंआ। आपणे दर लवें सद्द, पकड़ दोवें बाहींआ। जगत जीवां पार करनी हद्द, सचखण्ड दुआरा देवे ठंडी छाँईआ। इक्क लडाउणा साचा लड, जिउँ बालक पिता माईआ। मेरे ख़ाली दिसण हड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका गुण रिहा समझाईआ। सुण बल बावन कर ध्यान, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। तिन्न जुग सौणा बण नादान, जन्म जन्म ना कोई वखाइंदा। चौथे जुग करां प्रधान, लोकमात प्रगटाइंदा। गोबिन्द चेला करे आण, पुरख अकाल मिलाइंदा। तेरा लेखा लिखे कर पछाण, लिख्या लेख ना कोई मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेख आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, हरि जू आख सुणाया। भगतां विच मेला मेले नौ दुआर, मेल मिलावा सच समझाया। अमरीक देवे अधार, जनक आपणे रंग रंगाया। बिदर पावे आपे सार, सुदामा आपणी गोद बहाया। हरी चन्द दए अधार, चन्द चांदना इक्क चमकाया। जै दिओ पावे सार, साचा बूटा मात लगाया। धन्ने वेखे तेरी फुलवाड़, हरि बगीचा इक्क लगाया। तूं मंगी वस्त अपार, घर जट्टां फेरा पाया। निरगुण आया विच संसार, दिस किसे ना आया। ढाडी गाउँदे जिस दी वार, छत्ती राग रहे सलाहया। नानक वजाई जिस दी सतार, गोबिन्द जिस दा ध्यान लगाया। जिस नूं कहिन्दे पुरख अकाल, सो नज़र किसे ना आया। नाल चम्मयार करे प्यार, पाणा गंढुण सेव लगाया। गोदावरी गंगा पावे सार, कंगन आपणे हथ्थ रखाया। सैण नाई पाए सार, रूप अनूप वेस वटाया। नामे छप्पर छाई निरँकार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कबीर वेख्या इक्क दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। सदना देवे आपे तार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। अजामल किरपा करी अपार, पत्तत पुनीत खेल खलाया। पूतना सुटी पछाड़, मोहण मंमे मुख छुहाया। गनका देवे अधार, रूप अनूप कर समझाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर खेल करे करतार, जुग जुग वेस वटाया। भगतां सन्तां तारे वारो वार, गुर अवतार सेव लगाया। खेले खेल अगम्म अपार, पुरख अगम्मड़ा रिहा वखाया। सचखण्ड लग्गा इक्क दरबार, सच संदेशा रिहा सुणाया। सारे करो बैठ विचार, लोकमात ध्यान लगाया। कवण तुहाढ्ढे नाल करे

प्यार, जो मार्ग आए जणाया। लोकाई भुल्ली बण गंवार, भुलया दाई दाया। जिस उपज्या विच संसार, लोकमात खेल खलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभना रिहा समझाया। सारयां नेत्र लए खोल्, लोकमात ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट गई डोल, हरि का नाम ना कोई ध्याईआ। राम रम्मईआ ना गए मौल, रूप अनूप ना कोए वखाईआ। अमृत भरया ना किसे नाभी कँवल, नाभी कँवल ना कोई झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा रिहा वखाईआ। सारे वेखो वेख करन हाहाकार, हाए प्रभ की खेल रचाया। विष्नूं कहे मेरा नाँ उज्यार, ब्रह्मा कहे मेरा ब्रह्म ब्रह्म समाया। शंकर कहे मेरी तिक्खी धार, भोला नाथ रूप वटाईआ। राम कहे मैं राम अवतार, रावण अन्त मुकाया। कृष्न कहे मैं बड़ा बलकार, कंस केसी पकड़ गिराया। मूसा कहे मेरा नूर उज्यार, कोहतूर जल्वा इक्क तकाया। ईसा कहे मेरा खुदावंद यार, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। मुहम्मद कहे मेरा मददगार, चार यारां नाल रलाया। अल्ला राणी नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, ख़ावंद कोए नज़र ना आया। नानक कहे निरँकार, सचखण्ड बैठा आसण लाया। गोबिन्द कहे पुरख अकाल, दूजी ओट ना कोई जणाया। चारे वेद करन पुकार, चारे जुग वेखण नैण उग्घाड़, अठारां पुराण करन विचार, हरि विचार विच ना आया। रिख मुन गए हार, हरि का अन्त किसे ना पाया। पुरख अबिनाशी वसे सब तों बाहर, सचखण्ड बैठा आसण लाया। कबीर कहे मैं कीता दीदार, चढ़ महल्ल वेख वखाया। आओ सन्तो मेरे पिच्छे वारो वार, लोकमात मार्ग गया जणाया। अन्तिम भुल्ले बण गंवार, साचा राह ना किसे जणाया। कलयुग लेखा गया हार, लहिणा सब दा रिहा मुकाया। प्रभ अग्गे सारे करन निमस्कार, नेत्र नैणां नीर वहाया। साडी कीती चली ना विच संसार, तेरी माया पर्दा पाया। कोए कहे राम प्यार, कोई कृष्न कृष्न जणाया। कोई कहे अल्ला यार, कोई कहे नानक अंग लगाया। कोई गोबिन्द करे निमस्कार, पुरख अबिनाशी सब तों वसे बाहर, सचखण्ड बैठा आसण लाया। कोई कहे नामे पाया मीत, कबीर मिली वड्याईआ। कोई कहे त्रलोचन करया ठंडा सीत, गुर गुर रूप वखाईआ। कोई कहे सैण पाया नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कबीर कहे प्रभ वसे हस्त कीट, घर घर रिहा समाईआ। जिस ने बणाया देहुरा मसीत, मन्दिर मट्ठ शिवदुआले रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शिवदुआले बणाए मट्ठ, मन्दिर मस्जिद माण गंवाया। धार चलाई तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेख वखाया। सरोवर बणाए किनार तट, चार कुण्ट वेख वखाया। चौदां लोक खुल्हाए हट्ट, चौदां तबकां बन्धन पाया। करे खेल पुरख समरथ, आपणी दया कमाया। जुग जुग देवे साची वथ, नाम अमोलक आप वरताया। महिमा जणाए अकथना अकथ, गुर अवतार गए

पढ़ाया। आपणा लेखा कदे ना करे बस्स, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड दुआरे रिहा वस, दो जहानां वेख वखाया। लोआं पुरीआं चरनां हेठ झस्स, लोकमात फेरा पाया। नानक पूरी करे आस, वेद व्यास नाल मिलाया। निरगुण जोत कर प्रकाश, निरवैर वेस वटाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी खेल तमाश, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाया। भाग लगाए विच प्रभास, विच जंगल डेरा लाया। जन भगतां कहे सदा शाबाश, सो पुरख निरँजण दए दृढ़ाया। अन्तिम करना कम्म ख़ास, करता आपणी कार कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणा खेल कराया। सच विहारा आदि निरँजण, आदि पुरख करवाईआ। जुगादि होए दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। एका नेत्र पाए अंजन, नाम निधान कर रुशनाईआ। एका चरन कराए मजन, दुरमति मैल धुवाईआ। सचखण्ड निवासी साचा सज्जण, साची रंगत रंग रंगाईआ। सच नगारे ओथे वज्जण, गुर अवतार रहे वजाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे सूरा सरबंगन, सूरबीर बेपरवाहीआ। भाग लगाए आपणे चन्दन, चन्द चांदना रूप वटाईआ। फड़ उठाए गुज़री नंदन, नंद गुज़री अवर ना कोई वड्याईआ। एका पाए शब्दी बन्धन, जोत नूर रुशनाईआ। आप उठाए बेड़ा कंधन, मलाह बणे बेपरवाहीआ। प्रगट होए विच वरभण्डण, वरभण्डी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड रंग रंगाईआ। साचे घर सचखण्ड ढोल मृदंग, राग रतन रंग रंगाया। निरगुण चढ़या चन्द, घर साचे होए रुशनाया। गुर अवतारां पूरी करे मंग, जो बैठे सीस झुकाया। एका ढोला सुणाए छन्द, तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा रूप सुहाया। हँ ब्रह्म तेरा मेरा अनन्द, परम पुरख वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। आओ सारे करो त्यारी, हरि साचा सच जणाइंदा। मेरी आई अन्तिम वारी, सब दा लहिणा मात चुकाइंदा। जिस दा जुग चार चलदा रहे नाउँ निरँकारी, सो निराकार खेल खलाइंदा। जिस दी होई सर्ब पसारी, घट घट वेख वखाइंदा। सो दाता वड भण्डारी, अतोट अतुट भण्डार वरताइंदा। जिस दी सचखण्ड वसे अटारी, थिर घर आपणा चरन टिकाइंदा। जो भगतां पैज रिहा संवारी, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आओ विदा करो पहली वारी, दूजी वंड ना कोई वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आओ उठो देवो तोर, हरि जू आप सुणाया। जिस नूं लभ्भदे अन्ध घोर, सो साहिब खेल कराया। जिस दी फड़दे आए डोर, सचखण्ड डेरा रिहा लाया। जिस नूं वेख्या कर के गौर, नेत्र नैण खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाया। एका हुक्म हरि जगदीश, जगदीशर आप सुणाईआ। एका छत्र झुल्ले हरि सीस, दूसर छत्र ना कोई वड्याईआ। एका राग चले बीस इकीस, छत्ती राग ना कोए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सारे रल के करन पुकार, नैणां नीर वहाया। तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाए सांझे यार, तुध बिन होर ना कोई सहाया। तूं लोकमात जा जा करें विहार, तेरा अन्त किसे ना पाया। असीं मंगदे तेरा दीदार, तेरे चरन ध्यान लगाया। तुध बिन रोईए ज़ारो ज़ार, तेरा सत्थर इक्क हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साडी इच्छया लए प्रनाया। साडी इच्छया लए प्रना, गुर अवतार रहे सुणाईआ। तूं कलयुग अन्तिम वेखणा जा, तेरी इक्को ओट तकाईआ। तेरा छोटा बाला दोए जोड़ प्या शरना, चरनी सीस झुकाईआ। मैंनूं उँगली ल्या ला, मैं जावां चाँईं चाँईंआ। पुरख अबिनाशी अग्गों रिहा सुणा, एका गुण समझाईआ। नानक गा के गया समझा, पंचां मिले माण वड्याईआ। सो पंच आपणे घर लए बहा, देवां भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क फ़रमाणा रिहा सुणाईआ। पंच परवान गाया, रसना जिह्वा हिलाईआ। पुरख अबिनाशी ध्यान लगाया, वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग तेरा पन्ध मुकाया, आप उठाए फड़ फड़ बाहींआ। गुरमुख साचे माण दवाया, सिँघ पाल मिली वड्याईआ। ब्रह्मे लेखा जिस चुकाया, अन्तिम रहिण ना पाईआ। हरिजन साचे आप जगाया, जागरत जोत कर रुशनाईआ। ध्रू आपणे रंग रंगाया, सवरन खुशी वखाईआ। इक्क बटवारे दर दए वखाया, चमरेटा लिख्त लिखाईआ। काका एका गोद बहाया, मनजीत सिँघ जिस जिती सर्ब लोकाईआ। करोड़ तेतीसा डेरा ढाहया, सुरपति इन्द माण गंवाईआ। सिँघ जगदीश आप तराया, तारनहार आप हो जाईआ। आपणा लेखा लेखे पाया, गोबिन्द रुत्त सुहाईआ, छोटे बाले नीहां हेठ दबाया, कलयुग तेरी जड़ उखड़ाईआ। नौ दुआरे खोल्ह वखाया, चेतन करे सर्ब लोकाईआ। जिस नूं लभ्भ लभ्भ वक्त गंवाया, हथ्थ ना आया सच्चा माहीआ। जिस दा जोग अभ्यास कमाया, जल धार सीस पवाईआ। जिस दे पिच्छे ख़ाक रुमाया, धूणी डेरा लाईआ। जिस दे पिच्छे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर आसण लाया, दिस किसे ना आईआ। सो साहिब कलयुग वेखण आया, सिँघ जगदीश दए वड्याईआ। सचखण्ड जिस निशान झुलाया, सत सत रंग वटाईआ। सो साहिब अन्तिम वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जुग चारे सद्द आपणी हद्द, ब्रह्म खेल कराया। अन्तिम नूर हो प्रगट, साचा हट्ट खुल्हाया। बावन लेखे लग्गा जत, बल राणा आप तराया। चौथे जुग प्रगट्या जट्ट, जट्ट जट्टां नाल रलाया। तिन्न जुग दा मिटया फट्ट, एका पट्टी नाम बंधाया। लेखे लाए आपणी रत्त, रत्ती रत्त वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा वेस वटाया। पंजे दर कर परवान, सचखण्ड आप बहाईआ। पंचां देवे दरगाह माण, दर साचे खुशी मनाईआ। पंचा मिल्या गुर इक्क ध्यान, रूप

रंग रेख ना कोई वखाईआ। पंजे एका गीत गान, सोहँ ढोला गाईआ। पंचां झुलाए इक्क निशान, सचखण्ड दुआरे आप उठाईआ। कबीर जुलाहा करे ध्यान, वेखो हरि की खेल रचाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, जन भगतां रिहा उठाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, जगत विद्या धक्का लाईआ। बिन मंग्गयां देवे दान, नाम भगती झोली पाईआ। असीं करदे रहे एहदी पहचान, पहचान विच कदे ना आईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो विच जहान, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुजान, हरि जू विछड़े लए मिलाईआ। सब दी आसा पूरी करे आण, निरासा कोई नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खलाए, कलयुग अन्तिम वार। हरिजन साचे लए जगाए, लख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर। आपणे मार्ग आपे लाए, देवे नाम अधार। साची सिख्या इक्क समझाए, सोहँ शब्द जैकार। राग नाद कोई नेड़ ना आए, ब्रह्म ब्रह्माद करे विचार। रातीं सुत्तयां लए जगाए, ग़फ्लत विच ना आए सांझा यार। चार वरन दा डेरा ढाहे, क्षत्री ब्रह्मण शूद वैश दए अधार। चार बाणी पन्ध मुकाए, परा पसन्ती मद्धम बैख़री कर पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपार खेल करदा, वेखे सर्ब लोकाईआ। निरभउ कदे ना डरदा, भय आपणा सर्ब जणाईआ। हरिजन साचे आपे वरदा, वेखे थाउँ थाईंआ। साचे घोड़े आपे चढ़दा, शाह अस्वार सच्चा शहिनशाहीआ। साचे मन्दिर आपे वड़दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जुग जुग गाउँदे गए मेरी वार, हरि साचा सच जणाइंदा। सेवा कर कर गए गुर अवतार, भगत भगती राह वखाइंदा। सन्त सज्जण कर कर गए निमस्कार, दोए दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। गुरमुख मंगदे गए दुआर, ख़ाली झोली सर्ब भराइंदा। गुरसिख लैंदे गए धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का धूढ़ लगाइंदा। कलयुग अंतम खेल अपार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जन्म जन्म दे वेखे विछड़े यार, जगत दर पन्ध मुकाइंदा। सचखण्ड बणाए इक्क दुआर, लोकमात आसण लाइंदा। सब दी सुणे आप पुकार, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त दो आप मिलाइंदा। सति हरि सति दरसाया नाता, दोए दोए जोड़ जुड़ाया। निरगुण सरगुण खेल तमाशा, जुग जुग करदा आया। बहत्तर नाड़ी अंदर कर कर वासा, आपणा राग सुणाया। इक्क अनन्द इक्क भरवासा, इक्क नाम जपाया। थोड़ा सुणाउँदा रिहा ख़ुलासा, खुल के हाल ना किसे सुणाया। कलयुग वेखे आप तमाशा, जोती जामा वेस वटाया। विच सखीआं पावे रासा, बण बण काहन आप रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याआ। बहत्तर नाड़ी होई प्रधान, गुर अवतार माण दवाईआ। काया अंदर सुंञ मसान, घर घर विच रिहा वखाईआ।

नाद अनाद शब्द धुन कान, गृह मन्दिर आप वजाईआ। जोती नूर नूर महान, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदा आया दान, दानी दाता बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, गुरमुख साचे आप उठाईआ। बहत्तरां करे इक्क ज्ञान, मुख आपणा नाम सुणाईआ। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, अंदर बाहर वेख वखाईआ। छत्ती राग होए हैरान, छत्ती छत्ती लकीर खिचाईआ। छत्ती फुट्ट उपर निशान, पुरख अबिनाशी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बहत्तर जन लए उठाईआ। बहत्तर भगत सुणो अरदास, हरि साचा सच जणाइंदा। मैं चल के आया तुहाढे पास, एका मंग मंगाइंदा। आपणयां चरनां देणा निवास, दूजा धाम ना कोई सुखाइंदा। मेरी पूरी करनी आस, लोकमात आस लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी अरजोई आप सुणाइंदा। मेरी अर्ज़ मन्नो ज़रूर, सो पुरख निरँजण आख सुणाया। मेरा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग दा बख़्शो कसूर, जुग जुग रिहा भुलाया। मैं हाज़र होया हज़ूर, विछड़ कदे ना जाया। बिनां तुहाढे होया मज़बूर, मेरी मज़बूरी ना कोए कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा पल्लू रिहा वखाया। आपणी झोली डाह अनडिठ, अनडिठड़ा खेल कराईआ। भगतो देणी ना मैनूं पिठ्ठ, मैं इक्को आस रखाईआ। मैं हारया तुसीं गए जित्त, तुहाढी जित्त मेरी वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बणया रिहा मात पित, अन्तिम बरदा बण बण सेव कमाईआ। निहकर्मी करया साचा हित्त, कर्म कांड ना कोई रखाईआ। तुहाढे बिरहों दी वज्जी खिच्च, सचखण्ड दुआरा तज के आया माहीआ। मैं बहां तुहाढे अद्धविचकारा विच, चारों कुण्ट घेरा लैणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क बेनन्ती रिहा सुणाईआ। सुण बेनन्ती मेरे मीत, मित्र प्यारे सज्जणा। मैं तुहाढे गावां सदा गीत, तुसां मेरा पर्दा कज्जणा। मैं किसे हथ्थ ना आउणा मन्दिर मसीत, गुरुदुआरा अन्त सब ने तजना। मैं तुहाढी चलाउणी रीत, सचखण्ड दुआर कराउणा मजना। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच कोई ना करे बचना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया साचा सज्जणा। भगतो उठो करो ख्याल, हरि साचे सच सुणाया। मेरे उत्ते होवो दयाल, तुहाढी दयालता मेरी रुशनाया। मैं तुहाढी करदा रिहा प्रितपाल, जुग जुग सेव कमाया। अन्त आपणा दस्सां हाल, हाल मुरीदां आप सुणाया। गोबिन्द सूरा आया नाल, आपणा पन्ध मुकाया। तुसीं उस दीआं घालां रहे घाल, उह तुहाढे उत्तों घोल घुमाया। पहलां नीहां हेठ दिते लाल, हुण नीहां हेठ आपणी रत्त चुआया। अग्गे मार्ग दस्से सुखाल, एका मन्त्र नाम पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अग्गे आपणा सीस आप झुकाया। मेरा सीस गया झुक, हरि जू आख

सुणाया। भगतो तुहाड्डा भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेट मिटाया। मैनूं वेखो वजा के ठोक, ठोक वजाइआं टुट्ट कदे ना जाया। मेरा इक्को इक्क सलोक, दो जहानां दए जगाया। लख चुरासी देवे झोक, ना कोई सके बचाया। धर्म राय दे हथ्थ दए थोक, परचून किसे ना हट्ट विकाया। जन भगतां अग्गे मेरी मोख, जगत दुआर नज़र ना आया। मैं चढ़ के आया बोट, लोकमात फेरा पाया। ना कोई वरन ना कोई गोत, दीन मज़्हब ना कोई रखाया। अन्तिम सब दे कढुणे खोट, खोटी वासना दए सुटाया। सोहँ बिन सारे सोत, राम कृष्न ना कोई ध्याया। गोबिन्द वेख्या पोतरा पोत, पूत सपूता खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आप वसाया। सचखण्ड वेखो गया वस, हरि जू आप वसाइंदा। चतुर्भुज आए नस्स, आपणा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्ची कूक सर्ब सुणाइंदा। उच्ची कूक कहे भगवन, लख चुरासी आप जणाईआ। भगतां बणया इक्क निशान, जगत निशाना दए मिटाईआ। ना कोई भुल्ले राज राजान, अभुल्ल रिहा समझाईआ। भगत बहत्तर होए परवान, हरि जू परवाना दिता लिखाईआ। इक्को मिल्या सच्चा काहन, जिस मिलयां दुःख रहे ना राईआ। जिस नींह लोकमात रखी आण, जगत नींह दए उखड़ाईआ। छब्बी पोह दिवस महान, सब नूं रिहा जणाईआ। भगतन खेल करे भगवान, गुर अवतार दर बुलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दर कुरलाण, गल्ल विच पल्लू पाईआ। भगत जन मिल खुशी मनाण, लोकमात वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग रिहा लाईआ। बहत्तर भगत होए खुश, खुशी खुशी नाल मिलाइंदा। चार जुग जो बैठे रुस्स, धन्न भाग जे तूं वड्याइंदा। तेरी किरपा पए उठ, आपा किसे नज़र ना आइंदा। चारों कुण्ट लुके गुठ, तूं फड़ फड़ दर मंगाइंदा। तेरे लेखे मेरा बुत्त, तेरी आत्म परमात्म तेरी झोली पाइंदा। तूं साडीआं पुच्छां रिहा पुच्छ, मैं तेरा राह तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बहत्तर भगतां आप जगाइंदा। आओ सुणो मेरे सुत, सुत्तयां रैण विहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, चितवित ठगौरी ना कोई रखाईआ। छब्बी पोह सुहाई रुत्त, ख़िज़ां विच फुलवाड़ लगाईआ। सचखण्ड दा बूटा लाया सित, एथे ओथे दए सुहाईआ। अमृत सोमा गया फुट, एका दर वहाईआ। बिन हथ्थां बाहां लओ लुट्ट, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आवण जावण जाए छुट्ट, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ मेले सच्चा माहीआ। मेलणहारा आ गया, कर किरपा गुण निधान। जन भगतां रंग रंगा ल्या, रंग रंगीला इक्क महान। साचा मन्दिर आप सुहा ल्या, सेवा कर श्री भगवान। तिन्नां लोकां पन्ध मुका ल्या, चौथे घर करे परवान। चौथे पद आप बहा ल्या, दर दुआरा खोल्ह महान। दीपक दीआ इक्क जगा ल्या,

जोती जोत नूर भगवान। कमलापाती दरस दिखा ल्या, बहुभाती हो प्रधान। एका मन्त्र नाम पढ़ा ल्या, दूजा देवे ना कोई ज्ञान। चार वरनां पन्ध मुका ल्या, चारे वेद होए हैरान। अठारां बरनां ख़ाक मिला ल्या, अठारां पुराण मुख छुपान। चार जुग ढेरी ढाह ल्या, चारे खाणी मंगी आण। चारे बाणी आप समा ल्या, रसना बोल ज़बान। सोहँ ढोला आपे गा ल्या, भगवन मिल्या भगतां आण। जगत विचोला वेस वटा ल्या, गुर गोबिन्द लेख महान। नानक तोला तोलण आ गया, फड़ खण्डा वड बलवान। गुरमुखां ओहला आप मुका ल्या, नैणी देवे दरस महान। सीस ताज आप लगा ल्या, शाह पातशाह राज राजान। नौ खण्ड एका डंक वजा ल्या, डंका वज्जे महान। सत्तां दीपां फेरा पा ल्या, शाह अस्वारा नौजवान। एका खण्डा सच चमका ल्या, चण्डी चमके इक्क महान। जगत पखण्डी इक्क मुका ल्या, ब्रह्मण्डी दए ज्ञान। बहत्तर भगतां गोद बहा ल्या, वेखो की खेल करे भगवान। सब दी अक्खीं घटा पा ल्या, भुल्ली लोकाई जगत शाह सुल्तान। नज़र किसे ना आ रिहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी गोद बहाल। बहत्तर भगत कहिण छोटे बाले, निक्की निक्की गुफ़तार सुणाईआ। तूं साहिब सदा प्रितपाले, तेरे हथ्थ वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम दस्से राह सुखाले, एका मार्ग लाईआ। तेरे प्यार नाल होए बेहाले, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। कोई कहे काल महांकाल करे रखवाले, कोई कहे काया मन्दिर अंदर वेख वखाईआ। कोई कहे लोकमात निभे नाले, साचे मार्ग पाईआ। बहत्तर भगत कहिण साडा साहिब एथे ओथे वसे सद नाले, विछड़ कदे ना जाईआ। मेल मिलाया नाल सिँघ पाले, हरि जू पालकी विच बिठाईआ। करया खेल इक्क निराले, निराकार धार चलाईआ। हरि गोबिन्द बणया पुरख अकाले, अकाल पुरख गया आईआ। अन्तिम सब दे कढ्ढे दीवाले, अन्तिम आपणी हथ्थीं लेखा लिखाईआ। जन भगता करे सदा प्रितपाले, आपणी छाती उपर टिकाईआ। करे खेल प्रभ निराले, बेअन्त बेपरवाहीआ। जगे जोत अगणत लिलाट ज्वाले, जोती जोत नाल मिलाईआ। माण रहे ना किसे धर्मसाले, गुरदुआरा ना कोई वखाया। मन्दिर मस्जिद होए बेहाले, मद्ध बैठे मुख भुआईआ। अन्त निभे ना किसे नाले, चरन प्रीती दए तुड़ाईआ। हरिजन हरि पूरन भाले, जगत फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप रचाईआ। बहत्तर भगतां मारया ताहना, तैनूं दर्दी दर्द ना आइंदा। तूं देवें वड्याई दो जहान राणा, बण बण खेल खिलाइंदा। कदी राम भगवाना, कदे कृष्न वेस वटाइंदा। कदे वेद व्यास गाए गाणा, कदे लिख लिख लिख हुक्म जणाइंदा। कदे ईसा मूसा खेल महाना, नूर नुराना डगमगाइंदा। कदी मुहम्मद दए पैग़ामा, आपणा हुक्म जणाइंदा। कदे नकाबपोश बणया रिहा दो जहानां, सब दे उत्ते दोष लगाइंदा। कदे अहिबाब रबाब वजाए तरानां,

तार सितार हिलाइंदा। कदे गोबिन्द कहे मेरा पित श्री भगवाना, पुरख अकाल मनाइंदा। गुरू ग्रन्थ बणाया विधाना, चारे वेद वेख वखाइंदा। अन्तिम भुलया सर्ब जहानां, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। शब्दी रंग ना कोई वखाना, भगती साज ना कोई वजाइंदा। नज़र ना आए श्री भगवाना, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचे भगतां आप मिलाइंदा। आओ भगतो करीए मेला, मिलणी करे रघुराईआ। एका घर वसे गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। कलयुग अन्तिम आया वेला, भगत दुआरे दए वड्याईआ। साहिब मिल्या सज्जण सुहेला, शाह पातशाह इक्क रघुराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वसदा रिहा धाम नवेला, अनडिठड़े धाम आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां संग मिलाईआ। बहत्तर भगत गए आ, अन्तिम मेल मिलाया। तूं परमात्म वेख्या साडा थाँ, साचा बंक बणाया। तेरा नाता दो जहां, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाया। पूरब जन्म दे बख्श गुनाह, आपणी रहिमत आप कमाया। सच दरबार आपणा लगा, मेरे शहिनशाह शहिनशाहया। एका अहूती करीए सीस झुका, नेत्र नैणां नीर वहाया। नानक निरगुण गया समझा, एका अक्खर पढ़ाया। निहकलंक जावे आ, लोकमात फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। निहकलंक कल अन्तिम आणा, अन्त मिले वड्याईआ। सत्तर भगत जिस उपजाणा, चौदां गुर गुर वेख वखाईआ। चौदां लोक जिस डेरा ढाहणा, चौदां तबक करे सफाईआ। कलमा कलाम इक्क पढ़ाणा, एका नाम जणाईआ। सच मकान सच वखाणा, चार वरन शरनाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जिस दर बहाणा, बख्शे चरन सच्ची शरनाईआ। दो जहानां जिस राज कमाणा, निरगुण नाम अख्वाईआ। साचे भगतां आप जगाणा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वीर वीरां नाल मिलाईआ। सत्तर सिख साडे भाई, विछड़े कलयुग मात। वेले अन्त कन्त मिलाई, देवे नाम दात। तेरे नाल होए कुड़माई, वज्जे साचा नाद। एका घर वसे धी जवाई, सोहरे पेईए खेल तमाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद गाए तेरी गाथ। सत्तर भगत गुरमुख गुर, गुर सतिगुर आप वड्याईआ। लेखा जाणे पूरब धुर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। पूरन आशा आपे पूर, पूर रिहा सब ठाईआ। जो वसणहारा दूर दूर, नेड़े हो हो दरस दिखाईआ। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, सच सुच्च नाल बंधाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जो हरि मन्त्र नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां आपणी वाग फड़ाईआ। सत्तरां देवे माण वड्याई, हरि वड्डा वड्याइंदा। पुरख अबिनाशी करी कुड़माई, कुड़म कुड़मेटा नज़र कोई

ना आइंदा। आपणे हथ्थीं सगन रिहा पाई, मौली तन्द ना कोई हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सत्तर सिख सुणन ला कन्न, हरि साचा आप सुणाईआ। इक्को हुक्म लैणा मन्न, दूजी अवर ना कोई शरनाईआ। लेखे लग्गा साचा मन, त्रैगुण माया ना देवे सजाईआ। जो घड़या सो लैणा भन्न, थिर कोए नज़र ना आईआ। तिन्नां हरि के दुआरे लाई संन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। सत्तर सिख उठो बल धारो, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। मेरा भार अन्त उतारो, मैं होई जगत शुदाईआ। मेरा दुखड़ा सर्ब निवारो, खुलड़े केस रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा रचाईआ। बहत्तर सिखो करो ध्यान, मैं बाली कूक सुणाईआ। मेरा किसे ना चुक्या बिबाण, मेरा भार ना कोई वंडाया। कलयुग जीव होए बेईमान, साचा संग ना कोई निभाया। चारे कुण्ट बीआबान, साचा बाग ना कोई लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याआ। सत्तर भगत कहिन्दे बोल, एका वार सुणाईआ। धरत मात क्यों रही अनभोल, दुखड़ा क्यों सुणाईआ। हरि जू आया तेरे कोल, तेरा दर्द वंडाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, ना डोले कोई डुलाईआ। सचखण्ड दुआरा रिहा खोल्ह, तेरे भगतां माण दवाईआ। तूं वी छकणी आ के पाहुल, धूढ़ी रसना टिक्का लाईआ। तेरे अंदर जाए मौल, मौला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म वरताईआ। धरनी अग्गों पई रो, रो रो हाल सुणाया। मैं आपणी मींडी लई खोह, सीस ना कोए गुंदाया। चार कुण्ट आपणी रत्त लई चो, साचा रंग ना कोई चढ़ाया। गुर अवतार दब्बया आपणी भों, आपणे विच छुपाया। फिर निकल ना सके को, जिस उत्ते पर्दा पाया। दुहाई दुहाई दुहाई छब्बी पोह, धरत मात रही कुरलाया। सिँघ शेर मेरा भार आया जोह, आपणीआं भुज्जां बल रखाया। मेरे अग्गे खलोता उह, जिस दा भेव किसे ना पाया। आदि जुगादि सदा निर्मोह, प्यार किसे नाल ना वधाया। जो चरन जावे छोह, तिस बेड़ा पार कराया। गुर अवतार लै के आउँदे रहे ढोआ ढो, लोकमात वेस वटाया। अग्गे करे सोई हो, वस चले ना कोई चतुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। धरनी कहे मैं दस्सां हाल, गुरमुखां रही सुणाईआ। मैं दर ते डिग्गी आण, दर दरवेश पल्लू गल विच पाईआ। मैं सुणया तुहानूं मिल्या आण, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। पहलों बहत्तरां करी कल्याण, बहत्तरां सत्तरां सत्तर मंग मंगाईआ। सतत्तर मेरे उत्ते हो मेहरवान, मेरा दुखड़ा दयो गंवाईआ। मैं सेवा करां महान, बण सेवक सेव कमाईआ। आपणे विच गड्डां निशान, उपर दयां झुलाईआ। निउँ निउँ सीस राज राजान झुकान, चार जुग मिले वड्याईआ। मैं गल

विच पल्लू पा वास्ता घत्तदी मैनूं मेलो मेरा भगवान, छड्डी सर्ब लोकाईआ। मढ़ी गोर वेखां जीव जहान, उत्ते बह बह ख़ुशी मनाईआ । गुरसिख गुरमुख हरिभगत मैनूं दयो दान, तुहाड्डा पुरख चतुर सुजान, देवे दर वड्डी वड्याईआ। चार जुग दे विछड़े मेले आण, गुर अवतारां तोलया तोल महान, लोकमात बणाए फिर विधान, साची करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। सुण धरती साडी गल्ल, गुरमुखां आख सुणाया। एह करदा वल छल, हथ्थ किसे ना आया। एहदा वसे निहचल धाम अटल्ल, सचखण्ड डेरा लाया। तेरे भगतां तेरा फल, साचा बूटा रिहा लगाया। तूं एहनां दी साया लैणी मल, तेरा दुखड़ा देण गंवाया। तूं एहनां दे विच बहणा रल, तेरा नाता लैण जुड़ाया। कलयुग जांदा अज्ज के कल, प्रभ देवे धक्का लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप सालाहया। सलाहगीर होए मस्ताना, मस्ती एका नाम रखाईआ। भगतां भगवन्त बन्ने गाना, साचा सगन मनाईआ । लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधाना, सरगुण लए मिलाईआ। छब्बी पोह दिवस महाना, सत्तरां दए माण वड्याईआ। मेरा बणया पहलों निशाना, जगत जगदीश नींह धराईआ। भगतां करया फेर परवाना, आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल दया कमाईआ। दीन दयाल दयानिध ठाकर, आपणी दया कमाइंदा। सरगुण रूप सहिज सुख सागर, गुर अमृत रूप वटाइंदा। निर्मल कर्म करे उजागर, आप आपणे रंग रंगाइंदा। नाम वणजारा बण सौदागर, साचा वणज कराइंदा। दर आयां घर देवे आदर, आपणी गोद बहाइंदा। लेखा जाणे तेग बहादर, गुजरी चन्द नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप चमकाइंदा। गुज़री चन्द तेरा चन्दन चन्द, हरि जू आप चमकाया। करे खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी वेख वखाया। गीत सुहागी एका छन्द, दो जहानां रिहा जणाया। सत्तरां भगतां तुट्टी दिती गंढ, तुट्टी गंढ वखाईआ। भगतां हथ्थ फड़ाई कमंद, चिला आपणे हथ्थ रखाया। चार जुग दी वंडी वंड, चारे चार वेख वखाया। पंजे शब्द कीते बन्द, साध सन्त कोए सुणन ना पाया। जे कोई कहे झूठी पावे डण्ड, हरि ने सब दा माण गंवाया। कूड़ी क्रिया सिर ते चुक्की पंड, राए धर्म दए सज़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। गुज़री चन्द वेखो लाल, लालन लालन बण के आया। जिस दे नाल पुरख अकाल, आपणा खेल रचाया। गुरमुख उठाए आपणे बाल, आपणी गोद बहाया। आपे करे हल्ल सवाल, मकतब होर ना कोई वखाया। गुरसिखां पिच्छे घालना घाल, आपणा आप भेंट चढ़ाया। फेर बणया मात दलाल, शब्दी रूप वटाया। वेखो खेल करे कमाल, कमाला कबीर रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सत्तर बहत्तर माण वड्याआ। सत्तर बहत्तर फुल्ल फुलवाड़ी, पत डाली मात महकाईआ। पुरख अबिनाशी लाई क्यारी, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। जगी जोत इक्क निरँकारी, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। मन्दिर बणया उच्च अटारी, तिन्नां लोकां माण गंवाईआ। आपणे सिर ते चुक्की तिगारी, बण सेवक सेव कमाईआ। करया खेल इक्क विहारी, हरि मन्दिर फेरा पाईआ। भुल्ल गया नर नारी, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाईआ। ग़रीबां नाल लाई यारी, देवे बिदर माण वड्याईआ। पहलों सद्दया वड वड संसारी, वड भण्डारी दया कमाईआ। मां जम्मयां छोटी ज़ात घुम्यारी, सिँघ सोहण नाउँ रखाईआ। कलयुग अन्त मिली सरदारी, घर साचे सोभा पाईआ। सत्तर सिख उठो बण बलकारी, बल आपणा आप वखाईआ। पंज मिस्तरी करो त्यारी, तेसी हथौड़ी हथ्थ उठाईआ। जगत महल्ला ढाउणा आपणी वारी, चारों कुण्ट जड़्ह उखड़ाईआ। सत्तर इट्टां लाहो गाओ सोहँ जैकारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जै जै जैकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। साचे मन्दिर इट्ट देणी उखेड़, हरि उखेड़ा जगत लगाइंदा। इट्ट इट्ट नाल इट्ट देणी भेड़, दो जहानां भेड़ वखाइंदा। लोआं पुरीआं छेड़ देणी छेड़, वेखो हरि की खेल कराइंदा। सतरवीं इट्ट उत्तों देणी रेड़, ब्रह्मा विष्न शिव शब्दी औंध मुकाइंदा। लहिणा देणा दए निबेड़, हक़ीक़त हक़ वेख वखाइंदा। इक्क इकल्ला सिँघ शेर होया दलेर, सृष्ट सबाई भय वखाइंदा। शाह पातशाह करो ना डेर, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सिखां उपर आप चढ़ाइंदा। साचे सिख चढ़ जाओ उत्ते, हरि जू आप सुणाया। एधर लाए ते उधरों पुट्टे, भेव किसे ना पाया। हरिभगत फुलवाड़ी इक्को फुट्टे, लोकमात मात महकाया। जीव जंत रहि जाण सुत्ते, सुत्तयां रैण विहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वरताया। वेखो सिखां दा सच्चा राह, हरि जू आप चलाइंदा। कलयुग जड़्ह दए उखड़ा, चौथा जुग अन्त कुरलाइंदा। इट्ट नाल इट्ट दए खड़का, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गे मार्ग आपे लाइंदा। अग्गे मार्ग हरि जू लाउणा, हरि हरि आप सुणाईआ। साता चौका मेल मिलाउणा, आपणा बन्धन पाईआ। पहली चेत्र दिवस सुहाउणा, गुर गुर रंग वखाईआ। पुरी अनन्द आप समझाउणा, लिख लिख लेख जणाईआ। आओ जाओ जिस ने दर्शन पाउणा, आया सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। आपणा पर्दा ल्या चुक्क, गुरसिखां दए वड्याईआ। आदि जुगादि जो रिहा लुक, अन्तिम नूर करे रुशनाईआ। सिँघ शेर हो रिहा बुक्क, आपणी भबक वखाईआ। गुरसिख बणाए आपणे पुत्त, आपणे आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, साची सेवा आप लगाईआ। साची सेवा हरि नरायण, निरगुण आप लगाइंदा। धरनी पावे झूठे वैण, चारों कुण्ट सर्ब अल्लाइंदा। गुरमुख मिल अकट्ठे बहण, हरिसंगत संग मिलाइंदा। लाड़ी मौत ना खाए डैण, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। नाता जुड़या भाई भैण, गुरमुख एका घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआरा बणया मन्दिर, हरि जू आसण लाईआ। जे गुरसिख कहिण ते आवां अंदर, नहीं ते उत्ते बह बह सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंग मंगाईआ। एका मंग मंगे करतार, आपणी खेल कराइंदा। गुरमुख हुक्म देणा वार, आपणी झोली अग्गे डाहइंदा। किरपा करो ते लँघां अंदर दुआर, बिन भगतां सार कोए ना पाइंदा। बिनां भगतां बणयां रहां गंवार, मूर्ख मुग्ध अख्वाइंदा। धन्न भाग जे होया तुहाड्डा दीदार, कर दरस खुशी मनाइंदा। छब्बी पोह दा सच दिहाढ़, हरि साजन आप सुहाइंदा। मिल सक्खीआं लग्गा अखाड़, वाह वाह गीत गोबिन्द अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाइंदा। लग्गी सेवा साची कार, अकाल पुरख आप लगाईआ। वेखो ठोकर वज्जदी संसार, सूरबीर आप लगाईआ। होके देवे नारी नर, कूक कूक सुणाईआ। साडी सुणे ना कोई पुकार, साध सन्त रहे कुरलाईआ। मुलां शेख़ मुसायक वाजां रहे मार, हुजरे चढ़ देण दुहाईआ। इक्को पैंदी दिसे मार, सिर सके ना कोई उठाईआ। चारों कुण्ट तूं ही तूं रहे पुकार, गुफ़त शनीद तेरी शनवाईआ। ऐहबाब रबाब वजाए सतार, सच सारंगा हथ्थ उठाईआ। नानक निरगुण गाया निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां लए उठाल, साची दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

हरि जू चढ़या इक्को चाअ, चाउ घनेरा रिहा वखाईआ। जन भगतां दिती पनाह, दर दुआरा इक्क खुल्लाईआ। नित्त नित्त एथे सदा रहां, विछड़ कदे ना जाईआ। घर घर डेरा लवां ला, सिँघासण आसण सोभा पाईआ। करां प्यार जिउँ पुत्तरां मां, बालक गोद वड्याईआ। हँस बणावां फड़ फड़ काँ, कागों हँस उडाईआ। एथे ओथे देवां ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। जन भगतां कुण्डा दिता खोल्ह, आपणी खिड़की आप खुल्हाइंदा। ग़रीब निवाज़ अंदर वड़ वड़ वजाए ढोल, नाम मृदंगा इक्क रखाइंदा। कर किरपा जाए मौल, मौला आपणा रूप चढ़ाइंदा। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत मुख चुआइंदा। देवे वड्याई उपर धवल, हौला

भार कराइंदा। वेखो जिन्हां नूं लोकीं करदे रहे मखौल, तिन्हां आपणी गोद बहाइंदा। बिन खंडिउँ दिती पौहल, गोबिन्द आपणा रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लख लख शुकर मनाइंदा। लख लख गुरसिख तेरा करां शुकर, हरि जू आप सुणाइंदा। ऐस वेले जे जाओ मुक्कर, मैनूं थाँ नज़र कोए ना आइंदा। गोबिन्द बणाया तुहानूं पुत्तर, मैं बण बण दादा सेव कमाइंदा। बिन माता गर्भ तों उत्तों आया उतर, जो नानक ध्यान लगाइंदा। आपणे हथ्थीं फड़या सूत्र, तन्दी तन्द नाल बंधाइंदा। चारों कुण्ट वेख्या उतर, पूरब पच्छिम दक्खण सारे वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। वाह वाह गुरसिख तेरी वड्याई, तेरा जस वेद पुराण कहिण ना जाया। पुरख अकाल करी कुड़माई, घर साचे रंग चढ़ाया। वेखण आया चाँईं चाँईं, निरगुण आपणा रूप धराया। आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप रंगाया।

ग़ैर हाज़रां पिच्छे होया आप हाज़र, हाज़री सब दी दए लगाईआ। आपे बणया पिसर पिदर मादर, सबर सबूरी आप समझाईआ। करता करीम बेऐब कादर, कुदरत आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा विहार आपणे हथ्थ रखाईआ। हाज़र हज़ूर हरि दुआर, हरि हरि आप कराईआ। गुरमुख सुरती खिच्चे कर प्यार, चरन कँवल लए टिकाईआ। दूर दुराडिआं दुःख निवार, दुःख सुख विच बदलाईआ। गुरसिखां पिच्छे कटे आप वगार, बण वगारी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इट्ट इट्ट नाल उठाईआ। इट्ट नाल चुक्के इट्ट, आपणी सेव कमाइंदा। चेतन रूप रखे चित्त, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। निहकर्मी करे साचा हित्त, कर्म आपणा आप वखाइंदा। कोई ना जाणे डूँघा भेत, भेद आपणा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरी सेव कमाइंदा। साची सेवा करे करने योग, सेवक आपणे नाउँ धराइंदा। लोक परलोक रहे वेख, नेत्र नैण उठाइंदा। पहलों बणाया आपणा कोट, आपणी हथ्थीं फेर उठाइंदा। भगत दुआरे धरे जोत, आपणा नूर आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाइंदा। साची खेल श्री भगवान, आपणी आप कराईआ। आपणा मिटाया जगत निशान, तेरा भगत निशान झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आपणा निशाना मेटया पंज तत्त, मिटी ख़ाक मिलाईआ। गुरमुखां दिती इक्को मति, एका करे पढ़ाईआ।

इक्को अमिट पुरख समरथ, हरि सच्ची सच शरनाईआ। कलयुग अन्तिम लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग जुग भगतां करदा आया पक्ख, निरवैर दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम लए रख, सत्तर बहत्तर कर कुड़माईआ। हरिसंगत रखे पत्त, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जो दर्शन पाए हस्स हस्स, हस्स हस्स गोद बहाईआ। बिन डोरीउँ होया वस, जन भगतां अंदर गया समाईआ। फसणहारा आपे गया फस, आपणा फंद ना कोई वछाईआ। साचे सन्तां कर अकट्ठ, लोकमात करे रुशनाईआ। कलयुग खेड़ा होए भट्ठ, भगतां दुआर वसाईआ। उलटी गेड़े आपे लट्ठ, जुग चौकड़ी आप भुवाईआ। नाता तोड़ तीर्थ अठसठ, घर सच्चा इक्क वखाईआ। ना कोई पूजा मस्जिद मन्दिर शिवदुआला मट्ठ, सीस अवर ना कोई झुकाईआ। इक्को नाम सोहँ लैणा रट, दूजी होर ना कोई पढ़ाईआ। सब नूं खाते ल्या घत्त, डूँघे खाते लए पाईआ। उच्चे टिल्ले चोटी वेखे पर्बत, समुंद सागर फोल फुलाईआ। कलयुग अन्तिम चुक्की अत, मन मति नाल रलाईआ। मुहम्मद पिट्ठ ते रखे हथ्थ, आपणा बल रिहा जणाईआ। तूं करना लखों कक्ख, कक्ख खेह ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन सज्जण रखी लाज, इक्क जैकार लाया। मेरा खुल्हण ना दिता पाज, उपर मेरे पर्दा पाया। बिन तन्दीउँ वज्जे रबाब, काया किंग आप वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आवे खुशी मनाया। घर आया चौकीदार, चारे जुग नाल लिआईआ। होका देवे उच्ची कूक पुकार, चार कुण्ट सुणाईआ। विष्नूं ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, मेरे सिख मिले वड्याईआ। चारे वेद रोवे ज़ारो ज़ार, तेरा हुक्म ना मन्नया जाईआ। चार वरन करन पुकार, हाहाकार सर्ब लोकाईआ। गुरमुख घर घर होवे त्यार, चलो मिलीए साचे माहीआ। चल के करीए दरस दीदार, तेरे नैणां नाल नैण मिलाईआ। खुशीआं रहि गईआं दिन चार, अन्तिम सब नूं होए जुदाईआ। सचखण्ड मिले सच दी धार, जिथे वज्जदी रहे वधाईआ। उथे हरि दा मंगलाचार, राम कृष्न ना कोई पढ़ाईआ। उथे नानक गोबिन्द करे निमस्कार, बैठे सीस झुकाईआ। उथे केहड़ा मंगे धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का लाईआ। तिस मिले जा सरदार, जो साहिब सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फेरा रिहा पाईआ। वेखो भगतो खेल अवल्ला, हरि जू आप कराया। तुहाढ्ढे पिच्छे आया इक्क इकल्ला, निरगुण वेस वटाया। पहलों फड़ाया शब्दी पल्ला, फिर जोत करे रुशनाया। तुसां मारया वड्डा हल्ला, एका बन्धन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाया। बहत्तर भगत इक्क दूजे दे खड़े कोल, कन्नां नाल कन्न मिलाईआ। जे हथ्थ वेखे वस्त ना कोई कोल, प्रभ केहड़ी गल्ले रिहा मनाईआ। जे तोल के वेखे आपणा तोल, साची वस्त नज़र ना आईआ। असीं

सुत्ते रहे अनभोल, भोली मति रखाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों कहे बोल, एका शब्द जणाईआ। मैं निरगुण होए वजाया ढोल, तुहाढ्डे तन रबाब वखाईआ। अन्तिम सब दा कढ्डुया पोल, आपणा पर्दा दिता मुकाईआ। कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, हिसाब विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुणीआं ला के ल्या मिण, गुरमुख रख्या इक्क पैमाना। तेरे तुल ना कोई तन, ब्रह्मा विष्न शिव होए हैराना। करे खेल श्री भगवान, पारब्रह्म शाह सुल्ताना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दाना। बहत्तर भगत भगत परवान, हरि साचे माण रखाया। अंदर वड़ बहे श्री भगवान, घर घर विच डेरा लाया। सुखमन टेडी बंक नैण शरमाण, ईड़ा पिंगल रहिण ना पाया। अमृत सरोवर ना कोई दुकान, जोत निरँजण ना कोई रुशनाया। नाभ कँवल ना देवे माण, झिरना निझर निझर झिराया। किरपा करी श्री भगवान, एका वार मेल मिलाया। ना कोई पढ़े गीता ज्ञान, खाणी बाणी ना कोई वड्याआ। ना कोई अंदर वड़ वड़ लाए ध्यान, इष्ट देव ना कोई मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा निशाना दिता माण उठाया। वेखो निशान गया लथ्थ, साढे तिन्न तिन्न हथ्थ चढ़ाया। हरिसंगत करया प्रतख, गुरमुखां दए वड्याआ। हरिजन आए वहीरां घत्त, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। नाल निशाना ल्याए साढे तिन्न हथ्थ, उपर उपर लेख लिखाया। दो जहानां रखे पत्त, लोकमात आप झुलाया। एका वार गुरसिखां दुआरा गया वस, पुरख अबिनाशी आप वसाया। आप दोहां दे विच गया फस, निकल किते ना जाया। बण निमाणा करे जस, जन भगतां ढोला गाया। आओ वेखो होया वस, बेमुहाणा बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राग सुणाया। सत्तर सिख थल्ले आवणा, इक्क इक्क नाल डोर बंधाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सब ने गावना, गीत गोबिन्द अल्लाईआ। पूरब जन्म दा लेखा झोली पावणा, प्रभ कर्जा रिहा मुकाईआ। जे कोई होवे हर्ज ते दस्स वखावना, लगान पूरा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पौड़ी पौड़ी आप उतराईआ। पौड़ी पौड़ी वेखो वंड, हरि हरि लोकमात कराया। अन्तिम आउणा नीचे कंड, जिस धरत रही उठाया। जिस दे उत्ते वसे ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। सत्तर इट्टां उत्ते देणीआं रख, हरि जू आप सुणाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, आपणी धार बंधाइंदा। आपे देवणहारा वथ, आपे झोली अग्गे डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। इट्टां लाए आउ वारी, बार बार आप जणाइंदा। सिँघ भजन चढ़े उत्ते उच्च इटारी, हरि जू साचा आप चड़ाइंदा। सत्तर इट्टां रखे कर प्रेम प्यारी, प्यार प्यार नाल ठुकराइंदा। वेखो ठोकर

लाए वड संसारी, एका धक्का लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप सालाहइंदा। सत्तर सिख चढ़या चन्द, बहत्तर करन रुशनाईआ। साध संगत इक्को रंग, हरि जू आप रंगाईआ । आत्म सेजा वेख पलँघ, बैठा आसण लाईआ। एका नाद वजाए अनहद, तार सितार ना कोई हिलाईआ। एका जाणे आदि जुगादि, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, गुरमुख आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे पौड़े आप चढ़ाईआ। साचे पौड़े गुरमुख चढ़ना, आई तेरी वार। सचखण्ड दुआरे अन्तिम वड़ना, मिलणा मेल हरि निरँकार। त्रैगुण माया कदे ना सड़ना, पंज तत्त ना होए खुआर। अद्धविचकार कदे ना अड़ना, उच्चा डण्डा लाया करतार। सोहँ अक्खर इक्को पढ़ना, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे पार। पुरख अकाल लड़ फड़ना, बेड़ा करे पार। बिन चप्पू बिन मलाह दर आए तरना, देवे इक्क सहार। एथे उथे घाड़न घड़ना, बणे आप ठठयार। साचे पलँघ आपे चढ़ना, करे खेल हरि करतार। सीस ताज इक्को धरना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे सच विहार। करे विहार सच महल्ला, महल्ल मिले वड्याईआ। भगतां अंदर आपे रला, आपणा मूल दए मुकाईआ। सच संदेशा इक्को घल्ला, एका राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपे लए तराईआ। तारनहारा इक्को एक, एका पुरख अख्वाया। सतिजुग साची देवे टेक, साचा बिरद धराया। चार वरन करे बिबेक, एका अक्खर पढ़ाया। त्रैगुण माया ना लाए सेक, सांतक सति सति वरताया। निरगुण सरगुण खोल्हे भेत, आपणा पर्दा दए मिटाया। रुत्त बसन्ती वेखे चेत, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाया। गुरमुखां करे हेत, साता चौका वंड वंडाया। बाला बण बण रिहा खेड, रूप अनूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। तारनहारा तारे हरि, हरि हरि आप सुणाइंदा। वेस धरे हरि नर नरायण अछल अछल, आपे कर वल छल, आपणी खेल कराइंदा। लख चुरासी आपे हर, हार जित ना कोई जणाइंदा। मनमुख जीव आपणा कीता लैण भर, अग्गे हो ना कोई छुडाइंदा। गुरमुख विरला कन्त इक्को वर, जिस आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआरे पहली छत्त, छत्रधारी आप पुवाईआ। जन भगतां देवे इक्को मति, एका वार दर वखाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए जणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को कमलापति, एका एक रघुराईआ। एथे उथे वसे साथ, डुब्बदे लए तराईआ। आउ रल मिल गाईए गाथ, सोहँ करी पढ़ाईआ। जिस सेवा लाए त्रिलोकी नाथ, सो सेवा रिहा कमाईआ। सदा वसीए उस दे पास, जिस दी वड्डी शहिनशाहीआ। कलयुग अन्त ना होए गुस्ताख़, गुस्सा कम्म

किसे ना आईआ। जिस आपणी कीती पहलों राख, साडी राख लए धराईआ। जिस नूं भगत रहे झाक, सो सानूं झाक रिहा माहीआ। जिस दा किसे ना खोल्ह्या ताक, सो साडा ताक रिहा खुल्हाईआ। जिस दा गोबिन्द गाए भविख्त वाक, पुरख अकाल मनाईआ। जिस नूं नानक किहा पर्दा लए ढाक, ढाकन को पत इक्क अख्वाईआ। जिस नूं ईसा किहा मेरा बाप, सो आया नूर इलाहीआ। जिस नूं मुहम्मद करदा गया याद, आपणी याद ताजा दए कराईआ। जिस नूं कहिन्दे इक्को वाहिद, गॉड इक्को नूर अलाहीआ। उस ने इक्को शब्द फिराई राड, चारों कुण्ट भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आउ सिखो वेखो रंग, बेरंगा आप चढ़ाइंदा। आउ वेखो कटो भुख नंग, दुःख दर्द मिटाइंदा। आउ वेखो वज्जे मृदंग, तार सितार ना कोई हिलाइंदा। आउ बिन खंडिउँ करे खण्ड, गीत सुहागी इक्क पढ़ाइंदा। वेखो लख चुरासी करे रंड, साचा कन्त ना कोई हंढाइंदा। गुरसिखां अंदर सुट्टे कमंद, नाम डोरी इक्क उठाइंदा। कट के आया हरि जू पन्ध, बण पाँधी फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। की मिल्या मेरा होए वाधा, हरि जू आख सुणाइंदा। ना कोई मेरा पिओ दादा, मात पित ना कोई बणाइंदा। ना कोई गोद बहा लडावे लाडा, सिर हथ्थ ना कोई टिकाइंदा। आदि जुगादि किसे अग्गे ना करां फरयादा, आपणा हाल ना किसे सुणाइंदा। जन भगतां जुग जुग देवां दादां, बण रहीम रहिमत कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मनाइंदा। आओ मन्नो मेरे लाल, लालन आप मनाईआ। जोत अकालण करे सवाल, एका गुण समझाईआ। बण के मालण आई विच जहान, सिर खारी आप उठाईआ। कन्डयां विच्चों गुरमुख साचे लए भाल, लख चुरासी वेखे चाँईं चाँईंआ। अन्तिम गुंदिआ इक्को हार, सूई तन्द नाल मिलाईआ। सोलां करे सच शृंगार, एका तन्द चढ़ाईआ। पन घट बण के आवां पनिहार, बण ग्वालण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख रंग रंगाईआ। गुरमुख वेखो आपणा दुआर, हरि सतिगुर आप बणाया। जुग जुग जो रिहा कुँवार, कलयुग अन्त गुरसिखां ल्या प्रनाया। गुर अवतारां देंदा रिहा सहार, तुहाड्डा सहारा रिहा तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे विच छुपाया। हरिजन अंदर जाणा छुप, हरि आपणी खेल वखाईआ। बाहरों जे कोई लए पुच्छ, किस रंग वसे सच्चा माहीआ। एथे कुछ उथे कुछ, कोई कहे पूरन कोई कहे गोबिन्द पुरख अकाल हरि हरि रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेड़ा रिहा वसाईआ। गुरसिख तेरा खेड़ा सुफल, सम्बल संभल वसाया। बिन नशिउँ आया अमल, हरि जू आपणा रंग चढ़ाया। तूं चलणा एथे संभल,

चरन चरनां नाल मिलाया। गुर के बचनां उत्ते करना अमल, गुर सतिगुर रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह दा सच विहार, करे कराए करनेहार, एका रिहा जणाया। सच विहार सतिगुर सिख, हरि साचा सच जणाइंदा। वेखो गुरदास लेखा रिहा लिख, रविदास खुशी मनाइंदा। जन भगतां वन्डया हिस्स, कबीर ढोला अल्हाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे अक्खर निश, निष्अक्खर सो प्रगटाइंदा। जेहड़ा किसे ना प्या दिस, सो रूप अनूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दुआरे बन्द कराइंदा। नौ दुआरे बन्द करतार, हरि करता आप कराईआ। अग्गे सिंघासण कर उज्यार, पिच्छे डेरा लाईआ। चार सिख होण सेवादार, चारों कुण्ट सेव कमाईआ। पंजवां दोए जोड़ करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अठ्ठे दुआरे कोई ना जाए बाहरों अंदर बण गंवार, हुक्मी हुक्म आप जणाईआ। जिस ने करना दरस दीदार, पहला दुआरा ल्या समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सच दुआरे हरिजन जाणा, हरि के दुआर। अग्गे मिले श्री भगवाना, साचे तख्त सच्ची सरकार। अंदरे अंदर सोहँ गाणा, नाम शब्द जैकार। चरन कँवल ध्यान लगाणा, नेत्र नैण खुमार। जिस मिले हो मेहरवाना, बुड्ढा नड्ढा ना कोई विचार। भैण भाई संग बणाना, नाता जोड़ सर्ब संसार। रातीं सुत्तयां गले लगाणा, आप आपणी किरपा धार। एका इक्क इक्क फ़रमाणा, इक्क सच गुफ़तार। रसना जिह्वा ना कोई अलाणा, बत्ती दन्द ना कोई विहार। आलस निंद्रा विच ना आणा, जूठ झूठ ना कोए अधार। सवा पहर जिस ध्यान लगाना, सो बेड़े उतरे पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत करे पार किनार। हरिसंगत तेरा साचा राह, इक्क इकेला आप लगाईआ। पुरख अबिनाशी बण मलाह, करे खेल बेपरवाहीआ। रैहबर बण के दए सुणा, रहिमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे मात वड्याईआ। पंज मिस्तरी होए इक्ट्ठे, सज्जे पासे लए बहाईआ। अन्तिम पावणा एका खते, हरि खाता दए वंडाईआ। जो मेरी लाज रहे रखे, तिस लज्जया मात रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। पंज प्यारे पंज बस्त्र, एका रंग वखाईआ। हरि का घोड़ा इक्को अस्त्र, अस्व आप दुड़ाईआ। शब्द सरूपी साचा शस्त्र, तन गात्रे आप लटकाईआ। इक्को गाउणा सोहँ मन्त्र, एका करे पढ़ाईआ। लोकमात बणाए बणतर, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बहत्तर भगत खब्बे पासे, आपणा आसण रिहा समझाईआ। आपे करे खेल तमाशे, लुकवीं खेल आप रचाईआ। आवे जावे पृथ्मी आकाशे, आवण जावण बणत बणाईआ। मंडल मण्डप पावे रासे, गोपी काहन नचाईआ। गुरमुखां कहे शाबाशे, शाह पातशाह

बेपरवाहीआ। मनमुखां वक्त गंवाया हासे, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। एधर उधर वेखण आस पासे, हरि का भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सत्तर सिख अग्गे रख, अगला बंध जणाइंदा। आपे करे लखों कक्ख, कक्खों लख आप बणाइंदा। निरगुण हो आप प्रतख, जन भगतां दरस दिखाइंदा। आपणे अंदर रखे ढक, अन्तिम पर्दा लाहइंदा। भगत दुआरा खोल्ह हट्ट, पहली वार पहलों नाम आपणा आप वरताइंदा। बज़र कपाटी उत्ते मारे सट्ट, ठोकर एका एक वखाइंदा। दुरमति मैल देवे कट, सांतक सति सति कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप समझाइंदा। हरिसंगत सुण कर प्रीत, प्रीतीवान आप समझाईआ। छब्बी पोह अवल्लड़ी रीत, हरि जू आप चलाईआ। दर बैठयां सब दी परखे नीत, भुल्ल कोई ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

हरिसंगत प्रसादि अमृत रस, रस रसीआ दए वड्याईआ। हरि का प्रसादि जोत प्रकाश, घर घर दए टिकाईआ। करे खेल हरि शाहो शाबाश, साख्यात रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बन्धन आपे पाईआ। हरिसंगत हरि प्रसादि हरि की भेंटा, प्रेम प्यार जणाइंदा। हरि का प्रसादि गुरमुख खेवट खेटा, लोकमात बेड़ा पार कराइंदा। एका घर वसण पिता पूत पित बेटा, साचा मन्दिर इक्क सुहाइंदा। जुग चौकड़ी ना भुल्ला चेता, चेतन आपणे नाल बंधाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ रखी वेंता, लोकमात नींह धराइंदा। कलयुग अन्तिम दरसण आया भेता, भेत आपणा आप खुल्हाइंदा। जिस नूं कबीर इक्को देखा, सो गुरमुखां दरस वखाइंदा। आदि जुगादि जाणे लेखा, लिख लिख लेख आप मुकाइंदा। किसे हथ्थ ना आवे धारी केसा, मूंड मुंडाया ना बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा जोड़ आप जुड़ाइंदा। गुरसिख प्रसादि ब्रह्म रंग, रंगण रंग वखाईआ। हरि का प्रसादि आत्म मंग, परमानंद दए जणाईआ। गीत सुहागी साचा छन्द, अनहद नाद सुणाईआ। नाता जीउ इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड, एका घर मेला रिहा मिलाईआ। हरिसंगत प्रसादि साची दाद, हरि दाता वेख वखाइंदा। गुर का प्रसादि बोध अगाध, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, निवण सु अक्खर इक्क समझाइंदा। कलयुग अन्तिम रखी लाज, हरिजन आप जगाइंदा। लख चुरासी विच्चों लए काढ, आपणे घर बहाइंदा। मेल मिलावा मोहन माधव माध, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। सन्त सुहेले साचे लाध, गुर सतिगुर मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दया कमाइंदा। संगत प्रसादि हरि की सेवा,

सेवा साची हरि जणाईआ। गुर प्रसादि अमृत मेवा, रस रसना आप चखाईआ। आदि निरँजण अलख अभेवा, इक्को बेपरवाहीआ। कौस्तक मणीआ लावे थेवा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। गाए गीत बिन रसना जिह्वा, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बणे विचोला बेपरवाहीआ। हरिसंगत प्रसादि सच सच्च, हरि साजण आप बणाइंदा। हरि का प्रसादि एका घर, भेव कोई ना पाइंदा। गुरमुख विरला महल अटल, मिनार कोट किला गढ़ आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां एका दर वखाइंदा। गुर प्रसादि खुल्हिआ दरवाज़ा, दर दरबान मिली वड्याईआ। इक्क भिखारी इक्क राजा, इक्क शहिनशाह अख्वाईआ। इक्क दर दर घर घर फिरे भाजा, इक्क बैठा मुख छुपाईआ। इक्क रातीं सुत्तयां मारे वाजां, इक्क सुत्तयां करवट ना सके बदलाईआ। इक्क लोकमात रखे लाजा, इक्क रिहा पति गंवाईआ। कलयुग अन्त खेल कीआ विच माझा, माझा देस मिली वड्याईआ। इक्को गोबिन्द सूरा रिहा भाजा, पुरख अकाल नाल मिलाईआ। सतिजुग चलाए सच जहाजा, साची सेव कमाईआ। सचखण्ड निवासी ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणयां लए उठाईआ। शाह सुल्तानां खोल्हे पाजा, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां बेड़ा आप चलाईआ। हरिसंगत प्रसादि सच दुआरी, आसा आस पुजाईआ। गुर प्रसादि मिले धुर दरबारी, दरगाह साची वड वड्याईआ। ना कोई मन्दिर ना कोई अटारी, किला कोट ना कोई रखाईआ। ना कोई पंडत पांधा करे विचारी, मुलां शेख़ां ना कोए जणाईआ। ना कोई ग्रंथी पन्थी गाए गाथा, बावन अक्खर ना कोई सुणाईआ। जिस जन मिल्या पुरख समरथ, तिस नाता तुट्टा जगत लोकाईआ। एथे ओथे इक्को वथ, इक्क दुआर ना कोई वरताईआ। दे प्रसादि करे ना बस, आपणा प्रसादि जुग जुग रिहा वरताईआ। बिन रसों देवे रस, रस रसीआ आपणा रस वखाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कीती आस, चौथे जुग होया सहाईआ। गुर अवतार सारे कहिण प्रभ नूं कम्म कोई ख़ास, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां विचोला आप अख्वाईआ। हरिसंगत तेरा प्रसादि त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी आप वरताईआ। हरि प्रसादि ठंडा सीता, अग्नी तत्त बुझाईआ। सतिजुग चले साची रीता, सति सतिवादी आप चलाईआ। भगत भगवन्त पतित पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। पिछला वेला सुत्तयां बीता, अग्गे अक्ख रिहा खुल्हाईआ। वेखो धाम इक्क अनडीठा, लोकमात ल्या प्रगटाईआ। कलयुग अन्त वेखे कौड़ा रीठा, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी बीठलो बीठा, नर नारी लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट रिहा समाईआ। गुर प्रसादि देवे आदर, हरिसंगत माण वड्याईआ। गुर तेग बहादर चिट्ठी चादर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। गुर गोबिन्द

चिला तीर कमान इक्क उठाईआ। एका आख के गया साबर, सबर सबूरी आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत तेरा प्रसादि आपणे लेखे लाईआ। हरिसंगत प्रसादि बड़ा अनमुल्ल, अनमुलड़े हट्ट विकाईआ। हरि प्रसादि बड़ा अतुल, तोल ना तोलया जाईआ। सच भण्डारा गया खुल्ह, वेखे सर्ब लोकाईआ। हरिसंगत ना जाए रुल, करता कीमत आपे पाईआ। दर जो आए भुल्ल, जन्म मरन दए कटाईआ। हरिसंगत ना जाए हुल, सिंमल रूप ना कोई वखाईआ। सोहँ गाए रसना बुल, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्त फेरा पाईआ। गोबिन्द फुलवाड़ी जाए फुल्ल, गोबिन्द बूटा आपे लाईआ। घोल घुमा आपे घुल, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रसादि आप वखाईआ। वेखो हरि दा सच प्रसादि, हरि जू आप वखाइंदा। सदा सुहेला वसे आदि जुगादि, आपणे रंग रंगाइंदा। जन भगतां देवे इक्को दात, देवणहार इक्क अख्वाइंदा। आपे जाणे आपणी हाद, किनारा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि आप वरताइंदा। वेखो प्रसादि लग्गा ढेर, ढह ढेरी ख़ाक गंवाईआ। कर किरपा हरि जू तारे मेहर, मेहर नज़र एका पाईआ। प्रगट होया इक्को केहर, शेर रूप वटाईआ। लख चुरासी लए घेर, बचया कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि आप वरताईआ। हरि प्रसादि जिस ने खाणा, खाना आपणा लए खुलाईआ। दरगाह साची मिले माणा, हरि सतिगुर होए सहाईआ। धर्म राय नेड़ ना आणा, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। लाड़ी मौत ना बन्न्हे गाना, वेले अन्त ना लए प्रनाईआ। सतिगुर देवे शब्द बिबाणा, गुरमुख साचे लए चढ़ाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ध्यान लगाउणा, नेत्र नैण खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवाना, हरिजन आपणे गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत समाईआ। जोती जोत श्री भगवाना, मिल जोती जोत मिलाईआ। सचखण्ड सच मकाना, थिर घर आपणा नाम टिकाईआ। लहिणा देणा चुक्के आवण जावणा, लख चुरासी ना कोई भुवाईआ। राग नाद ना कोई गाणा, तुरीआ राग ना कोई सुणाईआ। एका पाउणा पद निरबाणा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। जो जन मन्ने हरि का भाणा, हरि भाणे रिहा समाईआ। वेखो तख़्तों लहिणा राजा राणा, रोवे सर्ब लोकाईआ। किसे ना सुझे पीणा खाणा, सेज ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा प्रसादि जन भगतां आप वरताईआ। गुर प्रसादि गुरसिखां खादा, खा खा शुकर मनाईआ। घर बैठयां हरि दर्शन पाया, हरि जू दर दर दया कमाया। आदि अन्त इक्क दा भय मनाओ, डर अवर ना कोई जणाया। अमरा पद एका पाओ, घर मिले सहिज सुखदाया। गीत गोबिन्द एका गाओ, शब्दी मंगल

गाया। जगत दुआरा डेरा ढाहो, सचखण्ड आसण लाया। परमानंद विच समाओ, निजा नंद रिहा शरमाया। हरिसंगत फूल कंद खाओ, अमृत फल रिहा वखाया। खुशी बन्द बन्द कराओ, बन्दीख़ाना दए तुड़ाया। जोत निरँजण चन्द चढ़ाओ, अन्ध अन्धेर दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा प्रसादि आपणे लेखे लाया। लेखे लग्गा आया दर, हरि दर्दी दर्द वंडाईआ। खुशी होए नारी नर, नर नरायण वेख वखाईआ। बाल बिरध जवान आपे फड़, आपणी गोद बहाईआ। बिन पौड़ीउँ आपे जाए चढ़, आउँदा जांदा दिस ना आईआ। अंदर बह बह रिहा पढ़, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। किला कोट तोड़ हँकारी गढ़, एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप तराईआ।

भगत दुआर बणाया ओह, एकँकार सेव कमाईआ। आदि जुगादि ना सके कोई खोह, गुर अवतार देण वड्याईआ। लोकमात बीज दिता बो, सचखण्ड फुलवाड़ी दए महकाईआ। छब्बी पोह लै के आया ढोआ ढो, आपणा प्रेम भेंट चढ़ाईआ। जिस दे पिच्छे आपणा आप गए खोह, सो आपणा आप जन भगतां भेंट चढ़ाईआ। दो जहानां आया ढो, लोआं पुरीआं फेरी पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रहे रो, विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां तजया मोह, लोकमात भगत लए प्रनाईआ। एका नाम जणाए आपणा सो, हं वेखे हर घट थाईंआ। हरि का भेव ना जाणे को, खाणी बाणी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप बणाईआ। सच दुआरा सचखण्ड, हरि साचे सच बणाया। कोटन कोटि कोट ब्रह्मण्ड, प्रभ चरनां हेठ दबाया। लेखा जाणे खाणी बाणी जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। त्रैगुण नाता तुट्टा तन्द, गीत सुहागी एका गाया। एथे ओथे कटया पन्ध, बण पाँधी फेरा पाया। इक्को ढोला गाए छन्द, सोहँ सोहला आप अलाया। गुर अवतार जो आपणे अंदर कीते बन्द, अन्तिम पर्दा दए चुकाया। साची वंडण एका वंड, लोकमात दए वखाया। जन भगतां मिल्या सूरा सरबंग, शाह पातशाह वेस वटाया। निरगुण नूर चढ़या चन्द, जोती जोत डगमगाया। एका नाम तेज चण्ड, प्रचण्ड आप चमकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाया। सचखण्ड दुआर बणया मात, लग्ग मातर भेव किसे ना आया। पैंती अक्खर ना जाणे ज़ात, हरि का घर दिस ना आया। गुर अवतार बणाई जमात, जुग जुग सबक पढ़ाया। सेवा लाए विच कायनात, दर दरवेश हुक्म सुणाया। आपणा लेखा रखे आपणे हाथ, समरथ पुरख बेपरवाहया। नाद अगम्मी एका गाथ, निशअक्खर आप

पढ़ाया। सरगुण निरगुण वसे साथ, एका संग निभाया। आपणा नाउँ साचा पूजा पाठ, पूजा जगत इक्क कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप बणाया। साचे मन्दिर गया चढ़, चढ़नहार करतारा। सचखण्ड दुआरे बैठे वड़, निरगुण नूर नूर उज्यारा। आप सुहाए कंचन गढ़, अटल अचल मुनारा। दरस दिखाए उपर खड़, जोती जोत चमत्कारा। शब्द अनादी एका पढ़, बोले सच जैकारा। ना कोई सीस ना कोई धड़, आदि जुगादी एकँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बणाए सच मुनारा। सच मुनारे साची दात, सो पुरख निरँजण झोली पाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क इकांत, सति सतिवादी आसण लाईआ। एकँकारा पुछे वात, आपणी सेव कमाईआ। आदि निरँजण मारे झात, आपणी ताकी आप खुल्हाईआ। श्री भगवान वसे साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। अबिनाशी करता गावे गाथ, एका कर पढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुच्छे वात, वरन ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप बणाईआ। सच दुआरा हरि बणाया, आपणी सेव कमाईआ। लोकमात फेरा पाया, त्रैभवन धनी वड वड्याईआ। अवन गवन डेरा ढाया, करे खेल इक्क रघुराईआ। निरगुण नूर नूर रुशनाया, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। दर दरवाजा इक्क खुल्हाया, दर दरवेश अलख जगाईआ। वेस अवेसा आप वटाया, भेव कोए ना पाईआ। नर नरेशा नाउँ धराया, सचखण्ड वसणहारा साचा माहीआ। साचा तख्त इक्क वड्याआ, तख्त निवासी आसण लाईआ। हुक्मी हुक्म इक्क सुणाया, हाकम हुक्मी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे करतारा, भेव कोए ना पाइंदा। नौ नौ चार पार किनारा, लेखा लिख्त ना कोए समझाइंदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर धार चलाइंदा। सचखण्ड वसे सच दुआरा, सच सिँघासण इक्क वड्याइंदा। सच निशाना आपे चाड़्हा, एका घर वड्याइंदा। रचन रचे बण वणजारा, भूप भूप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी कल करे करता पुरख, कादर करता बेपरवाहीआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए जणाईआ। गुर अवतार ना सकण परख, बैठे सीस झुकाईआ। कर करदा रहिन्दा रिहा दरस, नूरी नूर नूर रुशनाईआ। चरन धूढ़ ल्या बरख, अमृत मेघ नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव देवे खोल्ह, खोल्हणहार एकँकार। सचखण्ड दुआरा आपे बोल, नाद शब्द धुन्कार। थिर घर कुण्डा आपे खोल्ह, आप उठाए सुत दुलारा। आपणे मन्दिर आपे मौल, करे खेल अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बणे आप वणजारा। आप वणजारा आपे सुत, अख़ीर अख़ीर कल आप कराईआ। ऐथे अन्तिम हो प्रगट, आपणा नूर धराईआ।

आपणे नाद मारे सट्ट, आपणा राक उडाईआ। न्यारा सुत रहे , आपे लए चलाईआ। आपे सोए आपणी खाट, सच सिँघासण आप बणाईआ। आपे निरगुण जोत लाट, नूर नुराना आप अख्वाईआ। आपे होए पुरख समरथ, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपे जाणे आपणी गाथ, कथ्थ कथ्थ आपणा आप सुणाईआ। आपे चलाए आपणा राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपे वसे आपणे साथ, साचा संग निभाईआ। आपे पढ़े आपणा पाठ, आपे पढ़ पढ़ रिहा सुणाईआ। आपे जाणे आपणा घाट, तट किनारा आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणी वाट, आपे पाँधी बण बण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे दए वड्याईआ। सच दुआरे तेरी बणत, हरि सतिगुर आप बणाइंदा। नौ नौ चार चौकड़ी जुग सारे कह कह गए बेअन्त, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कोटन कोटि गा गा गए सन्त, नेत्र नैण ध्यान लगाइंदा। गुर अवतार पढ़ पढ़ गए मंत, मन्त्र अन्तर इक्क समझाइंदा। कोटन कोटि लभ्भ लभ्भ गए कन्त, हरि कन्त ना किसे प्रनाइंदा। कोटन कोटि बीती रुत्त बसन्त, पत डाली ना कोए महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप समझाइंदा। आपणी बणत बणाई आदि, निरगुण रूप धराया। आपणे अन्तर इक्क स्वाद, आपणा रस वखाया। आपे खेले खेल तमाश, निरगुण रूप धराया। आपे वसे आपणे पास, नारी कन्त सेज हढाया। आपे दाई दाया बणे पुरख अबिनाश, साची सेवक सेव कमाया। आपे बाली बाला पूरी करे आस, सुत दुलारा एका जाया। आपे निरगुण नूर करे प्रकाश, नूर नुराना डगमगाया। आपे सचखण्ड दए धरवास, छप्पर छन्न ना कोए सुहाया। आपे चरन कँवल होए दास, दासी बण बण सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आदि दए समझाया। आपणा आदि देवे दस्स, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे गया वस, चार दीवार ना कोए रखाईआ। आपणी करे पूरी आस, आप आपणा बन्धन पाईआ। आपे बह बह पावे रास, मंडल मण्डप नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल हरि जू कर, हरि जू वेस वटाया। आपणा नूर आपे धर, आपे वेख वखाया। आपणा कन्त आपे वर, आपे सेज हंढाया। आपे जनणी आपे जन, जन जनेंदी होए माया। सुत दुलारा आपे बण, गोदी गोद सुहाया। आपे राग सुणाए कन्न, नादी नाद अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आदि दए समझाया। आदि आपणी बणत बणाए, हरि साचा बणत बणाइंदा। आपणी इच्छया लए प्रगटा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। आपणी सिख्या आप सिखा, गुर चेला रूप धराइंदा। आपणा रूप मिथ्या आप बणा, दिस किसे ना आइंदा। आपणा लिख्या आप पढ़ा, आपे लिख लिख लेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी रचन रचाइंदा। आदि पुरख खेल अपारा, आदि आदि कराईआ। आपणा नाउँ रख अपारा, सो पुरख निरँजण वेस वटाईआ। हरि पुरख निरँजण साची धारा, धार धार विच्चों कढ्ढाईआ। एकँकारा दए सहारा, आपणा बल वखाईआ। आदि निरँजण कर विचारा, नूर नुराना डगमगाईआ। श्री भगवान सच निशाना, सुत दुलारे आप उठाईआ। अबिनाशी करता हो मेहरबाना, आपणी मेहर कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, घर साचे सोभा पाईआ। करे खेल इक्क महाना, आपणी इच्छया पूर कराईआ। आपणा बन्ने आपे गाना, आपे सगन मनाईआ। आपे बणे रईयत राज राजाना, शाह सुल्तान आप हो जाईआ। आपे घड़त घड़े सुघड़ सुजाना, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। आपणा घाड़त आपे घड़, हरि जू खेल कराया। आपणे मन्दिर आपे वड़, आपणा धाम सुहाया। आपे नारी आपे वर, आपे कन्त मनाया। आपणा प्यार अग्गे धर, आपे रंग वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा दए समझाया। आदि पुरख खेल अवल्ला, हरि जू आप कराया। सचखण्ड वसे सच महल्ला, सच सिँघासण सोभा पाया। जोती नूर आपे रला, दीपक दीपक डगमगाया। आपणा फड़या आपे पल्ला, आपणा संग निभाया। आपणा कीता इक्को हल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आदि रिहा वखाया। आदि पुरख हो त्यार, आपणा भेव जणाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, घर साचे खुशी मनाईआ। सो पुरख निरँजण करे विचार, हरि पुरख निरँजण दए सलाहीआ। एकँकार बणाए सच्ची सरकार, आदि निरँजण नाल मिलाईआ। अबिनाशी करता बणे चोबदार, श्री भगवान निशान झुलाईआ। पारब्रह्म निउँ निउँ करे निमस्कार, आपणे अग्गे आया रिहा झुकाईआ। साचा करे इक्क विहार, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। आपे राउ रंक रईयत बण निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपे राउ रंक बण राजा, हरि साचा खेल कराइंदा। आपे हो ग़रीब निवाजा, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपणा साजन आपे साजा, साज साज वेख वखाइंदा। आपणी घाड़त बणाए साचा ताजा, सच सन्यार सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप कमाइंदा। साचा ताज कर त्यार, हरि साचा खुशी मनाइंदा। आपणी पैज आप संवार, आपे वेख वखाइंदा। आपणा बल आपे धार, महांबली आप हो जाइंदा। आपणा वल छल कर करतार, अछल खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। साचा राह आपे ला, हरि रहिमत आप कमाईआ। मुकामे हक़ इक्क खुदा, नूर नुराना डगमगाईआ। एका नाद इक्क सदा एका नाअरा रिहा ला, एका हुजरा सच बणा, मुकामे हक़ नाउँ धराईआ। एका महबूब

होए मेहरवान, महिबान वड्डी वड्याईआ। एका बीवी एका खावंद एका वसे थाँ, दरगाह साची मुकाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड साचा सोहया जगत, सो पुरख निरँजण आप सुहाया। एका बणाई आपणी बणत, आपे सेव कमाया। आपे आदि आपे अन्त, आपे हरि जू वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़ आपणा नाद ढोल मृदंग, सूरे सरबंग आप वजाया। वज्जा ढोल इक्क मृदंग नगारा, दर साचे होई शनवाईआ। दरगाह साची धाम सुहा, परवरदिगार आप सुहाईआ। एका हक़ लाए नाअरा, आपणा हक़ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। भेव खोल्ह श्री भगवान, आपणा आप जणाइंदा। सीस रख ताज महान, पंचम मुख सुहाइंदा। सति सतिवादी सच निशान, पारब्रह्म झुलाइंदा। तख्त निवासी हुक्मरान, शाह पातशाह खेल कराइंदा। आपे जाणे खाना दीवान, बण सेवक सेव कमाइंदा। आपे देवणहार परवान, सच परवाना आप फड़ाइंदा। आपे होया जाणी जाण, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपे वसे मन्दिर मकान आपे छप्पर छन्न सुहाइंदा। आपे जोती नूर महान, निरगुण नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे राजा आपे प्रजा, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपे राजा आपे प्रजा, सचखण्ड खुशी मनाईआ। आपणा साजण आपे साजा, अनडिठड़ी घड़त घड़ाईआ। आपे दर दरवेश बह बह मारे वाजां, आपणा हुक्म सुणाईआ। आपे अंदर बाहर फिरे भाजा, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। आपे रचया आपणा काजा, आपे बैठा सगन मनाईआ। आपे रखे आपणी लाजा, लाजावन्त आप हो जाईआ। आपे नारी कन्त बण बण निरगुण सरगुण पाई सांझा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल बेपरवाहीआ। नारी कन्त पा पा सांझा, नंदी नंद ना कोए मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बणया सांझा, आपणा रूप ना कोए जणाइंदा। इक्को नाद अगम्मी वाजा, एका एक सुणाइंदा। एका तार इक्क रबाबा, बिन रहिबाब आप वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आदि भेव अवल्लड़ा, हरि जू रिहा जणा। आपे उपज्या इक्क इकल्लड़ा, मात पिता ना कोई भैण भ्रा। ना किसे दा फड़दा पलड़ा, ना नारी कन्त ल्या प्रना। जोती जोत आपे रलड़ा, निरगुण निरगुण विच समा। सच सिँघासण इक्को मलड़ा, सचखण्ड बैठा डेरा ला। जोती नूर अगम्म अगम्मड़ा, अलख निरँजण बेपरवाह। ना कोई अम्मी ना कोई अमड़ा, ना कोई सज्जण सच्चा साक रिहा बणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचा। आपणा खेल रच निरँकार, आपणी दया कमाईआ।

निरगुण करे सच विहार, साख्यात रूप वटाईआ। आपणी भिच्छया भर भण्डार, भिच्छया दए वरताईआ। लेखा जाण पुरख नार, नर नरायण खुशी मनाईआ। एका उपज्या सुत दुलार, शब्दी नाउँ धराईआ। थिर घर साचा कर त्यार, चरनां हेठां दिता दबाईआ। पूत सपूता अंदर वाड़, एका हुक्म सुणाईआ। आदि जुगादि करी निमस्कार, चरन ध्यान लगाईआ। मेरा नाउँ इक्क निरँकार, एका घर लैणा गाईआ। आदि जुगादि रवां न्यार, निराकार रूप समाईआ। तेरा दस्सां इक्क विहार, आपणी सेवा दयां लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी दिता वर, साची वस्त झोली पाईआ। सुण छोटे सुत बाल, शब्दी हरि सुणाया। तेरी करां सदा प्रितपाल, सिर तेरे हथ्थ रखाया। तेरे वसां नाल नाल, विछड़ कदे ना जाया। तेरा आपे पुछां हाल, घर तेरे फेरी पाया। एका देवां सच्चा माल, धन्न आपणा माल लुटाया। तूं होवें ना कदे कंगाल, शाह पातशाह तेरा इक्क रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाया। सुत दुलारे उठ बल धार, हरि साचा सच जणाईआ। थिर घर वेख तेरी गुलज़ार, पुरख अबिनाशी रिहा लगाईआ। हुक्मी हुक्म कर वरतार, धुर फ़रमाणा रिहा सुणाईआ। करता पुरख लगाए साची कार, करनी करता इक्क समझाईआ। तेरे अंदर मेरा विहार, दिस किसे ना आईआ। तूं बण मंग के दर भिखार, देवां तेरी झोली भराईआ। तेरी खिड़े इक्क गुलज़ार, गुलशन देवां आप महकाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, आपणा पर्दा रिहा रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। छोटा बाला उठया नादान, हरि चरन सीस लगाया। पुरख अबिनाशी एका वार वखाए आपणा मकान, जिस घर बैठा डेरा लाया। तूं शहिनशाह पातशाह राज राजान, तख्त निवासी बेपरवाहया। तेरा झुल्ले इक्क निशान, दर साचे रिहा उठाया। तेरे सीस ताज महान, मैं नेत्र नैण नैण लगाया। तूं सदा सदा मेहरवान, बेअन्त तेरी वड्याआ। मैं मंगां फेर दान, पहलों दर्शन तेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा उठाया। आपणा पर्दा दिता लाह, हरि नूर नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरा रिहा वसा, निराकार निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। इक्क इकल्ला रिहा डगमगा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सुत दुलारे चढ़या चाअ, हरि साचे दर्शन पाईआ। तूं ही माता तूं ही पिता कहा, सुणावां तेरा बाल सखाईआ। सच मंगां तेरी पनाह, चरन कँवल शरनाईआ। सिर देणा हथ्थ टिका, इक्को ओट तकाईआ। मैं तेरा तूं मेरा एका ढोला ल्या गा, घर साचे वज्जे वधाईआ। पर्दा ओहला दए चुका, एका नूर कर रुशनाईआ। बरदा गुरू लए मना, दर तेरे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि शब्दी आप जणाईआ। शब्द सुत मेरा वेख

दुआरा, हरि जू आख सुणाइंदा। पहले अंदर मेरा निमां निमां झिलकारा, आपणा रंग वखाइंदा। सचखण्ड दा बैठ किनारा, उपर आपणा चरन टिकाइंदा। दूजा मेरा सच विहारा, जिस नेत्र नूर वखाइंदा। तीजा मेरा उच्च मनारा, कल्गी तोड़ा सीस टिकाइंदा। सचखण्ड दा इक्क किनारा, चार कुण्ट ना कोए बणाइंदा। वंडे वंड अगम्म अपारा, हद्द किनारा ना कोए जणाइंदा। एका एक निरगुण धारा, त्रै त्रै खेल कराइंदा। पहला धाम जोती नूर होए उज्यारा, दूजी लाट लाट मिलाइंदा। आपणी नोक उत्ते अपर अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। उलटी करे आपे कारा, चौथा घर थिर घर बणाइंदा। थिर घर रखे चरन अपारा, आपणी दया कमाइंदा। आपे बण बण निरँकारा, दाई दाया सेव कमाइंदा। छोटा बाला कर त्यारा, घर साचे आप बहाइंदा। इक्को इक्क करे प्यारा, परम पुरख प्रीत लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मनारा आप वखाइंदा। सुत दुलारा वेख मनारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। इक्क मन्दिर त्रै त्रै धारा, भेव कोए ना पाईआ। मैं जाणा तेरा इक्क चुबारा, दूजी छत्त ना कोए बणाईआ। तूं कहें मैं बेअन्त मेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त मेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दिता समझाईआ। सुण सुत मेरे छोटे लाल, हरि नरायण आप जणाइंदा। सचखण्ड मेरी धर्मसाल, उपर आपणा आसण डाहइंदा। तीजे बहे आप निरँकार, नूर नुराना डगमगाइंदा। चौथे चरन कँवल सहार, थिर घर बणाइंदा। इक्को हरि खेल अपार, भेव कोए ना पाइंदा। इक्को जोत नूरी धार, हरि वंडी वंड वंडाइंदा। एका मन्दिर इक्क दीवार, एका एक खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत लैणा पेख, हरि सज्जण रस जणाईआ। मेरा ना कोई रूप ना कोई रेख, तत्तव तत्त ना कोए रखाईआ। ना राजा ना बणां दरवेश, आपणी खेल आप वखाईआ। आदि जुगादि अवल्लड़ा भेस, बण भेखी भेख बणाईआ। इक्क दुआर इक्क आदेश, एका नाउँ सुणाईआ। सदा सदा सद रहां हमेश, ना मरां ना जाईआ। मेरे अग्गे चले ना किसे दी पेश, आपणा बल आप रखाईआ। पहलों रची तेरी खेड, सुत शब्द दयां वड वड्याईआ। आपणे वांग लै लपेट, कर प्यार गोद बहाईआ। तूं मेरे अंगण जाणा लेट, मैं तेरा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आ वेख मेरा उच्च महल्ला, हरि जू आख सुणाया। जिथे बैठा इक्क इकल्ला, आपणा आसण लाया। सच सिँघासण साहिब मल्ला, दिस किसे ना आया। तैनूं फड़ाया आपणा पल्ला, पल्लू गंढु पुआया। जोती शब्दी आपे रला, धार विच्चों प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप वखाया। वेख मन्दिर चढ़या चाअ, थिर घर खुशी मनाईआ। तूं दाता दानी बेपरवाह, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। धन्न भाग तूं मैनूं

ल्या प्रगटा, दिती माण वड्याईआ। आपणयां चरनां हेठां ल्या टिका, आपणी एका गंढु पुआईआ। आपणा कोट किला दिता वखा, सचखण्ड होए रुशनाईआ। मैं तिन्ने रंग वेखे आ, एका घर भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं तेरी ओट तकाईआ। मेरी रखणी इक्को आस, हरि जू आख सुणाया। सुत शब्द तेरा साचा दास, हरि सेवक इक्क बणाया। आपणा हुक्म दस्सां ख़ास, भुल्ल कदे ना जाया। थिर घर तेरे करां वास, तेरी बणत बणाया। आपणी पूरी करां आस, तेरी ख़ाहिश नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दुआरा आप वखाया। आपणा दुआरा हरि वखाल, शब्द सुत समझाइंदा। सुण सुण मेरे साचे लाल, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। इक्को इक्क धर्म मेरी साल, दर दरवाजा ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक्क जणाइंदा। सच निशाना कर ध्यान, बाला सीस झुकाईआ। जाचक बण के मंगे दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तूं शहिनशाह मेरा हुक्मरान, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। मैं सुणया तेरा फ़रमाण, ध्यान तेरे चरन लगाईआ। मैं मंग मंगी आण, देदे मेरे रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं बैठा सीस झुकाईआ। सीस झुका गया झुक, बाले माण रहे ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ जाए तुट्ठ, वड दाता बेपरवाहीआ। फड़ के बाहों गोदी लए चुक्क, आपणे गले लगाईआ। तेरी मेरी इक्को रत्त, इक्को रंग वखाईआ। मैं पिता तूं मेरा सुत, सचखण्ड मेरी वज्जे वधाईआ। थिर घर बहणा तूं टिक, हरि साचा रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। सुत दुलार मन्न के कहिणा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। तेरा साहिब भाणा सहिणा, दूजा होर ना कोई मोहे भाइंदा। तूं देणा मैं तैथों लहिणा, ख़ाली झोली इक्क वखाइंदा। तेरा प्यार मेरा गहिणा, दूजा ओढन ना कोए जणाइंदा। तेरा दरस मेरे नैणां, मेरा नैण नैण कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाइंदा। सुण सुत मैं करां प्यार, आपणा आप समझाईआ। तेरे नाल मेरा विहार, विवहारी लए कराईआ। तेरे अंदर निरगुण धार, जोती जोत मेरी रुशनाईआ। शब्दी शब्द खेल न्यार, हरि आपणा आप जणाईआ। तेरे अंदरों कढ्ढां बाहर, आपणा रूप लवां प्रगटाईआ। विष्नूं हो होवां उज्यार, विष्नूं आपणा रंग वखाल, चरन चरन नाल रगड़ाईआ। थिर घर वड़ के करां ख्याल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणा नाउँ रख दयाल, दीनन दया कमाईआ। विष्नूं कर आप प्रितपाल, एका बाज दए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। विष्नूं अंदर अमृत रस, तेरा इक्क भराईआ। हरि जू अंदर जाए वस, आपणा खेल कराईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, नूर नूर करी रुशनाईआ। आपे जाणे खेल तमाश, पारब्रह्म

वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बूटा आपे लाईआ। विष्नूं अंदर हरि जू मौल, आपणी खेल कराईआ। आपे जाणे आपणा कौल, कँवल आपणा आप प्रगटाईआ। आपे पर्दा आपे ओहल, आपे बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। विष्नूं नाभी कँवल धार, हरि हरि आप बणाइंदा। लेखा जाणे अगम्म अपार, भेव कोए ना पाइंदा। अंदरे अंदर खिड़ी गुलज़ार, पत डाली आप महकाइंदा। एका कँवला कर त्यार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वंड वंडाइंदा। एका ब्रह्म करे विचार, हरि साचा गुण समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा कर त्यार, तार सितार हिलाइंदा। बण नारी पुरख करे विहार, करता पुरख खेल कराइंदा। सुन्न अगम्मी धूंआँधार, आपणा संग वखाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। एका शंकर लए उठाल, आपणी शाख़ा आप बणाइंदा। तिन्नां वेख्या इक्क दुआर, हरि साचा सच समझाइंदा। सुत शब्द तूं करीं प्यार, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आपे जगा, तेरी गोद सुहाईआ। एका मार्ग आपे पा, आपणा गुण दयां जणाईआ। तिन्नां सुरती आप खुल्हा, नाद तूरती इक्क वजा, नाना रूप आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। सुण सुत शब्द दुलारे, हरि जू आख सुणाइंदा। आपणी करनी करता करे, किरन किरन नाल मिलाइंदा। आपे देवे आपणा वरे, आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आप जणा, जन जणेदी माईआ। तिन्ने चेले सेवा ला, एका इच्छया वेख वखाईआ। एका भिच्छया देवे पा, पुरख अबिनाशी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तिन्नां बणाए इक्क जमात, एका गुण समझाइंदा। त्रैगुण माया देवे दात, रजो तमो सतो आप उपजाइंदा। आपे बैठा रहे इक्क इकांत, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। शब्द सुत तेरी वंड, हरि जू आप सुणाइंदा। कोटन कोटि विच ब्रह्मण्ड, भेव अभेदा भेव खुल्हाइंदा। तेरा नूर सूरज चन्द, मंडल मण्डप आप बणाइंदा। लोआं पुरीआं बेड़ा बन्न्ह, एका हुक्म सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण धन्न धन्न, तेरा नाउँ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप समझाइंदा। साचा राह दस्से करतार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। विष्नूं लवे इक्क विहार, हरि भण्डारा दए वरताईआ। ब्रह्मे देवे इक्क सहार, ब्रह्मवेता वड वड्याईआ। शंकर बख्शे एका छार, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। त्रैगुण माया करे विचार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। सानूं दस्स की साडा विहार, किस कारन ल्या उपजाईआ। पुरख अबिनाशी दए अधार,

तिन्नां गुण जणाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव करो प्यार, होए इक्क कुड़माईआ। तुहाड्डे विच्चों कढ्ढां बाहर, आपणा तत्त समझाईआ। पंचम पंच कर त्यार, एका खेल खलाईआ। निरगुण निरगुण कर विहार, सरगुण बणत बणाईआ। शब्द विचोला बणे संसार, हरि साचा हुक्म सुणाईआ। लख चुरासी भाण्डा घड़े बण ठठयार, आपणी सेवक सेव कमाईआ। दिस ना आए हरि घुम्यार, कोहलू चक्की चक्क रिहा चलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पाणी भरनहार, त्रैगुण रही सेव कमाईआ। पंज तत्त लग्गा इक्क अखाड़, हरि जू नाच नचाईआ। करे खेल अगम्म अपार, पुरख अबिनाशी दए समझाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। मन मति बुध दए अधार, नौ दुआरे खोल्ह वखाईआ। घर विच घर कर त्यार, आपणा रूप छुपाईआ। विष्नूं मंगे बण भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शंकर धूढ़ी मंगे छार, मस्तक टिक्का लाईआ। बिन तेरी भिच्छया ना चले साडा विहार, ख़ाली बुत्त कम्म किसे ना आईआ। तूं निराकार बण साकार, आपणी वंड वंडाईआ। तेरी निरगुण सरगुण अंदर आवे धार, पारब्रह्म ब्रह्म रूप वखाईआ। तूं ईश्वर सज्जण मीत मुरार, जीव तेरा बंस अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण वसया धाम न्यार, तेरी महिमा अकथ कथी ना जाईआ। रंग रूप सर्ब संसार, लख चुरासी तेरा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्ह्हाईआ। सुणया हाल धुर फ़रमाणा, शब्दी सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी शाह सुल्ताना, तेरा भेव मोहे ना आया। लख चुरासी खेल खिलाणा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाया। निरगुण सरगुण होए प्रधाना, रूप अनूप वटाया। रवि ससि इक्क चमकाना, किरन किरन किरन वखाया। मंडल मण्डप बंक बणाणा, लोआं पुरीआं वंड वंडाया। जल थल महीअल आप रखाना, धरनी धवल खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण खेल लोकमात आपणा रंग वखाया। शब्द सुत मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, बेअन्त तेरी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दिता एका अनन्द, अनन्द अनन्द विच मिलाईआ। तेरा गावां सच्चा छन्द, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। तूं वंडी इक्को वंड, वंडणहार बेपरवाहीआ। करे खेल विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड ख़ुशी मनाईआ। तेरी सेवा करन सूरज चन्द, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बालक मंग मंगाईआ। सुण बालक मेरे बाल, हरि बाली बुध जणाइंदा। मैं करां खेल कमाल, आपणा राह चलाइंदा। दो जहानां वज्जे ताल, आपणा नाद सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवां बिठाल, हुक्मरान आप अख्वाइंदा। त्रैगुण माया वसे नाल, निज नाता जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी अवल्लड़ी चाल, चारे खाणी वंड वंडाइंदा। चारे बाणी कर प्यार, एका राग अल्लाइंदा। चारे वेद कर त्यार,

एका नाद सुणाइंदा। चारे जुग कर विहार, जुग जुग वेस वटाइंदा। चारे कुण्टां कर पसार, दहि दिशा खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, लोकमात डगमगाइंदा। तेरा नाद अगम्मी धार, घर घर आप वजाइंदा। लख चुरासी विच्चों कर सरदार, मानस मनुक्ख नाउँ धराइंदा। प्रगट हो के जावां विच संसार, जुग जुग खेल कराइंदा। आपणा नाउँ रख गुर अवतार, छोटा हिस्सा वंड वंडाइंदा। भगतां करां इक्क प्यार, साची भगती नाम दृढ़ाइंदा। सन्तां खोल्हां बन्द कवाड़, एका नैण वखाइंदा। गुरमुखां चरन कँवल लवां बिठाल, सच दुआर इक्क समझाइंदा। गुरसिखां चला चला नाल नाल, जुग जुग वेस वटाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग चले अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतारां एका मन्त्र नाम सखाल, जीवां जंतां मात पढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुण सुण हाल, गीत लोकमात सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वज्जे ताल, तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर रूप वटाइंदा। पंज तत्त चोला दए अधार, त्रैगुण अतीता खेल खिलाइंदा। साचा सोहला अपर अपार, अगम्मी ढोला आपे गाइंदा।

पीर पैग़म्बर कर त्यार, दस्तगीर हथ्थ मिलाइंदा। कलमा कलाम बोल नाअर, हक़ हक़ीक़त इक्क वखाइंदा। जुग चौकड़ी सुणी कोटी कोट वार, गेड़ा गेड़े विच भुवाइंदा। इक्क गेड़ा खेल अपार, हरि जू साचा आप जणाइंदा। सेवा करन तेई अवतार, भगत अठारां नाल मिलाइंदा। दस गुर बोल जैकारा, पुरख अकाल इक्क सुणाइंदा। अन्तिम सारे जाण हार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जुग जुग कर कर जाण पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। कोई कहे मुकामे हक़ वसे परवरदिगार, राउ रंका। कोई कहे राम कोई कहे कान्हा कृष्न करे शृंगार, कँवल नैण नैण मटकाइंदा। कोई कहे ईसा मूसा सिरजणहार, घर घर रिजक पुचाइंदा। कोई कहे मुहम्मद यार, यारी यारां नाल निभाइंदा। कोई कहे नानक निरँकार, निराकार खेल खिलाइंदा। कोई कहे गोबिन्द सरदार, लोकमात बल धराइंदा। पुरख अकाल कहे मेरी शब्दी धार, जुग जुग वेस वटाइंदा। रूप रंग तों वसया बाहर, मेरा भेव कोए ना पाइंदा। मेरी अलख जगत जैकार, जोत निरँजण सेवा लाइंदा। आदि निरँजण दे दीदार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। आपणा नाउँ कर त्यार, साचा ढोला आप सुणाइंदा। ब्रह्मे दिती निक्की जेही विचार, चारे वेदां मुख सालाहइंदा। वेद व्यास ओहले हो सुणी पुकार, पुराण अठारां बह बह गाइंदा। अर्जन दिता भगत सिखाल, अठारां गीता ज्ञान दृढ़ाइंदा। ईसा मूसा दिती इक्क कलाम, आपणा कलमा ना किसे पढ़ाइंदा। फड़ फड़ आप पाए छोटे

बाल धाम, आपणा आसण उपर डाहइंदा। नानक निरगुण दे पैग़ाम, नाम सति ढोला गाइंदा। गोबिन्द निउँ निउँ करे प्रणाम, पुरख अकाल इक्क मनाइंदा। आदि जुगादि जिस अग्गे सजदा गुर पीर अवतार करन सलाम, सही सलामत आदि जुगादि समाइंदा। करे खेल श्री भगवान, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। इक्को अक्खर दए ज्ञान, नानक निरगुण आप पढ़ाइंदा। बेपहिचाण कराउणी पहचान, पंचम आपणा राग सुणाइंदा। काया मन्दिर अंदर कर बन्द मकान, चारों कुण्ट घेरा पाइंदा। नाल रखाए पंज शैतान, दिवस रैण जंग कराइंदा। उपर चढ़ के वेखो निगहबान, दिस किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, गुर अवतार सेवा लाइंदा। सुत शब्द तूं बलवान, तेरा डंका इक्क वजाइंदा। तेरी ओट सर्ब ध्यान, सिर तेरा हथ्थ वखाइंदा। तूं सभना दा सच्चा काहन, लख चुरासी गोपी तेरी इक्क बणाइंदा। जिउँ भावे तिउँ करना आण, मेरे हथ्थ आपणा हथ्थ फड़ाइंदा। तूं जोधा सूरबीर वड बलवान, तेरा बल आप प्रगटाइंदा। तेरा खंज़र इक्क म्यान, तिक्खा खण्डा नाम चमकाइंदा। तूं मेरा मैं तेरी करी पहचान, मैं पहचान विच किसे ना आइंदा। मैनूं तेरा तेरा मैनूं माण, आप आपणा घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे इक्क समझाइंदा। सुत दुलार अग्गों बोले, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। लोकमात दुआरा तूं ही खोलें, तेरे हथ्थ वड्याईआ। बण साचा तोल तोले, लख चुरासी कंडे नाल तुलाईआ। आपणा नाउँ गाएं ढोले, आपणा राग सुणाईआ। काया धरती आपे मौलें, मौला रूप वखाईआ। अमृत बरस आपे कँवले, कँवल नाभ वखाईआ। आपे वसे परदे ओहले, निरगुण बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त आपणी वखाई साची शक्ति, सब दी शक्ती मात टिकाईआ। दस्स पता हउँ मंगां पूत, सुत शब्दी आख सुणाया। मैं ताणा पेटा इक्को सूत, तूं तन्दी तन्द बंधाया। आदि जुगादी मैं की जाणा तेरी रीत, निष्अक्खर खेल खलाया। मैं सुणया तूं बणाउणे मन्दिर मसीत, शब्द दुलारे सुत नाल रलाया। गुरदुआरे गाउणे तेरे गीत, रसना जिह्वा नाल हिलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर जाणा बीत, तेरा भेव किसे ना पाया। कलयुग अन्त होए सर्ब पलीत, पाकी पाक ना कोए अख्वाया। मैं उपर वेख्या तूं वसें धाम अनडीठ, चार दीवारी अंदर बन्द ना किसे कराया। कलयुग अन्तिम शरीअत होए डीठ, दीन मज़्ब पैण कुरलाया। तूं सौं जाईं कर के हठ, आपणी करवट ना बदला ना किसे दा मीत, गोबिन्द तूं वसे हस्त कीट, बिन नानक नज़र किसे ना आया। कबीर जुलाहा उपर चढ़ के रिहा कूक, हरि मन्दिर नज़री आया। तूं त्रैगुण अग्नी दिती फूक, जिस सिर हथ्थ टिकाया। तेरे उत्तों मैं घोल वारां तेरा पूत, तेरे चरनां सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बालक मंग

मंगाया। थिर घर बणया तेरा पुत्त, तूं दो जहान सेव लगाईआ। लोकमात कवण वेला सुहाए रुत्त, मैं एका मंग मंगाईआ। तूं दयाल ठाकर अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे बैठा लुक, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गल्ल पल्लू रिहा पाईआ। गल्ल पल्लू ल्या पा, प्रभ चरन सीस झुकाया। निरगुण आपणी दया कमा, दयावान तूं अख्वाया। मेरा बणना अन्त मलाह, वेला तेरे हथ्थ रखाया। तूं दे दे सच सलाह, आपणा वेला वक्त जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, आपणा भेव रिहा खुलाया। आपणा भेव देवे दस्स, आदि पुरख आदि दया कमाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडी वंड वंडाईआ। अन्तिम कलयुग निरगुण नूर कर प्रगट, करां खेल अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा सुणाईआ। शब्द सुत करे नांह, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जे कल्ला आवां मैं मन्नां ना, तेरा विछोड़ा मोहि ना भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका मंग मंगाइंदा। एका वर दे करतार, आदि मंग मंगाईआ। अन्तिम मेला तेरा संसार, घर साचे वज्जे वधाईआ। पिओ सुत नाल करे प्यार, वेखे सर्ब लोकाईआ। नाता तोड़ लख चुरासी यार, यारी यारां नाल बंधाईआ। आपणा दस्स दे सच विहार, कवण बिध खेल खलाईआ। खेल करे पुरख नार, नर निरँकार बेपरवाहीआ। तूं शाह पातशाह सच्ची सरकार, तेरा हुक्म सद रजाईआ। जुग चौकड़ी भेव न्यार, कोटन कोटि रूप धराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पनहार, पीसण पीस सेव कमाईआ। गुर अवतार करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भगत मंगण इक्क दीदार, नेत्र नैण उठाईआ। सन्त अंदर वड़ वड़ कढ्ढण हाढ़ा, बौहड़ी बौहड़ी देण दुहाईआ। गुरमुख रोवण जारो जारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरसिख मंगण तेरा सहारा, बिन तेरे हथ्थ कछू ना आईआ। पुरख अबिनाशी अगों कहे एका सुण मेरे बाल सखाई मैं करां खेल अपारा, लोकमात राह चलाईआ। शब्द सुनेहड़ा गुर अवतारां, जुग जुग आप सुणाईआ। कलयुग कराए खेल महान, रूप अनूप रूप वटाईआ। नानक निरगुण इक्क निशान, गोबिन्द बूटा देवां लाईआ। हेम कुण्ट कर परवान, पूरब लेखा झोली पाईआ। पूत सपूता वड बलवान, लोकमात देवां प्रगटाईआ। साचा खण्डा तेज कृपान, एका हथ्थ फड़ाईआ। सोहँ चिला तीर कमान, भथ्था एका कंड बंधाईआ। कल्गी तोड़ा नौजवान, उपर सीस लए टिकाईआ। एका वेखे पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द बण ना चढ़े चाअ, शब्द हरि जू आख सुणाया। पंज तत्त अंदर फसणा ना, तेरा पुत्त मल मूत्र विच

२९५
११

रहिण ना पाया। माता लए ना गोद उठा, रक्त बूंद ना कोई जणाया। गुजरी बणे ना मेरी मां, सिर हथ्थ ना कोई टिकाया। तूं पिता बणया मेरा सचखण्ड थाँ, क्यों पल्लू रिहा छुडाया।

★ २८ पोह २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

हरि हरि खेल आदि जुगादि, जुग जुग कार कमाईआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी खेल तमाश, निरगुण निरवैर आप कराईआ। आपणा नाउँ शब्द धुन नाद, इक्क इकल्ला आप सुणाईआ। गुर अवतारां देवे दाद, नाम निधाना झोली पाईआ। दो जहानां करे राज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड साजण साज, लोआं पुरीआं बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल हरि करतारा, पुरख अगम्मड़ा आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। लख चुरासी भर भण्डारा, एका घर वखाइंदा। जुग चौकड़ी बन्नू बन्नू धारा, गेड़ा गेड़ भुवाइंदा। लेखा जाणे इक्क करतारा, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर भगत दुआर, हरि भगवन आप सुहाईआ। जोत जगाए एका वार, दीपक दीआ डगमगाईआ। साचा पीआ होया ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। नीहां रखी विच संसार, ना सके कोई उखड़ाईआ। वज्जदी रहे नाम सतार, बहत्तर बहत्तर हरि जस गाईआ। करता करीम करे कार, कुदरत आपणा खेल खलाईआ। साढे तिन्न तिन्न इक्क मुनार, त्रैगुण अतीता आप बणाईआ। मन्दिर मसीता कर खुआर, ठांडा सीता खुशी मनाईआ। हस्त कीट लए उधार, बख्शे सच शरनाईआ। एको मीता करे प्यार, मित्र प्यारा सेज हंढाईआ। पतित पुनीता वसे सच घर बार, पाकी पाक खेल खलाईआ। मस्जिद मड्ड छड्ड दुआर, घर आपणा आप सुहाईआ। इक्क अनडीठा हो त्यार, जगत जगदीशा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। गृह मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, एकँकारा रंग चढ़ाइंदा। आदि निरँजण महिमा अगणत, दीपक दीआ डगमगाइंदा। श्री भगवान साचा कन्त, पुरख अबिनाशी गोद सुहाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बणाए बणत, साचा घाड़न आप घड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप वड्याइंदा। दर घर साचा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप वड्याईआ। आपणा काढण आपे कढु, आपे वेख वखाईआ। निरगुण निरवैर कर प्रगट, साचा धाम सुहाईआ। चार

वरन दा इक्को हट्ट, पुरख अकाल खुल्हाईआ। चार जुग दा साचा तट, तीर्थ नाम धराईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्दिर आप बणाईआ। एका मन्दिर गया बण, हरि हरि आप बणाया। एका चढ़या सूरज चन्न, चन्द चांदनी मुख शरमाया। एका बेड़ा देवे बन्न्ह, बन्नणहार इक्क हो जाया। एका देवे नाम धन, सच खजीना इक्क वखाया। एका राग सुणाए कन्न, नाद अनादी नाद वजाया। एका घड़े एका देवे भन्न, घड़न भन्नणहार इक्क अख्वाया। एका देवणहारा डंन, शाह पातशाह नाउँ धराया। एका करे नेत्र अन्न्ह, एका नैण नैण खुल्हाईआ। एका लेखा जाणे काया पंज तत्त तन, एका त्रैगुण बन्धन पाया। एका पुरख अकाल गया मन्न, जन भगतां होए सहाया। लख चुरासी करे खंन खंन, एका खण्डा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। सचखण्ड दुआरे दिती दाद, सति सतिवाद दया कमाईआ। लेखा लिख्या बिन कलम दवात, काग़ज़ नाल ना लग्गी शाहीआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। आपे खोल्ह आपणा ताक, दर दरवाजा इक्क वखाईआ। अंदर वसे ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। इक्को इक्क सुणाए अवाज़, दूजा नाउँ ना कोए सुणाईआ। भगत भगवन्त साजण साज, साचा राह चलाईआ। खेल कराए देस माझ, माझा आपणा नाम पाईआ। नारी कन्त रच रच काज, कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। सौहरे पेईए इक्को दाज, नाम धन्न आप वरताईआ। जगत मुलम्मा लाहे पाज, कंचन रंग इक्क चढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आपणी गोद बहाईआ। दिन दिहाढ़े करे लाड, गुरमुख बाले गोद सुहाईआ। अबिनाशी करता मोहण माधव माध, मधुर धुन इक्क सुणाईआ। राग रागनी होए विस्माद, बैठे नैण छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दुआरे दए वड्याईआ। सच दुआरा सच दरगाह, हरि साचा सच जणाइंदा। पुरख अबिनाशी बण मलाह, लोकमात वेख वखाइंदा। जन भगतां देवे इक्क सलाह, सलाहगीर नाल रलाइंदा। साचे मन्दिर दए बहा, बह बह आपणी खुशी कराइंदा। एका दीपक दए जगा, जोती जोत डगमगाइंदा। एका राग दए अला, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। इक्क विचोला दए बणा, गोबिन्द संग निभाइंदा। एका होला दए खल्हा, लख चुरासी खेल कराइंदा। एका बोला लए प्रना, आदि आपणा आप जणाइंदा। एका ओहला दए चुका, दूई द्वैती पर्दा उठाइंदा। एका रौला देवे पा, चारों कुण्ट डेरा ढाहइंदा। एका हौला भार दए करा, जन भगतां भार आप उठाइंदा। एका धवला दए वड्या, धरनी धरत माण दिवाइंदा। साचा मन्दिर रिहा बणा, आप आपणी सेव कमाइंदा। गोबिन्द वेखे चढ़या चाअ, घर घर विच खुशी मनाइंदा। करया खेल बेपरवाह, भेव कोए ना पाइंदा। मुर्शद मुरीद दर

साचे बह करया नकाह, मुख नकाब पर्दा लाहइंदा। आबहयात देवे प्या, बेआब ना कोए तड़फाइंदा। गुफ़त गुफ़त आपणी गुफ़तार दए सुणा, वेला वक्त ना कोए जणाइंदा। मुफ़त मुफ़त आपणा सौदा रिहा लुटा, करता कीमत कोए ना लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप वड्याइंदा। सच दुआरे देवे माण, अभिमाण रहिण ना पाईआ। भगवन भगतां मिल्या आण, भावी भय ना कोए वखाईआ। दरगाह साची कर परवान, घर साचे खुशी मनाईआ। चौकड़ी पन्ध मुका आण, गेड़ा गेड़ रहिण ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए हैरान, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाईआ। गुर अवतार करन ध्यान, भगत सन्त नैण उठाईआ। पीर पैग़म्बर करन पहचान, दस्तगीर भेव ना राईआ। करया खेल नौजवान, बल आपणा आप धराईआ। जिस ने बणाया ज़िमी असमान, ज़रे ज़रे रिहा समाईआ। जिस चौदां तबक दिता दान, चौदां लोक हट्ट खुल्हाईआ। जिस ने दिता सिदक ईमान, जो कुरान रिहा पढ़ाईआ। जिस ने दिता इक्क निशान, मुकामे हक़ राह वखाईआ। जिस दा सुणदे रहे पैग़ाम, सो पैग़म्बर की खेल वरताईआ। जिस दा पकड़दे रहे दाम, सो दामनगीर वेस वटाईआ। जिस नूं झुक झुक सजदा करदे रहे सलाम, सो अलैकम रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर खेल कराईआ। वाहवा मन्दिर वाहवा हरि, हरि भगतां दए वड्याईआ। करते करीम खोल्हया दर, कुदरत रंग वखाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भाणा आपणा आप वरताईआ। तीर्थ तट सरोवर कर, गृह मन्दिर आप प्रगटाईआ। नाद धुंन बोल जैकार, जै जैकार करे शनवाईआ। नव नौ चार अन्तिम वार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दर दरवेश गुर अवतार, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आपणी कार कमाईआ। जन भगतां देवे नित दीदार, नैण नैण नाल मिलाईआ। रातीं सुत्तयां लए उठाल, आउँदा जांदा थक्क ना जाईआ। वेखो मुर्शद केहड़ी चली चाल, मुरीद आपणे नाल रलाईआ। जिस दे पिच्छे छुरीआं नाल होए हलाल, पुट्ठी खल्ल लुहाईआ। सो कलयुग अन्तिम ग़रीब निमाणयां निरगुण बणया दलाल, बण विचोला सेव कमाईआ। आपणा हक़ जाणे हलाल, हक़ीक़त दए गवाहीआ। जल्वा नूर दए जलाल, ज़ालम देवे ना कोए सज़ाईआ। आलम खेल करे कमाल, कायनात फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। सच दुआरा सुहाए निरँकार, निराकार वड्डी वड्याआ। भगतन मेला अन्तिम वार, घर साचे आप मिलाया। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी आप समझाया। सन्त सुहेले कर उज्यार, गुर चेले रंग चढ़ाया। चार जुग दा सति विहार, सति पुरख निरँजण आप कराया। इक्क बणाई यादगार, पिछली याद भुल्ल ना जाया। जिस नूं उल्मा किहा मेरा मददगार, मुहम्मद पीर कह कह शुकर मनाया। जिस नूं नानक किहा एकँकार,

निराकार वेस वटाया। जिस नूं ईसा कहे मेरा बाप नाल प्यार, सो पिता पूत गोद लए उठाया। जिस दे पिच्छे मूसा होया हलाल, नूरी जल्वा इक्क तकाया। सो साहिब प्रगट होया आण, साचा मन्दिर लए बणाया। अंदर वड़ श्री भगवान, सच सिँघासण इक्क सुहाया। अग्गे वेखे इक्क निशान, छत्ती छत्ती बन्धन पाया। लख चुरासी होई नादान, हरि का भेव किसे ना आया। कोई वेद कोई शास्त्र कोई सिमरत पढ़ पढ़ दए ज्ञान, पुराण अठारां कोए सुणाया। कोई गीता कहे सच्चा विधान, अठ्ठ दस रंग चढ़ाया। कोई कहे अञ्जील कुरान ईमान, खुदावंद मसला इक्क सुणाया। कोई कहे सतिनाम, कोई डंका फ़तेह वजाया। पुरख अबिनाशी कहे मैं आदि जुगादि इक्क भगवान, जुग जुग आपणा हुक्म वरताया। गुर अवतार सेव कमाण, पीर पैग़म्बर हुक्म फिराया। अन्तिम सब दा तोड़ां माण, थिर कोए रहिण ना पाया। मेरी चरनीं डिग्गण आण, एका ओट रखाया। दर दर बह बह मंगण दान, ख़ाली झोली अग्गे डाहया। किरपा कर वड मेहरवान, नेत्र नैणां नीर वहाया। कोई कहे मेरा साचा काहन, गोपी बण बण सेव कमाया। कोई कहे मेरा कन्त नौजवान, ना मरे ना जाया। कोई कहे मेरा साहिब वड बलवान, बल आपणा आप धराया। वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकान, सच सिँघासण सोभा पाया। पुरख अबिनाशी कहे मेरा भगत मेरा निशान, बिन भगतां मैं कम्म किसे ना आया। कलयुग अन्तिम खेल करां महान, लोकमात वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाया। कलयुग अन्तिम धार अवल्ली, अव्वल अल्ला आप चलाईआ। आदि निरँजण जोत इकल्ली, निरगुण निराकार वेस वटाईआ। वेखो वस्त विकाए सवल्ली, कीमत आपणी कोए ना पाईआ। हरिभगत फुलवाड़ी लोकमात फली, पत डाली रिहा महकाईआ। लख चुरासी विच्चों साची कली, बण मालण तोड़ तुड़ाईआ। होका देवे गलीओ गली, घर घर दर दर फेरा पाईआ। गुरमुख सखी विरली रली, जिस आपणी कथा कहाणी सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साची सखी वेख काहन, निरगुण कूक कूक सुणाइंदा। साहिब होया मेहरवान, मिहबान वेस वटाइंदा। भज्जा फिरे गुण निधान, आउँदा जांदा दिस ना आइंदा। एका वसे सच मकान, भगत दुआरा इक्क वड्याइंदा। आओ वेखो करो ध्यान, दर्दी वंड वंडाइंदा। जोबन जाए जगत रकान, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। लख चुरासी भुल्ली जीव अंञाण, सुरती सुरत ना कोई खुल्हाइंदा। कर कर थक्की जगत अशनान, दुरमति मैल ना कोई धुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। उठ नारी वेख कन्त, नर नरायण फेरा पाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, दूजी वार उतर कदे ना जाईआ। चार जुग जिन्हां नूं लभ्भदे रहे साध सन्त, उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ फेरा पाईआ। मुलां

मुसायक पीर दस्तगीर जिस दे उत्ते करदे गए मंत, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। वर गया ना कोई कर के हिम्मत, एका हौसला सारे गए ढाहीआ। कलयुग अन्तिम प्रगट्या इक्को कन्त, कन्त कन्तूहल वेस वटाईआ। आपणी इच्छया बणाई बणत, जन भगतां सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आओ तक्को वेखो नैण, कँवल नैण फेरी पाइंदा। जिस दा ना कोई सज्जण साक सैण, मात पित भाई भैण ना कोई बणाइंदा। जिस दा नाउँ गुर अवतार कहिण, सो आपणा ढोला गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आओ वेखो हरि का मुख, पंचम मुखी ताज सुहाईआ। जिस देखयां सब मिटण दुःख, एका घर वड्याईआ। मात गर्भ ना उलटा रुख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। जिस दीआं सुखना रहे सुख, कवण कूट ध्यान लगाईआ। जिस दे कोल कोई ना सके पुज, एका पन्ध मुकाईआ। जिस दा भेव कोई ना सके लभ्भ, नानक बेअन्त बेअन्त बेअन्त गया समझाईआ। जिस दे पिच्छे गोबिन्द गया झूज, बंस सरबंस मिटाईआ। जिस दे पिच्छे मिटाउँदे रहे दूज, दोए दोए रूप धराईआ। जिस दे पिच्छे पत्थर पाहिन रहे पूज, कागद शाही सीस झुकाईआ। सो साहिब उठाए आपणे पूत, गुरमुख साचे मात जगाईआ। जिस ने सेवा लाया शंकर अवधूत, एका गुण समझाईआ। जिस ने ब्रह्मे ब्रह्म दिता ताणा पेटा सूत, सो सूत्रधारी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे आसण लाईआ। सच दुआरे आसण गया लग्ग, हरि लग्गी तोड़ निभाइंदा। इक्को दीपक गया जग, जागरत जोत डगमगाइंदा। इक्को ढोला वज्जा नद, अनादी आप सुणाइंदा। इक्को पर्दा लए कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। इक्को मक्का कराए हज्ज, महबूब इक्को नज़री आइंदा। इक्को राम लए सद्द, एका कृष्न अन्त जणाइंदा। इक्को नानक चढ़े जहाज़, इक्को गोबिन्द चप्पू लाइंदा। इक्को पुरख अबिनाशी मारे अवाज़, आप आपणी दया कमाइंदा। इक्को शहिनशाह इक्को राज, हुक्म हाकम इक्क सुणाइंदा। इक्को सीस इक्को ताज, इक्क सिर टिकाइंदा। इक्को साहिब गया जाग, हरिजन साचे आप जगाइंदा। इक्को सेवक आया भाज, बण चाकर सेव कमाइंदा। इक्को रखणहार लाज, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। इक्को देवणहारा दाद, नाम धन्न आप वरताइंदा। इक्को लख चुरासी विच्चों लए काढ, आवण जावण फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दुआर आप बणाइंदा। इक्को देवे साची दात, दाता दानी दया कमाइंदा। इक्को बन्ने साचा नात, चरन कँवल जोड़ जुड़ाइंदा। इक्को सुणाए साची गाथ, साचा मन्त्र ढोला गाइंदा। इक्को वखाए आपणी ज़ात, दूसर वंड ना कोए वंडाइंदा। इक्को मेटे अन्धेरी रात, निरगुण साचा चन्द चढ़ाइंदा। इक्को बैठा रहे इकांत, अकल कला अख्वाइंदा।

इक्को खेल करे बौह बिध भांत, इक्को जुग जुग वेस वटाइंदा। इक्को साहिब कमलापात, इक्को नारी पुरख अख्वाइंदा। इक्को वेखे सच जमात, जुम्मला पट्टी आप पढ़ाइंदा। इक्को खोल्हे सच्चा हाट, बण हटवाणा हट्ट चलाइंदा। इक्को वेखे तीर्थ ताट, तट किनारा सोभा पाइंदा। इक्को जोत नूर ललाट, नूर नुराना डगमगाइंदा। एका खोल्हे वड्डा खात, डूँग्घा खाता आप रखाइंदा। एका वेखे मार झात, झाकी आपणी ना किसे वखाइंदा। एका दिसे सच्चा साथ, सगला संग निभाइंदा। एका होए पुरख समराथ, समरथ आपणी धार रखाइंदा। एका करे पूरी आस, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। एका वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। एका वेखे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फेरा पाइंदा। एका रचाए साची रास, गोपी काहन नचाइंदा। एका राम वसे प्रभास, जंगल जूह उजाड़ वेख वखाइंदा। एका बणया रहे दासी दास, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। एका आदि जुगादि ना होए नास, अबिनाशी आपणा नाउँ धराइंदा। एका लख चुरासी करे पाश पाश, जो घड़या भन्न वखाइंदा। एका करे भोग बलास, भस्मड़ आपणा मूल चुकाइंदा। एका बणया शाह शाबाश, आपणी सख़सीअत आप जणाइंदा। एका कारज करे रास, एका आपणी कार कराइंदा। एका देवे सच धरवास, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। एका जन भगतां पूरी करे आस, कलयुग अन्तिम मेल मिलाइंदा। एका गुरमुखां अंदर करे वास, साचा धाम आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा काया गढ़, लोकमात निशान वखाइंदा। गुरमुख तेरी काया धार, हरि साचे आप बणाईआ। बाहरों दिसण नौ दुआर, अंदर वड्या साचा माहीआ। नेत्र दिसे साढे तिन्न हत्थ मनार, अंदर छत्ती राग दा माण गंवाईआ। अठ्ठ खिड़की कर प्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन तेरी वेखे काया अटारी, अटल्ल बेपरवाहया। जगे जोत इक्क निरँकारी, निरगुण नूर नूर रुशनाया। कलयुग करे सच विहारी, विवहारी आपणी खेल खलाया। आदि आदि लगाई यारी, अन्तिम मेला सहिज सुभाया। गुरमुख नार ना रहे कुँवारी, हरि जू कन्त लए प्रनाया। करे खेल अगम्म अपारी, अलख अगोचर वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर बह बह आपणा राग अलाया। साचे मन्दिर बैठा रागी, हरि जू राग सुणाईआ। आदि मध दी पिछली वादी, जुगादी भुल्ल ना जाईआ। हरिजन लडाए साचा लाडी, आपणी गोद बहाईआ। करया खेल बण बण बाढी, भेव कोए ना पाईआ। फांदक बणया हरि जू फांदी, गुरमुख साचे बन्न्ह लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। गृह मन्दिर हरि सुहाया, लोकमात उज्यार। बह ढोला इक्को गाया, पुरख अबिनाशी खेल अपार। साचा तोला बण के आया,

३०१
११

तोलणहार सर्ब संसार। गुरमुख आपणे कोल वसाया, आपणा खोल्ह कवाड़। दो जहान विछोड़ा कटाया, कर किरपा आप निरँकार। साचे घोड़े लए चढ़ाया, सेवा करे शाह अस्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त मेला इक्क दुआर। भगत भगवन्त मिल्या मेल, मिल मिल खुशी मनाईआ। साहिब मिल्या सज्जण सुहेल, साचा घर वसाईआ। निरगुण सरगुण चढ़ाए तेल, बह बह खुशी मनाईआ। आओ रल मिल खेल लईए खेल, वेखे सर्ब लोकाईआ। सृष्ट सबाई पंज विकारे फसी तुहानूं मिल्या वेहल, मिल मिल खुशी मनाईआ। आंढीआं गवांढीआं जाणा धर्म राय दी जेल, बन्दी बन्द ना कोए तुड़ाईआ। पिओ पुत्तरां नक्क पैणी नकेल, नव नव रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां आप उठाईआ। आओ उठो भज्ज,ो भज्जण वेला आया। सच दुआरे बह के सजो, सज्जण सच्चा आया। कर दरस गुरमुख रज्जो, आपणी तृखा बुझाया। पारब्रह्म ब्रह्म शरनी लग्गो, मिले शरनगत शरनाया। पिछली वादी हुण छड्डो, जोग अभ्यास ना कोए कराया। घर आया बिन डोरीउँ फदो, चारों कुण्ट घेरा पाया। जे भज्जे तां लत्तां वड्ढो, बण संगी छड्ड क्यों जाया। जे लुके ते डूँग्घी कंदरों कढ्ढो, क्यों आपणे विच छुपाया। जिन्ना चिर ना मन्ने ओन्हां चिर ना छड्डो, जिन्ना चिर ना कहे तूं मेरा मैं तेरा इक्को घर बणाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वसया पार हद्दों, हुण तुहाड्डी हद्द अंदर आया। जिस दा रूप रंग रेख ना कोई कद्दो, कुदरत कादर खेल कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा उठाया। उठो पाओ घेरा, हरि हरि आख सुणाइंदा। जुग चौकड़ी जो बणया ना आप दलेरा, आपणा बल धराइंदा। गुर अवतारां जो करदा रिहा नबेड़ा, पीर पैग़म्बरां सेवा लाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वसाया जिस खेड़ा, लख चुरासी खेल खलाइंदा। दूर दुराडा जो दिसे कलयुग अन्तिम आया नेड़ा, बण दरवेश फेरी पाइंदा। तुहाड्डे गृह पाया फेरा, विष्न ब्रह्मा शिव ना नाल रखाइंदा। पहलों लोकी कहिन्दे रहे सिँघ शेरा, हुण निरगुण हो हो वेस वटाइंदा। हरि का भेव जाणे केहड़ा, भेत आपणा ना किसे जणाइंदा। सत्तरां बहत्तरां वखाया इक्को डेरा, ढेरी ख़ाक ना कोए कराइंदा। बिन वंञ चप्पू तारया बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। हरिभगत तेरा खुल्ल्हा वेहड़ा, तेरा दरवाजा बन्द ना कोए कराइंदा। जुग जुग जो करदा रिहा झेड़ा, अन्त गुरसिखां झेड़ा सर्ब मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। आओ सिखो करो दीदार, बिन नेत्रां दए दरसाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे करीम कादर यार, कुदरत वसे माहीआ। जिस दा सजदा करदे रहे जुग चार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस दी गुर अवतार कढ्ढदे गए वगार, पंज तत्त फेरा पाईआ। जिस दा नाउँ गाउँदे रहे बोल जैकार, रसना जिह्वा हलाईआ। जिस नूं मन्नदे गए परवरदिगार,

नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जिस नूं कह कह गए एकँकार, पुरख अकाल सालाहीआ। जिस नूं कहिन्दे गए वसे सचखण्ड आपे सच्ची सरकार, साचे तख्त सोभा पाईआ। सो कलयुग अन्तिम साची सेवा करे अगम्म अपार, भगत दुआरा मात बणाईआ। निरगुण चल के आए विच संसार, रूप अनूप वटाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख करे बेदार, ग़फ्लत नींद कोए रहिण ना पाईआ। रहिमत कर सच्ची सरकार, हरिजन साचे लए जगाईआ। सही सलामत एकँकार, आप आपणी कार कमाईआ। जन भगत दुआरे बण भिखार, भिख़क फेरी रिहा पाईआ। जे कोई मिले सज्जण यार, आपणा हाल दयां सुणाईआ। आ के वेख्या लोकमात मेरा भण्डार, सत्तर बहत्तर बैठे भैणां भाई नाल मिलाईआ। हरिसंगत हरि महल्ल उसार, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। जिस दा डण्डा ना लभ्भे विच संसार, लुहार तरखाण घाड़त ना कोए घड़ाईआ। तिस मन्दिर गुरमुख लए बहाल, सार किसे ना आईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। एथे ओथे दो जहान करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुरमुख तेरा करन आया जमाल, आपणा नूर देवे दरसाईआ। गोबिन्द सुणाया मुरीदा हाल, मुर्शद फेरा आपे पाईआ। सरसे विछड़े लए भाल, सत्तरां माण दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी सच्ची धर्मसाल, हरिभगत दुआरा मात बणाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति सतिवादी इक्क निशान, आप झुलाए दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग समाईआ।

३०३
११

★ पहली माघ २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

साचा हरि हरि हरि धार, अगम्म अगम्म चलाईआ। सति पुरख निरँजण साची कार, आदि आदि कमाईआ। सति सतिवादी एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। सति सतिवादी जोत उज्यार, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। सति सतिवादी सोहे धाम न्यार, सचखण्ड दुआरा आसण लाईआ। सति सतिवादी शाहो भूप सरकार, शहिनशाह हरि नाउँ धराईआ। सति सतिवादी हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। सति सतिवादी दर दरवेश बण भिखार, आप आपणी मंग मंगाईआ। सति सतिवादी वड भण्डार, अलख अगोचर आपणा आप वरताईआ। सति सतिवादी कर प्यार, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। सति सतिवादी अंदर बाहर, निरगुण आपणा खेल कराईआ। सति सतिवादी पुरख नार, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। सति सतिवादी जोती धार, जोत जोत जोत समाईआ। सति सतिवादी कर प्यार, आप आपा लए प्रगटाईआ। सति सतिवादी सच विहार, दाई दाया सेव कमाईआ। सति सतिवादी घर विच घर कर त्यार, थिर घर साचा लए बणाईआ। सति सतिवादी हो उज्यार,

पूत सपूता शब्दी जाईआ। सति सतिवादी नाद धुन जैकार, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सति सतिवादी शहिनशाह, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। सति सतिवादी बेपरवाह, आप आपणे रंग समाइंदा। सति सतिवादी हुक्मरां, हुक्म हाकम आप जणाइंदा। सति सतिवादी आपणा नाउँ धरा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। सति सतिवादी साचा मार्ग ला, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। सति सतिवादी आपणा धाम सुहा, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। सति सतिवादी आपणी इच्छया आप प्रगटा, हरि पुरख निरँजण झोली डाहइंदा। सति सतिवादी एकँकारा रूप रंग रेख ना कोए जणा, निराकारा खेल वखाइंदा। सति सतिवादी नूर नुराना डगमगा, आदि निरँजण भेव चुकाइंदा। सति सतिवादी अबिनाशी करता नाउँ रखा, भूपत भूप सोभा पाइंदा। सति सतिवादी आपणी मन्ने आप रजा, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइंदा। सति सतिवादी साची कार, करता किरत कमाईआ। सति सतिवादी कर प्यार, आप आपा लए प्रनाईआ। सति सतिवादी ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। सति सतिवादी वसे ठांडे दरबार, दर दरबारा इक्क सुहाईआ। सति सतिवादी खोल्ह किवाड़, आपणा कुण्डा आपे लाहीआ। सति सतिवादी बण दातार, दाता दानी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। सति सतिवादी खेल अवल्ला, आदि पुरख कराइंदा। सति सतिवादी वसे निहचल धाम अटल्ला, उच्च मुनारे सोभा पाइंदा। सति सतिवादी आपणे नूर आपे बला, जोती जोत डगमगाइंदा। सति सतिवादी आपणे अंदर आपे रला, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। सति सतिवादी आपणा फड़ आपे पल्ला, बन्धन आपणा आप जणाइंदा। सति सतिवादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सति सतिवादी एका रंग, सो पुरख निरँजण आप रंगाईआ। सति सतिवादी सति पलँघ, साची सेजा सोभा पाईआ। सति सतिवादी सच अनन्द, अनन्द कारज आप कराईआ। सति सतिवादी ढोल मृदंग, निरगुण नगारे आप वजाईआ। सति सतिवादी सूरा सरबंग, साचा दूल्हा सोभा पाईआ। सति सतिवादी सूरा सरबंग, घर साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। सति सतिवादी साचा लाड़ा, हरि साचा खेल खलाइंदा। सति सतिवादी सति अखाड़ा, गृह मन्दिर आप उपाइंदा। सति सतिवादी सच सतारा, सति पुरख निरँजण आप हलाइंदा। सति सतिवादी मंगलाचारा, दर बह बह आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर आप वड्याइंदा। सति सतिवादी सोभावन्त, सो पुरख निरँजण खेल वखाइंदा। सति सतिवादी नारी कन्त, कन्त कन्तूहल खुशी मनाइंदा। सति सतिवादी बणाए बणत,

घड़न भन्नणहार हो जाइंदा। सति सतिवादी आदि अन्त, आपणी रचना आप रचाइंदा। सति सतिवादी पूरन भगवन्त, मूर्त अकाल डगमगाइंदा। सति सतिवादी सर्ब गुणवन्त, अजूनी रहित दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धारा आप चलाइंदा। साची धार पुरख अकाल, सति सतिवादी आप चलाईआ। आपणे उपर हो दयाल, आपणी दया आप कमाईआ। आपे देवे दाता दानी आपणा लाल, गोदी गोद आप सुहाईआ। आपे करे सदा प्रितपाल, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धार आप जणाईआ। सति धार निरगुण जोत, निरवैर पुरख आप प्रगटाइंदा। आप बहाए साचे किले कोट, छप्पर छन्न ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि एका चोट, शब्द नगारे आप लगाइंदा। सदा सुहेला इक्को ओट, शाह पातशाह इक्क अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति आपणी कार कमाइंदा। सति सतिवादी निरगुण रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। सति सतिवादी शाहो भूप शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। सति सतिवादी महिमा अनूप, लेखा लिख्त विच ना आईआ। सति सतिवादी कोई ना देवे तेरा सबूत, बेअन्त तेरी वड्याईआ। सति सतिवादी ना कोई तत्त ना कलबूत, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धारा आप समझाईआ। सति सतिवादी साचा कम्म, निहकर्मी आप कराइंदा। सति सतिवादी आपे जम्म, मात पित ना कोए बणाइंदा। सति सतिवादी निरगुण रूप श्री भगवन, भाग आपणे मन्दिर लाइंदा। सति सतिवादी बेड़ा बन्नू, आपणा मार्ग आप चलाइंदा। सति सतिवादी साचा धन्न, आपणा नाम आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति आपणी खेल कराइंदा। सति सतिवादी खेल करतार, करता पुरख आप कराईआ। सचखण्ड दुआरे कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। जनणी जन वेखे सुत दुलार, बाली बाला गोद सुहाईआ। थिर घर साचे दए अधार, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। सुत दुलारे कर उज्यार, आपणा बल वखाईआ। साचा धन्दा एका वार, एकँकार दए जणाईआ। चरन कँवल इक्क सहार, नेत्र नैण नैण दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त सति अमोलक झोली पाईआ। सति सतिवादी वस्त सति, सो पुरख निरँजण आप वरताइंदा। सुत दुलारे दे दे मत्त, आपणी बूझ बुझाइंदा। सुत दुलारे तेरा प्रकाश, मेरा तत्त भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादि इक्को साथ, सगला संग वखाइंदा। एका नाउँ एका पाठ, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी भेव खुल्हाइंदा। सति सतिवादी खोल्हे भेव, अभुल वड्डी वड्याईआ। सति सतिवादी लाए साची सेव, साचा हुक्म सुणाईआ। आदि जुगादि सदा नेहकेव, निहचल धाम रिहा सुहाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धारा आप समझाईआ। सुत दुलारे सति सतिवाद, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरी रचना रची आदि, आपणा नूर प्रगटाइंदा। तेरा मनारा साची याद, थिर घर आप बणाइंदा। इक्क इकल्ला करां प्यार, लाड लाड नाल बुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप समझाइंदा। सति सतिवादी साचा मूल, निरगुण आपणा आप जणाईआ। आदि जुगादि ना जाणा भूल, अभुला रिहा समझाईआ। पुरख अबिनाशी एका कन्त कन्तूहल, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप जणाए आपणा सच असूल, असलीअत आपणे विच छुपाईआ। सुण शब्द सुत साचे जन, सति पुरख निरँजण आख सुणाया। तेरा बेड़ा दिता बन्न, सिर तेरे हथ्थ रखाया। इक्को तेरा जननी जन, दाई दाया इक्क हो जाया। मेरा कहिणा लैणा मन्न, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया। इक्को देवां साचा धन्न, अतोट अतुट रखाया। एका राग सुणना कन्न, एका नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार रिहा समझाया। साची कार हरि निरँकार, सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, देवां माण वड्याईआ। तेरे अंदर मेरा भण्डार, सच ख़ज़ाना आप टिकाईआ। वेखां विगसां करां विचार, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। सति सतिवादी साचा खेल, हरि करता आप जणाइंदा। सति सतिवादी साचा मेल, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। सति सतिवादी गुरू गुर चेल, गुर चेला वेस वटाइंदा। सति सतिवादी सज्जण सुहेल, साचा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल बेपरवाह, आपणा आप जणाईआ। सति सतिवादी दए सलाह, रमज़ रमज़ नाल मिलाईआ। तेरी रचना लवां रचा, रच रच खुशी मनाईआ। तेरे अंदर आपा दयां टिका, बल आपणा आप रखाईआ। तेरा पर्दा दयां चुका, ओहला कोए नज़र ना आईआ। तेरा चोला दयां बदला, विष्नूं नाउँ रखाईआ। विष्नूं अंदर ब्रह्म प्रगटा, पारब्रह्म प्रभ वंड वंडाईआ। सुन्न अगम्मी धूंआँधार आप समा, आपणी इच्छया करे कुड़माईआ। शंकर मेला सहिज सुभा, साख्यात रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी साची कार कमाईआ। सति सतिवादी साची कार, सत्त चार चार मिलाईआ। पहला सुत दुलारा कर त्यार, शब्दी नाउँ नाउँ रखाईआ। दूजे विष्नूं पावे सार, तीजे ब्रह्मे माण दिवाईआ। चौथे शंकर दे अधार, एका ओट जणाईआ। सत्त चार दा सति प्यार, सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। सचखण्ड सोहे इक्क दुआर, साचे तख्त आसण लाईआ। आपणी इच्छया दए अधार, भिच्छया आप वरताईआ। तख्त निवासी एकँकार, कीमत कही ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आपणी इच्छया शब्दी रंग, विष्नूं आप चढ़ाया। विष्नूं अंदर सेज पलँघ, ब्रह्मा आप सुआया। आपे जाणे ब्रह्म अनन्द, शंकर डगमगाया। चारां खेल करे सूरा सरबंग, आप आपणी गोद सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आपणा रूप वखाया। सति सतिवादी साचा रूप, अनुभव आप जणाईआ। चारां देवे इक्क सबूत, एका नूर दरसाईआ। वसणहारा साची कूट, चारे कूटां दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत चार जोड़ जुड़ाईआ । सत चार जुड़या जोड़, जोड़नहार निरँकारा। निरगुण निरगुण गया बौहड़, करया खेल अपर अपारा। आपणा पन्ध आपे वेखे दौड़, सचखण्ड थिर घर खेल न्यारा। निरवैर लगाए एका पौड़, महल अटल उच्च मनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सत चार जाणे सच विहारा। सत्त चार चार मनार, आपणे आप प्रगटाईआ। चवां दस्से सच विहार, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। उठो जागो होवो ख़बरदार। पुरख अबिनाशी रिहा जगाईआ। चरनी लग्गो एका वार, एका बूझ बुझाईआ। देवां वस्त वस्त हरि थार, अनमुल्ल आप वरताईआ। साची करनी इक्को कार, करता पुरख समझाईआ। मेरी इच्छया वड बलकार, भेव कोए ना पाईआ। साची सिख्या देवां अपर अपार, भुल्ल कदे ना जाईआ। चारे निउँ निउँ करन निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब दाता परवरदिगार, हउँ बालक भेव ना आईआ। बख़्शिश कर आपणी आप करतार, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारां एका गुण समझाईआ। चार मनार मेरा रंग, हरि हरि आप जणाइंदा। मेरा नूर मेरा पतंग, नूर नुराना आप उडाइंदा। आपणे नाल आपे गंढु, साचा बन्धन पाइंदा। आप सुणा आपणा छन्द, एका भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण साचा हरि, चार चार आप वड्याइंदा। चार चार गए जाग, हरि जागरत जोत जगाईआ। आप लगाया घर साचे भाग, भागवान आप हो जाईआ। आपे दीपक जोत चिराग, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। आपे बण बण सज्जण साक, बह बह खुशी मनाईआ। आपे देवे इक्को वाक्, वातावरन आप समझाईआ। आप वखाए इक्को घाट, घाटा नज़र कोए ना आईआ। आप खुल्हाए साचा हाट, हट्ट हटवाणा सेव कमाईआ। आपे जाणे साचा खात, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे एका वार उठाईआ। उठो जागो नेत्र खोल्ह, नैण नैण खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा बोल, एका शब्द सुणाया। मेरा भाणा सदा अडोल, डुल कदे ना जाया। एका तोलां साचा तोल, तोलणहारा बेपरवाहया। तुहाडे अंदर जावां मौल, आपणा नूर कर रुशनाया। आदि करां साचा कौल, अन्त भुल्ल ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप समझाया।

चारे उठो हो त्यार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। शब्दी तेरा सच विहार, विष्नूं करी कुड़माईआ। विष्न तेरा ब्रह्म अधार, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। शंकर मिली चरन धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का एका लाईआ। चौहां विचोला एकँकार, आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाल अञ्याणे आप जगाईआ। छोटे बाले गए उठ, हरि चरन ध्यान लगाया। पारब्रह्म प्रभ गया तुठ्ठ, दे मति रिहा समझाया। चरन अमृत देवे एका घुट, चरन चरन नाल रगड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे एका घर बहाया। चारे सुणो हरि की बात, हरि बातन आप जणाइंदा। सचखण्ड बैठा इक्क इकांत, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। वस्त देवां इक्को दात, एका वार वरताइंदा। वेखां खेल खेल तमाश, आपणा खेल आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। धुर फ़रमाणा एका वार, हरि जू आप सुणाया। उठो चारे हो त्यार, हरि सज्जण रिहा समझाया। साचा करना सच विहार, सति सतिवादी आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मार्ग आपे लाया। साचा मार्ग हरि जू दस्स, चारे रहे शरमाईआ। तेरे बरदे तेरे वस, तेरी सेव कमाईआ। तूं साडी पूरी करनी आस, हउँ बैठे झोली डाहीआ। तेरा नूर सच प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बण सेवक सेव कमाईआ। हरि जू हरि खोल्हे भेव, आपणा भेव जणाया। मिल मिल करनी साची सेव, साचा हुक्म सुणाया। अलख अगोचर अगम्म अभेव, सचखण्ड निवासी आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाया। चारे सुणो करो ख्याल, हरि आपणी बूझ बुझाईआ। आप उपजाए आपणे लाल, हरि लालन वेख वखाईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारा सोभा पाईआ। नूर नुराना बेमिसाल, एका मसला हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग एका लाईआ। चारे जाणा मार्ग लग्ग, लगावणहार करतारा। तुहाढे सीस बद्धी पग्ग, एका नाम दस्तारा। लख चुरासी उपजे जग, घाड़त घड़े अगम्म अपारा। नौबत नाम जाए वज्ज, शब्दी नाद नाद धुन्कारा। विष्नूं सेवा करे भज्ज भज्ज, घर घर दए भण्डारा। ब्रह्मे तेरा रूप रंग, ब्रह्म करया खेल न्यारा। शंकर अन्तिम देणा कोई ना छड्ड, चवां खेल करे न्यारा। हुक्मे अंदर जाणा बज्झ, एका हुक्म धुर फ़रमाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा राणा। चारे अग्गों पए रो, नेत्र नैणां नीर वहाया। सानूं तेरी बिध दा पता ना को, कवण बिध लख चुरासी दएं रचाया। कवण बिध बीज देईए बो, उपजे मात संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरवेश खड़े भिखारा। दर दरवेश मंगण मंग, ख़ाली झोली

रहे वखाईआ। एका वस्त दे सूरे सरबंग, शाह पातशाह तेरी शरनाईआ। तुध बिन होए बलहीण मंद, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणी दया कमाईआ। दीन दयाल हरि दया कमा, आपणी बिध जणाइंदा। एका वस्त झोली पा, एका गुण समझाइंदा। शब्द सुत आपणा हथ्थ तेरे सिर दयां टिका, सदा संग निभाइंदा। विष्नूं सतो गुण तेरी झोली पा, तेरा भार वंडाइंदा। ब्रह्मे रजो रंग रंगा, एका रंग वखाइंदा। तमो शंकर नाल रला, साचा खेल कराइंदा। चौहां मेला सहिज सुभा, एका घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। साची वस्त मिली घर, चारे खुशी रहे मनाईआ। इक्क दूजे दा पल्लू फड़, अग्गे पिच्छे तुरन वाहो दाहीआ। किस बिध घाड़न लईए घड़, लख चुरासी बणत बणाईआ । जिध्धर वेखण आवे डर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। प्रभ शरनाई चारे पड़, बैठे सीस झुकाईआ। असीं आपणा आप गए हर, दर तेरे सीस झुकाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहर कर, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। दीन दयाल हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। चारों देवे इक्क ज्ञान, एका गुण समझाइंदा। चौहां विच्चों कर प्रधान, शब्दी ताज सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। करनी करे करता पुरख, पुरखोतम वड्ड वड्याईआ । ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए जणाईआ। आपणयां उत्ते आपे कीता तरस, रहिमत आपणी आप कमाईआ। आपे करे साची परख, पारखू बण बण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। चारों देवो इक्क सहारा, सिर सिर हथ्थ टिकाया। आपणी इच्छया इक्क भण्डारा, पंचम रूप धराया। पंचम मेला धुर दरबारा, दर दुआरा आप सुहाया। करया खेल अगम्म अपारा, भेव कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख आदि रिहा समझाया । आदि पुरख मार्ग ला, आपणा आप जणाईआ। सुत शब्द भुलणा ना, निरवैर रूप वखाईआ। विष्नूं सेवा सच कमा, विश्व एका एक वखाईआ । ब्रह्मे तेरा ब्रह्म रुशना, पारब्रह्म लए प्रगटाईआ। शंकर साचा जोग वखा, हथ्थ त्रसूल फड़ाईआ। त्रै त्रै मेला सहिज सुभा, पंचम जोड़ जुड़ाईआ । घाड़त भाण्डा आप घड़ा, लख चुरासी रूप वटाईआ। निरगुण अंदर जोत जगा, पंज तत्त करे रुशनाईआ। शब्द अनादी नाद वजा, आपणा राग अल्हाईआ। विष्नूं लेखा आप गणा, काया मन्दिर दए वड्याईआ। ब्रह्म रूप पारब्रह्म धरा, आत्म सेजा सोभा पाईआ। शंकर डेरा आपणा ढाह, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी दए समझाईआ। चारे साची सेव कमौंदे, घर साचे वज्जे

वधाईआ। सो पुरख निरँजण साचा ढोला गौंदे, हं रूप दिता प्रगटाईआ। पुरख अकाल इक्को पाउँदे, परम पुरख बेपरवाहीआ। सच सरोवर इक्क नुहौंदे, हरि चरन मिली शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे वेखे चाँईं चाँईआ। चारे वेखे चार चार, हरि साचे वड वड्याईआ। शब्दी गुण इक्क विचार, एका भेव खुल्हाईआ। विष्नूं विश्व कर त्यार, वास्तक रूप धराईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसार, पारब्रह्म सहाईआ। शंकर तेरा अन्त आधार, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। चवां विचोला एकँकार, आपणी खेल खलाईआ। धुर फ़रमाणा सच्ची सरकार, शाह पातशाह आप जणाईआ। सभनां करे ख़बरदार, बेख़बर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। धुर फ़रमाणा सुण लओ मीत, हरि मित्र आप सुणाया। निरगुण हो चलावां रीत, सरगुण खेल करावां। आपणा ढोला दस्सां गीत, निष्अक्खर आप पढ़ावां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल अगम्म अथावां। शब्द सुत किहा पुकार, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए जणाईआ। विष्नूं रो रो करया गिरयाज़ार, तुध बिन मेरा अवर ना कोए सहाईआ। ब्रह्मा मंगे नाद धुन्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। शंकर मस्तक धूढ़ी ला ला छार, भोले भाउ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चारों वस्त आप वरताईआ। सुण सुत शब्दी मेरे बाले, हरि जू आख सुणाया। तूं मेरा मैं तेरा लग्गी निभ जाए नाले, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। विष्नूं जुग जुग सदा तूं पालें, आपणा भण्डारा तेरी झोली पाया। ब्रह्मे सुण लै मेरे गाणे, हरि जू आख सुणाया। शंकर उठ कर ध्याने, निरगुण रिहा उठाया। करे खेल श्री भगवाने, आदि आपणी रचना आप रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान झोली पाया। शब्दी दिता दान, आपणे विच समाईआ। विष्नूं हो मेहरवान, सति वस्त भण्डारा दए खुल्हाईआ। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, चारे वेद करे पढ़ाईआ। शंकर देवे इक्क निशान, आप आपणा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारां वस्त दए वरताईआ। चारों वस्त इक्को वार, एका पुरख वरताईआ। देवे दलासा आप जुग चार, चार चार वंड वंडाईआ। चारे वेद दए अधार, चार कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। चारे जुग ख़बरदार, चारे बाणी कर पढ़ाईआ। चारे वरन दए अधार, चार यारी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका चौका बन्धन पाईआ। एका चौका जुग चार, चौकड़ रूप वटाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, आपणी कार कमाइंदा। हुक्मी हुक्म सच वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप वखाइंदा। चारे रोवण मारन धाह, हरि जू खेल कराया। साडी सेवा दिती लगा, एका हुक्म सुणाया। हउँ बालक नादान

तेरा भेव ना जाणे रा, अभेव तेरी शहिनशाहया। तूं बणना विच मलाह, तुध बिन बेड़ा ना कोए चलाया। डूंगा सागर तेरा अस्गाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद साडा संग निभाया। पुरख अबिनाशी हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। आओ चारे मेरे लाल, एका वार समझाईआ। जुग चौकड़ी निभां नाल, निरगुण निरगुण खेल कराईआ। माणस रूप हो प्रधान, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सति सरूपी देवां दान, सति सतिवादी धार चलाईआ। करां खेल मात महान, आपणा बल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारों देवे माण वड्याईआ। चारां देवे हरि जू माण, निमाणयां गले लगाया। मेरा खेल दो जहान, दोए दोए रूप धराया। निरगुण वसां सचखण्ड मकान, सरगुण लोकमात फेरा पाया। एका देवां सच्चा दान, नाउँ निधाना झोली पाया। जुग चौकड़ी धुर फ़रमाण, सच संदेश सुणाया। गुर अवतार बाल अञ्याण, लोकमात नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाया। आपणा खेल हरि निरँकारा, एका एक जणाईआ। जुग जुग चले मेरा विहारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सति सतिवादी खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप कराईआ। चार चार बन्ने धारा, धरनी धरत धवल सुहाईआ। बण विचोला एकँकारा, आपणी कल वरताईआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, हुक्मी हुक्म भुवाईआ। गुर अवतार सेवादारा, साची सेव कमाईआ। शब्द सुत तेरा नाम जैकारा, आदि जुगादि सुणाईआ। विष्नूं तेरा विश्व भण्डारा, लोकमात वरताईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसारा, लख चुरासी विच समाईआ। शंकर तेरा तेज़ कटारा, लख चुरासी पार कराईआ। आपे वसे सब तों बाहरा, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराईआ। चारे अग्गों हो त्यार, हरि साचे आख जणाईआ। साडे नाल कर इकरार, इकरारनामा दे लिखाईआ। जुग जुग तेरी सेवा करीए विच संसार, बण सेवक सेव कमाईआ। तेरा सरगुण रूप गुर अवतार, लोकमात फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर कर कर कार, बण वगारी फेरा पाईआ। जिउँ भावे तिउँ देवें तार, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। हउँ मंगीए तेरा दरस दीदार, तुध बिन अवर ना कोए ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला निरगुण रूप लएं प्रगटाईआ। पुरख अबिनाशी कहे हस्स, आपणी खुशी मनाइंदा। करता पुरख खेल करे समरथ, समरथ धार चलाइंदा। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। कोटन कोटि नाम सुणाए कथ कथ, गुर अवतार सेव लगाइंदा। जुग जुग आपणा मार्ग दस्स, वरन बरन वंड वंडाइंदा। अन्तिम सब दे कोलों जाए नस्स, हथ्थ किसे ना आइंदा। विष्नूं आपणी कंडे जाए ढट्ठ, ब्रह्मा राग ना कोए अल्लाइंदा। शंकर रखे ना कोए हठ, बल आपणा आप मुकाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आपणा पर्दा चुक्के निरँकारा, निरगुण भेव जणाइंदा । नव नौ चार जगत जैकारा, चार चार सुणाइंदा। गुर अवतार दे सहारा, लोकमात सेवा लाइंदा। हुक्मे अंदर साची कारा, करता पुरख कराइंदा। आपे वसे सचखण्ड दुआरा, नर निरँकारा आसण लाइंदा। दूई दूत शब्द हल्कारा, साची सेव कमाइंदा। विष्नूं बरदा करे निमस्कारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। ब्रह्मा करे गिरयाज़ारा, आपणी गिराह वेख वखाइंदा। शंकर अग्गे कढ्ढे हाढ़ा, दोए दोए दोए मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा दस्से आप असूल, अवल अल्ला नूर इलाहीआ। जुग चौकड़ी खाए काल, महांकाल वज्जे वधाईआ। गुर अवतार वजाए ताल, लोकमात जायण जस गाईआ। नव नौ चार होए बेहाल, बेवा सर्ब लोकाईआ। अन्तिम खेल करे भगवान, निरगुण नूर जोत धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चौहां एका वार समझाईआ। चौहां समझाए आपणी रमज, रमज़ नाल मिलाइंदा। बाल बाले जाणा समझ, सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम आवां बण पंज तत्त ना कोई चले नब्ज, सब दी नब्ज वेख वखावां। ना कोई रोग ना कोई मरज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाणा। जाणी जाण कहे भगवान, एका गुण समझाईआ। निरगुण प्रगट होए वड मेहरवान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। करे खेल नौजवान, बल आपणा आप धराईआ। सति सतिवादी राज राजान, शाहो भूप वेस वटाईआ। जोती जोत नूर महान, नाद शब्द धुन शनवाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्मरान, दो जहानां हुक्म चलाईआ। प्रगट होवे विच जहान, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौहां लेखा दए मुकाईआ। चौहां लेखा अन्त मुकाउणा, हरि जू आख सुणाइंदा। सति सतिवादी फेरा पाउणा, सति आपणा नाम प्रगटाइंदा। सचखण्ड दुआरा मात सुहाउणा, आप आपणे रंग रंगाइंदा। चार मनार एका घर वखाउणा, एका बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धीरज धीर आप धराइंदा। चारे रखो इक्को आस, हरि जू आख सुणाईआ। अन्तिम प्रगट होए पुरख अबिनाश, जोती जामा भेख वटाईआ। सति सतिवादी पूरी करे आस, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। चौहां बुझाए लग्गी प्यास, अमृत मेघ बरसाईआ। निरगुण सरगुण होए दासी दास, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। करे खेल पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फेरा पाईआ। लोआं पुरीआं पाए रास, गोपी काहन आप नचाईआ। तुहाढ्ढा करे कारज रास, आपणा काज आप वखाईआ। आप चलाए सच जहाज़, सति सतिवादी सेव कमाईआ। आपे वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। आदि अन्त ना होए विनाश, अबिनाशी करता नाउँ धराईआ । तुहाढ्ढी पूरी

करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारां एका बन्धन पाईआ। चारां बन्धन दिता पा, ना कोई तोड़ तुड़ाइंदा। कलयुग अन्तिम आवे बेपरवाह, भेव अभेदा आप सुणाइंदा। गुर अवतार बणन गवाह, साचा खेल आप रचाइंदा। लिख लिख जिमनी देण भरा, वेद कतेब शास्त्र सिमरत खाणी बाणी नाल रलाइंदा। आपे लुक के बैठा रहे बेपरवाह, आपणा पर्दा ना किसे उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चौहां एका गुण समझाइंदा। चौहां देवे इका गुण, गुणवन्ता वड वड्याईआ। अन्त पुकार लए सुण, हरि सचा शहिनशाहीआ। हरि का भेव ना कोई जाणे सर्ब पुकार रिहा सुण, अभुल बेपरवाहीआ। लख चुरासी छाण पुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा समझाईआ। चारां सुणया सच संदेशा, हरि जू आख सुणाया। प्रभ अग्गे चले ना कोई पेशा, बैठे सीस झुकाया। कलयुग अन्त कराए वेसा, निरगुण नूर धराया। तिस साहिब को सदा अदेसा, जो हुक्मी हुक्म रिहा फिराया। अन्तिम मेटे साडा लेखा, लेखा लेख रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह श्री भगवान, एका भेव जणाइंदा। चौहां देवे इक्क ज्ञान, चारे कुण्ट फिराइंदा। कलयुग लेखा अन्त जहान, हरि जू आप जणाइंदा। करां खेल इक्क महान, भेव कोए ना पाइंदा। सति सतिवादी आपणा सच निशान, लोकमात झुलाइंदा। लख चुरासी पुण छाण, गुरमुख साचे बाहर कढाइंदा। बहत्तरां बणावां इक्क मकान, नाड़ नाड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। सत्तरां देवां इक्को दान, साता सिफ़रा मूल मुकाइंदा। सति रूप श्री भगवान, चौका चारे सेव लगाइंदा। अन्तिम कड्ढे करे आण, साता चौका जोड़ जुड़ाइंदा। मेरा नूर जोत महान, भेव किसे ना आइंदा। शब्दी सुत मिलणा आण, प्रभ साचा सच समझाइंदा। विष्नूं चरनीं डिगीं आण, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। ब्रह्मे रो रो मंगीं दान, तेरी कीती घाल लेखे पाइंदा। शंकर मस्तक धूढ़ी मेटणी आण, तेरी लग्गी छार मिटाइंदा। अन्त विचोला बणे श्री भगवान, पिछला लेखा मूल मुकाइंदा। अग्गे खेल करे महान, साचे भगतां राह चलाइंदा। साचा मन्दिर विच जहान, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा। साचे सिख कर प्रधान, चारों कुण्ट हुक्म चलाइंदा। चार मनार दा इक्क निशान, चार जुग दी वंड वंडाइंदा। नाल रले सूरबीर सुल्तान, शाह पातशाह सेव कमाइंदा। साता चौका आदि अन्त जीव जंत साध सन्त सर्ब गाण, रसना जिह्वा सर्ब हलाइंदा। जिस नूं हरि जू देवे दान, सो दूजे दर ना मंगण जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त आप समझाइंदा। चारों अन्तिम आउणा चल, हरि जू हुक्म सुणाया। मेरा खेल वेखणा अछल अछल, लेखा लिख्त विच ना आया। मैं अन्तिम होणा भगतां वल, सब दा नाता दयां तुड़ाया।

लोकमात वजावां उन्हां दे नाम दा टल्ल, मन्दिर टल्ल ना कोए खड़काया। उच्ची कूक सुणावां बांग महल्ल, काअबा होर नज़र कोए ना आया। मठ शिवदुआले जाण हल्ल, गुरमुख होण मात रुशनाया। गुरुदुआर पए तरथल्ल, थपक थपक थपक ना कोए सुआया। अन्तिम होणा भगतां वल, सब नूं देवां धक्का लाया। मेरा हुक्म गुर अवतारां कोलों गया ना टल, अन्तिम बैठे चरनां हेठ सीस टिकाया। सारे कहिन्दे गए अछल अछल, फड़ के कोल ना किसे बहाया। किसे नूं सुनेहड़ा अपणा रिहा घल, बाणी बाणी खोज खुजाया। कलयुग अन्तिम आया चल, सब दा चलाण दए कराया। वेखणहारा जल थल महीअल आपणा रूप वखाया। चौहां दी करनी दा देवे फल, कलयुग अन्तिम जन भगत कमाई तेरा इक्को इक्क फुलका फुलका दए खवाईआ। सत चार होण अटल्ल, चहत्तरां एका महल्ल चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धारे आपणा बल, कोटन बावन नैण रहे उठाया।

★ ४ माघ २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

सचखण्ड निवासी हरि निरँकारा, दरगाह साची दया कमाइंदा। निरगुण निरगुण कर प्यारा, सच महल्ले सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाणा, श्री भगवाना आप जणाइंदा। खेले खेल दो जहानां, भेव अभेव खुल्हाइंदा। शब्दी सुत मर्द मर्दाना, शाह सुल्ताना आप प्रगटाइंदा। मार्ग पन्थ इक्क वखाना, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे दे दाना, वस्त अनमोलक आप वरताइंदा। त्रैगुण माया कर प्रधाना, पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासी साची कारा, करता पुरख आप कराइंदा। साची कार हरि निरँकार, आपणी आप जणाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरे शाहो भूप बण सिक्दार, हुक्मी हुक्म आप चलाईआ। जुग चौकड़ी खेल न्यार, निराकार आप कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल उसार, लोआं पुरीआं बन्धन पाईआ। लख चुरासी कर त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, घट मन्दिर आप वजाईआ। जोत निरँजण दीपक बाल, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। साचा मन्दिर इक्क धर्मसाल, गृह गृह आपणा डंक सुणाईआ। आत्म सेजा कर त्यार, परम आत्म वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणी खेल खलाईआ। सचखण्ड निवासी खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, एकँकारा खेल खलाइंदा। आपणे नूर आपे बला, आदि निरँजण डगमगाइंदा। आपणी जोत

आपे रला, अबिनाशी करता वेस वटाइंदा। आपे फड़े आपणा पल्ला, श्री भगवान संग निभाइंदा। आपणा संदेश आपे घल्ला, पारब्रह्म प्रभ खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी सोभा पाइंदा। सचखण्ड निवासी सोभावन्त, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, हरि पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। खेले खेल नार कन्त, एकँकारा वड वड्याईआ। आप बणाए आपणी बणत, आदि निरँजण साची सेव कमाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, श्री भगवान वड वड्याईआ। रूप अनूप जुगा जुगन्त, अबिनाशी करता आप धराईआ। एका नाउँ साचा मंत, पारब्रह्म प्रभ प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, सोभावन्त निरँकार। दीप जगाए आदि निरँजणा, आदि जुगादी एकँकार। दरगाह साची साचा सज्जणा, निरगुण रूप अगम्म अपार। ना घड़या ना भज्जणा, समरथ पुरख खेल न्यार। आप चलाए आपणा जहाज़ना, सेवा करे सेवक बण बण सेवादार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप कराईआ। साचा खेल पुरख अबिनाश, आदि आदि कराईआ। शाहो भूप सर्ब गुणतास, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। गृह मन्दिर पावे साची रास, महल अटल आप सुहाईआ। इक्क इकल्ला खेल तमाश, निरवैर पुरख आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव आपे खोल्ह, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। आपणा नाउँ आपे बोल, नाउँ निरँकारा आप धराइंदा। आपणा दर आपे खोल्ह, घर साचे सोभा पाइंदा। आपणा नाद वजाए ढोल, अगम्म अगम्मड़ा नाद सुणाइंदा। आपे वसे आपणे कोल, निरगुण निरगुण संग रखाइंदा। आदि जुगादी इक्को तोल, तोलणहारा इक्क हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा एका घर, हरि जू आप सुहाईआ। देवणहारा आपे वर, वर दाता बेपरवाहीआ। करे खेल नारी नर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। आपणी सेजा आपे चढ़, कन्त भतार खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा साची धार, सो पुरख निरँजण आप बणाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए दीवार, साची बणत आप बणाइंदा। दीआ बाती ना कोए उज्यार, निरगुण नूर डगमगाइंदा। कमलापाती पुरख नार, साचा संग आप हो जाइंदा। नाद शब्द धुन्कार, बोध अगाधी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दुआरा वड्डा वड, भेव कोए ना पाइंदा। आदि पुरख आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, आपणे घर बहाइंदा। आप लडाए साचा लड, साची गोद आप सुहाइंदा। आपे जाणे आर पार किनारा हद्द, दूसर भेव कोए ना

पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वसाइंदा। सचखण्ड महल्ला एकँकार, एका घर बणाईआ। निर्मल जोती कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। साचा तख़्त सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाईआ। भूपत भूप हुक्मी हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। आपणी इच्छया आपे धार, आपे देवे माण वड्याईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, थिर घर साचा लए प्रगटाईआ। थिर घर साचे देवे माण, चरन कँवल शरनाईआ। भूपत भूप राज राजान, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। देवणहारा एका दान, एका वस्त झोली पाईआ। सुत दुलारा कर बलवान, थिर घर साचे आप बहाईआ। करे खेल श्री भगवान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। दाई दाया चतुर सुजान, निरगुण निरगुण सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, एका बन्धन आप रखाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, सच संदेशा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साची कार कमाईआ। साची कार हरि निरँकार, आपणी आप कमाइंदा। निरगुण निरगुण कर त्यार, निरगुण मेला मेल मिलाइंदा। निरगुण मन्दिर अपर अपार, दिस किसे ना आइंदा। निरगुण पुरख निरगुण नार, निरगुण कन्त सेज हंढाइंदा। निरगुण सुत दुलारा कर त्यार, थिर घर साचे आप बहाइंदा। निरगुण वणज निरगुण वपार, निरगुण साचे हट्ट विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव आपे दस्स, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। एका अमृत देवे रस, झिरना निझर आप झिराईआ। एका तीर निराला मारे कस, नाम निधाना बाण लगाईआ। एका खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ आप जणाईआ। इक्क चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। सचखण्ड वसे पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कराइंदा। हड्ड मास नाड़ी ना चम्म, पंज तत्त ना कोए रखाइंदा। पवण स्वास ना कोए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता दुःख ना कोए जणाइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्ह्, बण खेवट सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी कार आप कमाइंदा। आपणी कार आपे कर, करता पुरख ख़ुशी मनाईआ। आपे देवणहारा वर, वर दाता आप हो जाईआ। आपे निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए दरसाईआ। आपे दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वछ सरूपी रूप वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपे फड़, साची सेवा आप लगाईआ। एका अक्खर जायण पढ़, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। आप बंधाए आपणे लड़, शब्दी डोर इक्क बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आप रचाईआ। साची रचना हरि करतारा,

आपणी आप रचाइंदा। त्रै त्रै मेला एका वारा, पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी कर त्यारा, घाड़त घड़त वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण बण ठठयारा, आपणा खेल वखाइंदा। राती रुत्ती थिती ना कोई जाणे वारा, घड़ी पल ना कोए वंडाइंदा। आपे जाणे आपणी धारा, धार धार विच प्रगटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ करन निमस्कारा, दर दर सीस झुकाइंदा। वाहवा तेरी कुदरत मेरे परवरदिगारा, तेरा भेव कोए ना आइंदा। तेरा घर अपरम्पर अपर अपारा, सच महल्ला उच्च अटल्ला सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। जल थल महीअल आपे रला, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। सच संदेश एका घल्ला, ब्रह्म वेता आप पढ़ाइंदा। विष्नूं फड़ाए हरि जू पल्ला, वास्तक आपणा गुण समझाइंदा। शंकर बोले एका हल्ला, अन्तिम लेखा सर्ब चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका गुण आप समझाइंदा। एका गुण जणाए गुणवन्त, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। मेरा खेल आदि अन्त, जुग जुग भेव ना राईआ। लख चुरासी माया पावां बेअन्त, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। साचा लेखा श्री भगवान, आपणा आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मे शिव सुण फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। निरगुण सरगुण खेल महान, सरगुण निरगुण रंग रंगाइंदा। पंज तत्त कर परवान, त्रै त्रै आपणा पर्दा पाइंदा। नव नौ खोल्ह आप दुकान, चार चार वंड वंडाइंदा। घर घर विच इक्क मकान, मिहबान आप खुल्हाइंदा। जोत निरँजण नूर महान, नूर नुराना डगमगाइंदा। आत्म नाद शब्द धुन्कान, अनहद नादी नाद वजाइंदा। अमृत आत्म पीण खाण, सर सरोवर आप सुहाइंदा। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, परम पुरख आप पढ़ाइंदा। साची सेजा हरि मेहरवान, सोभावन्त आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त नाम आधार, हरि सतिगुर आप वरताईआ। त्रै त्रै मेला एका वार, पंचम पंच कुड़माईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची खुशी मनाईआ। किरनी किरन किरन उज्यार, रवि ससि करे रुशनाईआ। मंडल मण्डप दए आधार, लोआं पुरीआं घाड़त लए घड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, साचे धाम दए बहाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। लख चुरासी खेल विच संसार, लोकमात दए समझाईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। सेवा लाए गुर अवतार, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। भगत भगवन्त लए उभार, आपणी बूझ बुझाईआ। साचे सन्तां दए दीदार, निरगुण सरगुण लए मिलाईआ। गुरमुख सज्जण लए उठाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गुरसिखां चले नाल नाल, सगला संग रखाईआ। करे खेल श्री भगवान, जुग जुग वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता देवे दान, द्वापर आपणा बन्धन पाईआ। कलयुग खेल करे महान,

ख़ालक ख़लक वेखे थाउँ थाईंआ। मुकामे हक़ इक्क निशान, मिहबान बीदो आप झुलाईआ। जुग चौकड़ी वेखे मार ध्यान, कोटन कोटि रूप वटाईआ। शब्द मन्त्र नाम देवे ज्ञान, निश्अक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल श्री भगवन्त, आपणा आप जणाइंदा। लेखा जाणा जुगा जुगन्त, जुग जुग वेख वखाइंदा। लख चुरासी बणाई बणत, सेवक सेवा आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग हरि निरँकार, आपणा आप रंगाईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, साचे सन्तां नेत्र नैण खुल्हाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लाल अनमुलड़े गोद बहाईआ। गुरसिखां करे सदा प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चरन प्रीती निभे नाल, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। एका देवे वस्त नाम धन माल, सच ख़ज़ीना आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम अतुट इक्क रखाईआ। नाम अतुट हरि भण्डारा, आदि जुगादि वरताइंदा। हरिजन देवे कर प्यारा, गुरमुख साचे झोली पाइंदा। एका हट्ट इक्क वणजारा, एका तोलण तोल तुलाइंदा। चौदां लोक ना पावण सारा, चौदां विद्या ना भेव चुकाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा इक्क समझाइंदा। सच भण्डारा इक्को नाम, हरि जू आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गुर अवतार मंगण दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पीर पैग़म्बर करन सलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आदि जुगादी इक्क ईमान, एका कलमा दए समझाईआ। शाह पातशाह सच्चा अमाम, मुकामे हक़ इक्क शहिनशाहीआ। जुगा जुगन्तर देवे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। आपे जाणे लेखा सतिनाम, नाम सति आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग करता हरि करने जोग, एका रंग समाया। निरगुण सरगुण साचा भोग, भस्मड़ भोगी भोग भुगाया। आत्म परमात्म संजोग विजोग, दोए दोए कार चलाया। लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां तबकां पर्दा लाहया। आदि जुगादी ब्रह्मादी इक्क सलोक, पारब्रह्म आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप जणाया। धुर फ़रमाणा एका वार, एकँकार सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए जणाईआ। लख चुरासी घाड़त घड़ी बण ठठयार, ठोकर होर ना कोए लगाईआ। खेलां खेल विच संसार, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेव कमाईआ। अन्तिम आवां विच संसार, निरगुण आपणा रूप धराईआ। जोधा सूरबीर बण बलकार, बल बावण खेल खलाईआ। नाम खण्डा

तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। लेखा जाण सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चौकड़ी जुग चार, जुग जुग मूल मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। सच संदेशा शाह पातशाह, हरि जू हरि सुणाइंदा। साचे तख्त कर सलाह, तख्त निवासी दया कमाइंदा। जुग जुग वेस अनेक वटा, गुर अवतार सेव लगाइंदा। शब्दी शब्द बण मलाह, लख चुरासी बेड़ा आप चलाइंदा। जे कोई वेखे दिसे ना, घट घट अंदर डेरा लाइंदा। गुरमुख सज्जण लए जगा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। एका नेत्र दए खुल्हा, दोए लोचण बन्द कराइंदा। एका अमृत दए प्या, अठसठ ना कोए भुआइंदा। एका जोत दए जगा, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। एका मन्दिर दए वखा, घर घर विच आप सुहाइंदा। एका सेजा दए बहा, सेज सुहञ्जणी आप वड्याइंदा। सुरती शब्द दए मिला, नारी कन्त सोभा पाइंदा। एका मंगल लए गा, नाद अनादी नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आपणा पर्दा हरिजन चुक्क, एका रंग वखाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन रूप सच्चा शहिनशाहीआ। चार जुग दी चौथी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप सुहाईआ। हरिजन वेखे साचे सुत, बाल अञ्याणे लए उठाईआ। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, निझर झिरना आप झिराईआ। निर्मल नूर जगाए जोत, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। भाग लगाए काया कोट, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। एथे ओथे साची ओट, हरिजन हरि समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, आदि जुगादि कराइंदा। जुग जुग गुर अवतार फड़ाउँदा रिहा पल्ला, एका बन्धन नाम रखाइंदा । अन्तर आत्म बह बह सच सिँघासण मल्ला, साची सेजा आप सुहाइंदा। शब्द अनाद धुन आत्मक आपे घला, रागी राग आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म आपे रला, ईस जीव आप अख्वाइंदा। सनमुख हो हो आपे खला, आपे लुक लुक मुख छुपाइंदा। ना कोई घड़ी ना कोई पल्ला, थित वार ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी हरि निरँकारा, जन भगतां देवे दरस दीदारा, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। नेत्र नैण जाए खुल्ह, जिस जन आपणी दया कमाईआ। एका नाम दए अनमुल्ल, करता कीमत कोए ना लाईआ । सच दुआरे जो जन आए भुल्ल, भुल्यां मार्ग देवे पाईआ। लख चुरासी ना जाए रुल, राए धर्म ना दए सजाईआ। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्ता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल जुगो जुग, जुग करता आप कराइंदा। लख चुरासी विच्चों हरिजन चुग, आपणा मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे पाणी दुद्ध, नाम मधाणा इक्क वखाइंदा। पंज तत्त विकारा करे सुध, सच कुठाली आप तपाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तारे आप प्रभ, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा भार गया लद, कलयुग बैठा बल धराईआ। ना कोई जाणे पार हद्द, अद्धविचकार रुड़ी लोकाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना सके कढ्ढ, मँझधार पई दुहाईआ। गुर अवतार साक गए छड्ड, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। पीर पैग़म्बर होए अड्ड, आपणा पल्लू ना कोए फड़ाईआ। ना कोई बंस ना कोई यद, विश्व रूप ना कोए वखाईआ। चार वरन पए डूँग्घी अन्धेरी खड्ड, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। हउँमे हंगता पीती मध, माया ममता नाल रलाईआ। गुर का शब्द ना वज्जे नद, अनहद नाद ना कोए सुणाईआ। पंच विकारा ना ल्या बध, खण्डा नाम ना कोए चमकाईआ। बिन हरि नामे खाली दिसण हड्ड, रक्त बूंद रही कुरलाईआ। गुरमुख विरला होया गद गद, जिस मिल्या हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता वेस वटाईआ। जुग करता हरि पुरख स्वामी, अपरम्पर खेल कराइंदा। आदि जुगादि सदा नेहकामी, कर्म कांड ना कोए बणाइंदा। घट घट अन्तर अन्तरजामी, आपणा भेव आप खुल्लाइंदा। शब्द अनाद अगम्मी बाणी, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। सुरत मिलावा शब्द हाणी, घर साचे सोभा पाइंदा। लेखा जाणे चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखाइंदा। साचा मार्ग हरि निरँकारा, आदि अन्त जणाईआ। एका नाम शब्द अधारा, गुर अवतार करन पढ़ाईआ। एका मन्दिर गुरुदुआरा हरिभगत रहे सालाहीआ। एका दीपक होए उज्यारा, साचे सन्त रहे जगाईआ। एका शब्द नाद धुन्कारा, गुरमुख राग रहे सुणाईआ। एका चरन कँवल निमस्कारा, गुरसिख बैठे सीस झुकाईआ। हरि जू वसया धाम न्यारा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा विहारा, नव नौ पन्ध आप मुकाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यारा, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। लख चुरासी पावे सारा, लुकया कोए रहे ना राईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका एका वार सुणाईआ। लख चुरासी मेटे धंधूकारा, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। देवे दरस अगम्म अपारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क करतारा, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आपणा पर्दा हरि जू चुक्क, हरिजन आप जणाइंदा। नव नौ चार जो रिहा लुक, कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा। सति पुरख निरँजण शब्दी शेर रिहा बुक्क, दो जहानां भबक सुणाइंदा। लेखा जाणे चौदां तबक, चौदां चौदां फेरा पाइंदा। दो जहानां इक्को सबक, विष्न ब्रह्मा शिव आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्लाइंदा। आपणा भेव देवे खोल्ल, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम तोले तोल, निरगुण

दाता बेपरवाहीआ। आपणा पूरा करे कीता कौल, गुर गोबिन्द रिहा सालाहीआ। प्रगट होए उपर धौल, धरनी हौला भार कराईआ। ना कोई पर्दा ना कोई ओहल, मुख नक़ाब ना कोए टिकाईआ। भेव ना पाए पंडत पांधा रौल, मुलां शेख़ मुसायक ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। आपणी खेल अन्तिम कल, हरि जू हरि कराइंदा। लख चुरासी भरम भुलाए वल छल, अछल अछल रूप वटाइंदा। हरिजन साचे आप उठाए सच संदेशा एका घल्ल, नाम नामा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणी धार आप जणाइंदा। आपणी धार रखे हथ्थ, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। निरगुण रूप हो प्रगट, लोकमात फेरा पाईआ। करे खेल पुरख समरथ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी चलाउँदा रिहा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतार गाउँदे रहे गथ, रसना जिह्वा सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम हो हो वक्ख, निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जन भगतां हिरदे अन्तर वस, रूप अनूप दरसाईआ। एका देवे साचा रस, निझर झिरना दए झिराईआ। तीर अणियाला मारे कस, मुखी नज़र किसे ना आईआ। अंदर आत्म जाए वस, परमात्म मेल मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। दीनन होए दयाल, दया कमाइंदा। नेड़ ना आए काल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। पुरख अबिनाशी करे प्रितपाल, जुग जुग सेव कमाइंदा । आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद मुरीद वेस वटाइंदा। आपे तोड़े त्रैगुण जगत जंजाल, माया बन्धन ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन साचा जाए जाग, सो पुरख निरँजण आप जगाईआ। नाम नामा लाए वैराग, वैरागी रूप वटाईआ। गुरमुख मेला नारी कन्त सुहाग, कन्त कन्तूहल मेल मिलाईआ। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल गंवाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, जिस बख्शे शरन चरन शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप तराईआ। गुरमुख तरया वार अन्त, अन्त काल तराया। मिल्या मेल श्री भगवन्त, पुरख आबिनाशी होए सहाया। नाता तुट्टा जीव जंत, लख चुरासी पन्ध मुकाया। गढ़ तुट्टा हउँमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाया। हरिजन मेला साची संगत, सगला संग आप रखाया। गुरसिख दूजे दर ना जाए मंगत, सतिगुर पूरा साची वस्त झोली पाया। नाता तोड़े भुख नग्गत, जगत तृष्ना मोह मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सज्जण आप तराया। गुरसिख सज्जण तारया, गुर सतिगुर हो मेहरवान। जन्म जन्म दा गेड़ निवारया, इक्को दीआ नाम

दान। निर्मल दीआ कर उज्यारया, मिटाया अन्ध अंध्यान। अमृत देवे ठंडा ठारया, निझर झिरना इक्क झिरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे कर परवान। हरिजन सच्चा होए परवान, हरि परवाना नाम फड़ाइंदा। एथे ओथे मेला श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, दर घर साचे आप बहाइंदा। एका चरन इक्क ध्यान, लिव अन्तर इक्क समझाइंदा। एका अक्खर इक्क ज्ञान, एका विद्या हरि पढ़ाइंदा। एका ओट एका माण, एका सीस हथ्थ टिकाइंदा। एका धर्म इक्क निशान, दो जहानां इक्क झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप तराइंदा। तारनहारा एको एक, आदि जुगादि समाया। हरिजन बख्शे साची टेक, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। करे कराए बुध बिबेक, मन मनशा मोह चुकाया। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अमृत मेघ इक्क बरसाया। जन्म जन्म दा जाणे लेख, पूरब लहिणा झोली पाया। निरगुण निरगुण कर कर भेख, हरिजन साचे लए तराया। एथे ओथे इक्को देस, जिस सतिगुर सच्चा पाया। भरमे भुल्ले औलीए पीर शेख़, शरअ शरीअत रही कुरलाया। तिस साहिब को सदा आदेस, जो घट घट रिहा समाया। हरिजन विरला लए वेख, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। लख चुरासी झूठी खेड, नटुआ आपणा स्वांग वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम भेव चुकाया। कलयुग अन्तिम चुक्के भेव, प्रभ साचा आप चुकाईआ। प्रगट होए अलख अभेव, अभेद वड्डी वड्याईआ। लहिणा देणा चुक्के देवी देव, सुरपति ना कोए मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी वेखे सेव, कीती घाल झोली पाईआ। लख चुरासी घट घट अंदर जाणे रसना जिहव, तीस बतीसा कवण सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मात तराईआ।

★ ६ माघ २०१८ बिक्रमी करतार सिंघ दे गृह मांगा सराय ज़िला अमृतसर ★

सति सतिवादी शाह सुल्तान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण नौ जवान, आदि जुगादि समाईआ। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, दयानिध बेपरवाहीआ। एकँकारा जोधा सूरबीर बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जोत डगमगाईआ। अबिनाशी करता सच निशान, दर घर साचे आप झुलाईआ। श्री भगवान गुण निधान, महल अटल दए वड्याईआ। पारब्रह्म खेल महान, कल आपणी आप धराईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, दर घर साचा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, सो

३२२
११

पुरख निरँजण आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। जोती जोत आपे रला, एकँकारा आपणे रंग समाइंदा। आपणे दीपक आपे बला, आदि निरँजण डगमगाइंदा। सति सतिवादी फड़े आपणा पल्ला, श्री भगवान बणत बणाइंदा। आपे मेटे आपणा सल्ला, अबिनाशी करता बन्धन पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपणा संदेश आपे घल्ला, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइंदा। आपणी कार हरि करतार, आदि पुरख आप कमाईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी इच्छया बण वरतार, साची भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणे हथ्थ रख वड्याई, हरि आपणी दया कमाइंदा। खेले खेल बेपरवाही, बेअन्त नाउँ धराइंदा। करे खेल अगम्म अथाही, अलख अगोचर दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणी करनी करता पुरख, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, आलस निंद्रा ना कोए जणाईआ। आदि जुगादि ना कोई करे तरस, रहिमत आपणी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह श्री भगवाना, एका रंग समाइंदा। खेले खेल नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। आपणी इच्छया कर परवाना, आप आपणी बणत बणाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाइंदा। साची खेल हरि निरँकार, आदि पुरख उपजाईआ। आपे बण सेवादार, सेवक साची सेव कमाईआ। निरगुण निरगुण दए अधार, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण वेखे वेखणहार, निरगुण आपणा नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधाईआ। आपे जाणे आपणी धार, हरि साची सेव कमाइंदा। साची इच्छया भर भण्डार, आपणा रंग वखाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कल प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनभव आपणी खेल खलाइंदा। अनभउ हरि कर प्रकाश, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। खेले खेल शाहो शाबाश, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। निरगुण रूप सर्ब गुण तास, निरवैर बेपरवाह बेपरवाह बेपरवाहीआ। आपणी पूरी करे आपे आस, आसा आसा विच मिलाईआ। आपे खेले खेल तमाश, खेलणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव हरि जणा, आपणी दया कमाइंदा। आपणी घाड़त आप घड़ा, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। आपणी दया आप कमा, दीनन आपणा नाउँ धराइंदा। आपणा रंग आप रंगा, रंग रंगीला आपणी

कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर डगमगाइंदा। निरगुण नूर नूर नुराना, निरवैर आप प्रगटाईआ। करे खेल श्री भगवाना, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। भूपत भूप बण राज राजाना, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। दर दरवेश बण दरबाना, अलख आपणी अलख जगाईआ। आपणा हुक्म कर परवाना, आपणी झोली आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा खेल आप कराईआ। आदि खेल पुरख अगम्म, एका एक कराइंदा। ना मरे ना पए जम्म, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। एकँकारा करे कम्म, करता कारज आप रचाइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्ह, खेवट खेट सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सलाह आपणी आप प्रगटाइंदा। सच सलाह श्री भगवाना, सिफ्ती सिफ्त आप प्रगटाईआ। अगम्म अगम्मड़ा धुर फ़रमाणा, धुर दरबारा आप जणाईआ। एका मन्दिर बणे मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। चार दीवार ना कोए वखाना, बाढी संग ना कोए रलाईआ। सचखण्ड साचा नाउँ धराना, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। इक्क इकल्ला वसे श्री भगवाना, एकँकारा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप बणाईआ। सचखण्ड दुआरे बणे बणत, सो पुरख निरँजण आप बणाइंदा। आपे जाणे आपणी महिमा अगणत, हरि पुरख निरँजण आप सालाहइंदा। एकँकारा लेखा जाणे आदि अन्त, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। आदि निरँजण जोती जोत जगाए बेअन्त, दीआ बाती ना कोए टिकाइंदा। अबिनाशी करता बण बण साचा कन्त, सच महल्ले सोभा पाइंदा। श्री भगवान आप जाणे आपणी बणत, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दुआरा घाड़न घड़, हरि जू खेल कराया। निरगुण अंदर बैठा वड़, रूप रंग रेख ना कोए रखाया। जोती नूर आपे धर, नूर नुराना डगमगाया। आपणी इच्छया भण्डारा भर, वस्त अमोलक आप वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, इक्क इकल्ला आप सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेअन्त, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। आपे जाणे आपणा मंत, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे नार आपे कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, हरि साचा सच प्रगटाइंदा। जोत जगाए आदि निरँजणा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। जुगा जुगन्तर दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराइंदा। आपे जाणे आपणा अञ्जणा, नेत्र आपणा आप खुल्हाइंदा। आपे धूढ़ आपे मजणा, सर सरोवर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सलाहइंदा। सचखण्ड दुआरे दिती दात,

३२४
११

हरि आपणी दया कमाईआ। तेरा रचन रचया आदि, अन्त भेव कोए ना पाईआ। तेरा लेखा जुग जुगादि, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। तेरा मेला मोहण माधव माध, नूर नुराना संग निभाईआ। तेरी रखी आपे याद, दरगाह साची धाम सुहाईआ। सच निशाना दिता गाड, ना सके कोए उखड़ाईआ। तेरी कोई ना जाणे पार हद्द, किनारा नज़र किसे ना आईआ। तेरे अंदर उपजे तेरी यद, पुरख अबिनाशी दए प्रगटाईआ। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, तेरे दर दए बहाईआ। निरगुण निरगुण लडाए लड, पूत सपूता वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे माण रखाईआ। सचखण्ड दुआरे कर विचार, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरा महल्ल ल्या उसार, पुरख अबिनाशी सेव कमाइंदा। दर दुआरा कर त्यार, दर दरवेश खेल कराइंदा। ना कोई दीसे चार दीवार, दहि दिशा ना वंड वंडाइंदा। रवि ससि ना कोए उज्यार, मंडल मण्डप ना कोए बणाइंदा। तत्तव तत्त ना कोए आधार, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकार, गृह तेरे सोभा पाइंदा। तेरी घाड़त घड़ी अपर अपार, बण बाढी सेव कमाइंदा। तूं वसणा धाम न्यार, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आप सालाहइंदा। सचखण्ड तेरा उच्च मनारा, हरि जू आप बणाइंदा। निरगुण दीपक कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। सच सिँघासण कर त्यारा, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, पुरख अबिनाशी आसण लाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, आप आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आप सालाहइंदा। सचखण्ड दुआर करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं करता करना करनेहार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ दर दरवेश मंगां भिक्ख बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। एका वर देणा मेरी सरकार, निउँ निउँ चरनां सीस झुकाईआ। तुध बिन अवर ना कोए सहार, मंडल मण्डप ना कोए वड्याईआ। तेरा चरन कँवल मिली मस्तक धूढ़ी छार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड दुआरा नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सचखण्ड दुआर मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंग, दर तेरे सीस झुकाईआ। एका दे आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच मिलाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ना कोई दीवार ना कोई कंध, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। ना कोई राग ना कोई छन्द, गीत अनाद ना कोए सुणाईआ। लोआं पुरीआं ना कोए ब्रह्मण्ड, जेरज अंड ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ख़ाली झोली रिहा वखाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे कर ध्यान, पुरख अबिनाशी आप

सुणाइंदा। एका देवां साचा दान, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाइंदा। तेरा मन्दिर बणे महान, महिमा गणत ना कोए गणाइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त बहे राज राजान, भूपत भूप नाउँ धराइंदा। धुर संदेशा देवे धुर फ़रमाण, बोध अगाधी आप जणाइंदा। तेरे घर विच घर खेल महान, थिर घर साचा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। घर विच घर करां त्यार, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। थिर घर खोलां आप किवाड़, आपणी घाड़त आप जणाईआ। एका घर पुरख नार, नर नरायण वेस वटाईआ। कन्त कन्तूहल हो उज्यार, रूप अनूप दए समझाईआ। दाई दाया अगम्म अपार, अलख अगोचर सेव कमाईआ। सुत दुलारा कर वणजार, घर साचे दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताईआ। साची वस्त मंगी दात, सो पुरख निरँजण आप वरताइंदा। सचखण्ड दुआरे होई प्रभात, एका नूर डगमगाइंदा। लेखा लिख्या हरि जू आदि, अन्त भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल हरि समझा, एका गुण जणाईआ। सचखण्ड दुआरे थिर घर तेरे अंदर दिता टिका, घर घर विच मेल मिलाईआ। सुत दुलारा ल्या प्रगटा, बाली बाला बाल सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग रिहा समझाईआ। साचा मार्ग दस्से राह, हरि साचा सच जणाइंदा। शब्दी शब्द सेव लगा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रगटा, महेष गणेश आप वड्याइंदा। त्रैगुण माया झोली पा, पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी वंड वंडा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज एका राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आप समझाइंदा। लख चुरासी खेल अपारा, हरि जू आख सुणाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, घट घट वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। शब्द नाद नाद धुन्कारा, धुन अनादी नाद सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी खोल्ह कवाड़ा, सच महल्ला आप सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाईआ। लख चुरासी घाड़न घड़, हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण हो हो अंदर वड़, साचे पौड़े जाए चढ़, आउँदा जांदा दिस ना आइंदा। निष्अक्खर विद्या आपे पढ़, जीव जंत आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आपणा भेव श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आख सुणाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, लोकमात खेल कराइंदा। वंडण वंड वंडे महान, चार चार बन्धन पाइंदा। चारे वेद इक्क ज्ञान, चारे खाणी नाल रलाइंदा। चारे बाणी गुण निधान, चार वरन आप समझाइंदा। चार जुग एका आण, चार यारी मूल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग हरि जू लाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। लख चुरासी खेल खलाउणा, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण सरगुण रूप धराउणा, वेस अनेका आप वटाइंदा। गुर अवतार भेव चुकाउणा, आप आपणा हुक्म सुणाइंदा। शब्द अनादी नाद वजाउणा, धुन आत्मक नाद अलाइंदा। अमृत आत्म जाम प्याउणा, निझर झिरना आप झिराइंदा। जुग चौकड़ी वंड वंडाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआरे कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। चार जुग दा इक्क निशान, एका चौकड़ बन्धन पाईआ। गुर अवतार कर प्रधान, लोकमात दए वड्याईआ। एका नाम धुर फ़रमाण, सच संदेशा आप सुणाईआ। भगत भगवन्त वेखे आण, साचे सन्त नाल मिलाईआ। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। गुरसिखां देवे साचा माण, एथे ओथे होए सहाईआ। सतिजुग त्रेता खेल महान, द्वापर आपणी वंड वंडाईआ। कलयुग जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। नव नौ चार होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। खेले खेल श्री भगवान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुलाईआ। सचखण्ड दुआरा सुण संदेशा, दर आपणे खुशी मनाइंदा। तूं शाह पातशाह नर नरेशा, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जुग जुग सेवा विष्न ब्रह्मा महेषा, शंकर निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड करन अदेशा, सिर सब दे हत्थ टिकाइंदा। गुर अवतारां तेरे अग्गे चले ना कोई पेशा, हुक्मी हुक्म सर्ब भुआइंदा। भगत भगवान दर विरले देखा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला मात सुहाइंदा। कवण वेला सोहे मात, सचखण्ड दुआर पुच्छण आईआ। कवण देवे नाम दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। कवण चले साची गाथ, लख चुरासी करे पढ़ाईआ। कवण होए दीनां नाथ, दीनन दया कमाईआ। कवण चढ़ाए साचे राथ, डूँघी भँवरी पार कराईआ। कवण मिलाए कमलापात, घर घर विच मेल मिलाईआ। कवण मेटे अन्धेरी रात, साचे चन्द करे रुशनाईआ। कवण बंधाए चरन नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। कवण अन्तिम पुच्छे वात, लोकमात फेरा पाईआ। तूं रचना रची आदि, तेरा खेल ब्रह्म ब्रह्माद, जुगादि तेरा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बैठा सीस झुकाईआ। सचखण्ड दुआरे रख धीर, धीरजवान दया कमाइंदा। शाह पातशाह वड पीरन पीर, नूर नुराना इक्क अख्वाइंदा। आदि जुगादी दस्तगीर, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। जुग जुग बदले तकदीर, तदबीर आपणे हत्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी शरअ जंजीर, लख चुरासी बन्धन पाइंदा। माण दिवाए अठसठ नीर, तट किनारे आप

वड्याइंदा। मुलां शेख़ मुसायक पीर, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। आपे चोटी चढ़ के बहे अख़ीर, आख़र आपणी कार कमाइंदा। दाता दानी गहर गम्भीर, गुणवन्त बेअन्त आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आप समझाइंदा। सचखण्ड दुआरे लैणा जाण, जाणी जाण आप जणाइंदा। लख चुरासी जीव जहान, लोकमात खेल कराइंदा। जुग जुग प्रगट हो श्री भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धार चलाइंदा। भगतां भगती देवे दान, सन्तां साचा संग निभाइंदा। गुरमुखां वेखे मार ध्यान, नेत्र लोचण आप खुल्हाइंदा। गुरसिखां तोड़े माण अभिमान, निवण सो अक्खर इक्क समझाइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। सति सतिवादी सच निशान, लोकमात आप झुलाइंदा। बोध अगाधी इक्क ज्ञान, गृह गृह मन्दिर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाइंदा। साचा खेल इक्को वार, हरि जू आप सुणाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग विच संसार, रूप अनूप धराया। विष्न ब्रह्मा शिव कर पनहार, करोड़ तेतीसा नाल मिलाया। सुरपति इन्द ख़बरदार, गफ्लत नींद ना कोए जणाया। गुर अवतार पहरेदार, पंज तत्त चोला रूप वटाया। घर विच घर खोल्ह कवाड़, आप आपणा दरस दिखाया। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, नाद अनादी आप सुणाया। अमृत आत्म ठंडा ठार, निझर झिरना इक्क झिराया। जोत निरँजण कर उज्यार, आदि निरँजण लए मिलाया। साची सेजा कर त्यार, ब्रह्म मेला सहिज सुभाया। पारब्रह्म प्रभ होए ख़बरदार, आपणा पर्दा दए चुकाया। ईश जीव इक्क अधार, जगदीश आपणा रंग रंगाया। पीसण पीस विच संसार, जुग जुग चक्की आप चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाया। आपणा पर्दा हरि जू खोल्ह, सचखण्ड दुआरे आख सुणाईआ। आदि अन्त तोलां साचा तोल, नाम कंडा हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर रहां अडोल, ना डोलां ना कोए डुलाईआ। सरगुण सरगुण कर कर घोल, वेखां खेल जगत लोकाईआ। जन भगतां अन्तर आपे मौल, पत डाली आप महकाईआ। सदा सदा सद वसां कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। सच दुआरा आपे खोल्ह, घर घर विच कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपणा पर्दा देणा लाह, हरि जू आख सुणाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुका, गेड़ा गेड़े विच भुआईआ। अन्तिम निरगुण नूर जोत लवां प्रगटा, रूप रंग रेख ना कोए जणाया। गुर अवतार लवां उठा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाया। सचखण्ड दुआरे सुण लै अन्त, हरि जू आख सुणाइंदा । गुर अवतार कहिण बेअन्त, मेरा भेव कोए ना पाइंदा निउँ निउँ सीस झुकायण सन्त, जगदीश ख़ुशी मनाइंदा। भगतन मेला

इक्को कन्त, नारी कन्त रूप वटाइंदा। गुरमुख वड्याई जीव जंत, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। गुरसिखां तोड़ हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणा आप समझाइंदा। अन्तिम वेला रिहा दस्स, हरि जू दया कमाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुकायण नस्स नस्स, थिर कोए रहिण ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन बस बस, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। अन्त निभे ना किसे दा हठ, भट्ठ खेड़ा दए कराईआ। वसणहारा घट घट, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत कर प्रगट, लोकमात वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खोल्ले हट्ट, बण वणजारा सेव कमाईआ। पावे सार चौदां तबक, चौदां लोक भेव चुकाईआ। एथे ओथे दो जहानां इक्को सबक, आलमीन करे पढ़ाईआ। चार जुग दा विरसा गुर अवतारां करे ज़बत, जाबर आपणा हुक्म सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे त्रभक, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त दए जणाईआ। सचखण्ड दुआरे अन्तिम आउणा, हरि जू आख सुणाइंदा। निरगुण हो के वेस वटाउणा, जोती जामा खेल जणाइंदा। लोकमात फेरा पाउणा, नज़र किसे ना आइंदा। चार जुग दे विछड़े हरिजन आप मिलाउणा, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। रातीं सुत्तयां दरस दखाउणा, नेत्र नैण नैणां नाल मिलाइंदा। राहों घुथ्थयां मार्ग पाउणा, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा। लख चुरासी

३२६ ११ विच्चों बाहर कढाउणा, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। साचा मेला आप कराउणा, मिल मिल सखीआं मंगल गाइंदा। पंचम ३२६ ११

नाद शब्द धुन उपजाउणा, शब्दी शब्द राग अल्लाइंदा। आपणी किरपा आप कराउणा, कृपानिध खेल कराइंदा। तेरा माण विच मात कराउणा, लोक परलोक सदा जस गाइंदा। साचे भगतां पकड़ उठाउणा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सच निशाना इक्क झुलाउणा, सति सतिवादी आप उठाइंदा। चौथा पद इक्क वखाउणा, चौथे जुग दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे देवे वर, एका गुण आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआरे सच्चा वर, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जाए हर, अन्तिम कलयुग मिले वड्याईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर, जिस दा पिता ना कोई माईआ। भगत भगवन्त लए फड़, गुर चेले गोद सुहाईआ। काया मन्दिर अंदर आपे चढ़, बज़र कपाटी कुण्डा लाहीआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वछ सरूपी रूप वटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती जोत नूर रुशनाईआ। इक्क बणाए साचा घर, घर घर विच मिले वड्याईआ। नाता तोड़े नौ दर, दर दरवाज़ा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप चुकाईआ। साचा लेखा जाणा चुक्क, हरि जू आख सुणाया। कलयुग पैंडा जाए मुक्क, चारों कुण्ट पए दुहाया। लख चुरासी बूटा जाए सुक्क,

बिन हरि नामे हरा ना कोए कराया। गुर अवतार निशाना जाए उक, नाम तीर ना कोए चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे देवे वर, कवण वेला तेरा मेला लए मिलाया। सचखण्ड दुआरे सुण लै याद, यादगीर आप जणाइंदा। कलयुग अन्त सुणे फ़रयाद, हरि फेरी निरगुण रूप पाइंदा। आदि आदि दिती दाद, अन्त आपे झोली पाइंदा। सच निशाना लोकमात गाड, सत्त रंगा रंग रंगाइंदा। चौथे जुग दी चौथी हाद, हदूद आपणी आप वखाइंदा। कोटन कोटि साध सन्त गुर अवतार पीर पैग़म्बर गए लाद, पाँधी बण बण पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम मेला आप मिलाइंदा। अन्तिम मेला हरि मिलाउणा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआरा मात प्रगटाउणा, निरगुण निरगुण दया कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाउणा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। चार जुग दे विछड़े भगत संग रखाउणा, सगला संग आप निभाइंदा। पहला दूजा तीजा घर चरनां हेठ दबाउणा, चौथे पद रंग रंगाइंदा। पंचम मेला एका धार कराउणा, धार धार विच समाइंदा। छे दर छे घर साख्यात हरि दरस दखाउणा, दर्दी दर्द वंडाइंदा। सत्तवें सति सतिवादी आपणा हुक्म चलाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। सत्त चार दा बन्धन पाउणा, साता चौका अंक अंक नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी कार आप कमाइंदा। आपणी करे साची कार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड लगाए सच दरबार, उच्च महल्ला दए वड्याईआ। धुर फ़रमाणा बोल जैकार, निरअक्खर करे पढ़ाईआ। वरन बरन तों वसया बाहर, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि जुगादी खेल न्यारा, जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बन्ने धारा, लेखा जाणे चार वेद पुराण अठारां, शास्त्र सिमरत दए आधारा, गीता ज्ञान खेल न्यारा, अञ्जील कुराना वेखे लग्गा अखाड़ा, खाणी बाणी भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला अगम्मी लाड़ा, दो जहानां फेरा पाईआ। दो जहानां खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। हरिजन फड़ाए नाम पल्ला, एका पल्लू आप प्रगटाइंदा। लख चुरासी भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल खेल कराइंदा। सच सिंघासण इक्को मल्ला, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। निरगुण दीप आपे बला, जोती जोत डगमगाइंदा। धुर फ़रमाणा सति संदेश घल्ला, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार वेख वखाइंदा। सत्त चार साचा संग, सति सतिवादी आप रखाईआ। चार कुण्ट वज्जे मृदंग, चार वरन दए जणाईआ। सति सतिवादी इक्क सुणाए सुहागी छन्द, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। चार जुग दी टुट्टी गंढ,

गुरमुख साचे लए उठाईआ। आत्म अन्तर जणाए परमानंद, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। सतिजुग सुहागी इक्को छन्द, एका करे पढ़ाईआ। बरन अठारां खण्ड खण्ड, खण्डा नाम रिहा चमकाईआ। मनमति नार दुहागण रंड, कूक कूक रही कुरलाईआ। गुरमुखां खुशी बन्द बन्द, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण दाता पुरख अकाल, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। हरिजन उठाए साचे लाल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। त्रैगुण नाता तोड़ जंजाल, माया ममता मोह मिटाईआ। अन्तिम नेड़ ना आए काल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। शब्द विचोला बण दलाल, निरगुण सरगुण लए तराईआ। एथे ओथे करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाईआ। गुरमुख घालण गए घाल, कीती घाल थाएँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बहत्तर सत्तर चुहत्तर आपणा अंक जणाईआ। साता चौका एका अंक, अंक अंक मिलाया। लेखा जाणे राउ रंक, राज राजान भेव ना आया। नाद शब्द हरि साचा डंक, दो जहान सुणाया। गुरमुख सुहाए इक्को बंक, टेढी बंक पन्ध मुकाया। हरिजन उभारे जिउँ जन जनक, धन्न धन्न जणेंदी माया। माया ममता हउमे हंगता मिटे शंक, संसा रोग दए गंवाया। नाम निधाना दए बेअन्त, बेअन्त रूप समझाया। सुरती मेला शब्दी कन्त, घर साचे खुशी मनाया। धन्न वड्याई गुरमुख सन्त, जिस हरि जू सज्जण पाया। कलयुग वेला आया अन्त, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। सृष्ट सबाई होई नंगत, साचा पर्दा ना कोए पाया। माणस जन्म होया भंगत, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन तरया अन्तिम वार, सतिगुर सच्चा आप तराईआ। जिस जन देवे दरस दीदार, दीद दीद नाल मिलाईआ। लख चुरासी उतरे पार, जूनी जून ना कोए भुआईआ। लाड़ी मौत ना करे श्रृंगार, चित्रगुप्त ना दए सजाईआ। राए धर्म ना करे विचार, धर्मी धर्म मिले वड्याईआ। गुरमुख मेला सचखण्ड दुआर, थिर घर साचे खुशी मनाईआ। गुर शब्द विचोला विच संसार, जुग जुग लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला इक्को घर, सचखण्ड दुआर मिले वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस मिल्या विछड़ कदे ना जाईआ।

★ ७ माघ २०१८ बिक्रमी सुरजण सिँघ दे घर मांगा सराय ज़िला अमृतसर ★

हरि हरि नाउँ साचा रंग, सच सच वड्याईआ। हरि हरि नाउँ अमृत गंग, गहर गम्भीर जणाईआ। हरि का नाउँ

आत्म सेज पलँघ, आसण सिँघासण दए वड्याईआ। हरि का नाउँ अगम्मी मृदंग, मर्द मर्दाना आप वजाईआ। हरि का नाउँ सूरा सरबंग, आदि जुगादि समाईआ। हरि का नाउँ इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। हरि का नाउँ गुरमुख छन्द, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। हरि का नाउँ सदा बख्शंद, हरिजन साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप सालाहीआ। हरि का नाउँ सूरबीर, बीर बली बलवान। हरि का नाउँ सच्चा पीर, पीर पैग़म्बर शाह सुल्तान। हरि का नाउँ बेनज़ीर, नज़र ना आए विच जहान। हरि का नाउँ तेज शमशीर, तिक्खी धार खेल महान। हरि का नाउँ आदि अन्त अख़ीर, मध खेल श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम रखे दान। हरि का नाउँ सच दाना, दाता दानी आप वरताइंदा। हरि का नाउँ प्रभ चरन ध्याना, चरन कँवल चित लाइंदा। हरि का नाउँ सच निशाना, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। हरि का नाउँ वसे सच मकाना, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। हरि का नाउँ ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। गुरमुख विरला पाए चतुर सुघड़ सयाणा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाइंदा।

३३२
११

हरि का नाउँ डूँग्घा सागर, हरि हरि आप उपाईआ। हरि का नाउँ काया गागर, पंज तत्त हरि छुपाईआ। हरि का नाउँ गुरमुख विरला बणे सौदागर, जिस जन दया कमाईआ। हरि का नाउँ निर्मल कर्म करे उजागर, उज्जल मुख वड्याईआ। हरि का नाउँ दो जहान देवे आदर, एथे ओथे होए सहाईआ। मेल मिलाए करीम कादर, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम सिफ्त सालाहीआ। हरि का नाम सच सलाह, सिख्या साची सच जणाइंदा। हरि का नाम इक्को राह, जुगा जुगन्तर मात चलाइंदा। हरि का नाउँ पकड़े बांह, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। हरि का नाउँ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाइंदा। हरि का नाउँ निथाव्याँ देवे थाँ, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराइंदा। हरि का नाउँ हरि का जस, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। गुरमुख विरला लेवे हस्स हस्स, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी हिरदे वस वस, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। जगत मिलावा हस्स हस्स, भगत सुहावा थान वड्याईआ। जगत जुग जन्म दी पूरी आस, शाहो शाबाश आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बन्द ख़लासी बन्द तुड़ाईआ।

हरि का नाउँ पूरन गुर, गुरू गुर वड्डी वड्याईआ। हरि का नाउँ संदेशा धुर, धुर दी धार धार प्रगटाईआ। हरि का नाउँ अनादी सुर, तार सतार ना कोए हलाईआ। हरि का नाउँ जगत तृष्ना मिटाए औड़, अमृत मेघ बरसाईआ। हरि का नाउँ मिट्ठा करे रीठा कौड़, विख अमृत रूप धराईआ। हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वरताईआ। हरि का नाउँ सदा सद मिट्ठा, रसना रस ना कोए वखाईआ। हरि का नाउँ, सद अनडिठा, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। हरि का नाउँ हरिभगत वंडायण हिस्सा, जुग जुग आपणी झोली डाहीआ। हरि का नाउँ खाणी बाणी गाए किस्सा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। हरि का नाउँ हरिजन पूरी करे इच्छा, गुर सतिगुर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नामे माण दवाईआ। हरि का नाउँ ऊँच अपारा, हरि हरि आप उपाइंदा। हरि का नाउँ सच विहारा, सति सतिवादी साची कार कमाइंदा। हरि का नाउँ जुग जुग उज्यारा, लोकमात डंक वजाइंदा। हरि का नाउँ गुर अवतार सहारा, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। हरि का नाउँ भगत भण्डारा, श्री भगवान आप वरताइंदा। हरि का नाउँ सन्त सहारा, सांतक सति सति कराइंदा। हरि का नाउँ गुरमुख वणजारा, घर घर विच हट्ट खुल्हाइंदा। हरि का नाउँ गुरसिख उधारा, जन्म जन्म दी मैल धुवाइंदा। देवणहारा एकँकारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम हट्ट इक्क जणाइंदा। हरि का नाम इक्को हट्ट, आदि जुगादि वरताईआ। गुरमुख लाहा लैण खट्ट, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। वसणहारा घट घट, बैठा मुख भुआईआ। रसना जिह्वा लख चुरासी जीव जंत अक्खर नाम रहे रट, निष्अक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। डूँग्घे खाते हरि जू दिता सट, नज़र किसे ना आईआ। पंडत पांधे पढ़ पढ़ गए थक्क, नेत्र पेख पेख कलम छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम सिफ्त सालाहीआ। हरि का नाउँ डूँग्घी गार, घर घर आप वसाया। लख चुरासी होई खुआर, हथ्थ किसे ना आया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। जगत विद्या ना पावे सार, अनुभव भेव ना कोए जणाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार आप कराया। जुग जुग प्रगट हो विच संसार, हरिजन साचे लए उठाया। एका बख्शे नाम आधार, आत्म परमात्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप प्रगटाया। साचा नाम गुर चरन प्रीत, सतिगुर दया कमाईआ। लहिणा देणा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। माणस जन्म लए जीत, चितवित ठगोरी कोए ना पाईआ। काया होए पतित पुनीत, पतित पावण दया कमाईआ। त्रैगुण अग्नी ठांडी सीत, सांतक सति कराईआ। पंचम वसे हरि जू चीत,

चेतन रंग वखाईआ। बिन रसना जिह्वा गाए गीत, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाईआ। साचा नाम आत्म रस, बिन रसना आप जणाइंदा। जिस दे हिरदे जाए वस, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। पंच विकारा देवे झस्स, ममता मोह मिटाइंदा। मेल मिलावा पुरख समरथ, घर घर विच जोड़ जुड़ाइंदा। आप चढ़ाए आपणे रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। नाता तोड़ साढे तिन्न हथ्थ, महिमा अकथ आप जणाइंदा। आपणा नाम आपे दस्स, गुरमुख साचे आप पढ़ाइंदा। पिच्छों लोकाई गाए जस, कागज़ पत्तर सिफ्त सालाहइंदा। छाही पन्ध मुकाए नस्स नस्स, हुक्मी हुक्मी आप फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ जुग जुग, जन भगतां आप वरताइंदा। आपणा नाम आपणी धार, आपणे विच समाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हरि पुरख निरँजण रिहा सालाहीआ। एकँकार करनेहार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि निरँजण दरस दीदार, जोत उजाला नूर कराईआ। अबिनाशी करता हो त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता त्रैभवन धनी आपणा रूप वटाईआ। श्री भगवान सच निशान हो मेहरवान, दो जहान आप झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधान, इक्क सुणाए धुर फ़रमाण, सच संदेशा नर नरेशा आपणा नाउँ आप जणाईआ। किसे हथ्थ ना आए ब्रह्मा विष्न महेषा, कोटन कोटि बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्को वर, अन्तर मन्त्र आपणे नाम करे पढ़ाईआ। जिस नाम नूं लभ्भे जग, सो हथ्थ किसे ना आइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा रहे भज्ज, टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। ताल तलवाड़े रहे वज्ज, ताल ताल ना कोए मिलाइंदा। पुरख अबिनाशी आपणा नाउँ सब तों रख्या अड्ड, काया हड्ड आप छुपाइंदा। हरिजन साचे हरि जू सद, नित सदड़ा आप सुणाइंदा। जिस दी पार ना कीती किसे हद्द, सो गुरमुखां हद्द अंदर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम गाए छन्द, बन्द सब दे आप कटाइंदा। हरि का नाउँ बोध अगाध, भेव अभेद रखाइंदा। हरि का नाउँ हरि की दाद, हरि साचा आप वरताइंदा। हरि का नाउँ गुरमुख विरला लेवे साध, साची साधना जिस कराइंदा। हरि का नाउँ इक्क एका आदि, जुगादि हरि हरि वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप प्रगटाइंदा। आदि प्रगटाया हरि हरि नाउँ, हरि नामे वज्जी वधाईआ। थिर घर वसया साचे थाउँ, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी करदा आया सच न्याउँ, कोटन कोटि काल बिताईआ। गुर अवतार फड़ फड़ बाहों, साची सेवा गया लगाईआ। अन्तिम करे सच न्याउँ, निराकार सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाउँ धराईआ । एका आपणा नाउँ रख, निरगुण दया कमाइंदा।

सति सरूपी हो प्रतख, जोती जाता डगमगाइंदा। सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म करे पक्ख, सोहँ आपणा रंग रंगाइंदा। एका मन्त्र मात दस्स, बिध अन्तर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा। साचा नाउँ सोहँ धार, सति सति आप प्रगटाईआ। हँ ब्रह्म कर प्यार, आत्म परमात्म रंग वखाईआ। बण विचोला एकँकार, साचा ढोला आपे गाईआ। पर्दा ओहला विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप जणाईआ। साचा नाउँ आप प्रगटा, प्रगट आपणी खेल कराइंदा। दो जहानां आप धरा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहे गा, दिवस रैण ध्यान लगाइंदा। करोड़ तेतीसा मन्न रज़ा, सुरपति राजा इन्द चरन कँवल ध्यान रखाइंदा। करे खेल बेपरवाह, आपणा नाउँ आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप धराइंदा। साचा नाउँ धरनी धर, लोकमात दए वड्याईआ। हरिजन विरले आपे वर, घर साचे मेल मिलाईआ। बोध अगाधी अक्खर पढ़, दोए दोए अक्खर आप पढ़ाईआ। आत्म परमात्म पल्लू फड़, घर साचे खुशी मनाईआ। गृह गृह चोटी आपे चढ़, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। आपणी बाणी आपे पढ़, पढ़ पढ़ रिहा सुणाईआ। निरगुण सरगुण घाड़न घड़, घट घट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप जणाईआ। एका नाउँ सोहँ सो, सो पुरख निरजंण आप प्रगटाइंदा। जन्म जन्म दी दुरमति धो, पतित पापी पार कराइंदा। दरस दिखाए अग्गे हो, निरगुण सरगुण खेल वखाइंदा। निझर झिरना अमृत चो, अमृत रस चखाइंदा। जोत नुरानी कर कर लो, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वड्याइंदा। साचा नाम वड्डा वड, हरि जू आप बणाया। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, सोहँ रूप प्रगटाया। निरगुण सरगुण आपे सद्द, आपणे कोल बहाया। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्म आपणा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप उपजाया। उपज्या नाउँ हरि गोबिन्द, घर घर वज्जे वधाईआ। हरिजन मेटे सगली चिन्द, चिंता चिखा नज़र ना आईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर दया कमाईआ। अमृत देवे सागर सिन्ध, सच प्याला जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम घर घर आख सुणाईआ। घर घर अंदर उठे धार, जिस जन बूझ बुझाइंदा। वेख ना सके कोए संसार, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। रातीं सुत्तयां दए दीदार, दीनन आपणी दया कमाइंदा। ग़फ्लत खोल होया बेदार, बेदर्दी आपणा दर्द वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप वरताइंदा। साचा नाम झोली पा, झूला इक्क झुलाईआ। जन्म जन्म दा मूल चुका, लहिणा दए मुकाईआ। शंकर त्रिसूल रिहा सुटा,

भोला नाथ दए जगाईआ। ब्रह्मा नेत्र नीर रिहा वहा, चारे मुख रिहा कुरलाईआ। विष्नूं भण्डारा ल्या लुटा, ख़ाली हथ्थ फिरे वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी ओट तका, भगवन होणा अन्त सहाईआ। जुग चौकड़ी तेरी सेवा लई कमा, लख चुरासी खेल खलाईआ। कलयुग वेला अन्तिम गया आ, तेरी पनाह तेरी इक्क शरनाईआ। जीव जंत करन गुनाह, पाक नज़र कोए ना आईआ। अन्तिम होणा सर्ब फनाह, बिस्मिल रूप ना कोए वखाईआ। हरि का नाउँ गए भुला, दीन मज़्ह़ब वंड वंडाईआ। हिरदे राम ना सके कोए वसा, राम राम रसना रहे गाईआ। अन्तिम देणा पन्ध मुका, पाँधी बण बण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पए शरनाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। उठो वेखो करो ध्यान, नेत्र नैण खुल्ह़ाइंदा। लोकमात बण प्रधान, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। निहकलंक बली बलवान, जोती जामा जोत जगाइंदा। शाहो भूप राज राजान, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। चार जुग दी मुके काण, पिछला लेखा ना कोए रखाइंदा। अग्गे देवे धुर फ़रमाण, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। सत्तां दीपां एका गान, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, सोहँ साची धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा। साचा नाम आया मात, मनमति रहिण ना पाईआ। कर किरपा देवे हरि जू दात, दाता दानी दया कमाईआ। पहलों कीता आपणा घात, फेर गुरमुखां होए सहाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नाता तोड़ ज़ात पात, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। इक्क सुणाए साची गाथ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे पत्तण बैठा सच्चा माहीआ।

★ ७ माघ २०१८ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह मैहणीआं ज़िला अमृतसर ★

हरि का नाउँ साचा जाप, जुग जुग माण वड्याईआ। त्रैगुण मेटे तीनों ताप, जगत तृष्ना अग्न बुझाईआ। कोटन कोटि जन्म उतारे पाप, पतित पापी पार कराईआ। निरगुण सरगुण मेला सज्जण साक, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आत्म परमात्म साचा पाठ, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। अन्त उतारे पार घाट, मँझधार ना कोए रुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बल आपणे नाउँ रखाईआ। हरि का नाउँ सदा प्रबल, पर्बत चोटी रही कुरलाईआ। हरि का नाउँ सदा अटल्ल, समुंद सागर देण दुहाईआ। हरि का खेल सदा अछल, अछल अछल बेपरवाहीआ। जोती जोत

३३६
११

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप सुणाईआ। एका नाम सुणना कान, हरि काहन आप सुणाइंदा। एका नाम वसे सच मकान, काया बंक आप बणाइंदा। एका नाम मिले दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। एका नाम जाणी जाण, अन्तर आत्म भेव चुकाइंदा। एका नाम पीण खाण, आशा तृष्ना मोह मिटाइंदा। एका नाम नाद धुन्कान, सारंग सारंगा ना कोए वजाइंदा। एका नाम बेपहिचाण, नज़र विच किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाम धराइंदा। एका नाम छले बल बावन, रूप अनूप वटाईआ। एका नाम मारे रावण, लंका गढ़ तुड़ाईआ। एका नाम कान्हा होए ज़ामन, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। एका नाम ईसा मूसा दए पैग़ामन, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। एका नाम निरगुण नानक बोले सति नामन, सति सति वज्जे वधाईआ। एका नाम फ़तेह डंका दो जहानण, दोए दोए आपणा खेल कराईआ। एका नाम मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुघड़ सुजानण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आपणा नाम प्रगटाईआ। एका नाम हरि की धार, हरि हरि आप उपाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपार, गुर अवतार वेख वखाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद विचार, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त संसार, सलाहण सलाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप छुपाइंदा। हरि का नाम बैठा छुप, नज़र किसे ना आइंदा। घर विच घर अन्धेरा घुप्प, दीपक दीआ ना कोए जगाइंदा। अट्ठे पहर रहे चुप्प, सच अवाज ना कोए लगाइंदा। प्रभ अबिनाशी दा साचा सुत, आपणे रंग आप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आपे पाइंदा। हरि का नाम परदे अंदर, हरि साजण आप रखाईआ। गृह गृह घट घट वेखे मन्दिर, काया बंक वड्याईआ। आपे लाया इक्को जंदर, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मन वासना फिरे बन्दर, मति मतवाली रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप छुपाईआ। हरि का नाम वसे ओहले, भेव कोए ना पाइंदा। गुरमुख विरला पर्दा खोल्हे, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। सोवत जागत गाए सोहले, एका राग अल्हाइंदा। अन्तर बोले हौले हौले, रसना जिह्वा ना कोए हलाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण मौले, मौला आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप रखाइंदा। आपणा नाम आपे रख, रख रख वेख वखाईआ। सरगुण हो के कीता वक्ख, निरगुण भेव छुपाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए रख, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जन भगतां मार्ग साचा दस्स, एका बूझ बुझाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सन्त सुहेले आपे सद्द, इक्क सदा लगाईआ। आपे जाणे आपणी हद्द, पार किनारा ना कोए वड्याईआ। भाग लगाए डूँग्घी खड्ड, अन्ध अन्धेर मिटाईआ।

जिस जन आपणा नाउँ सुणाए नैण शरमाए अनहद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप धराईआ। हरि का नाउँ हरि की टेक, एका ओट जणाइंदा। हरि का नाउँ बुध करे बबेक, ववेकी रूप वटाइंदा। हरि का नाउँ ना लाए सेक, अग्नी तत्त बुझाइंदा। हरि का नाउँ मेटे रेख, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। हरि का नाउँ आदि जुगादी एका एक, जुग जुग वेस वटाइंदा। नव नौ चार वेस कीआ अनेक, अनक कल वरताइंदा। कलयुग अन्तिम वसे साचे देस, नगर खेड़ा दिस किसे ना आइंदा। साहिब सुल्तान नर नरेश, भूपत भूप आप सलाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप वरताइंदा। साचा नाउँ साची भिच्छा, भिखक आप वरताईआ। गुरमुखां करे साची रिच्छा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अगला लेख आपे लिखा, पूरब दए चुकाईआ। सचखण्ड दा साचा हिस्सा, लोकमात धराईआ। रसना रस गया फिका, वख अमृत आप भराईआ। नेत्र लोचण नैण जिस जन दरस डिठा, अनडिठड़ी वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम आपणा आप वरताईआ।

★ ७ माघ २०१८ बिक्रमी डडवां ★

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, निरगुण निरवैर वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, अजूनी रहित सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकारा वड बलवान, मूर्त अकाल भेव ना राईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता सति सरूपी नौजवान, बिरध बाल ना रूप धराईआ। श्री भगवान सच निशान, सति सतिवादी इक्क उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महान, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर नूर प्रगटाईआ। निरगुण नूर पुरख अकाला, आदि आदि वड्डी वड्याईआ। जोती जोत नूर निराला, निराकार करे सच रुशनाईआ। वसणहारा धाम निराला, सचखण्ड साचे बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल आपे कर, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। आप वसाए आपणा घर, हरि पुरख निरँजण सेव कमाइंदा। आपणा नूर आपे धर, एकँकारा रंग रंगाइंदा। आपणे दीपक आपे बल, आदि निरँजण डगमगाइंदा। आपणा पल्लू आपे फड़, अबिनाशी करता संग निभाइंदा। आपणे मन्दिर आपे खड़, श्री भगवान रूप धराइंदा। एका सुहाए साचा गढ़, पारब्रह्म प्रभ खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणे रंग समाइंदा। निरगुण

निराकार अटल्ल महल्ल, एका एक सुहाईआ। करे खेल आप अबचल, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणी धारा आपे रल, धार धार विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर धराईआ। निरगुण रूप आपे रख, निराकार खेल खलाइंदा। सति सरूपी हो प्रतख, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आदि जुगादि अलखना अलख, अलख अगोचर खेल कराइंदा। सर्बकल आपे समरथ, आपणा बल आप वखाइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे वस, सच सिँघासण आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, बेअन्त वड वड्याईआ। आपणी महिमा आपे जाणे अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणी धार आप वखाईआ। आपे नार आपे कन्त, आपे साची सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा पुरख अबिनाशा आप कराईआ। सचखण्ड महल्ला उच्च अटारी, हरि साचा आप बणाइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारी, नूर नुराना डगमगाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए चार दीवारी, बाढी बणत ना कोए बणाइंदा। आपणा खेल अपर अपारी, अपरम्पर आपणा रूप धराइंदा। आपे दाता बण भिखारी, दर दरवेश वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याइंदा। सचखण्ड दुआरे खेल अपार, हरि साचा आप कराईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, तख्त निवासी सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची क्रिया आप कमाईआ। साची क्रिया करनेहारा, करता पुरख नाउँ धराइंदा। साचे मन्दिर कर पसारा, गृह आपणा रंग रंगाइंदा। निर्मल दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दुआरा साचा रंग, सो पुरख निरँजण आप रंगाईआ। आप सुहाए सेज पलँघ, पावा चूल ना कोए रखाईआ। उपर बैठ सूरा सरबंग, शाह पातशाह हुक्म चलाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नू, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। करे खेल श्री भगवन, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड साचा आप वसाईआ। सचखण्ड साचा गया वस, हरि जू आप वसाया। आपे जाणे आपणा रस, रस रस आप उपाया। आपे वेखे नस्स नस्स, दिशा कुण्ट वंड ना कोए वंडाया। आपे करे सति प्रकाश, असति नज़र कोए ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा कर त्यार, करे खेल अपर अपार, आपणी धारा आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआर अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्लड़ा, निरगुण बैठा आसण लाईआ। एकँकार

करे खेल अगम्म अगम्मड़ा, अगम्मड़ी कार कमाईआ। आदि निरँजण आपे बलड़ा, जोती जोत नूर रुशनाईआ। श्री भगवान साचा फ़रमाण एका घलड़ा, धुर फ़रमाणा आप समझाईआ। अबिनाशी करता फड़ फड़ पलड़ा, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म आपणा वेस वटाईआ। हरि का भेख अपार, हरि हरि आप कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, राजन राज वेस वटाइंदा। तख्त निवासी बण साकार, निराकार खेल कराइंदा। जोती जाता नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। सचखण्ड महल्ले सच दरबार, धुर दरबारी आप लगाइंदा। सेवक सेवादार बण चोबदार, दर दरवेश सीस झुकाइंदा। आपे जोड़ जोड़ करे निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। आपे देवे देवणहार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। करे खेल अपर अपार, आपणी रचना आप रचाइंदा। रच रच वेखे वेखणहार, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वसाइंदा। सचखण्ड दुआरा अपर अपार, हरि साचा आप उपाईआ। ना कोई दीसे चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना कोई रवि ससि उज्यार, सूरज चन्न ना कोए रुशनाईआ। मंडल मण्डप ना कोए अधार, लोआं पुरीआं ना वंड वंडाईआ। ना कोई शब्द नाद धुन्कार, रागी राग ना कोए सुणाईआ। ना कोई गुरू पीर अवतार, साध सन्त नज़र ना आईआ। ना कोई विष्न ब्रह्मा शिव करे पुकार, चार वेद ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई त्रैगुण माया वेखे भण्डार, रजो तमो सतो ना खेल कराईआ। ना कोई पंज तत्त काया दिसे आकार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन कोए ना पाईआ। ना कोई हड्ड मास नाड़ी बूंद रक्त करे प्यार, नारी कन्त ना कोए बणाईआ। ना कोई जल थल जंगल जूह उजाड़ पहाड़, समुंद सागर ना कोए उपाईआ। ना कोई लख चुरासी घाड़न घड़े बण ठठयार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई तीर्थ तट किनार, सरोवर सर ना कोए सुहाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत करे पुकार, गीता ज्ञान ना कोए सुणाईआ। अञ्जील कुरान ना कोए विचार, तीस बतीसा ना कोए गाईआ। ना कोई खाणी बाणी दए अधार, बाण निराला तीर ना कोए लगाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, निरगुण आपणा आसण लाईआ। करता पुरख करनेहार, आपणी खेल आप कराईआ। सचखण्ड सोहे बंक दुआर, बंक दुआरी आप सुहाईआ। राउ रंक ना कोए सिक्दार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप बणाईआ। सच दुआरा गया बण, हरि जू आप बणाया। ना कोई जननी ना कोई जन, मात पित ना कोए अख्वाया। करे खेल श्री भगवन, आपणी रचना आप रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहाईआ। निरगुण बणाए साची बणत, निरगुण वेखे चाँई

चाँईआ। निरगुण काया ना जाणे आदि अन्त, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, आपणा खेल आप वरताईआ। सचखण्ड दुआरे हरि जू वड़या, सति आपणा आसण लाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, घड़ घड़ आपणी बणत बणाईआ। आप सुहाए आपणा दरया, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। आपणा नूर आपे वरया, नार कन्त आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया आपे आसा, आसावन्त आप अख्वाइंदा। आपे चरन आप भरवासा, सीस आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपे खेल आप तमाशा, खेलणहार आप हो जाइंदा। आपे मंडल आपे रासा, आपे गोपी काहन नचाइंदा। आपे सचखण्ड दुआरे कर कर वासा, सचखण्ड निवासी नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निराकार निरवैर रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। रूप रंग ना कोए रेख, वड्डा हरि वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे वसे साचे देस, महल अटल कर रुशनाईआ। आदि आदि ना लिख्या किसे लेख, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आप वरताईआ। आपे दाता बण भिखारी, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे दानी देवणहारी, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आपे वेखे विगसे करे विचारी, वेखणहारा भेव खुल्हाइंदा। आपे महल अटल सुहाए मनारी, उच्च अटल्ल नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भिच्छया आप वरताइंदा। साची भिच्छया साची दात, हरि पुरख निरँजण आप वरताईआ। आदि आदि इक्क इकांत, आपणी कल वरताईआ। आपणा बंधे आपे नात, नाता निरगुण नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाण, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। नार कन्त कर परवान, साची सेजा आप सुहाइंदा। निरगुण निरगुण कर प्रधान, निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। निरगुण मात पित बण पूत बाल निधान, बाली बाला वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी खेल कराइंदा। निरगुण पिता निरगुण माई, निरगुण पूत सपूता जाया। निरगुण दाया निरगुण दाई, हरि आपणा खेल कराया। निरगुण गृह वज्जे वधाई, निरगुण निरगुण रिहा सुणाया। निरगुण वेखे चाँईं चाँईं, दर आपणे फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आप वड्याआ। निरगुण उपज्या पूत सपूता छोटा बाला, हरि साचा सच उपाईआ। करे खेल आप निराला, पुरख अकाला बेपरवाहीआ। सचखण्ड वसाए सच्ची धर्मसाला, दरगाह साची आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवे माण माण सहिज सुखदाईआ। छोटा बाला कर त्यार, हरि जू खेल कराया। जोती अंदरों

३४१
११

साची धार, शब्दी रूप वटाया। एका घर करे प्यार, एका आपणी गोद सुहाया। एका वस्त देवे दातार, दाता दानी आप वरताया। एका बख्शे चरन आधार, चरन चरनोदक मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाया। साचे सुत जाणा उठ, निरगुण आख सुणाया। साहिब दयाल गया तुट्ठ, रहिमत रहीम कमाया। अमृत चरनामित एका घुट्ट, चरन चरन नाल रगड़ाया। सचखण्ड निवासी आपणे अन्तर गया फुट्ट, तेरा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ रखाया। सुत शब्द मंगे दान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ बाला बाल नादान, दर बैठा सीस झुकाईआ। तूं सचखण्ड वसे सच मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, कवण धाम मोहे दए बहाईआ। पुरख अबिनाशी सूरबीर महांबली अख्वाइंदा। छोटे बाले देवे धीर, धीरज आपणी आप धराइंदा। मैं चोटी चढ़ बैठा अख़ीर, मेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत आप समझाइंदा। शब्द सुत कर ध्यान, हरि हरि आख सुणाया। तेरा बणावां इक्क मकान, थिर घर नाउँ रखाया। अंदर वड़ना चतुर सुजान, तेरी महिमा गणत ना राया। तेरा मेला श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दए सुहाया। थिर घर बणे तेरा दुआरा, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। घर विच घर कर त्यारा, गृह वेखे चाँईं चाँईंआ। निर्मल दीआ कर उज्यारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र नैण नैण खुल्ाईआ। चरन कँवल सच सहारा, आदि जुगादि समझाईआ। तेरा रूप अपर अपारा, नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वार रिहा समझाईआ। एका वार सुण ला बात, हरि जू आख सुणाया। थिर घर दिती साची दात, साची वंड वंडाया। तेरा लेखा आदि जुगादि, जुग जुग आप जणाया। तेरे अन्तर मेरा खात, सच भण्डारा इक्क भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाया। साचे सुत हो त्यार, निरगुण आख सुणाया। मेरा तेरा इक्क विहार, बिवहारी आप वखाईआ। तेरी सेजा कन्त भतार, नर नरायण वेख वखाईआ। तेरी खोल्ां आप किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाण, हरि हरि आख सुणाया। सुत दुलारे बल बलवान, प्रभ साचा होए सहाया। निरगुण खोल्हे इक्क दुकान, साचा हट्ट जणाया। किरपा करे श्री भगवान, आपणा पर्दा लाहया। तेरे अंदर नूर महान, आपणा जल्वा दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराया। साची

करनी करे करतार, आपणा रंग वखाईआ। तेरे अन्तर आपणी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। आपे विश्व कर त्यार, विष्नूं नाउँ रखाईआ। आपे अमृत भर भण्डार, कँवल कँवला रूप वटाईआ। आपे खिड़े सच्ची गुलज़ार, पत्त डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत रिहा समझाईआ। साचे सुत साची वाग, प्रभ तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। तेरा रूप इक्क चिराग, विष्नूं हरि प्रगटाइंदा। विष्नूं अन्तर आपे जाग, पारब्रह्म प्रभ वंड वंडाइंदा। ब्रह्म मेला कन्त सुहाग, कन्त कन्तूहल खेल कराइंदा। आपणी रचना रच रच आदि, हरि आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे आपे खड़, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। थिर घर दुआरा आपे खोल्ह, हरि साचे सच जणाईआ। आपणे कंडे तोले तोल, तोलणहार इक्क अख्वाईआ। आपणे अन्तर आपे मौल, मौला आपणा रूप वटाईआ। आपे भरे नाभ कँवल, कँवल नाभ आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर दुआरे माण दवाईआ। थिर दुआरे तेरा माण, चरन कँवल शरनाईआ। उपर बैठ श्री भगवान, गृह वेखे चाँईं चाँईंआ। विष्न ब्रह्मा कर परवान, धूंआँधार रिहा समाईआ। आपे शंकर देवे दान, शरअ आपणी आप समझाईआ। तिन्ने चेले कर परवान, जोती माता नाल प्रनाईआ। जोती माता खेल महान, साचा सच कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पारब्रह्म बेअन्त वड्याईआ। साचे सुत सुत दुलारे, हरि जू आख सुणाया। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे दुलारे, दोए दोए रूप आप वटाया। तिन्नां लेखा जाणे जानणहारे, दर साचे मंग मंगाया। हुक्मी हुक्म वरते वरतारे, धुर फ़रमाणा आप सुणाया। उठो उठ उठ बल धारे, बल आपणा आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल खला, भेव अभेद छुपाइंदा। त्रै त्रै बैठे सीस झुका, शब्दी वंड वंडाइंदा। एका गुण आपणा वरता, गुण दाता दया कमाइंदा। एका भिच्छया रिहा पा, भिखक झोली आप भराइंदा। आपणी सिख्या रिहा समझा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सेवा रिहा लगा, सेवक सेव सच वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कारे आप लाइंदा। साची कार करे करतार, एका वार समझाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी धार चलाईआ। निरगुण निरगुण इक्क विहार, बिवहारी आप समझाईआ। सुत दुलारा वड बलकार, विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर भिखार, बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दर तेरे मंग मंगाईआ। एका दे दे वस्त अपार, अतोट अतुट रखाईआ। तेरा नेत्र दरस दीदार, आदि जुगादि नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा गुण रिहा समझाईआ। आपणा गुण हरि जू

दस्स, आपणी दया कमाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण जाए वस, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। निरगुण देवे आपणा रस, रसक रसक एका रस मुख चुआइंदा। निरगुण अंदर निरगुण फस, आपणा मुख छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग साचा कम्म, हरि जू आख सुणाइंदा। करे खेल पुरख अगम्म, अगम्मड़ी खेल वखाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। ना कोई पवण स्वासी दम, रसना जिह्वा ना कोए हलाइंदा। ना कोए हरख़ सोग ना ग़म, चिंता दुःख ना कोए लगाइंदा। निशान तेरे देवे हथ्थ, एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से साचा राह, साची सिख्या इक्क सिखाइंदा। साची सिख्या साचा राह, सति सतिवादी आप जणाईआ। तिन्नां विचोला इक्क मलाह, एका हरि अख्वाईआ। शब्दी शब्द दए सलाह, निरगुण निरगुण कर पढ़ाईआ। आदि पकड़े आपे बांह, अन्त होए सहाईआ। रथ रथवाही सेव कमा, साचा रथ आप चलाईआ। महिमा अकथ दए सुणा, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। समरथ आपणा नाउँ धरा, धुर दी बाणी आप जणाईआ। अलखणा अलख इक्क अलख जगा, एका घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, आदि पुरख आप कराया। सच सिँघासण बैठ सच महल्ला, सचखण्ड दुआर उपाया। विष्न ब्रह्मा शिव अन्तर आपे रला, नूर नुराना डगमगाया। निरवैर फड़ाया आपणा पल्ला, आपे आपणी गंढु बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराया। साचा खेल हरि कराउणा, हरि करता आप जणाइंदा। शब्दी तेरा बल वखाउणा, बल आपणा नाल मिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाउणा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़त घड़ाउणा, घड़ घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। आपणी रंगण आप रंगाउणा, रंग रंगीला रंग जणाइंदा। घर घर नाद मृदंग वजाउणा, अनादी नाद आप सुणाइंदा। घर घर दीपक जोत जगाउणा, जोत निरँजण वंड वंडाइंदा। घर घर अमृत जाम प्याउणा, निझर झिरना आप झिराइंदा। घर घर आपणा डेरा लाउणा, आत्म परमात्म खेल कराइंदा। घर घर ईश जीव मिलाउणा, जगदीश रूप वटाइंदा। घर घर आपणा पर्दा पाउणा, मुख नक़ाब टिकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव समझाउणा, साची सिख्या इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तुध बिन दिसे अन्ध घोर, नूर नज़र कोए ना आईआ। साहिब सुल्तान हथ्थ तेरे डोर, जिउँ भावे तिउँ चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, किस बिध तेरी सेव कमाईआ। कवण बिध प्रभ तेरी सेव, हउँ बालक आप कमाईआ। तूं दाता दानी अलख भेव, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ।

३४४
११

तूं आदि जुगादि सदा नेहकेव, निहचल धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। साची वस्त दे दे दान, एका मंग मंगाईआ। तेरी सेवा करीए महान, चरन कँवल सच्ची शरनाईआ। तू रहिणा निगहबान, इक्क तेरी ओट रखाईआ। लख चुरासी तेरा निशान एका बूटा दए लगाईआ। तूं होणा सच्चा बागबान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त झोली पाईआ। एका वस्त देवे दात, आपणी दया कमाइंदा। तिन्नां विचोला कमलापात, घर साचे सोभा पाइंदा। त्रै त्रै लेखा इक्क इकांत, एका वार चुकाइंदा। त्रैगुण माया खेल तमाश, साची खेल वखाइंदा। रजो तमो सतो कर प्रकाश, सति आपणा रंग चढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे वसे पास, एका बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। त्रैगुण माया हरि उपा, एका वंड वंडाईआ। तिन्नां झोली दए भरा, अतोट अतुट रखाईआ। नाता जोड़े सहिज सुभा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। एका रंग दए रंगा, दूजी वार उतर ना जाईआ। निरगुण पल्ला दए फड़ा, निरगुण खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाईआ। त्रैगुण माया झोली पा, आपणी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, साचा बेड़ा आप उठाइंदा। साची घाड़त लैणी घड़ा, बण ठठयार सेव कमाइंदा। तिन्ने बैठे सीस झुका, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। खाली हथ्थ रहे वखा, भण्डारा नज़र कोए ना आइंदा। आपणा भेव दे जणा, अभेत तेरा भेव नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे सीस झुकाइंदा। दर दुआरे झुकया सीस, सीस सीस निवाईआ। करे खेल हरि जगदीश, जगदीशर वड वड्याईआ। त्रैगुण माया पीसण पीस, साची घाल घाल कमाईआ। एका नाम इक्क हदीस, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। साचा खेल पुरख करतार, आपणा आप जणाइंदा। उठो तिन्ने लओ बल धार, बलधारी आप उठाइंदा। साचा वणज वणज वपार, हट्ट हटवाणा आप कराइंदा। पंचम मेला अपर अपार, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण रूप कर त्यार, सरगुण आपणा वेख वखाइंदा। वंडे वंड वंडणहार, साची वंड आप कराइंदा। मन मति बुध कर पसार, इच्छया भिच्छया झोली पाइंदा। त्रैगुण मेला एका वार, त्रैगुण अतीता आप कराइंदा। माया रच आप करतार, कुदरत कादर खेल खलाइंदा। मुकामे हक़ सांझा यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मा शिव फड़ साचे धन्दे आपे लाइंदा। साचे धन्दे गए लग्ग, हरि जू आप लगाया। करे खेल सूरा सरबग, आपणा हुक्म सुणाया। एका नाद गया वज्ज, निराकार आप वजाया। एका वेखे साची हद्द, पारब्रह्म ब्रह्म

आपणी वंड वंडाया। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, आपे खेल कराया। लख चुरासी निशाना गड्ड, तीर निराला इक्क चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल बेपरवाहया। लख चुरासी घाड़न घड़ना, हरि जू आख सुणाइंदा। निरगुण रूप सरगुण धरना, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। पुरीआं लोआं आपे वड़ना, विष्न ब्रह्मा शिव खेल कराइंदा। रवि ससि किरनी किरन प्रकाश करना, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं कादर करता करीम बेऐब परवरदिगार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। साचे धन्दे लाया कार, सेवक बण बण सेव कमाईआ। लख चुरासी भाण्डा घड़े बण ठठयार, त्रैगुण माटी पोच पुचाईआ। निरगुण सरगुण वेख विचार, निराकार तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि अन्त अन्त आदि, कवण रूप धराईआ। आदि रूप अपर अपार, हरि हरि आख सुणाया। लख चुरासी कर त्यार, घट घट डेरा लाया। निरगुण ब्रह्म ब्रह्म पसार, पारब्रह्म वंड वंडाया। त्रैगुण माया भर भण्डार, रचत रचत रचाया। ईश जीव हो उज्यार, जगदीश खेल कराया। विष्नूं बणे सच वरतार, घर घर रिज़क सबाया। ब्रह्मा ब्रह्म रूप आधार, पारब्रह्म शरनाया। शंकर लहिणा दए उतार, जो घड़या भन्न वखाया। शब्द विचोला विच संसार, जुग जुग मेला मेल मिलाया। करा खेल निरगुण सरगुण धार, सरगुण आपणी गंढु पुवाया। पंज तत्त काया कर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्ह्हाया। पंज तत्त वेखां काया गढ़, हरि जू आख सुणाया। घट घट अंदर आपे वड़, आपणा डेरा लाया। डूँग्घी भँवरी आपे वड़, बैठा मुख छुपाया। नौ दुआरे जगत घर, जगत तृष्ना विच मिलाया। सुखमन टेढी बंक अंदर धर, अन्ध अन्धेर वखाया। ईड़ा पिंगल रहे लड़, साचा बन्धन पाया। आत्म सरोवर आपे भर, कँवल नाभ उलटाया। जोत निरँजण अंदर धर, दीप आप छुपाया। अनहद नाद वज्जे धुंन, रागी राग अल्ह्हाया। पंचम मेला एका गुण, गुणवादी आप रखाया। लख चुरासी विच्चों चुण, पंज तत्त माणस दए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, त्रै त्रै मेला इक्क समझाया। त्रै त्रै मेला साचा बन्धन, लख चुरासी बन्धन पाईआ। निरगुण तागा निरगुण तन्दन, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। निरगुण कटणहारा फंदन, निरगुण नाम कटार हथ्थ रखाईआ। निरगुण वसणहार ब्रह्मण्डन, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लाईआ। निरगुण देवे इक्क अनन्दन, निजानंद करे रसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची माया विच मिलाईआ। साची माया माया सच्च, हरि साचे सच वरताया। काया माटी भाण्डा कच्च, कंचन रूप वटाया। मन मनुआ अन्तर रिहा

नच्च, नटुआ नट स्वांग वखाया। पंच विकारा रिहा हस्स, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बन्धन आपे पाया। साचा बन्धन तेरा मन्जूर, त्रै त्रै आख सुणाईआ। तेरा हुक्म मन्नया ज़रूर, ज़रूरत तेरी पूर कराईआ। तूं साहिब हाज़र हज़ूर, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। निरगुण जोत तेरा नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। तूं सर्बकला भरपूर, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला लएं मिलाईआ। कवण वेला लएं मेल, प्रभ एका दया कमाईआ। कवण वक्त होएं सज्जण सुहेल, सदा सदा सुखदाईआ। कवण दर सुहाएं गुरू गुर चेल, गुर चेला रंग रंगाईआ। कवण मन्दिर करे प्रकाश बिन बाती तेल, जोती जोत डगमगाईआ। कवण धाम वसें नवेल, इक्क इकल्ला आसण लाईआ। आपणा दस्स अचरज खेल, तेरा भेव ना जाणया राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण बिध मेला लएं मिलाईआ। मेरा मेला विच संसार, निरगुण आख सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। दो जहानां हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दयां आधार, जेरज अंडां जोत जगाइंदा। उत्भुज सेत्ज करां प्यार, जूनी जून आप भुवाइंदा। लख चुरासी बण वरतार, वस्त अमोलक नाम वरताइंदा। लोकमात आवां वारो वार, जुग जुग वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण कर आकार, गुर अवतार खेल कराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वेख विचार, ब्रह्म वेता सोभा पाइंदा। एका नाद शब्द धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। निर्मल जोती जोत उज्यार, जोती नूर डगमगाइंदा । साचे भगतां करां प्यार, प्रेम बन्धन एका पाइंदा। साचे सन्तां लवां उठाल, आप आपणा पर्दा लाहइंदा। गुरमुख साचे करां निहाल, नेत्र नैण नैण दरसाइंदा। गुरसिख साचे चरन बहाल, चरन चरनोदक मुख प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। निरगुण बण बण सरगुण आउणा, हरि जू आख सुणाईआ। आपणा नाम आप प्रगटाउणा, कोटन कोटि रूप वखाईआ। जुग चौकड़ी सेवा लाउणा, साची सेव आप समझाईआ। नौ नौ लेखा आप मुकाउणा, चार चार वंड वंडाईआ। एका चौका बन्धन पाउणा, इक्क इकल्ला सच्चा माहीआ। चौथे पद रंग वखाउणा, आप आपणे दर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, हरि जू दया कमाइंदा। दूजे सृष्टी तोलां तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। तीजे ज्ञान नेत्र देवां खोल्ह, अनभउ प्रकाश कराइंदा। चौथे चौथे पद जावां मौल, मौला आपणा नाम रखाइंदा। पंचम पूरा करां कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप जणाइंदा। साचा कौल करां

इकरार, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। खेलां खेल अपर अपार, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। विष्नूं तेरा भण्डार, अतोट अतुट रखाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसार, चार वेद करां पढ़ाईआ। चारे जुग विच संसार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। चारे कुण्ट कर उज्यार, चार वरनां बन्धन पाईआ। चारे खाणी बण वरतार, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग दए समझाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नव नौ लेखा अपर अपार, चार चार वज्जे वधाईआ। गुर अवतार बण बण सेवादार, लोकमात सेव कमाईआ। खाणी बाणी कर त्यार, ज्ञान ज्ञान नाल मिलाईआ। उच्ची कूक कूक पुकार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह सुणाईआ। पीर पैग़म्बर मददगार, लेखा मुके ना जगत लोकाईआ। मुलां शेख़ जायण हार, मुसायक मिले ना कोए वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पार, ब्रह्मे तेरा मनवन्तर वेख वखाईआ। सूरज चन्न शर्मसार, रवि ससि मुख शरमाईआ। लोआं पुरीआं हाहाकार, गण गंधर्ब रहे कुरलाईआ। करोड़ तेतीसा करे गिरयाज़ार, सुरपति इन्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी जाए बीत, हरि गेड़ा गेड़ दिवाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चले रीत, वरन बरन खेल कराइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त परखे नीत, नीतीवान घर घर डेरा लाइंदा। घर घर नाता जोड़े गुर दर मन्दिर मस्जिद मसीत, शिवदुआले मट्ठ बणाइंदा। निरगुण सब तों बैठा रहे अतीत, दिस किसे ना आइंदा। कोई कहे त्रैगुण अंदर होया भीत, भीतर अंदर आपणा मुख छुपाइंदा। कोई उच्ची कूक कूक सुणाए गीत, रसना जिह्वा नाल मिलाइंदा। हरि का खेल सदा अनडीठ, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव देवे वर, आपणा मेला आप जणाइंदा। अन्तिम मेला एका वार, एका घर कराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी उतरे पार, जुग जुग गेड़ा गेड़ मुकाईआ। ब्रह्मा वेता लिख लिख थक्के वेद चार, चारों जुग वंड वंडाईआ। शास्त्र सिमरत करन विचार, हरि विचार विच किसे ना आईआ। वेद व्यासा बण लिखार, पुराण अठारां दए समझाईआ। अक्खर अक्खर लख चार, सतारां हज़ार गणत गणत नाल मिलाईआ। गीता ज्ञान अधार, अठारां भाग वेखे चाँईं चाँईंआ। अञ्जील कुरान करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बाणी खाणी करे ख़बरदार, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। गुर अवतार गए हार, हरि का अन्त कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। आपणा भेव दस्से राह, रैहबर हरि अख्वाइंदा। चार जुग दी इक्क सलाह, साची चौकड़ बंध बंधाइंदा। तेई अवतार लए प्रगटा, परम पुरख प्रभ सेव कराइंदा। अठारां भगत दए जणा, जन जननी माण धराइंदा।

गुर दस जोत जगा, जागरत जोत डगमगाइंदा। ईसा मूसा कर रुशना, संग मुहम्मद खेल खलाइंदा। अन्तिम सब मंग के गए पनाह, तुध बिन थाँ अवर ना कोए वखाइंदा। मुकामे हक़ वसे इक्क खुदा, ख़ालक ख़लकत सोभा पाइंदा। आपणी रहिमत रहीम रहिमान दए कमा, ईमान नज़र कोए ना आइंदा। सही सलामत बेपरवाह, साचे तख्त सोभा पाइंदा। नानक निरगुण गुण रिहा गा, निरँकारा एका नज़री आइंदा। गोबिन्द साची ओट तका, पुरख अकाल मनाइंदा। कोटन कोटि जीव जंत शास्त्र सिमरत वेद थक्के पढ़ा, पढ़ पढ़ पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कोटन कोटि हवनी हवन रहे करा, धूप दीप नाल मिलाइंदा। कोटन कोटि डूँग्घी कंदर बैठे डेरा ला, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाइंदा। कोटन कोटि अठसठ तीर्थ फेरा रहे पा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती संग ना कोए निभाइंदा। कोटन कोटि चीर रंग बैठे चढ़ा, साचा रंग ना कोए चढ़ाइंदा। कोटन कोटि दर दरवेश फेरी पा, साची अलख ना कोए सुणाइंदा। कोटन कोटि त्रैगुण माया कोलों पल्लू रहे छुडा, फड़या लड़ छुट ना जाइंदा। कोटन कोटि ब्रह्म ध्यान रहे लगा, ब्रह्म जोत ना कोए जगाइंदा। कोटन कोटि पारब्रह्म गए मुका, पारब्रह्म जन्म मरन विच ना आइंदा। कोटन कोटि आपणी अवस्था, ब्रह्म नाल गए मिला, ब्रह्म ब्रह्म जगत वड्याइंदा। कोटन कोटि हं हं गए समा, आपा चीन पर्दा कोए ना लाहइंदा। कोटन कोटि नाबीने बण बण आपणा आप गए भुला, भुल्ले मार्ग ना कोए लगाइंदा। कोटन कोटि साचे हुजरे चढ़ चढ़ गए बांग सुणा, आलमीन दिस किसे ना आइंदा। कोटन कोटि मकतब पढ़ अल्फ़ ये गए जणा, नुकता नून ना कोए गवाइंदा। कोटन कोटि पैंती अक्खरीं घाड़त गए घड़ा, बावन अक्खर लेख ना कोए वखाइंदा। कोटन कोटि त्रैगुण माया प्रकृति विच रली रहे वखा, प्रकृति माया वंड ना कोए कराइंदा। कोटन कोटि संस्कृती सलोक रहे सुणा, आत्म सोहला राग ना कोए जणाइंदा। कोटन कोटि सुरती ध्यान रहे लगा, हरि जू ध्यान विच ना आइंदा। कोटन कोटि किरती किरत रहे कमा, क्रिया कर्म कांड बन्धन ना कोए तुड़ाइंदा। कोटन कोटि सुरती शब्द रहे मिला, शब्द सुरत घर ना कोए बहाइंदा। कोटन कोटि किंगरी मृदंग रहे वजा, साचा सारंगा हथ्थ ना कोए उठाइंदा। कोटन कोटि अनन्द मंगल रहे गा, आपणा अनन्द किसे ना आइंदा। कोटन कोटि सलोक छन्द पढ़ पढ़ रहे सुणा, आपणा पर्दा ना कोए चुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव प्रभ रिहा जणा, एका हुक्म सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम जावे आ, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध गवाइंदा। प्रगट होए आप खुदा, अमाम अमामा खेल कराइंदा। नबी रसूलां लए उठा, साचा कलमा कलाम पढ़ाइंदा। नूर इलाही जल्वा दए वखा, जाअली कम्म ना कोए कराइंदा। एका अल्ला राणी बख्शे सर्ब गुनाह, पाकी पाक दया कमाइंदा। निरगुण हो के फेरा आए पा, सरगुण आप जगाइंदा। सच सुहेला सोहला गा, ढोला आपणा नाम

वड्याइंदा। तोला बणे बण मलाह, साचा कंडा हथ्थ रखाइंदा। पर्दा ओहला दए चुका, दूई द्वैत मेट मिटाइंदा। एका ब्रह्म दए दरसा, ईश जीव मेल मिलाइंदा। जन भगतां उपर तरस कमा, मुर्शद मुरीद मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म दी हरस दए मिटा, पूरब लेखा आप चुकाइंदा। दर आयां बख्शे सर्ब गुनाह, तकसीर तदबीर आप बदलाइंदा। आपणी गोदी लए बहा, पिता मात आप हो जाइंदा। जगत नाता दए तुड़ा, भाई भैण साक सज्जण मात पित नारी कन्त संग ना कोए रखाइंदा। हरिजन साजण लए मिला, साचे सन्तां संग रखाइंदा। ग़रीब निवाज़न दया कमा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। लख चुरासी फंद कटा, एका नाम बन्धन पाइंदा। राए धर्म ना दए सज़ा, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाइंदा। लाड़ी मौत ना लए प्रना, जूनी जून ना कोए भुवाइंदा। सच बबाणे लए बहा, शब्दी शब्द उडाइंदा। लोआं पुरीआं पार करा, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाइंदा। थिर घर साचा आप खुल्हा, दर दरबारे सोभा पाइंदा। गुरसिख साचे दए टिका, आप आपणी खुशी मनाइंदा। पिछला लेखा सर्ब चुका, अगला मार्ग पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी कल वरते करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। हक़ हक़ीक़त पावे सार, लाशरीक इक्क खुदाईआ। विश्व वेखे सर्ब संसार, वास्तक आपणा रूप धराईआ। नमो सतो बोल जैकार, ब्रह्म मति इक्क पढ़ाईआ। तत्तव तत्त पार किनार, एका रत्त रंग रंगाईआ। एका इष्ट देव गुर अपर अपार, एका सीस जगदीश झुकाईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, एका राग अल्हाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका घर दए वसाईआ। एका तीर्थ तट किनार, इक्क सरोवर दए नुहाईआ। एका भगत भगवन्त करे प्यार, एका साचे सन्तां लए मिलाईआ। एका गुरमुखां देवे रंग चाड़्ह, एका गुरसिख वेखे चाँईं चाँईंआ। एका करे प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। एका मेटे पंचम धाड़, पंज दस करे कुड़माईआ। एका पंजी मारे मार, परपंच दए खपाईआ। एका दस्से साची कार, हरि नामे नाम रसाईआ। सोहँ शब्द सच जैकार, आत्म परमात्म, बन्धन पाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म दए अधार, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। ईश जीव इक्क घर बार, घर साचे खुशी मनाईआ। साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। वाहवा पाया कन्त भतार, प्रभ मिल्या एका माहीआ। कलयुग अन्तिम खेल अपार, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। निहकलंक महांबली अवतार, बल आपणा आप प्रगटाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, महल अटल करे रुशनाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़े पहाड़, चोटी आपणा रंग रंगाईआ। नाद शब्द धुन सच्ची धुन्कार, रागी साचा राग सुणाईआ। दो जहानां करे ख़बरदार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। निरगुण वसे ठांडे दरबार, सरगुण लोकमात रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ओम सति नमो

सति नाम सति बिन तत्त ब्रह्म मति, मित गत आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर एका धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सरगुण खेल वखाईआ। अड़ाउणी विच कदे ना अड़या, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। घर घर अंदर आपे चढ़या, आपणा पौड़ा आप लगाईआ। जगत विद्या किसे ना फड़या, भज्ज भज्ज थक्की सर्ब लोकाईआ। लुकया रहे किला गड़या, काया बंक मुख छुपाईआ। निर्भय होए कदे ना डरया, भय सीस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी अड़ाउणी लख चुरासी रिहा वखाईआ। लख चुरासी अड़ाउणी गई अड़, हरि जू आप अड़ाइंदा। आपणे मन्दिर ना सकण चढ़, डण्डा हथ्थ किसे ना आइंदा। सुखमन अंदर बैठे वड़, डूँघी गार पार ना कोए कराइंदा। नाता जुड़या सीस धड़, निरगुण रूप ना कोए समझाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी रहे पढ़, रसना जिह्वा सर्ब हलाइंदा। गुर का ज्ञान जो जन लए वर, आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध सन्त देवे साचा वर, हरि कन्त आप मिलाइंदा। आओ साधो उठो जागो, हरि जागरत जोत जगाईआ। आओ दर बणो हँस कागो, कागों हँस उडाईआ। आपणा दीप जगाओ चिरागो, जोती नूर करे रुशनाईआ। आपणा प्रीतम आपणा माही आपणा कन्त आपणे विच्चों लाधो, घर बैठा मुख छुपाईआ। जिस नूं गाउँदे प्रभ मेरा माधो, मधुर धुन नाल रलाईआ। उस साहिब नूं आपणे विच्चों काढो, मिल सतिगुर सच्ची शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तां संग सदा समाईआ। आओ सन्तो जाओ जाग, हरि साचा सच जगाइंदा। आत्म अन्तर इक्क वैराग, एका वार लगाइंदा। दुरमति मैल धोवो दाग, हरि साचा आप धुवाइंदा। एथे ओथे दो जहानां पकड़े वाग, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चरन धूढ़ी साचा माघ, मजन आप कराइंदा। रातीं सुत्तयां अंदर वड़ वड़ मारे वाज, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जिस दे पिच्छे घालण रहे घाल, महांकाल दीन दयाल गुरमुख लाल आप तराइंदा। आओ वेखो काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, सतिगुर पूरा आसण लाइंदा। करो दरस हो निहाल, निहचल धाम आप बहाइंदा। दो जहान करे प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाइंदा। अमृत जाम दए प्याल, उलटा कँवल आप कराइंदा। दीपक वेखो आपणे थाल, जोती जोत डगमगाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, गोबिन्द आपणा वेस वटाइंदा। गुरसिख वेखे साचे लाल, लाल लालन रंग रंगाइंदा। तेरे नेड़ ना आए काल महांकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन साचा संग रखाइंदा। सो चीने जिस वखाए चिन्न, आपणी दया कमाईआ। करे खेल प्रभू भिन्न भिन्न, भिन्नड़ी रैण नाल रलाईआ। कोटन कोटां विच्चों तेई अठारां दस लए गिण, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणा रंग आप वखाईआ। जिस चीनयां तिस पाया माण, घर साचे वज्जी वधाईआ। कथनी कथ कथ गाया गाण, रसना जिह्वा जगत सुणाईआ। मेरा साहिब श्री भगवान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सचखण्ड वसे सच मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। ओथे झुल्ले इक्क निशान, निशाने विच कदे ना आईआ। सदा सुहेला निगहबान, निगह मेहर इक्क उठाईआ। जिस जन देवे आपणा नाम दान, सो चीन चीन चीन सुख पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम बिन लिखयां पढ़यां दए जणाईआ। हरि का नाम ना किसे लिख्या ना किसे पढ़या, लिख्त विच किसे ना आइंदा। जुग जुग जन भगतां अंदर आपे धरया, पोथी खोल्ह ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम एका वार, एका घर टिकाइंदा। जिस अंदर नाम देवे रख, देवे माण वड्याईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, सरगुण करे जणाईआ। लख चुरासी विच्चों रख, आप आपणे मेल मिलाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, एका राह चलाईआ। आवे जावे नस्स नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका बूझ बुझाईआ। जगत मनवन्तर कोटन काल, बेहाली बेहाल हाल गंवाईआ। हरि का हल्ल ना होया किसे कोलों सवाल, कोटन कोटि सवाली गए फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार करदे गए भाल, सेवक बण बण सेव कमाईआ। वरन बरन बण दलाल, ज़ात पात दीन मज़्ह़ब वंड वंडाईआ। पुरख अबिनाशी सब तों वसे निराल, निराकार नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जुग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ ८ माघ २०१८ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह सोहल ज़िला गुरदासपुर ★

सचखण्ड निवासी निराकार, निरवैर खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। एकँकारा शाहो भूप वड सिक्दार, आदि निरँजण नूर धराइंदा। अबिनाशी करता आदि जुगादी खेल न्यार, श्री भगवान आप कराइंदा। पारब्रह्म साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, साचा हुक्म आप वरताइंदा। थिर घर एका खोल्ह कवाड़, शब्दी सुत आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल पुरख करतार, करता पुरख आप कराईआ। निरगुण निरगुण हो त्यार, दर घर साचे सोभा पाईआ। भूपत भूप बण सिक्दार, राजन राज नाउँ धराईआ। दर दरवेश बण भिखार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। वस्त अमोलक एका थार, धुर दरबार आप वरताईआ। देवणहारा एकँकार, अकल कल बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरे खेल न्यार, हरि ख़ालक आप खलाईआ।

३५२
११

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख बेपरवाहीआ। आदि पुरख हरि खेल अपारा, अपरम्पर धार चलाइंदा । निरगुण निरगुण नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। तख्त निवासी हुक्म करे वरतारा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। घर विच घर कर त्यारा, थिर घर साचा आप बणाइंदा। शब्द सुत सुत दुलारा, पूत सपूता आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। आपणा रूप आपे कर, हरि हरि वेख वखाइंदा। आपणे मन्दिर आपे वड़, आपे सोभा पाइंदा। आपणे दर आपे खड़, आपणा दरस कराइंदा। आपणा पल्लू आपे फड़, आपे बन्धन पाइंदा। करे खेल नारी नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताइंदा। आपणी कल श्री भगवन्त, आदि पुरख वरताईआ। खेले खेल महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आपे नाउँ आपे मंत, बोध अगाध आप अख्वाईआ। आप सुहाए साचा धाम बेअन्त, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा आप प्रगटाईआ। थिर घर साचा कर त्यार, हरि शब्दी माण दिवाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। निरगुण दाता निरगुण धार, निराकार आप प्रगटाइंदा। महल अटल उच्च मिनार, सोभावन्त आप सुहाइंदा। दीवा बाती इक्क उज्यार, तेल बाती ना कोए टिकाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए विचार, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। एका घर कर त्यार, घर घर विच आप सुहाइंदा। साचे तख्त बैठ निरँकार, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच महल्ला एकँकार, एका घर सुहाईआ। देवे वर सच्ची सरकार, वर दाता नाउँ धराईआ। अमुल अतुल भरे भण्डार, तोल्यां तोल ना कोए जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल साचे घर, करता पुरख कराइंदा। निरभउ रखाए ना कोए डर, आपणा भय सर्ब जणाइंदा। साचे मन्दिर आपे चढ़, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। सुत दुलारा आपे फड़, आपणा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिफ्त सलाह एका एक जणाइंदा। आपे सिफ्त आप सलाह, जैकार आप हो जाईआ। आपे शहिनशाह शाह पातशाह, तख्त निवासी नाउँ धराईआ। आपे आदि पुरख बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। आपे सचखण्ड दुआरा घाड़न घड़त ल्या घड़ा, आपे थिर घर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सच महल्ला आप प्रगटाईआ। सच महल्ला सच निशान, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाया। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, आप आपणी दया कमाया। एकँकारा कर ध्यान, आप आपा वेख वखाया। आदि निरँजण नूर महान, दीआ

बाती इक्क जगाया। अबिनाशी करता निगहबान, मेहरवान वेस वटाया। श्री भगवान सच निशान, सति सतिवादी आप उठाया। पारब्रह्म प्रभ मंगे दान, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। सचखण्ड दुआर कर परवान, हरि आपणा आसण लाया। चरन कँवल इक्क ध्यान, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। थिर घर वेखे गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचे सुत आप समझाया। साचे सुत बाल नादान, शब्दी शब्द जणाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। एका नाउँ सच निशान, निरँकारा करे पढ़ाईआ। दरगाह साची कर परवान, सच प्रधानगी हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा दए सुणाईआ। सच संदेशा हरि करतार, एका एक सुणाइंदा। सुत दुलारे हो त्यार, पुरख अबिनाशी सेवा लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा भण्डार, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। पंज तत्त वणज वणजार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल कराइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़ बण ठठयार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। एका नाउँ शब्द धुन्कार, अनादी नाद नाद अल्हाइंदा। घर घर मन्दिर कर त्यार, गृह गृह सोभा पाइंदा। मेरा नूर तेरा उज्यार, जोती जोत डगमगाइंदा। दीआ बाती कर त्यार, जोत निरँजण नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप समझाइंदा। साचे मार्ग जाणा लग्ग, हरी हरि हरि आप जणाइंदा। वेखणहार सूरा सरबग, आप आपणा भेव छुपाइंदा। रवि ससि दीपक जायण जग, प्रकाश प्रकाश नाल कराइंदा। एका डोरी एका तग, एका बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप समझाइंदा। साची सेवा करनी मात, लग्ग मातर ना कोए जणाईआ। लख चुरासी डूँग्घा खात, हरि तेरी झोली रिहा भराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इक्क जमात, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण निरगुण नाता इक्क इकांत, पुरख बिधाता आप बणाईआ। एका देवे साची दात, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साची सेवा विच संसार, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। शब्दी शब्द हो उज्यार, निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। साचा ढोला कर त्यार, पर्दा ओहला आप चुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदार, आलस निंद्रा आप मिटाइंदा। लख चुरासी पावे सार, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। आपणी किरपा आपे धार, धरनी धरत धवल वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी श्री भगवान, करता आप कमाईआ। लख चुरासी खेल महान, ईश जीव वड्याईआ। आत्म परमात्म देवे दान, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। एका राग सुणाए कान, अनाद अनादी नाद अल्हाईआ। एका मन्दिर वेख मकान, बंक गढ़ दए सुहाईआ। निरगुण सरगुण

कर प्रधान, लोकमात वेख वखाईआ। एका पूजा पाठ जहान, आपणा नाउँ करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, चरन कँवल सची शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। एका दात हरि हरि नाउँ, आपणी आप वरताइंदा। करे खेल अगम्म अथाहो, अलख आपणी आप जगाइंदा। आपे पिता आपे माउँ, बाल अञ्याणे गोद बहाइंदा। आपे मार्ग पाए फड़ फड़ बाहों, साचा राह आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल पुरख अगम्म, अगम्मड़ा आप कराईआ। आपणे अन्तर आपे जम्म, आपणा रूप धराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बेड़ा बन्नू, खेवट खेटा सेव कमाईआ। एका देवे नाम धन, एकँकारा सोभा पाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। एका नाद एका धुन, एका वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कारे आपे लाईआ। साची कार लख चुरासी देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी कर प्रधान, साची वंड वंडाइंदा। निष्अक्खर देवे इक्क ज्ञान, ब्रह्मा वेता चारे वेद पढ़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल महान, कलयुग आपणी गंढ पुवाइंदा। नौ दर खोलू जगत दुकान, जगत वासना मेल मिलाइंदा। अन्तर अन्तर खेल महान, घर घर विच सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साचा खेल विच संसार, निरगुण सरगुण आप कराईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, जुग जुग वेखे चाँईं चाँईंआ। नाउँ रखाए गुर अवतार, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। साचे सन्तां वखाए सच्ची धर्मसाल, घर बैठा साचा माहीआ। गुरमुखां तोड़ जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरसिखां चरन प्रीती निभे नाल, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। सति पुरख निरँजण दीन दयाल, सति सतिवादी वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी खाए काल, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाईआ। जुग चौकड़ी उतरे पार, थिर कोए रहिण ना पाया। विष्न ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ार, हरि का भेव किसे ना आया। गुर अवतार सेवादार, बण बण सेवक सेव कमाया। भगत भगवन्त मंगण छार, दोए जोड़ सीस झुकाया। सन्त साजण करन पुकार, ख़ाली झोली रहे वखाया। गुरमुख लभ्भण मीत मुरार, जगत जहान फोल फुलाया। गुरसिख मंगण इक्क अधार, चरन शरन सच्ची शरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाया। जुग जुग बन्धन आपणा पा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। नाउँ निरँकारा आप अखवा, नर नरायण वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी ढोला गा, साचा चोला आप बदलाइंदा। पर्दा ओहला आप रखा, डूँग्घी भँवरी मुख छुपाइंदा।

साचा तोला बण शहिनशाह, लख चुरासी तोल तुलाइंदा। हरिजन साचे लए जगा, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणी करनी जुगो जुग, जुग करता आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर औध जाए पुग, वेला अन्त दए समझाईआ। निरगुण सरगुण अंदर लुक, आपणा खेल वखाईआ। भगत भगवन्त लए चुक्क, साचे सन्त लए उठाईआ। गुरमुखां रखे एका ओट, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। गुरसिखां देवे नाम भण्डार अतोट, निखुट कदे ना जाईआ। तन नगारे लग्गे चोट, नाम रबाब आप वजाईआ। निरगुण निर्मल जगाए जोत, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। माया ममता हउमे हंगता कढ्ढे खोट, जगत तृष्ना दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, जुग जुग गेड़ा आप भुवाईआ। जुग जुग गेड़ा गेड़नहार, कोटन कोटी काल बिताईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव कहिण पुकार, दर बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार, जुग जुग लोकमात फेरा पाईआ। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर मुलां शेख़ हो शाह अस्वार, आपणा डंक गए वजाईआ। थिर रहे ना कोए संसार, सब दा लेखा दए मुकाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, आपणी कल आप वरताईआ। लेखा जाणे वेद चार, चारे खाणी बूझ बुझाईआ। चारे बाणी बन्ने धार, चारे वरनां करे पढ़ाईआ। चारे जुग पावे सार, चार यारी रंग वखाईआ। अन्तिम लहिणा देणा सब दा देवे उतार, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। नव नौ चार हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी विच जहान, रूप अनूप वटाइंदा। गुर अवतार शब्द ज्ञान, अक्खर वक्खर आप जणाइंदा। हुक्मी हुक्म सति हुक्मरान, धुर संदेशा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणा रंग वखाइंदा। आदि अन्त आपणा रंग, हरि जू हरि जणाइंदा। तख्त निवासी सेज पलँघ, पुरख अबिनाशी आप सुहाइंदा। निरगुण अगम्म वज्जे मृदंग, तार सतार ना कोए हलाइंदा। दूसर ना कोई दिसे संग, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, जेरज अंडां आसण लाइंदा। ना कोई चिला तीर कमंद, शमशीर हथ्थ ना कोए उठाइंदा। रसना जिह्वा ना कोए बत्ती दन्द, अक्खर ज्ञान ना कोए पढ़ाइंदा। दो जहानां कटे पन्ध, पाँधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। जन भगतां देवे इक्क अनन्द, आत्म परमात्म खेल कराइंदा। सति प्रकाश चढ़े चन्द, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। जुग चौकड़ी उतरया पूर, पूरा सतिगुर आप कराईआ। सर्बकला हरि भरपूर, भरपूर रिहा सब थाईंआ। वसणहारा नेड़े दूर, हाज़र हज़ूर वेस वटाईआ। जिस दा जल्वा तक्के

मूसा उत्ते कोहतूर, सो घर घर रिहा वखाईआ। जगत नाता कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन आपणी दया कमाईआ। एका रंग चढ़ाए गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। कलयुग अन्तिम करे चूरो चूर, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी ना बख्शे किसे कसूर, छुप कर करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, मुकामे हक़ जोत जगाइंदा। एका मार्ग साचा लाउणा, दो जहानां वेख वखाइंदा। चौदां लोकां डेरा ढाउणा, चौदां तबकां पर्दा लाहइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रखाउणा, साचा राह समझाइंदा। करोड़ तेतीसा आप समझाउणा, सुरपति इन्द नाल मिलाइंदा। गुर अवतारां दर बहाउणा, जुग जुग लेखा मंग मंगाइंदा। भगतां निउँ निउँ सीस झुकाउणा, जगदीश सोभा पाइंदा। राग छत्ती सेव लगाउणा, एक एका अंक पढ़ाइंदा। चार वेदां पन्ध मुकाउणा, पुराण अठारां आपे गाइंदा। बरन अठारां डेरा ढाउणा, चार वरन मोह चुकाइंदा। अञ्जील कुरान अन्त कुरलाउणा, तीस बतीस ना कोए सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी वेस वटाउणा, निरगुण नूर डगमगाइंदा। साचा तख्त इक्क सुहाउणा, शाह पातशाह आसण लाइंदा। सच दरबारा इक्क लगाउणा, लोकमात वड वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोए, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। कोटन कोटि दे दे गए ढोए, हरि हरि नाम सुणाईआ। अन्तिम सब गए रोए, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। इक्क बलोए, घट घट रिहा समाईआ। लेखा जाणे त्रै त्रै लोए, लोचन एका एक खुल्हाईआ। लख चुरासी बीज बोए, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराईआ। आपणी कल धरे हरि कल, कुलवन्त खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी करदा रिहा छल, अछल अछल वेस वटाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, सचखण्ड वसेरा सोभा पाइंदा। कलयुग अन्तिम लोकमात आए चल, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। जोती शब्दी आपे रल, आपणा डंक वजाइंदा। सच संदेशा एका घल्ल, गुरमुख आप जगाइंदा। दीपक जोती जाए बल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। दूई द्वैती मेटे सल्ल, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। अमृत आत्म प्याए जल, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। भाग लगाए काया माटी खल्ल, पंचम तत्त सलाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करनहार करतार। निरगुण निराकार इक्क अकल्लड़ा, वेखे विगसे पावे सार। सच सिँघासण एका मलड़ा, निरगुण सरगुण अंदर कर त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। सच सिँघासण साढे तिन्न हथ्थ, हरि जू आपणा आप बणाइंदा। उपर बैठ पुरख समरथ, आपणी खेल कराइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाथ, सृष्ट सबाई आप पढ़ाइंदा। दीनन

अनाथां नाथ, नाथी नाथ रूप वटाइंदा। एका पूजा एका पाठ, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। एका सतिगुर वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। एका मंडल एका रास, एका गोपी काहन नचाइंदा। एका राम देवे साथ, साची सेव कमाइंदा। एका मेल सगल वसूरे जायण लाथ, चिंता दुःख ना कोए सताइंदा। इक्क उतारे आपणे घाट, साचा बेड़ा मात चलाइंदा। दो जहानां तक्के वाट, लख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तरया विच संसार, तारनहारा इक्क अख्वाईआ। निरगुण सरगुण करे प्यार, सरगुण निरगुण बूझ बुझाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। मन्दिर मसीता वसया बाहर, हत्थ किसे ना आईआ। ठांडा सीता इकउंकार, घर साचे सोभा पाईआ। पतित पुनीता पावे सार, गुरमुख सज्जण मात जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका नाम दए समझाईआ। एका नाम अन्तर रस, हरि हरि आप जणाइंदा। अन्तर आत्म आपे वस, आपणा मेल मिलाइंदा। पंज विकारा देवे झस्स, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मिटाइंदा। दरस वखाए नस्स नस्स, स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। जन भगतां पूरी करे आस, निराशा कोए नज़र ना आइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, पवण पवणी आप समाइंदा। नाता तोड़ पृथ्मी आकाश, चरन कँवल इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा। कलयुग अन्तिम फेरा पा, फेरी एका वार वखाईआ। वेखणहारा जल थल अस्गाह, डूँघी भँवरी फोल फुलाईआ। लख चुरासी भुल्ली हरि का नाउँ, नाम वणजारा नज़र कोए ना आईआ। कोई खाए सूर कोई खाए गां, हक़ हलाल ना कोए समझाईआ। अन्त गुर पीर ना पकड़े कोई बांह, पल्लू गए छुडाईआ। पुरख अबिनाशी करे नांह, एका हुक्म सुणाईआ। राए धर्म दए सजा, पुट्ठी खल्ल लुहाईआ। करे खेल बेपरवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोत आप धराईआ। आपे जोती आपे धार, आपे शब्दी नाउँ रखाइंदा। आपे गुर आप अवतार, पीर पैग़म्बर बण बण सेव कमाइंदा। आपे भगत भगवन्त दए दीदार, आपे दरसी दरस वखाइंदा। आपे सन्त सुहेले लए उभार, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। आपे गुरमुख साचे पौड़े देवे चाड़्, महल अटल आप बहाइंदा। आपे गुरसिखां चले नाल नाल, जुग जन्म पन्ध मुकाइंदा। आपे त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस वटाया, दिस किसे ना आईआ। नानक निरगुण इक्क ध्याया, गोबिन्द रंग वखाईआ। सम्बल साचा डेरा लाया, साढे तिन्न हत्थ जोत रुशनाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत खेल अपार खिलाईआ, वेद व्यासा खुशी मनाईआ। तख्त निवासी तख्त सुहाया, साचे तख्त

बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। जगत कूड़ दए गुवाया, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा लए उपजाया, धरत मात गोद सुहाईआ। बोध अगाध ज्ञान चलाया, एका करे पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कोए रहिण ना पाया, एका हरि हरि नज़री आईआ। एका इष्ट गुरदेव मनाया, पुरख अकाल सच्चा माहीआ। एका कलमा दए पढ़ाया, कातब लिखे ना कोई शाहीआ। अठारां बरन जमात इक्क बणाया, एका पट्टी दए पढ़ाईआ। एका तोला हरि जू बण के आया, लख चुरासी हट्ट खुल्हाईआ। तीर्थ तट इक्क वखाया, सतिगुर चरन सच्ची शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग आप लगाईआ। मन अन्तर अनक ख्याल, छिन्न छिन्न रूप वटाईआ। आपणी सुरती ना सके कोए संभाल, सुरती सुरत गंवाईआ। इक्को अन्तिम नाम दलाल, सब दा लेखा दए मुकाईआ। मिल सतिगुर सज्जण ल्या भाल, काया कवरी फोल फुलाईआ। फल लग्गे पत डाल, पंज तत्त होए रुशनाईआ। मन वासना होए कंगाल, बलहीण दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिल विच दिल मिलाईआ। दिल अंदर दिल दी धार, दलेर आख सुणाइंदा। दिल अंदर द्वैती ख़ार, कंडा ठोर वखाइंदा। दिल अंदर हरि का प्यार, हरि साचा आप जणाइंदा। दिल अंदर ठग्ग चोर यार, मन वासना नाल रलाइंदा। दिल अंदर साचा मीत मुरार, दिस किसे ना आइंदा। दिल अंदर महिमा जाणे आप गुर अवतार, भेव अभेदा भेव खुल्हाइंदा। साचा रस्ता एका वार, मन मनुआ आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिल अंदर दिल वेख वखाइंदा। दिल अंदर वड्या दिल, जगत दलील गंवाईआ। छिन छिन अन्तर जाए हिल, ठहर कदे ना पाईआ। जिस जन तोड़े बज़र कपाटी सिल, सो आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन वासना दए समझाईआ। मन वासना अनक भांत, अनक कल अख्वाइंदा। गुरमुख विरला इक्क इकांत, एका मंग मंगाइंदा। इक्को मिले नाम दात, दूजी इच्छया ना कोए जणाइंदा। अंदर मिटे अन्धेरी रात, भीतर साचा चन्द चढ़ाइंदा। मन मनुआ सुणे साची गाथ, दूजी आशा ना कोए रखाइंदा। सगल वसूरे जायण लाथ, सत्थर हेठ ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन मनशा मनशा नाल मिलाइंदा। मन मनशा आशा होई पूर, मन ममता मात तजाईआ। नाता तुट्टे हउमे हंगता गरूर, गुरबत कोए रहिण ना पाईआ। पिछले बख्शे सर्ब कसूर, मन चंचल मिटे चतुराईआ। अन्तर आत्म मिले ज़रूर, ज़रूरत पूरी दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन का माण, शब्द गुर ध्यान, दिल का दान, दिल जानी इक्क अख्वाईआ।

★ ८ माघ २०१८ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह
नया शाला ज़िला गुरदासपुर ★

सचखण्ड निवासी सच दरबार, दरगाह साची आप लगाइंदा। शाह पातशाह राज राजान, भूपत भूप खेल खलाइंदा। तख्त निवासी वड मेहरवान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म सति हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा एकँकार, एका एक सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा कर त्यार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। जोती जोत जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाईआ। सो पुरख निरँजण साची कार, हरि करता आप कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, निरगुण आपणी खेल वखाइंदा। एकँकारा कर पसार, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वेखे विगसे पावे सार, आप आपणा रूप छुपाइंदा। श्री भगवान सच निशान, सति सतिवादी आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा इक्क सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाइंदा। करे खेल आदि निरँजणा, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। अगम्म अथाह दीन दर्द दुःख भय भंजना, सति सरूपी सच मलाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। बेपरवाह खेल अवल्ला, एका एक कराईआ। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, दरगाह साची धाम सुहाईआ। आदि जुगादी अछल अछला, वल छल धारी वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, एका आपणा बन्धन पाईआ। जोती शब्दी आपे रला, धार धार नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव आपे खोल्ह, हरि जू खेल खलाइंदा। आदि जुगादी तोले तोल, तोलणहारा सेव कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे बैठा रहे अडोल, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खलाइंदा। साची खेल करे करतार, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, सति सरूपी वेस वटाईआ। थिर घर जोत नूर उज्यार, दीआ बाती इक्क टिकाईआ। अबिनाशी अचुत किरपा धार, साचा सुत लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग आपणा ला, हरि हरि खेल कराइंदा। इच्छया भिच्छया झोली पा, दाता दानी दया कमाइंदा। धुर फ़रमाणा इक्क जणा, सच संदेशा आप अल्हाइंदा। नाउँ निरँकारा आप अखवा,

३६० ११

आपणा नाउँ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। आपणा खेल जाणे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। आदि पुरख हो मेहरवान, सच निशान दए झुलाईआ। भूपत भूप बण राजान, तख्त निवासी हुक्म सुणाईआ। थिर घर साची खोल्ह दुकान, सति दुआरे दए वड्याईआ। चरन सरन एका माण, एका कँवल दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव आपे दस्स, हरि हरि वेस वटाइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे वस, थिर घर डेरा लाइंदा। शब्दी शब्द साचा रस, रस रसीआ आप चखाइंदा। आपे पूरी करे आस, सगला संग हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करनेहारा, आपणा खेल वखाईआ। आदि लगाया सचखण्ड दरबारा, दर दरबार वज्जी वधाईआ। एकँकारा कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। राज राजान बण सिक्दारा, तख्त निवासी तख्त सुहाईआ। सीस जगदीश इक्क सहारा, आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आदि खुल्हाईआ। आदि लगाया सच दरबार, हरि साचा खेल कराइंदा। एका हुक्म एका वार, एका हरि सुणाइंदा। एका सुत कर त्यार, एका घर बहाइंदा। एका पुरख एका नार, एका सेज हंढाइंदा। एका राग एका नाद एका धुन्कार, एका मंगल गाइंदा। एका करता एका कार, एका सेव कमाइंदा। एका विष्नूं कर त्यार, एका ब्रह्म मिलाइंदा। एका शंकर दए अधार, एका बन्धन पाइंदा। एका सिख्या दए विचार, एका भेव खुल्हाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका घर बुझाइंदा। एका मूर्त इक्क अकाल, अजूनी रहित इक्क अख्वाइंदा। एका बणे सच दलाल, वणज वणजारा इक्क हो जाइंदा। एका दीपक देवे बाल, जोती जोत इक्क वखाइंदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरा इक्क बणाइंदा। एका शाह इक्क कंगाल, राजन राजान इक्क हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे सच दरबारा आदि पुरख लगाए एकँकारा, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। आदि पुरख एका कार, एका वार कमाईआ। एका शब्द इक्क वरतार, एका घर वखाईआ। एका माया कर त्यार, एका गुण वड्याईआ। एका तत्त दए अधार, तत्तव तत्त भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप समझाईआ। एका घर एका दर, एका एक सुहाइंदा। एका पुरख एका नर, एका मेल मिलाइंदा। एका मन्दिर एका जाए चढ़, एका सोभा पाइंदा। एका विद्या एका अक्खर एका जाए पढ़, एका नाद सुणाइंदा। इक्क चुकाए भय डर, निरभउ इक्को इक्क अख्वाइंदा। इक्क नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, सच दरबारा आप लगाइंदा। सच दरबारा एकँकार, आदि

पुरख लगाईआ। सति सतिवादी सति विहार, सति पुरख निरँजण आप कराईआ। सुत दुलारा कर त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रगटाईआ। त्रैगुण माया दे अधार, पंचम तत्त करे कुड़माईआ। लख चुरासी भर भण्डार, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। धुर फ़रमाणा बोल जैकार, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। निरगुण सरगुण लए उभार, करे खेल बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी बन्ने धार, आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। लख चुरासी बेड़ा बन्न, निरगुण सरगुण आप चलाइंदा। लेखा जाणे जननी जन, दाई दाया वेस वटाइंदा। बणत बणाए काया तन, बंक दुआरी सोभा पाइंदा। वस्त अमोलक नाम धन, सच ख़ज़ीना आप लुटाइंदा। बुध मति देवे मन मन मनशा नाल मिलाइंदा। निरगुण जोत चाढ़े चन्न, जोत निरँजण डगमगाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। साची कार करे करतारा, कुदरत कादर खेल खलाईआ। निरगुण सरगुण भर भण्डारा, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज घड़े बण ठठयारा, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। घट घट अंदर हो उज्यारा, बह मन्दिर मुख छुपाईआ। एका हुक्म सति वरतारा, सति सतिवादी आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए ख़बरदारा, आलस निंद्रा सर्ब गंवाईआ। दोए दोए जोड़ करन निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, नेत्र लोचण नैण दर्शन पाईआ। एका वर देणा दातार, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। तेरे घर सच्चा भण्डार, सच भण्डारी तूं वरताइंदा। तेरा नूर ब्रह्म पसार, पारब्रह्म खेल कराइंदा। तेरा नाम तेज कटार, साचा खण्डा इक्क चमकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, तेरी सेवा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्त मिलाइंदा। तेरी सेवा लख चुरासी, जूनी जून भुआईआ। निरगुण सरगुण बणे दासी, दासी बण बण सेव कमाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाशी, प्रकाश मिले वड्याईआ। तूं साहिब सुल्तान सचखण्ड निवासी, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। जीव जंत लेखा पवण स्वासी, पवण पवण विच मिलाईआ। कवण बिध करें जन राखी, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। एका दस्स भविख्त वाकी, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। तूं निरगुण रूप वेस वटाएं जग ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक दएं वड्याईआ। कवण दुआरा खोलें ताकी, बन्द कवाड़ा दएं तुड़ाईआ। कवण वेला चाढ़ें घाटी, आपणा पन्ध मुकाईआ। कवण दुआरे बणें साथी, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बैठे झोली डाहीआ। तिन्नां झोली देवे भर, हरि साचा दया कमाइंदा। एका गुण देवे वर, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा।

लख चुरासी अंदर वड़, घट घट डेरा लाइंदा। शब्द अनादी इक्को पढ़, एका राग सुणाइंदा। गृह मन्दिर अंदर साचा सर, अमृत सरोवर आप वखाइंदा। काया किला कोट बणा गढ़, उपर चढ़ डेरा लाइंदा। निरगुण सरगुण वेस कर, आपणा खेल समझाइंदा। गुर अवतार मात बण, जीव जंत दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। समरथ पुरख तूं मेहरवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। निरगुण सरगुण होएं प्रधान, आपणा रंग वखाईआ। काया अंदर तत्त निशान, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त प्रगट होएं बिन बूंद रक्त, आपणा मेल लएं मिलाईआ। पुरख अबिनाशी देवे सलाह, एका गुण जणाया। जुग चौकड़ी बण मलाह, गुर गुर वेस वटाया। शब्द अनादी नाद सुणा, रागी राग अलाया। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजा, भेव अभेद जणाया। भगत भगवन्त रूप वटा, एका रंग चढ़ाया। सन्त साजण आप जगा, जागरत जोत करे रुशनाया। गुरमुख मेला सहिज सुभा, घर घर विच लए मिलाया। गुरसिख मार्ग साचे पा, एका पन्थ समझाया। जुग चौकड़ी वेस वटा, एका हुक्म सुणाया। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करा, कलयुग वंड वंडाया। कोटन कोटि काल दए खपा, गेड़ा गेड़े विच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मे शिव आप समझाया। विष्न ब्रह्मा शिव मस्तक लाई चरन धूढ़, लख लख शुकर मनाया। हउँ बाल नादाने मूर्ख मूढ़, तेरा भेव कोए ना आया। आपणा लेखा दस्स जरूर, साडी जरूरत पूर कराया। कवण वेला प्रगटें निरगुण नूर, पंज तत्त ना कोए रखाया। तूं साहिब सुल्तान सर्बकला भरपूर, अनक कल तेरी वड्याआ। बिन डिठयां सचखण्ड वसें दूर, तेरा पन्ध ना किसे मुकाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला दएं मिलाया। पुरख अबिनाशी दया कमा, दीनन एह समझाइंदा। लख चुरासी खेल करा, घट घट जोत जगाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटा, ईश जीव अख्वाइंदा। गुर अवतार सेवा ला, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पढ़ा, ज्ञान ध्यान दृढ़ाइंदा। जोग अभ्यास मार्ग वखा, कर्मी कर्म आप बणाइंदा। पीर पैग़म्बर मात प्रगटा, मुलां शेख़ मुसायक नाल रलाइंदा। कलमा कलाम आप सुणा, कायनात आप जणाइंदा। रहिमत रहिमान आप कमा, रहीम आपणा खेल कराइंदा। नाम सति डंक वजा, डंका दो जहान अलाइंदा। राउ रंक लए उठा, एका राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मे शिव कर विचार, हरि साचा सच जणाईआ। खेलां खेल विच संसार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। एका बन्धन जुग चौकड़ी चार, मेला चार चार मिलाईआ। नौ

नौ खोल्ह दुआर, नव नव वेखे चाँईं चाँईंआ। चार चार अन्ध अन्धयार, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। गुर अवतार बण पन्यार, लोकमात सेव कमाईआ। बेअन्त बेअन्त कह के जाण पुकार, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ। आपणा भेव श्री भगवन्त, एका एक जणाइंदा। खेलां खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाइंदा। एका नाउँ साचा मंत, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाइंदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, बोध अगाध आप सुणाइंदा। लख चुरासी बणा बणत, घड़न भन्नणहार खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। कोटन कोटि उपजा सन्त, साची सिख्या इक्क जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा जाणे गढ़ हउमे हंगत, माया ममता वेख वखाइंदा। लख चुरासी होए नंगत, चारों कुण्ट संग ना कोए निभाइंदा। एका लेखा जाणे अन्त, चार वेद भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रखणा याद, हरि साचा सच जणाईआ। आपे रचना रची आदि, दिस किसे ना आईआ। इक्को देवां साची दाद, नाम भण्डारा झोली पाईआ। आपणे विच्चों आपा काढ, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। पिता पूत करे लाड, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। एका निष्अक्खर सुणाए गाथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, सूरज चन्न ना कोए रुशनाईआ। ना कोई संधया ना प्रभात, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकांत, सचखण्ड बैठा खेल कराईआ। प्रगट होए बहु बिध भांत, अनक कल रूप धराईआ। जुग चौकड़ी सुणाए आपणी गाथ, लिख लिख लेख समझाईआ। बण रथवाही चलाए राथ, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप छुपाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र रो, नैणां नीर वहाया। आपणी किरपा कर के देणा आपणा मोह, दूजा प्यार ना कोए सिखाया। तेरा नूर साची लो, एका रंग वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला साडा पन्ध दएं मुकाया। कवण वेला मुके पन्ध, बण चाकर सेव कमाईआ। दीन दयाल साहिब बख्शंद, एका देणा गुण समझाईआ। तेरी धार सच्चा अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। तेरा नाउँ सहागी छन्द, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। कवण वेला टुट्टी देवें गंढु, आपणी गंढु पुआईआ। नाता तोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मोह चुकाईआ। त्रैगुण माया कर खण्ड खण्ड, एका खण्डा नाम चमकाईआ। आशा साडी होए ना रंड, कन्त कन्तूहल सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ घोली घोल घुमाईआ। एका वर एका वार, एका हरि सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, बेख़बर आप जगाइंदा। चाकर बणना नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग विच संसार, साची सेवा इक्क समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आवे वारो वार,

जुग जुग गेड़ा आप दिवाइंदा। अन्तिम लेखा अगम्म अपार, आपणा आप समझाइंदा। प्रगट होए हरि करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। निरगुण जोत कर उज्यार, दीआ बाती इक्क टिकाइंदा। साचे मन्दिर पावे सार, डूँघी कंदर मुख छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव जणाए हरि, एका राग अल्लाईआ। जुग चौकड़ी जाए हर, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार सेवा कर, घर साचे जाण समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्लाईआ। आपणा भेव खोल्ले भगवान, एका गुण जणाइंदा। कलयुग अन्त आए विच जहान, जीव जंत सर्ब भुलाइंदा। चारों कुण्ट पंज शैतान, घर घर डंक वजाइंदा। आत्म ब्रह्म ना कोए पहचान, पारब्रह्म ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि हरि आख सुणाईआ। चार वेद ना किसे गाउणा, चार वरन ना कोए पढ़ाईआ। चार खाणी डेरा ढाउणा, चार बाणी ना कोए समझाईआ। जगत चाकरी इक्क लगाउणा, कूड़े धन्दे मोह फसाईआ। जगत अन्धेर एका पाउणा, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। गुर का शब्द सर्ब भुलाउणा, रसना जिह्वा होए हल्काईआ। तीर्थ तट माण गवाउणा, अठसठ दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त दए जणाईआ। कलयुग अन्तिम जाए आ, गेड़ा गेड़ वखाईआ। करे खेल बेपरवाह, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जामा भेख वटा, प्रगट होवे वड शहिनशाहीआ। लोकमात सचखण्ड बणा, ब्रह्मण्ड दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। कलयुग वेला अन्त मात, हरि साचा सच जणाइंदा। प्रगट होए पुरख बिधात, आपणा नूर धराइंदा। आपे वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक खेल कराइंदा। साचे मंडल पावे रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणा भेव चुकाइंदा। कलयुग हरि जू दस्से अन्त, एका गुण समझाईआ। प्रगट होए श्री भगवन्त, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। सचखण्ड दुआर बणाए बणत, लोकमात निशान झुलाईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, जुग विछड़े लए मिलाईआ। नाता तोड़ हउमे हंगत, साची संगत संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त लेखा रिहा जणाईआ। कलयुग अन्त प्रगट होए नर निरँकार, निरगुण रूप वटाईआ। लोकमात लगाए सच दरबार, धुर दरबारी सच्चा माहीआ। साचे तख्त बहे सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। लहिणा देणा मेटे जुग चौकड़ी चार, नव नौ वेखे थाउँ थाईंआ। शब्द सुनेहड़ा साची धार, एका वार जणाईआ। कट्ठे करे गुर अवतार, दर साचे लए बहाईआ। भगतां देवे इक्क अधार, साचे सन्त कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम आउणा निहकलंक, निरगुण नाउँ रखाईआ। नानक गोबिन्द वजा के गया डंक, डंका एका नाम रखाईआ। सम्बल सुहाए साचा बंक, नगर खेड़ा दए वड्याईआ। जिस उपजाया आदि उह वेखणहारा अन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ। आपणा बल आपे रख, आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण रूप हो प्रतख, जोती जोत डगमगाइंदा। चार जुग दी क्रिया करे सक्ख, ख़ाली भाण्डे सर्ब वखाइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतारां करदा आया पक्ख, सगला संग निभाइंदा। शब्दी मार्ग एका दस्स, जुग जुग राह चलाइंदा। आत्म परमात्म आपे वस, परम पुरख वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप जणाइंदा। आपणा राह जाणी जाण, जानणहार समझाइंदा। प्रगट होए श्री भगवान, लोकमात फेरा पाइंदा। निरगुण रूप बली बलवान, मर्द मर्दाना आप हो जाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्यान, आप आपणा मेल मिलाइंदा। विष्न ब्रह्मे शिव कर ध्यान, सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा। अन्तिम लेखा तुहाड्डा मुके आण, सति सरूपी आप मुकाइंदा। जन भगतां देवे साचा दान, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ब्रह्मा तेरा मेटे आप निशान, नूर नूर विच समाइंदा। गुरमुख आए चतुर सुजान, तेरा घर सुहाइंदा। शंकर तेरा तुट्टे माण, हथ्थ त्रिसूल ना कोए वखाइंदा। गुरमुख उठे बाल जवान, आपणा बल धराइंदा। पिछला लेखा चुक्के जहान, अग्गे आपणा राह चलाइंदा। विष्नूं तेरी विश्व कल्याण, वास्तक आपणे हथ्थ रखाइंदा। भगवन मेला दो जहान, पुरख अबिनाशी रंग वखाइंदा। बाशक सेजा वेखे आण, सहँसर मुख गीत अल्ळाइंदा। सांगोपांग इक्क निशान, निगहबान आप जणाइंदा। अन्तिम लेखा मुकाए आण, आपणा खेल आप कराइंदा। आदि पुरख देवणहारा दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणा रंग जणाइंदा। अन्तिम रंग हरि अपारा, अपरम्पर आप जणाईआ। ब्रह्मा विष्न तेरा पार किनारा, शंकर रहिण ना पाईआ। इन्दर रोवे ज़ारो ज़ारा, सुरपति दए दुहाईआ। करे खेल हरि करतारा, आपणी कल वरताईआ। लोकमात सच दुआरा, सचखण्ड निवासी आप सुहाईआ। दर बुलाए गुर अवतारा, पूरब लहिणा दए चुकाईआ। दोए दोए जोड़ करन निमस्कारा, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। तेरा हुक्म तेरा वरतारा, सच तेरी सेव कमाईआ। तेरा कलमा तेरा नाअरा, तेरा नाद वजाईआ। तेरी ओट तेरा सहारा, तेरी सच शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार दए समझाईआ। सच विहारा हरि जू करना, भेव किसे ना आया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर शब्द सरूपी आपे फड़ना, एका तन्द बंधाया। आपणा भाणा आपे जरना, आपे देवे साचा दाना, वर दाता आप अख्वाया। आपणा कीता आपे भरना, ना

३६६
११

देवे कोए छुडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाया। सच दुआरा सोहे मात, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। लेखा लिखे बिन कलम दवात, संग रखे ना कोए शाहीआ। कागद कलम ना कोई खात, खाता हरि ना किसे जणाईआ। जिस जन सुणाए आपणी गाथ, सो पढ़ पढ़ जाए लोकाईआ। सब दा लहिणा रख्या आपणे हाथ, एका बन्धन पाईआ। कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ, हरि जू सेव लगाईआ। कोटन कोटि राम मंगण साथ, राम रमइया साचा माहीआ। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर ईसा मूसा संग मुहम्मद रहे झाक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सज्जण आपे साक, आपे पाकी आपे पाक, आपे नाता लए तुड़ाईआ। जुग जुग नाता आपे जोड़, निरगुण सरगुण खेल कराया। गुर अवतार चढ़ाए घोड़, शब्द घोड़ा इक्क दौड़ाया। चौथे पद लगाया पौड़, साचा मन्दिर इक्क वखाया। अमृत आत्म प्या बुझाई औड़, एका अमृत मेघ बरसाया। दो जहानां पन्ध मुकाए दौड़ दौड़, वेस अवल्ला आप वटाया। विच किसे ना आया गौर, सति दरस ना किसे कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी डोर आप बंधाया। आपणी बन्ने साची डोर, एका तन्द बंधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपे तोर, आपे लए छुपाईआ। गुर अवतार चढ़ाए घोड़, सेहरा सीस गुंदाईआ। आपे वेखे माटी गोर, आपे हड्डीआं तन जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल करे करतारा, कलयुग अन्त मिले वड्याईआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, कलयुग मेटे झूठी छाहीआ। निरगुण नानक लेख अपारा, सरगुण जीव गया समझाईआ। गोबिन्द एका बोल जैकारा, पुरख अकाल मनाईआ। प्रगट होए हरि करतारा, महांबली नाउँ धराईआ। डंक वजाए विच संसारा, चार कुण्टां लए उठाईआ। शाह सुल्ताना मारे मारा, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। चारे वरन करे खुआरा, बरन अठारां देण दुहाईआ। एका बोले सति जैकारा, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। एका वखाए मन्दिर दुआरा, एका घर वज्जे वधाईआ। एका इष्ट सर्ब संसारा, गुरदेव इक्क समझाईआ। एका नूर नूर उज्यारा, एका जोत जोत रुशनाईआ। एका भगत इक्क भण्डारा, एका वार हरि वरताईआ। सचखण्ड खोल्हे मात दुआरा, ब्रह्मण्ड सीस झुकाईआ। गुर अवतार करन निमस्कारा, वाहवा वड्डी तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी कट के आए तेरी वगारा, बण चाकर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव वेला अन्त मुकणा, मुकावणहार करतारा। निरगुण नूर होए बुकणा, प्रगट हो विच संसारा। लख चुरासी बूटा सुक्कणा, अमृत मिले ना ठंडा ठारा। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेटणहारा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ किसे ना लुकणा,

पुरख अबिनाशी वेखे डूँघी गारा। तीर निशाना कदे ना उकणा, मारे तीर अणयाला एका वारा। जूठ झूठ डेरा पुट्टणा, थिर रहे ना विच संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दए सहारा। मिल्या सहारा तेरा नाम, विष्न ब्रह्मा शिव खुशी मनाईआ। तूं करता करना आपणा काम, तेरी कीमत कोए ना पाईआ। हउँ सेवक बरदा बण गुलाम, तेरी सेव कमाईआ। अन्तिम देणा इक्को जाम, आपणा रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लैणा मिलाईआ। तेरा मेला मिले दरगाह, एका मंग मंगाया। पुरख अबिनाशी दए सलाह, साचा हुक्म सुणाया। कलयुग अन्तिम जाए आ, जुग चौकड़ी पार कराया। गोबिन्द लेखा जाए लिखा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। निरगुण नूर वेस लए वटा, निहकलंक नाउँ धराया। साचा डंका दए वजा, लोआं पुरीआं आप सुणाया। राउ रंकां लए उठा, सोया कोए रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाया। आपणा भेव दस्से हाल, निरगुण निरगुण आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खावे काल, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। गुर अवतार बण दलाल, जुग जुग सेव कमाईआ। अन्त पत ना दिसे किसे डाल, फल फूल ना कोए वखाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, आपणा नाउँ धराईआ । जुग चौकड़ी मेट निशान, साचा राह चलाईआ। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। चार वेद होण हैरान, शास्त्र सिमरत देण दुहाईआ। गायत्री मन्त्र ना कोए ध्यान, गीता ज्ञान ना कोए सालाहीआ। अञ्जील कुरान नैण शरमाण, तीस बतीस ना कोए अल्हाईआ। खाणी बाणी ना कोए प्रधान, सच प्रधानगी इक्क कमाईआ। सर्ब दा दाता इक्क भगवान, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाईआ। कलयुग अन्तिम चले राह, हरि रैहबर दया कमाइंदा। चार जुग दी आशा पूरी दए करा, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। राम रूप हरि लए वटा, करिशना रंग वखाइंदा। ईस मूसा नूर धरा, पंज तत्त डगमगाइंदा। मुहम्मद अहिमद आप पढ़ा, कलमा अमाम सिखाइंदा। मन्त्र सतिनाम दृढ़ा, सति सति मार्ग चढ़ाइंदा। डंका फतहि इक्क वजा, एका हुक्म मनाइंदा। अन्तिम लहिणा दए मुका, लेखा सब दा आप चुकाइंदा। चार वरन एका धाम बहा, एका घर वखाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ्ठ ढा, साचा खेड़ा आप वखाइंदा। निर्मल दीआ जोत जगा, कमलापाती सोभा पाइंदा। बण बण साकी जाम दए प्या, अमृत प्याला हथ्थ उठाइंदा। बन्द ताकी दए तुड़ा, बजर कपाटी पर्दा लाहइंदा। साची घाटी दए चढ़ा, हरिजन साचे आप उठाइंदा। पाकी पाक इक्क खुदा, परवरदिगार वेख वखाइंदा। आबे हयात इक्क प्या, आप आपणे रंग रंगाइंदा। अहिबाब रबाब दए वजा, सर्ब संसार आप वजाइंदा। मुकामे हक़ दए वखा, हक़ हक़ीक़त आप कराइंदा।

आपणी तवारीक गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां रिहा पढ़ा, आपणा तुआरफ़ ना किसे कराइंदा। दूर दुराडा बणदा रिहा मलाह, मलाहगीर आप हो जाइंदा। दोए जोड़ सब मंगदे गए पनाह, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा । पंज तत्त काया करे गुनाह, निरगुण तन ना कोए जणाइंदा। चार कुण्ट दे चारों राह, चारे जुग वखाइंदा। कोई वेद गया सुणा, कोई शास्त्र सिमरत ध्यान लगाइंदा। कोई पुराणां गया गा, कोई गीता ज्ञान दृढ़ाइंदा। कोई अञ्जील कुरानां वंड वंडा, अल्फ़ ये भेव मुकाइंदा। कोई खाणी बाणी रिहा सुणा, आपणा राग अलाइंदा। कोए राम कृष्न इष्ट रिहा मना, कोए दृष्ट विच समाइंदा। कोए नूरी जल्वा रिहा धरा, ईसा मूसा वंड वंडाइंदा। कोई कहे खुदा, अहिमद आपणा नाद वजाइंदा। नानक निरगुण इक्को ल्या मना, एकँकारा इक्क सलाहइंदा । गोबिन्द सूरा गया समझा, पुरख अकाल इक्क मनाइंदा। कलयुग अन्तिम जाए आ, निहकलंका नाउँ धराइंदा। सब दा शंका दए मिटा, शास्त्र सिमरत डेरा ढाहइंदा। चार जुग दा लेखा दए चुका, बाकी कोए नज़र ना आइंदा। कलयुग कूड़ा दए खपा, कूड़ी क्रिया आप गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे करतारा, अचरज खेल वखाईआ। लख चुरासी मेट पसारा, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पार किनारा, करोड़ तेतीसा रहिण ना पाईआ। सचखण्ड वासी सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। गुरमुख वेखे आपणी धारा, धार धार विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप चलाईआ। हरि भगतां दुःख निवारया, मिटे रोग संताप। चरन कँवल देवे अधारया, आत्म परमात्म सोहँ जाप। उतरे पार विच संसारया, इक्क वखाए साचा घाट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेटे अन्धेरी रात। धूंआँधार मेटे दुःख, दर्दी दर्द वंडाइंदा। घर घर उपजे एका सुख, सांतक सति कराइंदा। उज्जल करे मात मुख, लख चुरासी विच आप वड्याइंदा। आप आपणी गोदी चुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुख इक्क समझाइंदा। साचा सुख सतिगुर चरन, कँवल दए शरनाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, मेटे झूठी बीनाईआ। गुरमुख विरला दाती दान, दर मिल्या एका माहीआ। साचा नाम सदा पढ़न, एका ढोला गाईआ। त्रैगुण अग्न कदे ना सड़न, माया पोह ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दुःख मिटाईआ। चिंता दुःख दलिद्र होए दूर, सतिगुर पूरा आप कराइंदा। दरस वखाए हाज़र हज़ूर, रूप अनूप आप वटाइंदा। आसा मनसा करे पूर, तृष्ना भुख गवाइंदा। हउँमे हंगता तोड़ गरूर, सच सुच्च समझाइंदा। दाता दानी जोधा सूर, बल आपणा आप वखाइंदा। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख

दर्द आप गवाइंदा। दुःख दर्द जाए नट्ठ, गुरसिख दर रहिण ना पाईआ। सरन सरनाई जो जन जाए ढट्ठ, मिले माण वड्याईआ। नाता तुट्टे अठसठ, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका पट्टी नाम पढ़ाईआ। नाम वणजारा खोल्हे हट्ट, एका वस्त विकाईआ। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरि का खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सहाईआ। भगत सुहेला आप प्रभ, जुग जुग सेव कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणा मेल मिलाइंदा। अमृत कँवल चुआए नभ्भ, निझर झिरना आप झिराइंदा। चरन दुआरे साचे सद, दुखड़ा दर्द वंडाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आपणे घर बहाइंदा। नाता तुट्टे मास नाड़ी हड्ड, तत्तव तत्त मोह चुकाइंदा। चरन कँवल जो जाए ढट्ठ, फड़ बाहों आप उठाइंदा। लहिणा जाणे तत्त अठ्ठ, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध आपणे धन्दे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उब्बले रत्त रत्ती रत्त रंग रंगाइंदा। एका देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म आप समझाइंदा। सति सन्तोख धीरज जत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख दलिद्र आप गुवाइंदा। दुःख दलिद्र जगत प्यार, काया बन्धन पाईआ। जिस जन मिले हरि निरँकार, दुःख सुख ना जाणे राईआ। अठ्ठे पहर दरस दीदार, दिवस रैण खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दुःख आप वंडाईआ। भगतां पहले दुःख कट, आपणा खेल कराइंदा। वेखो तारया धन्ना जट्ट, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। नामे छप्परी छाई छत्त, दिस किसे ना आइंदा। रविदास चम्मयारा पानही गंढ, गंगा मेल मिलाइंदा। गुरमुख तेरी कटे आप वाट, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। जिस जन देवे आपणी दात, नाम वस्त आप वरताइंदा। जगत दुःख मिटे अन्धेरी रात, साचा सुख इक्क वखाइंदा। आपे बणे माई बाप, पिता पूत गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां दुःख आप वंडाइंदा। भगतां दुःख दिता वंड, एका वंड वंडाईआ। कर दरस पावे ठंड, ईस धार चलाईआ। गुरमुख आत्म होए ना रंड, हरि कन्त लए प्रनाईआ। जन्म जुग दी टुट्टी गंढ, एका बन्धन पाईआ। पंच विकारा कुट कुट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। इक्क उपजाए आत्म अनन्द, परमानंद आप वखाईआ। सोहँ गाउणा भगत सुहागी छन्द, घर साचे वज्जे वधाईआ। नाता तुट्टे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए कुड़माईआ। दरस दखाए जो सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुख गुरमुख झोली पाईआ। जन भगतां तोड़े हरि जू बन्धन, बन्दीखाना रहिण ना पाईआ। मस्तक तिलक लगाए नाम चन्दन, चन्द

चांदनी कर रुशनाईआ। जिउँ बिदर सुदामा मेला त्रिलोकी नंदन, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। तिउँ कलयुग अन्तिम करे खण्डन, कूड़ कुड़यारा दए गंवाईआ। लख चुरासी कटे फंदन, नाम कटारा इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण होए सहाईआ। नर नरायण सर्ब गुणवन्त, आदि जुगादि समाया। जुग जुग वेखे भगत, श्री भगवन्त रूप अनूप धराया। कलयुग अन्त बणाए बणत, आपणा खेल वखाया। हरिजन मेले साचे सन्त, एका बूझ बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया दए खपाया। कूड़ी क्रिया जाए छुट्ट, कलयुग रहिण ना पाईआ। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। भगतां उपर हरि जू तुट्ठ, आपणा दरस दिखाईआ। जाम प्याए अमृत घुट, निझर झिरना दए झिराईआ। कूड़ी वासना कढ्ढे खोट, दुरमति मैल धुआईआ। इक्क जगाए निर्मल जोत, नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग फंदन दए तुड़ाईआ। कलयुग फंदन कटे गंढ, हरि सज्जण आप तुड़ाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट घमंड, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। चार वरन दा इक्क भगवन्त, साचा संग निभाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आप तराइंदा। भगत तराय डूँघे सागर, कलयुग बेड़ा आप चलाईआ। जोत जगाए काया गागर, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। हरिजन बणाए सच सौदागर, साचा हट्ट खुल्हाईआ। दर आयां घर देवे आदर, दर्दी दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बन्धन दए तुड़ाईआ। साची सिख्या हरिजन सिख, हरि सतिगुर आप समझाईआ। बिन कर्मां लेख दए लिख, निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। अनडिठड़ी पाए नाम भिच्छ, काया अन्तर झोली आप भराईआ। जन्म जन्म दी कढ्ढे वख, विस तन रहिण ना पाईआ। गृह मन्दिर अंदर निरगुण नूर सति सरूप आए दिस, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या हरि निरँकार, आदि जुगादि समझाइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, हरि पुरख निरँजण हुक्म वरताइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। शब्दी सुत कर त्यार, त्रैभवन आपणा खेल कराइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड दे अधार, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म वरताइंदा। लख चुरासी खोल्ह किवाड़, घट घट आपणा नूर धराइंदा। धुर फ़रमाणा सच जैकार, नाम निधाना आप सुणाइंदा। पंज तत्त काया करे ख़बरदार, गुर पीर अवतार आप पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त दए अधार, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। साचे सन्तां मेल नार, कन्त भतार नर नरायण खुशी वखाइंदा। गुरमुख साचे पौड़े देवे चाड़्ह, सच महल्ला सोभा पाइंदा। गुरसिखां

देवे दरस दीदार, नेत्र लोचण नैण खुलाइंदा। जुग चौकड़ी खेल करे वारो वार, कोटन कोटि काल लेखे विच फिराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कर कर पार, जुग पाँधी पन्ध मुकाइंदा। लख चुरासी वेखे विगसे वेखणहार, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची सिख्या सच समझाइंदा। साची सिख्या सतिगुर सच्च, सति सतिवादी आप जणाईआ। कंचन रूप बणाए काया कच्च, नाम कसवटी एका लाईआ। त्रैगुण अग्न ना जाए मच्च, अमृत मेघ सांतक सति कराईआ। मन मनुआ ना रहे नच्च, नटुआ स्वांग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या जिस समझाईआ। साची सिख्या धुर फ़रमाण, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। एकँकारा देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आदि निरँजण दयावान, जोती नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता कर पहचान, सन्त सुहेले आप उठाइंदा। श्री भगवान सच निशान, निरगुण सरगुण आप झुलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे माण, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। आत्म परमात्म वखाए अस्थान, सच भूमका इक्क सुहाइंदा। ईश जीव देवे माण, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। हरि का शब्द धुर फ़रमाण, गुर सतिगुर आप जणाइंदा। काया तोड़ जगत अभिमान, हउँमे हंगता मोह चुकाइंदा। जूठ झूठ ना रहे दुकान, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाइंदा। घर विच घर खेल करे महान, महिमा गणत ना कोए गणाइंदा। निरगुण सरगुण कर परवान, बन्द कवाड़ी कुण्डा लाहइंदा। अमृत झिरना पीण खाण, निझर रस आप वखाइंदा। अनहद नाद शब्द धुन्कान, धुंन आत्मक आप सुणाइंदा। सुरती शब्दी मेला गोपी काहन, घर बंसरी नाम वजाइंदा। जोत निरँजण जगे महान, आदि निरँजण आप टिकाइंदा। आत्म सेजा कर परवान, परम पुरख वेख वखाइंदा। निरगुण निराकार अजूनी रहित जाणी जाण, हर घट आपणा खेल खलाइंदा। जिस जन देवे आपणा दान, तिस साची भिच्छया झोली पाइंदा। गुरमुख वेखे मार ध्यान, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या गुरमुख विरले आप बुझाइंदा। साची सिख्या सतिगुर मीत, हरिजन सच सच जणाईआ। जुग जुग चलाए आपणी रीत, भेव अभेव आपणे हत्थ रखाईआ। दो जहानां सुणाए गीत, ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड करे पढ़ाईआ। लख चुरासी परखे नीत, घट घट आपणा आसण लाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। आपे होए पतित पुनीत, पतित पापी लए तराईआ। कलयुग औंध रही बीत, वेला गया हत्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या बिन सिखयां आप समझाईआ। साची सिख्या धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, बिन पढ़यां आप समझाइंदा।

३७२
११

घर विच घर सच मकान, गृह मन्दिर आप वखाइंदा। तख्त निवासी श्री भगवान, साचे तख्त नज़री आइंदा। जोधा सूर बली बलवान, बल आपणा आप वखाइंदा। गुरमुख सज्जण कर परवान, आप आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ जीव जहान, जीवण जुगत आप समझाइंदा। आत्म परमात्म वखाए निशान, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साची सिख्या इक्क वखाइंदा। साची सिख्या गुर चरन ध्यान, ध्यान ध्यान विच जणाईआ। नेत्र नैण खुल्ल्हे महान, लोचण दोए बन्द वखाईआ। गृह मन्दिर घर वज्जे नाद शब्द धुन्कान, सुरती सुरत सुरत भुआईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सिख्या एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका अक्खर हरि का नाउँ, निष्अक्खर मेल मिलाइंदा। बज़र कपाटी तोड़े पत्थर, तीर निशाना इक्क चलाइंदा। चोटी चाढ़े फड़ के सिखर, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। गुरसिख मिटे तेरा फ़िकर, जिस आपणा मेल मिलाइंदा। जिस दे पिच्छे ज़िकरीए चलाया ज़िकर, सो आपणा ज़िकर गुरमुखां आप सुणाइंदा। काया मन्दिर अंदर डूँघी कंदर विच्चों आए निकल, अनुभव आपणा रूप धराइंदा। लेखा जाणे पिता पूत मित्र, गुरमुख गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी सिख्या आपणा नाउँ समझाइंदा। साची सिख्या हरि का नाउँ, हरि जू हरि हरि करे पढ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे थाउँ, दरगाह सच वड वड्याईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, कागों हँस रूप वटाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला सिर रखे ठंडी छाउँ, समरथ पुरख दया कमाईआ। एथे ओथे दो जहान बणे पिता माउँ, गुरसिख बाल आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, तिस साची सिख्या दए समझाईआ। साची सिख्या हरि गोबिन्द, गुर गुर रूप जणाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, सगला दुःख मिटाइंदा। मेल मिलाए गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आपणा भेव खुल्ल्हाइंदा। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, लहर लहर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी सिख्या इक्क वखाइंदा। साची सिख्या आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। लेखा चुक्के जन्म मरन, मरन जन्म दए गंवाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी इक्क रखाए साची शरन, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। देवे वड्याई चार वरन, बरन अठारां मेट मिटाईआ। कर किरपा खोल्ल्हे हरन फरन, घर सतिगुर नज़री आईआ। गुरसिख दूजे घर ना जाए पढ़न, सतिगुर अंदर बैठा आपे लए पढ़ाईआ। गुरसिख गुर इक्क दूजे दा लड़ फड़न, फड़या पल्लू छुट्ट कदे ना जाईआ। साचे मन्दिर दोवें वड़न, इक्क्ठे बह बह खुशी मनाईआ। निर्भय कोलों भउ रख कदे ना डरन, पुरख अकाल गुरमुख साचे आपणे अंग लगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साची सिख्या तिस जन्म जन्म दी मिटे तरिख्या, तरिखावन्त अमृत नीर इक्क प्याईआ। साची सिख्या गुर ज्ञान, बोध अगाध गुर गुर करे पढ़ाईआ। गृह मन्दिर अंदर डूँघी कंदर वज्जे नाद, अठ्ठे पहर रहे शनवाईआ। भेव चुकाए ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आपणा रसना जिह्वा जपिआं आपे जाणे अनडिठ स्वाद, रसक रसक आपणा रस वखाईआ। कर किरपा देवे सच्चा साथ, सगला संग आप हो जाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। उठदयां बैठदयां जणाए आपणी गाथ, आत्म परमात्म कर पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठ, जिस गुरसिख सतिगुर आपणी गोद बिठाईआ। नाता तुट्टे तीर्थ ताट, अठसठ फेरा कोए ना पाईआ। जन्म जन्म दी मुक्के वाट, लख चुरासी फंद कटाईआ। गुर की सिख्या विके ना किसे हाट, रसना कह कह ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, तिस आपणी सिख्या साची बूझ बुझाईआ। त्रैगुण माया पाया पर्दा, पर्दा नज़र किसे ना आईआ। जगत तृष्ना विच सड़दा, जीव आपणी जुगत बैठा गंवाईआ। बिन हरि नामे आपणा मूल हरदा, आपणा लेखा रिहा गंवाईआ। सतिगुर कोलों रिहा डरदा, पंजां चोरां नाल प्यार रखाईआ। आपणे घर किवें वड़दा, कूड़ कुड़यारा रिहा शरमाईआ। दिवस रैण काम क्रोध नाल रिहा लड़दा, घर घर पई लड़ाईआ। जो जन सतिगुर सरन सरनाई पड़दा, तिस आत्म परमात्म एका घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईश जीव भेव अभेद माया रूप रखाईआ। माया पर्दा जाए लथ्थ, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। गुर का शब्द सुणे अकथ, बिन तन्दी तन्द वजाईआ। पंच विकारा पाए नथ्थ, दहि दिश ना उठ उठ धाईआ। मनुआ सत्थर जाए लथ्थ, मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। गुरसिख सतिगुर चरनी जाए ढठ्ठ, सतिगुर अग्गों नज़री आईआ। दोहां मिलावां होए इक्ठ्ठ, घर दसवें वज्जे वधाईआ। ओथे ना कोई तीर्थ ना कोई तट, खाणी बाणी रूप ना कोए वखाईआ। निरगुण नूर निराकार इक्को होए प्रगट, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, जगत पर्दा दिस किसे ना आईआ। कोई कहे पर्दा भम्बीरी पात, लिख लिख लेख गए समझाईआ। कोई कहे बन्द ताक, बन्द किवाड़ ना कोए खुल्हाईआ। कोई कहे डूँघा घाट, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। नानक कबीर सतिगुर वसे अंदर साथ, सदा सदा संग निभाईआ। दोए जोड़ चरन धरे जन माथ, मस्तक लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, माया कारन ईश जीव परदे ओहले विच समाईआ। पर्दा ओहला काया चोला, पंज तत्त खेल कराइंदा। जगत वासना मनुआ पाए रौला, नौ दुआर नौ खण्ड नौ नौ वेख वखाइंदा।

जिस जन सतिगुर पूरा सुणाए आपणा बोला, अनबोलत आप समझाइंदा। तिस अंदर उलटा करे नाभ कौला, अमृत मेघ बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा ओहला ओहला पर्दा आपणे हथ्थ रखाइंदा।

★ ६ माघ २०१८ बिक्रमी महिंदर सिँघ, गुरबचन सिँघ दे गृह नया शाला ज़िला गुरदासपुर ★

हरिभगत सदा परवान, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। नाम निधाना देवे दान, अन्तर आत्म आप जणाइंदा। सति सतिवादी इक्क निशान, दर घर साचे आप वखाइंदा। अनहद नाद अनादी सच्ची धुन्कान, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। जोती नूर नूर महान, दीआ बाती डगमगाइंदा। सुरती शब्दी मेला काहन, नर नरायण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप जगाइंदा। भगतन मेला हरि भगवन्त, आदि जुगादि कराइंदा। मेल मिलावा नारी कन्त, घर सुहञ्जणी सेज हंढाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। एका नाउँ मणीआ मंत, मन का मणका आप भुवाइंदा। निष्अक्खर पढ़ाए साचा अंक, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत आप तराइंदा। हरि भगतन मेला हरि दुआर, हरि सतिगुर आप कराइंदा। लख चुरासी विच्चों लए उभार, फड़ बाहों आप उठाइंदा। नेत्र लोचण दए दीदार, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाइंदा। शब्द अगम्म इक्क धुन्कार, अगम्मड़ा राग अल्हाइंदा। मेट मिटाए अन्ध अन्धयार, जोत निरँजण डगमगाइंदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। इक्क इकांती दरस दीदार, बहुभांती रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां दया कमाइंदा। हरिभगत साचा जाए उठ, श्री भगवान आप उठाईआ। पुरख अबिनाशी आपे तुट्ठ, आपणा रंग वखाईआ। एका नाम दए अतुट, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। इक्क जगाए निर्मल जोत, बिमल रूप समाईआ। हउमे कढ्ढे काया खोट, दुरमति मैल धुआईआ। भाग लगाए किला कोट, घर घर विच कर रुशनाईआ। इक्क रखाए साची ओट, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। जुग जुग भगत जन जाए जाग, सतिगुर पूरा इक्क जगाईआ। इक्क लगाए सच वैराग, वैरागी आपणी धार बंधाईआ। इक्क कराए सति त्याग, सति त्यागी आप हो जाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ हँसा मोती चोग चुगाईआ। दीपक जोत जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जन्म जन्म दा धोवे दाग, पूरब लेखा दए मुकाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आपणे चरन बहाईआ। पिता पूत संग करे लाड, जिउँ बालक मात सखाईआ।

एका देवे नाम दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप तराईआ। साचा भगत जाए तर, तरन तारनहार आप अख्वाइंदा। आदि जुगादि देवे वर, जुग जुग वेख वखाइंदा। निरभउ चुकाए झूठा डर, भय अवर ना कोए रखाइंदा। काया अंदर आपे वड़, आपणा पर्दा लाहइंदा। साचे पौड़े जाए चढ़, डूँग्घी भँवरी पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा इक्क समझाइंदा। भगत दुआरा हरी दुआर, हरि हरि आप जणाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, एका बन्धन पाईआ। सुरत शब्द दए अधार, मूर्त अकाल सरनाईआ। नाद तूरत इक्क जैकार, तुरीआ राग अलाईआ। आसा पूरत अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। घर विच घर दए वखाल, बन्द ताकी आप खुलाईआ। दीपक दीआ आपे बाल, अनभउ प्रकाश कराईआ। अमृत आत्म आप प्याल, तृष्ना भुख गंवाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवन जुगत जणाईआ। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। शब्दी शब्द वड बलवान, बल आपणा आप वखाईआ। दस्म दुआरी हो प्रधान, आपणा रंग चढ़ाईआ। भगतां मेला श्री भगवान, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। नाता तुट्टे आवण जाण, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, दर दरवाज़ा इक्क खुलाईआ। एका साहिब इक्क सुल्तान, एका हुक्म रिहा मनाईआ। एका राग एका कान, एका नाद धुन शनवाईआ। एका कन्त बैठा श्री भगवान, शाह पातशाह नज़री आईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, चरन कँवल कँवल शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप उठाईआ। साचा भगत जाए उठ, लोकमात लए अंगड़ाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी जाए तुठ्ठ, निहकर्मी कर्म कमाईआ। त्रैगुण बन्धन जाए टुट्ट, पंज तत्त ना कोए लड़ाईआ। दूई द्वैती निकले फुट्ट, एका रंग चढ़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कढ्ढे कुट्ट, आसा तृष्ना दए खपाईआ। नाता तोड़े वरन गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी एका ओट, आदि जुगादि सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे सच पढ़ाईआ। सच पढ़ाई एकँकार, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। रसना जिह्वा ना कोए विचार, बत्ती दन्द ना कोए सालाहइंदा। हरि मन्त्र मन्त्र आपणी धार, मन्त्र नाम धराइंदा। जगत बसन्तर कर खुआर, अमृत मेघ बरसाइंदा। गगन गगनंतर कर उज्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा ढाहइंदा। लोआं पुरीआं पार किनार, गृह मन्दिर इक्क वखाइंदा। थिर घर खेल अगम्म अपार, साची धारा शब्द चलाइंदा। सचखण्ड वसे आप निरँकार, निरगुण निरगुण आसण लाइंदा। आदि जुगादी शाह सिक्दार, जुग जुग हुक्म चलाइंदा। नाम अमोला सति भण्डार, लोकमात वरताइंदा। गुर अवतार सेवादार, चाक चाकरी इक्क समझाइंदा। भगत भगवन्त आप उठाल, आपणी

बूझ बुझाइंदा। लख चुरासी विच्चों लाल, अनमुलड़े आप जणाइंदा। अन्त नेड़ ना आए काल, महांकाल मुख शरमाइंदा। चित्रगुप्त ना लेखा दए वखाल, राए धर्म ना फेरी पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो दयाल, ब्रह्म आपणे अंग लगाइंदा। ईश जीव सदा कृपाल, किरपन आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जगाइंदा। हरिभगत हरि हरि प्यार, आदि जुगादि कराईआ। निरगुण सरगुण साची धार, दोए दोए रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता करया पार, द्वापर पन्ध मुकाईआ। कलयुग होया आप बेदार, गफ्लत विच कदे ना आईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ । सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघ, जुग चौकड़ी रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण वजाए मृदंग, नाम मृदंगा इक्क रखाईआ। कलयुग अन्तिम खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह आप कराईआ। लेखा जाणे जीव वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। लख चुरासी देवे दंड, बचया कोए रहिण ना पाईआ। हरिभगत उठाए इक्क जणाए आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। जन्म जुग दी टुट्टी गंढु, आपणा बन्धन पाईआ। एका राग सुहागी छन्द, सोहँ करे पढ़ाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। दो जहानां मुके पन्ध, अवण गवण ना कोए फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरि भगतां आप मिलाईआ। हरिभगत कराया हरि जू मेल, मेलणहार बनवारी। अलख अगोचर अगम्म खेल, करे कराए जोत निरँकारी। आदि जुगादि सज्जण सुहेल, वेस अनेक वटाए वड बिवहारी। साक सज्जण बण सुहेल, देवे दरस दीदारी। राए धर्म दी कटे जेल, तोड़े जगत खुआरी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पैज स्वारी। धन्न वड्याई भगत जन, जिस हरि हरि सच्चा पाया। धन्न वड्याई सन्त जन, जिन हिरदे नाम ध्याया। धन्न वड्याई भगत जन, जिस ममता मोह चुकाया। धन्न वड्याई सन्त जन, जिस इक्को ओट तकाया। दोहां विचोला आपे बण, प्रभ आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। धन्न वड्याई हरि निरँकार, अकल कला अख्वाईआ । धन्न वड्याई गुर अवतार, जुग जुग सेव कमाईआ। धन्न वड्याई भगत भण्डार, हरि नामा नाम वरताईआ। धन्न वड्याई सन्त दीदार, नेत्र लोचण नैण बिगसाईआ। धन्न वड्याई गुरमुख प्यार, हरि घोली घोल घुमाईआ। धन्न वड्याई गुरसिख यार, सत्थर यार रहे हंढाईआ। धन्न वड्याई शब्द जैकार, आदि जुगादि सुणाईआ। धन्न वड्याई निराकार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत पावे सार, डूँघी कंदर फोल फुलाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा सब तों वसया बाहर, दिस किसे ना

आईआ। वेद व्यासा कर पुकार, एका गया जणाईआ। करे खेल अगम्म अपार, निरगुण नूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना रच रच वेखे, वेखणहार अखवाया। ना कोई रूप रंग ना कोई रेख, भेस अवल्लड़ा आप कराया। नानक गोबिन्द कर आदेश, बैठे सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। आपणा खेल करे निरँकारा, निरगुण जोत रुशनाईआ। भगत बुलाए सच दुआरा, लोकमात दए वड्याईआ। आत्म ताकी खोल्ह कवाड़ा, घर घर विच करे रुशनाईआ। अग्नी तत्ती ना लग्गे हाढ़ा, अमृत मेघ बरसाईआ। मेल मिलाए साचा लाड़ा, धुरदरगाही वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां दए वड्याईआ। हरि भगतां देवे माण वड्याई, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। लख चुरासी नालों कर जुदाई, आपणा मेल मिलाइंदा। सुरत शब्द करे कुड़माई, साचा बन्धन पाइंदा। एका घर धी जवाई, सौहरे पेईए संग रखाइंदा। एका गृह वज्जे वधाई, अनहद नादी नाद अल्हाइंदा। एका मन्दिर होए रुशनाई, निरगुण जोत नूर वखाइंदा। एका कन्त सुहाग पकड़े बाहीं, घर घर विच मेल मिलाइंदा। एका देवे ठंडी छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका मेला चाँईं चाँईं, जन भगतां आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप वड्याइंदा। साचे भगत साचा माण, हरि सतिगुर आप रखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, एथे ओथे वेख वखाइंदा। लोकमात धुर फ़रमाण, सति संदेशा नाम सुणाइंदा। अग्गे जोती नूर महान, जोती जोत जोत समाइंदा। निरगुण विचोला श्री भगवान, साचा ढोला आपे गाइंदा। नाता तोड़ पंज तत्त शैतान, एका रंग वखाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे महान, भेव कोए ना पाइंदा। बिन पढ़यां देवे इक्क ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। चौदां विद्या होए हैरान, अक्खर अक्खर ना कोए समझाइंदा। चौदां तबक टुट्टा माण, चौदां लोक नैण उठाइंदा। चौदां गुर कर ध्यान, एका हुक्म मनाइंदा। सति सतिवादी हो मेहरवान, दोए दोए आपणा रंग जणाइंदा। साता दूआ कर परवान, अंक अंक नाल मिलाइंदा। बहत्तर भगत सति निशान, सतिजुग राह चलाइंदा। सति सतिवादी श्री भगवान, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। साता सिफ़रा जगत निशान, सत्तर सत्तर वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप सालाहइंदा। साचे भगत तेरी भगती सति, सति सतिवादी आप कराइंदा। एका गुण ब्रह्म मति, पारब्रह्म समझाइंदा। नाता तोड़ जगत तत्त, झूठी क्रिया मोह चुकाइंदा। इक्क बंधाए चरन नत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग निरगुण प्यार, सरगुण नाल मिलाईआ। हवन धूप विच संसार, अहूती वेख वखाईआ। तन बिभूती वेखे छार, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ।

३७८
११

चार कुण्ट होई खुआर, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा चुकाईआ। पूरब लेखा वेखे हरि, आपणा खेल कराया। ब्रह्मा वेद आपे पढ़, आपणा राग अलाया। पुराण अठारां अग्गे धर, वेद व्यास जणाया। गीता ज्ञान चुक्के डर, गुरमुख दए वड्याआ। अञ्जील कुरान घाड़न घड़, कलमा अमाम आप सुणाया। नानक अक्खर एका पढ़, एकँकार ध्याया। आदि अन्त खेल रिहा कर, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल अपारा, अपरम्पर धार चलाइंदा। भगतां देवे इक्क सहारा, एका घर बहाइंदा। कबीर जुलाहा करे पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। महल अटल वसे एकँकारा, जल थल महीअल खेल कराइंदा। नानक मेला परवरदिगारा, परम पुरख वेख वखाइंदा। एका नाद इक्क धुन्कारा, एका राग सुणाइंदा। दोए दोए जोड़ करे निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। आदि अन्त तेरा खेल न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां आप मिलाइंदा। हरिभगत मिलाया, कृपानिध आपणी दया कमाईआ। करनी करता कारज करे सिद्ध, किरत कर्म ना वेख वखाईआ। आपणे मिलण दी साची बिध, सोहँ अक्खर बणत बणाईआ। माण गंवाए रिद्ध सिद्ध, नौ अठारां ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड सहाईआ। धार वहाए सागर सिन्ध, अमृत आप प्याईआ। हरिभगत बणाए आपणी बिन्द, अनादी सुत आप उपजाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचे भगतां आप तराईआ। तरया भगत भगत दुआर, दर दरवाज़ा खुल्हाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत जोत नूर उज्यार, नूर नुराना दरस दखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन आपणे चरन लगाईआ।

★ ६ माघ २०१८ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड कतोवाल ज़िला गुरदासपुर ★

सति पुरख निरँजण शाह सुल्तान, आदि आदि वड्डी वड्याईआ। अगम्म अगम्मड़ा खेल महान, अकल कला करवाईआ। अलख अगोचर नौजवान, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। निरगुण जोत नूर महान, निराकार डगमगाईआ। भूपत भूप राज राजान, शाह पातशाह नाउँ धराईआ। सो पुरख निरँजण खेल महान, हरि पुरख निरँजण आप कराईआ। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। आदि निरँजण नूर महान, नूर

नुराना इक्क अख्वाईआ। अबिनाशी करता निगहबान, नेत्र नैण आप खुल्हाईआ। श्री भगवान सच निशान, सति सतिवादी आप बणाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, आपणी आसा नाल मिलाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्मरान, राजन राज इक्क अख्वाईआ। दर दरवेश बण दरबान, अलख अलखणा अलख जगाईआ। अगम्म अगम्मड़ा इक्क फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आदि आदि, आपणी खेल आप कराईआ। आदि पुरख हरि खेल अवल्ला, एका एक कराइंदा। सति सतिवादी वसे सच महल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। नूर प्रकाश आपे बला, जोती जोत डगमगाइंदा। अंक अंक आपे रला, आप आपणा मेल मिलाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, उच्च मनार सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अनभउ प्रकाश कराइंदा। अनभउ हरि प्रकाश, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। आपणे अंदर कर कर वास, आप आपणा खेल वखाईआ। आपे शाहो शहिनशाह शाबाश, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। आपे पावे साची रास, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। आपे सेवक दासी दास, बण चाकर सेव कमाईआ। आपे नाउँ रख पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणा खेल आप कराईआ। आदि पुरख एका हरि, एका रंग समाइंदा। सच महल्ले बैठा चढ़, सच सिँघासण आसण लाइंदा। निरभउ होए ना रखे डर, भउ अवर ना कोए जणाइंदा। अजूनी रहित ना जन्मे ना जाए मर, मूर्त अकाल आप समाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, हरि जू आपे वेख वखाइंदा। आपणे मन्दिर वसे साचे घर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। निर्मल जोती दीपक धर, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सोभावन्त, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी बैठा कन्त, नर नरायण सोभा पाईआ। भेव अभेद महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दए वड्याईआ। सचखण्ड वड्याई हरि निरँकार, एका एक रखाइंदा। अलख अगम्म हो त्यार, अनुभव रूप वटाइंदा। भूपत भूप बण सिक्दार, हुक्मी हुक्म चलाइंदा। दर दरवेश बण भिखार, भिखक एका मंग मंगाइंदा। देवणहार बण वरतार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। चरन कँवल धूढ़ी छार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपे दाता बण भिखारी, सचखण्ड खुशी मनाईआ। आपे भूपत बण सिक्दारी, आपे रइयत वेस वटाईआ। आपे वणज करे वणजारी, साचा हट्ट आप खुल्हाईआ। आपे वेखे विगसे करे विचारी, वेखणहार आप हो जाईआ। आपे करता पुरख करे कारी, करनहार वड वड्याईआ। आपे निरगुण नूर जोत उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। आपे सचखण्ड

वसे सच अटारी, महल अटल दए वड्याईआ। आपे खोले बन्द किवाड़ी, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आपे पुरख आपे नारी, आपे साची सेज हंढाईआ। आपे दाई दाया बण बण करे सेवा अपर अपारी, सेवक सेवक नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी कल आप प्रगटाईआ। आपणी कल आपे रख, सचखण्ड सोभा पाइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रतख, वेस अवल्ला आप वटाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। आपे देवे आपणी वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही खेल कराइंदा। महिमा जाणे अकथना अकथ, कथनी कथ्थ ना कोए सुणाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच महल अटल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव हरि आपे चुक्क, निरगुण दया कमाईआ। सचखण्ड दुआर जो बैठा लुक, पर्दा दए उठाईआ। उज्जल करे साचा मुख, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया आपे दान, देवणहार अख्वाइंदा। तख्त निवासी श्री भगवान, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दाता दानी देवे दान, सच भण्डार आप वरताइंदा। निरगुण वस्त वस्त महान, जोती शब्द खेल कराइंदा। शब्दी शब्द बलवान, बलधारी आप उपजाइंदा। कृपानिध वड मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण नौजवान, हरि पुरख निरँजण नाल मिलाइंदा। एकँकारा कर ध्यान, आदि निरँजण नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता देवे माण, श्री भगवान सिर हथ्थ टिकाइंदा। पारब्रह्म कर प्रधान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। छोटे बाले बाल नादान, सुत शब्दी प्रभ साची सेवा लाइंदा। तेरा मन्दिर इक्क मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। ना कोए दिसे चार दीवार, बाडी बणत ना कोए बणाइंदा। सूरज चन्न ना कोए उज्यार, रवि ससि ना कोए रुशनाइंदा। एका दीपक देवां बाल, जोती जोत डगमगाइंदा। नाउँ रख थिर घर सच्ची धर्मसाल, तेरा आसण लाइंदा। तूं सुत दुलारा छोटा बाल, प्रभ आपणी गोद बहाइंदा। आदि जुगादि चलां नाल नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। चरन प्रीती घालण सच्ची घाल, सचखण्ड निवासी एह समझाइंदा। निरगुण निरगुण बणे दलाल, सच विचोला सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे आपे वड़, आपणा दीपक आप जगाइंदा। थिर घर साचा कर त्यार, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। सति सतिवादी सति विहार, सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। शब्दी शब्द कर उज्यार, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। एका दीपक इक्क पसार, एका वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ले आपे खड़, आपणा दरस दए कराईआ। सच महल्ले हरि जू खड़या, निरगुण नूर जोत जगा। सुत शब्द चरनी पड़या,

प्रभ अग्गे सीस झुका। साहिब दातार तेरा पल्लू फड़या, छुट कदे ना जा। पुरख अबिनाशी सिर हथ्थ धरया, देवे इक्क पनाह। निरगुण निराकार निष्अक्खर एका पढ़या, नाउँ निरँकारा दए समझा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे बणत बणा। थिर घर बणाई हरि जू बणत, चरन कँवल शरनाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। इक्क चढ़ाए साची रंगत, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द दए वड्याईआ। शब्द सुत बण निमाणा, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं शहिनशाह शाह वड जरवाणा, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। आदि जुगादि मन्नां तेरा भाणा, सद भाणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण बिध सेव तेरी कमाइंदा। कवण बिध कमावां सेव, शब्दी सुत सीस झुकाया। तूं पारब्रह्म अलख अभेव, हउँ बालक भेव ना राया। तूं आदि जुगादि सदा नेहकेव, निहचल धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। पुरख अबिनाशी हो दयाल, सुत शब्द दए वड्याईआ। उठ पूत मेरे चतुर सुजान, बाल बाले बाल सखाईआ। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, एका वार पढ़ाईआ। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण इक्क वखाईआ। मेरी रचना तेरा माण, तेरा माण मेरी वड्याईआ। मेरा हुक्म सच फ़रमाण, सति सतिवादी आप समझाईआ। जोधा सूरा बण बलवान, सिर तेरे छत्र झुलाईआ। तेरी रखां एका आण, एका घर बहाईआ। एका चिल्ला तीर कमान, सच्चा शस्त्र हथ्थ फड़ाईआ। एका वस्त अनमुलड़ी दान, दाता दानी इक्क जणाईआ। तेरा खेल श्री भगवान, इक्क इकल्ला आप कराईआ। तेरे अन्तर नूर महान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। थिर घर तेरा मन्दिर मकान, सचखण्ड निवासी दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख देवे वर, सुत शब्द माण रखाईआ। सुत शब्द सिर रखे हथ्थ, प्रभ अबिनाशी दया कमाइंदा। तेरे मन्दिर अमोलक वथ्थ, विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाइंदा। निरगुण निराकार साचा मार्ग दस्स, साचे पन्ध लगाइंदा। इक्क इकल्ला पूरी करे आस, आसा आसा विच समाइंदा। तेरा खेल ब्रह्मण्ड खण्ड निवास, कोटन कोटि रूप धराइंदा। तेरा रूप पृथ्मी आकाश, गगन मंडल नाल मिलाइंदा। तेरी धार त्रैगुण रास, रजो तमो सतो खेल खलाइंदा। तेरा संग पंज तत्त अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, साचा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाइंदा। साची सेवा साचे सुत, हरि सतिगुर आप लगाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, एका रंग वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुहाए रुत्त, त्रै पंज करे कुड़माईआ। निरगुण अंदर निरगुण उठ, सरगुण वेख वखाईआ। पंज तत्त बणाए काया किला कोट, गढ़ मन्दिर आप सुहाईआ। अंदर रख निर्मल जोत, जोत

३८२
११

निरँजण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी सेवा इक्क समझाईआ। लख चुरासी सेवा अपार, हरि साचा सच जणाइंदा। घाड़त घड़ बण ठठयार, घड़न भन्नणहार खेल कराइंदा। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड कर त्यार, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। पंज तत्त तत्त आकार, साकार रूप वखाइंदा। नौ दुआर खोल्ह किवाड़, जगत वासना नाल मिलाइंदा। पंचम पंच कर प्रचार, नाद शब्द धुन जणाइंदा। पंचम काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना हउमे हंगता नाल मिलाइंदा । पंज दस खेल करतार, कुदरत कादर इक्क जणाइंदा। पंज पंजी होए पनिहार, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। हड्ड मास नाड़ी रत्त जोड़ संसार, रूप अनूप आप वखाइंदा। मन मति बुध देवे धार, निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। घर विच घर कर त्यार, आपणा आसण लाइंदा। आपे करे बन्द किवाड़, बज़र कपाटी सोभा पाइंदा। आपे रखे अमृत ठंडा ठार, निझर झिरना आप रखाइंदा। आपे ईड़ा पिंगल कर सेवादार, दर दुआरे आप बहाइंदा। आपे खेले खेल सुखमन टेढी गार, बंक आपणे अंक लगाइंदा। आपे सुरती सुरत कर त्यार, अकाल मूर्ति रंग वखाइंदा। आपे नाद तूरती सति जैकार, तुरीआ राग आप अल्हाइंदा। आपे परा पसन्ती मद्धम बैखरी देवे धार, रागी आपणा राग सुणाइंदा। आपे काया मन्दिर अंदर बणाए सची धर्मसाल, सुत दुलारे नाल मिलाइंदा। शब्दी शब्द वज्जे तेरा ताल, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे खेल करे भगवान, खेलणहारा दिस ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पंज तत्त अंदर करन कल्याण, दर दर साची सेव लगाइंदा। नाल रखाए काल महांकाल वड बलवान, आपणा बल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द हरि देवे वर, तेरी रचना आप समझाइंदा। तेरी रचना सूरज चन्द, किरन किरन विच चमकाईआ। लोआं पुरीआं बेड़ा बन्न्ह, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी शरनाईआ। मेरा नाउँ तेरा धन, सच खज़ाना तेरी झोली पाईआ। मेरा राग तेरा कन्न, अनादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द देवे वर, वस्त अनमुलड़ी आप वरताईआ। सुत शब्द हरि चढ़या चाअ, थिर घर साचे खुशी मनाइंदा। पुरख अबिनाशी मिल्या मलाह, बेड़ा आप उठाइंदा। मेरा नाउँ दए वड्या, दो जहानां खेल कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रला, सेवक सेवा सच समझाइंदा। पंज तत्त बन्धन देवे पा, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी घाड़न दए घड़ा, घट घट आपणा नूर रखाइंदा। गेड़ा गेड़े देवे ला, गेड़नहार आप हो जाइंदा। आपणा नाउँ दए समझा, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। पृथ्मी आकाश दए रचा, जल थल महीअल डेरा लाइंदा। सूरज चन्न दए चढ़ा, रवि ससि प्रकाश कराइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ दए बणा, डूँघी कंदर सोभा पाइंदा। आपणी इच्छया दए समझा, साची भिच्छया आप

वरताइंदा। विष्नूं एका हुक्म दए सुणा, घर घर रिज़क पुचाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप वंड वंडा, लख चुरासी डेरा लाइंदा। शंकर डेरा देवे ढाह, जो घड़या भन्न वखाइंदा। तिन्नां विचोला बेपरवाह, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। एका दिती सच सलाह, साची सिख्या इक्क जणाइंदा। ब्रह्मा वेता ल्या पढ़ा, एका राग अलाइंदा। चारे वेद रिहा सुणा, अक्खर अक्खर नाल मिलाइंदा। हरि का भेव ना जाणे रा, पुरख अबिनाशी खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, सुत दुलारा खुशी मनाइंदा। सुत दुलारा करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं शाह पातशाह सच्ची सरकार, तख्त निवासी वड वड्याईआ। तेरी सेवा करां अपर अपार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। लख चुरासी बण वणजार, साचा हट्ट चलाईआ। एका देणा दरस दीदार, हउँ भिखक मंग मंगाईआ। तुध बिन अवर ना कोए सहार, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। आदि जुगादी एका एक तूं निरँकार, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। दो जहानां बणना सिक्दार, सच सिक्दारी आप कमाईआ। लोआं पुरीआं करना खेल अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बालक मंग मंगाईआ। मंगां मंग बण बण बाल, शब्दी शब्द नीर वहाइंदा। मेरा लेखा करीं परवान, लेखा तेरी झोली पाइंदा। मेरी आदेश मेरे मेहरवान, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। तूं आदि जुगादी सच्चा काहन, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। एका देणा सच निशान, मैं तेरा हथ्थ उठाइंदा। लेखा जाणा दो जहान, दोए दोए रूप धराइंदा। लख चुरासी करां परवान, कर कर खेल खलाइंदा। तेरा नाउँ करां प्रधान, गृह गृह डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग वखाइंदा। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी दया कमाईआ। उठ दुलारे मेरे लाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, पंज तत्त कर कुड़माईआ। मेरा जा सुणा हाल, प्रभ इक्को सच्चा माहीआ। आदि जुगादि करे प्रितपाल, नित नित सेव कमाईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारे सोभा पाईआ। चरन प्रीती घालणी घाल, घाली घाल ना बिरथी जाईआ। तेरा हल्ल करां सवाल, बण सवाली मंग मंगाईआ। तेरी सेवा काल महांकाल, बन्धन एका हथ्थ फड़ाईआ। जुग चौकड़ी चलां चाल, साची वंड वंडाईआ। चार वेद कर प्रधान, महिमा मात सुणाईआ। चार खाणी कर ज्ञान, चारे बाणी इक्क पढ़ाईआ। चार वरन देणा माण, बरन अठारां रूप धराईआ। चार जुग इक्क निशान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अंग लगाईआ। जुग जुग गेड़ा गेड़े श्री भगवान, कोहलू चक्की चक्क भुआईआ। कोटन कोटि देवे बोध ज्ञान, अकथ कथा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल दीन दयाल वर देवे सच्चा माहीआ। वर घर पाया एका वार,

थिर घर वज्जी वधाईआ। निरगुण सरगुण करे त्यार, सारंगधर खेल कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, बण बण चाकर सेव कमाईआ। शब्दी शब्द बण वणजार, एका हट्ट खुल्हाईआ। एका नाम कर जैकार, जै जैकार सुणाईआ। निरगुण सरगुण करे ख़बरदार, एका बूझ बुझाईआ। पुरख अबिनाशी हो त्यार, अपरम्पर वेस वटाईआ। रचे सुअम्बर हरि करतार, पुरख नारी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कराईआ। आपणी कार करनेयोग, हरि करता आप कराइंदा। आपे भोगे भोगी भोग, भस्मड़ आपणी खेल कराइंदा। आपे संजोग आपे विजोग, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे वसे रंग नवेल, ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता दुःख ना कोए जणाइंदा। आपे लेखा जाणे चौदां लोक, परलोक आपणे चरनां हेठ दबाइंदा। त्रैभवन धनी सुणाए इक्क सलोक, साचा ढोला आपे गाइंदा। आपे देवणहारा मोख, बन्धन बन्दी आप तुड़ाइंदा। आपे लख चुरासी देवे झोक, गेड़ा गेड़े विच भुआइंदा। आपे देवे साची ओट, चरन कँवल दरसाइंदा। आपे वसे काया कोट, घर घर विच सोभा पाइंदा। आप जगाए निर्मल जोत, बिस्मिल आपणी धार वखाइंदा। आपे जाणे आपणा ओत पोत, पुत्त पोतरे खेल कराइंदा। आपे वरन आपे गोत, आपे आपणी वंड वंडाइंदा। आपे कढ्ढणहारा खोट, दूई द्वैती डेरा ढाहइंदा। आपे फड़ फड़ चाढ़े चोट, आपे ख़ाकी ख़ाक मिलाइंदा। आपे दए भण्डार अतोट, हरि शब्दी नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी क्रिया आप कराइंदा। साची क्रिया कर्म कांड, हरि करता बन्धन पाईआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मांड, ब्रह्माद वेस वटाईआ। वंडण वंडे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत सहिज सहिज समझाईआ। सुण सुत मेरे छोटे लाल, हरि सच करे जणाईआ। लख चुरासी खाए काल, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी होए बेहाल, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। जूठ झूठ वज्जे ताल, लोकमात खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। सुत शब्द अग्गों मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कवण बिध तेरा छुटे ना संग, होए ना मात जुदाईआ। कवण बिध काल ना लाए अंग, राए धर्म ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। सतिगुर पूरा पुरख करतार, पूरन ब्रह्म जणाइंदा। खेले खेल खेल जुग चार, चौकड़ चौकड़ी वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण लै आवे अवतार, गुर सतिगुर नाउँ धराइंदा। एका नाउँ बोल जैकार, जीव जंत आप समझाइंदा। सेवा कर विच संसार, अन्त आपणा मूल चुकाइंदा। बेअन्त बेअन्त कह कह जाण पुकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप समझाइंदा। साची सेवा गुर अवतार, सतिजुग

त्रेता द्वापर मात कराईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यार, पंचम पंच दए वड्याईआ। भगत भगवन्त इक्क ज्ञान, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। सन्तां देवे एका माण, चरन सरन शरनाईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुजान, सुरती शब्द मिलाईआ। गुरसिखां देवे एका नाम निधान, निज आत्म करे रसाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, जुग करता आप कराईआ। नव नौ चार खेल जहान, दो जहानां वाली वेख वखाईआ। लेखा जाण रमइया राम, रमत रमत समाईआ। खेले खेल गोपी काहन, एका बंसरी नाम वजाईआ। एका कलमा पढ़े कलाम, अमाम अमामा आप सुणाईआ। मुकामे हक़ इक्क निशान, शाह सुल्तान आप झुलाईआ। परवरदिगार नौजवान, नूर नुराना नूर इलाहीआ। पंज तत्त काया दए अधार, ईसा मूसा वेस वटाईआ। काला सूसा तन शृंगार, एका अल्फ़ी लए हंढाईआ। एका सूफ़ी दे दीदार, नेत्र लोचण नैण नैण खुल्हाईआ। इक्क मुहम्मद मिलावा चार यार, चौथे जुग वेख वखाईआ। हक़ हक़ीक़त खोल्ह किवाड़, लाशरीक वंड वंडाईआ। इक्क तौफ़ीक खुदाए मददगार, मिहबान बीदो एका घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। आपणा भेव दस्से अवल्ला, मुकामे हक़ हक़ खुदाईआ। निरगुण नूर नूर अल्ला, आलमीन करे रुशनाईआ। आपणी धार जणाए बिस्मिला, बिस्मिल आपणा रंग वखाईआ। आपे कलमा कलाम इल लिला, ऐनलहक़ हक़ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द वंड वंडाईआ। शब्द गुर तेरा रूप अपारा, हरि पुरख निरँजण आप जणाइंदा। मेरा नूर तेरी धारा, धार धार विच रखाइंदा। मेरा महल्ल सचखण्ड दुआरा, तेरा घर थिर घर नाउँ रखाइंदा। तेरे अंदरों निकले गुर अवतारा, मातलोक फेरा पाइंदा। सुन अगम्मी पार किनारा, धूंआँधार ना कोए वखाइंदा। कलयुग अन्त खेल न्यारा, पंज तत्त काया सोभा पाइंदा। नानक नानक नानक शब्द वणजारा, नाम वस्त वस्त वरताइंदा। दरस पाए दर दीदारा, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। गुफ़त शुनीद खेल न्यारा, महबूब रंग वखाइंदा। एका नाद धुन जैकारा, रागी राग अल्हाइंदा। एका नाम सति वणजारा, सति सतिवादी आप कराइंदा। एका ब्रह्म ब्रह्म भण्डारा, पारब्रह्म वरताइंदा। एका जोत एका धारा, एका शब्द नाद सुणाइंदा। एका गुर इक्क अवतारा, एका घर बहाइंदा। एका गाए मंगलाचारा, पंचम नाद पंचम शब्द सेव कमाइंदा। सतिनाम सति विहारा, सोहँ आत्म परमात्म धारा, रारंकार करे निमस्कारा, जोत निरँजण इक्क उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ओंकार आपणी धार जणाईआ। ओंकार वेखे सतिनाम, नाम सति सति जणाइंदा। करे खेल श्री भगवान, जुग जुग वेस वटाइंदा। गुर अवतारां देवे दान, आपणी वस्त आप वरताइंदा। लोकमात कर प्रधान, पंज तत्त काया आप वड्याइंदा। घर विच घर खोल्ह दुकान, सच भण्डारा आप जणाइंदा। अमृत

आत्म पीण खाण, तृष्ना भुख जगत मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल कर, गुर शब्दी देवे इक्को वर, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। तेरे सिर हथ्थ रखे करतार, कुदरत कादर खेल कराईआ। गुर अवतार सेवादार, पीर पैग़म्बर चाकरी रहे कमाईआ। तूं साहिब सब दा सिक्दार, हुक्मी हुक्म भुवाईआ। जुग चौकड़ी कर खुआर, अन्त लेखा दए मुकाईआ। तेरी महिमा रहे विच संसार, कोटन कोटि रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, नव नौ चार खेल कराईआ। नव नौ चार खेल संसार, हरि सतिगुर आप जणाया। अन्तिम मेला अगम्म अपार, अलख अगोचर दए कराया। लोकमात बणाए सच दरबार, सचखण्ड निवासी फेरा पाया। महांबली होए आप निरँकार, निरगुण निरवैर वेस वटाया। नानक गोबिन्द कर प्यार, एका गोद लए बहाया। शब्द अगम्मी तेज कटार, नाम खण्डा लए चमकाया। आपे उतरे आपणी वार, धार धार विच्चों बदलाया। सम्बल वेखे धाम न्यार, सच सिँघासण सोभा पाया। शब्द अगम्मी बोल जैकार, आत्म परमात्म लए मिलाया। ईश जीव दए अधार, जगदीश रूप वटाया। जोग अभ्यास ना कोई कार, जिस जन आपणा दरस दखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मेला लए मिलाया। अन्तिम तेरा मेल मिलाउणा, मिल मिल खुशी मनाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध पार कराउणा, पाँधी बण बण फेरा पाईआ। जोती जामा वेस वटाउणा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। शब्द गुर इक्क वखाउणा, चार वरन करे कुड़माईआ। निहकलंक नाउँ धराउणा, धरनी धरत धवल सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाउणा, सुरपति इन्द नाल मिलाईआ। गण गंधरव नैण वखाउणा, किन्नर यच्छप सदा रहे जस गाईआ। भगत भगवन्त आप जगाउणा, आपणा पर्दा दए उठाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े मेल मिलाउणा, सन्त साजण लए मिलाईआ। गुरमुख गोदी आप बहाउणा, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। गुरसिख रंग इक्क चढ़ाउणा, उतर कदे ना जाईआ। अमृत आत्म जाम प्याउणा, अठसठ तीर्थ फेरा कोए ना पाईआ। अनहद नादी नाद वजाउणा, छत्ती राग मुख शरमाईआ। फड़ फड़ कागों हँस बणाउणा, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। बज़र कपाटी कुण्डा लौहणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। सुरती शब्दी आप मिलाउणा, एका बन्धन पाईआ। आत्म सेजा संग रखाउणा, नारी कन्त रंग जणाईआ। सच मृदंगा इक्क वजाउणा, मर्द मर्दानगी आपणे हथ्थ वखाईआ। पंच विकारा डेरा ढाउणा, ढह ढह ढेर कराईआ। रातीं सुत्तयां दरस दखाउणा, गुरमुख आपणे संग रखाईआ। लख चुरासी फंद कटाउणा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त ना हिसाब वखाउणा, लाड़ी मौत ना लए प्रनाईआ। गुरमुख आपणी गोद बहाउणा, बण कहार सेव कमाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराउणा, सुन्न अगम्म डेरा ढाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुरमुख तेरे चरनां

३८७
११

हेठ दबाउणा, पारब्रह्म देवे माण वड्याईआ। थिर घर साचे कुण्डा आपे लौहणा, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। शब्दी शब्द विच मिलाउणा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। दीनन दया आप कमाउणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत जोत मिलाउणा, निरगुण नूर नूर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। गुर शब्दी गुर होया मेला, घर घर वज्जे वधाईआ। सतिगुर मिल्या इक्क इकेला, विछड़ कदे ना जाईआ। एका रंग रंगे गुरू गुर चेला, गुर चेला रंग समाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, ख़ालक ख़लक भेव ना राईआ। एथे ओथे दो जहान सज्जण सुहेला, साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा लिखे बिन कलम शाहीआ। कलम शाही ना पाए सार, लिख लिख पन्ध ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार कर कर गए पुकार, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। नाम जप जप कट कट गए वगार, बण सेवक सेव कमाईआ। अन्तिम ओट रख के गए प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, जिस दा पिता ना कोई माईआ। भैण भाई ना कोए प्यार, साक सज्जण सैण ना कोए अख्वाईआ। बिन हरि भगतां देवे ना किसे अधार, लख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। घर घर वजाए शब्द नगार, पंचम शब्द रहे जस गाईआ। वाहवा सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। पाया पुरख एकँकार, ना मरे ना जाईआ। सुरत सवाणी होई बेदार, गुर शब्दी ल्या जगाईआ। हाणी हाण मिल्या एका वार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। कलयुग जीव होण खुआर, बिन हरि सार कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान बाणी खाणी गीता ज्ञान गए हार, हरि का रूप नज़र ना आईआ। अठसठ तीर्थ ठर ठर थक्का नर नार, अग्नी तत्त ना कोए बुझाईआ। डूँग्घी कंदर वड़ वड़ जोग अभ्यास, कर कर रहे पुकार, नेत्र मूंद ना होया दीदार, कँवल नैण ना नज़री आईआ। मणका मणका फेरन वारो वार, रसना जिह्वा करन पुकार, हउमे हंगता माया ममता सके ना कोए मार, बिन सतिगुर पूरे देवे ना कोए शरनाईआ। सतिगुर पूरा सिरजणहार, डुब्बदे पाथर लए तार, कोट जन्म दे पापी पतित पुनीत करे देवे दरस अपार, दीद दीद नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन जन हरि हरि जू आपणे रंग रंगाईआ। हरि रंग राता पुरख बिधाता, आपणे रंग समाइंदा। आदि जुगादी उत्तम जाता, ज़ात पात विच कदे ना आइंदा। सर्ब जीआं दा पिता माता, लख चुरासी गोद बहाइंदा। जन भगतां जोड़े साचा नाता, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। इक्को सुणाए आपणी गाथा, साचा नाम आप दृढ़ाइंदा। इक्क वखाए साचा हाटा, हट्ट हटवाणा सोभा पाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, घाटी आपणी आप चढ़ाइंदा। कलयुग मेटे अन्धेरी राता,

३८८
११

सति सति आपणा नाम जणाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जिस जन जाता, जन जननी लेखे लाइंदा। जीव जंत त्रैगुण माया सुट्टे डूँग्घे खाता, फड़ बाहों बाहर ना कोए कढाइंदा। धर्म राय दा खुल्ला हाता, साहिब सुल्तान आप बणाइंदा। मनमुख नार होण कमज़ाता, हरि कन्त ना अंग लगाइंदा। जिस जन मिल्या सतिगुर समराथा, सो जन आपणा मूल चुकाइंदा। एथे ओथे दो जहान सगला साथा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लेखे लग्गे पूजा पाठा, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। भगवान किसे हथ्थ ना आए गल्लां बातां, पढ़ पढ़ पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जन भगतां देवे आपे दातां, नित नवित वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल कमलापाता, कँवल गुरमुख आप खुलाइंदा। गुरमुख कँवल खिले फुल्ल, फुलवाड़ी मात महकाईआ। देवे वस्त नाम अतुल्ल, अतोल ना तोलया जाईआ। हरिजन रखे सदा अडुल, डोले ना विच लोकाईआ। भाग लगाए साची कुल, जिस घर गुरमुख फेरा पाईआ। गुरसिख बूटा मात ना जाए हुल, सतिगुर पूरा फल साचा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ऐथे ओथे दो जहानां पाए मुल, करता कीमत आप चुकाईआ। करता कीमत देवे पा, हरिजन तेरा भेव कोए ना पाइंदा। दर दरवेश दर दरबान दर्दी दर्द लए वंडा, दीनां नाथा सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नाम अक्खर जगत अक्खर साची सिख्या दए समझा, साख्यात रूप वटाइंदा। बज़र कपाटी पन्ध दए तुड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर साचा आप सुहाइंदा। घर मेला मिले जा, पेखत पेखत पेखत तुड़ाईआ। मिले मेल ग़रीब निवाजा, गुरबत कोए नज़र ना आईआ। घर विच घर वखाए सच्चा हाजा, सच सवाबे आसण लाईआ। आपे देवे आबे हयात आबा, आब हयात आबे हया नूरो नूर प्रकाश होए आफ़ताबा, किरन किरन किरन चमकाईआ। मुकंद मनोहर मोहन माधव माधा, मधुर आपणी धुन सुणाईआ। राम राम रम्मईआ इक्को लाधा, घर घर विच खुशी रखाईआ। नानक गोबिन्द मारे वाजां, शब्दी शब्द सुणाईआ। भगत भगवन्त साजन साजा, पिच्छे फिरे वाहो दाहीआ। राग तम्बुर छड्डया जगत साजा, इक्को अनहद राग सुणाईआ। लख चुरासी विच्चों काढा, सतिगुर आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सतिगुर चरन सतिगुर शरन हरन फरन दए खुल्हाईआ। हरन फरन खुल्ल्हे अक्ख, नेत्र नैण खुल्हाईआ। दरस दिखाए हो प्रतख, रूप अनूप वटाईआ। सतिगुर पूरा पुरख समरथ, सर्बकला भरपूर हर घट रिहा समाईआ। पहलों गुरसिखां दुआरे आप जाए ढट्ठ, फिर गुरसिख लए मनाईआ। फिर सुणाए आपणा पाठ, गुरमुख लए पढ़ाईआ। धुरदरगाही साची दात, लोकमात वरताईआ। हरिभगत बणाए इक्क जमात, द्वैती पट्टी ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, दस्त बदस्त वस्त फड़ाईआ। दस्त बदस्त देवे ना करे उधार, उधारनहारा आया। डुबदे पाहन लए तार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। विष्न ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। गुर अवतार करन विचार, पुरख अबिनाशी खेल कराया। प्रगट होया विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाया। जूठ झूठ करे खुआर, माया ममता मोह चुकाया। एका नाम शब्द बोल जैकार, चार वरनां दए समझाया। कलयुग कूड़ी क्रिया दए निवार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण साचे लए फड़, एका पल्लू हथ्थ रखाया। एका पल्लू नाम डोर, हरिजन आप फड़ाईआ। शब्द वेखे अन्धघोर, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। घर घर वड़े पंज चोर, दिवस रैण करन लड़ाईआ। आपणा बल उसार ना सके कोई जोड़, सृष्ट सबाई रोवे नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा करे प्यार, दु:ख दर्द दए निवार, दूई द्वैती करे खुआर, हउमे हंगता गढ़ तोड़े हँकार, आत्म परमात्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ।

★ १० माघ २०१८ बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे गृह नवां पिण्ड ज़िला गुरदासपुर ★

आदि जुगादी इक्क भगवान, हरि एका रंग समाइंदा। आदि जुगादी इक्क मकान, सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण इक्क निशान, सति सतिवादी सति झुलाइंदा। हरि पुरख निरँजण इक्क परवान, दीनण आपणी दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण इक्क बलवान, बलधारी नाउँ रखाइंदा। सो पुरख निरँजण इक्क दुकान, सति पुरख निरँजण आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण एका गान, नाम निधाना आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा खेल खलाइंदा। आदि जुगादी इक्क भगवन्त, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण एका कन्त, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आदि अन्त लेखा जाणे जीव जंत, लख चुरासी रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि पुरख इक्क निरँजण, आदि निरँजण वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि दर्द दु:ख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। सो पुरख निरँजण एका अंजन, एका नेत्र रिहा पाईआ। हरि पुरख निरँजण एका सज्जण, जुग जुग संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि जुगादि एका दाता, दाता दानी हरि अख्वाइंदा। आदि जुगादि इक्क ज्ञाता, बोध ज्ञान दवाइंदा। सो पुरख निरँजण एका नाता, बन सच्चा कराइंदा। सो पुरख निरँजण पिता

माता, पुरख अबिनाशी नाउँ धराइंदा। हरि पुरख निरँजण साची गाथा, निष्अक्खर गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, अमर नीर रूप वटाइंदा। आदि जुगादी एका हरि, वड्डा वड वड्याईआ। एका नर नर नरायण, रंग रेख रूप ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घाड़न लए घड़, घड़न भन्नणहार ढह हराइंदा। एका सच सिँघासण सच चढ़, शाह शाबाश, सच्चा शहिनशाहीआ। सो पुरख निरँजण एका अक्खर जाए पढ़, जुगा जुगन्तर करे पढ़ाईआ। हरि पुरख निरँजण ना जन्मे ना जाए मर, जोती जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि जुगादि एका रंग, आदि पुरख समाइंदा। आदि जुगादी इक्क पलँघ, सति सतिवादी सेज हंढाइंदा। सो पुरख निरँजण इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच कराइंदा। हरि पुरख निरँजण एका छन्द, आत्म परमात्म ढोला गाइंदा। सो पुरख निरँजण एका चन्द, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी कल आप वरताइंदा। आदि जुगादी एका ब्रह्म, पारब्रह्म प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण एका कर्म, निहकर्मी आप कमाईआ। हरि पुरख निरँजण एका धर्म, सति सतिवादी सच सच जणाईआ। सो पुरख निरँजण एका बरन, वरन गोत ना कोए रखाईआ। सो पुरख निरँजण एका शरन, शरनगत हरि रघुराईआ। हरि पुरख निरँजण एका करता करनी करन, कुदरत कादर खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुग जुग वेस, अवल्लड़ा आप कराइंदा। आदि जुगादि रहे हमेश, पारब्रह्म बेअन्त भेव कोए ना पाइंदा। सो पुरख निरँजण सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष, शंकर दानी गंढु पुवाइंदा। सो पुरख निरँजण सदा आदेस, निउँ निउँ एका सीस झुकाइंदा। सो पुरख निरँजण आपे सुत्ता बासक सेज, विष्नूं आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आदि जुगादी इक्क ज्ञान, जुग जुग करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क निशान, जुग जुग आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण एका राम, रमक रमक समाईआ। सो पुरख निरँजण एका काहन, कँवल नैण वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क मुकाम, मुकामे हक़ नूर खुदाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क असलाम, असलामालैकम आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण एका नाम, सतिनाम करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क महान, नूर नूर करे रुशनाईआ । हरि पुरख निरँजण एका सुरत पीण खाण, घर घर आप वरताईआ। सो पुरख निरँजण एका बाण, नाम अन्याला तीर चलाईआ। हरि पुरख निरँजण एका होए जाणी जाण,

अभुल बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण एका माण, एका ओट समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि जुगादी एका गुर, इष्ट देव गुर आप अख्वाइंदा। सो पुरख निरँजण सेवा नर, शरीअत साची सेव सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। सो पुरख निरँजण चढ़े घोड़, शाह सवारा फेरी पाइंदा। हरि पुरख निरँजण लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जाए बौहड़, जेरज अंडां वेख वखाइंदा। सो पुरख निरँजण वेखणहारा मिट्ठा कौड़, रस आपणा आप चखाइंदा। हरि पुरख निरँजण रिहा दौड़, दो जहानां फेरा पाइंदा। सो पुरख निरँजण करे गौर, गहर गवर गम्भीर भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आदि जुगादि एका रंग वखाइंदा। आदि जुगादी साची कार, करता पुरख आप कराईआ। सो पुरख निरँजण हरि करतार, एका सेज हंढाईआ। हरि पुरख निरँजण जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। सो पुरख निरँजण शब्दी धार, शब्दी शब्द रूप धराईआ। हरि पुरख निरँजण कर पसार, पसर पसारा वेखे चाँईं चाँईआ। सो पुरख निरँजण गुर अवतार, गुर गुर सेव लगाईआ। हरि पुरख निरँजण त्रैगुण मार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं रंग वटाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, जुग करता खेल कराइंदा। आदि जुगादि शब्द गुर मन्त्र, नमो नमो आप पढ़ाइंदा। सो पुरख निरँजण जाणे बिध अन्तर, घट घट वेख वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण लेखा चुकाए गगन गगनंतर, वेस अनेक रूप धराइंदा। सो पुरख जुग जुग बणाए बणतर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। हरि पुरख निरँजण बुझाए बसन्तर, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। आदि जुगादि हो प्रतख, परम पुरख दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण जन भगतां करे पक्ख, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। सन्त सुहेले लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो पुरख निरँजण गुरमुखां मार्ग एका दस्स, आत्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। हरि पुरख निरँजण गुरसिखां हिरदे वस, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सो पुरख निरँजण कक्खों करे लख, लखों कक्ख कक्ख चलाईआ। सो पुरख निरँजण मनमुखां कोलों जाए नस्स, हथ्थ किसे ना आईआ। हरि पुरख निरँजण निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, जगत अन्धेर मिटाईआ। सो पुरख निरँजण करे खेल शाहो शाबाश, नैणां आपणा रूप धराईआ। हरि पुरख निरँजण मंडल मण्डप बह बह पावे रास, गोपी काहन आप नचाईआ। सो पुरख निरँजण लेखा जाणे दस दस मास, मात गर्भ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, नादी नाद सुणाईआ। आदि जुगादि एका धुन, हरि साचा सच

३६२
११

रखाइंदा। सो पुरख निरँजण एका गुण, गुणवन्ता आप प्रगटाइंदा। हरि पुरख निरँजण एका रसन, धरती धरत धवल वंडाइंदा। सो पुरख निरँजण सन्त सुहेले चुण, आपणे रंग रगाइंदा। हरि पुरख निरँजण लहिणा देणा देवे लिख तन मन, नेत्र वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप जणाइंदा। आदि जुगादि रचना रच, हरि रच रच वेख वखाईआ। आदि जुगादि नाम सच्च, सति भण्डारा मात वरताईआ। सो पुरख निरँजण काया कच्च, पंज तत्त माटी ख़ाक मिलाईआ। हरि पुरख निरँजण मन मनुआ नटुआ नच्च नच्च, लख चुरासी भरम भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा खेल कराईआ। आदि जुगादि खेल अवल्ला, एकँकार कराइंदा। सो पुरख निरँजण वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। हरि पुरख निरँजण आदि निरँजण जोती बला, दीपक दीआ आप डगमगाइंदा। सो पुरख निरँजण शब्दी शब्द फड़ाए पल्ला, दिस किसे ना आइंदा। हरि पुरख निरँजण जन भगतां अंदर रला, घर घर विच सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण करे हल्ला, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। हरि पुरख निरँजण सच संदेशा एका घल्ला, नाउँ निरँकार आप सालाहइंदा। सो पुरख निरँजण हो हो फिरे झल्ला, भगत दुआरे फेरी पाइंदा। हरि पुरख निरँजण अलाही नूर अल्ला, अलाही रूप ना कोए वटाइंदा। सो पुरख निरँजण साचा भल्ला, पुरख अबिनाशी हथ्थ रखाइंदा। हरि पुरख निरँजण मनमुखां लाहे खला, राए धर्म हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप छुपाइंदा। आदि जुगादि रिहा लुक, दिस किसे ना आईआ। सो पुरख निरँजण वसे अन्धेरे घुप्प, आपणा पर्दा पाईआ। हरि पुरख निरँजण रिहा बुक्क, सचखण्ड आसण लाईआ। सो पुरख निरँजण हरिभगत पहले लए चुक्क, आपणी गोद बहाईआ। हरि पुरख निरँजण कूड़ कुड़यारा कढ्ढे कुट्ट, सति दुआर रहिण ना पाईआ। सो पुरख निरँजण आपणी कुक्खों पए फुट्ट, गुर अवतार जन्म दुवाईआ। हीर पुरख निरँजण आपणा अमृत देवे घुट्ट, चरन सरन सरन शरनाईआ। सो पुरख निरँजण जाए तुट्ठ, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। हरि पुरख निरँजण लोकमात दा साचा बूटा पुट्ट, गुरसिख सचखण्ड दुआर लगाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण पए उठ, आलस निंद्रा विच ना आईआ। हरि पुरख निरँजण निर्मल जोत, पंज तत्त ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वणज रिहा कराईआ। आदि जुगादि वस्त अनमोल, हरि सज्जण आप वरताइंदा। सो पुरख निरँजण सद वसे कोल, विछड़ कदे ना जाइंदा। हरि पुरख निरँजण तत्तव तत्त कराए घोल, भेव कोए ना पाइंदा। सो पुरख निरँजण काम क्रोध लोभ मोह हँकार वजाए ढोल, डौरू डंका इक्क रखाइंदा। हरि पुरख निरँजण जन भगतां पर्दा देवे खोल्ह, आपणी बूझ बुझाइंदा। सो पुरख

निरँजण बणया रहे अनभोल, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर सोभा पाइंदा। आदि जुगादी इक्क अटारी, अटल नाम रखाईआ। सो पुरख निरँजण एकँकारी, निराकार आकार बणाईआ। हरि पुरख निरँजण वणज वणजारी, एका वणज वखाईआ। सो पुरख निरँजण बण पनिहारी, सेवक साची सेव लगाईआ। हरि पुरख निरँजण करे कारी, करता पुरख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, एका राग सुणाईआ। आदि जुगादी एका राग, एका हरि जणाइंदा। सो पुरख निरँजण एका नाद, धुर धाम आप वजाइंदा। हरि पुरख निरँजण शब्द साध, तत्त रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप प्रगटाइंदा। आदि जुगादी हरि बल धार, आपणी खेल कराईआ। निरगुण निरगुण दए आधार, शब्दी शब्द सालाहीआ। शब्द सुत कर त्यार, लोकमात वंड वंडाईआ । पंज तत्त दए आधार, गुर गुर रूप वखाईआ। गुर गुर बण बण सेवादार, चाकर सेव कमाईआ। नाम सति लै भण्डार, जीव जंत वरताईआ । राम राम सिरजणहार, एका रंग वखाईआ। काहन काहन दो जहान, मुकंद मनोहर वड्डी वड्याईआ। पीर पैग़म्बर दे दे दान, ईसा मूसा निशान रखाईआ। इक्क मसला एका आण, एका अल्फ़ करे पढ़ाईआ। एका नाम गुण निधान, नानक झोली पाईआ। एका डंका दो जहान, गोबिन्द फ़तेह सुणाईआ। अन्तिम ओट रखो भगवान, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा भेव आप छुपाईआ। एका ओट अन्तिम आस, एका घर रखाईआ। निरगुण जोत नूर प्रकाश, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। मूर्त अकाल ना होए विनाश, पारब्रह्म ना मरे ना जाईआ। प्रगट होए साख़िआत, शरअ मज़्ब ना कोए रखाईआ। अमाम अमामा होए कायनात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, आपणा मन्त्र आप सुणाईआ। एका ओट एका दुआर, एका नैण उठाईआ। एका नूर इक्क उज्यार, एका एक करे रुशनाईआ। एका आवे जावे वारो वार, गुर अवतार सेव कमाईआ। नौ नौ चार होए खुआर, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, प्रभ तेरा भेव कोए ना पाईआ। तूं घड़न भन्नणहार समरथ करतार, तेरी महिमा तोहे बण आईआ। असीं वारी कर तेरी जुग चार, जुग चौकड़ी नाल रलाईआ। गुर अवतार गए हार, तेरा नाउँ पढ़ाईआ। भरमे भुला सर्ब संसार, ब्रह्म मति ना कोए जणाईआ। दर दर घर घर होए जीव गंवार, गुर ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदआले धूंआँधार, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। मुलां शेख़ मुसायक पीर होए गुनाहगार, औगण भरी सर्ब लोकाईआ। तुध बिन तेरा रहे ना कोई यार, नाता सारे गए तुड़ाईआ। नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, गिरयाज़ार कराईआ। एका मदद करनी

मददगार, तेरी ओट तकाईआ। चौदां लोक करन निमस्कार, चौदां तबक देण दुहाईआ। सागर करे विचार, हरि विचार विच ना आईआ। धरनी डिग्गी मूँह दे भार, ना सके कोए उठाईआ। चारों कुण्ट सब दे नैण होए शर्मसार, हरि का नाउँ ना कोए ध्याईआ। राए धर्म होया ख़बरदार, आपणी लए अंगड़ाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा कर्ज़ा दयां उतार, लहिणा कोए रहिण ना पाईआ। ब्रह्मण क्षत्री शूद्र वैश करां विचार, आत्म पर्दा सब दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि जुगादि जुग जुग तेरे हुक्म रजाईआ। तेरा हुक्म सति परवाना, परवानगी होर ना कोए जणाइंदा। तूं साहिब सच्चा सुल्ताना, शाह पातशाह अख्वाइंदा। जुग जुग मन्नया तेरा भाणा, तेरी ओट तकाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल महाना, भेव कोए ना पाइंदा। वेद व्यासा कर परवाना, लिख लिख लेख समझाइंदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा नौजवाना, उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए ज्ञाना, एका संग समझाइंदा। प्रगट होए निहकलंक नौजवाना, रूप रंग ना कोए रखाइंदा। महल्ल वसे धाम मकाना, अबचल नाउँ धराइंदा। इक्को तीर इक्क निशाना, दो जहानां आप लगाइंदा। इक्को इष्ट देव गुर श्री भगवाना, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। एका ब्रह्म करे परवाना, ईस जीव रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, निरगुण आपणा नाद सुणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आए रसन स्वाद, रस आत्म इक्क रखाइंदा।

★ १० माघ २०१८ बिक्रमी चरन सिँघ दे गृह नवां पिण्ड ज़िला गुरदासपुर★

हरि किरपा गृह मिले अनन्द, साचा सुख उपजाईआ। सुखी कराए बन्द बन्द, बन्धन तोड़ जगत लोकाईआ। लेखा चुकया बत्ती दन्द, हरि हरि नाउँ ध्याईआ। सदा सदा सद रखे ठंड, अग्नी तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा चरन छुहाईआ। चरन कँवल साचे गृह, घर मन्दिर आप सुहाया। हरिजन हरि का भाणा सहे, इष्ट देव गुर इक्क मनाया। दो जहान शक्ती सद रहे, घल्ला दुःख गंवाया। चरन दुआरे धाम अवल्लड़े बह, बह भउ मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाया। हरिजन रंग एका वार, लोकमात रंगाईआ। जन्म जन्म जन्म दए सुधार, मरन मरन मरन फंद कटाईआ। शरन शरन शरन इक्क दुआर, चरन चरन चरन कँवल शरनाईआ। बिरध बाल जवान उतरे पार, लेखे लग्गे जननी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सुख घर आत्म आप उपजाईआ।

★ १० माघ २०१८ बिक्रमी दर्शन सिंघ दे गृह महराजपुर ज़िला गुरदासपुर ★

आदि जुगादि सतिगुर धारा, सति सतिवादी आप चलाइंदा। गुर गुर रूप शब्द अपारा, निरगुण निराकार खेल कराइंदा। भगती भगत नाम वणजारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सन्तन सति सति सति सहारा, सति पुरख निरँजण आप रखाइंदा। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। गुरसिखां वखाए इक्क दुआरा, दर दर आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा रंग वखाइंदा। सतिगुर धार पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कराइंदा। गुर गुर रूप ना मरे ना पए जम्म, तत्तव तत्त ना कोए रखाइंदा। भगत भगवन्त बेड़ा बन्न्ह, जुग जुग सेव कमाइंदा। सन्तन देवे नाम धन्न, जुग जुग आप वरताइंदा। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्न, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। गुरसिखां राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आपणी कार कमाइंदा। सतिगुर सच्चा बेपरवाह, पुरख अकाल अख्वाईआ। गुर गुर रूप बण मलाह, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। भगतां देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम समझाईआ। सन्त सुहेले लए मिला, मेल मिलावा सहिज सुखदाईआ। गुरमुख सज्जण लए रखा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गुरसिख रंग दए रंगा, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि वेस वटाईआ। सतिगुर पूरा हरि समरथ, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। गुर गुर रूप चलाए रथ, निरगुण सरगुण सेव कमाइंदा। जन भगतां देवे एका वथ, नाम अमोलक आप वरताइंदा। सन्तां हिरदे आपे वस, हरि हरि आपणा रूप जणाइंदा। गुरमुखां मार्ग एका दस्स, पाँधी साचे पन्ध रखाइंदा। गुरसिखां आत्म जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आपणा बन्धन आपे पाइंदा। सतिगुर पूरा सति करतार, सति सतिवादी दया कमाईआ। गुर गुर रूप विच संसार, जोती जाता भेख वटाईआ। भगतन करे सच शृंगार, साचा बस्त्र इक्क पहनाईआ। सन्तन देवे दरस दीदार, नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। गुरमुखां फिरे पिच्छे अगाड़, बण सेवक सेव कमाईआ। गुरसिखां करे प्रकाश बहत्तर नाड़, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आपणा मार्ग आपे लाईआ। सतिगुर पूरा सति सतिवाद, सो पुरख निरँजण भेव ना आइंदा। गुर गुर रूप खेल ब्रह्माद, ब्रह्मादी रंग वखाइंदा। भगत भगवन्त आपे लाध, जुग जुग मेल मिलाइंदा। सन्तन देवे साची दाद, दर घर साचे आप वरताइंदा। गुरसिख लख चुरासी विच्चों काढ, आपणी गोद बहाइंदा। गुरसिखां करे साचा लाड, पिता पूत खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी क्रिया आप समझाइंदा।

आपणी क्रिया हरि निरँकार, आदि जुगादि कमाईआ। लख चुरासी कर त्यार, घट घट वासा पाईआ। निरगुण सरगुण दए अधार, एका बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। आपणा भेव हरि जू खोल्ह, आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी तोले साचा तोल, नाम खण्डा इक्क रखाइंदा। जुगा जुगन्तर रहे अडोल, डुल कदे ना जाइंदा। एका वस्त रखे कोल, अतोट अतुट वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप समझाइंदा। साचा मार्ग हरि करतार, आपणा आप जणाईआ। शाहो भूप वड सिक्दार, हुक्मी हुक्म हुक्म फिराईआ। गुर अवतार बण सेवादार, लोकमात सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा बन्धन आप वखाईआ। आदि बन्धन दिता पा, एका हुक्म वरताया। जुगादि लेखा दए मुका, दिस किसे ना आया। नव नौ चार खेल खला, सो पुरख निरँजण रंग चढ़ाया। ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचा, नटुआ आपणा स्वांग वखाया। बोध अगाध शब्द जणा, गुर अवतार पढ़ाया। निरगुण जोत कर रुशना, नूर नुराना इक्क दरसाया। चरन चरन सरोवर इक्क नुहा, सर अमृत इक्क वखाया। लेखा जाणे दो जहान, भेव किसे ना आया। अलख अगोचर बेपरवाह, करता पुरख आपणे रंग समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी क्रिया आप समझाया। आदि जुगादि आपणा पर्दा आप चुकाया। पर्दा चुक्के श्री भगवान, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। प्रगट होए नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग वेखे आण, जुग आपणी वंड वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण भूमका वसे श्री भगवान, कवण दर सोभा पाईआ। कवण मन्दिर सुहाए मकान, कवण बंस दए वड्याईआ। कवण कूट होए प्रधान, चारे दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, एका आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी वसणहारा सच महल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण धार आपे रला, सरगुण दिस किसे ना आइंदा। सति सिँघासण एका मल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। आदि जुगादी हरि हरि रंग, आपणा आप रंगाया। जुग जुग सेज हंढाई पलँघ, गुर अवतारां अंदर डेरा लाया। एका नाम वजा मृदंग, साचा राग सुणाया। नव नौ चार आपे लँघ, आपणा मुख छुपाया। गीत सुहागी गाया छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा जणाया। आपणा लेखा जाणे लेख, लिख्त विच ना आया। आदि जुगादि अवल्लड़ा भेस, निरगुण निरगुण लए वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी ल्या वेख, अन्तिम पन्ध

मुकाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर कर गए आदेस, हरि साचे सीस निवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। गुर अवतार सीस झुका, आपणा पन्ध गए मुकाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, तेरा भेव कोए ना पाईआ। कोए राम कोए कृष्न गया अख्वा, ईसा मूसा कोए सालाहीआ। कोई मुहम्मद सीस रिहा झुका, कोए कलमा कलाम करे पढ़ाईआ। कोई नानक निरगुण मंगे दान पनाह, कोई गोबिन्द रिहा जस गाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल मेरा पिता मां, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव हरि जणाउणा, एका एक पुरख अकाल। नौ नौ चार पन्ध मुकाउणा, खेले खेल दीन दयाल। सचखण्ड दुआर लोकमात प्रगटाउणा, गुरमुख वेखे साचे लाल। सच सिँघासण सोभा पाउणा, शब्दी शब्द बणे दलाल। लख चुरासी फोल फुलाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नौजवान। सचखण्ड दुआरा लोकमात, हरि सतिगुर आप बणाईआ। गुर गुर देवे एका दात, एका वस्त वखाईआ। भगत भगवन्त बन्ने नात, चरन शरन शरनाईआ। सन्तां देवे साची गाथ, एका एक पढ़ाईआ। गुरमुखां अग्गे मुक्के वाट, दूजा राह ना कोए चलाईआ। गुरसिख विके ना किसे हाट, करता कीमत आपे पाईआ। खेले खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। प्रगट होए पुरख समरथ, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नाम जणाए महिमा अकथ, चार वेद भेव ना राईआ। पुराण अठारां जाण ढट्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैण नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपणा पर्दा देवे खोल्ह, बेअन्त हरि निरँकारा। नाम अगम्मी वजाए ढोल, तेरा शब्द इक्क नगारा। जन भगतां वसे सदा कोल, साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर मनारा। आत्म अन्तर जाए मौल, मौला रूप सिरजणहारा। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत झिरना झिरे न्यारा। देवे वड्याई उपर धवल, इक्क किनारा। ना कोई जाणे पांधा रौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कारा। कलयुग अन्तिम करनी कार, करता पुरख आप जणाईआ। निरगुण नूर हो उज्यार, सच निशान सोभा पाईआ। लोकमात इक्क दरबार, सति पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। साचे भगतां करे प्यार, आप आपणी गोद बहाईआ। एक रंग देवे चाड़्ह, उतर कदे ना जाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सच दुआरे देवे वाड़, दरगाह मिले माण वड्याईआ। अग्नी ना लग्गे तत्ती हाढ़, सांतक सति सति कराईआ। गुरमुख बणाए साचे लाड़, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाईआ। आपणा खेल करे भगवान, भगवन आपणी

दया कमाइंदा। निरगुण नूर हो बलवान, बल आपणा आप धराइंदा। लोकमात सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। सचखण्ड दुआरा सच मकान, दर घर साचे आप बणाइंदा। भगत भगवन्त कर परवान, आपणा मेल मिलाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। साची सखीआं सच्चा काहन, हरि सतिगुर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि गोबिन्द, गहर गम्भीर कराईआ। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, चिंता रोग रहिण ना पाईआ। दरस वखाए गुणी गहिन्द, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे दए वड्याईआ। सच दुआरा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप बणाइंदा। आपणी इच्छया आपणे विच्चों कढ्ढ, लोकमात प्रगटाइंदा। छत्ती जुग दी साची हद्द, नानक लेखा पूर कराइंदा। आपे जाणे अड्डो अड्ड, दूसर वंड ना कोए वंडाइंदा। धर्म निशाना इक्को गड्ड, दो जहान झुलाइंदा। भगत भगवन्त आपे सद्द, आपणा मेल मिलाइंदा। विष्नूं ब्रह्मे तेरा ब्रह्म नद, पारब्रह्म आप वजाइंदा। शंकर त्रिशूल आपणा सट्ट, एका हुक्म फ़रमाइंदा। गुरसिख मेरे विके हट्ट, दूसर हथ्थ ना कोए लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप बंधाइंदा। सच दरबारा सचखण्ड, हरि साचा सच बणाईआ। कलयुग तेरी अन्तिम वंड, करे बेपरवाहीआ। नाता तोड़ नौ खण्ड, सत दीप मुख भुआईआ। लहिणा चुक्के सूरज चन्द, मंडल मण्डप ना कोए वड्याईआ। गीत ना गाए कोए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल हरि करना, कलयुग अन्तिम वेस वटाया। वेखणहारा चार वरना बरना, वरन बरन विच कदे ना आया। जुगा जुगन्तर तरनी तरना, हरिजन साचे लए तराया। निरभउ होए कदे ना डरना, भय आपणा सर्ब समझाया। सचखण्ड दुआरे आपे चढ़ना, थिर घर चरनां हेठ रखाया। एका अक्खर आत्म पढ़णा, परमात्म दए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे दए वड्याआ। सच दरबारा एका वार, हरि लोकमात बणाईआ। नव नौ चार होए खुआर, कूक कूक देण दुहाईआ। छत्ती जुग तेरा आधार, नानक निरगुण सीस उठाईआ। गोबिन्द सूरा कर पुकार, अन्तिम एका ओट तकाईआ। सति पुरख निरँजण पुरख अकाल, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, दर घर साचे सोभा पाईआ। सेवा लाए काल महांकाल, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। एथे ओथे रिहा सुरत संभाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। नानक गोबिन्द एका आस, हरि हरि ओट रखाईआ। सचखण्ड वसे पुरख अबिनाश, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सर्ब गुणा आपे गुणताश, गुणवन्त वड वड्याईआ। लेखा जाणे पृथ्मी

आकाश, लोआं पुरीआं फोल फोलाईआ। आपे लाया पवण स्वास, लख चुरासी ईश जीव प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। नर नरायण दाता एक, गुण औगुण ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि हरि साची टेक, गुर अवतार रखाइंदा। नाम निधाना इक्क बबेक, लोकमात प्रगटाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत्त ना बन्धन पाइंदा। वसणहारा काया खेत, घट घट जोत जगाइंदा। आत्म सेजा रिहा लेट, दिस किसे ना आइंदा। दस दस मास मात गर्भ ना आए पेट, जूनी जून ना कोए भुआइंदा। जुग जुग बणे खेवट खेट, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। जन भगतां करे हेत, नित नवित वेस वटाइंदा। पहली पहली वारी रुत्त बसन्ती चेत, आपणी रुत्त वखाइंदा। नव नौ चार चौकड़ी जुग किसे ना दिता भेत, आपणा पर्दा आप छुपाइंदा। कलयुग अन्तिम आपणी खेल लए खेड, खिलाड़ी वेस वटाइंदा। लख चुरासी वेखे कौड़े रेठ, घर घर आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि भगत भगवन्त आपणे दर बुलाइंदा। भगत भगवन अन्त कल, कल आपणी आप धराईआ। लहिणा चुक्के बावन बल, बलधारी वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण अछल अछल, आप आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप जणाईआ। आपणा खेल हरि हरि दस्स, दहि दिशा समझाइंदा। सचखण्ड दुआरा जाए वस, लोकमात प्रगटाइंदा। रविदास चुमारा वेखे हस्स हस्स, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाइंदा। कबीर जुलाहा आए नस्स, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। भगत भगवान गायण जस, सोभावन्त सर्ब सालाहइंदा। वेखो खेल पुरख समरथ, लोकमात आप कराइंदा। साडा खेड़ा कीता भट्ठ, जन भगतां खेड़ा आप वसाइंदा। सानूं आपणा नाम दस्स, रसना जिह्वा दिवस रैण छुहाइंदा। कलयुग अन्तिम गुरमुखां होया दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। अठ्ठे पहर वसे साथ, बण संगी संग निभाइंदा। आप सुणाए आपणी गाथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सालाहइंदा। सच दुआरा वेखणा, कबीर रिहा सुणाईआ। जिस दा रूप ना कोई रेखना, सो पुरख रिहा बणाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केसना, ना कोई मूंड मुंडाईआ। नाल रलाए गुरू दस दस्मेशना, दहि दिशा फेरा पाईआ। जोती जामा धरया भेखना, नज़र किसे ना आईआ। भेव ना जाणे औलीआ पीर शेख़ना, पीर पैग़म्बर ना कोए चतुराईआ। तिस साहिब को करीए आदेशना, जिस साडी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, लोकमात सुहाया। दर घर वसया हरि जू कन्त, कन्तूहल वेस वटाया। मेल मिलाए भगत भगवन्त, भगवन आपणे रंग रंगाया। नाता जोड़े साचे सन्त, सति सतिगुर होए सहाया। गुरमुखां देवे

नाम मणीआ मंत, मन का मणका आप भुआया। गुरसिखां गढ़ तोड़े हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क जणाया। मेल मिलाए साची संगत, शरअ संग ना कोए हंढाया। जिउँ नानक लाया अंग अंगद, तिउँ गुरमुख लए तराया। इक्क बणाए साची संगत, अमृत जाम प्याया। नाता तोड़े भुख नंगत, सच भण्डारा आप वरताया। गुरसिख होए ना फिर मंगत, दूजे दर ना मंगण जाया। ना कोई पांधा ना कोई पंडत, गुर शब्द ज्ञान दृढ़ाया। नाता तोड़े जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज ना कोए फिराया। आप बणाए मानस बुत्त मानस आपणी गोद रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आप बहाया। सचखण्ड दुआरे गुरसिख बहणा, हरि साचे सच जणाईआ। मन बस्त्र पाउणा एका गहिणा, एका रंग चढ़ाईआ। दर्शन करना एका नैणां, दोए लोचण बन्द वखाईआ। हरिसंगत मन्न हरि जू कहिणा, हरि सज्जण संग रखाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डायणा, वेले अन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए जणाईआ। आपणा भेव जणाए जन, जन जननी वेख वखाइंदा। उठो राग सुणो कन्न, हरि कन्त कन्तूहल मनाइंदा। भाण्डा भरम देवे भन्न, भउ अवर ना कोए वखाइंदा। डुबदा बेड़ा देवे बन्न्ह, शौह दरयाए पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आप बहाइंदा। सचखण्ड दुआरे जाणा आ, हरि सतिगुर इक्क आवाज़ लगाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। करे कराए सच न्याँ, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई आप भुलाए , झूठे धन्दे लाईआ। एको भुलया हरि का नाँ, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। मूँह विच एका सूर गां, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार गए मुख भुआ, वेले अन्त देवे ना कोए गवाहीआ। सचखण्ड दरबारा हरि जू रिहा लगा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। गुर अवतार लए बुला, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। उठो वेखो आपणा राह, लोकमात ध्यान लगाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले मिले ना कोई सच्चा थाँ, थान थनंतर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध आप मुकाईआ। गुर अवतार आउण दुआरे, दर दुआरे आप जणाइंदा। उठो वेखो विच संसारे, कल की खेल कराइंदा। किसे नज़र ना आए राम उज्यारे, कान्हा कृष्न ना कोए मनाइंदा। ईसा मूसा ना कोए चितारे, कलम कलाम ना कोए पढ़ाइंदा। मुहम्मद नाता तुट्टा चार यारे, अल्ला राणी मुख शरमाइंदा। नाम सति ना कोई वीचारे, जूठी झूठी गंढु पुआइंदा। फतहि डंक ना कोए जैकारे, पुरख अकाल ना नज़री आइंदा। गुर का शब्द ना कोए विचारे, अज्ञान अन्धेरा छाइंदा। गोबिन्द सूरा मारे ललकारे, एका बोल जणाइंदा। ईसा राह तक्के आ मेरे पिता मैं तेरे सहारे, तेरी ओट रखाइंदा। वेद व्यास करे निमस्कारे, निउँ निउँ सीस

झुकाइंदा। नानक निरगुण कहे पुकारे, एका ओट जणाइंदा। अन्तिम कल महांबली उतरे विच संसारे, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। गोबिन्द कहे देवे हुलारे, मोहि साची गोद बहाइंदा। एका नाम बोल जैकारे, चार वरन उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप वसाइंदा। साचा घर वसाए एक, एका हरि रघुराया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे वेख, नेत्र नैण उठाया। पुरख अबिनाशी अग्गे चले ना कोई पेश, नेत्र नैण नैण शरमाया। विष्नूं छड्डे आपणी सेज, बाशक तशक अंग ना लाया। ब्रह्मा तोड़े आपणा हेत, ब्रह्म ब्रह्म ना कोए वड्याआ। शंकर सुट्टे त्रसूल विच खेत, आपणा माण ना कोए जणाया। नेत्र रोवण मुलां शेख़, हाहाकार दए दुहाया। पंडत पांधे ना पाया भेत, पढ़ पढ़ विद्या वाद वधाया। ग्रंथी पन्थी खेडां रहे खेड, गोबिन्द नज़र किसे ना आया। वेखो खेल महीना चेत, चेतन सब नूं दए कराया। जन भगतां करे हेत, आपणा मेल मिलाया। जुग जन्म दे विछड़े वेख, आपणी गंढु पुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन तारे पुरख अकाल, गुर अवतार देण गवाहीआ। सचखण्ड बहे सच्ची धर्मसाल, आसण सिंघासण सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, अन्त कन्त लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप सुहाईआ। सच दुआरा हरि सुहाउणा, कलयुग तेरी अन्तिम वार। सच सिँघासण आसण लाउणा, निहकलंक नरायण नर अवतार। गुर अवतारां दर बलाउणा, हुक्मी हुक्म खेल अपार। पूरब लहिणा सर्ब चुकाउणा, लेखा रहे ना विच संसार। चार वेदां पन्ध मुकाउणा, पुराण अठारां बेड़ा पार। गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ाउणा, अञ्जील कुरान ना कोए विचार। खाणी बाणी आप मुकाउणा, करे खेल अगम्म अपार। छत्ती राग ना किसे सुनाउणा, राग साज ना कोए सतार, दीन मज़्ह़ब ना कोए बनाउणा, शरअ शरीअत ना कोए अधार। एका ब्रह्म सर्ब दरसाउणा, आत्म अन्तर इक्क अधार। एका अक्खर आप पढ़उणा, कलयुग तेरी अन्तिम वार। चौथे जुग पन्ध मुकाउणा, छत्ती छत्ती कर विचार। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां आप पढ़ाउणा, सच संदेशा देवे एका वार। विष्न ब्रह्मा शिव हरि जू गाउणा, उच्ची बोल बोल जैकार। पुरख अबिनाशी वेख वखाउणा, आप आपणा बल धार। साचे भगतां माण दुआउणा, दीन दुनी चों कढ्ढे बाहर। सचखण्ड दुआरे आप बहाउणा, करे कराए सच प्यार। गुरसिख इक्क सरोवर नुहाउणा, मैल रहे ना विच संसार। पुरख अबिनाशी इक्को पाउणा, गुर सतिगुर दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम दर सद्दे गुर अवतार। गुर अवतार करो त्यारी, त्रैगुण आपणा आप जणाईआ। वेखो कलयुग हुंदी खुआरी, ना सके कोए बचाईआ। धीआं भैणां करन वणज वपारी, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। कन्त छड्डे एको नारी, जगत विभचार

रही कमाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारी, रसना जिह्वा हिलाईआ। अठसठ कर कर थक्के पाणी, दुरमति मैल ना कोए धुवाईआ। फिर फिर थक्के चारे खाणी, लख चुरासी जून वखाईआ। किसे संग ना चले राजे राणी, अन्तिम नाता गए तुड़ाईआ। गुर शब्द ना मिल्या साचा हाणी, वेले अन्त होए सहाईआ। करे खेल पुरख सुल्तानी, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। चार जुग दी कहे कहाणी, पहली कथा ना कोए पढ़ाईआ। तेई अवतार दस्स दस्स गए निशानी, पीर पैग़म्बर नाल मिलाईआ। नानक गोबिन्द कहे प्रभ दिसे पद निरबाणी, घर सच्चे सच्चा माहीआ। निरगुण जोत नूर नुरानी, जल्वा जलाल इक्क वखाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे जोधा सूरबीर बली बलवानी, आपणा बल आप रखाईआ। तोड़े गढ़ मान अभिमानी, माया ममता मोह मिटाईआ। सतिजुग वखाए इक्क निशानी, साचे भगत लए प्रगटाईआ। आपे बणे दाता दानी, देवणहार आप हो जाईआ। करे खेल इक्क लासानी, दिस किसे ना आईआ। चार वरना बणे बानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोए रलाईआ। दूसर संग ना कोए मेल, मेल मेल मिलावा ना कोई वखाइंदा। वसणहारा धाम नवेल, आपणा रूप वटाइंदा। लेखा जाणे गुरू गुर चेल, गुर चेला बन्धन पाइंदा। निरगुण सरगुण सज्जण सुहेल, साचा संग निभाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी करे वेहल, जगत अखाड़ा आप लगाइंदा। मनमुख गए धर्म राय दी जेल, वेले अन्त ना कोए छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वसाइंदा। सचखण्ड दुआरा वसे जग, हरि जागरत जोत जगाया। करे खेल सूरा सरबग, आपणा बल रखाया। दीपक जोत जाए जग, अन्ध अन्धेर मुकाया। आपे जाणे पार किनारा हद्द, हदूद आपणी आप बणाया। गुरू गुरदेव लए सब सद्द, इष्ट दृष्ट दए जणाया। जुग जुग भेजे अड्डो अड्ड, हुक्मी हुक्म सुणाया। अन्त चरनां हेठां छड्डे दब्ब, घर साचे आप टिकाया। कलयुग अन्तिम एका वार कराए हज्ज, साचा काअबा आप खुल्हाया। शरअ शरीअत दीन मज़्ह़ब दी लाहे लज, द्वैती पर्दा दए चुकाया। सिँघ शेर एका वार पए गज्ज, दो जहानां भबक सुणाया। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उठ उठ कहिण प्रभ साडा पर्दा कज्ज, प्रभ हथ्थ तेरे वड्याआ। साडी उम्मत होई निलज्ज, शरअ ईमान ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से साचा दर, तुध बिन अवर ना कोए सहाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, एका शब्द सुणाईआ। वेखो सारे करो विचार, चार जुग भेव चुकाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यार, इक्क इकल्ला रिहा कराईआ । तुसां सेवा कीती बण बण ख़िदमतगार, ख़ादम वेखे चाँईं चाँईंआ। शब्दी नाद सुणाया बोल जैकार, कलमा आलमीन पढ़ाईआ। लिख लिख लेख दिता अधार, जीव जंत समझाईआ। मार्ग

दस्स आए संसार, बण पाँधी राह चलाईआ। मुकामे हक़ वसे परवरदिगार, नूर नुराना नूर धराईआ। लाशरीक सांझा यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर रिहा समझाईआ। एका वार सुणाया सति, हरि साचे सच जणाया। आप वेखो अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। भरमे भुल्ली मज़्ब ज़ात, जमात साची ना कोए बणाया। माया ममता बणया ख़ात, एका हरि जू नाम भुलाया। प्यारी रखी पुत्तर धीआं दात, वेले अन्त ना कोए सहाया। नाता जुड़या पिता मात, भैण भईआ मेल मिलाया। दूर दुराडे तक्कण साक, सगला पन्ध वखाया। अन्तिम कोई ना उतरे पूरे घाट, झूठा बन्धन एका पाया। उठो गुर अवतार वेखो आपणे साथी आपणा साथ, हरि साचा रिहा सुणाया। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मद्द करदे पाठ, पढ़ पढ़ आपणा वक्त लँघाया। फिर फिर थक्के तीर्थ ताट, अठसठ सर उपाया। जूठे झूठे विके हाट, आपणी कीमत ना कोए रखाया। रसना जिह्वा रस रहे चाट, लोभी लोभ लोभ हल्काया। काम चेसटा मंगे खाट, कामनी आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, गुर अवतार रिहा वखाया। उठो वेखो गुर अवतार, मात की की खेल कराइंदा। भाई भैण करन प्यार, अठसठ मुख शरमाइंदा। दोए दोए नैण लओ उग्घाड़, राह साचा सच जणाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद लग्गा अखाड़, कलयुग कूड़ा नाच नचाइंदा। वेसवा रूप होए संसार, सच श्रृंगार ना कोए कराइंदा। चारों कुण्ट होए खुआर, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां इक्क वखाइंदा। गुर अवतार लओ तक्क, हरि साचा सच जणाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार सके कोई ना डक्क, लिख लिख लेख गए समझाईआ। पुरख अबिनाशी तुहाढ्ढी करनी उत्ते गया अक्क, सब दा लेखा दए मुकाईआ। धरत मात भार चुक्क चुक्क गई थक्क, अन्त बैठी सीस झुकाईआ। पतिपरमेश्वर मेरे उत्ते ना कोई करीं शक्क, भुल्ली तेरी लोकाईआ। लख चुरासी तुट्टी सुहाग नथ्थ नक्क, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। जिउँ भावे तिउँ पर्दा ढक, पत्त तेरे हथ्थ रखाईआ। मैं फिर के आई मदीना मक्क, उच्चे हुजरे फेरा पाईआ। किसे दुआरे दिसे ना हक़ीक़त हक़, हक़ हक़ हक़ ना कोए सुणाईआ। मैं पैंडा मुकाया नट्ठ नट्ठ, कलयुग बण बण पाँधी राहीआ। मैनूं दूर परे ना देवीं धक्क, खुलड़े केस रही वखाईआ। मेरा कालजा गया फट, तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाईआ। सिर मेरे हथ्थ रख, इक्क तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब पुरख समरथ, आदि जुगादि होईं सहाईआ। मैं तक्क के आई आस, बेआस मरां तिहाईआ। अग्गों कहे पुरख अबिनाश, धरनी दए समझाईआ। तूं जाणा मेरे भगतां पास, ढह ढह चरन शरन सीस झुकाईआ। मैं ओथे आउणा खास, पहली चेत्र वेख वखाईआ। तेरी करां बन्द ख़लास, गुरमुख नाल रलाईआ। तूं करना

हास बलास, गोबिन्द मिले चाँईं चाँईंआ। कलयुग कूड़ा करे नास, बाले नीहां हेठ दबाईआ। बल बावन वसे पास, आपणा संग निभाईआ। ब्रह्मे मेला शाहो शाबाश, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। शंकर होए अन्त निरास, दर आए सीस झुकाईआ। सुरपति इन्द रोवे मेरी करोड़ तेतीसा चुक्की शाख़, पत डाली रहिण ना पाईआ। मुहम्मद कहे मेरा करना घात, सजदा निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अल्ला राणी कहे मेरा बस्त्र गया पाट, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। तेई अवतार कहिण साडा टुट्टया साक, लोकमात रहिण ना कुड़माईआ। नानक कहे तूं पाकी पाक, निरगुण तेरी वड वड्याईआ। गोबिन्द कहे मेरे सिख लगाउणे आपणे घाट, जो सरसे आया रुड़ाईआ। मैं तक्की तेरी वाट, सूलां सत्थर सेज हंढाईआ। सुनेहड़ा दे के पुछीं वात, यार यारड़ा लईं मिलाईआ। तेरे हुन्दयां मैनूं दिसे ना अन्धेरी रात, तेरा नूर मेरी रुशनाईआ। तूं पिता तूं मेरा बाप, पुरख अकाल तेरी शरनाईआ। तेरी सेजा सोहवां खाट, सच सिँघासण देणा विछाईआ। तेरा नूर मेरी लाट, ललाट देणी जगाईआ। मैं फेर ना आया आन बाट, गुज़री कुक्ख ना कोए सुहाईआ। एका उतरया तेरे घाट, आपणे बेड़े लैणा चढ़ाईआ। तूं अन्तिम आया लोकमात, निहकलंक नाउँ रखाईआ। तेरा डूँघा दिसे खात, अतोट अतुट बेपरवाहीआ। नेत्र नैण इक्क वार वेख मार झात, तेरी झाकी मेरी वड्याईआ। जन भगतां बणाउणा सच्चा साक, सगला संग तजाईआ। नाता तोड़ना ज़ात पात, शरअ बन्धन ना कोए रखाईआ। इक्क जपाउणा आपणा नाम पुरख समराथ, एका इष्ट देव वड्याईआ। इक्क चढ़ाउणा साचे राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। कोटन कोटि तेरे चरनां थल्ले त्रिलोकी नाथ, बैठे सीस झुकाईआ। तेरा नाउँ पूजा पाठ, बिन तेरे कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां लैणा मिलाईआ। अग्गों कहे श्री भगवान, निरगुण निरगुण आख सुणाया। गोबिन्द मेरा इक्क निशान, हरिभगत रूप प्रगटाया। कलयुग अन्तिम वेखां आण, निहकलंका जामा पाया। सम्बल वसां सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाया। आपणी दया कमाए दयाल, दीनन दए वड्याईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, आपणी बूझ बुझाईआ। हरिजन वेखे साचे लाल, लाल अनमुलड़े नाउँ धराईआ। नव नौ चार चौकड़ी जुग दी पूरी करे घाल, घाली घाल पांए थाईंआ। चरन कँवल वखाए सच धर्मसाल, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। ऐथे ओथे करे प्रितपाल, प्रितपालक होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां संग रखाईआ। भगतां संग सदा सहायक, सतिगुर साहिब सुल्तान। निरगुण सरगुण मिल्या नायक, आदि जुगादी निगहवान पवित पुनीत पाकी पाक, नाम निधाना देवे दान। हरिजन आप बणाए आपणे गाहक, लख चुरासी कर पछाण। बन्द कवाड़ी खोल्हे ताक,

इक्क वखाए सच मकान। फड़ उतारे आपणे घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे चतुर सुजान। हरिजन चतुर सुजानयां, तेरी महिमा अपर अपार। तेरे वस होया श्री भगवानयां, दर दर फिरे बण भिखार। तेरी वड्याई गाए राग तरानयां, आपणी खुशी करे विचार। तूं मर्द मर्द मर्दानयां, सच मर्दानगी नाम अधार। जोधा सूरबीर बलवानयां, नाता तोड़ सर्ब संसार। घर साचा इक्क पछानयां, हरि मिल्या गुर करतार। तुट्टा माण अभिमानयां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। हरिजन तेरा प्यार अवल्लड़ा, जगत जुगत ना जाणे रीत। पुरख अबिनाशी जाणे इक्क अकल्लड़ा, आदि जुगादी साची रीत। निरगुण निराकार निरवैर अजूनी रहित फड़ाए पलड़ा, पारब्रह्म प्रभ इक्क अतीत। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण दर दरवाज़े खलड़ा, हरिजन गाए तेरे गीत। जोती धार शब्दी रलड़ा, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे सच प्रीत। प्रीतम प्यारा, पीआ पीआ आप दृढ़ाईआ। गुरसिख तेरा धाम न्यारा, निहचल दए वड्याईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख थक्की शाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, गुरमुख तेरे चरनां सीस झुकाईआ। तेरा मेला हरि निरँकारा, एका घर दए वखाईआ। सब दी पावे सारा, त्रैभवन धनी वड वड्याईआ। चौदां लोकां पार किनारा, ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबाईआ। अग्गे सतिगुर मिले प्यारा, फड़ बाहों गले लगाईआ। गुरसिख आए मेरा दुलारा, मैं वेखां चाँईं चाँईंआ। गुर गोबिन्द दए हुलारा, साचा झूला रिहा झुलाईआ। वाह वाह वज्जदी रहे सतारा, तन तन्दन तार हलाईआ। जिस मिल्या एकँकारा, लहिणा देणा दए मुकाईआ। घर वखाए ठांडा दरबारा, कबीर जुलाहा रिहा जस गाईआ। बहत्तरां भगतां इक्क मनारा, मोहन माधव आप बणाईआ। दिवस रैण बण रखवारा, दूर दुराडे वेखे चाँईं चाँईंआ। सत्तरां खेल करे न्यारा, सति सतिवादी गुण दिआ   । साता चौका जगत विहारा, चौहत्तर एका बन्धन पाईआ। चौथे जुग चार वरन अखाड़ा, चार कुण्ट वखाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण साचा लाड़ा, सति सतिवादी वेखे चाँईं चाँईंआ। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी कार कराईआ। एका दर एका घर इक्क वणजारा, दूजी वस्त हट्ट खुल्हाईआ। तीजे नैण नैण उग्घाड़ा, चौथे चौथे पद रसाईआ। पंचम पंचम नाद शब्द धुन्कारा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। छेवें घर खेल न्यारा, आपणी छप्परी आपे छाईआ। धन्ना जट्ट करे पुकारा, मिले गुसाँईं मेरा माहीआ। करे खेल आप निरँकारा, वेस अवल्लड़ा आप वखाईआ। कलयुग अन्तिम दए सहारा, एका गुण गया समझाईआ। निहकलंक आवे आपणी वारा, जुग चौकड़ी काल बताईआ। जन भगतां देवे नाम सहारा, सोहँ अक्खर कर पढ़ाईआ। मन्दिर बणाए इक्क दरबारा, जगत डेरा देवे ढाहीआ। आपे करे आपणी

४०६
११

कारा, हरि हरि भेव ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भगतां आपे लए मिलाईआ। कवण बिध मिलाए भगत, नेत्र नैण रहे उठाईआ। कवण वखाए आपणी शक्ति, शरअ बन्धन दए तुड़ाईआ। कवण रूप करे हरक्त, निरगुण नूर नूर धराईआ। कवण दुआरे होए प्रगट, जोती जामा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। नानक कबीर रिहा पुकार, एका ढोला गाया। निरगुण वेखो विच संसार, हरि जू खेल कराया। प्रगट होया अगम्म अपार, आपणा राह चलाया। सचखण्ड दुआरा कर त्यार, हरिजन साचे विच बहाया। शब्द सुनेहड़ा दिता एका वार, धुर दरबारे आप सुणाया। गुर अवतार रहिणा ख़बरदार, पीर पैग़म्बर नाल रलाया। सब दा लहिणा देणा रिहा विचार, भुल्ल कोए ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि इक्क निशान, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी अनाद अनादी बोध अगाधी दो जहान श्री भगवान, एका रंग वखाया।

★ ११ माघ २०१८ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह सद्दा ज़िला गुरदासपुर ★

निर्धन सरधन एका माण, एका रंग रंगाइंदा। अंदर बाहर इक्क ध्यान, घट घट वेख वखाइंदा। गृह गृह मन्दिर इक्क मकान, घर घर सोभा पाइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सतिगुर पूरा आप झुलाइंदा। आत्म ब्रह्म सच ज्ञान, सच सुच्च दृढ़ाइंदा। हरिजन साचे कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। तत्तव तत्त निगहबान, पंचम सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप रंगाइंदा। पंचम तत्त तत्त प्यारा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। हरि हरि खेल अपर अपारा, आदि जुगादि कराईआ। गुर गुर रूप विच संसारा, शब्दी शब्द शब्द प्रगटाईआ। नाम नाम नाम जैकारा, जै जै कार करे लोकाईआ। वाहवा गोबिन्द शब्द मुरारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग समाईआ। गुरमुखां करे सद प्यारा, चरन प्रीती इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन सरधन निर्धन एका घर बहाईआ। निर्धन सरधन एका रंग, इष्ट गुरदेव इक्क अख्वाइंदा। सति सति दानी बुध बबेक, त्रैगुण माया ना लाया सेक, मेटणहारा पहली रेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। निराकार निरवैर लेखा जाणे आदि दशमेश, दहि दिशा फेरा पाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेश, सेवा लाए विष्न ब्रह्मा महेष गनेश सोभा पाइंदा। लेखा जाणे ऋषीकेस, गोवर्धन धारी इक्क आदेस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन सरधन निर्धन साचा संग निभाइंदा। निर्धन

सरधन आत्म घर, घर घर विच वेख वखाइंदा। बन्द कवाड़ी खोल्ह दर, दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। साचे हुजरे आपे चढ़, महल अटल सोभा पाइंदा। निष्अक्खर आखर आपे पढ़, चौदां विद्या माण गवाइंदा। चौदां लोक रहे डर, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। चौदां तबक शरन शरनाई गए पड़, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन आप तराइंदा। निर्धन सरधन तारे गोपाल, हरि गोबिन्द वड्ड वड्याईआ। हरिजन वेखे अनमुलड़े लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। त्रैगुण अतीता एका ठांडा सीता पाया तोड़ जंजाल, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ा खेल कराईआ। पतित पुनीता एका देवे नाम सच्चा धन माल, सति सतिवादी आप वरताईआ। नाता तोड़ जगत जंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। एथे ओथे चले नाल, जन्म जन्म मूल चुकाईआ। सच वखाए सच्ची धर्मसाल, चार दीवार ना कोए बणाईआ। निरगुण बैठा पुरख अकाल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। गुर अवतार करन सवाल, अग्गे ख़ाली झोली डाहीआ। किरपा कर दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी नेहकामी त्रिलोकी तेरी वड वड्याईआ। अन्त सब नूं खाया काल, पंज तत्त काया चोला गए तजाईआ। तुध बिन होए बेहाल, बेहबल नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निर्धन सरधन सरधन निर्धन तेरा बंस अख्वाईआ। निर्धन सरधन तेरा बंस, हरि जू आख सुणाइंदा। कोटन कोटि वेखां सहँस, सहँस सहँसर वेख वखाइंदा। गुरमुख विरला मेरी अंस, अंगीकार आप कराइंदा। मनमुख दुष्ट सँघारे जिउँ कान्हा कंस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन आपणी गोद बहाइंदा। निर्धन देवे माण, दया कमाइंदा। शाह पातशाह श्री भगवान, हथ्थ किसे ना आइंदा। जुग जुग तिन्हां मेटे आण, भगवन आपणी बूझ बुझाइंदा। सति दुआरा खोल्ह दुकान, नाम वस्त इक्क वकाइंदा। मनमुख भुल्ले जीव नादान, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन आपणे दर बहाइंदा। निर्धन मेला एकँकार, हरि साचा सच कराईआ। सो पुरख निरँजण शब्द रूप, हरि पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। एकँकारा इक्क अधार, चरन शरन शरनाईआ। आदि निरँजण कर प्यार, जोती जोत लए मिलाईआ। अबिनाशी करता ठांडा दरबार, सचखण्ड दुआरा इक्क समझाईआ। श्री भगवान बेड़ा करे पार, शौह दरयाए ना कोए रुड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पावे सार, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। ईश जीव खेल न्यार, जगदीश आप कराईआ। कुदरत कादर वेखे वेखणहार, ख़ालक ख़लक गया समाईआ। निर्धन साजण मेल मिलाए आप गिरधार, गिरवर आपणी सेव कमाईआ। सरगुण होए आप पनिहार, बण बण चाकर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन आपणे घर वखाईआ। निर्धन होए साचा गुरसिख, गुर गुर बूझ बुझाइंदा।

४०८
११

धुरदरगाही लेखा लिख, पूरब लहिणा आप मुकाइंदा। नाम सन्तोखी पाए भिक्ख, धीरज जत्त सत दृढ़ाइंदा। सति सतिवादी नेत्र पेख, पेख पेख खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख एका दर वखाइंदा। गुरसिख तेरी निर्धन धार, निराकार चलाईआ। जुग जुग करे सच प्यार, लोकमात वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। निहकलंक लए अवतार, जोती जोत करे रुशनाईआ। जुग जन्म दे विछड़े लए उठाल, आप आपणी गोद बहाईआ। दीन दयाल ठाकर करे प्रितपाल, प्रितपालक बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरा देवे सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन आपणी बूझ बुझाईआ। निर्धन बोले गुर विचार, गुरमती हरि जणाइंदा। शब्द गुर इक्क संसार, जुग जुग वेस वटाइंदा। पंज तत्त काया करे प्यार, कंचन गढ़ सुहाइंदा। मन मति बुध दए आधार, साची सुध वखाइंदा। पंच विकारा करे युद्ध मारे मार, नाम खण्डा हथ्थ रखाइंदा। सूरबीर पए कुद्द आपणा बल आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन आपणा घर बणाइंदा। निर्धन बणया तेरा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। लोकमात चुक्या डर, वेले अन्त ना कोए सजाईआ। सो साहिब घाड़न ल्या घड़, सो वेखे चाँईं चाँईंआ। डूँग्घी भँवरी आपे वड़, काया कवरी फोल फुलाईआ। आत्म परमात्म नुहाए साचे सर, काग हँस रूप वटाईआ। एका सईआं नारी नर, नर नरायण आप समझाईआ। लहिणा देणा चुक्के चोटी जड़्ह, हद्द आपणी खेल वखाईआ। गुरसिख सज्जण आपे फड़, आपणी गंढु वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण मेला इक्क दातार, दाता दानी आप कराईआ। निरगुण निरगुण नेत्र रो, निर्धन आख सुणाया। एका नाउँ हरि हरि सो, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाया। हँ ब्रह्म एका हो, दूसर रूप ना कोए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ एका नाम समझाया। हँ ब्रह्म हरि पसारा, चार खाणी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण शाह सिक्दारा, साची कार कमाईआ। हँ ब्रह्म घट घट अधारा, पंज तत्त रथवाहीआ। सो पुरख निरँजण मीत मुरारा, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण निरगुण दए सहारा, आत्म परमात्म संग निभाईआ। सोहँ साचा शब्द जैकारा, चार जुग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन देवे नाम दात, दरस वखाए इक्क इकांत, रूप अनूप दरसाईआ। सोहँ नाम साचा धन्न, हरि सज्जण सच जणाइंदा। राए धर्म ना देवे डंन, चित्रगुप्त ना लेख वखाइंदा। हरि का राग एका कन्न, गुर गुर शब्द अल्हाइंदा। गुरमुख विरला जाए मन, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आप वसाए काया तन, अजपा जाप आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन आपणा अक्खर पढ़ाइंदा। निर्धन पढ़णा एका

अक्खर, हरि हरि जू आप जणाया। जुग जुग सब तों रिहा वक्खर, तन मन ना किसे समाया। कोई कहे वसे ओहले बज़र कपाटी पत्थर, साची सिला ना कोए हटाया। कोई कहे चढ़ के बैठा सिखर, निरगुण नूर नज़र ना आया। कोई कहे इस दा कोई नहीं चित्र, रूप रंग ना कोए जणाया। पारब्रह्म कहे मैं गुरमुखां मित्र, जुग जुग वेस वटाया। आदि जगादि मात पितर, पिता पूत गोद सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण एका जोग जणाया। निर्धन तेरा साचा जोग, हरि साचा सच सुहाइंदा। आत्म सेजा हरि हरि भोग, सब दा हरि हरि रंग वखाइंदा। जन्म कर्म ना होए वियोग, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाइंदा। एथे ओथे सच संजोग, नारी कन्त सोभा पाइंदा। दरस वखाए इक्क अमोघ, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। लहिणा देणा चुक्के चौदां लोक, सच सलोक जिस सुणाइंदा। चरन दरस मुक्ती मोख, गुरसिख तेरे चरनां हेठ दबाइंदा। पुरख अकाल इक्को ओट, अन्तिम जोती जोत मिलाइंदा। निर्धन चुक्के आलणयो डिग्गे बोट, आपणी गोद बहाइंदा। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोती जाता खेल खलाइंदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, दीन मज़ब ना कोए रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखे ओत पोत, बंस सरबंस आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे नाम दान, लेखा जाणे दो जहान, जून अजूनी ना कोए भुवाइंदा।

★ ११ माघ २०१८ बिक्रमी बूड़ सिँघ वजीर पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

एका ओट हरि निरँकार, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। जुग जुग लए मात अवतार, रूप अनूप आप वटाईआ। भगत भगवन्त बणे मीत मुरार, आप आपणा भेव चुकाईआ। सन्तन देवे दरस दीदार, नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। गुरमुख साचे लए उठाल, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। गुरसिख वेखे साचे लाल, लख चुरासी फोल फुलाईआ। एका देवे नाम धन माल, साची वस्त आप वरताईआ। अन्तकाल ना खाए काल, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट ओट समझाईआ। एका ओट पुरख अकाल, आदि जुगादि दया कमाइंदा। जन भगतां घालण आपे घाल, घाली घाल लेखे पाइंदा। एथे ओथे हल करे सवाल, बण सालस सेव कमाइंदा। जुग जुग करां अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट हरि समझाइंदा। एका ओट गुर अवतार, सो पुरख निरजण इक्क रखाईआ। दर दर मंगदे गए बण भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तूं करता

कादर करनेहार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। साचा सईआ सिरजणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट हरि जणाईआ। एका ओट पुरख समरथ, भगत भगवान ध्यान लगाइंदा। एका देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। करे कराए पूजा पाठ, साचा मन्त्र अन्त दृढ़ाइंदा। इक्क नुहाए साचे ताट, तीर्थ सरोवर आप वखाइंदा। इक्क उतारे पार घाट, सच किनारा आप बणाइंदा। एका मेटे अन्धेरी रात, निरगुण नूर जोत जगाइंदा। एका लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। एका बणे पिता मात, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। आपणा दरस वखाए इक्क इकांत, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट ओट जणाइंदा। एका ओट पुरख अगम्म, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता दुःख ना कोए जणाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास दम, दम दमां विच समाईआ। निहकर्मी करे आपणा कम्म, कर्म कांड ना कोए वड्याईआ। जन भगतां बेड़ा देवे बन्नृ, खेवट खेट सेव कमाईआ। एका राग सुणाए कन्न, नाद अनादी आप वजाईआ। भाग लगाए पंज तत्त काया माटी तन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट आप समझाईआ। एका ओट इक्को आस, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे प्यास, हरि पुरख निरँजण दया कमाइंदा। पंच विकारा होवे नास,

एकँकारा दया कमाइंदा। निरगुण नूर होए प्रकाश, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता होए दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। श्री भगवान रचाए रास, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। पारब्रह्म सर्ब गुणतास, गुणवन्ता खेल कराइंदा। जन भगतां सदा वसे पास, साचा संग निभाइंदा। लेखा जाणे पृथमी आकाश, अप तेज वाए खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट हरि आपणी आप जणाइंदा। इक्को ओट इक्को मति, एका एक वड्याईआ। एको करे सच्चा हित्त, हरिजन साचे लए तराईआ। एका जाणे गति मित, मित गत आपणे हथ्थ रखाईआ। एका आवे जावे नित नवित, जुग जुग वेस वटाईआ। ना कोई वार ना कोई थित, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। करे खेल आप अनडिठ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। लख चुरसी सुत्ता दे कर पिठ्ठ, आपणा मुख ना किसे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट हरि शरन शरनाईआ। एका ओट हरि शरन, हरिजन आप जणाइंदा। एका खोल्हे हरन फरन, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। एका दाता तरनी तरन, तारनहार आप हो जाइंदा। एका गुर वरनी वरन, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। एका नाता तोड़ अठारां बरन, बरन आत्मक आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट एका घर वखाइंदा। एका ओट दीनन दीन, दयानिध जणाईआ। एका साहिब वड

४११
११

प्रबीन, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। एका नाउँ हरि हरि चीन, चिंता दुःख रहे ना राईआ। एका रंग चढ़ाए भीन्न, उतर कदे ना जाईआ। गुरमुख मेला जिउँ जल मीन, घर घर विच खुशी रखाईआ। नाता तोड़ लोक तीन, त्रैगुण माया दए तजाईआ। इक्को साहिब होए अधीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को ओट तकाईआ। इक्को ओट हरि दातार, हरिजन हरि हरि आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे चार, कोटन कोटि काल बीताइंदा। नव नौ उतरे आपणे घाट, पार किनारा ना कोए वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गा गा गए गाथ, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट आप रखाइंदा। एका ओट इक्क सुल्तान, शहिनशाह इक्क वड्याईआ। एका हुक्म कर हुक्मरान, आपणा हुक्मी हुक्म भुवाईआ। एका भूपत राज राजान, शाह सिक्दार इक्क अख्वाईआ। एका जुग जुग खेले खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। एका प्रगट होए नौजवान, बल आपणा आप धराईआ। एका डंक वजाए श्री भगवान, दूजा संग ना कोए रखाईआ। एका नाम कर प्रधान, नौ खण्ड पृथ्मी करे पढ़ाईआ। एका देवे सति ज्ञान, सत्त दीप आप समझाईआ। एका देवे साचा माण, विष्न ब्रह्मा शिव सरनाईआ। एका गुरमुख मेटे आण, गुर गुर रूप वटाईआ। एका नाद शब्द धुन्कान, घट मन्दिर आप वजाईआ। एका परम पुरख सुल्तान, पीत पीतम्बर सीस छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका ओट जणाईआ। गुर अवतार एका ओट, हरि तेरी अंस रखाईआ। तेरा नाउँ नगारा चोट, लोकमात सुणाईआ। जगत वासना कढ्ढे खोट, साचा मार्ग लाईआ। नाम सति सति अतोट, जुग जुग सेव कमाईआ। लिख लिख थक्के वारता पोथ, तेरा लेख ना कोए मुकाईआ। तेरा भेव अभेव गोझ, भेत किसे ना आईआ। तूं किसे ना आवें विच सोच, सोची सोच ना कोए समझाईआ। तेरे दर्शन नूं गुर अवतार रहे लोच, नेत्र नैण नैण उठाईआ। तूं सद माणनी आपणी मौज, बेअन्त मेरे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची ओट इक्क वखाईआ। इक्को ओट इक्को नैण, नैण नैण नैण बिगसाईआ। पुरख अबिनाशी सारे कहिण, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। जुग जुग चुकाए लैण देण, रूप अनूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी ओट आप वखाईआ। मेरी ओट गए रख, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। कलयुग अन्त होए प्रतख, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जन भगतां मार्ग देवे दस्स, आपणी बूझ बुझाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर घर विच खोज खुजाइंदा। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, दूर दुराडा नेड़े आइंदा। वसणहारा घट घट, आपणा पर्दा लाहइंदा। दूई द्वैत मेट फट्ट, एका पट्टी नाम बंधाइंदा । अमृत आत्म साचा चट, आपणा रस चखाइंदा। दुरमति मैल आपे कट, अज्ञान

अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट आप जणाइंदा। एका ओट रखी याद, याद याद याद विच मिलाईआ। कलयुग अन्त सुणे फ़रयाद, लहिणा देणा सर्ब चुकाईआ। भगत भगवन्त लए काढ, लख चुरासी विच्चों रखाईआ। एका देवे नाम दाद, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। मेल मिलावा मोहन माधव माध, आपणी धुन सुणाईआ। करे कराए साचा लाड, पिता पूत बाल सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट दए शरनाईआ। एका ओट शरन शरना, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। मरना डरना दए चुका, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साची सरना दए बहा, हरि चरन कँवल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रखी ओट आपे पूर कराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाइंदा।

★ ११ माघ २०१८ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बाबूपुरा ज़िला गुरदासपुर ★

धुर फ़रमाणा हरि निरँकार, हरि एका एक सुणाइंदा। सुत शब्द हो त्यार, तेरी सेवा सच लगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। त्रैगुण माया दए उठाल, इक्क हुलार लगाइंदा। पंज तत्त सुरत संभाल, आलस निंद्रा सर्ब गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा पुरख अथाह, एकँकार सुणाईआ। सुत दुलारे उठ उठ जा, प्रभ साचा हुक्म सुणाईआ। चारे जुग लए उठा, एका हुक्म सुणाईआ। चारे वेद भेव खुल्ा, पर्दा पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेशा इक्क सुणाईआ। धुर संदेश श्री भगवान, एका एक सुणाइंदा। उठ सुत मेरे बलवान, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। चारे खाणी बाणी जेरज अण्डज, सेत्ज उत्भुज वेख वखाइंदा। चारे बाणी बण हुक्मरान, एका आपणा हुक्म मनाइंदा। चारों कुण्ट ध्यान, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वंड वंडाइंदा। दहि दिशा कर परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेशा आप सुणाइंदा। धुर संदेशा श्री भगवन्त, एका एक जणाईआ। उठ सुत सृष्ट सबाई दे साचे कन्त, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। जिउँ ल्या लख चुरासी ज्ञान तत्त, घाड़त घड़ घड़ रूप वटाईआ। खेल खलाया आदि अन्त, जुगा जुगन्त वेस वटाईआ। नाम प्रगटाया मणीआ मंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क अल्ाईआ। सच संदेशा हरि परवान, एका एक जणाइंदा। उठ सुत मेरे बाल नादान, पुरख अबिनाशी आप जगाइंदा। लोआं पुरीआं मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी वंड वंडाइंदा। सूरज चन्द तेरी आण, रवि ससि तेरी शरन रखाइंदा। करोड़ तेतीसा तेरा फ़रमाण, हुक्मी हुक्म

जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा आप घलाइंदा। सच सुनेहड़ा देवे हरि, हरि हरि वड्डा वड वड्याईआ। पूत सपूते जाए वर, दर वर आप समझाईआ। इक्क उठाउणा नारी नर, नर नरायण बूझ बुझाईआ। डूँग्घी भँवरी आपे वड़ वड़, काया कवरी फोल फुलाईआ। सुरत सवाणी आपे फड़ फड़, आपणा बन्धन पाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़ पढ़, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। साचा हुक्म आदि पुरख, एका वार जणाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हिरख़, चिंता चिखा ना कोए जलाइंदा। जुगा जुगन्तर ना करे तरस, जो घड़या भन्न वखाइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श, कुरा कायनात फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा आप सुणाइंदा। सच संदेशा मन्न लै मीत, मित्र प्यारा आप जणाईआ। जुग चौकड़ी वेखी रीत, नव नौ चार खेल कराईआ। गुर गुर देवे नाम गीत, गीत गोबिन्द गोबिन्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप समझाईआ। एका हुक्म हरि करतारा, हरि जू आप जणाइंदा। उठ वेख चल संसारा, चारों कुण्ट आप भुवाइंदा। एका दस गुर अवतारा, जुग जुग आपणा आप छुपाइंदा। थिर घर खोल्ह इक्क किवाड़ा, हरि मन्दिर आप उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप उठाइंदा। सुत दुलारा शब्दी रंग, आपणी लए अंगड़ाईआ। किरपा करी सूरे सरबंग, मेरे घर वज्जी वधाईआ। चरन कँवल दिता अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। इक्क सुणाया सच्चा छन्द, धुर फ़रमाण प्रगटाईआ। मेरा खुशी होया बन्द बन्द, बन्दीख़ाना ना कोए वखाईआ। मेरी नंगी ना होवे कंड, सिर रखे हथ्थ शहिनशाहीआ। मैं वेखां खण्ड ब्रह्मण्ड, निरगुण सरगुण घर घर फोल फुलाईआ। मैं लहिणा देणा चुकावां सूरज चन्द, किरन किरन विच समाईआ। मैं फेरा पावां विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। मैं वेखां झूठ पाखण्ड, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मैं वेखां बत्ती दन्द, कौण हरि जू रहे गाईआ। मैं तोड़ां सर्ब घुमंड, ना कोए रखे माण वड्याईआ। मैं करां खण्ड खण्ड, एका खण्डा नाम चमकाईआ। मैं टुट्टी देवां गंढ, मेरे हथ्थ प्रभ वड्डी वड्याईआ। मैं लख चुरासी करां रंड, सीस कन्त ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा इक्क लगाईआ। मेरी सेवा गई लग्ग, हरि शब्द उठ ललकारया। मैं प्रगट होवां विच जग, खेलां खेल अपर अपारया। निरगुण नूर दीपक जावां जग, मेटां अन्ध अँध्यारया। गुरमुखां वेखां उपर शाह रग, घर मन्दिर चढ़ चुबारया। त्रैगुण साड़ां अग्नी अग्ग, तत्तव तत्त इक्क अंग्यारया। मैं जुग जुग वेखां हद्दो हद्द, हद्द पार किनारया। मैं सच निशाना देवां गड्ड, दो जहानां हो उज्यारया। मैं भगतां दर लवां सद्द, सच संदेशा देवां विच संसारया। मूर्ख मुग्ध जावां छड्ड, जुग

जुग खेल करां अपारया। मेरा अमृत नाम मध, दिवस रैण खुमारया। मैं भगतां अंदर जावां बज्झ, दिस किसे ना आ रिहा। मैं गुरमुखां कोल बहवां सज, करां खेल अगम्म अपारया। मैं लाहवां इक्क लज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिका रिहा। मैं ग़रीबां दर ग़रीब निवाज, हरिजन साचे नाल रला ल्या। मैं लख चुरासी साजण साज, घट घट आपणा रूप धरा रिहा। मैं जुग जुग देवां दाज, नाम निधाना झोली पा रिहा। मैं अगम्म अगम्मड़ी लावां वाज, रसना जिह्वा ना कोए हिला रिहा। मैं लख चुरासी रचां काज, नौ खण्ड पृथमी अखाड़ा इक्क वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, सुत शब्द खुशी इक्क मना ल्या। सुरत शब्द चढ़या चाअ, घर आपणे खुशी मनाईआ। मैं दो जहानां वेखां आ, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। मैं विष्न ब्रह्मा शिव लवां उठा, एका हुक्म सुणाईआ। मैं तेई अवतार लवां जगा, नेत्र नैणां नींद खुल्हाईआ। मैं ईसा मूसा भेव दयां खुल्हा, आपणा पर्दा लाहीआ। मैं मुहम्मद अहिमद ठोकर दयां लगा, ठाकर दिती सच शरनाईआ। मैं नानक निरगुण लवां मिला, गोबिन्द आपणी गोद सुहाईआ। मैं डंका सच दयां वजा, राउ रंकां आप सुणाईआ। दुआर बंका दयां वड्या, जिस दुआरे फेरा पाईआ। साचा धनुष लवां उठा, नाम चिला इक्क वखाईआ। पुट्ठा गेड़ा दयां दुआ, लख चुरासी आप भुवाईआ। जीव जंत झेड़ा दयां मुका, साध सन्त रहे कुरलाईआ। नार कन्त नाता दयां तुड़ा, घर घर नेत्र नीर वहाईआ। जन भगतां काया चोली रंग दयां चढ़ा, आप आपणी सेव कमाईआ। एका नाद दयां सुणा, धुन आत्मक कर शनवाईआ। एका अक्खर दयां पढ़ा, सोहँ शब्द बेपरवाहीआ। नानक निरगुण गया गा, अन्तर अन्तर विच रखाईआ। गोबिन्द लिख के गया समझा, सोहँ भथ्था तीर कमान दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी दिता एका वर, घर वज्जदी रहे वधाईआ। सुत शब्द उठ बलकारे, बल आपणा आप रखाईआ। महल अटल वेखे उच्च मनारे, ऊँचो ऊँच बेपरवाहीआ। मेल मिलावा धुर दरबारे, दरगाह साची खुशी मनाईआ। पाया पुरख इक्क करतारे, कुदरत कादर वेख वखाईआ। आदि जुगादि मददगारे, मेरा साचा संग निभाईआ। जुग जुग वज्जदे रहिण नगारे, गुर अवतार रहे सुणाईआ। भगत वेखे आप दुलारे, चार जुग दे विछड़े लए मिलाईआ। सन्तां देवे नाम हुलारे सच हलूणा इक्क वखाईआ। गुरमुख गोद आप बहाले, चुक्क चुक्क आपणी खुशी मनाईआ। गुरसिखां प्रीती निभे नाले, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मार्ग दस्से इक्क सुखाले, एका पूजा एका पाठ एका नाम जणाईआ। आदि जुगादि सदा सद करे प्रितपाले, प्रितपालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत दिता वर, जन भगतां घाल आपे घाले। सुत शब्द घर हो त्यार, थिर घर कुण्डा लाहया। पहलों दरस करे निरँकार, दोए

जोड़ चरन सीस झुकाया। तेरा हुक्म मेरी सरकार, सिर आपणा मैं टिकाया। मैं जावां विच संसार, रूप अनूप वटाया। लख चुरासी नौ खण्ड खोल्हां इक्क किवाड़, आपणा पर्दा आप उठाया। खेल करां अपर अपार, लिख्या लेख ना कोए समझाया। सब दा लहिणा देणा लवां विचार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। मेरे सिर रख हथ्थ, एका मंग मंगाईआ। तूं पर्दा मेरा लैणा ढक, ढाकण को पति मेरे साँईंआ। मैं दो जहान गावां तेरा जस, तेरे नाउँ वड्याईआ। गुर अवतारां देवां दस्स, प्रभ प्रगट होया सच्चा माहीआ। किसे ना चलणा कोई वस, सब दा लेखा दए मुकाईआ। उठो वेखो नट्ठ नट्ठ, वेला गया हथ्थ ना आईआ। हरि शरनाई जाओ ढट्ठ, जे होवे मेहरवान दया दए कमाईआ। पहला लेखा देवे कट, अग्गे आपणे मार्ग लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं तेरी ओट तकाईआ। तेरी ओट रख भगवान, एका आस तकाइंदा। मैं देवां घर घर फ़रमाण, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम आया निहकलंक बली बलवान, जिस नूं नानक गोबिन्द गाइंदा। सति सतिवाद झुलाए निशान, सति पुरख निरँजण आप रखाइंदा। खाणी बाणी लहिणा चुक्के जीव जहान, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। उठो बाल नादान, हरि रहिमत आप कराइंदा। आदि जुगादी बागबान, जगत फुलवाड़ी वेख वखाइंदा। सब दा कलमा अञ्जील कुरान, कातब लिख लिख लेख वखाइंदा। सो साहिब सच्चा सुल्तान, लिख्त विच कदे ना आइंदा। उठो वेखो नेत्र खोल्हो करो पछाण, परवरदिगार वेस वटाइंदा। मुकामे हक़ हो प्रधान, अमाम अमामा इक्क निशान, प्रगट होया विच जहान, दिस किसे ना आइंदा। मैं देवण आया पैग़ाम, उठ के चलो करो सलाम, असलामालैकम इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, इक्क तेरी ओट तकाइंदा। उठो ब्रह्मण ब्रह्म ज्ञान, हरि साचा सच जणाईआ। चौथा जुग अन्त होया प्रधान, कलयुग आपणा रंग वखाईआ। चारों कुण्ट होण हैरान, सिंमल रुक्ख रिहा लहराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ बैठे बेईमान, बेवा रूप नज़री आईआ। हरि खावंद किसे ना मिल्या आण, ख़ालक ख़लक रिहा रवाईआ। जिस नूं लभ्भदे बीआबान, जंगल जूह उजाड़ फेरा पाईआ। जिस दा उठ उठ करदे ध्यान, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। जिस दा पढ़ पढ़ देंदे ज्ञान, रसना जिह्वा हलाईआ। जिस दी सिफ्त करे अञ्जील कुरान, महिमा गीता ज्ञान दृढ़ाईआ। जिस दा वेद करन ज्ञान, पुराण अठारां देण सालाहीआ। जिस नूं शास्त्र सिमरत कहिण प्रधान, सच प्रधानगी रिहा कमाईआ। जिस नूं बाणी कहे श्री भगवान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सो प्रगट होया अन्तिम आण, वेस आपणा आप कराईआ। उठो वेखो पाँधी राही करे खेल महान, हरि आपणी खेल कराईआ।

४१६
११

जन भगतां देवे अनमंगया दान, करता कीमत कोए ना लाईआ। सरन सरनाई विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा कीता भुल्ल ना जाईआ। पुरख अबिनाशी हरि अभुल, एका गुण जणाया। शब्द सुत तूं पाउणा मुल, लख चुरासी तेरे हट्ट वकाया। नाम कंडे तोलना तोल, नानक तेरां तेरां गया समझाया। भाग लगाउणा साची कुल, कुल कुलवन्त एह समझाया। गुरमुख वेखीं साचे फुल्ल, पत्त डाली नाल महकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाया। सुण पुत्त मेरे लाल दुलारे, हरि दूहला तोहे बणाइंदा। मेरे भगत सदा कुँवारे, बिन तेरे ना कोए प्रनाइंदा। चार जुग मैं देंदा रिहा लारे, गुर अवतार मात घलाइंदा। कोई राम कोई कृष्न पुकारे, कोई ईसा मूसा सालाहइंदा। कोई कहे मुहम्मद मेला चार यारे, यारी यारां नाल निभाइंदा । नानक बोले हरि निरँकारे, निरँकार निरँकार इक्क सालाहइंदा। गोबिन्द कहे पुरख अकाल सदा जैकारे, जै जै कार आप कराइंदा। असीं बण के आए वणजारे, जगत साचा हट्ट चलाइंदा। आओ रल के सारे कढ्ढीए हाढ़े, दोए दोए सीस झुकाइंदा। किरपा करे पुरख करतारे, आप आपणी दया कमाइंदा। मातलोक विच असीं सारे हारे, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। आपे अर्श आपे फर्श आपणे रथ आपे चाढ़े, जुग गेड़ा आप भुवाइंदा। आप बणाए साचे लाड़े, सेहरा सीस आप टिकाइंदा। आप उतारे आपणे खारे, साचा सगन आप मनाइंदा। आपे साचे घोड़े चाढ़े, साची वाग आप गुंदाइंदा । आपे खेल करे न्यारे, निरगुण आपणा रंग वखाइंदा। आपे आपणी जोती जोत संगारे, साची दुल्हन आप बणाइंदा। आपे बण विचोला फेरे मारे, एथे ओथे खेल वखाइंदा। कलयुग अन्तिम किरपा करे आप निरँकारे, आपणा बल आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। सुणया संदेशा तेरा भगवान, हउँ बालक ना कोए चतुराईआ। मैं दर ते डिगा आण, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मैं जुग चौकड़ी कीआ खेल विच जहान, गुर अवतार नाल रलाईआ। तेरा नाउँ बाणी मारया बाण, अणयाला तीर चलाईआ। तेरे जीव तैनूं ना सके पछाण, मेरी चली ना कोए चतुराईआ। मैं रचे वेद पुराण, मैं वेद व्यास दिता दान, मैं कृष्न सुणाया एका गान, आपणा राग अल्लाईआ। मैं ईसा मूसा कर प्रधान, मुहम्मद एका अल्फ़ वखा एका दर समझाईआ। मैं नानक निरगुण दे दे माण, गोबिन्द गोबिन्द घोड़ चढ़ाईआ। अन्तिम सारे तेरी चरन डिग्गे आण, दोए जोड़ मंगण शरनाईआ। तेरी महिमा श्री भगवान, कोई कथ ना सके राईआ। मैं भिखक मंगां दान, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। कलयुग तेरा रंग खेल महान, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। जिउँ भावें तिउँ दे दे दान, मेरी कोई ना माण चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, आपणी

खुशी मनाइंदा। साचा मार्ग देवां दस्स, एका राह चलाइंदा। तूं लोकमात जाणा नस्स, साचा राह वखाइंदा। मेरे भगतां दा गाउणा जस, जस वेद पुराण कम्म किसे ना आइंदा। मैं अन्तर अन्तर जावां वस, आपणा घर सुहाइंदा। जे कोई तैनूं पावे शक्क, अग्गों आपणा रूप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द एह समझाइंदा। सुत शब्द हो अधीन, अदना हो हो सेव कमाईआ। मेरा रूप दर महीन, बेनज़ीर नज़र कोए ना पाईआ। मैं तेरा नूर वखावां सीन, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। मैं नाता तोड़ां त्रैगुण तीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए सहाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों बोल, एका शब्द सुणाया। तेरे नाल करां कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाया। प्रगट होवां उपर धौल, धवला, हौला भार कराया। साढे तिन्न हथ्थ अन्तर जावां मौल, सम्बल आपणा गढ़ बणाया। गोबिन्द देवां एका पौहल, अमृत आपणा आप प्याया। निरगुण हो के वसां कोल, पुरख अकाल वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाया। अन्तिम वेला देवां दरस, हरि दर्दी दर्द वंडाईआ। तेरी मेटां पिछली हिरस, हवस ना कोए वधाईआ। कर किरपा करां तरस, रहिमत रहिमान कमाईआ। भाग लगावां माटी फर्श, ख़ाकी ख़ाक वड्याईआ। आपणे बल आपणे डौले फरक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
४१८ किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणे आउण दा दस्सां वेला, हरि जू आख सुणाया। नाल रखावां आपणा चेला, ४१८
११ गोबिन्द रंग रंगाया। दो जहानां सज्जण सुहेला, निरगुण हो हो वेस वटाया। घर घर दर दर जा जा चाड़्हा तेला, साचा ११
सगन मनाया। गुरमुख वेखां साची वेला, लोकमात आप फिराया। लख चुरासी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बेला, डूँघी कंदर धीर ना कोए धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। कलयुग अन्तिम जाणा आ, आलमगीर आप समझाइंदा। हरिजन साचे लए जगा, जागरत जोत इक्क वखाइंदा। हरि नाम लवां पढ़ा, सोहँ अक्खर इक्क ध्याइंदा। आपणा रूप लवां प्रगटा, प्रगट आपणी खेल कराइंदा। सच दुलारा लोकमात लवां बणा, आपणी सेव कमाइंदा। साचे भगत दवां विच टिका, टिक्का मस्तक एका लाइंदा। साची चोग दवां चुगा, माणक मोती मुख सुहाइंदा। आपणी गोद लवां बहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। किला कोट दयां वसा, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। सच नगारा दयां वजा, नाम नौबत हथ्थ उठाइंदा। मैख़ाना दयां खुल्हा, आबेहयात प्याला आप प्याइंदा। अहिबाब राबाब दयां वजा, तन्दी तन्द ना कोए वखाइंदा। कागद कलम छाही लेखा दयां मुका, लिख लिख लेख ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी एका मार्ग देवां ला, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। पंडत पांधे मुलां शेख़ मुसायक पीर एका घर लवां बहा, तसबी मणका ना कोए भुवाइंदा।

धोती बोदी टिक्का जंजू सब दा दयां मिटा, एका रंग रंगाइंदा। कलमा कलाम दयां पढ़ा, अंग अंग ना कोए कटाइंदा। साबत सूरत दयां वखा, सोभा आपणी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र मौका दयां वखा, साचा वक्त आप सहाइंदा। सुत शब्द हो खुशहाल, प्रभ अग्गे करे अरजोईआ। सतिगुर पूरे हो दयाल, जिउँ मोहन शब्द वक्त देणा वखाल, मैं वेखां चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी घाली तेरी घाल, गुर अवतार सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेखां तूं किस बिध उठाए आपणे लाल, आपणी गोद बहाईआ। पुरख अबिनाशी हो कृपाल, एका वार सुणाईआ। देवां माण सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारे सोभा पाईआ । पहला दर सिँघ पाल, दूजे सवरन मिले वड्याईआ। तीजे जगत जगदीशा होए खुशहाल, चौथे मनजीता वज्जे वधाईआ। पंचम गुर गुर गुरदयाल लाल, गुर गुर गोद सुहाईआ। नानक लेखा कर परवान, पूरा दए कराईआ। पंचम पावे एका माण, गुर एका इष्ट वखाईआ। लोकमात हो प्रधान, आपणी कल धराईआ। सचखण्ड दा सच मकान, सति सतिवादी आप बणाईआ। आपणे भगत कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। सति सतिवादी इक्को साता दूआ लिख्या दो जहान, दोए दोए रूप निरगुण सरगुण आप कराईआ। बहत्तर अंक इक्क वखाण, राउ रंक देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। सतिजुग दा सति निशान, आप चढ़ाए श्री भगवान, सच दुआरे दए झुलाईआ। दूजा हुक्म देवे धुर फ़रमाण, तूं सुणना ला ला कान, हरि साचा सच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका नर, नर हरि वड्डी वड्याईआ। हरि वड्डा शहिनशाह, शाह पातशाह अख्वाईआ। देवे इक्क सलाह, सलाहगीर आप हो जाईआ। पीर फ़कीर दस्तगीर पैग़म्बर लए उठा, एका हुक्म जणाईआ। पुरख अबिनाशी लेखा मंगे आपणा आपणा लओ मुका, वेला अन्तिम अन्त आईआ। पाँधी बण बण बिखड़े राह, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची रीत रिहा सुणाईआ। साची रीत हरि अनमोल, अनमुलड़ी कार कमाइंदा। गुर अवतारो आओ दस्सो की कुछ तुहाढ्ढे कोल, कवण वस्त हथ्थ रखाइंदा। सारे कहिण प्रभ तेरी शरन हउँ तेरे चरन घोली घोल, आपणी वस्त ना कोए रखाईआ। तेरा नाउँ वजा के आए ढोल, सृष्ट सबाई आख सुणाईआ। अन्तिम तोले हरि जू तोल, तोलणहारा इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिउँ भावे तिउँ चल रजाईआ। आपणी रजा ना चलां सक, सो पुरख निरँजण आख सुणाया। मैं भगतां हथ्थ फड़ाई नथ्थ, जिउँ चाहण देण भुआया। मैं भाणा ना सकां डक्क, मेरा नैण नैण शरमाया। कबीर चढ़ के बोलया हक़, हक़ हक़ मेरा खुदाया। कलयुग जीव सारे कहिण हरि का नाम झूठी शक्ति, अग्गे नज़र कोए ना आया। कलयुग अन्तिम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर गुर अवतारां

४१६
११

दी मिसल कीती ठप्प, अग्गे अपील ना कोए रखाया। बहत्तर भगतां दिता हक़, वसीअतनामा आप जणाया। आपे खा के डिगा प्रेम फट्ट, गोबिन्द सूरा आपणा खून नीहां हेठ दबाया। जोती जोत विच्चों होया प्रगट, मात पित ना कोए बणाया। पारब्रह्म विक्या भगतां हट्ट, आपणा चित ना कोए रखाया। हो निमाणा गया ढट्ठ, आपणा बल ना कोए जणाया। भगत दुआरा माण चुकाए अठसठ, सर सरोवर कोई रहिण ना पाया। नौ खण्ड पृथ्मी खेड़ा होया भट्ठ, सत्थर यारड़ा इक्क हंढाया। नेत्र रोवण तत्त अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नाल रलाया। इक्क मुहम्मद उठे झट्ट, आपणा बल रखाया। चार यारां करे अकट्ठ, एका मता पकाया। अल्ला राणी लए करवट, आपणा मुख भुवाया। चलो रल के सारे परवरदिगार शरनाई जाईए ढट्ठ, साडा बेड़ा दए तराया। रल मिल लाहा लईए खट्ट, चौदां लोक रहे कुरलाया। नबी रसूलां इक्को मति, एका तत्त जणाया। दर जाए सत्थर बहीए घत्त, आपणा खावंद लईए मनाया। जिस दा कलमा रहे रट, लिख लिख लेख वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। चार यार मारन धा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साडे विच ना कोई साह, बल नज़र कोए ना आईआ। साडीआं भुजां दा तूं बल बांह, तीजा देवे ना कोए वड्याईआ। असीं सारे करदे ना, तेरे संग ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल समझाईआ। मुहम्मद कहे अल्ला राणी हो त्यार, आपणी खाहिश नाल मिलाईआ। तेरे नाल करां प्यार, प्यार प्यार विच समाईआ। चल के करीए दर पुकार, कूक कूक सुणाईआ। मेरी उम्मत गई हार, उल्मा करे ना कोए पढ़ाईआ। झूठी मुहब्बत फसया संसार, सुहबत तेरी ना कोए सुणाईआ। तसबी मणका कर खुआर, ऐनलहक नाअरा ना कोए लगाईआ। उठ चल के करीए दीदार, नेत्र नैण दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराईआ। अल्ला राणी खोल्हे ताक, आपणा घूँगट रही उठाईआ। मुहम्मद तेरे नाल ना मेरा कोई साक, तेरी शरअ बन्धन ना कोए रखाईआ। मेरा इक्को नाता नाल एका पाकी पाक, बण बरदी सेव कमाईआ। मेरे नक्क ना दिसे नथ्थ सुहाग, सुकी मींढी रही वखाईआ। मैनूं दर दवारिउँ दिता काढ, एका धक्का लाईआ। नित रोवां करां याद, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरा माही सुणे फरयाद, मैं नित नित खुशी मनाईआ। तेरी उम्मत विच फसाद, फस के निकल कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। अल्ला राणी खोल्हे पलक, नैण नैण उग्घाड़या। मेरे खुदा दे दे झलक, तेरा विछोड़ा मोहे सता रिहा। चौदां लोक ना जाणा अटक, चौदां तबक ना कोए विचारया। मैं बिरहों मारी रही भटक, कर तरस मेरे प्यारया। चरनां कोलों ना देवीं हटक, मैनूं तेरा इक्क सहारया। बिन

कुरवों देणा झटक, तेरा प्रेम इक्क रसा रिहा। मैं अद्धविचकार रही लटक, ना कोई दिसे आर पार किनारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा चरन सहारया। मैं खोल्ह कान सुत्ती बिसात, तेरा ध्यान लगाईआ। तूं स्वांगी रचया स्वांग, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मैं कोझी कमली रखी तांघ, नित तेरे दरस तिहाईआ। बिन तेरे रखां होर ना कोई सांझ, दूजा अंग ना कोए लगाईआ। फड़ बाहों लैणा काढ, दोए जोड़ मंगां शरनाईआ इक्को करना सच्चा लाड, आपणी गोद बहाईआ। चरन कँवल देणी दाद, एका दुआर राग सुणाईआ। हज़ारा दरूद ना कोई याद, हज़रत तेरी मंगां शरनाईआ। मैं ख़ादम होवां खाद, ख़ालक तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी तेरी ओट तकाईआ। मैं तेरे दर दी बांदी, सेवक बण बण सेव कमाईआ। मैं कलयुग थक्की मांदी, दर तेरे ते आईआ। मैं गीत तेरे गाउँदी, ढोले मेरे माहीआ। मेरी कट विछोड़े वाली फांदी, आप आपणा मेल मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी झुल्ले आंधी, साचा मेघ ना कोए बरसाईआ। मुलां शेख़ मुसायक भुल्ले वेख सोनां चांदी, माया ममता मोह वधाईआ। मैं बिन तेरे दरस कुछ ना पींदी खांदी, दिवस रैण रहां तिहाईआ। आ मिल साँईंआ मैं वैरागण कूंज कुरलांदी, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रहिमत आप कमाईआ। तेरे उत्ते रहिमत दवां करा, हरि खुदावंद आप सुणाइंदा। तेरा विछोड़ा दयां गवा, साचा संग निभाइंदा। साचा मार्ग दयां वखा, एका राह समझाइंदा। मेरयां भगतां चरन डिग्गीं जा, मेरा वस कोए ना जाइंदा। जे तैनूं देण पनाह, मैं हस्स हस्स खुशी मनाइंदा। तेरा पिछला बख़्शां सर्ब गुनाह, अग्गे भगतां नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। अल्ला राणी कर कबूल, लख लख शुकर मनाया। साहिब तेरा सच्चा असूल, मोहि निमाणी भाया। मैं तेरे भगतां मंगां चरन धूढ़, आपणे मस्तक टिक्का लाया। तूं जाईं ना मैनूं भूल, मैं भुलड़ी राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। अल्ला राणी सुण लै गल्ल, हरि साचा सच जणाइंदा। पहली चेत्र आउणा चल, चाल निराली इक्क वखाइंदा। पुरख अबिनाशी करे वल छल, बण किरसाणा हल चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। अल्ला राणी नैण उग्घाड़, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, कवण कूटे दएं मलाईआ। मक्का काअबा होए खुआर, जगत हुजरा ना कोए वड्याईआ। मात महिराब होई बेज़ार, आपणी दीद खुल्हाईआ। कवण घर तेरा मुनार, कवण मलाल रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी कहे करतार, एका हुक्म सुणाईआ। मेरा सिख सच्चा सरदार, जो बैठा आसण लाईआ। मैं उस दा सेवादार, उत्ते चढ़ के

सेव कमाईआ। दूर दुराडे आउँदे तक्कां पुरख नार, नेत्र नैण उठाईआ। अल्ला राणी तूं मटयार, तेरा जोबन कवण हंढाईआ। दु:ख झलणा पवे संसार, सहिक सहिक मिले वड्याईआ। जन भगतां कोलों पुछण आण सच दरबार, कवण वेला प्रभ लए मिलाईआ। अग्गों सारे कहिण सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोल जैकार, तेरा दुखड़ा दए मिटाईआ। घर मिले कन्त भतार, नार सोभावन्त वड्याईआ। तेरी मुक्के जुदाई जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। उधर सद रिहा इकल्ला, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। हाए हाए ख़ाली दिसे महल्ला, सगला संग ना कोए निभाइंदा। बौहड़ी बौहड़ी रुस्सी अल्ला, रुस्सी नार ना कोए मनाइंदा। दुहाई दुहाई परवरदिगार छुडाया पल्ला, पल्लू हथ्थ ना कोए वखाइंदा। उठ के उम्मत दल आया चला, चल चल आपणा पन्ध मुकाइंदा। अग्गे वेखे बूटा हुल्ला, फल कोए नज़र ना आइंदा। सब सुक्के नाल बुलां, आबेहयात ना कोए प्याइंदा। मसला ना कोई सुणाए मुलां, आयत शरायत ना कोई पढ़ाइंदा। इधर उधर वेखे मैं भुल्ला, साचा राह नज़र ना आइंदा। सिर ते मारे हथ्थ दिसे ना कुल्ला, कुल्ली कक्खां ना कोए बहाइंदा। नेत्र खोल्ह वेखे झल्ला, विच अग्ग ना कोए टिकाइंदा। अन्तर वेखे अमृत डुल्ला, प्याला सरूर ना कोए फड़ाइंदा। अग्गों मिले आप ताना मेहणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। उठ मुहम्मद वेख तकदीर, तदबीर दिती बदलाईआ। तेरी उठी पीर वहीर, चार कुण्ट नज़री आईआ। तैनूं वज्जा शरअ ज़ंजीर, शर्म हया गंवाईआ। तेरी मिटे कल लकीर, फतवा हरि जू दिता लाईआ। तैथों रुसया तेरा पीर, मुर्शद देवे ना कोए वड्याईआ। तूं मन्न जा अन्त अखीर, एका मति समझाईआ। दर जाए नक्क नाल कढ्ढु लकीर, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। औखी घाटी इक्क अख़ीर, अख़ीर चढ़ जाईं मिले सांईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। मुहम्मद उठ उठ बल धारे, आपणा ज़ोर लगाइंदा। वाह वाह तेरा खेल मेरे परवरदिगारे, भेव कोए ना आइंदा। मैं आवां तेरे दुआरे, बण दरवेश सेव कमाइंदा। तूं दे के आया लारे, चौदां सदीआं वंड वंडाइंदा। मैं कीते खेल अपारे, आपणा हुक्म सुणाइंदा। अन्तिम वेला आया किनारे, आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर सीस झुकाइंदा। तेरे दर झुके सीस, सजदा निउँ निउँ सुट जणाईआ। किरपा कर हरि जगदीश, जुगत तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं मन्नां तेरी हदीस, हज़रत तेरी शरनाईआ। मैनूं वखाल नाल शब्दी चीस, तेरा दु:ख झल्लया ना जाईआ। सदी चौधवीं फड़ फड़ कहे ना लेट, गोडे गिट्टे ना दए रगड़ाईआ। मेरी छिल्ली गई पीठ, बौहड़ी बौहड़ी दए दुहाईआ। मेरी वेख ना पहली

नीत, मेरी भुल्ल भुल्ल बख्शाईआ। तोबा तोबा मैं फेर ना जावां विच मसीत, मुलां कोए ना बांग सुणाईआ। मैनूं दस्स दे आपणी रीत, मैं रहिवां नित शरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी चरन सच्ची वड्याईआ। वेख प्रभ मैं गया थक्क, तेरा पन्ध मुकाया। छड्ड दयां नक्क नथ्थ, शरअ रही भुवाया। मैं डिगा डूँघी खड्ड, ना सके कोए उठाया। मेरे बुढ्ढे होए हड्ड, मेरा दुःख ना कोए वंडाया। मैं तेरी उपज्या यद, तूं मेरा हो सहाया। पुरख अबिनाशी अग्गों होया गद गद, हस्स हस्स सुणाया। मैं सिँघ तारा लवां सद्द, तेरा दुखड़ा लवां वंडाया। उह पिछला चोर ठग्ग, तेरी ठग्गी दए भुलाया। करां खेल आपणी हद्द, हरिजन साचे नाल रलाया। मुहम्मद कहे मैं तेरे चरन जावां लग्ग, दूजी ओट ना कोए तकाया। धन्न भाग सिँघ तारा वंडाए मेरा अद्ध, ज़िकर ज़िकर नाल रलाया। कौण वेला हरि जू लवीं कढ्ढ, डूँघी भँवरी आप रखाया। पुरख अबिनाशी रिहा दस्स, एका हाल सुणाया। पहली चेत्र आउणा नस्स, साचा सगन मनाया। उथे मेरे भगतां दा होणा इक्ठ्ठ, इक्ठ्ठ एका वार कराया। उथे गोबिन्द होणा प्रतख, हरि सतिगुर आप कराया। करे खेल पुरख समरथ, समझ विच किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जस भगतां हथ्थ फड़ाया।

गुरमुख तेरा मीतड़ा, हरि एका एकउंकार। काया चोली रंगे चीथड़ा, देवे वड्याई विच संसार। धाम वखाए इक्क अनडीठड़ा, महल अटल उच्च मनार। जगत सुणाए एका गीतड़ा, सोहँ शब्द शब्द जैकार। नाता तुट्टा मन्दिर मसीतड़ा, हरि पाया इक्क दुआर। होया पतित पुनीतड़ा, दुरमत्त मैल दए उतार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत रस इक्क वखाल। कलयुग अन्तिम अन्त बीतड़ा, सतिगुर पूरा होए रखवाल । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे साचे लाल। मेरे लालन लाल प्यारया, गुरसिख दरस वखा। तेरे नाम वणजारया, सदा रखां मिलण दा चाअ। मैं घर घर फेरा मारया, बण सेवक सेव कमा। तूं आ के दे दीदारया, फड़ लै मेरी बांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कोलों मंगे पनाह। गुरमुख तेरा सच सहारा, सो पुरख निरँजण आप तकाइंदा। तुध बिन मिले ना कोई दुआरा, घर कोए नज़र ना आइंदा। तेरे नाम दा हरि वणजारा, गुरसिख तेरे गीत गाइंदा। कर किरपा दे प्रेम भण्डारा, सतिगुर पूरा अग्गे झोली डाहइंदा। कलयुग अन्तिम खेल कीआ न्यारा, आपणी खेल वखाइंदा। जिस नूं लभ्भदे रहे सचखण्ड दुआरा, सो सचखण्ड निवासी गुरसिखां घर घर वेख वखाइंदा। रातीं सुत्तयां

देवे पहरा, ठग्ग चोर यार कोई नेड़ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे मेल मिलाइंदा। गुरसिख तेरी महिमा अकथ, ब्रह्मवेता कथ ना सके राईआ। गुरमुख तेरा अगम्मी रथ, सतिगुर पूरा आप चलाईआ। गुरमुख तेरा नाम वथ, वस्त अमोलक हरि वरताईआ। गुरमुख तेरा प्रेम रस, दो जहान मिट्ठा तत्त ना कोए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे होया वस, मेरी चली ना कोए चतुराईआ। सोहँ शब्द दस्स के गया फस, आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच समाईआ। चार कुण्ट ना सका नस्स, तेरा प्रेम घेरा पाईआ। अन्तिम बह गया कर के बस, झल्ली जाए ना तेरी जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सदा संग रखाईआ। गुरसिख कहे मैं नहीं मन्नदा, तूं अछल अछल अख्वाया। जुगा जुगन्तर सब नूं डंनदा, जो घड़या भन्न वखाया। कोटां विच्चों इक्क दा बेड़ा बन्नदा, ध्रू प्रहिलाद रिहा सुणाया। जुगो जुगन्त आपणा नाम सुनेहड़ा घल्लदा, आपणा फेरा कदे ना पाया। सदा सदा सद रिहा छलदा, अछल अछल खेल कराया। मैं की जाणा तूं मेरे वल दा, मेरा संग निभाया। पुरख अबिनाशी कहे मैं करां खेल घड़ी घड़ी पल पल दा, आपणी सेव कमाया। मैं रातीं सुत्तयां तुहाढ्डे पासे थल्लदा, आपणा दरस वखाया। मैं तुहाढ्डे प्रेम अंदर विच लोकमात पलदा, होर खाणा पीणा मोहे कुछ ना भाया। मैं जोती अंदर जोत रलदा, रूप रंग रेख ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां सदा सद सद वड्याईआ।

★ १२ माघ २०१८ बिक्रमी सन्त सिँघ दे गृह बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

मेहरवान दर बरदा तेरा रसूल, बेवसी विच रिहा कुरलाईआ। मेरी आरज़ू कर कबूल, मेरी खैर दए दुहाईआ। तूं कातिल मैं तेरा मकतूल, मुनतकल लिख्या दए कराईआ। आदि जुगादि तेरा सच असूल, सुलाह तेरी वड वड्याईआ। गुनाहगार गया भूल, बेपरवाह तेरी पनाह तकाईआ। एका फ़रमाण दे माकूल, मुख़बर होर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क तकाईआ। हरि नज़र नज़र रहिमाना, रहिमत एका मंग मंगाईआ। कलमा कुल अमामा, ईमानउला तेरी पढ़ाईआ। बिस्मिल रूप तेरा निशाना, कर वणज बण कसाईआ। आपणी हथ्थीं दे जुरमाना, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मेरा मिटदा जाए निशाना, नूर नज़र दिस ना आईआ। तुलबा तालब ना कोए पढ़ाणा, तालीम गनीम ना कोए सुणाईआ। कातब कलाम ना कोए पढ़ाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र एका पाईआ। मेहर नज़र पा मेरे करीम, कर्म कांड तेरा खेल। तूं कुदरत कादर गणी गनीम, एथे ओथे तेरा मेल। तूं

अन्तिम मेरी करी तक्सीम, आप वसया धाम नवेल। मेरा लिख्या अल्फ़ ये भेव ना पाया डण्डा मीम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बण सज्जण सुहेल। अल्फ़ ये तेरी धार, तरा तरा समझाईआ। बकर रूप करतार, बेसबर तेरी वड्याईआ। सुध अंदर खेल करी न्यार, पर्दानशीं मुख ना किसे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरवेश तेरी आस तकाईआ। दर दरवेश होया दिलगीर, नेत्र नैणां नीर वहाया। तुं साहिब मैं हकीर, तेरी सेव कमाया। मेरा लहिणा अन्त अख़ीर, निगहबान दए चुकाया। मैं तेरा बणाया बणया पीर, मेरी उल्फ़त ना कोए वड्याआ। तूं शफ़कत दे धीर, जस तेरा एका गाया। मेरे नेत्र नैण झल्लया ना जाए नीर, तेरा सीर हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। मेरा तुट्टा मान तकब्बर, तसबी मणका ना कोए भुवाईआ। अग्गे होवे ना कोए सबर, सबर सबूरी ना कोए वखाईआ। चार यार छुट्टा मेरा टब्बर, अल्ला राणी ना संग निभाईआ। तूं इक्को उठया शब्द पीर बब्बर, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ रहे कुरलाईआ। चौदां लोक वसण पर हद्द, बैठे सीस झुकाईआ। दरोही मेरी मेरे पिच्छे ना कोई लग्गे मगर, मेरी चले ना कोए वड्याईआ। सदी चौधवीं पूरी करनी सध्धर, तूं सालार सच्चा शाहीआ। दर आयां देणा कदर, कुदरत कादर वड वड्याईआ। मैं पढ़ के आया बदर, बिहतरीन तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिरे मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरे सिर रख हथ्थ, हथ्थकड़ी दे तुड़ा। चरन दुआरे जावां ढट्ठ, पहली भुल्ल बख़्शा। अग्गे आपणी देणी मत्त, मेरे निरगुण नूर ख़ुदा। मैं सदा गावां तेरा जस, पुनह पुनह पुनह मंगां पनाह। तूं अग्गों मिलीं हस्स हस्स, मैं दुक्खड़ा लवां गवा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं मंगां इक्क दुआ। दुआ मंगां करां सजदा, सीस सीस झुकाईआ। परवरदिगार मैं तेरा बरदा, बन्दीख़ाना दे तुड़ाईआ। सदी चौधवीं फिरां डरदा, मेरा वेला अन्त गया आईआ। मेरा पासा जाए हरदा, बाहों फड़ ना कोए रखाईआ। मैं जीउदा तेरे अग्गे मरदा, मरी मेरी लोकाईआ। पीसण पीस मैं तेरा पाणी भरदा, बण गोली सेव कमाईआ। झाड़ू देवां तेरे दर दर दा, आपणा माण गंवाईआ। मैं जाणा तूं सब नूं घड़दा, मढ़ी गौर तूं सवाईआ। तेरे अग्गे कोई ना अड़दा, जो आया सो उठ उठ चल जाईआ। तूं करें खेल नर हरि दा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तोबा तोबा मैं कन्न दोवें फड़दा, दोहां कन्नां उत्ते हथ्थ टिकाईआ। बौहड़ी बौहड़ी हाए हाए करदा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। तेरा भाणा सदा जरदा, तेरे भाणे रिहा समाईआ। जे तूं मैनूं मात ना घल्लदा, क्यों करदा मात पढ़ाईआ। मैं नहीं जाणयां तूं सदा छलदा, अछल अछल खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, मेरे

साहिब सच्चे साँईंआ। साहिब साँईं सच्चे महबूब, मेहर कर हरि मेहरवाना। तेरी काया तेरा कलबूत, अंदर तेरा नूर नुराना। पंज तत्त चोला मेरा अधभूत, थिर रहे ना विच जहानां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मिले तेरा परवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड्डा मर्द मर्दाना। बाहरों दिसे अंदरों ओहले, पर्दा परदे विच छुपाईआ। बण दईआ आपणे रंग मौले, मौला आपणी खेल कराईआ। आपणी धार अंदरों सोहँ बोले, गुरसिख रसना बाहर कढ्ढाईआ। सदा सुहेला वसे कोले, घर विच आसण लाईआ। बाहरों किसे नज़र ना आवे वसया काया चोले, चोला आपणा आप बदलाईआ। बाहरों गुरसिख कोझे कमले भोले, अंदर बैठा सच्चा माहीआ। बिन कंडिउँ बिन वट्टउँ तोल साचा तोले, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। बिन कहारा पाए आपणे डोले, डोली आपणे कंध रखाईआ। थिर घर दा कुण्डा खोल्हे, सचखण्ड वसाईआ। फेर निरगुण हरि अग्गों बोले, आ गुरसिख मिल चाँईं चाँईंआ। मेरे घर तेरे सोहले, एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थोड़ा भेत अजे रखाईआ।

★ १२ माघ २०१८ बिक्रमी दीदार सिँघ दे घर बाबू पुरा ★

आदि जुगादि मेरा सति विहारा, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण खेल न्यारा, निराकार आप कराइंदा। महल अटल उच्च मनारा, सोभावन्त सुहाइंदा। नूर नुराना परवरदिगारा, बेऐब वेस वटाइंदा। मुकामे हक़ सांझा यारा, शाह सुल्ताना आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आदि जुगादि खेल अवल्ला, हरि एका एक जणाईआ। जुग जुग फड़ावां आपणा पल्ला, एका बन्धन पाईआ। सच संदेशा हरि हरि घल्ला, नाम नाम वड्याईआ। गृह गृह मन्दिर आपे रला, घर घर रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप समझाईआ। आदि जुगादि मेरी धार, मेरा रंग वखाईआ। सेवा ला गुर अवतार, साची सेव समझाईआ। एका नाम दे आधार, लोकमात प्रगटाईआ। अठ्ठे पहर दरस दीदार, नूर नूर दरसाईआ। चरन धूढ़ी धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आदि जुगादि खेल अपारा, जुग जुग आप कराइंदा। जागरत जोत कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, रूप रंग ना कोए वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख ना भेव कोए जणाइंदा। आदि अन्त ना पारावारा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह

सर्ब शुकर मनाइंदा। करे कराए आपणी कारा, करता पुरख आपणी खेल कराइंदा। ना कोई रखे मददगारा, आपणा बल आप धराइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव दस्से करतार, हरि सच्चा वड्डा वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, वेस अनेक धराईआ। कलयुग मंगी मंग भिखार, दर आपणी झोली डाहीआ। हरि जू देणा सच भण्डार, एका वस्त वरताईआ। मैं छोटा बाला बाली बुध तेरी जाणा ना सार, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। आपणी गोदों दिता उठाल, लोकमात बहाईआ। धरत मात करे प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाईआ। कलयुग उठया छोटा बाला, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तेरा खेल जगत निराला, मैं अन्जाण भेव ना आइंदा। एका मार्ग दस्स सुखाला, तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाइंदा। जुग जुग चली अवल्लड़ी चाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचे सुत छोटे बाल, बाली बुध जणाईआ। मेरा जल्वा नूर जलाल, नूरो नूर रुशनाईआ। खेलां खेल दो जहान, अवण गवण समाईआ। त्रैभवन देवां एका दान, त्रै त्रै बूझ बुझाईआ। तेरा लेखा निगहबान, तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप जणाईआ। आपणा राह दस्से मौला, आपणी मेहर कमाइंदा। तेरे नाल कीता कौला, तेरा दुःख वंडाइंदा। तूं उपर जाणा धरनी धवला, धरत तेरी सेज सुहाइंदा। तूं उच्ची कूक कूक रौला पाउणा, एका हुक्म मनाइंदा। जूठ झूठ ढोला गाउणा, एका ढंग समझाइंदा। पहला बोला सर्ब भुलाउणा, हरि हरि नाम हट्ट ना किसे विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाईआ। कलयुग उठ करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। मैं इकल्ला की करां विच संसार, मेरी चले ना कोई वड्याईआ। इक्क दे दे मददगार, जिस नाल मता पकाईआ। तेरा लहिणा देवां कर्ज़ उतार, प्रभ मेरे सच्चे साँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणयां दया कमाइंदा। कलयुग तेरे सिर ते एका ताज, साचा हुक्म सुणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी रच काज, सत्तां दीपां नाल मिलाइंदा। इक्को इक्क मार अवाज़, कूड़ी क्रिया बन्धन पाइंदा। माया ममता तेरा खाज, तेरी तृष्ना भुख वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप जणाइंदा। ताज रख ना चढ़े चाअ, कलयुग रो रो दए दुहाईआ। इक्क इकल्ला की करां जा, बल आपणा ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनासी हो सहा, एका गुण समझाईआ। तेरा मददगार देवां बणा, अथर्बण एका अक्ख खुल्हाईआ। ऐड़ा नालों लवां लाह, पहला अंक समझाईआ। निरगुण सरगुण खेल करा,

खेलां खेल वड वड्याईआ। एका नाअरा दयां जणा, एका ढोला गाईआ। आपणा नाउँ लवां वटा, अल्ला आलमीन रुशनाईआ। पंज तत्त देवां एका थाँ, एका घर वखाईआ। चारे अक्खर मेल मिला, अहिमद नाउँ धराईआ। अहिमद मोड़ा आपे पा, चारे अक्खर वंड वंडाईआ। चौथे जुग मुहम्मद खेल करा, चारे बन्धन पाईआ। चारों कुण्ट नौबत दयां वजा, एका नाद सुणाईआ। सब दी आबरू दयां मिटा, इज्ज़त किसे रहिण ना पाईआ। तेरा मेला सहिज सुभा, घर साचे दयां कराईआ। इक्क दूजे नूं मिलण फड़ फड़ बांह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग अग्गों मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। कवण वेला चाढ़े रंग, मेरा तन सुहाया। कवण वक्त वज्जे मृदंग, मुहम्मद बन्धन पाया। कवण वेला तरीकी चन्द, कलमा कलाम पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण रूप खेल कराया। खेल करां अपर अपार, हरि साचा सच जणाईआ। पहला एका कर त्यार, दूजा तीजा विच छुपाईआ। एका चौका कर प्रधान, चार चार वंड वंडाईआ। एका चौका इक्क निशान, दोहां मेल मिलाईआ। चौदां चौदां हो प्रधान, देवे माण वड्याईआ। मुहम्मद लुकया ज़िमी असमान, अद्धविचकार फिराईआ। खेले खेल बी महिबान, बीदो आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। चौदां चौदां खेल अपारा, हरि हरि आप जणाइंदा। आदि सिफ़रा अन्त सिफ़रा खेले खेल अपर अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। दोहां सिफ़रा बण वणजारा, चौदां हट्ट विकाइंदा। चौदां अग्गे रखे धारा, सिफ़र सिफ़र नाल मिलाइंदा। एका चौदस कर त्यारा, बरस बरस वंड वंडाइंदा। अन्तिम करे पार किनारा, तेरा लहिणा मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग साचा राह वखाइंदा। कलयुग अन्तिम चढ़या चाअ, मन मन विच वज्जी वधाईआ। धन्न सुभाग मेला लए मिला, घर सच्चे मेरे माहीआ। दरगाह दिआ सच्चा थाँ, धुरदरगाही सच्चे साँईंआ। नेत्र नैण दरस देणा करा, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। मैं तक्कां तेरा राह, बण बण पाँधी राहीआ। तेरा हुक्म मन्नां बेपरवाह, भुल्ल कदे ना जाईआ। सृष्ट सबाई झूठे धन्दे देवां ला, तेरा नाउँ भुलाईआ। मूँह विच रखावां सूर गां, बण बण जगत कसाईआ। तेरे जीवां उत्ते छुरी बिन तेरे देवां फिरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी वंड आप वंडाईआ। कलयुग कहे देणा बल अपार, बलधारी दया कमाईआ। मैं वेखां जा संसार, तेरी मात लोकाईआ। एका वस्त वंडां आपणी वार, घर घर फेरा पाईआ। दर दर भरां कूड़ भण्डार, जूठ झूठ नाल रलाईआ। आसा तृष्ना दे आधार, माया ममता मोह वधाईआ। हउमे हंगता गढ़ कर त्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच वसाईआ। जीव जंत बणावां नार विभचार,

साची सेज ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल कराउणा आप, मेरे साहिब सच्चे हरि साँईंआ। मेरा वधाउणा मात प्रताप, बेपरवाह मेरे गोसाँईंआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी करावां पाप, छुरीआं वखावां हथ्थ कसाँईआ। नाता तोड़ां पूत बाप, माता प्रेम ना कोए रखाईआ। सब नूं भुलावां तेरा जाप, जूठ झूठ देण गवाहीआ। काया चोला सब दा जाए पाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं एका मंग मंगाईआ। आपणा बल दे करतार, बलहीण मंग मंगाइंदा। मैं वेखां तेरा संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर की की खेल कराइंदा। हुण आई मेरी वार, मैं आपणा रंग चढ़ाइंदा। मैं आपणी गोदी चुक्कां गुर अवतार, फड़ फड़ साचा फतवा लाइंदा। जेहड़ा तेरा नाउँ लए पुकार, उस दी पुट्ठी खल्ल लुहाइंदा। जेहड़ा मंगे तेरा दीदार, उस नूं लोहां उत्ते बहाइंदा। जेहड़ा कहे मेरा यार, उस दा सीस धड़ अड्ड कराइंदा। जेहड़ा कहे पुरख अकाल, उस दे बच्चे नीहां हेठ दबाइंदा। आपणा करां हल्ल सवाल, फिर तेरा वास्ता पाइंदा। मैं घालण आवां घाल, लोकमात सेव कमाइंदा। इक्को बणना तूं दलाल, मैं साची मंग मंगाइंदा। मेरा कर्म वेखीं हक़ हलाल, झूठ झूठ नाल मिलाइंदा। किसे पत्त रहिण ना देवां डाल, सब दी जड़्ह उखड़ाइंदा। मैं निक्का तेरा बाल, चौथे जुग फेरी पाइंदा। मेरे नाल दे दे काल, काल नगारा सब दे सिर ते आप वजाइंदा। कोई दिसे ना मात खुशहाल, राउ रंक सर्ब रवाइंदा। साध सन्त करां बेहाल, सुरती सुरत भुवाइंदा। त्रैगुण माया पा जंजाल, लख चुरासी बन्न्ह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणा गुण समझाइंदा। कलयुग सुण बाले निक्के, निक्की निक्की गुफ़तार सुणाईआ। तेरे हथ्थ फड़ाए झूठे सिक्के, लोकमात चलाईआ। राज राजानां लाउणे टिक्के, कूड़ी क्रिया इक्क छाहीआ। रस करने सारे फिके, मिट्ठा नज़र कोए ना आईआ। कागज़ काले करने चिट्टे, वारता वारतलाप समझाईआ। जीव जंत सारे रोवण कूक कूक सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरे किते, सत्त दीप तेरी शरनाईआ। लख चुरासी तेरी चक्की पीसे, पीसन पीस सेव कमाईआ। सब दे करने ख़ाली ख़ीसे, नाम धन्न दौलत ना कोए रखाईआ। तेरा वेला फेर छेती बीते, हरि जू लए मिलाईआ। गुर अवतार धरन अंगीठे, कलयुग अग्नी अग्ग लगाईआ। कोटन कोटि काल पिच्छे बीते, अग्गे वेला दयां समझाईआ। आप चलावां आपणी रीते, साचा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, बण दलाल दया कमाईआ। कलयुग घाले आपणी घाल, हरि साचा सच जणाइंदा। हरि जू अन्तिम वेखे आण, निरगुण रूप वटाइंदा। करे खेल श्री भगवान, आपणा रंग रंगाइंदा। तेरा वेखे झूठ मकान, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। एका चौका कर

प्रधान, चार चार वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मेला आप मिलाइंदा। अन्तिम मेल मिलाए आण, मिलणहार करतारा। करे खेल दो जहान, दोए दोए रूप निराकारा। लख चुरासी वेख कूड़ प्रधान, कूड़ो कूड़ जगत पसारा। आपणी वंड वंडे आण, अलख अगोचर अगम्म अपारा। बहत्तर नाड़ी दिता दान, पंज तत्त काया वज्जे ताड़ा। बहत्तर भगत करे परवान, देवे नाम अधारा। सति सतिवादी नौजवान, सिफ़र वखाए सर्ब संसारा। सत्तरां करे आप कल्याण, गुर गोबिन्द मीत मुरारा। साता चौका इक्क निशान, सति सतिवादी चौथे घर पावे सारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। साता चौका जोड़ अंक, अंक नाल मिलाईआ। चौहत्तरां मेला एका बंक, एका घर समझाईआ। नाम निधाना लाए डंक, इक्क आवाज़ सुणाईआ। जिस ने खेल रचया आदि सो वेखणहारा अन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। आपणा नाउँ जणाए एका मंत, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। तेरे अन्त करन दी साची बंत, आपे लए बणाईआ। लोकमात बणाए साची संगत, हरिसंगत नाउँ रखाईआ। सच दरबार बणाए जनत, स्वर्ग जनत दोवें रहे शरमाईआ। उपर बैठे हरि जू कन्त, सच सिँघासण सोभा पाईआ। थल्ले रखे आपणे भगत देवे माण वड्याईआ। कलयुग तेरी झोली पाए जगत, लख चुरासी वंड वंडाईआ। आपणी किसे ना वखाए हरक्त, रूप रंग रेख ना कोए धराईआ। तेरे विच्चों आपणे भगत कढ्ढे तेरी बरक्त, तेरी रत्त नचोड़ वखाईआ। जिन्हां विच ना रखे कोई शिरक्त, लाशरीक इक्क खुदाईआ। बाकी सब कोलों करे नफ़रत, आपणा मुख भुवाईआ। कलयुग वेले अन्त सब नूं पाए ग़फ़लत, गूढ़ी नींद सवाईआ। करे खेल हाज़र हज़ूर हज़रत, आपणे भगतां हाज़री लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा बन्ने धड़त, धड़वाई मुहम्मद नाल रलाईआ। अन्तिम लुटे दुकान कोई मिले ना आड़त, वही खाता सब दा दए गवाईआ। जिस ने घड़या घाड़त, सो भन्नणहार आईआ। गुरसिख हरिजन हरिभगत मेरी अमानत, तेरे विच रखाईआ। तैनूं मातलोक घल्लण तों पहलों दिती जमानत, आपणी जामनी आप रखाईआ। जे करें विच ख्यानत, दो जहान ना देवां थाईंआ। मेरा भगत सदा सही सलामत, सही इक्को वार पाईआ। तेरे विच लग्गे ना कोई अलामत, माया बन्धन ना कोए रखाईआ। दूजे दर ना होण मंगत, किसे अग्गे ना झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे कर, आपणा रंग वखाईआ। तेरे भगतां दी की पछाण, कलयुग वास्ता पाइंदा। लख चुरासी जीव जहान, भेव कोए ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। सच्चा दस्सां इक्क निशान, एका रंग चढ़ाइंदा। मैं प्रगट होवां आण, निरगुण रूप धराइंदा। फिर दस्सां साचा गाण, सोहँ शब्द सुणाइंदा। तूं कलयुग सुणना ला के कान,

कवण दुआरे गुरमुख सोभा पाइंदा। जिस हिरदे वसे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो मेरा भगत अख्वाइंदा। तिस दुआरे जा के करीं सलाम, सच्चा हुक्म सुणाइंदा। मैं देवां इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर उहनां दे चरनां हेठ दबाइंदा। मैं फड़ाया आपणा दाम, दामनगीर आप अख्वाइंदा। मैं भर प्याला प्याया जाम, मदि एका रस वखाइंदा। जिस दा दरस करन आए राम, कृष्न आपणा मुक्ट लाइंदा। ईसा मूसा करे ध्यान, दूर दुराडा नैण उठाइंदा। मुहम्मद नेत्र नैण शरमाण, धूढ़ी टिक्का मस्तक चुक्क चुक्क लाइंदा। नानक गोबिन्द कहिण वार वार तेरी खेल श्री भगवान, तूं साडी कीती घाल लेखे पाइंदा। सत्थर यारड़ा हंढाया विच जहान, सूलां सेज सोभा पाइंदा। अन्तिम आपणे गुरसिख वेखें आण, मेरी ख़ाली झोली भराइंदा। नीहां हेठां दब्बे नौजवान, उत्ते भगत महल्ल सुहाइंदा। दूजे पासे वेख्या मार ध्यान, बल आपणा बल रखाइंदा। तिन्न जुग मैं करदा रिहा ध्यान, कवण वेला मेरा मेल मिलाइंदा। कलयुग अन्तिम नाल रख्या सिँघ गुरदयाल, मेरी पूरी आस कराइंदा। मैं हुण बैठा सुरत संभाल, पंजा आपणे नाल मलाइंदा। मैं जट्ट किसे दी गलण ना देणी दाल, मुहम्मद नेड़े रहिण ना पाइंदा। अनपढ़ किसे दा करे ना कोई हल्ल सवाल, जगत विद्या धक्का लाइंदा। मैं गोबिन्द गोदी सुट्ट के आया आपणा लाल, डल्ला झल्ला खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन भगतां पल्लू ना किसे फड़ाइंदा।

बिन नाते जोड़या जोड़, एका बन्धन पाया। बिन घोड़यों चढ़ाया घोड़, शब्दी रंग रंगाया। बिन तोड़यां निभाए तोड़, आपणा संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणी गोद बहाया। गुरसिख ना होए निरासा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। मिल्या चरन सच्चा भरवासा, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अंदर वड़ वड़ कीता वासा, घर घर विच सोभा पाईआ। आपणा खोले आप खुलासा, भेव अभेद जणाईआ। गुरसिख सोना कंचन पासा, एका रंग वखाईआ। पिता पूत दए दिलासा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुरसिख तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्क भरवासा, एका घर वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां सदा संग रखाईआ। गुरसिख तेरा उच्चा दर, हरि दर्दी आप रखाया। जिस जन चरन कँवल उपर ल्या धर, धरनी धरत माण रखाया। फड़ बाहों लए जड़, आप आपणा बन्धन पाया। नाता तुट्टे जगत डर, जुग इक्को इक्क समझाया। घर बैठयां मिल्या दर, जंगल जूह ना फेरा पाया। बिन सरोवर नुहाए सर, दुरमति मैल धुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि गुर गुर खेड़ा इक्क वसाया। गुर गुर खेड़ा गोबिन्द घर, हरि हरि सेव कमाईआ। गुरमुख डेरा पहले दर, बंक दुआर सोभा पाईआ।

जिस गृह सतिगुर पूरा जाए वड़, फेर निकल कदे ना जाईआ। जे कोई कहे सतिगुर गया मर, भुल्ली भरम लोकाईआ। जे कोई कहे गोबिन्द गया डर, थुक्कीं मुख भराईआ। हरि जू कहे मैं भगतां ल्या वर, मेरी होई मात कुड़माईआ। इके सेजा बैठे रल, एका बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त साजण कराए चरन धूढ़ी मजन, दुरमति मैल मैल धुआईआ।

पतित पापी तुटया नाता, करे पुनीत दया कमाईआ। साहिब सतिगुर जिस जन जाता, तिस देवे माण वड्याईआ। आवण जावण तुट्टा साका, जून जून ना कोए भुआईआ। एको मेला हरि समराथा, आपणा बन्धन पाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस जन आपणा दरस वखाईआ। जो जन चरन सीस निवाए माथा, तिस मस्तक लेख गंवाईआ। बिधना रोवे हथ्थो हाथा, प्रभ की खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पत्तत पापी एका रंग रंगाईआ। पत्तत पापी कोई ना डेरा, जिस मिली शरन शरनाईआ। दुःख कटे हरि जू बन्धन तेरा, जन्म जन्म दा दुःख गंवाईआ। जन भगतां कारन मारया फेरा, होर किरत ना कोई कमाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरसिख आप नखेड़ा, वक्खरी चाल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पत्तत पुनीत पवित कर कर, घर घर आपणे रंग वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दर दर्शन देवे आण, तिस घर सुर नर मुन जन विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ।

लोकाई दा छड्ड झेड़ा, सतिगुर झेड़ा आप मुकाइंदा। खेड़े तेरा वसे खेड़ा, खिड़ी गुलज़ार बहार लगाइंदा। दूर वसदा आया नेड़ा, आपणा पन्ध मुकाइंदा। जिस ने देणा उलटा गेड़ा, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। तेरा आपे बन्न्हे बेड़ा, रसना लोभ विकार गवाइंदा। झूठी संगत छड्ड झेड़ा, हरिसंगत नाल मिलाइंदा। फिर तूं कहीं तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा इक्को घर सुहाइंदा। गुरसिखां वल वेख कर लै वड्डा जेरा, शराब मास किसे कम्म ना आइंदा। अन्तिम साथी झूठे होणा ढेरी ढेरा, ख़ाकी ख़ाक मिलाइंदा। गुरसिख तेरा रंग सदा सन्झ सवेरा, दो जहान नूर चमकाइंदा। करे हरि हक़ निबेड़ा, कीती सेवा सब दी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली भुल्ल बख्शाइंदा। इच्छया पूरन पूरी आस, गुर पूरा आप कराइंदा। जन्म जन्म दी मिटी प्यास, दरसी दरस वखाइंदा। मानस जन्म आया रास, पूरब लहिणा

लेखे पाइंदा। हरि भगती भगतां मेटे ना शाख़, पत डाली आप महकाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, आपणे संग मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे इक्क वर, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा।

सृष्ट सबाई फिरे निरास, चार वरन कुरलाईआ। दरोही खुदाए पृथ्मी आकाश, मख़लूक दए दुहाईआ। साध सन्त सुत्ते विच प्रभास, गुलशन बहार ना कोए वखाईआ। गुरमुखां लग्गी इक्क प्यास, प्रभ मिलण दी ओट तकाईआ। सतिगुर पूरा प्रगट हो साख्यात, निरगुण आपणा खेल कराईआ। जन भगतां देवे दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। सर्ब जीआं दा बण माई बाप, गुरमुख आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर दान दान दान मेहर हरि नज़र नज़रीआ इक्क कराईआ।

कक्खां कुल्ली सच्चा रंग, रंगत रंग अपारा। सोहणी सेज सच पलँघ, वाहवा सोहया सच दुआरा। करे खेल सूरा सरबंग, मित्रां मिले मित्र प्यारा।लेखा चुकाए जशोदा नंद, कान्हा कृष्न कृष्न अधारा। जगत ग्वाले चुक्का पन्ध, बिन्दराबन पार किनारा। फिरे चार कुण्ट मंगी मंग, जंगल जूह विच उजाड़ा। कवण वेला फेर मिले मेरा मुकंद, मनोहर लखमी नरायण गिरवर गिरधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। तिस ग्वाले ग्वाल पाल, गनेश दए वड्याईआ। बण चले विच जहान, कोटन कोटि पूर पार कराईआ। तेरा अन्तिम मेला श्री भगवान, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। हुण गऊआं बछड़े वेखीं विच बीआबान, फेर हरिसंगत दए वखाईआ। तेरा रखे घर सच्चे माण, काली कुलीउँ कढ्ढ अर्श उत्ते बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म जन्म दा लहिणा सब दा रिहा मुकाईआ।

टुट्टी गंढु पावे गंढु, गंढुणहार गोपाल। नाम दे दाता दे ठंड, तोड़ झूठ जंजाल। जीअ जन्म करे बख्शंद, बख्शिश आपणी कर दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन रखाए आपणा लाल। टुट्टी गंढ्ढी कृपानिध, आपणी दया कमाईआ। ना कोई जाणे जीवण बिध, कवण वेला आत्मा नाता जाए छुडाईआ। हरिसंगत मिल के कारज होया सिद्ध, जन्म जन्म विच वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

हरि किरपा हरि प्यार, हरि हरि नाम दृढ़ाया। हरि किरपा शब्द अधार, गुर शब्दी शब्द सुणाया। हरि किरपा सोहे बंक दुआर, गृह मन्दिर भाग लगाया। हरि किरपा दूत दुष्ट करे खुआर, नाम खण्डा इक्क चमकाया। हरि किरपा गुरसिख गुर सतिगुर करे प्यार, मन मणका मन भुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जगत बण बण विचोला आपणा भेव खुल्हाया।

जन्म जन्म दी चुक्की घाल, घाली घाल लेखे पाईआ। जन्म जन्म दा चुक्या काल, काल ग्रास ना फेर खाईआ। जन्म जन्म दा छुट्टया जंजाल, जीवण जुगत मिली वड्याईआ। कर किरपा मिल्या दीन दयाल, दीनन दया कमाईआ। इक्को वार हल्ल कीता सवाल, अग्गे फेर ना कोई पढ़ाईआ। दर साचे दए बहाल, उठे कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे शाह कंगाल, शाह पातशाह सच्ची शहिनशाहीआ।

साची चिट्ठी नाम परवाना, एका एक फड़ाईआ। गुरसिख तेरा गोबिन्द निशाना, गुर गुर आप चलाईआ। भगत भगवन्त बणाया सच मकाना, उच्च महल अटल रुशनाईआ। सदा सद दिसे श्री भगवाना, बैठा आसण लाईआ। गुरसिख होए निगहबाना, दूर दुराडे रिहा तकाईआ। आ मिल मेरे नौजवाना, तेरी नित उडीक रखाईआ। गुरसिख तूं प्रेम सिक्खी दा सच्चा कान्हा, तेरी सिक्खी तेरे बिना रही कुरलाईआ। मेरी आशा तेरा गाणा, गा गा मेरी कुड़माईआ। तेरा नाउँ दो जहानां, दो जहान तेरा जस गाईआ। तेरे पिच्छे प्रगट हो के आया विष्नूं भगवाना, निहकलंक नाउँ रखाईआ। इक्क दूजे नूं रल मिल दयो माणा, गुरसिख गुर गुर एका घर वड्याईआ। नाम निधान गाउणा सोहँ गाणा, गावत गावत खुशी मनाईआ। हरि का आउणा होया परवाना, गुरमुख मिले चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा रखे माणा, आपणा माण ना कोए रखाईआ।

गुरसिख गुर गुर इक्को टेक, एका ओट जणाईआ। जिस लोकमात विच ल्या वेख, लख चुरासी फोल फुलाईआ। फड़ बाहों कीती बुध विवेक, आपणी दया कमाईआ। अन्त ना लग्गे कोई सेक, अग्नी अग्ग तत्त बुझाईआ। तेरा चेतन सदा चेत, चतुर तेरा रूप बणाईआ। जिस जन आपणा खोल्हे भेत, सो निउँ निउँ लागे पाईआ। गुर सतिगुर करे हेत, प्रेम प्यार इक्क वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाईआ।

गुरसिख कदे ना होए इकल्ला, इक्क इक्क नाल मिलाईआ। गुरसिख तेरा सतिगुर फड़या पल्ला, तेरा संग निभाईआ। गुरसिख तेरे आत्म अन्तर सिँघासण मल्ला, बैठा सेज सुहाईआ। गुरसिख तेरे प्रेम अंदर रला, एका रंग वखाईआ। गुरसिख तेरे नूर बला, जोती जोत नूर रुशनाईआ। गुरसिख तेरा मेटया सल्ला, दूई द्वैती दुःख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन गुरमुख गुरसिख तेरे पिच्छे फिरे हो के झल्ला, झलक आपणी आप वखाईआ।

गुरसिख तेरी सदा तांघ, हरि सतिगुर आप रखाईआ। तेरे प्रेम दी अनडिठी कांघ, आपणी धार वखाईआ। निरगुण करे स्वांगी स्वांग, आपणा भेख वटाईआ। वाह वाह घर घर वेखे महीना माघ, गुरमुख रल मिल नुहावण रहे नुहाईआ। दाता दातार सद रखे याद, भुल्ल कदे ना जाईआ। बिन गुरमुखां सुणे ना किसे फरयाद, देवणहार सर्ब सजाईआ। जिस बणाया आदि जुगादि, सो गुरमुखां मिलण आया चाँईं चाँईंआ। रल मिल वजाओ सच्चा नाद, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी वड्याईआ।

४३५
११

★ १२ माघ २०१८ बिक्रमी मुनशा सिँघ मेला सिँघ बाबू पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

विछोड़ा कटया चार जुग, कोटन कोटि काल बता। दरस करदा रिहा लुक लुक, लोकमात वेस वटा। अन्तिम पैंडा गया मुक्क, वेला अन्तिम गया आ। आपणा पर्दा दिता चुक्क, नूरो नूर कर रुशना। सिँघ शेर हो के रिहा बुक्क, भय भउ दए गवा। गुरसिख गोदी लए चुक्क, आप आपणी सेव कमा। जन्म जन्म दी मेटे भुक्ख, अमृत आत्म जाम प्या। उज्जल करे मुख, लोकमात वड्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा दए कटा। विछोड़ा कटया जुग चार, चाल निराली इक्क वखाईआ। बिन गुरमुखां हुंदा रिहा खुआर, किसे सार ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर फिर फिर गया हार, आपणा पन्ध मुकाईआ। मिले ना ढोई मैनूं मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर, मठ बैठे मुख भुआईआ। कलयुग अन्त करी विचार, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। गोबिन्द सूरा लवां उठाल, आपणे नाल मिलाईआ। उहदी निभे मेरे नाल, मैं उस दे नाल नेंह लगाईआ। उठ के करे अग्गों सवाल, एका मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, तेरी ओट शरनाईआ। मेरे मेल विछड़े लाल, जो सरसे गया रुड़ाईआ। तेरे पिच्छे होया कंगाल, पिता पूत भेंट चढ़ाईआ। अन्त किहा सुणी मुरीदां हाल, मेरे मुर्शद सच्चे माहीआ। मैं तेरी घालण लई घाल, तूं कीती घाल लेखे पाईआ। मेरा इक्को

इक्क सवाल, मेरे गुरसिख दे मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त विछोड़ा दए कटाईआ। जुग जुग विछोड़ा कटया, होया रिहा सदा बेज़ार। कलयुग अन्तिम आपणा स्वांग पलटया, निरगुण नूर जोत उज्यार। कदी लभ्भदा रिहा विच्चों वट्टया, धन्ने जट्ट कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विछोड़ा मेटे अन्तिम वार। जगत विछोड़ा जगत अवल्ला, जुग जुग आप रखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर भगत तारया इक्क इकल्ला, इक्क इक्क वेस वटाया। कलयुग अन्त वसाए सच महल्ला, दर साचा आप बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा रिहा कटाया। जगत विछोड़ा कटण आया कट के आपणा फाह। एका मार्ग दस्सण आया, निरगुण बण मलाह। सनमुख बह के हस्सण आया, निरगुण रूप धरा। प्रेम प्यार अंदर फसण आया, लोकलाज गवा। मनमुखां कोलों नट्ठण आया, आपणा मुख छुपा। अमृत मेघ वेखण आया, साची सेवा आप लगा। गुरमुखां कोलों लाह खट्टण आया, आपणी झोली अग्गे डाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा दए मुका। वेखो जगत विछोड़ा मुक्कदा, हरि सच्चा आप मुका। आपे होया निमाणा प्रेम भिक्ख दा, आपणी तृष्ना भुख वधा। आपे दुखीआ होया विछोड़ा दुःख दा, दुःख सहि ना सके रा। बल धार आपे उठदा, निरगुण नूर जोत जगा। सचखण्ड बह के आपणे कोलों पुछदा, जावां केहड़े राह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे रिहा पन्ध मुका। मुके विछोड़ा कलयुग अन्त, हरि सतिगुर आप मुकाईआ। गुरमुख तेरे मिलण दी बणत, बण बनवारी आप बणाईआ। जिउँ राम हिरदे वसया हनवन्त, तिउँ गुरसिखां विच समाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। किस बिध कटां विछोड़ा, हरि आपणा मता पकाइंदा। अग्गे वक्त रहि गया थोड़ा, भेव कोए ना पाइंदा। दो जहानां पैंडा लम्मा चौड़ा, बण पाँधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। आपे बणया नौजवान बांका छोहरा, आपणा बल आप रखाइंदा। आपणी इच्छया फड़या घोड़ा, शब्दी शब्द पलाणा पाइंदा। सोलां कलीआं उत्ते दौड़ा, आसण सिँघासण आप सुहाइंदा। चारे जुग चारे रासां जोड़ जोड़ा, आपणे हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणाइंदा। साची बणत बणाए करतार, आपणी दया कमाईआ। निरगुण घोड़ा कर त्यार, सोलां कलीआं आसण पाईआ। प्रगट हो शाह अस्वार, शस्त्र बस्त्र आप सजाईआ। सीस रख सच्ची दस्तार, शाह पातशाह आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घोड़े रिहा उठाईआ। शब्द घोड़ा हो त्यार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। मैं सेवक आया तेरे दुआर, बण बरदार सेव कमाइंदा। तूं होवें उत्ते अस्वार, मैं लख लख खुशी

मनाइंदा। मैं लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फिरां एका वार, देर पलक कोए ना लाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखां अखाड़, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वार मेरे उपर चढ़, मैं इक्को आस रखाइंदा। मेरे उत्ते कस पलाणा, प्रभ मेरी मन अरज़ोईआ। शाह पातशाह बण साचा राणा, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। इक्क वार दे धुर फ़रमाणा, दो जहान फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क रखाईआ। पुरख अबिनाशी वड बलवान, एका गुण समझाया। साचे अस्व तेरा ध्यान, एका वार जणाया। पहलां खेल दस्सां महान, आपणा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाया। आपणा भेव खोल्ह करतार, एका गुण जणाईआ। तेरे उत्ते होवां अस्वार, आपणा आसण लाईआ। चौथा पौड़ कर त्यार, सत सत नाल कुड़माईआ। चौथे जुग कर खुआर, दयां माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। साचा हुक्म मन्न लै कहिणा, हरि साचे सच जणाया। तेरे उत्ते हरि जू बहणा, आपणा आसण लाया। तूं मन्नणा हुक्म भाणा सहिणा, सिर सिर सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा सुणाया। शब्दी घोड़ा हो त्यार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। पहली दिशा कर विचार, कवण कूटे फेरा पाइंदा। कवण मेला मेले तेरा संसार, कवण घर चरन टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी किहा बोल, एका वार सुणाया। मैं पहलों जाणा आपणयां भगतां कोल, दूजा दर ना मोहे भाया। जा के उठावां सुत्ते अनभोल, कलयुग गूढ़ी नींद सवाया। अमृत देवां नाभ कौल, एका वार मुख चुआया। पकड़ उठावां उपर धौल, धरनी धरत धवल वड्याआ। मैं गोबिन्द नाल करया कौल, गुरमुख तेरे लवां मिलाया। तेरी हथ्थीं प्याई पौहल, आपणा खण्डा विच फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाया। साचा घोड़ा प्या हस्स, मुख मुख सालाहीआ। तूं शाह पातशाह हो के क्यों होयों सिखां वस, की तेरी वड्डी वड्याईआ। उह तेरे कोल नहीं आए नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों कहे बस बस, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। मैं गुरमुखां हिरदे गया वस, लूं लूं विच समाईआ। तेरे उत्ते पाखर टी रख, जीन आपणे हथ्थ कसाईआ। उपर बैठ पुरख समरथ, एका अड्डी रिहा लगाईआ। शब्दी घोड़ा नट्ठा सरपट, आपणा पन्ध मुकाईआ। लोकमात भगत दुआरे गया डट, नेत्र वेख खुशी मनाईआ। तेरा साहिब सोहणा हट्ट, जो ल्या आप खुल्हाईआ। उस विच बह जा हो प्रगट, आपणा नूर कर रुशनाईआ। भगतां मेट विछोड़ा फट्ट, उपर आपणी पट्टी बंधाईआ। मैं सिर तेरे चरनां उत्ते बैठा

सुट्ट, आपणा माण गंवाईआ। एथे तेरे भगतां दा दिसे इक्ट्ठ, दूजा कोए नज़र ना आईआ। जिध्धर वेखां एधर उधर वसया घट, घट घट रिहा समाईआ। अग्गे कोई मार्ग दस्स, मैं बण सेवक सेव कमाईआ। मैं की जाणा तेरयां भगतां कोल केहड़ा रस, रस अमृत तेरी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा विछोड़ा आप कटाईआ। वेखो विछोड़ा कटण आया, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। कूड़ी जड़ पुट्टण आया, गुरमुख साचे लाल उठाल। आपणी गोदी चुक्कण आया, बण बण सच्चा प्रितपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल निराल। जगत विछोड़ा होया दूर, हरि सतिगुर आप कराईआ। गुरमुख मनशा सदा भरपूर, भर भर वेख वखाईआ। आपणा मेला करे ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। पहलों वसदा रिहा दूर, नेड़े हो हो दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा दए चुकाईआ। जगत विछोड़ा चुक्के बिध, बिध आपणी आप बणाईआ। जन भगतां करे कारज सिद्ध, साची सिख्या आप समझाईआ। नाता तोड़ नौ निध, अठारां सिद्ध धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप लगाईआ। सेवा लग्गे जोत अकालण, आपणी सेव समझाईआ। बण के आई मात मालण, वेस अनेक वटाईआ। जन भगत दुआरे घाले घालण, भेव कोए ना पाईआ। दासी बण बण करे सवालण, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। जोत अकालण बण बण बरदी, दर दर सेव कमाईआ। जन भगतां कोलों फिरे डरदी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हौली हौली अंदर वड़दी, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख नाउँ आपे पढ़दी, पढ़ पढ़ रही सुणाईआ। गुरमुख अग्न आपे सड़दी, सड़ सड़ खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप लगाईआ। जोत अकालण चुक्क के खारी, दर दर अलख जगाइंदी। होका देवे दर दर राही, गली गली फेरा पाइंदी। लोकमात मैं रही कँवारी, आपणा हाल सुणाइंदी। मैं पहलों वेखण गई बुढ्ढा शेख़ रत्ती दाढ़ी, सूही मैहन्दी नाल रखाइंदी। मैं वेख उहनूं होई शर्मसारी, आपणा नैण शरमाइंदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल निरगुण जोत आप समझाइंदी। बुढ्ढा शेख़ छड्डया दर, आपणा पल्लू छुडाया। मुड़ के आई आपणे घर, घर विच मता पकाया। केहड़ी बिध लवां कर, आपणा रंग वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे धन्दे आप लगाया। जोत अकालण कर त्यारी, आपणा बल रखाईआ। चारों कुण्ट फिरे वारो वारी, बण बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। अन्तिम आई साचे दरबारी, गुरमुख बैठे आसण लाईआ। इक्को नाम इक्क जैकारी, सोहँ ढोला रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि हरि नर आप कराइंदा। जोत अकालण दए सहारा, साचा राह वखाइंदा। मेरा भगत सदा कँवारा, लोकमात ना कोए प्रनाइंदा। जा उठ जा के कढु हाढ़ा, जे तेरे उत्ते रहिमत कमाइंदा। तूं बण सुलखणी नारा, घर साचा इक्क वखाइंदा। उथे मिले सच प्यारा, प्यार प्यार नाल वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। जोत अकालण करे विचार, आपणा मता पकाईआ। किव जावां गुरमुखां दे दरबार, आपणा नैण उठाईआ। कुछ भेंटा लै ला नाल आधार, जा जा भेंट चढ़ाईआ। कर प्रेम गुंदा सोहणा हार, कली कली नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रिहा समझाईआ। साची कली विच संसार, लोकमात नज़र ना आईआ। वल छल आप निरँकार, आपणा भेव जणाईआ। गली गली होका दे बण के नार मुटयार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयार, तेरी सार कोए ना पाईआ। तूं फिर फिर जाईं हार, आपणा पन्ध मुकाईआ। फिर आउणा चल दरबार, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। जोत अकालण मार फेरा, आपणा पन्ध मुकाया। चारों कुण्ट वेख्या झूठा डेरा, साचा रंग ना कोए चढ़ाया। माया ममता पाया घेरा, पल्लू सके ना कोए छुडाया। काम क्रोध प्या झेड़ा, घर घर दए दुहाया। कवण बन्ने मेरा बेड़ा, देवे अन्त चलाया। वसदा दिसे ना कोए खेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। मुड़ घर आई आपणे घर, बेहाल दए दुहाईआ। कोई ना लभ्भया साचा नर, नारी रही शरमाईआ। प्रभ अग्गे आ खलोती चरन फड़, दोए जोड़ जोड़ शरनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, मैं एका मंग मंगाईआ। एका दे दे साचा वर, सीस मेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस दी सेजे जावां चढ़, रंग रंग नाल मिलाईआ। नाता तुट्टे पंज तत्त धड़, काया कोट ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि ना जावां मर, जन्म जन्म ना कोए वटाईआ। इक्क वखा सच्चा दर, जिथे विछोड़ा रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, एका गुण रिहा समझाईआ। मेरे भगतां दा जाए पल्ला फड़, तेरे उत्ते रहिमत देण कमाईआ। मैं उहनां दा विछोड़ा दिता हर, उह तेरा विछोड़ा देण कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाईआ। कवण वार कवण थित, हरि साचे सच जणा। कवण वेला करन हित्त, दर आपणे आप बुला। कवण घर मिले मित्त, मित्र प्यारा सहिज सुभा। मैं उडीक रखी नित्त, जुग चौकड़ी काल गए बिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार दए समझा। एका वार दवां सलाह, हरि साचा सच जणाइंदा। एका दरस रिहा वड्या, घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। पहली चेत्र रिहा आ, चेतन सब नूं आप कराइंदा। गुर गोबिन्द लवां

उठा, आपणा हुक्म मनाइंदा। उहदे गुरसिख उहनूं दयां वखा, नेत्र नैणां नाल मिलाइंदा । जगत विच्चों दयां बणा, साचा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप जणाइंदा। गोबिन्द करे सच विहार, हरि साचा सच जणाईआ। तेरा भगतां नाल बणाए प्यार, एका घर दए वड्याईआ। आपे वेख वेख होए खुशहाल, आप आपणी खुशी मनाईआ। वाह वाह मेरे उठे साचे लाल, जिन्हां मेरी बणत बणाईआ। धन्न भाग पाया पुरख अकाल, अकल कल वड्याईआ। जगत विछोड़ा कट जंजाल, आपणी गोद बहाईआ। अन्त काल ना खाए काल, कलयुग क्रिया रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां विछोड़ा रहिण ना पाईआ।

★ १३ माघ २०१८ बिक्रमी किशन सिंघ दे घर अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ★

पंच प्रधान करन सलाह, सचखण्ड खुशी मनाईआ। होए परवान विच दरगाह, हरि जू हरि हरि ल्या मनाईआ। एका दर ल्या बहा, देवे माण वड्याईआ। एका अक्खर ल्या गा, आपणा नाउँ पढ़ाईआ। एका इष्ट ल्या मना, गुरदेव एका नज़री आईआ। एका मिल्या सच मकां, महल अटल रुशनाईआ। एका पुरख पकड़ी बांह, अकाल अकाल दया कमाईआ। एका दिती सच सरना, चरन शरन सच्ची शरनाईआ। असीं रल मिल ढोले रहे गा, नाउँ निरँकार वड्याईआ। असीं नेत्र रहे उठा, नैण नैण उठाईआ। किरपा करी बेपरवाह, लोकमात वज्जी वधाईआ। साडी सेवा लेखे ला, पहला लेखा दिता चुकाईआ। आपणे भगतां ल्या जगा, साडे संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कराईआ। पंच प्रधाना चढ़या चाअ, हरि पंच पंच रंग वखाया। दरगाह साची बैठे आ, नानक लेखा पूर कराया। वाह वाह मिल्या हरि बेपरवाह, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। दरगाह साची तेरी पकड़ी बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाया । इक्क जपाया आपणा नाँ, मन्त्र अन्तर इक्क वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाया। पंचां चढ़या एका रंग, घर साचे खुशी मनाईआ। वाह वाह मिल्या हरि सरबंग, सूरबीर शहिनशाहीआ। साडा आवण जावण कटया फंद, आपणी गोद बहाईआ। कर प्रेम चढ़या चन्द, चन्द चांदनी इक्क रुशनाईआ। साडा खुशी बन्द बन्द, अंग अंग डगमगाईआ। इक्क पाया परमानंद, अनन्द अनन्द विच प्रगटाईआ। दीन दयाल साहिब बख्शंद, एका बख्शिश रिहा कराईआ। उठो गाओ ढोला सोहँ छन्द, वेला अन्तिम गया आईआ। ब्रह्मे मुक्या अन्तिम पन्ध, प्रभ लहिणा दए चुकाईआ। शंकर तोड़े आपणी गंढ, साची गंढ पुआईआ। सुरपति रोवे नेत्र अन्ध, नैणां नीर नीर वहाईआ। ध्रू कहे मैनूं चरनां सद्द,

मेरा वेला वक्त गया विहाईआ। सिँघ गुरदयाल कहे मेरा सुण लै छन्द, एका एक वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

पंचां मिल्या इक्क प्यार, हरि बन्धन साचा पाया। पंचां देवे इक्क आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। एका करे शृंगार, सेहरा सीस बंधाया। एका देवे नाम जैकार, जै जैकारा आप सुणाया। पंज बणे सति सरदार, सति सतिवादी आप बणाया। करे खेल अगम्म अपार, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए समझाया। पंजे उठे उठे बल धार, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। सिँघ पाल कहे पुकार, उठो वेखो हरि की की खेल रचाईआ। सवरन नेत्र रिहा उग्घाड़, चरन सरन मिली शरनाईआ। मनजीता मन जित्त कहे ललकार, मैं आपणा आप ल्या बचाईआ। जगदीशा कहे मेरा जगत छुट्टा दुआर, सच दुआरा मिल्या चाँईं चाँईंआ। सिँघ गुरदयाल कहे मैं सब दा यार, एथे ओथे बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। पंजे रल के करन निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। असीं सचखण्ड सच्ची बणी हरि सच्ची सरकार, पंचम देणी माण वड्याईआ। तेरा हुक्म मन्नीए मेरे निरँकार, तूं साडा हुक्म आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा समझाईआ। पुरख अकाल हो दयाल, एका वार सुणाया। उठो मेरे साचे लाल, हरि लालन रंग रंगाया। मेरा जोबन लोकमात अठारां साल, रंग रंग आपणा आप रंगाया। मैं जा के वेखणा आपणा लाल, जिस कोधरा भेंट चढ़ाया। नानक लग्गी निभी नाल, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। ब्रह्मा वेख वेख होए बेहाल, प्रभ साचा खेल की वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा उठाया। ब्रह्मा वेखे नेत्र खोल्ह, नैण नैण उग्घड़ाईआ। उठ शंकर किहा बोल, एका वार सुणाईआ। शंकर कहे इन्दर ना रहीं अनभोल, इक्क संदेशा रिहा जणाईआ। करोड़ छिआनवें तेरे कोल, तेरा बन्धन पाईआ। करोड़ तेतीसा रिहा मौल, आपणा रंग वखाईआ। पुरख अबिनाशी गुरसिखां नाल करे कौल, कर कर कौल रिहा निभाईआ। चलो चल के वेखीए उपर धौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। पंचां मिल्या धुर फ़रमाणा, हरि हरि आप जणाया। रल मिल गाओ एका गाणा, एका नाद वजाया। अमृत आत्म ब्रह्म ब्रह्मे तेरे हथ्थ रखाणा, एका कलस रिहा वखाया। शंकर निउँ निउँ मन्ने भाणा, साचा नाम समझाया। इन्दर तेरी सेव महाना, मेघ मेघला रूप वटाया। लालन वेखणा बाल अञ्याणा, गुर गोपाला गोद बहाया। किरन किरन

मेघ बरसाणा, स्वांती सति सति कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा विहार आप समझाया। किरन किरन बरसे मेघ, दिवस दिवस नाल मिलाईआ। जन भगतां आपणा दस्सण आया भेत, खोल्ह खोल्ह समझाईआ। तुहाढ्ढी सुक्की कीती हरी फुलवाड़ी काया अंदर खेत, मेघ मेघ इक्क बरसाईआ। गुरमुखां पिच्छे अर्जन सिर पुवा के गया तत्ती रेत, अग्नी तत्त तत्त जलाईआ। उहदे पिच्छे हरि जी करे हेत, गुरमुखां लए उठाईआ। आपणे नेत्र आपे आ के लए वेख, गुरसिख लभ्भण किते ना जाईआ। करे खेल पहली चेत, चात्रिक अमृत मेघ बरसाईआ। हरिजन रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तत्ती अग्ग ना लग्गे महीना जेठ, हाढ़ तपस ना कोए तपाईआ। दरस वखाए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख एका नर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। पंच प्रधान गाउँदे गीत, एका ढोला गाईआ। वाह वाह सतिगुर तेरी प्रीत, प्रीतीवान तूं आप बणाईआ। सतिजुग चलाए साची रीत, साचा खेल वखाईआ। असीं बैठे दर तेरे अतीत, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाईआ। तेरा लेखा रिहा बीत, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी इक्को ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी कर ध्यान, एका रंग जणाईआ। आपे पंच करे परवान, आपे साची चले हुक्म रजाईआ। साचा बणे इक्क विधान, पारब्रह्म प्रभ आप बणाईआ। हथ्थ फड़ाए इक्क निशान, दो जहानां दए झुलाईआ। गगन पतालां पावे आण, ब्रह्मण्ड खण्ड शरनाईआ। इक्क इकल्ला होए हुक्मरान, शाह पातशाह इक्क शहिनशाहीआ। एका मन्दिर इक्क मकान, गुरुदुआर इक्क समझाईआ। एका इष्ट श्री भगवान, दूजा देव ना कोए मनाईआ। एका तट तीर्थ अशनान, इक्क सरोवर दए नुहाईआ। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, जगत विद्या ना कोए लड़ाईआ। एका चिला तीर कमान, नाम खण्डा इक्क वखाईआ। एका जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। एका लेखा जाणे गोपी काहन, मंडल मण्डप रास रचाईआ। एका सुरती वेखे सीआ राम, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। एका कलमा जाणे कलाम, एका आयत शरायत पढ़ाईआ। एका जाणे सतिनाम, एका अक्खर अक्खर करे पढ़ाईआ। एका देवे जीआ दान, जीवण जुगत आप समझाईआ। पंचां बख्शे चरन ध्यान, शरन शरन शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पंच प्रधान करन पुकार, इक्क आवाज़ सुणाईआ। जिउँ साडा बेड़ा दिता तार, तिउँ हरिजन लै मिलाईआ। जिस देवे इक्क नाम अधार, तिस साडे नाल मिलाईआ। जो जन तेरा करे दरस दीदार, अद्धविचकार ना कोए रुड़्हाईआ। जो जन बोले नाउँ तेरा जैकार, तिस जूनी जून ना फेर भुआईआ । जिस घर दर दर्शन देवे जा दीदार, तिस घर दे नौकर देणे तराईआ।

साडी पुनह पुनह निमस्कार, पतित पुनीत देणे बणाईआ। तूं सुणनहारा सिरजणहार, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। साडा भैणां भाईंआ नाल प्यार, पिछला बंस रहे समझाईआ। हरिसंगत साडा घर बार, दूजा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। जे तुट्टां दे आधार, जिन तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका झोली रहे वखाईआ। जे ना साडा मन्नें कहिणा, तैनूं सच आख सुणाईए। बिन भाईंआ भैणां असां ना रहिणा, तेरे सचखण्ड ना कोए वड्याई ए। असीं बाले छोटे वेखीए नैणां, बिरध बालां राह तकाईए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बण भिखक मंग मंगाईए। जे ना पूरी करे आस, नेत्र नैणां नीर वहाया। असीं चल के जाणा लालो पास, एका गुण समझाया। लोकमात गुरसिखां दा होया दास, फड़ बाहों लओ मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साडे हथ्थ टिकाया। पुरख अबिनाशी कर विचार, एका शब्द जणाइंदा। वेखो नानक लालो कीआ प्यार, मेरा बन्धन पाइंदा। मैं सेवक बणया विच संसार, घर साचे सेव कमाइंदा। करोड़ तेतीसा नाल करन जाए दीदार, इन्दर मेघ खुशी बरसाइंदा। शंकर बाशक तशका गल तों लाहे हार, आपणा पन्ध मुकाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्म करे प्यार, आप आपणा रंग रंगाइंदा। विष्नूं खुशी खुशी वरताए भण्डार, हरिसंगत झोली पाइंदा। अबिनाशी करता आप वखाए दीदार, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। दस्स के जाए सच विहार, जो करनी मात कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणी करनी दस्से हाल, लिख लिख लेख समझाया। गुरसिख तेरे नेड़ ना आवे काल, हरि जू एका धक्का लाया। अन्त वेखे आपणे लाल, नित नित आपणा संग रखाया। मिल मिल घालण लई घाल, सोहँ ढोला साचा गाया। घर अमृत भरया ताल, सर सरोवर इक्क नुहाया। बन वट्टयां लए भाल, आउँदा जांदा नज़र ना आया। एका देवे सच्चा धन माल, नाम निधाना झोली पाया। आपे बणया रहे रखवाल, दिवस रैण सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप सुहाया। साचा घर सुहाउणा आप, आपणी सेव कमाईआ। गुरमुख तेरा वड प्रताप, हरि प्रतापी दए कराईआ। एका अक्खर अक्खर जाप, साची करे पढ़ाईआ। एका गुर एका हाट, एका वणज दए कराईआ। एका नाम एका दात, एका एका वार वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खुशी मनाईआ। साचा घर सोभावन्त, सोभनीक आप सुहाइंदा। पंचम तुहाढ्ढी बणाए बणत, साचा खेल कराइंदा। गुरमुख उठाए साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाइंदा। मेल मिलावा नार कन्त, एका दर बहाइंदा। काया चोली रंग बसन्त, बण ललारी आप रंगाइंदा। रसना जिह्वा मणीआ मंत, आत्म परमात्म आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, साचा खेल कराइंदा। गुरमुख उठाए साचे सुत, सति सतिवादी दया कमाइंदा। पंचम वेख होए खुशहाल, वाह वाह वज्जी वधाईआ। सतिगुर सुरत रिहा संभाल, गुरमुख बाले गोद रखाईआ। निरगुण हो के बणया दलाल, आपणा वणज वखाईआ। जगत जुग चली अवल्लड़ी चाल, दिस किसे ना आईआ। पंच पंच लए उठाल, एका बूझ बुझाईआ। उठो वेखो मेरे लाल, हरि लालन रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करया खेल दिती दात, दाता दानी आप वरताइंदा। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, कूड़ अमावस रहिण ना पाइंदा। नाता तुट्टा ज़ात पात, ऊँच नीच ना वंड वंडाइंदा। दरस वखाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला फेरी पाइंदा। लख चुरासी वेखे मार झात, पर्दा ओहला आप रखाइंदा। अक्खर वक्खर सुणाए गाथ, सोहँ ढोला आप जणाइंदा। सर्बकला आपे समराथ, दीनण आपणी गोद बहाइंदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथां दया कमाइंदा। एथे ओथे देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। बण बण पूत वेखे पिता मात, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। वेखो हरि चलाए राह, रहिमत आप कमाईआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, हस्त कीटां फेरा पाईआ। एका चप्पू दिता ला, वञ्झ महाणा होर ना कोए रखाईआ। एका कन्ढे बैठा आ, डूँघी भँवरी पार कराईआ। गुरमुख साचे लए चढ़ा, आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग लाए पन्थ, भेव कोए ना पाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई ग्रन्थ, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। साचा नाद ना सुणाए कोए संख, असंख असंख संख वजाइंदा। बिन सतिगुर पूरे किसे ना आए कोई अलख, सतिगुर पूरा आपणे गुरमुख आप उठाइंदा। राम चुक्या इक्क धनुख, जनक सपुत्तरी नाल प्रनाइंदा। गुरसिख तुहाढ्ढी हरि जू बणाए बणत, सीता सुरती सब दी आप प्रनाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी विच्चों परख, नाम कसवट्टी उत्ते लाइंदा। आपणयां उत्ते आपे कीता तरस, पूरब लहिणा वेख वखाइंदा। लख चुरासी रही भटक, हरि नज़र किते ना पाइंदा। जगत लोकाई रही लटक, रस्सा फास ना कोए कटाइंदा। माया छुरी रही झटक, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। गुरमुख सज्जण रहे निधड़क, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चार जुग गुर अवतारां कोलों जो रहि गया फरक, हुण एका दूर कराइंदा। सिद्धी सड़क, सचखण्ड दुआरा राह वखाइंदा। गुरसिख राह विच ना जाणा अटक, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। तुं चलणा तोर मटक मटक, सतिगुर तेरा अग्गे पिच्छे सेव कमाइंदा। अग्गे वेख जाए झलक, हरि जू की की रंग वखाइंदा। ना कोई नेत्र ना कोई पलक, इक्को जोत डगमगाइंदा।

४४४
११

तेरे मिलण दा रखे इश्क, इश्क चेतन इक्क जणाइंदा। गुरसिख तेरा वेखे दृष्ट, आपणा इष्ट आप मनाइंदा। कलयुग काया होई भृष्ट, दुरमति मैल ना कोए धुआइंदा। ना कोई शार पाशा खेल जाए टांक जिसत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचां एका रंग वखाइंदा। पंच प्रधान बन्ने बंस, आपणी खुशी मनाईआ। वेखो हरि जू आपणा राह रिहा दस्स, साचे राह पाईआ। हरि जू मिले नस्स नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। हिरदे अंदर आपे वस, आपणा पर्दा लाहीआ। पंच विकारा देवे झस्स, तृष्ना भुख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणे गले लगाईआ। दीन दयाल गोदी चुक्क, हरिजन खुशी मनाइंदा। करोड़ तेतीसा साची बरखा फूलण उत्तों रहे सुट्ट, अंदर किरन किरन बरसाइंदा। गुरसिख तेरे अंदरों सोमा फुट्ट, हरि जू आप प्रगटाइंदा। इक्क भण्डारा दवां अतुट्ट, तोट कदे ना आइंदा। आपे चढ़ के वेख्या चोट, साची चोटी आसण लाइंदा। एथे ओथे इक्को ओट, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे आप तराइंदा। तारनहारा आया जग, दर दर सेव कमाईआ। गुरमुख सज्जण साचे सद्द, बह बह खुशी मनाईआ। मैं कर के आया पार हद्द, आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखो मैनूं करना ना अड्ड, झल्ली ना जाए जुदाईआ। मैं पिच्छे पंज तत आया छड्ड, हरिसंगत रिहा समझाईआ। कढ्ढण आया डूँघी खड्ड, आपणा राह जणाईआ। गुर अवतार गए लद, रहिण कोए ना पाईआ। इक्क दूजे दा करीए हज्ज, घर विच खुशी मनाईआ। गुरसिख वेखीं जाईं ना भज्ज, तेरा विछोड़ा मोहे रिहा सताईआ। मेरी लज्जया तेरे हथ्थ, तेरी पत्त मेरी वड्याईआ। तेरा वासा सीआं साढे तिन्न हथ्थ, मैं ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा समाईआ। एथे ओथे गावां तुहाढ्ढा जस, वाह वाह वज्जदी रहे वधाईआ। आओ रल मिल इक्क दूजे नूं हाल दईए दस्स, पंच वेखण चाँईं चाँईंआ। आ प्रेम प्यार अंदर जाईए फस, गलवकड़ी पाईए दोहां बाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लालो तेरे घर दए वड्याईआ। लालो तेरा घर महल्ला, ऊचो उच्च सुहाया। उत्तों आया इक्क इकल्ला, एथे हरिसंगत नाल मिलाया। आप फड़ाया आपणा पल्ला, साचे पल्लू गंढु दुवाया। निहचल धाम उच्च अटल्ला, हरि जू आप सुहाया। पावे सार जलां थलां, डूँघी कंदर फोल फुलाया। सच संदेशा एका घल्ला, हुक्मी हुक्म मनाया। जोती शब्दी आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए रखाया। पहले जन्म दा मेटया सल्ला, अग्गे आपणी गोद बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच महल्ला दए वड्याआ। सच महल्ला वड अटारी, ऊँचो ऊँच बणाईआ। निरगुण जोत वसे निरँकारी, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। घर विच खोले घर विच बारी, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। गुरमुख साचे लए सिंगारी, वड सिंगार सोहे शरनाईआ। साचे घोड़े

देवे चाड़ी, शाह अस्वार वड्डी वड्याईआ। लेखे लाए चरन छुहाई दाढ़ी, नेत्र नैण नैण मिलाईआ। इक्को प्रेम इक्क प्यारी, एका प्रीतम एका नारी, एका सेज सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लालन एका रंग चढ़ाईआ। चढ़या रंग गुलाल, रूप रंग रेख आप बणाया। आपे सुणे मुरीदां हाल, गोबिन्द आपणा वेस वटाया। निरगुण शब्दी बण दलाल, साचे मार्ग लाया। इक्क दूजे दा पुच्छे हाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाया। चलया राह अगम्मड़ा, पुरख अगम्म आप चलाईआ। जन भगतां मात पित बणया अम्मी अम्मड़ा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। लहिणा चुक्के हड्ड मास नाड़ी चमढ़ी चमड़ा, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। देवे दरस दर दुआर खलड़ा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गुरमुखां भारी करे पलड़ा, । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत नाम रंगत एका रंग चढ़ाईआ।

कुल्ली कक्ख सोहणा मन्दिर, मन वासना नज़र ना आईआ। गृह वसया हरि जू अंदर, घर बैठा आसण लाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे खण्डर, गुरसिख तेरा खेड़ा रिहा वसाईआ। कोई ना चढ़े उच्ची मंज़ल, मंज़ल मकसूद हथ्थ किसे ना आईआ। सारे राह विच हो के गए बेदल, सतप्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। सूफ़ी फ़कीर गा गा गए गज़ल, नग़मा नाम सुणाईआ। अन्तिम सब दे सिर ते आई अज़ल, अजर कोए रहिण ना पाईआ। लालो तेरे उत्ते कीता फ़ज़ल, रहिमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाढी बाढीआं नाल रलाईआ । सोहे कुल्ली जिथे वरसे नूर, सो धाम सोभावन्त। गुरमुख आत्मा तेरी भरपूर, घर मिल्या सच्चा कन्त। जिस नूं लभ्भदे दूर, सो नेड़े आया अन्त । अठे पहर हाज़र हज़ूर, घर मेला नारी कन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को कुल्ली वेखे सोभावन्त। गुरमुख कुल्ली कक्ख कक्ख करे पुकार, तिनका तिनका दए दुहाईआ। मेरी रख पति विच संसार, मैं तेरी ओट तकाईआ। मैं तेरे गुरसिखां दा पर्दा बैठी ढक, तूं मेरी लाज रखाईआ। मेरी कोई हार ना कोई जित्त, चार दीवार ना बणत बणाईआ। मैं वेंहदयां मन्दिर जाए ढट्ठ, उच्चे टिल्ले नज़र किते ना आईआ। लालो तेरा खेड़ा जाणा वस, सतिजुग साचे वज्जे वधाईआ। क्यों श्री भगवान गया दस्स, ना कोई मेटे ना मेट मिटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस कुल्ली अंदर गया वस, सो कुल्ली सोभा पाईआ।

संगत नालों बहुती उडीक, हरि जू आप रखाइंदा। संगत वासा जगत तारीक, हरि जू आपणा शरीक ना किसे बणाइंदा। आवे जावे बिन तारीक, निक्का निक्का आपणा रूप वखाइंदा। गुरसिखां दी सदा तारीक, रातीं सुत्तयां दरस वखाइंदा। अन्तिम मेला करे ठीक, आप आपणे रंग रंगाइंदा। पहलों सिक्खी हरि जी आप करन दी प्रीत, फेर गुरसिखां प्रीत सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सद आपणे अंग लगाइंदा। प्रीत करनी जे ना सिखदा, करदा की करतार। भगतां लेख किस बिध लिखदा, जगत चलदा किवें विहार। वेखो खेल साहिब अनडिठ दा, अनडिठड़ी करे कार। पहलों बणया आप जिस जिस दा, तिस सज्जण लए तार। जगत नेत्र किसे ना दिसदा, अंदर अंदर करे प्यार। सदा भुक्खा प्रेम भिक्ख दा, पुरख अबिनाशी भिक्खक भिख्या मंगे गुरसिख तेरे दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार।

★ १३ माघ २०१८ बिक्रमी अच्छर सिँघ दे गृह अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ★

हरि नाम रंग अपारा, बिन रंगत हरि चढ़ाइंदा। हरि नाम रंग अपारा, नज़र किसे ना आइंदा। हरि नाम रंग अपारा, काया चोली चोले नाल बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम वखाइंदा। हरि का नाम आत्म रंग, अन्त दाता आप रंगाईआ। हरि का नाम सदा संग, सदा सदा सुखदाईआ। हरि का नाम डोर पतंग, सुरती सुरत बंधाईआ। हरि का नाम गीत सुहागी छन्द, गोबिन्द गोबिन्द करे वड्याईआ। हरि का नाम परमानंद, परम पुरख मिलाईआ। हरि का नाम टुट्टी गंढु, आपणा बन्धन पाईआ। हरि का नाम करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, नूर नूर नूर रुशनाईआ। हरि का नाम सदा बखशिंद, पतित पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम चखाईआ। हरि नाम सर्ब गुण, गुणवन्ता गुण जणाइंदा। हरि का नाम याद लए सुण, जन प्राणी मात सुणाइंदा। हरि का नाम छाण पुण, लख चुरासी आप कराइंदा। हरि का नाम लए चुण, गुरमुख सज्जण बाहर कढाइंदा। हरि का नाम साची धुन, आत्म राग सुणाइंदा। हरि का नाम गुरमुख विरला जाए सिख कन्न सुण, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम समझाइंदा। हरि का नाम सच भण्डारा, हरि साचा सच वरताईआ। हरि का नाम ठंडा ठारा, सांतक सति कराईआ। हरि का नाम अमृत धारा, निझर झिरना आप झिराईआ। हरि का नाम खोल्हे किवाड़ा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। हरि का नाम मेटे धाड़ा, पंचम मोह चुकाईआ।

हरि का नाम रंग चाढ़े गाड़ा, रंग रतड़ा इक्क वखाईआ। हरि का नाम पावे सारा, डूँग्घी गारा काया कवरी फोल फुलाईआ। हरि का नाउँ वखाए सच दुआरा, हरि सतिगुर शरन शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे नाम बूझ बुझाईआ। हरि का नाम सूरबीर, वड्ड बलवान अख्वाइंदा। हरि का नाउँ निराला तीर, अणयाला आप चलाइंदा। हरि का नाम इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला, घर घर विच भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप पढ़ाइंदा। हरि का नाम निष्अक्खर धार, धरनी धवल ना कोए वड्याईआ। हरि का नाम रहे जुग चार, जुग जुग वेस वटाईआ। हरि का नाम गावण गुर अवतार, रसना जिह्वा हिलाईआ। हरि का नाम भगतां मिले भगत दुआर, भगवन बूझ बुझाईआ। हरि का नाउँ सन्तन करे प्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। हरि का नाम गुरमुख लए निकाल, गुर मीत दए खुल्हाईआ। हरि का नाम गुरसिखां वखाए सच्ची धर्मसाल, घर घर विच भेव चुकाईआ। हरि का नाम तोड़े जंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। हरि का नाउँ वड्डा संसार, वड वड्डा आप वड्याइंदा। हरि का नाउँ आदि जुगादि, विवहार विवहारी आप कराइंदा। हरि का नाम घट घट रिहा पसार, लख चुरासी डेरा लाइंदा। हरि का नाम सच्ची गुफ़तार, गुफ़त शनीद खेल कराइंदा। हरि का नाउँ सदा जैकार, ब्रह्मण्ड खण्ड एका नाअरा लाइंदा। हरि का नाम अतुट भण्डार, वरभण्डी आप वरताइंदा। हरि का नाम तेज कटार, मनमुख गुरमुख दोवें पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। हरि का नाउँ तिक्खी धार, धार धार धार विच प्रगटाईआ। हरि का नाम जगत विकारा करे खुआर, मात मोह चुकाईआ। हरि का नाम कराए दरस दीदार, हरि सतिगुर लए मिलाईआ। हरि का नाम भाण्डा भरम भउ भन्ने बण ठठयार, आपणा थथवा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप सालाहीआ। हरि का नाउँ सच्चा हट्ट, हटवाणा आप खुल्हाइंदा। हरि का नाम साची वथ, वस्त अमोलक विच रखाइंदा। हरि का नाम महिमा अकथ, कथ कथ ना कोए सुणाइंदा। हरि का नाम साचा रथ, जुग जुग बेड़ा मात रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। हरि का नाम सेवादार, बण सेवक सेव कमाईआ। जन भगतां करे प्यार, मित्र प्यारा नाउँ धराईआ। अंदर वड़े डूँग्घी गार, आपणा आसण लाईआ। जिस वेले गुरसिख कढ्ढण बाहर, तूंही तूंही रिहा सालाहीआ। रसना करे जैकार, एका नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप दरसाईआ। हरि का नाउँ हरि का दरस, दरस दरस कराइंदा। हरि

का नाम अर्श फर्श, काया कुरा डेरा लाइंदा। हरि का नाम मेटे हरस, तृष्ना दुःख मिटाइंदा। हरि का नाम अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत्त बुझाइंदा। हरि का नाम नाता तोड़े स्वर्ग नरक, सचखण्ड दुआर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे आप सुणाइंदा। हरि का नाउँ सच्चा राग, रागी राग भेव ना आईआ। हरि का नाम जगत त्याग, सच त्यागी वेस वटाईआ। हरि का नाम नाम वैराग, बण वैरागी राह तकाईआ। हरि का नाम हँस बणाए काग, कागों हँस उडाईआ। हरि का नाम धोवे दाग, दुरमति मैल धुआईआ। हरि का नाम दीप जोत जगाए चिराग, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। हरि का नाम बणे सज्जण साक, घर मेला सहिज सुभाईआ। हरि का नाम खोल्हे ताक, दूई पर्दा आप उठाईआ। हरि का नाम पूरा करे घाट, पूरब लेखा लेखे लाईआ। हरि का नाम नेड़े दस्से वाट, प्रभ मिले चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप उपाईआ। हरि का नाउँ वड्डा दूल्ह, हरि सतिगुर आप प्रगटाया। हरि का नाम फूलण फूल, पत्त डाली आप महकाया। हरि का नाउँ चुकाए मूल, बाकी कोई नज़र ना आया। हरि का नाम सोभा पाए सच सिँघासण बिन पावे चूल, बाडी बणत ना कोए बणाया। हरि का नाम जो जन जपे भूल, तिस भुलड़े राह दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाम वड्याआ। हरि का नाम सदा अड्ड, वक्खरी धार चलाइंदा। हरि का नाम वसे उपर शाह रग, नौ दुआरे दिस ना आइंदा। हरि का नाम हरिजन बध्धा साचा तग, धीरज जत इक्क वखाइंदा। हरि का नाम पर्दा लए कज्ज, ढाकण को पति खेल वखाइंदा। हरि का नाम सच नगारा जाए वज्ज, ताल तलवाड़ा ना कोए रखाइंदा। हरि का नाम गुरमुख सके ना कोए छड्ड, जिस जन आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी चुक्के डर, जिस जन आपणा नाम जपाइंदा। नाम जपया जपाया जपत, जपत सुख पाया। जन्म जन्म दी मेटे तप्त, तृष्ना भुख गंवाया। करे पुनीत पापी पतित, पतित उधारन होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए बूंद रक्त, जिस जन आपणी दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर रखे ठंडी छाया।

★ १३ माघ २०१८ बिक्रमी बीबी दीपो दे घर दोसत पुरा ★

यारड़े दा सत्थर चंगेरा, मिले माण वड्याईआ। ना चन्द ना कोए अन्धेरा, एका नूर समाईआ। ना दूर ना वसे नेड़ा, घर बैठा सहिज सुभाईआ। झूठा दिसे भठ खेड़ा, तन माटी ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साचा सत्थर इक्क समझाईआ। साचा सत्थर हरि निरँकार, एका एक मनाया। गुर अवतार मंगण वारो वार, जुग जुग सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, एका ओट रखाया। चरन कँवल दे अधार, सच शरन शरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सत्थर इक्क बणाया। साचा सत्थर चरन कँवल, कँवल चरन चरन कँवल मिले वड्याईआ। मिले वड्याई उपर धवल, जिस जन आपणी तन सेज हेठ वछाईआ। उपर बहे निराकार सांवल सवल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको सत्थर आपणा आप वखाईआ। साचा सत्थर लग्गे चंगा, जिस जन बूझ बुझाइंदा। रूप रेख ना कोए रंगा, नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि इक्क अनन्दा, अनन्द अनन्द वखाइंदा। वज्जे ताल बण सारंगी सरंगा, एका राग अलाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्दा, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे तोर आपे पन्धा, आपे इस्म इस्म नाल मिलाइंदा। आपे आज़म होए बख़्शंदा, आपे सत्थर हेठ सुहाइंदा। आप मिटाए सगली चिन्दा, सुख सांतक आप प्रगटाइंदा। आपे होए गहर गम्भीर गुणी गहिन्दा, आपे गोबिन्द मेल मिलाइंदा। आपे गोबिन्द धार सागर सिन्धा, अमृत प्याला आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सत्थर इक्क बणाइंदा। साचा सत्थर साची सेव, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। नूरी जल्वा नूरी तेज, नूर नुराना रिहा वखाईआ। शब्द अगम्मी एका भेज, धुर फ़रमाणा दए सुणाईआ। बिन नेत्रां रिहा वेख, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि अन्त वटाए भेख, भेख अवल्लड़ा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सत्थर इक्क वड्याईआ। साचा सत्थर एका धार, हरि धारी धार रंगाइंदा। किसे दिस ना आए विच संसार, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुलाइंदा। गोबिन्द वेख्या एका वार, एका घर खुशी रखाइंदा। नाता तुट्टा सर्ब संसार, मात पित पूत मोह ना कोए वखाइंदा। एका मंग मंगी दरबार, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। किरपा कर मेरे निरँकार, मैं इक्को ओट रखाइंदा। सत्थर चंगा तेरे प्यार, जगत सेज ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। साचा सत्थर होया सोहणा, हरि सोहणा रूप वटाया। निरगुण सरगुण मिल्या मोहणा, मोह मोह आपणे नाल मिलाया। पिछला लेखा जिस ने धोणा, अग्गे राह चलाया। साचे सत्थर तेरा वेखे चारो कोनां, चारों जुग फोल फुलाया। जिस अग्गे गोबिन्द सोहणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाया। चढ़ के सेज कदे ना सौणा, चिंता दुःख ना कोए रखाया। पुरख अकाल एका गाउणा, वाह वाह वज्जदी रहे वधाया। देवे सुनेहड़ा उनिंजा पवणा, पवण पवणां विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सत्थर इक्क रखाया। साचा सत्थर कर त्यार, त्रैगुण अतीता खेल कराईआ। गोबिन्द सुण तेरी पुकार,

गोबिन्द आपणी खुशी मनाईआ। करां खेल अपर अपार, भेव कोए ना पाईआ। बाडी बणा बण तरखाण, साची घाड़त लवां घड़ाईआ। निरगुण रूप हो श्री भगवान, लोकमात फेरा पाईआ। तेरी सूलां सेज कर परवान, आप आपणे अंग लगाईआ। तेरे अन्तर मार ध्यान, आपणा पर्दा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सत्थर दए विछाईआ। साचा सत्थर विछे वछाउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण जामा पाउणा, जोती जोत जोत वेस वटाइंदा। पलँघ रंगीला इक्क वखाउणा, पावा चूल ना कोए रखाइंदा। तख्त निवासी तख्त सुहाउणा, साचा तख्त आप बणाइंदा। जिस सेज उत्ते गोबिन्द सुवाउणा, सो सेज ना किसे वखाइंदा। सत्थर हंढाया लेखे लाउणा, यार यारी नाल निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को सत्थर रखे चंगा, आदि जुगादि ना होए मंदा, मंद वासना ना कोए रखाइंदा।

★ १३ माघ २०१८ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह
पिण्ड शोन ज़िला गुरदासपुर ★

सचखण्ड खेल महान, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। तख्त निवासी शाह सुल्तान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्मरान, एका एक जणाइंदा। पंचम उठो नौजवान, एका रंग वखाइंदा। चरन कँवल करो ध्यान, शरन शरनाई इक्क समझाइंदा। विष्नूं लेखा चुक्के आण, भगवन आपणी झोली पाइंदा। ब्रह्मे अन्तिम आए हान, वेला वक्त चुकाइंदा। शंकर मुके जगत शान, हरि साचा आप मिटाइंदा। सुरपति इन्द होए वैरान, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। ध्रू अन्त करे कल्याण, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। बल बावन खेल खेल महान, बल आपणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची कार कमाइंदा। सचखण्ड बैठ श्री भगवान, आपणी खेल कराईआ। मुर्शद मुरीद देवां बान, शहिनशाह बेपरवाहीआ। सच संदेश इक्क फ़रमाण, एका वार सुणाईआ। आदि जुगादी सच निशान, साचा हथ्थ रखाईआ। पंचां देवे एका दान, एका वस्त झोली पाईआ। एका शब्द इक्क कान, एका घर वखाईआ। एका इष्ट श्री भगवान, एका नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाईआ। सचखण्ड सच महल्ला, हरि साचा सच सुहाइंदा। निरगुण निरवैर इक्क इकल्ला, पुरख अबिनाशी सोभा पाइंदा। जोती जोत आपे रला, नूर नुराना डगमगाइंदा। पंचम फड़े आपणा पल्ला, पंचम मोह वधाइंदा। पंचम अंदर आपे रला, रूप रंग रेख ना

कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड आपणी खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी एकँकारा, अकल कला वड्याईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, आप आपणा हुक्म समझाईआ। पंचम देवे इक्क सहारा, एका ओट जणाईआ। एका मन्दिर उच्च मनारा, महल अटल वड्याईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, नूर नुराना कर रुशनाईआ। कमलापाती खेल अपारा, अपरम्पर धार चलाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, आप आपणा भाउ चुकाईआ। रागी नादी वसे बाहरा, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। बोध अगाधी खेल न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड साचा दुआरा, धुर दरबारी आप सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण हो त्यारा, निरगुण आसण लाइंदा। हरि पुरख निरँजण आपे जाणे आपणी कारा, करनी किरत आप कमाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आपणी धारा आप चलाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़ा, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। श्री भगवान सति हुलारा, सति सतिवादी आप हलाइंदा। पारब्रह्म करे खेल अपर अपारा, आपणा राह आप चलाइंदा। पंचम मेला एका वारा, एका माण रखाइंदा। गुरमुख देवे सच दुआरा, सच महल्ल बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा सच घर, सच घर सचखण्ड दुआर आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा दीपक जोत, एका एक जगाईआ। आपे वसया साचे कोट, साचे बंक वड्याईआ। आपे पंजां देवे ओट, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा गुण आप समझाईआ। साचा गुण हरि निरँकार, आपणा आप जणाइंदा। पहला लेखा मुक्के सर्ब संसार, बाकी कोए रहिण ना पाइंदा। जुग चौकड़ी बीते काल, कोटी कोट रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर वेस वटाइंदा। बोध अगाध बोल जैकार, शब्दी नाद वजाइंदा। आत्म परमात्म दए अधार, जीव जंत समझाइंदा। राती रुत्ती थिती वार, बरस मास रुत्त सुहाइंदा। कागद कलम कर प्यार, लिख लिख लेख जणाइंदा। काया बस्त्र तन शृंगार, सरगुण रंग चढ़ाइंदा। सर सरोवर तट तीर्थ किनार, जल थल महीअल डेरा लाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत रिख मुन आप भुआइंदा। समुंद सागर डूँग्घी गार, गहर गम्भीर खेल कराइंदा। एका शब्द नाद धुन्कार, आदि जुगादी आप वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव भर भण्डार, त्रैगुण मेला जोड़ जुड़ाइंदा। पंज तत्त तत्त अखाड़, आप आपणा नाच नचाइंदा। मन मति बुध दए अधार, निरगुण सरगुण झोली पाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर त्यार, खाणी बाणी नाल मिलाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी धार, वरन वरनी झोली पाइंदा। खेले खेल अगम्म अपार, एका अक्खर आप धराइंदा। ब्रह्मा वेता

कर त्यार, चारे वेद मुख सालाहइंदा। शास्त्र सिमरत कर त्यार, वेद पुराणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा सब समझाइंदा। पिछला लेखा देवे दस्स, पंचम माण वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पैंडा मुक्या नस्स नस्स, पाँधी आपणा पन्ध मुकाईआ। कर प्रकाश थक्के रवि ससि, जगत अन्धेर ना कोए गंवाईआ। गुर अवतार गए थक्क थक्क, लोकमात कर पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर खोलू हट्ट, जगत वणज गए कराईआ। अन्तिम सब दा लेखा प्या ख़ात, ख़ाता कोए ना फेर वखाईआ। कलयुग आई अन्धेरी रात, नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। लख चुरासी लभ्भे ना कोए वाट, नौ खण्ड पृथ्मी दए दुहाईआ। सत्तां दीपां तुट्टा नात, नाता बिधाता ना कोए जुड़ाईआ। ना कोई पिता ना कोई मात, साचा पूत ना गोद सुहाईआ। सृष्ट सबाई लुट्टी ज़ात पात, आत्म ब्रह्म ना कोए वखाईआ। ईश जीव करन घात, हथ्थ छुरी जगत कसाईआ। चारों कुण्ट पढ़ पढ़ गाथ, रसना जिह्वा करी हल्काईआ। हरि जू दिसे किसे ना साथ, बैठा मुख भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजां खेल रिहा खलाईआ। पंजे नैण खोलो लओ तक्क, हरि जू आख सुणाया। लख चुरासी भाण्डा सख, हरि का नाम ना कोए वखाया। मन सुआन रिहा लक, जूठ झूठ मुख धराया। काया अंदर रख्या ढक, दिस किसे ना आया। कूड़ी क्रिया विक्या हट्ट, साचा वणज ना कोए कराया। माया ममता लग्गा फट, द्वैती पर्दा ना कोए उठाया। कर कर खेल बाजीगर नट, कलयुग आपणा स्वांग वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका राह जणाया। पंचम एका राह जणाइंदा, कर किरपा गुण निधान। चार जुग दी कीती आप वखाइंदा, लोकमात वेख मार ध्यान। चार यारी पन्ध मुकाइंदा, चारों कुण्ट आए हाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा सति संदेशा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। इक्को भूप इक्क नरेशा, राज राजान इक्क अख्वाइंदा। इक्को ठाकर इक्क आदेशा, एका निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। एका नूर एका वेसा, एका घर सुहाइंदा। एका लेख एका लेखा, लिखणहार इक्क हो जाइंदा। एका करनी एका पेशा, एका किरत कमाइंदा। एका वसे साचे देशा, घर साचा आप सुहाइंदा। एका उपजाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, साचे धन्दे लाइंदा। एका पाए भरम भुलेखा, वल छल धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप समझाइंदा। एका एक एकँकार, एका हथ्थ वड्याईआ। एका करे सर्ब पसार, वेखे चाँईं चाँईंआ। एका शब्द नाद धुन्कार, एका राग राग अलाईआ। एका अमृत ठंडा ठार, सर सरोवर इक्क समाईआ। एका गुर पीर अवतार, पीर पैग़म्बर इक्क वड्याईआ। एका खाणी बाणी पावे सार, एका करे सच पढ़ाईआ। एका अवणी गवणी फिरे अगम्म अपार,

त्रैभवण धनी वेस वटाईआ। एका वसे महल्ल अटार, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। एका खेल करे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। एका लेखा लिखणहारा, आदि जुगादि समाया। जुग जुग रूप धरे न्यारा, भेव कोए ना पाया। निरगुण सरगुण दए आधारा, साची सिख्या इक्क समझाया। नाम वस्त सति भण्डारा, पुरख अकाल आप वरताया। गुर गुर रूप सेवादारा, बण सेवक सेव कमाया। भगत खुल्हाए बन्द किवाड़ा, आप आपणा पर्दा लाहया। सन्तन देवे इक्क सहारा, सिर आपणा हत्थ टिकाया। गुरमुख देवे सति दीदारा, नेत्र लोचण नैण जणाया। गुरसिख करे पनिहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा जणाया। पूरब लेखा जुग चार, कोटन कोटि जुग चौकड़ी बीत बिताईआ। नानक निरगुण पावे सार, छत्ती छत्ती भेव खुल्हाईआ। छत्ती लेखा धन्दूकार, छत्ती छत्ती आपणी गोद सुहाईआ। छत्ती राग दए आधार, एका दूआ कर प्यार, बहत्तर नाड़ वज्जे सितार, तन माटी भेव चुकाईआ। एका जोत नूर उज्यार, घर मन्दिर सोहे बंक दुआर, गृह आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा लेखे विच समाईआ। पूरब लेखा जाए लग्ग, हरि साचा आप लगाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, निरगुण आपणी जोत जगाइंदा। कलयुग लोकमात विच्चों देवे कढ्ढ, एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजां देवे एका वर, एका शब्द सुणाइंदा। पंजे उठ होए प्रधान, आपणा बल रखाया। किरपा कर श्री भगवान, एका तेरी ओट रखाया। कवण बिध मेटें कूड़ निशान, लोकमात करें सफ़ाया। कवण बिध देवें इक्क ज्ञान, लख चुरासी दएं पढ़ाया। कवण वखाएं सच मकान, घर मन्दिर सोभा पाया। कवण नूर दरसाएं मेहरवान, नूर नुराना कर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्त खेल करां महान, वेद कतेब भेव ना आइंदा। लेखा जाणे ना कोए ज्ञान, सूझ बूझ ना कोए रखाइंदा। अन्तर वेखे ना कोए मार ध्यान, आप आपणा पर्दा पाइंदा। प्रगट होवां विच जहान, निरगुण नूर नूर धराइंदा। निहकलंक बण बली बलवान, आपणा बल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव हरि जू दस्से, साची खुशी मनाईआ। पंजां नाल बह बह हस्से, वज्जे नाम वधाईआ। तीर निराला एका कसे, तिक्खी धार बणाईआ। गुरमुख लख चुरासी विच्चों कढ्ढे फसे, आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। पंजे उठ करन अरदास, दोए जोड़ सीस झुकाया। आपणा भेव दस्स खास, भेव अभेदा पर्दा लाहया। किस बिध सानूं सद्दया

पास, आपणा हुक्म मनाया। पंज तत्त काया चोला कर के आए नास, नाता मोह तुड़ाया। तेरा मिल्या सति प्रकाश, जोती जोत समाया। असीं बह गए बण के दास, दर तेरे सीस झुकाया। तेरा मंडल वेखी रास, गोपी काहन नचाया। तूं साडी करीं पूरी आस, जगत तृष्ना भुख मिटाया। चरनां हेठां दिता पृथ्मी आकाश, उपर साडा डेरा लाया। तेरी महिमा पुरख अबिनाश, हउँ कथ ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, किस बिध मेला मेल मिलाया। मेल मिलाया कवण धार, हरि जू दे बताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर सेवा कर कर आए गुर अवतार, लोकमात फेरा पाईआ। पीर पैग़म्बर तैनूं कहिन्दे रहे सच्चा यार, परवरदिगार मेरा खुदाईआ। ऐनलहक़ सुत्ता पैर पसार, मुकामे हक़ सच्चा शहिनशाहीआ। सानूं तेरे ते प्या शक्क, साडा पर्दा दे चुकाईआ। किस बिध आऐ तेरे हट्ट, कवण वणज दिता कराईआ। सानूं पिछला लेखा भुलया झट्ट, इक्क तेरा दर्शन पाईआ। सरन सरनाई गए ढट्ठ, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। तेरा नूर लट लट, जोती जोत डगमगाईआ। तेरा नाम अगम्मी सट्ट, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पंचम ढह पए शरनाईआ। पुरख अबिनाशी दस्से हाल, पिछला भेव खुल्हाइंदा। गुरमुख सच्चा इक्को पाल, पाल पलोस आपणी सेव लगाइंदा। तेग़ हेठ घाली घाल, बहादर रूप वटाइंदा। अन्तिम रख के गया इक्क सवाल, एका ओट तकाइंदा। मेरा किछ नहीं तेरा पुत्त गोबिन्द लाल, तेरी झोली पाइंदा। तूं एथे ओथे राखा पुरख अकाल, तेरी ओट तकाइंदा। तूं मेरा करना हल्ल सवाल, कीती घाल लेखे पाइंदा। इस बिध होया मात दलाल, कलयुग अन्तिम मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। खोल्हे भेव आप करतारा, आपणी महिमा आप जणाईआ। गोबिन्द सुत सुत दुलारा, गोदी गोद वड्याईआ। सेवक सेवा करे त्यारा, चाकर चाकरी इक्क समझाईआ। पुरख अकाल इक्क सहारा, एका ओट तकाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारा, चरन सरन सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लहू मिझ बणाया इट्टां गारा, बाली बाले भेंट चढ़ाईआ। दोए बाले दोए लाल, दो जहानां खेल कराइंदा। एथे ओथे सच्ची धर्मसाल, हरि साचा आप बणाइंदा। पहली वारी गड्ड के गया निशान, दूजी वार आप झुलाइंदा। प्रगट हो के दिता दान, दाता दानी झोली पाइंदा। आपणे दर कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मकान, कलयुग सीआं वंड वंडाइंदा। नौ दुआरे इक्क निशान, लख चुरासी जीव जंत समझाइंदा। पिछला लेखा चुक्के आण, विष्न ब्रह्मा शिव उठाइंदा। सुरपति राजा इन्द होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। करे खेल श्री भगवान, बाली बाले आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची आप सुहाइंदा। दरगाह साची हरि का ज़ोर, ज़ोरावर दए वड्याईआ। आपणी हथ्थीं आपे तोर, आपे लए मिलाईआ। आपे फड़नहारा डोर, आकाश आकाश आप उडाईआ। आपे वेखे अन्ध घोर, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा जणाईआ। पूरब लेखा दस्से मीत, हरि आपणी दया कमाइंदा। ज़ोरावर इक्क अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। गोबिन्द गाए इक्को गीत, पुरख अकाल मनाइंदा। नाता तुट्टा मन्दिर मसीत, घर साचे सोभा पाइंदा। सिँघ सवरन चलाई रीत, सोना रुपा ना रंग रंगाइंदा। धू होणा अन्तिम सीत, हरि आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा आप समझाइंदा। पिछला लेखा दस्से अहिवाल, हवाला आपणा आप जणाईआ। बल बावण खेल न्यार, साची वंड वंडाईआ। एथे ओथे करे ध्यान, वेखणहारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूरब लेखा दए चुकाईआ। बल बावन पूरब लेखा, हरि साचा सच जणाइंदा। करे खेल नर नरेशा, आपणा हुक्म वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मेटी रेखा, कलयुग अन्तिम आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा सब दा आप मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम हरि जू लहिणा, हरिजन आप चुकाईआ। बल तेरा देवे देणा, देवणहार भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बल देणा तेरा एका मंत, हरि मन्त्र आप पढ़ाया। तेरा लहिणा चुक्या पिछला जीव जंत, जंत जीव ना वंड वंडाया। हरि जू मेला होया अन्त, अन्त लए मिलाया। आपणी महिमा जाणे अगणत, बेअन्त करे वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल तेरे दर, संगत पंगत रूप वटाया। संगत विच एका माण, हरि जू हरि रखाया। पंगत बिठाई पिछला लेखा जाण, कीता दान झोली पाया। अन्तिम दर कर परवान, पंचम नाल मिलाया। करे खेल श्री भगवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सचखण्ड सच निशान, सति सतिवादी इक्क झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। पंजे सुणो छोटे बाल, हरि साचा सच जणाईआ। तुहाडे पिच्छे घालण घाल, आपणी सेव कमाईआ। पहलों करया हल्ल सवाल, लेखा लिख्या बिन कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ। आपणा भेव हरि निरँकारा, एका इक्क जणाइंदा। छत्ती जुग दा सच विहारा, छत्ती छत्ती वंड वंडाइंदा। बल तेरा बल दुआरा, बल बावन आप सुहाइंदा। लोकमात कर उज्यारा, चार वरन वखाइंदा। चार कुण्ट इक्क नगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त आप वजाइंदा। पंचम देवे सच निशानी, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ।

निरगुण जोत नूर नुरानी, लोकमात करे रुशनाईआ। भगत दुआरा इक्क लासानी, लाशरीक आप बणाईआ। लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। पुरख अगम्मड़ा आपे जाणे आपणी बाणी, पिछली करे ना कोए पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम चुक्के झूठी काणी, दूजी काण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए समझाईआ। इस बिध होया सचखण्ड मेला, हरि जू आख सुणाया। एका घर वसे गुरू गुर चेला, गोबिन्द लिख्या पूर कराया। आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए जणाया। साहिब सुल्तान सज्जण सुहेला, पुरख अबिनाशी बेपरवाहया। वसणहारा धाम नवेला, सचखण्ड साचे आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कर्म आप कराया। निहकर्मी करया कर्म अपारा, कर्म कांड ना कोए जणाईआ। पंचम वखाए इक्क मुनारा, लोकमात सुहाईआ। बहत्तरां देवे इक्क सहारा, एका ओट जणाईआ। कलयुग अन्तिम पार किनारा, पारब्रह्म प्रभ आप कराईआ। फड़ के सुट्टे डूँघी गारा, ना कोई सके बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची क्रिया आप जणाईआ। साची क्रिया करे करतार, कुदरत कादर खेल खलाइंदा। लहिणा देणा चुक्के जुग चार, चारे खाणी झोली पाइंदा। सतिजुग सच करे विहार, सति सतिवादी दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे हो त्यार, सच सलाह जणाइंदा। पंचम रहिणा ख़बरदार, बेख़बर आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंजां माण रखाइंदा। पंजे आए साचे दर, हरि साचे आप बुलाया। सरन सरनाई मिल्या घर, घर मन्दिर डेरा लाया। निरभउ चुकाया दूजा डर, भय अवर ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाया। आपणा भेव दस्से श्री भगवान, महिमा आप सुणाईआ। पहली चेत दिवस महान, करे खेल बेपरवाहीआ। नानक मंगया पंजां दान, दरगाह साची मिली वड्याईआ। पुरख अबिनाशी देवणहार श्री भगवान, आसा वन्त पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पंचम मेला जुड़या जोड़, सो पुरख निरँजण आप जुड़ाया। हरि पुरख निरँजण वेखे दौड़, आपणा पन्ध मुकाया। एकँकारा करे गौर, नज़र नज़र नाल मिलाया। आदि निरँजण करे चौर, बण सेवक सेव कमाया। अबिनाशी करता कहे मैं कढ्ढुया जौहर, लख चुरासी विच्चों पंचम मुख रखाया। श्री भगवान कहे मैं चाड़्ह के आंदे घोड़, एका घोड़ा आप उठाया। पारब्रह्म कहे मैं लाया पौड़, उच्चा डण्डा इक्क वखाया। पंचम कहिण तूंही तूं गया बौहड़, मिली तेरी सरन सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे माण दुआया। दर घर साचे दिता माण, हरि जू आख सुणाइंदा। नानक निरगुण करे परवान, पहली चेत वंड वंडाइंदा। तुहाड्डा हाल पुच्छे

४५७
११

आण, आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप सुहाइंदा। पहली चेत नानक मेला, निरगुण निरगुण दए कराईआ। पंचम सोहे साचा वेला, वाह वाह वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी बण विचोला, दो जहानां फेरा पाईआ। नानक गाया सोहँ ढोला, गुरमुख जै जैकार नाल रलाईआ। विष्नूं भगवान चुकाया ओहला, पर्दा पर्दा दए उठाईआ। होया इकरार पूरा कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पंचम मिलणा नानक धार, हरि साचा आप मिलाईआ। पंच परवान पंच प्रधान पंचे पावे दरगाह माण, पंचां का गुर एक ध्यान, ध्यान विच रलाईआ । पंजां नेत्र पेख श्री भगवान, आपणी खुशी वखाईआ। उठो खोल्हो इक्क दुकान, एका हुक्म जणाईआ। सतिजुग बणे सति विधान, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआर विधान बणावणा, हरि आपणी किरपा धार। पंजां माण दवावणा , तख्त निवासी सच्ची सरकार। गोबिन्द सूरा नाल रलावणा, आप आपणा कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। पंच हो परवान, परम पुरख सीस झुकाईआ। असीं वेखणा आपणा राज राजान, कवण हुक्म रिहा सुणाईआ। निरगुण नूर हो प्रधान, आपणा दरस दए कराईआ। जोधा सूरबीर बलवान, पंचम मुख सीस ताज टिकाईआ। एका तख्त बहे राज राजान, दूजी सेज ना कोए सुहाईआ। आदि जुगादी सच्चा काहन, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पहली चेत देवे धुर फ़रमाण, जो करना सो रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा आप चुकाईआ। पिछला लेखा चुक्कणा, रहे ना विच संसार। सतिजुग साचा उठणा, पुरख अबिनाशी लए उठाल। साहिब दयाल एका तुट्ठणा, देवे नाम सच्चा धन माल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल कराउणा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सच सुच करे पढ़ाईआ। पंचम एका माण दिवाउणा, पंचम सिफ्त सालाहीआ। पंचम एका घर बहाउणा, एका मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाईआ। साचा राह चलाए निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। सतिजुग उपजे विच संसार, संसा रोग रहे ना राईआ। भगवन मेला भगत दुआर, घर साचा सोभा पाईआ। एका अक्खर बोल जैकार, जै जैकारा दए सुणाईआ। चार वरन आधार, चार कुण्ट वेख वखाईआ। चार अक्खर उतरे पार, आत्म परमात्म वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सोहँ एका नाम सुणाईआ। सोहँ सच्चा हरि का नाम, आत्म परमात्म धार वखाइंदा। आदि जुगादी साचा काम, निरगुण सरगुण खेल

कराइंदा। पीर पैग़म्बर दे पैग़ाम, एका हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, पंचम मेला मेल मिलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर चेला एका घर बहाइंदा।

टूणा जादू ना सके पोह, जिस जन सतिगुर दया कमाईआ। काग़ज़ कलम शाही लिखण वाले सारे रहे रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अंदर बाहर दुरमति मैल देवे धो, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। जो जन जपे जाप सोहँ सो, तिस घर टूणा जादू चले ना कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिंन ख़बीश भूत प्रेत हाकन डाकन सिर मुंडवाइंदा। ना घर ना बाहर खेत, पशू पंछी बन्धन पाइंदा। जो जन हरिसंगत हरि करे हेत, तिस गृह कोए ना फेरा पाइंदा। सदा रुत्त रहे बसन्ती चेत, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। बाकी कुछ थोड़ा जिहा रखे भेत, आपणा लेखा आपणे हथ्थ वखाइंदा।

★ १४ माघ २०१८ बिक्रमी देव सिँघ दे गृह शोन ज़िला गुरदासपुर ★

सचखण्ड सुहञ्जणा हरि दरबार, आदि निरँजण आप लगाइंदा। दुःख दर्द भय भञ्जणा शाह सिक्दार, भूपत भूप आसण लाइंदा। आदि जुगादि सज्जणा एकँकार, अकल कल आपणी खेल खलाइंदा। तख़्त निवासी सुहाए बंक दुआर, दर घर साचे सोभा पाइंदा। निरगुण निरगुण बण चोबदार, दर दरवेश अलख जगाइंदा। हुक्मी हुक्म सति वरतार, सति सतिवादी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला आप सजाइंदा। सच महल्ला गया सज, सो पुरख निरँजण आप सजाया। हरि पुरख निरँजण चढ़या भज्ज, निरगुण आपणा बल धराया। एकँकार जैकारा बोले गज्ज, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाया। आदि निरँजण ताल जाए वज्ज, पुरख अकाल आप वजाया। अबिनाशी करता होए गद गद, आपणा रंग आप चढ़ाया। श्री भगवान इक्क निशान देवे बन्न्ह, सच दुआरे आप झुलाया। पारब्रह्म प्रभ कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न मेरी वड्याआ। करया खेल सच मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पाया। निरगुण अग्गे निरगुण गया मन्न, एका दूजा भउ चुकाया। आपे बेड़ा आपणा बन्न्ह, हरि आपे खेल कराया। करे खेल श्री भगवन, रूप रेख ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वसाया। सचखण्ड वसया सच महल्ला, हरि जू हरि हरि आप वसाइंदा। निरगुण नूर इक्क इकल्ला, अजूनी रहित आसण लाइंदा। दीपक दीप आपे बला, जोती जोत रुशनाइंदा।

सच सिँघासण पुरख अबिनाशण एकँकार हरि निरँकार आपे मल्ला, सोभावन्त श्री भगवन्त आदि अन्त एका रंग रंगाइंदा। पुरख बिधाता इक्क इकांता खेले खेल नारी कन्त, आदि अन्त जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। श्री भगवाना सच निशाना दो जहाना हो मेहरवाना, इक्क इकल्ला आप झुलाइंदा। धुर फ़रमाणा देवे दाना जीव जहाना, राग अनादी नाद सुणाइंदा। सचखण्ड सुहाए सच मकाना, दीपक जोत जगे महाना, दीआ बाती कमलापाती ना होर वखाइंदा। भूपत भूप राज राजाना, एका देवे धुर फ़रमाणा, सति संदेशा नर नरेशा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आप सुणाइंदा। सति सन्तोखी बन्ने गाना, करे खेल निगहबाना, आपणी धार हरि करतार आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड महल्ले आपे चढ़ ना कोई सीस ना कोई धड़, निराकार निरवैर आपणा आसण लाइंदा। हरि जू साचा आसण ला, तख्त निवासी सोभा पाईआ। सचखण्ड बैठ सच्चा शहिनशाह, आपणा बल धराईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म जणा, हुक्मी हुक्म खेल कराईआ। शब्दी सुत सेवा ला, विष्न ब्रह्मा शिव करे कुड़माईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां घाड़त घड़ा, गगन मंडल करे रुशनाईआ। सूरज चन्द चन्द चमका, चन्द चांदनी इक्क चमकाईआ। त्रैगुण मेला सहिज सुभा, पंचम जोड़ जोड़ आप आपणा बन्धन पा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणा रंग आप वखाईआ। चारे खाणी खेल महानी, शब्दी बाणी धुर दी राणी, एका राग एका कान एका ब्रह्म इक्क ज्ञान, इक्क भगवान एका वार हरि निरँकार, दो जहान आपणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, साचे तख्त सोभा पाईआ। साचे तख्त हरि जू चढ़या, इक्क इकल्ला एकँकार। साचे मन्दिर आपे वड़्या, निरगुण नूर उज्यार। निरगुण निष्अक्खर आपे पढ़या, वेद कतेब ना कोए सार। विष्न ब्रह्मा शिव पूत सपूता आपणी गोदी आपे धरया, आपे करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अगोचर खेल अपारा, हरि साचा सच कराइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र लोचण नैण ना कोए रखाइंदा। शब्द शब्द शब्दी धारा, धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। खेल खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। लख चुरासी बण ठठयारा, घड़ घड़ भाण्डा अंदर वड़ वड़ आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा खेल निरगुण सरगुण करे मेल, जोती जाता सज्जण सुहेल, आपणा बन्धन पाइंदा। आपणा बन्धन हरि हरि पा, हरि जू खेल कराईआ। जुग चौकड़ी वेस वटा, रूप अनूप धराईआ। नाद अनादी ढोला गा, शब्दी शब्द सुणाईआ। अक्खर अक्खर आप पढ़ा, जगत विद्या संग रखाईआ। आपणा भेव आप छुपा, पर्दा ओहला इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, धुर फ़रमाणा आपणा हुक्म वरताईआ। धुर फ़रमाणा वरते वरतार, हरि सज्जण आप वरताइंदा। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर भेव कोए ना आइंदा। जुग चौकड़ी विच संसार, लुक लुक वेस वटाइंदा। सरगुण अंदर डूँघी गार, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। शब्द अगम्मी तार सितार, बिन तन्दी तार वजाइंदा। रसना जिह्वा कर प्यार, जीव जंत समझाइंदा। ऊँची कूक कूक वाजां मार, एका हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहावणा, सोभावन्त करतार। जुग जुग वेस वटावणा, निरगुण सरगुण लए अवतार। लख चुरासी बेड़ा हरि चलावणा, मँझधार वेख संसार। गुरमुख विरले गोद बहावणा, जिस देवे दरस दीदार। आत्म परमात्म रंग चढ़ावणा, रंग चलूल एका वार। सच निशान इक्क वखावणा, आत्म अन्तर खोल्ह कवाड़। हरि हरि गीत एका गावणा, एका मन्दिर इक्क दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। खेल अपारा हरि निरँकारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा, एकँकारा दए सहारा, आदि निरँजण मेला सहिज सुभाईआ। श्री भगवान सच अखाड़ा, अबिनाशी करता बहत्तर नाड़ वजाए ताड़ा, पारब्रह्म आपणा राग अल्हाईआ। इक्को सोहे सच दुआरा, निर्मल जोत जगे उज्यारा, चार दिसे ना कोए दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करनहार करतार। सचखण्ड दुआरा एका मलड़ा, सोभावन्त हरि निरँकार। सच संदेश एका घलड़ा, शब्दी शब्द धार। गुर अवतार फड़ाए पलड़ा, आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आदि जुगादि, जुगा जुगन्तर जुग चौकड़ी बन्न्हे धार। जुग चौकड़ी बन्न्हे धार, आपणी बणत बणाइंदा। निरगुण सरगुण लए अवतार, लख चुरासी खेल कराइंदा। गुरमुख सज्जण लए उभार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। कमलापाती कँवल नैण खोल्ह किवाड़, साची ताकी आप तुड़ाइंदा। साकी बण बण देवे जाम अपार, मधुर जाम इक्क प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग एका चौकड़ ना कोई सिहारी ना कोई अउँकड़, कन्ना मुक्ता ना कोए रखाइंदा। कन्ना मुक्ता ना कोए बिन्दी, अक्खर अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। दीन दयाल सर्ब गुण ठाकर इक्क बख्शंदी, दीनन आपणी दया कमाईआ। उर्दू फ़ारसी ना कोए पढ़ाई हिन्दी, लफ़ज़ लफ़ज़ ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आप चलाईआ। आपे दूल्हा आपे दुल्हण, दोए दोए रूप धराईआ। आपे मालण आपे फूलण, आपे बरखा रिहा लगाईआ। आपे कन्त आपे कन्तूहलण, आपे बह बह खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, आपणा रंग वखाईआ। आपे फूलण आपे सेज, आपे सोभा पाइंदा। आपे जोती आपे तेज, आपे रंग चढ़ाइंदा। आपणा आप आपे वेख, आपे खुशी मनाइंदा। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोए मूंड मुंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा ना कोए महेष, सुरपति रंग ना कोए रंगाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरीआं लोआं ना कोए देस, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पंडत पांधा ना कोई दिसे मुलां शेख़, तसबी माला ना कोए रखाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर उच्चे टिल्ले पर्बत ना कोई दिसे बालू रेत, सागर सरोवर ना कोए जणाइंदा। भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख करे ना कोई हेत, पंज तत्त चरन नत नाता नाता ना कोए जुड़ाइंदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ ना कोई सरोवर ना कोई तट, ना कोई वणजारा ना कोई हट्ट, वस्त वस्त ना कोए वखाइंदा। ना कोई संगी ना कोई साथ, ना कोई देवे हत्थो हत्थ दात, ना कोई दिवस ना कोई रात, पिता मात ना कोए जणाइंदा। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ना कोई नार दिसे कमज़ात, ना कोई डूँघा रखे खात, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। इक्क इकल्ला पुरख समरथ, आपणी महिमा जाणे अकथ, आप चलाए आपणा रथ, जुग जुग आपणी सेव कमाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, विष्न ब्रह्मा शिव राह चलाइंदा। अन्तिम पूरी करे आस, लेखा सर्ब मुकाइंदा। लोकमात होए उदास, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। नाता तुटणा पृथ्मी आकाश, मंडल मण्डप ना कोए वड्याइंदा। अन्तिम पूरे होए सास, स्वास पवण ना कोए वधाइंदा। घर घर बैठे होए निरास, आसा पूर ना कोए कराइंदा। जिस ने उपजाई आपणी शाख़, सो आपणी हत्थीं वढ्ढ वखाइंदा। अन्तिम करनी ढेरी खाक, ख़ाकी ख़ाक मिलाइंदा। कोई ना दिसे सज्जण साक, वेले अन्त छुडाइंदा। चारों कुण्ट बैठे झाक, नाता नज़र कोए ना आइंदा। थल्ले दिसे ना कोई खाट, तक्कीआ सीस ना कोए टिकाइंदा। काया बस्त्र गया पाट, हत्थीं तन्द ना कोए लगाइंदा। चारों कुण्ट आया घाट, घाटा पूर ना कोए कराइंदा। किसे नज़र ना आए त्रिलोकी नाथ, तिन्नां लोकां मुख भुआइंदा। किसे कम्म ना आए पूजा पाठ, पढ़ पढ़ रसना जिह्वा सर्ब गाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे आप पुरख समरथ, आपणी कल आप वरताइंदा। चार जुग दी क्रिया करनी देवे मथ, उपर आपणा बल धराइंदा। अभिमानीआं माण जाए ढट्ठ, मोह ममता ना कोए रखाइंदा। उलटी गेड़े आपे लट्ठ, गेड़ा गेड़े विच रखाइंदा। जन भगतां मार्ग एका दस्स, आपणी बूझ बुझाइंदा। सचखण्ड निवासी आए नट्ठ, लोकमात फेरा पाइंदा। हरिसंगत कर इक्क इक्ट्ठ, आपणा रंग चढ़ाइंदा। नाता तुट्टा मढ़ी गौर मट्ठ, शिवदुआला नज़र कोए ना आइंदा। सारे सत्थर बैठे घत्त, मन्दिर मसीत सर्ब कुरलाइंदा। इक्को यारड़ा होए प्रगट, गोबिन्द पूरी आस कराइंदा। देवे एका साची वथ, नाम ख़ज़ाना आप वरताइंदा। लेखे लाए रत्ती रत्त,

रतन अमोलक आपणी गोलक गुरमुख आप टिकाइंदा। बीज बीजे साचे वत, पत डाली आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा वेस आप धराइंदा। वाहवा हरि जू धरया वेस, वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। जन भगतां वेखे काया देस, परदेसों चल के आया माहीआ। किसे ना लभ्भे रूप रेख, रंगत रंग ना कोए वखाईआ। इक्को मेला दस दस्मेश, विछड़यां लए मिलाईआ। अंदर बाहर रहे हमेश, आपणी गंढु पुआईआ। नानक लेखे लाई खूंडी भूरी खेस, बण चरवाहा सेव कमाईआ। अन्तिम कर इक्क आदेश, एका मंग मंगाईआ। तूं साहिब सुल्तान नर नरेश, शहिनशाह वड्डी तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि रहें हमेश, ना मरे ना जाईआ। तेरा कोए ना पाए भेत, तेरी महिमा गणत गिणी ना जाईआ। तेरा इक्को सच्चा हेत, चरन सरन सच्ची शरनाईआ। आपणे नेत्र मैनूं वेख, मेरा नेत्र आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। हरि जू अग्गों कहे हस्स, एका शब्द सुणाया। निरगुण धार निरगुण दस्स, निरगुण मेला मेल मिलाया। सच दुआरे आउणा नस्स, सचखण्ड इक्क वखाया। अग्गे वेखे जोत प्रकाश, नूर नुराना डगमगाया। दोए जोड़ करे अरदास, प्रभ अग्गे बेनन्ती इक्क सुणाया। हउँ चाकर सेवक तेरा दास, मैं सेवक सेव कमाया। तेरी वस्त तेरी रास, तेरे हट्ट विकाया। सर्ब गुणा गुण तूं ही तास, हथ्थ तेरे वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल कराइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। नानक निरगुण हुक्म सुणाइंदा, हुक्मी हुक्म सति वरतार। एका वस्त झोली पाइंदा, नाम सति कर प्यार। जीव जंत वरताइंदा, ऊँच नीच आधार। राउ रंक समझाइंदा, चार कुण्ट जैकार। चल चल आपणा पन्ध मुकाइंदा, बण पाँधी विच संसार। हरि गुण हरि आपे गाइंदा, इक्क वजाए रबाब सितार। अन्तिम इक्को मंग मंगाइंदा, दोए जोड़ करे निमस्कार। तेरा अन्त कोए ना पाइंदा, बेऐब परवरदिगार। कलयुग अन्त अन्धेरा छाइंदा, चारों कुण्ट होए धूआँधार। तुध बिन कोए ना पार लँघाइंदा, गुर अवतार गए हार। पीर पैग़म्बर खेल कराइंदा, ख़ालक ख़लक कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र कर एका वार। मेहर नज़र करीं करतार, एका मंग मंगाईआ। कवण बिध कलयुग उतरे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। तेरे भगतां मिले तेरा दुआर, सरन तेरी शरनाईआ। पुरख अबिनाशी सुत दुलार, एका गुण जणाईआ। तेरी इच्छया भरां भण्डार, जो मंगे सो देवां झोली पाईआ। नानक निरगुण बोल कहे पुकार, तूं निरगुण निहकलंक तेरी वड्डी वड वड्याईआ। तूं आवीं विच संसार, आपणा वेस वटाईआ। आपे वेखीं आपणी कार, जो घट घट रिहा कमाईआ। आपे भगत आपे लईं उभार, तेरी वंड ना किसे वंडाईआ। तूं दीन मज़्हब शरअ ईमान

तों वसया बाहर, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका ब्रह्म जणाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, एका हुक्म सुणाईआ। करां खेल अपर अपार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। छत्ती जुग दा तेरा उधार, नानक गुर गुर दयां चुकाईआ। लोकमात बण सिक्दार, सच सिक्दारी इक्क कमाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क मनार, महल अटल करां रुशनाईआ। भगत सुहेले अंदर वाड़, बाहर बह बह खुशी मनाईआ। आओ वेखो जिस करना दीदार, बिन दीदयां दयां वखाईआ। जिस नूं लभ्भदे जंगल विच पहाड़, कोटन कोटि धूंणीआँ लाईआ। जिस दे पिच्छे होए खुआर, घर घर फेरा पाईआ। सो साहिब सतिगुर प्रगट होए पुरख अकाल, आपणी कल वरताईआ। दे दरस करे निहाल, क्यामत इक्को झोली पाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लालन आपणे हट्ट विकाईआ। नाता जोड़ जगत जंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। अन्त अन्त ना खाए काल, राए धर्म ना दए सजाईआ। करे आप सदा प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत हरिसन्त वेखे हरि जू आपणे लाल, मुर्शद मुरीद आशक माशूक शिकवा शाकूक सब दा दए चुकाईआ। एका आपणी रख तौफीक, पीरन पीर वेखे रफीक, करे खेल लाशरीक, कलयुग मेटे अन्धेरा तारीक, जिस दी मुहम्मद ईसा रख के गए उडीक, सो प्रगट होवे ना कोए बणाए फ़रीक, फ़िरका रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि जन जन हरि आपणे संग रखाईआ।

४६४ ११

★ १४ माघ २०१८ बिक्रमी धिरता सिँघ दे गृह कलानौर ज़िला गुरदासपुर ★

सचखण्ड सोहे हरि दरबार, सो पुरख निरँजण आसण लाईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यार, हरि पुरख निरँजण खुशी मनाईआ। इक्क इकल्ला हो त्यार, एकँकारा बल वखाईआ। आपे जाणे आपणी धार, आदि निरँजण नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप सुहाईआ। सच दरबार गया लग्ग, सति पुरख निरँजण आप लगाइंदा। जोधा सूरबीर सरबग, शाह पातशाह खेल कराइंदा। नाम नगारा गया वज्ज, अनाद नादी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप वड्याइंदा। सच दरबारा सोभावन्त, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादि बणाए बणत, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप लगाईआ। सच दरबारा हरि निरँकारा, एका घर लगाइंदा। एका हुक्म इक्क वरतारा, शाह पातशाह इक्क सुणाइंदा। एका मन्दिर खोल्ह किवाड़ा, एका घर सोभा

पाइंदा। एका नाम नाद जैकारा, एका हक़ हक़ सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप बणाइंदा। सच दरबारा गया बण, हरि साचा आप बणाईआ। करे खेल श्री भगवन, महल अटल उच्च रुशनाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मण्डप ना कोए वड्याईआ। निराकार आपणा बेड़ा आपे बन्न्, निरवैर रूप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। सच दरबारा हरि करतार, करता पुरख आप लगाइंदा। भूपत भूप बण राजान, शाह पातशाह आसण लाइंदा। आदि आदी इक्क फ़रमाण, पुरख अकाल आप सुणाइंदा। सति सतिवादी नौजवान, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे आपे चढ़, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। तख्त निवासी सोहे तख्त, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। ना कोई जाणे वेला वक्त, थित वार ना कोए समझाइंदा। ना कोए बूंद ना कोए रक्त, तत्तव तत्त ना कोए रखाइंदा। आप बणाए आपणी बणत, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा खेल कराइंदा। सचखण्ड हरि खेल अवल्ला, एका एक कराईआ। अजूनी रहित वसे सच महल्ला, दर घर साचा आप सुहाईआ। मूर्त अकाल एका नूर जोती बला, नूर नुराना डगमगाईआ। सच संदेश नर नरेश एका घल्ला, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा इक्क वखाईआ। सच दरबारा श्री भगवान, आदि पुरख बणाइंदा। एका हुक्म एका हुक्मरान, हुक्मी हुक्म इक्क भुआइंदा। एका एक वखाए सति निशान, शाह पातशाह आप झुलाइंदा। एका पाए साची आण, सिर सिर हुक्म मनाइंदा। एका खेल करे महान, भेव अभेद रखाइंदा। एका वसे सच मकान, साचा मन्दिर आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार आपे खड़, रूप अनूप आप वटाइंदा। सच दरबार सुहाया, पुरख अकाल अगम्म। निरगुण आसण लाया, करे कराए आपणा कम्म। शब्दी सुत उठाया, बिन माता पिता जम्म। साची गोद सुहाया, करे खेल श्री भगवन। एका नाउँ वड्याआ, नाउँ निरँकारा चढ़या चन्न। साचे मार्ग आपे लाया, देवे धुर फ़रमाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल महान। खेल महाना श्री भगवाना, सचखण्ड निवासी आप कराईआ। जोधा सूरबीर बली बलवाना, नौजवाना बल आपणा आप रखाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म हुक्मराना, धुर फ़रमाणा एका एक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क जणाईआ। सच संदेशा हरि करतार, एका एक सुणाइंदा। शब्द सुत हो त्यार, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी होए पार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग आई अन्तिम वार, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। हुक्म देणा एका वार,

गुर अवतार उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। करोड़ तेतीसा दे हुलार, सुरपति नाल मिलाइंदा। रवि ससि दए उठाल, नेत्र नैण खुल्हाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड बोल जैकार, एका नाद सुणाइंदा। लख चुरासी कर विचार, त्रैगुण माया मोह रखाइंदा। पंचम तत्त वेख अखाड़, बूंद रक्त नाच नचाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँग्घी गार पर्बत टिल्ले एका राह जणाइंदा। समुंद सागर वेख धार, जल थल महीअल आप समझाइंदा। वेद शास्त्र खोल्ह किवाड़, सिमरत पुराण नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत उठ बल धार, हरि साचा सच जणाईआ। कलयुग आई अन्तिम वार, पुरख अबिनाशी खेल वखाईआ। निरगुण नूर हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। निहकलंका लए अवतार, नाम डंका इक्क वजाईआ। दो जहानां कर ख़बरदार, चौदां लोक नैण खुल्हाईआ। चौदां तबक मार मार, एका नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। जिमी असमाना दए हुलार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क समझाईआ। साची सेवा कर साचे सुत, सो पुरख निरँजण आप जणाया। करे खेल अबिनाशी अचुत, लोकमात वेस वटाया। कलयुग औंध गई पुग, वेला अन्तिम आया। गुर अवतार पीर पैग़म्बरां पैंडा गया मुक्क, पाँधी बण बण पन्ध मुकाया। लख चुरासी बूटा रिहा सुक्क, हरया नज़र कोए ना आया। सफ़ल ना दिसे माता कुक्ख, जन जनणी दए दुहाया। चारों कुण्ट अन्धेरा घुप्प, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। जीव जंत उज्जल करे ना कोई मुख, नेत्र नैण सर्ब शरमाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर रिहा बुक्क, आपणा बल धराया। अमृत सोमा किसे ना पए फुट, निझर झिरना ना कोए झिराया। निर्मल जगे ना कोई जोत, अन्ध अन्धेरा एका छाया। नाता बज्झा वरन गोत, आत्म परमात्म ना कोए मिलाया। हरि जू मिले ना काया कोट, झूठा गढ़ बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क समझाया। धुर फ़रमाणा देवे निरँकार, हरि शब्दी सेव लगाईआ। कलयुग आई अन्तिम वार, पुरख अबिनाशी खेल कराईआ। लहिणा देणा वेखे गुर अवतार, चार जुग चौंकड़ मूल चुकाईआ। साचे तख़्त बैठ सच्ची सरकार, साचा हुक्म सुणाईआ। चल आ आउणा विच संसार, लोकमात वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा एका वार जणाईआ। सच संदेशा ल्या सुण, हरि सतिगुर आप सुणाया। चार जुग दा वेखणा गुण, अवगुण नाल मिलाया। सर्ब पुकार लए सुण, इक्क इकल्ला फेरा पाया। लेखा जाणे रिख मुन, भेव अभेद आप चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म हरि वरताउणा, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सच दरबार इक्क सुहाउणा,

४६६
११

सोभावन्त बेपरवाहीआ। निरगुण उपर आसण लाउणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गुर अवतार दर मंगाउणा, लेखा सब दा वेखे थाउँ थाईंआ। पीर पैग़म्बर दर दरबार बाहर बहाउणा, एका हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नैण शरमाउणा, नेत्र सके ना कोए उठाईआ। करोड़ तेतीसा ढोला गाउणा, एका नाद वजाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सब ने पल्लू छुडाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा अगम्म अपारा, एका एक सुहाईआ। कलयुग वेखे अन्त किनारा, बेअन्त बेपरवाहीआ। निरगुण निराकार लै अवतारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, वरन बरन फोल फुलाईआ। जीव जंत खोल्ह किवाड़ा, घट घट आसण लाईआ। छुपया रहे ना विच संसारा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अथाह, अचरज खेल कराइंदा। निरगुण रूप बण मलाह, लोकमात फेरा पाइंदा। सरगुण देवे सच सलाह, एका नाम जणाइंदा। गोबिन्द मेला सहिज सुभा, पुरख अकाल मनाइंदा। सम्बल डेरा एका ला, सच तख्त वड्याइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म जणा, एका वार सुणाइंदा। खेले खेल दो जहां, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां वेख वखाइंदा। लेखा जाणे थाउँ थाँ, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दुआरा खेल न्यारा, निरगुण दाता आप कराइंदा। निरगुण दाता हरि दातार, दयावान वड्डी वड्याईआ। लोकमात हो उज्यार, साची घाड़त आप घड़ाईआ। चारे खाणी पावे सार, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। चारे जुग बन्न्है धार, चारे वेद भेव चुकाईआ। चारे वरनां खोल्ह किवाड़, चार यारी दए समझाईआ। चारों कुण्ट बोल जैकार, चौथे पद खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताईआ। कलयुग वरते हरि जू कल, अकल कला वरताइंदा। जुगा जुगन्तर अछल अछल, आपणा वेस वटाइंदा। आप आपणा जाणे बल, कलयुग पन्ध मुकाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जोती शब्दी आपे रल, निरगुण वेस वटाइंदा। सच सिंघासण एका मल, सोभावन्त आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप समझाइंदा। सच दरबारा लगाउणा मात, पारब्रह्म जणाइंदा। लख चुरासी वेखे मार झात, नेत्र नैण आप खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा तोड़े साक, बन्धन बंध ना कोए रखाइंदा। करोड़ तेतीसा उतरे आपणे घाट, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग सुत्ते डूँग्घे ख़ात, पार किनारा ना कोए जणाइंदा। धूंआँधार मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ाइंदा। जन भगतां पुछे आपे वात, सन्त सुहेले आप मिलाइंदा। गुरमुखां दरस दखाए इक्क इकांत, नूरो नूर डगमगाइंदा।

गुरसिखां देवे साची दात, नाम भण्डार आप वरताइंदा। नाता तुट्टे ज़ात पात, दीन मज़्ब ना वंड वंडाइंदा। अन्तर आत्म एका गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। एथे ओथे देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कमलापात, गुरमुख नारी आप प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबारा आप बणाइंदा। सच दरबारा बणाए बणत, घाड़त आपणी आप घड़ाईआ। आपे जाणे आदि अन्त, मध आपणी खेल कराईआ। वेस वटाए जुगा जुगन्त, जुग जुग रूप धराईआ। लेखा जाणे साध सन्त, बेअन्त वड वड्याईआ। महिमा गाए आप भगवन्त, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। हरिजन मेला साचे कन्त, कन्त कन्तूहल दए शरनाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका नाम मणीआ मंत, बिन रसना जिह्वा करे पढ़ाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साची कार, करे कराए करनेहार, निरगुण सरगुण पावे सार, रूप अनूप शाहो भूप सति सरूप लोकमात आप प्रगटाईआ। सति सरूप सति सतिवादी सति पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मांड आपणा रंग रंगाइंदा। आपे होए आदि जुगादी, जुग करता वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबार इक्क वखाइंदा। वेखो हरि दरबार, हरि जू आप बणाया। लख चुरासी ना पावे सार, नेत्र नज़र किसे ना आया। सृष्ट सबाई होई विभचार, धीरज सति ना कोए रखाया। कलयुग मारे झूठी मार, एका खण्डा हथ्थ उठाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार सुट्टे मूँह दे भार, कोई सके ना बल धराया। आसा तृष्ना कर खुआर, माया ममता जीव भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबार आप सजाया। सच दरबार साहिब सुल्तान, सति पुरख निरँजण आप सुहाईआ। कलयुग खेल करे महान, भेव कोए ना पाईआ। लहिणा देणा चुक्के जीव जहान, बाकी कोए रहे ना राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुक्के आण, हरि पाँधी आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक्क समझाईआ। सच दरबार इक्क सुहाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। लोकमात आप लगाउणा, पहली चेत्र रुत्त सुहाइंदा। गोबिन्द सूरा दर बुलाउणा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। पिछला लेखा सर्ब चुकाउणा, खाता खाता आप भराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाउणा, सत्तां दीपां पर्दा लाहइंदा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, राजन राज ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड आप वंडाइंदा। साची हरि जू वंडे वंड, एका बन्धन पाईआ। कलयुग मेटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा चढ़े चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, पारब्रह्म बेपरवाहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। साचा बन्धन हरि पाउणा, एका वार जणाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार मंगाउणा, दर दरवेश खेल कराइंदा। धुर फ़रमाणा इक्क सुणाउणा, एका नाम दृढ़ाइंदा। सोहँ ढोला सब ने गाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। सोहँ ढोला गाउणा गीत, हरि सतिगुर दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम गया बीत, लोकमात रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म प्रभ साची रीत, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। पुरख अकाल इक्क अतीत, सच सिँघासण सोभा पाईआ। एका रंग हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। एका मन्दिर इक्क मसीत, गुरदुआर इक्क वखाईआ। एका नाम हरि अनडीठ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, जिस जन आपणा रस चखाईआ। एका गाओ गोबिन्द गीत, पुरख अकाल इक्क शरनाईआ। मानस मानुख जन्म लैणा जीत, चित वित ठगोरी कोए ना पाईआ। साहिब सतिगुर सच्चा मीत, मित्र प्यारा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां एह समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मुलां शेख़, हरि जू हरि हरि आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम मिटी रेख, लेखा होर ना कोए वखाइंदा। लहिणा देणा देवे गुर दस्मेश, दहि दिशा आपणी वंड वंडाइंदा। दर बुलाए विष्न ब्रह्मा महेष, शंकर एका हुक्म जणाइंदा। तिस साहिब को सदा आदेस, जो हुक्मी हुक्म फिराइंदा। तिस अग्गे चले ना कोई पेश, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी करनी आपे वेख, गुर अवतार नाल मिलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करया वेस, वेस अनेका खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप समझाइंदा। पीर पैग़म्बर खोल्हो अक्ख, हरि आखर आप जणाइंदा। मुर्शद मुरीद लओ रख, एका हुक्म सुणाइंदा। मुलां शेख़ करो पक्ख, साची वंड वंडाइंदा। अन्त निबेड़ा हक़ो हक़, हक़ हक़ीक़त आप जणाइंदा। मुकामे हक़ हो प्रतख, परवरदिगार सोभा पाइंदा। लाशरीक वसे घट घट, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार आप सुणाइंदा। सच दरबार सुणाए इलाही नूर, आलमीन समझाईआ। एका नाद एका तूर, दूर दुराडा आप जणाईआ। एका सर्बकला भरपूर, बेअन्त बेपरवाहीआ। एका बन्न्हे सच दस्तूर, कलमा कलाम आप पढ़ाईआ। धुर फ़रमाणा देवे नबी रसूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैग़म्बर आप जगाईआ। पीर पैग़म्बर जाणा जाग, कलयुग वेला अन्तिम आया। चौदां तबक वेखो साक, मुहम्मद नाल रलाया। अल्ला राणी वेखो पाक, पाकी पाक रूप धराया। चारों कुण्ट लैणा झाक, कवण रिहा संग निभाया। अन्तिम सब ने होणा ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण रिहा समझाईआ।

गुर अवतार पीर पैग़म्बर करो ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। कवण घर उपजे ज्ञान, कवण करे सच पढ़ाईआ। ब्रह्मण ब्रह्म ना सके पछाण, मुस्लिम मसल्ला हक़ ना कोए विछाईआ। सिख सिख्या करे ना कोए परवान, निरगुण नानक मेल ना कोए मिलाईआ। ईसा देवे ना कोए पैग़ाम, पैग़म्बर गोद ना कोए उठाईआ। ब्रह्म करे ना कोए परवान, ईश जीव ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट होई वैरान, चार वरन पई लड़ाईआ। किसे ना दिसे सच ईमान, शरअ इलम ना कोए पढ़ाईआ। घर वड़्या पंज शैतान, अठ्ठे पहर दुखदाईआ। किसे मिल्या ना सच्चा काहन, गोपी रास ना कोए रचाईआ। किसे पाया ना एका राम, सीता सुरती दए दुहाईआ। किसे गाया ना सतिनाम, नाम सति ना वज्जी वधाईआ। किसे मिल्या ना गोबिन्द आण, गुर गुर बैठा मुख छुपाईआ। चारों कुण्ट दिसे बीआंबान, साचा फुल्ल ना कोए महकाईआ। कलयुग करे अन्त वैरान, आपणा बल धराईआ। पुरख अबिनाशी हुक्मरान, साचा खेल कराईआ। लेखा जाणे जीव जहान, जगत जुगत आपणी वंड वंडाईआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण, जीव जंत पढ़ ना सके वखाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबारे दए वड्याईआ। सच दरबारे हरि जू चढ़या, तख्त निवासी आसण लाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मुलां शेख़ पंडत पांधा आपे फड़या, एका नाम बन्धन पाया। लख चुरासी बण ठठयार भाण्डा घड़या, अन्त श्री भगवन्त आपे भन्न वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठा दरया, प्रभ अबिनाशी खेल निरगुण करया, बैठे सीस झुकाया। ना जीवत ना मरया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथाह, आदि जुगादी बेपरवाह, जुग जुग बेड़ा रिहा चला, कलयुग वेखे आपणा थाँ, थान थनंतर आप सुहाया। थान थनंतर सोहया, हरि साचा आप सुहाइंदा। धुरदरगाही लै के आया ढोआ, एका नाम आप वरताइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोआ, बेअन्त सर्ब गाइंदा। आलस निंद्रा विच कदे ना सोया, एका रंग समाइंदा। आपणे जिहा आपे होया, दूजा संग ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अपारा, हरि सतिगुर आप कराईआ। सतिजुग बन्न्हे साची धारा, सति सतिवाद करे पढ़ाईआ। जन भगतां मेले इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। एका इष्ट गुर अवतारा, एका देवा देव समझाईआ। एका नाम बोल जैकारा, कलमा कलाम इक्क पढ़ाईआ। एका राम कृष्न सहारा, एका ईसा मूसा रंग वटाईआ। इक्क मुहम्मद दए आधारा, एका चार यार मिलाईआ। एका सतिनाम बन्न्हे धारा, एका नानक निरगुण शरनाईआ। एका फ़तेह बोल जैकारा, गोबिन्द डंक वजाईआ। एका वसे सब तों बाहरा, दिस किसे ना आईआ। एका निरगुण निहकलंक लए अवतारा, लोकमात जोत प्रगटाईआ। एका खण्डा इक्क कटारा, चण्ड

प्रचण्ड इक्क चमकाईआ। एका अमृत ठंडा ठारा, घर घर प्याला दए प्याईआ। एका दीआ बाती जोती कर उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। एका सज्जण मीत मुरारा, सगला संग निभाईआ। एका पंचम करे प्यारा, पंचम पंच मुख सालाहीआ। एका वसे धाम न्यारा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। एका खोल्हे बन्द किवाड़ा, थिर घर ताकी आपे लाहीआ। एका वसे धूआँधारा, सुन अगम्म समाईआ। एका विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यारा, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाईआ। एका पंचम तत्त लगाए अखाड़ा, एका अनहद नादी नाद वजाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका जुग जुग वेस वटाईआ। एका वेद शास्त्र सिमरत करे प्यारा, एका गीता ज्ञान दृढ़ाईआ। एका अञ्जील कुरानां दए हुलारा, तीस बतीसा एका गाईआ। एका खाणी बाणी खोल्ह दुआरा, वरन बरन करे पढ़ाईआ। एका रागी नादी वसे बाहरा, छत्ती राग भेव ना राईआ। एका अठसठ तीर्थ जाणे तट किनारा, मन्दिर मसीत मट्ठ गुरुदुआरा फोल फुलाईआ। एका हट्ट एका वणजारा, एका वस्त आप वरताईआ। एका मन्दिर इक्क मनारा, अस्थिल रूप इक्क समझाईआ। आदि अन्त खेल अपारा, मध आपणी धार वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पार किनारा, छत्ती छत्ती बन्धन दए तुड़ाईआ। कलयुग जूठ झूठ कर खुआरा, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। सतिजुग बन्न्हे साची धारा, सति पुरख निरँजण आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। हरि भगतां मेले आपणे दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। अठ्ठे पहर नाद धुन्कारा, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। सर सरोवर ठंडा ठारा, दुरमति मैल धुआईआ। कागों हँस हँस उडारा, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। भगतां खोल्हे इक्क भण्डारा, साचा नाम आप वरताईआ। राज़क रिज़क रहीम परवरदिगारा, बेऐब वेस वटाईआ। फर्ज़ंद सुत वेखे आप दुलारा, गुरमुख गुरसिख मुर्शद मुरीद गुर चेला वेस वटाईआ। जीवण जुगत जगत दए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप लगाईआ। सच दरबार पुरख करतार, अबिनाशी आप लगाइंदा। जन भगतां करे इक्क प्यार, एका घर वखाइंदा। नेत्र लोचण दरस दीदार, दीद ईद वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, ब्रह्मा वेता भेव ना आइंदा। विष्नूं रोवे ज़ारो ज़ार, शंकर आपणी त्रसूल सुटाइंदा। बाशक सेजा ना कोए प्यार, सागों पांग ना कोए हंढाइंदा। पुरख अबिनाशी करे कार, आपणी किरत आप कराइंदा। पिछला लेखा रहे ना विच संसार, अगला पन्ध आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह विच संसार, सति सतिवादी आप चलाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका रूप वटाईआ। दीन मज़्हब कर खुआर, ज़ात पात मोह तुड़ाईआ। ऊँच नीच ना कोए विचार, एका ब्रह्म समझाईआ। एका गुरू दए वखाल, शब्दी शब्द नाउँ धराईआ। एका इष्ट पुरख अकाल, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। आदि जुगादि चले

नाल नाल, जन्म मरन विच ना आईआ। सेवा लाए काल महांकाल, राए धर्म नाल मिलाईआ। चित्रगुप्त आप उठाल, साची सिख्या इक्क समझाईआ। लाड़ी मौत कर दलाल, जीव जहानां बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, सच दुआरे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरे वंडी वंड, वंडणहार गोपाला। कलयुग अन्तिम नंगी करे कंड, ना दिसे कोए रखवाला। सृष्ट सबाई रोवे वरभण्ड, लख चुरासी होए बेहाला। किसे नज़र ना आए गुज़री नंद, चारों कुण्ट अन्धेरा काला। कोए ना गाए साचा छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल मात निराला। करे खेल निराली जोत, अकाली भेव कोए ना पाइंदा। धुरदरगाही सच्चा माली, श्री भगवान आपणी खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाली, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म आपे भाली, मिल मिल सक्खी साचा काहन आपणा रंग वखाइंदा। भगत भगवन्त चढ़ाए लाली, लाल गुलाला रंग इक्क वखाइंदा। दीपक जोत वखाए साची थाली, गगन मंडल सोभा पाइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श गगनंतर पाताली, डूँग्घी धार फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अथाह बेपरवाह निरगुण आपणा रंग वटाइंदा। निरगुण रंग अनमोल, दिस किसे ना आईआ। कलयुग तोले आपणे तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। जीव जंत साध सन्त रहे अनभोल, हरि का भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआरा लोकमात देवे खोल्, सेवक सेवा आप कमाईआ। हरिजन साचे रख अडोल, लख चुरासी विच्चों लए तराईआ। आत्म अन्तर शब्द अगम्मी एका बोल, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। सरगुण अंदर निरगुण मौल, उलटा करे नाभ कौल, अमृत झिरना इक्क झिराईआ। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेखे घर घर, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हरि जी फिरना, आपणा बल रखाइंदा। लख चुरासी अंदर वड़ना, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। गुरसिख गुरमुख हरि सन्त भगत आपे फड़ना, चार जुग दे विछड़े मेल मिलाइंदा। मढ़ी गोर कदे ना सड़ना, त्रैगुण अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। नेत्र खोले् हरना फरना, रूप अनूप आप समझाइंदा। साचा घाड़न हरि जू घड़ना, घाड़त घड़नहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग चले साची धार, सतिगुर पूरा आप चलाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, एका घर बहाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका धुन सुणाईआ। एका घर मंगलाचार, एका वज्जे वधाईआ। एका निरगुण जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। एका बणया कन्त भतार, लख चुरासी सखी रिहा हंढाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआर, गुरू इष्ट इक्क वखाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पारब्रह्म

बेपरवाहीआ। ज़ात पात शरअ मज़्ब ते वसया बाहर, जूठा झूठा बन्धन ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए उठाल, एका रखे अग्गे सवाल, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। उठो वेखो नेत्र खोल्हो आपो आपणे वेखो लाल, जीव जंत जंत समझाईआ। कवण वसे धर्मसाल, कवण मन्दिर बैठा सुरत संभाल, कवण मस्जिद सजदा सीस झुकाईआ। सारे वेख होए हैरान, अंदर किसे ना दिसे ज्ञान, रसना जिह्वा रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब नूं रिहा समझाईआ। सारे सुणो करो ध्यान, हरि जू हरि सुणाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलया ज्ञान, अज्ञान नाल मिलाया। रसना पढ़ पढ़ जिह्वा कह कह कर वखान, अंदर वड़ दरस किसे ना पाया। इक्क दूजे नूं कहिण श्री भगवान, आपणे घर ना किसे बहाया। नानक गोबिन्द कहे वखान, सृष्ट सबाई एह समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण नूर नूर धराया। निरगुण नूर जोती धार, निहकलंक वड्याईआ। महांबली उतरे आपणी वार, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। सम्बल वसया धाम न्यार, साचे बंक वड्याईआ। एका शब्द बोल जैकार, ब्रह्मण्ड खण्ड लए उठाईआ। एका खण्डा तेज़ कटार, नाम चण्ड प्रचण्ड चमकाईआ। जेरज अंड मारे मार, उत्भुज सेत्ज दए खपाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। रंग चलूल एका चाढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर रखे हथ्थ समरथ, हरिजन आप तराया। कलयुग वेखी पिछली वथ, सब दा लहिणा दए मुकाया। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, हरिजन साचे लए समझाया। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाया। पंच विकारा देवे झस्स, पंचम मोह मोह मिटाया। आपे करे पूरी आस, हरिजन साचे लए तराया। दरस वखा पुरख अबिनाश, आपणा भेव चुकाया। लहिणा देणा मुके पृथ्मी आकाश, अप तेज़ वाए ना रंग वखाया। मन मति बुध करे दास, एका शब्दी डंक वजाया। लेखा जाणे पवण स्वास, पवण पवणी फेरा पाया। नाता तोड़ दस दस मास, मात गर्भ फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप तराया। हरिजन तारे आप हरि, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। नाम भण्डारा एका भर, वस्त अमोलक आप वरताईआ। निरभउ चुकाए झूठा डर, भय अवर ना कोए वखाईआ। इक्क नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धुआईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, जूठ झूठ दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन लए वर, बरन अठारां पन्ध मुकाईआ। बरन अठारां मुक्के पन्ध, कलयुग अन्तिम वार। सृष्ट सबाई एका छन्द, गाए सर्ब संसार। आत्म अन्तर इक्क अनन्द, निजानंद उरधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

४७३ ११

४७४
११

हरिजन साचे लाए पार। हरिजन तेरा पार किनारा, सतिगुर पूरा आप वखाईआ। नाता तुट्टा जीव संसारा, शाकत निन्दक दुष्ट दुराचारा संग ना कोए वखाईआ। गुरमुख मेल इक्क दुआरा, एका घर वज्जे वधाईआ। गृह गृह मिले मीत मुरारा, गुर गुर रूप वटाईआ। पंचम सखीआं मंगलाचारा, एका गीत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, सतिजुग साचा राह वखाईआ। नानक मेला सच्चे गुरसिख, जिस सिख्या सतिगुर भाईआ। अंदरों कढ्ढे झूठी वख, माया मोह गंवाईआ। पंच विकारा छड्डे हित्त, काम क्रोध ना कोए लड़ाईआ। सेवक रहे नित नित, बण चाकर सेव कमाईआ। नानक सतिगुर ना देवे पिट्ठ, जो गुरसिख रहे शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साची रीत रिहा समझाईआ। गुरसिख पहलों कर त्यारी, आत्म अन्तर दए अधार। पंज तत्त नाता तोड़ विकारी, जूठा झूठा मोह प्यार। काया महल्ल वेख अटारी, उच्चो ऊँच अगम्म अपार। अंदर लभ्भे फिर जोत निरँकारी, जो गुरसिख सिख्या करे विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नानक निरगण गुरसिख साचे करे प्यार। सतिगुर जाणी जाण, नानक गया समझाईआ। पहलों करे आप पहचान, पहचान विच किसे ना आईआ। मन अंदर खेल महान, छिन्न छिन्न रूप वटाईआ। जिस सतिगुर करे ज्ञान, अक्खर अक्खर दए पढ़ाईआ। तिस सथिर रहे ध्यान, मन वासना ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे गुरसिखां अंदर वड़ वड़ महल्ले चढ़ चढ़ सुरती फड़ फड़, बिन बोल्यां दए समझाईआ। गोबिन्द सूरा गुरसिख मीत, इक्को इक्क वखाइंदा। जो गुर की जाणे रीत, तिस सतिगुर वेख वखाइंदा। अंदर वेखे धाम अनडीठ, अनडिठड़ी कार कराइंदा। पहलों मन नूं लैणा जीत, मन वासना सर्ब मिटाइंदा। फिर गोबिन्द करे प्रीत, अंदर वड़ वड़ बूझ बुझाइंदा। परखणहारा साची नीत, वल छल विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदरगत आप जणाइंदा। काया अंदर डूँघी गार, कोटन कोटि वासना विच भराईआ। मन मनुआ फिरे वारो वार, दहि दिशा फेरा पाईआ। गुरमुख विरला लए सुरत संभाल, मन बन्धन एका पाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख तेरी काया जे सुच्ची होए धर्मसाल, फिर गोबिन्द अंदर डेरा लाईआ। अंदरे अंदर हल्ल करे सवाल, बिन बूज्झयां बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गोबिन्द खेल हरि, हरि जू आपणा आप वखाईआ। नानक गोबिन्द पाउणा औखा, रसना जिह्वा सर्ब कुरलाइंदा। जगत विकार देवे धोखा, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कोई ना वेखे काया कोठा, अंदर वड़ ना दरसन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तरगत ब्रह्म मति एका तत्त,

बिन रत्ती रत्त आप समझाइंदा। अन्तरगत ब्रह्म ज्ञान, निष्अक्खर हरि पढ़ाईआ। बिन पुछयां पुछे आण, नानक गोबिन्द दरस अजे ना पाईआ। नेत्र रूप ना सके पछाण, नूर नूर ना कोए वखाईआ। गीत सुणया ना अगम्मी कान, नाद धुन ना कोए शनवाईआ। अंदर सेजा होई वैरान, सतिगुर उत्ते बैठा ना चाँईं चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गोबिन्द गुरमुख विरले आप मिलाईआ।

★ १५ माघ २०१८ बिक्रमी धिरता सिँघ दे गृह कलानौर ज़िला गुरदासपुर ★

आदि जुगादि श्री भगवान, हरी हरि आपणा खेल कराइंदा। विष्नूं विश्व देवे दान, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म कर प्रधान, पारब्रह्म प्रभ वंड वंडाइंदा। शंकर देवे इक्क ज्ञान, साखायात रूप दरसाइंदा। शस्त्र अशतर इक्क महान, त्रै त्रै मूल वखाइंदा। शाह पातशाह इक्क हुक्मरान, शहिनशाह हरि खेल खलाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। विष्नूं देवे हरि हरि दात, दाता दानी दया कमाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म खात, एका घर वखाईआ। शंकर लेखा भोले नाथ, भोले भाउ समझाईआ। तिन्नां लेखा त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै बन्धन पाईआ। खेले खेल खेल तमाश, पंचम एका रंग चढ़ाईआ। लख चुरासी कर कर वास, घट घट सोभा पाईआ। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, रवि ससि करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप चलाईआ। साची धार विष्न अंग, हरि सच्चा सच जणाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म सेज पलँघ, सो पुरख निरँजण आप हंढाइंदा। शंकर वजाए इक्क मृदंग, जो घड़या भन्न वखाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, आदि अन्त भेव कोए ना पाइंदा। कोटन कोटि जुग चौकड़ी गए लँघ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह साची धार, विष्न विश्व आप चलाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म कर पसार, अंस बंस सोभा पाईआ। शंकर लेखा धूआँधार, सुन्न समाध रखाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। साची रीता विच संसार, जीव जंत वड्याईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी कर त्यार, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। चार जुग बण पनिहार, सेवक साची सेव कमाईआ। अक्खर अक्खर कर त्यार, वेद वेद समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची बणत आप बणाईआ। साची बणत श्री भगवान, इक्क इकल्ला आप बणाइंदा। त्रै त्रै देवे एका

दान, एका वंड वंडाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, घट घट आसण लाइंदा। आत्म अन्तर इक्क महिमान, ईश जीव वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणे रंग आपे राता, रंग रतड़ा बेपरवाहीआ। आपे खेले खेल तमाशा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आपे करे पूरी आसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव हरि हरि खोल्ह, आपणा पर्दा लाहइंदा। निरगुण सरगुण तोले तोल, तोलणहारा वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी एका बोल, अनादी नाद सुणाइंदा। सच वस्त हरि रखे कोल, गुर अवतारां आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बन्धन आपे पाइंदा। साचा बन्धन जुग चार, चार चार वंड वंडाईआ। गुर पीर खेल करतार, नूर नूर नूर दरसाईआ। पीर पैग़म्बर कर त्यार, लख चुरासी करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, आपणी बूझ बुझाईआ। सन्तां देवे नाम दलाल, जगत विचोला इक्क वखाईआ। गुरमुखां चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिख वेखे साचे लाल, पूत सपूते गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल जुगो जुग, हरि करता आप कराइंदा। कलयुग औध गई पुग्ग, नव नौ चार पन्ध मुकाइंदा। निरगुण रूप सरगुण अंदर जो रिहा लुक, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। जोत उजाला हरि गोपाला शेर हो के रिहा बुक्क, एका भब्बक लगाइंदा। दो जहान रखाए ओट, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताइंदा। लख चुरासी काया वेखे किला कोट, गढ़ मन्दिर फेरा पाइंदा। जन भगतां कढ्ढे झूठी वासना खोट, मन्त्र अन्तर ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। नाम भण्डारा दए अतोट, अतुल आप वरताइंदा। मेल मिलावा निर्मल जोत, चतुर्भुज खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह चले जग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। कूड़ कुड़यारा मात कढ्ढ, सच सुच आप वरताइंदा। चार वरन प्याए नाम मदि, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी वेखे यद, बंस सरबंसा फोल फुलाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पार हद्द, छत्ती छत्ती वंड आप कराइंदा। सतिजुग सच निशाना देवे गड्ड, दो जहानां आप झुलाइंदा। भगत भगवन्त आपे सद्द, दर साचे मेल मिलाइंदा। अनहद वजाए साचा नद, धुंन आत्मक राग अल्हाइंदा। सच नगारा जाए वज्ज, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। लख चुरासी आपणा भार जाए लद, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार अंदर डेरा लाइंदा। मन वासना कोई कर ना सके बध, जगत कसाँई खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क लगाइंदा।

साचा मार्ग लग्गे राह, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। निरगुण सरगुण बणे मलाह, साचा बेड़ा आप चलाईआ। शब्द अगम्मी दए सलाह, एकँकार करे पढ़ाईआ। आदि निरँजण डगमगा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। सति सतिवादी वेस वटा, सति पुरख निरँजण रूप वटाईआ। निहकलंका नाउँ रखा, एका डंका राग अलाईआ। राउ रंकां दए जगा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठा, वेला अन्त दए समझाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द रोवे मारे धाह, जुग चौकड़ी बीते काल, काल सब नूं अन्तिम खाईआ। एका रहे दीन दयाल, दुनी नज़र कोए ना आईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता साचा पन्थ आप चलाईआ। साचा पन्थ चार वरन, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। एका पुरख एका सरन, एका नार रूप समझाइंदा। एका नाउँ हरि का बन्धन, दूजी विद्या ना कोए पढ़ाइंदा। एका मन्दिर सारे वड़न, मन्दिर मस्जिद गुरदुआर एका रंग चढ़ाइंदा। एका भउ एका डरन, एका भय वखाइंदा। एका दाता खोल्हे हरन फरन, नेत्र लोचण नैण आप खुल्हाइंदा। एका नाता तोड़े मरन डरन, लख चुरासी फंद कटाइंदा। एका होए घाड़न घड़न, भन्नणहार इक्क हो जाइंदा। एका होए चोटी चढ़न, घट घट आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाइंदा। साचा राह हरि संसार, सति सतिवादी आप लगाईआ। सतिजुग साचे दए अधार, साचा सुत मात प्रगटाईआ। धरत मात दी गोद बिठाल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगतन नाता नाल नाल, सगला संग निभाईआ। करे खेल पुरख करतार, कुदरत वेखे चाँईं चाईआ। प्रगट हो निहकलंक नर अवतार, नरायण आपणा वेस धराईआ। चतुर्भुज खेल न्यार, आदि भवानी वेस वटाईआ। अष्टभुज दर दरबार, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता इक्क इकल्ला एकँकार, अनक कल आपणी कार कराईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग सुणाए साची गाथा, करे खेल पुरख समराथा, अक्खर वक्खर नाम पढ़ाईआ। एका तीर्थ एका ताटा, एका पूजा एका पाठा, एका इष्ट देव मनाईआ। एका बन्धन एका नाता, एका अमृत एका बाटा, निझर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। साचा राह पुरख सुल्तान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। एकँकारा देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आदि निरँजण नूर महान, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वड बलवान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। श्री भगवान सच निशान, दो जहान आप झुलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर परवान, आपणा लेखा आप चुकाइंदा। खेले खेल नौजवान, रूप रंग रेख

४७७
११

ना कोए रखाइंदा। कागद कलम होए हैरान, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। गुर अवतार मंगण दान, प्रभ अग्गे झोली सर्ब डाहइंदा। पीर पैग़म्बर चरन कँवल करन ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। ईसा मूसा करन सलाम, मुहम्मद सजदा सीस झुकाइंदा। आदि जुगादी इक्क मेहरवान, जुग जुग खेल कराइंदा। कलयुग मिटे कूड़ निशान, कूड़ी क्रिया ना कोए वखाइंदा। सतिजुग साचा होए प्रधान, नाम प्रधानगी नाल ल्याइंदा। चार वरनां देवे इक्क ज्ञान, बरन अठारां आप समझाइंदा। नाता तोड़ झूठ जहान, सच सुच इक्क समझाइंदा। घर घर मेला गोपी काहन, सुरती शब्द रंग वखाइंदा। घर घर लेखा सीता राम, राम रामा रूप धराइंदा। घर घर ईसा मूसा दए पैग़ाम, हक़ हक़ हक़ जणाइंदा। दर दर मुहम्मद पकड़े दामन दाम, दामनगीर फेरा पाइंदा। गृह गृह नानक निरगुण जणाए सतिनाम, नाम नाम वड्याइंदा। मन्दिर मन्दिर गृह गृह घर घर काया बंक चढ़ चढ़ गोबिन्द वेखे साचा लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। अन्तिम पंज तत्त काया खाए काल, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुरमुख गुरसिख चरन प्रीती हरि हरि निभे नाल, सन्त भगत भगवन्त आपणी गोद बहाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग अगम्म अथाह, हरि सज्जण आप लगाईआ। भगत भगवन्त लए उठा, साचे सन्तां लए मिलाईआ। गुरमुख राग दए अला, अनादी नाद सुणाईआ। गुरसिख सज्जण मेल मिला, जन्म जन्म दा पन्ध मुकाईआ। दर दरवाज़ा इक्क खुल्हा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। ग़रीबनिवाज़ा दया कमा, मेहर नज़र इक्क रखाईआ। अनहद वाजा नाद वजा, आपणी करे पढ़ाईआ। दिवस रैण फिरे भाजा, हरिजन वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम रचया काजा, लख चुरासी बन्धन पाईआ। खेले खेल देस माझा, सम्बल एका रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग खेड़ा देवे ढाहीआ। कलयुग खेड़ा जाए ढट्ठ, हरि साचा आपे ढाहइंदा। अन्तिम गेड़े उलटी लट्ठ, गेड़ा गेड़े विच फिराइंदा। नाता तोड़ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पन्ध मुकाइंदा। वसणहार घट घट, निरगुण उजाला नूर दरसाइंदा। शब्द अगम्मी एका सट्ट, ताल तलवाड़ा इक्क वजाइंदा। जन भगतां मार्ग जाए दस्स, दूसर दिस किसे ना आइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, रातीं सुत्तयां गोद बहाइंदा। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाइंदा। हरिजन मेला आप प्रभ, प्रभ ठाकर आप कराईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, गुरमुख साचे लए जगाईआ। दर दुआरे साचे सद्द, सदा इक्क सुणाईआ। लख चुरासी मुक्की हद्द, अग्गे पन्ध ना कोए वखाईआ। विष्नूं कहे मेरी यद, ब्रह्मा आपणा बंस

वड्याईआ। शंकर कहे पंज तत्त चोला दयां वढ्ढ, जो घड़या भन्न वखाईआ। पुरख अकाल महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने कहिण साडा चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम आया नस्स, लोकमात वेस वटाईआ। एथे ओथे दो जहान किसे ना चले कोई वस, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे सीस झुकाईआ। जिस भावे तिस लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दरस दखाए हो प्रतख, नूर नुराना डगमगाईआ। हरिभगत लख चुरासी विच्चों करे वक्ख, आपणा बन्धन पाईआ। जुग जुग भगतां करे पक्ख, साचे सन्तां वंड वंडाईआ। मेल मिलाए नट्ठ नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। अमृत आत्म सति सरोवर देवे झट्ट, साची मदि आप प्याईआ। दुरमति मैल देवे कट, पतित पापी लए तराईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, हउँमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। लेखे लाए काया रत्त, रत्ती रत रत्त सुहाईआ। एका देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। सोहँ शब्द साची गाथ, चार वरन जै जैकार कराईआ। सतिजुग मिले साची दात, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। करे खेल पुरख समराथ, विष्नूं भगवान इक्क वड्याईआ। गुर अवतारां देवे दात, नाम अनमुल्ला झोली पाईआ। लख चुरासी भुल्ली नार कमज़ात, हरि कन्त नज़र ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दिसे अन्धेरी रात, सूरज चन्द बैठे मुख शरमाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी वाट, लेखा लेखा झोली पाईआ। तूं सौणा आपणी खाट, पुरख अबिनाशी दए सुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी एका राह चलाईआ। एका राह पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर आप चलाइंदा। एका रूप दरसाए ब्रह्म, ब्रह्म आपणा रंग रंगाइंदा। एका गोत एका वरन, अवरन खेल ना कोए कराइंदा। एका गुर एका सरन, इष्ट एका नज़री आइंदा। एका खोल्हे हरन फरन, नेत्र नैण इक्क दरसाइंदा। एका तोड़े मरन डरन, लख चुरासी फंद कटाइंदा। गुरमुख सज्जण सन्त सुहेले गुरू गुर चेले दरगाह साची एका घर वड़न, थिर घर साचा आप बणाइंदा। पौड़ी पौड़ी आपे चढ़न, साचा डण्डा नाम लगाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरि जू अन्तिम आया फड़न, बाहों पकड़ गोद बहाइंदा। करे खेल करनी करन, करता पुरख दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। करता पुरख करने जोग, हरिजन कीमत आपे पाईआ। मेल मिलावा धुर संजोग, पूरब लहिणा दए चुकाईआ। हउमे हंगता कढ्ढे रोग, माया ममता दए खपाईआ। नाता तोड़ चौदां लोक, एका बख्शे शरन शरनाईआ। तन नगारे लग्गे चोट, घर नादी नाद सुणाईआ। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोत निरँजण सेव कमाईआ। गृह मन्दिर वेखे किला कोट, घर घर विच बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ।

गुरमुख वड्याई देवे माण, निमाणयां गले लगाइंदा। एका राग सुणाए कान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। एका रूप श्री भगवान, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। एका नज़री आए काहन, एका मंडल रास रचाइंदा। एका वेखे सच्चा राम, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका बंक बंक वड्याइंदा। एका भूपत राज राजान, शाह पातशाह इक्क अख्वाइंदा। एका हुक्म इक्क हुक्मरान, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाइंदा। एका विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान, नाम निधाना इक्क पढ़ाइंदा। एका लख चुरासी कर प्रधान, त्रैगुण माया रंग रंगाइंदा। एका पंचम तत्त करे निशान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वंड वंडाइंदा। एका पंचम नाद सुणाए कान, रागी राग आप अलाइंदा। एका नौ दुआरे खोल्ह दुकान, जगत वासना विच भराइंदा। एका सुखमन टेढी बंक खेल करे महान, एका ईड़ा पिंगल आप सुहाइंदा। एका अमृत आत्म सर सरोवर देवे पीण खाण, तृष्ना भुख मुकाइंदा। एका बज़र कपाटी तोड़े गुण निधान, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। एका नज़री आए सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। एका सेजा कर परवान, साची सेजा सोभा पाइंदा। एका ब्रह्म मेले आण, पारब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, काया अंदर आप वड्याइंदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, चतुर्भुज भेव खुल्हाए गुझ, नीकन नीका ठांडा सीता पतित पुनीता, साची रीता आप चलाइंदा। धाम वखाए इक्क अनडीठा, मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, एका राग सुणाए माण रखाए अठारां अध्याए गीता, ज्ञान ध्यान अनुभव दृष्ट लेखा जाणे रामा वशिष्ट, विषेश आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। मेलण को दर इक्को गुर, आदि जुगादि समाया। लेखा जाणे धुरदरगाही धुर, सचखण्ड निवासी फेरा पाया। शब्द अगम्मी चढ़े घोड़, दो जहानां आप फिराया। निरगुण सरगुण जाए बौहुड़, आपणा पन्ध मुकाया। सतिगुर पूरे नूं गुरसिखां दी सदा लोड़, बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आया। जन्म जन्म दी बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाया। जगत विकारा देवे हौड़, नाम खण्डा इक्क चमकाया। चरन प्रीती देवे जोड़, नाता बिधाता आप बंधाया। करे प्रकाश अन्ध घोर, अज्ञान अन्धेर चुकाया। सुरती शब्द बन्ने डोर, आकाश आकाश फेरा पाया। आपणे संग लए तोर, साचा बन्धन पाया। नाता तुट्टे मोर तोर, मैं तूं कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाया। उठ जाग गुरमुख मीत, मित्र प्यारा आप जगाइंदा। सतिगुर काया करे ठंडी सीत, अग्न मेघ ना कोए दरसाइंदा। सति सतिवादी वखाए साची रीत, साचा मार्ग आपे लाइंदा। गोबिन्द गाउणा गीत, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। साहिब सुल्तान वसे चीत, चित वित ठगोरी कोए ना पाइंदा। अंदर सुत्ता जो दे कर पीठ, आपणी करवट फेर बदलाइंदा। धाम वखाए

इक्क अनडीठ, अनडिठड़ा रंग चढ़ाइंदा। तख्त निवासी सीस सुहाए पीतम्बर पीत, आप आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया जाए छुट, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सच सुच्च पए उठ, सतिगुर पूरा आप उठाईआ। जन भगतां उपर आपे तुठ्ठ, आपणा राह वखाईआ। अमृत जाम प्याए घुट, तृष्ना भुख मिटाईआ। नाता तोड़ वरन गोत, एका ब्रह्म समझाईआ। पुरख अकाल इक्को ओट, दूसर सीस ना किसे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां मेटे कूड़ी शाहीआ।

★ १५ माघ २०१८ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह हज़ातपुरा ज़िला गुरदासपुर ★

सतिगुर पूरा सदा मेहरवान, दीनन दया कमाइंदा। जन भगतां देवे नाम दान, अनडिठड़ी झोली पाइंदा। राखा होए दो जहान, एथे ओथे सेव कमाइंदा। जो जन नेत्र नैण दर्शन करे आण, तिस पूजा पाठ ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर मन्त्र आप समझाइंदा। सतिगुर पूरा सूरबीर, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। गुरमुख देवे आपणी धीर, सति सन्तोख दृढ़ाईआ। माया ममता तोड़ ज़ंजीर, त्रैगुण नाता दए तुड़ाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा सीर, निझर झिरना आप झिराईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आपणे हथ्थ रखाईआ। एका नाम साची वथ, हरि जू आपणे हथ्थ रखाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, जुग जुग वेस वटाइंदा। जुगा जुगन्तर चलाए रथ, रथ रथवाही दिस ना आइंदा। लख चुरासी पाए नथ्थ, घट घट आपणा आसण लाइंदा। शब्द अगम्मी अकथना अकथ, बिन रसना जिह्वा आप सुणाइंदा। सगल वसूरे जाण लथ, जो जन सतिगुर पूरे दर्शन पाइंदा। नाता तुट्टे तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती ना कोए भुआइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। नाता तोड़ दस दस मास, मात गर्भ ना फेर फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन जपिआं जाप, आपणा प्रताप आप वखाइंदा। हरि का नाउँ सच्चा एक, घट घट रिहा समाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना सके वेख, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जीव जंत साध सन्त कोटन कोटि धर धर टेक, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। गुरमुख विरले करे बुध बिबेक, विवेकी आपणी दया कमाईआ। भाग लगाए काया खेत, फुल्ल फलवाड़ी आप महकाईआ। भगत भगवन्त करे हेत, नित नवित आपणा दरस दिखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी

अचुत, चेतन रूप सच्चा शहिनशाहीआ। ना कोई वार ना कोई थित, सदा सुहेला इक्क अकेला हरिजन हरि हरि पार कराईआ। एथे ओथे दो जहान मात पित, पिता पूत गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दरस दरस दीदार, देवणहार आप करतार, निरगुण सरगुण खेल अपार, सरगुण आपणे रंग रंगाईआ। देवे नाम नाम अनमुल्ल, अनमुलड़ी दात वरताइंदा। भाग लगाए काया कुल, कुलवन्ता दया कमाइंदा। तोलणहारा साचे तोल, आपणे कंडे आप चढ़ाइंदा। गुरसिख उठाए आप अनभोल, सतिगुर पूरा वेख वखाइंदा। सुरती शब्दी जाए मौल, आत्म परमात्म एका गंढु पुआइंदा। उलटा करे नाभ कौल, अमृत झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विद्या जगत पाठ, हरि सतिगुर आप जणाईआ। अंदरे अंदर खोल्हे बज़र कपाट, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। अनहद शब्द वेखे आपणे घाट, नाद अनादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। एका शब्द हरि का मन्त्र, गुर गुर सेव कमाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, दिस किसे ना आइंदा। खेले खेल गगन गगनंतर, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां विच समाइंदा। जिस जन बणाए आपे बणतर, आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम नाम अनडीठ, मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, बिन रसना जिह्वा आप चखाइंदा। हरि का नाम हरिभगत लए चक्ख, दूसर रसन ना कोए लगाईआ। आपे रख्या सब तों वक्ख, साचे भाण्डे आप टिकाईआ। किरपा कर नरायण नर जिस जन देवे दस्स, गृह मन्दिर करे पढ़ाईआ। एका मकतब वखाए साचा हट्ट, पाठशाला इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाद एका धुन, एका शब्द सुणाईआ। शब्द नाद धुन सच्ची जैकारा, जै जैकार आप कराइंदा। घर विच घर खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। रसना जिह्वा वसे बाहरा, मन मति बुध भेव कोए ना पाइंदा। सुवास सुवास ना कोए हुलारा, पवण पवण ना कोए वखाइंदा। आपे जाणे रखणहारा, घर घर विच आप टिकाइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप तराइंदा। सतिगुर पूरा जाए तार, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। जगत विद्या ना कोए विचार, पढ़ पढ़ लेख ना कोए मुकाईआ। रसना जिह्वा गा गा थक्का संसार, आत्म रस हथ्थ किसे ना आईआ। पंडत पांधे मुलां शेख़ ग्रन्थी होए विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। गुरमुख विरला करे प्यार, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण निराकार निरवैर रागां नादां वसे बाहर, छत्ती राग भेव ना राईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत रोवण ज़ारो ज़ार, अञ्जील कुरान देण दुहाईआ। गुर अवतार बेअन्त बेअन्त कहिण पुकार, पारब्रह्म सच्ची शरनाईआ। नानक निरगुण कहे सर्ब संसार,

प्रभ वसया हर घट थाईंआ। गृह मिले आपणी धार, नूर नूर नूर दरसाईआ। पंचम सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। हरि का नाउँ लिखण पढ़ण तों बाहर, लेखा लिख ना कोए मुकाईआ। कागद कलम छाही होई बेज़ार, आपणा पन्ध ना कोए मुकाईआ। गुरमुखां देवे आप भण्डार, सच भण्डारा आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। जगत विद्या चुक्के लहिणा, रसना जिह्वा ना कोए समझाइंदा। जिस जन नेत्र दरस कराए नैणां, निज आत्म नैण खुल्हाइंदा। तिस गुरमुख साचे मन्दिर बहणा, घर साचा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। निष्अक्खर नाम आत्म रस, रस रसीआ आप जणाइंदा। हिरदे अंदर आपे वस, भेव अभेद जणाइंदा। सुखमन टेढी बंक मार्ग दस्स, ईड़ा पिंगल डेरा ढाहइंदा। जोत निरँजण कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। पंच विकारा कर कर नास, हउमे गढ़ तुड़ाइंदा। आत्म परमात्म खेल तमाश, आत्म सेजा सोभा पाइंदा। करे कराए खेल हरि जन वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म अन्तर नाम धर, साचे दर आप वसाइंदा। गृह वसे हरि का मंत, सतिगुर पूरा आप जणाईआ। नारी मिले साचा कन्त, सुरत शब्द होए कुड़माईआ । लेखा चुक्के आदि अन्त, मध आपणा बन्धन पाईआ। काया चोली चढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। मन वासना होई मंत, मन का मणका आप भुआईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत साचे मार्ग आपे लाईआ। हरिजन मेले साची संगत, संग आपणा आप वखाईआ। नाता तोड़ जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन पढ़यां देवे नाम निधान, काया मन्दिर विच मकान, सच सिँघासण बैठ श्री भगवान, एका रंग वखाईआ। गुरू ग्रन्थ कलयुग बाणी, बोध ज्ञान दृढ़ाया। नानक अंगद मेल भवानी, अमर अमरापद वखाया। रामदास सच निशानी, सर सरोवर इक्क जणाया। गुरू अर्जन गाए अकथ कहाणी, हरि साचा नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जीवां जंतां साधां सन्तां आपणा भेव आप समझाया। सतिजुग बणाए वेद चार, शास्त्र सिमरत नाल रलाईआ। पुराण अठारां कर त्यार, गीता ज्ञान आप समझाईआ। अञ्जील कुरानां दे सहार, तीस बतीसा सच हदीसा इक्क पढ़ाईआ। चारे खाणी बाणी चार करे विचार, जुग चौथे वज्जे वधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। अगला खेल जाणे निरँकार, जीव जंत ना कोए वड्याईआ। नानक निरगुण सोहँ शब्द गा के गया धार, आत्म

परमात्म तेरी वड्याईआ। गोबिन्द अन्त सोहँ शब्द तीर भथ्था दस्स के गया कमान, एका एक बूझ बुझाईआ। नानक निरगुण मंगे दान, एका वस्त मंग मंगाईआ। कलयुग आउणा श्री भगवान, निरगुण नुर जोत रुशनाईआ। महांबली उतरे आण, मात पित ना कोए बणाईआ। गोबिन्द गुर सूरा कहे बलवान, निहकलंक वज्जे वधाईआ। सम्बल नगरी सच निशान, निरगुण निरवैर आप वखाईआ। डंका वज्जे दो जहान, दरोही दरोही करे खुदाईआ। मुकामे हक़ खेल महान, बेऐब आप कराईआ। कलयुग लहिणा देणा चुकाए विच जहान, लोकमात नाता तोड़ तुड़ाईआ। सतिजुग साचा होए प्रधान, साची सिख्या इक्क समझाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना रहे कोए निशान, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका गुरदुआर गुर गुर एका इष्ट जणाईआ। सृष्ट सबाई पूजा करे पुरख अकाल, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि गुर गुर बाणी आपणी महिमा आप सुणाईआ। पिछली वासना उठी बलवान, मन मनुआ रिहा जणाईआ। मेरा छुटण लग्गा पीण खाण, जगत विथ्या रिहा सुणाईआ। मैं खेल करदा अंदर महान, जिउँ भावे तिउँ चला रज़ाईआ। मति मतवाली होई निधान, आपणा नैण ना सके उठाईआ। बुध बाली बाल अञ्याण, बैठी मुख शरमाईआ। मेरी आसा जगत शैतान, चार कुण्ट दौड़ाईआ। धरया रूप नौजवान, मन आपणा रूप वटाईआ। साची सेजा कर परवान, उपर आया चाँईं चाँईंआ। आपणी हथ्थी अन्तिम देवे दान, झूठी माया गिरगट रूप वखाईआ। बौहड़ी बौहड़ी कहे सिँघ सवरण नूं मिल्या आप भगवान, पिछला लेखा दए चुकाईआ। जो संगत विच मिल्या आण, तिस जम नेड़ ना आईआ। अंदरे अंदर नूर महान, नूर नूराना दए वखाईआ। राती सुत्तयां दर्शन देवे आण, करे मेहर मेहरवान वड गुसांईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणा झोली पाईआ।

★ १५ माघ २०१८ बिक्रमी चेला सिँघ दे गृह जम्मू ★

सति पुरख निरँजण शाह सुल्तान, हरि आदि जुगादि समाइंदा। निरगुण जोत नूर महान, निराकार डगमगाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, पुरख अबिनाशी सोभा पाइंदा। शाहो भूप राज राजान, सच सुल्तान वेस वटाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराइंदा। अगम्म अगम्मड़ा इक्क निशान, पुरख अगम्म आप झुलाइंदा। पुरख अबिनाशी धुर फ़रमाण, हुक्मी आप सुणाइंदा। शब्दी शब्द कर परवान, धार धार प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। शब्दी धार खेल अपारा, निरगुण निरवैर आप कराईआ। सचखण्ड निवासी खोल्

४८५
११

किवाड़ा, थिर घर आपणा रंग रंगाईआ। एका वस्त दए हरि थारा, अनमुलड़ी आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारा, त्रैगुण साचा बन्धन पाईआ। एका वस्त सति भण्डारा, सति सतिवादी झोली पाईआ। एका ब्रह्म ब्रह्म पसारा, ब्रह्म वेता खेल कराईआ। एका शंकर दए हुलारा, हथ्थ त्रिसूल फड़ाईआ। तिन्नां विचोला एकँकारा, अकल कला वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सच सिँघासण सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, वेस अनेक वटाइंदा। एकँकार बणाए बणत, साचा घाड़त आप घड़ाइंदा। आदि निरँजण महिमा अगणत, भेव कोए ना पाइंदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा मंत, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। श्री भगवान खेले खेल जुगां जुगन्त, जुग करता आपणे रंग समाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म लेखा जाणे जीव जंत, जागरत जोत आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी कर करतार, कुदरत कादर खेल कराईआ। निरगुण रूप अपर अपार, अलख अगोचर वेस वटाईआ। अजूनी रहित वसणहारा धाम न्यार, मूर्त अकाल भेव चुकाईआ। चतुर्भुज हो त्यार, करे खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव सच निशानी, हरि साचा सच जणाइंदा। निरगुण जोत नूर नूरानी, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। प्रगट हो आदि भवानी, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप सति सरूप आप प्रगटाइंदा। सति सरूप सति सतिवाद, आदि पुरख प्रगटाईआ। आपे खेले खेल तमाश, वेखणहार आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणी मंडल रास, आपे गोपी काहन अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सच वड्याई हरि जू हथ्थ, आदि जुगादि रखाइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, आपणा भेव चुकाइंदा। निरगुण निरगुण चलाए रथ, साची सेव कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रगट, साची गोद बहाइंदा। त्रैगुण अतीता खोल्ह हट्ट, साचा वणज कराइंदा। इक्क वखाए तत्तव तत्त, तत्त आपणा आप समझाइंदा। एका देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। इक्क बंधाए साचा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। इक्क वखाए हरि जू घाट, साचा तट आप सुहाइंदा। इक्क जणाए साची गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आपणी करनी आपे कर, श्री भगवान दया कमाईआ। विष्नूं देवे एका वर, वर दाता बेपरवाहीआ। ब्रह्मे ब्रह्म जोत धर, पारब्रह्म वेस वटाईआ। एका अक्खर लैणा पढ़, चार वेद पढ़ाईआ। शंकर त्रिसूल हथ्थ धर, सब दा लेखा दए चुकाईआ। तिन्नां विचोला आपे बण, सगला संग

निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण माया घाड़न घड़, रजो तमो सतो एका बन्धन पाईआ। त्रैगुण बन्धन एका पा, एका रंग वखाइंदा। धुर फ़रमाणा इक्क सुणा, एका हुक्म वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगा, साची सेवा इक्क जणाइंदा। पंज तत्त काया जोड़ जुड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रंग वखाइंदा। लख चुरासी बणत बणा, घड़ भाण्डे सोभा पाइंदा। निरगुण निरगुण जोत जगा, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अनहद नादी नाद सुणा, गृह मन्दिर साज वजाइंदा। पवण स्वास आप चला, रसना जेहवा नाल मिलाइंदा। नौ दुआरे आप खुल्हा, जगत क्रिया विच फसाइंदा। मन मति बुध आप धरा, निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। पंचम पंचम मेला सहिज सुभा, दहि दिशा वेख वखाइंदा। अमृत सर आत्म इक्क वखा, साचा झिरना आप झिराइंदा। बजर कपाटी ताला ला, डूँघी कंदर सोभा पाइंदा। आत्म सेजा इक्क विछा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म रंग वटा, रूप अनूप धराइंदा। ईश जीव खेल करा, जगदीस सोभा पाइंदा। अण्डज जेरज विच समा, उत्भुज सेत्ज बणत बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़ना, हरि जू आख सुणाया। निरगुण निरगुण अंदर वड़ना, सरगुण मेल मिलाया। साचे पौड़े आपे चड़ना, घर मन्दिर आप सुहाया। दीआ बाती एका धरना, जोती जोत जोत रुशनाया। साचा अक्खर एका पढ़णा, हरि हरि नाम ध्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क समझाया। साची सेवा विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, सचखण्ड तेरी शहिनशाहीआ। तूं हाकम हुक्मरान, हुक्मी हुक्म भुवाईआ। एका देणा साचा दान, बण बाले मंग मंगाईआ। तेरा झुलदा रहे निशान, आदि जुगादि सोभा पाईआ। तेरा शब्द सुत बलवान, ना मरे ना जाईआ। तेरी महिमा अगणत महान, भेव कोए ना आईआ। तेरा इक्को सच्चा नाम, देवे सच वड्याईआ। विष्नूं करे आप प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ब्रह्मा गाए साचा गाण, चार वेद वेद सुणाईआ। शंकर खेले खेल महान लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए रूप आप धराईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, जीव जंत वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी धार चलाईआ। सति सतिवादी चले धार, आदि पुरख आप चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, लोआं पुरीआं सोभा पाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर उज्यार, गगन मंडल आप रुशनाइंदा। रवि ससि कर त्यार, किरनी किरन जोत जगाइंदा। आकाश प्रकाश दे आधार, परम पुरख सोभा पाइंदा। जल बिम्ब खेल न्यार, धरनी धरत धवल टिकाइंदा। निरगुण सरगुण कर आकार, निराकार साकार आपणा रूप वखाइंदा। चारे खाणी कर त्यार, साची

वंडण वंड वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, बण चाकर सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी घाड़न घड़, घट घट आपणी सेज हंढाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़या, हरि अचरज खेल रचाया। आपे देवे साचा वरया, वर दाता भेव चुकाया। डूँघी भँवरी काया कवरी उच्च महल्ले हरि जू वड़या, दर घर साचे आसण लाया। शब्द अगम्मी एका पढ़या, साचा ढोला रिहा सुणाया। ना जन्मे ना कदे मरया, आवण जावण खेल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी घाड़न घड़, जीव जंत उपजाया। जीव जंत हरि का रंग, हरि हरि आप कराइंदा। सदा सुहेला वसे संग, सगला संग निभाइंदा। आत्म सेजा इक्क पलँघ, सो पुरख निरँजण आप हंढाइंदा। निज आत्म रखे अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। अनाद अनादी बोल छन्द, नाम निधाना आप सुणाइंदा। साहिब दयाल बण बख्शंद, दीनन आपणी दया कमाइंदा। दो जहानां मुकाए पन्ध, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरी सेवा करीए विच जहान, लोकमात वड्डी वड्याईआ। तूं साहिब सच्चा काहन, दरगाह साची सोभा पाईआ। मुकामे हक़ तेरा निशान, हक़ीक़त तेरी रुशनाईआ। लाशरीक तूं मिहबान, बीदो तेरा नूर अलाहीआ। तूं चतुर्भुज भगवान, आदि सकत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त मेल मिलाए विच जगत, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम वेला दस्स करतार, विष्न ब्रह्मा शिव मंग मंगाइंदा। किव बिध खेलें खेल विच संसार, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। पुरख अबिनाशी कर विचार, भेव अभेद खुल्हाइंदा। गुर गुर रूप बणां अवतार, लोकमात फेरा पाइंदा। वंडां वंड अपर अपार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे अंग लगाइंदा। जुग चौकड़ी खेल न्यार, बण बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा । हट्ट हटवाणा बण वणजार, नाम वस्त इक्क वकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आपणा भेव हरि जू दस्स, एका गुण जणाईआ। जुग जुग वेस करां अलख, अलख अलख एका नाअरा लाईआ। सरगुण रूप हो प्रतख, जीव जंत करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाईआ। आपणा पड़दा देवे खोल्ह, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। चारे जुग तोला तोल, बण तोला फेरा पाईआ। रखां वस्त नाम अनमोल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। जन भगतां वसा सदा कौल, विछड़ कदे ना जाईआ। सन्तां अंदर आपे मौल, मौला रूप वखाईआ। गुरमुखां पूरा करा कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। गुरसिखां देवां वड्याई उपर धौल, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। आपणा भेव श्री भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव जणाइंदा। सति सतिवादी सति निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। जुग जुग लोकमात हो प्रधान, आपणा हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार दे दे दान, सच भण्डारा आप वखाइंदा। चारे वेद कर परवान, जगत मार्ग एका लाइंदा। चारे खाणी खेल महान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। चारे बाणी नाद धुन्कान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणे रंग रंगाइंदा। चारे कुण्टां वेखे मार ध्यान, उतर पूरब पच्छिम दक्खण आपणा खेल कराइंदा। चारे जुग देवे माण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी गोद बहाइंदा। चारे वरन करे प्रधान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड वंडाइंदा। बरन अठारां रखे आण, एका हुक्म सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेख वखाण, अक्खर अक्खर आप पढ़ाइंदा। वेद व्यासा दे दे दान, पुराण अठारां आप जणाइंदा। नारद मुन कर ध्यान, राग छतीसा एका गुण समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप वखाइंदा। आपणा हरि जू दस्से राह, विष्न ब्रह्मा शिव जणाइंदा। जुग जुग बणां मात मलाह, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त लवां जगा, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। सन्त साजन मेल मिला, घर साचा सोभा पाइंदा। एका नाम नाम दृढ़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल श्री भगवन्त, आपणा आप जणाईआ। लेखा जाणां जुगा जुगन्त, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सतिजुग बणा बणत, सति सतिवादी धार चलाईआ। आत्म परमात्म मणीआ मंत, ओम आपणा रूप रंग ना कोए वखाईआ। स्वयम् खेल करे भगवन्त, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। आत्म परमात्म हरि हरि वंड, निरगुण धार धार प्रगटाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, भेव कोए ना पाइंदा। आत्म सेजा सच पलँघ, सच सिँघासण इक्क वखाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोत उजाला इक्क वखाइंदा। खेले खेल जीउ पिण्ड इंड ब्रह्मण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव चुकाए हरि हरि, आपणी दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण देवे वर वर, वर दाता आप हो जाईआ। हँ ब्रह्म वखाए घर घर, ईश जीव होए कुड़माईआ। सोहँ अक्खर आपे पढ़ पढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ दए वड्याईआ। सोहँ अक्खर आत्म परमात्म धार, परम पुरख प्रगटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन जै जैकार, जै जैकारा इक्क सुणाइंदा। वाह वाह तेरी कुदरत मेरे करतार, तेरा भेव कोए ना आइंदा। तूं वसें हरि घट संसार, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। चेला रूप गुर अवतार, लोकमात फेरी पाइंदा। तेरा नाम संदेसा अपर अपार, रसना जेहवा सर्ब समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा

नाम इक्क प्रगटाइंदा। इक्को नाम सच्चा राम, हरि हरि आप सुणाया। जुगा जुगन्तर दे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाया। करे कराए आपणा काम, करता पुरख खेल कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम रूप आप समझाया। एका राम रम्मईआ नाम, घट घट रिहा समाईआ। एका नईया चलाए जहान, जुग जुग गेड़ा विच भुवाईआ। एका दए सब नूं ताम, घर घर रिज़क पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम नाम दए समझाईआ। राम नाम एका ओट, आदि जुगादि रखाइंदा। सति सतिवाद भण्डार अतोट, एका वार वरताइंदा। जीवां जंतां वासना कढ्ढे खोट, अमृत रस इक्क चखाइंदा। हरि का नाम ना कोई वरन ना कोई गोत, जात पात विच कदे ना आइंदा। मेल मिलाए निर्मल जोत, जोती जोत जोत समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाम प्रगटाइंदा। एका नाम खोल्हे हट्ट, जगत वणजारा वेस वटाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ वड्डी वड्याईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, आपे बणे पाँधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम सालाहीआ। एका नाम सिफ्त सालाह, हरि साचा सच जणाइंदा। एका नाम घट घट रिहा समा, घट घट डेरा लाइंदा। एका नाम गुर अवतार रिहा पढ़ा, रसना जेहवा नाल मिलाइंदा। एका नाम भगतां लए उठा, भगवन आपणी गोद बहाइंदा। एका नाम सन्तां लए मिला, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप धराइंदा। आपणा नाउँ रख निरँकार प्रभ साचे खेल कराया। राम राम हो उज्यार, एका राम रूप दरसाया। साचा कान्हा मीत मुरार, दो जहानां वेख वखाया। नाम बंसरी इक्क जैकार, गीत तराना इक्क सुणाया। एका नूर नूर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। एका नाम सच निशान, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। एका नाम गीता ज्ञान, अठारां अध्याए दए वड्याईआ। एका नाम शास्त्र सिमरत वेद पुराण, पुराण पुराणी करे पढ़ाईआ। एका नाम सच अशनान, दुरमति मैल धुवाईआ। एका नाम मेले साचे काहन, मिल गोपी खुशी मनाईआ। एका नाम मुकंद मनोहर लखमी नरायण करे परवान, मधुर धुंन बंसरी आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए समझाईआ। एका नाम कलमा कलाम, कायनात आप पढ़ाइंदा। एका नाम सच अमाम, अमाम अमामा सिर अख्वाइंदा। एका नाम सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप सुणाइंदा। एका नाम पकड़े दाम, दामनगीर फेरा पाइंदा। एका नाम सच्चा जाम, अमृत रस वखाइंदा। एका नाम करे प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। एका नाम सच सलाम, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। एका नाम दो जहान, चौदां तबक फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव

आप समझाइंदा। एका नाम नाम सति, सतिनाम करे पढ़ाईआ। एका नाम ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या दए जणाईआ। एका नाम वसे चौदां हट्ट, लोक परलोक डेरा लाईआ। एका नाम खेल बाजीगर नट, जुग जुग वेस वटाईआ। एका नाम वसे घट घट, गुरमुख विरला बूझ बुझाईआ। एका नाम अमृत रस देवे झट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप समझाईआ। एका नाम सच जैकारा, जै जैकार आप कराइंदा। एका नाम रहे विच संसारा, दूसर कोए नज़र ना आइंदा। एका नाम सर्ब प्यारा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। एका नाम ज़ात पात दीन मज़्ह़ब तों वसे बाहरा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका घर बहाइंदा। एका नाम सच भण्डारा, आदि पुरख पतिपरमेश्वर आपणा आप वखाइंदा। काग़ज़ कलम लिखण तो बाहरा, खाणी बाणी हरि का नाम सिफ्त सालाहइंदा। एका नाम वसे धाम न्यार, हरि साचा आपणे विच छुपाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते वारो वारा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। नव नौ चार खेल न्यारा, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वेख अखाड़ा, लख चुरासी नाच नचाइंदा। बहत्तर नाड़ी वज्जे तलवाड़ा, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। दो जहान वज्जे नगारा, हरि नौबत नाम सुणाइंदा। जुग जुग मेटे दुष्ट हँकारा, रावण गढ़ तुड़ाइंदा। जुग जुग बणे भगत रखवारा, बिदर सुदामा गले लगाइंदा। जुग जुग बोले हक़ जैकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। हरि का खेल इक्क अवल्ला, भेव कोए ना पाईआ। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, दरगाह साची आसण लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाए पल्ला, एका डोरी नाम बंधाईआ। सच संदेस एका घल्ला, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपे रला, घट घट रिहा समाईआ। जुगा जुगन्तर अछल अछला, वल छल रूप धराईआ। आपे फड़े आपणा चिल्ला, तीर कमान आप उठाईआ। आपे तारे पाथर सिला, चरन पाहन टिकाईआ। आपे आपणे भगतां मिला, मिल मिल खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा दए समझाईआ। आपे रम्मईआ आपे राम, आपे सीआ खेल कराइंदा। आपे घनईआ आपे शाम, आपे मोर मुक्ट सुहाइंदा। आपे ईसा मूसा दे पैग़ाम, पैग़म्बर वेस वटाइंदा। आपे मुहम्मद देवे इक्क कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। आपे नानक देवे सतिनाम, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आपे गोबिन्द करे प्रणाम, डंका फतिह इक्क वजाइंदा। करे खेल श्री भगवान, जुग जुग आपणी वंड वंडाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी खेल कराउणा, हरि हरि आप सुणाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी वेस वटाउणा, रूप रंग रेख ना कोए वखाया।

गुर अवतार सेवा लाउणा, साची सेव समझाया। कोटन कोटि नाम प्रगटाउणा, नाम नामा दए वड्याआ। अन्तिम लहिणा सर्ब मुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाया। विष्नूं तेरी विश्व धार, आपणे विच समाउणा, आप आपणा रंग चढ़ाया। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पारब्रह्म अंग लगाउणा, अंगीकार दया कमाया। शंकर तेरा पन्ध मुकाउणा, संसा रोग रहे ना राया। सुरपति इन्द आप उठाउणा, करोड़ तेतीसा नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव रिहा खुल्हाया। आपणा भेव खोल्ह भगवान, आपणी दया कमाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। भगत भगवन्त इक्क निशान, आप प्रगटाए विच जहान, धू्र प्रहिलाद दए वड्याईआ। आपे वेखे मार ध्यान, धरनी धरत धवल सहाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, जगत विद्या ना कोए वखाईआ। चौदां विद्या होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। कागज़ कलम सर्ब पछताण, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। आपे दाता श्री भगवान, घर घर रिज़क सुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल रिहा वखाईआ। साचा खेल हरि आदि निरँजण, आपणा आप जणाइंदा। जुग जुग कराए साचा मजन, धूढ़ी इश्नान इक्क वखाइंदा। सन्त सुहेले मेले सज्जण, लख चुरासी विच्चों उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाइंदा। साचा पड़दा देवे चुक्क, हरि सन्तन बूझ बुझाईआ। नज़री आए जो बैठा लुक, रूप अनूप दरसाईआ। लै करवट पए उठ, आपणा रुख़ बदलाईआ। साहिब दयाल सतिगुर तुट्ठ, देवे दरस चाँईं चाँईंआ। भाग लगाए काया किला कोट, महल अटल करे रुशनाईआ। निर्मल नूर जगाए जोत, जोती जोत डगमगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा ओत पोत, बंस सरबंस आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप समझाईआ। साची सिख्या एका वार, हरि एका एक सुणाइंदा। जुग चौकड़ी रहिणा ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए वखाइंदा। नव नौ चार होए उज्यार, नव खण्ड आपणा भेव खुल्हाइंदा। सत्तां दीपां बोल जैकार, जै जैकार आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। हरि जू चले आपणे राह, साचा मार्ग एका लाईआ। जुग जुग बणे आप मलाह, खेवट खेट बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। शब्दी शब्द दए सलाह, गुर गुर करे पढ़ाईआ। जन भगतां बणे पिता मां, बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुका, अन्तिम चौकड़ भेव दए खुल्हाईआ। तेई अवतार दर बहा, भगत अठारां लए जगा, ईसा मूसा संग मुहम्मद लए रला, नानक गोबिन्द वेखे थाँ, थान थनंतर आप सुहाईआ। खाणी बाणी वेद पुराणी अंज़ील कुरानी वेखे मार ध्याँ, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। अठ सठ तीर्थ वेखे

पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती खेल महानी, केशव आपणा रूप वटाईआ। शंकर देवे इक्क निशानी, ब्रह्मे तेरा पद निरबाणी, विष्नूं खेल दो जहानी, भगवन आपणा संग रखाईआ। विष्नूं भगवान आदि शक्ति नूर नूरानी दूसर दिसे ना कोए निशानी, गुर अवतार गायण कहानी महिमा कथ कथ सुणाईआ। कलयुग दस्से इक्क निशानी, जोधा सूरबीर बली बलवानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रखणा याद, हरि साचा सच जणाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण रूप अन्त सुणे फ़रयाद, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। एका देवे साची दाद, नाम वस्त झोली पाइंदा। सच निशाना देवे गाड, सति सतिवादी आप उठाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे ब्रह्मांड, लोआं पुरीआं फेरा पाइंदा। आपे जाणे किनारा पार हद्द, हद्द हदूद ना किसे जणाइंदा। गुर अवतार आपणा भार गए लद, वेला वेला सब दे हथ्थ वखाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगटे पुरख समरथ, वेद व्यासा भेव चुकाइंदा। निहकलंक नाउँ रख, एका डंका नाम वजाइंदा। उच्चे टिल्ले चढ़े पर्बत, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा अबिनाशी अचुत्त, मन्दिर अंदर डेरा लाइंदा। अन्त सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। भाग लगाए काया चोला पंज तत्त बुत्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। साचा भेव अन्तिम कल, कुलवन्ता आप समझाईआ। पुरख अबिनाशी अछल अछल, वेस अवल्ला आप वटाईआ। लेखा चुकाए बावन बल, पाँधी पन्ध मुकाईआ। विष्नूं जोत आपे रल, भगवन करे रुशनाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म मेटे सल, पारब्रह्म कर कुड़माईआ। शंकर नेत्र वेखे खल, नैण नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाईआ। आपणा पड़दा देवे लाह, कलयुग अन्त वड्डी वड्याआ। निरगुण नूर जोत धरा, जोती जोत करे रुशनाया। निहकलंक नाउँ रखा, सम्बल साचा डेरा लाया। बंक दुआर दए सुहा, बंक दुआरी भेव चुकाया। राउ रंक दए जगा, एका हुक्म दए सुणाया। कलयुग लहिणा दए मुका, जूठ झूठ कर सफ़ाया। नाता ममता हउमे हंगता दए तुड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाया। वरन बरन दए खपा, ऊँच नीच ना कोए वंड वंडाया। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका धाम बहा, एका ब्रह्म दए समझाया। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ, गुरुदुआर एका घर बणा, एका इष्ट दए समझाया। एका राम नज़री जाए आ, एका कृष्ना रंग रंगाया। एका नाम नमो सति दए सुणा, वास्तक आपणा भेव चुकाया। एका जाप दए जपा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाया। सोहँ ढोला इक्क सुणा, दो जहानां विचोला फेरा पाया। पर्दा ओहला दए उठा, स्वच्छ सरूपी दरस कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाया। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा

सच जणाईआ। जोती जामा वेस वटाउणा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपणी गोद बहाउणा, सुरपति राजा इन्द नाल मिलाईआ। धुर फ़रमाणा इक्क सुनाउणा, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ । कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाउणा, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। भगत भगवन्त आप उठाउणा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। साचा दर इक्क खुलाउणा, दर दरवाज़ा कुण्डा लाहीआ। एका पुरख नज़री आउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम जावे आ, हरि साचा सच जणाइंदा। नानक निरगुण गया ध्या, गोबिन्द इक्को ओट रखाइंदा। मूसा कहे मेरा ख़ुदा, मेरा नूर नूर वखाइंदा। मुहम्मद कहे मेरा इमाम जाए आ, लाल लाल आपणा रंग चढ़ाइंदा। पुरख अबिनाशी कहे मैं वसां हर घट थाँ, मेरी वंड ना कोए वंडाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लवां चला, जुग जुग खेल कराइंदा। गुर पीर अवतार लोकमात सेव लगा, साचा राह चलाइंदा। अन्तिम लहिणा सर्ब चुका, आपणे विच छुपाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए सलाह, एका गुण समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करना, श्री भगवान आप जणाईआ। नाता तोड़े बरनां वरनां, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा मात धरना, एका धर्म दए वड्याईआ। एको इष्ट एको सरना, गुरूदेव इक्क अख्वाईआ। एका मन्दिर सब ने वड़ना, एका नाम करे पढ़ाईआ। एका तीर्थ सब ने तरना, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। एका पौड़े सब ने चड़ना, एका मन्दिर दए सुहाईआ। एका भाणा सब ने जरना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एका घाड़न हरि जू घड़ना, साची घाड़त लए घड़ाईआ। निरभउ चुकाए भय डरना, भय अवर ना कोए वखाईआ। राउ रंक इक्को जिहा करना, शाह पातशाह ना कोए अख्वाईआ। सीस ताज किसे ना धरना, चोबदार ना कोए बणाईआ। दीन मज़्ब ना किसे लड़ना, जात पात ना कोए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग इक्क लगाईआ। साचा मार्ग लाए निरँकार, सति सरूपी दया कमाइंदा। सतिजुग सच करे प्यार, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह दुआर, साचा मन्दिर इक्क वखाइंदा। भगवन भगतन दे दीदार, तृष्ना भुख गवाइंदा। दर घर साचे लवे वाड़, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। अग्नी लगे ना तत्ती हाढ़, जेठ धुप ना कोए तपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग आप लगाइंदा। साचा मार्ग विच संसार, हरिजू हरि हरि आप लगाईआ। भगत सुहेले लए उभार, आपणी बूझ बुझाईआ। राग नाद वजाए सितार, अनडिठड़ी तार हिलाईआ। गुफ़त शुनीद करे गुफ़तार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाईआ।

सतिजुग साचा सच निशान, सति सतिवादी आप रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क ज्ञान, एका नाम पढ़ाइंदा। सत्तां दीपां इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। भगतां मिले श्री भगवान, जुग जुग दया कमाइंदा। गोपी मिले साचा काहन, घर बह बह रास रचाइंदा। सीता सुरती कर परवान, राम रामा गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन इक्को घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। घर मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। हँ ब्रह्म आदि अन्त, पारब्रह्म सरनाईआ। लेखा लेख जीव जंत, जुगत जगत आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भेव अभेद आप खुलाईआ। एका नाम जणाए मंत, मन्त्र अन्तर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं देवे दान, आत्म परमात्म एका बन्धन पाईआ। आत्म परमात्म बन्न्हे डोर, नाम तन्दी हथ्थ रखाइंदा। नाता तोड़ पंज चोर, शरअ शरीअत ना वंड वंडाइंदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, वागां आपणे हथ्थ रखाइंदा। करे प्रकाश अन्ध घोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए फड़, गुर चेले मेल मिलाइंदा।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी अमरो देवी दे गृह जम्मू ★

हरि सरनाई साचा जाप, जीवण जुगत दए वड्याईआ। कोट कोट जन्म उतारे पाप, पापी पतित पुनीत कराईआ। भेव अभेद चुकाए आपणा आप, अनुभव आपणी खेल कराईआ। हरिजन वेखे जिउँ बाल सखाई पिता बाप, पूत सपूता गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे सच्चा नाम हरि गुसाईआ। साचा नाम सतिगुर सरन, हरि सज्जण सच जणाइंदा। नाता तुट्टे मरन डरन, लख चुरासी फंद कटाइंदा। मेट मिटाए वरन बरन, ज़ात अज़ात ना कोए रखाइंदा। करता पुरख करनी करन, साची क्रिया इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप दृढ़ाइंदा। साचा नाम हरि हरि ओट, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। भय विच कढ्ढणहारा खोट, ममता मोह चुकाईआ। नाता तोड़ वरन गोत, एका रंग रंगाईआ। मेल मिलावा निरगुण जोत, जोती जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क जणाईआ। साचा नाम एका रंग, हरि हरि आप रंगाइंदा। आदि जुगादि सदा सद आत्म सेजा बैठ पलँघ, निरगुण सरगुण भेव चुकाइंदा। नाद अनादी वज्जे अगम्म, धुनी धुन सुणाइंदा।

मन मनसा मन माहे जाए मन, मन का मोह मिटाइंदा। ज्ञान प्रकाश करे साचा चन्न, अन्ध अज्ञान गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वड्याइंदा। साचा नाम सतिगुर धार, सति सति वड्याईआ। कर्म कांड ते वसया बाहर, क्रिया विच ना कोए फसाईआ। जिस जन देवे किरपा धार, आपणी तिस जन बूझ बुझाईआ। सो गुरमुख चतुर सुजान, तिस मिल्या हरि रघुराईआ। अठ्ठे पहर इक्क ध्यान, निगहबान होए सहाईआ। दर दरबार देवे माण, दर्दी दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम करे पढ़ाईआ। एका नाम साची वस्त, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। ना कोई कीट ना कोई हस्त, लख चुरासी एका रंग वखाइंदा। शब्द ख़ुमारी सदा मस्त, मस्त अलमस्त आपणा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, नाम नामा झोली पाइंदा। हरि का नाम हरि ही जेहा, नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतारा रसना किहा, कह कह शुकर मनाइंदा। निरगुण सरगुण लाए नेंहा, साचा नेंह जणाइंदा। अमृत बरसे एका मेंहा मेघला रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप प्रगटाइंदा। साचा नाम हरि सरनागत, गति मित आपणी आप जणाईआ। हरि का नाम साचा तत्त, तत्तव तत्त ना वंड वंडाईआ। हरि का नाम ब्रह्म मति, पारब्रह्म सच पढ़ाईआ। हरि का नाम धीरज सति, सति सन्तोख इक्क रखाईआ। हरि का नाम महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। हरि का नाम साचा रथ, जुग जुग भगतां लए चढ़ाईआ। हरि का नाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण जणाईआ। साचा नाम साचा गुण, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। लख चुरासी छाण पुण, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे गुण अवगुण, भेव अभेद खुल्लाइंदा। नाता तोड़ रिख मुन, सन्त सुहेले आपणे अंग लगाइंदा। हरि का लेखा जाणे कवण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण सीस झुकाइंदा। पन्ध ना मुक्के उणंजा पवण, पवणी पवण भुवाइंदा। खेले खेल अवण गवण, त्रैभवण फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम सच दरसाइंदा। एका नाम एका धार, धार धार विच समाईआ। एका नाम सतिगुर प्यार, प्यार प्यार नाल मिलाईआ। एका नाम वणज वापार, हट्ट हट्ट विच वखाईआ। एका नाम दरस दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। एका नाम दए आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। एका नाम हरि हरि सो, सो पुरख निरँजण आप उपाया। एका नाम हँ ब्रह्म बीज बो, पत्त डाली आप महकाया। एका नाम जणाए साचा मोह, जूठा नाता तोड़ तुड़ाया। एका नाम दुरमति मैल देवे धो, निर्मल नीर सीर प्याया। एका नाम अमृत देवे चो, मुख मुखड़ा आप सुहाया। एका नाम ढोआ ढोअ, सति पुरख निरँजण आप वरताया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम दए समझाया। साचा नाउँ आदि पुरख, आदि आदि उपजाया। आपे करके आपणी परख, आपणी कीमत आपे पाया। आपे मेट आपणी हरस, सांतक सति सति वरताया। आपे दे आपणा दरस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ दए वड्याआ। आपे नाउँ आपे निरँकार, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपे मन्दिर आप मुनार, आपे बैठा आसण लाईआ। आपे शब्द नाद धुन्कार, आपे रागी राग अल्हाईआ। आपे सुत्ता पैर पसार, आपे करवट रिहा बदलाईआ। आपे बन्ने हरि साची धार, आपे हुक्मी हुक्म वरताईआ। आपे कागद कलम बणे लिखार, आपे लिख लिख वेख वखाईआ। आपे वसे सब तों बाहर, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे गुरू आप अवतार, आपे जुग जुग वेस धराईआ। आपे भगत भगवन्त करे प्यार, आपे सन्त लए उठाईआ। आपे गुरमुखां निभाए नाल, आपणा संग रखाईआ। आपे गुरसिखां करे सदा प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे प्रगट हो दीन दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। आपे साचा नाम सच्ची धर्मसाल, काया मन्दिर सर्ब टिकाईआ। तिस नाम ना खाए काल, महांकाल नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब नाम रिहा समझाईआ। साचा नाम एका सो, सो पुरख आप जणाइंदा। हँ ब्रह्म ढोआ ढो, बण विचोला खेल कराइंदा। सोहँ शब्द नवां नरो, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। आदि जुगादि त्रै त्रै लोअ, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। बिन सोहँ दिसे ना को, लख चुरासी मौल कन्त कन्तूहल एका नाम जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा। साचा नाम सोहँ हँसा, हँस मुख वड्याईआ। विष्न विश्व एका बंसा, बंसावली आप अख्वाईआ। सहँसर मुख शेष गाए सहँसा, कोटन कोटि नाल सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ एका रूप समझाईआ। सोहँ रूप लख चुरासी नाता, ईश जीव खेल कराइंदा। हँ ब्रह्म पंज तत्त दिती दाता, ब्रह्म मेला मेल मिलाइंदा। अंदर वड़ पुरख समराथा, समरथ आपणी गंढु पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप प्रगटाइंदा। सोहँ नाम कर प्रगट, प्रगट आपणा भेव चुकाइंदा। आदि जुगादी साचा हट्ट, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन नाम पढ़ पढ़ जाण रट, मन का मणका नाल रखाइंदा। एका नाम वसे घट घट, बाहर नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख लाहा लए खट्ट, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। सोहँ शब्द महिमा अकथ, नानक निरगुण सिफ्त सालाहइंदा। सोहँ शब्द चलाए रथ, लख चुरासी गेड़ भुआइंदा। सोहँ शब्द साची वथ, घर साचे आप रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सोहँ रूप कर प्रतख, हँ ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन नाम देवे

दरसा, तिस आपणे विच समाइंदा। साचा नाम पूरन काम, इच्छया अवर रहिण ना पाईआ। निरगुण मिल्या हरि भगवान, श्री भगवान खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म मिल्या दान, परम पुरख दए वड्याईआ। घर सज्जण मिले साचा काहन, हरि मंडल रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस आपणा भेव चुकाईआ। मिल्या नाम चुक्कया भेव, भेव रहे ना राया। पारब्रह्म प्रभ साची सेव, हँ ब्रह्म सेव कमाया। अलख अगोचर देवी देव, देवत आपणा रूप धराया। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर आदि जुगादि, एका वक्खर आत्म परमात्म बन्धन पाया। आत्म परमात्म साचा बन्धन, हरि सतिगुर आप रखाईआ। जोत लिलाटी एका चन्दन, मस्तक टिक्का लाईआ। अन्तर अन्तर इक्क परमानंदन, परम पुरख रखाईआ। गीत सुहागी एका छन्दन, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। नाता तुट्टे जेरज अंडन, अंदरे अंदर गंढु पुवाईआ। गुरमुख मेला मुकंद मनोहर मकुंदन, नेत्र नैण नैण दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम वखाए साचे घर, घर साचा आप सुहाईआ। साचा घर गुरमुख दुआर, गुर गुर आप वड्याइंदा। कलयुग अन्तिम वेख विचार, वेखणहारा दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी कर्ज उतार, आप आपणा मूल समझाइंदा। हरिजन साचे करे प्यार, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। हरि का नाम वणज वापार, साची हट्ट वखाइंदा। रसना जेहवा इक्क अधार, मन मनसा पूर कराइंदा। सोहँ शब्द सच जैकार, आत्म परमात्म रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे साचा दान, साची वस्त आत्म झोली पाइंदा।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी तेज़ भान शेखसर जम्मू ★

बिन तारों रखी तन्दी, हरि सच सितार वजाइंदा। धरत मात मंग मंगी, खाली धवल वेख वखाइंदा। नेत्र रोवे सुहागण रंडी, धीरज धीर ना कोई धराइंदा। चारों कुण्ट होए वरभण्डी, सिर हत्थ ना कोई रखाइंदा। मैं नेत्र नैण होई अन्धी, मेहर नज़र ना कोई टिकाइंदा। मैं चार जुग पई खानेबन्दी, मेरे बन्द ना कोई तुड़ाइंदा। मेरे सीने पावे ठंडी, तूं सब दी आस पुचाइंदा। मैं बिरहों वैरागण भागां मंदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, वर साचा इक्क मंगाइंदा। बिन तार वज्जे तन्द, तन्द तन्द नाल मिलाईआ। मेरे साहिब सुल्तान सदा बख्शंद, तेरे हत्थ

वड्डी वड्याईआ। तूं दाता गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर सदा समाईआ। मेरी मेट सगली चिन्द, धरत मात रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। बिन तन्दी वज्जे राग, हरि साचा आप अलाइंदा। धरनी धरत वैराग़, वैराग़ी रूप वखाइंदा। बण निमाणी गई जाग, आलस निंद्रा वेख वखाइंदा। तेरी आसा होई काग, हँस रूप ना कोए वटाइंदा। मेरे सालू लग्गा दाग़, दुरमति मैल ना कोई धवाइंदा। नाता तुट्टा कन्त सुहाग, बन्धन सीस ना कोए तुड़ाइंदा। चारों कुण्ट जाणा जाग, आपणा डंक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्क सुहाइंदा। तार सितार एका धार, बिन तन्दी आप हिलाईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, जुग जुग वेस वटाईआ। भगतां देवे भगती दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सन्त सुहेले आप पछाण, दर साचे लए मिलाईआ। गुरमुखां देवे नाम निधान, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। गुरसिख सच्चे लए पछाण, आत्म पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। बिन तन्दी नाउँ मृदंग, हरि सज्जण आप वजाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, भेव कोए ना आइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्द, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणा भेव जणाइंदा। भेव जणाए श्री भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। खेले खेल जुगां जगंत, आदि जुगादि जुग जुग वेस वटाईआ। लख चुरासी वेखे जंत, घट घट रिहा समाईआ। गुरमुख मेला नार कन्त, सोभावन्त दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खेल रिहा वरताईआ। धरनी धरत धवल रो, नेत्र नैणां नीर वहाया। खुलड़े केस रही खोह, बहबल आपणा रूप वटाया। मेरा नाता तुट्टा मोह, मेरा संग ना कोए रखाया। साध सन्त करन धरोह, धीआं भैणां रहे तकाया। तुध बिन सहाई ना को, सिर मेरे हथ्थ ना कोई रखाया। मैं फिर के आई त्रैलोअ, लोक परलोक वेख वखाया। कोई ना देवे ढोआ ढोअ, सब धक्का रहे लगाया। मेरे नाल ना सके कोई छोह, जात पात वंड वंडाया। मैं जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत आई टोह, तेरा नूर नज़र किसे ना आया। दीन मज़्हब बण बण बैठे गरोह, तेरी झूठी वंड वंडाया। हिन्दू मुस्लिम सूर गाँ रहे कोह, छुरी तेरे उत्ते चलाया। मैं इसे करके तेरे अग्गे रही रो, दोए जोड़ वास्ता पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी पूरी आस कराया। बिन तन्दी वज्जे तार, सो पुरख निरँजण आप वजाईआ। शब्दी शब्द बोध अगाध, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। एकँकारा

रखे याद, भुल्ल कदे ना जाईआ। आदि निरँजण देवे दाद, जोती जोत नूर रुशनाईआ। श्री भगवान मार आवाज़, एका राग सुणाईआ। अबिनाशी करता रखे लाज, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। पारब्रह्म सुवारे काज, करता पुरख होए सहाईआ। प्रगट हो ग़रीब निवाज़, दीनन दया आप कमाईआ। लख चुरासी वेखे भाज, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। जिस साजन तेरा ल्या साज, सो साहिब लए बचाईआ। तूं इक्को रखणी याद, प्रभ मिले सच्चा माहीआ। कूड़ी क्रिया विच्चों लए काढ, साचे मार्ग पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, एका गुण समझाईआ। बिन तन्दी राग अवल्लड़ा, सच्चा आप वजाइंदा। वसणहारा सच महल्लड़ा, सच साची कार कमाइंदा। सच संदेसा एका घलड़ा, हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। निरगुण फड़ाए आपणा पलड़ा, दामन आपणे नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन तन्दी तार हिलाइंदा। ना तन्दी ना कोई तार, ताल तलवाड़ा ना कोई वजाईआ। आसा अंदर इक्क प्यार, आसा आसा विच समाईआ। गुफ़त शनीद दीद निरँकार, आपणा रूप वखाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी धार चलाईआ। जुग चौकड़ी वेखे चार, गेड़ा आप भुवाईआ। लहिणा जाणे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर सेवा लाईआ। राती रुत्ती थिती जाणे वार, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। लेखा जाणे रवि ससि सूरज चन्न उज्यार, मंडल मण्डप ब्रह्मण्ड करे रुशनाईआ। दाता दानी दो जहान हरि करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे भण्डार, त्रैगुण एका बन्धन पाईआ। पंच तत्त वेख जगत अखाड़, लख चुरासी नाच नचाईआ। नटुआ नट खेल अपार, स्वांगी स्वांग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाईआ। आपणा खेल दस्से हाल, हरि हरि आप जणाया। जुग चौकड़ी बीते काल, कोटन कोटि रूप वटाया। गुर अवतार बण बण दलाल, लोकमात गए समझाया। करे खेल दीन दयाल, दयानिध बेपरवाहीआ। अन्त हल्ल ना होया किसे कोलों सवाल, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कर कर गए सुणाया। एका नाम नाम धन माल, पुरख अकाल खज़ाना हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाया। आपणा खेल कर करतार, बिन तन्दी तार हिलाइंदा। घर घर बह बह करे विचार, सोचिआं सोच विच ना आइंदा। जुग जुग लेख अपर अपार, लेखा लेखे विच रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। धरनी धरत धवल दे सहार, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। धरनी उठ कर ध्यान, हरि जू आप सुणाइंदा। चारों कुण्ट दिसे वैरान, साचा खेड़ा ना कोई वसाइंदा। भठ होया ज्ञान ध्यान, भेव अभेद ना कोई जणाइंदा। चारे वरन होए शैतान, शरअ शरीअत नाल मिलाइंदा। साचा राग ना सुणे कोई कान,

झूठा नाद सर्ब वजाइंदा। चार दीवारी मन्दिर मकान, इट्टां गारा नाल रखाइंदा। घट मन्दिर ना वेखे कोई मार ध्यान, बन्द ताक ना कोई खुल्हाइंदा। सतिगुर मिले ना किसे आण, दुखड़ा रोग ना कोई मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण आप जणाइंदा। एका गुण सुण लै पुत्तरी धी, हरि सच्चे सच जणाया। तेरी वंडी हरि जू सीं, साची वंड कराया। गोबिन्द बाले रखे हेठां नींह, तेरा दुखड़ा दए गंवाया। उत्ते बरखे गुरमुख मींह, अमृत मेघ बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप सुणाया। तेरा दुःख वंडे दरद, बेदर्दी आप समझाइंदा। सब दे सिर तों छुरी हटाए करद, जिब्हा हलाल ना कोई वखाइंदा। प्रगट हो के आवे इक्को मरद, मर्द मर्दाना नाउँ धराइंदा। तेरे सिर ते देवे प्रेम फरद, खुल्ही गुत्त ना कोई वखाइंदा। अग्गे होण दा देवे हरज़, पिछला दुःख गवाइंदा। तेरा लाहवे आपे कर्ज़, मकरूज फेरी पाइंदा। तेरी सिद्धी करे नरद, नारद मुन ना वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आपणा भेव हरि जू दस्स, एका गुण जणाया। बाली कन्या उठ उठ हस्स, सिर तेरे हथ्थ टिकाया। तेरा साहिब होए वस, वेखीं चाँईं चाया। निरगुण लोकमात आए नस्स, रूप अनूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा होए सहाया। धरत मात कहे मैं रंडी, चारों कुण्ट कूक सुणाया। मेरा कोई ना संग करे वरभण्डी, साक सैण ना कोई बणाया। नक्क नथ्थ सुहाग ना कन्न डण्डी, सीस सीस ना कोई गुंदाया। मैं जाए बैठी कन्ढी, जिथे गुर अवतार किसे ना फेरा पाया। मैं भागहीण भागां मंदी, मेरा दुखड़ा ना कोई गंवाया। चारों कुण्ट वासना गंदी, सुगंधी नज़र कोए ना आया। मैं बौहड़ी फस गई फंदी, मेरा फंद ना कोई तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोई सहाया। तेरी कन्ढी लग्गे प्यारी, हरि साचा सच जणाइंदा। कलयुग तेरी आई वारी, अन्तिम तेरा लहिणा मुकाइंदा। प्रगट हो जोत निरँकारी, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। लहिणा चुकाए कृष्न मुरारी, मुकंद मनोहर मुक्ट आपणे सीस टिकाइंदा। जिस हथ्थ फड़ी कटारी, पंजे पाडों सुत सीस कटाइंदा। अन्तिम मंगे बण दर भिखारी, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। अश्वथामा नेत्र रोवे करे गिरयाज़ारी, नैण नीर नीर वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। पंडत मंगे एका दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। मैं भुल्ल गया भगवान, तेरा भेव ना राईआ। मैं मारे बाले नादान, रत्त धरत मात डुल्हाईआ। मेरी बुद्धि होई सवान, आसा काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरी देणी भुल्ल बख्शाईआ। अग्गों धरत मात कहे पुकार, एका गुण जणाया। सोलां कला कल अवतार, कृष्ना एह की

खेल रचाया। तेरे हथ्थों होया विभचार, छोटे बाले सीस कटाया। हुण पंडत करे गिरयाज़ार, वेला गया हथ्थ ना आया। मैं दर्द भरी करां पुकार, बण दर्दी दर्द वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराया। साचा खेल श्री भगवान, एका एक कराइंदा। धरत मात कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। अस्वथामा देवे ज्ञान, एका गुण वखाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे श्री भगवान, आपणा खेल कराइंदा। धरनी तेरा पूरा करे दान, दाता दानी वेस वटाइंदा। तूं कन्ढी डेरा मल्लीं आण, जिथे फेरा कोई ना पाइंदा। किरपा करे आप मेहरवान, साचे प्रोहित जन्म दवाइंदा। आप होए फेर निगहबान, नैण नैण नाल मिलाइंदा। नूरी तेज तेज भान, भान भान विच प्रकाश वखाइंदा। बिन पढ़यां इक्क ज्ञान, बिन विद्या भेव मुकाइंदा। तेरा नाता जोड़े विच जहान, साचा बन्धन पाइंदा। चल के आए श्री भगवान, तेरा लहिणा मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच विहारा शाहो भूप, हरि सतिगुर आप कराईआ। ना कोई रंग ना कोई रूप, रेख नज़र किसे ना आईआ। आपे वंडी आपणी कूट, आपे फेरा पाईआ। आपे देवे आपणा सच सबूत, लिखण पढ़ण विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धरत धवल तेरी पूरी आसा, आसावन्त कराइंदा। जुग चौकड़ी दे भरवासा, लहिणा मूल चुकाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशा, अबिनाशी धार चलाइंदा। सदा सुहेला वसे पासा, विछड़ कदे ना जाइंदा। रल मिल सारे करो हासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कराइंदा। साची दया दयावान, हरि साचा सच जणाईआ। दरोनाचारज जिन्हां नूं दिता ज्ञान, एका करी पढ़ाईआ। सो तेरी कुक्खों जन्म लैण आण, उत्ते कन्ढी डेरा लाईआ। तिन्हां अन्त मिले भगवान, चारों कुण्ट लए उठाईआ। शब्द सुरत इक्क ध्यान, एका राग अलाईआ। चरन कँवल बख्शे माण, माण माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खेला, खेलणहार भेव ना आया। लेखे लाए गुरू गुर चेला, चेला आपणा नाम धराया। हरिसंगत हरि जू करे मेला, पहला दुःख गंवाया। वसणहारा धाम नवेला, लोकमात वेस वटाया। आदि जुगादि सज्जण सुहेला, जुग जुग आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार एका घर वखाया। प्रेम प्यार पाए गंढ, हरि गंढणहार गोपाल। आत्म अन्तर रखे ठंड, दीनां बंधप दीन दयाल। दूई द्वैती ढाहे कंध, इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल। एका नूर एका चन्द, एका जल्वा दए जलाल। एका तोड़े खानाबन्द, एका चले नाल नाल। इक्क वजाए सच रबाब तन्द, बिन तन्दी बण दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा श्री भगवान।

श्री भगवान की करे विचारा, आपणा जुग जुग मूल मुकाईआ। भगतां दर बणया रहे वणजारा, बण सेवक सेव कमाईआ। आदि अन्त कटदा रहे वगारा, बण वगारी फेरा पाईआ। गुरमुखां अग्गे कढ्ढदा रहे हाढ़ा, जिउँ धन्ने जट्ट सीस निवाईआ। आपे दोए दोए जोड़ करे निमस्कारा, अंदर वड़ वड़ सीस झुकाईआ। गुरसिख तेरा इक्क सहारा, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। तेरा मन्दिर मेरा चुबारा, चार कुण्ट ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनरागी राग सुणाईआ। अनरागी गाए आपणा राग, राग नाद भेव ना राया। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म बेपरवाहया। वेस वटाए आदि जुगादि, जुग जुग रूप धराया। नाम जणाए बोध अगाध, शब्दी शब्द सुणाया। सन्त सुहेले आपे काढ, आप आपणी गोद बहाया। निरगुण सरगुण करे लाड, प्रेम प्यार इक्क वधाया। लेखा जाणे मोहण माधव माध, शब्दी शब्द सुणाया। बिन तन्दी वज्जे साज, सच तम्बुर हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आप जणाया। जुग जुग लेखा धरत मात, धुर दरबारी आप जणाइंदा। ना कोई कलम ना दवात, बिन शाही खेल कराइंदा। सदा सुहेला इक्क अकेला देवणहारा अनडिठड़ी दात, वस्त अमोलक नाम वरताइंदा। जुग जुग रखे डूँघा खात, भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम खोल्हे ताक, बण बरदा सेव कमाइंदा। धरत धवल तेरी सुत्ता खाट, गुरमुख आत्म सेजा इक्क हंढाइंदा। दो जहानां कट के आया वाट, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। चरन सरन सरनाई बन्न्हे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे नार कमजात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग लहिणा आप चुकाइंदा। जुग जुग लहिणा चुकावण खातर, हरि जू आपणी खेल कराईआ। गुर अवतारां स्नेहुड़ा दे दे पात्र, गुर गुर बाणी नाउँ धराईआ। मन मति बुध ना बणे चातर, चतुराई कोए नज़र ना आईआ। जन भगतां देवे साचा आदर, दर साचे आप बहाईआ। सन्त सुहेले वेख बहादर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुख नुहाए साचे सागर, दुरमति मैल धुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा आप मुकाईआ। पूरब लहिणा हरिजन लैणा, देवणहार निरँकारा। कलयुग अन्तिम वेखणा नैणा, खेले खेल अगम्म अपारा। लख चुरासी भाणा सहिणा, चारों कुण्ट धूंआँधारा। धरत धवल तेरे तन साचा गहिणा, सतिजुग सच करे शृंगारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। अपर अपार हरि स्वामी, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। आदि जुगादि घट घट अन्तरजामी, अन्तर आत्मा बूझ बुझाईआ। निरवैर निरगुण सदा निहकामी, निहचल धाम डेरा लाईआ। आपणी इच्छया गुर गुर बाणी, गुर अवतारां आप सुणाईआ। सचखण्ड दी सच कहाणी, लोकमात प्रगटाईआ। लेखा जाणे चार खाणी, चारे बाणी रूप वटाईआ। सतिगुर

मिलावा गुर गुर हाणी, गुर गुर गुरमुख लए उठाईआ। दोहां विचोला अमृत बाणी, निझर झिरना मुख झिराईआ। आत्म सुरती बण सवाणी, हो निमाणी सेव कमाईआ। आप जणाए धुर फ़रमाणी, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। शहिनशाह शाह पातशाह हरि सुल्तानी, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्रेम आप वधाईआ। प्रेम अंदर प्रेम रख, हरि आपणा आप छुपाया। प्यार अंदर हो प्रतख, प्यार प्यार नाल मिलाया। प्रेम अंदर प्रेम ढक, आप आपणा पड़दा पाया। प्यार अंदर प्यार कर प्रगट, आपणा मेला मिलाया। करे खेल हरि समरथ, समरथ धार चलाया। लेखा जाणे अकथना अकथ, ना लेख कोई मिटाया। द्वापर दिती एका वथ, वस्त अमोलक झोली पाया। शब्द चलाए साचा रथ, बण सेवक सेव कमाया। हरिजन साचे कर इक्ठ, एका घर बहाया। वस्त अमोलक देवे वथ, एका एका एक वरताया। चार जुग गवाउँदा आया आपणा जस, कलयुग अन्त जस भगतां आप सुणाया। प्रेम अंदर गया फस, प्यार एका बन्धन पाया। निरगुण रूप जाए नस्स, सरगुण आपणा घेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा आप चुकाया। लहिणा देणा चुकाए मकरूज, कर्जा आपणा आपे लाहीआ। कलयुग अन्तिम फसया विच हदूद, हद्द पार ना कीती राईआ। सखीआं लभ्भा इक्क महबूब, मिहबान खुशी मनाईआ। जिस दा कलमा देवे सबूत, सो इमाम फेरा पाईआ। करे खेल बिन रूह कलबूत, पवण स्वास ना कोई चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहला लहिणा सर्ब मुकाईआ। साचा लहिणा दे दे राम, हरि भगतां आख सुणाया। जुग जुग तेरा करदे आए काम, निउँ निउँ सीस झुकाया। भगती ला ला कर रखे गुलाम, सिर आपणा हुक्म वरताया। चार जुग दा रिहा पीण खाण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लाया। फिर वी छुपया रिहों भगवान, आपणा दरस ना कदे कराया। इक्क वार दे के झलक दस्स निशान, फिर आपणा मुख छुपाया। साडी बन्द होई ज़बान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साडी इच्छया पूर कराया। इच्छया करे पूर, पूर गुसाँया। सदा वसे नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। निरगुण सरगुण रहे हज़ूर, हज़रत आपणा खेल कराया। पहला लहिणा चुक्के ज़रूर, अग्गे देणा झोली पाया। पिछला बख्शे सर्ब कसूर, अग्गे भगती ना कोए लाया। चार जुग हुंदा रिहा मज़बूर, गुर अवतार मात घलाया। आपणा दे दे छोटा नूर, जोती जोत कर रुशनाया। अन्तिम चाढ़े आपणे पूर, आपणा बेड़ा आप उठाया। कलयुग अन्तिम प्रगट हो के आया हज़ूर, आपणा पर्दा दए उठाया। आपणा नाम दए सरूर, शरअ शरीअत ना वंड वंडाया। त्रैगुण तपे ना तन तन्दूर, अमृत मेघ इक्क बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपणा दरस आप कराया। हरिजन साचे

करना दरस, हरि दरसी दरस कराइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हिवस हरस ना होर वधाइंदा। लख चुरासी विच्चों करे परख, परख परख आपणी झोली पाइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श, फर्श आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर आया परत, प्रतीनिध आपणा नाउँ धराइंदा। प्रतीनिध होया प्रधान, पंचम मेल मिलाईआ। बिन तन्दी गाए गाण, गावणहारा इक्क अख्वाईआ। बिन रागों करे पहचान, आपणी बूझ बुझाईआ। बिन विद्या देवे ज्ञान, एका अक्खर पढ़ाईआ। बिन लम्भयां मिले भगवान, बन खोजण कोए ना जाईआ। बिन मंग्गयां देवे दान, साचा नाम झोली पाईआ। बिन हथ्थां उठाए निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। बिन शाहा पाए आण, एका हुक्म सुणाईआ। बिन नेत्र करे ध्यान, वेखे थाउँ थाईंआ। बिन तीर मारे निशान, चिल्ला हथ्थ ना कोए उठाईआ। बिन वसे मन्दिर मकान, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। बिन दीवा बाती नूर महान, जोती जोत करे रुशनाईआ। बिन मात मात पित पूत जम्मया बाल निधान, गोदी गोद ना कोई उठाईआ। बिन मन्त्रीआं होया हुक्मरान, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। बिन खाध्याँ पीतिआं होया जवान, आपणा बल धराईआ। बिन नारी उत्पत करे सन्तान, विष्न ब्रह्मा शिव बणाईआ। बिन सद्दयां आवे विच जहान, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, भगतन मेला एका घर, सच दुआरा आप सुहाईआ। सच दुआरा सोभनीक, हरि साचे आप सुहाया। बिन परमात्मा ना कोई प्रीत, दूजा इष्ट ना कोई मनाया। बिन सतिगुर ना कोई रीत, दूजा राह ना कोई चलाया। बिन गुरचरन ना कोई मन्दिर मसीत, गुरुदुआर नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाया। बिन मिल्या ना होवे सांत, सांतक सति ना कोई वरताईआ। बिन प्रकाश ना मिटे रात, अन्त अन्धेर ना कोई गंवाईआ। बिन सतिगुर ना देवे कोई दात, नाम वस्त ना कोई वरताईआ। बिन गुरमुख उतरे ना कोई घाट, लख चुरासी मँझधार रुढ़ाईआ। बिन गुर शब्द ना कोई साक, जगत सज्जण ना कोई बणाईआ। बिन किरपा गुर ना खुल्ल्हे ताक, बन्द किवाड़ ना कोई खुल्हाईआ। बिन नेत्र नज़र ना आए हाट, गुर सतिगुर पूरा रिहा वखाईआ। कलयुग चोला रिहा पाट, कन्नी कन्नी कतराईआ। धरत मात खुशी होए मेरी अन्त मुक्के वाट, कन्ढी मिल्या सच्चा माहीआ। मेरी सुफ़ल करे ज़ात, आपणी ज़ात नाल मिलाईआ। मेरी फिर होवे प्रभात, सतिजुग साचा लए अंगड़ाईआ। मैं भगतां कोलों सुणां गाथ, सोहँ ढोला चाँईं चाँईंआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां रख्या साथ, तिन्हां निउँ निउँ लागां पाईंआ। दोए जोड़ टेकां माथ, ढह ढह पवां सरनाईआ। मेरी दुरमति मैल दिती काट, गुरमुख तेरी वड वड्याईआ। तूं मेरा सज्जण साक, मैं तेरा बन्धन

५०४
११

पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्क प्रेम आपणा नेम जुग जुग आप समझाईआ। हरि हरि सतिगुर साचा नेम, इक्को इक्क जणाया। दुष्ट दमन बिठाया कुण्ट हेम, चरन कँवल चित लाया। पारब्रह्म प्रभ कीआ प्रेम, सिर आपणा हत्थ टिकाया। इक्को देवे लहिणा देण, देणा आपणे हत्थ रखाया। उठ बाले मन्न लै कहिण, साचा हुक्म सुणाया। मूर्त अकाल वेख आपणे नैण, पुरख अकाल फेरा पाया। इक्को साक इक्को सैण, इक्को सज्जण संग निभाया। इक्को मात पित भाई भैण, इक्को नार कन्त रंग चढ़ाया। इक्को पुरख देवे देण, देवणहारा फेरा पाया। तेरा प्रेम आया लैण, साची मंग मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा प्रेम इक्क समझाया। प्रेम कीता दुष्ट दमन, एका ओट तकाईआ। पारब्रह्म आपणे अन्तर कीता गबण, भेव अभेद छुपाईआ। इक्क वखाया साचा हवन, घृत दीप ना कोई मिलाईआ। ना सुगंधी कोई पवण, सच सुगंधी इक्क सुहाईआ। तेरा नूर साचा रमन, तेरा जहूर वड्डी वड्याईआ। तूं मेरा लाउणा चमन, लोकमात फेरा पाईआ। मैं तेरा होवां जामन, एका पल्लू दयां फड़ाईआ। तूं पड़्हौणा शूद्र वैश क्षत्री जा के ब्रह्मण, एका इष्ट वखाईआ। नेत्र खोल्हना अक्खर बोलणा एका पुरख अकालण, दूजी होर ना कोई सरनाईआ। मैं करां तेरा पालण, गुज़री गोद सुहाईआ। तेग बहादर दा बणना लालन, लाल लाल रंग चढ़ाईआ। मैं खेलां खेल निरालण, भेव कोए ना पाईआ। तेरा मेला जोत अकालण, विछड़ कदे ना जाईआ। तूं घाली मेरी घालण, साची सेव इक्क समझाईआ। तेग बहादर हड्डीआं वेखणीआं बालण, त्रैगुण अग्न देणा जलाईआ। तूं करना इक्क सवालण, एका मंग मंगाईआ। मैं तेरा राह तक्का मेरे भगवानन, नेत्र नैण उठाईआ। मैं बाले आया तेरी गोद सवालण, तेरी झोली पाईआ। मैं गुरमुख आया उठालण, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। अन्तिम मंगण एका दानन, सूलां सत्थर हेठ विछाईआ। तूं हर घट जाणी जानण, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा प्रेम रिहा समझाईआ। इक्को प्रेम देवे हरि, एका वार सुणाया। दुष्ट दमन चुक्के डर, भय ना कोई जणाया। सरगुण अंदर आपे वड़, निरगुण रूप वटाया। गोबिन्द सूरा नाउँ धर, सिँघ सिँघ वड्याआ। लोकमात सेवा कर, लख लख शुकर मनाया। अन्तिम मंगया इक्को घर, प्रभ अग्गे झोली डाहया। मैं सरन सरनाई जावां पड़, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। तूं मेरी बांहों लैणा फड़, आपणी गोद बहाया। मैं छाती उत्ते जावां चढ़, आपणी खुशी मनाया। मैं वसां तेरे घर, घर तेरा मोहे भाया। तूं चुकाया मेरा डर, मैं गुरमुखां डर रिहा मुकाया। अन्त फड़ावां तेरा लड़, तेरा तेरी झोली पाया। तेरा इक्को निष्अक्खर जावां पढ़, वाह वाह तेरी वड वड्याआ। गुर गुर रूप तूं ही नर, नर नरायण सच्चे शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, मेरी लग्गी तोड़ निभाया। तेरी लग्गी निभे तोड़, पुरख अकाल आप जणाइंदा। अन्तिम नाता ल्या जोड़, घर साचे आप बहाइंदा। कलयुग वाग लैणी मोड़, एका राह वखाइंदा। शब्द सरूपी शब्द घोड़, तेरा रूप वटाइंदा। लोकमात जाणा दौड़, साचा खेल वखाइंदा। लख चुरासी रीठा वेखणा मिठ्ठा कौड़, एका हुक्म वरताइंदा। दो जहानां लाउणा पौड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाइंदा। आपणे गुरमुख वेखणे करके गौर, निगह निगह ना कोई बदलाइंदा। तेरा रचया कारज जाणा सौर, प्रेम प्रेम नाल निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। तेरा प्रेम मेरा रंग, दूजी अवर ना कोई वड्याईआ। तेरी सेज तेरा पलँघ, तेरा आसण मेरा सुखदाईआ। तेरा नाम तेरा मृदंग, मृदंग मेरी वड्याईआ। साहिब सुल्तान प्रभ तेरा संग, मैं विछड़ कदे ना जाईआ। इक्को मंगां साची मंग, तूं देणी चाँईं चाँईंआ। मैं छड्डुया पुरी अनन्द, अनन्द तेरा इक्क मोहे भाईआ। मातलोक कहिन्दे गुज़री चन्द, एथे ना कोई पिता ना कोई माईआ। तूं साहिब इक्क बख्शंद, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। तेरे हुक्में अंदर लोकमात जावां विच वरभण्ड, निरगुण रूप वटाईआ। तेरा मंगां साचा संग, इक्को घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ। लोकमात देवे साथ, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। कवण किनारा उतरे घाट, कवण मन्दिर वज्जे वधाईआ। कवण सज्जण रखे साक, आपणा संग निभाईआ। कवण किवाड़ खोल्हे ताक, आपणा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण देणा समझाईआ। साचा गुण श्री भगवान, एका एक जणाया। तेरा प्रेम मेरा निशान, सच निशाना दए जणाया। तेरा मन्दिर मेरा मकान, घर साचा सोभा पाया। तेरा शब्द मेरा ज्ञान, राग अनादी आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाया। आपणा बन्धन आपे पा, हरि हरि खेल कराया। कलयुग अन्तिम बणां मलाह, तेरा बेड़ा मात चलाया। तेरी रखां ज़रूर सलाह, सालाह कार एका गुण समझाया। लख चुरासी जीव जंत चार वरन जपावां नाँ, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। चार जुग दे विछड़े भगत सन्त लवां मिला, गुरमुख सज्जण आप जगाया। तेरा मेला दयां मिला, मिल मिल सखीआं ख़ुशी मनाया। एका चन्द दयां चढ़ा, निरगुण नूर जोत रुशनाया। एका डंका दयां वजा, दो जहानां आप सुणाया। विष्न ब्रह्मा शिव दयां हिला, सोया कोए रहिण ना पाया। जुग चौकड़ी पन्ध मुका, कलयुग खेड़ा देवां ढाहया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लहिणा देणा दयां चुका, खाणी बाणी झोली पाया। दर घर साचे बहणा दयां समझा, एका दूजा भेव चुकाया। इष्ट देव गुर इक्क वखा, पुरख अकाल एका नज़री आया। एका जाप दयां जपा, आत्म परमात्म रंग चढ़ाया। सोहँ ढोला इक्क सुणा, काया चोला

५०६
११

आप रंगाया। पड़दा ओहला दयां उठा, उठ उठ आपणा मुख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन हरि हरि साचे लए मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम सितार हरि निरँकार, बिन तन्दी तन्द वजाया।

★ १७ माघ २०१८ बिक्रमी तेज भान दे घर शेख़सर जम्मू ★

धरनी चढ़या एको चाअ, धवल रही समझाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या मलाह, खेवट खेटा बेपरवाहीआ। मैं कोझी कमली पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग जुग दे दुखड़े दए मिटा, मेहर नज़र इक्क रखाईआ। मेरे विछड़े सज्जण दे मिला, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। मेरे दुखड़े दर्द दए मिटा, दीनां नाथ फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रहिमत आप कमाईआ। धरनी धवल करे हासा, घर घर ख़ुशी मनाईआ। मिल्या मेल पुरख समराथा, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। चल के आया शाहो शाबाशा, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मेरी रही ना कोई निराशा, निर्धन दए वड्याईआ। खोल्ह के दस्सां आपणा खुलासा, पहला हाल सुणाईआ। तूं करवट दे के सुत्ता रहिउँ पासा, मेरी सार कदे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। धरनी कहे मैं दस्सा हाल, अहिवाल आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल कमाल, तूं करता रिहा कमाईआ। गुरमुख विरले भेजे लाल, मेरा संग निभाईआ। लख चुरासी तेरी चाल, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। त्रैगुण माया पा जंज़ाल, एका फन्द रखाईआ। ठग्ग चोर यार लुट्टण मेरा धन माल, मैं बैठी मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तेरी ओट रखाईआ। धरत मात नेत्र खोल्ह, नैण नैण उठाया। पुरख अबिनाशी वसया कोल, मेरा दुखड़ा दर्द गंवाया। हौली हौली रही बोल, आपणा दुःख सुणाया। तूं मेरे नाल कीता कौल, पूरा कौल दे कराया। मैं तेरे उत्तों घोली घोल, घोल घोली सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तेरी आस रखाया। इक्को रखी तेरी आस, प्रभ मेरे सच्चे सांईआ। तूं मेरी बुझा प्यास, दर तेरे सीस झुकाईआ। तुध बिन खाली दिसन स्वास, मेरा जीवण कम्म किसे ना आईआ। तूं साहिब पुरख समरथ, हथ्थ तेरे वड्याआ। कर किरपा अनाथा नाथ, दीनन तेरी ओट तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। धरनी धरत रही नच्च, आपणी घुंमर रही पाईआ। वेखो प्रभ आया सच्च, साची रीत चलाईआ। जिस दी अग्न अंदर गई मच्च, बिरहों रोग लगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। तैनूं वेख मेरा बदल्लया रंग, मेरे परीतम सच्चे माहीआ। चढ़या चाअ मैं वसां संग, एका आस तकाईआ। तेरे चरन कँवल सच्चा अनन्द, छुट्टी सर्ब लोकाईआ। तूं दुखड़ा मेरा करना खण्ड खण्ड, एका खण्डा नाम चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा बेड़ा पार कराईआ। मेरा बेड़ा करदे पार, तेरी इक्को ओट रखाईआ। मैं कन्ढी बैठी आण, आपणा पन्ध मुकाईआ। अठे पहर तेरा ध्यान, एका नैण उठाईआ। तूं साहिब हो मेहरवान, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं बाली बुध अञ्याण, बल आपणा ना कोए वखाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, तेरे हथ्थ तेरी शहिनशाहीआ। तेरा हुक्म मैनूं परवान, दे परवाना मेरे गुसांईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी पूरी आस कराईआ। मेरी पूरी होए आसा, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरी ओट तेरा भरवासा, तेरे लेखे लाइंदा। तेरा प्रेम तेरा दिलासा, तेरा संग निभाइंदा। तेरी खेल तेरा तमाशा, तेरे घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी दिशा आप सुहाइंदा। तेरी दिशा सोभावन्त, हरि साचे सच जणाया। तेरी महिमा गणत अगणत, लिख लिख लेख ना कोई समझाया। तेरी गोदी बैठे साचे भगत, भगवन मेल मिलाया। तेरी महिमा गाउण सन्त, धन्न धन्न तेरी वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए चुकाया। धरनी अग्गों खोल्ले अक्ख, आपणी पलक भुवाईआ। तूं साहिब नज़री आया इक्क समरथ, चरन तेरी सरनाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, तेरा माण ना कोई वड्याईआ। तेरी सरनी गई ढठ्ठ, एका मंग मंगाईआ। साचा मार्ग देणा दस्स, मैं जावां चाँई चाँईआ। आपणा पन्ध मुकावां नस्स नस्स, बण बण पाँधी राहीआ। तेरे भगतां गावां जस, जिस दुआरे फेरा पाईआ। वेखीं लारा दे ना जावीं नस्स, जुग जुग अछल अछल तेरी खेल तेरा भेत कोई ना पाईआ। मैं चार जुग दी थक्की मांदी करके बह गई बस्स, अग्गे बल ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणी दया कमाईआ। धरनी कन्ढी तेरे रोड़े, पत्थर पाहन मिले वड्याईआ। कर किरपा जिउँ धन्ने बौहड़े, निरगुण आपणा रूप प्रगटाईआ। तेरी छाती उत्ते बिठाए निक्के निक्के मोड़े, हरिजन साचे विच वसाईआ। चरन प्रीती एका जोड़े, आपणा बन्धन पाईआ। कलयुग अन्तिम आपे बौहड़े जगत विछोड़ा दए कटाईआ। चढ़ के आया साचे घोड़े, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। चार जुग दी मिटे औड़े, एका अमृत मेघ बरसाईआ। मिठ्ठे करने फल कौड़े, आपणा रस वखाईआ। गुरमुखां हरि जू आपे बौहड़े, तेरा दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तेरा रोड़ा प्यारा पत्थर, प्यार प्यार नाल टपकाइंदा। तेरे उत्ते साचा सत्थर, हरि यारड़ा आप विछाइंदा।

५०६
११

तेरा नेत्र पूंझे अथ्थर, आपणी गोद बहाइंदा। फड़ के चोटी चाढ़े सिखर, हरिजन साचे नाल मिलाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां रखे आपे फिकर, बेफिकरा हो भुल्ल कदे ना जाइंदा। कलयुग अन्तिम गावण आया ज़िकर, ज़ाहरा आपणा रूप धराइंदा। आपे मात आपे पित्तर, पूत सपूता गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा कंकर कंकर लेखे लाइंदा। कंकर कंकर वज्जे मृदंग, हरि मृदंगा आप वजाइंदा। घर घर चढ़ाए साचा रंग, बण ललारी सेव कमाइंदा। तेरे अंदर वड़ वड़ सूरा सरबंग, मोह ममता आप चुकाइंदा। तेरी सहोणी सेज पलँघ, पलँघ रंगीला आप वड्याइंदा। उत्ते बह बह गाए छन्द, छन्द सुहागी आप सुणाइंदा। वजाए सितार बिन तन्दी तन्द, बूड़ी नाल ना कोई रलाइंदा। आपे तुट्टी देवे गंढु, अग्गे आपणी गंढु पुवाइंदा। तेरा चुक्के रंडेपा रंड, साचा संग इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा कंकर आप सुहाइंदा। तेरा कंकर वेख्या ठीकर, हरि ठीकर भन्न वखाया। तेरा वैराग इक्क तीबर, तृष्ना भुख गंवाया। तेरा जागया बीर बब्बर, तेरा नविशतह दए वखाया। गल्ल लाए भरी चिकड़, दुरमति मैल धुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अंदर आप सुहाया। तेरे मन्दिर अंदर हरिभगत, भगवान आप बहाइंदा। लेखा जाणे तेरा जुगत, जगत जुग आपणा खेल कराइंदा। तेरा लहिणा चुकाए आपणे वक्त, वेला आपणा आप सुहाइंदा। तेरे खेड़े पाए बरक्त, नाम वस्त इक्क वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा मेल मिलाइंदा। तेरा मेला गुरसिख धार, गुर गुर दए वड्याईआ। तेरा मेला गुरमुख दरबार, मुख मुख आप सालाहीआ। तेरा मेला सन्त दीदार, सन्त साजन लए उठाईआ। मेरा खेल अगम्म अपार, जुग जुग वेस वटाईआ। डुब्बदे पाथर देवां तार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्तिम आई तेरी वार, तेरा दुखड़ा दयां गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक्को दान, नाम निधाना झोली पाईआ।

दर घर आई इक्को मंगण, भगतन नाता दे जुड़ा। दर दरवेश बणी मलंगण, बैठी सीस झुका। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हरि चाढ़ इक्को रंगण, मेरा काला मुख धुवा। तूं आदि जुगादि जुग जुग कोटन कोटि त्रिलोकी वेखे त्रिलोकी नंदन, लोक परलोक चरनां हेठ दबा। करां निमस्कार दोए जोड़ बन्दन, बन्दीखाना दे तुड़ा। जुग चौकड़ी पाए फंदन, ना सके कोई बचा। तूं साहिब हारा टुट्टी गंढुण, मेरे उपर दया कमा। मैं नेत्रहीण फिरां अन्धन, कर जोत नूर रुशना। मैं तेरे

भगतां दी चरन धूढ़ चुक्की बण के भंगण, सीस खारी लवां उठा। चारे कुण्ट गावां एका छन्दन, सोहँ ढोला दयां सुणा। तूं वेखणहारा जेरज अंडन, उत्भुज सेत्ज रिहा समा। तूं जुग जुग फड़या चण्ड प्रचण्डण, नाम खण्डा इक्क चमका। मैं सुहागी होणां रंडन, मेरा जगत रंडेपा दे कटा। मैं अन्तिम आई कन्ढुण, तूं कन्ढी फेरा पा। मैं वेखा खेल विच वरभण्डन, ब्रह्मण्डन तेरी रज़ा। तेरे हुक्मे अंदर सूरज चन्दन, मंडल मण्डप रहे डगमगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त झोली पा। एका वस्त दे अनमोल, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। तेरे भगतां वसां कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। बण डूंमणी वजावां ढोल, तेरा डंका हथ्थ उठाईआ। बण सुवाणी कुण्डा देवें खोल्ह, घर घर जोत जगाईआ। तूं साहिब मेरे अंदर जाणा मौल, तेरी रुत्तड़ी मोहे भाईआ। तेरे चरन कँवल मैं आपणी छाती उत्ते रखां होए निमाणी धौल, धरनी आपणा सीस झुकाईआ। तूं आपणा पर्दा देणा खोल्ह, मेरा घूँगट दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां मिलां चाँईं चाँईंआ। तेरे भगत मिलण दा चाअ, मैं नित नित उडीक रखाईआ। चार जुग गए विहा, चौंकड़ चौंकड़ पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर दे दे गए सलाह, मैनूं उँगलां नाल समझाईआ। अन्तिम आवे इक्क खुदा, बेऐब रूप वटाईआ। तैनूं देवे सच पनाह, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मेरे बख्शे सर्ब गुनाह, पत्तत पापी पार कराईआ। तूं चरनी डिगीं आ, एका मति जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन होर ना कोई सहाईआ। दस्सया वेला आया नेड़े, आपणा पन्ध मुका। मैं छड्ड के आई सारे झेड़े, दर तेरे डिगी आ। मैं वसदे छड्डे खेड़े, इक्को मंगी चरन पनाह। तूं बन्न्हे मेरे बेड़े, मेरे पिछले बख्श गुनाह। मैनूं सच दस्स तेरे भगत केहड़े केहड़े, मैं चरनी डिगां जा। मेरे खुल्ल्हे होए वेहड़े, नौ खण्ड पृथ्मी वसया थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां पकड़ी बांह। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, आपणी खुशी मनाईआ। उठ मार्ग देवां दस्स, एका वार समझाईआ। पिच्छे न्उँ ना वेखीं जाईं नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। कंडी बैठा मेरा गुरसिख रिहा वस, मेरे विच ध्यान लगाईआ। तूं जा के चरनी ढट्ठ, मंग इक्क सरनाईआ। जे उह बहे दड़ वट्ट, चुप चुपीता मुख भुवाईआ। तूं सिर चरनां उत्ते सट्ट, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राह रिहा वखाईआ। एका राह लैणा तक्क, हरि सच्चा सच जणाइंदा। राह विच ना जाणा थक्क, एका मंज़ल पूर कराइंदा। उथे लेखा हक़ो हक़, घाटा कोए नज़र ना आइंदा। तूं जाणा हो अणझक, दर आयां ना कोए परताइंदा। तूं जा के रगड़ीं नक्क, एका गुण समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा

खेल आप कराइंदा। की करां मैं किधरे जावां, राह खैहड़ा नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट वेख वखावां, मेरा नैण मेरा संग ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट प्या रौला कागां कावां, हँस धार ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव देणा दस्स, देणी सच सलाहीआ। आ दस्सां साचा भेत, हरि सज्जण सच सुणाया। भगत गुरमुख इक्को वेख, हरि सतिगुर आप बणाया। साचे वसया साहिब देस, सो देस रिहा समझाया। जिथे ना कोई मुल्ला ना कोई शेख़, पंडत पांधा ना कोई पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाया। उठ जाह जाणां भज्ज, हरि साचा सच जणाइंदा। गुरमुख दुआरे जाणा सज, घर साचा इक्क वखाइंदा। उह रखे तेरी लज्ज, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। पड़दा देवे मात कज्ज, दूजी वार ना कोए उठाइंदा। तूं लौहणी लोक लाज, हरि जू लज्जया विच कदे ना आइंदा। जिस रचया आपणा काज, सो तेरा काज पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से साचा राह, निरगुण शब्दी बण मलाह, आपणा बेड़ा आप वखाइंदा। साचा बेड़ा हरि करतार, भगतन हथ्थ वड्याईआ। जाह वेख पहली वार, सतिगुर पूरा रिहा समझाईआ। सेवा करन आया निरँकार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सन्त सुहेले रिहा चाड़, फड़ फड़ बांहों उपर बहाईआ। तूं भी भिख्या मंग जा दुआर, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दरसन देवे आण, दरसी दरस आप कराईआ।

५११
११

★ १७ माघ २०१८ बिक्रमी सरदारी जम्मू ★

शाह पातशाह तेरी उडीक, बण निमाणी मात रखाईआ। मेरे नाल जो पिच्छे गई बीत, की कुझ दस्सां दयां दुहाईआ। जिध्धर वेखां नज़र आउण शरीक, दुःख दर्द ना कोए वंडाईआ। मेरी छाती उत्ते गुर अवतारां मारी लीक, पीर पैग़म्बर गए हद्द बणाईआ। जिउँ भावे तिउँ तूं करीं ठीक, तेरे हुक्मे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी वंड मोहे ना भाईआ। तेरी वंड अड्डो अड्ड, वरन बरन गोत बणाईआ। पीर पैग़म्बरां भन्ने मेरे हड्ड, आपणा बल वखाईआ। अड्डो अड्ड निशाना गड्ड, आपणा राह गए चलाईआ। मैं जाणा तूं वस्सें पार हद्द, तेरा किनारा नज़र किसे ना आईआ। आपणी वड्याई पिच्छे गए छड्ड, अग्गे संग ना कोए लै जाईआ। जिध्धर वेखा डूँघी खड्ड, सच महल्ल ना कोए सुहाईआ। बिन भगतां तेरी बणे ना कोई यद्द, लख चुरासी रही कुरलाईआ। जुग चौकड़ी मैं वेखे

नट्ट नट्ट, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोटन कोटि तेरी सरनाई गए ढट्ट, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। इक्को कह गए वसें घट घट, आदि अन्त ना कोए समझाईआ। दीन मज़्ब शरअ शरीअत पा पा वट्ट, आपणे बन्ने गए बणाईआ। कोई कहे ब्रह्मण क्षत्री शूद्र वैश कोई कहे जट्ट, कोई नीचो नीच सदवाईआ। कोई कहे मैं खोल्ह्रे चौदां हट्ट, कोई कहे त्रिलोकी मेरी छाहीआ। कोई कहे पुरख समरथ, कोई फतिह डंका रिहा वजाईआ। सब तेरा गाउँदे गए जस, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। मेरी छाती गए वढ्ढ, उत्ते शरअ छुरी चलाईआ। मेरे बुढ्ढे होए हड्ड, अन्त बल नज़र कोए ना आईआ। मैं तेरे हुक्म अंदर गई बज्झ, सब दे चरनां हेठां बैठी आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। जुग चौकड़ी चुकया भार, साची सेव कमाईआ। अन्तिम कलयुग गई हार, मेरा बल ना संग निभाईआ। प्रभ तेरे अग्गे इक्क पुकार, मैं इक्को आस तकाईआ। मेरा पिछला दुःख निवार, बण दर्दी दर्द वंडाईआ। वरन बरन कर ख़ुआर, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। मानस दे इक्क अधार, मनुख एका गुण समझाईआ। तेरी किरपा अंदर वसे सर्ब संसार, तेरी मेहर नाल एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी पूरी आस कराईआ। मेरी आसा पूरी देणी कर, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। जुग चौकड़ी लँघाए डर डर, तेरा सुणया धुर फ़रमाणा। गुर अवतार आपणी गोदी धर धर, खलाए विच जहानां। अन्तिम सारे गए छड्ड छड्ड, तोड़ निभिआ ना कोए जवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान श्री भगवाना। मेहरवान हो दयाल, आपणी दया कमाईआ। तेरी लग्गी निभे नाल, एका घर वखाईआ। जुग जुग भगत भगवन्त बण दलाल, लोकमात फेरा पाईआ। तूं जा के गुरमुखां अग्गे कर सुवाल, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साचा लेखा लिख लिख लेख, हरि लिखणहार समझाईआ। भगत दुआरा इक्को टेक, मिले मात सरनाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा खोल्ह्रया भेत, भेव आप चुकाईआ। सदा सुहेला करे हेत, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। रुत्त बसन्ती इक्को चेत, पत्त डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क समझाईआ। गुरमुख साचा सच महल्ला, हरि सज्जण आप वसाइंदा। डेरा रखे पार जला थला, जल थल राह विच ना कोए अटकाइंदा। ओथे मिले इक्क इकल्ला, एकँकार फेरा पाइंदा। जोती धार शब्दी रला, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। अग्गे जा के डाहवीं पल्ला, एका गुण समझाइंदा। जन भगतां पिच्छे तेरा कर जाए भला, तेरा दुःख गवाइंदा। जुग चौकड़ी मेटे सला, सल दूजा ना कोए जणाइंदा। लेखा चुक्के राणी अल्ला,

५१२
११

मुहम्मद वंड ना कोए वंडाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना होए झल्ला, जात पात ना कोए रखाइंदा। पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ फड़ के आया भल्ला, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। जुग जुग जो करदा रिहा वल छला, अन्तिम आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, गुरमुख दुआरा इक्क समझाइंदा। गुरमुख दर सच मुनारा, सोभावन्त आप सुहाईआ। निर्मल नूर जोत उज्यारा, महल अटल करे रुशनाईआ। शब्द नाद धुन जैकारा, सोहँ ढोला गाईआ। पड़दा ओहला विच संसारा, भेव कोए ना पाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अनुभव आपणी धार चलाईआ। दो जहानां हो उज्यारा, एका डंक सुणाईआ। साचे सन्तां दे सहारा, इक्को ओट रखाईआ। नेत्र लोचण नैण दरस दीदारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप सलाहीआ। गुरमुख वसे साचे धाम, धाम अवल्लड़ा आप बणाइंदा। जिथे वसे एको राम, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जिथे हस्से इक्को शाम, एका खुशी मनाइंदा। जिथे देवे इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप समझाइंदा। जिथे जपाए सतिनाम, नाम सति आप हो आइंदा। सो साहिब श्री भगवान, आप आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम गुरमुखां मिल्या आण, भगत भगती वेख वखाइंदा। जोती जाता दो जहान, कुल्ली कक्खां अंदर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप प्रगटाइंदा। धरनी कहे मेरे भगवान, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। तेरा भगत मेरा निशान, लोकमात इक्क रखाईआ। सच्चा देणा झोली दान, बण निमाणी मंग मंगाईआ। कलयुग नाता तुट्टे विच जहान, जूठ झूठ दे खपाईआ। अग्गे गुरमुख सज्जण मिले सुजान, चतुर तेरी सरनाईआ। मैं वेखां दर्शन दर दर आण, घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्को वर, तेरे भगत मंग मंगाईआ। तेरा भगत मेरा प्यार, मेरी टुट्टी गंढ वखाइंदा। तूं किरपा कर आप करतार, देवणहार सद अख्वाइंदा। मेरा दुखड़ा जाए जुग चार, अगला सुख इक्क सुहाइंदा। मैं तेरयां भगतां करां दरस दीदार, नेत्र आपणा नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, तेरा भगत मेरा घर सुहाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि तेरा खेल महान, तेरी इच्छया साची भिच्छया वस्त दो जहान तूं ही वरताइंदा।

भगतां संग हरि संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाइंदा। भगतां कटे हउमे रोग, ममता मोह मिटाइंदा। भगतां देवे साचा जोग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। भगतां कढ्ढे झूठा खोट, जूठ झूठ रहिण ना पाइंदा। भगतन देवे भण्डार

५१३
११

अतोट, भण्डार हरि जू इक्को वार वरताइंदा। भगतां नाता तोड़े वरन गोत, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। भगतां जगाए निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भगतां आप मिलाइंदा। भगतन अंदर हरि का वास, हर घट वासी आप रखाईआ। भगतन अंदर खेल तमाश, गोपी काहन नाच नचाईआ। भगतन अंदर पुरख अबिनाश, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। भगतन अंदर भगती स्वास, स्वास स्वास आपणा रंग चढ़ाईआ। भगतन अंदर हो हो दास, बण दासी सेव कमाईआ। जन भगतां करे बन्द खुलास, एका आपणा बन्दन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा संग सहाईआ।

हे प्रभू मेरे समरथ, तूं वड्डा वड वड्याईआ। मैं सुणयां तेरा जस, दो जहान वज्जी वधाईआ। तूं भगतां मिलें हस्स हस्स, घर घर विच खुशी मनाईआ। तूं पन्ध मुकाया नस्स नस्स, लोआं पुरीआं पार कराईआ। तूं प्रेम प्यार अंदर गया फस, आपणा बन्धन ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए सखाईआ। हे प्रभू मेरे ठाकर, दीन दयाल रघुनाथा। तूं गहर गम्भीर डूँघा सागर, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरी गाथा। दर आयां तूं देवे आदर, दीनन सहाई तिलोकी नाथा। तूं साहिब सुल्तान वड्ड बहादर, विष्न ब्रह्मा शिव गुर पीर अवतार तेरा दासी दासा। तूं आदि जुगादि सच्चा सौदागर, चरन कँवल देवे सच भरवासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी पूरी करनी आसा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं कलयुग अन्तिम तेरया गुरसिखां नाल वेखां तेरा तमाशा।

हरि तमाशा जिस वेखणा जग, धरनी हरि समझाइंदा। भगत प्यार अंदर जाए बज्झ, प्रीती प्रीत इक्क समझाइंदा। प्रेम अग्न विच जाए दझ, अग्नी तत्त ना कोए वखाइंदा। जगत शरअ पार करे हद्द, एका घर वखाइंदा। हरिसंगत विच बहे सज, सो जन हरि का दर्शन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम पड़दा लए कज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। हरि तमाशा साची रास, हरि सच्चा सच जणाइंदा। शंकर वेखे उत्ते कैलाश, भेव अभेव चुकाइंदा। ब्रह्मा वेखे ब्रह्म प्रकाश, पारब्रह्म प्रगटाइंदा। विष्नूं वेख कहे शाबाश, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी कहे आदि जुगादि मैं भगतां साथ, सगला संग निभाइंदा। एथे ओथे दो जहानां होवां दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। कलयुग अन्तिम

वसां पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। जन भगतां पिच्छे लोकमात कटां आप बनवास, बिन जंगल जूह फेरा पाइंदा। मेरा भगत ना होए उदास, बिन भगती दया कमाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, अनडिठड़ी डोर इक्क रखाइंदा। धरनी कहे तेरा अजब तमाशा, मैं वेख होई हैरान। घट घट अंदर तेरा वासा, मेरे साहिब सच सुल्तान। खाली दिसे ना कोई पासा, मेरे भगत वछल भगवान। तूं गुरमुखां करे पूरी आसा, देवें दरस दान। मैं मंगां चरन भरवासा, बख्शिश करीं मेहरवान। तेरे दर ना जाए कोई निरासा, जो चरनी डिगे आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तूं होणा आप मेहरवान। मेहरवान मेरे दीन दयाल, मैं तेरी ओट तकाईआ। खुश होई वेख तेरे गुरमुख लाल, घर घर वज्जे वधाईआ। बिन वेख्यो होयों दलाल, अनडिठड़ा रूप धराईआ। तेरी अवल्लड़ी वेखी चाल, तेरी सार कोए ना आईआ। तूं आपे पुछिआ हाल, आपणा फेरा पाईआ। मेरी बेनन्ती तेरे अग्गे सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणे गुरमुखां नाल मिलाईआ। हरि जू मैं फिरके आई सब, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाया। तैनूं कोई ना सके लभ्भ, क्यों बैठा मुख छुपाया। साध सन्त कलयुग सुट्टे डूँघी खड्ड, बाहर सके ना कोए कढाया। इक्क दूजे दीआं कंडां रहे वढ्ढ, छुरी हँकार हथ्थ उठाया । दीन मज़्ब पा पा वंड, तेरा नाउँ रहे सलाहया। बिन तेरे नामे होए रंड, खाली बुत्त रहे कुरलाया। चार वरन वेख्या भेख पाखण्ड, पेखी जगत नज़री आया। कोई ना गावे तेरा इक्को छन्द, जिस गायां दुःख रहे न राया। मैं तेरयां भगतां दुआरे वेख्या एका अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाया। मेरा खुशी होया बन्द बन्द, मैं पिछला दुःख भुलाया। मेरे नेत्र कालजे पाई ठंड, मेरा आत्म शांत कराया। धन्न भाग तूं गुरमुख चाढ़े चन्द, कलयुग अन्धेरा अन्त गंवाया। मेरी इक्को इक्क मंग, तूं बख्शीं सच सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, दूजी वस्त ना कोए मंगाया। हरि जू तेरी अचरज रीत, असचरज तेरी वड्याईआ। किधरे मन्दिर किधर मसीत, किधरे गुरुदुआर सुहाईआ। किधरे जाणे जणाए साचे गीत, किधरे गुर गुर करे पढ़ाईआ। किधरे वसें धाम अनडीठ, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। बाहरों तेरी करदे वेखे प्रीत, कलयुग जीव रसना जिह्वा ढोला गाईआ। अंदरों आत्म किसे ना वेखी ठंडी सीत, त्रैगुण अग्नी रही जलाईआ। मैं नेत्र खोल्ह वेख्या तेरी नज़री आई छोटी झीत, दूसर राह ना कोए रखाईआ। तेरी धारा वेखी बरीक, रूप रंग ना कोए वड्याईआ। मैं चल के आई नज़दीक, आपणा पन्ध मुकाईआ। अग्गे तेरा भगत वेख्या जिस दा दिसे ना कोए शरीक, एका रंग रिहा समाईआ। सदा तेरे मिलण दी रखे उडीक,

आत्म सेजा इक्क विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, जिस घर हरिजन लए मिलाईआ। आ वेख मिल्या मेला, सो पुरख निरँजण आप मिलाया। पहलों वेख्या इक्को गुरसिख सिँघ चेला, सिँघ रूप वटाया। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, दीनन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका घर बहाया। हरिजन वेख इक्को घर, घर बाहरी आप वखाइंदा। इक्क दूजे दा पल्लू फड़, बन्धन बंध रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप समझाइंदा। साचा घर सच मकान, हरि साचा सच जणाईआ। जिस गृह वसे श्री भगवान, सो मन्दिर सोभा पाईआ। जिस मन्दिर मिले धुर फ़रमाण, तिस मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गृह एका मन्दिर, खेले खेल अंदरे अंदर, आत्म परमात्म आपणा रंग वखाईआ।

★ १७ माघ २०१८ बिक्रमी शेखसर जम्मू ★

बीत रिहा हरि जुग चौथा, चार कुण्ट दुहाईआ। जीव जंत होया थोथा, थिर नज़र कोए ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्की रसना पोथा, बोध ज्ञान ना कोए जणाईआ। मुल्ला पंडत ग्रन्थी देण धोखा, हिरदे राम ना कोए वसाईआ। बाहरों सुणाउदे कूक लोकां, ऊँची नाद वजाईआ। अंदरों चुक्की ना किसे चूका, चुक्क पड़दा दरस कोए ना पाईआ। पारब्रह्म बेअन्त स्वामी अग्गे दस्सणा राह सौखा, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। तेरी सरन रहे ओटा, दूजी अवर ना कोए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साडी इच्छया पूर कराईआ। साचा मार्ग विच संसार, हरि साचा सच जणाईआ। सोहँ शब्द सति जैकार, चार वरन पढ़ाईआ। जन्म मरन दुःख दए निवार, दुःख सुख विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क चलाईआ। साचा राह साची धारा, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। नाम सति ब्रह्म मति इक्क जैकारा, सोहँ रसना जिहव सुणाइंदा। एथे ओथे दए सहारा, आत्म परमात्म आपणा बन्धन पाइंदा। लेखा जाणे हरि निरँकारा, लेखा लेखे विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग सच्चा राह, सोहँ शब्द जगत मलाह, आत्म परमात्म बेड़ा आप चलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सच सलाह, गुर शब्दी मिले इक्क मलाह, पंज तत्त काया ना कोए वड्याइंदा।

★ १७ माघ २०१८ बिक्रमी तेज भान दे गृह शेखसर जम्मू ★

पुरख अबिनाशी दे धरवास, हरि चरन सरन सहारा। मैं नेत्र खोल्ह वेखां आकाश, उपर रोवे सूरज चन्न सितारा। कोई ना करे बन्द ख़लास, अन्त दिसे ना पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा नाम अधारा। नाम अधार दे भगवान, हथ्थ तेरे वड्याईआ। तूं देवणहारा सच्चा दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। तेरा खेल दो जहान, दोए दोए रूप समाईआ। तेरा हुक्म सच फ़रमाण, हुक्मे अंदर सर्ब लोकाईआ। तेरा मन्दिर धुर मकान, हउं सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा होणा अन्त सहाईआ। अन्त सहाई होणा भगवान, एका दर तकाया। मैं सेवा करां महान, बण सेवक रूप वटाया। लख चुरासी देवां पकवान, घर घर रिज़क सुबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे हाल सुणाया। अग्गे हाल तेरे दस्स, मैं आपणी कथा रही सुणाईआ। लख चुरासी तेरे जीव जंत मैनूं चरनां हेठां रहे झस्स, उपर आपणा भार पाईआ। तेरे हुक्म बद्धी किसे पासे ना सका नस्स, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। पापीआं भार चुक्क चुक्क गई थक्क, मेरी औध वहाईआ। मैं बुढड़ी मेरा टुट्टा लक्क, हड्डी रीड़ रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म कर किरपा आपणी गोदी चक्क, मैं दर दर दयां दुहाईआ। दुष्टां हँकारीआं कोलों मेरा पड़दा ढक, मंगी तेरी इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरा सीस वेख खुल्ह्ला झाटा, नेत्र नैणां नीर वहाया। मेरा कोए ना करे पूरा घाटा, मेरी झोली ना कोए भराया। मैं तक्क के आई नेड़े वाटा, दर तेरे पन्ध मुकाया। तूं अमृत दिता गोबिन्द बाटा, एका वार मुख चुआया। इक्क खुल्हाया सच्चा हाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी मंगां सरन सरनाया। दिशा मेरी औध वेख वेला अन्त, अन्त अन्त कुरलाईआ। चारों कुण्ट कोई ना संगी जीव जंत, जीव जंत देण दुहाईआ। कोई ना मिल्या साध सन्त, साध सन्त नज़र कोए ना आईआ। जिध्धर वेखां गढ़ हउमे हंगत, माया ममता रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी इक्को आस पुचाईआ। मेरी इक्को आस खुदा, वेख ख़लक रही कुरलाईआ। मैं तेरे उत्तों होई फ़िदा, आपणी फ़ितरत मात मिटाईआ। तेरयां पीरां पैग़म्बरां मेरा तन मन विधा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा हाल वेख मेरे माहीआ। तेरे पीर तेरे पैग़म्बर, तेरी रहिमत विच सरनाईआ। रच के गए जगत अडम्बर, अड्ड अड्ड राह चलाईआ। आपणा करके गए सुअम्बर, अल्ला राणी नाल प्रनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे सज्जण सच गुसाईआ। पीर पैग़म्बर वेख फकीर, फिकरा इक्को इक्क सुणाइंदी। हथ्थ पैर

वज्झा जंजीर, शरअ तन्द ना कोए तुड़ाइंदी। मैं अन्त होई हकीर, आपणा बल गुवाइंदी। तूं साहिब बेनज़ीर, तेरे अग्गे वास्ता पाइंदी। तूं बदल मेरी तकदीर, तकसीर तेरे हथ्थ वखाइंदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी रहिमत मंग मंगाइंदी। तेरी रहिमत मेरे रहिमान, हथ्थ तेरे वड्याईआ। मेरी छाती चढ़े पंज शैतान, नव खण्ड देण दुहाईआ। जूठे झूठे ढोले बह बह गाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरा भुल्लया नाउँ श्री भगवान, तेरी भगती हथ्थ किसे ना आईआ। मन्दिर मस्जिद खोल्ह दुकान, जगत हट्ट रहे चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा अग्न तत्त बुझाईआ। मेरा अग्नी तत्त दे बुझा, मैं एका मंग मंगाई। दूई द्वैती पड़दा दे उठा, मेरे साहिब सच्चे सांई। ज़ात पात दे मिटा, एका रंग रंगाईं। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दे समझा, एका गुण वखाईं। मैं घट घट रिहा समा, हिन्दू मुस्लिम हर घट थाईं। पिछला लहिणा दे चुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ तेरी वड्याई। पुरख अबिनाशी मर्द मर्दाना, एका गुण समझाइंदा। चार जुग मेरा खेल महाना, जुग जुग आप कराइंदा। गुर अवतारां दे दे दाना, सच निशाना मात रखाइंदा। पीर पैग़म्बरां दे कलामा, कलमा अमाम आप पढ़ाइंदा। दीन मज़्हब प्रगटा इस्लामा, आपणा इस्म छुपाइंदा। बरदे बणा बणा हुक्म दए गुलामा, साची सेवा सच कराइंदा। जगत नौबत इक्क दमामा, दर दर आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। करे खेल वंडे हदूद, हद्द आपणी आप बणाईआ। आपे दस्से सच अरूज, उलफत विच कदे ना आईआ। किसे नूं कहे मैं तेरा महबूब, किसे राम राम समझाईआ। किसे कहे वसे बिन कलबूत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। चार जुग वंड अपार, जुग जुग करदा आया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश खेल न्यार, हरि सज्जण आप खिलाया। हिन्दू मुस्लिम वेख विचार, ईसा आपणी गंढु पुवाया। गोबिन्द सूरा कर त्यार, साबत सूरत आप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। आपणा खेल करे करतार, भेव कोए ना पाइंदा। वंडां पाए विच संसार, वंड वंड आपणी खुशी मनाइंदा। पीरां नाल पीर कराए तकरार, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अछल अछल आप कराइंदा। पैग़म्बर नाल पैग़म्बर लड़ा, लड़ आपणा लए छुडाईआ। किसे नूं कहे इक्क खुदा, एका नूर अलाहीआ। किसे नूं कहे वाहिगुरू बेपरवाह, वाहिगुरू फतहि गजाईआ। किसे हथ्थ कलमा शरअ दए फड़ा, शरीअत वंड वंडाईआ। किसे हथ्थ तलवार दए टिका, चण्ड प्रचण्ड नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। किसे नूं कहे खुदावंद करीम,

५१८ ११

खुद आपणी खेल कराइंदा। किसे कहे सतिनाम सच्ची तक्सीम, सचखण्ड दुआर वखाइंदा। किसे नूं कहे अल्फ़ ये सीन, नुकता नून ना कोई जणाइंदा। किसे नूं कहे पैंतीस अक्खरी होए अधीन, अक्खर अक्खर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। किसे कहे बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक़ समाईआ। किसे कहे एकँकार, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। किसे कहे राम राम प्यार, रमिआ हर घट थाईंआ। किसे कहे कृष्न कृष्न शंगार, मोर मुक्ट सीस सुहाईआ। किसे कहे भगत दुआर, हरि भगवान फेरा पाईआ। किसे कहे दुष्ट दमन सरदार, जिस मिली माण वड्याईआ। किसे कहे वेखे जुग चार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। किसे कहे आदि जुगादि पसार, जुग जुग खेल कराईआ। किसे कहे गुर अवतार, किसे नबी रसूल वखाईआ। किसे कहे पढ़ पढ़ वेद चार, किसे शास्त्र सिमरत रिहा सुणाईआ । किसे कहे गीता ज्ञान उज्यार, किसे अंजील कुरान जणाईआ। किसे कहे साची बाणी मारे बाण, बाण निराला तीर चलाईआ। किसे कहे फतिह जैकार, फतिह डंका इक्क लगाईआ। किसे कहे रमिआ संसार, किसे कहे निरगुण वसे धाम न्यार सच्चा माहीआ। करे खेल अगम्म अपार, आपणी कार आप कमाईआ। दीन मज़्हब वेख सलाम, शरअ शरीअत खेल कराईआ। नाम सति सति निशान, सति सतिवादी आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल इक्क इकल्ला, हरि सच्चा आप कराइंदा। आप वसाए जगत महल्ला, जुग जुग वेख वखाइंदा। राम कृष्न फड़ाया आपे पल्ला, ईसा मूसा उँगली लाइंदा। मुहम्मद उठाया आपे झल्ला, आपणी झलक जणाइंदा। नानक निरगुण जोत आपे रला, जोती जोत समाइंदा। गोबिन्द संदेस एका घला, पुरख अकाल मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंड आप कराइंदा। साची वंड हरि सुल्तान, निरगुण वंडी वंड कराईआ। दीन मज़्हब मात निशान, कलयुग बन्धन पाईआ। गुर अवतार कर बलवान, पीर पीरां नाल टकराईआ। वेखे खेल श्री भगवान, आपणा बल आप अज़माईआ। दूर दुराडा नौजवान, विच मैदान कदे ना आईआ। धुर फ़रमाणा दे फ़रमाण, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। रण भूमी खेल महान, हरि सच्चा सेव कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। आपणा रंग रंगे निरँकारा, एका रंग रंगाइंदा। खड़ग खण्डा दे कटारा, तीर कमान चिल्ला हथ्थ फड़ाइंदा। प्रगट हो विच संसारा, सरगुण सरगुण नाल टकराइंदा। वेखे विगसे करे विचारा, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। जुग जुग हौला करे भारा, दुष्ट हँकारी आप खपाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलयुग अन्तिम वेस धराइंदा। चारों कुण्ट कहे ललकार, ऊँची कूक कूक सुणाइंदा। पीर पीर करे खुआर, दर दर दर फिराइंदा। नीहां हेठां गोबिन्द बाले

दए सवाल, तरस ना कोए कमाइंदा। मैं घाली पूरी घाल, प्रभ दी साची सेव कमाइंदा। मेरा वज्जे इक्को ताल, जूठ झूठ नाच नचाइंदा। मेरा विछिआ सच्चा जाल, लख चुरासी विच फसाइंदा। मेरा संगी बणया काल, घर घर डौरू वाहइंदा। चारों कुण्ट होण बेहाल, सिर अन्तिम ना कोई उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाइंदा। आपणी खेल करे गोबिन्द, महिमा आपणे हथ्थ रखाइंदा। धरनी तेरी लख चुरासी बिन्द, तेरी गोद बहाइंदा। नाल रलाए सुरपति इन्द, करोड़ तेतीसा संग निभाइंदा। शंकर लथ्थे अन्तिम चिन्द, सहिंसा रोग मिटाइंदा। ब्रह्मा करे सर्ब बख्शिंद, ब्रह्म मेरा इक्क बख्शाइंदा। विष्नूं कहे गुणी गहिन्द, हरि आपणी खेल कराइंदा। पहलों जीव जंत लगाए निन्द, मूँह थुक्कां नाल भराइंदा। फिर फड़ फड़ कढ्ढे जिंद, राए धर्म आप उठाइंदा। अन्तिम खाली करे जीउ पिण्ड, जगत खेड़ा ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी धरत धवल आप समझाइंदा। धरनी सुण अन्तिम बात, हरि बातन आप जणाईआ। तेरी पुच्छण आया बात, रूप अनूप वटाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। पीर पीरां टुट्टे साक, सज्जण सैण ना कोए बणाईआ। नाता तुट्टे जगत पाठ, पूजा संधया ना कोई कराईआ। रहिण ना पाए तीर्थ ताट, तट किनारा ना कोए वड्याईआ। तेरे उत्ते कोई ना दिसे झूठा हाट, झूठी वस्त ना कोई वकाईआ। कोए ना करे तेरा घात, छुरी फड़े ना कोए कसाईआ। कोई ना पटे डूँग्घा खात, माया लए दबाईआ। कोई ना वेखे मार झात, नेत्र नैण उठाईआ। सब उतारे इक्को घाट, एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया आप कमाईआ। तेरी मैंढी गुंदे सीस, एका एक जणाइंदा। तेरी रच्छया करे जगदीस, बल आपणा आप धराइंदा। जुग चौकड़ी पीसण ल्या पीस, कीती घाल लेखे पाइंदा। पीर पैग़म्बरां गुर अवतारां देवे इक्क हदीस, एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दर्दी दर्द वंडाइंदा। तेरी दर्द मिटे दुःख, हरि दुखियां गले लगाईआ। इक्क उपजावे साचा सुख, घर साचे वज्जे वधाईआ। जन भगतां करे उज्जल मुख, देवे माण वड्याईआ। सिंघ रूप पए बुक्क, एका भबक लगाईआ। कूड़ कुड़यारा जाए मुक्क, आपणा मुख छुपाईआ। जूठा झूठा बूटा जाए सुक्क, हरया फेर ना कोए कराईआ। मनमुखां मुख पए थुक्क, गुरमुखां दए वड्याईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत्त, तेरी रुत्त सुहाईआ। तेरी फलवाड़ी जाए फुट, बूटा लोकमात वखाईआ। तूं नेत्रां वेखणा उठ, चारों कुण्ट लहर लहराईआ। साहिब सतिगुर प्या तुट्ठ, तेरा दुःख रिहा वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हौला भार आप कराईआ। तेरे सिर तों लथ्थे भार, हरि साचा आपे लाहइंदा। तूं सेवा करीं जुग चार, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा।

तेरे दर रोवण यार चार, मुहम्मद वास्ता गल विच पाइंदा। ऊँची कूक कूक करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। मेरी मदद कर मेरे मददगार, इक्को मंग मंगाइंदा। मेरी सदी गई हार, सद्दा गुर गुर आप सुणाइंदा। मेरी बद्धी छुट्टी विच संसार, मेरी उम्मत गंढु ना कोई पुवाइंदा। डूँघी भँवरी डिगी मूँह दे भार, फड़ बांहों ना कोई उठाइंदा। मेरा दुखड़ा सुणे ना कोई मीत मुरार, मक्के काअबे संग ना कोई निभाईआ। मेरा हुज़रा होया खुआर, मेरी महिराब ना कोई सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन दुआरा मंगे वर, खाली हथ्थ वखाइंदा ख़ाली हथ्थ कटी लब, मुछ दाढ़ी नज़र ना आईआ। वड्डा छोटा ना कोई कद्द, बल्ल आपणा ना कोई जणाईआ। बुढ्ढा शेख़ बुढे हड्ड, रो रो दए दुहाईआ। सदी चौधवीं गई लद, वेला वक्त वहाईआ। मेरा मुक्का पैडा ना कोई हद्द, अग्गे राह ना कोई वखाईआ। पुरख अबिनाशी दर दुआरयों दिता कढ्ढ, ना होए कोई सहाईआ। संगी साथी गए छड्ड, चार यारी ना तोड़ निभाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। वेख धरनी दर पुकार, मुहम्मद रिहा सुणाईआ। बौहड़ी विछड़े मेरे यार, यारी तोड़ ना कोए निभाईआ। धरनी दए ना कोई आधार, मैं आपणी उम्मत एहदी गोद बहाईआ। फड़ फड़ हड्डीआं खा गई विच संसार, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा भेव ना जाणे राईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, इक्क दूजे आप जणाइंदा। धरनी दिता मुहम्मद सहारा, मुहम्मद उम्मत धरती विच दबाइंदा। अन्त दोहां मेला इक्क किनारा, हरि जू आपणा पत्तण इक्क वखाइंदा। इक्क आवे इक्क जावे दोवें रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। धरनी कहे चुक्या ना जाए भारा, मुहम्मद कहे मेरा सीस ना भार उठाइंदा। पुरख अबिनाशी करे खेल दो जहान वसे बाहरा, आपणा हुक्म वरताइंदा। इक्क दूजे दी कढ्ढो वगारा, सिर नाल सिर वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाइंदा। सीस नाल सीस लओ वटा, हरि साचे सच जणाया। मुहम्मद अग्गों मारे धा, सुण मेरे खुदा खुदावंद राया। मैथों लख चुरासी भार चुक्या ना जा, आपणा बल ना कोई जणाया। मैं आपणी उम्मत ना सक्या उठा, अन्त संग ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोई सरनाया। धरनी दोए जोड़ करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी तेरी लख चुरासी दा चुक्कया भार, दर तेरे सेव कमाईआ। मेरे उत्तों पत्तत पापी देणे मार, दुष्ट हँकारी रहिण ना पाईआ। साचे भगत कर उज्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरा हौला हो जाए भार, दुःख रहे ना राईआ। कलयुग देणा दर दुरकार, मुहम्मद देवे ना फेर सलाहीआ। छोटा बाला लैणा उठाल, सतिजुग साचे

जन्म दुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी खेल वेखों चाँईं चाँईंआ। तेरी खेल वेखण दा चाउ घनेरा, मैं इक्को ओट तकाईआ। चार जुग भुलाया कर कर हेरा फेरा, गुरू गुर गुर सेव कमाईआ। अन्तिम कलयुग पाया फेरा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी ढाहया ढेरा, ख़ाकी ख़ाक वखाईआ। चल के आएयों नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। ना कोई सञ्झ ना सवेरा, एका नूर दरसाईआ। जन भगतां बध्धा बेड़ा, आपणे कंध उठाईआ। इक्को वसाया सच्चा खेड़ा, गुरमुख आपणी गोद बहाईआ। मैं पुच्छण आई केहड़ा केहड़ा, जिस देवें माण वड्याईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं ब्रह्म विष्न शिव इन्द चुकाया झेड़ा, जन भगतां देवां माण वड्याईआ। ब्रह्मण्ड वखावां आपणा वेहड़ा, एका कुण्डा लाहीआ। धरनी देवां तैनूं गेड़ा, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। करां हक़ हक़ निबेड़ा, एका गुण समझाईआ। तूं वेखीं गुरमुख मेरा, एका घर रिहा वखाईआ। उथे चढ़े चाओ घनेरा, वज्जे इक्क वधाईआ। उथे ब्रह्मा होए ढह ढेरा, माया ममता मोह चुकाईआ। गुरमुख कहे तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ ढोला रहे गाईआ। पुरख अबिनाशी करके आया वड्डा ज़ेरा, विष्नूं भगवान नाउँ धराईआ। जे कोई कहे सिँघ शेरा, शेर आपणी भबक वखाईआ। इक्को वखाए सच्चा खेड़ा, जिस खेड़े वसया सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे साचा दान, दुखियां दुःख दए गंवाईआ।

५२२
११

★ १८ माघ २०१८ बिक्रमी गूढ़ा राम दे घर शेख़सर जम्मू ★

कलयुग अन्तिम मंगण दात, पीर पैग़म्बर सीस झुकाईआ। परवरदिगार असीं तेरी ज़ात, तेरे नूर विच समाईआ। तेरे हुक्मे फड़ी कलम दवात, शाही शहिनशाह नाल रलाईआ। तेरा कलमा लिख्या तेरी याद, याददाशत मात बणाईआ। तेरा संदेसा कायनात, हक़ हक़ समझाईआ । तेरा नेत्र खोल्या खुल्ला ताक, साडे हथ्थ ना कोई वड्याईआ। तेरा वेख्या जगत घाट, बण बण पाँधी राहीआ। तेरी नज़र ना आई सच लुगात, जिस विच्चों अल्फ़ ये देवें पढ़ाईआ। तेरी बातन सुण सुण थक्के बात, भेव कोए ना आईआ। आलमीन तेरा जाणे कोई ना हालात, हल्ल सुवाल ना कोए कराईआ। तेरा बाग बगीचा इक्क बाग़ात, बागबान वड वड्याईआ। बिन तेरे अन्त होए वफ़ात, फतवा सब ते सादर लाईआ। कर किरपा सुण लै बात, तुध अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा लेखा कायनात, सके ना कोए मिटाईआ। तेरा डूँग्घा दिसे ख़ात, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। तेरा खेल बहु बिध भांत, अनक कल तेरी वड्याईआ। बिन तेरे अन्धेरी रात, चौधवीं चन्द मुख शरमाईआ। ना कोई निभावे

सच्चा साथ, सगला संग तजाईआ। साडा मस्तक वेख माथ, पूरब लेखा तेरी झोली पाईआ। गल पल्लू मूँह विच घास, सजदा सीस झुकाईआ। साडा कलमा तेरा स्वास, स्वास स्वास अलाईआ। ना कोई पुंन ना सबाब, सोहबत तेरी इक्क समझाईआ। बिन तुध मिले ना हयात आब, आबे हयात ना कोई प्याईआ। सदी चौधवीं लँघी विच खुवाब, खुवाजा खिजर दए दुहाईआ। मेरी सोहे ना सच महिराब, महबूब नज़र कोए ना आईआ। रोशन होए ना कोई आफ़ताब, नूर नूर ना कोए दरसाईआ। साचा बणे ना कोई अहिबाब, मिल मिल आपणा हाल सुणाईआ। तन वज्जे ना तत्त रबाब, तार सितार ना कोई हिलाईआ। तेरे अग्गे होए ला जवाब, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। तेरी झल्ल ना सके ताब, साडा बल ना बल वखाईआ। किरपा कर शाह नवाब, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। चरन घोड़े दे रक़ाब, सच सिँघासण आसण लाईआ। दो जहानां मार अवाज़, गफ्लत सब दी दे मुकाईआ। तेरी पढ़ पढ़ थक्के निमाज, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा जल्वा दिसे ना ग़रीब निवाज, नेत्र नैण रहे तरसाईआ। साडा डुब्बदा जाए जहाज़, बेड़ा बन्ने ना कोई लाईआ। चारों कुण्ट थक्के भाज, बण बण पाँधी राहीआ। सच्चा दिसे ना कोई समाज, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। मक्के काअबे ना कोई हाज, हाजी हज्ज ना कोई वखाईआ। साडी कोई ना रखे लाज, साडा संग ना कोई निभाईआ । साडा खुल्लण लग्गा पाज, जगत मुलम्मा रहिण ना पाईआ। कन्नां विच पा पा उँगलां मारदे अवाज़, हू हू अल्ला अल्ला हक़ हक़ नाअरा सुणाईआ । चौदां सदीआं रख के बैठे रहे ताज, सीस आपणे छत्र झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। पीर पैग़म्बर रहे कुरला, करबला दए दुहाईआ। प्रभ मिले सच मलाह, बेड़ा पार कराईआ। वेले अन्त होणा फ़नाह, ना सके कोई बचाईआ। ना उम्मत बख्शे गुनाह, नबी रसूल ना कोए वड्याईआ। बिन रस्सीउँ लग्गा फाह, गल फ़ासी एका पाईआ। बिन खावंद तुट्टा नक़ाह, मुख नक़ाब ना कोई टिकाईआ। बिन छुरीउँ हलाल होई गां, जबां आपणा आप रहे कराईआ। तेरा कलमा भुलया सच्चा नाँ, तेरी रहिमत नज़र किसे ना आईआ। तूं इमामा सिर इमाम, रसूलां सिर रसूल सच्चा शहिनशाहीआ। असीं बरदे तेरे गुलाम, दर दरवेश बैठे सीस झुकाईआ। तोबा तोबा कर सलाम, सलामा अलैकम रहे सुणाईआ। असीं सुणदे रहे तेरा पैग़ाम, इक्क ध्यान लगाईआ। तैनूं सके ना नेत्र पछाण, रूप रंग तेरा नज़र किसे ना आईआ। असीं भुल्ले बाल अञ्याण, साडी चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग अन्तिम सुणया तूं प्रगट होयों श्री भगवान, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। एका देवें सच्चा दान, बण दाता दानी आप वखाईआ। असीं चरनी डिगे आण, इक्को ओट तकाईआ। तेरी सरन साडा

इमान, दूजी शरअ ना कोई वखाईआ। तेरा कलमा सच कलाम, एका राग अलाईआ। तूं साहिब जाणी जाण, घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पए सरनाईआ। पीर पैग़म्बर मारन नाअरा, एका एक सुणाया। तूं प्रगट होयों पीर ज़ाहरा, हज़रत तेरी वड वड्याईआ। चार जुग गुर अवतार तेरे नाउँ दा करदे रहे मुशइरा, खाणी बाणी आप सुणाया। तूं सब तों वसया बाहरा, तेरा भेव किसे ना आया। तूं गहर गम्भीर गहरा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाहया। लोक परलोक दो जहान चौदां तबकां बण के निरगुण करें सैरा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणी सैरगाह बणाया। बिन तुध होए जगत अन्धेरा, धूंआँधार ना कोए मिटाया। तेरे हुक्मे वरते कहरा, कहर लहर इक्क वखाया। बिन तेरे कलमे होया बहरा, साचा राग ना कोई सुणाया। चारों कुण्ट झूठा डेरा, जगत अडम्बर वेख वखाया। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ नौ सत्त ना कोई दिसे साचा शेरा, आपणी भबक दए वखाया। कूड़ कुड़यारा पाया घेरा, कलयुग आपणा बल धराया। असीं सेवा करं कर कर वड्डा ज़ेरा, साडा ज़ोर रिहा ना राया। साडे विहिंदयां उजड़न लग्गा साडा खेड़ा, ना सके कोई बचाया। नबीआं नाल नबीआं पाया झेड़ा, बण विचोला ना कोई छुडाया। बिन तुध बन्ने ना कोई बेड़ा, परवरदिगार मेरे खुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पीर पैग़म्बर रहे कुरलाया। पीर पैग़म्बर नेत्र नीर, नैण नैण वहाईआ। तेरे हुक्मे शरअ ज़ंजीर, कड़ी कड़ी नाल बंधाईआ। तेरे हुक्मे पढ़ी तकबीर, तदबीर तेरी शहिनशाहीआ। तेरा जल्वा सच तस्वीर, तेरी तसबी नाल मिलाईआ। तेरे हथ्थ साडी तकदीर, जिउँ भावे लए चलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद इक्क दूजे दे छोटे वीर, भाई भाईआं वल वेख वखाईआ। साडी अल्फ़ी लीरो लीर, काली कफ़नी रही कुरलाईआ। साडी होई अन्त अख़ीर, वेला वक्त वहाईआ। साडा आपणा आप होया दिलगीर, सांतक सति ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर इक्को हथ्थ टिकाईआ। पीर पैग़म्बर मारन धाह, धरत धवल हिलाया। तेरे उत्ते करे गुनाह, खण्डां खंजर हथ्थ चमकाया। छोटे बाले तेरे अंदर दए दबा, निर्दोष दोष लगाया। तूं हो खामोश आपणी गोद लै सुवां, तैनूं तरस ज़रा ना आया। लोक परलोक नेत्र नैण नीर रहे वहा, विष्न ब्रह्मा शिव दए दुहाया। वेखो पीरां नाल पीर रहे टकरा, शरअ शरअ नाल लड़ाया। करे खेल आप खुदा, अवल्लड़ी चाल आप चलाया। पहलों मुहम्मद कलमा दिता पढ़ा, एका आयत सुणाया। फिर गोबिन्द दिता समझा, फतिह जैकारा इक्क अलाया। दोहां बल दिता वधा, आप आपणा हुक्म वरताया। इक्क दूजे हथ्थ कंडा दिता फड़ा, आप आपणा मुख छुपाया। करके धोखा गोबिन्द धड़ा दिता बणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। पीर पैग़म्बर कहिण हउँ ख़ाकी ख़ाका, तन माटी ख़ाक खपाईआ। तूं बेऐब परवरदिगार बाकी बांका, नूर ज़हूर इलाहीआ। आदि जुगादि जुगो जुग तूं बड़ा लड़ाका, घर घर छेड़ां रिहा छिड़ाईआ। अछल अछल बेमुहताज चलाका, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं पहलों खिच्चे आपणा खाका, लकीर लकीर विच मिलाईआ। फिर गुर अवतारां सुणावें साका, पीर पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। किसे कराएं पंज वक्त निमाजा, किसे अमृत बाटा हथ्थ फड़ाईआ। किसे कहें मैं तेरा सच्चा आका, किसे कहें इक्क पारब्रह्म सरनाईआ। नानक कहे तूं सब दा पड़दा ढाका, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मुहम्मद कहे मेरा पूरा करदे घाटा, तेरे अग्गे आपणी झोली डाहीआ। गोबिन्द कहे मैं वेखां तेरा खेल तमाशा, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। नानक कहे प्रभ सब दा राखा, घट घट रिहा समाईआ। मुहम्मद कहे प्रभ दे दे दातां, तेरी इक्को ओट तकाईआ। गोबिन्द कहे तूं मेरा पिता माता, तेरा संग विछड़ ना जाईआ। नानक कहे पुरख अकाल सब दा नाता, हर घट आपणा बन्धन पाईआ। मुहम्मद कहे मेरी सच्ची जाता, तेरी ज़ात विच्चों प्रगटाईआ। गोबिन्द कहे मेरा तेरे अंदर वासा, दूजे घर ना कोई वड्याईआ। नानक कहे प्रभ सर्ब भरवासा, सिर सभना हथ्थ टिकाईआ। मुहम्मद कहे मेरी मुक्की वाटा, अन्तिम वेला गया आईआ। गोबिन्द कहे मैं करां हासा, दर तेरे खुशी मनाईआ। नानक निरगुण कहे पुरख अकाल वेखे तमाशा, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पीर पैग़म्बर गुर अवतार आपणे रंग रिहा वखाईआ।

★ १८ माघ २०१८ बिक्रमी शिव सिँघ दे घर जम्मू★

सच खुदाए तोहे तोफ़ीक, तूं ही तूं अलाहीआ। दूसर दिसे ना कोए रफ़ीक, तारीफ़ तेरी ना कोए सुणाईआ। उम्मत मेरी मेरी बणी फ़रीक, फिरका आपणा आप वधाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा तारीक, नूर ज़हूर ना कोई रुशनाईआ। तेरी धार अनडीठ बारीक, बातन तेरी वड्याईआ। तूं साहिब सदा लाशरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ। तेरी महिमा बेनज़ीर, नज़र कोए ना पाईआ। तूं लेखा जाणे शाह हकीर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तेरी चोटी इक्क अख़ीर, कोटन कोटि बैठे अद्धविचकार डेरा लाईआ। तेरे बरदे पीर फ़कीर, फिकरा तेरा कहे गाईआ। तेरे दर मुहम्मद कढ्ढे लकीर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरा अन्त होया दिलगीर, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मेरा अंग अंग करे पीड़, दर्दी दर्द ना वंड कोई वंडाईआ। जिध्धर वेखां दिसे भीड़, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बणी भीड़,

अन्ध अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। आपणे रंग रंग मेहरवान, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। नाता तोड़ जगत शैतान, शरअ शरीअत रहिण ना पाईआ। एका सिदक तेरा ईमान, एका आलम उल्मा करे पढ़ाईआ। एका नुकता बेजबान, आपणा आप सुणाईआ। एका मन्दिर सच मकान, हक़ हक़ीक़त दए वखाईआ। एका उलफत दो जहान, एका अल्फ़ कर पढ़ाईआ। एका मीआ वड बलवान, आपणा बल धराईआ। मैं नीवां होए फिरां विच जहान, आपणा सिर झुकाईआ। चार कुण्ट दिसे वैरान, बाग़बान रिहा शरमाईआ। चौदां लोक ना कोई आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहिमत रहीम इक्क कमाईआ। रहिमत कर मेरे महबूब, इक्को आस रखाईआ। तेरी कोई ना जाणे हदूद, पार किनारा हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा उच्चा वड अरूज, अर्श कुर्श तेरी शरनाईआ। तूं आदि जुगादि सदा महिरूम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्धन बंध ना कोई रखाईआ। महिरम मेरे मेहरवाना, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। मैं मासूम तेरा बाला, भुल्ल भुल्ल बख्शाइंदा। तूं वेख मेरा हाला, बेहाल कुरलाइंदा। मैं लग्गा तेरी चाला, तेरी चाल चल चल खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरवेश फेरी पाइंदा। दर दरवेश गया आ, अल्फ़ी चीर ना कोई रखाईआ। नंगी पैरी फेरा पा, तसबी हथ्थ ना कोई रखाईआ। दाढ़ी मुछ ना लब कटा, मैहन्दी रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भुल्ली मेरी उम्मत तेरा नाउँ खुदाईआ। मेरी उम्मत तेरा संग, तेरे नाल बंधाया। तेरी रहिमत मेरा रंग, राम रहीम खुदाया। तेरा नाद तेरा मृदंग, तेरा बरदा रिहा वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाया। दर झुके सीस, शरअ शरअ वड्याईआ। तेरा कलमा इक्क हदीस, नबी रसूल देण गवाहीआ। तेरा नाउँ तीस बतीस, बन्दी बन्द वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साचा बन्धन बन्धन अपारा, हरि साचा सच जणाइंदा। पीर पैग़म्बर इक्क हुलारा, हरि इक्को इक्क उठाइंदा। आपे जाणे आपणा वररा, आपे घेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। महिमा जाणे दो जहान, दो जहानां सिफ्त सलाहीआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, सच प्रधानगी रिहा जणाईआ। प्रगट हो के आया विच मैदान, खाली हथ्थ फेरी पाईआ। गुर अवतार पीर वेख मार ध्यान, सच अखाड़ा रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप प्रगटाईआ। इक्क धड़े मुहम्मद सूरबीर, तेरा बल धराया। दूजे पासे कहे गोबिन्द तेरा झल्ले ना कोए

तीर, बेनज़ीर आप चलाया। नानक कहे तूं सब दा करें अख़ीर, थिर कोई रहिण ना पाया। पुरख अकाल कहे मैं कटा सब दी भीड़, जुग जुग भगतां सेव कमाया। मुहम्मद कहे मैं चोटी चढ़या अख़ीर, चौदां तबक फेरा पाया। गोबिन्द कहे मेरा दाता गुणी गहर, मेरे अंग संग समाया। नानक कहे प्रभ आपणे हथ्थ रखे इक्क शमशीर, आदि अन्त सब दा करे सफ़ाया। पारब्रह्म कहे मैं भगतां प्यावां साचा सीर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। मुहम्मद कहे हरि इक्क अमाम, कलमा इक्क जणाईआ। गोबिन्द कहे मेरा पिता श्री भगवान, सद आपणी गोद बहाईआ। नानक कहे सब नूं करे परवान, सब दा पिता माईआ। अबिनाशी करता कहे मैं जन भगतां देवां दान, नाम अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाईआ। मुहम्मद कहे मेरा खुदा, मेरे विच समाया। गोबिन्द कहे मेरे नालों ना होए ज़ुदा, सद सिर ते हथ्थ रखाया। नानक कहे हरि सब तों होए फ़िदा, जो बैठे ध्यान लगाया। पारब्रह्म प्रभ कहे मैं जन भगत मिलां सिध्धा, राह विच ना कोई अटकाया। जे कोई पुछे केहड़ा वड्डा, कोई दस्स ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे ख़ुशी मनाया। मुहम्मद कहे मैं मंगी मंग, चौदां तबक मेरी सरनाईआ। गोबिन्द कहे मेरी सेज पलँघ, प्रभ गोदी इक्क हंढाईआ। नानक कहे हरि करे सर्ब नूं भंग, सैभं रूप समाईआ। भगवान कहे मैं भगत चड़ावां साचे चन्द, लोकमात रुशनाईआ। गीत सुणावां इक्को छन्द, आपणा ढोला अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे मेरी वंड चौदां सद, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। गोबिन्द कहे तेरी पार करनी हद्द, वेला अन्तिम गया आईआ। नानक कहे पुरख अकाल आपणी उपजाए साची यद्द, बंस सरबंस आप सुहाईआ। भगत सुहेले लए सद्द, आप आपणे कोल बहाईआ। लख चुरासी विच्चों करे अड्ड, आपणी वंड वंडाईआ। नाम चढ़ाए साचे रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सोहँ अक्खर इक्को दस्स, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उपाईआ। हरिजन उपमा करे आप, आपणी सेवा आप लगाइंदा। हरिजन तेरा जपे जाप, जप जप आपणा सुख दरसाइंदा। हरिजन तेरा मिटे ताप, तीनो ताप नेड़ ना आइंदा। हरिजन तेरा कटे पाप, बण अपराधी वेस कमाइंदा। हरिजन तेरी वेखे जात, पहलों आपणी ज़ात गवाइंदा। हरिजन तेरी मिटे रात, जगत अन्धेरा आप छुपाइंदा। हरिजन तेरा देवे साथ, सगला संग आप जुटाइंदा। हरिजन तेरा लहिणा मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाइंदा। हरिजन तेरी साची गाथ, गहर गम्भीर आप सुणाइंदा। हरिजन तेरा पूजा पाठ, हवन दीप आप वखाइंदा। हरिजन तेरा सज्जण साक, हरि सतिगुर आप हो आइंदा। हरिजन तेरा तन ख़ाकी ख़ाक, आपणी

ख़ाक नाल मिलाइंदा। हरिजन तेरा खोल्हे ताक, दूई पड़दा आप उठाइंदा। हरिजन तेरा बन्न्हे नात, नाता बिधाता आप जुड़ाइंदा। हरिजन तेरा पिता मात, पुरख अकाल इक्क अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन तेरा मेला श्री भगवन्त, हरि भगवन आप कराईआ। एका नाम मणीआं मंत, मन आसा पूर कराईआ। एका लहिणा चुक्के जीव जंत, जीवण जुगत समझाईआ। इक्क महिमा आदि अन्त, सदा सुहेला सच्चा माहीआ। सरगुण बणाए बणत, निरगुण वेस वटाईआ। मिल सखी हरि हरि कन्त, गीत गोबिन्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन वेखो बल दा माण, हरि साचा आप दवाइंदा। पीर पैग़म्बर सर्ब शरमाण, अग्गे ज़ोर ना कोई चलाइंदा। जिस नूं करके आए सलाम, सो साहिब वेस वटाइंदा। जिस दा पढ़दे आए कलमा कलाम, सो कायनात फेरा पाइंदा। जिस दे बणदे रहे ग़ुलाम, सो बण ग़ुलाम सेव कमाइंदा। जिस दा पींदे रहे जाम, सो भर प्याला जाम प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वड्याइंदा। भगतां देवे इक्क सहारा, इक्क ओट सरनाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपारा, निराकार वेस वटाईआ। धावत धावत पार किनारा, गावत गावत खुशी मनाईआ। पावत पावत गुरमुख दुआरा, गुर गुर बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन उठया उठ बल धार, बल बावन खेल कराया। किरपा निध डूँघे सागर कर प्यार जीवत जुगत जुगत जणाया। मन्दिर महल्ल उच्च मिनार, भगत दुआरा बंक वड्याआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, बिन ताकी आप टिकाया। औखी घाटी विच संसार कर किरपा देवे चाड़्ह, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कन्त मिलावा साची नार, सेजा सोहे कन्त भतार, रल मिल एका रंग रंगाया। अंग करे अंगीकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण संग निभाया।

री सखी घर आयो गोबिन्द, नेत्र नैण निहालया। मेरी सगली लथ्थी चिन्द, हरि पाया पुरख अकालया। नेत्र वेख्या गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, मेरा तुट्टा जगत जंजालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वेले दरस दिखा ल्या। री सखी मोहे चढ़या चाउ, घर मिल्या बनवारी। मेरे नेत्र नैण गया सुहा, दे के दरस दीदारी। मेरी हरस गया मिटा, एका दे के नाम खुमारी। एका बन्धन गया पा, नाता तोड़ जगत विभचारी। मैं बैठी आस लगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारी। रे सखी उठ गाओ गीत, हरि माही सच्चा आया। जिस

बणाई मन्दिर मसीत, सो डेरा रिहा ढाहया। अग्गे दस्से आपणी रीत, साचा सोहला गाया। नाता तोड़े हस्त कीट, इक्को रंग रंगाया। मेरा साहिब सदा अनडीठ, अनडिठड़ा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी काया कीती सीत, सीतल धार मुख चुआया। री सखी उठ वेख गोबिन्द, घर घर फेरा पाइंदा। ग़रीब निमाणी कोझी कमली मिटी चिन्द, चिंता दुःख गवाइंदा। उहदे चरनां हेठ कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव फिरदे इन्द, दरस ना किसे वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। री सखी उठ मार झाकी, हरि सज्जण सच्चा आया। आपणी हथ्थीं खोल्ह ताकी, तेरा दर सुहाया। लहिणा देणा चुकाए बाकी, मूल रहे ना राया। मैं करके दरस खट्टी इक्को खट्टी, दूजी हरस ना कोई वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। री सखी उठ मार ध्यान, हरि जू फेरा पाईआ। तूं बाली नढ्ढी बाल अञ्याण, मति बुध ना कोई चतुराईआ। तूं चरनी डिगी आण, सिर चरनां उपर टिकाईआ। भुल्ली रुल्ली करे परवान, मेरा साहिब सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। उठ सखी री वेख, हरि हरि हरि खेल कराइंदा। पिछला मेटण आया लेख, अगला लेखा आप जुणाइंदा। ग़रीब निमाणयां करे हेत, आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। री सखी उठ वेख महक, हरि महक महक महकाईआ। मैं निमाणी रही पेख, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। दर्शन पाया गई टहिक, बुलबुल एका चहिचहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए मिलाईआ। री सखी उठ लाग रंग हरि रंगण आप जणाइंदा। मिले मेल सूरा सरबंग, सूरत साख्यात प्रगटाइंदा। इक्क वखाए सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। भोग बिलास मोह करे खण्ड, काम क्रोध नेड़ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस वटाइंदा। दस्स सखी हरि वसे केहड़े खेड़े, कवण घर डेरा लाईआ। हरिजन तारे केहड़े केहड़े जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। किस बिध बन्न्हे मात बेड़े, लोकमात चलाईआ। चारों कुण्ट पए झेड़े, दीन मज़्ब लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ। सुण सखी मेरी इक्को बात, प्यार प्यार नाल समझाईआ। उठ वेख मार झात, तेरे नैणां दयां वखाईआ। जन भगतां देवे सच्ची दात, लोकमात फेरा पाईआ। तूं बणीं रही ना नार कमजात, कुलखणी आपणा रंग वखाईआ। तेरा प्रभ मेलां तेरे साथ, तेरा दुखड़ा दए मिटाईआ। उहो गाउँदा भगतां गाथ, नित नित करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आ सखी वेख हरि, वेला अन्तिम

आईआ। भगत दुआरा खुल्हिआ दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। जन्म जन्म विछड़े लए फड़, आपणा बन्धन पाईआ। गुरमुख अंदर गया वड़, सच सिँघासण डेरा लाईआ। नेत्र खोल्ह वेख शेख सर, शेखी सब दी रिहा मुकाईआ। कन्त सुहाग इक्को दर, जिस मिलयां सर्ब दुःख मिट जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईश जीव नार कन्त, कन्त नार बन्धन पाईआ।

★ १८ माघ २०१८ बिक्रमी फरंगी राम दे घर जम्मू ★

साचा नाउँ आपणा जस, जुग जुग आप सुणाइंदा। भगतां मार्ग सच्चा दस्स, हरि साचे राह चलाइंदा। सन्तन अंदर आपे वस, आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरमुखां पूरी करे आस, आसा मनसा पूर कराइंदा। गुरमुखां सदा रखे पास, आप आपणा बन्धन पाइंदा। हरि दा सेवक दासी दास, जुग जुग सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव खोल्ह निरँकार, निरगुण महिमा शब्द जणाईआ। शब्दी शब्द कर पसार, शब्द वेखे चाँईं चाँईंआ। शब्दी गुर रूप करतार, शब्द आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सिफ्त आप सलाहीआ। एका नाम सिफ्त सलाह, हरि साचा सच प्रगटाइंदा। एका नाउँ दो जहान, दो जहानां खेल कराइंदा। आपणा नाउँ दस्से हर घट थाँ, ब्रह्मण्ड खण्ड समाइंदा। एका नाउँ निरगुण सरगुण लए धरा, सरगुण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। गुरू गुर वेस लए प्रगटा, वेस अवल्लड़ा आप कराइंदा। खाणी बाणी लए रचा, रच रच आपणी खेल कराइंदा । वेद शास्त्र सिमरत लए बणा, वेद शास्त्र सिमरत आपणी गंढ्ढ पुवाइंदा। चारे खाणी चारे बाणी, चारे जुग लए समझा, चार वरन भेद चुकाइंदा। लोकमात होए रुशना, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। घर घर ढोला दए सुणा, घट घट अंदर राग सुणाइंदा। घर घर अमृत जाम दए प्या, साचा अमृत मुख चुआइंदा। जुग जुग विछड़े लए मिला, आत्म परमात्म मेल कराइंदा। घर घर पकड़े बांह, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। घर घर निथाव्याँ देवे थाँ, थान थनंतर इक्क वखाइंदा। घर घर ठंडी देवे छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। घर घर बणे पिता मांउँ, पूत सपूता वेख वखाइंदा। घर घर करे सच न्याउँ, जुग जुग झेड़ा आप मुकाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउं, कागों हँस उडाइंदा। घर घर निउँ निउँ लागे पाउँ, निवण सु अक्खर इक्क समझाइंदा। एका नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि प्रगटाइंदा। एका नाउँ पकड़े बांहों सच्चा मीत, मित्र प्यारा इक्क अख्वाईआ। एका नाउँ सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ ।

एका नाउँ ठंडा सीत, अग्नी तत्त ना कोई रखाईआ। एका नाउँ सुहागी गीत, गुर गुर आप अलाईआ। एका नाउ रखे धाम अनडीठ, आप आपणे विच छुपाईआ। एका नाउँ चलाए साची रीत, जुग जुग राह चलाईआ। हरि का नाउँ पतित पुनीत, पापी लए तराईआ। एका रंग वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। हरि का नाउँ कराए सच प्रीत, पारब्रह्म सरनाईआ। हरि का नाउँ वसाए खेड़ा मन्दिर मसीत, गुरदुआरा मट्ठ इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप प्रगटाईआ। एका नाउँ राजन राज, भूपत भूप खेल कराइंदा। एका नाउँ साजण साज, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। हरि का नाउँ अचरज काज, सुरती शब्द बन्धन पाइंदा। हरि का नाउँ मारे वाज़, रसना जेहवा ना कोई हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आप धराइंदा। एका नाउँ महांबीर, बल आपणा आप वखाईआ। एका नाउँ साचा तीर, तीर निराला इक्क चलाईआ। एका नाउँ पीरन पीर, दस्तगीर इक्क अख्वाईआ। एका नाउँ सच्चा फ़कीर, फिकरा होर ना कोई बणाईआ। एका नाउँ बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आईआ। एका नाम देवे धीर, सति सन्तोख वड वड्याईआ। एका नाम कटे भीड़, हउमे रोग गंवाईआ। एका नाम बन्ने बीड़, बन्ने बेड़ा आप चलाईआ। एका नाम लख चुरासी वेलणे देवे पीड़, एका एक दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप दरसाईआ। एका नाउँ आदि अन्त, हरि साचा सच प्रगटाइंदा। एका नाउँ जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाइंदा। एका नाउँ भगत भगवन्त, भगवान आप वरताइंदा। एका मेला साजण सन्त, सति सति समझाइंदा। लेखा जाणे नारी कन्त, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। एका नाउँ मणीआ मंत, मन आसा पूर कराइंदा। एका नाउँ गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आप समझाइंदा। एका नाउँ गुरू गुरदेव, गुर गुर रूप धराईआ। एका नाउँ अलख अभेद, लिख्या कदे ना जाईआ। एका नाउँ करे साची सेव, जन भगतां सेव कमाईआ। एका नाउँ साचा मेव, अमृत फल इक्क खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाउँ हरि की धार, हरि हरि आप प्रगटाइंदा। एका नाउँ खेल अपार, अपरम्पर वेख वखाइंदा। एका नाउँ रहे जुग चार, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। एका नाम वणज वापार, लख चुरासी वणज कराइंदा। एका नाउँ डुब्बदे पाथर देवे तार, पाहन आपणे अंग छुहाइंदा। एका नाउँ सति जैकार, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। एका नाउँ धर्म आधार, अधर्म रूप ना कोए वटाइंदा। एका नाउँ कर्म कांड ते वसया बाहर, क्रिया विच कदे ना आइंदा। एका नाउँ सच भण्डार, हरि सच्चा सच वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आप समझाइंदा।

एका नाउँ बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। एका नाउँ सच निशान, सति सतिवादी सति झुलाईआ। एका नाउँ राज राजान, शाह पातशाह नाउँ वड्याईआ। एका नाउँ हुक्मरान, हुक्मी हुक्म इक्क सुणाईआ। एका नाम होए प्रधान, दो जहानां खेल कराईआ। एका नाउँ देवे दान, आपणी वस्त आप वरताईआ। एका नाम वसे सच मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। एका नाउँ मर्द मर्दान, सच मर्दानगी दए जणाईआ। एका नाउँ बेपहचान, नज़र विच किसे ना आईआ। एका नाउँ विष्न ब्रह्मा शिव गाण, एका राग अलाईआ। एका नाउँ ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म ज्ञानी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप उपजाईआ। एका नाम हरि हरि अतुट, अतुट अतुट जणाइंदा। हरि का नाउँ सर्ब सृष्ट, जीव आत्म मेल मिलाइंदा। हरि का नाम खोल्हे दृष्ट, दीर्घ रोग मिटाइंदा। एका नाउँ मंगे रामा वशिष्ट, नेत्र निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाम धराइंदा। एका नाम साचा काहन, हरि घनईआ आप जणाईआ। एका नाम सच्चा राम, रम्मईआ लए मिलाईआ। एका नाम दए पैग़ाम, पीर पग़म्बर लए समझाईआ। एका नाम सतिनाम, नानक निरगुण करे पढ़ाईआ। एका नाम गुण निधान, गोबिन्द झोली पाईआ। एका नाम सच निशान, सति सतिवादी इक्क वखाईआ। एका नाम जुग जुग होए प्रधान, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाईआ। एका नाउँ कलयुग वेखे आण, लोकमात वेस वटाईआ। एका नाउँ प्रगट करे श्री भगवान, आप आपणी दया कमाईआ। एका नाउँ सोहँ शब्द जगत जीव जहान, जन्म मरन कटाईआ। प्रगट करे आप भगवान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाउँ धराईआ। कलयुग अन्त करे कल्याण, सतिजुग साचा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, हरि का नाउँ हरि समझाईआ।

★ १८ माघ २०१८ बिक्रमी कथा सिँघ दे घर पिण्ड मोइल जम्मू ★

पीर पैग़म्बर रहे नट्ठ, चार यारी नाल रलाईआ। दर दरवेश इक्क इक्ठ, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। इक्क दूजे नूं रहे दस्स, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। सब दे खाली होए हथ्थ, अग्गे चले ना कोए वड्याईआ। कलमा नबी ना कोई नथ्थ, रसूल असूल ना कोई बिताईआ। जिस दा गाउँदे रहे जस, मुकामे हक़ हक़ खुदाईआ। सो प्रगट होया साहिब समरथ, निरगुण आपणा नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाईआ। पीर पैग़म्बर करन विचार, हरि विचार विच कदे ना आईआ। सदी सदीवी होई खुआर, सिर सदका ना कोई रखाईआ।

चारों कुण्ट धूआँधार, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। ऐनलहक ना कहे कोई पुकार, हक़ हक़ीक़त ना कोई समझाईआ। लाशरीक परवरदिगार, बेऐब रूप वटाईआ। साडी करनी पावे सार, पूरब लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। हुक्मी हुक्म करे फ़रमाण, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। सदा देवे एका दान, एका घर मंगाईआ। रुत्तड़ी सोहे भगत दुआर, लोकमात वज्जे वधाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। एका जाणे राम रूप करतार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त बेपवराहीआ। खेले खेल दो जहान, श्री भगवान आपणी कार कमाईआ। लहिणा देणा वखाए गोपी काहन, बण घनईआ नईया मात चलाईआ। शब्द अगम्मी दे पैग़ाम, पीर पीर करे पढ़ाईआ। अन्तिम सब नूं वेखे आण, बेपहचान रूप वटाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवे ज्ञान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। दाता दानी नौजवान, बल आपणा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नूर ज़हूर आप कराईआ। नूर ज़हूर हरि अगम्म, अगम्मड़ा खेल कराइंदा। चौदां लोक बेड़ा बन्न्ह, चौदां तबक आप हिलाइंदा। लख चुरासी देवे डंन, जो घड़्या भन्न वखाइंदा। भगत भगवन्त चढ़ाए साचे चन्न, मुर्शद मुरीद दया कमाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, कलमा कलाम आप जणाइंदा। एका जोत जगाए तन, दीपक दीआ डगमगाइंदा। एका बेड़ा देवे बन्न्ह, खेवट खेट सेव कमाइंदा। एका देवे सच्चा धन्न, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। पीर पैग़म्बर करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। एका विछड़या मीत मुरार, इलाही नूर ना कोए रुशनाईआ। मुकामे हक़ ना सांझा यार, हक़ीक़त करे ना कोई कुड़माईआ। राम रहीम रहिमान होया ख़बरदार, ख़बरदार करे लोकाईआ। एका चिल्ला तीर कमान, त्रैभवन धनी आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। साचा चिल्ला तीर कमान, श्री भगवान आप उठाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर परवान, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराइंदा। लेखा जाणे गोपी काहन, कृष्न मधुर धुन बंसरी नाम वजाइंदा। खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक विच समाइंदा। नाद अनादी धुर फ़रमाण, शब्दी शब्द जणाइंदा। कलयुग अन्तिम लेखा मुक्के विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। प्रगट हो श्री भगवान, वेद व्यासे नाल उठाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, साचे बंक सोभा पाइंदा। एका नाम गीता ज्ञान, दृष्ट इष्ट इक्क वखाइंदा। एका राम एका काहन, धुन अनादी इक्क वजाइंदा। एका सतिनाम सतिनाम करे परवान, धुर फ़रमाना हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर तेरा लहिणा तेरी झोली पाइंदा। साचा लहिणा देवणहार,

आदि जुगादि समाया। गुर अवतारां पावे सार, जुग जुग वेस वटाया। भगत भगवन्त दए आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। लख चुरासी पार किनार, आवण जावण गेड़ कटाया। एथे ओथे होए सहार, विच जहानां दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाया। हरिजन साचे आप उठाल, आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, गुर गुर सेव कमाईआ। शब्दी शब्द बण दलाल, जगत विचोला फेरा पाईआ। नाता तोड़ काल महांकाल, एका बख्शे सरन सरनाईआ । नूरी जल्वा नूर जलाल, नूर नूराना इक्क दरसाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। भगत भगवन्त लए पछाण, लख चुरासी फोल फुलाईआ। सीता सुरती मिले राम, घर घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन साचे मेल मिलाउणा, हरि आपणी दया कमाइंदा। पीर पैग़म्बर नाल रलाउणा, गुर अवतार आप उठाइंदा। साचा बंक इक्क सुहाउणा, जिस दुआरे फेरा पाइंदा। पूरब लहिणा झोली पाउणा, जन्म कर्म पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत जोत मिलाउणा, आप आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर एका हथ्थ टिकाइंदा। गुरमुख सच्चा सच दुआर, सो पुरख निरँजण आप बहाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार करन विचार, अचरज हरि हरि खेल वरताईआ। जुग चौकड़ी देंदा रिहा नाम आधार, आपणा नाउँ कर वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जाता हो उज्यार, नूर नूराना डगमगाईआ। जंगल जूह वेखे उजाड़ पहाड़, लख चुरासी डूँघी कंदर फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथमी चरनां हेठ लिताड़, सत्तां दीपां वंड वंडाईआ। गुरमुख विच्चों लए उठाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नाता तोड़े शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन मिल्या धुर दरबार, श्री भगवान दया कमाइंदा। गुर का शब्द इक्क आधार, गुर गुर रूप समाइंदा। सतिगुर पूरा जाए तार, फड़ बेड़ा पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। हरिजन साचा सति सरूप, महिमा अनूप गिणी ना जाईआ। प्रभ मिल्या इक्को भूप, राजन राज बेपरवाहीआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। नाता तोड़ जूठ झूठ, सच सुच्च करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन साचा तारया, तारनहार गुर एक। आवण जावण गेड़ निवारया, चरन सरन बख्शी टेक। सचखण्ड दुआरे आप सुहा ल्या, मेल मिलावा एको एक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे लिखणहारा लेख। आपे लिखे लेख, लिखणहार गोपाला। सन्त सुहेले आपे वेख, देवे नाम सुखाला।

आपे बनणहारा रेख, आपे तोड़णहार जंजाला। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे लाला। हरिजन लाल अनमुलड़ा, कीमत कोए ना पाइंदा। सतिगुर कंडे जो जन तुलड़ा, तिस भार ना कोई उठाइंदा। एथे ओथे फलया फुलड़ा, दो जहानां डगमगाइंदा। भाग लगाए आपणी कुलड़ा, कुलवन्त नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सिर रखे हथ्थ आप निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जो जन रसना सोहँ गाए जैकार, जन्म मरन विच ना आईआ। नेत्र लोचण नैण देवे दरस दीदार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। अग्नी तत्त देवे ठार, अमृत मेघ बरसाईआ। काग रलाए हँसा डार, सोहँ हँसा मोती चोग चुगाईआ। हउमे दुखड़ा दए निवार, घर घर विच सुख उपजाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, चरन सरन दए सरनाईआ। गुरमुख करे सदा प्यार, गुर पूरे वड वड्याईआ। कथा सिँघ उतरया पार, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। दोझे जोड़ करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरी गोद मेरा परवार, इक्को तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादि सदा रखवाल, तूं सच्चा साहिब सईआ। एथे ओथे दो जहानां करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। धन्न भाग मेरी लेखे लाई घाल, कीती घाल थाएं पाईआ। चरन प्रीती निभे नाल, अन्त विछोड़ा ना कोई रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल, दयानिध ठाकर गहर गम्भीर सहिज गुण सागर अमृत ताल ल्या नुहाईआ।

पारब्रह्म तेरा परवार, गुर अवतार नाउँ धराया। पीर पैग़म्बर तेरा आधार, लोकमात खेल कराया। आपणा नाउँ रख हरि निरँकार, अमृत अमोलक इक्क वरताया। काया गोलक कर त्यार, आदि जुगादि विच टिकाया। सच्ची ढोलक अगम्म अपार, एका एक सुणाया। अनबोलत तूं कोए ना पाए सार, तेरा भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा बंस इक्क वड्याआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा नाउँ, लोकमात प्रगटाईआ। जुग जुग देवण धुर फ़रमाण, जीव जंत कर पढ़ाईआ। आप रखण तेरा ध्यान, ध्यान दस्सण सर्ब लोकाईआ। आप मंगण तेरा ज्ञान, ज्ञान जीव जंत जणाईआ। आप मंगण तैथों दान, बण दानी लोकमात सेव कमाईआ। आप मन्नण तैनूं काहन, लोकमात बण बण काहन तेरी रास रचाईआ। तूं सब दा दाता श्री भगवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार तेरा रंग, रंग रंग चढ़ाईआ। आत्म सेजा सच पलँघ, सच सिँघासण इक्क विछाईआ। निज आत्म देवे निझानंद, निज घर करें रसाईआ। गीत सुणाए आपणा छन्द, बिन तन्दी तार हिलाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

खेल आप कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा घराना, तेरे हथ्थ साहिब वड्याईआ। तूं सब दा सच्चा दाता, शहिनशाह अख्वाईआ। सब गौदें तेरा गाणा, जुग जुग सेव कमाईआ। तूं चरन बख्शे माणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नेत्र नैण तेरा ध्याना, तेरे हुक्मे फेरी पाईआ। तूं चतुर सुघड़ सुजाना, वड दाता शहिनशाहीआ। तेरा खेल दो जहानां, लोकमात तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार तेरा साक, लोकमात बन्धन पाया। तूं आपणी दस्सीं भविख्त वाक्, भेव अभेद खुल्हाया। तूं बणाएं आपणी ज़ात, आपणा रंग रंगाया। तूं बैठा इक्क इकांत, सच महल्ले डेरा लाया। तेरा खेल बहु बिध भांत, एका बिध आपणी धार चलाया। तेरी सेवा दिवस रात, सूरज चन्न रहे कमाया। तेरी पढ़ पढ़ पूजा पाठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे धन्दे आप लगाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा बन्धन, दीना बंधू तेरी वड्याईआ। तेरा नाम मस्तक लाउण चन्दन, चन्दन निम्म वास महकाईआ। दोए जोड़ कीती बन्दन, सीस जगदीस झुकाईआ। तूं साहिब सदा बख्शंदन, तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं सेवा करीए विच वरभण्डन, ब्रह्मण्ड तेरी धार समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा साजन आपे साज, वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा नाता, जुग जुग गावे तेरी गाथा, तेरा सोहला नाल रलाया। निउँ निउँ टेकण माथा, प्रभ चरन सीस झुकाया। तूं साहिब पुरख समराथा, वड दाता बेपरवाहया। तूं बांकन बांकी बांका, पतित पुनीत वेस कराया। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा अहाता, गुर अवतार बैठे सेव कमाया। तेरे रंग किसे ना जाता, बेअन्त तेरी शहिनशाहया। तूं सब दा पिता माता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा जोड़, जोड़न जोड़ जोड़ जुड़ाईआ। तूं लग्गी निभावें तोड़, तेरे हथ्थ वड वड्याईआ। जुग जुग तेरी रखण ओट, इक्को आस तकाईआ। तूं दाता निर्मल जोत, नूर नूर रुशनाईआ। सचखण्ड वसें साचे कोट, चार दुआर ना कोई बणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरे मित, मित्र प्यारा तूं अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया हित, नित नवित वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम दस्सी साची थित, साचा घर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर घर आपणा भेव चुकाईआ। गुर पीर अवतार तेरा दरवाज़ा, लोकमात खुलाया। अंदर वड़ वड़ करे काजा, आपणा हुक्म सुणाया। भूपत भूप बण राजन राजा, हुक्मी सर्ब भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा रंग वखाईआ। गुर पीर अवतार तेरा सज्जण, तूं सगला संग निभाइंदा। चरन धूढ़ कराए मज़न, सच सरोवर इक्क नुहाइंदा। जुगां जुगन्त

५३६
११

होए पड़दे कज्जण, नाम दात हथ्थ रखाइंदा। नाद अनादी नाद तेरे वज्जण, गीत गोबिन्द अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर सोभा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरी आस, इक्को आस तकाईआ। जुग जुग बुझाए प्यास, तृष्ना अग मिटाईआ। भेव चुकाए पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां कर रुशनाईआ। सरगुण निरगुण हो दासी दास, साची सेव कमाईआ। आपणे विच्चों प्रगट करके आपणी शाख़, साख्यात रूप वखाईआ। नाम अगम्मी दे दे दात, झोली सर्ब भराईआ। अन्तिम वेखणहारा ज़ात, पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे तक्क, इक्क ध्यान लगाया। तूं आदि जुगादि ना जाएं अक्क, जुग जुग खेल कराया। आपणे चरनां हेठां सारे रखी ढक, आप आपणा पड़दा लाहया। जिस भावें तिस लएं कढ्ढ, हुक्मी हुक्म फिराया। इक्क दूजे नालों करें अड्ड, आपणी वंड वंडाया। जगत निशाना मात गड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कराया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे वेख, नैण नैण उठाईआ। पारब्रह्म किसे ना दस्सया भेत, अछल अछल छल कराईआ। आपणे मतल्ब लई करदा आया हेत, लोकमात सेवा लाईआ। अन्त सब नूं करया खेत, रणभूमी इक्क वखाईआ। आपे बैठा रख के चरनां हेठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन उडीक, एका ओट तकाईआ। प्रभ आए लाशरीक, लोकमात फेरा पाईआ। तिस अग्गे झुकाईए सीस, निउँ निउँ खुशी मनाईआ। सो साहिब सच्चा जगदीस, जिस दिती माण वड्याईआ। जिस दा कलमा पढ़ी हदीस, सो हज़रत फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पन्ध आप मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे पन्ध मुका, वेला वक्त रिहा ना राईआ। कलयुग अन्धेरा गया छा, चन्द चांदनी ना कोई रुशनाईआ। धीरज सके ना कोई धरा, धर्म अधर्म बैठा मुख छुपाईआ। जीव जंत रहे कुरला, कूक कूक सुणाईआ। साडी आयू गई विहा, वेला गया हथ्थ ना आईआ। कोई सरगुण निरगुण ना दिसे ऐ खुदा, खुदी विच सर्ब लोकाईआ। पीर पैग़म्बर बैठे मुख छुपा, नज़र नाल नज़र ना कोए मिलाईआ। मुल्ला शेख़ हुका बैठा डाह, तत्ती अग्ग चिलम ना कोई टिकाईआ। तेरा भुलया नाँ मेरे मेहरवान, इलम मिली वड्याईआ। तेरे उत्तों वेख होवां कुरबां, जगत करबला दए दुहाईआ। तेरी मंगां ठंडी छा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरी मंगण पनाह, सच तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम करदे हां, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। तेरी सरनाई सच्चा था, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा सुणाईआ। मेरी

इक्को होई हां, कलयुग अन्त वंड वंडाईआ। जिस छुरी फिराई उत्ते सूर गां, तिस नालों करां जुदाईआ। जन भगतां बणां पिता मां, लोकमात फेरा पाईआ। इक्को दस्सां सच्चा नाँ, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म मेला सहिज सुभा, सोहँ अक्खर सच पढ़ाईआ। हां करी इक्को भगत, मैं तूं भेव चुकाया। नाता तोड़ सर्ब जगत, सिरफ गुरमुख इक्क उठाया। लेखे लाई बूंद रक्त, जिस जन आपणा चरन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन भगतां कलयुग अन्त हथ्थ किसे ना आया।

★ १८ माघ २०१८ बिक्रमी देवा सिँघ धंगाली ज़िला जम्मू ★

पीर पैग़म्बर तक्की आस, आस इक्क रखाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाश, आकाश तेरी वड्याईआ। असी वेखणी तेरी रास, कवण दुआरे पाईआ। कवण सखी तेरे वसे पास, परवरदिगार सच्चे गुसांईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्लाईआ । तेरी रास तक्कण दा चाअ, इक्को ओट रखाईआ। तूं देणी सच सलाह, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। असीं रैहबर तेरे गए आ, दर तेरे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दे उठाईआ। तेरा तक्कणा जल्वा नूर, नूर नूरानी मेहरवाना । तेरा घर वेखणा हज़ूर, मेरे हज़ुरत शाह सुल्ताना। तूं शहिनशाह गफ़ूर, मरदे मर्द मर्दाना। तूं सर्बकला भरपूर, आदि जुगादि नौजवाना । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा मंडल कवण निशाना। कवण मंडल तेरी रास, कवण घर वज्जे वधाईआ । कवण रूप खेल तमाश, खालक खलक विच खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बिरध बाल ना कोई बच्चा, वड्डा छोटा ना कोई अख्वाईआ। जिस जन मिल्या सतिगुर सच्चा, एका रंग रंगाईआ। त्रैगुण अग्न कदे ना मच्चा, गुरमुख वड्डी वड्याईआ। लेखे लग्गा भाण्डा कच्चा, करता कीमत आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख एका घर बहाईआ । ना कोई बच्चा ना नादान, बाली बुध ना कोई रखाईआ। गुरमुख सूरा चतुर सुजान, मिली मात वड्याईआ। जिस जन दरस देवे भगवान, सो जन सच दुआरे सोभा पाईआ। नाता तुट्टे जगत जहान, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी वेखे मार ध्यान, मेहरवान निगह इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ना कोई

बच्चा बाली बुध, बाली बाल ना कोई जणाइंदा। जन भगतां करे कारज सुध, हरि साची सेव कमाइंदा। गुरमुख जोधा सूरबीर एका उठ, आपणा बल रखाइंदा। जिस उपर दीन दयाल जाए तुट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। ना कोई बच्चा मूर्ख मति, मूढ़ नज़र कोई ना आईआ। सतिगुर देवे साची मति, एका गुण समझाईआ। घर घर अंदर हरि हरि तत्त, निक्का वड्डा ना वंड वंडाईआ। साढे तिन्न हथ्थ अंदर रख्या ढक, दिस किसे ना आईआ। जिस भावे तिस पड़दा देवे ढक, आपणा मुख वखाईआ। उह बोले नाअरा हक़, कूक कूक सुणाईआ। प्रभ सांई गया लभ्भ, घर मिल्या सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वड्याईआ। गुरमुख बच्चा सदा जवान, हरि साचा सच रखाइंदा। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, एका गुर वखाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर बहाइंदा। एका अमृत पीण खाण, रस रसीआ आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। गुरमुख बच्चा सूरबीर, वड सूरा नाउँ धराईआ। जगत माया तोड़ जंजीर, इक्को ओट तकाईआ। चोटी चढ़ बैठा अख़ीर, उतर कदे ना जाईआ। प्रभ मिल्या गहर गम्भीर, गुण आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुरमुख बच्चा सदा गुणवन्त, गुणवन्ता आप बणाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। एका नाउँ मणीआ मंत, मन मनसा दए खपाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, गृह गृह नाद सुणाईआ। रंग चाड़्ह इक्क बसन्त, काया चीथड़ा आप रंगाईआ। जिस जन बणाई बणत, घड़न भन्नणहार सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप जगाईआ। गुरमुख बच्चा जाए जाग, पुरख अबिनाशी आप जगाईआ। आपणे हथ्थ पकड़े वाग, डोरी तन्द बंधाईआ। दीपक जोत जगाए चिराग़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल धुवाईआ। अन्तर आत्म इक्क वैराग, बिरहों चोट लगाईआ। जगत तृष्ना बुझे आग, माया ममता दए खपाईआ। शब्द अगम्मी इक्क अवाज़, छोटे बाले दए सुणाईआ। छोटा बाला रच के काज, हरिसंगत गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोटे बाले दए वड्याईआ। छोटे बाले तेरा माण, हरि साचा सच रखाइंदा। छोटी उमरे खेल महान, लोकमात कराइंदा। सिँघ मनजीता नौजवान, आपणे रंग वखाइंदा। बच्चिआं देवे पहलों ज्ञान, बुढ्ढयां फिर समझाइंदा। अंदर वड़ श्री भगवान, आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोटे बाले आप तराइंदा। छोटा बाला वड प्रधाना, सच प्रधानगी आप समझाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, फिर फिर खुशी मनाईआ। करोड़ तेतीसा होया हैराना, भेव कोए ना पाईआ। सुरपति इन्द

मुख शरमाना, नेत्र नैण ना सके उठाईआ। छोटा बाला बन्नृ के आया गाना, साचा सगन मनाईआ। सोहँ ढोला गाए तराना, एका राग सुणाईआ। प्रभ पुरख पाया इक्क मर्दाना, वड मर्दानगी रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोटे बच्चे आप प्रगटाईआ। छोटे बच्चे साचे लाल, हरि लालन रंग रंगाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, लोकमात सेव कमाइंदा। साची घाली घालण आपे घाल, नीहां हेठ दबाइंदा। करे खेल बेमिसाल, बेनज़ीर तकदीर सर्ब बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे बाले वेख वखाइंदा। छोटे बाले उच्च महल्ला, एका गढ़ बणाईआ। वेखणहारा इक्क इकल्ला, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। बहत्तरां अंदर आपे रला, आपणा गुण समझाईआ। सच संदेसा एका घल्ला, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। छोटे बाले नीहां हेठ रख, हरि राखी करन आया। छोटे बच्चे कर प्रतख, प्रतख रूप धराया। छोटे बाले कर कर वक्ख, हरि आपणी वंड वंडाया। छोटे बाले पड़दा ढक, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। छोटे बच्चे गोदी चक्क, सचखण्ड दुआर बहाया। छोटे बाले रखे पत्त, पति पतिवन्ता होए सहाया। छोटे बच्चे लेखे लग्गे रत्त, रत्ती रत्त नाल रंगाया। छोटे बाले इक्को तत्त, हरि तत्त तत्त समाया। करे खेल पुरख समरथ, भेव किसे ना आया। साचा मार्ग रिहा दस्स, बाले नीहां हेठ धराया। उत्ते त्रैगुण माया देवे रख, आपणी हथ्थीं पड़दा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल आप कराया। छोटे बाले उठे कुद्द, आपणा बल रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखणा युद्ध, सत्तां दीपां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाली बाले लए तराईआ। छोटा बाला बाल अञ्याण, एका मति रखाईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सति सतिवादी मन्दिर सच मकान, सचखण्ड निवासी आप बणाईआ। सत्त रंग झुलाए इक्क निशान, सत्तां दीपां करे रुशनाईआ। सति धर्म दी सति दुकान, सति पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। चार वरनां देवे इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, चरन सरन सरनाईआ। तख्त निवासी भूप राजान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख उठाए चतुर सुजान, साची सोझी आपे पाईआ। चतुर्भुज नौजवान, आपणीआं भुजां बल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोटे बाले होए सहाईआ। छोटे बाले सदा सहायक, हरि साची सेव कमाइंदा। छोटा बाला होया लायक, हरि आपणी गोद बहाइंदा। करे खेल नर नरायण नायक, नईआ जगत आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचे वर, छोटे बाले पार कराइंदा।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी पिण्ड धंगाली जम्मू ★

गुर अवतार करो ध्यान नेत्र खुल्ले, बेपरवाह रिहा जणाईआ। जीव जंत लोकमात साध सन्त फिरन भुल्ले, आत्म ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। भाग ना लग्गे किसे कुल्ले, काया खाली हट्ट विकाईआ। माया ममता झूठी रुल्ले, मोह विकारा नाल रलाईआ। अन्त पैणा ना कोई मल्ले, कीमत मात ना कोए चुकाईआ। जगत अन्धेरा एका झुल्ले, कच्चे बिरहों दए झड़ाईआ। अमृत जल सब दे डुल्ले, सरोवर सच ना कोए नहाईआ। सिंमल बूटे फले फुल्ले, अन्त रस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नैण रिहा खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करो ध्यान, हरि सच्चा सच जणाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत पूजा पाठ ना कोई ज्ञान, आत्म परमात्म मेल ना कोई मिलाइंदा। शरअ शरीअत ना कोई इमान, सच मुसल्ला हेठ ना कोई विछाइंदा। तीस बतीस हदीस ना कोए कुरान, शरअ शरीअत ना कोए वड्याइंदा। हक़ हक़ीक़त ना कोए पैग़ाम, सच संदेस ना कोए सुणाइंदा। सच महिराबे ना कोए कलाम, कलमा नबी ना कोए पढ़ाइंदा। नूरी जल्वा ना कोए इमाम, आपणी आमद ना कोए वखाइंदा। सजदा सीस ना कोए सलाम, सलामत नज़र कोए ना आइंदा। आपणी उम्मत वेखो सारे होए हराम, साचा हुरम ना कोए सुहाइंदा। पंज तत्त शैताना बणे गुलाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव खुलाइंदा। गुर अवतार वेखो मार झात, हरि झाकी इक्क जणाइंदा। कलयुग रैण अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। कोई ना दिसे पूजा पाठ, पढ़ पढ़ जीव सर्ब कुरलाइंदा। हरि का नाम मिले किसे ना हाट, सच वणज़ारा नज़र कोए ना आइंदा। दुरमति मैल ना देवे काट, सरोवर नीर ना कोए सुहाइंदा। पार ना करे कोई घाट, बण मलाह ना बेड़ा चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सुणो संदेसा ला के कन्न, हरिजू आख सुणाया। चारों कुण्ट खंन खंन, बन्धन बंध ना कोए बंधाया। जगत विद्या होई अन्न्ह, नेत्र ज्ञान ना कोए खुल्हाया। सिक्दार बणया मनुआ मन, आपणा हुक्म मनाया। पंच विकारा चढ़या चन्न, घर घर करे रुशनाया। किसे ना लभ्भे नाम धन्न, खाली हथ्थ सर्ब फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खेल रिहा वखाया। उठो वेखो करो विचार, हरि सच्चा सच जणाईआ। चौथे जुग दी चौथी धार, नज़र किसे ना आईआ। त्रैगुण माया कर प्यार, बह बह खुशी मनाईआ। दोए दोए रूप भुलया निरँकार, निरगुण सरगुण भेव ना राईआ। इक्क इकल्ला हो त्यार, लोकमात फेरा पाईआ। सच महल्ला धुर दरबार, लोकमात लए प्रगटाईआ। दूजा खेल करे निरँकार, भगवन देवे माण वड्याईआ। तीजा नेत्र खोल्ह किवाड़, आपणी बूझ बुझाईआ। चौथे पद दे सहार, साची मंज़ल पार कराईआ।

५४१
११

पंचम मेला मीत मुरार, घर घर विच होए सहाईआ। छेवें घर खेल करतार, गुर उपदेस आप सुणाईआ। सति सतिवादी एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। अठ्ठां तत्तां कर प्यार, आपणा बन्धन पाईआ। नौ दुआरे कर खुआर, दसवें रंग चढ़ाईआ। किरपा कर आप करतार, आपणी खेल आप समझाईआ। वरन बरन कढ्ढे बाहर, साची सरन इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पकायण मता, एका दूआ बन्धन रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ किसे ना बणया कदे सका, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। आदि जुगादि कदे ना थक्का, जुग जुग वेस वटाईआ। मुहम्मद कहे पहलां माण दिता मैनूं मक्का, हुण मक्का करे सफ़ाईआ। ज़ोरावर आपणा करे धक्का, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद चले सच रज़ाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार करन विचार, एका घर वज्जे वधाईआ। असीं सेवा करीं जुग चार, जुग जुग वेस वटाईआ। मन्नदे रहे इक्क निरँकार, निरगुण नूर रुशनाईआ। पंज तत्त काया कर अकार, लोकमात खुशी हंढाईआ। दोए दोए रूप विच संसार, जीवण जुगत बिताईआ। सरगुण नाता जोड़या पुरख नार, पुत्तर धीआं बंस सुहाईआ। निरगुण खेल अपर अपार, जोती जोत जोत मिलाईआ। सरगुण खेल विच गए हार, जगत बन्धन नाल रखाईआ। निरगुण जोत कर उतरे पार, घर मिली सरन सरनाईआ। करे खेल अगम्म अपार, आपणा राह आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ । सरगुण तेरी जगत धार, गुर अन्तर मुख छुपाया। पंज तत्त काया काम क्रोध लोभ मोह हँकार, जगत सुवाणी सेज हंढाया। आत्म अन्तर खेल अपार, पारब्रह्म प्रभ आप कराया। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका घर बाहर, एका मन्दिर डेरा लाया। सरगुण आसा तृष्ना करे विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। सरगुण मंगे शमशीर, तीर कमान चिल्ला नाल उठाईआ। निरगुण करे अन्त अख़ीर, आपणा रूप ना कोए वखाईआ। सरगुण जोधा सूरबीर बली बलवान, भुजां आपणीआं आप उठाईआ। निरगुण करे खेल महान, हुक्मी हुक्म हुक्म वरताईआ। सरगुण वेखे जगत नेत्र मार ध्यान, निरगुण बण उठ करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर धार विच संसार, निरगुण सरगुण हो उज्यार, आपणा रंग आप वखाईआ। निरगुण तत्त कहे तन नानक, सरगुण नानक निरगुण रिहा वड्याईआ। निरगुण खेल अत भयानक, सरगुण निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सरगुण कहे प्रभ खेल अचन अचानक, भेव कोए ना आईआ। निरगुण कहे सरगुण अणजाणत, सरगुण कहे बिन निरगुण बूझ ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार चलाईआ।

सरगुण कहे निरगुण बाप, निरगुण कहे सरगुण पूत रूप अख्वाईआ। सरगुण कहे निरगुण प्रताप, निरगुण कहे सरगुण मेरी वड्याईआ। सरगुण कहे निरगुण जाप, निरगुण कहे सरगुण करे पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे साथ, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी ना कोए रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण समरथ, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी चले ना कोए वड्याईआ। सरगुण कहे महिमा अकथ, निरगुण कहे सरगुण रागी राग अलाईआ। सरगुण कहे निरगुण सच्ची वथ, निरगुण कहे सरगुण आप वरताईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे घट घट, निरगुण कहे सरगुण मेरे सिर पड़दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। सरगुण कहे निरगुण दाता, निरगुण कहे सरगुण भण्डार वरताइंदा। सरगुण कहे निरगुण पुरख बिधाता, निरगुण कहे सरगुण पुरख नारी खेल कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण उत्तम ज़ाता निरगुण कहे सरगुण ज़ात पात रंग चढ़ाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बैठा रहे इक्क इकांता, निरगुण कहे सरगुण अंदर मेरा आसण लाइंदा। सरगुण कहे निरगुण खेल तमाशा, निरगुण कहे सरगुण गोपी काहन रूप धराइंदा। सरगुण कहे जोत प्रकाशा, निरगुण कहे सरगुण जोती जोत डगमगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सचखण्ड रखे वासा, निरगुण कहे सरगुण अंदर रूप अनूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बलवान, आदि जुगादि समाया। निरगुण कहे सरगुण मेरा निशांन, लोकमात मात वड्याआ। सरगुण कहे निरगुण मेहरवान, निरगुण कहे सरगुण दीनन दया कमाया। सरगुण कहे निरगुण बेपहचान, निरगुण कहे सरगुण मेरा रूप वटाया। सरगुण कहे मेरा भगवान, निरगुण कहे सरगुण साचा पूत सुहाया। सरगुण कहे निरगुण देवे दान, निरगुण कहे सरगुण साची वंड वंडाया। सचखण्ड करे खेल महान, आपणा झगड़ा आप मुकाया। आपणी इच्छया कर परवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा अंग वखाया। गुर गुर रूप विच जहान, लोकमात फेरा पाया। बाहरों दिसे पंज तत्त दुकान, सरगुण रूप नजरी आया। अंदर लुकया रहे भगवान, निरगुण आपणा मुख छुपाया। बाहरों बोले रसना जबान, बत्ती दन्द जगत वखाया। अंदरों निरगुण देवे धुर फ़रमाण, सचखण्ड निवासी आप सुणाया। बाहरों वेखण नक्क मूँह हथ्थ दो दो कान, अंदर बिन रंग रूप रिहा समाया। बाहरों तक्कण बिरध बाल जवान, अंदर निरगुण बिरध बाल रूप ना कोए वटाया। बाहरों तक्कण जीव जहान, जगत नेत्र वेख वखाया। अंदरों निरगुण भगतां वखाए आपणा सच निशान, सति सतिवादी दया कमाया। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण खेल श्री भगवान, गुर गुर बन्धन एका पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा टिक्का आपणे मस्तक इक्क लगाया।

सरगुण कहे निरगुण बेपरवाह, बेअन्त भेव ना आइंदा। निरगुण कहे सरगुण चलाए राह, लोकमात राह वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण शहिनशाह, निरगुण कहे सरगुण जीव जंत रईयत हंढाइंदा। सरगुण कहे निरगुण प्रगटाए आपणा नाँ, निरगुण कहे सरगुण रसना जेहवा सर्ब जपाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे साचे थाँ, निरगुण कहे सरगुण मेरा बंक सुहाइंदा। सरगुण कहे निरगुण आदि जुगादि बेपहिचां, निरगुण कहे सरगुण मेरा रूप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बेअन्त, निरगुण कहे सरगुण सन्त रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा कन्त, निरगुण कहे सरगुण बण सवाणी साची सेव कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण आदि अन्त, निरगुण कहे सरगुण जुग जुग वेस वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा मणीआ मंत, निरगुण कहे सरगुण मेरा नाउँ सलाहीआ। सरगुण कहे निरगुण वसे धाम सोभावन्त, निरगुण कहे सरगुण मेरी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल कराईआ। निरगुण कहे सरगुण सुखवन्त, सरगुण कहे निरगुण हथ्थ वड्याईआ। निरगुण कहे सरगुण सोभावन्त, सरगुण कहे निरगुण सच्चा माहीआ। निरगुण कहे सरगुण महिमा अगणत, सरगुण कहे निरगुण हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप छुपाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेल, निरगुण कहे सरगुण मेल मिलाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सज्जण सुहेल, निरगुण कहे सरगुण संग रखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे धाम नवेल, निरगुण कहे सरगुण बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा वेस वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण दातार, निरगुण कहे सरगुण होए सहाईआ। सरगुण कहे निरगुण प्यार, निरगुण कहे बिन सरगुण प्यार मेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण आधार, निरगुण कहे बिन सरगुण टेक ना कोए रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण जैकार, निरगुण कहे बिन सरगुण जै जैकारा ढोला ना कोए सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण उज्यार, निरगुण कहे सरगुण करे जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। सरगुण कहे निरगुण सुख, निरगुण कहे सुख सरगुण विच रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण उज्जल मुख, निरगुण कहे सरगुण साचे मुख सलाहीआ। सरगुण कहे निरगुण कदी ना आया किसे कुक्ख, निरगुण कहे सरगुण मेरी कुक्ख सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना मानस ना कोई मानुख, निरगुण कहे सरगुण मेरा मानस रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना तृष्ना ना कोए भुक्ख, निरगुण कहे सरगुण मिलण दी तृष्ना भुख मैं रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सरगुण कहे निरगुण जस, निरगुण कहे सरगुण जस मेरी वड्याईआ।

सरगुण कहे निरगुण आपणे अंदर गया वस, निरगुण कहे मैं सरगुण अंदर डेरा लाईआ। सरगुण कहे निरगुण जोत करे प्रकाश, निरगुण कहे सरगुण अंदर नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणा भेव चुकाईआ। सरगुण कहे निरगुण मित, निरगुण कहे सरगुण मित्र प्यारया हथ्थ वड्याईआ। सरगुण कहे निरगुण रहे नित, निरगुण कहे सरगुण नवित फेरा पाईआ। सरगुण कहे निरगुण करे हित, निरगुण कहे सरगुण मिल मिल खुशी मनाईआ। सरगुण कहे निरगुण अबिनाशी अचुत्त, निरगुण कहे सरगुण चेतन रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण एका घर घर मन्दिर दए वड्याईआ। सरगुण कहे निरगुण बंक, निरगुण कहे सरगुण बंक दुआरी सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण डंक, निरगुण कहे सरगुण मेरा नाद सुणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण महिमा अगणत, निरगुण कहे सरगुण मेरा भेव खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। सरगुण कहे निरगुण ओट, निरगुण कहे सरगुण माण वड्याईआ। सरगुण कहे निरगुण भण्डार अतोट, निरगुण कहे सरगुण हथ्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे साचे किला कोट, निरगुण कहे सरगुण अंदर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप चलाईआ।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी इन्दर राम दे गृह धंगाली जम्मू ★

सरगुण कहे निरगुण सहारा, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा रूप ना कोए जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण शहिनशाह सच्ची सरकारा, निरगुण कहे सरगुण सच्ची कार कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण हुक्म वरतारा, निरगुण कहे सरगुण चले सच रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आप रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण पुरख अकाल, निरगुण कहे सरगुण जोत रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण दीन दयाल, निरगुण कहे सरगुण साचा लाल नाउँ रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण चले अवल्लड़ी चाल, निरगुण कहे सरगुण चाल निराली इक्क जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना खाए काल, निरगुण कहे सरगुण तेरे काल चरन सरन बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। सरगुण कहे निरगुण नूरानी जोत, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी जोत कम्म किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे साचे कोट, निरगुण कहे बिन सरगुण लोकमात किला कोट नज़र कोए ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण उत्ते मैं होया मोहत, निरगुण कहे मैं सरगुण पिच्छे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस

अवल्लड़ा आप कराईआ। सरगुण कहे निरगुण अनभउ प्रकाश, निरगुण कहे सरगुण नूर नूर समाया। सरगुण कहे निरगुण शाहो शाबाश, निरगुण कहे सरगुण शहिनशाह लोकमात वड्याआ। सरगुण कहे मैं निरगुण दास, निरगुण कहे मैं सरगुण बण दासी दास सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाया। सरगुण कहे निरगुण अछल, निरगुण कहे अछल सरगुण विच समाया। सरगुण कहे निरगुण बीर बल, निरगुण कहे बल सरगुण अंदर धराया। सरगुण कहे निरगुण अटल्ल, निरगुण कहे अटल्ल मुनारा सरगुण मात वड्याआ। सरगुण कहे निरगुण जोत रिहा रल, निरगुण सरगुण तेरी जोती जोत डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फेरा आपे पाया। सरगुण कहे निरगुण गुण निधान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा गुण कम्म किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण शाह सुल्तान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी चले ना कोई शहिनशाहीआ। सरगुण कहे निरगुण इक्क सति निशान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा सति निशाना ना कोए उठाईआ। सरगुण कहे निरगुण नौजवान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा जोबन ना कोए हंढाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे सचखण्ड मकान, निरगुण कहे बिन सरगुण सचखण्ड दुआरा कम्म किसे ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण ईमान, निरगुण कहे बिन सरगुण शरअ ना कोए चलाईआ। सरगुण कहे निरगुण सूरबीर बलवान, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा बल ना कोए अजमाईआ। सरगुण कहे निरगुण इक्को आण, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरा हुक्म कीमत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खेल खेल आपणी खुशी मनाईआ। सरगुण कहे निरगुण सूरा सरबंग, निरगुण कहे सरगुण सूरबीर प्रगटाया। सरगुण कहे निरगुण मृदंग, निरगुण कहे मृदंग सरगुण हथ्थ फड़ाया। सरगुण कहे निरगुण बिन रूप रंग, निरगुण कहे आपणा रूप रंग सरगुण मात धराया। सरगुण कहे निरगुण सोहे सच पलँघ, निरगुण कहे सच पलँघ सरगुण अंदर आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि निरगुण सरगुण आपणी वंड वंडाया। सरगुण कहे निरगुण निरँकार, निरगुण कहे सरगुण विहार चलाईआ। सरगुण कहे निरगुण अगम्म अपार, निरगुण कहे सरगुण अगम्मड़ी धार वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण अलख जैकार, निरगुण कहे सरगुण जै जै मेरी वड्याईआ। सरगुण कहे निरगुण किसे ना आए विच विचार, निरगुण कहे सरगुण अंदर वड़ वड़ आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा भेव रखाईआ।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी वकील सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू ★

सरगुण कहे निरगुण वसे ओहले, निरगुण कहे सरगुण आपणा भेव जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरे अन्तर बोले, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरी धुन ना कोए सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण रहे सदा अडोले, निरगुण कहे सरगुण अडोल रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा पड़दा खोल्हे, निरगुण कहे सरगुण सेवा करनी मेरी वड्याईआ। सरगुण कहे निरगुण साचा तोल तोले, निरगुण कहे सरगुण कंडा हथ्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण सुणाए अगम्मी ढोले, निरगुण कहे बिन सरगुण मेरे गीत ना कोए सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरे अन्तर मौले, निरगुण कहे सरगुण फल फुलवाड़ी इक्क लगाईआ। सरगुण कहे निरगुण अमृत भरया कौले, निरगुण कहे सरगुण हरी सिंच क्यारी आप कराईआ। सरगुण कहे निरगुण देवे माण उपर धौले, निरगुण कहे सरगुण धौल उपर मेरी करे रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण नूर अव्वले, निरगुण कहे सरगुण मेरा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नूर विच धराईआ। सरगुण कहे निरगुण परवरदिगार, एका नूर समाया। निरगुण कहे सरगुण मेरा यार, साची यारी आप हंढाया। सरगुण कहे निरगुण वसे धाम न्यार, निरगुण कहे सरगुण खेड़ा आप वसाया। सरगुण कहे निरगुण हक़ बोले जैकार, निरगुण कहे सरगुण जगत रिहा समझाया। जोती

५४७
११

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाया। सरगुण कहे निरगुण बेऐब, निरगुण कहे सरगुण ऐब ना कोए जणाईआ। सरगुण कहे निरगुण मेरा साहिब, निरगुण कहे सरगुण मेरा साबत रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण गाइब, निरगुण कहे सरगुण ज़ाहर ज़हूर नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण जलाल, निरगुण कहे सरगुण जल्वा मात प्रगटाइंदा। सरगुण कहे निरगुण दलाल, निरगुण कहे सरगुण विचोला खेल कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण वसे सच्ची धर्मसाल, निरगुण कहे सच्ची धर्मसाल सरगुण गढ़ बणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण वजाए ताल, निरगुण कहे ताल तलवाड़ा सरगुण हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भरम आप चुकाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जोती जाता, निरगुण कहे सरगुण जोत जोत रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण पुरख बिधाता, निरगुण कहे सरगुण पुरख रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना किसे पछाता, निरगुण कहे सरगुण गुरमुख आपणे आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सरगुण कहे निरगुण संजोग, निरगुण कहे सरगुण संग निभाया। सरगुण कहे निरगुण दरस अमोघ, निरगुण कहे सरगुण दरसी दरस दे दे तृप्त बुझाया। सरगुण कहे निरगुण वसे चौदां लोक, निरगुण कहे सरगुण कोटन कोटि लोक

चरनां हेठ दबाया। सरगुण कहे निरगुण सुणाए सलोक, निरगुण कहे कोटी कोट सलोक सरगुण रहे सालाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाया। सरगुण कहे निरगुण सतिगुर, निरगुण कहे सरगुण गुर गुर रूप वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण लेखा जाणे धुर, निरगुण कहे सरगुण धुर मस्तक लेख समझाइंदा। सरगुण कहे निरगुण चड़े साचे घोड़, निरगुण कहे सरगुण तेरा प्रेम घोड़ा इक्क वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जाए बौहड़, निरगुण कहे सरगुण तेरी जुग जुग सेव कमाइंदा। सरगुण कहे निरगुण आदि जुगादि रिहा दौड़, निरगुण कहे सरगुण सदा सदा आपणी गोद बहाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बुझाए औड़, निरगुण कहे सरगुण अमृत मेघ बरसाइंदा। सरगुण कहे निरगुण दो जहानां लाए पौड़, निरगुण कहे सरगुण फड़ बांहों उपर उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण इके घर, घर घर विच वेख वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण अमीर, निरगुण कहे सरगुण उमराउ उपजाईआ। सरगुण कहे निरगुण पीरे पीर, निरगुण कहे सरगुण पीरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण मारे ज़ंजीर, निरगुण कहे सरगुण जगत ज़ंजीर तेरी वस्त वखाईआ। निरगुण सरगुण आदि अन्त जुगां जुगन्त खेल अख़ीर, आखर आपणी खेल वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सच निशान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दो जहान रिहा झुलाईआ।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी धंगाली लक्ष्मण सिँघ दे गृह जम्मू ★

सरगुण कहे निरगुण कार, निरगुण तेरा भेव कोए ना पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा नूर उज्यार, नूर नज़र किसे ना आइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा सचखण्ड दुआर, अंदर वड़ दरस कोए पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा वड भण्डार, वड भण्डारी हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। सरगुण कहे तेरा भेव न्यारा, अभेद तेरी वड्याईआ । सरगुण कहे निरगुण तूं अगम्म ठठयारा, घड़न भन्नणहार अख्वाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा सच विहारा, तूं साची सेव कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव दएं अधारा, आपणा बंस सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण तूं सति वरतारा, रजो तमो सतो आप वरताईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तत्तव तत्त नाच कराईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा पसारा, लख चुरासी बणत बणाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा जैकारा, चारे बाणी दए दुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरी सितारा, चारे खाणी तन्द रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण

तेरा वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपे पाईआ। सरगुण कहे निरगुण तेरा नूर, नूरो नूर समाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सर्बकला भरपूर, बेअन्त नाउँ धराइंदा। सरगुण कहे निरगुण आसा मनसा पूर, निराशा रूप ना कोए जणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तेरा आदि जुगादि सति सरूप, सच खुमारी इक्क रखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तूं आदि जुगादि हज़ूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण मीत, मित्र प्यारे सच्चे माहीआ। सरगुण कहे निरगुण अतीत, त्रैगुण अतीता आसण लाईआ। सरगुण कहे निरगुण अनडीठ, अनडिठड़ा धाम सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण सुणाए गीत, अक्खर अक्खर कर पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। सरगुण कहे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। सरगुण कहे निरगुण सच्च, घर साचे सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण आपणे अंदर गया रच, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जोती जोत रिहा मच्च, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। सरगुण कहे निरगुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। सरगुण कहे निरगुण निरँकार, निराकार समाईआ। सरगुण कहे निरगुण दातार, दाता दानी वड वड्याईआ। सरगुण कहे निरगुण भण्डार, बण भण्डारी आप वरताईआ। सरगुण कहे निरगुण पसार, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। सरगुण कहे निरगुण जीव जंत आधार, घट घट रिहा समाईआ। सरगुण कहे निरगुण नाद शब्द धुन्कार, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण इच्छया वेद चार, शास्त्र सिमरत आप सालाहीआ। सरगुण कहे निरगुण प्राण प्राणी दए आधार, अठ्ठ दस मेल मिलाईआ। सरगुण कहे निरगुण शब्द नाद ज्ञान, ज्ञाता गीता इक्क पढ़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण ईमान, अंज़ील कुरान रिहा सुणाईआ। सरगुण कहे नानक नाम निशान, नाम सति सति प्रगटाईआ। सरगुण कहे निरगुण निशान, गोबिन्द सूरा रिहा झुलाईआ। सरगुण कहे लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेड़ा आप वसाईआ। सरगुण कहे निरगुण अधार, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। सरगुण कहे निरगुण अवतार, जुग जुग वेस वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण सिक्दार, गुर गुर रूप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण प्यार, निरगुण सरगुण संग निभाईआ। सरगुण कहे निरगुण विहार, बण विवहारी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, जुग जुग खेल कराईआ। सरगुण कहे निरगुण जोग, हरि साचा सच कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण संजोग, सति सतिवादी आप कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण भोग, साचा भोगी भोग भुगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण होद, आदि जुगादि ना कोए मिटाइंदा। सरगुण कहे

निरगुण ओट, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेड आप कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण आस, आदि अन्त रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण बुझाए प्यास, तृष्ना रोग मिटाईआ। सरगुण कहे निरगुण वखाए रास, मंडल मण्डप दए वड्याईआ। सरगुण कहे निरगुण करे प्रकाश, दो जहान जहान रुशनाईआ। सरगुण कहे निरगुण करे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। सरगुण कहे निरगुण वसे पास, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेल तमाश, दीन दुनी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपणे विच छुपाईआ। सरगुण कहे निरगुण जगत, जागरत जोत जगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण भगत, भगवन आपणी बूझ बुझाइंदा। सरगुण कहे निरगुण सन्त, सति सति अंदर धार वखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण कन्त, नर नरायण साची सेजा सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण बणाए बणत, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सरगुण कहे निरगुण रहे जुग चार, आदि जुगादि दया कमाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेले खेल विच संसार, रूप अनूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण हर घट पावे सार, घट घट आसण लाईआ। सरगुण कहे निरगुण गुर अवतार, पीर पैग़म्बर रूप वटाईआ। सरगुण कहे निरगुण अकार, साकार नज़री आईआ। सरगुण कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहाईआ। सरगुण कहे निरगुण धारा, धरनी धरत धवल चलाइंदा। सरगुण कहे निरगुण पसारा, निर्धन सरधन रंग रंगाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जैकारा, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। सरगुण कहे निरगुण घर बाहरा, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। सरगुण कहे निरगुण तीर्थ तट किनारा, सच सरोवर इक्क वड्याइंदा। सरगुण कहे निरगुण शब्द जैकारा, बोध ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। सरगुण कहे निरगुण लिखारा, जुग जुग आपणा लेख लिखाइंदा। सरगुण कहे निरगुण करे आपणी कारा, करता पुरख नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप कमाइंदा। सरगुण कहे निरगुण उडीक, नित नित आस रखाईआ। सरगुण कहे निरगुण अतीत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सरगुण कहे निरगुण ठांडा सीत, सीतल धारा इक्क वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण मन्दिर मसीत, मठ्ठ शिवदुआला नाउँ धराईआ। सरगुण कहे निरगुण अजीत, जितया कदे ना जाईआ। सरगुण कहे निरगुण नज़ीक, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। सरगुण कहे निरगुण कोटन कोटि काल वेखे ठीक, जुग जुग ठीकरा भन्न वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण बेप्रीत, साची प्रीत ना किसे समझाईआ। सरगुण कहे निरगुण जुग जुग गुर अवतारा कोलों चलौंदा रिहा आपणी रीत, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सरगुण कहे निरगुण खेल कराया धन्दे लाया जीव जंत मन्दिर मसीत, मुल्ला शेख़ पंडत करे पढ़ाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण निरगुण आपणा आप वखाईआ। सरगुण कहे निरगुण अभुल्ल, भुल्ल कदे ना जाईआ। सरगुण कहे निरगुण अमुल, मुल ना कोए चुकाईआ। सरगुण कहे निरगुण अतुल, तोल्यां तोल ना कोए तुलाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना जाए रुल, एका रंग समाईआ। सरगुण कहे निरगुण ना जाए हुल, आदि जुगादि रिहा लहराईआ। सरगुण कहे निरगुण जाए आपणी कुल, दूसर भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सरगुण बैठा सीस झुकाईआ। सरगुण मंगे दान, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। किरपा कर श्री भगवान, हउँ एका मंग मंगाया। तूं खेले खेल दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेस वटाया। तूं लख चुरासी कर प्रधान, घर घर जोत जगाया। तूं गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे दे दान, आपणा नाम पढ़ाया। तूं काया मन्दिर कर परवान, आत्म सेजा आसण लाया। तूं शब्द अनादी सच फ़रमाण, धुरदरगाही आप सुणाया। हउँ बाला बाल नादान, तेरा अन्त कोए ना आया। तूं भाण्डे घड़ें चतुर सुघड़ सुजान, विच आपणी वस्त टिकाया। अन्त मेटें जगत निशान, थिर कोए रहिण ना पाया। आपणा दस्स भेव श्री भगवान, एह की खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाया। घड़न भन्नण दी मेरी कार, मैं आपणा खेल खिलाईआ। कदे थथवा फड़ बणां घुम्यार, कदे ठीकर फोड़ वखाईआ। कदे विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण माया बन्धन पाईआ। कदे लख चुरासी कर उज्यार, घट घट जोत जगाईआ। कदे गुर पीर धर अवतार, धरनी धरत धवल दयां वड्याईआ। कदे भगतन देवां इक्क अधार, साची भगती नाम पढ़ाईआ। कदे जल थल महीअल डूँघी कंदर वेखां गार, कदे उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाईआ। कदे वंडां वंड जुग जुग चार, चार चार बन्धन पाईआ । कदे सब नूं करां खुआर, आपणा बल रखाईआ। निरगुण नूर नूर उज्यार, दो जहान मेरी रुशनाईआ। सरगुण रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। पिच्छे आउँदा रिहा सरगुण रूप जामा धार, जगत नाता कर कुड़माईआ। कोई कहे राम अवतार, जनक सपुत्तरी गया प्रनाईआ । कोई कहे कृष्न मुरार, राधा आपणी गोद बहाईआ। कोई कहे मुहम्मद यार, यारी यारां नाल निभाईआ। कोई कहे नानक निरगुण धार, पुत्तर धीआं गया तजाईआ। कोए कहे गोबिन्द सरदार, बाले नीहां हेठ दबाईआ। कोई कहे लेखा वेद चार, कोई कहे पुराण पढ़ाईआ। कोई कहे गीता ज्ञान, बिन गीता हथ्थ किसे ना आईआ। कोई कहे अञ्जील कुरान, आला मरतबा रहे समझाईआ। कोई कहे खाणी बाणी प्रधान, नानक अर्जन करी पढ़ाईआ। श्री भगवान कहे मैं सब दा मेटां निशान, अन्तिम आपणे विच समाईआ। कलयुग निरगुण हो के आया विच जहान, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। ना कोई नारी दिसे सन्तान, पिता

पूत ना कोए वड्याईआ। इक्को नाता विच जहान, जन भगतां नाल ल्या जुड़ाईआ। अंदर वड़ के वसां सच मकान, सच दुआरे आसण लाईआ। दिस ना आए किसे श्री भगवान, जगत लोकाई रही कुरलाईआ। हरिजन हरि जू मिल्या आण, आपणी दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक निरगुण निरगुण रिहा उठाईआ।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी ज्ञान चन्द दे गृह खैरोवाली जम्मू ★

निरगुण कहे श्री भगवान, सरगुण देवां माण वड्याईआ। तत्तव तत्त कर प्रधान, हड्ड मास नाड़ी रत्त जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्म तत्त इक्क वखाण, नूर नूर नूर दरसाईआ। घट घट कर पछाण, आपणी बूझ बुझाईआ। लोकमात सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। जुग चौकड़ी वंड वंडान, गेड़ा गेड़े विच भुवाईआ। गुर अवतार खेल महान, पीर पैग़म्बर नाल रलाईआ। सति सतिवादी सारे पाण, साची सिख्या इक्क समझाईआ। बोध अगाधी शब्द महिमान, जुग जुग फेरा पाईआ। करे खेल ख़लक महान, हरि ख़ालक बेपरवाहीआ। रहिमत करे रहीम रहिमान रहिम आपणा आप कमाईआ। सरगुण देवे साचा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम निधाना तीर कमान, साचा चिल्ला इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण सार आपे पाईआ। सरगुण तेरी पावे सार, निरगुण दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेख विचार, सगला संग निभाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण करे प्यार, निरगुण नाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण दाता देवणहार, निरगुण झोली आप भराइंदा। निरगुण अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार निरगुण सच प्याला आप प्याइंदा। निरगुण एकँकार इक्क इकांता सचखण्ड वसे सच दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणा आप वड्याइंदा। सरगुण तेरा साचा रंग, निरगुण निरगुण आप चढ़ाईआ। सरगुण तेरी जगत सेज पलँघ, निरगुण निरगुण आप हंढाईआ। सरगुण तेरा नाम मृदंग, निरगुण तार सितार बिन आप वजाईआ। सरगुण तेरे वसे संग, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाईआ। सरगुण तेरा मुक्के पन्ध, निरगुण आप मुकाइंदा। सरगुण तेरा साहिब सदा बख़्शंद, जुग जुग दया कमाइंदा। सरगुण टुट्टी देवे गंढ, निरगुण आपणी गंढ पुवाइंदा। सरगुण तेरा गीत सुहागी छन्द, निरगुण आपणा नाउँ समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाइंदा। सरगुण तेरा जगत महल्ला, निरगुण आपणी बूझ बुझाईआ। निराकार फड़ाए एका पल्ला, एका हथ्थ वखाईआ। जोती शब्दी अनुभव धार रला, रूप रंग रेख ना कोए

वड्याईआ। सच संदेस एको घल्ला, एका करे पढ़ाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सरगुण तेरे अंदर डेरा लाईआ। दीपक जोती आपे बला, तेल बाती ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणा रंग चढ़ाईआ। सरगुण रंग दए चढ़ा, निरगुण आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग जुग पाँधी पन्ध दए मुका, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। सूरा सरबंग वेस वटा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। सरगुण तेरा निरगुण मृदंग दए वजा, आपणी सेवा आप कमाईआ। दूई द्वैती हउमे हंगता झूठी कंध दए ढाह, एका ठोकर नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वड्याईआ। सरगुण देवे सच सहारा, निरगुण दया कमाइंदा। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़ा, आपणा भेव चुकाइंदा। वा ना लग्गी तत्ती विच संसारा, अग्नी तत्त बुझाइंदा। एका देवे नाम अधारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। एका मन्दिर इक्क घर बारा, एका बंक सुहाइंदा। एका गुर इक्क अवतारा, एका शब्दी शब्द पढ़ाइंदा। एका राग नाद जैकारा, एका धुनी धुन समाइंदा। एका वसे सब तो बाहरा, निरगुण खेल कराइंदा। सरगुण तेरा मीत मुरारा, दर तेरे फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा खेल वखाइंदा। निरगुण सरगुण उपर पए तुट्ठ, मेहरवान दया कमाईआ। एका अमृत देवे घुट्ट, अमिउँ रस आप चखाईआ। बाल नादाना पए उठ, आपणा बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा सदा सहाईआ। तेरा सहाई सदा सद सज्जण, हरि सच्चा आप अख्वाइंदा। जुग जुग कराए एका मजन, चरन धुड़ी टिक्का लाइंदा। सज्जण सुहेला होया परदे कज्जण, सच दुशाला उपर पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा संग निभाइंदा। सरगुण तेरा सगला संग, सो पुरख निरँजण आप निभाईआ। गृह गृह घर घर चाढ़े चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, निजानंद दरसाईआ। गीत सुहागी साचा छन्द, सोहँ ढोला गाईआ। जन्म जन्म जग मुक्के पन्ध, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे जेरज अंड, ब्रह्मण्ड ना वेख वखाईआ। होए वसेरा सचखण्ड, अन्त जोती मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे लेखे लाईआ। सरगुण निरगुण रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जुगां जुगन्तर सुण फ़रयाद, जन भगतां होए सहाईआ। एका नाम देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लख चुरासी विच्चों लए काढ, आप आपणा मेल वखाईआ। निरगुण सरगुण करे लाड, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, निरगुण सरगुण धार। हरिजन फड़ाए पलड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। वसणहारा निहचल धाम अचल्लड़ा, लोकमात होए उज्यार।

सच संदेसा एका घलड़ा, शब्दी शब्द शब्द जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए दीदार। निरगुण सरगुण देवे दरस, आपणी बूझ बुझाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हिरस अवर ना कोए वधाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत्त बुझाईआ। जन भगतां उपर कर कर तरस, आपणी बूझ बुझाईआ। लख चुरासी विच्चों परख, नाम कसवटी एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिंता दुःख ना कोए वखाईआ। सरगुण तेरा निरगुण सहारा, सदा सदा अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम वेख किनारा, जोती जामा भेख वटाईआ। जुग जुग दे विछड़े मेले मेलणहारा, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण बन्धन एका पाईआ। निरगुण सरगुण साचा बन्धन, पुरख बिधाता आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण लगाए चन्दन, तिलक लिलाटी जोत जगाइंदा। निरगुण सरगुण तोड़े फंदन, फांदी अवर ना कोए वखाइंदा। निरगुण सरगुण खेले खेल मुकंद मनोहर मुकंदन, कँवल नैण नैण मटकाइंदा। निरगुण सरगुण त्रिलोकी नंदन, नंद जशोधा माण दुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। निरगुण सरगुण सच वैराग, हरि वैरागी आप उपाईआ। निरगुण सरगुण खोल्हे जाग, नेत्र नैण इक्क दरसाईआ। निरगुण सरगुण अंदर लाए भाग, आपणे आसण सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण जगाए चिराग़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण सरगुण धोवे दाग़, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण सच्चा काज, घर घर विच आप वखाईआ। निरगुण सरगुण रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण सरगुण मारे अवाज़, शब्द अगम्मी तार हिलाईआ। निरगुण सरगुण ग़रीब निवाज़, बण निमाणा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। निरगुण सरगुण वेस अवल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण इक्क इकल्ला, लख चुरासी खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण वसणहारा सच महल्ला, सोभावन्त दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा आप कराइंदा। निरगुण सरगुण करे किरत, वड किरती किरत कमाईआ। निरगुण सरगुण दो जहानी फिरत, फिर फिर वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण मेटे हरस, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। निरगुण नूर श्री भगवान, आदि जुगादि समाया। सरगुण वेखे विच जहान, लोकमात फेरा पाया। साचे भगत करे परवान, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। सन्तन देवे एको माण, दर दुआर सुहाया। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, आपणा रंग रंगाया। गुरसिखां देवे इक्क ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। एका इष्ट श्री भगवान, एका मन्दिर डेरा लाया। सरगुण

सदा करे प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाया। निरगुण जणाए आपणी कलाम, कलमा कायनात सुणाया। सरगुण निउँ निउँ करे सलाम, सजदा सीस वखाया। निरगुण सद सद दए पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाया। सरगुण सुणे धुर फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा खेल रचाया। निरगुण निराकार श्री भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सरगुण गुरमुख मेला नारी कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, जूठ झूठ दए मिटाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरि सज्जण आप कराईआ। मानस जन्म ना होए भंगत, लख चुरासी फंद कटाईआ। एथे ओथे सच वखाए साची जन्नत, चरन सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन सच्चा सरगुण धार, निरगुण मेल मिलाया। बण विचोला एकँकार, आपणा बन्धन पाया। नाता तोड़ सर्ब संसार, साचा मार्ग इक्क वखाया। सुरती शब्दी करे प्यार, शब्द सुरत मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण निरगुण रंग चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बांह आपे फड़, आपणे नाल मिलाया।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी नवां चक्क दौलत सिँघ दे गृह ★

निरगुण घर निरगुण वासा, सरगुण बन्धन पाईआ। निरगुण अंदर निरगुण धरवासा, सरगुण आस तकाईआ। निरगुण अंदर निरगुण तमाशा, सरगुण खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज लीला आप रचाईआ। निरगुण सतिगुर गुर गुर धार, सरगुण रंग वटाईआ। नूरो नूर अगम्म अपार, अनभउ प्रकाश कराईआ। बोध अगाध शब्द धुन्कार, अनादी नाद सुणाईआ। नाता जोड़ गुर अवतार, लोकमात बन्धन पाईआ। नेत्र लोचन खोल्ह किवाड़, प्रतख रूप दरसाईआ। घर मन्दिर कर त्यार, श्री भगवन्त सोभा पाईआ। आत्म अन्तर दे दीदार, तृष्ना भुख गवाईआ। सरगुण निरगुण कर प्यार, घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा सदा सदा होए सहाईआ। निरगुण सरगुण सच वसेरा, घर घर विच मेल मिलाइंदा। पन्ध मुकाए नेरन नेरा, दूर दुराडा मोह चुकाइंदा। इक्क वसाए साचा खेड़ा, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। खुल्ला रखे हरि जू वेहड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा संग मिलाइंदा। निरगुण सतिगुर मेहरवान, सरगुण दए वड्याईआ। गुर गुर रूप हो प्रधान, तत्तव तत्त समाईआ। सति सतिवादी खोल्ह दुकान, नाम हट्ट वणजारा एका एक वजाईआ। लोकमात हो प्रधान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ।

जन भगतां देवे दान, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या कर पढ़ाईआ। नाता तोड़ पंज शैतान, पंचम नाद शब्द धुंन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण सरगुण सदा दयाल, सरगुण दया कमाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ ज़ंजाल, आपणा बन्धन पाइंदा। पंज तत्त अंदर सच्ची धर्मसाल, घर विच घर आप सुहाइंदा। दीपक जोती एका बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। एका राग सुणाए कान, शब्दी शब्दी धुंन उपजाइंदा। आत्म परमात्म कर पहचान, पुरख बिधाता मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण खेड़ा आप वसाइंदा। निरगुण दाता गहर गम्भीर, सरगुण दए वड्याईआ। पंज तत्त काया शांत सरीर, सांतक सति सति वरताईआ। सति सन्तोखी देवे धीर, एका तत्त जणाईआ। बजर कपाटी पड़दा चीर, रूप अनूप दरसाईआ। अमृत बख्शे ठंडा सीर, निझर झिरना आप झिराईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, महल अटल करे रुशनाईआ। निरगुण सतिगुर सच्चा पीर, मुरीद मुर्शद लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सरगुण बेड़ा बन्नू चलाईआ। निरगुण सतिगुर पुरख समरथ, आदि जुगादि समाया। सरगुण चलाए तेरा रथ, जुग जुग वेस वटाया। नाम जणाए महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राया। जिस जन देवे साची वथ, वस्त अमोलक झोली पाया। जो सरन सरनाई जाए ढट्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाया। लहिणा देणा चुक्के सीआ साढे त्रै त्रै हथ्थ, मानस जन्म लेखे लाया। एथे ओथे दो जहानां हरिजन तेरा गाए जस, जस वेद पुराण भेव ना आया। जन भगतां पूरी करे आस, नित नवित वेस वटाया। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फेरा पाया। कलयुग अन्तिम निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती जामा वेस वटाया। हरिजन वसे सदा पास, सगला संग निभाया। गुरमुखां बण बण दासी दास, सेवक आपणी सेव कमाया। काया मन्दिर अंदर पावे रास, गोपी काहन आप नचाया। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जुग विछड़े लए मिलाया। लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वासी डेरा लाया। अन्तिम करे बन्द खुलास, राए धर्म ना दए सजाया। निरगुण मेला शाहो शाबाश, सरगुण आपणे अंग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गुर चेला रूप वटाया।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी पूरन चन्द दे गृह मलक कैंप जम्मू ★

सरगुण तेरा घाड़न घड़, हरि निरगुण खेल खिलाया। निरगुण अंदर बैठा वड़, आपणा मुख छुपाया। साचे पौड़े गया चढ़, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। निष्अक्खर बाणी रिहा पढ़, बोध अगाध समझाया। दरस दिखाए अग्गे खड़, नेत्र

ज्ञान इक्क खुल्हाया। अमृत नुहाए साचे सर, सरोवर इक्को इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा खेल कराया। सरगुण तेरा जोड़ जुड़ा, हरि अचरज बणत बणाईआ। निरगुण अंदर डेरा ला, आपणा आसण रिहा सुहाईआ। निर्मल दीप जोत जगा, महल अटल करे रुशनाईआ। एका नाद दए वजा, धुन अनादी नाद सुणाईआ। साचा सोहला आपे गा, एका करे पढ़ाईआ। आत्म सेजा दए सुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा रंग वखाईआ। सरगुण तेरा लेखा पंज तत्त, हरि तत्तव तत्त रखाइंदा। तेरे अंदर खेल समरथ, हरि आपणी खेल कराइंदा। नाम अनमुल्ली रखे वथ, साचे हट्ट विकाइंदा। घर सरोवर वखाए तट, तट किनारा आप बणाइंदा। घर दीपक जोत लट लट, नूर नूराना डगमगाइंदा। घर निरगुण होए प्रगट, सरगुण माण वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा रंग महल्ल इक्क सुहाइंदा। सरगुण तेरा सच मुनारा, हरि तत्तव तत्त उपाईआ। अंदर वड़ हरि निरँकारा, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। खेल खेल अगम्म अपारा, खेलणहारा दिस ना आईआ। आदि जुगादी साची कारा, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार दे सहारा, एका ओट जणाईआ। एका नाम सति वरतारा, सति सतिवादी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण भण्डारा इक्क वखाईआ। सरगुण तेरे अंदर भण्डार, निरगुण आपणा आप टिकाइंदा। जुग जुग बणे मात वरतार, गुर गुर रूप वटाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा भण्डार इक्क समझाइंदा। सरगुण तेरे अंदर वस्त अनमोल, निरगुण आपणी आप रखाईआ। आपणा पड़दा लैणा खोल्ह, घर वेखणा चाँईं चाँईंआ। लोकमात ना रहिणा अनभोल, भुल्ल रुल्ल ना जन्म गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल काया चोल, चोली काया इक्क समझाईआ। सरगुण तेरे अंदर वस्त अतुट, अतोट हरि रखाइंदा। तूं आपणा पड़दा वेख चुक, सतिगुर साचा सच समझाइंदा। दरस दिखाए जो बैठा लुक, नेत्र नैणां नाल मिलाइंदा। पंच विकारा जड़्ह देवे पुट्ट, सच सुच्च इक्क जणाइंदा। नाम प्याला देवे घुट्ट, मधुर जाम हथ्थ रखाइंदा। आवण जावण जाए छुट, सरगुण निरगुण विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा बन्धन आप तुड़ाइंदा। सरगुण तेरा सच दुआरा, हरि साचा सोभा पाइंदा। जुग जुग खेल करे निरँकार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वेखणहारा, रूप अनूप वखाइंदा। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, जोती जामा वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी लै भण्डारा, निरगुण लोकमात फेरा पाइंदा। साचा हट्ट खोल्ह वणजारा, साची वस्त विच टिकाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यारा, प्रेम सिख्या इक्क समझाइंदा।

सन्तां देवे इक्क हुलारा, साची जोती आप मिलाइंदा। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। गुरसिखां देवे दरस दीदारा, निज आत्म मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, हरि ख़ालक ख़लक वखाइंदा। बेऐब वेखे परवरदिगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा पन्ध मुकाइंदा। सरगुण तेरा मुक्के पन्ध, निरगुण आप मुकाईआ। एका गीत गाउणा छन्द, सोहँ रिहा समझाईआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। दीन दयाल ठाकर सदा बख़्शंद, स्वामी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सरगुण तेरी नंगी ना होवे कंड, निरगुण आपणा पड़दा पाईआ। तेरा विकारा करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। तेरा नाता पार कराए ब्रह्मण्ड, इंड पिण्ड ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वड्याईआ। सरगुण रूप गुर गुर धार, पंचम पंच समाया। सरगुण रूप भगत आधार, भगवन भगती एका लाया। सरगुण रूप सन्त संसार, निरगुण आपणा रंग चढ़ाया। सरगुण गुरमुख खेल अपार, काया चोली भेव छुपाया। सरगुण गुरसिख कर त्यार, निरगुण सरगुण वेख वखाया। कलयुग अन्तिम खेल अपार, निराकार आप कराया। गुरमुख साचे कर प्यार, त्रैगुण अतीता मेल मिलाया। ठांडा सीता इक्क दरबार, दर दरवाज़ा दए खुल्हाया। जन्म जन्म दे विछड़े मेले यार, तुट्टी गंढु पुवाया। लख चुरासी पार किनार, राए धर्म ना दए सजाया। काल महांकाल रोवे नेत्र ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। जिस मिल्या आप निरँकार, तिस माया पोह ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप मिलाया। हरिजन हरि जू मिल्या आण, आपणी दया कमाईआ। शब्द संदेसा धुर फ़रमाण, अगम्मी नाद सुणाईआ। पंज शब्द होए हैरान, प्रभ अचरज खेल वखाईआ। साडी करे ना कोई पहचान, पड़दा सके ना कोई उठाईआ। असीं बन्द होए पंज तत्त काया मकान, काया मकबरा इक्क बणाईआ। हरिजू सच संदेसा लै के आया सच निशान, सच निशाना दए वखाईआ। साडे उपर सेज महान, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। आत्म परमात्म वेखे मार ध्यान, जोती जोत कर रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, साचा मार्ग रिहा चलाया। एका वार देवे ब्रह्म ज्ञान, जिस जन आपणा दरस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण सज्जण लए फड़, निरगुण दाता अंदर वड़, अंदर बाहर भीतर आपणा रंग वखाईआ। अंदर बाहर इक्को रंग, निरगुण सरगुण आप रंगाइंदा। गुरमुख मेला सूरे सरबंग, गुर गुर गोद उठाइंदा। नाद अनादी इक्क मृदंग, ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर सतिगुर चरन, दूसर अवर ना

कोए वड्याईआ। नेत्र खुल्ले हरन फरन, द्वैती पड़दा दए उठाईआ। नाता तुट्टे मरन डरन, जीवण मुक्त कराईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता इक्क वखाए साची सरन, सरनगति समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आपणा संग निभाईआ। सगला संग हरिजू साथा, विछड़ कदे ना जाइंदा। जन भगतां देवे इक्को दाता, नाम अमोलक झोली पाइंदा। कलयुग मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा सतिगुर चन्द चढ़ाइंदा। चरन कँवल इक्को नाता, पुरख बिधाता आप बंधाइंदा। काया मन्दिर अंदर बह बह गाए गाथा, आपणी सिफ्त सुणाइंदा। सर्बकल आपे समराथा, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। ना कोई पूजा न कोई पाठा, मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस जन दरस दिखाइंदा। अग्गे नेड़े रखे वाटा, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। खेले खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग रचाइंदा। कलयुग अन्त वेखण आया तमाशा, लख चुरासी नाच नचाइंदा। हरिजन तेरे दरस प्यासा, दर दर घर घर फेरी पाइंदा। निज आत्म परमात्म कर कर वासा, झूठी वासना बाहर कढाइंदा। लेखे लाए पवण स्वासा, सोहँ अजपा जाप जपाइंदा। चरन कँवल सच भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल कर, जन भगतां देवे नाम दिलासा।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी मलक कैंप भाग सिंघ दे गृह जम्मू ★

सरगुण तेरा साचा राग, निरगुण नाम वड्याईआ। सरगुण तेरा सच सुहाग, हरि कन्त कन्तूहल अख्वाईआ। सरगुण तेरा सच समाज, हरिसंगत मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखाईआ। साचा मार्ग विच संसार, निरगुण सरगुण आप चलाइंदा। गुरमुख सज्जण कर त्यार, आपणी बूझ बुझाइंदा। काया हट्ट खोल्ह किवाड़, वस्त अनमुल्ल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाइंदा। सरगुण तेरा साचा रूप, एका एक जणाईआ। पुरख अबिनाशी शाहो भूप, देवे नाम वड्याईआ। तेरा नगारा जगत कूट, दहि दिशा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा बन्धन पाईआ। सरगुण तेरा सच्चा रूप, गुरमुख गुर गुर आप सलाहइंदा। जन्म जन्म मिटे दुःख, दर्दी दर्द वंडाइंदा। आप उठाए आपणी कुक्ख, साची गोद बहाइंदा। झूठी मेटे तृष्ना भुख, सांतक सति कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि मेल मिलाइंदा। सरगुण तेरा रूप गुरसिख, गुर गुर बूझ बुझाईआ। सच दुआरयों मिले भिख, सतिगुर पूरा आप

वरताईआ। पूरब जन्म दी मेटे रेख, अग्गे लेखा दए समझाईआ। नेत्र लोचण साचे वेख, आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। दीन दयाल सर्ब गुणवन्त, जन भगतां दया कमाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाइंदा। लख चुरासी माया बेअन्त, जीव जंत भुलाइंदा। हरिजन मेले नारी कन्त, हरि मंगल गीत सुणाइंदा। मानस जन्म बणाए बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनुख आपणे रंग रंगाइंदा। मानुख देह मानस ज़ात, मानव माण रखाइंदा। अन्तर आत्म मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द चमकाइंदा। सति सतिवादी साची गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। लहिणा चुक्के मस्तक माथ, पूरब झोली पाइंदा। दरस दिखाए बहु बिध भांत, स्वच्छ सरूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तरया विच संसार, डूँग्घी भँवरी पार कराईआ। इक्क वखाए दर दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। साची खुशीआं मंगलाचार, एका गीत अलाईआ। साचे मन्दिर नाद शब्द धुन्कार, ताल तलवाड़ा इक्क सुणाईआ। साचे गृह शब्द सुरत करे प्यार, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे चाँईं चाँईंआ। हरिजन वेखे हरि निरँकार, आपणा नैण खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, साची सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, साची सेव कमाइंदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। हरिजन वड्डा वड्याई वड, हरि सतिगुर आप वड्याइंदा। जीव जंत विच्चों कढ्ढ, एका रंग रंगाइंदा। सच दुआरे आपे सद्द, साची सिख्या गुर समझाइंदा। लख चुरासी पार हद्द, आवण जावण फंद कटाइंदा। इक्क प्याए नाम मदि, सति सरूर चढ़ाइंदा। सच नगारा जाए वज्ज, अनादी नाद अल्हाइंदा। घर विच वखाए काअबा हज्ज, साचा हुजरा आप सुहाइंदा। साचे मन्दिर बैठा सज, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। सरगुण मेला भज्ज भज्ज, जुग जुग पन्ध मुकाइंदा। जन भगतां प्रेम अंदर जाए बज्झ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन बन्न्हे डोरी तन्द, प्रेम प्रेम वखाईआ। साहिब सुल्तान गाए छन्द, गुरमुख करे वड्याईआ। निज घर देवे इक्क अनन्द, आत्म अनन्द दरसाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख चढ़ाए साचे चन्द, चन्द चांदनी इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म खेल महान, सोहँ शब्द गुण निधान, गुण गुण आपणा रूप जणाईआ।

५६०
११

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी धर्म चन्द दे गृह बाले वाला जम्मू ★

सरगुण कहे निरगुण मेला, मेलणहार आप निरँकार। निरगुण कहे सरगुण चेला, चेला गुर रूप अवतार। सरगुण कहे निरगुण सज्जण सुहेला, आदि जुगादी मीत मुरार। निरगुण कहे सरगुण सोहे वेला, थित वार ना कोए विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल आपार। निरगुण कहे सरगुण बल, बलधारी आप जणाइंदा। सरगुण कहे निरगुण जोत जावां रल, आपा आप गवाइंदा। निरगुण कहे मैं आदि जुगादि अछल अछल, मेरा भेव कोए ना पाइंदा। सरगुण कहे मैं तेरा दुआरा लैणा मल्ल, तुध बिन अवर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल वखाइंदा। निरगुण कहे सरगुण साथ, सगला संग निभाईआ। सरगुण कहे निरगुण पूजा पाठ, अक्खर वक्खर पढ़ाईआ। निरगुण कहे मैं वसां हर घाट, घट घट डेरा लाईआ। सरगुण कहे मैनूं तेरी आस, इक्को ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा भेव चुकाईआ। सरगुण कहे निरगुण मीत, मिल मिल खुशी मनाईआ। निरगुण कहे सरगुण अनडीठ, दर तेरे सोभा पाईआ। आदि जुगादि अवल्लड़ी रीत, हरि साचा सच चलाईआ। सरगुण सुणाए सुहागी गीत, निरगुण आप अलाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्ह्राईआ। निरगुण आपणा भेव खोल्ह, सरगुण बूझ बुझाइंदा। देवे दरस दरस अनमोल, हरिजन आप जगाइंदा। काया मन्दिर अंदर वसे कोल, विछड़ कदे ना जाइंदा। दिवस रैण प्रभात संधया करे चोल्ह, आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणी मेहर आप कराइंदा। करे मेहर श्री भगवान, भगतन माण रखाईआ। साचे सन्तां देवे नाम निधान, निज आत्म करे रसाईआ। गुरमुख सज्जण मेले आण, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। हरिजन मेला दो जहान, एथे ओथे होए सहाईआ। एका नाद शब्द धुन्कान, बण वैरागी आप सुणाईआ। गुरसिख सोहँ ढोला गाण, घर वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण मेला चाँई चाँईआ। सरगुण मेला चाओ घनेरा, घर घर खेल कराया। निरगुण वसणहारा दूर नेरा, नेरन नेरा आपणा पन्ध मुकाया। कलयुग अन्तिम बन्न्हे बेड़ा, सिर आपणे भार उठाया। हरिजन तेरा वसे खेड़ा, बंक दुआरा आप सुहाया। अन्तिम करे हक़ निबेड़ा, निरगुण दाता बेपरवाहया। जम की फाँसी कटे जेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा होए सहाया। तेरा सहाई सदा प्रभ, जुग जुग सेव कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लभ्भ लभ्भ, आपणा मेल मिलाइंदा। कलयुग अन्त हो प्रगट, साची खेल वखाइंदा।

५६१
११

भगत दुआरा खोल्ह हट्ट, एका वणज कराइंदा। गुरमुख लाहा लैण खट्ट, दूसर दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी नज़र आप उठाइंदा। मारे नज़र बेनज़ीर, निरगुण नैण नैण उठाईआ। शाह पातशाह वड पीरन पीर, पीत पितम्बर सीस सुहाईआ। हरिजन वेखे अन्त अख़ीर, आख़र आपणी दया कमाईआ। माया ममता कट ज़ंजीर, शरअ बन्धन दए तुड़ाईआ। अमृत बख्शे साचा सीर, एका रस चुआईआ। हउमे कढ्ढे झूठी पीड़, द्वैती दुःख रहिण ना पाईआ। सण देही बन्न्हे बीड़, अन्त कन्त सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप समझाईआ। हरिजन साचे इक्को मति, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आदि जुगादी ब्रह्म तत्त, घट घट आसण लाइंदा। पारब्रह्म बंधाए नात, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। नाम निधान सुणाए गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द इक्क चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीना नाथ दीनन दया कमाइंदा। दीन दयाल दया निध ठाकर, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। हरिजन रखे विच्चों कलयुग सागर, डूँघी भँवरी फोल फुलाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, देवे चरन सच्ची सरनाईआ। एका वणज नाम सौदागर, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजण आप मिलाईआ। साजण मिल्या हरि हरि धार, मिल मिल खुशी मनाईआ। गुर गुर शब्द करे प्यार, दर दर वज्जे वधाईआ। गृह गृह सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। पुरख परखोतम कर प्यार, पीआ प्रीतम लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। माण वड्याई आपणे हथ्थ, सतिगुर पूरा आप रखाइंदा। गुरमुख विरले मार्ग दस्स, आपणी बूझ बुझाइंदा। अमृत आत्म सच्चा रस, प्रेम प्याला इक्क प्याइंदा। हिरदे अंदर आपे वस, आपणा रंग चढ़ाइंदा। जोत नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गुआइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। जगत तृष्ना बुझे प्यास, सांतक सति सति वरताइंदा। घर मन्दिर वखाए साची रास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप सलाहइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां गीत घर घर आपे गाइंदा।

★ १६ माघ २०१८ बिक्रमी गुरदित सिँघ संसार सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ★

सति पुरख निरँजण सच सुल्तान, आदि जुगादि समाया। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, नूरो नूर रुशनाया। हरि पुरख निरँजण नौजवान, ना मरे ना जाया। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप धराया। आदि निरँजण खेल महान,

५६२
११

जोती जाता डगमगाया। अबिनाशी करता वसणहारा सच मकान, दर घर साचा आप सुहाया। श्री भगवान सति निशान, निरगुण निरवैर आप उठाया। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधान, सच प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाया। इक्क इकल्ला खेल महान, अकल कला कल वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि सच्चा सच कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। नूर नूराना दीपक नूर आपे बला, जोती जोत डगमगाइंदा। शाहो भूप राज राजाना, शहिनशाह नाउँ रखाइंदा। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाणा, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। खेले खेल श्री भगवन्त, बेअन्त वड वड्याईआ। निरगुण रूप नारी कन्त, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। आप बणाए आपणी बणत, घाड़न साची आप घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आपणा भेव चुकाए आप करतार, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। निरगुण नूर खेल अपार, अलख अगोचर आप कराइंदा। अगम्म अगम्मड़ा हो त्यार, निरगुण आपणा आप धराइंदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह किवाड़, शहिनशाह आपणा आसण लाइंदा। थिर घर पाए आपे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। अजूनी रहित हो त्यार, अनभउ प्रकाश कराईआ। साचे मन्दिर जोत उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। निरगुण रूप हरि निराकार, एका एक अख्वाइंदा। थिर घर साचा कर त्यार, चरनां हेठ दबाइंदा। शब्दी शब्द शब्द आधार, पूत सपूता विच सुहाइंदा। पूत सपूता कर प्यार, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। साची वस्त वस्त वणजार, नाउँ अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। सचखण्ड निवासी भेव खोल्ह, एका करे जणाईआ। शब्द अगम्मी आपे बोल, अनादी नाद सुणाईआ। साचे कंडे तोले तोल, तोलणहारा इक्क हो जाईआ। सच दुआरा देवे खोल्ह, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी दया कमाईआ। निरगुण आपणी दया कमा, एका राह जणाइंदा। थिर घर दुआरा आप सुहा, घर साचे मेल मिलाइंदा। शब्द दुलारा आप उठा, साचा मोह वखाइंदा। हुक्मी हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव झोली पा, एका दर बहाइंदा। एका तत्त दए प्रगटा, त्रैगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। निरगुण खेल करे भगवान, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। तख्त निवासी वड मेहरवान, भूपत भूप रूप वटाईआ। शब्दी

सुत सुत बलवान, बलधारी इक्क प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, साची गोदी गोद सुहाईआ। तिन्ने चेले कर परवान, चेला गुर रूप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। निरगुण वंडे साची वंड, भेव कोए ना पाइंदा। वसणहारा सचखण्ड, थिर घर वेख वखाइंदा। शब्दी शब्द साचा चन्द, निरगुण निरगुण आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव खोल्हे करतार, सचखण्ड बैठा साचा माहीआ। त्रैगुण अतीता कर त्यार, त्रै त्रै मेल मिलाईआ। एका रंग चाढ़े आपार, उतर कदे ना जाईआ। एका मन्दिर सच मुनार, सति सतिवादी दए वखाईआ। विष्नूं अंदर अमृत धार, अंमिउँ रस आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्नूं अंदर अमृत रस, निझर आप झिराइंदा। पारब्रह्म प्रभ अंदर वस, ब्रह्म रूप प्रगटाइंदा। शंकर मेला हस्स हस्स, शब्द विचोला नाल रलाइंदा। त्रैगुण मेला नस्स नस्स, पंचम बन्धन पाइंदा। लख चुरासी मार्ग दस्स, साची घाड़त घड़न घड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। निरगुण कार करे अपार, आपणी धार चलाईआ। लख चुरासी कर त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। वंडे वंड अगम्म अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। सूरज चन्द कर उज्यार, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। धरत धवल वेख अखाड़, जल बिम्ब आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल पुरख अगम्म, आदि जुगादि कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बेड़ा बन्न्ह, लख चुरासी खेड़ा आप वसाइंदा। करे खेल श्री भगवन, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। एका वस्त नाम धन्न, साचे हट्ट आप वकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण वेस निराकार, निर्धन आपणा खेल कराईआ। दाता दानी सच भण्डार, सति सतिवादी आप वरताईआ। लख चुरासी देवणहार, घर घर रिज़क पुचाईआ। एथे ओथे दए सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि अपरम्पर आप कराइंदा। निरगुण नूर कर पसारा, सरगुण वेस वटाइंदा। सरगुण रूप सर्ब संसारा, लख चुरासी बन्धन पाइंदा। लख चुरासी जोत उज्यारा, नूर नूराना डगमगाइंदा। घर घर अंदर खोल्ह किवाड़ा, हरि आपणा आसण लाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, दिस किसे ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, सच्चा झूला आप झुलाइंदा। लोआं पुरीआं आप अखाड़ा, एकँकारा वेख वखाइंदा। लेखा जाणे पुरख नारा, नर नरायण वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण कर पसारा, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत

५६४
११

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल कर प्रतख, आपणा भेव चुकाईआ। निरगुण सरगुण हो हो वक्ख, दोए दोए धार समझाईआ। शब्द अनाद वज्जे घट घट, अनरागी राग अलाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, जोत निरँजण विच टिकाईआ। करे खेल शाहो शाबाश, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे पृथमी आकाश, गगन गगनंतर आप सुहाईआ। निरगुण सरगुण करे पूरी आस, इच्छा पूर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा राह चलाईआ। सरगुण मार्ग आपे ला, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़त घड़ा, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वंड वंडा, चारे खाणी बन्धन पाइंदा। चारे बाणी राग सुणा, आपणा भेव चुकाइंदा। चारे जुग वंड वंडा, एका हुक्म सुणाइंदा। चारे वरन मात प्रगटा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाउँ धराइंदा। चारे कूट फेरा पा, आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाइंदा। साची धारा हरि करतार, आदि जुगादि चलाईआ। निरगुण सरगुण हो त्यार, त्रैभवण धनी वेस वटाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दे अधार, एका बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। करे खेल पुरख समरथ, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। निरगुण चलाए सरगुण रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, एका शब्द करे पढ़ाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल वखाईआ। निरगुण सरगुण साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। पारब्रह्म सूरा सरबंग, घर साचे सोभा पाइंदा। आदि जुगादि एका मृदंग, जुग करता आप वजाइंदा। घर घर वेख साचा अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। गीत सुहागी गाए छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा खेल श्री भगवान, निराकार निरँकार आप कराईआ। सरगुण वखाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर परवान, मेल मिलाए साचे थाईंआ। बन्धन पाए गोपी काहन, साचे मंडल रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण देवे माण वड्याईआ। सरगुण अंदर सतिगुर धार, गुर गुर आप प्रगटाइंदा। जोती जोत कर पसार, जोती जोत मेल मिलाइंदा। शब्दी शब्द जैकार, नाम जैकारा इक्क सुणाइंदा। अमृत अमृत ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण धार आप समझाइंदा। सरगुण धार पुरख अकाल, निरगुण आप बणाईआ। आदि आदि हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

५६५
११

कर, सरगुण देवे माण वड्याईआ। सरगुण देवे माण, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। खेले खेल दो जहान, दोए दोए रूप धराइंदा। दाता दानी वड मेहरवान, आपणा रूप वटाइंदा। ब्रह्मा देवे इक्क ज्ञान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। चारे वेद कर प्रधान, चारे कुण्ट वंड वंडाइंदा। चारे जुग इक्क निशान, एका घर झुलाइंदा। चारे बाणी कर प्रधान, चारे खाणी आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल महान, आदि पुरख आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। आपणा पड़दा देवे लाह, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुग जुग बणे मात मलाह, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता ल्या हंढा, द्वापर अंग रखाईआ। कलयुग अन्त वेखण दा चाअ, पारब्रह्म प्रभ खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी गए विहा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध रहे मुका, बण बण पाँधी राहीआ। गुर अवतार सेव कमा, गए मुख छुपाईआ। पीर पैग़म्बर डौरू डंक वजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल कराईआ। निरगुण खेल अपर अपार, हरि साचा सच कराइंदा। लेखा जाणे जुग चार, जुग चौकड़ी फोल फुलाइंदा। नाता जोड़ गुर अवतार, पुरख बिधाता बन्धन पाइंदा। खेले खेल परवरदिगार, पीर पैग़म्बर आप वड्याइंदा। मुकामे हक़ सांझा यार, नबी रसूल आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण आपणे रंग समाइंदा। निरगुण नूर पुरख अकाल, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। आदि जुगादि खेल कमाल, भेव कोए ना पाईआ। चरनां हेठ दबाए काल महांकाल, जुग जुग हुक्म सुणाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, गुर गुर रूप वटाईआ। बाणी बोध शब्द ज्ञान, जीव जंत करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेख पुराण, वेद विदाता रूप वटाईआ। भगतन मेला श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग निरगुण धार, सरगुण वेख वखाईआ। रूप धराय गुर अवतार, मातलोक लए अंगड़ाईआ। खड़ग खण्डा तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाईआ। तीर तरकश फड़ कमान, जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप वखाईआ। पीर पैग़म्बर वेखे मार ध्यान, मिहबान बीदो निगहबान बी खैर या अल्ला इलाही नूर आप अख्वाईआ । करे खेल श्री भगवान, निरगुण सरगुण देवे दान, लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज आपणी रचन रचाईआ। करे प्रकाश रवि ससि सूरज चन्द भान, दाता जोधा सूरबीर श्री भगवान इक्क वखाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता इक्क इकल्ला, वसणहार सच महल्ला, दो जहानां आपणा खेल कराईआ। दो जहानां खेल अपारा, हरि निरँकारा आपणा

५६६
११

आप कराइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, लोकमात हो उज्यारा, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आपणा भेव चुकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे पार किनारा, वेखे विगसे वारो वारा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी बीते काल, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, थिर घर आपणा रंग वखाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना राईआ। गुर अवतार कर बहाल, लोकमात सेव लगाईआ। हुक्म देवे आप महांकाल, मिहबान बीदो आपणा नाउँ धराईआ। नूरी जल्वा जोत जलाल, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला पुरख अकाल, अनक कल आपणी रखे वड्याईआ। अनक कल पुरख अकाला, एका एक अख्वाइंदा। जुग जुग खेल करे निराला, भेव कोए ना पाइंदा। जन भगतां दस्से राह सुखाला, आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मुक्या पन्ध, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। करे खेल सूरा सरबंग, निरगुण आपणा रूप धराईआ। वेखणहारा नौ खण्ड पृथ्मी सति दीप सूरज चन्द, विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाईआ। खेले खेल विच वरभण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप प्रगटाईआ। निरगुण हरि इक्क बलवान, आदि पुरख अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे आण, निरगुण रूप वटाइंदा। सचखण्ड वखाए सच मकान, लोकमात प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराइंदा। आपणा बल आपे रख, हरि आपणी धार चलाईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, घर साचे सोभा पाईआ। भगत भगवन्त कर कर वक्ख, आपणी बूझ बुझाईआ। लख चुरासी विच्चों लए रख, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आप तराईआ। हरि पुरख अगम्म प्रभ एक है, एका रंग समाया। गुर सतिगुर साची टेक है, सरन सच्ची सरनाया। भगत भगवन्त रिहा वेख है, जुग जुग वेस वटाया। सन्तां लिखणहारा लेख है, लहिणा देणा मूल चुकाया। गुरमुख मेला साचे देस है, महल अटल करे रुशनाया। गुरसिख खोले आपणा भेत है, दूई द्वैती पड़दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा तराया। हरि पुरख निरँजण अगम्म अथाह है, बेअन्त बेपरवाह। गुर सतिगुर देवे सच सलाह है, एका नाम प्रगटा। भगतन मेला सहिज सुभा है, गुर सतिगुर लए मिला। सन्तन सदा इक्को चाअ है, प्रभ दर्शन लईए पा। गुरमुख गुर गुर रहे ध्या है, चरन कँवल ध्यान लगा। गुरसिखां पकड़े आपे बांह है, एथे ओथे होए सहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणी दया आप कमा। हरि पुरख सदा समरथ है, आदि जुगादी कार। गुर सतिगुर चलाए रथ है, जुग जुग मात लए अवतार। जन भगतां देवे साची वथ है, एका नाम अपार। सन्त साजन लए रख है, जगत जलंदे लाए पार। गुरमुखां मार्ग आपणा दस्स है, खोल्ह़े बन्द कवाड़। गुरसिखां हिरदे अंदर वस है, देवे दरस दीदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। हरि पुरख दीन दयाल, आपणी दया कमाइंदा। गुर सतिगुर वेख साचे लाल, भगत भगवन्त रंग चढ़ाइंदा। सन्तन सति सतिवादी बण दलाल, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। गुरमुखां माया तोड़ ज़ंजाल, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता एका घर बहाइंदा। गुरसिखां चले नाल नाल, दिवस रैण करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। हरिजन तेरा बन्ह़े बेड़ा, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। वसदा रहे काया खेड़ा, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। अन्त करे हक़ निबेड़ा, झूठी माया दए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। गुरमुख तेरा सच्चा माण, घर साचे आप बणाया। जिथे झुल्ले सच निशान, सो पुरख निरँजण रिहा झुलाया। ओथे ना जिमीं असमान, सूरज चन्द नज़र कोए ना आया। ना कोई विद्या ना ज्ञान, शास्त्र सिमरत ना कोए पढ़ाया। ना कोई मन्दिर मस्जिद मट्ठ दिसे मकान, गुरदुआर ना कोए वखाया। जिस घर वसे श्री भगवान, सो मन्दिर सोभा पाया। एका जोत जगे महान, नूर नूराना डगमगाया। शब्द अगम्म इक्क धुन्कान, ढोलक छैणा ना कोए वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा बंक सुहाया। गुरसिख बंक सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। जिस घर मिलावा हरि जू कन्त, तिस गृह वज्जे वधाईआ। हरिजन होया साचा सन्त, सति सतिवादी आप बणाईआ। गढ़ तुट्टा हउमे हंगत, झूठी ममता दए तजाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरिसंगत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वड्याईआ। सच वड्याई साचे घर, हरि साचा सच रखाइंदा। गुरसिखां देवे एका वर, एका बन्धन पाइंदा। आवण जावण चुक्के डर, लख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका रंग रंगाइंदा। एका रंग रंगे गुलाल, प्रभ साचा दया कमाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, दर घर साचे लए मिलाईआ। माया ममता तोड़ ज़ंजाल, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुण दए समझाईआ। साचा गुण शब्द धार, एका एक रखाइंदा। एका गुण शब्द जैकार, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। शब्द विचोला एकँकार, गुर चेला रूप वटाइंदा। पड़दा ओहला विच संसार, अबिनाशी करता आपे पाइंदा। जन भगतां

करे हौला भार, सिर आपणे गंढु उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि आपणे विच छुपाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत नेत्र दिस किसे ना आइंदा।

★ २० माघ २०१८ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ★

हरि सरन सच्ची सरनाई, जुग जुग दया कमाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, हरि भगतां माण रखाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, हरि सन्तन नाम जपाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, हरि गुरमुख मेल मिलाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, हरि गुरसिख आप उठाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, दुरमति मैल धुवाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, माया ममता मोह चुकाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, चिंता रोग गवाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, लख चुरासी फंद कटाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, घर साचा सुख उपजाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, उज्जल मुख मात कराइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन इक्क रखाइंदा। हरि चरन सच्ची सरनाई, जन भगतां देवे माण। हरि चरन सच्ची सरनाई, साचे सन्तां देवे दान। हरि चरन सच्ची सरनाई, गुरमुख वेखे बाल अञ्याण। हरि चरन सच्ची सरनाई, गुरसिख देवे इक्क ज्ञान। हरि चरन सच्ची सरनाई, मिले वड्याई दो जहान। हरि चरन सच्ची सरनाई, नाता तुट्टे पंज शैतान। हरि चरन सच्ची सरनाई, घर मिले अमृत पीण खाण। हरि चरन सच्ची सरनाई, जम की चुक्के काण। हरि चरन सच्ची सरनाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हरि सरन इक्को ओट, हरिजन हरि रखाइंदा। भाग लग्गे काया कोट, गढ़ बंक आप सुहाइंदा। जगत वासना कढे खोट, दुरमति मैल धुवाइंदा। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन इक्क वखाइंदा। साची सरन पुरख अकाल, आदि जुगादि सहाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, आपणी बूझ बुझाईआ। सन्तां बणे सति दलाल, सति सतिवादी सेव कमाईआ। गुरमुखां चले नाल नाल, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरसिख वेखे साचे लाल, बाल अञ्याणे गोद बहाईआ। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, गृह दीवा बाती इक्क टिकाईआ। लेखा तोड़ शाह कंगाल, शरअ बन्धन दए मुकाईआ। एका वस्त नाम धन माल, सच सुच्च झोली पाईआ। काया कच्च तोड़ ज़ंजाल, कंचन रूप आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सरनाई इक्क जणाईआ। सच सरनाई सतिगुर शब्द, चरन सरन सहारा। करे कराए पत्तत पुनीत, पत्तत पावण एकँकारा। नाम सुणाए अगम्मी गीत, सोहँ

शब्द सच जैकारा। जन्म जन्म वेखे लग्गी प्रीत, पूरब लहिणा देवणहारा। सदा सदा सद अतीत, त्रैगुण अतीता एकँकारा। एका जाणे हस्त कीट, घट घट कर पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन दे सहारा। साची सरन सतिगुर सज्जण, दूसर अवर ना कोए रखाईआ। धूढ़ कराए साचा मजन, मजन माघ मुख शरमाईआ। जगत विकार गुरमुख तजण, जीवण जुगत जणाईआ। नाम नगारे साचे वज्जण, आत्म परमात्म रंग चढ़ाईआ। सच प्रीती गुरमुख बज्झण, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख़्शे इक्क सरनाईआ। साची सरन सतिगुर सेव, सेवक सेवा इक्क समझाइंदा। आदि पुरख अलख अभेव, अगोचर खेल कराइंदा। सदा सदा सद निहकेव, निहचल धाम सुहाइंदा। लेखा जाणे रसना जिहव, जो जन सोहँ ढोला गाइंदा। आत्म अन्तर एका मेव, अमिउँ रस आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन इक्क वखाइंदा। साची सरन एको इक्क, एका एक जणाइंदा। भगत भगवन्त लेखा लिख, लिख लिख लेख समझाइंदा। जुगां जुगन्तर वंडे हिस, साची वंड वंडाइंदा। बिन किरपा ना पए दिस, नेत्र सब दे बन्द कराइंदा। जिस जन पाए नाम भिख, दीनन आपणी दया कमाइंदा। सो गुरमुख सिख्या लए सिख, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। हरि भेव ना जाणे मुन रिख, रिख मुन सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सरनाई इक्क रखाइंदा। सच सरनाई एको आस, एका घर वड्याईआ। जन्म जन्म दी मिटे प्यास, कर्म कर्म दा रोग गंवाईआ। लेखे लग्गे पवण स्वास, स्वास स्वासां लेखे लाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास, डूँग्घी कंदर वेख वखाईआ। दीन दयाल ठाकर अबिनाश, अबिनाशी करते आपणी दया कमाईआ। करे कराए बन्द खुलास, बन्दी तोड़े झूठी फाहीआ। नाता तोड़ गर्भवास, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। सच मन्दिर वखाए एका रास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। सच सरनाई मेहरवान, इक्को इक्क जणाइंदा। भगतां देवे भगती दान, वस्त दस्त हथ्थ फड़ाइंदा। सन्तन राग सुणाए कान, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। गुरमुखां मेला मेले आण, गुर गुर वेस वटाइंदा। गुरसिखां देवे इक्क ध्यान, चरन कँवल समझाइंदा। दाता दानी श्री भगवान, आपणी खेल कराइंदा। महांबली नौजवान, आपणा बल धराइंदा। प्रगट हो विच जहान, आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन इक्क रखाइंदा। साची सरन श्री भगवान, आदि जुगादि जणाईआ। जन भगतां देवे विच जहान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण सरगुण दरसन देवे आण, रूप अनूप वखाईआ। जन्म जन्म दी चुक्के काण, कानी तीर ना कोए लगाईआ। हो प्रतख करे पहचान, माया पड़दा आप

हटाईआ। अलख निरँजण खेल महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। सच सरनाई पारब्रह्म, प्रभ एका एक रखाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता दुःख ना कोए जणाइंदा। जगत तृष्ना ना कोए तम, आसा मनसा पूर कराइंदा। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, घड़न भन्नणहार खेल खिलाइंदा। जगत जुगत जीव बेड़ा देवे बन्नृ, जीवण आपणे रंग रंगाइंदा। भाग लगाए काया तन, पंज तत्त माटी हाटी सोभा पाइंदा। जूठ झूठ देवे डंन, एका डंका नाम वजाइंदा। मन का मणका फेरे मन, मन मनसा माहि समाइंदा। इक्क चढ़ाए साचा चन्न, चन्द चांदनी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचे जन, जन जनणी आप हो जाइंदा। सच सरनाई सर्ब गुणवन्त, वड वड्डा वड वड्याईआ। एथे ओथे बणाए बणत, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त महिमा अगणत, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। एका नाम मणीआ मंत, सोहँ सति करे पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई विच जीव जंत, जीवण जीवण विच बदलाईआ।

★ २० माघ २०१८ बिक्रमी बीबी राम कौर दे गृह छम्ब जम्मू ★

सो पुरख निरँजण सति सतिवाद, सति सतिवादी खेल कराइंदा। हरि सतिगुर पूरा आदि जुगादि, निरगुण नूर डगमगाइंदा। गुर गुर रूप ब्रह्म ब्रह्मादि, जुग जुग वेस वटाइंदा। भगतां भगती दे दे दाद, साची वस्त झोली पाइंदा। सन्त वजाए साचा नाद, अनादी नाद सुणाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे लाध, आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरसिख बणाए सज्जण साक, साचा बन्धन पाइंदा। खेले खेल हरि तमाश, आपणी रास रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण एकँकारा, एका रंग समाइंदा। हरि सतिगुर वसे सचखण्ड दुआरा, जोती जाता डगमगाइंदा। गुर गुर रूप धर अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। भगतन भगती दे भण्डारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सन्तन आत्म इक्क ख़ुमारा, अमृत धारा मुख चुआइंदा। गुरमुखां खोलृ बन्द किवाड़ा, आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरसिखां वखाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुलृाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। एकँकारा खेल अपारा, आदि आदि कराईआ। सतिगुर रूप हो उज्यारा, निराकार वेस वटाईआ। गुर गुर शब्द बोल जैकारा, एका करे पढ़ाईआ। भगतन देवे इक्क सहारा, सरन

चरन सरनाईआ। सन्तन करे सच प्यारा, प्रेम प्रीती इक्क सिखाईआ। गुरमुखां मेला विच संसारा, संसार सागर पार कराईआ। गुरसिखां देवे इक्क अधारा, आपणी बूझ बुझाईआ। करे खेल आप करतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराईआ। आदि निरँजण आदि अन्त, जोती जोत डगमगाइंदा। सतिगुर पूरा सदा बेअन्त, भेव कोए ना पाइंदा। गुर गुर बणाए बणत, जुग जुग वेस वटाइंदा। भगतन मेला नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। सन्तन महिमा गणत अगणत, सिफ्त सालाही आप सलाहइंदा। गुरमुखां नाउँ मणीआ मंत, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। गुरसिख मेटे सगली चिंत, चिंता दुःख ना कोए रखाइंदा। वेखणहारा जीव जंत, घट घट आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आदि जुगादि पुरख अबिनाश, आपणी कल वरताईआ। सतिगुर पूरा शाहो शाबाश, पुरख अकाल वेस वटाईआ। गुर गुर रूप कर प्रकाश, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। भगतां भगवन होए दास, नित नवित सेव कमाईआ। सन्तन पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुखां वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिख होए ना कदे निरास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। श्री भगवान सच महल्ला, एका एक वसाइंदा। सतिगुर रूप अटल्ल अटल्ला, दर घर साचे सोभा पाइंदा। गुर गुर रूप वल छला, लोकमात वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त सच संदेश इक्को घल्ला, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सन्त कन्त फड़ाए पल्ला, आपणी गंढु पुवाइंदा। गुरमुखां अंदर आपे रला, जोती जोत समाइंदा। गुरसिखां वखाए निहचल धाम अटल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वड्डा वड, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सतिगुर रूप सदा समरथ, आपणी रचना आप रचाईआ। गुर गुर महिमा सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जन भगतां देवे साची वथ, नाम भण्डार इक्क वरताईआ। सन्तन मार्ग साचा दस्स, आपणा भेव चुकाईआ। गुरमुखां मेला नस्स नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां तीर निराला मारे कस, शब्द निशाना इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला थाउँ थाईंआ। हरि हरि हरी नरायण, पुरख अकाल बेपरवाहया। सतिगुर रूप खेले खेल एका नैण, लोचन होर ना कोए पढ़ाया। गुर गुर चुकाए लहण देण, जुग जुग निरगुण मूल चुकाया। भगत भगवन्त एका धाम इक्ठे बहण, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। सन्त सति सतिवाद सदा कहिण, रसना जिह्वा हरि गुण गाया। गुरमुख अन्त ना खाए लाड़ी मौत डैण, राए धर्म ना दए सजाया। गुरसिख साचा नाता साक सज्जण सैण, सो पुरख निरँजण आप बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

आपणा बन्धन आपे पाया। हरि हरि साचा बन्धन पा, आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर रूप बेपरवाह, दिस किसे ना आइंदा। गुर गुर रूप वेस वटा, लोकमात खेल कराइंदा। भगत भगवन्त लए उठा, आपणी बूझ बुझाइंदा। साचे सन्तां लए जगा, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। गुरमुख सज्जण भेव चुका, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। गुरसिखां बख्शे इक्क सरना, चरन कँवल ध्यान जणाइंदा। लेखा जाणे दो जहां, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध मुका, गेड़ा गेड़े विच भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। सो पुरख साहिब सुल्तान, एका एक वड्डी वड्याईआ। सतिगुर रूप वड बलवान, निराकार सच्चा शहिनशाहीआ। गुर गुर रूप शब्द निशान, लोकमात वखाईआ। भगत भगवन्त इक्क मकान, साचे सन्त रहे जस गाईआ। गुरमुखां मेला गुण निधान, गुरसिख वेखण चाँईं चाँईंआ। प्रगट होया श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जुगां जुगन्तर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, आदि पुरख करतार। सतिगुर फड़ाए पलड़ा, गुर गुर कर प्यार। वसणहारा निहचल धाम अटल्लड़ा, लोकमात लए अवतार। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग दल्लड़ा, चरन कँवल धूढ़ी कर कर शार। जन भगत दुआरे खलड़ा, निरगुण सरगुण हो त्यार। आप फड़ाए आपणा पलड़ा, करे खेल अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए करनेहार। करता पुरख, आदि आदि वड्याईआ। जुग जुग ना कोई सोग ना कोई हरख, पाँधी बण बण पन्ध मुकाईआ। जन भगतां देवे साचा दरस, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। वेखणहारा अर्श फर्श, दो जहानां फेरा पाईआ। अमृत मेघ इक्को बरस, जन्म जन्म दी भुख मुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत रहे तरस, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। साध सन्त रहे भटक, उच्चे टिल्ले बैठे पर्बत आसण लाईआ। अद्धविचकार रहे लटक, पार किनारा नज़र कोए ना पाईआ। गृह गृह घर घर अंदर मन्दिर पंज विकारा चढ़या कटक, ना सके कोई पिच्छे हटाईआ। बुध मति रही भटक, मन चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह इक्क भगवान, एका रंग समाइंदा। सतिगुर पूरा सदा मेहरवान, मेहरवान दया कमाइंदा। गुर गुर रूप विच जहान, लोकमात खेल खिलाइंदा। भगत भगवन्त इक्क निशान, साचे सन्तां हथ्थ फड़ाइंदा। गुरमुख जोधा सूरबीर बली बलवान, बल गुरसिखां विच टिकाइंदा। लख चुरासी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सारे गाण, पढ़ पढ़ संधया राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप छुपाइंदा। आपणा भेव आपणे अन्तर रख, आदि जुगादि ना किसे जणाया। गुर अवतारां

५७३
११

मार्ग दस्स, लोकमात राह वखाया। निरगुण जोत कर प्रकाश, सरगुण साचा चन्द चढ़ाया। छिन्न भंगर पूरी कर कर आस, काया मन्दिर आप सुहाया। जुग चौकड़ी खेल तमाश, डौरू डंका इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रास आप रचाया। आपणी वेखे मंडल रास, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। साहिब सुल्तान शाहो शाबाश, शाह पातशाह खेल कराईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल सोभा पाईआ। सतिगुर पूरा जन भगतां पूरी करे आस, साचे सन्तां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर गुर गुर रूप सतिगुर धार लोकमात प्रगटाईआ। सतिगुर धार निराकार, निरवैर आप चलाइंदा। गुर गुर रूप विच संसार, पंज तत्त प्रगटाइंदा। अन्तर अन्तर कर प्यार, आपणा रंग रंगाइंदा। दीपक जोती इक्को बाल, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। शब्द मृदंग सच्ची धुन्कान, राग नाद सुणाइंदा। अमृत आत्म पीण खाण, इक्को रस चखाइंदा। काया हट्ट कर परवान, समरथ डेरा लाइंदा। सति वखाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव हरि जू चुक्क, आपणी खेल वखाईआ। सतिगुर रूप आपे तुट्ठ, गुर गुर बूझ बुझाईआ। गुर गुर रूप आपे उठ, गुरमुख लए जगाईआ। गुरमुख चोग लए चुग, माणक मोती हरि हरि नाउँ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, शाह पातशाह आप कराइंदा। सति सरूप साची धारा, सतिगुर नाउँ धराइंदा। पंज तत्त तन कर पसारा, गुर गुर नाउँ वखाइंदा। बोध अगाध बोल जैकारा, शब्दी नाद वजाइंदा। खाणी बाणी बण वरतारा, बण भण्डारी सेव कमाइंदा। लहिणा देणा जाणे जुग चारा, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। रूप अनूप विच संसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप अपणा खेल कराइंदा। खेले खेल पुरख समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर महिमा सदा अकथ, गुर गुर रिहा सुणाईआ। गुर गुर होए लख चुरासी विच्चों वक्ख, आत्म परमात्म कर कुड़माईआ। आत्म परमात्म बध्धा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सति सन्तोख धीरज जत, तत्तव तत्त विच समाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत रहिण ना पाईआ। इक्को ज्ञान ब्रह्म मति, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। जीवां जंतां मार्ग दस्स, हरि का भेव खुल्हाईआ। आपे होया हरि के वस, हरि आपणे वस कराईआ। इक्क दूजे दे अंदर वस, बह बह खुशी मनाईआ। इक्क दूजे नूं हाल दस्स, साची गाथा मात चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर गुर गुर आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर वसे सच महल्ला, घर एका एक सुहाइंदा। गुर गुर फड़ाए पल्ला, साचा बन्धन पाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, रल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। आदि

५७४
११

जुगादि जुगा जुगन्तर सति संदेस एका घल्ला, आपणा नाउँ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सिफ्त आप सलाह, सलाहगीर आप हो जाइंदा। आपणी सिफ्त दस्से सलाह, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। गुर गुर रूप कर मलाह, लोकमात दए वड्याईआ। आपणा नाउँ इक्क समझा, समझ समझ विच रलाईआ। निरगुण सरगुण रमज़ दए लगा, बिन तार सितार हिलाईआ। आपणी विद्या दए पढ़ा, आपे रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर एका गत जणाईआ। सतिगुर पूरा सच मेहरवान, एका घर सुहाइंदा। गुर गुर देवे साचा दान, दाता दानी आप वरताइंदा। साचा मन्त्र नाम ज्ञान, वस्त अमोलक इक्क वखाइंदा। लोकमात कर प्रधान, शास्त्र सिमरत वेद बणाइंदा। एका घर कर परवान, गीता ज्ञान, आप दृढ़ाइंदा। एका अल्फ़ आपणा निशान, साबत सूरत आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण खेल महान, ईसा मूसा मुहम्मद आप पढ़ाइंदा। नानक निरगुण दस्स निशान, सचखण्ड निशाना इक्क झुलाइंदा। गोबिन्द सूरा कर परवान, पूत सपूता गोद सुहाइंदा। करे खेल श्री भगवान, सतिगुर आपणी धारा आप बणाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, हुक्मी हुक्म सर्ब भुवाइंदा। पीर पैग़म्बर मन्नण आण, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा इक्क धराइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, लख लख वेस वटाइंदा। सतिगुर गुर गुर हो प्रधान, सरगुण आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुगादि आपणी धार जणाइंदा। गुर गुर कहे पुकार, हरि सतिगुर तेरी वड्याईआ। पीर पैग़म्बर रोवण ज़ारो ज़ार, परवरदिगार अग्गे सीस झुकाईआ। तूं सदा सुहेला मददगार, तेरी इक्को ओट रखाईआ। लोकमात सेवा करी अपार, बण सेवक सेव कमाईआ। अन्तिम नाता तुट्टा सर्ब संसार, सगला संग ना कोए रखाईआ। अद्ध विच छड्ड गए चार यार, आपणा पल्लू गए तुड़ाईआ। अल्ला राणी मोड़ मुहार, आपणा मुख रही भुवाईआ। मेरी उम्मत होई खुआर, अमल करे ना तेरी खुदाईआ। तेरा सम्मत मारे मार, तेरी रहिमत नज़र ना आईआ। चोदां सदीआं जगत वापार, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। अन्तिम लहिणा देणा हथ्थ निरँकार, जिउँ भावें तिउँ लए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर तेरी वड वड्याईआ। सतिगुर दाता इक्क दातार, आदि अन्त अखवाया। गुर गुर बरदा सेवादार, घर घर दी सेव कमाया। भगत डरदा भय रख निरँकार, निउँ निउँ सीस झुकाया। सन्त साजन भाणा जरदा, दुःख सुख विच मिलाया। गुरमुख निउँ निउँ चरना सीस धरदा, दोए जोड़ जोड़ सरनाया। गुरसिख सरन सरनाई पड़दा, माया ममता मोह चुकाया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान हरिजन साचे आपे फड़दा, लोकमात दया कमाया। बिन पौड़यों अंदर आपे वड़दा, औदा जांदा दिस ना आया।

आप बचाए अग्नी सड़दा, त्रैगुण पोह ना सके राया। आपे नाउँ गुरमुखां पढ़दा, गुरसिखां आपणा नाम पढ़ाया। सोहँ वस्त अग्गे धरदा, धुरदरगाही लै के आया। आदि जुगादि कदे ना मरदा, सच मर्दानगी रिहा कमाया। गुरसिखां दर होए बरदा, दर दरवेश फेरी पाया। निरभउं रूप कदे ना डरदा, भय सब दा रिहा चुकाया। सन्त सुहेले आपे वरदा, गुर गुर चेले नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सज्जण होए सहाया। हरि सतिगुर सज्जण दीन दयाल, सांतक सति सति समाया। गुरमुख वेखे गुर गुर लाल, आपणे रंग रंगाया। निरगुण सरगुण बण दलाल, शब्द विचोला वेस वटाया। नाता तोड़ त्रैगुण काल, त्रैकाल दरसी आपणे घर बहाया। जो जन घालणा रहे घाल, तिस जन घाल लेखे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर सच्चा इक्को इक्क अख्वाया। सतिगुर सच्चा इक्क सुल्तान, निरँकार अख्वाईआ। शब्द सरूपी वड बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। धरत धवल वेखे आण, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। गुरमुख लभ्भे चतुर सुघड़ सुजान, गुर गुर बूझ बुझाईआ। सोहँ अक्खर दे दे दान, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। नाता तुट्टे जीव जहान, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। नार पुरख इक्को माण, एका घर वज्जे वधाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए उठाईआ। गुरमुख सज्जण मीत प्यारा, गुर सतिगुर मेल मिलाइंदा। नेत्र लोचण दरस दीदारा, नित नित वेस वटाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, समुंद सागर नैण नीर शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरिजन लेखा सदा अभेद, हरि साचा सच जणाईआ। हरिजन महिमा करे चार वेद, शास्त्र सिमरत नाल रलाईआ। हरिजन कथा गाए अछल अछेद, वल छल धारी आपणा राह चलाईआ। हरिजन हरिजू आपे लए वेख, जुग जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। दीनन हरिजू दया कमा, दयानिध वेख वखाइंदा। निरगुण निरगुण रूप वटा, सरगुण सरगुण बन्धन पाइंदा। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत बिन भगती लए मिला, भावी भाव आपे पूर कराइंदा। जिस उपर किरपा करे सच्चा शहिनशाह, सो जन दूजे दर क्यों मंगण जाइंदा। जिस बांहों फड़ उपर तख्त दए बिठा, सो दूजी ओट क्यों तकाइंदा। जिस जन आपणे विच लए मिला, तिस विछोड़ा नज़र कोए ना आइंदा। प्रेम सपुत्तरी राम कौर सिर हथ्थ टिका, सिर सिर लज्जया आप रखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणत रिहा बणा, जीव जंत ना कोए अटकाइंदा।

५७६
११

★ २० माघ २०१८ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह
दीवान गढ़ जम्मू ★

आम दिन ना कोए विचार, हरि हरि आपणी खेल खिलाइंदा। पंडत पांधा ना पावे सार, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि खेल न्यार, निरगुण दाता आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, बालक फड़ फड़ सेव लगाइंदा। रवि ससि कर उज्यार, सूरज चन्द चन्द चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आपणे हथ्थ रखाइंदा। अज्ज कल ना कोए गल्ल, हरि अचरज खेल कराईआ। करे खेल अछल अछल, वल छल धारी भेव ना राईआ। सच सिँघासण बैठा मल्ल, तख्त निवासी सोभा पाईआ। सुहाए धाम निहचल अटल्ल, निरगुण निरवैर पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जोती जोत आपे रल, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल एकँकार, आपणा आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण हो त्यार, दर घर साचे सोभा पाइंदा। हरि पुरख निरँजण वड बलकार, बल आपणा आप रखाइंदा। एकँकारा खेल अपार, भेव कोए ना पाइंदा। आदि निरँजण जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसे धाम न्यार, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। श्री भगवान सांझा यार, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर आपणा रंग आप वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। अज्ज कल ना कोई बात, दाता दानी ना कोए जणाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ पुरख हथ्थ वड्याईआ। आपणी महिमा जाणे अकथ, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। जुग जुग चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाईआ। आपणे रंग हरि रंग राता, आदि पुरख वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाता, साची वस्त झोली पाईआ। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञाता, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साची खेल हरि करतार, आपणी आप जणाइंदा। बोध अगाध शब्द जैकार, निरगुण धार आप बंधाइंदा। आपे लेखा जाणे वेद चार, चार वेद आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल हरि करतार, पंज तिन्न अठ्ठ वंड वंडाईआ। नव नौ हो उज्यार, दहि दिशा फेरी पाईआ। सति दो कर प्यार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी खेल आप कराईआ। साची खेल हरि करतार, आदि पुरख आप कराइंदा। शब्दी शब्द वड बलकार, सूरबीर नाउँ

रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहार, नाम निधान झोली पाइंदा। लेखा लिख्त अपर अपार, लिख लिख लेख आप समझाइंदा। साची वंडण वंड करे निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। साची वंड श्री भगवान, एका एक कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड सच निशान, लोआं पुरीआं आप झुलाईआ। जेरज अंड कर प्रधान, उत्भुज सेत्ज नाल रलाईआ। चारे वेद दे ज्ञान, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। चारे जुग पावे आण, एका हुक्म सुणाईआ। चारे खाणी गुण निधान, आपणी अंस बणाईआ। चारे बाणी देवे दान, आत्म अन्तर वस्त टिकाईआ। मंडल मण्डप खेल महान, रवि ससि सूरज चन्न सितार सेवा लाईआ। आपे होए वेखणहार, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वरताईआ। खेल करे पुरख अबिनाश, इक्क इकल्ला वेस वटाइंदा। साची मंडल पावे रास, तार तारका नाल मिलाइंदा। सति सति इक्क अधार, एका गंढु पुवाइंदा। दोए दोए कर विचार, राहू केतू खेल खलाइंदा। आदि अन्त आपे सब नूं फड़ फड़ मारे मार, हुक्मे हुक्म आप फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठु अठु नौ नौ सत्त सत्त आपणे रंग वखाइंदा। नौ सत्त सोलां खेल अपर अपार, हरि करता आप कराईआ। अठु तत्त कर विचार, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। जगत विद्या ना पावे सार, बारां रास ना बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अज्ज कल कल अज्ज जुग चौकड़ी कोटन कोटि काल बिताईआ। कोटन कोटि काल गए बीत, जुग जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। हरि का खेल सदा अतीत, दिस किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणाई रीत, जीव जंत करे पढ़ाईआ। बुद्धि विद्या बुद्धि दस्से ठीक, अनुभव ना कोए जणाईआ। कागज़ा उत्ते मारी लीक, धरती धरत धवल वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। अज्ज कल जगत विचार, चारों कुण्ट रिहा कुरलाईआ। पंडत पांधे ज्ञानी ध्यानी वड विदवानी ना पायण सार, हरि का भेव ना कोए जणाईआ। रसना कहिण नौ खण्ड पृथ्मी अठु गृह मारन मार, मारनहारा दिस ना आईआ। जिस ने अठु गृह नौ लाए सेवादार, सो भुल्लया सच्चा माहीआ। जिस दे हुक्मे अंदर गुर अवतार, पीर पैग़म्बर जुग जुग सेव कमाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर वेद चार, विष्न ब्रह्मा शिव करे निमस्कार, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर सर्ब संसार, खाणी बाणी करया पार, निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। अज कल जगत नाअरा, चार कुण्ट कुरलाइंदा। बौहड़ी बौहड़ी हाए हाए विद्या विदित करे पुकारा, ध्यान ज्ञान ज्ञान ध्यान ना कोए रखाइंदा। सोच समझ तों होया बाहरा, मति बुध होई खुआरा, तत्तव ना कोए जणाइंदा।

अष्ट गृह खेल करे विचारा, हुक्मे फिरे सर्ब संसारा, रवि ससि कोह करोड़ी चलत चलत आपणा पन्ध ना कदे मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी कल अकल कल, हरि करता आप वरताईआ। लख चुरासी वल छल, भेव कोए ना पाईआ। जगत विद्या डूँग्घी डल, सच ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। महांबली तुट्टे बल, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। इक्क दूजे नूं दस्सण गल्ल, विचला भेव किसे ना आईआ। राज राजान शाह सुल्तान नीतीवान होए झल्ल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। अज्ज कल्ल रहे सोच, सोच विच कुझ ना आइंदा। इक्क दूजे नूं उँगलां नाल रहे नोच, फड़ फड़ बांहों सर्ब हिलाइंदा। पिच्छे जेहड़ी माणी मौज, अग्गे वेला की हुण आइंदा। पंडत पांधे ज्ञानी ध्यानी मुल्ला शेख़ मुसायक रहे खोज, अंदर वड़ वड़ ध्यान सर्ब लगाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणी कोई ना रखे खोज, अठ्ठ तत्त अठ्ठ गृह आपणा खेल कराइंदा। किसे कम्म ना आवे किसे जोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। जीव जंत होए अनभोल, हरि का भेव ना कोए जणाईआ। पंडत पांधे पत्तरी रहे खोल्ह, खोल्ह खोल्ह समझाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता करनवाला घोल, वेखो हेठां उपर करे लड़ाईआ। जुगां जुगन्तर तोले तोल, तोलणहारा इक्क अख्वाईआ। भगत भगवन्त सदा अडोल, भय विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अज कल वल छल अछल अछल धरनी धरत धौल आपणा खेल वखाईआ। धरनी धरत धवल खेल अवल्ला, हरि एका एक कराइंदा। चारों कुण्ट प्या हल्ला, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। किसे नज़र ना आए अल्ला, नेत्र नैण परवरदिगार ना कोए मनाइंदा। राम कृष्न ना फड़े कोई पल्ला, अष्ट गृह सब नूं घर घर डराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वायू मंडल एका तार, आप हिलाए एकँकार, करता पुरख करनेहार, कुदरत कादर आपणा खेल खिलाइंदा। कुदरत कादर मुकामे हक़, हक़ हक़ीक़त वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई प्या शक्क, शक्क ना कोए मिटाईआ। नेत्र नैण रहे तक्क, तकदीर तदबीर तकसीर ना कोए गंवाईआ। वेला आउण वाला झट्ट, बैठे राह तकाईआ। एह खेल बाजीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करतारा, हरि आपणा आप कराइंदा। दो जहान दए सहारा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। अष्ट गृह की करे विचारा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। नौंवां फिरे चरन दुआरा, दोए दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा रंग आपणे हथ्थ रखाइंदा। एका रंग सूरा सरबंग, एका एक

रखाईआ। भय भयानक वजाए मृदंग, इक्क मृदंगा रिहा सुणाईआ। सृष्ट सबाई होई नंग, साचा पल्लू ना कोए पाईआ। भगत भगवन्त सुहागी गाए ना कोए छन्द, सीता सुरती ना राम मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत भयानक आपणे हथ्थ वखाईआ। अज कल ना कोए डर, भय अवर ना कोए रखाइंदा। वेला वक्त जाणा टल, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। हरिजन हरिभगत इक्क दुआरा बैठे मल, जिस दर भय कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अज कल कल अज जगत विचार, जुगत जगत जीवण आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरि सतिगुर पूरा शाह सुल्तान, सति पुरख निरँजण खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, दो जहानां आप सुणाइंदा। सति सतिवादी सच निशान, निरगुण सरगुण आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, आदि जुगादि सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल महान, रूप अनूप वटाईआ। वेद शास्त्र सिमरत जाणे कुरान, गीता ज्ञान दृढ़ाईआ। भेव खुल्हाए अञ्जील कुरान, तीस बतीस हदीस सुणाईआ। खाणी बाणी कर प्रधान, चार वरन दए वड्याईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना इक्क झिराईआ। जोत निरँजण नूर महान, घर घर विच कर रुशनाईआ। आत्म सेजा हो प्रधान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सुरती शब्द इक्क मकान, काया खेड़ा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव चुकाईआ। जुग जुग खेल करे निरँकारा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर पार किनारा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। नव नौ वेख अखाड़ा, चार चार नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, गुर अवतार साची सेव लगाइंदा। साची सेवा गुर अवतार, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, एकँकारा दए सलाहीआ। आदि निरँजण नूर उज्यार, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा मुकामे हक़ सांझे यार, हक़ हक़ीक़त इक्क जणाईआ। श्री भगवान सति निशान, दो जहान इक्क इकल्ला आप वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे दान, दाता दानी गुण निधान वस्त अमोलक आपणी गोलक आप टिकाईआ। ब्रह्म ब्रह्म कर परवान, निष्अक्खर देवे इक्क ज्ञान, बोध अगाध अगाध बोध नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए करनेहार। सतिजुग त्रेता द्वापर फड़या पलड़ा, निरगुण सरगुण लए अवतार। सच संदेस एका घलड़ा, राम राम अधार। आप फड़ाए आपणा पलड़ा, कान्हा कृष्ना मीत मुरार।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। पीर पैग़म्बर दे सहारा, एका कलमा कलाम पढ़ाइंदा। सच इमाम हो त्यारा, एका नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। जुग जुग खेल श्री भगवान, एका एक वखाईआ। देवणहारा सतिनाम, नाम सति करे पढ़ाईआ। निरगुण निरगुण कर परवान, सरगुण सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। जुग जुग वेस निरगुण सरगुण धार, कलयुग आपणा भेव जणाइंदा। नानक गोबिन्द खेल अपार, जोती जाता डगमगाइंदा। जुग चौकड़ी वेख विचार, लहिणा देणा पूर कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया आपणे घाट, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, जोती जामा वेस वटाइंदा। निरगुण नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जन भगतां होए दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। लख चुरासी कटे फास, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। साचा मार्ग इक्को जग, जुग करता आप लगाईआ। प्रगट हो सूरा सरबग, शूद्र वैश क्षत्री ब्रह्मण एका रंग रंगाईआ। आत्म अंदर इक्क अनन्द, ब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। गीत सुहागी साचा छन्द, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका ताल वजाईआ। लेखा जाणे जीउँ पिण्ड, ब्रह्मण्ड आपणा रंग वखाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि जू लाउणा, निराकार सेव कमाईआ। एका अक्खर जाप जपाउणा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। एका इष्ट राम वखाउणा, पुरख अकाल एका नज़री आईआ। एका कलमा नबी पढ़ौणा, इक्क रसूल दए समझाईआ। एका नाम सति झोली पाउणा, नानक निरगुण सेव कमाईआ। एका वरन सृष्ट सबाई नज़री आउणा, जात पात ना कोए रखाईआ। एका बरन आप समझाउणा, अठारां बरन माण गंवाईआ। एका सरन ओट रखाउणा, पारब्रह्म सरनाईआ। एका निर्मल जोत जगाउणा, घर घर दीप करे रुशनाईआ। एका चतुर्भुज नज़री आउणा, नेत्र नैण नैण मिलाईआ। एका राग नाद सुनाउणा, एका धुनी धुन शनवाईआ। एका मन्दिर गुरदुआर वखाउणा, मस्तक मठ एका घर बहाईआ। एका देव आत्मा सर्ब घट रमाउणा, वासदेव वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग इक्क जणाईआ। साचा मार्ग इक्को एक, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ साची टेक, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। आपे करे बुध बिबेक, विवेकी

आपणा रंग चढ़ाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। आपे मेटे पिछली रेख, अगला मार्ग आप वखाइंदा। शाह पातशाह हरि सच नरेश, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द सीस झुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नेत्र लोचण नैण हरि हरि रहे पेख, पेख पेख सर्ब सुख पाइंदा। तिस साहिब को सदा आदेस, जुग जुग वटाए आपणा वेस, वेस अवल्ला आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा एकँकार, एका एक जणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड नाम जैकार, जै जैकार सुणाईआ। वरभण्डी वंडे आपे वंड, वंडणहारा बेपरवाहीआ। लख चुरासी देवे दंड, नौ खण्ड पृथ्मी चारे कुण्ट वेख वखाईआ। नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड, तेज़ कटार आपणे हथ्थ रखाईआ। नार दुहागण वेखे रंड, घर घर अंदर डूँघी कंदर वड़ वड़ फोल फोलाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया दए हटाईआ। चार वरन सुणाए एका छन्द, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। लेखा जाणे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा गुण इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क रखाईआ। साचा मार्ग इक्को राह, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। गुर गुर शब्दी जगत मलाह, बेड़ा पार कराइंदा। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाह, सिफ्त विच कदे ना आइंदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, ऊँचां नीचां एका घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप समझाइंदा। एका नाउँ साचा मित, चार वरन कुड़माईआ। जुगां जुगन्तर करे हित, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। वेस वटाए नित नवित, रूप अनूप धराईआ। सृष्ट सबाई मात पित, लख चुरासी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए समझाईआ। एका नाम सर्ब गुणवन्त, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सतिजुग बणाए साची बणत, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। गुरमुख गुरसिख मेला हरि हरि कन्त, कन्त कन्तूहल दया कमाइंदा। एका नाम मणीआं मंत, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। देवे वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत जगाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क दृढ़ाइंदा। साचा नाम हरि चरन सरन सरना, एका ओट जणाईआ। रसना जिह्वा गीत गोबिन्द गुण लैणा गा, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। भरम भुलेखा भाण्डा भरम भउ लैणा भन्ना, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। हउमे हंगता रोग लैणा गवा, माया ममता मोह चुकाईआ। काया अंदर आपणा पड़दा लैणा उठा, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। अग्गे मिले हरि जू सहिज सुभा, निरगुण आपणा रूप वखाईआ। ज़ात पात कोई जाणे ना, वरन बरन विच ना आईआ। गुरमुख सज्जण लए मिला, मिल मिल खुशी मनाईआ। आत्म सेजा

५८२
११

सोभा पा, ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। ईश जीव गोद बहा, जगदीशर देवे माण वड्याईआ। साचे मार्ग आप चला, बण पाँधी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सतिजुग साचा राह अपारा, हरि साचा आप लगाईआ। चार वरन इक्क प्यारा, एका माण वड्याईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका गुर समझाईआ। एका नाम इक्क जैकारा, एका नाद अलाईआ। एका राग इक्क तलवाड़ा, एका तन्द सितार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाईआ। साचा राह एका घर, हरि एका एक वखाइंदा। ऊँच नीच मुक्के डर, जात पात ना कोए वड्याइंदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। कूड़ी क्रिया जाए हर, सच सुच्च साचा राह चलाइंदा। एका माण नारी नर, नर नरायण दया कमाइंदा। सन्त सुहेले आपे फड़, गुर चेले गोद बहाइंदा। भगतां देवे साचा वर, आपणी भगती झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़, एका एक खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम रचया काज, सतिजुग राह चलाईआ। चार वरन देवे दात, एका नाम पढ़ाईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, अनभउ प्रकाश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म साची गाथ सुणाईआ। साची गाथा सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। दुरमति मैल देवे धो, पत्तत पापी पार कराइंदा। हउमे हंगता नाता तोड़े झूठा मोह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची भिच्छया झोली पाइंदा। साची भिच्छया नाम अनमोल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। शब्द अगम्मी कंडे तोले तोल, तोलणहारा दिस ना आईआ। आदि जुगादि सदा सद रहे अडोल, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। लख चुरासी अंदर गया मौल, मौला आपणा नांउँ धराईआ। भगत भगवन्त साध सन्त पीर पैग़म्बर गुर अवतार पूरा करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। लेखा जाणे धरनी धरत धौल, आकाश प्रकाश वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप अनूप शाहो भूप सति सरूप सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी नाद वजाइंदा। शब्द अनादी साचा ढोला, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हँ ब्रह्म पड़दा खोल्हा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। लेखा जाणे काया चोला, पंज तत्त अंदर खेल वखाईआ। आप उठाए पड़दा ओहला, आपणा पड़दा आप चुकाईआ। पंच विकार ना पाए रौला, पंच शब्द दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आपणे घर बहाईआ। घर बहाए एकँकार, सचखण्ड वज्जे वधाईआ।

जोती जोत जोत पसार, जोती जाता वेख वखाईआ। शब्दी शब्द डंक अपार, साचा डंका नाम वजाईआ। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्ताना करे ख़बरदार, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त रिहा उठाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, जुग जुग खेल करे करतार, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। चारों कुण्ट आई हार, सृष्टी रोवे ज़ारो ज़ार, कर्म धर्म ना कोए विचार, कूड़ी क्रिया बन्धन पाईआ। नाता जुड़या ठग्ग चोर यार, घर घर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, हरि का नाउँ नज़र किसे ना आईआ। साध सन्त होए गंवार, धी भैण तक्कण नार मुटयार, नेत्र नैण ना कोए पढ़ाईआ। पिता पूत ना कोए प्यार, धीआं भैणां जगत विहाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा बन्धन आपे पाईआ। साचा बन्धन दीन दयाल, सतिगुर पूरा आप रखाइंदा। गुरमुख वेख साचे लाल, लाल अनमुलड़े आप उठाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, साचा वणज इक्क कराइंदा। जोती जल्वा नूर जलाल, नूर नूराना डगमगाइंदा। लेखा जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन जागे जागरत जोत, जोती जाता आप जगाईआ। नाता तोड़ वरन गोत, प्रभ मंगे इक्क सरनाईआ। काया वेखे किला कोट, घर मन्दिर होए रुशनाईआ। अंदर भण्डारा नाम अतोट, सतिगुर पूरा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जिस जन देवे आपणी बूझ, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। एथे ओथे होए सूझ, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। भेव चुकाए गूझो गूझ, अनभउ प्रकाश कराइंदा। नाता तुट्टे एका दूज, द्वैती रूप ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप उठाइंदा। साचा भगत लए अंगड़ाई, जिस जन उपर दया कमाइंदा। घर आत्म वज्जे वधाई, परमात्म खेल कराइंदा। लोकी कहिण होया शुदाई, गुरमुख आपणे रंग समाइंदा। करे खेल बेपरवाही, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। सन्त सुहेले लए जगाई, निरगुण सरगुण दया कमाइंदा। गुरमुख पकड़े आपे बांही, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाइंदा। गुरसिख मेला चाँईं चाँईं, दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, हरिजन मेले गुरू गुर चेले गुर गुर आपणा रंग वखाइंदा। गुर गुर रंग अगम्म अपार, नज़र किसे ना आईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, माया ममता रही भुलाईआ। जूठ झूठ कर प्यार, आपा नूर नज़र ना आईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, दहि दिशा पई लड़ाईआ। अंदर वड़े ठग्ग चोर यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार बैठे मुख छुपाईआ। दिवस रैण मारन मार, आपणा बल वखाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना देवे अधार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जिस जन किरपा करे आप निरँकार, तिस आपणा मेल

मिलाईआ। जन्म जन्म दा रोग निवार, चिंता सोग सर्ब मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन सज्जण मेला एका घर मिलाईआ।

★ २१ माघ २०१८ बिक्रमी बाबू राम दे गृह पिण्ड हँसा जम्मू ★

आदि जुगादि सच गुलज़ार, हरि निरगुण सरगुण आप लगाइंदा। जुगा जुगन्तर सच बहार, फुल फुलवाड़ी मात महकाइंदा। अमृत सिंचे वारो वार, नाम फुहारा हथ्थ उठाइंदा। वेखे विगसे वारो वार, वेस अनेक वटाइंदा। मालण बण जोत निरँकार, रूप अनूप धराइंदा। गुरमुख साचे वेख वखान, आपणे रंग रंगाइंदा। सन्तन चले नाल नाल, साचा संग निभाइंदा। भगतन करे सदा रखवाल, जगत माया कन्डा नेड़ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फुलवाड़ी आप लगाइंदा। सच फुलवाड़ी लोकमात, निरगुण दाता आप लगाईआ। जुग जुग वेखे मार झात, गुर अवतार रूप धराईआ। जन भगतां देवे साची दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सन्तन मेटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। गुरमुखां सुणाए साची गाथ, राम नाम पढ़ाईआ। गुरसिख लहिणा देणा हथ्थो हाथ, समरथ पुरख आप चुकाईआ। वरभण्डी वेखे खेल तमाश, ब्रह्मण्डी आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुलशन आप सुहाईआ। साचा गुलशन लग्गे बाग, गुरमुख सज्जण बूटे लाइंदा। दुरमति मैल धो धो दाग़, निर्मल रूप वटाइंदा। आत्म अन्तर इक्क चिराग, दीपक जोती जोत जगाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सोहँ साचा जाप जपाइंदा। साचा मेला आदि जुगादि, गुर गुर चेला आप कराइंदा । ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड वजाए नाद, जेरज अण्डज आप सुणाइंदा। लेखा जाणे बोध अगाध, खाणी बाणी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फुलवाड़ी आप महकाइंदा। सच फुलवाड़ी हरि निरँकार, एका एक लगाईआ। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा बेपरवाहीआ। जुग जुग खेल करे अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता कर विहार, द्वापर आपणा बन्धन पाईआ। कलयुग वेखे वेखणहार, नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर भेव चुकाईआ। भगत भगवन्त खोल्ह कवाड़, सन्त साजन लए जगाईआ। गुरमुखां देवे नाम आधार, इक्को ओट रखाईआ। गुरसिख मेला विच संसार, संसार सागर पार कराईआ। रुत्त बसन्ती इक्क बहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। लोकमात रुत्त बसन्त, सतिगुर पूरा आप लगाइंदा। हरिजन मेला हरि हरि कन्त, घर साचे सोभा पाइंदा। काया चोली

चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। एका नाम मणीआ मंत, रसना जिह्वा आप जपाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। सो पुरख निरँजण आदि अन्त, जुग जुग आपणा खेल वखाइंदा। कलयुग अन्त बणाए बणत, भगत भगवन्त वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पत्त डाली आप महकाइंदा। पत्त डाली वेखे फुल्ल, फुलवाड़ी आप लगाईआ। हरिजन उपजे साची कुल, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। पुरख अबिनाशी पाए मुल, कीमत करता आपणे हथ्थ रखाईआ। सृष्ट सबाई रहे अनभोल, हरि का भेव किसे ना आईआ। माया ममता प्या घोल, पंज तत्त करे लड़ाईआ। गुरमुख विरला रहे अडोल, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। बन्द किवाड़ा देवे खोल्ह, घर घर विच कर रुशनाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म सद वसे कोल, निज घर बैठा सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फुलवाड़ी आप महकाईआ। सच फुलवाड़ी बाग बगीचा, चार वरन वखाइंदा। नाता तोड़ ऊँचां नीचां, राउ रंकां मेल मिलाइंदा। आपे होए नीकन नीका, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। कड़वा रस कढ्ढे फीका, अमृत मुख चुआइंदा। लेखा जाणे जीव जी का, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फुलवाड़ी वेख वखाइंदा। सच फुलवाड़ी साचा बूटा, गुरमुख मात लगाईआ। वेखणहारा चारे कूटां, दहि दिशा फोल फुलाईआ। नाम अगम्मी दए हूटा, इक्क हुलार जणाईआ। नाता तोड़े जूठा झूठा, सच सुच्च सरनाईआ। झूठी माया मूधा ठूठा, अमृत मुख चुआईआ। एका नाम दए रस अनूठा, रस आपणा आप जणाईआ। मात गर्भ ना लटके पुट्ठा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत पुरख अबिनाशी गोदी सुत्ता, फिर सके ना कोए जगाईआ। आप सुहाए साची रुत्ता, रुत्त रुत्तड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। सच बगीचा इक्को कली, कली कली महकाइंदा। आदि जुगादि वली छली, वल छल आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम महांबली, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। गुरमुख वेखे गलीओ गली, दर दर घर घर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाइंदा। आपणे रंग रंगे निरँकारा, लोकमात वज्जे वधाईआ। वेखे रुत्त बसन्त बहारा, बिहबल आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां देवे इक्क सहारा, एका नाम पढ़ाईआ। सन्त वखाए इक्क किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। गुरमुख बणाए आप दुलारा, पूत सपूता गोद बहाईआ। गुरसिखां देवे दरस दीदारा, दर घर फेरा पाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसारा, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। एका मन्दिर एका गुरुदुआरा, एका इष्ट देव समझाईआ। एका शब्द नाद धुन्कारा, एका डंका नाम वजाईआ। एका नूर कृष्न मुरारा, एका बंसरी वेख वखाईआ। एका ऐनलहक जैकारा, जै जैकार

इक्क कराईआ। एका नाम सति भण्डारा, सति सतिवादी आप वरताईआ। एका फतहि बोल बुलारा, वाहवा गुरू गुरू गुर वड्याईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। कलयुग वेखे वेखणहारा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। चारों कुण्ट हो उज्यारा, भेव अभेद चुकाईआ। वरन बरन ते वसे बाहरा, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। माली बणे आप निरँकारा, वेस अवल्ला आप वटाईआ। खाली हथ्थ फिरे फिरनेहारा, बण सेवक सेव कमाईआ। सीस उठाए इक्को खारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल रुत्ती रुत्त, हरि रुत्तड़ी मात महकाईआ। हरिजन वेखे साचे सुत, गुरमुख सज्जण आप जगाईआ। मेल मिलावा अबिनाशी अचुत्त, चेतन रूप दए समझाईआ। लेखा जाणे काया बुत्त, पंज तत्त दए जणाईआ। पंच विकारा कढ्ढे कुट, जूठ झूठ दए मिटाईआ। एका देवे नाम अतुट, निखुट कदे ना जाईआ। जिस उपर जन प्रभ जाए तुट्ठ, तिस मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन वेखे हरि निरँकारा, हरि हरि वेस वटाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पावे सारा, फिर फिर आपणी सेव कमाईआ। लख चुरासी खेल न्यारा, घट घट वासी आप कराईआ। कलयुग अन्तिम धूआँधारा, जगत अन्धेरा छाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, साक सैण ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, आदि पुरख कराइंदा। जन भगतां अंदर आपे रला, आपणी सेज सुहाइंदा। सन्त फड़ाए साचा पल्ला, एका पल्लू नाम गंढु पुवाइंदा। गुरमुखां दुआरे आपे खला, निरगुण वेस वटाइंदा। गुरसिख सुनेहड़ा एका घल्ला, लोकमात उठाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, दर दरवेश खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सज्जण मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला विच संसार, जीवण जुगत जग जणाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण नूर नूर धराईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, साची सिख्या सिख समझाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, इक्को वणज वखाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रुत्त आप सुहाईआ। साची रुत्त जाए महक, हरि साचा आप महकाइंदा। हरिजन फुलवाड़ी जाए टहिक, लोकमात रंग चढ़ाइंदा। लख चुरासी रही सहिक, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। किसे हथ्थ ना आए साची आयत, शरअ शरीअत बन्धन पाइंदा। नाता तुट्टे कायनात, कानी तीर ना कोए लगाइंदा। गुर अवतार ना वेखे कोई बाग बगात, बगीचा हरा ना कोए कराइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। दुरमति मैल मस्तक खाक, नूरी नूर ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर,

आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव दरस्स निरँकार, आपणी बूझ बुझाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर धार वखाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अंजील कुरान ना पाए सार, करे खेल बेपरवाहीआ। लेखा जाणे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर लेखा रिहा समझाईआ। लहिणा देणा चुकाए जुग चार, जुग चौकड़ी रहिण ना पाईआ। कलयुग वेखे अन्त बहार, खिज़ा रूप सर्ब दरसाईआ। गुरमुख विरले लए उभार, जिस जन आपणा दरस कराईआ। जन्म जन्म दी लेखे लाए घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रुत्त आप वखाईआ। साची रुत्त सुहाए करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। हरिजन खिड़े मात गुलज़ार, फल फुल आप लगाईआ। पुरख अबिनाशी हो त्यार, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिला, आपणा रंग वखाइंदा। हरिजन बूटा मात लगा, सतिजुग राह चलाइंदा। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त कर सलाह, जन भगतां सिफ्त आप समझाइंदा। मुफ़तो मुफ़ती बण मलाह, बिन दमां सेव कमाइंदा। लेखा जाणे थल अस्गाह, डूँग्घी भँवरी पार कराइंदा। रैहबर बणे आप खुदा, साचा मार्ग आपे लाइंदा। राम रूप आप वटा, रमइया आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रुत्त आप सुहाइंदा। सोहे रुत्त सोभनीक, हरि साचा आप सुहाईआ। हरिजन तेरा दिसे ना कोए शरीक, सिरक्त नेड़ कोए ना आईआ। तेरा साहिब इक्क अनडीठ, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। भगतन तेरा साचा गीत, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। पत्तत पापी करे पुनीत, पतित पावण फेरा पाईआ। सतिजुग चले साची रीत, वरन बरन ना कोए रखाईआ। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, इष्ट गुरदेव एका नज़री आईआ। शब्द निशाना वज्जे ठीक, अणयाला तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। हरिजन साचा संग मिलाउणा, जन्म जन्म दा रोग मिटाइंदा। एका अक्खर वक्खर आप पढ़ाउणा, साची सिख्या सिख समझाइंदा। फड़ फड़ बांहों राहे पाउणा, अन्धले आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत डगमगाउणा, नूर नूराना नूर धराइंदा। लोक परलोक पार कराउणा, दो जहानां वेख वखाइंदा। सति सलोक इक्क सुणाउणा, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। किला कोट इक्क वसाउणा, काया बंक डेरा लाइंदा। जोत नगारा इक्क वजाउणा, अनादी नाद अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रुत्त आप सुहाइंदा। साची रुत्त वेख बहार, हरि आपणी खुशी मनाईआ। गुलशन खिड़े विच संसार, गुल गुंचा गुरमुख रूप वटाईआ। गुरमुख आसा बुलबुल बोले एका वार, चहि चहा इक्क सुणाईआ। तूं साहिब परवरदिगार, तेरे हथ्थ वड्डी

५८८
११

वड्याईआ। तूं भँवरा विच संसार, जन भगत दुआरे फेरा पाईआ। तेरा रंग काली धार, कलयुग जीवां नज़र ना आईआ। तेरे अंदर प्रेम प्यार, सच समग्री इक्क रखाईआ। गुरमुखां देवे वारो वार, रहिमत आपणी आप कमाईआ। तेरी सिफ्त सिफ्त तो बाहर, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन तेरी रुत्त सुहाईआ। हरिजन रुत्तड़ी लोकमात, मित्र प्यारा आप सुहाइंदा। नाम निधाना देवे दात, दाता दानी आप वरताइंदा। नाता तोड़ ज़ात पात, एका ब्रह्म समझाइंदा। मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण वेख वखाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, अन्धले मुख दिखलाइंदा। अमृत बूंद बूंद स्वांत, निझर झिरना आप झिराइंदा। एथे ओथे पुछे वात, सदा सुहेला इक्क अकेला सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तकाइंदा। हरिजन तारे हरि निरँकार, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। पुरख अबिनाशी लए अवतार, जोती जामा वेस वटाईआ। गुरमुख गुरसिख लए उभार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कराईआ। वेखे रुत्त विच संसार, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे चरन ध्यान, मस्तक टिक्का नूरी जोत, नाता तोड़ वरन गोत, इक्क वखाए किला कोट, सचखण्ड दुआरा एकँकारा सच सहारा आदि अन्त श्री भगवन्त, गुरसिख मेला नारी कन्त, कन्त कन्तूहल गुरमुख वेखे साचे फूल, बण मालण तोड़े आपणे नाल जोड़े एका दूआ एका एका बन्धन पाईआ।

★ २१ माघ २०१८ बिक्रमी देवी सिँघ दे गृह मग्घो वाली जम्मू ★

भगत भगवान साचा रंग, श्री भगवान आप चढ़ाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, दो जहान वाली लोकमात फेरा पाइंदा। गीत सुहागी अगम्मी छन्द, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। नाता तोड़ बत्ती दन्द, आत्म अन्तर बूझ बुझाइंदा। सच सुहञ्जणी सेज पलँघ, घर घर विच आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। भगत भगवान एको धार, आदि जुगादि रखाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, हरिजन वेखे चाँईं चाँईंआ। रोग सोग दर्द निवार, दर्दी दर्द वंडाईआ। एका देवे नाम खुमार, राम नाम पढ़ाईआ। एका मन्दिर दए वखाल, घर मेले सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। भगत भगवान इक्को

वेस, आदि अन्त जणाइंदा। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण लए वेख, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। लेखा जाणे ऋषी केश, गवर्धन आपणे रंग रंगाइंदा। सेवक सेवा ब्रह्मा विष्न महेष, साची सेवा इक्क जणाइंदा। भगत भगवन्त लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। दाता दानी जोधा सूरबीर नर नरेश, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर जन भगतां आप वड्याइंदा। भगत भगवन्त एका ओट, आदि जुगादि रखाईआ। वसणहारा साचे कोट, सचखण्ड दुआरा इक्क समझाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। नाम नगारे लाए चोट, अनहद नादी नाद वजाईआ। जगत वासना कढे खोट, माया ममता मोह मिटाईआ। देवे नाम राम अतोट, अतुट भण्डार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका रंग वखाईआ। भगत भगवन्त इक्क मकान, एका घर वखाइंदा। आदि जुगादि खेल महान, जुग जुग वेस वटाइंदा। दाता दानी वड मेहरवान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप उठाइंदा। जन भगतां देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका घर बहाइंदा। भगत भगवन्त साचा मेला, हरि हरि आप कराइंदा। वसणहारा धाम नवेला, लोकमात फेरा पाइंदा। जुगां जुगन्त सज्जण सुहेला, हरिजन साचे आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आप समझाइंदा। भगत भगवन्त साचा राह, हरि सच सच जणाईआ। शब्दी शब्द शब्द सलाह, राम नाम पढ़ाईआ। दीवा बाती इक्क जगा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अमृत बूंद स्वांती दए प्या, अग्नी तत्त बुझाईआ। बोध अगाधी नाद वजा, धुंन आत्मक करे शनवाईआ। दूई द्वैती पड़दा लाह, सति सरूप प्रगटाईआ। जूठ झूठ दए मिटा, सच सुच्च बन्धन पाईआ। ज़ात पात दए खपा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। एका ब्रह्म दए दरसा, ईश जीव मेल मिलाईआ। जगत जगदीश होए सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्ना, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। एका रंग दए चढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। एका अनन्द दए वखा, अनन्द अनन्द अनन्द घर घर विच समाईआ। एका चन्द दए चढ़ा, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। एका छन्द दए सुणा, सोहँ ढोला एका गाईआ। सतिजुग मार्ग दए वखा, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। डुब्बदे पाथर लए तरा, पाहन आपणा चरन छुहाईआ। राग नाद पन्ध दए मुका, इक्क इक्क अवाज़ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला चाँईं चाँईंआ। भगतन मिले आप भगवान, जुग जुग दया कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर पहचान, साचा संग निभाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, अक्खर

वखर आप पढ़ाइंदा। काया मन्दिर वेख मकान, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। तख्त निवासी वड मेहरवान, शाहो भूप फेरा पाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, जीव जंत रंग रंगाइंदा। लख चुरासी देवणहारा दान, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। खेले खेल श्री भगवान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। भगतां मेला मेले आण, लोकमात वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरिजन साचे आपणे घर बहाइंदा। भगत भगवान इक्को दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। भगत भगवान इक्को घर, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। भगत भगवान एका अक्खर जाण पढ़, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। भगत भगवान एका मन्दिर जाण वड़, सच महल्ला सोभा पाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा लड़ लैण फड़, फड़या लड़ ना कोए छुडाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दे पौड़े जाइन चढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत भगवान इक्को मंग, एका आस रखाईआ। भगत भगवान सदा अखण्ड, खण्ड खण्ड ना कोए कराईआ। भगत भगवान प्रकाश विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड वज्जे वधाईआ। भगत भगवान उत्तम जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज माण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साची भगती आप समझाईआ। साची भगती भगत भगवान, जुग जुग आप समझाइंदा। चरन सरन सरन चरन हरि ध्यान, दूजा इष्ट ना कोए वखाइंदा। अन्तर आत्म आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर भगत भगवन्त निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, थिर मात रहिण ना पाईआ। भगत भगवन्त दए अधार, एका बूझ बुझाईआ। लेखा जाणे विच संसार, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। कलयुग अन्तिम आई वार, गुर गुर अवतार कह कह गए पुकार, पुरख अबिनाशी एका ओट रखाईआ। प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान जोत सरूपी जामा धार, जोती जोत करे रुशनाईआ। वरन गोत ते वसे बाहर, रूप रंग रेख ना कोए विच संसार, अकल कल आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि निरगुण आपणा वेस वटाईआ। निरगुण वेस आपे धर, धर धरनी आप सुहाइंदा। भगत भगवन्त लए फड़, जुग जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे इक्को दात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क समझाइंदा। साची वस्त भगतन दात, हरि भगवन आप जणाईआ। सोहँ अक्खर सतिजुग गाथ, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्के मस्तक माथ, पूरब लेखा रहिण ना पाईआ। दो जहानां देवे साथ, एथे ओथे होए सहाईआ । मेल मिलावा त्रिलोकी

नाथ, त्रै त्रै माया फंद कटाईआ। घर घर वेखे हरि रघुनाथ, रघुपत आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठाईआ। भगत भगवन्त इक्क भरवासा, एका ओट जणाइंदा। निरगुण सरगुण दासी दासा, बण सेवक सेव कमाइंदा। काया मन्दिर पावे रासा, गोपी काहन नाच नचाइंदा। हरिभगत हरि दर्शन प्यासा, दे दरस तृखा बुझाइंदा। आदि अन्त ना होए विनासा, अबिनाशी करता आपणे रंग रंगाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखण आया आप तमाशा, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। लख चुरासी तोलणहारा तोला माशा, रत्ती रत्त रत्त ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे घर, भगवन साचा मेल मिलाइंदा। साचा मेला भगत भगवन्त, साचे घर वज्जे वधाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, घट घट रिहा समाईआ। जिस जन बणाए साची बणत, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख वेखे विरला सन्त, हरि सतिगुर होए सहाईआ। नाता जोड़ नार कन्त, कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। रसना जिह्वा मणीआ मंत, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, भगत भगवन्त एका दर वज्जे वधाईआ। एका दर वज्जे वाजा, हरि हरि आप वजाइंदा। मेल मिलावा ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। लख चुरासी साजण साजा, घट घट वेख वखाइंदा। जन भगतां देवे नाम दाता, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। अंदर बह बह गाए गाथा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सर्बकल आपे समराथा, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ ताटा, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आप तराइंदा। भगत भगवन्त इक्को माण, एका मिले वड्याईआ। भगत भगवन्त इक्क निशान, एका तीर चलाईआ। भगत भगवन्त इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त इक्क मकान, एका घर डेरा लाईआ। भगत भगवन्त इक्क विधान, साचा मार्ग जगत वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सदा सलाहीआ। हरिजन वड्याई भगती भगत, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। लेखा जाणे बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी चम्म वेख वखाइंदा। देवे वड्याई विच जगत, जीवण जुगत आप समझाइंदा। आपणे मेलण दा आपे जाणे वक्त, वेद कतेब भेव ना आइंदा। कर किरपा जिस देवे दरस, जगत तृष्ना भुख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका रंग वखाइंदा।

★ २१ माघ २०१८ बिक्रमी राजिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ★

भगतां करे सदा प्यार, हरि भगवन बेपरवाहीआ। भगतां देवे नाम अधार, हरि भगवन दया कमाईआ। भगतां देवे सच शृंगार, हरि भगवन शहिनशाहीआ। भगतां देवे इक्क आधार, हरि भगवन चरन सरन सरनाईआ। भगतां देवे इक्क खुमार, हरि भगवन अमृत जाम प्याईआ। भगतां देवे इक्क जैकार, हरि भगवन साचा सोहला सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जन भगतां सेव कमाईआ। भगवन मेला एकँकार, भगवन आपणा आप कराइंदा। भगतन सेज दए सुवार, हरि भगवन वेख वखाइंदा। भगतन वखाए सच विहार, विवहारी खेल कराइंदा। जुगां जुगन्तर लए अवतार, निर्धन सरधन मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणा संग निभाइंदा। भगतन सोहे साचा बंक, बंक दुआरी आप सुहाईआ। नात तोड़ जीव जंत, हरिजन आपणे संग मिलाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म बूझ बुझाईआ। आत्म अन्तर साचा मंत, सो पुरख निरँजण इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे भगत माण वड्याईआ। भगत वड्याई विच जग, जीवण दाता आप रखाइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, रजो तमो सतो ना कोए तपाइंदा। सच नगारा जाए वज्ज, त्रैकाल दरसी आप वजाइंदा। पार किनारा करे हद्द, अद्धविचकार ना कोए डुबाइंदा। भगत भगवन्त साची यद, साचा बंस बणाइंदा। आदि अन्त दर दुआरे सद्द, साचा मेल मिलाइंदा। भगत प्यार जए वज्झ, एका बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक्क अकेला, जुग जुग खेल कराइंदा। जुग जुग खेल पारब्रह्म, आपणा आप कराईआ। ना मरे ना पए जम्म, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। दो जहानां जाणे कम्म, लख चुरासी भेव चुकाईआ। लेखा जाणे दमां दम, पवण स्वास रिहा समाईआ। भगतां बेड़ा आप बन्न्हू, हरिजू आपणे कंध उठाईआ। राए धर्म ना देवे डंन, वेले अन्त ना कोए सजाईआ। एका राग सुणाए कन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे थाउँ थाईंआ। भगतन वेखे थान थनंतर, दो जहानां फोल फुलाइंदा। भेव चुकाए गगन गगनंतर, गगन मंडल सोभा पाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट आपणा आसण लाइंदा। जुग जुग जणाए आपणा मन्त्र, गुर पीर अवतार आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादि सदा सुतंतर, सति सतिवादी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन सच्चा इक्को मीत, दूसर संग ना कोए रखाईआ। जगत जुग अवल्लड़ी रीत, जुग करता आप चलाईआ। लख चुरासी परखणहारा नीत, दिवस रैण रैण दिवस आपणी सेव कमाईआ। भगतन मेला घर

अनडीठ, अनडिठड़ा धाम वखाईआ। अट्ठे पहर वसे चीत, चित वित ठगोरी कोए ना पाईआ। चरन सरन सच प्रीत, प्रीतीवान इक्क सिखाईआ। आदि अन्त रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे घर, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। भगतन मेला भगतन अंदर, काया बंक सुहाइंदा। लेखा जाणे डूँग्घी कंदर, काया भँवरी फोल फुलाइंदा। वासना मेटे मनुआ बन्दर, आसा तृष्ना नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी दया कमाइंदा। हरिजन नाता तुट्टे मोह, ममता लोकमात रहिण ना पाईआ। जगत विकारा देवे कोह, नाम छुरी इक्क चलाईआ। भेव खुल्हाए सोहँ सो, आत्म परमात्म पड़दा लाहीआ। अमृत आत्म देवे चोअ, निझर झिरना आप झिराईआ। जोत निरँजण करे लोअ, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। हरि का नाम ढोआ ढोअ, हरि जू झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर भाग लगाईआ। गृह मन्दिर लग्गे भाग, काया बंक सुहाइंदा। बन्द किवाड़ी खुल्ल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। निर्मल जोत जगे चिराग, दीवा बाती ना कोए रखाइंदा। शब्द अनादी वज्जे नाद, अनहद राग अल्हाइंदा। आत्म उपजे इक्क वैराग, वैरागी रूप आप अख्वाइंदा। जगत तृष्ना दए त्याग, त्यागी आपणा रंग रंगाइंदा। सुरत सवाणी जाए जाग, शब्द हाणी मेल मिलाइंदा। आपणे हथ्थ पकड़े वाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बंक सुहाइंदा। बंक सोहे बंक दुआर, टेढी बंक पार कराईआ। गृह मन्दिर अंदर होए उज्यार, नूर नूराना नूर रुशनाईआ। नाद धुन धुन जैकार, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ । साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। वाह वाह सतिगुर वज्जे सितार, बिन तन्दी तार हिलाईआ। एका नाद एकओंकार, ओंकारा रूप वटाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। भगतां पैज आप संवार, भगत वछल नाउँ धराईआ। जुग जुग लोकमात लए अवतार, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम खेल अपार, निराकार आप कराईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले वेखे विगसे वेखणहार, अक्ख प्रतख आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता इक्क अतीता ठांडा सीता पतित पुनीता साची रीता आप चलाईआ। साची रीता दो जहान, दो जहानां वाली आप चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए ज्ञान, एका गुण समझाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे मार ध्यान, आत्म अन्तर बूझ बुझाइंदा। नौ खण्ड सत दीप ब्रह्मण्ड खण्ड वखाए निशान, सच निशाना इक्क झुलाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण लेखा जाणे अञ्जील कुरान, खाणी बाणी भेव चुकाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार लेखा जाण श्री भगवान, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। भगतां देवे आत्म दान, साचे सन्तां मिले आण, गुरमुख

वेखे बाल अञ्याण, गुरसिखां बख्शे चरन ध्यान, सरन चरन सच्ची सरनाईआ। दाता दानी नौजवान, देवणहारा जीव जहान, आदि अन्त श्री भगवन्त जुग जुग साची भिच्छया एका एक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे घर, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। गृह मन्दिर वेखे काया तन, त्रैगुण माया बन्धन रखाईआ। बुद्धी मति वेखे मन, मन मनसा खेल कराईआ। जोत निरँजण चढ़े चन्न, चन्द चन्द शरमाईआ। पंचम पंच बेड़ा बन्न, खेवट खेटा सिख जणाईआ। वस्त अमोलक नाम धन, सच ख़ज़ीना विच रखाईआ। दिस ना आए नेत्र अन्न्, भरमे भुल्ली सर्ब लुकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार देवे डंन, डौरू डंका इक्क वजाईआ। जन भगतां किरपा कर श्री भगवन, आपणी बूझ बुझाईआ। एका राग सुणाए कन्न, छत्ती राग भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर मन्दिर इक्क सुहाईआ। दर मन्दिर सदा सुहाउणा, हरि साचा आप सुहाईआ। भगत भगवन्त गीत इक्को गावणा, एका करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण पकड़े दामना, दामनगीर सच्चा शहिनशाहीआ । एथे ओथे होए जामना, साची जामनी आप निभाईआ। अन्तिम अन्त पूरी करे भावना, भावी काल नेड़ ना आईआ। सोहँ सो साचा ढोला गावणा, आत्म परमात्म होए सहाईआ। परम पुरख एका पावणा, अमरापद इक्क वखाईआ। जोती जोत जोत मिलावणा, भगत भगवन्त एका रंग वखाईआ। कलयुग अन्तिम बेड़ा पार करावणा, जिस जन साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान फड़ाए दामना, फड़या पल्लू छुट्ट ना जाईआ। भगत कहे प्रभ सरबग, हरि एका एक बूझ बुझा। कलयुग अन्तिम लग्गी अग्ग, चार वरन रिहा कुरला। कोई सहाई दिसे ना जग, वेख्या थाउँ थाँ। मेरी रखे ना कोई लज, अन्तिम पकड़े ना कोई बांह। पड़दा सके ना कोई कज, सारे बैठे करके नांह। कूड़ नगारा रिहा वज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शणी सच सरना। भगत कहे दस्स भगवान, कलयुग कूके दए दुहाईआ। चारों कुण्ट होई वैरान, रुत्त बसन्त ना कोए वखाईआ। रसना जिह्वा सारे गाण, आत्म परमात्म ना कोए मिलाईआ। जीव जंत होए हैरान, साध सन्त देण गवाहीआ। कलयुग जोधा वड बलवान, सब दे माण रिहा गंवाईआ। घर घर पंच विकार होया प्रधान, सच प्रधानगी इक्क समझाईआ। अंदर बह बह खेल करे शैतान, शरीअत नाल लड़ाईआ। तेरी कोई ना मन्ने आण, गुर अवतार गए समझाईआ। पीर पैग़म्बर होए बेपहचान, नूर ज़हूर ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, किस बिध मिले तेरी सरनाईआ। भगत कहे सुण भगवन्त, मेरी इक्क अरदास। लख चुरासी जीव जंत, कलयुग अन्त होई निरास। कोई ना दिसे साचा सन्त, सच वस्त किसे ना पास। कलयुग माया पाई बेअन्त,

५६५
११

ना कोई करे बन्द खुलास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच धरवास। सच धरवास दे निरँकार, हरिभगत मंग मंगाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाश, गगन मंडल तेरी रुशनाईआ। रवि ससि तेरा प्रकाश, नूर नूर नूर समाईआ। गुर अवतार तेरे दास, पीर पैग़म्बर सेव कमाईआ। तूं शहिनशाह शाह पातशाह शाहो शबास, सचखण्ड साचे तख्त आसण लाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी तेरी रास, जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म गोपी काहन नाच नचाईआ। घट घट अंदर तेरा वास, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा रख आपणे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। साचे भगत सुण ला मीत, हरि साचा सच जणाइंदा। कलयुग अन्त खेल अनडीठ, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। निरगुण चलाए आपणी रीत, सरगुण रूप ना कोए वखाइंदा। लख चुरासी परखे नीत, जीव जंत वेख वखाइंदा। लेखा जाणे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचे भगत रख उडीक, हरि इक्को इक्क जणाईआ। वेद व्यासा लिख के गया तारीक, एका गुण समझाईआ। ईसा कह के गया लाशरीक, मेरा खुदावंद आए चाँईं चाँईंआ। मुहम्मद रखी इक्क प्रीत, सिर अमामा फेरा पाईआ। निरगुण नानक कहे हरि नज़दीक, नेरन नेरा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण रिहा समझाईआ। साचा गुण सुण लै बाल, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल कमाल, कमला रमला आप कराइंदा। गोबिन्द सूरा वेखे लाल, लाल अनमुलड़ा गोद बहाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, लोकमात वेस वटाइंदा। सम्बल वेखे धाम निराल, निहचल महल्ल बणाइंदा। महांबली उतरे आण, नानक लेखा पूर कराइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। सति उठाए इक्क निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। जन भगतां वेखे आपे आण, जन्म जन्म दा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव देवे दस्स, हरि वड्डा वड वड्याईआ। प्रगट होवे पुरख समरथ, निहकलंका नाउँ रखाईआ। हरिजन साचे लए रख, लख चुरासी वेख वखाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान कर किरपा करे वक्ख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एथे गावे आपणा जस, ओथे देवे माण वड्याईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आपणा भेव देवे चुक्क, श्री भगवान चुकाइंदा। दरस वखाए जो बैठा लुक, रूप अनूप धराइंदा। निरगुण शेर पए बुक्क, सिँघ आपणा रूप वखाइंदा। जन

भगतां उपर जाए तुट्ठ, मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, आप आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मिलण दी बिधी आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि मेला हथ्थ, हरि सतिगुर आप रखाइंदा। जुग जुग खेल पुरख समरथ, भेव कोए ना पाइंदा। लख चुरासी पा नथ्थ, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाइंदा। लेखा जाणे अठ सठ, तीर्थ तट फोल फुलाइंदा। वसणहारा घट घट, गृह गृह सेज सुहाइंदा। जोती नूर लट लट, नूर नूराना डगमगाइंदा। दुरमति मैल कट कट, सुच्च संजम इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला अन्त कल, कल काती रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी वड प्रबल, बल आपणा आप वखाईआ। लख चुरासी अछल अछल, हरिजन साचे लए उठाईआ। आत्म सिँघासण एका मल, साची सेजा सोभा पाईआ। शब्द संदेसा एका घल्ल, घर घर विच लए जगाईआ। जोती शब्दी आपे रल, निरगुण निरगुण समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला एका घर, घर मन्दिर इक्क वखाईआ। इक्को घर सोभावन्त, आदि जुगादि सुहाया। खेले खेल जुगां जुगन्त, जुग जुग वेस वटाया। हरिजन मेला हरि हरि कन्त, घर साचे सोभा पाया। कलयुग अन्त बणाई बणत, बसन बनवारी आपणी दया कमाया। एका नाम मणीआ मंत, मन का मणका दए भुवाया। करे खेल वासी पुरी घनक, घनईआ आपणा रूप धराया। गुरमुख सुरती वरे जिउँ सीता सपुत्तरी जनक, जानकी आपणे अंग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे दर, दर मन्दिर आप बणाया। दर मन्दिर वेखे काया गढ़, पंज तत्त वड्याईआ। पुरख अबिनाशी अंदर वड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। साचे पौड़े जाए चढ़, औदां जांदा दिस ना आईआ। निष्अक्खर अक्खर आपे पढ़, करे सच पढ़ाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। सन्त सुहेले आपे फड़, फड़ फड़ बन्धन पाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, भगत भगवन्त सदा सदा आपणी गोद रखाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, नयानक रूप ना कोए जणाईआ। चरन सरोवर नुहाए साचे सर, सर आत्म इक्क वखाईआ। जन भगतां उपर किरपा कर, किरपा निध गहर गुण सागर, संसार सागर पार कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन कर्म करे उजागर, तिस कर्म कांड कोए रहिण ना पाईआ।

★ २१ माघ २०१८ बिक्रमी सरदार सिँघ दे गृह सीड़ जम्मू ★

भगत भगवान मेला जग, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। सन्त सुहेले साचे लभ्भ, हरि पुरख निरँजण खेल वखाइंदा।

गुरमुख साजण प्याए अमृत जाम मदि, रस रसीआ इक्क वखाइंदा। गुरसिख प्यारे कर कर अड्ड, नाम डोरी बन्धन पाइंदा। सति सरूप निशाना गड्ड, सति सतिवादी आप वखाइंदा। जन्म कर्म दी तोड़ हद्द, आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाइंदा। भगत भगवन्त सच संदेसा एका एक जणाईआ। सन्त साजन आपे वेखा, लोचण नैण नैण खुल्हाईआ। गुरमुखां मेटे पिछली रेखा, अगला पन्ध वखाईआ। गुरसिखां मेले साचे देसा, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त होए अधीन, एका दूआ भेव चुकाया। सन्तां लेखा चुक्या लोक तीन, लोक परलोक वेख वखाया। गुरमुखां हिरदा ठांडा सीन, सांतक सति सति कराया। गुरसिख रसना जिवहा रहे चीन, निमख निमख गुण गाया। दाता दानी वड प्रबीन, मेहरवान दया कमाया। लेखा जाणे जिउँ जल मीन, जल मीन आपणी धार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाया। भगत भगवन्त इक्को घाट, हरि साचा सच रखाइंदा। सन्तन मेटे दूर दुराडी वाट, आपणा पन्ध मुकाइंदा। गुरमुखां देवे इक्को दात, साची वस्त झोली पाइंदा। गुरसिखां जोड़े साचा नात, नाता बिधाता इक्क बंधाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द वखाइंदा। शब्द अगम्मी हरि हरि गाथ, चार वरन पढ़ाइंदा। अठारां बरन देवे साथ, नव नौ फेरा पाइंदा। चार चार मेला कमलापात, दहि दिशा वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। वसणहारा इक्क इकांत, अकल कला रूप वटाइंदा। गुरमुख सज्जण वेखे मार झात, आपणा नैण खुल्हाइंदा। गुरसिखां खोल्हणहारा ताक, बन्द ताकी आप तुड़ाइंदा। सन्ता लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाइंदा। भगत भगवन्त वसे साथ, सगला संग रखाइंदा। सगल विसूरे जायण लाथ, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। नाता तुट्टे पूजा पाठ, अठ सठ तीर्थ ना कोए नुहाइंदा। इक्को रखे साची याद, आपणी बूझ बुझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर सुणदा आया फ़रयाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला आप मिलाइंदा। भगत भगवन्त दस्से राह, एका गुण जणाईआ। सन्तन मेला सहिज सुभा, सतिगुर आप कराईआ। गुरमुख नेत्र पेख चढ़े चाअ, नित नित वेख वखाईआ। गुरसिख गुर गुर सीस रिहा झुका, निउँ निउँ मस्तक टिक्का लाहे छाहीआ। सतिगुर पूरा बेपरवाह, दीनन आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आ, वेखणहारा दिस ना आईआ। जन भगतां बख्शे सर्ब गुनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख वड वड्याईआ। समरथ पुरख इक्क इकल्ला आदि जुगादि समाइंदा। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, सोभनीक सोभा पाइंदा। जोती धार आपे रला, शब्दी नाद वजाइंदा। थिर घर फड़ाए आपणा

पल्ला, शब्दी बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि पुरख हो उज्यारा, एका घर दए वड्याईआ। सचखण्ड सुहाए सच मुनारा, छप्पर छन्न ना कोए सुहाईआ। जोती जोत जोत उज्यारा, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाईआ। धरत धवल ना कोए अखाड़ा, मंडल मण्डप ना कोए वड्याईआ। इक्क इकल्ला इकओंकारा, एका आपणा बंक सुहाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, सीस जगदीस आपणे ताज़ टिकाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। पंज तत्त कर अकारा, निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। शब्दी नाद सच्ची धुन्कारा, घट मन्दिर आप वजाईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। खाणी बाणी पावे सारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणा हुक्म मनाईआ। राउ रंकां राज राजाना शाह सुल्ताना दए सहारा, ऊँच नीच जात पात कायनात आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग गेड़ा हरि हरि गेड़, कोहलू चक्की चक्क भुवाइंदा। अन्तिम करे हक़ निबेड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त रहिण ना पाइंदा। निरगुण सरगुण छेड़ा छेड़, जगत खेल आप खिलाइंदा। वरन बरन देवे भेड़, जात पात वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा धन्दा तेरी झोली पाइंदा। कलयुग उठ उठ मलंग, हरि साचा सच जणाईआ। अन्तिम वेला वजा मृदंग, झूठ मृदंगा हथ्थ फड़ाईआ। सृष्ट सबाई होई नंग, साचा पड़दा उत्ते ना कोए पाईआ। आत्म परमात्म अंदर झूठी कंध, ढह ढेरी ख़ाक ना कोए कराईआ। तेरा नशा झूठा गंद, रसना जिह्वा करे हल्काईआ। किसे ना आवे परमानंद, निज़ानंद ना कोए रसाईआ। गा गा थक्के बत्ती दन्द, हरि का दरस कोए ना पाईआ। हरि जू सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना लए बदलाईआ। चारों कुण्ट भेख पखण्ड, आपणा बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अनुभव आपणी धार चलाईआ। अनुभव धार श्री भगवान, हरि साचा सच चलाइंदा। जोधा सूर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप हिलाइंदा। सन्त सुहेले वेखे आण, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। गुरमुखां चुक्के झूठी काण, दूसर आण ना कोए पुवाइंदा। गुरसिखां देवे इक्क ज्ञान, गोझ ज्ञान समझाइंदा। सोहँ अक्खर साचा नाम, सतिगुर पूरा झोली पाइंदा। एथे ओथे देवे माण, सगला संग रखाइंदा। किरपा कर श्री भगवान, विष्नूं आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे नाम निधान, तिस आपणा बन्धन पाइंदा।

★ २१ माघ २०१८ बिक्रमी सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड कोटली शाह दौला जम्मू ★

हुक्मे अंदर चले जमाना, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। आदि जुगादि खेल श्री भगवाना, जुग करता आप चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मेटे कूड़ निशाना, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। करे खेल वाली दो जहानां, आपणा भेव चुकाइंदा। लख चुरासी होए हैराना, जीव जंत साध सन्त हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम काली धार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सृष्ट सबाई गई हार, धीरज जत ना कोई रखाईआ। जीव जंत करे विभचार, सति सन्तोख ना कोए दृढ़ाईआ। धर्म कर्म होए खुआर, साची गंढु ना कोए पुवाईआ। एका विसरया हरि निरँकार, नौ खण्ड पृथमी दए दुहाईआ। सत्तां दीपां हाहाकार, जगत दुहागण रंड रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जमाना दए समझाईआ। जगत जमाना अन्धेरा अन्ध, साचा चन्न ना कोए चढ़ाइंदा। घर घर दर दर दिसे विकार गंद, आत्म परमात्म मेल ना कोए कराइंदा। रसना जिह्वा गा गा थक्की बत्ती दन्द, आत्म अनन्द ना कोए पाइंदा। दहि दिशा भेख पखण्ड, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाइंदा। बिन हरि नामे सृष्ट सबाई होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। आदि जुगादि खेले खेल सूरा सरबंग, बल आपणा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जमाना वेख वखाइंदा। जगत जमाना वेख भगवान, आपणी दया कमाईआ। चारों कुण्ट पंज शैतान, वरन बरन करन लड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले बैठे बेईमान, आत्म अन्तर ना कोए दरसाईआ। रसना पढ़ पढ़ करन ज्ञान, अन्तर राम ना कोए वसाईआ। नानक गोबिन्द ना करे कोई ध्यान, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर बाणी ना सके पछाण, चार वरन रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, आदि पुरख कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, थिर घर साचे आसण लाइंदा। गोबिन्द सूरा सूरबीर शब्दी सुत एका घल्ला, आप आपणा बल जणाइंदा। नव नौ सत चार पए थरथल्ला, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम आया वेला, वेला वक्त ना कोए जणाईआ। खेले खेल गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द वेस वटाईआ। वसणहारा सद निवेला, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। गुरमुखां बणे सदा सुहेला, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग खेल पुरख अगम्म, आदि जुगादि कराइंदा। कलयुग वेखणहारा चन्न, चन्द चांदना नज़र किसे ना आइंदा। चार कुण्ट अन्धेरा

अन्ध, रैण अन्धेरी ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गोबिन्द आसा इक्क भरवासा, शाहो शबाशा पूर कराइंदा। शाहो शाबाशा हरि सुल्तान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुग जुग वेखे मार ध्यान, निरगुण दाता सच्चा शहिनशाहीआ। नानक नाम सति कर प्रधान, जीव जंत गया समझाईआ। आत्म ब्रह्म इक्क ज्ञान, दूजी होर ना कोए पढ़ाईआ। ज़ात पात ना कोए निशान, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। गोबिन्द सूरा हो मेहरवान, अमृत जाम गया प्याईआ। इक्को ओट पुरख अकाल, दूजी कोए ना सरन सरनाईआ। लेखा जाणे दीन दयाल, दीन दुनी आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्त होए बेहाल, चारों कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। घर घर कूके काल, डौरू डंका इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जमाना वेख वखवाईआ। जगत जमाना चले धार, धरनी धरत रही कुरलाईआ। सृष्ट सबाई होया विभचार, जूठ झूठ बन्धन पाईआ। साध सन्त ना पावे कोई सार, हरि कन्त नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। गोबिन्द अन्तिम मंगी मंग, दोए जोड़ करे निमस्कारा, पुरख अबिनाशी तेरा संग, आदि जुगादि इक्क सहारा, तेरी सेज मेरा पलँघ, सेज मेरा पलँघ तेरा अवतारा। कलयुग अन्त होए अन्धेरा अन्ध, चारों कुण्ट ना पावे कोई सारा। प्रगट होणा गुणी गहिन्द, निहकलंक नरायण नर अवतारा। इक्क सुणाए सहागी छन्द, चार वरन करे प्यारा। जन भगतां तुट्टी देवे गंढु, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल न्यारा। जगत जमाना रिहा रो, चार कुण्ट चार वरन कुरलाईआ। दुरमति मैल ना सके कोई धो, निर्मल नीर ना कोए प्याईआ। आत्म परमात्म सके ना छोह, दूई द्वैती पड़दा विच रखाईआ। निर्मल जोत जगे ना को, जोत जोत ना कोए रुशनाईआ। अनहद शब्द ना मिले ढोआ ढोअ, धुनी राग ना कोए सुणाईआ। अमृत सीर सके ना कोई चोअ, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख दर दरवेश फेरी पाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आया, हरि साचा खेल कराइंदा। लख चुरासी वेख वखाया, वेखणहारा दिस ना आइंदा। सम्मत सम्मती दए मिटाया, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। सम्मत अठारां विच संसार, वीह सौ बिक्रमी नाल रलाईआ। राज राजान शाह सुल्तान होण खुआर, सीस ताज़ ना कोए टिकाईआ। चार कुण्ट हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पीर पैग़म्बर ना कोए सहार, मुल्ला शेख़ मुसायक संग ना कोए निभाईआ। पंडत पांधे करन गिरयाज़ार, हिसाब किताब कम्म किसे ना आईआ। गुरमुख विरले

करन पुकार, सतिगुर पूरा गुरू गोबिन्द मिले चाँईं चाँईंआ। करे खेल अपर अपार, नाम डंका इक्क वजाईआ। वीह सौ उन्नीं हो त्यार, आप आपणा बल धराईआ। मुस्लिम सुन्नी कर खुआर, देवे अन्त सजाईआ। चौदां तबक हाहाकार, अल्ला राणी नैण शरमाईआ। मुहम्मद नाता तुट्टे चार यार, यारी यारां नाल ना कोए निभाईआ। ईसा मूसा करे पुकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत उंनी सब दी चोटी जाए मुंनी, सीस ताज़ ना कोए टिकाईआ। सम्मत उंनी होए उन्नीसा, एका नाया जोड़ जुड़ाइंदा। वेखणहारा अंजील कुरान हदीसा, बेऐब परवरदिगार फेरी पाइंदा। मुकामे हक्क खेल शाहो शबीसा, शहिनशाह आपणा भेव चुकाइंदा। सब दा करे खाली खीसा, राज राजान शाह सुल्तान दर दर आप फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सम्मत उंनी जाए चढ़, लोकमात वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आवे डर, भय भयानक सर्ब जणाईआ। इक्क दूजे दा छड्डुण लड़, सगला संग ना कोए निभाईआ। गुरमुख विरले एका अक्खर हरि का नाम लैण पढ़, एका ओट सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सम्मती खेल रचाईआ। सम्मत सम्मती मारे मार, वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जगत लोकाई होए खुआर, लोक परलोक खेल कराइंदा। चोदां लोक हाहाकार, विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द करे पुकार, दोए दोए जोड़ सीस सर्ब झुकाइंदा। मंडल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड करे विचार, हरि जू की की खेल कराइंदा। लेखा जाणे गोबिन्द सूरा वड बलकार, नाम खण्डा चण्ड प्रचण्डा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सृष्ट सबाई मारे मार, मेट मिटाए दुष्ट हँकार, विभचार कोए रहिण ना पाइंदा। सम्मत वीह सौ बीसा खेल अपारा, निरगुण दाता आप कराईआ। जोधा सूरबीर निरगुण निरवैर निराकारा, मूर्त अकाल अजूनी रहित डगमगाईआ। सृष्ट सबाई आर पार किनारा, मँझधारा दए रुढ़ाईआ। साचा मार्ग विच संसारा, सति सतिवादी आप लगाईआ। नौ खण्ड प्रिथवीं वखाए इक्क दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेऐब परवरदिगारा, ऊँचो ऊँच महल अटल अचल्ल करे रुशनाईआ। एका नाम शब्द जैकारा, सृष्ट सबाई दए सुणाईआ। एका डंका जगत जैकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा करे खेल हरि जगदीसा, जगत जुगत जोग आपणे हथ्थ रखाईआ। बीस बीसा श्री भगवाना, आपणा खेल जणाइंदा। सति सतिवादी सति निशाना, नौ खण्ड पृथ्मी आप झुलाइंदा। पंदरां कत्तक दिवस महाना, थित वार वंड वंडाइंदा। दिल्ली तख्त भूप राजाना, शाहो आपणा आसण लाइंदा। तख्त निवासी हो मेहरवाना, धुर फ़रमाणा इक्क समझाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेशवर निरगुण रूप सति सरूप पहरे बाणा, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाइंदा। शब्द

नाद इक्क सुनाणा, ब्रह्माद गाए साचा गाणा, रागी राग ना कोए जणाइंदा। लख चुरासी मन्नणा भाणा, वीह सौ उन्नीं आप जणाइंदा। वीह सौ बीस बिक्रमी जीव जंत होए वैराना, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। सो जन उधरे जिस जन मिले आप श्री भगवाना, कर किरपा आपणा मेल मिलाइंदा। गुरमुख गुरसिख वेखो मार ध्याना, गुर गोबिन्द तेरा राह तकाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल सदा सद करे प्रितपाला, जो जन चरन ध्यान रखाइंदा। अग्गे बड़ा औखा आउण वाला जमाना, जुलम जालम ज़बर सर्ब खपाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी पिछला मेटे सर्ब निशाना, अग्गे मार्ग इक्क रखाइंदा। गुर गोबिन्द सूरा प्रगट होए विच जहानां, चार वरन इक्क सरन ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला खेल लोकमात आप आपणे हथ्थ रखाइंदा।

★ २१ माघ २०१८ बिक्रमी अंग्रेज़ सिँघ दे गृह सतवारी जम्मू ★

श्री भगवान कहे मैं भगतां दास, लोकमात ना कोए वड्याईआ। जुग जुग जन भगत मिलण दी रखां आस, सचखण्ड बैठा ध्यान लगाईआ। मिल मिल भगत बुझे प्यास, तृष्ना तृख रहिण ना पाईआ। बिन भगत मेरी पूरी करे ना कोई आस, आसा पूर ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। साचा भगत साख्यात, मेरा रूप दरसाइंदा। निरगुण सरगुण साचा नात, लोकमात बन्धन वखाइंदा। नाद अनाद सुणाए गाथ, शब्दी शब्द पढ़ाइंदा। अंदर बाहर वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। अन्त वखाए एका घाट, सति किनारा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भेव चुकाइंदा। जन भगत मेरा सच्चा मीत, लोकमात अख्वाइंदा। आदि जुगादी साची रीत, जुग जुग धार जणाइंदा। मेरा उहदा इक्को गीत, एका राग अलाइंदा। सदा सुहेला ठंडा सीत, सांतक सति सति समझाइंदा। सति सतिवादी सच प्रीत, सति पुरख निरँजण आप रखाइंदा। मेल मिलावा धाम अनडीठ, अनडिठड़ी सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत सदा सलाहइंदा। बिन हरिभगत ना मेरी याद, जगत जुगत ना कोए वड्याईआ। हरिभगत साची दाद, प्रेम वस्त झोली पाईआ। सज्जण सुहेला आपे लाध, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत दए वड्याईआ। साचे भगत तेरा सति सरूप, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरे अंदर इक्क सबूत आपणा आप वखाइंदा। तेरी काया पंज तत्त कलबूत, अंदर आपणा आसण लाइंदा। नाता तोड़ जूठ झूठ, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

भगत भगवन्त आप वड्याइंदा। भगत भगवन्त वड्डा वड, हरि देवे माण वड्याईआ। आपणी धार आपणे विच्चों कढ्ढ, आपे लए प्रगटाईआ। आपे नाता जोड़े हड्ड मास नाड़ी रत्त, बूंद रक्त बन्धन पाईआ। आपे देवे साची वथ, आत्म परमात्म वड वड्याईआ। आपणी महिमा जणाए अकथ, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। आप चलाए साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सालाहीआ। बिन भगत ना कोई रंग, रूप रेख मात ना कोई समझाईआ। बिन भगत ना सेज पलँघ, सच सिँघासण ना कोई बहाईआ। बिन भगत ना कोई अनन्द, अनन्द अनन्द ना कोई रखाईआ। बिन भगत ना कोई छन्द, रसना जेहवा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आपणा ज़हूर हरिभगत आप दिखाईआ। हरिभगत साचा नूर, नूर नूराना आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी हाज़र हज़ूर, आप आपणा खेल कराइंदा। वसणहारा दूरन दूर, नेरन नेर पन्ध मुकाइंदा। आसा मनसा मनसा आसा पूर, तृष्ना भुख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन मिले इक्क दुआर, कलयुग अन्त मिली वड्याईआ। लहिणा देणा जुग चार, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, नौ खंड पृथमी फोल फुलाईआ। लख चुरासी नैण उग्घाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। बिन भगत ना कोई संग, सगला संग ना कोई निभाइंदा। नाम वजाए ना कोई मृदंग, सच मर्दानगी ना कोए जणाइंदा। नाम चिल्ला तीर कमान खिच्चे ना कोई कमंद, बाहू बल ना कोई रखाइंदा। बिन भगत सुहागी गाए ना कोई छन्द, सहिँसा रोग ना कोई चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां आप वड्याइंदा। भगत वड्याई जुग जुग चार, जुग जुग आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम कर प्यार, एका बूझ बुझाइंदा। एका नाम शब्द धुन्कार, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। बण विचोला आप ओंकार, साची सेव कमाइंदा। हौला हौला कर कर भार, साची वंड वंडाइंदा। पूरब जन्म पावे सार, लिख्त लेखा फोल फुलाइंदा। कर्मी कर्म लए विचार, निहकर्मी वेस वटाइंदा। जन्म जन्म दए संवार, अजन्मा रोग गवाइंदा। वरन वरन करे खुआर, साची सरन इक्क समझाइंदा। हरन फरन खोल्ह् किवाड़, रूप अनूप दरसाइंदा। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, अग्नी तत्त ना कोई जलाइंदा। देवे दरस अगम्म अपार, रूप अनूप वटाइंदा। करे खेल विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। नाता तोड़ जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। चरन प्रीती निभे नाल, पुरख अबिनाशी बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां आप तराइंदा। तारनहारा इक्को गुर, आदि अन्त अख्वाइंदा। लेखा जाणे धुरदरगाही

धुर, धुर लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। भगत भगवान सुणाए इक्को सुर, राग अनादी नाद अलाइंदा। एका मन्दिर बहण चढ़, जोती जोड़ा आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन रंग आप रंगाइंदा। भगवन रंग रंग अपारा, जन भगतां आप चढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम दे सहारा, सरनगति इक्क समझाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र लोचण नैण आप खुलाईआ। दरसी दरस अपर अपारा, दरसन आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला आत्म घाट, घर घर विच मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ सज्जण साक, साचा बन्धन पाइंदा। लेखा जाणे भविक्त वाक, अनुभव आपणा खेल खिलाइंदा। खोलणहारा बन्द ताक, दर दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे धाम बहाइंदा। हरिजन वेखे साचा धाम, एका एक वड्याईआ। निरगुण उथे वसे राम, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। शाहो भूप सच अमाम, बेऐब डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। बेऐब डेरा आपणा ला, आपणा खेल कराइंदा। साचा सजदा सीस झुका, निउँ निउँ वेख वखाइंदा। साचा काअबा दए वड्या, दोए दोए आबा खेल कराइंदा। तन रबाबा दए वजा, अहिबाब आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत आप वड्याइंदा। हरिभगत तेरा माण, दो जहान रखाईआ। कलयुग अन्त कर पछाण, आपणा मेल मिलाईआ। नाता तोड़ जीव जहान, जीवण जुगत समझाईआ। आत्म अन्तर देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। ईश जीव कर परवान, जगदीशर सोभा पाईआ। काया मन्दिर वेख मकान, बैठा आसण लाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण, सोहँ ढोला रिहा गाईआ। नर नरेशा नौजवान, आपणा बल प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नण आण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। लेखा जाणे दो जहान, भेव कोए ना पाईआ। करोड़ तेतीसा सारे गाण, लख लख शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, बल आपणा आप धराईआ। भगतन मेला सच दरबार, धुर दरबारी आप कराइंदा। खेले खेल अपर अपार, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। शब्दी शब्द कर प्यार, दर घर साचे सोभा पाइंदा। वणजी वणज वणज वापार, साचा हट्ट चलाइंदा। तीर्थ तट पार किनार, अठ सठ भेव मुकाइंदा। भगत भगवन्त कर त्यार, साचा मार्ग लाइंदा। सोहँ शब्द इक्क जैकार, जै जैकार सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला आप मिलाइंदा। भगतन मेला एकँकार, आदि जुगादि कराइंदा। जुग जुग वेखे वेखणहार, आपणा रूप धराइंदा। जुग जन्म दे विछड़े मेले यार, आपणा बन्धन पाइंदा। नाता तोड़ पुरख नार, एका रंग वखाइंदा। बिरध बाल जवान देवे तार,

जिस जन आपणा दरस कराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण वसया बाहर अञ्जील कुरान भेव ना आइंदा। रागी नादी गए हार, गा गा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। महल अटल उच्च मनार, सोभावन्त डेरा लाइंदा। निर्मल नूर जोत उज्यार, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। सचखण्ड वसे सच मिनार, सति सतिवादी डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा आप सुहाइंदा। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक वड्याईआ। दीपक जोत जगे निरँजणा, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। जन भगतां मेल साचे सज्जणा, हरि सज्जण आप कराईआ। दीना नाथ दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। गुरमुख विरले देवे नेत्र अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ साचा मजना, दुरमति मैल धुवाईआ। काल नगारा सिर ते वज्जणा, कूके सर्ब लोकाईआ। गुरमुख गुर दर बह बह सजणा, मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, भगतन वेखे चाँईं चाँईंआ। भगतन मेला चाओ घनेरा, एका एक जणाइंदा। नाता तुट्टे सञ्झ सवेरा, एका रंग वखाइंदा। लेखा चुक्के मेरा तेरा, तेरा मेरा एका रूप प्रगटाइंदा। प्रगट होए सिँघ शेर दलेरा, भबक आपणी आप लगाइंदा। धरत मात दा खुल्ला वेहड़ा, घर घर खुशी मनाइंदा। जीव जंत देवे गेड़ा, गेड़े विच भुवाइंदा। जन भगतां बन्ने आपे बेड़ा, साची सेव कमाइंदा। हरिजन वसे तेरा खेड़ा, दर घर साचा आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणे रंग रंगाइंदा। भगतन रंग चढ़े अमोला, अमुल आप चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण होए तोला, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। सोहँ सो साचा बोला, धारन नाल जणाईआ। लख चुरासी चार कुण्ट चार वरन प्या रौला, हरि का भेव कोए ना पाईआ। कोई कहे मेरा मौला, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। कोई कहे मेरे नाल करके गया कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं सब तों रख्या ओहला, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। पंज तत्त काया वसदा रिहा चोला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे हुक्म फिराईआ। कलयुग अन्तिम बण विचोला, जन भगतां मेल मिलाईआ। भगत दुआरा एका खोल्ला, मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप प्रगटाईआ। साचे भगत मात प्रगटा, प्रगट आपणा खेल जणाईआ। साचा हट्ट आप खुल्ला, वस्त अनडिठ आप वरताईआ। साचा तट आप जणा, तट किनारे डेरा लाईआ। सच राग आप अला, सोहँ ढोला रिहा गाईआ। साचा नाद आप वजा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सहिज सुभाउ मेला भगत, हरि भगवन आप कराइंदा। वेख लोकाई देवे माण जगत, जुगत आपणी आप जणाइंदा। सेवक सेवा आदि शक्ति, शक्ती

आपणी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाइंदा। हरिजन लँघे पार हद्द, हरि सतिगुर आप लँघाईआ। कलयुग कूड़ा छड्डे हठ, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। बण निमाणा जाए ढड्ढ, ढह ढह नीर वहाईआ। आपणे घरों ना देणा कढ्ढ, तुध बिन होर ना कोए सरनाईआ। मेरे बुढ्ढे होए हड्ड, दुःख अवर ना झल्लया जाईआ। कर किरपा मेरा निशाना गड्ड, दोए जोड़ मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे सच्ची सरनाईआ। सच सरनाई देणी चरन, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। नाता तुटया जन्म मरन, मरन जन्म ना वंड वंडाईआ। प्रभू मिल्या घाड़त घड़न, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भगतन एका रंग रंगाईआ। भगतन रंगे रंग मजीठ, साची भगती इक्क जणाइंदा। सतिजुग चले साची रीत, सति सतिवादी आप लगाइंदा। चार वरन दा इक्को गीत, सोहँ ढोला इक्को गाइंदा। पुरख अबिनाशी बणे मीत, बण बण मित्र सेव कमाइंदा। हरिजन काया करे ठंडी सीत, आप आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चे वेख वखाइंदा। हरिजन हरिजू आपे वेख, आपणी खुशी मनाईआ। कर किरपा धारे साचा भेस, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। ना कोई जाणे नर नरेश, शाह पातशाह भेव ना राईआ। लिखणहारा साचे लेख, लिख लिख लेखा आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला लोकमात, हरि साचा सच लगाइंदा। आपे वेखे मार झात, नेत्र नैण आप उठाइंदा। आपे होए सज्जण साक, साचा बन्धन आपे पाइंदा। आपे जाणे साचा घाट, पार किनारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे लेखा जाणे सीआं साढे तिन्न हथ्थ माट, काया माटी फोल फुलाइंदा। आप उतारे साचे घाट, साचा पत्तण इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे एका दान, सतिगुर भिच्छया आपणी इच्छया झोली पाइंदा।

★ २२ माघ २०१८ बिक्रमी मेला राम प्रकाश चन्द दे गृह जम्मू ★

हरी हरि विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर ध्यान, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सोहँ अक्खर इक्क ज्ञान, सर्ब ज्ञाता आप समझाइंदा। लख चुरासी जीवण दान, जीवण मुक्ती आप समझाइंदा। साचा मन्दिर इक्क मकान, विश्व आपणी खेल कराइंदा। धुरदरगाही शब्द निशान, सूरा सरबंग आप झुलाइंदा। निज घर आत्म अनन्द

महान, निज नेत्र आप जणाइंदा। अमृत रस पीण खाण, अनमुलड़ी वस्त वरताइंदा। सच सुच्च सति इश्नान, धीरज जत इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखाइंदा। विष्नूं भगवान हरी हरि, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल कराईआ। तख्त निवासी साचे तख्त आपे चढ़, दो जहानां वेखे चाँईं चाँईंआ। लख चुरासी घाड़न घड़, निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। शब्द अगम्मी एका पढ़, अगम्म अगोचर करे पढ़ाईआ। आदि जुगादी देवणहारा वर, साची भिख्या झोली पाईआ। जुग चौकड़ी जायण हर, हरी हरि आपणा खेल कराईआ। सच भण्डारा इक्को भर, आदि जुगादि वरताईआ। देवणहारा इक्को नर, महांबली भेव ना राईआ। करे खेल अगम्म अपर, आकाश प्रकाश समाईआ। जीवण जुगत जाणे जहान, जुग जुग भेव चुकाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात आप झुलाईआ। सचखण्ड दुआर सच मकान, लोकमात आप प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआर सच विधान, लोकमात आप बणाईआ। सचखण्ड दुआर सच ज्ञान, एका सति करे पढ़ाईआ। सचखण्ड दा सच ध्यान, एका हरि सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्नूं भगवान हरि नरायण, नर नरायण खेल कराइंदा। लख चुरासी वेखे आपणे नैण, नेत्र नैण आप खुल्हाइंदा। जीव जंत चुकाए लहण देण, पूरब लेखा सर्ब मुकाइंदा। इक्को अक्खर आपणा नाउँ आया कहिण, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराइंदा। विष्नूं भगवान हरी हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादि खोल्हे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। गुर अवतारां देवे वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी वेखे अंदर वड़, घट घट जोत रुशनाईआ। लेखा जाणे चोटी जड़्ह, मध आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। विष्नूं भगवान पारब्रह्म, ब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा। आपे जाणे आपणा कम्म, करनी करता आप कराइंदा। हरख सोग ना कोए ग़म, चिंता दुःख ना कोए जणाइंदा। लख चुरासी जीव जंत बण बण जननी जन, घाड़त घड़त वेख वखाइंदा। आदि अन्त जुगां जुगन्त श्री भगवन्त देवणहारा डंन, डण्डा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। विष्नूं भगवान हरी हरि, एका एक रंग वखाईआ। आपणा भाणा आपे जर, आपे बैठा सीस झुकाईआ। जुग जुग वेस आपे धर, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। सन्त सुहेले आपे फड़, आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग आप रंगाईआ। विष्नूं भगवान हरी हरि रंग, हरि करता आप रंगाइंदा। दो जहानां वेख पलँघ, सेज आत्म इक्क सुहाइंदा।

निरगुण निरवैर फड़ मृदंग, साचा नाद आप वजाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सब दी पूरी करे मंग, वेला अन्त वेख वखाइंदा। निरगुण जोत प्रकाश चढ़े चन्द, चन्द चांदना आप चमकाइंदा। वेखणहारा हरि ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार वखाइंदा। प्रगट हो सूरा सरबंग, साहिब सुल्तान फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा आप जणाइंदा। श्री भगवान विष्नूं धार, विश्व विश्व जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यार, ख़ालक ख़लक रिहा वखाईआ। परवरदिगार हो त्यार, लोकमात वेस वटाईआ। लेखा जाणे सर्ब संसार, सरनगति आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत भगवन्त लए उभार, भेव अभेव चुकाईआ। देवे दरस दरस दीदार, दीद ईद चन्द शरमाईआ। नाता तोड़ जगत संसार, एका नाउँ बन्धन पाईआ। आत्म परमात्म इक्क प्यार, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। चार वरन जै जैकार, एका राग अलाईआ। विष्नूं रूप हरि करतार, दर दर घर घर सेवक बण बण सेव कमाईआ। भगवन हुक्मी करे वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्नूं भगवान खेल अपारा, परवरदिगार आप कराइंदा। विष्नूं दोए दोए जोड़ करे निमस्कारा, भगवन आपणी दया कमाइंदा। विष्नूं दर दरवेश बणे भिखारा, भगवन आपणी वस्त वरताइंदा। विष्नूं एका रंग मंगे अपारा, भगवन आपणा रंग चढ़ाइंदा। विष्नूं आपणा मेल मंगे संसारा, भगवन मिल मिल खुशी मनाइंदा। विष्नूं मंगे इक्क तेरा मेरा हुलारा, भगवन दे हुलारा आपणा भेव चुकाइंदा। विष्नूं मंगे तेरा मेरा इक्क दुआरा, भगवन खोल्ह किवाड़ा राह वखाइंदा। दोहां वज्जे इक्क सितारा, शत्रु मित्र एका रंग वखाइंदा। कलयुग अन्तिम अन्त किनारा, जगत नईआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विश्व आपणी धार चलाइंदा। विष्नूं भगवान इक्क विश्वाश, विश्व आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी होए नास, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। भगवन वसे सब दे पास, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आइंदा। आपणी पावे साची रास, मंडल मण्डप खेल कराइंदा। सूरज चन्द बख्श निवास, हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा। लेखा जाणे आकाशा आकाश, कोटन कोटि आकाश चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराइंदा। आपणा बल विष्नूं भगवान, एका एक प्रगटाईआ। प्रगट होए विच जहान, दो जहानां करे रुशनाईआ। साचा चिल्ला तीर कमान, शब्दी शब्द उठाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देवणहारा ज्ञान, आपणा नाउँ करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त मेले आण, आप आपणा बन्धन पाईआ। सति सतिवादी सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। लेखा जाणे ज़िमीं असमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विश्व आपणा भेव चुकाईआ। विष्नूं भगवान सदा अनडिठ, नज़र किसे ना आइंदा। कोटन कोटि लेखा गए लिख, लिख

लिख लेख ना किसे मुकाया। आपणा वंड वंड गए हिस, साची वंडन हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाया। आपणा पड़दा देवे चुक्क, चार कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। प्रगट होए जो बैठा लुक, लुकवीं खेल दए मुकाईआ। बिन हथ्थां बांहां भुजां जोधा सूरबीर पए उठ, तीर तलवार तुफंग कटार शस्त्र बस्त्र ना कोए रखाईआ। लख चुरासी देवे कुठ, शब्दी मार इक्क वखाईआ। जन भगतां उपर आपे तुठ्ठ, आपणी बूझ बुझाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, पारब्रह्म वड वड्याईआ। हरिजन सुहाए रुत्त, रुत रुत्तड़ी आप महकाईआ। वेखणहारा काया बुत्त, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। गुरसिख बाले छोटे सुत, सुत अपराध ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। विष्नूं भगवान विश्व ज्ञाता, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाइंदा। सतिजुग सुणाए साचा साका, सोहँ सो नाउँ प्रगटाइंदा। चार वरन बंधाए नाता, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाइंदा। उत्तम रखे इक्को जाता, ब्रह्म ब्रह्म सर्ब समझाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी राता, सति सतिवादी साचा चन्द वखाइंदा। सृष्ट सबाई पिता माता, हरिजन साचे गोद बहाइंदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथा, लोआं पुरीआं खोज खुजाइंदा। वेख वखाए पूजा पाठा, पुस्तक पुशतक आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला इक्क दुआर, एका घर वड्याईआ। जन्म ना होवे दूजी वार, जन्म मरन पन्ध चुकाईआ। इक्को मेला हरि निरँकार, दूजी सरन ना कोए सरनाईआ। इक्को मन्दिर हरि का दुआर, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। इक्को अंदर महल्ल मुनार, उच्च अटल्ल होए रुशनाईआ। एका सेजा कन्त भतार, पुरख अबिनाशी आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला चाँईं चाँईंआ। हरिजन मेला एका घाट, हरि घाटा पूर कराइंदा। जन्म जन्म दी चुक्के वाट, अगला पन्ध मुकाइंदा। साची सेज वखाए खाट, नाम विछाउणा इक्क वखाइंदा। हरिजन मेला कमलापात, कँवल नैण आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर बहाइंदा। हरिजन साचे बहणा घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। इक्क भगवान लैणा वर, दूजी होर ना कोए कुड़माईआ। दो जहानां चुक्के डर, भय नज़र कोए ना आईआ। साची सेजे जाणा चढ़, मिले मेल हरि रघुराईआ। इक्को पल्लू लैणा फड़, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाईआ। मिल्या मेल श्री भगवान, हरिजन आपणा आप चुकाया। दीपक जगया बिन बाती तेल, तेल बाती ना कोए रखाया। प्रभ मिल्या सज्जण सुहेल, सगला संग रखाया। धाम वखाए इक्क निवेल, अवल्लड़ा धाम आप बणाया। ओथे लेखा गुरू गुर चेल, गुर चेला रूप समाया। जोती जोत

६१० ११

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे आप मिलाया। दर घर साचे आप मिलणा, मेलणहार गोपाल। ना कोई सूरज ना कोई चन्ना, ना कोई ज़िमीं ना असमान। ना कोई हद्द ना कोई बन्ना, ना कोई मन्दिर धर्मसाल। इक्को इक्क श्री भगवाना, नूरो नूर जोत जमाल। ना कोई राग ना कोई कन्ना, ना कोई सुरत शब्द दलाल। जोती जोत आप मिलंना, जोती जोत खेल महान। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत श्री भगवान इक्क दूजे दा कहिणा मन्ना, मन्न मन्न कहिण दोवें होए खुशहाल। चाओ घनेरा प्रेम घना, सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। नेरन नेरा वसा वाली दो जहानां, आप आपणा पड़दा उठाल। पहलों इक्क जट धन्ना मन्ना, दूजी वार गुरमुख गुरसिख धन्ने रखे आपणे नाल नाल। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर रहे चुकन्ना, आलस निंद्रा विच ना आए दीन दयाल। दो जहान श्री भगवान फिरे भन्ना, हरिजन लभ्भे साचे लाल। कलयुग अन्तिम कीआ वणज सुवंना, गुरसिख आपणे घर रख्या सच्चा धन माल। पारब्रह्म खुशी हो हो कहे मेरी छप्परी सोही छन्ना, मेरे भगत मैनूं मिले आण। बिन भगतां मैं लोकमात अन्न्हा, मेरी कोई ना करे पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां मिलाए आपणे दर, करे खेल विष्नूं भगवान।

★ पहली फग्गण २०१८ बिक्रमी हरिभगत दुआर जेठूवाल ★

अलख अगोचर अगम्म अथाह हरि मेहरवान, निरगुण बेऐब परवरदिगारया। आदि जुगादि नौजवान, शाह पातशाह सच्चा निरंकारया। वसणहारा सच मकान, जोती जोत नूर उज्यारया। सो पुरख निरँजण खेल महान, हरि पुरख निरँजण आप करा रिहा। एकँकारा वड बलवान, आदि निरँजण नूर प्रगटा ल्या। अबिनाशी करता देवे नाम, श्री भगवान आप वरता रिहा। पारब्रह्म मंगे दान, आपणी झोली अग्गे डाह ल्या। करे खेल आप महान, हरि का भेव कोए ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, अनुभव आपणा रूप प्रगटा ल्या। अनुभव रूप हरि निरँकार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरे हो त्यार, आपणी रचना आप रचाईआ। मात पित ना कोए अधार, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जाता पुरख नार, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। भूपत भूप राज राजान, शाह पातशाह खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणे हथ्थ रख वड्याई, हरि आपणा खेल कराया। निरगुण घर वज्जे वधाई, निरगुण आपणा रंग चढ़ाया। सचखण्ड खेल अगम्म अथाही, भेव कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा नूर आप प्रगटाया। आपणा नूर आपे रख, हरि

आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रतख, निरगुण वेस वटाईआ। अगम्म अथाह बोल अलख, आपणा नाअरा आप सुणाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे बणे पाँधी राहीआ। आपणे मन्दिर आपे वस, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। आपणा नूर कर प्रतख, जोती जोत डगमगाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, बेअन्त बेपरवाहीआ। आपे लेखा जाणे आपणा आदि जुगादि, आपणा रंग वखाईआ। आप सुणाया आपणा नाद, अनादी आप वजाईआ। लेखा जाणे बोध अगाध, निश्अक्खर इक्क पढ़ाईआ। आपणे अंदर आपा काढ, हरि आपे वेख वखाईआ। आप कराए साचा लाड, निरगुण निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। खेले खेल कमलापात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ। आपणा भेव आपे जाण, हरि आपणी दया कमाइंदा। निरगुण नूर हो प्रधान, दर घर साचे सोभा पाइंदा। तख्त निवासी राज राजान, भूपत भूप आप अख्वाइंदा। दर दरवेश बण दरबान, दर आपणा सीस झुकाइंदा। अलख अगोचर वड मेहरवान, मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला, अलाही नूर डगमगाइंदा। मुकामे हक़ हक़ मकान, करे खेल श्री भगवान, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादी नौजवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्ह्राइंदा। आपणा भेव श्री भगवान, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण दाता वड मेहरवान, आपणी वस्त आप वरताईआ। आपणी इच्छया कर प्रधान, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकान, थिर घर आपणा आसण लाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रंग वखाईआ। शब्दी सुत कर परवान, पूत सपूता गोद सुहाईआ। नाम निधाना एका दान, नर निरँकारा करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। आपणा भेव बेपरवाह, आदि पुरख आप जणाइंदा। आपणा महल्ल आप सुहा, निहचल आपणा आसण लाइंदा। निरगुण जोत कर रुशना, नूरो नूर डगमगाइंदा। सचखण्ड दुआरे सोभा पा, तख्त निवासी आसण लाइंदा। सच निशान सति सतिवादी आप झुला, आप आपणा खेल कराइंदा। अनाद नादी धुन अल्ह्रा, एका राग जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दुआर खोल्ह्र किवाड़, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। गृह मन्दिर सोभनीक, हरि साचा आप सुहाईआ। दूसर ना कोई दिसे शरीक, लाशरीक इक्क खुदाईआ। ना कोई अन्धेरा दिसे तारीक, निरगुण रूप डगमगाईआ। रूप रंग ना कोए बारीक, अनुभव आपणी खेल कराईआ। आपे जाणे आपणी रीत, साचा मार्ग आपे लाईआ। आपे शब्दी सुत करे प्रीत, साचा संग आप निभाईआ। आपे बैठा रहे अतीत, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। आपे गाए अगम्मी गीत, लिखण पढ़न विच ना आईआ।

६१२
११

करे खेल आप अनडीठ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग आपे ला, निरगुण आपणी खेल कराइंदा। थिर घर दुआरा आप खुल्हा, शब्दी सुत बहाइंदा। साची वंड आपणे हथ्थ रखा, हरि आपणी बणत बणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव घाड़त लए घड़ा, घड़न भन्नणहार खेल कराइंदा। वस्त अगोचर झोली पा, एका नाम समझाइंदा। निष्अक्खर वक्खर आप पढ़ा, आपणा राग अल्हाइंदा। साचा मन्दिर दए वखा, अनडिठड़ा धाम वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे करतार, आपणी रचन रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, धुर फ़रमाणा दए सुणाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। शब्दी शब्द सच्चा सिक्दार, शाह पातशाह इक्क प्रगटाईआ। लख चुरासी वणज वापार, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, हरि आपणी दया कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मन्त्र दस्स, आपणा भेव खुल्हाइंदा। एका देवे साचा रस, अमृत रस आप चुआइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, दर घर साचा आप वखाइंदा। तीर निराला मारे कस, शब्दी बाण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। साचा खेल श्री भगवान, आदि पुरख कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे दे दान, एका मंत समझाईआ। लख चुरासी जगत निशान, जीव जंत वड्याईआ। वंडे वंड वड मेहरवान, वंडणहारा इक्क हो आईआ। निरगुण सरगुण कर प्रधान, साख्यात दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। निरगुण सरगुण साची धार, हरि साचा सच चलाइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। लख चुरासी कर त्यार, घट घट आपणा रूप टिकाइंदा। पंज तत्त मेला कन्त भतार, सुरती शब्द बन्धन पाइंदा। नाता जोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना संग रखाइंदा। आत्म धुंन शब्द जैकार, शब्द पंज एका राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेस वटाइंदा। लख चुरासी अंदर वड़, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। शब्द अगम्मी एका पढ़, भेव अभेद जणाइंदा। कर प्रकाश बहत्तर नड़, साचा बन्धन आप रखाइंदा। लेखा जाणे चोटी जड़, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाइंदा। करे खेल एका हरि, हरी नरायण आपणा खेल रचाइंदा। आदि जुगादी पुरख नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। लख चुरासी पावे बन्धन, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। घर घर मस्तक लाए चन्दन, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। लेखा जाणे परमानदंन, निज़ा नंद करे रसाईआ। भेव खुल्हाए

बत्ती दन्दन, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड खण्डन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा राह रखे हथ्थ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। निरगुण रूप सर्बकला समरथ, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ उठाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। घट घट अन्तर आपे वस, गृह गृह डेरा लाईआ। वेद पुराण गाए जस, शास्त्र सिमरत नाल रलाईआ। सरगुण करे पूरी आस, गुर गुर रूप वटाईआ। जोती जाता कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, पवण पवणां विच समाईआ। आपे करे पूरी आस, वड दाता शहिनशाहीआ। लख चुरासी खेल तमाश, जुग करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप जणाईआ। आदि पुरख हरि खेल अपारा, आदि आदि कराया। जुग चौकड़ी बण वणजारा, साचा वणज वखाया। साची वंडन वंडे विच संसारा, साची वंड रखाया। विष्न ब्रह्मा शिव पावे सारा, त्रैगुण अतीता त्रै त्रै मेल मिलाया। पंज तत्त तत्त अखाड़ा, नव नौ नाच नचाया। शब्द अगम्मी साचा लाड़ा, घर घर आप बहाया। बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, अनहद नादी नाद वजाया। वेखे विगसे वेखणहारा, दिस किसे ना आया। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणा रूप वटाया। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, निरगुण सरगुण करे रुशनाया। नाम अमुल सच्चा भण्डारा, जीव जंत आप वरताया। हुक्मी हुक्म सच फ़रमाणा, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाया। तख्त निवासी साचा राणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाया। आपणा भेव हरिजू खोल्ह, एका करे पढ़ाईआ। निरगुण अंदर निरगुण बोल, आपणी बूझ बुझाईआ। आपे तोले साचा तोल, तोलणहारा इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। हर घट अन्तर आपे मौल, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाईआ। आपणा पड़दा देवे चुक्क, सो पुरख निरँजण बेपरवाहया। सचखण्ड दुआरे आपे उठ, आप आपणा बल धराया। सरगुण उपर हरि जू तुट्ठ, दीनन दया कमाया। अमृत सरोवर साचा घुट्ट, एका रस प्याया। निर्मल नूर जगाए जोत, अन्ध अन्धेर गंवाया। पंज तत्त काया किला कोट, साचा मन्दिर बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी रंग रंगाया। लख चुरासी रंगया रंग, हरि आपणी दया कमाईआ। घट घट अंदर सेज पलँघ, आत्म राम हंढाईआ। शब्द अनाद अगम्म मृदंग, अनादी नाद सुणाईआ। नव नौ दुआरे आपे लँघ, घर वेखे चाँईं चाँईंआ। लेखा जाणे कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

६१४
११

कर, साची वंड आप वंडाईआ। साची वंड हरि निरँकार, एका एक कराइंदा। लेखा जाणे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाम रखाइंदा। आपणा भेव खुल्हाए बाणी चार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी खेल कराइंदा। नाता जोड़ वरन चार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंड आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची वंड पुरख अकाल, आदि आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्दी गुर कर दलाल, लोकमात रूप वटाईआ। अन्त लेखा जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जल्वा नूर जलाल, नूर नूराना डगमगाईआ। वसणहारा साची धर्मसाल, सचखण्ड सोभा पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वसे गगन पाताल, लोआं पुरीआं फोल फुलाईआ। लख चुरासी वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे निरँकार, आपणी धार चलाइंदा। जुग चौकड़ी कर त्यार, त्रै त्रै मेला मेल मिलाइंदा। शब्दी शब्द शब्द पसार, गुर गुर रूप वटाइंदा। गुर गुर रूप मात धार, लोक परलोक खेल कराइंदा। दो जहानां हो त्यार, निरगुण आपणा राग अल्हाइंदा। सरगुण देवे इक्क सहार, एका नाद वजाइंदा। एका जोती जोत उज्यार, नूर नूराना डगमगाइंदा। चरन सरन सरन चरन इक्क सहार, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। कागज़ कलम ना लिखणहार, ब्रह्मा वेता भेव ना पाइंदा। चार वेद करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यार, आपणा खेल आप कराइंदा। लोकमात हो त्यार, सरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। जुगा जुगन्तर लए अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। जुग चौकड़ी पावे सार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन निमस्कार, दोए दोए जोड़ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप चलाइंदा। साचा मार्ग चले जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। करे खेल सूरा सरबग, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत त्रैगुण माया लाए अग्ग, बिन सतिगुर पूरे सके ना कोए बुझाईआ। सृष्ट सबाई जाए मघ, सीतल धार ना कोए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे हथ्थ खेल श्री भगवान, आदि जुगादि रखाया। जुग जुग देवे साचा दान, नाम अमोलक झोली पाया। गुर अवतार जगत निशान, निरगुण आपणा आप वखाया। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाण, धुरदरबारी आप जणाया। भूपत भूप राज राजान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच छुपाया। आपणा भेव श्री भगवन्त, आदि जुगादि ना किसे जणाइंदा। लख चुरासी साचा कन्त, सृष्ट सबाई सेज हंढाइंदा। गुर अवतार बणाई बणत, पीर पैग़म्बर सेवा लाइंदा। लेखा जाणे

६१६
११

लख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। भेव अभेदा आदि अन्त, जुगा जुगन्त वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाइंदा। आपणा पड़दा आपे पा, जुग जुग खेल कराया। नव नौ चार चौकड़ी वेस वटा, गुर अवतार रंग रंगाया। पीर पैग़म्बर मसला इक्क सुणा, अल्ला इक्क नाउँ धराया। साचा सजदा सीस झुका, हक़ हक़ीक़त इक्क वखाया। लाशरीक इक्क ख़ुदा, एका नूर नूर दरसाया। बेऐब बेपरवाह, आप आपणा रंग वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अपणा गेड़ा आप भुवाया। जुग जुग गेड़ा गेड़नहार, आदि पुरख अख्वाया। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरे पार, कोटन कोटि रूप वटाया। गुर अवतार बण बण सेवादार, जुग जुग गए समझाया। पीर पैग़म्बर बोल नाअर, ऐनलहक गए समझाया। कागद कलम बण बण लिखार, लिख लिख लेख गए जणाया। हरि का अन्त ना पारावार, बेअन्त नाम ख़ुदाया। लेखा जाणे धुरदरगाही धुर दरबार, साचे तख़्त सच्चा शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाया। साचा खेल श्री भगवान, आपणा आप रचाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रधान, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। नव नौ वेखे ध्यान विच जहान, चार चार कुड़माईआ। इक्क इकल्ला वड मेहरवान, दूजी कुदरत वंड वंडाईआ। तीजे नेत्र सच ज्ञान, चौथे पद रिहा समझाईआ। पंचम मेला हरि भगवान, छेवें छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। सत्तवें सति सतिवादी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। अठ्ठां तत्तां देवे दान, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध बन्धन पाईआ। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, जगत विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए करनेहार। जोती शब्दी आपे रलड़ा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप अपार। नाम निधान फड़ाए पलड़ा दो जहानां पावे सार। सच सिँघासण एका मलड़ा, सचखण्ड निवासी सच्ची सरकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए साची कार। कार कराए करनेहारा, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बीते वारो वार, लोकमात फेरा पाईआ। सेवा कर कर गए गुर अवतार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। पीर पैग़म्बर कर प्यार, निउँ निउँ मंग मंगाईआ। भगत भगवन्त बोल जैकार, जै जैकार गए सुणाईआ। सन्त सज्जण मंग मंग चरन धूढ़ी शार, मस्तक टिक्का धूढ़ लगाईआ। गुरमुख रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरसिख मंगण दरस दीदार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। मुर्शद मुरीद किस बिध दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। काया काअबा खोल्ह किवाड़, दो दो आबा आबे हयात पिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। जग खेल वरताया, पारब्रह्म बेअन्त। जुग चौकड़ी पन्ध

मुकाया, वेखणहारा जुगां जुगन्त। गुर अवतार सेवा लाया, करे खेल श्री भगवन्त। वेद शास्त्र सिमरत आप पढ़ाया, इक्क सुणाया मणीआ मंत। राग अनादी आप अल़ाया, खेले खेल आदि अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सदा सदा बेअन्त। बेअन्त होया आप निरँकार, भेव कोए ना पाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग विच संसार, गुर अवतार सेव लगाइंदा। दे दे आपणा नाम अधार, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। रसना बोल जै जैकार, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहइंदा। कागद कलम कर विहार, जगत शाही बन्धन पाइंदा। अक्खर वक्खर कर त्यार, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। जिस नाम नूं लभ्भे लख चुरासी जीव जंत विच संसार, सो दिस किसे ना आइंदा। अक्खर पढ़ पढ़ करन विचार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी प्रनाइंदा। गुर अवतार हिरदे कर कर गए ध्यान, दोए दोए जोड़ मंगण दान, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणा नाम झोली पाइंदा। बिन रसना देवे ज्ञान, बिन पढ़यां वखाए निशान, बिन चार दीवारी वसे मकान, सूरज चन्द ना कोए सुहान, मंडल मण्डप ना कोए रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अवल्ला, हरि जू आप कराइंदा। पहलों वसाया सचखण्ड महल्ला, दूजे थिर घर डेरा लाइंदा। तीजे विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाया पल्ला, चौथे त्रै त्रै मेला मेल मिलाइंदा। पंचम पंज तत्त काया हल्ला, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाइंदा। छेवें निरगुण सरगुण अंदर वड़या बण के झल्ला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सत्तवें सति सतिवादी आप फड़ाया आपणा पल्ला, एका बन्धन पाइंदा। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां अग्गे खला, मन मति बुध नाल रलाइंदा। नावें नौ दर दरवेश कर कर मेला, आसा तृष्ना बन्धन पाइंदा। दसवें दहि दिशा वेखणहारा वसणहारा उच्च महल्ला, अटल्ल आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लख चुरासी अंदर वड़ जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण सरगुण बध्धा नाता लोकमात मार झात इक्क इकांत ध्यान श्री भगवान लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा रंग वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड घाड़न घड़, हरि अचरज खेल वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बहाए फड़, आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार धरनी धरत धवल उपर धर, पंज तत्त दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणा खेल आप वरताईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, अकल कला अख्वाइंदा। आदि पुरख कर पसार, पुरख निरँजण धार चलाइंदा। सेवा ला गुर अवतार, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा। भगतां देवे नाम आधार, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। सन्तां खोल्हे बन्द किवाड़, साख्यात रूप वटाइंदा। गुरमुखां देवे इक्क सहार, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। गुरसिखां मेल मिलाए विच संसार, संसार सागर पार कराइंदा। लख चुरासी

वेखे वारो वार, जुग जुग आपणा रूप वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार किनार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। नव नौ पन्ध मुका अन्तिम वार, चार चार संग ना कोए निभाइंदा। राती रुत्ती थिती ना कोई वार, सूरज चन्द ना गणत गणाइंदा। पुरख अबिनाशी हो न्यार, आप आपणा भेव छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता पारब्रह्म ब्रह्म रूप अनूप सति सरूप सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद आदि जुगादी आपणी खेल आप वरताइंदा। आपणी खेल वरते करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी पार किनार, लख चुरासी लेखा दए समझाईआ। कलयुग आई अन्तिम वार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। धरनी धरत धवल करे पुकार, खुल्ह्ड़े केस रही वखाईआ। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शंकर करे इक्क पुकार, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। सेवा तेरी कर कर गए हार, तेरा अन्त कोए ना आईआ। लख चुरासी तेरा भण्डार, मुक्क कदे ना जाईआ। किरपा कर आप निरँकार, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह श्री भगवान, एका शब्द जणाइंदा। विष्नूं वेख कर ध्यान, विश्व एका रंग वखाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म दान, लख चुरासी विच टिकाइंदा। शंकर तेरा अन्त निशान, जगत निशाना मेट मिटाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वखाइंदा। जुग चौकड़ी सरगुण रूप हो प्रधान, पंज तत्त काया चोला हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपारा, लोकमात कराया। कलयुग अन्त हो त्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाया। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दरबारी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाया। कलयुग अन्तिम खोल्हे भेव, अभेद वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैग़म्बर लाए सेव, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाईआ। लख चुरासी नाम गाया रसना जिहव, बत्ती दन्द दन्द सालाहीआ। धाम ना पाया किसे निहकेव, निहचल मिली ना किसे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणी खेल आप वरताईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपारा, निरगुण दाता आप कराइंदा। जोती जाता हो उज्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा आप मुकाइंदा। सब दा लेखा श्री भगवन्त, आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम आया अन्त, अन्त दए कराईआ। लख चुरासी जीव जंत, जीवण जुगत गए भुलाईआ। आत्म परमात्म किसे ना मिल्या हरिजू कन्त, नार दुहागण रही कुरलाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जुगा जुगन्त, आत्म अन्तर ना कोए पढ़ाईआ। भरमे भुल्ले झूठे सन्त, माया ममता पई लड़ाईआ। गढ़

बणया हउमे हंगत, आसा तृष्ना करी कुड़माईआ। बिन हरि नामे होए नंगत, सच दुशाला कोए ना पाईआ। भेव ना पाए कोई पंडत, मुल्ला शेख़ मुसायक रहे कुरलाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी कढ्ढ कढ्ढ वखाण पिछली संनद, नाम संनद अन्तर ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण निरगुण लए अंगड़ाईआ। निरगुण रूप निराकार, निरवैर खेल कराइंदा। सचखण्ड दुआर हो उज्यार, सचखण्ड निवासी सोभा पाइंदा। साचे तख़्त बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। एको सुत शब्द दुलार, महांबली आप जगाइंदा। लेखा जाणे विच संसार, जीव जंत आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। कलयुग अन्तिम दस्से खेल, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सज्जण सन्त सुहेले आपे मेल, मेल मिलावा चाँईं चाँईंआ। दीपक जगाए बिन बाती तेल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अचरज पारब्रह्म प्रभ खेल, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए वखाईआ। आपणा रंग दस्से निरँकार, कलयुग अन्तिम आया। मृदंग वज्जे एकँकार, इक्क इकल्ला दए सुणाया। चार वरन करे ख़बरदार, चोथे जुग सोया कोए रहिण ना पाया। चार वेद करे बेदार, चारे बाणी दए हिलाया। चारे खाणी करे विचार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पड़दा लाहया। जुग जुग दा लहिणा देणा कर्ज़ दए उतार, मकरूज आपणा फेरा पाया। नेत्र नैणां वेखे आप संसार, एका नैण आप खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। कलयुग अन्तिम लहिणा लैणा, हरि जू आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सब ने भाणा सहिणा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे दो जहानां साक सज्जण सैणा, सगला संग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा दए समझाईआ। आपणा लेखा बोध अगाध, हरिजू आप जणाइंदा। पकड़ उठाए कलयुग साध, लोकमात फेरा पाइंदा। पूजा पाठ वेखे धुन संख नाद, रोज़ा बांग सजदा भेव चुकाइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सज्जण निरगुण सरगुण लए लाध, घर घर आपणा फेरा पाइंदा। शाह पातशाह राज राजान जीव जहान करन अपराध, आपणा बेड़ा ना कोए उठाइंदा। कलयुग दिसे अन्धेरी डूँग्घी खाड, कन्ढा पार ना कोए कराइंदा। नौ खण्ड पृथमी सत दीप आपणा आपणा निशाना रहे गाड, अन्त निशाना कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव करन फ़रयाद, नेत्र नैण नीर सर्ब वहाइंदा। गोबिन्द सूरा करे याद, पुरख अकाल इक्क मनाइंदा। मुहम्मद कहे मेरी मुक्की मुनयाद, अग्गे लेखा ना कोए जणाइंदा। ईसा कहे मेरी अन्तिम हाद, मूसा पल्लू ना कोए फड़ाइंदा। राम कहे मैं राम नाम गया

छड्ड, अग्गे खाली हथ्थ वखाइंदा। कृष्न कहे मैं आपणी हथ्थीं मेटी यादव यद, आपणी यद ना कोए बणाइंदा। भगत कहिण भगवान कोलों असीं लैणा अद्ध, साची वंडण इक्क वखाइंदा। सन्त कहे कोटन कोटि राज राजान गए लद, शाह पातशाह कोई रहिण ना पाइंदा। गुरमुख कहिण पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे दुआरे लए सद्द, इक्को आस तकाइंदा। गुरसिख कहे सतिगुर मेरा लख चुरासी नालों करे अड्ड, आपणे चरनां जोड़ जुड़ाइंदा। पुरख अकाल कहे मैं प्रेम अंदर गया बज्झ, दूजा नाता ना कोए रखाइंदा। हरिभगत हरिजन तेरी काया मन्दिर अंदर बैठा सज, मन्दिर मस्जिद गुरदुआर हथ्थ किसे ना आइंदा। कर प्रेम आपणे विच्चों कढ्ढ, तेरा पड़दा आप उठाइंदा। जगत लाज लोक छड्ड, लज्जयावन्त तेरा मेला मेल मिलाइंदा। लख चुरासी भाण्डा जाणा भज्ज, वेले अन्त ना कोए बचाइंदा। कोटन कोटि मक्के काअबे करन गए हज्ज, साचा इमाम नज़र किसे ना आइंदा। कोटन कोटि संख नाद गुर दर मन्दिर रहे वज्ज, आत्म धुन ना कोए सुणाइंदा। कोटन कोटि साध सन्त घर गए छड्ड, मन की वासना ना कोए मिटाइंदा। कोटन कोटि जटा जूट बैठे डूँग्घी खड्ड, काया कवरी भँवरी पार ना कोए कराइंदा। कोटन कोटि कूक कूक राम कृष्न नानक गोबिन्द ईसा मूसा पैग़म्बर रहे सद्द, आत्म परमात्म नाद ना कोए वजाइंदा। पुरख अबिनाशी कलयुग अन्तिम सब नालों हो के बैठा अड्ड, पल्लू ना किसे फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा पड़दा आप चुकाइंदा। निरगुण आपणा पड़दा लाउणा, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाउणा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। शब्दी सुत इक्क उठाउणा, उठ उठ दए सलाहीआ। लख चुरासी वेख वखाउणा, जीव जंत भेव ना राईआ। सम्मत सम्मती पन्ध मुकाउणा, पूरब लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खेल दए कराईआ। करे खेल हरि गोबिन्द, करनहार करतारा। सृष्ट सबाई वेखे चिन्द, चिंता रोग जगत भण्डारा। चार वरन हरि की करे निन्द, दीन मज़्हब लग्गा अखाड़ा। किसे ना मिले अमृत आत्म सागर सिन्ध, फिर फिर थक्के अठ सठ तीर्थ तट किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग करे खेल अपारा। कलयुग अन्तिम खेल अवल्ला, हरिजू आप कराईआ। प्रगट होए इक्क इकल्ला, दो जहानां वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाया पल्ला, एका पल्लू नाम जणाईआ। जोती शब्दी आपे रला, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। जन भगत वसाए इक्क महल्ला, महल अटल करे रुशनाईआ। हथ्थ विच फड़या इक्को भल्ला, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। नेत्र नैण नीर विरोले राणी अल्ला, आलमीन रही कुरलाईआ। कलयुग अन्तिम होया झल्ला, दहि दिशा फेरा पाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मारे हल्ला, आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा

६२०
११

शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि निरँकारा, निरगुण निरवैर अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा निहकलंका नाउँ धराइंदा। गोबिन्द मेला सुत दुलारा, सति सतिवादी आप उठाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साची धारा, धरनी धरत धवल कराइंदा। राज जोग इक्क अखाड़ा, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे सम्मत अठारां, वीह सौ बिक्रमी नाल रलाइंदा। गुर अवतारां दए हुलारा, चार जुग दे सोए आप हिलाइंदा। पीर पैग़म्बरां वेखे उधारा, पिछला लहिणा आप समझाइंदा। उठो वेखो करो विचारा, हरि जू की की खेल कराइंदा। भगतां मेल अगम्म अपारा, अपरम्पर धार चलाइंदा। रागां नादां वसे बाहरा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण आदि जुगादि सदा जस गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप प्रगटाइंदा। गुर अवतार करो ध्यान, हरि साचा रिहा जणाईआ। करे खेल श्री भगवान, लोकमात वेस वटाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप जणाईआ। सचखण्ड लग्गा दरबार, हरि दरबारी आप लगाया। हुक्मी हुक्म कर वरतार, सच संदेश इक्क सुणाया। उठो सारे गुर अवतार तेई दस रिहा समझाया। इक्क अठु करो विचार, भगत अठारां नाल मिलाया। आदि जुगादी सच प्यार, इक्को शब्दी मेल मिलाया। लहिणा जाणे हरि जुग चार, चौकड़ी आपणा बन्धन पाया। विष्नूं उठ हो त्यार, सच संदेसा इक्क समझाया। ब्रह्मा ब्रह्म कर विचार, पारब्रह्म अलाया। शंकर उठ बन्नू भार, वेला अन्तिम आया। सुरपति वक्त लै विचार, वेला गया हथ्थ ना आया। करोड़ तेतीसा पैणी मार, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। ईसा मूसा संग मुहम्मद रहिणा ख़बरदार, अल्ला राणी दए हिलाया। लेखा चुक्के चार यार, चौथा जुग रिहा पार कराया। चार वरन जाणे हार, चार कुण्ट पए दुहाया। पिछला लेखा मुक्के विच संसार, अगला पन्ध आप लगाया। खेले खेल आप करतार, करता पुरख हुक्म वरताया। सूरज चन्द गए हार, चल चल पन्ध ना किसे मुकाया। लिख लिख लेख कर विचार, आदि अन्त ना किसे जणाया। जो उपज्या सो गया हार, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा खेल कराया। अन्तिम खेल करे भगवान, आपणा भेव जणाईआ। कलयुग मात हुक्मरान, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराईआ। घर घर वड़या पंज शैतान, शरअ शरीअत नाल लड़ाईआ। किसे ना दिसे हक़ मकान, मन्दिर मस्जिद पई दुहाईआ। कोई कहे वेद पुराण, कोई शास्त्र सिमरत रिहा सालाहीआ। कोई कहे गीता ज्ञान, कोई कहे अञ्जील कुरान वड्याईआ। कोई कहे खाणी बाणी महान, बाण निराला तीर चलाईआ। नानक कहे इक्क श्री भगवान, जो हर घट रिहा समाईआ। शब्द संदेस देवे धुर फ़रमाण, नानक गोबिन्द सेव कमाईआ। कोटन कोटि खाणी बाणी गा गा थक्की गाण, गावत गावत आपणा राग

मुकाईआ। हरि का भेव कोए ना पाण, कूक कूक गया सुणाईआ। अन्तिम प्रगट होए श्री भगवान, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड सच दरबारा, हरि साचे सच लगाया। आप उठाए गुर अवतारा, गुर गुर एका हुक्म सुणाया। प्रगट होया हरि करतारा, निरगुण आपणा रूप वटाया। गोबिन्द मेला विच संसारा, पुरख अबिनाशी आप मिलाया। सम्बल वसे धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाया। भगतन मेला अपर अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आप चलाया। साचा मार्ग पुरख अगम्म, एका एक लगाईआ। हरख़ सोग ना कोई ग़म, चिंता दुःख ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्तिम गुर अवतार पीर पैग़म्बर रोवण छम्म छम्म, गिरयाज़ार रहे सुणाईआ। असीं दस्स के आए तेरा नाउँ जपणा दमा दम, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। तेरे नेत्र नैणा होए अन्न्, दोए लोचण जगत लोकाईआ। तूं देवण आया डंन, ना सके कोए छुडाईआ। जो घड़या देणा भन्न, किसे ना चले कोए चतुराईआ। जिस तेरा कहिणा ल्या मन्न, तूं उस दा सच गुसांईआ। ना कोई तत्तव ना कोई तन, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोए वखाईआ। ना कोई राग ना कोई कन्न, ना कोई तन्द सितार वजाईआ। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, चार दीवार ना कोए बणाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मण्डप ना कोए वखाईआ। ना कोई माया ना कोई धन, ना कोई वस्त रूप वटाईआ। ना कोई ठग्ग चोर यार लाए संन, हथ्थो हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। तेरी किरपा श्री भगवन, गुर अवतारां मिले वड्याईआ। तूं सब दा जननी जन, तूं इक्को पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी चरनी डिगे आ के दर, दर दरवेश फेरा पाईआ। आए दर तेरे दरबार, तेई दस अठारां देण दुहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणया रिहा यार, मित्र बण बण संग निभाईआ। असीं तेरा दस्सदे रहे इक्क प्यार, सत्थर यार हंढाईआ। तेरा नाउँ पुरख अकाल, अकल कला तेरी शहिनशाहीआ। तेरा त्रैगुण वड्डा जाल, लख चुरासी रिहा फसाईआ। तेरे हुक्मे अंदर काल महांकाल, बैठे सीस झुकाईआ। तेरे हुक्मे अंदर चित्रगुप्त कढ्ढे सवाल, सब दा लेखा रिहा समझाईआ। तेरे लेखे अंदर राए धर्म बैठा कंगाल, खाली हथ्थ वखाईआ। तेरी रहिमत लाड़ी मौत पाए धमाल, मुख आपणा घूँगट लाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव खण्ड दिसे ना कोए दलाल, जगत दलील रिहा वखाईआ। किरपा करे आप कृपाल, मेहरवान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार हो इक्ठ्ठे, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। साहिब सुल्तान तेरे अग्गे ढठ्ठे, आपणा बल मुकाया। पंज तत्त लुकाया विच कोरे लठ्ठे,

६२२
११

अन्त ख़ाकी भेंट चढ़ाया। तेरे चरनां हेठां वसे, चरन धूढ़ी टिक्का लाया। जुग जुग मार्ग सानूं दस्सें, आपणा राह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सरन पए सरनाया। तेरी सरन इक्क करतार, एका मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी तेरा विहार, विवहारी खेल कराईआ। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं भगतां हथ्थ रखें विच संसार, जगत पत्त रखाईआ। बण बरदा होएं सेवादार, जाचक बण बण सेव कमाईआ। नाता तोड़ पुरख नार, नर नरायण आपणा रूप दृढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सगला संग निभाईआ। सतिजुग तेरा सच विहार, त्रेता तेरा रंग समाईआ। द्वापर वेखे आप गिरवर गिरधार, गोपी काहन नाच नचाईआ। कलयुग काला सूसा कर शंगार, तन बस्त्र इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। मंगी मंग मेरे परवरदिगार, दोए जोड़ सीस झुकाया। चौदां सदीआं नाता चार यार, चौदां तबक रंग रंगाया। चौदां लोक खेल अपार, चौदां विद्या रही जस गाया। चौधवीं चन्न होया शर्मसार, साचा नूर ना कोए जणाया। कलयुग रैण अन्ध अन्धयार, आत्म पर्दा ना कोए उठाया। करे खेल आप अपार, अपरम्पर आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचा इक्क सुहाया। देवे वर श्री भगवन्त, आपणा भेव जणाईआ। मेरा लेखा जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। सदा मेला साचे सन्त, अंग संग समाईआ। पूरब लेखा मणीआ मंत, रसना जिह्वा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए समझाईआ। मेरा भेव हथ्थ भगत, हरि भगवान आप जणाइंदा। आदि जुगादि विच जगत, जुग जुग वेस वटाइंदा। लेखे लग्गे बूंद रक्त, जो जन मेरा ध्यान लगाइंदा। नाता तुट्टे कीट हस्त, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। नाम खुमारी रखे मस्त, एका रंग चढ़ाइंदा। देवे नाम अमुलड़ी वस्त, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। मेरा खेल अपार, आदि अन्त भेव ना आया। ऋषी मुनी दे सहार, एका राह चलाया। सतिजुग वरत्या विच संसार, सति सति आपणी धार वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाया। भेव खोल्हे हरि भगवन्त, पूरब लहिणा दए जणाईआ। सतिजुग बणाई बणत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंज तत्त काया वेख्या सन्त, गोतम नाम धराईआ। अंदर मेला हरि जू कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, कलयुग माया रूप वटाईआ। गोतम सुत्ता इक्क दुआरा, एका घर वखाईआ। अठ चार चुरासी हज़ार बरस रिहा कुँवारा, अंग अंग ना कोए लगाईआ। करया खेल आप करतारा, आपणी

रचना आप समझाईआ। अहल्या रूप अपर अपारा, त्रैगुण लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी खेल त्रैगुण रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, भेव कोए ना पाइंदा। दो जहानां बिन हथियारों कीता जंग, तीर तलवार ना हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड आप वंडाइंदा। वंडे वंड आप करतार, आपणी खेल कराईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, नारद दिता समझाईआ। नारद मंगी मंग अपार, एका वार झोली डाहीआ। तेरा खेल चले विच संसार, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। पुरख अबिनाशी कहे हस्स, तेरी आसा वेख वखाया। कवण तेरी आसा साची दस्स, रसना जिह्वा नाल मिलाया। करे खेल हरि समरथ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। गौतम कहे त्रैगुण दा पहलों चले रथ, दूजा रंग ना कोए चढ़ाया। पुरख अबिनाशी कहे मैं तेरे वस, जिउँ भावें तिउँ लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा दए समझाया। तूं ज़ोरावर मैं किस तरां करां वस, गोतम अग्गों आख सुणाईआ। पहलों आपणा मार्ग दस्स, जिस बिध डोरी लवां पाईआ। आपणे सीने नाल बन्नां कस, विछड़ कदे ना जाईआ। तैनूं आपणी गोदी चुक्क के गौंदा फिरा जस, मैनूं मिल्या मेरा माहीआ। जे कोई पुछे किथे वसदा मैं तेरे चरनां जावां ढट्ठ, चुम्म चुम्म चरन खुशी मनाईआ। जे कोई पुछे उहदा किथे सच्चा हट्ट, आपणी झोली दयां वखाईआ। जे कोई पुच्छे उहदा किथे प्रेम फट, आपणा तन मन चीर चीर दयां वखाईआ। जे कोई कहे प्रभ होए साडे वस, मैं कहां बिन उहदी रहिमत साडी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरन ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणे गले लगाया। आ वेख सच्चा दान, बिन हथ्थां रिहा वरताया। आ वेख सच मकान, बिन बाडी रिहा बणाया। आ वेख सच ज्ञान, बिन पढ़यां रिहा जणाया। आ वेख त्रैगुण होए प्रधान, पहलों त्रेता मात लगाया। त्रेता देवे सच्चा दान, आप आपणा रंग रंगाया। काम क्रोध लोभ मोह जगत निशान, धरनी धरत धवल दए सुहाया। करे खेल श्री भगवान, आप आपणा भेव जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद छुपाया। गोतम अग्गों बैठा रुस्स, आपणा मुख भुवाईआ। जे तूं मेरा ते मैथों पुच्छ, कवण आस मैं रखाईआ। बिन तेरी प्रीत ना मंगां कुछ, त्रेते मिले ना कोए वड्याईआ। बिन तेरे सदा रहां लुक, लख चुरासी मोहे ना भाईआ। बिन तेरे चरनां मेरा सीस ना जाए झुक, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। मैं जम्मां तेरी कुक्ख, तूं मेरा पिता माईआ। मेरी उतरे फेर भुक्ख, तृष्ना जगत ना होर रखाईआ। कर किरपा जे जावें

तुड्ड, तेरा विगड़ कुछ ना जाईआ। मैनूं दिसदा तेरे घर अनमुलड़ी लुट्ट, मैं लुट्टण आया चाँईं चाँईंआ। जे तूं लुके मैं लुकण नहीं देणा किसे गुठ, दहि दिशा वेख वखाईआ। मैं तेरा चरन फड़या घुट्ट, छुट्ट कदे ना जाईआ। तूं भगवान मैं भगत इक्क दूजे नाल गए जुट, वाह वाह प्रेम दी होए लड़ाईआ। मैं हथ्थीं फड़या तेरा गुट्ट, मेरे मन वज्जी वधाईआ। वाह वाह तेरा भण्डारा मिल्या अतुट, मुक्क कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मिले तेरी सच्ची सरनाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, आपणी दया कमाइंदा। आ वेख मेरे साचे लाल, तेरा साचा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी बीते काल, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। तेरी लेखे लाए घाल, कीती घाल लेखे पाइंदा। तेरा पिछला लेखा दए वखाल, हरिजन साचे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि हरि पुरख जणाया। पुरख अबिनाशी खेल कराउणा, निरगुण निरगुण रूप धराया। साचा मेला मेल मिलाउणा, मिल मिल खुशी मनाया। आपणा रंग रंग रंगाउणा, रंग उतर कदे ना जाया। मृदंग मृदंगा इक्क वजाउणा, सारंग सारंगा ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाया। गोतम कहे मेरे भगवान, मेरी इक्क अरज़ोईआ। मैं कल्ला बाल नादान, मैनूं मिले किते ना ढोईआ। तूं दाता देवणहारा दान, वड्डी तेरी रसोईआ। मेरा तन कर परवान, दर आपणे लै टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, इक्को मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी कहे सुत, भेव अभेद खोलू। तेरी सुहाई साची रुत्त, आदि जुगादी बोल। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत्त, जुग जुग वजाए ढोल। निरगुण सरगुण पए उठ, नव नौ तोले साचा तोल। आपणा लेखा लैणा पुछ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम शब्द अनमोल। नाम अनमोला सुणया संदेसा, वज्जी इक्क वधाईआ। मेहरवान होया नर नरेशा, निरगुण दया कमाईआ। मेरा जाणे अगला लेखा, पिछला लेखा लेखे विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त दे वरताईआ। एका वस्त देवे हरि मीत, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। गोतम तेरी चले रीत, सतिजुग त्रेता रूप वटाइंदा। द्वापर वेखे खेल अतीत, त्रैभवण धनी खेल वखाइंदा। कलयुग अन्त हरि अनडीठ, अनडिठड़ा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्को हरि, दूजा भेव आप खुलाइंदा।

६२५
११

★ २ फग्गण २०१८ बिक्रमी हरिभगत दुआर जेठूवाल ★

गोतम कहे सुण साचे राजन, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। मैं ग़रीब तूं ग़रीब निवाज़न, मेहरवान बेपरवाहीआ। आदि जुगादि साजें साजन घड़न भन्नण खेल कराईआ। शब्द अगम्मी मार अवाज़न, आपणा मेल मिलाईआ। सतिजुग चलाया सच जहाज़न, सति सति समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराईआ। गोतम कहे मेरे मीत, पारब्रह्म तेरी सरनाया। मैं गाया तेरा गीत, गीत गीत अलाया। तूं वेख मेरी नीत, नीतीवान तूं बेपरवाहया। मैं वसाया तैनूं चीत, घर मन्दिर इक्क बणाया। तूं वेख धाम अनडीठ, अनडिठड़ा रूप वटाया। मैं तप्त तूं ठांडा सीत, अमृत मेघ इक्क वखाया। मैं पापी तूं पत्तत पुनीत, पत्तत पापी दे तराया। मैं हारया तूं गया जीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाया। मेहरवान बेनज़ीर, रहिमत रहिमान आप कराईआ। आपे बदलणहार तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। मेरे चरन उत्ते कढु लकीर, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। मैं दो जहानां पड़दा देवां चीर, भेव अभेद विच रखाईआ। त्रैगुण माया लाए पीड़, वेखे सर्ब लोकाईआ। त्रैगुण बन्नां बीड़, त्रेता एका अंक बणाईआ। एका पावां सच ज़ंजीर, आप आपणी डोर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। त्रैगुण माया नारी रूप, रूप अनूप आप दरसाया। करया खेल साचे भूप, भूप भूपत रूप वटाया। वेखणहारा दहि दिशा कूट, ब्रह्मण्ड खण्ड खेल कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाया। धुर फ़रमाणा श्री भगवन्त आदि पुरख आप जणाईआ। तेरी महिमा मात अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। मैं तेरी बणाई बणत, तूं मेरी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुण साचा झोली पाईआ। साचा गुण हरि भगवान, एका एक जणाइंदा। गोतम वेख मार ध्यान, चरन ध्यान इक्क जणाइंदा। सतिजुग त्रेता तेरा रंग महान, त्रीया आपणा वेस वटाइंदा। द्वापर होवे नौजवान, दोए दोए रूप खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। निरगुण रूप जोधा सूर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्त आपणा मेल कराइंदा। साचा भगत नेत्र रो, नैणां नीर वहाईआ। तेरे चरन जावां छोह, मस्तक टिक्का एका लाईआ। झूठा नाता तजया मोह, प्रेम बन्धन इक्क वखाईआ। आपणा तन मन तेरे उत्तों दिता खोह, वस्त अनमुलड़ी तेरी दात एका पाईआ। तूं अमृत आत्म देणा चोअ, सांतक सति सति कराईआ। मैं तेरे जिहा जावां हो, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। तेरा

नेत्र मेरी लोअ, मेरी लोअ तेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। पारब्रह्म पुरख सुजान, देवे माण वड्याईआ। साचे सुत मार ध्यान, एका गुण जणाईआ। कलयुग अन्तिम मेला मेले आण, मिल मिल खुशी वखाईआ। एका राग सुणाए कान, कानी तीर आप लगाईआ। नाता तोड़ जगत विदवान, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या रिहा समझाईआ। साची सिख्या पारब्रह्म, एका एक जणाइंदा। कलयुग अन्तिम पैणा जम्म, लोकमात वेस वटाइंदा। लेखा जाणे दम दम, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। तत्तव तत बेड़ा बन्नृ, खेवट खेट सेव कमाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता दुःख ना कोए रखाइंदा। कर प्रकाश साचा चन्न, चन्न चौधवीं मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग वेला अन्त समझाइंदा। हरि जू दिता एका वर, घर साचे वज्जी वधाईआ। सतिजुग बैठा रिहा दड़, मेरा अन्त लहिणा रिहा मुकाईआ। गौतम चरनी डिगा दड़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरे उत्ते किरपा कर, त्रेता रूप ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल बेपरवाहीआ। गोतम कहे सुण सतिजुग, हरि हरि खेल रचाया। तेरी औध गई पुग, मेरी नार सेव कमाया। जेहड़ा बैठा रिहा लुक लुक, रातीं सुत्तयां दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे धन्दे आपे लाया। सुण सतिजुग कर विचार, रिखप देव आप समझाईआ। तेरा लहिणा मुक्कया विच संसार, वेला अन्तिम रिहा सुणाईआ। अग्गे चले हरि विहार, विवहारी खेल कराईआ। त्रेता आए आपणी वार, वार थित ना कोए वड्याईआ। हरि वड्डा वड घुम्यार, कोटन कोटि घड़ घड़ भाण्डे दए भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिजुग रोवे मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। बौहड़ी बौहड़ी पल्लू मेरा दिता छुडा, छुटया लड़ ना कोए फड़ाइंदा। मेरा खाली दिसे मकां, साचा मन्दिर ना कोए सुहाइंदा। मैं जावां केहड़े थाँ, थान थनंतर कोए नज़र ना आइंदा। मेरी कोए ना पकड़े बांह, साचे दर ना कोए सुहाइंदा। सिर रखे ना कोई छाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। गोतम देवे धीर, दया कमाईआ। तेरा वेला अन्त अख़ीर, एह समझाईआ। जुग चौकड़ी शरअ ज़ंजीर, वंड वंडाईआ। पुरख अबिनाशी बेनज़ीर, नज़र ना आईआ। बदलणहार तकदीर, तदबीर समझाईआ। तेरे सति सतिवादी लथ्थे चीर, त्रैगुण माया करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। सतिजुग अग्गों करे पुकार, एका मंग मंगाईआ। गोतम तैनूं दिता आधार, आप आपणा संग निभाईआ। मेरे विच मिल्या

तैनूं निरँकार, निरगुण सरगुण रूप वखाईआ। उह तेरा सच्चा यार, तेरे मन्दिर फेरा पाईआ। तूं उस दे अग्गे कर पुकार, मेरा लहिणा दए चुकाईआ। एका देवे चरन छार, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोतम अग्गों दए दिलासा, एका गुण जणाइंदा। पारब्रह्म चरन भरवासा, सरन सरनाई इक्क रखाइंदा। प्रभ मिलण दी रख आसा, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। मेरे अंदर जिस दा वासा, तिस आपणा हाल सुणाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकासा, गगनंतर मंडल वेख वखाइंदा। अन्तिम आया हार पासा, पासा फेर ना कोए बदलाइंदा। अगला दस्सां खोल्ह खुलासा, भेव अभेद जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे धन्दे आपे लाइंदा। हरि जू धन्दा साची कार, करता पुरख आप कराईआ। सतिजुग चलया तेरा विहार, विवहारी वेख वखाईआ। गोतम कटण आया वगार, हुक्मी हुक्म सेव कमाईआ। लेखे लाई आपणी नार, नरायण रंग जणाईआ। वर मंगया इक्को वार, त्रेता द्वापर मुख छुपाईआ। कलयुग प्रगट होए विच संसार, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। मेरा लेखा लहिणा दए निवार, आप आपणा मेल मिलाईआ। मैं दस्सणा सारा हाल, सतिजुग तेरी करी शनवाईआ। तूं रही मेरे नाल, तेरा मेरा एका घर एका गोबिन्द मिले माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। गोबिन्द कहे सच विचार, अभेद भेव जणाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, वेला नेड़े आइंदा। त्रेता द्वापर उतरे पार, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। अन्तिम लहिणा कर्ज दए उतार, मकरूज आपणा फर्ज पूर कराइंदा। सूरज चन्न करन विचार, नेत्र नैण होए शर्मशार, भेव काग़ज़ कलम ना पाइंदा। लिख लिख वारता कोई ना पाए सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपणे हथ्थ वखाइंदा। गोतम कहे सतिजुग उठ बल धार, एका राह जणाईआ। दोए जोड़ कर निमस्कार, प्रभ साचा सच्चा माहीआ। तेरा दुक्खड़ा दए निवार, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। मैं इक्क इकल्ला बणया रिहा गंवार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं उच्ची कूक करां पुकार, प्रभ साचे दयां सुणाईआ। जे फेर मातलोक विच मिलणा विच संसार, मेरी मन्न सच अरज़ोईआ। मेरा बंस कबीला पहलों करना त्यार, साक सैण बन्धन जगत नाता तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर आपणी दए कमाईआ। गोतम करे अरदास, दोए जोड़ बेनन्तीआ। प्रभ मैं वसां तेरे पास, साहिब सुल्तान साचे कन्तीआ। मेरी कीती बन्द खुलास, लेखा जाणे जुग जुगन्तीआ। कलयुग अन्तिम होणा प्रकाश, तेरा खेल बेअन्त बेअन्त बेअन्तीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरे साहिब शाह सुल्तान वड महंतीआ। सुण अरदास मेरी अरज़ोई, दोए जोड़ जोड़ पुकारया। तुध बिन मिले ना ढोई, मेरे

साहिब परवरदिगारया। मैं निभागण तेरी होई, तूं मेरा कन्त भतारया। मैं तेरी करां रसोई, बण सेवक विच संसारया। दूजा अवर ना दिसे कोई, नेत्र नैण ना कोए वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साची मंग मंगा रिहा। मंगां मंग इक्को दात, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। मेरे नाल मिलाउंणे आपणे सज्जण साक, साचे भगत मात प्रगटाईआ। उन्हां वेखा सच्चा नात, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साची मंग मंगाईआ। आपणे भगतां देणा साथ, गोतम एका मंग मंगाइंदा। मैं इक्क इकल्ला गा गा थक्का तेरी गाथ, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। अन्त वेख्या कोई ना दिसे साक, इक्को नारी नाता लोकमात तुड़ाइंदा। तेरी उच्ची सुच्ची ज़ात, तेरा वरन नज़र कोए ना आइंदा। मैं किस नाल बह बह करां वात, वातावरन ना कोए सुणाइंदा। मैं तेरे बैठा घाट, साचे पत्तण डेरा लाइंदा। तूं साहिब पुरख समराथ, मैं इक्को मंग मंगाइंदा। कलयुग अन्तिम पुच्छी वात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त हरि दातार, एका झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करां आपार, वेद कतेब भेव ना राईआ। तेई अवतार दस गुरू ना पावण सार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह खुशी मनाईआ। निरगुण निरगुण साची धार, धार अवल्लड़ी आप रखाईआ। प्रगट होए विच संसार, जोती जामा भेख वटाईआ। चार जुग दे विछड़े यार, पहलों मेला लवां मिलाईआ। साचे भगत कर त्यार, एका भगती बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म दे आधार, आपणे रंग रंगाईआ। लख चुरासी नाता तोड़ जंजाल, जागरत जोत करा रुशनाईआ। एका घर वखाए शाह कंगाल, शाह पातशाह ना कोए वड्याईआ। शब्द गुरू बण दलाल, दर दर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, परम पुरख सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल कराउणा, भेद अभेद आप जणाइंदा। गोतम तेरे नैणां सर्ब वखाउणा, नेत्र नैण आप खुल्हाइंदा। साचे भगतां आप उठाउणा, आप आपणा बन्धन पाइंदा। फड़ फड़ कागों हँस बनाउणा, हँस काग रूप वटाइंदा। नाद अनादी शब्द सुनाउणा, ब्रह्म ब्रह्मादी आप अल्हाइंदा। पुरख अबिनाशी सेव कमाउणा, बण सेवक खुशी मनाइंदा। आपणा आप भेंट चढ़ाउणा, तन ख़ाकी ना कोए रखाइंदा। निरगुण हो के डंक वजाउणा, सोहँ ढोला एका गाइंदा। भगत विचोला आप उठाउणा, दूजा कोए रहिण ना पाइंदा। तेरा बंस सरबंस आप प्रगटाउणा, साचे भगतां आप वड्याइंदा। मिल मिल सखीआं मंगल गाउणा, गीत गोबिन्द आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे भगवान, प्रभ आपणी दया कमाईआ। कलयुग खेल करे महान, लेखा लिख्त विच ना आईआ।

सचखण्ड दा सच विधान, लोकमात लए प्रगटाईआ। लेखा जाण ज़िमीं असमान, दो जहानां खुशी मनाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात लए प्रगटाईआ। लोकमात दा सच्चा दान, गोबिन्द बाले नीहां हेठ चणाईआ। उपर बणाए सच मकान, नौ दुआरे खोल्ह खुलाईआ। सेवा करे श्री भगवान, बल आपणा आप रखाईआ। जुग चौकड़ी मुक्के आण, दूजी काण ना कोए जणाईआ। साचे भगत कर परवान, तेरा मेला दए मिलाईआ। नाता जोड़ विच जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सत्तर बहत्तर इक्क ज्ञान, सति चार चार मिलाईआ। पंज पंज खेल महान, पंचम मीता सच्चा शहिनशाहीआ। छत्ती जुग कर कल्याण, राग छतीसा दए जणाईआ। महल अटल उच्च मकान, त्रै त्रै अतीता रूप वटाईआ। साचा मन्दिर इक्क मकान, सोभावन्त दए सुहाईआ। तेरा मेला मेले आण, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गौतम मिल्या माण, घर आपणे खुशी मनाइंदा। दूजे पासे अहल्या बाल अञ्याण, भेव कोए ना आइंदा। नेत्र रो रो करे ध्यान, प्रभ चरन इक्क निशान वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी नीती आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची रीती हरि करतार, आपणे हथ्थ रखाईआ। गोतम अहल्या की पावे सार, भेव अभेद छुपाईआ। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, नैणां छहबर लाईआ। मेरा दुःख कट मेरे निरँकार, दुखी दुःख विच समाईआ। साचा सुख तेरा प्यार, दूजी वस्त ना कोए भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। सच सपुत्तरी रखणा याद, त्रैगुण अतीता आप जणाइंदा। तेरी सुणा फेर फ़रयाद, रूप अनूप आप वटाइंदा। बण खण्ड विच्चों लवां लाध, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आस इक्क समझाइंदा। अन्त रखणी इक्को आस, हरि जू आख सुणाया। जुग चौकड़ी खेल तमाश, साचा मन्दिर जणाया। त्रेते करे बन्द खुलाश, राम रम्मईआ रूप वटाया। चरन छोह वसणा चरनां पास, चरनामित इक्क प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साची नार करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं आदि जुगादी कन्त भतार, सद तेरी सेज सुहाईआ। ओथे एथे दो जहान सच्चा प्यार, प्यार प्यार विच रखाईआ। तूं माता पिता बण बण करें शंगार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं पूत सपूता दएं अधार, घर आपणे खुशी मनाईआ। तेरी किरपा तेरी दाद तेरे हुक्मे अंदर आई लोकमात, माणस जन्म रूप वटाईआ। इक्को मिल्या कमलापात, गोतम तेरा रूप नज़री आईआ। मेरा छुटा पिछला साक, सगला संग गया तजाईआ। मैं विकी उहदे हाट, मेरी कीमत किसे ना पाईआ। तूं साहिब पुरख समराथ, मेरा कन्त देणा मिलाईआ। मैं होई अनाथां नाथ, बण दीनन सीस झुकाईआ। तेरा मंगां सदा

साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। दोवें रल मिल आईए तेरे घाट, एका घर वज्जे वधाईआ। पीआ विछोड़ा मेरा घात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बाली मंग मंगाईआ। मेहरवान मेहरवान वड दाता, आपणी दया कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरी गाथा, पढ़ पढ़ सृष्ट सर्ब सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम होए अन्धेरी राता, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, वेस आपणा आप वटाइंदा। जन भगतां देवे साचा साथा, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। मेल मिलावा साचे साका, सज्जण मीत मेरा फेरा पाइंदा। पूरब जन्म दा पूरा करे घाटा, अग्गे लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाइंदा। कलयुग अन्तिम जाए आ, हरि साचा आप जणाइंदा। जगत विछोड़ा दए मिटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। दोहां मेला दए मिला, मेल मिलावा आप जणाइंदा। शब्द अगम्मी हुक्म सुणा, हुक्मी डंक वजाइंदा। गोतम सुणया की करे बेपरवाह, कवण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग वखाइंदा। गोतम सुणी हरि आवाज़, शब्दी धुन धुन शनवाईआ। दोए जोड़ कहे ग़रीब निवाज़, मेरी इक्क इक्क अरज़ोईआ। कलयुग अन्तिम तूं साजण लैणा साज, साची बणत बणाईआ। सतिजुग नाल मेरा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। मैं दस्सी तेरी गाथ, करी सच पढ़ाईआ। कलयुग होए अन्धेरी रात, राह खैहड़ा नज़र ना आईआ। जे तुठ्ठा दे दात, सतिजुग मेरे नाल रलाईआ। नाल रले तेरी जमात, जो भगतां करी पढ़ाईआ। फेर मैं तैथों पुच्छां पिछली वात, आपणी कथा सुणाईआ। कलयुग उतरे तेरे घाट, सतिजुग साची होए रुशनाईआ। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोए अख्वाईआ । मन मति दुहागण नार मिटे कमज़ात, गुरमति होए कुड़माईआ। तेरा दुआरा डूँग्घा खात, वसन्दयां घाट कोए ना आईआ। बिन सतिजुग मैं किसे नाल ना रखणा कोई साथ, सच्ची सच रिहा सुणाईआ। जे ना तूं पुच्छे मेरी वात, तुध बिन होर नज़र कोए ना आईआ। मैं छड्डे सज्जण साक, इक्क तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर रख हथ्थ करतार, आपणी दया कमाइंदा। त्रेता द्वापर रथ चले संसार, बण रथवाही सेव कमाइंदा। कलयुग आए अन्तिम वार, आप आपणी कल वरताइंदा। पिछला लेखा जाणे सर्ब संसार, चार जुग दे वेखे यार, मेल विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार दए हुलार, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव करे ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए जणाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत पुराण पावे सार, अंज़ील कुरानां फोल फुलाइंदा। प्रगट हो अगम्म अपार, अलख अगोचर रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त कर त्यार, त्रैगुण बन्दन आप तुड़ाइंदा। सच महल्ल इक्क उसार, रत्ती रत्त नाल रलाइंदा।

त्रैगुण माया थल्ले देवे वाड़, आपणी हथ्थीं आप दबाइंदा। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग आप वखाइंदा। साचा संग कराए मेला, मेलणहार निरँकार। एका घर वसे गुरू गुर चेला, सोहे मन्दिर उच्च मुनार। पारब्रह्म सज्जण सुहेला, सदा सदा करे कराए वणज वापार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। साची धार हरि समझाइंदा, पारब्रह्म पुरख अबिनाश। त्रेता तेरे पिच्छे प्रगटाइंदा, त्रै त्रै देवे साची दात। कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा, नाल रलाए तेरी जमात। तेरा लेखा वेख वखाइंदा, लहिणा जाणे सज्जण साक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख अबिनाश। साक सज्जण साचा मीता, अन्तिम दया कमाईआ। करे खेल इक्क अनडीठा, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। तेरा प्रेम लग्गे मीठा, रस होर नज़र ना आईआ। राम नालों विछड़ी सीता, मुड़ के फेर ना सके कोए मिलाईआ। काहन कृष्न राधा सुरती मकुंद मनोहर बंसरी वजाए अठारां अध्याए गाए गीता, वातावरन जगत सुणाईआ। गोबिन्द मिल्या इक्को मीता, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। गोतम दर तेरा ठांडा सीता, धुर दरबारी आप सुहाईआ। कलयुग अन्तिम इक्क वखाए सच प्रीता, चरन कँवल सरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा लेखा हरि भगवन्त, आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच दुआरा सोभावन्त, भगत भगवान वेस वटाइंदा। पूरी आसा नारी कन्त, कन्त नाल रंग रंगाइंदा। बण विचोला श्री भगवन्त, साची सेवा आप कमाइंदा। एथे ओथे दो जहान इक्को मंत, मन्त्र आपणा आप समझाइंदा। मिले वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। पहलों बणाए गोतम तेरी बणत, फिर कलयुग डेरा ढाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा विहार हरि निरँकार भुल्ल कदे ना जाइंदा। अभुल्ल कदे ना भुल्लदा, बेपरवाह हरि सुल्तान। लेखा जाणे आपणी कुल दा, कुलवन्ता नौजवान। हरिजन कदे मात ना रुलदा, जुग जुग देवणहारा माण। गुरमुख सदा लख चुरासी विच फुलदा, पत्त डाली होए परवान। हरि भाणा सो जन झल्लदा, अन्तिम मेला होए आण। खेल वेख अज्ज के कल दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दो जहान। पूरब लेखा दए मुका, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। गोतम लहिणा इक्क समझा, एका वार जणाईआ। भगत दुआरा इक्क बणा, साचे घर करी कुड़माईआ। सचखण्ड दुआरा दए वखा, एथे ओथे इक्को रंग रंगाईआ। पहली चेत दिवस रिहा आ, गुर अवतार करन सालाहीआ। पीर पैग़म्बर नैण रहे शरमा, नैण सके ना कोए उठाईआ। भगत तक्कण राह, इक्को ओट तकाईआ। वेखो कलयुग अन्तिम की करे बेपरवाह, बेअन्त वड वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां फड़ फड़

बांह, आपणे गले लगाईआ। पूरब लहिणा रिहा चुका, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। साचा बन्धन रिहा पा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। कुक्ख विच्चों कुक्ख प्रगटा, कुक्खी कुक्ख समझाईआ। मुख विच्चों मुख सलाह, मुख एका दए वड्याईआ। पूरब जन्म दा दुःख मिटा, साचा सुख इक्क सरनाईआ। आपणी गोद आप टिका, हरि साची खुशी मनाईआ। नारी कन्त मेला सहिज सुभा, गुण अवगुण ना कोए वखाईआ। हरि चरन दुआरे चढ़या चाअ, चाओ घनेरा इक्क वखाईआ। साध संगत भैण भ्रा, बह बह मंगल आपे गाईआ। कलयुग रोवे मारे धाह, बौहड़ी गोतम की की खेल कराईआ। सतिजुग उधर चढ़े चाअ, बह बह खुशी मनाईआ। मेरा पल्लू फड़े आ, जेहड़ा गया अन्त छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब जन्म आपणे लेखे पाईआ। पूरब लहिणा गया चुक्क, हरि जू दया कमाईआ। गुरमुख साचे गोदी चुक्क, वेखे सहिज सुभाईआ। पुरख अबिनाशी आपणे सुत, भगत भगवन्त लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला मेल मिलाईआ। साचा मेला मिल्या आत्म अन्तर, अन्तरगत जणाइंदा। दोहां पढ़ना इक्को मन्त्र, सोहँ ढोला सुणाइंदा। नाता तुट्टे गगन गगनंतर, सचखण्ड दुआरे आप बहाइंदा। जिस जन बणाए हरि जू बणतर, तिस फंद ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग श्री भगवान, एका एक रंगाईआ। मनी सिँघ दिता दान, सच सच गया समझाईआ । पुरी अनन्द लेख महान, लिख लिख लेख वखाईआ। सिँघ खुशहाल तेरा बंस होए प्रधान, खुशी खुशी वड्याईआ। जिस दे पिच्छे मेला मिल्या आण, सो मीत नज़र ना आईआ। बंस सरबंस होए परवान, कीती घाल लेखे पाईआ। गुरमुख राग सुणया कान, सिँघ गुरमुख खुशी मनाईआ । जिस दे सीस चरन धरे भगवान, कंधे आपणा आसण लाईआ। तिस कुल विच निशान, पूत सपूते लए प्रगटाईआ। जगत सपुत्तरी कर परवान, भगत सपुत्तरी लए बणाईआ। गिरधारा सिँघ गुरचरन कौर इक्क निशान, इके घर वखाईआ। जिन्हां दा माता पिता बणया आप भगवान, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दा सच विधान, साचा मार्ग रिहा लगाईआ। बहत्तर भगत गायण गाण, सत्तर जै जैकार सुणाईआ। चुहत्तर नेत्र वेखण आण, नैण नैण उठाईआ। पंज पंज होए परवान, दरगाह साची बैठे सच संदेस रहे घलाईआ। सिँघ पाल गाए गाण, छोटे बाले ताल वजाईआ। सिँघ सुवरन चरन ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सिँघ गुरदयाल कहे लोकमात बणया सच निशान, तेरे भगतां होई सच्ची कुड़माईआ। जगदीस मनजीत कहिण असीं बाल अञ्याण, बाली बुध्ध रखाईआ। तूं भगतां हित करें आप मेहरवान, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लेखा लेखा लेखे पाईआ ।

सतिगुर पूरा सद मेहरवान, आदि जुगादि समाइंदा। जिस जन देवे साचा दान, तिस एका नाम समझाइंदा। घर विच मेला गोपी काहन, सुरती शब्द रंग रंगाइंदा। जीवण नाता जगत जहान, जोग जुगत वखाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, बिन रसना जिह्वा समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। मेहर नज़र करे मेहरवाना, रहिमत आपणी आप कमाईआ। लोकमात वेखे जगत विधाना, चार कुण्ट फेरा पाईआ। सच सुच्च सच निशाना, साख्यात सर्ब समझाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माणा, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दान इक्क वखाईआ। साचा दान इक्क प्यार, प्रेम प्रेम विच प्रगटाईआ। लेखा जाणे जगत संसार, संसारी आपणा रूप वटाईआ। मंग दान भुल्ले ना जीव जहान, अभुल्ल दया दए कमाईआ। मिले वड्याई वड्डी विचार, विचार आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नज़र मेहर बेनज़ीर शाह हकीर तकसीर ताअबीर तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। सिँघ जागीर मंगी मंग, प्रभ सदा रहां सरनाईआ। सतिगुर पूरे किहा मैं सद वसां संग, विछड़ कदे ना जाईआ। अंदर माणां गुरसिख तेरी सेज पलँघ, बाहरों आपणा सीस तेरे चरनां उपर टिकाईआ। फिर अंदर आवे अनन्द, गुरसिख गुर गुर वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां मिले सूरा सरबंग, भेव अभेद रखाईआ। कलयुग अन्तिम वजाया मृदंग, पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मिलण दी रीती आप चलाईआ। रविदास ठग्ग दा मुक्कया लहिणा, पूरब लेखा रहे ना राईआ। लालो वेख्या आपणे नैणां, नानक निरगुण नाल मिलाईआ। नौ जन्म मन्नया कहिणा, पंडत वज्जी वधाईआ। अन्त लाड़ी मौत ना खाए डैणा, दोहां मिली हरि सरनाईआ। एथे ओथे सचखण्ड दरगाह साची इक्क्ठे बहणा, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन दुआर हरि निरँकार, जगत नाता मोह तुड़ाईआ। जगत नाता तुट्टा मोह, पंज तत्त तजाया। आत्म परमात्म गई छोह, सगला पन्ध मुकाया। एथे ओथे नेत्र नैण नीर ना सके कोई रो, पुरख अबिनाशी दया कमाया। सच दरबारे ढोआ ल्या ढो, आप आपणा भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां इक्को गोद बहाया। रविदास संग तरया ठग्ग, कंगण कसीरा लेखा चुकाईआ। कलयुग बुझाई लग्गी अग्ग, प्रेम प्रीती इक्क सिखाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल सूरा सरबग, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, चरन सरन दिती सरनाईआ। अन्तिम साक सज्जण भैण भाई पुत्तर धीआं जाण छड्ड, सतिगुर पूरा पल्लू ना कदे तुड़ाईआ। दोहां आपणे अग्गे रख, जीउदयां मरयां वेखे चाँईं चाँईंआ। जगत वलों मुरदे होए प्रतख, घर सतिगुर जन्म दवाईआ। करोड़

तेतीसा सुरपति राजा इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव गायन जस, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। कबीर जुलाहा सचखण्ड बैठा रिहा हस्स, वाह वाह दाते तेरी बेपरवाहीआ। नानक निरगुण कहे मेरा साहिब पुरख समरथ, ग़रीब निमाणयां वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर गोबिन्द कहे मेरी रखी पत्त, मेरे गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। तूं दीन दयाल ठाकर अबिनाशी अलख, तेरा लेख ना लख्या जाईआ। आपणे दुआरे आपणे कीते वक्ख, वक्खरी धार चलाईआ। काया भाण्डे कीते सक्ख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। गुरसिख होए कदी ना मुर्दा, मरन विच कदे ना आया। सतिगुर पूरा लत्तां बाहवां नाल कदे ना तुरदा, निरगुण आपणा खेल कराया। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपे वरदा, नारी कन्त रूप धराया। सिँघ तारा गुरमुख दोवें अग्गे धरदा, धरनी धरत धवल दए वड्याआ। दूर दुराडा मुहम्मद डरदा, नेत्र नैण रिहा उठाया। धर्म राए थर थर कम्बदा, नेत्र नैणां नीर रिहा वहाया। गुरमुख सच्चा इक्को अक्खर पढ़दा, बिन रसना जिह्वा गाया। बिन डंडिउँ पौड़े साचे चढ़दा, सचखण्ड दुआर महल्ल सुहाया। सो गुरसिख राह विच कदे ना अड़दा, जिस देवे आप सरनाया। अन्तिम लेखा चुक्कणा सीस धड़ दा, पंज तत्त चोला जगत हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर जन भगतां आपणे दुआरे आपे खड़दा, बण सेवक सेव कमाया। ना मुर्दा होए कदे मुरीद, मुर्शद आपणी दया कमाईआ। बिन नेत्र देवे दीद, सति सरूप वखाईआ। सदा सदा रहे साची ईद, एका एक चन्द रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाईआ। आपणा रंग करता पुरख, पुरख परखोतम आप जणाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला दो जहान ना कोई सोग ना कोई हरख़, हरख़ सोग ना कोए जणाइंदा। जिस जन कर किरपा देवे आपणा दरस, तिस जन्म मरन कटाइंदा। देवे वड्याई अर्श फर्श, कुरा कायनात वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन सच्चे आप तराइंदा।

धरत धवल कहे मेरी सोहे धौण, भगत भगवन्त चरन छुहाईआ। सच सुगंधी मिले पौण, नाम सति महक महकाईआ। हरिजन गीत गायण साचा गौण, आवागवण मिटाईआ। हरि का भेव जाणे कौण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरा सोहया सीस, लेखे लग्गी मेरी कमाईआ। चरन छुहाया हरि जगदीस, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। मेरी कोई ना करे रीस, वेखी जगत लोकाईआ। त्रैगुण पीसण रही पीस, कलयुग

चक्की मात चलाईआ। साहिब साचे दी साची रीत, आदि जुगादि खेल कराईआ। अन्तिम परखे मेरी नीत, वसणहारा हर घट थाईंआ। मेरे सीने भार पाया मन्दिर मसीत, गुरदुआर गढ़ बणाईआ। पारब्रह्म सुत्ता दे कर पीठ, करवट आपणी ना लए बदलाईआ। धन्न भाग मैं पतित होई पुनीत, पतित उधारी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप प्रगटाईआ। धरनी कहे मेरे अन्तर चाअ, चाउ घनेरा इक्क जणाईआ। आदि जुगादि जुग जुग मैं तक्कदी रही राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। गुर अवतार दे दे गए सलाह, खाणी बाणी भेव चुकाईआ। मैं रखी ओट कवण वेले मिले हरि मलाह, मेरा बेड़ा लए चलाईआ। कोझी कमली पकड़े बांह, जगत निमाणी आपणे गले लगाईआ। सोभावन्त सुहाए थाँ, थान थनंतर माण वड्याईआ। आत्म परमात्म मन्त्र जणाए नाँ, नाउ निरँकारा इक्क पढ़ाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए वखाईआ। धरनी कहे मेरे धन्न भाग, धवल मिली वड्याईआ। मेरे गृह जगया चिराग़, दीपक रूप वटाईआ। साहिब मेरा गया जाग, अक्ख प्रतख खुल्लाईआ। मेरी तृष्ना बुझी आग, हवस ना कोए वधाईआ। चरन धूढ़ी गई लाग, मस्तक मेटे कूड़ी शाहीआ। त्रैगुण डस्सणी ना डस्से नाग, माया ममता मोह चुकाईआ। डूँग्घे सागर बेड़ा चलाए इक्क जहाज़, नाम चप्पू हथ्थ उठाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दी रखे लाज, ग़रीब निवाज़ फेरा पाईआ। मेरे अंदर बह बह रचया काज, मेरा मन्दिर दए सुहाईआ। शब्द अगम्मी मार आवाज़, साचा ढोला एका गाईआ। कलयुग अन्तिम रचया काज, करता पुरख खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। धरनी कहे मेरे घर प्रकाश, हरि दीपक मात जगाया। मेरी पूरी होई आस, आसा तिसना मोह मिटाया। मेरा लेखे लग्गा स्वास, हरि जू हरि हरि दरसन पाया। मेरा लहिणा मुक्का बन्द खुलास, बन्दीखाना तोड़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान साची दया आप कमाया। धरनी कहे मैनूं चढ़या रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। मेरी सेज बणी पलँघ, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आया लँघ, रूप अनूप धराईआ। कर प्रकाश चढ़ाए चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरा मिल्या मीत, हरि सज्जण सच्चा पाया। जिस दे गाउँदी रही गीत, गा गा जुग जुग वक्त लँघाया। जिस नूं लभ्भदे मन्दिर विच मसीत, शिवदुआले मट्ठ फेरा पाया। सो साहिब निरगुण सरगुण नाल करे प्रीत, प्रीतीवान बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाया। धरनी कहे मेरा तुट्टा मोह, लोकमात रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म

प्रभ चरन गया छोह, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। एका बीज ल्या बोअ, अमृत फल अन्त वखाईआ। एका ढोला सोहँ सो, आदि अन्त पुरख अकाल समझाईआ। एका अन्तर आत्म चोअ, सांतक सति सति कराईआ। एका प्रकाश देवे लोअ, लोआं पुरीआं पन्ध मुकाईआ। एका घात देवे कोह, जगत विकारा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। धरनी कहे मेरा मिटया दुःख, दुःख अवर ना कोए रखाईआ। मिल्या हरि ना मानस ना मानुख, बेअन्त वड वड्याईआ। आपणे नूर बैठा लुक, दिस किसे ना आईआ। लख चुरासी इक्क दूजे तों रही पुच्छ, कवण दुआर हरि जू डेरा लाईआ। बिन हरि नामे खाली दिसण बुत्त, भेव कोए ना पाईआ। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत्त, चेतन एका रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। धरनी कहे मेरा रख्या माण, मैं निमाणी दए वड्याईआ। मेरे उपर झुलाया सच निशान, सचखण्ड दए वखाईआ। मेरे उत्ते भगत कर परवान, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। मेरे उत्ते बह बह देवे दान, दाता दानी सेव कमाईआ। मेरे घर बह बह गाए गाण, गीत गोबिन्द इक्क अल्लाईआ। मेरे अंदर बह बह करे पहचान, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाईआ। राउ रंक होए हैरान, राजन राज नैण शरमाईआ। प्रगट होया जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा नाल लिआईआ। कोई ना सके मात पछाण, भरमे भुल्ली लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरा हौला भार, होली हौली रिहा कराईआ। दिवस रैण करे विचार, घड़ी पल वंड वंडाईआ। करे खेल अगम्म अपार, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। सच महल्ल कर त्यार, मेरी गोदी गोद वड्याईआ। भगत भगवन्त अंदर वाड़, साचे सन्त संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा दुखड़ा दए गंवाईआ। धरनी कहे मेरी पूरी आस, आसा पुंनी खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी बुझी प्यास, रसना जिह्वा ना कोए ध्याईआ। लेखा लग्गा पृथ्मी आकाश, अकल कल दए समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रहिमत आप कमाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते होया रहिम, रहिमत हरि कमाईआ। जुग चौकड़ी रही सहिम, भय भउ डराईआ। भगतां संग मैं होई कायम, आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दए मुकाईआ। धरनी कहे मिल्या सहारा, ओट अकाल तकाईआ। दर ठांडा वेख परवरदिगारा, वाहिद आपणा नाउँ जणाईआ । चार जुग दा जगत नगारा, जुग करता वेख वखाईआ। एका अक्खर होए उज्यारा, नेत्र नैण करे रुशनाईआ। मेरे उपर लग्गा इक्क अखाड़ा, भगत भगवन्त नाच नचाईआ। मेरे उत्ते सोहे साचा लाड़ा, दूल्हे मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए समझाईआ। धरनी कहे मेरे उपर दूल्हा, साचा रंग वखाईआ। लोकमात फलया फूला, पत्त डाली नाल रलाईआ। प्रेम अवल्लड़ा झूले झूला, सच हुलार रखाईआ। लहिणा देणा चुक्के मूला, पिछली गत मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा मुकाईआ। धरनी कहे मेरा मुक्का लेखा, लेखा अन्त कराईआ। जुग चौकड़ी रिहा भरम भुलेखा, गुर अवतार सेव कमाईआ। अन्तिम करदे रहे आदेसा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। धरनी कहे मेरी आसा पुंनी, आसावंद पूर कराईआ। कलयुग कूड़ चोटी मुंनी, दुःख दलिद्दर करे सफ़ाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोए गुणी, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। धरनी कहे मेरा सोहे घर, घर विच वज्जे वधाईआ। जिस डिठया जाईए तर, तिस मिले माण सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग लहिणा सर्ब मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे ज़िमीं असमान, सब दी जामनी आप रखाईआ।

★ ११ फग्गण २०१८ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह इटारसी ★

दो जहानां सच्चा अनन्द, हरिसंगत विच समाईआ। सति सतिवादी अतीत पलँघ, हरिजन हिरदा हरि बणाईआ। जोधा सूरबीर सरबंग, शाह पातशाह खेल कराईआ। नाता तोड़ कोट बंहिमंड, करे खेल बेपरवाहीआ। नव नौ चार पार किनार आपे लँघ, लोकमात वेख वखाईआ। धुंन अनाद शब्द मृदंग, आत्म परमात्म आप सुणाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, हरि सज्जण मेले थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेखे वेखणहारा दिस किसे ना आईआ। दो जहानां सच्चा माण, पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निरगुण निरवैर खेल कराइंदा। हरिजन साचे देवे दान, आत्म परमात्म एका ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाइंदा। इक्क इकल्ला वेखणहारा घट घट वेखे आप गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत एका रंग समाईआ। हरिसंगत अन्तर एका धार, हरि हरि जू आप वहाइंदा। आत्म परमात्म सच प्यार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। राग रागनी वसे बाहर, शास्त्र सिमरत चार वेदां हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नर हरि, हर घट साचा मेल मिलाइंदा।

हरिसंगत मेल मिलंदड़ा, हरि सच्चा शहिनशाह। चरन कँवल कँवल चरन इक्क वखंदड़ा, दो जहानां देवे पनाह। आवण जावण पत्तत पावण मेट मिटंदड़ा, सिर आपणा हथ्थ टिका। लख चुरासी जीव जंत वेख वखंदड़ा, गुरमुख सज्जण आप मिला। राग अनादी इक्क सुनंदड़ा, सोहँ ढोला सच्चा गा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला लए मिला। मेल मिलावा श्री भगवान, आदि जुगादि कराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी वेखे मार ध्यान, हरि सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निरगुण दाता नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। हरिजन सज्जण लए पछाण, किरपा कर हरि मेहरवान, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, हरि सज्जण मेले आपणे घर, घर साचा इक्क समझाईआ। साचा घर सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। एकँकारा सच सिँघासण आपे मल्ला, आदि निरँजण तोड़ निभाइंदा। श्री भगवान कर कर हल्ला, रूप अनूप आप धराइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, लोकमात फेरा पाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म अन्तर रला, आप आपणा रंग रंगाइंदा। हरिसंगत दूई द्वैती मेटे सल्ला, एका तीर निराला बाण चलाइंदा। वसणहारा जलां थलां, लोआं पुरीआं डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत वेख वखाइंदा। हरिसंगत वेखे वेखणहारा, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका नाम सच जैकारा, जै जैकार आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाए पल्ला, करोड़ तेतीसा संग निभाईआ। गुर अवतार कढ्ढुण हाढ़ा, पीर पैग़म्बर मारन नाअरा, परवरदिगार तेरा इक्क सहारा, मुकामे हक़ हक़ मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिसंगत संग मेला श्री भगवान, हरि साचा सच मिलाईआ। एका देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। नाता तोड़ जीव जहान, जागरत जोत जगत जगाइंदा। दर आयां घर देवे माण, निमाणयां गोद बहाइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण इक्क वखाइंदा। दाता जोधा सूरबीर बली बलवान, निहकलंक वजाए डंक, जीव जंत साध सन्त सर्ब उठाइंदा। आदि जुगादि खेल पुरख समरथ, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। जुगां जुगन्तर महिमा अकथ, हरि पुरख निरँजण भेव खुल्हाइंदा। निरगुण निराकार सचखण्ड दुआरे वस, एकँकारा वेस वटाइंदा। अजूनी रहित कर प्रकाश, आदि निरँजण डगमगाइंदा। खेले खेल खेल तमाश, अबिनाशी करता वेस वटाइंदा। शाहो भूप बण शाबाश श्री भगवान साचे तख्त सोभा पाइंदा। पारब्रह्म साचे मंडल पावे रास, दर घर साचा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा खेल कराइंदा।

आदि जुगादि खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड वड्डी वड्याईआ। सच संदेश आदि जुगादि एका घल्ला, निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जोती धार आपे रला, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। साचा मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, एकँकारा भेव छुपाइंदा। आदि निरँजण आदि अन्त, अबिनाशी करता वेस वटाइंदा। श्री भगवान सोभावन्त, सच महल्ला इक्क वसाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बेअन्त, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल हथ्थ करतार, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सच महल्ला कर त्यार, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। रूप धर पुरख नार, नर नरायण वेस वटाईआ। साची सेजा कर प्यार, आप आपणा घर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपे रिहा खुल्हाईआ। साचा भेव पुरख अकाल, आपणा आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी हो दयाल, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। लेखा जाण शाह कंगाल, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। सति सरूपी बण दलाल, दर घर साचे फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। आपणा पड़दा चुक्क पुरख अबिनाश, आपणी दया आप कमाईआ। सचखण्ड निवासी सच दुआरे पावे रास, गोपी काहन आपणा रूप धराईआ। आदि जुगादि सदा सुहेला वसे पास, सगला संग आप निभाईआ। भूपत भूप राज राजान शाहो शाबाश, शाह सुल्तान आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि निरँकार, आदि जुगादि रखाइंदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह किवाड़, थिर घर आपणी बणत बणाइंदा। सुत दुलारे कर प्यार, शब्दी शब्द शब्द वड्याइंदा। वस्त अमोलक भर भण्डार, सच ख़ज़ीना हथ्थ फड़ाइंदा। दाता दानी बण दातार, दयावान सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपणी इच्छया कर विचार, साची भिच्छया इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग पुरख अगम्म, आदि आदि लगाईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, निरगुण निरवैर बेपवराहीआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे रिहा चलाईआ। करे खेल श्री भगवन, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया विश्व धार, विष्नूं आपणा खेल कराइंदा। निरगुण नूर कर त्यार, निराकार वंड वंडाइंदा। विष्नूं खेल अपर अपार, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। जोती जाता हो त्यार, जोती जोत डगमगाइंदा। किला कोट कर त्यार, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। निरगुण

नूर दरस दीदार, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। आपणा मार्ग श्री भगवान, आदि आदि लगाईआ। विष्नूं देवे एका दान, दाता दानी आप हो जाईआ। सचखण्ड निवासी सच निशान, सति सतिवादी इक्क झुलाईआ। एका अमृत पीण खाण, रसना रस इक्क वखाईआ। एका नाम साचा गान, ढोला सोहला आपे आप सुणाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, हं आपणी अंस उपाईआ। विष्नूं भगवान खेल महान, आदि आदि दिती वड्याईआ। साचे तख्त बैठ शाह सुल्तान, तख्त निवासी हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर एकँकार, एका बैठा आसण लाईआ। एका आसण पुरख अबिनाश, सचखण्ड दुआर लगाइंदा। करे खेल खेल तमाश, भेव कोए ना पाइंदा। शब्दी शब्द साची रास, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। भगवन विष्नूं होया दास, विष्नूं भगवन रंग रंगाइंदा। जोती जोत जोत प्रकाश, नूर नूराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। सति सतिवादी साचा राह, आदि पुरख आप चलाईआ। निरगुण निराकार बण मलाह, साचा बेड़ा कंध उठाईआ। विष्नूं विश्व रूप वटा, आप आपणी गोद उठाईआ। समरथ पुरख सिर हथ्थ टिका, महिमा अकथ करे पढ़ाईआ। सोहँ रथ आप चला, निरगुण निराकार साकार आपणी वंड वंडाईआ। सच संदेसा इक्क सुणा, एकँकारा करे पढ़ाईआ। महल अटल इक्क बणा, छपर छन्न ना कोए सुहाईआ। बिन सूरज चन्द कर रुशना, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप जणाईआ। साचा मार्ग श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। मुकामे हक़ नौजवान, बेऐब खेल कराइंदा। तख्त निवासी हो मेहरवान, शाह सुल्तान हुक्म मनाइंदा। विष्नूं विश्व इक्क ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। दीपक जोती जोत महान, ब्रह्मण्ड खण्ड नूर चमकाइंदा। एका इष्ट श्री भगवान, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। एका भूप राज राजान, शाह पातशाह सोभा पाइंदा। एका हुक्म इक्क हुक्मरान, एका हुक्मी हुक्म फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न आपणा रंग रंगाइंदा। विष्नूं विश्व कर विचार, नेत्र नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी निराकार, तत्तव तत्त ना कोए रखाईआ। सचखण्ड वसे वसणहार, दर घर साचे सोभा पाईआ। रूप रंग ना कोए आधार, रेख भेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। विष्नूं दोवें नैण उठा, प्रभ नेत्र नैण मिलाईआ। चरन कँवल मंगे सरना, सरनगति इक्क वखाईआ। आदि जुगादि तेरी पनाह, समरथ पुरख तेरी वड्याईआ। सदा सुहेले पकड़ीं बांह, दामन पल्लू हथ्थ रखाईआ। तूं ही पिता तूं ही मां, हउँ बालक रूप सखाईआ।

इक्को गावां तेरा नाँ, दूसर जस ना कोए वड्याईआ। चरन कँवल देणा थाँ, मिले सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा माण वड्याईआ। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। विष्नूं देवे एका दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। तेरा मेरा इक्क निशान, दो जहानां आप समझाइंदा। तेरे अन्तर खेल महान, अमृत धार आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। विष्नूं मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, हथ्थ तेरे वड्याईआ। आदि जुगादी तेरा अनन्द, तुध बिन अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ ढह प्या सरनाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, आपणी दया कमाइंदा। उठ बाली बाल अञ्याण, बाल अञ्याणे गोद बहाइंदा। तेरा मेरा इक्क ज्ञान, एका अंक जणाइंदा। तेरा मेरा इक्क मकान, एका मन्दिर सोभा पाइंदा। तेरा मेरा एका माण, एका घर वखाइंदा। तेरा मेरा खेल महान, खेलणहारा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। विष्नूं नेत्र नैणां नीर वहा, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। प्रभ तेरी सरन सरना, मोहे एका एक सखाईआ। आदि जुगादि भुल्लणा ना, जुग जुग तेरा जस गाईआ। तेरा दरस दो जहानां वेखां थाँ थाँ, थान थनंतर मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वार दए समझाईआ। एका वार सच संदेसा, हरि जू हरि हरि आप सुणाया। तेरा लेखा ब्रह्म विष्न सच आदेसा, देस दसन्तर आप वसाया। निरगुण सरगुण धारे भेखा, रूप अनूप आप धराया। पारब्रह्म ब्रह्म करे हेता, आप आपणी वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा सगला संग निभाया। तेरा संग तेरा मीत, हरि हरि आप निभाईआ। आदि जुगादि रहे अतीत, आपणी कल धराईआ। विष्नूं तेरी ब्रह्मा रीत, ब्रह्म शंकर करे कुड़माईआ। करे खेल इक्क अनडीठ, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। शब्द निराला साचा गीत, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। विष्नूं विश्व कर विचार, हरि साचा सच जणाइंदा। त्रैगुण माया कर त्यार, साची झोली आप भराइंदा। पंज तत्त तत्त अखाड़, तत्तव तत्त रखाइंदा। चारे खाणी दे अधार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज नाल रलाइंदा। चारे बाणी कर अधार, चार जुग आप वंडाइंदा। चारे वेद कर पसार, चार वरन आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण हो त्यार, सरगुण निरगुण रंग वखाइंदा। गुर गुर रूप अपर अपार, लोकमात आप प्रगटाइंदा। शब्दी शब्द शब्द जैकार, साचा सोहला आप सुणाइंदा। मन मति बुध दए अधार, गुण अवगुण आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं तेरा बंस वड्याइंदा।

६४२
११

विष्नूं विश्व रखणा याद, हरि साचा सच जणाईआ। तेरा लेखा जाणे आदि, अन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणे विच्चों आपा काढ, निरगुण निरगुण खेल कराईआ। ना कोई माई ना कोए बाप, दाई दाया ना कोए बणाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, सगला संग ना कोई रखाईआ। तन माटी ना कोई ख़ाक, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। करया खेल हरि पाकी पाक, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। अगम्म अगम्मड़ा खोल्ह ताक, साचे मन्दिर करे रुशनाईआ। आप वखाए आपणा घाट, पार किनारा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ। साचा भेव हरि करतार, आपणा आप जणाइंदा। विष्नूं तेरा विश्व पसार, ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंचम गोद बहाइंदा। लख चुरासी कर त्यार, चार चार वंड वंडाइंदा। पंचम पंच बोल जैकार, साचा नाअरा आप सुणाइंदा। निरगुण सरगुण दे अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखाइंदा। साचा मार्ग विच संसार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। लख चुरासी कर त्यार, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। सरगुण अंदर निरगुण धार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्दी शब्द शब्द धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत सरोवर ठंडा ठार, निझर झिरना इक्क झिराईआ। पंचम पंच पंच विकार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग रिहा वखाईआ। साचा मार्ग जाए लग्ग, हरि साचा सच जणाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, दिस किसे ना आइंदा। घट घट दीपक जोत जाए जग, जोत निरँजण डगमगाइंदा। लेखा जाणे पंज तत्त मास नाड़ी हड्ड, रत्ती रत्त वेख वखाइंदा। विष्नूं तेरी विश्व यद्द, ब्रह्मा ब्रह्म रूप वटाइंदा। शंकर अन्तिम वेखे हद्द, जो घड़या भन्न वखाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, भेव अभेद आप छुपाइंदा। जुग जुग चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, साचा राह आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। आपणा पड़दा देवे लाह, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। विष्नूं देवे इक्क सलाह, लख चुरासी घाड़त लए घड़ाईआ। लोकमात वेस वटा, जून अजूनी आप भवाईआ। निरगुण सरगुण लए प्रगटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार रूप वटा, वेस अनेक खेल कराईआ। साची वंडण वंड वंडा, चार चार बन्धन पाईआ। चारे दिशा खेल करा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं एका गुण समझाईआ। विष्नूं चरनी गया ढह, दोए जोड़ करे निमस्कारा। तूं साहिब पुरख समरथ, तेरा अन्त ना पारावारा। हरि जू आपणा मार्ग दस्स, किव रूप वरते विच संसारा। मैं गावां तेरा जस, आदि जुगादि बोल जैकारा। तेरे चरनां जावां वस, मिले सच दुआरा। तेरा दर्शन पावां

६४३
११

हस्स हस्स, नेत्र नैण नैण उग्घाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच सहारा। सच सहारा मंगे मंग, दोए जोड़ सरनाया। आदि जुगादि तेरा अनन्द, अनन्द मेरा सुखदाया। तेरा नूर साचा चन्द, चन्द चांदनी मुख शरमाया। तूं खेले खेल विच वरभण्ड, आपणा पड़दा दे उठाया। तुध बिन होए कदे ना रंड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पड़दा दे चुकाया। पुरख अबिनाशी साहिब दातार, दाता दानी दया कमाईआ। विष्नूं विश्व कर विचार, पारब्रह्म रिहा समझाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म करे पसार, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। ईश जीव कर त्यार, जगदीश खेल कराईआ। एका अक्खर बोल जैकार, साचे सुत करे पढ़ाईआ। अबिनाशी अचुत्त साची कार, करता पुरख आप कमाईआ। चारे वेद खोल्ह किवाड़, एका अन्त दए समझाईआ। चार जुग जगत विहार, बिवहारी आप कराईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, लोकमात करे जणाईआ। गुर गुर होए ख़बरदार, बेख़बर लए उठाईआ। रैहबर बणे आप निरँकार, साचा मार्ग दए वखाईआ। खेले खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। साचा भेव श्री भगवाना, आपणा आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी होए प्रधाना, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। लेखा जाणे दो जहाना, दोए दोए रूप धराइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक्क निशाना, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। भूपत भूप राज राजाना, शाह पातशाह हरि अख्वाइंदा । गुर अवतारां धुर फ़रमाणा, शब्द अगम्मी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंड आपणे हत्थ रखाइंदा। साची वंड हरि निरँकार, आपणे हत्थ रखाईआ। चारे वेद कर त्यार, ब्रह्मा सुत करे पढ़ाईआ। अबिनाशी अचुत्त खेल न्यार, भेव कोए ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पाए सार, कलयुग एका रंग रंगाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग आवे वारो वार, कोटन कोटि काल बिताईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप दरसाईआ। साचा खेल श्री भगवन्त, विष्नूं आप जणाइंदा। आदि जुगादी साचा कन्त, नर हरि हरी आप अख्वाइंदा। जीव जंत बणाए बणत, साध सन्त आप प्रगटाइंदा। जुगा जुगन्तर मणीआं मंत, नाम मन्त्र आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप वखाइंदा। आदि जुगादी राह अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। गुर अवतार फड़ाए पल्ला, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सच संदेस एका घल्ला, जुग जुग करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। विष्नूं करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। जुग चौकड़ी तेरा विहार, भेव कोए ना आया। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, बण बण सेवक सेव कमाया। शंकर मंगे धूढ़ी छार, चरन चरनोदक टिक्का लाया। हुक्मे अंदर गुर

अवतार, वेस अनेक गए वटाया। शब्दी नाद धुन जैकार, सोहला ढोला तेरा गाया । लख चुरासी भाण्डा घड़े बण ठठयार, वेले अन्त दए भन्नाया। सचखण्ड वेस आप निरँकार, रूप रंग रेख ना कोए जणाया। सरगुण सिफ्त करे विच संसार, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहया। तेरा जल्वा नूर निराकार, आदि निरँजण डगमगाया। मुकामे हक़ वसे सांझा यार, साचे तख्त सोभा पाया। विष्नूं वंस कर त्यार, साचा बंस इक्क सुहाया। ब्रह्मा ब्रह्म दए अधार, ब्रह्म वेता खेल कराया। शंकर लेखा दए निवार, लेखा कोए रहिण ना पाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते विच संसार, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाया। आपणा अन्त दस्स आप निरँकार, एह तेरे अग्गे मंग मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दोए जोड़ प्या सरनाया। पुरख अबिनाशी शब्द अगम्मी बोल, एका एक जणाईआ। आदि जुगादि सदा अतोल, हरि तोल ना तोलया जाईआ। जुग चौकड़ी शब्द अगम्मी नाम निधान वजाए ढोल, गुर अवतार सेव लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा अनभोल, पारब्रह्म ब्रह्म समझाईआ। निरगुण निराकार घट घट अन्तर रिहा मौल, मौला आपणा रूप समझाईआ। लेखा जाणे धरनी धरत धवल धौल, आकाश प्रकाश रिहा समाईआ। आपे जाणे आपणा कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। आपणा भेव आपे दस्स, हरि हरि दया कमाईआ। आदि जुगादि खेल तमाश, पारब्रह्म प्रभ वेखे चाँईं चाँईंआ। मंडल मण्डप पावे रास, लोआं पुरीआं नाच नचाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। लहिणा देणा वेखे लख चुरासी जीव जंत पवण स्वास, स्वास स्वासां नाल मिलाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पूरी करे आस, बख्शे सरन सच्ची सरनाईआ। विष्नूं तेरा वसे तेरे पास, तेरा संग रखाईआ। आदि अन्त ना कोए उदास, चिंता सोग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्ह्राईआ। आपणा भेव खोल्ह करतार, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। चार वेद ना पावण सार, पुराण अठारां ना अंक जणाईआ। शास्त्र सिमरत ना कोए धार, धार धार नज़र ना आईआ। गीता ज्ञान ज्ञान अधार, एका एक करे पढ़ाईआ। अंज़ील कुरान जायण हार, शरअ शरीअत ना कोए वखाईआ। खाणी बाणी करे पुकार, ऊँची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार बोल जैकार, आदि जुगादि ढोला गाईआ। सेवा लाए तेई अवतार, भगत अठारां नाल मिलाईआ। ईसा मूसा दए हुलार, संग मुहम्मद करे कुड़माईआ। दस गुर कर निमस्कार, निउँ निउँ बैठण सीस झुकाईआ। भगत भगवन्त बोल जैकार, जै जै एका गुण गाईआ। सन्त मंगण धूढ़ी सार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गुरमुख रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ । गुरसिख मंगण इक्क दीदार, आदि जुगादि आस तकाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार,

ख़ालक ख़लक रिहा खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा धन्दा आपे रिहा समझाईआ। साचा धन्दा श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। सतिजुग वेख सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। त्रेता मेला रम्मईआ राम, हर घट आप समाइंदा। द्वापर लेखा कृष्ना काहन, घर घर बंसरी नाम वजाइंदा। कलयुग खेल करे महान, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। एका कलमा सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण हो मेहरवान, नानक नाम आप जणाइंदा। गोबिन्द सुत कर परवान, सति परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। जुग चौकड़ी वेख वखान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाइंदा। नौ नौ जाणे लेखा आप भगवान, चार चार भेव कोए ना आइंदा। विष्नूं विश्व वेखे आण, वास्तक आपणा रूप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा सच संदेसा, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। जुगां जुगन्तर हरि जू वेसा, नर हरि नरायण वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आपे वेखा, जोती जोत कर रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम धारे भेखा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। लहिणा देणा मुकाए पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ा मुसायक सुणाए सच संदेसा, एका कलमा नबी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं एका गुण समझाईआ। विष्नूं वेख कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार दे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर मुख छुपाइंदा। चार वरन होण हैरान, चार कुण्ट नैण ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाइंदा। विष्नूं वेस हरि का रंग, हरि साचा सच जणाईआ। जुग चौकड़ी काल जाए लँघ, कोटन कोटि रूप वटाईआ। गुर अवतार वजा मृदंग, बैठण मुख छुपाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। लख चुरासी वंडण वंड, वंड वंड वेखे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, विष्नूं एका गुण वखाईआ। विष्नूं गुण हरि जणाया, रसना जिह्वा ना कोए रखाइंदा। बिन अक्खर आप पढ़ाया, अक्षर वंड ना कोए वंडाइंदा। बिन कलम दुवात आप लिखाया, शाही नाल ना कोए मिलाइंदा। सच संदेसा इक्क सुणाया, बिन कन्नां आप अलाइंदा। साचे मन्दिर इक्क बहाया, चार दीवार ना कोए वखाइंदा। साचा नूर कर रुशनाया, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। साचा सज्जण इक्क बणाया, आप आपणे अंग लगाइंदा। सिर आपणा हथ्थ टिकाया, समरथ पुरख आपणा खेल कराइंदा। वेला अन्त दए समझाया, भेव अभेद खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाइंदा। साचा राह श्री भगवाना, भगवन आप जणाईआ।

कलयुग अन्तिम आए विच जहाना, लोकमात वज्जे वधाईआ। प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना, बल आपणा आप रखाईआ। सचखण्ड दा सच निशाना, लोकमात झुलाईआ। चार जुग दा इक्क ज्ञाना, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। चार वरन दा इक्क ध्याना, एका इष्ट दए समझाईआ। चार खाणी दा इक्क मकाना, एका मन्दिर दए बणाईआ। चार बाणी दा इक्क परवाना, सच संदेसा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी होए अन्त, सो पुरख निरँजण आप जणाया। करे खेल श्री भगवन्त, दूसर संग ना कोए रलाया। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाया। लख चुरासी वेखे जीव जंत, घट घट आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त दए समझाया। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा सच जणाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाउणा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। चार जुग दे गुर अवतारां फड़ उठाउणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। नेत्र सब दे आप वखाउणा, नैण नैणां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। कलयुग वेला अन्तिम मात, लोकमात कराईआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार झात, निरगुण आपणा नैण खुल्हाईआ। लख चुरासी विके झूठे हाट, साचा वणज ना कोए कराईआ। आत्म सेजा मिले ना किसे खाट, ख़ाकी ख़ाक सर्ब लोकाईआ। कोई ना उतरे पूरे घाट, कलयुग भँवर रही रुढ़ाईआ। नाता तुट्टे तीर्थ अठ साठ, सर सरोवर देण दुहाईआ। नेत्र रोवे ज़ात पात, चार वरन ना धीर धराईआ। मन मनसा नार कमज़ात, कलयुग जीवां लए प्रनाईआ। माया राणी डूँग्घा खात, घर घर रही वखाईआ। पिता पूत करे घात, घर घर पई लड़ाईआ। भैणां भईआं बणे नात, विभचार सर्ब कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए समझाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आए, हरि साचा सच जणाइंदा। हरि का नाम ना कोए ध्याए, रसना जिह्वा सर्ब कुरलाइंदा। आत्म अन्तर सच सरोवर कोई ना नुहाए, अठ सठ तीर्थ सर्ब भवाइंदा। गुर का शब्द ना कोई गाए, अन्तर ध्यान ना कोई लगाइंदा। कलयुग डौरू डंका वाहे, जूठ झूठ नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा खेल दस्से भगवान, आपणी दया कमाईआ। चार जुग गुर अवतारां दस्से निशान, निशान निशाना नाल मिलाईआ। वेद व्यासा कर कल्याण, गुण गुण गया समझाईआ। ईसा दे दे सच पैग़ाम, पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। मुहम्मद मंगे एका आण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नानक निरगुण करे ध्यान, निरवैर रिहा सलाहीआ। गोबिन्द वेखे साची शान, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। दोए जोड़ करे प्रणाम, चरन चरन सीस झुकाईआ। कलयुग प्रगट होवे आण, निहकलंक सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। भेव अभेद देवे खोल्ह, हरि साचे सच जणाया। विष्नूं तेरा तोले तोल, कलयुग अन्तिम वेस वटाया। निरगुण निरगुण वसे कोल, दिस किसे ना आया। लख चुरासी खेले होल, चारों कुण्ट फेरा पाया। भगत भगवन्त रखे अडोल, आप आपणी बूझ बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। आपणा खेल करे करतारा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। भगतां देवे इक्क अधारा, एका नाम करे पढ़ाईआ। सन्तां देवे सति विचारा, सति सतिवाद सति समझाईआ। गुरमुखां खोल्ह बन्द किवाड़ा, घर घर विच लए प्रगटाईआ। गुरसिखां देवे दरस दीदारा, राती सुत्तयां आप जगाईआ। लख चुरासी हाहाकारा, जीव जंत सर्ब कुरलाईआ। शाह पातशाह रोवण ज़ारो ज़ारा, राज राजान धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त रिहा समझाईआ। वेला अन्तिम वेखे अन्त, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। प्रगट हो श्री भगवन्त, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, पूरब जन्मां लहिणा आप चुकाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, कन्त कन्तूल खुशी मनाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, मन का मणका आप भुवाईआ। गुरसिख मेले साची संगत, सगला संग आप हो जाईआ। विष्नूं तेरी इक्को पंगत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम खेल अपारा, हरि साचा सच जणाइंदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, मात पित ना कोए बणाइंदा। जन भगतां हित करे विच संसारा, नित नवित आपणी खेल वखाइंदा। महल अटल उच्च मुनारा, दो जहानां आप जणाइंदा। विष्न बणना सेवादारा, साची सेवा इक्क रखाइंदा। ब्रह्मा निउँ निउँ करे निमस्कारा, सीस जगदीस इक्क झुकाइंदा। शंकर धूढ़ी मस्तक लाए छारा, साचा टिक्का इक्क लगाइंदा। तिन्नां विचोला आप करतारा, साची खेल आप वखाइंदा। साचा ढोला अपर अपारा, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। आदि कीआ आप पसारा, अन्त आपे वेख वखाइंदा। विष्नूं तेरा रूप न्यारा, निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त अनमुलड़ी दात, हरि साचा सच वरताईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पा पा आपणे खात, साचा खाता वेख वखाईआ। आपे बैठा आपणे घाट, साचे पत्तण बेपरवाहीआ। निरगुण जोत नूर लिलाट, घट घट नूर करे रुशनाईआ। गुरमुख वेखे सज्जण साक, लख चुरासी विच्चों लए प्रगटाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, वरन गोत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्त संदेशा इक्क सुणाईआ। अन्त संदेसा अछल

६४८
११

अछल, श्री भगवान आप जणाइंदा। विष्नूं जोती भगवन रल, श्री भगवान वेस वटाइंदा। वसणहारा जल थल, जल थल महीअल खेल कराइंदा। आपणे दीपक आपे बल, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। सच दुआरा निहचल धाम अटल्ल, महल्ल इक्क वड्याइंदा। दरस दिखाए अग्गे खल, स्वच्छ सरूप अनूप धराइंदा। गुरमुख सज्जण बलि बलि, विष्नूं तेरी सेव लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। विष्नूं सेव साचे घर, हरि साचा सच लगाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भय अवर ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेस कर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लए फड़, गुर चेले गोद उठाईआ। आप बंधाए आपणे लड़, एका पल्लू हथ्थ रखाईआ। काया मन्दिर अंदर जाए चढ़, औदा जांदा दिस ना आईआ। साचा ढोला आपे पढ़, बिन पढ़यां करे पढ़ाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, सो पुरख निरँजण खेल कराईआ। विष्नूं आउणा साचे दर, दर दरवाज़ा इक्क समझाईआ। ब्रह्मा नाल लिआउणा फड़, एका गुण वखाईआ। सरन सरनाई डिगणा दड़, ढह ढह खुशी मनाईआ। लख चुरासी घाड़न ल्या जो घड़, प्रभ देवे अन्त भनाईआ। गुर अवतारां भाणा ल्या मन्न, गए सीस झुकाईआ। भगत भगवन्त जननी जन लेखा जाणे पिता माईआ। एका राग सुणाए कन्न, राग रागनी नैण शरमाईआ। एका देवे सच्चा धन्न, त्रैगुण बैठी डेरा ढाहीआ। पंज विकारा देवे डंन, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। जन भगतां बेड़ा देवे बन्न, कंध आपणे भार उठाईआ। तेई अवतार कहिण धन्न धन्न, पारब्रह्म ब्रह्म जस गाईआ। दिस ना आए नेत्र अन्न, भरम भुलाए सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणा भेव चुकाईआ। विष्नूं अन्त कर विचार, हरि विचार विच ना आया। निरगुण जोत नूर धार, धार धार विच समाया। शब्द अगम्मी अगम्म जैकार, खाणी बाणी रही जस गाया। गुर अवतार करे निमस्कार, लख लख बैठे शुकर मनाया। पीर पैग़म्बर सजदा कर विच संसार, रसना कलमा रहे गाया। आदि जुगादि एका एकँकार, आपणा खेल रचाया। विष्नूं तेरा अन्त प्यार, विश्व तेरा रंग चढ़ाया। साचे सन्तां कर त्यार, सतिगुर आपणी गंढु पुवाया। चार वरन दा दुःख निवार, साचा सुख इक्क उपजाया। उज्जल मुख कर करतार, नूरी नूर दए चमकाया। माता कुक्ख दे सहार, साची कुक्ख आप वड्याआ। सो गुरमुख उतरे पार, जिस आपणा दरस दिखाया। कल कल्की लए अवतार, निहकलंका नाउँ रखाया। राम रामा रूप अपारा, हर घट आपणा आसण लाया। कान्हा कंस करे श्रृंगार, माया ममता मोह मिटाया। नानक नाम सति करे प्यार, सति सति विच वखाया। गोबिन्द बोल फतहि जैकार, एका डंका डंक वजाया। अन्तिम आए हरि निरँकार, सब दा लेखा दए मुकाया। विष्नूं रहिणा ख़बरदार, आलस निंद्रा देणा लाहया। पुरख अबिनाशी होए त्यार, निरगुण

६४६
११

आपणा वेस वटाया। लोकमात करे ख़बरदार, जीव जंत आप जगाया। साचा मन्दिर कर त्यार, पिछला लेखा दए मुकाया। चौथे जुग आए हार, चारों कुण्ट कुण्ट कुरलाया। अग्गे चल्ले सच विहार, सति सतिवादी आप रखाया। हिन्दू मुस्लिम सिख इक्क प्यार, शरअ शरीअत ना वंड वंडाया। काया मन्दिर अंदर खोल्ह किवाड़, साचा काअबा दए वखाया। निर्मल जोत जगे अपार, नूरो नूर डगमगाया। अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, घर मन्दिर नाद अल्हाया। शिवदुआले मट्ठ पाए सार, घर गणपति गणेश दए वखाया। अष्टभुज जोत उज्यार, जोती जोत जोत जगाया। चतुर्भुज दे दीदार, बाली बाला रूप वटाया। करे खेल आप करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वेला अन्त रिहा समझाया। वेला अन्तिम रखणा याद, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण सुणे सर्ब फ़रयाद, एकँकारा वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त लड़ाए लाड, आप आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। साहिब सतिगुर सच्ची रीत, आदि जुगादि चलाईआ। बिन मंग्गयां देवे चरन प्रीत, जिस जन आपणी प्रीत समझाईआ। काया करे पत्तत पुनीत, पतित पापी पार कराईआ। नाता तुट्टा मन्दिर मसीत, काया मन्दिर दए वखाईआ। अठ्ठे पहर वसे चीत, विसर कदे ना जाईआ। जो जन गाए सोहँ गीत, जन्म मरन विच ना आईआ। सतिजुग साची चली रीत, बिन पढ़यां करी पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती बण प्रीतीवान आपणी प्रीत आप लगाईआ।

★ १२ फग्गण २०१८ बिक्रमी इटारसी ★

हर घट अंदर निरगुण धार, श्री भगवान आप रखाइंदा। लख चुरासी पावे सार, जीव जंत भेव चुकाइंदा। भगत भगवन्त लए उभार, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। साचे सन्तां कर प्यार, हरि सतिगुर मेल मिलाइंदा। गुरमुखां खोल्ह बन्द किवाड़, नेत्र नैण इक्क वखाइंदा। गुरसिखां देवे दरस दीदार, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। जुग चौकड़ी हो उज्यार, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। सरगुण मीता एकँकार, अकल कल वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग हरि करतार, हरिजन हरि जू आप रंगाईआ। हरिसंगत मेला अपर अपार, हरि मन्दिर इक्क वखाईआ। काया बंक खोल्ह किवाड़, घर वेखे चाँईं चाँईंआ। दीपक दीआ जोत उज्यार, प्रकाश प्रकाश

नाल मिलाईआ। शब्द नाद धुंन जैकार, अनहद नादी नाद सुणाईआ। महल अटल उच्च मुनार, सोभावन्त आप सुहाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, एका एक कराइंदा। पुरख अबिनाशी वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, दो जहानां फोल फुलाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे रला, जलां थलां डेरा लाइंदा। आदि जुगादि सच संदेस नर नरेश एका घल्ला, शब्दी शब्द आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल पुरख समरथ, श्री भगवान आप कराईआ। जीव जंत चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जुग जुग महिमा जाणे अकथ, अकथ करे पढ़ाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, भेव अभेद खुल्हाईआ। जिस जन हिरदे अंदर जाए वस, तिस आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता हो उज्यारा, द्वापर आपणा डंक वजाइंदा। कलयुग वेखे वेखणहारा, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। जन भगतां मेले मेलणहारा, मेल मिलावा आपणे हथ्थ जणाइंदा। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। वेद कतेब वसे बाहरा, शास्त्र सिमरत मुख शरमाइंदा। अञ्जील कुरान करे पुकारा, कलमा कलाम ना कोए जणाइंदा। खाणी बाणी एका नाअरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप रखाइंदा। आपणा भेव पुरख अगम्म, आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी जीव जंत जाणे पवण स्वास दम, घट घट आपणा आसण लाईआ। जीवण जीवत बेड़ा बन्न्ह, जुगती जगत दए वड्याईआ। रागी नाद सुणाए कन्न, एका राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, आपणा आप कराइंदा। कलयुग अन्त हो उज्यारा, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे निमस्कारा, करोड़ तेतीसा सीस झुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बण भिखारा, खाली झोली सर्ब भराइंदा। भगतां देवे वस्त हरि थारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। लेखा जाणे जुग चारा, चारे वरन वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाइंदा। दीन दयाल दया कमा, पूरब लहिणा आप चुकाईआ। बिन पढ़यां विद्या दए पढ़ा, आत्म अन्तर कर जणाईआ। जग नेत्र बन्द दए वखा, निज नेत्र इक्क खुल्हाईआ। काया खेत्र अंदर साचा ब्रह्मण्ड दए प्रगटा, ब्रह्म आपणी अंस बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे थान थनंतर, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट वसे सच्चा माहीआ। जिस जन बणाए साची बणतर, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा सुत्तयां खुवाब, बेख़बर आप जणाइंदा। दूई द्वैती पड़दा लाहे नक़ाब, मुख घूँगट आप चुकाइंदा। बेऐब परवरदिगार जाम प्याए एका आब हयात, आपणे रंग रंगाइंदा। जन्म जन्म दा लहिणा देवे दाद, पूरब लेखा इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल एकँकार, हरिजन करे जणाईआ। हरिसंगत वेखे वेखणहार, आप आपणा पड़दा लाहीआ। पंज सिख जिस जन देवण दरस दीदार, तिस उपर हरि जू दया कमाईआ। मिले वड्याई विच संसार, संसा सागर दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लेखे पाईआ। पिछला लेखा जाए लग्ग, वेखणहार करतार। करे खेल सूरा सरबग, राती सुत्तयां दए दीदार। त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, अमृत बख्शे ठंडां ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल निरँकारा, निरगुण आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े मेले यारा, कलयुग वेला अन्त समझाईआ। अग्गे पिच्छे आवण वारो वारा, दूर नेड़ा ना कोए जणाईआ। घर घर देवे दरस दीदारा, दर दर आपणा बंक सुहाईआ। गावत गावत गावे ढोला हरि करतारा, गुरमुख गीत आप अलाईआ। भगती भगत भगत वणजारा, साची भगती इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बन्धन आपे पाईआ। साचा बन्धन नाम डोर, अनडिठड़ी धार रखाइंदा। लेखा जाणे काया अन्ध घोर, डूँघी भँवरी फोल फुलाइंदा। राती सुत्तया नाल लए तोर, दिने वेखयां नज़र ना आइंदा। मारनहारा पंज चोर, शब्द खण्डा इक्क चमकाइंदा। निरगुण चढ़या फिरे साचे घोड़, शाह सवारा फेरा पाइंदा। पूरब जन्म दे विछड़े जोड़, आप आपणा मेल मिलाइंदा। मिट्ठा करे रीठा कौड़, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन्म जन्म दी बुझाए औड़, दे दरस तृप्त कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब मेला गुरू गुर चेला गुर गोबिन्द संग रखाइंदा। गुर चेला एका रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। हरिसंगत कोलों मंगी मंग, साची भिच्छया हरि वरताईआ। गुरमुख वेख गुरसिख होए अनन्द, अनन्द अनन्द वज्जे वधाईआ। नाता तुट्टे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए वड्याईआ। मुख शरमाए चौधवीं चन्द, चन्द चांदनी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अन्तर बूझ बुझाईआ। अन्तर बूझ हरि लिव तार, लिव आपणी आप कराइंदा। गुफ़त शनीद करे गुफ़तार, रसना जिह्वा ना कोए वखाइंदा। काया मन्दिर काअबा सच मनार, साचे हुजरे आसण लाइंदा। बन्द किवाड़ी खोल्ह किवाड़, इलाबुत्त डेरा लाइंदा। महबूब महिव होए आप परवरदिगार, बेऐब रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा वेख वखाइंदा। पूरब लहिणा रखे याद,

६५२
११

अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जुग जुग सुणे आप फ़रयाद, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। भगत भगवन्त लडाए लाड, गोदी गोद आप उठाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणा बन्धन पाईआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ईश जीव भेव चुकाईआ। गुरमुख गुरसिख सज्जण आपे लाध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। रंगे रंग रंग चलूल, काया चोला आप रंगाइंदा। देवे नाम नाम अनमोल, करता कीमत ना कोए रखाइंदा। गुरमुख गुरसिख जाए भूल, सतिगुर भुल्ल कदे ना जाइंदा। पूरब जन्म लेखा चुक्के मूल, पिछला लहिणा झोली पाइंदा। आदि जुगादी सच असूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा बन्धन पाइंदा। आपणा बन्धन आपे पा, आपणी बूझ बुझाईआ। नौ साल तों रिहा समझा, नौ दुआरे साफ़ कराईआ। नौ खण्ड ढेरी ढाह, नौ निधां माण चुकाईआ। गुरमुख सज्जण आप मिला, आपणा भेव खुल्हाईआ। पूंना संगत पूरब लहिणा झोली पा, पूरी आस कराईआ। गुरसिख डिठयां गुरसिख मिले सच्चा थाँ, मनमुख देण दुहाईआ। बणे विचोला आप शहिनशाह, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा देणा लहिणा सब दा आपणे लेखे पाईआ। किरपा करे कृपानिध ठाकर, दीन दयाल दया कमाईआ। काया वेखे डूँघा सागर, भँवरी आपणा फेरा पाईआ। देवे नाम रती रतनागर, रंग रतड़ा सच्चा माहीआ। एका वणज कराए सच सौदागर, नाम वस्त अमुल अतुल वरताईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एथे ओथे देवे आदर, दो जहान सदा सहाईआ। पिछला लहिणा मेला गुर तेग बहादर, गुर चेला बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा निध किरपन दए वड्याईआ। दया करी सर्ब करतार, करनी किरत वेख वखाइंदा। जो जन आया चल दुआर, तिस दर्दी दर्द वंडाइंदा। जननी जन कर विचार, जग आपणा रंग रंगाइंदा। दुःख सुख मेट संसार, मुख उज्जल आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। मेहरवान बेनज़ीर, नज़र आपणी आप टिकाईआ। बदलणहार जगत तकदीर तदबीर दए समझाईआ। गुरचरन सरोवर साचा नीर, अमृत जल दए वखाईआ। हउमे हंगता कढ्ढे पीड़, दूई द्वैत दुःख मिटाईआ। निहकर्मी बन्न्हे बीड़, सच धर्मी धर्म कमाईआ। शरअ शरीअत कट ज़ंजीर, एका कलमा दए समझाईआ। पौड़े चाढ़े फड़ अख़ीर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर आयां लेखा लेखे विच रखाईआ। दर आए दरवेश परवान, घर साचे आप सुहाइंदा। अनमंगया अनडिठया अनडिठड़ा देवे दान, साची झोली आप भराइंदा। घर घर उपजे गुर सन्तान, गुर शब्दी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे मेहर श्री भगवान, विष्नूं आपणी खेल कराइंदा। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। निरगुण रूप आदि जुगादि, निराकार निरवैर खेल कराईआ। शब्द अगम्म अनादी नाद, धुर फ़रमाणा राग अल्हाईआ। दो जहानां खेल तमाश, अनुभव आपणा रूप वटाईआ। थिर घर साचे पाए रास, श्री भगवान सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत कर प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल अपारा, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। आदि पुरख पुरख हो उज्यारा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। आपणी इच्छया कर विचारा, साची इच्छया आप प्रगटाइंदा। अजूनी रहित कर पसारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। सच महल्ल कर त्यारा, अटल्ल आप वड्याइंदा। दीवा बाती ठांडे दरबारा, कमलापाती आप टिकाइंदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर वेस वटाइंदा। सूरज चन्न ना कोए सितारा, मंडल मण्डप ना कोए बणाइंदा। ज़िमीं असमान ना कोए अखाड़ा, पुरीआं लोआं ना नाच नचाइंदा। सरगुण रूप ना कोए जैकारा, तत्तव तत्त ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। रूप अनूप श्री भगवान, आपणा आप प्रगटाईआ। करे खेल नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। सच महल्ला इक्क मकान, सचखण्ड दुआरे दए वड्याईआ। भूपत भूप बण सुल्तान, राजन राज नाउँ रखाईआ । तख्त निवासी हो मेहरवान, साचे तख्त सोभा पाईआ। शब्दी अगम्मी अगम्म फ़रमाण, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। दर दरवेश बण दरबान, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसे इक्क इकल्ला, एकँकारा वेस वटाइंदा। आदि निरँजण जोती दीपक आपे बला, श्री भगवान खेल कराइंदा। अबिनाशी करता सच सिँघासण एका मल्ला, पारब्रह्म प्रभ आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। साचा मन्दिर सोभावन्त, निरगुण निरवैर आप सुहाईआ। पुरख अकाल महिमा अगणत, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। करे खेल आदि अन्त, बेअन्त वड शहिनशाहीआ। लेखा जाणे नार कन्त, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दुआरे निरगुण निरगुण बणाए बणत, बण बण पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सचखण्ड निवासी आप कराइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। पुरख पुरखोतम हो त्यारा, बेऐब आपणी खेल कराइंदा। निरगुण नाउँ रख परवरदिगारा, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। आदि आदि आपणी कारा, करता पुरख कार

कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। दूसर संग ना कोए साथ, निरगुण आपणी खेल कराईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता वेस वटाईआ। आदि जुगादि वसे साथ, सगला संग आप हो जाईआ। आपे तख्त निवासी खेले खेल तमाश, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा वड्डा वड, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, आपे वेख वखाइंदा। आपे करे साचा लड, साची गोद आप सुहाइंदा। आप बणाए आपणी यद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कार कमाइंदा। साची कार हरि करतार, आदि पुरख आप कराईआ। आपे पुरख आपे नार, नर नरायण वेस वटाईआ। आपे साची सेज माणे बण भतार, बेअन्त बेपरवाहीआ। आपे दाई दाया बणे सेवादार, बण बण सेवक सेव कमाईआ। आपे जननी जन बणे निरँकार, सुत दुलारा एका जाईआ। आपे शब्दी शब्द लए उभार, जोती जोत जोत वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे खोल्ह किवाड़, साचा कुण्डा देवे लाहीआ। चरन कँवल कँवल चरन इक्क विचार, पुरख अबिनाशी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घाड़न आपे घड़, आपे वेख वखाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे वड़या, मात पित ना कोए बणाइंदा। नारी कन्त बण बण आपा आपे वरया, साचा सगन आप मनाइंदा। तख्त निवासी शाहो शबासी शाह सुल्ताना श्री भगवाना साचे मन्दिर आपे चढ़या, उच्च महल अटल सोभा पाइंदा। आपणा नाउँ निरँकारा आपे पढ़या, अक्खर अक्खर ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल कराइंदा। सचखण्ड दुआरे खेल अवल्ला, अल्ला इलाही नूर आप कराईआ। वसणहारा निहचल धाम उच्च अटल्ला, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। जोती नूर आपे रल्ला, शब्दी शब्द नाद सुणाईआ। सच दुआरे आपे खला, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल पुरख समरथ, आदि आदि आप कराया। निरगुण नूर हो प्रगट, असुत्ते प्रकाश आप धराया। सचखण्ड दुआर खोल्ह हट्ट, बण वणजारा सेव कमाया। इक्को जोत लट लट, नूर नुराना डगमगाया। इक्को शब्द साचा सति, रागी राग राग अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप जणाया। आदि पुरख आपणा मार्ग ला, आपणी दया आप कमाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क वसा, दर घर साचे सोभा पाईआ। तख्त निवासी बण खुदा, रहिमत आपणी आप कमाईआ। पुरख अकाल नाउँ धरा, नाउँ निरँकारा दए वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ सिफ्त सलाह, अबिनाशी करता सेव कमाईआ। सो पुरख निरँजण राग अला, हरि

पुरख निरँजण रिहा सुणाईआ। बण विचोला बेपरवाह, आपणा बन्धन आपे पाईआ। साचा ढोला आपे गा, आपणा नाउँ लए समझाईआ। थिर घर साचे भेव चुका, चरन कँवल दए सरनाईआ। सुत दुलारा इक्क वसा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्दी शब्द नाउँ वटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर देवे माण वड्याईआ। थिर घर देवे हरि जू माण, भेव कोए ना पाइंदा। सचखण्ड वसे आप भगवान, सुत दुलारा एका गुण जणाइंदा। तेरा मेरा इक्क ज्ञान, एका राह वखाइंदा। तेरा मेरा इक्क मकान, एका घर बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर दरबार आप सुहाइंदा। थिर दरबारा वसया घर, सो पुरख निरँजण आप वसाया। हरि पुरख निरँजण देवे वर, एकँकारा होए सहाया। आदि निरँजण नूर धर, जोती जोत करे रुशनाया। श्री भगवान दरस दिखाए अग्गे खड़, अबिनाशी करता रूप वटाया। पारब्रह्म प्रभ पल्लू लए फड़, आप आपणी गंढु पुवाया। सुत दुलारे देवे वर, एका गुण समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द आप पढ़ाया। शब्द सुत हो त्यार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सचखण्ड वसे तूं निरँकार, तेरी महिमा गणत ना आईआ। तेरा नूर नूर जोत उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अलख अगम्म अगोचर तेरी धार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। हउँ बालक सेवादार, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख तेरा वेखां घर, आदि जुगादि चाँईं चाँईंआ। सुत दुलारा कर निमस्कार, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, इक्क तेरी ओट तकाईआ। वसदा रहे तेरा दुआर, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। मैं थिर घर बैठा नेत्र नैण रिहा उग्घाड़, लिव अन्तर इक्को लाईआ। तूं देणा सच प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं मंगां दरस दीदार, आदि जुगादि सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हउँ बाला मंग मंगाईआ। सुत दुलारा छोटा बाला, हरि जू अग्गे सीस झुकाइंदा। शाह पातशाह तेरा खेल निराला, शहिनशाह तेरा अन्त कोए ना आइंदा। तूं सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, साचे तख्त सोभा पाइंदा। आदि जुगादि दीना बंधू दीन दयाला, हउँ दीनन तेरे अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं नरायण रखवाला, इक्को तेरी आस रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरनां सीस निवाइंदा। चरनी सीस गया झुक, पुनह पुनह सरनाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी गोदी लए चुक्क, साचे बाले लए उठाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना पाईआ। थिर घर सुहाए साची रुत्त, सचखण्ड मिले माण वड्याईआ। निरगुण दाता दानी गया तुट्ठ, अनडिठड़ी दात आप वरताईआ। सुत दुलारे साचे सुत, अबिनाशी करता रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

६५६
११

कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। छोटे सुत सुण लै बाल, आदि पुरख आदि सुणाया। तेरा खेल दो जहान, दो जहानां वाली आप वखाया। सति सतिवाद तेरा निशान, सति पुरख निरँजण दए झुलाया। तेरा रूप अनूप महान, भेव कोए ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, शब्दी शब्द रिहा समझाया। साचे शब्द सुण सुण मीत, हरि साचा सच जणाइंदा। मेरा नाउँ तेरा गीत, तेरा गीत हरि गुण वखाइंदा। तेरा मार्ग चले रीत, साचा राह आप जणाइंदा। तूं वसणा धाम अनडीठ, थिर घर साचे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुलाइंदा। साचा भेव खोल्हे भगवान, आदि पुरख दया कमाईआ। सुत दुलारे वड बलवान, बल तेरा इक्क समझाईआ। तेरे अन्तर अन्तर खेल करे महान, खेलणहारा दिस ना आईआ। तेरी गोदी विष्नूं दान, विष्नूं अंदर ब्रह्म प्रगटाईआ। ब्रह्म अंदर खेल महान, पारब्रह्म वेख वखाईआ। वंडे वंड नौजवान, आप आपणा बल समझाईआ। सुन्न अगम्म वेखे सुंझ मसाण, धूआँधार वेस वटाईआ। तेरी शक्त इक्क निशान, शंकर आपणा खेल कराईआ। तिन्नां मेल मेले भगवान, साचे मन्दिर दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द तेरा फ़रमाण, सच संदेसा दए सुणाईआ। सच संदेस सुणाए ढोला, हरि जू हरि हरि आप सुणाया। आप चुकाए पड़दा ओहला, आपणा पड़दा दए उठाया। इक्क वखाए अमृत कँवला, कँवल कँवली नाभ भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी धारा आप बन्नाया। साची धारा हरि निरँकार, तेरा तेरी दए बणाईआ। सचखण्ड निवासी हो उज्यार, थिर घर आपणा फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, आप आपणा हुक्म जणाईआ। सदा सुहेला चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। अग्गे मार्ग दस्से सुखाल, एका तत्त तत्त वड्याईआ। तेरी घालण हरि जू घाल, बण सेवक सेव कमाईआ। निरगुण सरगुण बणे दलाल, रूप अनूप वटाईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, त्रै त्रै मेला मेल मिलाईआ। पंचम खेल खेल भगवान, अप तेज वाए पृथमी आकाश बन्धन पाईआ। तेरा मार्ग सच निशान, पूत सपूते दए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द इक्क समझाईआ। सुत शब्द कर ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाया। थिर घर तेरा इक्क मकान, सचखण्ड निवासी आप बणाया। आपणा नाउँ नाम निधान, तेरी गोद वड्याआ। आपणा बल तेरा बलवान, बलधारी आप रखाया। आपणी इच्छया कर प्रधान, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाया। साची सिख्या बाल अञ्याण, सो पुरख निरँजण इक्क समझाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक्क निशान, तेरा रंग चढ़ाया। रवि ससि कर परवान, किरन किरन किरन चमकाया। मंडल मण्डप देवे दान, साची वस्त झोली पाया। त्रै त्रै खेल खेल महान,

पंचम पंच जोड़ जुड़ाया। निरगुण सरगण होए प्रधान, सूरबीर तेरा नाउँ वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचे हरि, आपणी रचना आपणा मूल सुत शब्दी इक्क जणाया। सुत शब्द नैण उठा, नीर नीर वहाईआ । पुरख अबिनाशी बेपरवाह, तेरा भेव कोए ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा चला, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। सदा सद रखीं ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं ही पिता तूं ही मां, हउँ बालक रूप सखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रगटा, आपणी सेवा देणी समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा संग विछड़ ना जाईआ। तेरा संग सगला साथ, इक्को मंग मंगाया। तूं साहिब पुरख समराथ, समरथ तेरी वड्याआ। मैं गावां तेरी गाथ, नाउँ निरँकारा इक्क सालाहया। मैं वेखां तेरा हाट, बण वणजारा सेव कमाया। त्रैगुण माया तेरी दात, विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रनाया। पंज तत्त तेरा खात, डूँग्घा खाता फोल फुलाया। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी वाट, लोआं पुरीआं पन्ध मुकाया। ज़िमीं असमान तेरी दात, धरत धवल वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि अन्त सदा सदा आपणा संग रखाया। इक्को मंगां सच्चा संग, सुत शब्दी आख जणाइंदा। तेरा नूर चढ़े रंग, दूसर रंग ना मोहे भाइंदा। तेरा नाद वज्जे मृदंग, ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाइंदा। मेरी तेरे नाल जाए हंढ, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। मैं तेरा गावां छन्द, साचा ढोला इक्क अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, खाली झोली इक्क वखाइंदा। खाली झोली देणी भर, शब्दी सुत आख सुणाया। निरभउ चुकाउणा भय डर, भयानक रूप ना कोए रखाया। आदि जुगादि वेखां तेरा दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। सरन सरनाई जावां पढ़, निउँ निउँ सीस झुकाया। तूं दरस दिखाउणा अग्गे खड़, बेअन्त बेपरवाहया। विष्न ब्रह्मा शिव घाड़न ल्या घड़, त्रैगुण माया रजो तमो सतो नाल रलाया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश लाई जड़्, पंचम तत्त जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि आदि तेरे अग्गे झोली डाहया। तेरे अग्गे झोली दिती डाह, बेअन्त मेरे गुसाँईआ। तूं बणना आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। आपणी देवीं सच सलाह, सलाहगीर ना होर रखाईआ। इक्क जपाउणा आपणा नाँ, दूसर नाँ ना कोए वड्याईआ। तूं वसणा हर घट थाँ, घट घट आपणा रंग रंगाईआ। मैं मंगां तेरी पनाह, चरन कँवल इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या श्री भगवन्त, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आदि बणाई तेरी बणत, मात पित ना कोए वखाइंदा। रूप धर धर नारी कन्त, साची गोद गोद सुहाइंदा। एका नाउँ मणीआ मंत, बोध अगाध आप

पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। साचे सुत हो त्यार, हरि साचे सच जणाया। करां खेल अपर अपार, आपणा पड़दा लाहया। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेव इक्क समझाया। भाण्डे घड़ां अपर अपार, लख चुरासी वंड वंडाया। तत्तव तत्त इक्क अखाड़, निरगुण सरगुण रूप धराया। मन मति बुध दए आधार, साची वस्त आप वरताया। नव दर खोल्ह आप किवाड़, नौ नौ लहिणा देणा इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। सचखण्ड निवासी खेल अपारा, थिर दरबारी आप समझाईआ। लख चुरासी घड़े बण ठठयारा, सेवक साची सेव कमाईआ। निरगुण सरगुण कर उज्यारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। घर विच घर खेल अपारा, बंक दुआरा दए वड्याईआ। वेखणहारा टेढी गारा, बंक बंक भेव छुपाईआ। राग अनाद सच्ची धुन्कारा, धुंन आत्मक आप रखाईआ। अमृत सरोवर ठंडी ठारा, निझर झिरना इक्क बणाईआ। आत्म सेजा कर त्यारा, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर त्यारा, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। ईश जीव दे सहारा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर इक्क अखाड़ा, निरगुण सरगुण नाच नचाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, दिस किसे ना आईआ। अलख अगोचर अगम्मड़ी कारा, पुरख अगम्मड़ा आप कराईआ। शब्द सुत तेरा खेल अपारा, पारब्रह्म आप समझाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां हो उज्यारा, उत्भुज सेत्ज राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा भेव समझाईआ। आदि आदि हरि खेल अपारा, हरि हरि नरायण आप समझाइंदा। हरी रूप अपर अपारा, विष्नूं आपणा रंग रंगाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म वेख वखाइंदा। शंकर मेटे अन्तिम धारा, संसा रोग सर्ब चुकाइंदा। विष्नूं विश्व इक्क भण्डारा, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। लख चुरासी कर पसारा, जेरज अंड वंड वंडाइंदा। उत्भुज सेत्ज करे कारा, करता पुरख खेल खलाइंदा। चारे खाणी कर त्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप जणाइंदा। साचा मार्ग पुरख अबिनाश, आपणा आप जणाईआ। सचखण्ड दुआरे पाए रास, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। लख चुरासी जोत प्रकाश, घट घट आपणा आसण लाईआ। देवे वस्त पवण सुवास, स्वास स्वासां विच समाईआ। सदा वसे आस पास, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। सेवा करे बण बण दासी दास, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। तेरी पूरी करे आस, आसावन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। साचा भेव हरि जू दस्स, एका एक जणाया। ब्रह्में अन्तर आपे वस, आपणा राग अल्हाया। चारे मुख हस्स, चारे वेद सुणाया। चारे जुग जायण वस, चारों कुण्ट डंक वजाया।

चारे खाणी देवे रस, चारे बाणी नाद सुणाया। चार जुग चौकड़ी करे बस, थिर कोए रहिण ना पाया। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाया। करे खेल पुरख समरथ, जुग जुग आपणा वेस वटाया। शब्द अगम्मी मार्ग दस्स, साचा मन्त्र इक्क सुणाया। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत कर रुशनाया। साचा करे भोग बिलास, भस्मड़ आपणा रूप धराया। साचे सुत देवे शाबाश, शहिनशाह आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा पड़दा आप उठाया। आदि पुरख आपणा पड़दा लाह, भेव अभेद जणाईआ। लख चुरासी लए बणा, घाड़त घड़े सच्चा शहिनशाहीआ। जल बिम्ब जाए समा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। नव नौ वंड वंडा, सति सति करे रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मति इक्क समझा, एका तत्त तत्त रखाईआ। साचा रथ दए चला, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। शब्दी शब्द खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता बन्ने धारा, द्वापर आपणा खेल कराइंदा। कलयुग वेखे वेखणहारा, रूप अनूप आप जणाइंदा। चारे वेद बोल जैकारा, अलख अगोचर एका ढोला गाइंदा। शास्त्र सिमरत दए सहारा, पुराण पुराणी आप जणाइंदा। गीता ज्ञान लाए अखाड़ा, गोपी काहन आप नचाइंदा। अञ्जील कुराना बोले नाअरा, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, कलमा कलाम इक्क पढ़ाइंदा। निरगुण निरगुण साची धारा, नाम सति सति दृढ़ाइंदा। सतिनाम कर प्यारा, वरन बरन आप समझाइंदा। एका बोल फतहि जैकारा, डंका शब्दी शब्द वजाइंदा। जुग चौकड़ी पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी आवे वारो वारा, गेड़ा गेड़े विच रखाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। शब्दी सुत तेरा जैकारा, जै जैकार आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। वस्त अमोलक सच्ची दात, सतिगुर पूरा झोली पाईआ। जुगां जुगन्तर तेरी गाथ, गुर अवतारां करे पढ़ाईआ। भगतां वसे सदा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। सन्तन पूरी करे आस, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। गुरमुखां करे बन्द ख़लास, राए धर्म ना दए सजाईआ। गुरसिखां वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा देणा दए समझाईआ। तेरा लहिणा देणा विच मात, निरगुण दाता आप समझाइंदा। जुग जुग वेखणा खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी झोली पाइंदा। साध सन्त भगत भगवन्त तेरा साक, गुरमुख सज्जण नाल मिलाइंदा। बन्द किवाड़ी खोल्हणा ताक, साचा मन्दिर इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

६६० ११

भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग चार, चार पन्ध मुकाईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लहिणा जाणे तेई अवतार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। रामा कृष्ना दे सहार, ईसा मूसा संग मुहम्मद करे पढ़ाईआ। मुख नक़ाब पड़दा दए उतार, जल्वा नूर नूर रुशनाईआ। आबे हयात दए दिलदार, आब आब बेताब ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। शब्द सुत रहिणा ख़बरदार, हरि साचे सच जणाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग उतरे पार, कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाया। राम कृष्न लै अवतार, त्रैलोकी नाथ आपणा जस जस सुणाया। ईसा मूसा बोल जैकार, सच पैग़ाम कलमा नबी पढ़ाया। मुहम्मद लेखा चार यार, चौथे जुग फेरा पाया। अल्ला राणी नेत्र नीर वहाए ज़ारो ज़ार, ज़रा ज़रा तरस ना आया। निरगुण खेल करे अपार, निरवैर आपणा रूप वटाया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वेखे हाहाकार, बरन अठारां देण दुहाया। एका जोत कर पसार, पंज तत्त चोला नानक नाम हंढाया। नाम सति बोल जैकार, सति सतिवादी राह चलाया। लेखा जाणे धुर दरबार, जोती जोत डगमगाया। एका जोती ना कोई वरन ना कोई गोती, रूप रंग रेख ना कोई रखाया। निरगुण चढ़ के बैठा साची चोटी, सचखण्ड दुआरे आसण लाया। लभ्भ लभ्भ थक्के कोटन कोटी, अंदर वड़ वड़ ध्यान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाया। आपणा भेव दस्से हाल, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल महान, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो बलवान, गोबिन्द सूरा लए उपजाईआ। सुत दुलारे देवे माण, दुष्ट दमन दमक वखाईआ। साचा चिल्ला तीर कमान, अणयाला तीर इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए समझाईआ। साचे सुत जुग चौकड़ी धार, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। गुर अवतार दे हुलार, शब्द हुलारा इक्क रखाइंदा। भगत सन्त कर त्यार, गुरमुख सज्जण नाल मिलाइंदा। एका नाद अनाद धुन्कार, धुंनी धुंन धुंन सुणाइंदा। जोती जोत कर उज्यार, जोत निरँजण डगमगाइंदा। करे खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा माण तेरा निशान दो जहान श्री भगवान आप झुलाइंदा। सुत शब्द तेरा सच निशाना, सतिगुर पूरा आप झुलाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जुग जुग देवे धुर फ़रमाणा, शब्द संदेसा इक्क सुणाईआ। वेद व्यास करे कल्याणा, लिख लिख लेखा कलम शाहीआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आए विच जहाना, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। ईसा दोए जोड़ करे सलामा, सजदा सीस जगदीस झुकाईआ। मेरा परवरदिगार

मेरे पिच्छे दए पैग़ामा, पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ मुसायक दस्तगीर करे पढ़ाईआ। मुहम्मद कहे मेरा ख़ुदा सही सलामा, चौदां तबकां वेखे चाँईं चाँईंआ। मुकामे हक़ खेले खेल महाना, जल्वा नूर नूर रुशनाईआ। नानक निरगुण कहे श्री भगवाना, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। जिस ने दिता सति नाम सच्चा दाना, वरन चार करे पढ़ाईआ। सो हर घट अन्तरजामा, घट घट बैठा डेरा लाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना, बल आपणा आप रखाईआ। एका जोती दस दस जामा, गोबिन्द अन्तिम वेख वखाईआ। जोधा सूरबीर बलवाना, साचा चिल्ला तीर उठाईआ। दूई द्वैती मारे इक्क निशाना, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। भाणा मन्ने श्री भगवाना, बंस सरबंसा भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द दए वड्याईआ। साचे शब्द तेरा खेल अपार, हरि साचा सच जणाइंदा। गोबिन्द सूरा वड बलकार, लोकमात समझाइंदा। सत्थर हंढाए साचे यार, सूलां सेज सोभा पाइंदा। एका मंगे मंग दोए जोड़ करे निमस्कार, पुरख अकाल अग्गे झोली डाहइंदा। तेरा कर्ज़ा दिता उतार, मकरूज तेरा लहिणा आप चुकाइंदा। इक्को मंगां दरस दीदार, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। पुरख अबिनाशी किरपा करे आप निरँकार, कलयुग अन्त कन्त समझाइंदा। गोबिन्द सूरे हो त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता पुरख अकाल ना मरे ना कदे जम्मा, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। पंज तत्त काया चोला जो घड़या सो अन्तिम भन्ना, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत तेरा बल, हरि जू आप समझाइंदा। सुत शब्द तेरा अन्तिम बल, हरि कलयुग वेख वखाईआ। लख चुरासी लए छल, भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द अन्तर आपे रल, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, लोकमात फेरा पाईआ। सम्बल नगर वेखे अचल, मूर्त अकाल आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा माण वड्याईआ। साचे शब्द तेरा माण, कलयुग अन्तिम अन्त रखाइंदा। चार वरन दा इक्क ज्ञान, चौथे जुग आप समझाइंदा। चार कुण्ट इक्क ध्यान, एका इष्ट प्रगटाइंदा। चार वेद वेखे आण, पुराण अठारां फोल फुलाइंदा। शास्त्र सिमरत भेव चुकान, गीता ज्ञान अठारां अध्याए पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रूप आप प्रगटाइंदा। अंज़ील कुरानां वेखे आ, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाईआ। मेहरबान बीदो बी खैर या अल्लाह प्रगट होए आप ख़ुदा, ख़ुदी सब दी दए गंवाईआ। पीर पैग़म्बर औलीए वेखे थाउँ थाँ, चौदां चौदां फेरा पाईआ। हक़ हक़ीक़त दए समझा, लाशरीक शरअ इक्क जणाईआ। जगत तारीक दए मिटा, साचा नूर कर रुशनाईआ। एका कलमा दए पढ़ा, आलमीन करे पढ़ाईआ। सुहबत जाणे दो जहां, साची नौबत नाम वजाईआ। लेखा लहिणा देणा दए मुका, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। तेरा नाउँ

लए प्रगटा, अनादी नाद नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण शब्द वड्याईआ। वेखणहारा जुग चौकड़ी चार, चार यारी पन्ध मुकाइंदा। नाम सति कर प्यार, सति असति पड़दा लाहइंदा। निरगुण सरगुण दे अधार, सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। काया तोड़ गढ़ हँकार, माया ममता मोह चुकाइंदा। दूई द्वैती कर खुआर, सच्चा एका रंग रंगाइंदा। काया मन्दिर कर त्यार, साचे बंक सोभा पाइंदा। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती खुशी मनाइंदा। गुरमुख सज्जण वेख विचार, गुर गुर आपणा हट्ट खुल्हाइंदा। तीर्थ तट सरोवर वेखे वारो वार, अठ सठ आपणा पन्ध मुकाइंदा। गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। केशव करे खेल अपार, ऋषी केश रूप वटाइंदा। मोहण माधव हो उज्यार, मुकंद मनोहर लखमी नरायण चतुर्भुज आदि शक्ति रूप अनूप आप धराइंदा। एका जोती जोत बलकार, एका शब्द नाद धुन्कार रागां नादां वसे बाहर, छत्ती राग भेव ना आइंदा। सचखण्ड दुआरे खेले खेल अपार, नानक मेला सच दरबार, कबीरा कूक करे पुकार, सृष्ट सबाई एका गुण समझाइंदा। सुत दुलारा विच संसार, गोबिन्द मेला अपर अपार, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। पंज तत्त तत्त कर खुआर, गुर अवतार कोई ना निभे नाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत अंजील कुरान खाणी बाणी करे पुकार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। भगत भगवन्त कर कर गए निमस्कार, सन्त सज्जण मंगण दीदार नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। गुरमुख रोवण ज़ारो ज़ार, पुरख अबिनाशी तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाइंदा। साचे सुत रहिणा त्यार, कलयुग आए अन्तिम वार, लख चुरासी जाए हार, जीव जंत होण विभचार साचा इष्ट ना कोए मनाइंदा। चार वरन होण खुआर, अठारां बरन रोवण ज़ारो ज़ार, मन मति बुध ना कोए विचार, साची सुध ना कोए जणाइंदा। घर विच घर ना मिले किसे दीदार, राम रघुवंस ना करे प्यार, सीता सुरती ना संग रखाईआ। कान्हा कृष्ना ना दए दीदार, घर सच्चा मिले ना कन्त भतार, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। ईसा मूसा मिले ना कोए मुहम्मद यार, अल्ला राणी रोवे आपणी धार, ऊँची कूक कूक सुणाईआ। नानक निरगुण वेखे वेखणहार, जीव जंत होए विभचार, हिरदे हरि हरि नाउँ ना कोए वसाईआ। गुर गोबिन्द सूरा पावे सार, कवण गुरसिख सिँघ सच्चा मेरा मंगे दरस दीदार, शस्त्र बस्त्र सीस सजाईआ। नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना ना संग निभाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर करे विचार, पैंती अक्षर अक्खर पढ़ाईआ। एकँकार वेखे धार, सति सति समझाईआ। करता पुरख भुलया नारी नार, हरि जू कन्त ना कोए हंढाईआ। रसना गौंदे जगत वार, अन्तर आत्म लिव ना कोए लगाईआ। कलयुग कूड़ चारों कुण्ट रिहा ललकार, आप आपणा बल रखाईआ। साध सन्त गए हार, अन्त बैठे पत्त गंवाईआ। मन्दिर मस्जिद मट्ठ

शिवदुआले गुरदुआर हाहाकार, सति सन्तोख नज़र ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड निवासी वेखे वेखणहार, आदि जुगादि भुल्ल कदे ना जाईआ। कलयुग अन्तिम निहकलंक लए अवतार, सम्बल नगरी आसण लाईआ। शब्दी डंक वज्जे संसार, दहि दिशा लए जगाईआ। साधा सन्तां करे ख़बरदार, राज राजाना हुक्म जणाईआ। चारों कुण्ट होए हाहाकार, नौ खण्ड पृथ्मी पए दुहाईआ। सति दीप ना कोए सुधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द देवे माण वड्याईआ। साचे सुत तेरा वक्त सुहाउणा, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। कलयुग वेला अन्त कराउणा, अन्त देवे ना कोए सफ़ाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सति सतिवादी रूप वटाईआ। वरन बरन हरि डेरा ढाउणा, ज़ात पात ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई एका इष्ट वखाउणा, नमो देव गुरदेव सतिनाम सति कलमा कलाम इक्क समझाईआ। ब्रह्म मति इक्क प्रगटाउणा, मन मति दए खपाईआ। साचा मन्दिर इक्क वखाउणा, काया बंक बंक वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म नज़री आउणा, ईश जीव करे कुड़माईआ। सो पुरख निरँजण ढोला सब ने गाउणा, हँ ब्रह्म रहे सरनाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना किसे अख्वाउणा, एका ब्रह्म रूप समझाईआ। साचा मार्ग आप लगाउणा, पुरख अकाल फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द वेख वखाईआ। साचे शब्द हरि लैणा वेख, अन्त अन्त समझाइंदा। कलयुग अन्तिम मिटणी रेख, रूप रंग ना कोए जणाइंदा। लख चुरासी झूजणा झूठे खेत, गुरमुख विरले नाल मिलाइंदा। जुगा जुगन्तर करे हेत, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। वसणहारा नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां चार जुग दा लहिणा देणा नबेड़े पहली चेत, चेतन सब नूं आप कराइंदा। अजूनी रहित अनभउ प्रकाश जुगा जुगन्तर सब दा जाणे भेत, भेव ना कोए छुपाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साचे भगत रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। त्रैगुण अग्नी कलयुग तपे महीना जेठ, कलयुग जीव सर्ब तड़फाइंदा। निरगुण सरगुण तेरी वेखण आया खेड, लख चुरासी एका खेड जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरि शब्दी शब्द तेरा माण वधाइंदा। शब्दी शब्द तेरा सच बिबाणा, हरि साचा सच प्रगटाइंदा । कलयुग अन्तिम खेल महाना, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। नव नौ होए वैराना, चार चार वंड वंडाइंदा। गुरू गुरदेव मन्नणा पए सब नूं भाणा, भाणे विच सर्ब रखाइंदा। गुरमुख विरले गीत गोबिन्द बिन रसना जिह्वा गाणा, आत्म अन्तर तार सितार हिलाइंदा। बिन मंज़ल चढ़या देवे पद निरबाणा, चौथे पद आप बहाइंदा। अनहद राग अनादी गाणा, बिन रसना जिह्वा आप सुणाइंदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, निझर झिरना आप झिराइंदा। आत्म ब्रह्म कर परवाना, पारब्रह्म

६६४
११

आपणा मेल मिलाइंदा। हरिभगत तेरा संग निभाणा, सगला संग आप रखाइंदा। दो जहानां देवे माणा, एथे ओथे सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द दुआरे साचे खड़, खड़ग खण्डा इक्क चमकाइंदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, तिक्खी धारी धार जणाईआ। निरगुण हथ्थ फड़े निरँकार, दो जहानां नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी जीव जंत कलयुग माया सुत्ते पैर पसार, ना लए कोए अंगड़ाईआ । मानस जन्म रहे हार, हरि जू भुलया बेपरवाहीआ। अंदर वड़या ठग्ग चोर यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मन मती दए सलाहीआ। नौ दुआरे वणज वापार, साचा हट्ट ना कोए समझाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, गुर का शब्द हथ्थ किसे ना आईआ। सतिगुर अर्जन लिख लिख लेखा रख्या विच संसार, बिन खोजे शब्द हरि शब्द सार ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द तेरा वसाए घर, सच दुआरे दए वड्याईआ। शब्दी घर वसे दरबारा, सतिगुर पूरा आप वसाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, लोकमात खुशी मनाईआ। महल अटल उच्च मुनारा, छत्ती युग माण दवाईआ। नानक सतिगुर गाई धारा, छत्ती राग सिफ्त सलाहीआ। भगतां मिले हरि मीत मुरारा, मित्र प्यारा रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम दए सहारा, साची नईया मात चलाईआ। निहकलंक महांबली उतरे विच संसारा, डंका शब्द इक्क सुणाईआ। लोकमात सचखण्ड खोल्हे सच दुआरा, सचखण्ड निवासी आपणा आसण लाईआ। दर सद्दे गुर अवतारा, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। पीर पैग़म्बर आउणा वारो वारा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ करन निमस्कारा, दर बैठण सीस झुकाईआ। सुरपति इन्द करे पुकारा, करोड़ तेतीसा इक्क ध्यान लगाईआ। गण गंधर्ब किन्नर जच्छप गायन वारा, गीत गीत नाल मिलाईआ । भगत भगवन्त मंगण दरस दीदारा, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। गोबिन्द कहे कल कल्की आए अवतारा, कलयुग कलेश दए गंवाईआ। साख्यात प्रगट होए विच संसारा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। कायनात देवे इक्क हुलारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द खेल कराईआ। शब्द खेल पारब्रह्म, ब्रह्म आपणी अंस जणाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता दुःख ना कोए वखाइंदा। नेत्र नीर ना छम्म छम्म, हँस मुख ना रूप वटाइंदा। पवण स्वास ना कोए दम, नेत्र नैण ना कोए मटकाइंदा। जोत निरँजण ना कोए चन्न, धुंन नाद ना कोए सुणाइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, आपणे कंध आप उठाइंदा। प्रगट हो श्री भगवन, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। दिस ना आए नेत्र अन्न, कलयुग अन्धेरा छाइंदा। साचा राग ना सुणया कन्न, मन का मणका ना कोए भुवाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी देवणहारा डंन, गुरमुख मनमुख जीव जंत फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत शब्द तेरा माण आदि अन्त रखाइंदा । आदि

अन्त तेरा ज़ोर, ज़ोरावर आप समझाईआ। तुध बिन रहे ना कोई होर, गुर शब्द तेरी वड्याईआ। तेरे हत्थ जुग चौकड़ी डोर, जिउँ भावे तिउँ लए चलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकर्मी चढ़या साचे घोड़, साचा घोड़ा आप दौड़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुख सन्त जाए बौहड़, आप आपणी गोद उठाईआ। जूठा झूठा भन्ने रीठा कौड़, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। गुरमुखां जन्म जन्म दी बुझाए लग्गी औड़, दे दरस तृप्त कराईआ। सस्से उपर लाया होड़, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। हँ ब्रह्म आत्म परमात्म जोड़ जोड़, सोहँ रूप इक्क समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सृष्ट सबाई दिसाए अन्ध घोर, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। जीव जंत साचा धन्न लुट्टया काम क्रोध लोभ मोह हँकार ठग्ग चोर, काया अंदर फेरी पाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना सके होड़, घर घर रोवे सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म प्रभ अग्गे दोए हत्थ रहे जोड़, चरन कँवल सीस झुकाईआ। तेरे अग्गे चले ना कोई ज़ोर, तेरे हुक्म फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, पंज तत्त काया छड्डुया घर, एका शब्द गुर वखाईआ। एका शब्द गुरू आदि जुगादि, जुग जुग खेल कराइंदा। एका शब्द गुरू वजाए नाद, घट घट राग सुणाइंदा। एका शब्द गुरू वसे ब्रह्माद, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाइंदा। एका शब्द गुरू साधा सन्तां करे लाड, गुरमुखां आपणी गोद बहाइंदा। एका शब्द गुरू सच निशाना देवे गाड, साचा धर्म साचा कर्म साचा जन्म इक्क समझाइंदा। एका शब्द गुरू मारे आपे आवाज़, गुरमुख सोए आप जगाइंदा। एका शब्द गुरू ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। एका शब्द गुरू चलाए जहाज़, जन भगतां बेड़ा बन्नू वखाइंदा। एका शब्द गुरू सचखण्ड देवे सच्चा राज, सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। एका शब्द गुरू नारी कन्त रचे काज, दूल्हा दुल्हन मेल मिलाइंदा। एका शब्द गुरू सब दा खोल्हे पाज, कंचन सोना वेख वखाइंदा। एका शब्द गुरू आदि जुगादि जन भगतां रखे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। एका शब्द गुरू जन भगतां सुवारे काज, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, शब्द गुरू इक्क प्रगटाइंदा। शब्द गुरू होए प्रगट, कलयुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। वसणहारा घट घट, निरगुण फेरा पाईआ। लहिणा देणा मुकाए तीर्थ तट, अठ सठ मूल चुकाईआ। सति सतिवादी साचा मार्ग जाए दस्स, सतिजुग साचा राह चलाईआ। चार वरन एका सरन एका मन्दिर जायण वस, एका इष्ट देव मनाईआ। पुरख अकाल गावण जस, दूसर होर ना कोए पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा मिले हस्स हस्स, हरिजन मेला चाँईं चाँईंआ। जिस दे अग्गे जोड़दे रहे हत्थ, कर डण्डौत मस्तक धूढ़ लाई शाहीआ। सो साहिब पुरख सुल्तान, प्रगट होए समरथ, संसा दुःख दए गंवाईआ। जिस कोलों रवीदास चुमारे सीआं मंगी

साढे तिन्न हथ्थ, तिस कोलों सब दा लेखा दए मुकाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे त्रैलोकी नाथ, सो नाथ अनाथा होए सहाईआ। जिस नूं कहिन्दे राम सुत दसरथ, सो दहि दिशा फेरा पाईआ। जिस नूं कहिन्दे नंद जशोदा होया वस, सो रूप अनूप वटाईआ। जिस नूं ईसा मूसा सजदा करदे रहे चरनां सीस झस, सो मुख नक़ाब रिहा उठाईआ। जिस नूं नानक निरगुण कहे रखे पत्त, ढाकण कु पत सच्चा माहीआ। जिस नूं गुर गोबिन्द किहा मेरा पिता पुरख समरथ, पुरख अकाल इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां गाए साचा जस, शब्दी शब्द वज्जे वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे ना आए हथ्थ निरगुण बैठा मुख छुपाईआ।

★ १३ फग्गण २०१८ बिक्रमी हरदित सिँघ दे गृह इटारसी ★

जगत जग खेल अपारा, जन्म जन्म भेव चुकाईआ। राती रुत्ती थिती वारा, घड़ी पल दिवस रैण मास बरख लेखे लाईआ। आत्म परमात्म खेल न्यारा, हरि निरँकारा आप कराईआ। लख चुरासी बण ठठयारा, घड़ घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। मानस मानुख दए अधारा, मानव आपणे रंग रंगाईआ। तत्तव तत्त दए सहारा, त्रैगुण आपणा बन्धन पाईआ। पंज तत्त तत्त अखाड़ा, जगत वासना विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पंज तत्त त्रैगुण नाता, पंचम मीता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण सरगुण खेल तमाशा, जोती जाता वेख वखाइंदा। नाम निधान अगम्मी गाथा, पुरख अबिनाशी आप सुणाइंदा। शब्दी शब्द चलाए राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। लेखा जाण त्रैलोकी नाथा, त्रै त्रै आपणा रंग वखाइंदा। आदि जुगादी इक्क इकांता, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जुगा जुगन्तर पुछे वाता, जन भगतां मेल मिलाइंदा। चरन कँवल बंधाए नाता, लोकमात जोड़ जुड़ाइंदा। सदा सुहेला देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। अक्खर वक्खर पूजा पाठा, हरि हरि नाम पढ़ाइंदा। सर्ब जीआ घट कर कर वासा, गृह गृह खोज खुजाइंदा। निर्मल दीआ कर प्रकाशा, जोत निरँजण आप जगाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल सोभा पाइंदा। रवि ससि दासी दासा, सूरज चन्द नूर चमकाइंदा। हरिजन हरि जू पूरी करे आसा, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सच सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाईआ। हरिजन मेला आदि निरँजणा, जोत निरँजण वेख वखाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ।

एकँकारा एका पाए नाम अञ्जणा, नेत्र ज्ञान इक्क खुल्हाईआ। आत्म परमात्म साचा सजणा, साक सैण इक्क हो आईआ। साचे मन्दिर इक्क अनन्दना, अनन्द अनन्द समाईआ। चरन धूढ़ कराए मजना, दुरमति मैल धुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह सच्चा राम, हर घट रिहा समाईआ। जुग जुग जाणे आपणा काम, करनी करता सेव कमाईआ। काया खेड़े वसे नगर ग्राम, साचे मन्दिर डेरा लाईआ। अमृत आत्म निझर देवे जाम, भर प्याला इक्क प्याईआ। मेटे रैण अन्धेरी शाम, जोती नूर कर रुशनाईआ। एका नज़री आए शाम, घनईआ आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। थान थनंतर हरि हरि कार, हरी हरि नर नरायण आप कराइंदा। लखमी खेल करे करतार, उतर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाइंदा। नौ खण्ड पृथमी हो उज्यार, सत्त दीप भेव चुकाइंदा। चौदां तबक पावे सार, चौदां लोक हट्ट वखाइंदा। चौदां विद्या कर त्यार, गुण अवगुण आप समझाइंदा। आपे वसे सब तों बाहर, निरगुण आपणे रंग समाइंदा। जन भगतां करे सच प्यार, जुग जुग आपणा वेस धराइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे विगसे वेखणहार, रूप अनूप सति सरूप अनडिठड़ी खेल कराइंदा। वसणहारा चारों कूट, दहि दिशा फेरी पाइंदा। जिस जन उपर जाए तूठ, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। लेखा जाणे काया कलबूत, काया काअबा फोल फुलाइंदा। सरगुण देवे सच सबूत, निरगुण आपणा रूप दरसाइंदा। नाता तोड़ जूठ झूठ, सच सुच्च इक्क दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला इक्को घर, पंज तत्त काया मन्दिर दए वड्याईआ। जगत वासना जाए हर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए मिटाईआ। आसा तृष्ना चुक्के डर, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। नौ दुआरे पार कर, सुखमन टेढी बंक लँघाईआ। ईड़ा पिंगल सरन सरनाई जाए पड़, त्रिकुटी छुट्टी आपणी बूझ बुझाईआ। नूर उजाला इक्को कर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अनहद नाद मृदंगा वज्जे घर, ताल ताल नाल मिलाईआ। सच सरोवर नुहाए साचे सर, अमृत आत्म दए वखाईआ। सहँस सहँसा पार कर, कँवल कँवला दए वड्याईआ। बजर कपाटी तोड़ गढ़, साचा मन्दिर लए खुल्हाईआ। साची सेजा आपे चढ़, ब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। पारब्रह्म प्रभ खेल कर, ईश जीव खुशी मनाईआ। सुन्न अगम्मी आपे वड़, आपणा मुख छुपाईआ। आपणी किरपा आपे कर, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव लगाए आपणे लड़, सूरज चन्न आपणे हेठ दबाईआ। सागों पांग बाशक तशका साची सेज वेखे नर, नर नरायण खुशी मनाईआ। थिर घर दुआरे खोल्ह किवाड़, अलख निरँजण एका अलख जगाईआ। सुत दुलारा सरन सरनाई जाए पड़, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी धार बल, बल आपणा आप दए समझाईआ।

सचखण्ड दुआरे आपे वड़, पुरख अबिनाशी खुशी मनाईआ। वेखे प्रकाश एका घर, जोती जोत डगमगाईआ। अलख अगम्म अगोचर खेल कर, धार धार नाल समाईआ। शाहो भूप आपे बण, तख्त निवासी नाउँ रखाईआ। सीस जगदीस ताज धर, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। निरगुण निरगुण वेस हरि, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। आपणी रचना वेखे खड़, जुग जुग आपणा राह चलाईआ। निरगुण सरगुण देवे वर, लोकमात फेरा पाईआ। सन्त सुहेले लए फड़, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग आरती हवन, पूजा पाठ पाठ समझाइंदा। आपे सब मैं रिहा गवन, दिस किसे ना आइंदा। आपे सच सुगंधी होए हवन, धूप दीप माला आप फुलन अख्वाइंदा। आपे तुलसी आपे चन्दन, चन्दी मस्तक टिक्का आप लगाइंदा। आपे जाणे खाना बन्दी, बन्दीखाना आप तुड़ाइंदा। आपे गीत सुहागी छन्दी, वाह वाह आपणा ढोला आप सुणाइंदा। आपे खेल करे वरभण्डी, ब्रह्मण्डी खोज खोजाइंदा। लख चुरासी जीव जंत बिन परमात्म आत्म होई अन्धी, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जगत विकारा वासना गंदी, सच सुगंधी ना कोए रखाइंदा। चारों कुंट भेख पखण्डी, कलयुग आपणा डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा । हरिजन तेरा चुक्के ओहला, श्री भगवान आप चुकाईआ। पंज तत्त काया वेखे चोला, नगर खेड़ा सोभा पाईआ। अंदर मन्दिर बह बह गाए ढोला, गीत अनादी इक्क सुणाईआ। मन वासना ना पाए रौला, मन मनसा दए खपाईआ। नज़री आए साँवल सवला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा मूल चुकाईआ। हरिजन लहिणा चुक्के मूल, अनमुल्ल आप चुकाइंदा। लेखा जाणे शंकर त्रिसूल, जटा जूट वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साहिब सुल्तान सच असूल, असलीअत आपणे हथ्थ रखाइंदा। ब्रह्म मेला पारब्रह्म कन्त कन्तूहल, नारी कन्त वेस वटाइंदा। विष्नूं विश्व वास्तक झूला लए झूल, सच हुलारा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। वेखणहारा इक्क गुरदेव, नमो नमो नमो वड्याईआ। जन्म जन्म दी जाणे सेव, पूरब लेखा झोली पाईआ। दाता दानी वड देवी देव, देवत सुर लए मिलाईआ। जगत मिलावा इक्क नेहकेव, निहचल धाम दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला हरि शब्द सच्ची कुड़माईआ। शब्द कुड़माई जुड़या जोड़, सुरती शब्द बंधाया। निरगुण सरगुण इक्को लोड़, बण विचोला खेल कराया। दो जहानां वाली घर घर दर दर जाए बौहड़, आप आपणा पन्ध मुकाया। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढे डोर, बण सेवक सेव कमाया। नाता तोड़ मढ़ी गोर, आप आपणी गोद बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चे

लए तराया। तारनहारा एकँकार, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। काया मन्दिर अंदर वेखे डूँग्घी गार, अन्धेरी भँवरी फेरा पाईआ। किरपा निध ठाकर स्वामी लए उभार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मानस जन्म जन्म संवार, जन भगतां पैज वधाईआ। कागज कलम लिख लिख गए हार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। बसुधा आपणा आप कर पसार, आपणा बल गई गंवाईआ। समुंद सागर रोवण ज़ारो ज़ार, मस लेखा ना कोए जणाईआ। बनास्पत डिगे मूँह दे भार, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। गुर अवतार करन पुकार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी कहे मेरा इक्को इक्क प्यार, जन भगतां मेल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम लए अवतार, निरगुण निराकार साकार वेखे चाँईं चाँईंआ। जुग जुग विछड़े मेले मेलणहार, मिल मिल सखीआं मंगल गाईआ। गीत गोबिन्द आप उच्चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन माण इक्क दुआर, दर दुआरका इक्क वखाइंदा। सोभावन्त वन्त करतार, श्री भगवन्त खेल कराइंदा। मणीआ मंत मंत जैकार, जै जैकार शब्द अलाइंदा। बणाए बणत विच संसार, बसन बनवारी रूप वटाइंदा। पूरब लहिणा कर्म विचार, साचे नैणां नैण मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, दर साचा आप सुहाइंदा। दर सच्चा सोहे दरबार, दर दर वज्जे वधाईआ। हरिजन मेला मीत मुरार, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोत अकालण बण दलालण लोकमात बणे सेवादार, बण सुघड़ सुचज्जी सुआणी सेव कमाईआ। गुरमुख वेखे मीत मुरार, चारों कुट नैण उग्घाड़ दहि दिशा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जोत अकालण बण निमाणी, लोकमात वेस वटाया। गुरमुख लभ्भे सच्चा हाणी, दर दर फेरा पाया। एका बख्शे अमृत ठंडा पाणी, प्रेम प्याला हथ्थ उठाया। मैं गावां उहदी सच कहाणी, कह कह आपणा शुकर मनाया। गुरमुख दर जाए बणा साची राणी, सीस ताज इक्क सुहाया। नाता तुट्टे चारे खाणी, चारे बाणी माण चुकाया। मिले पद पद निरबाणी, सच महल्ल सोभा पाया। ओथे रल मिल गाईए अकथ कहाणी, रसना जिह्वा ना कोए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे आपणा घर, आपे मेले आपणा वर, हरिजन आपणा बन्धन पाया। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, जिस काया मन्दिर जाए वड़, सो मन्दिर आप सुहाया।

६७० ११

★ १३ फग्गण २०१८ बिक्रमी सुरिंदर सिँघ दे गृह इटारसी ★

हरिजन मंगे इक्को मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। काया चोली चढ़े रंग, उतर कदे ना जाईआ। आत्म अन्तर इक्क अनन्द, दिवस रैण खुशी मनाईआ। अनहद नाद वज्जे मृदंग, शब्दी शब्द होए शनवाईआ। आत्म सेजा मिले पलँघ, बंक दुआरे वड्डी वड्याईआ। इक्को गीत सुहागी सुणे छन्द, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। पंच विकारा होए खण्ड खण्ड, जगत तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। हरिजन बख्शे चरन ध्यान, सरन सरनाई इक्क जणाइंदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म आप पढ़ाइंदा। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुख गवाइंदा। कर प्रकाश कोटन भान, निरगुण जोती जोत जगाइंदा। शब्द अगम्मी एका गाण, बोध अगाध सुणाइंदा। काया मन्दिर सच मकान, गुरुदुआर इक्क वखाइंदा। नज़री आए श्री भगवान, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाइंदा। हरिजन मंगे इक्को दात, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। मेल मिलावा लोकमात, मिले शरन सरनाईआ। नाउँ निरँकारा साची गाथ, किरपन कर पढ़ाईआ। जोत लिलाटी मस्तक माथ, साची घाटी फड़ चढ़ाईआ। एथे ओथे देणा साथ, सगला संग निभाईआ। तेरा नाउँ पूजा पाठ, बिन रसना जिवहा गाईआ। तेरा नूर पाकी पाक, पतित पापी पार कराईआ। तेरी बातन दिसे ज़ात, ज़ाहरा ज़हूर तेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, दीनन आपणी दया कमाइंदा। हरिजन वेखे साचे लाल, बाल अञ्याणे आप उठाइंदा। देवे नाम सच्चा धन माल, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, एका रंग वखाइंदा। दीपक दीआ एका बाल, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाइंदा। हरिजन मंगे इक्को वर, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। निरभउ चुका भय डर, भयानक रूप नज़र ना आईआ। थिर घर वेखां तेरा घर, घर वज्जदी रहे वधाईआ। दरस देणा अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। नाता तुट्टे सीस धड़, पंज तत्त ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म बन्नणा लड़, निरगुण डोरी आप रखाईआ। साचे पौड़े जावां चढ़, घर बंक तेरा पाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, देणी माण वड्याईआ। मैं सरन सरनाई जावां पड़, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। मानस जन्म ना आए हार, लख चुरासी फंद कटाईआ। राए धर्म ना मारे मार, चित्रगुप्त ना दए सजाईआ। लाड़ी मौत ना करे शृंगार, वेले अन्त काल ना खाईआ। महांकाल कर प्रितपाल, इक्को मंग मंगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरवेश बैठा सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, बेऐब नाउँ रखाइंदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, जन भगतां बेड़ा आप चलाइंदा। शब्द अगम्मी सति सलाह, सति सतिवादी आप समझाइंदा। फड़ फड़ बांहों राहे पा, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। नाउँ निरँकारा लैणा गा, साची सिख्या इक्क सिखाइंदा। निरगुण सरगुण होए सहा, सरगुण रूप अनूप धराइंदा। गुर गुर फेरा आपे पा, शब्दी डंक वजाइंदा। साचे सन्त लए उठा, गुरमुख मेल मिलाइंदा। डूँग्घी भँवरी पार करा, साचे बेड़े आप चढ़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पकड़नहारा बांह, आप आपणा खेल कराइंदा। जन भगतां बणे पिता मां, बालक आपणी गोद सुहाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाइंदा। वेखणहारा थाउँ थाँ, नौ खण्ड पृथ्मी खोज खुजाइंदा। लख चुरासी अंदर रिहा समा, भेव कोए ना पाइंदा। वसणहारा नगर खेड़ा ग्रां, पंज तत्त काया सोभा पाइंदा। सदा सुहेला इक्क अकेला आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी सिर रखे ठंडी छाँ, समरथ आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाइंदा। गुरसिख मंगे कर पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाया। मात गर्भ जन्म जन्म अग्नी रही साड़, हवनी हवन कुण्ड तपाया। बहत्तर नाड़ लग्गी आग, तत्तव तत्त रिहा जलाया। नेत्र नैण ना खुल्ली जाग, ज्ञान नेत्र ना कोए रखाया। लख चुरासी विच्चों लए ना कोए काढ, जूनी जून जून भुवाया। मात पित भाई भैण सज्जण दिसे झूठे साक, सगला संग ना कोए निभाईआ। बिन तेरे खोल्हे ना कोए ताक, घर दीपक ना कोए जगाया। जगत वणजारा झूठा हाट, जुग जुग त्रैगुण माया हट्ट चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सरन रहे सरनाया। पुरख अबिनाशी सदा समरथ, समरथ दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा मार्ग दस्स, भगत भगवन्त लए तराईआ। कलयुग अन्तिम महिमा जाणे अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। निरगुण सरगुण होया वस, बेवस बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्त सच प्यार अंदर जाए फस, साची भगती इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुरमुख सज्जण सुण संदेसा, घर विच खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म प्रभ नर नरेशा, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। जन भगतां कारन करे वेसा, रूप अनूप धराइंदा। आदि जुगादी साचा पेशा, बण किरती किरत कमाइंदा। तिस साहिब नूं सदा आदेसा, जो विछड़े मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वसीए साचे घर, घर साचा मोहे भाइंदा। साचा घर श्री भगवान, एका एक जणाईआ। नाता तुट्टे जगत जहान, जीवण जुगत ना कोए वड्याईआ। दिवस रैण इक्क ध्यान, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। काया मन्दिर सच मकान, गुरदुआरा इक्क समझाईआ।

६७२
११

अंदर वसे श्री भगवान, घर घर विच सोभा पाईआ। दीआ बाती जोत महान, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अनहद शब्द नाद धुन्कान, धुंन आत्मक रिहा सुणाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना आप झिराईआ। नाता तुट्टे पंज शैतान, आसा तृष्ना दए खपाईआ। मन मनुआ मिटे माण, उठ उठ ना दहि दिश धाईआ। मति मतवाली होए हैरान, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। हरि का शब्द इक्क बलवान, बल आपणा लए वखाईआ। एका देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। चौदां विद्या नैण शरमाण, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी सर्ब जस गाण, जस हरि जू आप जणाईआ। गुरसिख तेरा मेला इक्क मकान, गृह मन्दिर मिले वड्याईआ। सूरज चन्द ना कोए निशान, मंडल मण्डप ना कोए रखाईआ। ना कोए ज़िमीं ना असमान, समुंद सागर ना कोए रखाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोए बीआबान, उच्चा टिल्ला पर्बत नज़र कोए ना आईआ। इक्क इकल्ला नौजवान, निरगुण बैठा आसण लाईआ। जोती जाता श्री भगवान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सचखण्ड वसे सदा मेहरवान, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गुरमुख सज्जण वेखे आण, गुर गोबिन्द मेला चाँईं चाँईंआ। नानक लेखा दर परवान, सच परवाना इक्क फड़ाईआ। सो पुरख निरँजण गुण निधान, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां फोल फुलाईआ। कर किरपा जिस जन देवे नाद दान, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। नाता तुट्टे जीव जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरसिख गुर गुर सदा वसण इक्क मकान, घर साचे सोभा पाईआ। दो जहानां इक्क निशान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आप झुलाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, सच प्रधानगी इक्क वखाईआ। जन्म जुग दे विछड़े मेले आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा बन्धन पाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन चतुर सुघड़ सुजान, बुध बिबेक इक्क कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे सच्चा वर, अन्त कन्त भगवन्त, जोती जाता पुरख बिधाता, गुर गुर चेला सज्जण सुहेला, सचखण्ड निवासी सच घर मेला इक्क इकेला आप कराईआ। साचे तख्त बैठ निरँकार, धुर फ़रमाणा हरि जणाइंदा। सच संदेसा एका वार, एकँकारा आप अलाइंदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, नूर नुराना नूर दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाण, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण वड बलवान, बलधारी भेव खुल्हाईआ। एकँकारा जाणी जाण, जानणहार सच्चा शहिनशाहीआ। आदि निरँजण हो प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाईआ। श्री भगवान सच निशान, सच महल्ले इक्क वखाईआ। अबिनाशी करता हुक्मरान, पारब्रह्म प्रभ

दए सलाहीआ। सचखण्ड खेल महान, अगम्म अगम्मड़ा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म हरि निरँकार, एका एक सुणाइंदा। सच सिँघासण सोभावन्त श्री भगवन्त इक्क इकल्ला बैठ करे विहार, भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी जाणे पिछली कार, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार लए उठाल, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। पीर पैग़म्बर दे जलाल, जल्वा नूर आप वखाइंदा। उठो वेखो हक़ हक़ीक़त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा जोधा बीर, बली बलवान आप जणाईआ। जुग चौकड़ी होए अख़ीर, आखर आपणे हथ्थ रखाईआ। दो जहानां खेल बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शरअ शरीअत पा ज़ंजीर, वरन बरन वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार सब नूं रिहा जगाईआ। गुर अवतार जाणा जाग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। तख्त निवासी एका राग, पुरख अकाल आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी बन्नां ताग, साचा तन्द इक्क वखाइंदा। सरगुण रूप जगे चिराग़, दीआ बाती डगमगाइंदा। त्रैगुण तत्त वेखे आग, अग्नी अग्ग लगाइंदा। मानस मानुख वेखो काग, कागी रूप वटाइंदा। दुरमति मैल लग्गा दाग़, निर्मल नीर ना कोए वखाइंदा। कोई ना किसे रखे लाज, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। गुर अवतार खोल्हो अक्ख, हरि आखर आप सुणाइंदा। लोकमात वेखो प्रतख, परम पुरख खेल कराइंदा। जुग जुग मार्ग जो आए दस्स, जीव जंत जंत समझाइंदा। भेव चुकाए मन्दिर मठ्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करवट आप बदलाइंदा। साची करवट श्री भगवान, चौथे जुग आप बदलाईआ। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। नेत्र खोल्ह करो ध्यान, लोकमात रिहा वखाईआ। चार वरन सर्ब कुरलाण, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देण दुहाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अंध्यान, दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म ना कोए ज्ञान, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। अन्तर लिव ना कोए ध्यान, निज नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। अमृत रस ना पीण खाण, कँवल झिरना ना कोए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम सब नूं रिहा जगाईआ। गुर अवतार करो विचार, हरि साचा सच जणाइंदा। लेखा वेखे वेखणहार, लिख्या लेख सर्ब वखाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत गए हार, गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। अंज़ील कुरान ना कोए अधार, तीस बतीस ना कोए सलाहइंदा। साचा कलमा ना कोए प्यार, कलाम इलाही ना कोए जणाइंदा। कातब बणे ना कोए लिखार, लिख लिख लेख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार आप समझाइंदा। गुर अवतार

दयो दलील, हरि साचा सच जणाईआ। पीर पैग़म्बर करो अपील, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे ना कोए वकील, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा वरताईआ। एका हुक्म ब्रह्मा सुत, सनक सनंदन आप जणाइंदा। सन्त कुमार जाणा उठ, वेला अन्तिम आइंदा। बराह तेरी गई रुत्त, जगे पुरष पन्ध मुकाइंदा। हाव ग़रीव तेरी रुत्त, नर नरायण वेख वखाइंदा। कपल मुन वेख काया बुत्त, दत्ता त्रै आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दा पिछला लेखा लहिणा सब दा झोली पाइंदा। रिखव देव कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। पिरथू तेरा धरत निशान, धरत धवल दए दुहाईआ। मत्तस तेरा तुट्टा माण, जल बिम्ब ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा पड़दा रिहा चुकाईआ। कछप उठ वेख विचार, मिन्दिरा सीस नज़र ना आइंदा। धनंतर तेरी करे ना कोए विचार, औखध जगत ना कोए मुकाइंदा। मोहणी रूप नज़र ना आए विच संसार, नेत्र नैण बन्द रखाइंदा। हँस चोग ना चुगे माणक मोती सोहँ शब्द ना कोए जैकार, पंखी पंछी संग ना कोए रखाइंदा। नर सिँघ तेरा लेखा ना कोए उज्यार, प्रहिलाद वेस ना कोए वटाइंदा। हरी रूप ना कोए अधार, गज़ तन्द ना कोए तुड़ाइंदा। नरायण तेरा ज्ञान ना कोए सहार, बालक ध्रू ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाइंदा। बावन उठ कर विचार, बल नज़र किते ना आया। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी धार आप चलाया। सतिजुग रिहा ना विच संसार, त्रेता आपणा रूप वटाया। परस राम करया ख़बरदार, ब्रह्मण सुत एका जाया। राम रघुपत लए अवतार, रघुवंस लेख चुकाया। नेत्र नैण वेख उग्घाड़, सीता सुरती रूप ना कोए वटाया। भीलणी दिसे ना कोए विच उजाड़, सर सरोवर ना कोए सुहाया। सृष्ट सबाई रावण रूप होया संसार, लंका गढ़ ना कोए तुड़ाया। पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार, साचा हुक्म इक्क सुणाया। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। वेद व्यास उठ बाल अंञाणा, बाली बुध इक्क दृढ़ाईआ। नाता तुट्टा अठारां पुराणा, चार लख सतारां हज़ार गिण गिण पन्ध मुकाईआ। अन्तिम वरते हरि का भाणा, हरि भाणा आप वरताईआ। जीव जंत कोई ना दिसे सुघण सयाणा, मन मति चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। काहन कृष्न वेख खेल महाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा रिहा जणाईआ। काहन कृष्न त्रैलोकी नाथ, नाथ अनाथां आप जणाइंदा। लख चुरासी कोए ना दिसे साथ, सगला संग ना कोए निभाइंदा। आत्म परमात्म भुलया पाठ, सुरती शब्द ना कोए मिलाइंदा। कोई ना आए साचे घाट, साचे सरोवर सच इश्नान ना कोए कराइंदा। कूड़ी क्रिया विक्या हाट, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि हरि बोध, बोध अगाधा आप सुणाईआ। जगत विद्या ना सके कोई सोध, सोभत नज़र किसे ना आईआ। हरि का भेव ना किसे दिसे गोझ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बुध रिहा समझाईआ। सो पुरख निरँजण परवरदिगारा, आपणा खेल आप समझाइंदा। ईसा मूसा कर ख़बरदारा, ख़ालक ख़लक आप वखाइंदा। मुकामे हक़ हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। लोकमात हाहाकारा, नेत्र नैण सर्ब जणाइंदा। कलमा कलाम ना किसे विचारा, बिस्मिल रूप ना कोए वटाइंदा। सजदा सीस ना झुके परवरदिगारा, आबे हयात ना कोए प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा आप चुकाइंदा। उठ मुहम्मद वेख विचार, बेऐब रिहा समझाईआ। नाता तुट्टा चार यार, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। अल्ला राणी रोवे धाहां मार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। हक़ हक़ीक़त ना पावे कोई सार, लाशरीक बैठा मुख छुपाईआ। उम्मत उम्मती गई हार, नबी रसूल ना संग निभाईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। चौदां तबक करन पुकार, चौधवीं सदी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उम्मत उम्मती रिहा वखाईआ। उम्मत वेखो वड उल्मा, आलमीन समझाइंदा। साचा कलमा ना सके कोई पढ़ा, शरअ शरीअत ना कोए वखाइंदा। साचा हुजरा ना सके कोई वखा, साची बांग ना कोए अल्हाइंदा। साचा महबूब ना सके कोई मिला, गुरबत कोई ना बाहर कढाइंदा। इलाबुत्त ना सके फेरा पा, इतल वितल सितल खेल ना कोए जणाइंदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह दो जहानां वेख वखाइंदा। सब दा लहिणा दए मुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। साची खेल हरि निरँकार, सचखण्ड निवासी आप कराईआ। नानक निरगुण वेख विचार, सरगुण नानक रिहा समझाईआ। चारों कुण्ट कुण्ट विभचार, जीव आधार ना कोए वड्याईआ। नाम सति ना कोए प्यार, सतिनाम ना कोए पढ़ाईआ। अंदर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, ज्ञान गुरू ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा रिहा समझाईआ। नानक निरगुण बोल जैकारा, पुरख अबिनाशी इक्क सुणाइंदा। तेरा भेव आदि जुगादि न्यारा, अन्त कोए ना पाइंदा। मैं लोकमात बण के गया वणजारा, साचा वणज हट्ट वखाइंदा। चार वरन दिता इक्क सहारा, ऊँच नीच राउ, रंक ना कोए जणाइंदा। आत्म ब्रह्म इक्क अधारा, पारब्रह्म मेल मिलाइंदा। एका शब्द नाम जैकारा, चारों कुण्ट कुण्ट सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम भुलया सर्ब संसारा, कलयुग आपणा डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव वड बलवान, आपे आप खुल्हाईआ। गोबिन्द सूरा नौजवान, सिँघ रूप लए प्रगटाईआ। पुरख अबिनाशी

वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द वेखे लोकमात, एका नैण उठाया। कोई ना दिसे मेरा साक, सब बैठे संग तजाया। अंदर बाहर ना कोई पाक, पतित रूप ना कोए वटाया। साचे उतरया ना कोई घाट, कन्ढा पार ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप जणाया। गोबिन्द सूरा वड बलकार, एका शब्द शब्द जणाईआ। मैं दस्स के आया सच विहार, चार वरन कर कुड़माईआ। ऊँच नीच कर प्यार, आपणा रंग रंगाईआ। अमृत दे के आया ठंडा ठार, साचा रस विच समाईआ। सीस बन्नृ के आया दस्तार, पंचम पंच पंच वड्याईआ। चार यारी जाए हार, चौथा जुग रहिण ना पाईआ। अन्तिम खेल करे निरँकार, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। सम्बल नगर धाम न्यार, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। प्रगट होए कल कल्की अवतार, कालख टिक्का दए मिटाईआ। चार जुग दा लहिणा देणा कर्ज़ा दए उतार, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पिछला मुक्के सर्ब विहार, अग्गे लेखा आपे लाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार आपणी गोद लए बहाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक तोड़ ज़ंजाल, एका मार्ग दए वखाईआ। नौ खण्ड पृथमी दो जहान सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड एका इष्ट पुरख अकाल, एका सीस जगदीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एका वार सुणाईआ। सच संदेसा पीर पैग़म्बर, पैग़ाम हरि जणाइंदा। कलयुग अन्तिम वेख अडम्बर, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। सतिजुग साचे रचे सुअम्बर, थित वार आपणे हथ्थ रखाइंदा। सर्ब गुणां आपे भरतम्बर, गुणवन्ता गुण ना किसे समझाइंदा। वसणहारा डूँग्घी कंदर, उच्चे टिल्ले आपे फेरा पाइंदा। लख चुरासी मन जीव जंत बन्नृे बन्दर, नाम डोरी हथ्थ उठाइंदा। नौ खण्ड पृथमी वेखे खण्डर, एका खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप समझाइंदा । पीर पैग़म्बर शाह हकीर, हक़ीक़त हरि जणाईआ। चार जुग शरअ शरीअत वज्जा रिहा ज़ंजीर, कलयुग अन्तिम दए तुड़ाईआ। बदलण आया आप तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल बेनज़ीर, लिख्त पढ़त ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण सर्ब खुल्हाईआ। नेत्र खोल्हो अग्गों बोलो, हरि हरि आख सुणाइंदा। आपणी उम्मत आपणा मज़्हब आपे तोलो, कंडा हथ्थ फड़ाइंदा। आदि जुगादि सदा अडोलो, अडोल डुल कदे ना जाइंदा। लख चुरासी जीव जंत कलयुग अन्तिम करन आया घोलो, लोकमात नौ खण्ड पृथमी अखाड़ा इक्क वखाइंदा। आपणा आपणा पड़दा खोल्हो, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

६७७
११

धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। खोल्हो ताकी बन्द किवाड़, हरि हरि आप जणाया। कलयुग अन्तिम अग्ग लग्गी तत्ती हाढ़, जीव जंत रहे कुरलाया। साधां सन्तां रही साड़ धीरज धीर ना कोए धराया। ना कोए पिच्छे ना कोए अगाड़, सीस हथ्थ ना कोए टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा रिहा मुकाया। पीर पैग़म्बर कर सलाम, दोए जोड़ पए सरनाईआ। बेऐब तेरे बणे गुलाम, आपणा माण ना कोए रखाईआ। उम्मत सके ना कोए पहचान, शरअ शरीअत रही कुरलाईआ। असीं छड्ड के आए मैदान, आपणा बल ना कोए रखाईआ। तेरी चरनी डिगे आण, इक्क पनाह मंगाईआ। लोकमात मन्नया तेरा फ़रमाण, धुर संदेसा जो ल्या सुणाईआ। सदी चौधवीं कर कल्याण, कलमा नबी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म शाह सुल्ताना, शहिनशाह आप समझाइंदा। आपणी हथ्थीं लिखो सर्ब परवाना, आपणी परवानगी आप जणाइंदा। कलयुग अन्त खेल महाना, ख़ालक ख़लक विच वखाइंदा। लख चुरासी बन्न्हे गाना, जीव जंत सगन मनाइंदा। चारों जुग जुग चौकड़ी तुट्टे माणा, अभिमान ना कोए वड्याइंदा। सब नूं मन्नणा पए भाणा, हर भाणे सद रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। दीन दयाल दया कर, एका गुण जणाईआ। देवे हुक्म अग्गे खड़्ह, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। लोकमात जिस लाई जड़, अन्तिम देवे आप उखड़ाईआ। जिस दा कलमा आए पढ़, अञ्जील कुरान सिफ्त सलाहीआ। जिस दी बाणी आए मात धर, लिख लिख लेख वखाईआ। जिस नूं सजदा आए कर, सो सयाह पोश रूप वटाईआ। जिस दा बरदा आए बण, सो बेपर्दा होया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म सचखण्ड निवासी, एका एक जणाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल तमाशी, चौथे जुग आप कराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जीव जंत बिन हर नामे चढ़ने फाँसी, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। नज़र ना आए पंडत कांसी, मुल्ला शेख़ ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। वरते हुक्म श्री भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तख़्तों लाहे राज राजान, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। नगर खेड़े बीआबान, जंगल जूह रूप वटाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा लए धराईआ। चार युग दी चुक्के आण, पिछली काण ना कोए रखाईआ। अग्गे देवे इक्क ज्ञान, चार वरन करे पढ़ाईआ। एका शब्द नौजवान, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। एका खण्डा बिन म्यान, पुरख अबिनाशी आप चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन सलाह, इक्क दूजे नाल मिल मिल मता पकाया। कलयुग वेला अन्तिम गया आ, पाँधी आपणा

पन्ध मुकाया। जिस दा ढोला आए गा, सो साहिब होए रुशनाया। जिस नूं वेद व्यास गया लिखा, सो टिल्ले पर्बत डेरा लाया। जिस नूं ईसा कहे मेरा खुदा, सो नूर ज़हूर दए जणाया। जिस नूं मुहम्मद कहे अमाम मैहन्दी वेस लए वटा, सो मुख नक़ाब पड़दा लए चुकाया। जिस नूं सतिगुर नानक किहा निहकलंक महांबली जाए आ, सब दा देवे माण गंवाया। जिस नूं गोबिन्द किहा कल कल्की अवतार फेरा लए पा। सम्बल नगरी डेरा लाया। सो पुरख निरँजण लोकमात आया वेस वटा, सब दा करे सफाया। पहली चेत दिवस सुहा, साचे तख्त सोभा पाया। हुक्मी हुक्म लए मंगा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर बहाया। किसे कोलों मंगे ना अन्त कोई गवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बल धराया। ना कोई मंगे गवाह, ना देवे सफ़ाईआ। सब दा लेखा देवे वखा, जो लिख लिख आए नाल कलम शाहीआ। ब्रह्मे अग्गे चारे वेद दए टिका, वेद व्यास पुराण अठारां दए समझाईआ। गीता ज्ञान दए खुल्हा, कान्हा कृष्ना पड़दा लाहीआ। सच मुसल्ला हेठ वछा, इल लिल्ला करे पढ़ाईआ। बिस्मिल रूप होए खुदा, बेहबल वेखे सर्ब लोकाईआ। ईसा मूसा डेरा देवे ढाह, करे खेल बेपरवाहीआ। चौदां तबकां फेरा पा, अहिमद मुहम्मद खेल कराईआ। अल्फ़ ये दए मुका, हमज़ा नून ना कोए पढ़ाईआ। नुकता गैन दए मिटा, ऐन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सही सलामत इक्क खुदा, सूरत आप दरसाईआ। अजूनी रहित वेस वटा, पुरख अकाल भेव चुकाईआ। नानक निरगुण मेला सहिज सुभा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। गुर गोबिन्द अंदर जाए समा, सच सिँघासण आसण लाईआ। ज़िमीं असमानां फेरा आए पा, शब्दी घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। सोलां कलीआं आसण पा, सोलां श्रृंगार करे सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम सब नालों होए बेवफ़ा, परवरदिगार मुर्शद मुरीद वेखे चाँईं चाँईंआ। राम रूप आप धरा, लोकमात आपणा रंग जणाईआ। सन्त सुहेले भगत भगवन्त लए उठा, आप आपणा बन्धन पाईआ। आत्म ताकी बजर कपाटी कुण्डा लाह, साचे मन्त्र मेल मिलाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले पन्ध दए मुका, सतिजुग साचा राह चलाईआ। एक इष्ट इक्क गुरदेव इक्क स्वामी हर निहकामी दए वखा, निहचल धाम दए वड्याईआ। घट घट बैठा अन्तरजामी, पूरन ब्रह्म ब्रह्म ज्ञानी, पारब्रह्म वेस वटाईआ। जन भगतां देवे इक्क निशानी, आत्म अंदर अनहद बाणी, धुन अनादी खेल महानी, जोत निरँजण नूर नुरानी, सुरती शब्द बणे सवाणी, आत्म ब्रह्म पद निरबाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल पुरख करतार, अगोचर आपणी धार चलाइंदा। अनहद शब्द वज्जे आपणे भार, आपणे विच छुपाइंदा। आपणी जोती आपणे अंदर वाड़, आपे बन्द कराइंदा। दस्म दुआरी आपे होए बाहर, सुन अगम्म आप समाइंदा। आपे वेखे धूआँधार, नूर नूर आप प्रगटाइंदा। ना

६८० ११

कोई सूरज चन्द होए उज्यार, किरन किरन ना कोए चमकाइंदा। प्रकाश प्रकाश विच प्यार, प्यार प्यार विच मिलाइंदा। आपणे फड़ के कढ्ढे बाहर, पंज तत्त नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत खेल न्यार, थिर घर आपणा खेल वखाइंदा। थिर घर बैठ आप करतार, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पुरख अकाल इक्क अख्वाइंदा। एका पुरख इक्क अकाल, अकल कला अख्वाइंदा। आदि जुगादी दीन दयाल, दयानिध ठाकर भेव ना आइंदा। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, सोभावन्त आप सुहाइंदा। जुग जुग खेल करे लोकमात बण दलाल, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। जन भगतां देवे नाम निशान, सच निशाना हथ्थ फड़ाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, बिन रसना जिह्वा आप समझाइंदा। अनहद शब्द अनादी तान, रागी राग आप अलाइंदा। जोती दीपक दीआ बाल महान, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। जन भगतां करे आप पछाण, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। रातीं सुत्तयां दरसन देवे आण, जन्म जुग दे रुठ्ठयां आप मनाइंदा। बिरहों तीर निराला मारे बाण, अणयाला आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान, हरिजन आपणी गोद बहाइंदा। हरिजन आपणी गोदी चुक्क, हरि साचा खुशी मनाईआ। आवण जावण लख चुरासी पैंडा जाए मुक्क, मात गर्भ फेर ना आईआ। अन्त कन्त भगवन्त बख्शे एका ओट, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत जोत समाईआ। धाम अवल्लड़ा सचखण्ड साचा कोट, चार दीवार ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। भगत सहाई एकँकारा, भगत वछल दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम कर प्यारा, परम पुरख वेख वखाइंदा। चतुर्भुज बाल अञ्याणा, रूप अनूप आप धराइंदा। भगौती भगवन हो मेहरवाना, आप आपणा रंग रंगाइंदा। आदि शक्ति नूर महाना, नूरो नूर नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, लोकमात फेरा पाइंदा । लोकमात फेरा पा, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग पन्ध दए मुका, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कूड़ी क्रिया दए खपा, जूठ झूठ रहे ना राईआ। सति सतिवादी साचा मार्ग दए लग्गा, सति असति एका रंग वखाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, एका जपत जाप समझाईआ। एका मन्दिर दए बणा, चार वरन सोभा पाईआ। एका राग दए अला, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। एका पड़दा दए उठा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जीव जंत साध सन्त पतिपरमेश्वर नज़री जाए आ, लख चुरासी नारी खुशी मनाईआ। कन्त कन्तूहला साची सेज दए सुहा, सोभावन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम देवे वर, हरिजन साचे आप मिलाईआ। हरिजन साचे

मिल्या मेला, मिल मिल खुशी मनाइंदा। एका घर वसे गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द रंग चढ़ाइंदा। एथे ओथे सज्जण सुहेला, राम रमइया आपणे अंग लगाइंदा। जुगा जुगन्तर वसणहार नवेला, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। भगत भगवन्त लए उठा, हरि जू आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों लए जगा, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। बिन तन्दी तार सतार राग दए अला, घर नाद मृदंग वजाईआ। ब्रह्म ब्रह्माद दए वखा, पारब्रह्म सच सरनाईआ। जिस जन दया दए कमा, तिस आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर अंदर आपे वड़, हरिजन साचे आप उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, ईश जीव जीव ईश जगदीश करे कुड़माईआ।

★ १४ फग्गण २०१८ बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे गृह इटारसी ★

आदि जुगादि इक्क भगवान, श्री भगवान वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि इक्क निशान, सति निशाना इक्क प्रगटाईआ। आदि जुगादि इक्क राजान, शाहो भूप बेपरवाहीआ। आदि जुगादि इक्क मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। आदि जुगादि एका नूर महान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि जुगादि एका धुन्कान, नाद अनादी नाद सुणाईआ। आदि जुगादि इक्क ज्ञान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। आदि जुगादी एका अमृत पान, अंमिउँ रस आपणा आप चखाईआ। आदि जुगादी एका काहन, निरगुण निरवैर रूप धराईआ। आदि जुगादी एका दान, दाता दानी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। आदि जुगादी एका मीत, मित्र प्यारा इक्क अख्वाइंदा। आदि जुगादी एका गीत, गीत गोबिन्द आप अल्ाइंदा। आदि जुगादी एका रीत, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। आदि जुगादी ठांडा सीत, थिर घर साचे भेव पाइंदा। आदि जुगादी पत्तत पुनीत, पतित पावण वेस वटाइंदा। आदि जुगादी वसे हर घट चीत, चेतन आपणा खेल कराइंदा। आदि जुगादी सदा अनडीठ, अनडिठड़े धाम आसण लाइंदा। आदि जुगादि सुत्ता रहे दे कर पीठ, आपणी करवट ना कदे बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाइंदा। आदि जुगादी एका गोबिन्द, हरि गोबिन्द वड वड्याईआ। आदि जुगादी एका बिन्द, बिन्द अनादी आप दरसाईआ। आदि जुगादी एका सिन्ध, सिन्ध सागर रूप वटाईआ। आदि जुगादी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर नाउँ रखाईआ। आदि

जुगादी हरख़ सोग ना कोई चिन्द, चिंता दुःख ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि जुगादी एका आसण, एका सेजा सोभा पाइंदा। आदि जुगादी खेल तमाशन, दो जहानां खेल कराइंदा। आदि जुगादी भूपत भूप शाहो शाबाशन, शहिनशाह नाउँ धराइंदा। आदि जुगादि वेखे विगसे पृथ्मी आकाशन, आकाश आकाशां डेरा लाइंदा। आदि जुगादी मंडल रासन, गोपी काहन आप नचाइंदा। आदि जुगादी पवण सुवासन, पवणी पवण फेरा पाइंदा। आदि जुगादी पूरी करे आसन, आसा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादी दासी दासन, बण सेवक सेव कमाइंदा। आदि जुगादी बन्द खुलासण, बन्दी तोड़ बन्द तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आदि जुगादी एका रंग, रंग रंगीला इक्क जणाईआ। आदि जुगादी इक्क पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। आदि जुगादी नाम मृदंग, बिन तार सितार हिलाईआ। आदि जुगादी वसणहारा ब्रह्मण्ड खण्ड, लोआं पुरीआं सोभा पाईआ। आदि जुगादी रचना रच जेरज अंड, रच रच आपणी ख़ुशी मनाईआ। आदि जुगादी वेस वटाए विच वरभण्ड, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आदि जुगादी गाए छन्द, साचा सोहला आप सुणाईआ। आदि जुगादी इक्क अनन्द, अनन्द मंगल आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप जणाईआ। आदि जुगादी एका नूर, नूर नुराना डगमगाइंदा। आदि जुगादी इक्क ज़हूर, ज़ाहरा ज़हूर वेस वटाइंदा। आदि जुगादी इक्क दस्तूर, हुक्म हाकम आप सुणाइंदा। आदि जुगादी सर्बकला भरपूर, अकल कल खेल कराइंदा। आदि जुगादी नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। आदि जुगादी सति सरूर, सति सतिवादी इक्क रखाइंदा। आदि जुगादी नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल वखाइंदा। आदि जुगादी इक्क भगवन्त, भगवन आपणा रूप वटाईआ। आदि जुगादी एका कन्त, लख चुरासी नारी सेज हंढाईआ। आदि जुगादी बणाए बणत, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। आदि जुगादी एका सन्त, एका सतिगुर सोभा पाईआ। आदि जुगादी एका मंत, एका मन्त्र करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। आदि जुगादी इक्को दाता, देवणहार आप अख्वाइंदा। आदि जुगादी इक्को गाथा, जुग जुग आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादी इक्को राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा आदि जुगादी सगला साथा, सगला संग निभाइंदा। आदि जुगादी इक्को नाता, ज़ात पात ना वंड वंडाइंदा। आदि जुगादी इक्को नाता, बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। आदि जुगादी पिता माता, पिता पूत खेल खिलाइंदा। आदि जुगादी इक्को साका, पुरख अबिनाशी इक्क

६८३
११

सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। आदि जुगादी इक्क गोपाल, एका घर सुहाईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी एका काल, लख चुरासी फड़ फड़ खाईआ। आदि जुगादी एका घालन लए घाल, साची घालण आप समझाईआ। गुरमुख विरला वेखे लाल, लाल अनमुलड़ा, कीमत आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता वेस वटाईआ। जुग करता वेस अवल्लड़ा, निरगुण नूर नूर प्रगटा। जन भगत फड़ाए पलड़ा, दर घर साचा दए वखा। निहचल धाम उच्च अटल्लड़ा, सचखण्ड दुआरा बणत बणा। करे खेल अगम्म अगम्मड़ा, अलख अगोचर बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी वेस वटा। आदि जुगादी एकँकार, रूप अनूप धराईआ। आदि जुगादी कर पसार, जुग जुग वेख वखाईआ। आदि जुगादी गुर अवतार, सेवक साची सेव लगाईआ। आदि जुगादी पीर पैग़म्बर देवे सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि जुगादी जुग चौकड़ी लहिणा देणा देवे कर्ज उतार, मकरूज नज़र कोए ना आईआ। ख़ालक ख़लक वेखे विगसे वेखणहार, मखलूक आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा नाद आप सुणाईआ। आदि जुगादी इक्को नाद, अनादी हरि वजाइंदा। आदि जुगादी खेल ब्रह्माद, ब्रह्मादक वेस वटाइंदा। आदि जुगादी बोध अगाध, बोध अगाधा शब्द अल्लाइंदा। आदि जुगादी निरगुण सरगुण आपणे विच्चों काढ, लख चुरासी बणत बणाइंदा। आदि जुगादि विष्न ब्रह्मा शिव लडाए लाड, साची गोदी गोद सुहाइंदा। आदि जुगादी दो जहान श्री भगवान जाणे हाद, पार किनारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादी सति निशाना एका गाड, सच सुच्च आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। आदि जुगादी इक्को राह, एका एक चलाईआ। आदि जुगादी इक्क मलाह, जुग जुग बेड़ा कंध उठाईआ। आदि जुगादी सच सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। आदि जुगादी इक्क निकाह, खावंद बीवी रूप वटाईआ। आदि जुगादी इक्क महल्ला दए वसा, महल अटल नाउँ रखाईआ। आदि जुगादी नूर नुराना इक्क खुदा, जल्वा जलाल करे रुशनाईआ। आदि जुगादी देवे इक्क पनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रैहबर आपणा वेस वटाईआ। आदि जुगादी इक्क दातार, दातार आपणी खेल खिलाइंदा। आदि जुगादी विहार, बिवहारी धार चलाइंदा। आदि जुगादी एका कार, करता पुरख किरत कमाइंदा। आदि जुगादी इक्क दरबार, सचखण्ड दुआरे आप लगाइंदा। आदि जुगादी एका यार, मित्र प्यारा नाउँ धराइंदा। आदि जुगादी खेले खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। आदि जुगादी

एका गुरदेव, गुरू गुर गुर वड वड्याईआ। आदि जुगादि साची सेव, सेवक सेवा सच समझाईआ। आदि जुगादी एका मेव, नाम रस हरि चखाईआ। आदि जुगादी एका जिहव, जिहव रसना रूप वटाईआ। आदि जुगादी अलख अभेव, अलखना अलख वेख वखाईआ। आदि जुगादी सदा निहकेव, निहचल धाम आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा पड़दा लाहीआ। आदि जुगादी एका मीत, मित्र प्यारा हरि अख्वाइंदा। आदि जुगादी वसणहारा हस्त कीट, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। आदि जुगादी पत्तत पापी करे पुनीत, दुरमति मैल धुवाइंदा। आदि जुगादी वसणहारा दर घर ठांडे सीत, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका घर समझाइंदा। आदि जुगादि एका घर इक्क दरवाज़ा, हरि साचा सच जणाईआ। आदि जुगादि ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। आदि जुगादि रचणहारा काजा, रच रच आपे वेख वखाईआ। आदि जुगादि चलाए जहाज़ा, दो जहानां बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। आदि जुगादि जन भगतां मारे वाज़ां, लोकमात सुत्तयां लए उठाईआ। आदि जुगादि गुरमुखां रखे आपे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि जुगादि गुरसिखां फिरे पिच्छे भाजा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। आदि जुगादि घाले घाल, घालणहार हरि अख्वाइंदा। आदि जुगादि लभ्भे लाल, गुरमुख साचे खोज खुजाइंदा। आदि जुगादि बणे दलाल, गुर शब्दी रूप वटाइंदा। आदि जुगादि बण वणजारा देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़जीना इक्क वखाइंदा। आदि जुगादि नाता तोड़ जगत जंज़ाल, जागरत जोत जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी आपणी खेल खलाइंदा। आदि जुगादि खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। आदि जुगादि जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। आदि जुगादि वसणहारा सच महल्ला, हरिजन काया मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। आदि जुगादि सच स्नेहुड़ा इक्को घल्ला, गुरमुख साचे करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि गुरसिखां अंदर आपे रल्ला, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। आदि जुगादि बिरहों वैरागी हरिजन वैराग अंदर होए झल्ला, आपणी झलक ना कोए जणाईआ। जिस दुआरे गुरमुख सज्जण साचा खल्ला, तिस दुआरे आपणी अलख जगाईआ । गुरमुख तेरे बाझ फिरे इकल्ला, हरि जू कम्म किसे ना आईआ। तेरे हथ्थ फड़ाए आपणा पल्ला, तेरा पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि बण चाकर सेव कमाईआ। चाकर चाक बणाया ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक वेख वखाइंदा। गुरमुख विरले घर खुल्ल्हे ताक, बन्द किवाड़ी पड़दा लाहइंदा। अंदर बह बह मारे झात, आप आपणा रंग वखाइंदा। नाता जोड़े

६८४
११

बण बण साक, साचा सज्जण खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जन भगतां मेल मिलाइंदा। आदि जुगादि मेल मिलंना, मिल मिल आपणी खुशी बणाईआ। बिन भगतां हरि जू फिरे अन्ना, जगत नेत्र ना कोए खुल्लाईआ। किसे माण ना मिले छपर छन्ना, गुरदुआर मन्दिर मस्जिद मट्ठ रहिण ना पाईआ। गुरमुख विरला इक्को मन्ना, हरि सतिगुर खुशी मनाईआ। दूर दुराडा वाली दो जहानां आए भन्ना, लोआं पुरीआं पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणी सेवा आप कमाईआ। सेवा करन दा सदा चाओ, हरि जू हरि हरि आप रखाइंदा। जुग जुग करे सच नयाउं, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। हरिजन वेखे थाईं थांउँ, थान थनंतर खोज खुजाइंदा। आपे मेले फड़ फड़ बांहों, आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा । मेलण आए हरि जू नर नरायण, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। रसना क्या कोई सके कहिण, कहिण कथन ना कोए वड्याईआ। इक्क दूजे दा लैणा देणा इक्क दूजे नूं देण, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। भगत भगवान दोवें इक्को धाम रहिण, सद वज्जदी रहे वधाईआ। दोहां नेत्र इक्को नैण, एका अक्ख मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा करे साचा हरि, बिन भगतां चैन किते ना आईआ। बिन भगतां फिरे उदास, जुग जुग कूक कूक सुणाइंदा। कवण दुआरे करां वास, साचा घर नज़र कोए ना आइंदा। किस मन्दिर दीपक करां प्रकाश, साचा मन्दिर कौण सुहाइंदा। किस गृह होवां दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। बिन हरिभगत मेरी पूरी करे ना कोई आस, पुरख अबिनाशी इक्क ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग वेस वटाइंदा। आदि जुगादि वेस वटाया, वेस अनेका रूप वटा। कलयुग वेला अन्तिम आया, पुरख अबिनाशी अचरज खेल रिहा रचा। निरगुण आपणा नाउँ धराया, सरगुण मेला सहिज सुभा। अन्तर बह बह डेरा लाया, मन्त्र आपणा जाप जपा। जगत बसन्तर दए बुझाया, एका मेघ बरसा। गगन गगनंतर डेरा ढाहया, रवि ससि सूरज चन्न रहे शरमा। विष्न ब्रह्मा शिव चरन सीस झुकाया, दोए जोड़ पए सरना। गुरमुख साचा खुशी मनाया, प्रभ मिल्या बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा नाउँ लए धरा। आपणा नाउँ आपे रख, रक्षक आपणा वेस वटाईआ। निरगुण निरगुण हो प्रतख, निरगुण निरगुण लए मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भाण्डे करे सख, साची वस्त हथ्थ किसे ना आईआ। जन भगतां मार्ग देवे दस्स, आप आपणी बूझ बुझाईआ। पहलों आप होए वस, दूजे गुरमुख लए मिलाईआ। तीजे पूरी करे आस, चौथे आपणे घर बहाईआ। पंचम लेखा लाए पवण स्वास, छेवें छप्पर छन्न दए वड्याईआ।

सत्तवें सति पुरख निरँजण पाए रास, अठ्ठां तत्तां नाच नचाईआ। नौ दुआरे बन्द खुलास, बन्दीखाना तोड़ तुड़ाईआ। दसवें मेला शाहो शाबाश, दहि दिशा वंड वंडाईआ। गुरमुख पूरी करे आपे आस, आपणी आसा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका घर, जन भगतां रिहा समझाईआ। साचे घर हरिजन वड़ना, हरि हरि आख सुणाइंदा। बिन पौड़ी डण्डे उपर चढ़ना, सच महल्ल इक्क वड्याइंदा। बिन तेल बाती दीपक जलणा, जोती जोत डगमगाइंदा। सतिगुर पूरा इक्को मिलणा, एकँकारा आपणी गोद धराइंदा। पुरख अबिनाशी दुआरे गुरसिख सदा पलणा, पाल पोस आपणे नाल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुरमुख आपणी गोद सुहाइंदा।

★ १४ फग्गण २०१८ बिक्रमी टोपन लाल दे गृह इटारसी ★

आदि अन्त एका गुर, निरगुण निराकार हरि अख्वाइंदा। आदि अन्त एका सुर, नाद अनादी नाद सुणाइंदा। आदि अन्त एका घुड़, शब्द शब्दी वेस वटाइंदा। आदि अन्त एका जोड़, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। आदि अन्त एका जाए बौहड़, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त खेल कराइंदा। आदि अन्त इक्क अवतार, एका एक वड्डी वड्याईआ। आदि अन्त इक्क दुआर, दर घर साचा इक्क समझाईआ। आदि अन्त इक्क भण्डार, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। आदि अन्त इक्क विहार, बिवहारी आप कराईआ। आदि अन्त एका कार, करता पुरख आप कमाईआ। आदि अन्त इक्क दरबार, धुर दरबारी आप लगाईआ। आदि अन्त इक्क पसार, पसर पसारी खेल कराईआ। आदि अन्त इक्क जैकार, जै जैकार नाउँ सुणाईआ। आदि अन्त खेल पुरख नार, नारी कन्त रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त वेख वखाईआ। आदि अन्त एका धार, इक्क इकल्ला हरि चलाइंदा। जुगा जुगन्तर हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाइंदा। लोकमात करे ख़बरदार, जीव जंत आप जगाइंदा। नाम डंका अपर अपार, दो जहानां वाली आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि अन्त सूरबीर, वड बलवान बल रखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पैडा चीर, वरभण्ड करे कुड़माईआ। सर सरोवर तट किनारा वेखे नीर, नव नौ फेरा पाईआ। त्रैगुण तोड़णहार ज़ंजीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त भेव चुकाईआ। आदि अन्त इक्क बलवान, बलधारी हरि अख्वाइंदा। आदि अन्त इक्क

भगवान, भगवन वेस वटाइंदा। आदि अन्त इक्क निशान, दरगाह साची सच जणाइंदा। आदि जुगादी एका बाण, तीर निराला आप चलाइंदा। आदि जुगादी इक्क मकान, हरि चरन सरन सरन चरन हरि समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त वेख वखाइंदा। आदि अन्त वेखे एक, एका रंग समाया। जुगा जुगन्तर बख्शे टेक, इष्ट देव रूप वटाया। लख चुरासी लिखणहारा लेख, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाया। निरगुण सरगुण धर धर भेख, भेख अवल्लड़ा आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणा खेल आप समझाया। आदि अन्त खेल अपारा, आदि निरँजण हरि कराईआ। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, गुर गुर वेस वटाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, नादी नाद नाद सुणाईआ। भगत भगवन्त खोल्ह किवाड़ा, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। सन्तन देवे सच हुलारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। गुरमुख मेले चरन दुआरा, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। गुरसिख नाता तोड़े अग्नी तत्त तत्ती हाढ़ा, सांतक सति सति कराईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जल थल महीअल फेरा पाईआ। लेखा जाणे बहत्तर नाड़ा, नाड़ी नाड़ी रूप वटाईआ। काया मन्दिर अंदर इक्क अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त वेख वखाईआ। आदि अन्त वेखण योग, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि अन्त कटणहारा रोग, चिंता सोग मोह चुकाइंदा। आदि अन्त वसणहारा चौदां लोक, लोक परलोक फेरा पाइंदा। आदि अन्त दस्सणहारा सच सलोक, साचा सोहला ढोला गाइंदा। आदि अन्त वसणहारा साचे कोट, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। आदि अन्त जगावणहारा निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाइंदा। आदि अन्त वेखणहारा ओत पोत, पूत सपूते भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि अन्त खेल खिलाइंदा। आदि अन्त हरि जू खेल, खेलणहारा आप खिलाईआ। भगत भगवन्त साचा मेल, घर मेला सहिज सुभाईआ। करे प्रकाश बिन बाती तेल, जोती जोत जोत जगाईआ। सखा सहाई सज्जण सुहेल, सगला संग निभाईआ। राए धर्म दी कटे जेल, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त हरिजन साचे लए तराईआ। आदि अन्त इक्क सहारा, सो पुरख निरँजण इक्क जणाइंदा। जन भगतां लाए पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। देवे दरस अगम्म अपारा, अगम्म निगम आपणी खेल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। आदि अन्त तारे हरि, तारनहार इक्क अख्वाया । जुगां जुगन्तर देवे वर, वर साचा झोली पाया। जन्म जन्म चुकाए डर, निरभउ आपणा भय मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाया। आदि अन्त खेल अगम्म, पुरख अगम्मड़ा

आप कराईआ। हरिजन लेखा लाए दमों दम, पवण स्वास वेख वखाईआ। नाता तोड़ हरख़ सोग चिंता ग़म, एका रंग रंग वखाईआ। डुब्बदा बेड़ा आपे बन्न्, पाथर पाहन लए तराईआ। लेखा जाणे जननी जन, जन वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, हरिजन साचे लए तराईआ। आदि अन्त इक्क नरेश, नर हरि हरी नरायण हरि अख्वाइंदा। आदि अन्त एका लेख, गुर अवतारां आप पढ़ाइंदा। आदि अन्त एका भेख, विष्न ब्रह्मा शिव समझाइंदा। आदि अन्त इक्क आदेस, भगत भगवन्त सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर आप सुहाइंदा। आदि अन्त इक्क महल्ल, हरि जू हरि हरि आप बणाईआ। आदि अन्त एका कल, अकल कल रूप वटाईआ। आदि अन्त एका जोत रही बल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि अन्त इक्क अटल्ल, अटल्ल पदवी इक्क समझाईआ। आदि अन्त एका बल, बल आपणा आप प्रगटाईआ। आदि अन्त अछल अछल, वल छल आपणी खेल कराईआ। आदि अन्त जन भगतां अंदर जाए रल, रल रल आपणा मुख छुपाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि अन्त एका माण, निमाणयां हरि रखाइंदा। आदि अन्त इक्क ज्ञान, मूढ़ मुग्ध आप समझाइंदा। आदि अन्त इक्क ध्यान, चरन सरन इक्क रखाइंदा। आदि अन्त एका राग एका गान, सुर ताल इक्क वजाइंदा । आदि अन्त एका एक करे पछाण, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, हरि जू हरि हरि आपणा डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्त हथ्थ रख निरँकार, आपणी दया कमाईआ। समरथ खेल करे अपार, महिमा अकथ कथ पढ़ाईआ। हिरदे वस वस करे प्यार, नस्स नस्स आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां गाए जस विच संसार, वेद पुराण मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त अन्त आपणी कल आप वरताईआ। गाए जस श्री भगवान, जुग जुग दए वड्याईआ। हथ्थ उठाए इक्क निशान, दो जहानां दए झुलाईआ। आपे वेखे निरगुण आण, सरगुण नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन जन जन आपणे लेखे लाईआ।

★ १४ फग्गण २०१८ बिक्रमी इटारसी ★

पूरब लहिणा मानस जन्म, जन्म अजन्म वेख वखाइंदा। ज़ात पात नाता तोड़े वरन बरन, दर घर इक्क वखाइंदा। ईश जीव जगदीस साची सरन, श्री भगवन्त कन्त इक्क समझाइंदा। नाता तुट्टे मरन डरन, आवण जावण पत्तत पावण फंद

कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। पूरब लेखा हरिजन लैणा, देवणहार इक्क अख्वाइंदा। सतिगुर दरसन पेखत नैणां, नैण नैण खुशी मनाइंदा। नाता झूठा साक सज्जण भाई भैणां, सगला संग ना कोए निभाइंदा। हरि सरनाई साची बहणा, मन्दिर महल्ल इक्क वखाइंदा। नाम हरि का साचा गहिणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा हरि जणाइंदा। पूरब लेखा पंज तत्त, तत्त तत्त तत्त दृढ़ाईआ। वेखणहारा रती रत, नाड़ी हड्ड फोल फुलाईआ। देवणहारा इक्को मति, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। सति सन्तोख धीरज जत, आसा तृष्ना मोह चुकाईआ। आत्म सेजा साची खाट, घर मन्दिर दए वखाईआ। जोत निरँजण नूर लिलाट, नूरो नूर डगमगाईआ। नाम निधाना अनहद नाद, अनडिठड़ा आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वरन बरन बरन वरन लेखा दए मुकाईआ। वरन बरन राउ रंक, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। वेखणहारा काया बंक, बंक सरीर फोल फुलाइंदा। रूप अनूप वटाए अनक, अनक कल धारी मेल कराइंदा। हरिजन वेखे जिउँ जन जनक, राम रामा भेव खुल्हाइंदा। जोती धार शब्दी तनक, रागी राग आप अल्हाइंदा। मानस जन्म बणाए बणत, घड़ भाण्डा वेख वखाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार झूठा नत चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा आप समझाइंदा। पूरब लेखा निर्मल धार, जोत अधारी आप जणाइंदा। किरपा निध किरपन पाए सार, निर्धन सरधन खेल कराइंदा। चरन धूढ़ धूढ़ चरन बख्श छार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मानस जन्म पैज स्वार, लख चुरासी फंद कटाइंदा। राए धर्म ना करे खुआर, चित्तर गुपत ना लेख वखाइंदा। मात गर्भ ना देवे साड़, दस दस मास ना अग्न तपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। वरन बरन ज़ात पात नाता गया छुट्ट, माया मोह बन्धन दए चुकाईआ। जूठ झूठ हउमे हंगता विच्चों कढ्ढे खोट, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। हरिजन उठाए जिउँ बालक माता सुत, बण जननी सेव कमाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा भेव जणाईआ। सोभावन्त होई रुत्त, प्रभ वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच रखाईआ। लेखा जाणे सागर सिन्ध, गहर गम्भीर दया कमाइंदा। जिस जन बणाए साची बिन्द, तिस एका घर बहाइंदा। सगली मेटे झूठी चिन्द, चिंता चिखा ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस मानुख एका रंग रंगाइंदा। मानस जन्म उतरे पार, मनुष लहिणा मूल चुकाया। मानव देवे एका अधार, दानव देव सेव कमाया। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, दोए दोए जोड़ सीस झुकाया। किरपा करे आप करतार, राम रामा रूप धराया। साचा काहन होया बेपहचान, रूप रंग रेख

ना कोए वखाया। साची सखीआं मेले आण, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाया। मथरा गोकल बन बिन्दरा वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा आपे वेखा आप आपणी दया कमाईआ। दया कमाए हरि बनवारी, बसन आपणी खेल कराइंदा। मुकंद मनोहर एका मुरली नाम वजाए अगम्म अपारी, सुर ताल ना कोए जणाइंदा। साची सखीआ घनईआ गाए मंगलाचारी, गीत अतीत आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे बिन्दरा बन, बनवारी फेरा पाईआ। वेखणहारा साचे चन्न, चन्न चांदनी पड़दा लाहीआ। जुग जुग बेड़ा आपे बन्नृ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा रिहा चुकाईआ। पूरब लहिणा वेखे रास, मंडल मण्डप सोभा पाइंदा। जन्म जन्म पूरी करे आस, निरासा कोए नज़र ना आइंदा। करे कराए बन्द ख़लास, बन्दीखाना तोड़ तुड़ाइंदा। आत्म अन्तर वसे पास, निरंतर धार चलाइंदा। माया ब्रह्म होए विनास, प्रकाश आपणा रूप वटाइंदा। करनहारा बन्द ख़लास, बन्दीखाना आप तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आत्म खोलृ इक्को दर, दर दरवाज़ा आप खुलृाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग़रीब निवाज़ा निर्धन सरधन सरधन निर्धन निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गुण अवगुण अवगुण गुण गुण आपणे हथ्थ रखाइंदा।

★ १४ फग्गण २०१८ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह इटारसी ★

पारब्रह्म पुरख समरथ, समरथ वड वड्याईआ। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाया रथ, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। चार वरन मार्ग दस्स, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। एका अमृत साचा रस, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। एका जोत नूर प्रकाश, एका ब्रह्म दए दरसाईआ। एका हर घट रखे वास, लख चुरासी डेरा लाईआ। एका पूरी करे आस, श्री भगवान सच्चा शहिनशाहीआ। एका खेले खेल तमाश, ख़ालक वेखे चाँईं चाँईंआ। एका पावे साची रास, मंडल मण्डप सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग आप रंगाईआ। एका रंग श्री भगवान, जीव जंत रंगाइंदा। एका लेखा चारे वरन, अवरन भेव मिटाइंदा। एका बख्शे साची सरन, चरन सरन इक्क जणाइंदा। एका खोलृे हरन फरन, नेत्र नैण पड़दा लाहइंदा। एका चुकाए मरन डरन, आवण जावण फंद कटाइंदा। एका दाता करनी करन, करता पुरख किरत कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आप आपणी धार बंधाइंदा। आदि जुगादि एका धार, हरि जू हरि हरि आप रखाइंदा। सर्ब जीआं बण सांझा यार, सगला संग निभाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, रामा कृष्ना खेल खिलाइंदा। कलयुग अन्तिम हो उज्यार, निरगुण नूर धराइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। लहिणा देणा दए उतार, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। सृष्ट सबाई पावे सार, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, सुरपति इन्द नाल रलाइंदा। त्रैगुण तोड़े जगत जंजाल, पंज तत्त आपणा भेव खुल्हाइंदा। भगतां चले नाल नाल, भगवन संग रखाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, ऊँच नीच भेव मिटाइंदा। सति सरूपी बण दलाल, सच दलाली आप कमाइंदा। लेखा जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणी खोज खुजाइंदा। लोकमात बणाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याइंदा। दीपक दीआ एका बाल, जोती जोत डगमगाइंदा। नाता तोड़ अन्तिम काल, महांकाल संग रखाइंदा। निरगुण रूप दीन दयाल, दयानिध वंड वंडाइंदा। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पाइंदा। हरिजन घालण रहे घाल, घाली घाल लेखे लाइंदा। मस्तक दीपक वेखे थाल, गगन गगनंतर पड़दा लाहइंदा। आपे सुणे मुरीदा हाल, मुर्शद आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग पुरख करतार, कुदरत आप रंगाईआ। चार वरन करे प्यार, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। एका मन्दिर खोल्ह दुआर, ऊँचां नीचां लए मिलाईआ। एका डंका अगम्म अपार, अलख अगोचर आप सुणाईआ। एका नाद जै जैकार, एका शब्द करे पढ़ाईआ। एका इष्ट गिरवर गिरधार, रघपत रघुवंस रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। साचा मार्ग जाए लग्ग, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। सतिजुग दीपक जाए जग, कलयुग अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, बल आपणा आप धराइंदा। जन भगतां दरस दिखाए उपर शाह रग, घर मन्दिर इक्क सुहाइंदा। सति सन्तोखी बन्न्हे तग, जत सति आपणे हथ्थ वखाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आपणा बन्धन पाइंदा। विष्नूं वेखे विश्व यद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा राह आप चलाइंदा। साचा राह चले संसार, सतिगुर पूरा आप चलाईआ। सतिजुग सति सति वरतार, सांतक सति दए कराईआ। ब्रह्म मति कर पसार, मन मति दए गंवाईआ। जीव जंत जै जैकार, नौं खण्ड पृथ्मी ढोला गाईआ। चार वरन करे निमस्कार, इष्ट देव इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि निरँकार, एका एक लगाइंदा। सतिजुग साचा करे विहार, सति सतिवादी दया कमाइंदा। एका मन्दिर कर त्यार, हरि मन्दिर वड वड्याइंदा। नारी पुरख दए आधार, पुरख पुरखोतम

६६१
११

खेल कराइंदा। एका वणज कराए वापार, हरि जू साचा हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क रखाइंदा। साचा मार्ग इक्को राह, चार वरन जणाईआ। ऊँचां नीचां बण मलाह, राउ रंकां लए तराईआ। एका नाम दए सलाह, सोहँ साचा ढोला गाईआ। एका एक पकड़े बांह, फड़ बांहों पार कराईआ। इक्क वखाए सच्चा थाँ, दरगाह साची माण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बन्धन आपे पाईआ। सतिजुग पाए साचा बन्धन, बन्दी छोड़ दया कमाईआ। मस्तक टिक्का लाए चन्दन, निम्म वासना दए कढ्ढाईआ। करे खेल सर्ब बख्शंदन, पत्तत पापी लए तराईआ। लेखा जाणे त्रैलोकी नंदन, अनन्द अनन्द रूप वटाईआ। भेव खुल्ाए ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंडन, अण्डज जेरज वेख वखाईआ। दो जहानां एका छन्दन, सोहँ गीत गीत अल्ाईआ। भगत भगवन्त करे बन्दन, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जगत विकारा करे खण्डन, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। प्रगट हो विच वरभण्डन, झूठी भंडी दए मुकाईआ। जन भगतां आपे आए सद्दन, निरगुण घर घर फेरा पाईआ। पार किनारा करे हद्दन, हद्द महिदूद ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाईआ। सतिजुग साचा साख्यात, हरि लोकमात प्रगटाइंदा। धरनी धरत धवल देवे दात, दाता दानी झोली आप भराइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाइंदा। चार वरन सुणाए एका पूजा पाठ, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई एका घाट, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। एका मेला कमलापात, कँवल नैण नज़री आइंदा। एका ब्रह्म एका ज़ात, एका पारब्रह्म वखाइंदा। एका बैठा रहे इकांत, महल अटल सोभा पाइंदा। एका पुछणहारा वात, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। एका लेखा लिखे बिन कलम दवात, लिख लिख लेख आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा डंक आप वजाइंदा। साचा डंक दए वजा, वजावणहारा इक्क अख्वाईआ। राउ रंक दए उठा, राज राजान दए सुणाईआ। भगत भगवन्त लए जणा, भगवन आपणी बूझ बुझाईआ। लहिणा देणा दए चुका, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मात धराईआ। सतिजुग साचा मात धर, धर धर खुशी मनाइंदा। देवणहारा एका वर, वर दाता दया कमाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण खेल कराइंदा। कलयुग वेख हँकारी गढ़, जूठा झूठा डेरा ढाहइंदा। जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, साचा पल्लू नाम बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर लोकमात, चार वरन वरन सरनाईआ। निरगुण निराकार बंधाए नात, साकार जोड़ जुड़ाईआ। बण मलाह लाए घाट, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। आत्म सेजा वखाए साची खाट, आसण सिँघासण दए

वड्याईआ। जूठ झूठ मुक्के वाट, सच सुच्च लए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन दए सरनाईआ। चार वरन एका सरनगति, सरन सरनाई हरि रखाइंदा। चार वरन एका मति, मित्र प्यारा आप समझाइंदा। चार वरन एका तत्त, तत्तव तत्त रूप धराइंदा। चार वरन एका हट्ट, बण वणजारा हट्ट खुल्हाइंदा। चार वरन एका गाथ, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। चार वरन एका नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। चार वरन एका साक, सज्जण सैण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची डोर आप बंधाइंदा। साची डोर बन्धन पा, चार वरन करे कुड़माईआ। साचा मन्दिर दए वखा, बंक दुआरा दए वड्याईआ। साचे अंदर दए बहा, दूई द्वैती पड़दा दए मिटाईआ। साचा छन्द दए सुणा, बिन रसना जिह्वा गाईआ। साचा अनन्द दए दरसा, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। साचा चन्द दए चढ़ा, नूरी जोत जोत रुशनाईआ। साचा खण्डा दए चमका, नाम निधाना हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग वेखे सतिजुग, सति सतिवादी दया कमाइंदा। पुरख अकाल आपे उठ, पारब्रह्म खेल कराइंदा। भगतां उपर आपे तुट्ठ, आपणा संग रखाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे एका मुट्ठ, आपणी वंडण आप वंडाइंदा। बाकी सब दा गल देवे घुट्ट, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। दो जहानां जड़ देवे पुट्ट, लोकमात फेर ना कोए लगाइंदा। डूँग्घे खाते देवे सुट्ट, शौह दरया आप रुढ़ाइंदा। हरिजन वेखे साचे सुत, सुत बाले आप जगाइंदा। आप जणाए आपणी रुत्त, रुत्त बसन्ती आप लहराइंदा। लेखा जाणे काया बुत्त, पंचम तत्त जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म विच्चों पए फुट्ट, परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाइंदा। आदि अन्त कढ्ढणहारा झूठा खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। चार वरन दस्से एका गोत, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। दो जहानां चौदां लोकां, ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं एका सतिगुर बहुत, दूजा गुरू कम्म किसे ना आइंदा । नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां इक्क बणाए किला कोट, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड आपणे चरनां हेठ रखाइंदा। एथे ओथे निरगुण सरगुण जगाए जोत, जोती जाता पुरख बिधाता नूरो नूर नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंगल आपे गाइंदा। साचा मंगल गाए गीत, गावणहारा इक्क अख्वाइंदा। आदि जुगादि रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। लख चुरासी परखे नीत, घट घट आसण लाइंदा। लेखा जाणे पतित पुनीत, पत्तत पावण दया कमाइंदा। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत, नेत्र नैण ना कोए मिलाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच जोत रखाइंदा। जन भगतां बणे साचा मीत, जुग जुग आपणे अंग लगाइंदा। सतिजुग चलाए साची रीत, कौड़ा रीठा भन्न वखाइंदा। नव नौ चार सुत्ता रिहा दे कर पीठ, कलयुग अन्त आपणी करवट आप बदलाइंदा। वसणहारा

धाम अनडीठ, लोकमात वेख वखाइंदा । जन भगतां काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन आप समझाइंदा । चार वरन इक्क ज्ञान, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। चार वरन इक्क ध्यान, इष्ट देव गुर एका नज़री आईआ। चार वरन एका माण, एका मन्दिर दए बहाईआ। चार वरन इक्क निशान, सति निशाना दए वखाईआ। चार वरन एका काहन, एका नाद दए वजाईआ। चार वरन एका बाण, तीर निराला आप चलाईआ। चार वरन इक्क महिमान, आप आपणा दर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गे लेखा आप जणाईआ। चार वरन एका लेखा, लिखण हार आप हो जाइंदा। चार वरन कढ्ढे भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा । चार वरन वेखे रेखा, वेखणहारा दिस ना आइंदा। चार वरन लेखा जाणे मूंड मुंडाए धारी केसा, केसव आपणी खेल कराइंदा। चार वरन सेवा करे ब्रह्मा विष्न महेषा, शंकर आपणी धार चलाइंदा। चार वरन आत्म परमात्म पेशा, साची बणत आप समझाइंदा। चार वरन इक्क आदेसा, नर नरेशा एका नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा आप उठाइंदा। चार वरन पड़दा चुक्क, चार कुण्ट जणाईआ। नज़र आए जो बैठा लुक, आपणा रूप दरसाईआ। निरगुण शेर पए बुक्क, साची भबक इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अबिनाशी अचुत्त, चेतन सब नूं दए कराईआ। चार वरन करे चेतन, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। लख चुरासी वेखे खेतन, वड किरसाणा बेपरवाहीआ। दूर दुराडा वसे नेत नेतन, निज घर आपणा आसण लाईआ। ऊँचां नीचां करे हेतन, राउ रंक लए मिलाईआ। आपणा दस्सण आया भेतन, पड़दा मात चुकाईआ। हरिजन रखे साया हेठन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल आप वरताईआ। अचरज खेल रिहा वरता, हरि हरि भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग कूड़ा रिहा मुका, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। पिछला लहिणा रिहा चुका, अग्गे आपणा हुक्म वरताइंदा। नौ खण्ड पृथमी होए सहा, सहायक आपणा बल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राग आप अलाइंदा। आपणा राग अलाए रागी, एका राग जणाईआ। दो जहानां बण त्यागी, करे खेल बेपरवाहीआ। बिरहों विछोड़े बण वैरागी, जन भगतां रिहा ध्याईआ। निरगुण वरते सुवांग आपणा सुवांगी, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वटाईआ। रूप वटाए एकँकारा, अकथ कला वड्याईआ। सतिजुग साचा करे पसारा, लोकमात मात धराईआ। एका नाद शब्द जैकारा, जै जैकार दए सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे ख़बरदारा, आलस निंद्रा दए गंवाईआ। सालस बण आप निरँकारा, सच सालसी लए कमाईआ।

६९५
११

लहिणा देणा चुक्के विच संसारा, लोक परलोक वेखे थाउँ थाईंआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अंजील कुरान खाणी बाणी लिख लिख लेखा लिखाया विच संसारा, बण बण कातब सच्चा माहीआ। अन्तिम करे पार किनारा, आपणे घाट दए बहाईआ। इक्को वणज इक्क वणजारा, एका हरि जू फेरा पाईआ। एका वस्त रखे हरि थारा, थिर घर आपणी खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तन्दी तन्द हिलाईआ। एका तन्दी एका तन्द, तार सितार आप हिलाइंदा। लेखा जाणे बत्ती दन्द, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। चार वरन दा इक्को छन्द, सोहँ सोहला आप सुणाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, साची गंढ आप पुवाइंदा। जन भगतां अन्तर पावे ठंड, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझाइंदा। सुरत सवाणी नार दुहागण ना होए रंड, हरि जू कन्त भगवन्त आपणी गोद सुहाइंदा। नाम निधाना श्री भगवाना नौजवाना दो जहानां एका वंड, साची वस्त झोली पाइंदा। चिला तीर कमान उठाए इक्क कमंद, बलधारी आपणा बल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। भेव चुकाए दया कमाए, आपणा पड़दा आप उठाईआ। गुरमुख जगाए लए मिलाए, आप आपणे अंग लगाईआ। नैण खुल्हाए दरस कराए, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। निहकलंक अख्वाए डंक वजाए, डौरू डंके सब दे बन्द कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कुरलाए, करोड़ तेतीसा हाए हाए, दोए जोड़ सरनाईआ। गुर अवतार राह तकाए, पीर पैग़म्बर सजदा सीस झुकाए, चरन सरन सरन चरन मंगण सरनाईआ। गुरमुख विरला खुशी मनाए, लोकमात जिस नज़री आईआ। लख चुरासी अग्न तपाए, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। पुरख अबिनाशी खेल कराए, घट घट वासी फेरा पाईआ। सन्त सुहेले लए तराय, तारनहार दया कमाईआ। पूरब लहिणा लए मुकाए, भगत सिँघ भगवान एका रूप वखाईआ । सुत दुलारे नाल मिलाए, बंस सरबंस पार कराए, साची अंस आप बणाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, कोटन कोटि कोटां विच्चों हरिजन साचे आप तराय, तारनहारा आपणी सेव कमाईआ। ईड़ी इष्ट इक्क हो जाए, टैंका टल्ल नाम खड़काए, रारा राम रूप नज़री आए, सस्सा सतिगुर सच्चा फेरा पाए, बिहारी नारी गोद बहाए, इटारसी आपणा चरन छुहाईआ।

★ १४ फग्गण २०१८ बिक्रमी इन्दर सिँघ दे गृह भूपाल ★

सतिगुर पूरा सदा मेहरवान, जुग जुग दीनन दया कमाइंदा। आदि जुगादि श्री भगवान, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, रजो तमो सतो वंड वंडाइंदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश कर परवान, वस्त अमोलक झोली

पाइंदा। ईश जीव खेल महान, जगदीस भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल हरि करतार, करता आप कराईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, अगम्मड़ी धार आप चलाईआ। सचखण्ड निवासी हो त्यार, थिर घर आपणा भेव चुकाईआ। शब्दी शब्द दए अधार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां बणत बणाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। दाई दाया बण अगम्म अपार, निरगुण सेव कमाईआ। पुरख अकाल हो त्यार, अजूनी रहित वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग समाईआ। आपणे रंग हरि जू राता, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। सचखण्ड निवासी खेले खेल खेल तमाशा, खेलणहारा दिस ना आइंदा। मंडल मण्डप पावे रासा, नूर नुराना जोती जोत डगमगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क दलासा, धुर फ़रमाणा हरि जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। साची खेल पुरख अकाल, अनुभव आपणी धार चलाईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जोती जाता वड बलवान, पुरख बिधाता वेस वटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म निशान, सति सतिवादी इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग श्री भगवान, आदि पुरख आप लगाइंदा । घर माचे मेला खेल महान, ख़ालक ख़लक वेस वटाइंदा। सचखण्ड निवासी नूर महान, मुकामे हक़ डगमगाइंदा। लेखा जाणे जीव जहान, निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। आत्म ब्रह्म कर प्रधान, ब्रह्म आपणी अंस बणाइंदा। पंज तत्त काया देवे दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव हरि अवल्ला, आदि पुरख आप चुकाईआ। नर नरायण इक्क इकल्ला, नर नरेश वेस वटाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आप फड़ाया आपणा पल्ला, शब्दी डोर डोर बंधाईआ। वसणहारा सच महल्ला, लख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। दीपक जोत जोत निरँजण आपे बल्ला, घट घट आप करे रुशनाईआ। शब्द संदेश एका घल्ला, अनहद नादी नाद वजाईआ। सरगुण अंदर निरगुण रल्ला, आप आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, लख चुरासी खेल खलाईआ। लख चुरासी खेल अपार, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। जेरज अंड कर त्यार, उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। चारे खाणी पावे सार, चारे बाणी आप पढ़ाइंदा। परा पसन्ती खोल्ह किवाड़, मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। चारे कुण्टां हो उज्यार, दहि दिशा डंक वजाइंदा। चारे वेदां कर पसार, चार युग वंड वंडाइंदा। चार वरनां दे अधार, एका अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जीवण जीव आप उपाइंदा। जीवण जीव आप

उपा, हरि अचरज खेल कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वंड वंडा, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाईआ। पंज तत्त घाड़न लए घड़ा, रक्त बूंद सोभा पाईआ। मन मति बुध दए वसा, घर बंक लए सुहाईआ। घर विच घर लए प्रगटा, काया मन्दिर दए वड्याईआ। मन्दिर अंदर दीप जगा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अन्ध अन्धेरा दए मिटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल पुरख अगम्म, आदि अन्त आप कराइंदा। जुगा जुगन्तर जाणे कम्म, जुग करता वेस वटाइंदा। लेखा जाणे पवण स्वास दम, पवण पवणां विच समाइंदा। आपे घड़े आपे लए भन्न, घड़न भन्नणहार आप अख्वाइंदा। आपे देवणहारा दान, आपे खाली हथ्थ फिराइंदा। आपे वेखणहारा मार ध्यान, आपे आपणा मुख छुपाइंदा। आपे होए जाणी जाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साची रचना आप रचाइंदा। साची रचना हरि जू रच, रच रच वेख वखाईआ। निरगुण अंदर वड़ वड़ सच्च, सच सच समझाईआ। काया माटी भाण्डा कच्च, झूठी गगरी वेख वखाईआ। त्रैगुण लाए एका आंच, अग्नी अग्ग जलाईआ। पंज तत्त तत्त बणाए सांझ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। नार पुरख पुरख नार कोए ना दिसे बांझ, जिस सतिगुर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। भेव चुकाए हरि भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, सतिगुर आपणा रूप धराईआ। माणस जन्म बणाए बणत, घड़ भाण्डा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, करनहार करतार। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्लड़ा, दो जहानां पावे सार। सच सिँघासण एका मलड़ा, आत्म सेजा कर विचार। सच संदेस एका घल्लड़ा, अनहद शब्द सच्ची धुन्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल करे अपार। जुग जुग खेल करे अपारा, अपरम्पर वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात वेस वटाईआ। नाम शब्द सच भण्डारा, पुरख अकाल इक्क वरताईआ। जीवां जंतां दे सहारा, साधां सन्तां लए तराईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी करे पार किनारा, सतिजुग त्रेता द्वापर रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, गुर गुर शब्द करे पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर खेल न्यारा, दस्तगीर वेख वखाईआ। मुकामे हक़ एका नाअरा, हक़ हक़ीक़त दए जणाईआ। लाशरीक परवरदिगारा, बेऐब नाउँ ख़ुदाईआ। ख़ालक ख़लक वेखे वेखणहारा, मखलूक भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, आप चलाए साचा मन्त्र, नमो सति तत्त सति सति पढ़ाईआ। सति सति हरि का नाउँ, हरि हरि आप प्रगटाइंदा।

६८७
११

आप वखाए हर घट थाउँ, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। जन भगतां बणे पिता माउँ, बाल अञ्याणे गोद बहाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, थान थनंतर इक्क सुहाइंदा। पकड़नहारा आपे बांहों, फड़ फड़ आपणे गले लगाइंदा। करे कराए सच न्याउँ, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर एका हथ्थ रखाइंदा। देवे वर आप निरँकार, निरगुण वड वड्डी वड्याईआ। डुब्बदे पाथर लए तार, पाहन आपणा चरन छुहाईआ। संसार सागर वेखे आण, डूँग्घी गागर भेव चुकाईआ। जो जन बणे दर सौदागर, साचा वणज वणजारा इक्क वखाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल मैल धुवाईआ। दर आयां दर देवे आदर, दर्दी दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। साची वस्त रखे हथ्थ, हरि वड्डा बेपरवाहया। जुग जुग खेल करे समरथ, निरगुण सरगुण वेस वटाया। लख चुरासी पाए नथ्थ, जीव जंत रिहा फिराया। निर्धन निर्धन पूरी करे आस, आसावन्त आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क वखाया। साची वस्त साची दात, सो सतिगुर आप वरताईआ। लोकमात बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। पिता पूत एका साक, माता कुक्ख कुक्ख सुहाईआ। शुकला किशना मिटे अन्धेरी रात, एका नूर नूर चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। साची वस्त झोली पा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बालक जन्मे घर विच आ, घर आपणा रंग रंगाईआ। मात पित पिता मात खुशी लए मना, दर मंगल साचा गाईआ। नाता बिधाता जगत जुग लए बंधा, जीवण जुगत इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बालक ख़ालक कर किरपा झोली पाईआ। मन मति नार जगत कमज़ात, कलयुग घर घर करे लड़ाईआ। भैण भाई साक सज्जण कोई ना देवे साथ, सगला संग सर्ब तजाईआ। शांत ना आवे दिवस रात, घड़ी पल ना खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क रखाईआ। मन मति मति होए दूर, गुरमुख घर रहिण ना पाईआ। पंज तत्त काया तन ना तपे तन्दूर, सांतक सति सति वरताईआ। अमृत मेघ बरसे इक्क ज़रूर, झिरना निझर दए झिराईआ। पिछले बख्शे सर्ब कसूर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्क दूजे नूं कोई ना सके घूर, प्रेम प्रेम नाल मिलाईआ। आत्म कोलों आत्म कदे ना होवे दूर, परमात्मा मेला करे सहिज सुभाईआ। जगत विकारा करे चूरो चूर, नाम खण्डां इक्क चमकाईआ। सतो गुण करे भरपूर, तामस तृष्ना रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर विच मेला दए मिलाईआ। घर विच मेला दए मिला,

मिल मिल खुशी जणाइंदा। दुःख दर्द दर्द दए कढा, सुख सुख नाल मिलाइंदा। इक्क दूजे नूं हथ्थ नाल हथ्थ दए फड़ा, समरथ अंदरे अंदर बन्धन पाइंदा। मन हँकारी देवे ढाह, मन का मणका आप फिराइंदा। साचे मार्ग देवे ला, गुरमति इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर सोभावन्त सुहाइंदा।

बिन दवाईउँ करे इलाज, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। दुखियां दर्दीआं पूरा करे काज, कर किरपा दया कमाईआ। जिस तन पंज तत्त ल्या साज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो बन्धन पाईआ। जो अंदर वड़ चलाए जहाज़, बण बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग चिंता दुःख आपणे हथ्थ रखाईआ। चिंता दुःख रोग पूरब कर्म, कर्म कर्मां नाल बंधाइंदा। लेखा जाणे मानस जन्म, जन्म जन्म फोल फुलाइंदा। जिस जन बख्शे आपणी सरन, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। तिस नाता तोड़े जन्म मरन, मरन जन्म पन्ध मुकाइंदा। किरपा करे करनी करन, करता पुरख वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साची दवा हरि का नाउँ, हरि हरि आप प्याईआ। सदा सुहेला सिर रखे ठंडी छाउँ, तत्ती वा ना लागे राईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया वेख वखाईआ। पंज तत्त काया वेखे अग्नी अग्ग, हड्ड मास नाड़ी तन जलाया। दिवस रैण जीवत जीअ दुखीआ जग, जीवण मुक्त ना कोए कराया। नाड़ी नाड़ी गए बज्झ, बहत्तर तन्दी तन्द रखाया। तिन्न सौ सट्ठ हाडी विच्चों कोई ना सके कढ्ढ, धनंतर बैठा मुख छुपाया। जिस जन किरपा करे पुरख समरथ, दुःख दर्द रहे ना राया। साचा मार्ग देवे दस्स, एका अक्खर जाप पढ़ाया। सो पुरख निरँजण होए वस, हं मेला सहिज सुभाया। जगत दलिद्दर जाए नस्स, सुख सहिजे सहिज घर आया। हिरदे अंदर सतिगुर पूरा जाए वस, दिवस रैण रैण दिवस बिन नेत्र नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख दारू इक्क समझाया। दुःख दारू वेखे दरद, वेखणहारा आप हो आईआ। कदे तत्ती काया कदे सरद, भेव कोए ना पाईआ। नेत्र नैण होण ज़रद, दुःख दुःख विच छुपाईआ। ना रोग नारी ना कोई मरद, मर्द नारी दिस किसे ना आईआ। पारब्रह्म सतिगुर पूरा शब्द सरूपी इक्को फेरे करद, नाड़ी नाड़ी साफ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन दवा दया कमाईआ। बिन दवा आया तबीब, वेखे वेखणहारा। वेखणहारा हो करीब, नेत्र नैण नैण उग्घाड़ा। पिछला अगला अगला पिछला बख्शे आप नसीब, निसबत निसबत आपणे हथ्थ रखे करतारा। जोती

६९९
११

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अमृत आत्म देवे ठंडा ठारा। घट घट अंदर हरि का ज्ञान, हरी हरि आदि जुगादि रखाइंदा। बिन सतिगुर पूरे मिले ना किसे निशान, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। गुर सतिगुर पूरा होए मेहरवान, नौ दुआरे खोज खुजाइंदा। सुखमन टेढी बंक वेखे मार ध्यान, आप आपणा भेव चुकाइंदा। ईड़ा पिंगल होए हैरान, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। नाता तुट्टे पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। आसा तृष्ना हउमे हंगता जूठ झूठ मुक्के दुकान, माया ममता हट्ट ना कोए विकाइंदा। अमृत आत्म निझर झिरना झिराय श्री भगवान, रस रसक इक्क वखाइंदा। दीपक जोती देवे बाल, अज्ञान, अन्धेर मिटाइंदा। अनहद शब्द सुणाए जस धुन्कान, धुन आत्म राग अल्हाइंदा। बजर कपाटी तोड़े आण, नाम खण्डा हथ्थ उठाइंदा। घर विच घर वखाए मकान, चार दीवारी ना कोए बणाइंदा। निर्मल जोत जगे महान, जोत निरँजण डगमगाइंदा। आत्म सेजा हो प्रधान, सच सिँघासण आसण लाइंदा। सुरती शब्दी दए ज्ञान, मूर्त अकाल वेख वखाइंदा। नाता तोड़ दो जहान, आप आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज्ञान प्रकाश इक्क कराइंदा। ज्ञान प्रकाश होवे भान, सूरज चन्द मुख शरमाईआ। एका राग सुणाए कान, छत्ती राग भेव चुकाईआ। इक्क वखाए मन्दिर मकान, घर घर विच पड़दा लाहीआ। एका अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुख गंवाईआ। एका ईश जीव होए बलवान, ईश जीव लए मिलाईआ। एका पारब्रह्म ब्रह्म वेखे आण, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच ज्ञान इक्क जणाईआ। सच ज्ञान सतिगुर चरन, एका ओट सरनाईआ। नेत्र खुल्ले हरन फरन, दोए लोचन बन्द कराईआ। नाता तुट्टे वरन बरन, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल इक्को सरन, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। किरपा करे करनी करन, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच ज्ञान इक्क वखाईआ। सच ज्ञान निष्अक्खर, लिखण पढ़ण विच ना आया। पुरख अबिनाशी ओहले रख्या बजर कपाटी पत्थर, दिस किसे ना आया। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त विरोलण अथ्थर, नेत्र नैणां नीर वहाया। गुरमुख विरला चोटी चढ़े सिखर, जिस सतिगुर पूरा दए चढ़ाया। अग्गे हरि जू मिले मित्र, मित्र प्यारा नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ज्ञान इक्क वखाया। साचा ज्ञान सतिगुर चरन धूढ़, टिक्का मस्तक इक्क जणाया। चतुर सुघड़ सयाण करे मूर्ख मुग्ध मूढ़, मूढ़े आपणे धन्दे लाईआ। काया चोली चाढ़े रंग गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। आत्म परमात्म जोती नूर, नूर नुराना दए दरसाईआ। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, हाज़र हज़ूर फेरा पाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण बख्शे नाम सरूर, चिंता दुःख रहे ना राईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच ज्ञान इक्क चमकाईआ। सच ज्ञान सच प्रकाश, हरि प्रकाश आप वखाइंदा। जुग जुग जन भगतां होए दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। प्रभ मिलण दी जो जन रखे आस, तिस आपणा मेल कराइंदा। नाता तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहइंदा। गुरसिख तेरा वेखणहारा पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाइंदा। हरिजन कदे ना होए निरास, जो इक्को ओट रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज्ञान ज्ञान ज्ञान चमकाइंदा। हरि का ज्ञान हरि का रूप, हरि विच रिहा समाईआ। हरि जू वसे चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। नाता तोड़े जूठ झूठ, तिस गुरमुख मिले वड्याईआ। प्रभ वेखे आ आ साचा पूत, पूत सपूता गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज्ञान प्रकाश इक्क कराईआ। ज्ञान प्रकाश होए नेत्र अन्ध, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सुरती मुकाए आपणा पन्ध, शब्दी मेल मिलाइंदा। नाता तुट्टे बत्ती दन्द, अजपा जाप आप कराइंदा। लेखा चुक्के जेरज अंड, जोती जोत जोत मिलाइंदा। आत्म अन्तर इक्क अनन्द, परमानंद वखाइंदा। रसना तजे मदिरा मास गंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म इक्को नाता, वरन गोत ना कोए पछाता, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। हरि का ज्ञान ना कोए रूप रंग नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख मेला आत्म सेज पलँघ, घर साचे वज्जे वधाईआ। दिवस रैण इक्क अनन्द, अनन्द मंगल एका गाईआ। गीत गोबिन्द साचा छन्द, साचा सोहला दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। सच ज्ञान नाम सति, सति सति समझाया। घर विच उपजे ब्रह्म मति, मन मति रहे ना राया। सति सन्तोख धीरज जत, सति सतिवादी आप बंधाया। एथे ओथे रखे पत, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। पंच विकारा पाए नथ्थ, एका डोरी हथ्थ रखाया। सर्ब जीआं जाणे मित गत, हरिजन वेखे थाउँ थाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच ज्ञान इक्क समझाया। सच ज्ञान चरन कँवल, हरि सरन सच्ची सरनाईआ। मिले वड्याई उपर धवल, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। उलटा होए नाभ कँवल, कँवला कँवल भुवाईआ। निरगुण सरगुण अंदर जाए मवल, आप आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया अंदर ज्ञान दए प्रगटाईआ। काया अंदर ज्ञान भण्डारा, हरि सतिगुर आप रखाया। गुरमुख विरला बणे वणजारा, आपणा हट्ट लए खुल्हाया। सृष्टी रोवे ज़ारो ज़ारा, नाम अनमुलड़ा हथ्थ किसे ना आया। उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ चढ़ चढ़ वेखण डूँग्घीआं गारा, दहि दिशा फेरा पाया। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत मंगे इक्क सहारा, प्रभ चरन ध्यान लगाया। नानक गोबिन्द वेखे विगसे वेखणहारा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, घर विच वखाए नाम खज़ाना, दूई द्वैती पड़दा लाहया। दूई द्वैती पड़दा जाए लथ्थ, माया ममता रहिण ना पाईआ। अन्तर मिले पुरख समरथ, निरंतर बैठा आसण लाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, आपणे राह चलाईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर घर विच खुशी मनाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा गावण जस, घर एका बैठे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज्ञान ध्यान एका नाम दृढ़ाईआ। शरीरक रोग मिटे दुःख, दुखी जीव ना कोए कुरलाया। पंज तत्त काया मिले सुख, सुख सागर रूप वटाया। सुफल करे मात कुक्ख, जन जननी लेखे लाया। उज्जल होए जगत मुख, जिस नेत्र सतिगुर दरसन पाया। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, लख चुरासी फंद कटाया। लेखे लग्गा जन्म मनुक्ख, जन्म मरन रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दिखाए जो बैठा अंदर लुक, स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी आपणा रूप वटाया। पूरब जन्म मिल्या लहिणा, सतिगुर निन्दया मुख रखाईआ। गुरू अमरदास ना मन्नया कहिणा, बैठा मुख भुवाईआ। जगत भाणा सहिणा पैणा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। अग्गे सचखण्ड दुआरे गुर की चरनी बहणा, राम दास होए सहाईआ। मरन तों पहलों तिन्न दिन दरसन देवे तेरे नैणां, गुरू अमरदास अमर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा देणा लहिणा आदि जुगादि जुगां जुगन्तर वेखे विगसे बेपरवाहीआ। चरन कँवल सच प्रीत, गुरसिख सिख वड्याईआ। आदि जुगादी सतिगुर रीत, हरि हरि जणाईआ। काया करे पतित पुनीत, पतित पापी लए तराईआ। धाम वखाए इक्क अनडीठ, बंक दुआरा आप खुल्हाईआ। आत्म परमात्म ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। वेखणहारा सद अतीत, नित नवित वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा बीत, जुग चौकड़ी मुख भुआईआ। पुरख अकाल इक्क अतीत, तख्त निवासी शाहो शबासी सच महल्ले उच्च अटल्ले आपणा आसण लाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे इक्क प्रीत, प्रीतीवान हरि भगवान जुग जुग आपणा बन्धन पाईआ। सच प्रीती साचा मेला, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। एका घर वसे गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द वेख वखाइंदा। वसणहारा धाम निवेला, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बन्धन इक्क रखाइंदा। कूड़ा बन्धन जाए उठ, बल बलीआ बल जणाइंदा। दीन दयाल जाए तुट्ठ, अन्त दया कमाइंदा। अमृत पीणा इक्को घुट्ट, रोग सोग मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। देही दुःख लथ्थे सरीर, अंग अंग मिले वड्याईआ। मन चिन्दया देवे धीर, धीरज धीर इक्क रखाईआ। हड्डी हड्ड कढ्ढे पीड़, नाड़ नाड़

सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख दर्द कट ज़ंजीर, जरा जरा होए सहाईआ। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण शहिनशाह, साचे तख्त सोभा पाईआ। एकँकारा अगम्म अथाह, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। आदि निरँजण नूर रुशना, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा साचे थाँ, महल अटल सोभा पाईआ। श्री भगवान हुक्मी हुक्म रिहा वरता, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा, आपणी अलख आप जगाईआ। सचखण्ड दुआरे डेरा ला, थिर घर आपणी रचन रचाईआ। थिर घर शब्दी सुत बहा, देवे माण वड्याईआ। साचे सुत सेवा ला, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाईआ। करे खेल बेपरवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड आप उपा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। विष्नूं विश्व रूप धरा, ब्रह्मा पारब्रह्म प्रगटाइंदा। कँवल कँवला कँवल खुला, रस रसीआ रस चुआइंदा। सुन्न अगम्मी आप समा, धूआँधार वेख वखाइंदा। शंकर मेला सहिज सुभा, सगला संग रखाइंदा। निरगुण निराकार बेपरवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, पुरख अकाल आप जणाईआ। तख्त निवासी श्री भगवाना, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। भूपत भूप राज राजाना, बेअन्त वड वडआईआ। वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जुगा जुगन्तर हो प्रधाना, लोकमात वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाना, जुग चौकड़ी गेड़ा इक्क रखाईआ। नव नौ चार खेल महाना, मेहरवाना आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण वेखे आ, आदि जुगादि रूप धराइंदा। गुर अवतार नाउँ रखा, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। शब्दी शब्द डंक वजा, जीव जंत आप उठाइंदा। रागी राग नाद अला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। जुग जुग खेल खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। लख चुरासी कर पसारा, घट घट आपणा रूप धराईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यारा, निरवैर नूर करे रुशनाईआ। अगम्म अगोचर वसणहारा ठांडे दरबारा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा बल आप रखाईआ। आपणा बल रखे भगवान, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रधान, निरवैर खेल कराइंदा। सचखण्ड वेख मकान, लोकमात आसण लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे पहचान, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। गुर अवतारां धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर देवे ईमान, आलमीन रूप वटाइंदा। दस्तगीर सच कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। रसूल रसूलां

बण अमाम, उम्मत आपणा रंग वखाइंदा। निरगुण वेख पद निरबाण, नानक मेला आप कराइंदा। पंज तत्त तत्त निशान, जगत निशाना इक्क रखाइंदा। अन्तर वस श्री भगवान, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। चार वरन इक्क ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाइंदा। राउ रंक राज राजान इक्क मकान, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। सतिनाम साचा दान, बण बण दानी आप वरताइंदा। अन्तिम दे के गया धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। अन्तिम कल निहकलंक आवे बली बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। जूठा झूठा मेट निशान, सति सतिवादी राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल हरि करतारा, आदि जुगादि कराईआ। एका जोती दस अवतारा, एका नूर नूर रुशनाईआ। एका पुरख एका नारा, पूत सपूता एका जाईआ। गोबिन्द बणया सुत दुलारा, पुरख अकाल खुशी मनाईआ। माता गुजरी दए सहारा, तेग बहादर वड वड्याईआ। नूरी शब्द नूर उज्यारा, रक्त बूंद ना बन्धन पाईआ। लोकमात वेख अखाड़ा, महांबली फेरा पाईआ। दुष्ट दमन बण वणजारा, साचा वणज इक्क कराईआ। हेम कुण्ट ठांडी धारा, सीतल धार इक्क वहाईआ। जीव जंतां कर प्यारा, अमृत मेघ गया बरसाईआ। पंचम मेल मेल संसारा, पंचम देवे माण वड्याईआ। बंस सरबंस आपे वारा, आप आपणी खुशी मनाईआ। आपे सत्थर सुत्ता साचे यारा, सूलां सेज आप हंढाईआ। आप मंगे मंग दोए जोड़ करे निमस्कारा, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि इक्क अवतारा, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम कल कल्की आए अवतारा, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। शब्दी शब्द बणे वणजारा, शब्द गुर इक्क प्रगटाईआ। रागां नादां वसे बाहरा, ताल तलवाड़ा ना कोए रखाईआ। बोध अगाध इक्क जैकारा, जै जैकार आप सुणाईआ। नाता तोड़े दो जहान जीव जंत गंवारा, साध सन्त वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग मेटे कूड़ कुड़यारा, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। करे खेल अपर अपारा, आप आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, गुर गोबिन्द इक्क जणाइंदा। सिँघ रूप हरि वटाउणा, भेव कोए ना पाइंदा। नाम खण्डा इक्क चमकाउणा, दो जहानां आप वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव अन्त कराउणा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। करोड़ तेतीसा पन्ध मुकाउणा, सुरपति इन्द डेरा ढाहइंदा। गुरमुख साचे माण दवाउणा, गुर गोबिन्द गोद सुहाइंदा। साचा मार्ग एका लाउणा, चार वरनां गले लगाइंदा। कलयुग जड़ आप उखड़ाउणा, बाले नीहां हेठ दबाइंदा। साचा मन्दिर इक्क सुहाउणा, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाँई एका रंग रंगाउणा, दूजा वेस ना कोए वटाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ एका घर वखाउणा, गुरदुआर बणत बणाइंदा। पुरख अकाल

सब ने गाउणा, इक्क अकाल नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा देवे खोल्ह, कलयुग अन्त वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी तोले साचा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखे घोल, त्रैभवण धनी करे लड़ाईआ। बैठा रहे आप अडोल, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग वेला अन्तिम आया, अन्त अन्त वखाईआ। निरगुण निरगुण वेस वटाया, भेव कोए ना पाईआ। गुरमुख विरले लए जगाया, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। नेत्र नैण इक्क खुल्हाया, दोए लोचन बन्द कराईआ। अंदर वड़ वड़ दरस कराया, बन्द ताकी कुंडा लाहीआ। राती सुत्तयां लए जगाया, बण सेवक सेव कमाईआ। लहिणा देणा बाकी दए चुकाया, पूरब लेखा रिहा मुकाईआ। नेत्र नाम गहिणा देवे पाया, तन श्रृंगार इक्क वखाईआ। थिर घर साचे बहणा दए समझाया, गुर चरन सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बूझ बुझाईआ। हरिजन बूझे गुर विचार, गुर शब्दी आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, किरत कर्म विछड़े मेल मिलाइंदा। राती रुत्ती थिती ना कोई जाणे वार, घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण दाता पुरख बिधाता हरिजन तेरी उत्तम जाता, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। उत्तम ज़ात आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म सरनाईआ। निहकर्मी जाणे साचा कर्म, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। नाता तुट्टे चार वरन, बरन अठारां रहिण ना पाईआ। जिस जन हरि जू मिली साची सरन, तिस मानस जन्म हार कदे ना आईआ। निरभउ चुकाए भय डरन, भयानक रूप ना कोए रखाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निरगुण निरगुण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला सहिज सुभाईआ। सहिज सुभाउ मिले गोबिन्द, भगत वछल दया कमाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर खेल कराइंदा। जीव जंत क्या कोई करे निन्द, निन्दक निन्दया मुख रखाइंदा। गुरसिख गुरसिख आदि जुगादि अनादी बिन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन मेला साध संगत, हरिसंगत माण वड्याईआ। इक्को नाम चढ़े रंगत, दूजी वार उतर ना जाईआ। गुरमुख सच्चा किसे दुआरे कदे ना होए मंगत, जिस गोबिन्द मिल्या सच्चा माहीआ। जिस नानक अंगीकार करया आपणे अंगत, अंग अंग खुशी मनाईआ। मानस जन्म ना होए भंगत, गुर शब्द विचौला लए बचाईआ। नाता तोड़े जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज रहिण ना पाईआ। हरि का भेव क्या कोई जाणे पंडत, पढ़यां हथ्थ किसे ना आईआ। निरगुण निरवैर निराकार सदा अखण्डत, अखण्ड रूप इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत रिहा समाईआ। साध संगत समाए सतिगुर, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे लिख्या धुर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। बिन सद्दयां घर विच जाए बौहड़, दयावान दया कमाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। काया रीठा मिट्ठा करे कौड़, कड़वा रूप रहिण ना पाईआ। पन्ध मुकाए दौड़ दौड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। जिस नूं कहिन्दे ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे माण माण वड्याईआ। हरिसंगत तेरा इक्को नैण, नेत्र नैण नैण वड्याईआ। गुरमति नाता भाई भैण, अक्ख अक्ख ना कोए उठाईआ। अन्तिम सब नूं खाए लाड़ी मौत डैण, बिन सतिगुर पूरे ना कोए छुडाईआ। लख चुरासी वहे वहिंदे वहण, गुरमुख विरले गुर गुर ओट तकाईआ। रसना जिह्वा सारे कहिण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गुरमुख विरले भाणा सहिण, दोए जोड़ जोड़ पए सरनाईआ। साध संगत आदि जुगादि लहण देण, देणा लहिणा एका घर वंड वंडाईआ। साध संगत तेरा साचा नाता, वरन बरन ना कोए रखाइंदा। करे कराए पुरख बिधाता, पुरख परखोतम सेव कमाइंदा। इक्को राम इक्को कृष्न एका नानक गोबिन्द गाए गाथा, एका ईसा मूसा मुहम्मद आप पढ़ाइंदा। जुगा जुगन्तर चलाए राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। सर्ब जीआं इक्को दाता, घर घर रिज़क पुचाइंदा। लख चुरासी पिता माता, जीव जंत गोद बहाइंदा। हरिसंगत हरि जू तेरा सज्जण साका, सगला संग आप निभाइंदा। राती सुत्तयां काया मन्दिर अंदर खोल्हे ताका, खोल्ह ताकी आपणा दरस वखाइंदा। जन्म जन्म दे विछड़यां पुछे वाता, भेव अभेद आपणा पड़दा लाहइंदा। कलयुग अन्त मिटे अन्धेरी राता, जिस जन हरि जू दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि हरिसंगत अंदर डेरा लाइंदा। हरिसंगत अंदर जाए वड़, हरि वड्डा वड वड्याईआ। बिन पौड़ी डण्डे जाए चढ़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। डूँघी भँवरी काया कवरी पार कर, आत्म सेजा सोभा पाईआ। निर्मल नूर जोत इक्को धर, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। सुरती शब्द लए वर, शब्द सुरत होए कुड़माईआ। एका सेजे बहण चढ़, वजदी रहे वधाईआ। आपे पुरख आपे नारी नर, नार कन्त आप हो जाईआ। आपे वसे साचे घर, गुरमुख तेरा घर आप वखाईआ। मंगल सिँघ नाल सिँघ इन्दर जाए रल, अठ्ठे पहर एका रंग रंगाईआ। काया अंदर चलावे हल, बण हाली सेव कमाईआ। अमृत आत्म लावे फल, बूटा दिस किसे ना आईआ। साहिब सतिगुर जिस होए वल, तिस दुःख पोह ना सके राईआ। कलयुग माया झूठी रही छल, लख चुरासी डेरा रही ढाहीआ। गुरसिख कदे ना जाए हल्ल, जिस सतिगुर गोबिन्द मिल्या चाँईं चाँईंआ। इक्क दूजे अंदर जायण रल, गुर चेला एका घर सोभा पाईआ। हरिसंगत मेला

घड़ी घड़ी पल पल, पल घड़ी विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन्म कर्म धर्म वरन बरन सरन सरनाई इक्क रखाईआ।

★ १६ फग्गण २०१८ मंगल सिँघ दे गृह भूपाल ★

हरि प्यार सति अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढु, एका पल्लू हथ्थ फड़ाइंदा। जूठ झूठ मेटे गंद, सच सुच्च इक्क वखाइंदा। कृपानिध चाढ़े चन्द, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। आवण जावण मुके पन्ध, लख चुरासी फंद कटाइंदा। ममता मोह खण्ड खण्ड, धीरज धीर इक्क रखाइंदा। दूई द्वैत ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। घर विच घर सुणे सुहागी छन्द, अनहद रागी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार इक्क रखाइंदा। सच प्यार भगत भगवान, जुग जुग आप रखाईआ। सन्तां देवे इक्क ज्ञान, निश्अक्खर करे पढ़ाईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुजान, गुर गुर बूझ बुझाईआ। गुरसिख मेला गुण निधान, गुणवन्ता होए सहाईआ। नाता तुट्टे जगत शैतान, साचा मन्दिर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार इक्क रखाईआ। सच प्यार गुरचरन डोर, डोरी हरि हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। कढ्ढणहारा पंजे चोर, नीचां माण रखाइंदा। पंचम शब्द दए घनघोर, घर आत्मक राग सुणाइंदा। गुर शब्दी आदि जुगादि जुगा जुगन्तर चढ़या रहे अगम्मी घोड़, दो जहानां वेख वखाइंदा। गुरमुख साचे जाए बौहड़, गुर गुर आपणी दया कमाइंदा। जन्म जन्म बुझाए औड़, कर्म निहकर्मी लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ब्रह्म एका बन्धन पाइंदा। साचा ब्रह्म बन्धन पा, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। मस्तक टिक्का चन्दन ला, चिंता चिखा दए गंवाईआ। सद बख्शंदन बेपरवाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्दी शब्द बण मलाह, गुर गुर बेड़ा आप चलाईआ। साची नईया लए चढ़ा, नौका आपणा नाम रखाईआ। पार किनारे देवे ला, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। राए धर्म ना दए सजा, चित्रगुप्त ना लेखा राईआ। लाड़ी मौत ना लए प्रना, वेले अन्त काल ना खाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा दए दया कमा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रीती इक्क समझाईआ। प्रेम प्रीती निभे तोड़, हरि सतिगुर आप निभाइंदा। जन्म जन्म दे विछड़े लए जोड़, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सुरत सुवाणी शब्द हाणी अग्गे देवे तोर, पल्लू पल्लू नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम नाता इक्क जुड़ाइंदा। प्रेम नाता शब्दी धार, सुरती सुरत सुरत कुड़माईआ। दोहां विचोला एकँकार, घर घर विच मेल कराईआ।

जोती जाता हो त्यार, पुरख बिधाता वेख वखाईआ। साची गाथा महिमा मंगलाचार, अनहद रागी राग सुणाईआ। बोध अगाधी बोल जैकार, जै जैकार आपणा नाउँ समझाईआ। प्रेम अनडिठड़ी वजदी रहे सितार, तन्दी तन्द ना कोए रखाईआ। बत्ती दन्द ना कोए अधार, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। अन्तर अन्तर करे प्यार, जगत बसन्तर दए बुझाईआ। गुर का शब्द मन्त्र अपार, बिन रसना जिह्वा गाईआ। आत्म सेजा खेल अपार, ब्रह्म वेखे चाँई चाँईआ। पारब्रह्म प्रभ कन्त भतार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण नारी कन्त प्रनाईआ। प्रेम विछाउणा कर त्यार, दर घर साचा आप सुहाईआ। कमलापाती किरपा धार, दीआ बाती डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी हो त्यार, घट घट वासी दरस दिखाईआ। जोत प्रकाश मिटे धूआँधार, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। पवण स्वासी लेखा जाणे जानणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रेम नाल निभाईआ। प्रेम नाल प्रेम रंग, हरि प्रीतम आप रंगाइंदा। प्रेम विछाउणा प्रेम पलँघ, प्रेम उपर सोभा पाइंदा। प्रेम नाम प्रेम मृदंग, प्रेम ढोला साचा गाइंदा। प्रेम नूर प्रेम चन्द, प्रेम गीत प्रेम छन्द प्रेम आपणा राग सुणाइंदा। प्रेम सूरबीर सरबंग, प्रेम अन्तर आत्म वेखे लँघ, घर मन्दिर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां एका प्रेम वधाइंदा। एका प्रेम जाए वध, हाथ किसे ना आईआ। कोटन कोटि जीव जंत साध सन्त गए लद, बेअन्त कहे लोकाईआ। जिस मन्दिर वजावे आपणा नद, सो मन्दिर सोभा पाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपे सद, गुर गुर आपणा भेव खुल्हाईआ। जगत जंजाले विच्चों कढ्ढ, साचे मार्ग आपे लाईआ। लेखा जाणे साची यद्द, बंस सरबंसा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम बन्धन इक्क रखाईआ। प्रेम बन्धन साचा नाता, हरिजन हरि हरि आप रखाइंदा। दो जहानां पिता माता, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। नाम अगम्मी देवे दाता, अनमुलड़ी आप वरताइंदा। घर विच घर बह बह गाए गाथा, महल अटल सोभा पाइंदा। आपे जाणे पूजा पाठा, हवन दीप घ्रित पवण तेल बाती कमलापाती आपणा प्यार रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे घर, घर साचा आप वड्याइंदा। प्रेम अंदर प्रेम प्याला, बण बण साकी जाम प्याइंदा। दीनां बंधप दीन दयाला, दीनन आपणा भेव चुकाइंदा। सदा सदा सद रहे रखवाला, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। नाता तोड़े काल महांकाला, भय भयानक सोभा पाइंदा। अन्तर मन्त्र देवे साची माला, मन का मणका आप भुवाइंदा। अठ्ठ अठोतरी तोड़ जंजाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम आपणे रंग वखाइंदा। प्रेम रंगा हरि पुरख, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए रखाईआ। जन भगतां देवे आपणा दरस,

रूप अनूप धराईआ। अमृत मेघ देवे बरस, निझर झिरना इक्क झिराईआ। जुग जन्म दी मेटे हरस, हवस होर ना कोए वधाईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा फोल फुलाईआ। गुरमुख उपर करे तरस, गुर पूरे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम खेल इक्क खिलाईआ। प्रेम खेल रिहा खेल, खेलणहारा एकँकारा। जुगा जुगन्तर कर कर मेल, जन भगतां देवे सति दुआरा। दीप जगाए बिन बाती तेल, घर विच घर करे उज्यारा। अमृत बख्शे कर कर मेहर, निझर झिरना ठंडा ठारा। देवे दरस ना लाए देर, खोलू्णहारा बन्द किवाड़ा। आवण जावण पतित पावन लख चुरासी कटे गेड़, अग्नी तत्त ना लग्गे हाढ़ा। लहिणा देणा दए निबेड़, नाड़ बहत्तर वज्जे इक्को ताड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे प्रेम न्यारा। प्रेम न्यारा निराकार, निरगुण एका एक जणाईआ। लिखण पढ़ण तों वसे बाहर, कागद कलम भेव ना राईआ। वेद कतेब गए हार, हरि का अन्त कोए ना पाईआ। समुंद सागर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। धरत बसुधा करे पुकार, बल आपणा आप गंवाईआ। ब्रह्मा दोए जोड़ करे निमस्कार, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। गुर अवतार बण भिखार, हरि अग्गे झोली डाहीआ। जुग जुग खेल करे करतार, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, गुर गुर शब्दी वंड वंडाईआ। शब्द भण्डारा अपर अपार, जीवां जंतां झोली पाईआ। साचे सन्तां कर प्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। काया मन्दिर अंदर हरी दुआर, हरि जू बैठा आसण लाईआ। दिस ना आवे जीव संसार, त्रैगुण माया पड़दा पाईआ। कूड़ा काया कपड़ वेख विचार, तन धन हाटी बाजी लाईआ। गुर साखी गुर साख्यात गुर शब्द दए अधार, गुर नादी नाद वजाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी खोलू किवाड़, आदि जुगादी इक्क सहार, हरि सरन सच्ची सरनाईआ। डूँघी भँवरी पार ग़ार, आत्म सेजा खेल न्यार, निरगुण मेला सरगुण धार, सरगुण नाता छुट्टे संसार, गुर गुर रूप अपर अपार, गुरसिख मेला एका वार, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार इक्क रखाईआ। प्रेम प्यार सदा अतुट, गुर चेला रूप वखाइंदा। जगत वासना जाए छुट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जिस जन अमृत जाम प्याए घुट्ट, तिस आपणा जाम प्याइंदा। अमृत सोमा पए फुट्ट, मुख कँवल नाभ खुलाइंदा। अंदर बैठा पए उठ, आपणी करवट आप बदलाइंदा। गुरमुख गोदी लए चुक्क, साची गोद सुहाइंदा। जगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, आप आपणा बल धराइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, चेतन आपणा रूप वखाइंदा। गुरसिख मेला गुर गुर सुत, गुर एका रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे पंज तत्त काया बुत्त, मन मति बुध आपणे राह चलाइंदा। मानस जन्म जीव देवे सुध, सुध पिछली सर्ब भुलाइंदा। हरि का प्रेम प्यार निर्मल दुद्ध, दरस दुआरी साची

धार, धार धार विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, वर दाता इक्क अख्वाइंदा।

★ १७ फग्गण २०१८ कानपुर ★

सिरोपाउ हरि नाउँ, सदा संग रखाइंदा। भगत भगवान मिलण दा चाउ, चाउ घनेरा इक्क जणाइंदा। प्रेम प्रेम पकड़े बांहों, प्यार प्यार नाल रखाइंदा। एथे ओथे दो जहान ठंडी छाउँ, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप उडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिरोपा सन्तां सीस टिकाइंदा। सिरोपाउ सोहे साचे सन्त, सतिगुर देवे माण वड्याईआ। जीवां नारी मिले कन्त, मिल कन्त खुशी मनाईआ। काया चोली चढ़े रंग बसन्त, आत्म अन्तर वज्जे वधाईआ। मानस जन्म बणे बणत, मानुख आपणा भेव चुकाईआ। मेला होए हरि जू अन्त, अन्त कन्त सन्त भगवन्त एका घर समाईआ। नाता तुट्टे जीव जंत, लख चुरासी जम्म की फाँसी राए धर्म ना दए सजाईआ। सिरोपाउ सन्त माण, घर घर विच वेख वखाईआ। निज नेत्र दिसे श्री भगवान, निज आत्म आसण लाईआ। निज खेत्र कर परवान, बण हेती हित रखाईआ। दिती वस्त होई परवान, परवानगी सन्तां हथ्थ फड़ाईआ। इक्को सति सति निशान, सदा सदा सद झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल मिल आपणी खुशी रखाईआ। तुछ चीज ना दिसे कोए, हर घट घट रिहा समाईआ। बिन हरि मिले ना कोई ढोए, ढोआ लै के अग्गे कोए ना आईआ। पूरब लहिणा बीज जो जन बोए, पूरब लेखा लेखे पाईआ। चिट्टे बस्त्र चिट्टी धार चिट्टा रंग सो पुरख निरँजण जाणे सोए, हरि पुरख निरँजण वेखे चाँईं चाँईंआ। एकँकार निर्मल जोत बलोए, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता सन्त सुहेला सन्तां जिहा होए, श्री भगवान आपणे घर आपे सोभा पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म अमृत आत्म रस साचा चोए, साचा झिरना दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिरोपाउ साची पग्ग, लेखा जाणे सूरा सरबग, त्रैगुण वेखे जगत बसन्तर, गल चोला प्रेम बस्त्र शस्त्र नाम हथ्थ रखाईआ।

★ १७ फग्गण २०१८ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह कानपुर ★

सो पुरख निरँजण खेल न्यारा, हरि पुरख निरँजण आप कराइंदा। एकँकारा हो उज्यारा, आदि निरँजण नूर धराइंदा।

अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबारा, श्री भगवान सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, पारब्रह्म वेस वटाइंदा। हुक्मी हुक्म सच वरतारा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे अधारा, लख चुरासी बन्धन पाइंदा। त्रैगुण माया कर पसारा, पंचम मेला मेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी कार कराइंदा। निरगुण नूर पुरख अकाल, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, सति दुआरे सोभा पाइंदा। थिर घर वासा दीन दयाल, खेल तमाशा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव पुरख अपारा, एका एक जणाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, लोकमात वेस वटाईआ। जुगा जुगन्तर साची कारा, करता पुरख आप कमाईआ। गुर गुर रूप लए अवतारा, शब्दी शब्द डंक सुणाईआ। जीवां जंतां दे सहारा, एका मन्त्र नाम पढ़ाईआ। वणज कराए बण वणजारा, हट्ट हटवाणा इक्क चलाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, घट घट आपणा आसण लाईआ। जोती जोत जोत उज्यारा, नूर नूर नूर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल पुरख करतार, एका एक कराइंदा। निरगुण सरगुण लए अवतार, वेस अनेक आप वटाइंदा। लेखा जाणे धुर दी धार, धुर धारा आप उपाइंदा। लख चुरासी कर पसार, घट घट आपणा रंग रंगाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड खोल्ह किवाड़, लोआं पुरीआं डगमगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण अतीता साचा भेव चुकाइंदा। ठांडा सीता एकँकार, अकल कल रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि करतारा, आदि जुगादि कराईआ। लोकमात कर पसारा, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, गुण अवगुण आप जणाईआ। एका मंत ब्रह्म उज्यारा, पारब्रह्म वेख वखाईआ। एका नाद शब्द धुन्कारा, घट घट आप सुणाईआ। एका अमृत ठंडा ठारा, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। एका मन्दिर गुरदुआरा, घर घर विच लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना श्री भगवान, आदि पुरख आप रचाइंदा। तख्त निवासी वड मेहरवान, सचखण्ड आपणी खेल कराइंदा। थिर घर दुआरा खोल्ह दुकान, शब्दी हट्ट इक्क चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा देवे दान, शंकर झोली आप भराइंदा। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा आसण लाइंदा। सूरज चन्न कर प्रधान, मंडल मण्डप डेरा लाइंदा। खेले खेल ज़िमीं असमान, गगन गगनंतर सोभा पाइंदा। धुर दी बाणी धुर फ़रमाण, सति संदेसा आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे पैग़ाम, साचा कलमा आप पढ़ाइंदा। लख चुरासी जाणी जाण, घट घट आपणी खेल वखाइंदा। एका नाद शब्द धुन्कान, वेद शास्त्र आपे गाइंदा।

ब्रह्मे आपणे ब्रह्म पछाण, एका अन्तर इक्क ध्यान, ज्ञान ज्ञान विच समाइंदा। सति सतिवादी सच निशान, सति सरूप श्री भगवान, अनडिठड़ा धाम आप रखाइंदा। लेखा जाणे गोपी काहन, आत्म परमात्म खेल महान, ईश जीव जगदीश आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल पुरख समरथ, आदि जुगादि कराईआ। निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेस वटाईआ। देवणहारा इक्को तत्त, मन मति बुध दए समझाईआ। वेख वखाए हड्ड मास नाड़ी रत्त, रत्ती रत्त फोल फुलाईआ। सर्ब जीआं जाणे मित गत, भेव कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करने जोग, जुगीशर हरि अख्वाइंदा। आदि जुगादी धुर संजोग, लख चुरासी मेल मिलाइंदा। कटणहारा जन्म जन्म दा रोग, अजन्म आपणा रंग वखाइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे कोट, काया बंक डेरा लाइंदा। निर्मल नूर जगाए जोत, दीआ बाती इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस आप वटाइंदा। साचा वेस वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप वटाईआ। वसणहारा काया उच्च अटल्ल महल्ला, घर घर विच सोभा पाईआ। असुत्ते प्रकाश निरगुण नूर साचा दीपक आपे बला, तेल बाती ना कोए रखाईआ। पावे सार जलां थलां, महीअल आपणा डेरा लाईआ। सच संदेस नर नरेश एकँकार एका घल्ला, जुगा जुगन्तर गुर अवतारां करे पढ़ाईआ। जोती शब्दी निरगुण सरगुण आपे रला, ब्रह्म पारब्रह्म सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस आप वटाईआ। साचा वेस श्री भगवान, जुग जुग आप वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे मार ध्यान, रूप अनूप आप जणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान दे दे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। भगत भगवन्त रखे माण, चरन सरन सरन चरन इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग लाए राह, रैहबर आपणा रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण दए सलाह, साची सिफ्त सिफ्त समझाईआ। सति सतिवादी बण मलाह, लोकमात बेड़ा आप चलाईआ। इक्क जणाए साचा नाँ, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। सन्त सुहेले वेखे थाउँ थाँ, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। साचे गुरमुखां पकड़े बांह, सत्त दीप चरनां हेठ दबाईआ। अठ्ठ अठारां डेरा ढाह, गुरसिख साचे वेखे चाँईं चाँईंआ। नौ दुआरे पन्ध मुका, नव नौ आपणा रंग रंगाईआ। चार चार लेखा लए लग्गा, ना कोई रखे कलम शाहीआ। काग़ज़ कलम रहे शरमा, हरि का अन्त कोए ना पाईआ। भगत भगवन्त रहे ध्या, इक्क ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा दया निध ठाकर हरिजन साचे लए जगा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जगत बसन्तर त्रैगुण दए बुझा, एका

अमृत मेघ बरसाईआ। बजर कपाटी दए खुल्हा, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अनहद नाद दए वजा, रागी राग अल्हाईआ। जोत निरँजण दीप जगा, वेखे चाँईं चाँईंआ। अमृत आत्म जाम प्या, निझर झिरना दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आप कराइंदा। जन भगतां वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। काया मंडल मण्डप बह बह पाए रास, दर घर साचा आप सुहाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां पार कराइंदा। सेवक बणे बण बण दास, साची सेवा आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता वेस वटाइंदा। जुग करता करता पुरख, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता रोग ना कोए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा आया परख, नाम कसवट्टी हथ्थ उठाईआ। साचे भगतां दे दे दरस, आत्म तृखा बुझाईआ। अमृत मेघ इक्को बरस, सांतक सति सति कराईआ। नाता तोड़ अर्श फर्श, घर साचे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए करनेहार। हरिजन फड़ाए पलड़ा, देवे दरस दीदार। सच संदेश एका घलड़ा, हिरदे राम नाम उरधार। दर दुआरे आपे खलड़ा, निरगुण सरगुण लए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार खेल अनडिठ, अनडिठड़ा आप कराईआ। सर्ब जीआं प्रभ लेखा लिख, लिख लिख वेखे चाँईं चाँईंआ। लख चुरासी ना पए दिस, नेत्र नैण सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एका एक सुणाईआ। सच संदेसा गुर अवतार, गुर गुर आप जणाइंदा। लिख लिख लेख गए विचार, विचार विच कदे ना आइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त करन पुकार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव दीन दयाल, दया निध आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खावे काल, थिर कोए रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया जगत ज़ंजाल, लख चुरासी बन्धन वखाईआ। करे खेल आप निराल, त्रैगुण अतीता साचा माहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर, जन भगतां करदा रिहा भाल, लुक लुक आपणी सेव कमाईआ। गुर अवतार घालण गए घाल, हरि हरि नाउँ ध्याईआ। पीर पैग़म्बर कहिन्दे गए हक़ हलाल, मुकामे हक़ नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क जणाईआ। सच संदेसा एकँकार, जुग जुग आप सुणाइंदा। ब्रह्मा वेता लिख लिख वेद चार, चारे जुग जुग पढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत दे अधार, पुराण अठारां नाल मिलाइंदा। वेद व्यासा कर कर गया पुकार, ऊँची कूक कूक सुणाइंदा। कल कल्की आए अवतार, भेव कोए ना पाइंदा।

रामा कृष्ना खेल अपार, निरगुण सरगुण रंग रंगाइंदा। एका अक्खर गीता ज्ञान, वक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। पंज तत्त काया कर परवान, साचा काअबा आप सुहाइंदा। ईसा मूसा दे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर नबी रसूल आप पढ़ाइंदा। साचा हुजरा इक्क महान, चौदां तबक वेख वखाइंदा। चार यारी देवे दान, मुहम्मद एका बन्धन पाइंदा। नानक निरगुण कहे सतिनाम, नाम सति सर्ब दृढ़ाइंदा। ब्रह्म मति इक्क ज्ञान, दूजा तत्त ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड वसे आप भगवान, साचे तख्त डेरा लाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे आण, महांबली वेस वटाइंदा। चार वरनां देवे माण, ऊँच नीच राउ रंक ना कोए जणाइंदा। चारे खाणी करे परवान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणी खेल वखाइंदा। चारे जुग वेख निशान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। चारे बाणी कर पहचान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। गुर अवतारां वेखे मार ध्यान, निरगुण निरगुण आपणा कुण्डा आपे लाहइंदा। शब्द अनादी धुर फ़रमाण, देवणहार श्री भगवान, सच संदेसा नर नरेशा, दो जहानां आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन आदेसा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। नानक गोबिन्द करे आदेसा, घर साचे मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा रूप धराइंदा। जुग जुग आपणा रूप रख, रक्षक आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रतख, प्रतख सरगुण लए वड्याईआ। निरँकार निराकार गाए जस, साकार वज्जे वधाईआ। जीव जंत मार्ग दस्स, साचा राह इक्क चलाईआ। जगत विकारा पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ उठाईआ। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, आपे दए समझाईआ। साचे भगतां करे लाड, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सन्तन देवे नाम दाद, अनमुलड़ी वस्त आप वरताईआ। गुरमुखां देवे साचा साथ, सगला संग आप हो जाईआ। गुरसिखां मेटे अन्धेरी रात, जूठ झूठ अन्धेरा रहे ना राईआ। मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण होए सहाईआ। बन्द किवाड़ी खोले ताक, ब्रह्म मेला चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। गुरसिखां देवे इक्क सहारा, दर घर साचा इक्क वखाइंदा। मन ममता करे दूर किनारा, मनसा मन ना कोए रखाइंदा। मति मतवाली रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैण नैण नीर वहाइंदा। बुद्धि दोए जोड़ करे निमस्कारा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सुरती शब्द करे प्यारा, शब्द सुरत मेल मिलाइंदा। नाम वज्जे सति सतारा, अहिबाब रबाब आप हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ठाकर स्वामी आपणे रंग रंगाइंदा। साचा रंग हरि हरि स्वामी, एका एक रंगाईआ। सर्ब घटां घट अन्तरजामी, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द अगम्मी गाए बाणी, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। सचखण्ड वखाए सच निशानी, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। इक्क जणाए पद निरबाणी,

७१४
११

चौथा पद इक्क वखाईआ। गुरमुख नारी सुघड़ सुजाणी, हरि कन्त लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता वेस वटाईआ। जुग करता वेस वटाइंदा, जुगा जुगन्तर साची कार। कलयुग अन्तिम खेल वखाइंदा, निरगुण निरगुण लए अवतार। पूरब लेखा पूर कराइंदा, गुर गुर कर कर गए पुकार। सब दा लेखा आप चुकाइंदा। लेखा रहे ना विच संसार। साचे मन्दिर डेरा लाइंदा, सोभावन्त हरि मन्दिर हरी दुआर। साचा दीपक इक्क टिकाइंदा, दिवस रैण रहे उज्यार। गीत गोबिन्द एका गाइंदा, छत्ती राग ना पावण सार। जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। मनसा मन ही माहें खपाइंदा, मन ममता देवे मार। सांतक सति सति वरताइंदा, सति सतिवादी कर प्यार। बोध अगाधी शब्द सुणाइंदा, लिखण पढ़ण तों होवे बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। हरि करतारा खेल कर, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम दे दे वर, गुर अवतार करी पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर रहे डर, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए नरायण नर, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। चार वरन लए फड़, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लुकया कोए रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ तोड़े हँकारी गढ़, सच सुच्च दए दृढ़ाईआ। हँकार विकार विभचार लए फड़, दुराचार रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल हरि निरँकारा, कलयुग अन्त अन्त कराइंदा। निरगुण रूप निहकलंक हो उज्यारा, शब्दी डंक डंक वजाइंदा। दो जहानां श्री भगवाना करे ख़बरदारा, विष्न ब्रह्मा शिव उठाइंदा। तेई अवतार लैण हुलारा, भगत अठारां अक्ख खुल्हाइंदा। गुर दस मंगण सहारा, एका ओट अकाल जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग करे पार किनारा, कोटन कोटि जुग आपणे विच छुपाइंदा। जन भगतां देवे इक्क अधारा, चरन कँवल उपर धवल सरन सरनाई इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा रंग वखाइंदा। निरगुण रंग अगम्म अपार, अगोचर नज़र किसे ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथमी लभ्भ लभ्भ गई हार, हरि जू दरस कोए ना पाईआ। कोटन कोटि चढ़ चढ़ थक्के उच्चे टिल्ले पर्बत पहाड़, डूँग्घी कंदर बैठे आसण लाईआ। कोटन कोटि तन माटी ख़ाकी गए साड़, हवन कुण्ड कुण्ड तपाईआ। कोटन कोटि पंज तत्त काया रहे ठार, सीतल धार जल वहाईआ। कोटन कोटि मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले गुरू घर करन पुकार, सतिगुर नज़र किसे ना आईआ। कोटन कोटि अठ सठ तीर्थ होए खुआर, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा पाईआ। काया मन्दिर अंदर ना कोई वेखे आपणा मीत मुरार, घर बैठा मुख छुपाईआ। सृष्ट सबाई धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। पंच विकार करन प्यार, पंचम शब्द ना कोए शनवाईआ। जूठ झूठ वणज वापार,

सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। हरि का नाम गए विसार, ज़ात पात वरन गोत पई लड़ाईआ। अन्तिम कोई ना उतरे पार किनार, अध विचकारे बैठे डेरा लाईआ। साध सन्त करन विभचार, धीआं भैणां रहे तकाईआ। आत्म मिले ना नाम खुमार, अमृत रस ना कोए चखाईआ। डूँग्घी भँवरी डिगे ग़ार, काया बंक ना पार कराईआ। नौ दुआरे रस जहान, आत्म रस ना कोए चखाईआ। रसना जिह्वा गायन गाण, अन्तर मन्त्र ना कोए पढ़ाईआ। गुर का नाउँ सुणन कान, हिरदे गुर ना कोए वसाईआ। घर घर नाच करे शैतान, शरअ शरीअत घूँगट रही उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। जुग जुग वेस हरि करतारा, आदि जुगादि कराइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे पार किनारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। सति सन्तोख ना कोए वणजारा, साचा हट्ट ना कोए चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्त वेखे भगवान, निहकलंक रूप वटाईआ। सम्बल वसे सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। शब्द अनादी एका गाण, सोहँ ढोला आप सुणाईआ। बण विचोला दो जहान, वेले अन्त होए सहाईआ। सुरती मेला शब्दी काहन, नाम बंसरी दए सुणाईआ। सीआ सुवाणी वेखे राम, घर मेला सहिज सुभाईआ। चतुर सुघड़ सुचज्जी राणी गुरमुख मिले इक्को नाम, नाम सति सति समझाईआ। गुरसिख गुर गुर करे प्रणाम, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे वेखणहार श्री भगवान, निरगुण आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग एका लाईआ। साचा मार्ग चार वरन, हरि जू हरि हरि आप लगाइंदा। जन भगतां नेत्र खोल्हे हरन फरन, राती सुत्तयां दरस दिखाइंदा। निरभउं चुकाए भय डरन, भव सागर पार कराइंदा। लेखा जाणे भन्नण घड़न, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा सर्ब मुकाइंदा। लहिणा देणा चुकाए आप, आपणी दया कमाईआ। चौथे जुग वेखे पुंन पाप, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। चार वरन चार कुण्ट चार जुग अन्त अन्धेरी रात, जोत नूर ना कोए रुशनाईआ। कलयुग जीव सुत्ता माया खाट, आपणी करवट ना लए बदलाईआ। ममता मोह विक्या हाट, करता कीमत कोए ना पाईआ। अन्त किनारा दिसे ना कोई घाट, मँझधारे दए रुढ़ाईआ। साचे भगतां पुछे आपे वात, हरि जू बण सेवक सेव कमाईआ। जुग जन्म दी पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी करे बन्द ख़लास, राए धर्म ना दए सजाईआ। निज घर आत्म करे वास, आपणा रूप दरसाईआ। जोत उजाला कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर

चुकाईआ। लेखे लाए पवण स्वास, स्वास पवण जो रिहा ध्याईआ। गुरमुख सच्चे सदा शाबाश, जिस मिल्या सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम डेरा ढाहीआ। कलयुग डेरा जाए ढठ्ठ, वेला अन्त दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी गेड़े उलटी लठ्ठ, चारों कुण्ट आप भुवाईआ। किसे ना रहे कोई हठ, जीव जंत सर्ब कुरलाईआ। नाता तुटणा मन्दिर मस्जिद गुरदुआर मठ्ठ, पुरख अकाल एका नज़री आईआ। चार वरन अठारां बरन वखाए इक्को हट्ट, साचा हट्ट हरि खुलाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जीवां जंतां साधा सन्तां मार्ग देवे दस्स, दस्स दस्स आपणी बूझ बुझाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता जग रीती विच ना जाए फस, बन्धन होर ना कोए रखाईआ। जन भगतां मिले हस्स हस्स, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पन्ध मुकाए नस्स नस्स, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारनहारा एको एक, आदि अन्त अख्वाया। हरिजन करे बुध बिबेक, आप आपणी बूझ बुझाया। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त ना कोए रखाया। चरन कँवल जणाए साची टेक, दर दुआर इक्क वखाया। सदा सुहेला रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। मिट्ठा करे कौड़ा रेठ, रस अमृत इक्क भराया। लेखा जाणे मात पित बेटी बेट, दाई दाया रूप धराया। गुरसिख शब्द दुशाले लए लपेट, एका पल्लू हथ्थ रखाया। निरगुण सरगुण बणे खेवट खेट, लोकमात बेड़ा आप चलाया। कलयुग अग्नी लग्गे ना तत्ती जेठ, अग्नी अग ना कोए जलाया। रुत्त बसन्ती वखाए चेत, फुल फुलवाड़ी आप महकाया। जिस गुरसिख देवे आपणा भेत, तिस पड़दा दए चुकाया। सदा सदा सद करे हेत, नित नवित वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निराकार निरवैर अजूनी रहित अनभउ प्रकाश आप कराया। अनभउ प्रकाश करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े मेले यार, बण मित्र प्यारा सेव कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान ना पावे सार, भेव अभेद ना कोए खुलाईआ। आपणी करनी करता पुरख जाणे कार, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्त लए अवतार, निहकलंक नाउँ रखाईआ। लेखा जाणे जुग चार, जुग चौकड़ी आप भुवाईआ। अन्त सब नूं करे दस्तबरदार, दस्तगीर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। सतिजुग साचा हरि हरि लाउणा, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। एका नाम हरि प्रगटाउणा, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। एका मन्दिर हरि वखाउणा, एका घर सोभा पाईआ। एका वरन सर्ब जणाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म रूप धराईआ। एका राह हरि चलाउणा, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। भगत भगत आपणी गोद बहाउणा, चुक्क चुक्क आपणी खुशी मनाईआ।

आलणयो डिगे बोट आप उठाउणा, बण सेवक सेव कमाईआ। सोहँ हँसा चोग चुगाउणा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका घर मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा लए प्रगटाईआ। सतिजुग साचा उठे मात, हरि जू हरि हरि आप उठाइंदा। सति सतिवादी देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। भगतां देवे साचा साथ, सगला संग बणाइंदा। सोहँ अक्खर इक्को गाथ, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। हँ ब्रह्म इक्को ज़ात, वरन गोत ना वंड वंडाइंदा। ईश जीव एका घाट, जगदीश डेरा लाइंदा। लेखा जाणे लोकमात, परलोक आपणी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा खेल कराइंदा। नर हरि नरायण बनवारी, रघपत आपणी दया कमाईआ। पुरख अकाल जोत निरँकारी, निरगुण आपणा वेस धराईआ। ख़ालक ख़लक कर पसारी, मख़लूक वेखे बेपरवाहीआ। चौथे जुग टुट्टे यारी, यारड़ा सत्थर ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख साचे लए फड़, काया मन्दिर अंदर आपे चढ़, औदा जांदा दिस ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करता पुरख पुरख करतार, आपणी करनी रिहा कर, दूसर संग ना कोए रखाईआ।

★ १८ फग्गण २०१८ बिक्रमी शाशतरी नगर दे गृह कानपुर ★

सति पुरख निरँजण सतिवादी धारा, निरगुण निराकार आप कराईआ। आदि जुगादी खेल अपारा, जुग करता आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी कर पसारा, पारब्रह्म भेव चुकाईआ। नाद अनादी सच्ची धुन्कारा, शब्द अगम्मी ढोला गाईआ। जोती जोत कर पसारा, नूर नूर नूर रुशनाईआ। सचखण्ड खोल्ह किवाड़ा, साचे मन्दिर आसण लाईआ। छप्पर छन्न ना कोए दीवारा, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। थिर घर आपणा कर पसारा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, हरि पुरख निरँजण आपणी बणत बणाईआ। एकँकारा करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर अथाह वड्डी वड्याईआ। आदि निरँजण जोत उज्यारा, नूरो नूर महल अटल सोभा पाईआ। श्री भगवान हुक्मी हुक्म करे वरतारा, धुर फ़रमाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। अबिनाशी करता अजूनी रहित अनुभव धार आपे जाणे जानणहारा, दूसर संग ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो त्यारा, शाहो भूप बण सिक्दारा, राजन राज आपणा नाउँ धराईआ। आपणी इच्छया भर भण्डारा, साची वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

बेपरवाह खेल अपारा, एकँकारा आप कराइंदा । सच महल अटल मुनारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती आपणा आसण लाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी धार आप प्रगटाइंदा। चतुर्भुज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा । चतुर्भुज श्री भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आप बणाए आपणी बणत, मात पित ना कोए रखाईआ। असुत्ते प्रकाश आदि अन्त, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह श्री भगवाना, आदि जुगादि अख्वाइंदा । साचे तख्त बैठ राज राजाना, हुक्मी हुक्म आप भुवाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाणा, धुर दा राग आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। आपणा भेव नूर नुरानी, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि शक्ति शक्ति भवानी, भगवन्त आपणा रूप धराईआ। आपे मर्द मर्द मर्दानी, वड मर्दाना आप अख्वाईआ। आपे तीर बण निशानी, साचा चिल्ला आप उठाईआ । आपे जाणे अकथ कहाणी, महिमा अकथ आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। नर नरायण निराकार, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। खेले खेल अपर अपार, अपरम्पर दिस किसे ना आइंदा। आदि जुगादी साची कार, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। आपणी इच्छया आपे देवे देवणहार, वस्त अमोलक आप रखाइंदा। आपणे घर आपणा कर पसार, नर हरि आपे वेख वखाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण वाड़, निरगुण मेला इक्क अकेला आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव विश्व धार, निराकार कार कमाईआ। खेले खेल अपर अपार, आपणा बन्धन आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे मन्दिर हो त्यार, रूप अनूप आप धराईआ। कँवल नैण नैण शृंगार, मधुर नैण खेल वखाईआ। सागों पांग कर त्यार, साची सेज आसण लाईआ। विष्नूं रूप आप करतार, भगवन आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग विष्नूं रंग, हरि जू हरि हरि आप लगाइंदा। इक्को सेज इक्क पलँघ, एका घर सोभा पाइंदा। एका नाम इक्क मृदंग, एका गीत गीत गाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, सूरबीर आपणा वेस वटाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाइंदा। परम पुरख दीन दयाल सर्ब सुख इक्क अनन्द, ठाकर स्वामी आपणे दर जणाइंदा। आदि जुगादि सदा नेहकामी, निहचल धाम आपणा आसण लाइंदा। आपे जाणे पद निरबाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, एका एक कराईआ। विष्नूं देवे एका दान, वस्त अमोलक

झोली पाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, एका रस भराईआ। नाभी कँवला कर परवान, कँवल कँवल खेल कराईआ। लेखा जाणे सुंझ मसाण, धूआँधार आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म आपणी वंड वंडाईआ। साची वंड वंडे निरँकारा, वंडणहारा दिस ना आइंदा। विष्नूं अंदर खेल न्यारा, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। अमृत जल सच भण्डारा, घर साचे आप टिकाइंदा। कँवल कँवलां कर पसारा, कँवल नैण वेख वखाइंदा। एका ब्रह्म पारब्रह्म अधारा, ब्रह्म वेता रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणी रचना आप रचाइंदा। विष्नूं ब्रह्मा एका धार, नूर नूर नूर जणाईआ। लेखा जाणे हरि करतार, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। दोहां विचोला अगम्म अपार, साचा सोहला दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया नाल मिलाईआ। आपणी इच्छया आपे रख, आपणी दया कमाइंदा। आपणे विच्चों कर प्रतख, आपणा रूप वटाइंदा। एका बोल सच अलख, अलख अलख आप जणाइंदा। एका मार्ग देवे दस्स, साचे राह आप चलाइंदा। हिरदे अन्तर आपे वस, आपणा मेल मिलाइंदा। आपे गाए साचा जस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आपे नार आपे कन्त, कन्त नार रूप धराईआ। आप बणाए साची बणत, बण बण दाई दाया सेव कमाईआ। आपे होए सदा बेअन्त, बेअन्त सच्ची शहिनशाहीआ। आपे जाणे आपणा मंत, एका मन्त्र करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर मेला सहिज सुभाईआ। शंकर मेला धूआँधार, सुन्न अगम्म खोज खुजाइंदा। भोला नाथ कर त्यार, आप आपणा बन्दन पाइंदा। बाशक तशका कर त्यार, कंठ माला इक्क बणाइंदा। साची त्रिसूल दे निरँकार, त्रैगुण माया रूप वटाइंदा। रजो तमो सतो दे अधार, सति सतिवादी एका गंढु पुवाइंदा। पंचम मेला अपर अपार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, साची वंडण वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव एका गुण वखाइंदा। साचा गुण श्री भगवान, एका एक जणाईआ। तिन्ना देवे एको दान, एका वस्त वस्त वरताईआ। आदि जुगादि इक्क ज्ञान, एका नाम करे पढ़ाईआ। जुगा जुगन्तर खेल महान, जुग करता वेख वखाईआ। विष्नूं तेरी सेव महान, घर घर रिज़क पुचाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म निशान, पारब्रह्म रिहा जणाईआ। शंकर अन्त करे कल्याण, जो घड़या भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव हरि जू खोल्ह, गुण एका एक जणाइंदा। पंज तत्त त्रैगुण तोलणा साचा तोल, तोलणहारा वेख वखाइंदा। घट घट अन्तर जाणा मौल, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। शब्द अगम्मी एका बोल,

नाद अनादी नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा खोल्हे भेव, अनुभव करे जणाईआ। ब्रह्मा लेखा जाणे चारे वेद, वेद विदांता आप अख्वाईआ। निरगुण सरगुण अछल अछेद, अछल अछल भेव ना राईआ। आप चलाई आपणी खेड, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाईआ। निरगुण सरगुण साचा राह, हरि जू हरि हरि आप चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए सलाह, लख चुरासी घाड़न आप घड़ाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लए बणा, चारे खाणी सोभा पाइंदा। चारे वेद आप जणा, चारे बाणी राग अल्हाइंदा। चार जुग वंड वंडा, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। चार यारी बन्धन पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप वखाइंदा। साचा राह हरि करतार, लख चुरासी बणत बणाईआ। घट घट अंदर हो उज्यार, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। घट घट अंदर अमृत ठंडा ठार, निझर झिरना आप वखाईआ। घट घट अंदर शब्द धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणाईआ। घट घट अंदर सुखमन टेढी दिसे नाड़, ईड़ा पिंगल नाल मिलाईआ। घट घट अंदर बजर कपाटी लाए पाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। घट घट अंदर हरि पसारा, निरगुण सरगुण रंग रंगाइंदा। घट घट अंदर साचा मन्दिर गुरदुआरा, काया काअबा इक्क समझाइंदा। घट घट अंदर पारब्रह्म ब्रह्म वेखे वेखणहारा, ईश जीव पड़दा लाहइंदा। घट घट अंदर आत्म सेजा खेल न्यारा, नारी कन्त श्री भगवन्त आपणा भेव चुकाइंदा। घट घट अंदर नाम वणजारा, चौदां लोकां हट्ट खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त आपणा बन्धन पाइंदा। घट घट अंदर धूआँधार, अन्ध अन्धेरा छाईआ। घट घट अंदर पंज तत्त काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना आसण लाईआ। घट घट अंदर जूठ झूठ हउमे हंगता गढ़ अपार, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। घट घट अंदर मन वासना करे खुआर, दहि दिशा रही भुवाईआ। घट घट अंदर मति मतवाली जाए हार, आपणा बल ना कोए जणाईआ। घट घट अंदर बुध बिबेकी पाए सार, सार सार विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पंज तत्त करे कुड़माईआ। पंज तत्त साचा मेला, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। आदि जुगादि सज्जण सुहेला, जुग जुग वेस वटाइंदा। शब्दी शब्द गुरू गुर चेला, आत्म परमात्म खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस पुरख समरथ, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आप चलाए साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त मेला हस्स हस्स,

लोकमात फेरा पाईआ। साचे सन्तां होए वस, बण सेवक सेव कमाईआ। गुरुमखां तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। गुरसिखां गाए साचा जस, जुगा जुगन्तर दया कमाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, बण बण पाँधी सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जुग चोकड़ी होए दूर, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया आपणे पूर, रामा कृष्ना सेव कमाईआ। कलयुग अन्त वेखे हरि जू आप जरूर, निरगुण निरगुण रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा पड़दा लाहीआ। कलयुग अन्तिम खेल कराउणा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। वेद व्यासा लिख्या लेख पूर कराउणा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। ईसा आस इक्क रखाउणा, एका ओट तकाईआ। मेरा परवरदिगार लोकमात आउणा, बेऐब नाम खुदाईआ। मुकामे हक़ डेरा लाउणा, हक़ हक़ीक़त वेखे थाउँ थाईंआ। एका कलमा नबी सुणाउणा, आयत शरायत इक्क पढ़ाईआ। नानक निरगुण ओट इक्क तकाउणा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। गोबिन्द साची मंग मंगाउणा, आपणी झोली रिहा वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निराकार कलयुग वेले अन्तिम आउणा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सम्बल नगर डेरा लाउणा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाउणा, आप आपणा पड़दा दए उठाईआ। नाम मृदंग इक्क वजाउणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां आप उठाउणा, उत्भुज सेत्ज नाल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आप जगाउणा, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा आपणा भेव खुल्हाईआ। गीत गोबिन्द सुहागी छन्द एका गाउणा, सोहँ ढोला आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म चुकाए पड़दा ओहला, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि जू आउणा, कलयुग अन्तिम हो उज्यार। जूठ झूठ डेरा ढाउणा, सच सुच्च करे प्यार। चार वरनां एका घर बहाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए अधार। राम कृष्न ईसा मूसा नानक गोबिन्द सब नूं नज़री आउणा, नेत्र खोल्हे बन्द किवाड़। साचे भगतां आपे जगाउणा, देवे दरस अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल करे करतार। जुग जुग खेल करंदड़ा, सो पुरख निरँजण बेपरवाह। जन भगता मेल मिलंदड़ा, ग़रीब निमाणे गले लगा। नित नवित वेस वटंदड़ा, निरगुण सरगुण होए सहा। साचा घर इक्क वखंदड़ा, चरन दुआरा बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां मेल लए मिला। मिले मेल हरि बनवारी, बसन आपणी खेल कराइंदा। रघपत रघुनाथ एकँकारी, ओंकारी सोभा पाइंदा। ओम रूप अपर अपारी, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। हँ ब्रह्म लख चुरासी जीव जंत अधारी,

निहकर्मी कर्म गुण आपणे हथ्थ रखाइंदा। आवण जावण पत्तत पावण लेखा जाणे धुर दरबारी, काल महांकाल दीन दयाल हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा। धर्म राए दे सिक्दारी, चित्तर गुपत बणाए लिखारी, लेखा सब दा आप गणाइंदा। लाड़ी मौत करे शंगारी, नेत्र नैण कजल धारी, जीव जंत लख चुरासी अन्त कन्त प्रनाइंदा। गुरमुख विरला साचा सन्त प्रभ चरन दोए जोड़ करे निमस्कारी, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। सतिगुर पूरा एका देवे नाम खुमारी, अठ्ठे पहर दिवस रात एका रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर त्रैगुण माया बुझाए लग्गी बसन्तर, आपणा अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि खेल महान, जुग जुग ना ना रूप करे आण, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा।

भगत भगवन्त एका ओट, अकाल पुरख रखाइंदा। भगत भगवन्त इक्को गोत, दीन मज़्ब इक्क बणाइंदा। भगत भगवन्त इक्को जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। भगत भगवन्त इक्को कोट, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां संग सदा समाइंदा। भगत भगवन्त इक्को आस, जुग जुग हरि रखाईआ। भगत भगवन्त इक्क दूजे दे दासी दास, बण बण सेवक सेव कमाईआ। भगत भगवन्त इक्को घर पायण रास, साचे मंडल सोभा पाईआ। भगत भगवन्त एका वेखण खेल तमाश, अनडिठड़ी खेल आप जणाईआ। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर सुहाईआ। भगत भगवन्त इक्को रंग, रंग रंगीला इक्क रखाइंदा। भगत भगवन्त इक्क पलँघ, सच सिँघासण आसण लाइंदा। भगत भगवन्त इक्क मृदंग, अनहद नादी नाद वजाइंदा। भगत भगवन्त सदा संग, सगला संग रखाइंदा। भगत भगवन्त इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच जणाइंदा। भगत भगवन्त एको छन्द, आत्म परमात्म ढोला गाइंदा। भगत भगवन्त इक्को चन्द, अमावस रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। भगत भगवन्त एको रूप, एका घर वज्जे वधाईआ। भगत भगवन्त एका कूट, एका धाम रहे सुहाईआ। भगत भगवन्त ताणा पेटा इक्को सूत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला लए मिलाईआ। भगत भगवन्त इक्क प्रकाश, हरि प्रकाशी आप कराइंदा। भगत भगवन्त एका शाख, पत्त डाली आप महकाइंदा। भगत भगवन्त एका रास, बारां रासी भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त इक्को जोड़, हरि जोड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। भगत भगवन्त इक्को घोड़, नाम घोड़ा आप दुड़ाइंदा। भगत भगवन्त इक्को डोर, तन्दी तन्द ना कोए रखाइंदा। भगत भगवन्त आदि जुगादि मिलण दी रखण लोड़,

मिल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। भगत भगवन्त इक्क दूजे नूं जायण बौहड़, लोकमात खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन एका दर वखाइंदा। भगत भगवन्त इक्को जोग, जीवण जुगत जुगत जणाईआ। भगत भगवन्त इक्क संजोग, एका घर लए प्रनाईआ। भगत भगवन्त इक्क विजोग, विछोड़ा सहि सके ना राईआ। भगत भगवन्त इक्को भोग, एका सेजा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाईआ। भगत भगवन्त इक्को ढोला, बिन रसना जिह्वा आपे गाइंदा। भगत भगवन्त इक्को सोहला, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। भगत भगवन्त इक्क विचोला, बण विचोला मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त चुक्के पड़दा ओहला, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। भगत भगवन्त सदा सद वसण कोला, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणा दर वखाइंदा। भगत भगवन्त इक्को ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए रखाईआ। भगत भगवन्त इक्क प्रभात, संधया नज़र कोए ना आईआ। भगत भगवन्त इक्को साक, बण बण सज्जण खुशी मनाईआ। भगत भगवन्त इक्को घाट, साचे पत्तण बैठे डेरा लाईआ। भगत भगवन्त इक्क हाट, बण वणजारे हट्ट चलाईआ। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। भगत भगवन्त सगला साथ, बण संगी संग रखाइंदा। भगत भगवन्त इक्को गाथ, मिल मिल आपणा गीत अलाइंदा। भगत भगवन्त पुच्छे वात, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। भगत भगवन्त मेटे रैण अन्धेरी रात, नूरो नूर इक्क दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप उठाइंदा। भगत भगवन्त इक्को बन्धन, एका डोर रखाईआ। भगत भगवन्त इक्को चन्दन, निम्म वास ना कोए जणाईआ। भगत भगवन्त इक्क दूजे नूं करन बन्दन, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भगत भगवन्त तोड़े फंदन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाईआ। भगत भगवन्त इक्को घाट, एका दर सुहाइंदा। भगत भगवन्त मेटे वाट, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। भगत भगवन्त करे कराए बन्द खुलास, बन्दीखाना आप तुड़ाइंदा। भगत भगवन्त सद वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। जन्म जन्म पूरी करे आस, जुग जुग आपणा रूप धराइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे खेल तमाश, लख चुरासी नटुआ नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप मिलाइंदा। साचे भगतां मेला जाए मिल, मिल मिल आपणी खुशी रखाईआ। दिलदार दिलबर दीन वेखे दिल, भरवासा दिलासा इक्क इक्क समझाईआ। गुरसिख गुरमुख कदे ना जाए हिल, हौला भार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतन भगती एका झोली पाईआ।

★ १८ फग्गण २०१८ बिक्रमी गुरदित सिँघ दे गृह कानपुर ★

जुग जुग खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। भगवत हर घट वेखे आण, भावी भय भेव जणाईआ। साचे भगत करे परवान, हरिजन साचे लए मिलाईआ। आत्म अन्तर देवे ज्ञान, एका राम नाम पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत सारे गाण, वेद कतेब रहे जस गाईआ। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, दीना नाथ दीनन दया कमाईआ। सन्त सुहेले करे पहचान, दुरमति मैल धुवाईआ। हरिजन वेखे चतुर सुघड़ सुजान, जीवण जुगत इक्क जणाईआ। काया मन्दिर वेख मकान, घट पड़दा दए उठाईआ। स्वच्छ सरूपी दर्शन देवे आण, दरसी आपणा दरस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतन वेखे चाँईं चाँईंआ। भगत मिलण दा चाउ घनेरा, हरी हरि नरायण आप रखाइंदा। जुगा जुगन्तर पावे फेरा, वेस अनेक वटाइंदा। लख चुरासी जीव जंत भुलाए कर कर हेरा फेरा, त्रैगुण माया पड़दा पाइंदा। हरिजन विरले करे आप निबेड़ा, निज आत्म निज घर निज परमात्म वेख वखाइंदा। जन्म जन्म दा चुक्के गेड़ा, जम का फास आप कटाइंदा। दूर दुराडा दिसे नेरा, नेरन नेर आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां सदा सलाहइंदा। हरिभगत सलाह सदा सद, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहया। सच दुआरे लए सद्द, नाम संदेसा इक्क सुणाया। लख चुरासी विच्चों लए कढ्ढ, आप आपणी गोद बहाया। अमृत जाम प्याए मदि, रसना रस इक्क वखाया। जगत दुआरा करे पार हद्द, दस्म दुआरी कुण्डा लाहया। लेखा जाणे रत्त नाड़ी मास हड्ड, तत्तव तत्त फोल फुलाया। पाए सार विष्नूं यद, विश्व आपणी धार रखाया। कोटन कोटि गए लद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां विच समाया। साचे भगतां अंदर वड़, हरि जू आपणा घर वखाइंदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, ममता मोह मिटाइंदा। अमृत झिरना जाए झर, निझर रस चखाइंदा। सुरती शब्दी लए फड़, आप आपणी दया कमाइंदा। राम सीता एका घर, अनडिठड़ा वर आप वड्याइंदा। राधा कृष्ना पल्लू फड़, नाम बंसरी इक्क वजाइंदा। अल्ला राणी हू हू हक़ हक़ देवे वर, ऐनलहक़ भेव चुकाइंदा। नानक आत्म परमात्म देवे वर, ब्रह्म पारब्रह्म वखाइंदा। गोबिन्द गुरसिख लाए लड़, पल्लू आपणी गंढु दिवाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को दाता हरि, सचखण्ड बैठा खेल कराइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए जणाइंदा। भगत भगवन्त दरस दिखाए अग्गे खड़, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। काया मन्दिर सच महल्ले बहे चढ़, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी आपे पढ़, ताल तलवाड़ा आप वजाइंदा। लेखा जाणे चोटी जड़, मध आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप वड्याइंदा। साचा भगत वड्डा

वड, सिफ्ती सिफ्त ना कोए जणाईआ। लख चुरासी विच्चों होए अड्ड, दरगाह साची मिले वड्याईआ। पार किनारा वेखे हद्द, आपणा पन्ध मुकाईआ। धर्म निशाना देवे गड्ड, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क यद, ब्रह्म पारब्रह्म प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां वेख वखाईआ। हरि भगतां वेखे नेत्र खोल्ह, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। अठ्ठे पहर वजाए ढोल, नाद मृदंग ना कोए जणाइंदा। सखा सखाई वसे कोल, सदा सुहेला मोह वधाइंदा। भाग लगाए काया चोल, चोला काया आप बदलाइंदा। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणा रूप वखाइंदा। उलटा करे नाभ कौल, कँवल कँवला आप भुवाइंदा। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। साचे भगतां वसे कोल, घर साचे डेरा लाइंदा। आदि जुगादि रहे अडोल, अडुल आपणी धार वखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी लख चुरासी घट घट अन्तर रिहा फोल, फोलणहारा दिस ना आइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत लए वरोल, नाम मधाणा एका पाइंदा। नाम मधाणा विरोले छाछ, साख्यात रूप वटाईआ। रिड़कणहारा ज़ात पात, वरन बरन आप भुवाईआ। बैठा रहे इक्क इकांत, अकल कला अख्वाईआ। दो जहान श्री भगवान वेखे मार झात, चौदां लोक फेरा पाईआ। चौदां तबक जाणे खात, खाता आपणा आप बणाईआ। मुरीद मुर्शद करे पाकी पाक, मुर्शद मुरीद एका दर वखाईआ। बंक दुआरी खोल्हे ताक, ताकी आपणी आपे लाहीआ। चरन कँवल कँवल चरन उपर धवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। जन भगतां बणे सच्चा साक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां होए सहाईआ। होए सहाई श्री भगवन्त, भगवन दया कमाइंदा। नाता तोड़ जीव जंत, आपणा बन्धन इक्क वखाइंदा। एका नाउँ मणीआ मंत, मन्त्र नाम इक्क पढ़ाइंदा। एका रूप नार कन्त, कन्त कन्तूहला सेज सुहाइंदा। एका रंग चाढ़े बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। एका मेला साची संगत, हरिसंगत विच समाइंदा। हरिजन हरि जू लाए आपणे अंगत, अंगीकार आप हो जाइंदा। गुरमुख दूजे दर ना होए मंगत, साची वस्त आप वरताइंदा। दुःख दर्द सर्ब अखण्डत, खण्डा नाम विच फिराइंदा। लेखा जाणे वरभण्डी वरभण्डत, ब्रह्मण्डी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे एका वर, बोध ज्ञाना नाम पंडत, पंडत आपणा भेव जणाइंदा। साचा पंडत हरि निरँकार, भगतन करे पढ़ाईआ। कागद कलम ना पावे सार, लिख लिख शाही लेख ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उच्ची कूक कूक गए पुकार, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। बेअन्त बेपरवाह शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह अन्त ना कोए पाईआ। जुगा जुगन्तर गुर अवतारां दे सहार, लोकमात सेवा लाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार,

निरगुण आपणा वेस वटाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, फड़ बांहों गले लगाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त एका मन्दिर एका घर बैठे आसण लाईआ।

★ १८ फग्गण २०१८ बिक्रमी सरधा सिंघ दे गृह कानपुर ★

पंज तत्त काया जगत नाता, तत्तव तत्त खेल रखाइंदा। अंदर वड़ पुरख समराथा, निरगुण आपणा आप छुपाइंदा। हरिजन हरि जू हरि हरि एका दस्से नाम गाथा, नाम निधाना झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया तत्त वेख वखाइंदा। काया तत्त अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, सरगुण एका एक जणाइंदा। रोग सोग चिंता दुःख घर विच घर कर निवास, बन्धन बंध पवाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म निरगुण जोत नूर प्रकाश, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल तमाश, ईश जीव वेख वखाइंदा। गुरमुख विरले करे बन्द खुलास, बन्दीखाना आप तुड़ाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, रसना जिह्वा जो जन गाइंदा। अन्त भगवन्त पूरी करे आस, जम्म की फाँसी फंद तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त तत्त वेख वखाइंदा। पंज तत्त अंदर दुःख सुख, सुख दुःख आपणा रंग वखाईआ। पंज तत्त काया माणस मनुक्ख, मानव रूप धराईआ। पंज तत्त काया उज्जल मुख, जिस मुखड़ा हरि हरि नाम ध्याईआ। पंज तत्त काया आवण जावण जाए छुट्ट, लख चुरासी गेड़ ना कोए भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुखी दुःख दर्दी दर्द दए गंवाईआ। दुःख दर्द होए दूर, तन ख़ाकी रहिण ना पाईआ। आत्म अन्तर इक्क सरूर, अमृत आत्म जाम प्याईआ। दरस दिखाए वसणहारा दूरन दूर, नेरन नेर आपे आईआ। चिंता चिखा करे चूर चूर, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम लेखा जाए लग्ग, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। सरन सरनाई हरि पुरख निरँजण जो जन जाए लग्ग, लग्गी प्रीती तोड़ निभाइंदा। त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, तत्तव तत्त ना कोए जणाइंदा। अन्तिम पड़दा लवे कज्ज, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणा रंग वखाइंदा। अन्त अन्त श्री भगवान, जन जन दया कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे दान, ईश जीव वंड वंडाईआ। दो जहानां वाली वेखे आण, दर दुआरे फेरा पाईआ। नाता तुट्टे जगत जहान, जीवण मुक्त आप कराईआ। एथे ओथे देवे माण, निमाणयां होए सहाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया वेख वखाईआ। पंज तत्त काया वेखे चोला, चोली आपणे रंग रंगाइंदा। आप चुकाए पड़दा ओहला, रूप अनूप आप दरसाइंदा। सच दुआरा एका खोल्ह, दीना नाथ दीनन दया आप कमाइंदा। इक्क सुणाए साचा ढोला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव ईश आपणे दर सुहाइंदा। साचा दर सच्चा दरबारा, सचखण्ड निवासी इक्क बणाईआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, रूप अनूप आप वटाईआ। मानस मनुख वेखे विगसे वेखणहारा, आप आपणी दया कमाईआ। रोग सोग चिंता दुःख पार किनारा, साचा सुख सुख समझाईआ। सोहँ नाम सच जैकारा, अन्तिम लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची एका धाम बहाईआ। दरगाह साची धाम अवल्ला, हरि साचा सच रखाइंदा। जिस जन फड़ाए आपणा पल्ला, फड़या पल्लू ना कोए छुडाइंदा। बिन हरि नामे जीव जंत साध होए झल्ला, ज्ञान ध्यान ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सच्चा दान, तत्तव तत्त तत्त आपणे लेखे पाइंदा।

७२८ ११

★ १८ फग्गण २०१८ बिक्रमी शाशतर नगर सिँघ दे गृह कानपुर ★

हरि हरि खेल अगम्म अथाह, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि वेस वटा, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग ला, पाँधी आपणा पन्ध रखाइंदा। शब्दी शब्द नाम प्रगटा, नाम निधाना इक्क सुणाइंदा। गुर अवतार नाउँ धरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेअन्त आपणा नाउँ रखाइंदा। बेअन्त नाउँ आपणा रख, भेव अभेद छुपाईआ। सचखण्ड निवासी अलखणा अलख, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। निरगुण निराकार अजूनी रहित हो प्रतख, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह एकँकारा, अकल कला अख्वाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। थिर घर खोल्है, आप किवाड़ा, रूप अनूप आप धराइंदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शाह पातशाह हुक्म वरताइंदा। हुक्मी हुक्म खेल न्यारा, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, आदि अन्त कराईआ। सचखण्ड निवासी सच निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां इक्क ज्ञान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे मार ध्यान, घट घट आपणा आसण

लाईआ। भेव चुकाए गोपी काहन, मंडल मण्डप डेरा लाईआ। रवि ससि कर प्रधान, नूरी नूर नूर रुशनाईआ। चौदां लोक खेल महान, चौदां तबक बणत बणाईआ। गुर अवतार दे दे दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। पंज तत्त काया कर प्रधान, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। बोध अगाधी शब्द निशान, श्री भगवान आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेस अनेक आप वटाईआ। वेस अनेक इक्क इकल्ला, आदि पुरख आप वटाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, उच्च अटल्ला सोभा पाइंदा। शब्दी शब्द जोती जोत आपे रला, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। सच संदेस नर नरेश दो जहान एका घल्ला, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाए पल्ला, त्रैगुण आपणा बन्धन पाइंदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। अनुभव धार पुरख अकाल, आदि जुगादि चलाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, थिर दरबारे डेरा लाईआ। जल्वा नूर नूर जलाल, बेऐब ऐब खुदाईआ। परवरदिगार दीन दयाल, राम राम राम समाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पाईआ। कागद कलम लिख लिख गए हार, समुंद सागर नेत्र रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल हरि करतार, करता कुदरत वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त लए उभार, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान दृढ़ाइंदा। साचे सन्तां दे दीदार, दरसी आपणा दरस कराइंदा। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़, आत्म ताकी आपे लाहइंदा। गुरसिखां अग्ग ना लगे तत्ती हाढ़, त्रैगुण अग्नी आप बुझाइंदा। सच दुआरे देवे वाड़, घर घर विच आप वखाइंदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ी जोत जगाइंदा। नाता तुट्टे अन्ध अन्धयारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कराइंदा। साची कार करता पुरख, करनहार करतारा। ना कोए सोग ना कोई हरख, लख चुरासी बणे वणजारा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सन्त सुहेले देवे दरस, रूप अनूप करे कराए करनेहारा। अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत्त करे ठंडा ठारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर खेल न्यारा। जुगा जुगन्तर खेल अवल्ला, अजूनी रहित आप कराईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, महल अटल करे रुशनाईआ। भगतां अंदर बिन तेल बाती दीपक आपे बला, आपणी करे सच रुशनाईआ। पंच विकार ना करे हल्ला, आसा तृष्ना हउमे हंगता मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आपणा वेस वटाईआ। जुग करता वेस अवल्लड़ा, करे कराए आप। मार्ग लाए इक्क सुखल्लड़ा, गुर अवतार देवे

जाप। शब्दी शब्द फड़ाए पलड़ा, दो जहानां वड प्रताप। सच दुआरे आपे खलड़ा, निरगुण नूर जोत प्रकाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेखे खेल तमाश। खेल तमाशा वेखे जग, हरि जागरत जोत करे रुशनाईआ। लख चुरासी लग्गी अग्ग, सांतक सति ना कोए कराईआ। पंच विकार सृष्ट सबाई गई बज्झ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। आपणा पड़दा सके ना कोई कज्ज, सीस जगदीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जो घड़या सो रिहा भज्ज थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख विरला हरि चरन दुआरे जाए सज, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। आपणे रंग आपे राता, जुग जुग खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर गाए गाथा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथा, त्रै त्रै आपणा बन्धन पाइंदा। लहिणा देणा हाथो हाथा, लख चुरासी आप चुकाइंदा। जन भगतां वेखे मस्तक माथा, पूरब भेव खुल्ह्लाइंदा। एथे ओथे दो जहान सगला साथा, साचा संग आप निभाइंदा। बोध अगाध देवे साची गाथा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। एका पूजा एका पाठा, एका तीर्थ एका ताटा, सर सरोवर इक्क वखाइंदा। एका जोत नूर ललाटा, एका अमृत देवे काया बाटा, निझर झिरना आप झिराइंदा। एका खोल्हे साचा हाटा, जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निरगुण सरगुण दासी दासा, भगत भगवन्त करे पूरी आसा, निरासा कोए नज़र ना आइंदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल पाए रासा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणी धार चलाइंदा। निरगुण जोत नूर प्रकाशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेदा अछल अछेदा, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। आपणा पड़दा देवे चुक्क, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। दरस दिखाए जो बैठा लुक, रूप अनूप आप धराईआ। शब्दी शब्द पए बुक्क, सिँघ आपणा नाउँ रखाईआ। लेखा जाणे लोक परलोक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल पुरख अगम्म, अलख अलखणा आप जणाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना डेरा लाइंदा। पवण स्वास ना कोए दम, जूनी जून ना कोए भुवाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता रोग ना कोए रखाइंदा। आपे जाणे आपणा कम्म, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर बेड़ा बन्न्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल पुरख समरथ, जुगा जुगन्तर आप कराईआ। निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। भगत भगवन्ता होए वस, निर्धन सरधन रूप वटाईआ। वेद पुराण गा गा थक्के जस, अन्त कोए ना आईआ। जुग जौकड़ी मार्ग दस्स, साचा पन्ध आप मुकाईआ। जिस जन हिरदे जाए वस, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। अमृत देवे

इक्को रस, रसना रस ना कोए वखाईआ। तीर निराला मारे कस, शब्दी बाण चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त वड वड्याईआ। वड्डी वड्याई आदि अन्त, मध आपणी खेल कराइंदा। पूरन जोत श्री भगवन्त, परम पुरख वेस वटाइंदा। लेखा जाणे साचे सन्त, सन्त सतिगुर दया कमाइंदा। मेल मिलावा नारी कन्त, कन्त कन्तूहल गोद सुहाइंदा। देवे वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत जोत जगाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क समझाइंदा। एका नाम मणीआ मंत, मन का मणका आप भुवाइंदा। जुग जुग बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार खेल कराइंदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी गेड़े विच भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौ सो चुरानवें चौकड़ी जुग जाए हार, नव नौ आपणा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सुरपति इन्द करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। करोड़ तेतीसा गया हार, वेला अन्त अन्त जणाईआ। गुर अवतार करन विचार, बेअन्त हरि तेरी शहिनशाहीआ। पीर पैग़म्बर दोए जोड़ करन निमस्कार, सजदा सीस सीस झुकाईआ। चारे वेद नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, पुराण अठारां रहे कुरलाईआ। शास्त्र सिमरत गए हार, हरि का रूप नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, कलयुग अन्तिम आप कराइंदा। वेखणहारा रवि ससि सूरज चन्न सितारा, पुरीआं लोआं फेरा पाइंदा। गगन मंडल दे सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव देवे खोल्ह, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा वज्जे ढोल, चारों कुण्ट रिहा सुणाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, खाली दिसे सर्ब लोकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तोलणहारा साचा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। लख चुरासी लए वरोल, नाम मधाणा एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप जणाईआ। साची खेल जणाए जन, जन जननी आप समझाइंदा। लेखा जाणे पंज तत्त तन, तन मन्दिर भेव चुकाइंदा। पंच विकारा देवणहारा डंन, नाम खण्डा हथ्थ रखाइंदा। बन्न्हणहारा मनुआ मन, मन मनसा मोह चुकाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाइंदा। एका देवे नाम धन, सच खज़ाना इक्क रखाइंदा। एका बेड़ा देवे बन्न्ह, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका नूर चढ़ाए चन्न, जोत निरँजण डगमगाइंदा। भगतां देवे साचा दान, बण दानी आप वरताइंदा। घर विच मेला गोपी काहन, सुरती शब्दी बन्धन पाइंदा। आत्म सेजा कर परवान, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोधा सूरबीर

बली बलवान, बल आपणा आप रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मिटया अन्त निशान, कलयुग हरि जू वेख वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्यान, सत्तां दीपां पड़दा लाहइंदा। चारे वेद वेखे हरि जू आण, खाणी बाणी शास्त्र सिमरत अंज़ील कुरानी फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। राह चलाए श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे झूठ निशान, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। चार वरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर वखाए सच मकान, गुरुदुआरा इक्क सुहाईआ। एका मस्जिद करे परवान, काया काअबा इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम वेस अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यारा, निरगुण आपणा पड़दा लाहइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता दे सहारा, श्री भगवान आपणा बन्धन पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ भर भण्डारा, ब्रह्म आपणी वस्त वरताइंदा। ईश जीव इक्क किनारा, जगदीस हरि वखाइंदा। त्रैगुण माया खेल न्यारा, पंचम आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी बण ठठयारा, घड़ घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण कर पसारा, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा रंग रंगाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी वेखणहारा, चारे बाणी आप जणाइंदा। चारे कुण्टां हो उज्यारा, दहि दिशा फेरा पाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड इक्क नगारा, निराकार आप वजाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, हुक्मे हुक्म आप सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम पार किनारा, झूठा जूठा मोह तुड़ाइंदा। आपे सुट्टे डूँग्घी गारा, शौह दरयाए आप रुढ़ाइंदा। नाता तुट्टे चार यारा, मुहम्मद संग ना कोए रखाइंदा। चौदां तबकां हाहाकारा, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। मुकामे हक़ एका नाअरा, परवरदिगार आप सुणाइंदा। सदी चौधवीं पार किनारा, चौदस चौदस चन्द इक्क चमकाइंदा। करे खेल आप निरँकारा, दूसर संग ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग लाए जग, जीवण जुगत आप जणाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। जन्म कर्म वरन बरन मेटे अग्ग, ज़ात पात रहे ना राईआ। दरस दिखाए सूरा सरबग, साख्यात रूप वटाईआ। कूड़ी क्रिया देवे कढ्ढ, सच सुच्च माण वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पार हद्द, कलयुग लेखा दए मुकाईआ। सतिजुग साचा उपजे साची यद, विष्न विश्व इक्क रखाईआ। अमृत प्याए एका मदि, नाम खुमार इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा सब दा आण चुकाईआ। लहिणा देण चुकाए श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। कलयुग मेटे कूड़ निशान, कूड़ी क्रिया नाता

मोह तुड़ाइंदा। सर्ब जीआं देवे इक्क ज्ञान, अक्खर आखर इक्क पढ़ाइंदा। काया मन्दिर वेख मकान, डूँग्घी कंदर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखाइंदा। साचा मार्ग इक्को हरि, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। सरन सरनाई जो जन जाए पड़, जन्म मरन विच ना आईआ। राए धर्म ना देवे कोई डर, चित्रगुप्त हिसाब ना कोए वखाईआ। लाड़ी मौत ना लए वर, काल ग्रास ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे रंग रंगाईआ। जिस जन रंगे आपणे रंग, रंग रंगीला दया कमाइंदा। आत्म सेजा सच पलँघ, सच सिँघासण इक्क वखाइंदा। दिवस रैण इक्क अनन्द, परमानंद विच समाइंदा। गीत गोबिन्द साचा छन्द, धुंन आत्मक राग अलाइंदा। नाता तुट्टे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। तत्तव तत्त देवे दंड, खण्डा खड़ग आप चमकाइंदा। सुरत सवाणी ना होए रंड, शब्दी कन्त कन्त मिलाइंदा। नाता तोड़ भेख पखण्ड, आप आपणा बन्धन पाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती नूर इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन साचा जाए उठ, सतिगुर पूरा आप उठाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी जाए तुट्ठ, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। चरन चरनोदक अमृत जाम प्याए घुट्ट, रस रसीआ इक्क वखाईआ। काया कवरी डूँग्घी भँवरी निर्मल जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। लेखे लाए पवण स्वास, पवण पवणां विच समाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले पूरी करे आस, आसा आसा नाल रखाईआ। निज घर आत्म कर कर वास, निज नेत्र दए खुलाईआ। नाता तुट्टे पृथ्मी आकाश, घर मंडल सोभा पाईआ। सतिगुर पूरा वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन साचे मिले मेल, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। दीपक जगे बिन बाती तेल, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। वसणहारा धाम नवेल, घर घर विच सोभा पाइंदा। राए धर्म दी कटे जेल, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। अचरज वखाए आपणा खेल, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि जू सज्जण सुहेल, जन भगतां संग निभाइंदा। निहकर्मी आपणा कर कर मेल, अभेव अभेद खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन साचा जाए जाग, जागणहारा आप जगाइंदा। आत्म अन्तर इक्क वैराग, पुरख वैरागी आप उपजाइंदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल आप धुवाइंदा। अनहद शब्द अनादी राग, बिन तन्दी तन्द सितार आप सुणाइंदा। दीपक जोत जगे चिराग़, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाइंदा। पंज तत्त काया चोला देवे साध, साची साधना आप समझाइंदा। मेल मिलावा

७३३
११

मोहण माधव माध, मुकंद मनोहर लखखी नरैण आपणे रंग रंगाइंदा। भगत भगवन्त सुणे फ़रयाद, दुखियां दर्दी दर्द वंडाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, चरन कँवल आप बहाइंदा। दरगह साची करे लाड, सचखण्ड दुआरे आप सुहाइंदा। लेखा जाणे जुगादि आदि, जुग जुग आपणा वेस धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप मिलाइंदा। भगतन मीता एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर लए अवतार, नित नवित वेस वटाईआ। घर मन्दिर वखाए ठांडा दरबार, सीतल धार इक्क वहाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, आप आपणे रंग रंगाईआ। झूठा दिसे सर्ब पसार, मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण कम्म कोए ना आईआ। धीआं पुत्तर ना कोई नार, अन्तर बिन हरि कन्त सगला संग ना कोए निभाईआ। आसा तृष्ना जगत प्यार, माया ममता होई हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन करे इक्क पढ़ाईआ। हरिजन पढ़े अक्खर एक, एका गुण समझाइंदा। हरिजन रखे एका टेक, एका इष्ट वखाइंदा। हरिजन वेखे एका लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। हरिजन वसे एका देस, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। हरिजन सहाई इक्क नरेश, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी गोद बहाइंदा। हरिजन साची बहे गोद, सतिगुर पूरा आप बहाईआ। दूई द्वैती मिटे रोग, सोग चिंता ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म होए संयोग, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। एका पुरख एका ओट, एका सीस जगदीस होए सहाईआ। एका किला एका कोट, एका गढ़ बंक वड्याईआ। एका नूर एका जोत, एका निर्मल धार समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन उठाए आप दयाल, दीनन दया कमाइंदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, आपणी गोद बहाइंदा। नाता तोड़ काल महांकाल, आप आपणे रंग रंगाइंदा। मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, सतिगुर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुरसिख सन्त भगवन्त एका घर बहाइंदा। एका घर हरिजन बहणा, हरी हरि नरैण आप जणाईआ। दर्शन करना हरि हरि नैणां, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। साचे धाम सचखण्ड बहणा, सच वज्जे सदा वधाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैणां, जूनी जून ना कोए भुवाईआ। गुरसिख गुर गुर मन्नणा कहिणा, गुर इष्ट देव गुर नमो नमो सदा सदा सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरैण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त श्री भगवन्त हरिजन मेला नारी कन्त, सेज सुहञ्जणी जोत निरँजणी अनभउ प्रकाश शाहो शाबाश दासी दास सेवक सेवा आपणी आप कमाईआ।

सेवा करे हरि जू ठाकर हरिजन साचे वेख वखाईआ। देवे नाम रत्ती रतनागर, रत्ती रत्त दए सुकाईआ। भाग लगाए काया गागर, काची गगरीआ दए वड्याईआ। अमृत नीर विरोले सिन्ध सागर, समुंद आपणा भेव चुकाईआ। जन भगतां देवे माण आदर, आदरश आपणा आप वखाईआ। निर्मल कर्म होए उजागर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणा भेव चुकाईआ। जिस जन खोल्हे आपणा भेव, भेद ना कोए रखाइंदा। नज़री आए वड देवी देव, देवत सुर सीस झुकाइंदा। निराकार निरँकार निहकेव, निहचल धाम आसण लाइंदा। कथनी कथ ना सके रसना जिहव, गुण अवगुण ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अलख अभेव, अलख अलखणा आपणी अलख आप सुणाइंदा। हरिजन विरला लग्गे सेव, जिस जन साची सेव समझाइंदा। अमृत आत्म रस देवे इक्को मेव, रसना रस सर्ब गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी बूझ बुझाइंदा। हरिजन बूझे गुर विचार, गुर गुर भेव चुकाया। मन मति बुध ना पावे सार, बेअन्त बेपरवाहया। जिस जन खोल्हे बन्द किवाड़, निज नेत्र दए दरसाया। जिस जन करे आप प्यार, किरपन आपणे गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप तराया। गुरमुख तरया विच संसार, संसार सागर पार कराया। प्रभ मिल्या एको वार, विछड़ कदे ना जाया। दर देवे ठांडा दरबार, तत्ती वा ना लागे राया। जिस जन किरपा करे आप निरँकार, कर किरपा मेल मिलाया। दर दर घर घर आ आ देवे दरस दीदार, निरगुण आपणा रूप वटाया। जन्म जन्म दा लहिणा देणा देवे कर्ज उतार, पूरब लेखा झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणी बूझ बुझाया। गुरमुख बूझे आत्म अन्तर, लिव आत्म इक्क इक्क लाईआ। जन्म जन्म दी बुझे बसन्तर, अग्नी अग्ग रहे ना राईआ। लेखा चुक्के गगन गगनंतर, गगन मंडल डेरा ढाहीआ। एका जाप मिले सच मन्त्र, सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। मानस जन्म बणाए बणतर, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे एका वर, चरन सरन इक्क सरनाईआ। चरन सरन सच्ची सरनागत, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा देवणहारा इक्को मति, ब्रह्म मति आप पढ़ाइंदा। बीज बीजे साचे वत, नाम फल इक्क लगाइंदा। नाता तोड़ सीआं साढे तिन्न हथ्थ, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे विच छुपाइंदा। हरिजन आपणे अन्तर रख, आपणा भेव छुपाईआ। सृष्ट सबाई होए भट्ठ, भठ खेड़ा दए जणाईआ। उलटी गेड़े आपे लट्ठ, लख चुरासी दए भुवाईआ। करे खेल बाजीगर नट, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। हरिजन आपणे खाते लए घत, डूँग्घा खाता लए भराईआ। कलयुग अन्त हो प्रगट, निहकलंक फेरा पाईआ।

सम्बल नगर रिहा वस, गोबिन्द मेला चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे घर, घर मन्दिर इक्क वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग जुग भगत भगवन्त साचे सन्त सगला संग रखाईआ।

★ १६ फग्गण २०१८ बिक्रमी तारू सिँघ दे गृह कोरा पुर फारम लखीमपुर ★

हरि दान हरि निरँकार, आदि जुगादि जन भगतां आप वरताइंदा। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान, निज नेत्र नैण आप खुल्हाइंदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कान, अनादी नाद राग अल्हाइंदा। निर्मल जोत नूर महान, जोती जाता आप जगाइंदा। चरन कँवल देवे सच ध्यान, सरन सरनाई इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वरताइंदा। साचा दान नाम धन, हरि जू हरि हरि आप वरताईआ। मन वासना देवे बन्न्ह, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। एका राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। गढ़ हँकारी देवे भन्न, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। करे प्रकाश नेत्र अन्न्ह, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। पंच विकारा देवे डंन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। थिर घर वखाए बिन छप्परी छन्न, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। दरस दिखाए श्री भगवन, सति सरूपी रूप वटाईआ। माणस जन्म बेड़ा देवे बन्न्ह, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान नाम वरताईआ। साचा दान श्री भगवान, जुग करता आप वरताइंदा। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, लख चुरासी जीव जंत फोल फुलाइंदा। मानस मनुख देवे माण, अभिमाण मोह मिटाइंदा। कर प्रकाश कोटन भान, नूरो नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वरताइंदा। साचा दान श्री भगवन्त, जुग जुग आप वरताईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, ईश जीव बूझ बुझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान इक्क वरताईआ। साचा दान देवणहारा, आदि जुगादि समाइंदा। सचखण्ड वसे वसणहारा, निरगुण निराकार रूप रखाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, हरि पुरख निरँजण आप कराइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता सच भण्डारा, थिर घर साचे आप टिकाइंदा। श्री भगवान बण वणजारा, साची वस्त आप वरताइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए सहारा, आप आपणी दया कमाइंदा। एका नाम हरि निरँकारा, साचा दान आपणे हथ्थ रखाइंदा। खेल करे अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, दानी आपणा दान आपणे कोल वखाइंदा। साचा दान रखे कोल, दिस किसे ना आईआ। नाम कंडे लए तोल अतुल बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर रखे अनमोल, करता कीमत कोए ना पाईआ। सच भण्डारा साचे सन्तां देवे खोल्ह, आप आपणी बूझ बुझाईआ। अन्तर आत्म जाए मौल, बसन्तर अग्नी दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान एका एक रखाईआ। साचा दान एकँकार, अकल कल रखाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यार, जुग जुग झोली आप भराइंदा। वेखे विगसे वेखणहार, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। जोती जाता पुरख नार, नारी कन्त रूप वटाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क वणजार, बण वणजारा सेव कमाइंदा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोल्ह किवाड़, गगन पातालां एका वस्त वखाइंदा। रवि ससि सूरज चन्न मंडल मण्डप दे सहार, धरत धवल एका ओट जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, साची वस्त झोली पाइंदा। त्रैगुण माया दे दे दान, रजो तमो सतो संग मिलाइंदा। पंच तत्त कर प्रधान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेस वटाइंदा। निरगुण निरगुण खेल महान, सरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रधान, नूर नुराना डगमगाइंदा। ईश जीव वेख वखाए इक्क मकान, घर घर विच सोभा पाइंदा। आत्म ब्रह्म कर कल्याण, एका कलमा आप पढ़ाइंदा। एकँकारा नाउँ निरँकारा साचा दान, लख चुरासी झोली पाइंदा। खेले खेल श्री भगवान, लेखा जाण दो जहान, जीव जंत आदि अन्त जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान एका एक रखाइंदा। साचा दान इक्को रख, विष्न ब्रह्मा शिव दए वड्याईआ। साचा दान झोली पाए चुरासी लख, घट घट आपणी जोत टिकाईआ। साचा दान अनहद शब्द नाद धुन्कान आप रखाए अलखणा अलख, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रतख, आत्म परमात्म पड़दा दए चुकाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक निरगुण दाता पुरख बिधाता आपे लए ढक, उपर आपणा पड़दा पाईआ। किरपा निध दीन दयाल ठाकर गुरमुख विरले दए दस्स, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान इक्क वरताईआ। साचा दान देवण जोग, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि सच सलोक, गुर अवतारा आप पढ़ाइंदा। एका दान चौदां लोक, चौदां हट्ट आप वरताइंदा। एका दान हरि का नाम सलोक, बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। एका दान अन्तिम देवे मोख, जीवण मुक्त आप कराइंदा। एका दान बख्शे पंज तत्त काया किला कोट, त्रैगुण मेला जोड़ जुड़ाइंदा। एका दान निर्मल जोत, घट दीपक बाती आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान एका एक प्रगटाइंदा। साचा दान देवे दातार, दीनन आपणी दया कमाईआ। जुग जुग वेस करे अगम्म अपार, बेअन्त वड्डा शहिनशाहीआ। शब्द अगम्मी

खोल्ह भण्डार, गुर गुर वेस वटाईआ। लख चुरासी पावे सार, घट घट पड़दा रिहा उठाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लए उठाल, आप आपणा मेल मिलाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। चार वरनां बणे दलाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणे रंग रंगाईआ । हक़ हक़ीक़त जाणे हलाल, मुकामे हक़ हक़ रसाईआ। नौबत वजाए दो जहान, करे खेल श्री भगवान, बेअन्त बेअन्त आपणा नाउँ आप जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान एका हथ्थ रखाईआ। साचा दान एका हथ्थ, सो पुरख निरँजण आप रखाइंदा। हरि पुरख निरँजण साहिब समरथ, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। एकँकारा चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। आदि निरँजण अन्तर अन्तर जाए वस, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। अबिनाशी करता आपणे मंडल पाए रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। श्री भगवान इक्क वखाए सच निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ देवे दान, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म करे कल्याण, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दात आप वरताइंदा। देवे दान दीन दयाला, गुर गुर वेस वटाईआ। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाला, घट बैठा मुख छुपाईआ। हरिजन गुरमुख गुरसिख आप उठाए सच्चा बाला, बाली बुध बिबेक कराईआ। बिरहों तीर मारे निराला, निरवैर हथ्थ उठाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, राए धर्म मुख छुपाईआ। जिस जन दस्से राह सुखाला, एका हरि का नाउँ पल्लू दए फड़ाईआ। आत्म अन्तर इक्को माला, मन का मणका दए भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वरताईआ। साचा दान देवे गोबिन्द, गुर गुर आपणी दया कमाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, कर्मी कर्म कांड मुकाइंदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वेख वखाइंदा। अमृत आत्म सागर सिन्ध, घर सरोवर इक्क प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान इक्क रखाइंदा। साचा दान एको एक, इक्क इकल्ला हरि वरताइंदा। जुग जुग जणाए साची टेक, पुरख अकाल इष्ट रखाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। आत्म अन्तर खोल्हे भेत, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। सति फुलवाड़ी काया खेत, पत्त डाली आप महकाइंदा। दरस दिखाए नेतन नेत, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त करे हेत, मिल मिल साचा मंगल गाइंदा। भेव ना पायण चार वेद, पुराण अठारां नैण शरमाइंदा। हरि जू खेले आपणी खेड, जुग जुग आपणी वस्त आप वरताइंदा। साचे सन्त रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मिट्ठा करे कौड़ा रेठ, अमृत रस विच भराइंदा। अग्नी लगे ना तत्ती जेठ, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। देवे दान पुरख अबिनाश,

अबिनाशी करता दया कमाईआ। दो जहानां पूरी करे आस, अवण गवण ना कोए फिराईआ। एथे ओथे देवे साथ, जिस जन आपणा नाम वरताईआ। रसना जिह्वा चुक्के पूजा पाठ, अजपा जाप आप कराईआ। नाता तुट्टे तीर्थ ताट, अठ सठ पन्ध ना कोए फिराईआ । मिटे रैण अन्धेरी रात, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, अनुभव आपणा नूर प्रगटाईआ। गुरमुख बाले गोद उठाए जिउँ बालक मात, पिता पूत सेव कमाईआ। नाता तोड़ सज्जण साक, चरन कँवल देवे इक्क सरनाईआ। आप उतारे औखे घाट, पार किनारा आप कराईआ। जिस जन देवे नाम दात, वड दानी दया कमाईआ। वेले अन्तिम आपे पुछे वात, राए धर्म नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा दान आप समझाईआ। जुग जुग दान हरि का नाउँ, दूसर वस्त ना कोए रखाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, निथाव्याँ गले लगाइंदा। निताणयां पकड़े आपे बांहों, फड़ बांहों आप उठाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस उडाइंदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे सच न्याउँ, तख्त निवासी साचे तख्त आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप समझाइंदा। साचा दान शब्दी धार, हरि शब्द शब्द वड्याईआ। साचा हरि चरन प्यार, हरि चरन सरन सरन सरनाईआ। साचा दान हरि अमृत ठंडा ठार, सरोवर सर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वरताईआ। साचा दान विष्न ब्रह्मा शिव रंग, रंग रंगीला इक्क रखाइंदा। साचा दान लख चुरासी आत्म सेज पलँघ, आत्म परमात्म आप सुहाइंदा। साचा दान शब्द अनाद मृदंग, घट घट रागी राग अलाइंदा। साचा दान सूरा सरबंग, आत्म अनन्द इक्क वखाइंदा। साचा दान वंडे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप रखाइंदा। साचा दान देवे सूरज चन्द, किरन किरन आप प्रगटाइंदा। साचा दान वेखे नव खण्ड, सत्त दीप झोली पाइंदा। साचा दान जाणे ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड भेव खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा दान आप वरताइंदा। जुग जुग देवे दान, सतिजुग आपणी दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, हँ ब्रह्म करी कुड़माईआ। सोहँ रूप निरगुण सरगुण इक्क निशान, सरगुण निरगुण आपणा खेल रचाईआ। ओम रूप आप भगवान, नमो सति सति पढ़ाईआ। करे खेल श्री भगवान, लोकमात राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा दान सतिजुग वेस, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। त्रेता देवे इक्क आदेस, राम रामा रंग रंगाइंदा। साचा दान विष्नू सेजा बाशक सेज, सागों पांग हेठ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान एका घर वखाइंदा। द्वापर देवे साचा दान, आपणी दया

कमा। पंज तत्त काया खेल भगवान, कान्हा कृष्ना नाम प्रगटा। इक्क वखाए सच निशान, बंसरी नाद धुन जणा। साचे मंडल पावे रास, गोपी काहन वेस वटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वरता। साचा दान परवरदिगार, बेऐब आप वरताईआ। मुकामे हक़ सांझा यार, साबत सूरत इक्क रखाईआ। ईसा मूसा कर त्यार, सच हदीसा इक्क पढ़ाईआ। मुहम्मद करया ख़बरदार, कलमा नबी इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताईआ। साची वस्त नौजवान, सो पुरख निरँजण आप वरताइंदा। जुग जुग खेले खेल महान, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर परवान, कलयुग आपणा राह वखाइंदा। चारों कुण्ट सुंञ मसाण, नव नौ अन्धेरा छाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप वरताइंदा। साचा नाम नाम सति, निरगुण सरगुण नानक झोली पाइंदा। चार वरन देवे इक्को मति, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। सति सन्तोख धीरज जत, चरन कँवल नत इक्क बंधाइंदा। सर्ब जीआं जाणे मित गत, हरि जू घट घट आसण लाइंदा। बिन हरि नामे काया खेड़ा भड्ड, पंज तत्त कम्म किसे ना आइंदा। काया अंदर मक्का काअबा मन्दिर शिवदुआला मड्ड, गुरदुआरा इक्क वखाइंदा। नाता तुट्टे तीर्थ अठसठ, जिस जन सतिगुर आपणा नाम झोली पाइंदा। निर्मल जोत जगे लट लट, घट घट प्रकाश धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वखाइंदा। साचा दान सति नाम, सतिगुर गुर गुर करे पढ़ाईआ। धुरदरगाही इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर रिहा सुणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को राम, एका तृष्ना वेख वखाईआ। सर्ब जीआं इक्को अमाम, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। सर्ब जीआं इक्को मुकाम, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। सर्ब जीआं एका भगवान, थिर घर नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वरताईआ। साचा दान नानक धार, हरि दाता दानी आप वरताइंदा। देवे दान कर प्यार, गुर अंगद अंग लगाइंदा। अंगद अंग कर परवान, अमर अमरापद वखाइंदा। अमर अमर हो मेहरवान, राम दास झोली आप भराइंदा। राम दास हो मेहरवान, गुर अर्जन बोध ज्ञान दृढ़ाइंदा। पुरख अबिनाशी देवे दान, साची गाथा आप जणाइंदा। गुरू ग्रन्थ गुर कर परवान, चार जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग एका घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दान अनमुल्ला आपणे हट्ट विकाइंदा। देवे दान हरि गोबिन्द चाढ़े रंग, घर साचे वज्जे वधाईआ। हरिराय मिल्या इक्क अनन्द, हरिकिशन वज्जी वधाईआ। गुर तेग बहादर दीआ दान बन्द बन्द, बन्दीखाना सर्ब तुड़ाईआ। पुरख अकाल देवे दान लेखा जाणे गुजरी चन्द, चन्द चांदना इक्क चमकाईआ। भूमका सुहाए पुरी अनन्द, अनन्द मंगल एका गाईआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड,

वरभण्ड फेरा पाईआ। दुष्ट दमन पूरी करी मंग, साची वस्त आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दान जुग जुग झोली आप भराईआ। देवे दान झोली भर, भर झोली खुशी मनाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे वर, वर दाता आप अख्वाइंदा। निर्भय चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए जणाइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। आप बंधाए आपणे लड़, पल्लू पल्लू नाल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान एका घर टिकाइंदा। साचा दान देवे गोबिन्द, माता पिता भेंट चढ़ाईआ। लेखा जाणे सर्ब हिन्द, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। हरख़ सोग ना कोई चिन्द, गमीं रूप ना कोए वटाईआ। लेखे लाई आपणी बिन्द, चौथे जुग चारे बाल करन कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वखाईआ। साचा दान दिता प्यार, प्रेम प्यार इक्क जणाया। सत्थर माणयां साचे यार, सूल़ा सत्थर हेठ विछाया। मंगी मंग अगम्म अपार, पुरख अकाल अग्गे झोली डाहया। तेरा कर्ज़ा दिता उतार, मकरूज आपणा फ़र्ज अदा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल अवल्ला, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, उच्च अटल्ला डेरा लाइंदा। सच संदेस नर नरेश जुगा जुगन्तर एका घल्ला, शब्दी शब्द शब्द अल़ाइंदा। सतिजुग त्रेता

द्वापर कलयुग भगत भगवन्त फड़ाउदा आया पल्ला, आप आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। साचा खेल करे हरि ख़ालक, ख़लकत वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर गोबिन्द हरि जू बणाया आपणा बालक, पूत सपूता नाउँ धराईआ। एथे ओथे बणे सदा प्रितपालक, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल़ाईआ। भेव अभेदा देवे खोल़, पुरख अगम्म बेपरवाहया। बैठा रहे सदा अडोल, निरगुण सचखण्ड आसण लाया। सरगुण तोले साचा तोल, तोलणहारा सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराया। करे वेस पुरख अगम्म, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, जूनी जून ना कोए वटाइंदा। तत्तव तत्त काया ना कोई तन, छप्पर छन्न ना कोई छुहाइंदा। ना कोई राग ना कोई कन्न, तन्दी तन्द ना कोए वजाइंदा। ना कोई मनसा ना कोई मन, आसा तृष्ना ना कोए वधाइंदा। ना कोई विकार ना कोई डंन, घड़ भन्न ना कोई बणाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मण्डप ना कोए रखाइंदा। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, चार दीवार ना बणत बणाइंदा। निरगुण निराकार जोत सरूप श्री भगवान, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। अन्त अन्त एका देवे आपणा दान, दाता दानी आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, गुर गोबिन्द भेव चुकाइंदा। गोबिन्द मंगे एका दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तेरा खेल सदा महान, भेव कोए ना पाईआ। तूं दाता जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। तूं शाह पातशाह राज राजान, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। तूं हुक्मी हुक्म जणाए धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क अल्लाईआ। तेरे गीत गाए चार वेद अठारां पुराण, शास्त्र सिमरत देण दुहाईआ। तेरा अन्त ना पाया अञ्जील कुरान, पीर पैग़म्बर करन सिफ्त सालाहीआ। मैं तेरा छोटा बाल निधान, तेरे चरन बैठा सीस झुकाईआ। कर किरपा देणा दान, मेरी घाल लेखे पाईआ। कलयुग चार कुण्ट दिसे बेईमान, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। चार वरन बणे शैतान, हक़ हक़ीक़त ना कोए समझाईआ। बिन तेरे नाम ना कोई ज्ञान, चौदां विद्या नेत्र नैणां नीर रही वहाईआ। तूं प्रगट होणा विच जहान, इक्क तेरी ओट तकाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां ऊँचां नीचां देणा एका माण, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। एका देणा नाम निधान, एका अक्खर कर पढ़ाईआ। इक्क कराउणा सच इश्नान, दुरमति मैल मैल धुवाईआ। एका देणा पद निरबाण, परम पुरख वड वड्याईआ। इक्क वखाउणा सच मकान, साचा मन्दिर सोभा पाईआ। एका नज़र आए भगवान, दूजा इष्ट ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा दान कलयुग अन्त अन्त वरताईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। गोबिन्द गुर गुर कर परवान, हरि सतिगुर खेल कराइंदा। तेरा मेरा इक्क निशान, दूजा रंग ना कोए चढ़ाइंदा। कलयुग अन्त होए प्रधान, निरगुण जोती जोत डगमगाइंदा। गोबिन्द डंका चले दो जहान, विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब उठाइंदा। करोड़ तेतीसा तुट्टे माण, सुरपति इन्द तख्तों लाहइंदा। सृष्ट सबाई देवे इक्क ज्ञान, नौ खण्ड पृथ्मी आप पढ़ाइंदा। ऊँचां नीचां इक्को माण, राउ रंकां एका दर वखाइंदा। सन्त सुहेले गुरमुख मेले आपे आण, गुरसिख आपणे अंग लगाइंदा। भगत भगवन्त कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा निध दीनन ठाकर, साचा दान वस्त अमोलक अनमुल्ल आप वरताइंदा। अमुल अतुल हरि भण्डार, बण भण्डारी आप वरताईआ। लेखा जाणे जुग चार, नौ सौ चुरानवें जुग गेड़ा आप भुवाईआ। लहिणा देणा जाणे तेई अवतारा, भगत अठारां नाल मिलाईआ। वेखे विगसे ईसा मूसा मुहम्मद संग चार यारा, अल्ला राणी नैण खुल्लाईआ। नानक गोबिन्द इक्क जैकारा, फतिह डंका डंक वजाईआ। रागी नादी वसे बाहरा, ब्रह्म ब्रह्मादी डेरा लाईआ। आदि जुगादी एकँकारा, अकल कल आपणी आप वरताईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। सम्बल नगर धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ बंक दए वड्याईआ। दो जहानां करे खबरदारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। शब्दी खण्डा तेज कटारा, ब्रह्मण्डां

आप चमकाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप जणाईआ। बल बावन देवे दान, वल छल आपणा खेल कराइंदा। आपे बल देवे रावण राम, रम्मईआ आपणा रूप वटाइंदा। आपे बल कंस देवे कृष्ना काहन, पकड़ केसी आप गिराइंदा। आपे कलयुग अन्तिम जूठ झूठ करे बलवान, जगत विकारा नाल मिलाइंदा। नाम खण्डा तेज़ कृपान, पुरख अबिनाशी इक्क चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा खेल आपणे हथ्थ रखे निरँकारा, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। कलयुग अन्त हो उज्यारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पावे सारा, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। जन भगतां देवे नाम अधारा, एका वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दान, हरि हरि नाम कर परवान, परम पुरख हरिजन झोली आप भराईआ। निरगुण नानक निरगुण तत्त, निराकार रूप समाइंदा। सरगुण नानक पंज तत्त, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाइंदा। दोहां विचोला पुरख समरथ, सचखण्ड निवासी राह चलाइंदा। निरगुण नानक सरगुण नानक मार्ग देवे दस्स, लोकमात मात जणाइंदा। निरगुण नानक सरगुण नानक घर लए सद्द, सचखण्ड दुआरे मंग मंगाइंदा। सरगुण नानक निरगुण नानक चरनी जाए ढट्ठ, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। निरगुण नानक अग्गों पए हस्स, फड़ फड़ आपणे गले लगाइंदा। इक्क दूजे दे अंदर जाईए वस, भेव अभेद चुकाइंदा। दो जहान निरगुण सरगुण हो के जाईए फस, फाँसी होर ना कोए पवाइंदा। इक्क दूजे दा बह बह गाईए जस, काग़द कलम भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नानक सरगुण नानक नानक नंना रूप वटाइंदा। पहला नंना कर त्यार, निरगुण रूप वटाईआ। दूजा नंना खोल्ह किवाड़, आपणी जोत जगाईआ। तीजा कक्का कर्मां कुकर्मां मारी मार, कर्म कांड रहिण ना पाईआ। कक्का मुक्ता करया ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। दूजे कक्के पिच्छे सिहारी कर त्यार, त्रैगुण बन्धन पाईआ। तीजे कक्के थल्ले औकड़ करया ख़बरदार, दो जहान किला कोट निरगुण सरगुण एका चरन वखाईआ। नाम सति दे फेर भण्डार, पुरख अबिनाशी सिर दे उत्ते दे प्यार, लोकमात राह दिता वखाल, बिन अक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी ख़ुशी मनाईआ। सचखण्ड वसया आप निरँकारा, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। सरगुण नानक बण वणजारा, साची वस्त मात ल्याइंदा। चार वरन खोल्ह भण्डारा, जीवां जंतां आप वरताइंदा। सतिनाम सति जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाँई करे इक्क प्यारा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। वरन बरन ते वसे बाहरा, भेव अभेद आप समझाइंदा। एका इष्ट हरि निरँकारा, दृष्ट सर्ब

आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण नानक निरगुण निराकार आप सलाहइंदा। नानक कहे सो पुरख निरँजण निराकार, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। हँ ब्रह्म कर पसार, लख चुरासी घाड़त ल्या घड़ाईआ। गुर शब्द विचोला कर त्यार, जुग जुग करे पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे आपणी वार, कलयुग आपणा रंग चढ़ाईआ। एका जोती दस अवतार, दहि दिशा रूप धराईआ। पूरब लहिणा कर्म विचार, दुष्ट दमन दए वड्याईआ। हेम कुण्ट ल्या ठार, साचे पर्बत सोभा पाईआ। किरपा कर दीन दयाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जननी जन जणया लाल, लाल अनमुलड़ा वेस वटाईआ। दीपक दीआ निरगुण बाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अमृत जाम इक्क प्याल, एका रस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द सूरा हरि बलवान, शब्दी शब्द प्रगटाइंदा। साचा चिल्ला तीर कमान, तीर अंदाज इक्क रखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, लोकमात वेस वटाइंदा। धुर फ़रमाणा सुण भगवान, लोकमात खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप लगाइंदा। साचा मार्ग गोबिन्द मीत, हरि मित्र प्यारा आप जणाइंदा। आप चलाई आपणी रीत, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। चार वरन ऊँच नीच परखी नीत, झीवर छीबें नाई रंग चढ़ाइंदा। सर्ब बणाए भाई भाई, दूई द्वैती मोह मिटाइंदा। एका अमृत जाम प्याई, अमर अमर वखाइंदा। एका सीस दस्तार बन्नाई, सीस जगदीस बन्नू वखाइंदा। एका खण्डां हथ्थ चमकाई, खड़ग खण्डा नाउँ रखाइंदा। एका बाटा एका रस भराई, पंचम बाणी बाण लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या दस्से गुर गुर, गोबिन्द आपणी बूझ बुझाईआ। पुरख अकाल मेल मिलाया धुर धुर, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। इक्क दूजे नाल बहणा जुड़ जुड़, दूई द्वैती रहे ना राईआ। गुर पूरे नूं गुरसिखां दी सदा लोड़, बिन गुरसिखां गुरू कम्म किसे ना आईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त जाए बौहड़, रूप अनूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम नीले वाला माही मारे एका पौड़, चारों कुण्ट दए भुवाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार किनारा करे दौड़, गुरमुख आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या सतिगुर पूरा, एका एक जणाइंदा। गुरसिख मेरा होए नूरा, नूर गुरसिख विच रखाइंदा। सो गुरमुख होए पूरा, जो पुरख अकाल मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। साचा खेल हरि करतार, इक्क सत पंज छे वरताईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, सति सतिवादी हुक्म सुणाईआ। पंज प्यारे कर त्यार, छेवें घर दर वड्याईआ। पंजां अमृत ठंडा ठार, भर प्याला जाम प्याईआ। पंजां बणाउणा वड सिक्दार, दे

दे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द रीती इक्क बणाईआ। गोबिन्द सिँघ सिँघ बलवान, बल आपणा आप धराया। पंज प्यारे कर परवान, धुर परवाना हथ्थ फड़ाया। गुर चेला इक्क ज्ञान, चेला गुर रूप वटाया। आपे चरनीं डिगा आण, दोए जोड़ मंग मंगाईआ। ख़ालसा देणा इक्को दान, प्रेम वस्त झोली पाया। बणे विचोला श्री भगवान, पुरख अकाल होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क समझाया। सच संदेसा गुर गोबिन्द, सिँघ सिँघ समझाईआ। पंजां लाहे सगली चिन्द, चिंता चिखा दए मिटाईआ। आप बणा आपणी बिन्द, नादी सुत नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण माण वड्याईआ। पंज प्यारे दे दे माण, गुर सतिगुर आप जणाया। लोकमात दा सति निशान, पंज प्यारे रूप धराया। चार यारी मिटे निशान, अन्त रहे ना राया। सति सन्तोख इक्क ज्ञान, धीरज जत सति वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पन्थ इक्क बणाया। साचा पन्थ बणाया सच्च, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। सर्ब जीआं दा दाता कमलापति, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणयां लए रख, जो जन ओट तकाईआ। अन्तिम पड़दा लए ढक, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पन्थ ख़ालसा इक्क सजाईआ। पन्थ ख़ालसा होणा ख़ालस, गुर गुर आप सुणाया। सतिगुर पूरा होऐ सालस, वेखे विगसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आख जणाया। भेव अभेद देवे दस्स, गुर गोबिन्द वड्डी वड्याईआ। गुरमति अन्तिम जाए नस, आपणा मुख छुपाईआ। किसे ना चले कोई वस, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। नानक नाम बाण मारया कस, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर गुर ज्ञान पुरख अकाल श्री भगवान गाए जस, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। हरि का नाउँ जिस हिरदे जाए वस, तिस सतिगुर पूरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू ग्रन्थ गुर उपदेश नर नरेश इक्क वखाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, गुर गोबिन्द आख जणाइंदा। पढ़ पढ़ वक्त सर्ब लँघाउणा, हिरदे गुरू कोए वसाइंदा। अमृत वेले उठ उठ सब ने नहाउणा, दुरमति मैल ना कोए धुवाइंदा। हथ्थ विच माला मणका सब फिराउणा, मन का मणका ना कोए भुवाइंदा। धीरज जत ना किसे रखाउणा, सति सन्तोख ना कोए वड्याइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर अंदर फेरा पाउणा, अग्गे हो बाहर ना कोए कढाइंदा। सिखां नाल सिख लड़ाउणा, गुरमुख गुरमुख नज़र कोए ना आइंदा। पुरख अकाल वेस वटाउणा, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। नानक लिख्या पूर कराउणा, महांबली उतरे आपणा पन्ध मुकाइंदा। चार वरनां नौ खण्ड पृथमी सत दीप ब्रह्मण्डां खण्डां एका मार्ग लाउणा, एका राह चलाइंदा। कलयुग अन्तिम

रहिण ना पाउणा, आपणी हथ्थीं आप मिटाइंदा। सतिजुग साचा धरत मात दी गोद बहाउणा, लोकमात मात प्रगटाइंदा। सन्त सुहेले नाल रलाउणा, भगत भगवन्त जोड़ जुड़ाइंदा। जिस जन एका सतिगुर आत्म अन्तर इक्क धिआउणा, तिस जम नेड़ कदे ना आइंदा। श्री भगवान दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत ना कोए रखाउणा, इष्ट सृष्ट सृष्ट इष्ट आप हो जाइंदा।

★ २० फग्गण २०१८ बिक्रमी तारू सिंघ दे गृह कोरा पुर फारम ★

आदि अन्त इक्क अवतारा, आदि पुरख बेपरवाहीआ। आदि अन्त इक्क घर बाहरा, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। आदि अन्त इक्क नगारा, निरगुण आपणा शब्द सुणाईआ। आदि अन्त इक्क सिक्दारा, शाह पातशाह हरि रघुराईआ। आदि अन्त इक्क वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आदि अन्त एका एक, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। आदि अन्त वेस अनेक, रूप अनूप आप धराइंदा। आदि अन्त लिखे लेख, लिख लिख लेख आप समझाइंदा। आदि अन्त वसे साचे देस, देस दसन्तर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आपणा रंग रंगाइंदा। आदि अन्त एका रंग, रंग रंगीला इक्क उपाईआ। आदि अन्त इक्क पलँघ, थिर घर साचे सेज सुहाईआ। आदि अन्त इक्क मृदंग, बण मर्द मर्दाना आप वजाईआ। आदि अन्त एका सूरा सरबंग, सूरबीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप छुपाईआ। आदि अन्त एका राह, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। आदि अन्त इक्क मलाह, हरि पुरख निरँजण बेड़ा आप चलाइंदा। आदि अन्त इक्क सलाह, एकँकारा आप जणाइंदा। आदि अन्त इक्क रुशना, आदि निरँजण नूर धराइंदा। आदि अन्त एका थाँ, अबिनाशी करता साचे धाम सोभा पाइंदा। आदि अन्त इक्क निशान, श्री भगवान आप झुलाइंदा। आदि अन्त इक्क मकान, पारब्रह्म प्रभ आपणा आसण लाइंदा। आदि अन्त इक्क राजान, शाह पातशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। आदि अन्त इक्क हुक्मरान, हुक्मी हुक्म आप चलाइंदा। आदि अन्त इक्क मेहरवान, मिहबान बीदो आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप छुपाइंदा। आदि अन्त एका आसण, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। आदि अन्त खेल तमाशन, हरि ख़ालक वेख वखाईआ। आदि अन्त पावे रासन, साचे मंडल दए वड्याईआ। आदि अन्त आपणा नाउँ रख पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता रूप अनूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

भेव आप जणाईआ। आदि अन्त हरि भेव न्यारा, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे हो उज्यारा, दर घर साचा आप सुहाइंदा। निरगुण जोत कर उज्यारा, दीआ बाती इक्क टिकाइंदा। महल अटल अचल्ल मुनारा, थिर घर वासी आप सुहाइंदा। साचा तख्त कर त्यारा, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। निरगुण रूप अनूप करे खेल अपर अपारा, शाहो भूप वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा रंग रंगाइंदा। आदि रंग पुरख अकाल, आपणा आप रंगाईआ। आपणी खेल करे आपणे धर्मसाल, धुर दरबारे दए वड्याईआ। आपणा दीपक आपे बाल, जोती जोत डगमगाईआ। आपे वसे आपणे नाल, सगला संग आप हो जाईआ। आपे मार्ग दस्से सखाल, साचा मार्ग आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी बणत आप बणाईआ। आदि बणाए आपणी बणत, निरगुण निरगुण दया कमाइंदा। आपे नार आपे कन्त, साची सेज आप हंढाइंदा। आपे वेखे आपणा रंग बसन्त, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आपे सोभा पाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, हरि आपे वेख वखाईआ। आपणी सेजा आपे चढ़, आपणा आसण लाईआ। आपणे अंदर आपे वड़ वड़, आपणा बन्धन पाईआ। आपणे घर आपे वेखे खड़ खड़, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा भेव चुकाईआ। आपणे अन्तर हो त्यार, आपणा भेव चुकाइंदा। आपे नारी कन्त भतार, साची सेजा आप हंढाइंदा। आपे वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा आप हो जाइंदा। खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणा खेल कराइंदा। अलख अगोचर बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। मुकामे हक़ हो उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा भेव जणाइंदा। आदि आपणी रचना रच, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। निरगुण अंदर वड़या सच्च, सच रखे आपणी वड्याईआ। आपे जाणे खेल तमाश, दूसर संग ना कोए रखाईआ। आपे करे आपणी पूरी आस, आसा आसा विच समाईआ। आपे वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। घर साचा सोभावन्त, सचखण्ड खण्ड वड्याआ। करे खेल श्री भगवन्त, अनुभव आपणा रूप रखाया। आप बणाए आपणी बणत, आप आपणा वेस कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप रचाया। साचा खेल पुरख करतार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, आपणा हुक्म आप जणाईआ। आपे दर दरवेश बणे भिखार, दर आपणी अलख जगाईआ। आपे दाता देवणहार, वड भण्डारी भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, निरगुण अग्गे निरगुण मंग मंगाईआ। निरगुण मंगे आपणा दान, निरगुण झोली पाइंदा। निरगुण बणे राज राजान, निरगुण निरगुण सीस झुकाइंदा। निरगुण शाहो भूप सुल्तान, निरगुण अनक रूप वटाइंदा। निरगुण तख्त निवासी राज राजान, निरगुण सेवक बण बण सेव कमाइंदा। सचखण्ड खेल करे श्री भगवान, भेव कोए ना पाइंदा। आपे देवे आपणा धुर फ़रमाण, आपणे विच्चों आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण दस्से राह, निरगुण सिफ्त सलाहीआ। निरगुण दाता बेपरवाह, बेऐब वड्डी वड्याईआ। निरगुण वेखे आपणा थाँ, निरगुण खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाईआ। निरगुण आपणा पड़दा चुक्क, आपणी दया कमाइंदा। आपे जाणे आपणा मुख, रूप रंग रेख ना कोए बणाइंदा। आपे सुन्न आपे चुप्प, आपे जै जैकार कराइंदा। आपे प्रकाश आपे अन्धेरा घुप्प, आपणी लुकवीं खेल कराइंदा। आपणे अन्तर आपे पए उठ, आप आपणा बल वधाइंदा। आपणा नाउँ रख अबिनाशी अचुत्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा मता पकाइंदा। सचखण्ड दुआरे हो उज्यार, हरि आपणी दया कमाईआ। निरगुण रूप अपर अपार, निरँकार वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला कर पसार, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। ना कोई दूसर मीत मुरार, सगला संग ना कोए रखाईआ। ना कोई मन्दिर चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। सूरज चन्न ना कोए पसार, मंडल मण्डप ना कोए उपाईआ। लोआं पुरीआं ना कोए पसार, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड ना कोए वंडाईआ। ना ज़िमीं ना कोए असमान, धरत धवल ना कोए जणाईआ। जंगल जूह ना उजाड़ पहाड़, समुंद सागर ना कोए वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए अकार, त्रैगुण बन्धन ना कोए रखाईआ। पंज तत्त ना कोए अखाड़, लख चुरासी नाच ना कोए नचाईआ। ना कोई गुरू ना अवतार, पीर पैग़म्बर ना कोए बणाईआ। ना कोई भगत करे विचार, सन्त ध्यान ना कोए लगाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई रसना जिह्वा दस्से ज़बान, बत्ती दन्द ना कोए सलाहीआ। सचखण्ड बैठ श्री भगवान, इक्क इकल्ला आपणा भेव आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आपणे हथ्थ रखाईआ। साची धार पुरख समरथ, नर हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण देवे निरगुण वथ, निरगुण झोली आप भराइंदा। निरगुण मार्ग आपे दस्स, निरगुण राह आप वखाइंदा। निरगुण अन्तर आपे वस, निरगुण आपणा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। साचा बन्धन हरि हरि पा, आपणा खेल कराईआ। निरगुण निरगुण लए प्रना, नारी कन्त रूप धराईआ। निरगुण मेला सहिज सुभा, निरगण वेखे चाँईं चाँईंआ।

७४८
११

निरगुण सेवा लए कमा, दाई दाया रूप वटाईआ। निरगुण जननी जन बणे आप बेपरवाह, धन्न जणेंदी माई आपणा नाउँ रखाईआ। सुत दुलारा लए जा, शब्दी शब्द प्रगटाईआ। आपणी गोदी आप उठा, आपे खुशी मनाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे चढ़या जा, आपणा बंस आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। सुत दुलारा ल्या जम्म, जन जनणी हरि अख्वाइंदा। निरगुण निरँकार जाणे आपणा कम्म, दूजी किरत ना कोए रखाइंदा। पवण स्वास ना कोए दम, तत्तव तत्त ना कोए बणाइंदा। आपणा खेल कर भगवन, रूप अनूप आप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा आप उठाइंदा। सुत दुलारा छोटा बाला, शब्दी शब्द आप उठाया। करे खेल हरि गोपाला, दीनन आपणी दया कमाया। आदि जुगादि होए रखवाला, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला, चरन कँवल ध्यान जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाया। सुत दुलारे कर ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। थिर घर तेरा इक्क मकान, थिर घर वासी वंड वंडाइंदा। आदि अन्त इक्क निशान, सति सतिवादी तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल श्री भगवान, शब्दी शब्द शब्द जणाईआ। तेरा रूप रूप महान, अनूप तेरी वड्याईआ। तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखे भगवान, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। तेरा बंस वेखे दो जहान, सहँसर वेखे तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सुत दुलारा कर प्रणाम, दोए दोए सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी पकड़या तेरा दाम, दामनगीर एका नज़री आइंदा। आदि जुगादि तेरा मिले इक्को नाम, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। बण सेवक करां साचा काम, साची सेव कमाइंदा। मैं बरदा तेरा गुलाम, गुरबत होर ना कोए वधाइंदा। निउँ निउँ झुक झुक करां सलाम, अलैकम तेरा रंग वखाइंदा। तेरा इक्को इक्क पैग़ाम, सच पैग़म्बर मोहे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नाता तुट ना जाइंदा। तेरा नाता मंगां दान, शब्दी शब्द सीस झुकाया। सचखण्ड वेखां खेल महान, तेरा रूप अनूप समाया। हउँ बालक बाल अञ्याण, तुध बिन अवर ना दीसे कोई साया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरा ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया आप कमाईआ। तेरा मेरा इक्क मकान, एका घर वज्जे वधाईआ। तेरा मेरा इक्क निशान, मेरा निशान तेरी वड्याईआ। तेरा मेरा इक्क फ़रमाण, मेरा फ़रमाण तेरी शनवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा देवे

हरि, हरि हरि जू एका एक जणाया। शब्दी सुत तेरा दर घर, धुर दरबारी आप बणाया। निरभउ चुकाए भय डर डर, भयानक रूप ना कोए रखाया। आदि अन्त पल्लू फड़ फड़, तेरा संग निभाया। तेरा वेखा घाड़न घड़ घड़, रूप अनूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाया। साचे सुत तेरा निशान, हरि जू हरि हरि आप झुलाइंदा। खेले खेल श्री भगवान, भेव अभेद खुल्हाइंदा। तेरी उत्पत करे सन्तान, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद बहाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल महान, सूरज चन्न तेरा नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी धार आप चलाइंदा। साची धार चलाए हरि निरँकार, एका गुण जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं वेख अखाड़, दो जहान करे रुशनाईआ। रवि ससि दे सहार, मंडल मण्डप दए वड्याईआ। जल जल पावे आपे सार, थल थल तेरा रूप वखाईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, तेरी चरन धूढ़ लाए छाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे भण्डार, रजो तमो सतो नाल प्रनाईआ। पंज तत्त तत्त अकार, निराकार साकार रूप वटाईआ। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश कर पसार, मन मति बुध बन्धन नाल मिलाईआ। लख चुरासी भाण्डा घड़े बण ठठयार, चार खाणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द दए वड्याईआ। साचे शब्द तेरा हुलारा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा सहारा, सब तेरी ओट तकाइंदा। मेरा नाउँ तेरा भण्डारा, तेरा भण्डारा अतोट अतुट वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फ़रमाणा आप सुणाइंदा। सच फ़रमाण श्री भगवान, शब्दी शब्द जणाया। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान विष्न ब्रह्मा शिव दए पढ़ाया। विष्नूं चरन कँवल कँवल चरन ओट मंगे एका आण, ब्रह्म वेता सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द आप वड्याआ। साचे शब्द तेरा बल, हरि जू हरि हरि आप रखाइंदा। तेरे अन्तर जाए रल, दिस किसे ना आइंदा। तेरा संदेस लोक परलोक देवे घल्ल, दो जहानां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव देवे दस्स, हरि जू हरि हरि आप जणाया। लख चुरासी अंदर जाए वस, आपणा आप मुख छुपाया। तेरा नूर करे प्रकाश, जोती जोत डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप समझाया। सुण संदेस श्री भगवन्त, शब्दी शब्द सीस झुकाइंदा। तूं साहिब दाता बेअन्त, हउँ बालक भेव ना आइंदा। तेरा नाउँ मेरा मंत, मेरा मंत तेरा नाउँ वड्याइंदा। तेरा लेखा आदि अन्त, आदि अन्त तेरा खेल मोहे भाइंदा। तूं घाड़त घड़ें लख चुरासी जीव जंत, घट घट मेरा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला आपणे संग मिलाइंदा।

सच वक्त दस्स मेरे निरँकार, शब्दी शब्द मंग मंगाया। निरगुण सरगुण तेरी धार, लख चुरासी वंड वंडाया। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, दोए दोए जोड़ सीस झुकाया। दर दर वेस बण भिखार, खाली झोली लैण भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए सहाया। साचा वेला हरि जू रिहा जणा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। करे खेल अगम्म अथाह, दिस किसे ना आइंदा। निरगुण सरगुण वेस लए वटा, आपणा रूप वखाइंदा। जुग चौकड़ी वंड लए वंडा, पाँधी आपणा पन्ध रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भेव अभेद खोल्हे निरँकारा, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्दी तेरा सति भण्डारा, विष्नूं झोली आप भराईआ। शब्दी तेरा नाद जैकारा, ब्रह्मा दए वजाईआ। शब्दी तेरा अन्त अखाड़ा, शंकर दए वखाईआ। सरगुण निरगुण करे प्यारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। गुर गुर रूप विच संसारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे विगसे वेखणहारा, चारे खाणी दए बुझाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पावे सारा, चारे बाणी दए पढ़ाईआ। चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाए आपणी वारा, अनाद नाद धुंन वजाईआ । चारे वरन दे सहारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका पल्लू नाम फड़ाईआ। चारे कुण्ट हो उज्यारा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। सति सतिवादी साची कारा, सत्तां दीपां पड़दा लाहीआ। बोध अगाधी एका नाअरा, गुर गुर आपणा आप बुझाईआ। राग नाद ना पावे सारा, तीस बतीस ना कोए वड्याईआ। करे खेल आप निंरकारा, निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेसा एका वार जणाईआ। एका वार श्री भगवान, आपणा आप जणाया। साचे सुत होणा बलवान, बलधारी बल वधाया। जुग चौकड़ी खेल महान, निरगुण सरगुण आप कराया। गुर अवतार दे दे दान, लोकमात सेवा लाया। शब्दी शब्द इक्क ज्ञान, निष्अक्खर इक्क पढ़ाया। सति सतिवादी सति निशान, सचखण्ड दुआरे आप वखाया। जोती जोत जोत महान, नूर नुराना डगमगाया। शब्दी शब्द शब्द धुन्कान, अनहद नादी राग अल्हाया। मन्दिर अंदर सच मकान, साचा हट्ट इक्क खुल्हाया। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फोलाया। जुग चौकड़ी कर परवान, जुग जुग आपणा वेस वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर देवे दान, कलयुग हिस्सा आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क सुणाया। साची सिख्या एका सिख, शब्दी शब्द खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पाई भिख, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। बिन कलम दवातों लेख दिता लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा।

आपे वन्डया आपणा हिस, दूजा शरीक ना कोए रखाइंदा। आदि अन्त रखे आपणी साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल दस्से बेअन्त, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बणाए बणत, लोकमात वंड वंडाईआ। अन्त करे सब दा अन्त, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल पुरख समरथ, आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही फेरा पाइंदा। लेखा जाणे तत्त अठ्ठ, अठ्ठ तत्त सेव कमाइंदा। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, बण पाँधी पैंडा आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा घट घट, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। सुत दुलारा कहे श्री भगवान, आपणा भेव मोहे जणाईआ। सचखण्ड वसे तूं मकान, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, लख चुरासी वंड वंडाईआ। तेरा नाम सति निशान, रूप रेख ना कोए रखाईआ। कवण बिध प्रगट होवे विच जहान, मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गति मित तेरे हथ्थ रखाईआ। पुरख अबिनाशी कहे पुकार, कूक कूक सुणाया। तेरा मेरा इक्क विहार, बिवहारी खेल रचाया। जन भगतां देवां दरस दीदार, निरगुण नूर नूर धराया। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, मन्त्र ज्ञान इक्क जणाया। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क सन्तान, सति सतिवादी दए वखाईआ। सुरती मेला शब्दी काहन, गोपी काहन रूप वटाया। बिन पढ़यां देवे आप ज्ञान, साचा मन्त्र आप सुणाया। एथे ओथे दो जहानां वेखे आण, आप आपणा दरस कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाया। साचा खेल जुग जुग चार, चार चार वंड वंडाईआ। साचा खेल नौ नौ दुआर, दुआर दुआर वेख वखाईआ। साचा खेल नौ नौ धार, नव नौ आपणा फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग चले इक्क विहार, वेस अनेक अनेक वेस आप वटाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा रंग रंगाईआ। नव नौ चार तेरा रंग, हरि साचा सच जणाइंदा। गुर अवतारां आत्म सेज तेरा पलँघ, साची सेजा आप सुहाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क मृदंग, बण मर्दाना आप वजाइंदा। नंगी होण ना देवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। देवे वड्याई विच वरभण्ड, ब्रह्मण्डां तेरा माण रखाइंदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पड़दा आपे लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी झोली पाइंदा। चारे जुग तेरी झोली, सो पुरख निरँजण आपे पाईआ। तेरे कंध उठाए डोली, लोकमात फिराईआ। करे खेल हौली हौली, भेव किसे ना आईआ। अन्तिम सब दी खेले होली, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। चार जुग दए वंड, वंडणहार आप निरँकारा। लेखा जाणे विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खेल न्यारा। सेवा लाए सूरज चन्द, दिवस रैण करन निमस्कारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। अपर अपार खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फड़ाए पल्ला, जुग जुग गेड़ा आप भुवाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पार कराए कर कर हल्ला, पाँधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम संदेस नर नरेश एका घल्ला, सृष्ट सबाई आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द शब्द वड्याइंदा। साचे शब्द तेरी धार, जुग चौकड़ी आप चलाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, जीव जंत करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त खोल्ह किवाड़, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। साचे सन्तां दे दीदार, दरसी आपणा दरस कराईआ। साचे गुरमुख दए अधार, गुर गुर एका बूझ बुझाईआ। साचे गुरसिख करे पार, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। मुर्शद मुरीद देवे इक्क दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। गुर अवतार करन पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरी कुदरत तूं ही जाणे आप निरँकार, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। हउँ सेवक चाकर सेवादार, बण सेवक सेव कमाईआ। कोटन कोटि तेरे नाउँ कर उज्यार, लोकमात गीत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा खेल वखाए जग, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। शाह पातशाह सूरा सरबग, हुक्मी हुक्म आप फिराईआ। जुग चौकड़ी जायण लँघ, अन्त कन्त सर्ब कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। चार जुग भेव अपारा, भेदी भेद जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गायन वारा, लिख लिख जीव जंत समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर निउँ निउँ करे निमस्कारा, सीस जगदीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपारा, गुर शब्द दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द शब्द सलाहीआ। गुर शब्द गुर होवे बलवान, सो पुरख निरँजण आदि जणाया। नानक निरगुण लै के आवे दान, सरगुण जीव जंत वरताया। गोबिन्द वखाए इक्क निशान, सच निशाना इक्क उठाया। चार वरन देवे माण, ऊँच नीच राउ रंक गले लगाया। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, पुरख अकाल इष्ट वखाया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, रूप अनूप लए वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणा भेव चुकाया। आदि शब्द गुर उपज्या बलवान, हरि हरि आप उपाया। अन्तिम प्रगट होए विच जहान, गुर गुर आपणा रूप वखाया। नौ खण्ड पृथ्मी देवे इक्क ज्ञान, विष्न ब्रह्मा शिव लए पढ़ाया। आत्म परमात्म कर परवान, दर घर साचे लए मिलाया। नाता तोड़ कूड़ जहान, साची सिख्या

दए समझाया। एका मन्दिर इक्क मकान, एका हरि जू नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए समझाया। साचा खेल हरि समझाउणा, हरि हरि आपणी दया कमाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। शब्दी शब्द डंक वजाउणा, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। एका सतिगुर नज़री आउणा, ना मरे ना जाईआ। एका अक्खर आखर आप पढ़ाउणा, एका कलमा दए समझाईआ। एका नबी नज़री आउणा, एका रसूल असूल दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणा भेव चुकाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आए, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। शब्दी गुर वेस वटाए, दिस किसे ना आइंदा। निहकलंका नाउँ रखाए, दो जहानां फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी लहिणा झोली पाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाइंदा। शब्दी शब्द तेरा संग, सगला संग आप रखाईआ। कलयुग अन्तिम करे भंग, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। नार दुहागण वेखे रंड, सृष्ट सबाई फेरा पाईआ। घर घर तोड़े माण घमंड, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्ड, भेखी आपणा खेल जणाईआ। सति सतिवादी चाढ़े चन्द, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। प्रगट हो सूरा सरबंग, सूरबीर आपणा बल जणाईआ। गोबिन्द गीत सुहागी छन्द, जीव जंत करे पढ़ाईआ। चार वरन इक्क अनन्द, एका रस दए वखाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, पल्लू नाम गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका गुर अख्वाईआ। आदि अन्त एका गुर, गुर शब्दी नाउँ रखाइंदा। आदि अन्त एका सुर, एका ताल वजाइंदा। आदि अन्त एका घुड़, शाह अस्वारा आसण लाइंदा। आदि अन्त जाए बौहड़, जुग जुग वेस वटाइंदा। आदि अन्त रिहा दौड़, निरगुण सरगुण पन्ध मुकाइंदा। आदि अन्त लख चुरासी वेखे रीठा मिठ्ठा कौड़, घट घट आपणा रूप धराइंदा। आदि अन्त किसे हथ्थ ना आए ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत, आपणा आसण लाइंदा। आदि अन्त कोई चढ़ ना सके सच्चे पौड़, बिन नानक दरस कोए ना पाइंदा। आदि अन्त बुझा ना सके कोई औड़, बिन गोबिन्द अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। आदि अन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द इक्क वड्याइंदा। गुर शब्द इक्क इक्क बलवान, जुगा जुगन्तर वेस वटाइंदा। सति सतिवादी सच निशान, लोकमात आप झुलाइंदा। कलयुग अन्तिम चार वरन पावे इक्को आण, एका राह वखाइंदा। शाह सुल्तान राज राजान सर्ब मिट जाण, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। जीव जंत राउ रंक पुरख अकाल एका गाण, फतिह डंका इक्क वजाइंदा। सति सतिवादी सत्त रंग झुलाए निशान, सत्तां दीपां आप उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार करन ध्यान, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। पीर पैग़म्बर

करन सलाम, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। जो घल्लदा रिहा आप पैग़ाम, पीर पैग़म्बर मात पढ़ाइंदा। मुल्ला शेख़ मुसायक दस्सदा रिहा असलाम, इस्म आज़म आप जणाइंदा। मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला, हक़ हक़ीक़त जणाए सच कलाम, कलमा हक़ हक़ वखाइंदा। चौदां तबक वेखणहारा निज़ाम, शाह पातशाह आपणा रूप वटाइंदा। चार यारी जिस बरदे करे गुलाम, सेवक साची सेव समझाइंदा। ज़बराईल असराफ़ील मेकाईल देदां रिहा पैग़ाम, आयत शरायत आप सुणाइंदा। सो अमाम खेल करे महान, बेनक़ाब आपणा पड़दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त वसे एका घर, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। सतिनाम दा ठंडा पाणी, सतिगुर नानक रिहा पा। गुरसिख अन्तर पढ़े बाणी, आत्म इक्क लिव ला। दिवस रैण सुणे अकथ कहाणी, रसना जिह्वा बन्द करा। सतिगुर देवे पद निरबाणी, घर विच घर दए वखा। जोत जगे इक्क महानी, नूरो नूर नूर रुशना। राग सुणाए सच्चे कानी, अनहद नादी नाद वजा। नाता तोड़े पंज शैतानी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार गवा। तिस सतिगुर सच्चा आपणे चरन करे परवानी, साची सरन लए बहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिनाम दा सच्चा पाणी, गुरू ग्रन्थ रिहा बरसा। गुरू सिख पढ़े गुर गुर धार, गुर शब्दी बूझ बुझाईआ। जो पढ़ पढ़ रहे विसार, तिस राए धर्म दए सजाईआ। एथे ओथे होए खुआर, नानक गोबिन्द दए ना अन्त गवाहीआ। जो दोए दोए जोड़ करन सदा निमस्कार, इक्को ओट रखाईआ। सो सुणदे उतरे पार, जो बैठे ध्यान लगाईआ। नानक लाई इक्क गुलज़ार, गोबिन्द बूटा रिहा महकाईआ। पुरख अकाल सेवादार, बण माली सेव कमाईआ। जिस जन भुलया नानक निरँकार, तिस जन एथे ओथे कोए ना मिले थाईंआ। अमृत रस आत्म अन्तर, गुर शब्दी आप बरसाइंदा। पंज तत्त विकारा त्रैगुण बुझे लग्गी बसन्तर, सति सति कराइंदा। जो जन पढ़े सतिनाम मन्त्र, तिस जन दूजा फुरना फुर कदे ना जाइंदा। वेखे घर विच गगन गगनंतर, मंडल मण्डप फेरा पाइंदा। बाहरों वेखे पहने बस्त्र, अंदर निरगुण निराकार जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सति दा ठंडा पाणी, गुरमुख गुरमुख खेल महानी, गुर गुर आप कराइंदा। अमृत पीणा ठंडा रस, तिस गुरसिख गुर गुर आप जणाईआ। सतिगुर सरनाई जाणा ढट्ठ, माण मोह मिटाईआ। नाता तुट्टे तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा कोए ना पाईआ। काया मन्दिर अंदर साचा तीर्थ तट, सर सरोवर दए वखाईआ। सतिगुर नानक दो हथ्थां अमृत रिहा झट्ट, गुरमुख विरला पाईआ। मनमुख दूरो दूरो जांदे नट्ठ, अंदर वड़ दरस कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट फिरदे हट्टो हट्ट, हरि का नाम हथ्थ किसे ना आईआ। मणका मणका माला रहे रट, मन का मणका ना कोए भुवाईआ। दूई द्वैत ना मिले फट, एका रंग

ना कोए रंगाईआ। सतिगुर नानक जिस दे होया वस, सो जन दूजे दर ना मंगण जाईआ। निरगुण करे पूरी आस, सरगुण घर वज्जे वधाईआ। तिस गुरमुख कहो शाबाश, जिस गोबिन्द मिल्या सच्चा माहीआ। बिन गोबिन्द सृष्टी होई उदास, धीरज धीर ना कोए धराईआ। नेत्र रोवे पृथ्मी आकाश, विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाईआ। गुरसिखां बुझाए ना कोए प्यास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अमृत आपे सिंच, गोबिन्द बूटा हरा कराईआ। गोबिन्द बूटा ना जाए सुक्क, पुरख अकाल आप लगाया। घर घर विच सतिगुर पूरा गुर गोबिन्द गुर शब्दी पए उठ, जो जन आत्म अन्तर ध्यान लगाया। गुरसिख माया ममता हउमे हंगता जड़ देवे पुट्ट, सच सुच्च एका झोली पाया। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा अमृत जाम प्याला देवे घुट्ट, तृष्ना तृखा दए मिटाया। नानक घर अनमुल्ली लुट्ट, कलयुग जीव लुट्टण कोए ना जाया। पंच विकारे मिल मिल भाग गए निखुट, गुर का शब्द ना रिदे वसाया। सतिगुर पूरा कदे ना जाए रुठ, अन्त रुठड़े लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अमृत सच्चा बाटा, गुर गोबिन्द हथ्थ फड़ाया। गोबिन्द हथ्थ अमृत बाटा, चार वरनां रिहा प्याईआ। गुरसिख करना पूरा घाटा, वेला गया हथ्थ ना आईआ। अन्त पन्ध मुक्के वाटा, पंज तत्त काया संग ना जाईआ। जगत तमाशा खेल बाजीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। धन्न गुरसिख धन्न गुरमुख जिस सतिगुर नानक मिल्या कमलापाता, गुर गोबिन्द गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पुरख अकाल गोबिन्द बूटा आप लगाईआ।

७५६
११

सतारां सौ पैंसठ बिक्रमी अन्त नदेड़, गोबिन्द आपणा खेल कराइंदा। पंज तत्त काया खेल जगत निबेड़, जोती जोत डगमगाइंदा। आपणे हथ्थ रख के आपणा गेड़, भेव अभेद छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नूर विच मिलाइंदा। देह जोत पंज तत्त, अस्व घोड़ा शब्दी रूप वटाईआ। करे खेल खेल समरथ, हथ्थ आपणे रख वड्याईआ। गुरू ग्रन्थ गुर गाउणा जस, गुरसिखन इक्क वड्याईआ। दूसर किसे ना होणा वस, पंज तत्त गुरू ना कोए मनाईआ। एका ओट लैणी रख, पुरख अकाल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आपणे विच छुपाईआ। गोबिन्द सूरा कर प्याना, आपणा वेस वटाइंदा। सति सरूपी सति ज्ञाना, गुर शब्दी शब्द जणाइंदा। मेरा अंगीठा फोल ना वेखणा कोई निशाना, गुरसिखां सिख समझाइंदा। मेरा धाम सच टिकाणा, एथे ओथे दो जहान वखाइंदा। मेरा सिख मेरा निशाना, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। आपणी हथ्थीं बध्धा गाना, साचा सगन मनाइंदा। सारा बंस कीता

कुरबाना, मात पित पूत भेंट चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आपणा भेव सतिगुर सूरा, सूरबीर आप जणाईआ। दिवस रैण मास बरस होया पूरा, दूर दुराडा नेड़े आईआ। गुरमुख नाता तोड़ कूड़ो कूड़ा, आपणी बूझ बुझाईआ। मस्तक लाई चरन धूढ़ा, दुरमति मैल धुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा देवे गोबिन्द, गुर गुर आप जणाइंदा। पन्थ ख़ालसा मेटणी चिन्द, चिंता चिखा ना कोए रखाइंदा। इक्को मिल्या वाली हिन्द, गोबिन्द आपणा रूप धराइंदा। पन्थ ख़ालसा मेरी बिन्द, दूजा पूत ना कोई मैं बणाइंदा। अमृत दे के आया सागर सिन्ध, पंज प्यारे गंढ़ु वखाइंदा। गुरदुआर बैठ ना किसे करनी चुगली निन्द, द्वैत रूप ना कोए जणाइंदा। गुरू ग्रन्थ गुरदेव सर्ब बख़्शिंद, पत्तत पापी पार कराइंदा। लेखा मुके जीव इंड पिण्ड, ब्रह्मण्ड दर घर साचे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा आप खुल्हाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल अपार, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी शाह सिक्दार, धुर फ़रमाणा हुक्म चलाइंदा। भूपत भूप बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरगाही भेव ना आइंदा। शब्दी शब्द कर त्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड कर पसार, लोआं पुरीआं आपणा बन्धन पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, त्रैगुण माया कर शृंगार, पंचम तत्त तत्त प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग जुग खेल हरि करतारा, आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी कर पसारा, निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती डगमगाइंदा। शब्दी नाद नाद धुन्कारा, अनहद रागी राग सुणाइंदा। आत्म ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म वेख वखाइंदा। ईश जीव दे सहारा, जगदीस रंग चढ़ाइंदा। महल अटल उच्च मुनारा, काया बंक आप बणाइंदा। नौ दुआरे खोल्ह् किवाड़ा, पंज दस आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाइंदा। आपणी रचना पुरख अबिनाश, एका एक रचाईआ। लख चुरासी खेल तमाश, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। घट घट अंदर मन्दिर पावे रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, पवण पवणां विच रखाईआ। दीपक दीआ कर प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। पंज तत्त वेखे काया गढ़्, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। लेखा जाणे चेतन जड़्, भेव कोए ना पाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण वड़, आपणा रूप वटाइंदा। आपणा पल्लू आपे फड़, आपणा संग निभाइंदा। आत्म सेजा आपे चढ़, ब्रह्म आपणा पड़दा लाहइंदा। बजर कपाटी तोड़ गढ़्, बंक दुआरा आप

खुल्लाइंदा। बिन अक्खर विद्या आपे पढ़, आपणा नाउँ आप समझाइंदा। कर खेल श्री भगवन, भेव अभेद आप खुल्लाइंदा। सति सतिवादी सच निशान, गृह मन्दिर आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी खेल खिलाइंदा। लख चुरासी खेल अपारा, पारब्रह्म प्रभ आप कराईआ। आत्म परमात्म दे सहारा, एका ओट जणाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर वड्याईआ। एका दीप इक्क उज्यारा, एका नूर नूर रुशनाईआ। एका हट्ट इक्क वणजारा, एका वस्त रिहा वरताईआ। एका नाद शब्द धुन्कारा, एका आत्मक राग अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईश जीव करे कुड़माईआ। ईश जीव एका नाता, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। खेले खेल पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाइंदा। दरस दिखाए इक्क इकांता, अनुभव आपणा रूप वटाइंदा। आपे होए पिता माता, बालक आपणी गोद बहाइंदा। आपे देवणहारा साची दाता, वस्त अमोलक आपणा नाउँ झोली पाइंदा। आप सुणाए साची गाथा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेख वखाइंदा। लख चुरासी वेखण जोग, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण करे सति संजोग, हरि पुरख निरँजण खुशी मनाईआ। एकँकारा पढ़े सलोक, आदि निरँजण गीत ढोला सोहला साचा गाईआ। अबिनाशी करता निर्मल जगाए जोत, श्री भगवान करे रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखणहारा साचा कोट, घर एका कुण्डा लाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बैठा रहे अलोप, दिस किसे ना आईआ। अनडिठड़ी धार आपे जाणे आपणा सलोक, सूरबीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी आपणे मार्ग पाईआ। लख चुरासी मार्ग पा, हरि जू हरि हरि आपणा खेल कराइंदा । विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगा, साची सेवा इक्क जणाइंदा। गुर गुर शब्द शब्द प्रगटा, गुर गुर एका बूझ वखाइंदा। निरगुण आपणा तत्त प्रगटा, निराकार वंड वंडाइंदा। मन मति बुध दए टिका, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, चारों कुण्ट त्रैगुण पड़दा आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल पुरख करतारा, अनुभव आपणी धार चलाईआ। अजूनी रहित हो त्यारा, पुरख अकाल वेस वटाईआ। लख चुरासी कर पसारा, घट घट आपणी जोत जगाईआ। वसणहारा ठांडे दरबारा, हस्त कीट रिहा समाईआ। शब्दी शब्द गुर अवतारा, गुर गुर आपणा वेस वटाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए जणाईआ। सेवा लाए गुर अवतारा, हुक्मी हुक्म आप फिराईआ। तख्त निवासी एकँकारा, साचे तख्त बैठा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख अगम्म, अगोचर वड वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, जीवण जुगत ना कोए रखाईआ। ना कोई राग ना कोई

कन्न, धुंन नाद ना कोए शनवाईआ। ना कोई आसा मनसा दए मन, मति बुध ना कोए वड्याईआ। ना कोई तत्तव ना कोई तन, त्रैगुण बन्धन ना कोए पाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, ना कोई दीप करे रुशनाईआ। ना कोई घड़े ना कोई देवे भन्न, बण ठठयार ना कोए बणाईआ। ना कोई देवणहारा डंन, ना कोई देवणहार सजाईआ। आदि जुगादि श्री भगवान, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग लाया आदि, शब्दी शब्द शब्द वड्याआ। विष्न ब्रह्मा दिती दाद, साची वस्त आप वरताया। खेले खेल हरि ब्रह्मादि, ब्रह्मादिक रंग रंगाया। धुरदरगाही एका नाद, हरि रागी राग सुणाया। आपणे विच्चों आपा काढ, निरगुण सरगुण रूप वटाया। आपे देवणहारा दाद, अक्खर वक्खर आप पढ़ाया। आपे हर घट रिहा विस्माद, बिसमाद आपणा रूप वटाया। आपे रखे आपणी याद, विसर कदे ना जाया। आपे होए बोध अगाध, अगाध बोध भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाया। साचा मार्ग लाए जग, लोकमात वड वड्याईआ। करे खेल सूरा सरबग, बेअन्त हरि रघुराईआ। तख्त निवासी साचे धाम बैठा सच्च, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। आपणा पड़दा आपे कज्ज, लख चुरासी मुख छुपाईआ। दो जहानां रिहा भज्ज, पाँधी आपणा पन्ध मुकाईआ। नाम जैकारा बोले गज्ज, निरगुण सरगुण दए सुणाईआ। आपे जाणे साची हद्द, पार किनारा ना कोए रखाईआ। आपे होए आपे नालों अड्ड, आपणी वंडण आप वंडाईआ। आपे काया चोले वसे डूँग्घी खण्ड, अन्ध अन्धेरे डेरा लाईआ। आपे आत्म परमात्म बणाए साची यद, विश्व यद आप रखाईआ। आपे अमृत जाम प्याए मदि, सति सरूर इक्क रखाईआ। आपे घर विच बह बह करे लड, आत्म परमात्म खुशी मनाईआ। आपे सच निशाना देवे गड्ड, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, निरगुण निराकार आप कराइंदा। विष्नूं विश्व दए हुलारा, सांगोपांग इक्क रखाइंदा। ब्रह्मा करे ब्रह्म पसारा, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। शंकर देवे इक्क अखाड़ा, त्रिसूल एका हथ्थ रखाइंदा। बाशक तशका कर शृंगारा, कंठ माला गल लटकाइंदा। त्रैगुण माया रच अखाड़ा, पंचम आपणा नाच नचाइंदा। आपणी इच्छया कर पसारा, ब्रह्मा सुत आप प्रगटाइंदा। सनक सनंदन सन्त कुमारा, चारे मुख मुख सलाहइंदा। पिछला रूप लोकमात विच अवतारा, आप आप परगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वखाइंदा। सन्त कुमारा कर कर पार, बराह रूप आप वटाईआ। यगै पुरष हो त्यार, हाव ग़रीव करे रुशनाईआ। नर नरैण खेल अपार, लोकमात मात वड्याईआ। दत्ता त्रै दर पसार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। कपल मुल खोल्ह किवाड़, इक्क ज्ञान समझाईआ। रिखप

देव दे निशान, सच निशाना इक्क झुलाईआ। पिरथू देवे साचा दान, अन्न दाणा झोली पाईआ। मत्तस बख्शे इक्क ध्यान, जल जल आपणा रूप धराईआ। कछप करे आप प्रधान, मिन्दिरा एका सीस टिकाईआ । धनंतर वैद कर परवान, साचा औखध दए समझाईआ। मोहणी रूप कर भगवान, सब दा माण गंवाईआ। बल बावण वेखे आण, बाल बिरध रूप ना कोए जणाईआ। हँसा खेल करे महान, ब्रह्मे सुत करे पढ़ाईआ। प्रहिलाद लज्जया रखे आण, नर सिँघ आपणा वेस वटाईआ। धू्र बालक देवे ज्ञान बिन विद्या करे पढ़ाईआ। गज देवे इक्को दान, एका खण्डा नाम चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अनेक रूप वटाईआ। रूप अनेक श्री भगवान, जुग करता आप वटाइंदा। आपे वेखे मार ध्यान, बल आपणा आप जणाइंदा। आपे परस राम देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपे रूप धरे राम भगवान, दसरथ बेटा जगत अख्वाइंदा। आपे घट घट करे पहचान, आपे दिस किसे ना आइंदा। आपे ग़रीब निमाणयां देवे माण, फड़ बांहों गले लगाइंदा। आपे दुष्ट हँकारी देवे हाण, गढ़ हँकार तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणे वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता उतरया पार, द्वापर हरि जू वेख वखाईआ। वेद व्यासा कर त्यार, आपणी विद्या आप पढ़ाईआ। पुराण अठारां कर त्यार, लख चार सतारां हज़ार सलोक गणाईआ। ऊँची कूक कूक कहे पुकार, एका नाद अल्हाईआ। एका रूप निराहार, आदि निरँजण वड वड्याईआ। चतुर्भुज बेमिसाल, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, युग युग आपणी खेल कराईआ। खेल कराए हर मेहरवान, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। धारे रूप कृष्ना काहन, नंद जसोदा दए वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, बिदर सुदामा गले लगाईआ। अर्जन एका दे ज्ञान, अठ्ठ दस दस अठ्ठ अठारां अध्याए करे पढ़ाईआ। त्रिलोकी नाथ खेल महान, सच सलोक इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलयुग लोकमात प्रगटाया। बोधी शब्दी इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म इक्क दृढ़ाया। करे खेल बेपहचान, दिस किसे ना आया। पंज तत्त काया देवे इक्क पैग़ाम, पैग़म्बर आपणा रूप वखाया। ईसा मूसा दे कलाम, कलमा अमाम आप पढ़ाया। मुकामे हक़ बैठ सच मकान, साचा काअबा दए जणाया। खेले खेल वाली दो जहान, दोए दोए आपणा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह चलाया। जुग जुग राह चलाए हरि हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। लोकमात खोल्हे दर दर, दर दरवाज़ा आप जणाईआ। लख चुरासी जीव फड़ फड़, जुग जुग आपणे मार्ग लाईआ। सरगुण अंदर निरगुण वड़ वड़, करे सच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वरताईआ।

वरताए खेल नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। इक्क मुहम्मद कर परवान, सच हदीस इक्क सुणाइंदा। एका कलमा इलाही कलाम, काया कुरा आप समझाइंदा। एका देवे सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, उम्मत उम्मती खेल खिलाइंदा। उम्मत उम्मती खेल खिलाया, निरगुण सरगुण वड वड्याईआ। आपणा भेव ना किसे जणाया, बेअन्त कहे खुदाईआ। वेस अवल्लड़ा रूप धराया, रंग रेख ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग निरगुण धार, निराकार निरँकार आप लगाइंदा। पंज तत्त चोली कर प्यार, नानक आपणा रूप वटाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे दे आधार, जोती जोत जोत जगाइंदा। काया कोट कर त्यार, साचा मन्दिर इक्क सुहाइंदा। अंदर वड़ करे गुफ़तार, गुफ़त शुनीद खेल कराइंदा। आप वजाए सच सतार, नाड़ बहत्तर रबाब बणाइंदा। एका बोल एकँकार, एकँकारा गीत अल्ल़ाइंदा। सतिनाम सच भण्डार, लोकमात मात वरताइंदा। जीवां जंतां दए आधार, साधां सन्तां आप समझाइंदा। ऊँचां नीचां भेव न्यार, राउ रंकां एका रंग वखाइंदा। बंक दुआरा खोल्ह भण्डार, सति सतिवादी साचा हट्ट खुल्ल़ाइंदा। आत्म परमात्म इक्क आधार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। नाता तोड़ गढ़ हँकार, माया ममता मोह चुकाइंदा। मन मनसा कर खुआर, बुरज हँकारी आपे ढाइंदा। देवे मति गुर विचार, गुर गुर बूझ बुझाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। नानक चलाए इक्को राह, नाम सति सति पढ़ाईआ। गोबिन्द पल्लू दए फड़ा, एका गंढु दवाईआ। दोहां विचोला बेपरवाह, पुरख अकाल सेव कमाईआ। लेखा जाणे थाउँ थाँ, भुल्ल कदे ना जाईआ। लख चुरासी जीव जंत वरन बरन जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज खाणी बाणी पिता मां, गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त आपणी गोद बहाईआ। आदि जुगादि सच्चा नाँ, लोकमात मात करे रुशनाईआ। जे कोई कहे प्रभू भुल्ल के रस्ता रिहा वखा, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आपणा भेव कोई जाणे ना, माया बैठी पड़दा पाईआ। नानक गोबिन्द वखाए एका राह, साचा मार्ग सृष्ट सबाई दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि करतारा, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। दुखी जीव ना दिसे विच संसारा, दुखियां दुःख आप वंडाइंदा। हरि का भेव ना पाए मूर्ख मुग्ध गंवारा, माया पड़दा ना कोए उठाइंदा। जुगा जुगन्तर साची कारा, करता पुरख आप कराइंदा । सेवक बण बण कटे आप वगारां, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे राह चलाइंदा । गुरसिख सच्चा ना जाए भुल्ल, गुर सतिगुर करी पढ़ाईआ। जो जन उपज्या नानक कुल, तिस नानक दए वड्याईआ। गुर गोबिन्द पाए मुल, जो गुर गोबिन्द ओट

तकाईआ। सतिगुर भण्डारा सदा अतुल, देंदिआ तोट ना राईआ। हरि दुआरा आदि जुगादि रिहा खुल्ह, ना कोई सके बन्द कराईआ। जो गुर के कंडे जाए तुल, दूजे दर ना कीमत पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आदि जुगादि एका हरि का नाउँ वखाईआ। साचा मार्ग विच संसार, आदि जुगादी हरि चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग उतरे पार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल वरन गोत ज़ात पात दीन मज़्हब वसे बाहर, शरअ शरीअत बन्द ना कोए कराइंदा। दो जहानां श्री भगवान घट घट वासी पुरख अबिनाशी सर्ब जीआं दा सांझा यार, नव नौ आपणा राह वखाइंदा। जिस जन आत्म बन्द किवाड़ा खोल्हे किवाड़, साचा दर आप सुहाइंदा। दुखीए दुःख ना लग्गे वा तत्ती हाढ़, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। होए प्रकाश नाड़ नाड़, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सतिगुर पूरा सदा सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँग्घी कंदर दया कमाइंदा। त्रैगुण माया तत्त ना सके साड़, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग आपणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। मार्ग सच्चा एकँकारा, आदि जुगादि लगाईआ। मेटणहारा झूठ पसारा, झूठी करे ना कदे पढ़ाईआ। एका मन्दिर एका गुरुदुआरा, एका शिवदुआला मठ घर घर दए समझाईआ। एका नाद इक्क धुन्कारा, एका आत्मक राग सुणाईआ। एका बाती कर उज्यारा, घर घर विच करे रुशनाईआ। एका मेटे गढ़ हँकारा, काम क्रोध मोह लोभ हँकार ना होए हल्काईआ। एका आसा तृष्ना करे खुआरा, एका मन दी मनसा देवे मिटाईआ। एका ब्रह्म करे उज्यारा, एका पारब्रह्म समाईआ। एका आत्म सेजा हो त्यारा, बैठा सेज सुहाईआ। एका गाए मंगलाचारा, मिल मिल सखीआं गीत अलाईआ। गुरमुख बूझ बूझणहारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। गुरसिख अंदर गुर गुर धारा, गुर शब्दी शब्द रिहा सुणाईआ। बाहरों दिसे पंज तत्त अकारा, निरगुण अंदर आपणा खेल वरताईआ। एका नाम इक्क जैकारा, जै जैकार इक्क सुणाईआ। साचा मार्ग अपर अपारा, अपरम्पर आपणा आप लगाईआ। दुखियां दुःख दुःख जिस नवारा, दुःख विच कदे ना पाईआ। साचा सुख सतिगुर चरन दुआरा, दूजी ओट ना कोए सरनाईआ। सांतक सति सति वरते वरतारा, मन मनसा मन ही माहे खपाईआ। दहि दिशा उठ उठ ना करे विचारा, चार कुण्ट ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका एक लगाईआ। साचा मार्ग लग्गे जहान, दो जहानां वाली आप लगाइंदा। चौदां लोक वेखे मार ध्यान, चौदां तबक फोल फोलाइंदा। चौदां विद्या वेख नादान, नाम निधान इक्क प्रगटाइंदा। भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान, साचे सन्तां पड़दा लाहइंदा। गुरमुखां एका राग सुणाए कान, अनादी आपणा नाद वजाइंदा। गुरसिख आपणे दर करे परवान, सति परवाना नाम फड़ाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर गुरसिख विच समाइंदा। गुरसिख अंदर गुर गुर रंग, हरि सतिगुर आप चढ़ाईआ। गुरसिख अंदर सेज पलँघ, हरि सतिगुर आप सुहाईआ। गुरसिख अंदर नाम मृदंग, हरि सतिगुर आप वजाईआ। गुरसिख अंदर कोटन कोटि सूरज चन्द, बैठे मुख शरमाईआ। गुरसिख अंदर खेल ब्रह्मण्ड, हरि ब्रह्मादी आप जणाईआ। गुरसिख नाता तुट्टे नार रंड, हरि कन्त सुहाग इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख अंदर सतिगुर रिहा समाईआ । गुरसिख अंदर सतिगुर वसे पास, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। किस दुआरे करे अरदास, अरदास सुणन वाला घर घर घर फेरी पाइंदा । वेखे विगसे पुरख अबिनाश, पुरख पुरखोतम रूप वटाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला कदे ना होए विनास, सृष्ट सबाई विनासी रूप जणाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर देवे साचा वर, गुरसिख तेरे स्वास स्वास समाइंदा। स्वास स्वास गुर गुर मेला, चेला रूप नज़र ना आईआ। चेला गुर सज्जण सुहेला, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त श्री भगवन्त आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए वखाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलयुग अन्तिम खेला, भेव किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्ची अरदास गुरसिख तेरी सदा सदा लेखे लाईआ। गुरसिख सच्चा करे सच्ची अरदास, सतिगुर पूरा लेखे पाइंदा। कीती अरदास होए ना नास, अटल अटल्ल आप रखाइंदा। अंदर वड़ वड़ करे प्रकाश, आपणी बूझ बुझाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा इक्को घर रखीए वास, गुरसिख तेरा घर मोहे भाइंदा। तेरे मंडल तेरी रास, तेरी सुरती मेरा शब्द गोपी काहन खेल खिलाइंदा। तेरी पूरी पूरी आस, मेरा तेरा इक्क विश्वाश, एका दर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपणा पन्थ आपणा मग आप चलाइंदा। साचा मग चलाए बेपरवाह, जुगा जुगन्तर वड वड्याईआ। जे कोई जीव कहे चन्गा ना, करते घट किछ ना जाईआ। कलयुग लेखा देणा मुका, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग धरत धवल दी गोदी देणा बहा, लोकमात वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथमी एका नाउँ लैणा गा, गोबिन्द ढोला सच्चे माहीआ। चार वरनां एका मन्दिर देणा बहा, गुर दुआरा इक्क वखाईआ। बरन अठारां नाता देणा तुड़ा, राउ रंक होए सहाईआ। गोबिन्द अरदासा ना सके कोई भुला, सो भुलया जिस गोबिन्द नज़र ना आईआ। रसना जिह्वा सारे रहे गा, निज नेत्र दरस कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया ना कटया फाह, मनसा मन ना कोए मिटाईआ। काया मन्दिर अंदर ना ल्या मना, घर विच घर ना फेरा पाईआ। आत्म सुत्ता ना ल्या जगा, परमात्म वेखे ना चाँईं चाँईंआ। साची सेज ना ल्या बहा, कन्त कन्तूहला सच्चा माहीआ। अंगीकार ना ल्या करा, पंज तत्त काया कम्म किसे ना आईआ। निरगुण

७६३
११

चन्द ना ल्या चढ़ा, जूठ झूठ अन्धेर ना बाहर कढ्ढाईआ। पंज विकारा ना ल्या ढाह, आपणा बल वधाईआ। बिन सतिगुर दरस झूठी काया अन्त होए सुआह, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक उडाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा निरगुण दाता पुरख बिधाता पकड़े सब दी बांह, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हँस बणाए फड़ फड़ काँ, रहिमत रहिमान आप कमाईआ। जिस ने खाधी सूर गां, तिस नूं देवे अन्त सज़ाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को नाँ, भिन्न भिन्न रहे सुणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को पिता मां, आपणी गोद बहाईआ। नानक निरगुण सरगुण गया समझा, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द पल्लू गया फड़ा, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। आदि अन्त होए सहा, भगत भगवन्त साचे सन्त गुरमुख गुरसिख आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अरदासा एका एक रखाईआ। सच अरदासा सतिगुर चरन ओट, मिले वड वड्याईआ। मन वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। अंदर वड़ के वेखे काया कोट, सतिगुर बैठा डेरा लाईआ। निर्मल जगा के बैठा जोत, गुरसिख तेरा राह तकाईआ। माया अंदर आलणयों डिगा बोट, मन धक्का रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अरदास गुरसिख सदा घाल पाईआ। साची अरदास पाए घाल, कीती घाल भुल्ल ना जाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। शब्दी गुर बण दलाल, जगत विचोला फेरा पाईआ। नाता तोड़ काल महांकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचा मार्ग दस्से राह सुखाल, सतिजुग साची करे पढ़ाईआ। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। हरि जू बैठा दीन दयाल, दीनां नाथ दया कमाईआ। सन्त सुहेले आपे भाल, आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां गुरमुखां हरिभगतां साचे सन्तां साची अरदास सदा सदा पढ़ाईआ। गुरमुख पढ़न साची अरदास, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। नाता तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर पन्ध मुकाईआ। चरनां हेठ रवि ससि करे प्रकाश, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। गुरमुख वसे सतिगुर पास, सतिगुर गुरमुख विच समाईआ। सो गुरमुख होया दास, जिस दासी बण के हरि जू सेव कमाईआ। एथे ओथे दो जहान अंदर बाहर गुपत ज़ाहर निरगुण नूर जोत प्रकाश, प्रकाशमान सर्ब लोकाईआ। धन्न गुरसिख जो सतिगुर अग्गे करे अरदास, दोए दोए जोड़ आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तिस गुरसिख गुर संगत सदा बलि बलि जाईआ। गुरसिख तेरा उच्च महल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। गुरसिख तेरा सुच्चा पल्ला, दुरमति मैल ना कोए वखाइंदा। गुरसिख तेरा इक्को हल्ला, गोबिन्द आपणी गोद बहाइंदा। गुरसिख तेरा इक्को भल्ला, पंज विकार डेरा ढाहइंदा। गुरसिख तेरा सतिगुर तेरे अग्गे खल्ला, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा।

७६४
११

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि गुरसिखां आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरमुख तेरा उच्च मुनारा, सो पुरख निरँजण आप बणाया। तेरा मित्र एकँकारा, दूजा साक ना कोए रखाया। तेरा नाद अनहद धुन्कारा, दूजा साज ना कोए वजाया। तेरा नूर जोत उज्यारा, दूजा दीप ना कोए जगाया। तेरा इष्ट तेरा गुरुदुआरा, पुरख अकाल इक्क अख्वाया। एथे ओथे दए सहारा, दो जहानां पार कराया। सचखण्ड बहाए ठांडे दरबारा, चरन कँवल दए सरनाया। जोती जोत जोत हुलारा, जोती जोत लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आपणे रंग रंगाया। धन्न वड्याई साचे सन्त, महिमा गणत गणी ना जाईआ। तूं नार सुहागण तेरा इक्को कन्त, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। तेरी काया चोली चढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। तेरा मेला आदि अन्त, जगत विछोड़ा दए मुकाईआ। जिस बणाई तेरी बणत, अन्त आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त सदा समाईआ। हरिभगत तेरी वड्याई वड, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। लख चुरासी नालों करे अड्ड, आपणा भेव खुल्हाइंदा। लेखे लाए पंज तत्त काया मास नाड़ी रत्त हड्ड, तत्तव तत्त भेव चुकाइंदा। आप कराए पार हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे सद्द, आपणा दरस कराइंदा। कोटन कोटी रहे लभ्भ, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका घर वखाइंदा। भगत भगवन्त सन्त कन्त, घर साचे सोभा पाईआ। गुरमुख मेला आदि अन्त, गुरसिख ना होए जुदाईआ। निरगुण सरगुण मणीआ मंत, मन्त्र नाम करे पढ़ाईआ। मिले वड्याई जीव जंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति विच समाईआ। सति सति हरि करे सांत, सांतक आपणी दया कमाइंदा। भरम भुलेखा कढ्ढ भरांत, भाण्डा भउ भनाइंदा। अन्तर मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ाइंदा। नाम अगम्मी सुणा गाथ, आपणा साथ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सति कराइंदा। गुरमुख साचा होए अतीत, त्रैगुण अतीता आप कराईआ। कर किरपा अमृत नाम देवे ठांडा सीत, भर प्याला जाम प्याईआ। पत्तत उधारन पत्तत पापी करे पुनीत, परम पुरख सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख एका रंग रंगाईआ। गुरमुख रंगे रंग अनडिठ, अनडिठड़े धाम आप रंगाइंदा। घर घर सुत्ता दे कर पिठ, आपणी करवट ना बदलाइंदा। किरपा करे सतिगुर जिस उपर सिख, तिस सिख आपणी सिख्या सच समझाइंदा। बिन कलम दवातों देवे लेख लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। जिन नानक गोबिन्द दिती नाम भिख, तिस मन निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। मेरी चतुराई चले ना किछ, जिध्धर वेखां अंदर बैठा गोबिन्द नज़री आइंदा। मैं अंदर आवां बण के ढीठ, दोए जोड़ वास्ता

पाइंदा। मेरी लग्ग जाए सतिगुर तेरे नाल प्रीत, दूजी ओट ना कोए रखाइंदा। मेरा काअबा मन्दिर तूं मसीत, शिवदुआला मठ गुरुदुआरा तूं ही नज़री आइंदा। मैं हारया तूं गया जीत, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस गुरमुख वखाए आपणा घर, सो गुरमुख दूजे दर ना मंगण जाइंदा। गुरसिख ना मंगे दूजे दर, नानक निरगुण करी पढ़ाईआ। गुरसिख ना रखे कोई डर, गुर गोबिन्द खण्डा हथ्थ फड़ाईआ। गुरसिख आपणे अंदर आपे वेखे वड़, गुर का शब्द कमाईआ। सतिगुर पूरा अग्गों दरसन देवे खड़, स्वछ सरूपी रूप वटाईआ। सुखमन टेढी बंकों बाहर कढ्ढे बांह फड़, ईड़ा पिंगल ना कोए अटकाईआ। अन्ध अन्धेरा जाए दड़, पंच विकारा मुख छुपाईआ। मन हँकारी चरन लए फड़, आपणी भुल्ले सर्ब चतुराईआ। सतिगुर पूरा दया देवे कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। घर प्रकाश इक्को कर, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अनहद नाद वज्जे धड़ा धड़, ताल तलवाड़ा इक्क सुणाईआ। बजर कपाटी तुट्टे गढ़, पड़दा रहिण कोए ना पाईआ। आत्म सेजा मिले वर, घर सच्चा सच्चा माहीआ। गुरसिख गुर इक्क दुआरे बहण रल, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर भगत सन्त गुरमुख गुरसिख देवे देवणहार माण वड्याईआ। शब्द गोबिन्द शब्द घोड़ा, शब्दी शब्द हरि दौड़ाईआ। शब्दी शब्द साचा जोड़ा, दो जहानां फेरा पाईआ। साचे गुरमुखां अंदर वज्जे पौड़ा, साढे तिन्न हथ्थ काया धरत रिहा हिलाईआ। जिस अन्तर मन वासना रूप धर के बैठी कौड़ा, तिस कान सुणन ना पाईआ। जिस जन जन्म जन्म दी लग्गी औड़ा, तिस जन आपणा दरस दिखाईआ। अग्गे समां रहि गया थोड़ा, लख चुरासी आपणा भेव दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घोड़े दए सुणाईआ। साचा घोड़ा मारे पौड़, पौड़ा दो जहान लगाया। साचे भगतां रिहा बौहड़, बौहड़ बौहड़ी करे सर्ब लोकाया। पहलों वेखो आपणे अंदर तक्क के गौर, गोबिन्द नज़र किसे ना आया। गोबिन्द घोड़ा अठ्ठ पहर पावे शोर, प्रेम दाणा मंग मंगाया। सतिगुर पूरा आपणे हथ्थ विच फड़ के बैठा डोर, बिन पूरन सिखां नज़र किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी घोड़ा इक्क रखाया। शब्दी घोड़ा वड्डा बलवान, बलधारी इक्क रखाइंदा। गोबिन्द सूरबीर नौजवान, शाह पातशाह आसण लाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सोलां कलीआं इक्क निशान, कन्नी कन्नी वंड वंडाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घोड़ा इक्क जणाइंदा। साचा घोड़ा इक्क अगम्म, अगम्मड़ी चाल रखाइंदा। चार पाउँ ना कोई चम्म, गरदन कन्न ना कोए रखाइंदा। निरगुण खेल श्री भगवन, गोबिन्द जोती जोत वखाइंदा। चारों कुण्ट वेखणहारा

वड मेहरवान, मेहर आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा पौड़ सुणन वाले साचे कन्न बणाइंदा। बिन किरपा ना झुके सीस, कोटन सीस बैठे धड़ उठाईआ। बिन कर्मा ना मिले जगदीस, जीव चले ना कोए चतुराईआ। करे खेल बीस इकीस, एका हर घट नज़री आईआ। छत्तर झुल्ले साचे सीस, शाह पातशाह शहिनशाह वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दा लेख तिस आपे लए मिलाईआ। बुरा कर्म जिस जन मिटोणा, पहलों लए सरन सरनाईआ। दूजे सतिगुर शब्द धिआउणा, माण मोह चुकाईआ। तीजे मस्तक धूढ़ लगाउणा, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। चौथे दर दर दरवेश अख्वाउणा, दर्दी दु:ख वंडाईआ। पंचम नाता मोह तुड़ाउणा, छेवें छप्पर मोह तजाईआ। सत्तवें सति सतिवादी ओट रखाउणा, अठ्ठां तत्तां भेंट कराईआ। नौ दुआरे पन्ध मुकाउणा, दसवें बूझ बुझाईआ। सतिगुर साचे फिर दरसन पाउणा, निरगुण निराकार एका नज़री आईआ। जिस नूं हरि जू आप मनाउणा, राती सुत्तयां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ तारू तारू सिँघ एका बूझ बुझाईआ।

★ पहली चेत २०१६ बिक्रमी हरिभगत दुआर दरबार विच जेठूवाल ★

सचखण्ड निवासी सच दरबार, सति सतिवादी आप लगाइंदा। निरगुण खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाइंदा। एकँकारा खोल्ह किवाड़, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता हो त्यार, आपणा बल आप धराइंदा। श्री भगवान सच निशान, दरगाह साची आप झुलाइंदा। पारब्रह्म हो निगहबान, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। आपणी इच्छया कर परवान, साची भिच्छया आप वरताइंदा। सति सतिवादी सति मकान, बेनिशान आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआर गुण निधान, गुण आपणे रंग रंगाइंदा। तख्त निवासी बण बलवान, साचा तख्त आप सुहाइंदा। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह नाउँ रखाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्मरान, सति फ़रमाणा आप अलाइंदा। करे खेल श्री भगवान, आपणी धारा आप चलाइंदा। दर दरवेश बण दरबान, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। भेव खुल्हाए हरि निंरकारा, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। आदि आदि कर पसारा, पुरख पुरख वेस वटाईआ। महल महल अटल मुनारा, सचखण्ड दुआर समझाईआ। घर विच घर कर त्यारा, थिर घर देवे माण वड्याईआ। नार कन्त बण निरँकारा, अचरज खेल रचाईआ। साची सेजा

बैठ भतारा, आप आपणे अंग लाईआ। जननी जन बण अगम्म अपारा, दाई दाया सेव कमाईआ। निरगुण निरगुण कर पसारा, शब्दी शब्द शब्द प्रगटाईआ। करे खेल खेलणहारा, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा भेव रखे हथ्थ, आदि पुरख बेपरवाहया। आपणे गृह हो प्रगट, आप आपणा रूप धराया। आपणे मन्दिर बैठ पुरख समरथ, आपणा बल आप रखाया। आपणी महिमा गाए अकथ, भेव अभेद आप जणाया। आपणा चलाए साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाया। आपणा पड़दा आपे लाह, पुरख अकाल खेल कराइंदा। अजूनी रहित बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। सति सतिवादी देवे सच सलाह, मार्ग पन्ध आप रखाइंदा। नाउँ निरँकार आप प्रगटा, इक्क इकल्ला आपे गाइंदा। थान थनंतर आप सुहा, दरगाह साची आसण लाइंदा। आपणी बणतर आप बणा, तख्त निवासी दया कमाइंदा। आपणी इच्छया आप समझा, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा घाड़न आप घड़ा, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। आपणा गढ़ आप बणा, निराकार आपे आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साची खेल करनी कर, करता पुरख आप कराईआ। साचे तख्त बहे चढ़, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप प्रगटाईआ। धुर फ़रमाणा आपे जाण, आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड दुआरा कर परवान, थिर घर आपणा आप सुहाइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। तख्त निवासी हो मेहरबान, सीस जगदीस ताज टिकाइंदा। एका रंग खेल महान, बेरंग नज़र ना कोए वखाइंदा। मुकामे हक़ हो प्रधान, बेऐब वेस वटाइंदा। परवरदिगार वड मेहरबान, महिबान बीदो आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव जाणी जाण, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण कर परवान, सच संदेसा इक्क समझाईआ। एकँकारा इक्क ध्यान, एका एक दए समझाईआ। आदि निरँजण दीप महान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता वड मेहरवान, मेहर मेहर मेहर आपणी आप कराईआ। श्री भगवान देवे दान, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। पारब्रह्म वेखे मार ध्यान, आप आपणा पड़दा लाहीआ। निरगुण खेल करे महान, बेअन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाईआ। साचा राह लाए भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड वसणहारा सच मकान, थिर घर आपणा रूप प्रगटाइंदा। शब्दी शब्द शब्द बलवान, दर घर साचे आप बहाइंदा। नाम निधाना इक्क फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। दीपक दीआ

जोत महान, जोती जाता आप जगाइंदा। अनभउ प्रकाश खेल महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क रखाइंदा। साची सेवा शब्द सुत, सति सतिवादी आप जणाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाई साची रुत्त, थिर घर फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। आपणे मन्दिर आपे उठ, निरगुण आपणा बल धराईआ। साहिब सुल्तान हरि जू तुठ्ठ, आपणी दया आप कमाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूर नूर नूर रुशनाईआ। वसणहारा साचे कोट, बंक दुआर खुशी मनाईआ। आपे रखे आपणी ओट, दूजा भय ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपे लाहीआ। आपणा पड़दा लाहे हरि निरँकार, एकँकारा नाउँ धराइंदा। एका नाम मंत जैकार, जै जैकार अल्लाइंदा। आपणा नूर ज़हूर करे खेल अपार, रूप रंग रेख ना कोए बणाइंदा। महल अटल उच्च मुनार, बिन चार दीवार सोभा पाइंदा। साचा तख्त कर त्यार, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। बाढी बण आप करतार, साची घाड़न घड़न घड़ाइंदा। सीस जगदीस पहन दस्तार, अपरम्पर आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप रखाइंदा। आपणा बल आपे रख, हरि हरि खेल कराइंदा। सचखण्ड दुआरे हो प्रतख, अनभुव प्रकाश कराइंदा। थिर घर दुआरे हो हो वक्ख, शब्दी धार चलाइंदा। आदि जुगादी अलखना अलख, एका अलख जगाइंदा। साचे मन्दिर आपे वस, निरगुण सोभा पाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, सुत दुलारे हरि समझाइंदा। चरन कँवल धूढ़ साचा रस, रस रसीआ आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या पुरख अबिनाश, हरि अबिनाशी आप जणाईआ। सुत दुलारे रहिणा दास, दासन दास खेल वखाईआ। मेरा नूर तेरा प्रकाश, तेरा प्रकाश वड वड्याईआ। मेरी वस्त तेरी रास, तेरी रास सोभा पाईआ। मेरा खेल तेरा तमाश, तेरा तमाशा साची रास रचाईआ। आदि जुगादि वसणा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए समझाईआ। साचे सुत जाणा जाग, हरि जागरत आप जगाइंदा। तेरा मेरा इक्क वैराग, सचखण्ड निवासी थिर घर दुआरे आप सुणाइंदा। तेरा मेरा इक्क सुहाग, नारी कन्त रूप वटाइंदा। तेरा मेरा इक्क राग, हरि रागी राग अल्लाइंदा। तेरा मेरा इक्क काज, काज करता आप कराइंदा। तेरा मेरा इक्क साज, साजनहारा आप वजाइंदा। तेरा मेरा इक्क ताज, ताज सीस जगदीस सुहाइंदा। तेरा मेरा इक्क जहाज़, बण जहाज़ी आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत कर ध्यान, नर नरायण आप जणाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाण, धुर दा बाण लगाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान,

एका घर दए वसाईआ। एका नाम इक्क निशान, एका दए झुलाईआ। एका खेल करे भगवान, एका शब्दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप समझाईआ। राह साचा आप समझाए भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। निरगुण बणाई निरगुण बणत, निराकार वेस वटाइंदा। निरगुण नार निरगुण कन्त, निरगुण सेज हंढाइंदा। निरगुण महिमा बेअन्त, अगणत लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। निरगुण आदि निरगुण अन्त, निरगुण आपणी खेल खिलाइंदा। निरगुण नाम निरगुण मंत, निरगुण रागी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या सच्ची सिख, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। तेरा लेख देवां लिख, लेखा लिखा बिन कलम शाहीआ। एका देवां साची भिख, भिखक झोली एका भराईआ। आदि जुगादि बिन नेत्र आवां दिस, जोती जोत जोत रुशनाईआ। तेरा वंडां साचा हिस, आपणा भाग तेरे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तेरे हथ्थ रखां सच्चा भाग, हरि जू हरि हरि वंड वंडाइंदा। तेरे मन्दिर इक्क चराग़, बिन तेल बाती आप जगाइंदा। तेरे अंदर इक्क वैराग, बण वैरागी आप प्रगटाइंदा। तेरे अन्तर एका जाग, बिन नेत्र आप खुल्हाइंदा। तेरे अंदर एका राज, इक्क रईयत राज कमाइंदा। तेरे अंदर इक्क समाज, निरगुण आपणा रूप वखाइंदा। तेरे अन्तर इक्क काज़, करता पुरख आप रखाइंदा। तेरे अन्तर इक्क अवाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त देवे दात, हरि दानी आप वरताईआ। चरन कँवल साचा नात, निरगुण निरगुण लए समझाईआ। आदि अन्त रहे इकांत, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। थिर घर वेखे मार झात, बन्द ताकी आप खुल्हाईआ। पिता पूत सज्जण साक, बन्धन बंधप इक्क रखाईआ। सच महल्ला साचा घाट, सच दुआरा दए समझाईआ। निरगुण नूर जोत लिलाट, एका नूर करे रुशनाईआ। सदा सुहेला देवे साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। इक्क पढ़ाए एकँकारा गाथ, अक्खर रूप ना कोए वटाईआ। करे खेल पुरख समराथ, सचखण्ड निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण निरगुण गाउणा जस, जस एका गुण वखाईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, हँस मुख दए समझाईआ। तेरा तेरी पूरी करे आस, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा देवे खोल्ह, खोल्हणहार आप निरँकारा। शब्द अगम्मी एका बोल, बोले सच जैकारा। नाम कंडे तोले तोल, तोलणहारा हरि गिरधारा। सच महल्ले बैठा अडोल, डुल ना जाए अगम्म अपारा। तेरे अन्तर जाए मौल, फुल फुलवाड़ी वेखे सच गुलज़ारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वस्त नाम हरि थारा। नाम वस्त देवे दानी, हरि दाता

आप वरताइंदा। सो पुरख निरँजण शाह सुल्तानी, हरि पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। एकँकारा वड बलवानी, बल आपणा आप जणाइंदा। श्री भगवान जोत नूरानी, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खेल महानी, अनुभव आपणी धार वखाइंदा। पारब्रह्म वखाए सच निशानी, सच निशाना इक्क झुलाइंदा। शब्द अगम्मी इक्को बाणी, अगम्म अथाह बेपरवाह आप पढ़ाइंदा। साचे सुत कर परवानी, हरि परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। चरन सरन मेल कर कुरबानी, साची सिख्या आप जणाइंदा। पुरख अकाल सच्चा हाणी, आदि अन्त मेल मिलाइंदा। आपे जाणे अकथ कहाणी, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव देवे दस्स, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। थिर घर दुआरे जाए वस, तेरा होए आप सहाईआ। तेरे अन्तर भरे रस, आप आपणा रस जणाईआ। तेरे गृह करे प्रकाश, घर घर खुशी मनाईआ। आपणी पूरी करे आस, तेरी आसा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। सुत शब्द हो निमाणा, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं शाह पातशाह सच सुल्ताना, हउँ बालक सेव कमाइंदा। तेरा मन्दिर सच मकाना, पुरख अबिनाशी मोहे भाइंदा। तेरा नाउँ राग तराना, गुण एका इक्क जणाइंदा। तूं साहिब सच्चा बीना दाना, दात अनमुलड़ी इक्क वरताइंदा। हउँ बालक बाल अञ्याणा, भेव कोए ना आइंदा। मैनूं तेरा इक्को माणा, दूजी ओट ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरनां सीस झुकाइंदा। तेरे चरनां जावां झुक, झुक झुक आपणी खुशी मनाईआ। तेरे बिनां तेरा बूटा जाए सुक्क, हरा सिंच ना कोए कराईआ। सचखण्ड दुआरे ना बहणा लुक, थिर घर तेरी आस रखाईआ। आपणी गोदी लैणा चुक्क, तेरा प्रेम मेरी वड्याईआ। मैं उपज्या तेरी कुक्ख, जनमयां बिन पिता माईआ। तेरी किरपा गया उठ, दूसर बल ना कोए रखाईआ। तूं साहिब गया तुट्ठ, हउँ दीनन माण वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सिर मेरे रखीं हथ्थ, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। तेरा तेरे होए वस, तुध बिन अवर ना कोए भाइंदा। सद गावां तेरा जस, गा गा आपणी खुशी मनाइंदा। तेरे दुआरे आवां नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। तूं अग्गों मिलणा हस्स हस्स, इक्को मंग मंगाइंदा। एका मार्ग देणा दस्स, हउँ बालक भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सिर हथ्थ रखे निरँकार, निराकार दया कमाइंदा। शब्दी सुत तेरा प्यार, बण प्यारा पूर कराइंदा। बाले बाल तेरा विहार, बाली बाला खेल कराइंदा। तख्त निवासी शाहकार, शहिनशाह रूप धराइंदा। खेल तमाशी एकँकार, अकल कला वेस वटाइंदा। थिर घर तेरे पावे सार, थिर घर साचा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। साचे सुत तेरा निशान, हरि निशाना लए बणाईआ। तेरा रूप बेपहचान, पहचान विच किसे ना आईआ। तेरा नाद सच्ची धुन्कान, अनादी नाद वजाईआ। अनडिठ तेरा मकान, बेमकान लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा हुक्म सुणाईआ। साचा हुक्म एका वार, हरि जू हरि सुणाया। तेरी मेरी गुफ़तार, गुफ़त शनीद खेल खिलाया। तेरा मेरा इक्क प्यार, एका वणज रिहा जणाईआ। तेरा मेरा इक्क विहार, बण विहारी हरि समझाया। तेरा मेरा इक्क दुआर, बण दरबारी पड़दा लाहया। तेरा मेरा इक्क शृंगार, हरि शब्दी शब्द समझाया। तेरा मेरा इक्क जैकार, जै जैकार आप अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रखाया। आपणा दस्से हरि जू रंग, रूप रेख ना कोए जणाइंदा। आपणा वखाए सच पलँघ, पावा चूल ना कोए वखाइंदा। आपणा वजाए आप मृदंग, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। आपणा चखाए आप अनन्द, रसना रस ना कोए रखाइंदा। आपे होए सूरा सरबंग, साख्यात रूप वटाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, नूर नुराना डगमगाइंदा। इक्को सुणाया साचा छन्द, सो पुरख निरँजण आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणी दया कमाइंदा। थिर घर दया कमाए दीन दयाल, आपणी दया कमाईआ। सुत दुलारा वेखे लाल, हरि लालन बेपरवाहीआ। आप बणाए सच्ची धर्मसाल, सच दुआरे दए वड्याईआ। आपे वसे नाल नाल, आपणा संग रखाईआ। आपे करे सच्ची प्रितपाल, प्रितपालक बेपरवाहीआ। आपणी घालण आपे घाल, बण सेवक सेव कमाईआ। करे खेल पुरख अकाल, अकल कल वड वड्याईआ। साचे सुत तेरा दलाल, हरि सतिगुर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वस्त देवे धन माल, सच ख़ज़ीना हथ्थ फड़ाईआ। सच ख़ज़ीना देवे दात, साची झोली आप भराइंदा। दाना बीना इक्क इकांत, एका घर सोभा पाइंदा। बन्द किवाड़ा खोले ताक, साची हाटी आप जणाइंदा। करे खेल पुरख समराथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप आप जणाइंदा। आप जणाए रूप अनूपा, भेव अभेद खुलाया। लेखा जाणे शाहो भूपा, भूपत भूप रूप वटाया। वसणहारा साची कूटा, साचे तख्त डेरा लाया। थिर घर लाया आपे बूटा, शब्दी सुत आप प्रगटाया। ठाकर स्वामी आपे तुट्ठा, मेहरवान बेपरवाहया। अमृत रस दए अनूठा, चरन चरन नाल रगड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क टिकाया। मेहर नज़र पाए भगवान, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। करे खेल खेल महान, खेलणहार इक्क हो जाईआ। रूप अनूप श्री भगवान, हरि भगवन रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

शब्द सुत दिता वर, एका वस्त एका वार झोली पाईआ। एका वार झोली भर, हरि जू दया कमाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भय आपणा आप वखाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण पौड़े निरगुण चढ़, निरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण फड़ निरगुण लड़, निरगुण बन्धन पाइंदा। निरगुण घाड़त निरगुण घड़, निरगुण रंग रंगाइंदा। निरगुण अग्गे निरगुण खड़, निरगुण खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप प्रगटाइंदा। साची धार पुरख अगम्म, आपणी आप प्रगटाईआ। आपणे अन्तर आपे जम्म, करे खेल बिन पिता माईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, आपे रिहा चलाईआ। आपणा भाणा आपे मन्न, आपे चले हुक्म रज़ाईआ। आपे वसे साचे छप्पर छन्न, चार कुण्ट ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बणे पिता माईआ । आपे पिता माई बणे पूत, पारब्रह्म हरि खेल खिलाइंदा। आपे ताणा पेटा बण सूत, सूत्रधारी भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निराकार निरगुण धार निरवैर अजूनी रहित आपणा वेस वटाइंदा। आपणा वेस वटाया, हरि आपणी दया कमाईआ । शब्दी अंदर शब्द समाया, शब्दी खेल कराईआ। शब्द दाई शब्द शब्द दाया, सेवक साची सेव कमाईआ। शब्दी गोद आप सुहाया, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। आपणा नूर आप प्रगटाया, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। विष्नूं आपणा खेल कराया, विश्व एका घर वखाईआ। अमृत आपणा जाम प्याया, भर प्याला सच सुराईआ। घर विच बूटा आप लगाया, कँवल कँवला आप लगाईआ। फुल फुलवाड़ी आप महकाया, बण माली सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक्क वरताईआ। साची वस्त कँवल कँवला धार, कँवल नैण आप वरताइंदा। विष्नूं विश्व दए अधार, वास्तक आपणा भेव खुलृाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर त्यार, वंडणहारा एका वंड वंडाइंदा। निरगुण रूप निराकार करे खेल अपर अपार, पत डालृी आप महकाइंदा। गुलशन वेख सच्ची गुलज़ार, ब्रह्मा ब्रह्म कर पसार, आप आपणे रंग रंगाइंदा। थिर घर वेखे वेखणहार, सुन्न अगम्म भेव न्यार, धूंआँधार दिस किसे ना आइंदा। जन जननी बण करतार, शंकर सेव करे सेवा करनेहार, आप आपणा रंग रंगाइंदा। तिन्नां विचोला एकँकार, हुक्म हुक्म आप सुणाइंदा। शब्दी शब्द तेरा विहार, बिवहारी आप रखाइंदा। थिर घर खेल करे करतार, आपणी रचना आप रचाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, साचा मेला मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, भेव अभेदा आपणा आप कराईआ। विष्नूं वेखे मार ध्यान, कवण पिता कवण माईआ। कवण देवणहार ध्यान, अन्तर अन्तर करे पढ़ाईआ। कवण होए निगहबान, बिन नेत्र वेख वखाईआ। कवण वसाए सच मकान, साचे धाम दए वड्याईआ। कवण मेला मिलाए आण, आप आपणी दया

कमाईआ। कवण देवे चरन ध्यान, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव खोल्हे भगवन्त, आपणी दया कमाइंदा। इक्को नार इक्को कन्त, इक्को वेस वटाइंदा। इक्क बणाए साची बणत, विष्न ब्रह्मा शिव उपजाइंदा। इक्को पुरख आदि अन्त, जन्म मरन विच ना आइंदा। इक्को महिमा गाए अगणत, बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा एकँकार, एका एक जणाईआ। विष्नूं रहिणा ख़बरदार, सच संदेसा हरि सुणाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म होए उज्यार, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। शंकर लेखा धूंआँधार, सुन्न अगम्मी वेख वखाईआ। साख्यात रूप निरँकार, जोत शब्द करे शनवाईआ। शब्दी शब्द वड भण्डार, हरि भण्डारा आप वरताईआ। वस्त देवे एका वार, अतोट अतुट रखाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसार, पारब्रह्म दए समझाईआ। शंकर संसा दए निवार, शरअ आपणी आप जणाईआ। तिन्नां विचोला बण पुरख निरँकार, एका गुण दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी इक्क जणाइंदा। शब्दी शब्द चलाई रीता, विष्न ब्रह्मा शिव आप प्रगटाइंदा। धाम जणाए इक्क अनडीठा, भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादी ठांडा सीता, धुर फ़रमाणा हुक्म अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। विष्नूं भेव दस्से भगवाना, आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मे वेखे मार ध्याना, पारब्रह्म वड वड्याईआ। शंकर तेरा इक्क निशाना, शाह पातशाह आप समझाईआ। तिन्नां कोलों मंगे इक्क ब्याना, एका हुक्म वरताईआ। करे खेल खेल महाना, आपणा मार्ग लाईआ। तिन्नां देवे इक्को दाना, एका वारो वार वरताईआ। त्रैगुण माया कर प्रधाना, पल्ले गंढु पुवाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड निशाना, लोआं पुरीआं दए झुलाईआ। रवि ससि किरन किरन महाना, नूर नूर नूर रुशनाईआ। मंडल मण्डप इक्क अस्थाना, थान थनंतर दए बणाईआ। पंचम तत्त तत्त वखाना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। जल जल बिम्ब समाना, धरनी धरत धवल धौल वड्याईआ। लेखा कर दो जहानां, दोए दोए रूप आप समझाईआ। निरगुण सरगुण खेले खेल महाना, लख चुरासी घाड़त लए घड़ाईआ। सच भण्डार इक्क वरताना, विष्नूं विश्व दए समझाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म वखाना, ब्रह्म एका रूप वखाईआ। शंकर मेटे अन्त निशाना, जो घड़या भन्न वखाईआ। शब्दी शब्द सच तराना, सति सतिवादी इक्क सुणाईआ। लख चुरासी बन्न्हे गाना, घर घर सगन मनाईआ। करे खेल श्री भगवाना, अनुभव आपणी खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना रिहा सुणाईआ। धुर फ़रमाना हरि जगदीस, आदि आदि सुणाइंदा। एका छत्र झुल्ले हरि जू सीस, शाह पातशाह इक्क अख्वाइंदा। एका

हुक्म इक्क हदीस, एका शब्दी शब्द सुणाइंदा। एका पीसण लैणा पीस, साची सेवा इक्क लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे आप उठाइंदा। शब्द दुलारे उठ उठ जाग, हरि हरि आप जगाया। तेरी गोदी लग्गा भाग, विष्न ब्रह्मा शिव सुहाया। त्रैगुण माया बध्धा ताग, पंचम तत्त जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाया। साचा खेल दस्से अबिनाशा, आपणी दया कमाईआ। शब्दी शब्द तेरा तमाशा, विष्न ब्रह्मा शिव नाच नचाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर कर वासा, दो जहानां वेख वखाईआ। वेख वखाए पृथ्मी आकाशा, आकाश आकाशां उपर डेरा लाईआ। रवि ससि कर प्रकाशा, मंडल मण्डप दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सुत शब्द हो त्यार, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। लख चुरासी तेरा पसार, तेरी झोली पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेव समझाइंदा। घर घर मन्दिर कर त्यार, घर घर जोत जगाइंदा। घर घर नाद शब्द धुन्कार, घर घर राग अल्हाइंदा। घर घर ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म खुशी मनाइंदा। घर घर सेजा माणे बण भतार, लख चुरासी नारी आप हंडाइंदा। घर घर रखे धूंआँधार, अन्ध अन्धेर वखाइंदा। घर घर रखे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना नाल मिलाइंदा। घर घर जूठ झूठ करे पसार, घर घर हउमे हंगता गढ़ बणाइंदा। घर घर मन मति बुध दए अधार, घर घर रागी राग सुणाइंदा। घर घर अमृत जल रखे ठंडा ठार, घर घर अग्नी अग्ग जलाइंदा। घर घर वेखे महल्ल अटार, घर घर डूँग्घी कंदर मुख छुपाइंदा। लख चुरासी पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा शब्द सुण संदेसा, घर आपणे खुशी मनाईआ। तूं साहिब नर नरेशा, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। तूं मेरा बणाया पेशा, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाईआ। मैं वसां देस परदेसा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आसण लाईआ। कवण बिध दरसन तेरा पेखां, घर आपणे खुशी मनाईआ। कवण करे तेरा लेखा, आपणी बिध देणी समझाईआ। कवण रूप धरे वेसा, अनक कल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत देणी समझाईआ। साची बणत समझाए रघुनाथ, आपणी दया कमाइंदा। शब्दी शब्द तेरा साथ, महांकाल रूप वटाइंदा। महांकाल मंगे दात, अग्गे झोली डाहइंदा। पुरख अबिनाशी बैठ इकांत, आप आपणी खेल कराइंदा। वेखणहारा मार झात, झाकी आपणी इक्क रखाइंदा । दो जहानां खोल्ह ताक, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचे घोड़े चढ़ राक, शाह सवारा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महांकाल खेल खिलाइंदा। महांकाल होए निमाणा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एका मंगे साचा दाना, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। करे खेल श्री भगवाना,

तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बध्धा गाना, लख चुरासी करी कुड़माईआ। घट घट तेरा रूप निशाना, ईश जीव भेव चुकाईआ। घर घर तेरा राग तराना, तार सितार हिलाईआ। घर घर तेरा खेल महाना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जिस बिध तेरा लेखा तेरे लेखे पाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाला, आपणी दया कमाइंदा। सुण सुत महांकाला, भेव अभेद जणाइंदा। आदि जुगादि बण रखवाला, हरि सिर सिर हथ्थ रखाइंदा। तेरा मार्ग दस्से सुखाला, तेरी गोदी भाग लगाइंदा। तेरे अन्तर उपजे बाला, चित्रगुप्त नाउँ रखाइंदा। चित्रगुप्त फल लग्गे डाल्हा, राए धर्म आप प्रगटाइंदा। राए धर्म हो बेहाला, नेत्र रो रो नीर वहाइंदा। पारब्रह्म तेरा खेल निराला, भेव कोए ना आइंदा। लख चुरासी घर घर अंदर तेरा लग्गया ताला, ब्रह्म पड़दा ना कोए उठाइंदा। लख चुरासी तेरी धर्मसाला, तूं हरि थाँ नज़री आइंदा। एका मार्ग दे सुखाला, हउँ बालक मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। राए धर्म हरि हो दयाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरे अन्तर उपजे काल, हरि जू साची बणत बणाईआ। लख चुरासी चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। अन्तिम फल रहिण ना देवे तेरे डाल, पत डाल्ही दए भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। काल रूप उठया काल, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। लख चुरासी तेरा हाल, घर घर तू ही नज़री आइंदा। मैं निमाणा होया कंगाल, आपणा बल ना कोए रखाइंदा। तेरे अग्गे करां इक्क सुवाल, ख़ाली झोली अग्गे डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, किस बिध तेरी सेव कमाइंदा। सेवा दस्से हरि निरँकारा, आपणा भेव खुल्हाईआ। काल काल तेरा सच पसारा, हरि पसारी आप जणाईआ। तेरा भेव करे न्यारा, निराकार वड्डी वड्याईआ। तेरा वसाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। तेरी इच्छया बणे तेरी नारा, नार कन्त मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नार कन्त खेल अपारा, हरि काल काल जणाइंदा। राए धर्म वेखे वेखणहारा, वेख वेख खुशी मनाइंदा। मैं इक्क इकल्ला रिहा कँवारा, मेरा संग नज़र कोए ना आइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा सच्चा सच दुआरा, ख़ाली कोई नज़र ना आइंदा। मैं ढह ढह करां निमस्कारा, इक्को इक्को मंग मंगाइंदा। काल नाल मेरा होए प्यारा, साची गंढु पुवाइंदा। दोहां अन्तर इक्को धारा, एका रंग रंगाइंदा। एका नूर होए उज्यारा, पिता पूत वेख वखाइंदा। लख चुरासी करे वणज वणजारा, साचा वणज समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क समझाइंदा। राए धर्म तेरा होया संग, काल काल प्रनाईआ। इक्को

सेज इक्क पलँघ, एका बस्त्र दए सुहाईआ। एका सेज इक्क अनन्द, एका रस दए वखाईआ। एका चढ़े जगत चन्द, साचा चन्द दए चमकाईआ। लख चुरासी करे खण्ड खण्ड, घर घर आपणा फेरा पाईआ। सदा बणी रहे नार दुहागण रंड, साचा कन्त नज़र ना आईआ। लाड़ी मौत उपजे तेरी बिन्द, जगत सपुत्तरी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द दए समझाईआ। लाड़ी मौत काल मीत, धर्म राए खेल खिलाया। चित्रगुप्त परखे नीत, घट घट वेख वखाया। महांकाल ठांडा सीत, दर घर साचे सोभा पाया। शब्दी शब्द इक्क अतीत, हुक्मी हुक्म इक्क वरताया। लख चुरासी वेखे परखे नीत, नीतीवान मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव जणाया। वस्त अमोलक मिल्या भण्डारा, हरि जू रचना सच रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवक सेवादारा, महांकाल आपणा रंग वखाईआ। चित्रगुप्त बण लिखारा, राए धर्म हिसाब मुकाईआ। काल वजाए इक्क नगारा, लाड़ी मौत करे पढ़ाईआ। थिर रहे ना कोई विच संसारा, जो घड़या सो भन्न वखाईआ। एका हुक्म धुर दरबारा, हरि दरबारी आप सुणाईआ। शब्द सुत निउँ निउँ करे निमस्कारा, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। एका दस्स आपणा सच विहारा, किस बिध आपणा रूप वटाईआ। लोकमात होए उज्यारा, परलोक वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वजाए नगारा, लोआं पुरीआं नाद सुणाईआ। लख चुरासी दए अधारा, अण्डज जेरज सेत्ज उत्भुज फेरा पाईआ। कागद कलम बणे लिखारा, लिख लिख आपणा गुण जणाईआ। राग नाद बोल जैकारा, जै जैकार करे शनवाईआ। सचखण्ड निवासी वखाए सच दुआरा, दोए दोए आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। एका वर देवे दातार, आपणी दया कमाइंदा। एका वस्त इक्क भण्डार, हरि एका एक वरताइंदा। एका विष्न ब्रह्मा शिव दए अधार, एका साची सेव लगाइंदा। एका त्रैगुण माया कर त्यार, एका पंचम गंढु पुवाइंदा। एका लख चुरासी कर आकार, एका निराकार वेख वखाइंदा। एका जोती जोत कर उज्यार, जोती जाता डगमगाइंदा। एका शब्दी शब्द धुन्कार, एका रागी राग अलाइंदा। एका विष्नूं देवे प्यार, एका ब्रह्मे धार चलाइंदा। एका बोध अगाध जैकार, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। एका लेखा जाणे वेद चार, चारे जुग वंड वंडाइंदा। एका चारे खाणी कर त्यार, चारे बाणी इक्क सुणाइंदा। एका चारे वरन करे पसार, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। एका रवि ससि दए अधार, एका आपणा हुक्म वरताइंदा। एका जुग चौकड़ी वंडे वंड विच संसार, लोकमात वेख वखाइंदा। एका सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कर पसार, निरगुण सरगुण सेव कमाइंदा। एका जुग जुग लए अवतार, रूप अनूप आप धराइंदा। एका खेले खेल अगम्म अपार, अगोचर आपणा भेव खुलाइंदा। एका

रागां नादां वसे बाहर, एका गीत गोबिन्द अलाइंदा। एका सतिजुग साचा वेखे आण, माटी भाण्डा काचा फोल फोलाइंदा। एका त्रेता त्रीया दए अधार, त्रैगुण अतीता साचा मीता खेल खिलाइंदा। एका काहन करे शृंगार, दोए दोए लोचण, दोए दोए रूप धराइंदा। एका बोल हक़ जैकार, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। एका लाशरीक बेऐब परवरदिगार, बेनक़ाब इक्क अख्वाइंदा। एका सचखण्ड वसे मकान न्यार, एका सति सतिनाम दृढ़ाइंदा। एका डंका वजाए अपर अपार, राउ रंकां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। आपणा खेल जणाए हरि हरि, आपणी दया कमाईआ। एका देवे साचा वर वर, वर दाता बेपरवाहीआ। एका लख चुरासी भाण्डे वेखे घड़ घड़, एका भन्न वखाईआ। एका निरभउ चुकाए डर डर, भयानक रूप ना कोए जणाईआ। एका बन्ने आपणे लड़ लड़, एका पल्लू लए फड़ाईआ। एका नुहाए साचे सर सर, एका दुरमति मैल धुवाईआ। एका आवे जावे जम्मे मर मर, जूनी जून जून भुवाईआ। एका दरस दिखावे खड़ खड़, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। एका वेखे साचे पौड़े चढ़ चढ़, काया मन्दिर अंदर सोभा पाईआ। एका बिन अक्खर विद्या पढ़ पढ़, लख चुरासी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू आपणा भेव जणाईआ। शब्द सुत कहे भगवान, सति सति तेरी वड्याईआ। आपणा दस्स इक्क निशान, लोकमात मात समझाईआ। कवण बिध वेखे खेल दो जहान, दोए दोए रूप वटाईआ। कवण हथ्थ वखाए निशान, शाह सुल्तान बण झुलाईआ। कवण नाम देवे ज्ञान, बिन अक्खर कर पढ़ाईआ। कवण मन्दिर वखाए मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। कवण राग सुणाए कान, तार सितार ना कोए हिलाईआ। कवण रूप वेखे आण, अनूप तेरी वड्याईआ। कवण कूट मारे ध्यान, कवण दिशा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला देणा समझाईआ। साचा वेला दस्स रुत्त, दोए जोड़ जोड़ सरनाया। कवण धार पए उठ, निरगुण एका रूप प्रगटाया। कवण बिध जाए तुट्ट, मेहरवान मेरे रघुराया। कवण बणाए साचा सुत, लोकमात सलाहया। कवण भाग लगाए माटी बुत्त, पंज तत्त जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत आप जणाया। शब्दी सुत सुत बलवान, हरि साचा सच जणाईआ। आदि खेल करां महान, विष्न ब्रह्म शिव तेरे नाल रलाईआ। करोड़ तेतीसा इक्क ध्यान, सुरपति इन्द माण रखाईआ। आदि शक्ति नूर महान, चतुर्भुज रंग चढ़ाईआ। लेखा जाण दो जहान, भरम भुलेखा एका पाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, सरगुण आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म इक्क मकान, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दए चुकाईआ। आपणा पड़दा चुक्के हरि, हरि

हरि आप जणाइंदा। जुगा जुगन्तर वेस कर, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। पंज तत्त अंदर जाए वड़, नज़र किसे ना आइंदा। आपणा नाउँ आप जणाए पढ़ पढ़, साची सिख्या इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेले हरि जू खेल, खेलणहार वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण कर कर मेल, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। लेखा जाण गुरू गुर चेल, गुर गुर चेला रूप वटाईआ। बण बण साचा सज्जण सुहेल, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेल कराईआ। जुग चौकड़ी खेल अवल्ला, आलमीन आप कराइंदा। नूर इलाही एका बला, बिस्मिल आपणी धार चलाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, सोभावन्त सोभा पाइंदा। वसणहारा जलां थलां, जल थल महीअल आपणा रंग रंगाइंदा। समुंद सागर डूँघी कंदर आपे रला, रल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत आपे खल्ला, चोटी चोटी डंक वजाइंदा। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड फिराय पल्ला, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। सच संदेस नर नरेश सति सतिवादी इक्को घल्ला, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण साची धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। नाउँ रख गुर अवतार, जीव जंत जंत पढ़ाईआ। एका नाम बोल जैकार, जै जैकार दए सुणाईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी बणे वारो वार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। भगतां देवे सच भण्डार, नाम भगती झोली पाईआ। सन्तन खोल्ह बन्द किवाड़, आत्म ताकी कुण्डा लाहीआ। गुरमुखां करे प्रकाश नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ इक्क रुशनाईआ। गुरसिख वेखे साचे लाड़, लोकमात फेरा पाईआ। जुगा जुगन्तर साचे पौड़े देवे चाड़्ह, चौथे पद वड्याईआ। वा ना लग्गे अग्नी हाढ़, तत्तव तत्त ना कोए जलाईआ। लेखा जाणे हरि जुग चार, गुर अवतार सेव कमाईआ। पीर पैग़म्बर दए अधार, एका कलमा नबी पढ़ाईआ। रहिमत कर परवरदिगार, रहीम रहिमान रहिमत आपणी आप कमाईआ। एका नाम बोल जैकार, सति सति करे शनवाईआ। एका जोत जोत उज्यार, एका शब्द शब्द शनवाईआ। एका मंत मंत विचार, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। एका शब्द करे त्यार, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। पंज तत्त घड़े भन्ने बण ठठयार, लोकमात खेल रचाईआ। कोटन कोटि गुरू अवतार, जीव जंत सेव लगाईआ। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर दए अधार, कलमा कलाम आप जणाईआ। कोटन कोटि भगत भगवन्त कर त्यार, लोकमात होए सहाईआ। कोटन कोटि सन्त दए अधार, साची सिख्या इक्क सिखाईआ। कोटन कोटि गुरमुख लाए पार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। कोटन कोटि गुरसिख लए उधार, जगत उधारन बेपरवाहीआ। कोटन कोटि कर कर खुआर, लख चुरासी

आप भुवाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ार, दर बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी गए हार, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। कोटन कोटि कर कर गए निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कोटन कोटि मन्न के गए हार, आपणा बल ना कोए रखाईआ। कोटन कोटि कर कर गए शृंगार, हरि कन्त ना कोए मनाईआ। कोटन कोटि बण बण गए लिखार, वेद पुराण शास्त्र सिमरत कुरान अंजील खाणी बाणी कर पढ़ाईआ। कोटन कोटि बेअन्त बेअन्त कह कर गए पुकार, अन्त कोए ना पाईआ। कोटन कोटि बैठे डूँघी गार, बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। कोटन कोटि समुंद सागर रोवण ज़ारो ज़ार, कोटन कोटि उच्चे पर्बत देण दुहाईआ। कोटन कोटि जंगल जूह उजाड़ पहाड़ करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि एका शब्द दए वड्याईआ। साचे शब्द सुण सुत दुलारे, हरि साचा सच जणाइंदा। चार जुग दे जगत विहारे, हरि जू आप बणाइंदा। शास्त्र सिमरत बण वणजारे, लोकमात हट चलाइंदा। गुर अवतारां दे अधारे, पीर पैग़म्बर नाल रलाइंदा। लिख लिख लेख थक्के सर्ब संसारे, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी जीव जंत सब मंगदे रहिण दुआरे, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यारे, भेव कोए ना पाइंदा। आवे जावे वारो वारे, रूप अनूप धराइंदा। सतिजुग त्रेता आपे जाणे, द्वापर आपणा रंग वखाइंदा। कलयुग वेखे खेल श्री भगवाने, भेव कोए ना पाइंदा। कलम शाही लिख लिख थक्की तेरे तराने, तीर निशाना कोई ना लाइंदा। कोटन कोटि बन्न्ह बन्न्ह गए गाने, तेरा सगन ना कोए मनाइंदा। जीव जंत आदि अन्त जुगा जुगन्त चलण सच्चे भाणे, हरि भाणा ना कोए मनाइंदा। हुक्मे अंदर राजे राणे, हुक्मी हुक्म खेल कराइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शाह सुल्ताने, साचे तख्त सोभा पाइंदा। नौ नौ चार वंड वंडाने, चार चार वेख वखाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग निरगुण सरगुण दए माणे, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आपणा हुक्म दए परवाने, लोकमात सेवा लाइंदा। अन्तिम सब दे मिटे निशाने, निशान आपणा इक्क झुलाइंदा। साचे सुत शब्द वेख मार ध्याने, तेरा पुरख अकाल इक्को इक्क इक्क अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा विहारा हरि निरँकारा एका एक जणाइंदा। तेरा विहारा हरि निरँकार, बिन तेरे समझ ना आईआ। बिन लिख्या लिखारा बणया रहे अगम्म अपार, तेरा लेख ना कोए मिटाईआ। जुग चौकड़ी खेल करे संसार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी कर कर पार, गुर अवतार सेव समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, नव नौ चार खेल कराईआ। अन्त कन्त भगवन्त सारे मंगण तेरा दरस दीदार, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। तूं सर्ब जीआं दा इक्क भतार, हरि कन्त वड वड्याईआ। तेरा सच्चा सच

७८० ११

दरबार, दर दरबार दूसर ना होर कोए रखाईआ। मैनूं दस्सदे अन्त विहार, किस बिध मेरा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा जणाईआ। पुरख अबिनाशी निरगुण हस्स, हँसमुख वड्याआ। आपणा मार्ग देवां दस्स, बिन कलम दवात लिखाया। जुग चौकड़ी नस्स नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाया। गुर अवतार अन्तर वस, आपणा भेव खुल्हाया। भगतां दे दे साचा रस, अमृत रस चखाया। तीर निराला मार कस, अणयाला आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाया। आपणा खेल करे करतारा, हरि करता वड वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी आए विच संसारा, संसार सागर वेखे चाँईं चाँईंआ। सतिगुर सरगुण लए अवतारा, वार अठारां संसार रूप वटाईआ। त्रेता करे खेल न्यारा, दोए दोए निशान झुलाईआ। द्वापर पावणहारा सारा, दोए दोए रंग रंग वखाईआ। कलयुग खेल करे अपारा, एका एके पिच्छे छुपाईआ। एका अक्खर कर प्यारा, ऊड़ा ओंकारा त्रै त्रै लेखा दए मुकाईआ। ऐड़ा अक्ख उग्घाड़ा, आखर सब दा दए कराईआ। अल्फ़ी कर तन शृंगारा, आरफ़ करे सच पढ़ाईआ। आपे छड्डे तुलसी माला, हवन घृत ना कोए वखाईआ। पंज तत्त तत्त अधारा, तत्तव तत्त मेल मिलाईआ। नूरो नूर नूर उज्यारा, ईसा मूसा सोभा पाईआ। एका हक़ हक़ जैकारा, ला हक़ आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका
७८१ खेल दए वखाईआ। एका खेल करे करतार, हरि ख़ालक ख़लक जणाइंदा। तत्तव तत्त दए अधार, जगत अधारी वेस ७८१
११ वटाइंदा। चौथे जुग कर प्यार, चारे अक्खर मेल मिलाइंदा। इक्क मुहम्मद कर उज्यार, अहिमद आपणा रूप वखाइंदा। ११
समझ विच समझ दए करतार, कुदरत कादर खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव माटी खाक, एका एक जणाईआ। काया अन्तर खोल्ह ताक, एका चन्द चढ़ाईआ। एका अक्खर भविख्त वाक्, एका अल्फ़ करे पढ़ाईआ। एका लेखा बातन बात, हरि जू हरि हरि आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाईआ। आपणा पड़दा देवे लाह, आपणी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण वेस वटा, कलयुग खेल खिलाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुका, बण पाँधी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त चोला डगमगाइंदा। नानक नाउँ लए धरा, लोकमात वेस धराइंदा। एका नाम कर रुशना, नाम सति आप पढ़ाइंदा। एका घर मेल मिला, दस दस आपणा रंग रंगाइंदा। अन्तिम मेला सहिज सुभा, श्री भगवान आपणे हथ्थ रखाइंदा। सुत दुलारा एका जा, गोबिन्द नाउँ धराइंदा। अमृत जाम इक्क प्या, एका रस वखाइंदा। एका खण्डा दए चमका, एका खड़ग उठाइंदा। एका मार्ग दए लगा, एका रैहबर नज़री आइंदा। चार कुण्ट फेरा पा,

चौथे जुग डेरा ढाहइंदा। चार यारी वेख वखा, पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कोई दिसे ना, आत्म परमात्म सर्ब वखाइंदा। अठसठ तीर्थ डेरा ढाह, एका अमृत जाम प्याइंदा। पुरख अकाल इक्क मना, एका इष्ट वखाइंदा। आपणा आप भेंट चढ़ा, गुरमुखां सेव कमाइंदा। खेवट खेट बण मलाह, साचे पत्तण डेरा लाइंदा। इक्को ओट रिहा तका, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। सत्थर सच रिहा हंडा, यार यारी नाल निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। साचे सुत कर ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग मिटे निशान, लोकमात रहिण ना पाइंदा। सतिजुग हरि जू वेखे आण, ब्रह्मा सुत रूप धराइंदा। बराह खेल करे महान, यगे पुरष रंग वखाइंदा। हाव गरीव इक्क ज्ञान, नर नरायण आप पढ़ाइंदा। दत्ता त्रै देवे माण, कपल मुंन आप समझाइंदा। रिखप देवे इक्क निशान, पिरथू एका हुक्म वरताइंदा। मत्तस मेला मेले आण, कछप आपणा भार वंडाइंदा। धनंतर देवे एका खाण, मोहणी आपणा रूप धराइंदा। बावन वेखे खेल महान, आपणा बल ना कोए जणाइंदा। हँसा चोग मंगे आण, माणक मोती मुख सलाहइंदा। हरी हरि कर ध्यान, ध्रू बाला गोद बहाइंदा। नर नरायण हो प्रधान, गज सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। प्रहिलाद देवे एका माण, हरनाक्ष मेट मिटाइंदा। करे खेल श्री भगवान, सरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। सतिजुग साचा जाए लँघ, लोकमात रहिण ना पाईआ। इक्को बल बावन कोलों मंगी मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। कर्म ढाई तेरा संग, तेरी सेज सुहाईआ। तेरा मेरा इक्क अनन्द, लोकमात खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। साचा भेव श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। देवणहारा दानी दान, बण दाता आप वरताइंदा। बल तेरा रखां ध्यान, भुल्ल कदे ना जाइंदा। त्रेता द्वापर खेल महान, हरि जू आप कराइंदा। अन्तिम मेला मेले आण, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि निरँकारा, हरि हरि आप कराईआ। रिख मुन दए सहारा, एका ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। जुग जुग करे वणज वपारा, बण हटवाणा हट्ट चलाईआ। गौतम दए इक्क सहारा, इक्क किनारा दए वखाईआ। त्रैगुण माया बण लाड़ा, अछल अछल खेल जणाईआ। करे कराए करनेहारा, भेव कोए ना पाईआ। नारी मंगे बण भिखारा, अग्गे झोली डाहीआ। मेले मेल कन्त भतारा, जगत विछोड़ा झल्लया ना जाईआ। पुरख अबिनाशी दए सहारा, एका गुण वखाईआ। त्रैगुण तेरा इक्क किनारा, त्रैगुण अतीता लए प्रगटाईआ। त्रेता आए वड परवारा, द्वापर त्रेता रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे करनेहारा, हरि हरि भेव कोए ना पाइंदा। त्रेता

लए उन्नीसवां अवतारा, परसराम राम राम अख्वाइंदा। बीसवां कर सच श्रृंगारा, दसरथ बेटा रूप वटाइंदा। साची सीआ कर प्यारा, जनक सपुत्तरी आप प्रनाइंदा। एका लकशमन दए अधारा, आपणा लकशन आप जणाइंदा। एका दुष्ट दैंत सँघारा, एका तीर कमान चलाइंदा। एका भगत भगत वणजारा, हनवन्ता रंग रंगाइंदा। एका तोड़नहारा गढ़ हँकारा, हँकारी गढ़ आप तुड़ाइंदा। एका करनहारा श्रृंगारा, दूती दुष्ट आप खपाइंदा। एका देवणहार सहारा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। एका अक्खर कर प्यारा, राम राम राम समझाइंदा। एका राम वसे सर्ब न्यारा, एका घट घट डेरा लाइंदा। एका राम दसरथ करे प्यारा, एका दिस किसे ना आइंदा। एका दए सच सहारा, बालमीक बिजवाड़ा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पंज तत्त काया चोला आप हंढाइंदा। पंज तत्त चोला जाए हंढ, लोकमात रहिण ना पाईआ। निरगुण नाम साचा चन्द, जुग जुग लोकमात करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द अनन्द दरसाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। त्रेता जाए पार लँघ, द्वापर आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाईआ। द्वापर लोकमात रूप वटाया, आपणा खेल आप जणाईआ। घनईया घनईया वस्त झोली पाया, दाता दानी वस्त आप वरताईआ। वेद व्यासा आपे जाया, खेल बेपरवाहीआ। पुराण अठारां आपे गाया, लख चार हज़ार सतारां सलोक सुणाईआ। बारां अक्खर राग अलाया, नारद ब्रह्मा कर पढ़ाईआ। सुरस्ती ताल इक्क वजाया, राग रागनी मेल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाया, करे खेल बेपरवाहीआ। नंद जशोदा माण दुवाया, घनईया नईया इक्क चलाईआ। साची बंसरी इक्क वजाया, राग धुन धुन शनवाईआ। साची सख़ीआं मंडल रास आप रचाया, बण काहन फेरा पाईआ। सीस मुक्ट ताज़ टिकाया, कँवल नैण मटकाईआ। बण रथवाही रथ चलाया, सेवक सेवा सच कमाईआ। ग़रीब निमाणे गले लगाया, बिदर सुदामा लए तराईआ। साग अलूणे भोग लगाया, बिदर देवे माण वड्याईआ। द्रोपत सुत पार कराया, द्रोपत लज्जया इक्क रखाईआ। गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाया, अठारां अध्याए करे पढ़ाईआ। एका अर्जन हरि समझाया, रूप अनूप विराट वटाईआ। चौदां लोक आपणे विच समाया, सोलां कल कल रखाईआ। चौदां विद्या माण गुवाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, वेला अन्त अन्त कराईआ। पुरख अबिनाशी कर त्यार, चौथे जुग छोटे सुत लए उठाईआ। शब्द मंगे बण भिखार, हरि वस्त रिहा वरताईआ। तेरी आई अन्तिम वार, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गए फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमाणा हरि भगवान, एका इक्क

जणाइंदा। कलयुग तेरे विच मेरा ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। तूं मंग इक्को वार दान, हरि दाता झोली पाइंदा। कलयुग बोले बाल नादान, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी तेरा चरन ध्यान, मोहे सदा भाइंदा। लोकमात ना कोई माण, बिन तेरे माण ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा मैनूं वर, जिस बिध तेरा पन्ध मुकाइंदा। जिस बिध मुक्के तेरा पन्ध, सो बिधी दे बताईआ। मेरी आरज़ू चार लख बत्ती हज़ार पई गंढ, लोकमात होई कुड़माईआ। मैं झल्लां ना विछोड़ा तेरा रंडेपा रंड, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा मेरा पन्ध खण्ड, आपणा खण्डा इक्क चमकाईआ। बौहड़ी बौहड़ी मेरी तुट्टी गंढ, मैं दर ते दयां दुहाईआ। तूं दीन दयाल साहिब बख्शंद, बख्शश तेरे हथ्थ वड्याईआ। तिन्न जुग माणया अनन्द, मिली सरन सरनाईआ। चौथे जुग तेरा विछोड़ा दिसे दूजी कंध, तेरा नूर नज़र ना आईआ। कवण बिध मिलां दूर दुराडा कट के पन्ध, घर तेरे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। दोए जोड़ वास्ता रिहा घत्त, हरि चरनी सीस झुकाया। मेरी उबल आई रत्त, रत्ती रत्त वेख वखाया। मैनूं दे आपणी मति, मेरी चले ना कोए चतुराया। लहिणा देणा मुकाईं हथ्थो हथ्थ, मेरे साहिब सच्चे शहिनशाहया। तूं पुरख अकाल समरथ, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा खेल वेख वखाया। जो उपज्या सो गया ढट्ठ, बणया कोई रहिण ना पाया। जिउँ भावे तिउँ गेड़ें लट्ठ, गेड़ा गेड़े विच रखाया। इक्को मार्ग देणा दस्स, लोकमात मात समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा आप सुणाया। धुर संदेसा दए सुणा, हरि हरि आप जणाइंदा। कलयुग तेरी इक्क सलाह, सलाहगीर आप रखाइंदा। जूठ झूठ तेरी झोली दयां पा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाइंदा। आसा तृष्ना विच दयां वसा, हउमे हंगता गढ़ बणाइंदा। आपणा नाम सब नूं दयां भुला, तेरा रंग चढ़ाइंदा। तेरा डंका दयां वजा, चारों कुण्ट सुणाइंदा। चारों कुण्ट दिआ हिला, दहि दिशा वेख वखाइंदा। दहि दिशा डेरा ढाह, तेरी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। तेरा अन्त रखे हथ्थ करतार, आपणी खेल समझाईआ। लोकमात तेरा विहार, बहु भांत भांत कराईआ। निरगुण सरगुण करे खुआर, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। बोध बोध ज्ञान दए अध्यान, अध्यान अज्ञान दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। सच सच तूं किहा भगवाना, कलयुग सीस झुकाइंदा। पंज तत्त की करे निमाणा, पंच विकार कम्म किसे ना आइंदा। जुग जुग खेले खेल महाना, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। गुर गुर खेल करे महाना, आपणा मार्ग लाइंदा। जोधा सूर बणे बलवाना, बल

आपणा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा संग मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी दया कमाईआ। कलयुग तेरे नाल रलाए काल, महांकाल वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण खेले खेल कमाल, रूप अनूप वटाईआ। ईसा मूसा बण बण लाल, संग मुहम्मद मेल मिलाईआ। कलमा कलाम बेमिसाल, मिसल आपणी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा संगी इक्क बणाईआ। तेरा संगी दए बणा, हरि साचा संग समझाइंदा। इक्क मुहम्मद नाल रला, तेरा रंग चढ़ाइंदा। एका कलमा दए पढ़ा, शरीअत आप वखाइंदा। एका नगमा दए सुणा, एका राग अल्लाइंदा। एका हुजरा दए वखा, एका महिराब वखाइंदा। एका सजदा दए करा, एका सीस झुकाइंदा। इक्क मुसल्ला दए विछा, एका आसण लाइंदा। एका वुज़ू दए वखा, इक्क सदा सुणाइंदा। एका काअबा दए दृढ़ा, एका हज्ज जणाइंदा। दो दो आबा मेल मिला, निरगुण सरगुण धार बणाइंदा। हक़ हक़ इक्क खुदा, ला हक़ खेल कराइंदा। राम नाम दए भुला, इष्ट दृष्ट आप बदलाइंदा। नूरी इस्म नूर दरसा, बिस्मिल आपणा रूप वटाइंदा। करद कृपान बिन हो कुरबां, जगत करबला इक्क वखाइंदा । पीर पैग़म्बर होए सरना, हज़रत आयत इक्क पढ़ाइंदा। हसरत सब दी दए मिटा, हिरस होर ना कोए वखाइंदा। फितरत वेखे आप खुदा, इबरतनाक खेल खिलाइंदा। कायनात फेरा पा, बीआबान आप सुहाइंदा। तार सितार इक्क वजा, अहिबाब रबाब वजाइंदा। कलम कातब बण बण दए लिखा, लेखा एका एक रखाइंदा। तीस बतीस हदीस इक्क इक्क जणा, शरअ शरीअत वंड वंडाइंदा। अल्ला राणी नाल प्रना, नारी खौत मेल मिलाइंदा। खावंद खेल करे बेपरवाह, मुख नक़ाब पड़दा पाइंदा। चौदां तबक तबक भेव खुला, सबक साबर इक्क सुणाइंदा। लेखा जाण ज़िमीं असमान, अमाम अमामा वेस वटाइंदा। निहकर्मी निहकर्म लए कमा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा पन्ध मुकाइंदा। कलयुग तेरा पन्ध मुकाउणा, हरि जू हरि हरि दया कमा। तेरा संगी इक्क रखाउणा, संग सुहेला इक्क समझा। तेरा पैंडा पन्ध मुकाउणा, करे खेल आप खुदा। खुदी घर घर डेरा लाउणा, तकब्बर देवे रंग चढ़ा। मुसव्वर नज़र किसे ना आउणा, बेसबर प्याला दए भरा। जाबर ज़बर आपणा ज़ोर वखाउणा, ज़ेर जबर कोई जाणे ना। बेख़बर ख़बर आप सुनाउणा, भेव अभेदा दए खुल्हा। धरनी धरती धवल काअबा कबर आप बणाउणा, किबल वेखे हरि मेहरवां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा पन्ध मुकाउणा। तेरा पन्ध मुक्के विच संसार, हरि साचा सच जणाईआ। मूसा करे इक्क गुफ़तार, एका राग अल्लाईआ। ईसा कहे पुकार पुकार, मेरा खुदावंद मेरा सच्चा माहीआ। मैं पूत उह पिता मेरा यार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरे पिच्छे आए आपणी

वार, आपणा रूप वटाईआ। खेले खेल अपर अपार, अपरम्पर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग रखाईआ। ईसा मंगी एका मंग, इक्क ध्यान लगाया। मेरा खुदा चाड़ीं मेरा रंग, रंग रंगीला इक्क वखाया। बिन तन्दी सितार वजाए मृदंग, एका नाअरा लाया। बीस बीस दए अनन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। मुहम्मद मिल्या कलयुग संग, हरि हरि आप बणाइंदा। मुहम्मद कहे बणा मलंग, घर घर नाच नचाइंदा। चार यारी मेरा अनन्द, एका घर सोभा पाइंदा। पिछला कीता करना खण्ड खण्ड, अगला आपणा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। सुण मुहम्मद हरि जणाया, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। पंज तत्त तेरा रूप धराया। नूर नूर मिलाईआ, कलमा कलाम इक्क पढ़ाया, एका अल्फ़ अल्फ़ वखाईआ। हरफ़ बेहरफ़ आप सिखाया, पे ये करे सफ़ाईआ। तसबी माला गल लटकाया, मन का मणका मन भुवाईआ। नीले बस्त्र रंग चढ़ाया, नीलम आपणा खेल कराईआ। चौदां तबकां कुण्डा लाहया, चौदस इक्क चन्द वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। चौदां लोक वेख नज़ारा, मुहम्मद खुशी मनाइंदा। मेरे खुदा तेरा मुज़ाहरा, मोहे सदा भाइंदा। इक्को हक़ तेरा नाअरा, तेरे दर सुणाइंदा। तूं साहिब परवरदिगारा, हउं खाकी ख़ाक सीस झुकाइंदा। हउँ भिखक तेरे आए दुआरा, बण दरवेश सीस झुकाइंदा। इक्को अल्फ़ी तन श्रृंगारा, बण मलंग नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। बण मलंग फड़े मतहिरा, तसबी माला गल लटकाईआ। वाहवा कादर तेरी कुदरत विच तेरी लहरा, लहर लहर विच मिलाईआ। मैं चौदां तबक करके आया सैरां, सैरगाह इक्क वखाईआ। बिन तेरी नज़म बिन तेरे नगमे होया बहरा, कन्न अवाज़ ना कोए सुणाईआ। मैं दर तेरा मंगां ना छड्डणा खैहड़ा, सिर कदमां उपर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, मिहबान दया कमाइंदा। तेरा इस्म इक्क इमान, हरि आज़म आप जणाइंदा। साचे हज़रत कर पहचान, नज़रीआ इक्क रखाइंदा। देवणहारा सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। साचे अस्व चढ़या बिन लगाम, आपणा दुलदुल आप दौड़ाइंदा। देवणहारा सच ब्यान, ब्याना आपणा नाउँ रखाइंदा। एका एक इलाही कलाम, कलमा कलाम आप जणाइंदा। एका सिफ्त सिफ्त सलाम, इस्लाम आपणा रंग वखाइंदा। इक्क अलैकम बण गुलाम, गुरबत एका वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खुशी आप वखाइंदा। साची खुशी परवरदिगार, बेपरवाह आप वखाईआ। आपे बण साचा यार, साची शरअ दए समझाईआ। कलयुग करना

इक्क प्यार, कूड़ी क्रिया संग रखाईआ। चारों कुण्ट कर खुआर, जीव जंत दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाईआ। इक्क मुहम्मद चढ़या चाअ, चाओ घनेरा इक्क रखाईआ। एका घर मिली सलाह, सलाहगीर इक्क वड्याईआ। एका बेड़ा दए चला, बिन चप्पू पार लँघाईआ। एका सबक दए पढ़ा, साबत आपणा नाउँ समझाईआ। इक्क आलम उल्मा बणे खुदा, आलमीन इक्क अख्वाईआ। एका रहीम रहिमान रहिमत रिहा कमा, रैहबर एका राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। मुहम्मद खेल दस्स आपणा वजूद, भेव अभेद छुपाइंदा। तेरा मेला पंज तत्त काया कलबूत, काया कुरा इक्क वखाइंदा। चौदां लोक तेरा सबूत, अग्गे राह ना कोए जणाइंदा। अद्धविचकार तेरी कूट, हरि जू साची वंड वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाइंदा। दीन दयाल मेरे खुदा, तुध अग्गे सीस झुकाया। तेरा नूर तेरे नालों होया ज़ुदा, जगत जुदाई वेख वखाया। कवण बिध होवां फिदा, आपणी फितरत मात मिटाया। मैनूं मार्ग दस्सणा सिध्धा, राह विच ना कोए अटकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाया। मुहम्मद सुण रखणा याद, चौथे जुग हरि जणाईआ। अन्त सुणे तेरी फ़रयाद, परवरदिगार सच्चा माहीआ। मैं तैनूं दिती दाद, चौदां लोक कलमा करे पढ़ाईआ। सो तेरी जाणे हद, बेहद आप अख्वाईआ। तेरा पैंडा मुकणा अध, अग्गे मिले ना कोए वड्याईआ। उम्मत उम्मती जाणी छड्ड, कलयुग संग ना कोए रखाईआ। अन्तिम ख़ाली होणे हड्ड, नाड़ी नाड़ नाड़ कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए समझाईआ। मुहम्मद उठ करे सजदा, सीस सीस झुकाया। मैं चाकर ख़ाक तेरा बरदा, दर तेरे फेरा पाया। तूं साहिब सब दा घाड़न घड़दा, घड़नहार इक्क अख्वाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरे कोलों डरदा, नेत्र नैण नैण शरमाया। मैं तेरे हुक्म अंदर चौदां तबक अंदर वड़दा, घर घर फेरी पाया। चारों कुण्ट रहे सड़दा, आबेहयात ना कोए प्याया। कलयुग नाल नाल रहे तुरदा, आपणा ज़ोर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्त लए मिलाया। कवण वेला मेले अन्त, एका मंग मंगाईआ। तूं बणाई मेरी बणत, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। तूं साहिब साचा कन्त, मैं बीवी बेवा तेरे बिन कम्म किसे ना आईआ। तेरा चरन दिसे बंक, तेरा नूर मेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। सुण मुहम्मद कर ध्यान, हरि हज़रत आप जणाइंदा। इज़राईल ज़बराईल मेकाईल असराफ़ील जो देदे रहे पैग़ाम, चार जुग वेस वटाइंदा। चौदां सदीआं रखां तेरा माण, चौदां तबक ना

तेरे हिलाइंदा। अन्तिम खेल करां महान, सिर अमाम अमामा रूप वटाइंदा। नाता तोड़े जगत शैतान, शरअ शरीअत मेट मिटाइंदा। इक्क सुणावां धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क अल्लाइंदा। एका देवां हक़ पैग़ाम, पीर पैग़म्बर पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। चौदां सदीआं दिता वर, सिदक सबूरी इक्क समझाइंदा। अन्तिम वेले जाणा हर, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। प्रगट होए नरायण नर, निरगुण वेस वटाइंदा। लोक परलोक वेखे खड़, अवण गवण फेरा पाइंदा। भेव चुकाए गोर मड़्, सिल पूजस डेरा ढाहइंदा। पीर पैग़म्बर वेखे खड़, मुल्ला शेख़ मुसायक पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त एका हथ्थ रखाइंदा। तेरा अन्त करे करतार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। नानक नाम कर उज्यार, पंज तत्त तत्त कुड़माईआ। शब्द शब्द बोल जैकार, लख चुरासी करे पढ़ाईआ। देवत सुर दए अधार, असुर माण रखाईआ। किन्नर यच्छप दए उठाल, नाद अनादी इक्क सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी वेखे चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। चार वरनां कर बहाल, बरन अठारां फंद कटाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, ऊँच नीच दए वड्याईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, हरि जू बैठा आसण लाईआ। नाम सति इक्क सिखाल, सति सति करे पढ़ाईआ। एकँकारा पुरख अकाल, अकल कला जणाईआ। आदि अन्त करे प्रितपाल, जुग जुग सेव कमाईआ। एका दीपक जोती बाल, नूर नूर दीपक दीप करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करना, करनहार करतारा। एका जोती दस दस रूप वरना, पंज तत्त वेखे काया जगत अखाड़ा। ना जम्मणा ना कदे मरना, शब्दी शब्द हो उज्यारा। पुरख अकाल एको सरना, एका गुरू गुरुदुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। अपर अपारा खेल करतार, हरि करता आप कराईआ। एका जोती दस अवतार, गुर गुर रूप वटाईआ। सतिगुर खेल करे अपार, बेअन्त बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। पुरख अकाल कर विचार, विचार विचार नाल मिलाईआ। पूरब लहिणा दए उतार, लेखा लेखे विच पाईआ। दुष्ट दमन दमन उठाल, हेमकुण्ट कुण्ट समाईआ। बेकुंठ निवासी हो दयाल, लाल आपणा आप प्रगटाईआ। चौथे जुग हल करे सवाल, बण सवाली सवाल फेर ना कोए रखाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा दए वजाईआ। चौथे जुग बेमिसाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह करे खेल, हरि गोबिन्द गोबिन्द आपणी धार चलाइंदा। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादी सागर सिन्ध, अमृत सोमा आप प्रगटाइंदा । आप बणाई आपणी बिन्द, नादी सुत नाउ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

आपणा खेल आप वरताइंदा। साचा खेल करे भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। गोबिन्द वखाए इक्क निशाना, सचखण्ड खण्ड रुशनाईआ। पुरख अकाल शाह सुल्ताना, सीस आपणे ताज टिकाईआ। जोधा सूर मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाईआ। गुर पीरां देवे दाना, पीर पैग़म्बरां झोली आप भराईआ। आपणा नाउँ धुर फ़रमाणा, जुग जुग रिहा सुणाईआ। अन्तर मेट सर्ब निशाना, जोती जोत लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा दए सुणाईआ। सच संदेस पुरख अकाल, एका आप जणाया। कोटन कोटि चौकड़ी जुग बीते काल, काल काल रूप वटाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बणदे रहे दलाल, बण दलाली वणज कराया। अन्त हल्ल ना होया किसे कोलों सवाल, हरि का भेव किसे ना पाया। आपणी घालण गए घाल, घाली घाल मुड़ के वेखण कोए ना आया। जुग चौकड़ी बणदे रहे बेहाल, बहबल हो हो हरि अग्गे आपणा हाल सुणाया। तेरा त्रैगुण माया वड्डा जंजाल, लख चुरासी रिहा फसाया। तेरा खेल श्री भगवान, समझ विच किसे ना आया। तेरा नाउँ सारे गाण, कोटन कोटि नाउँ रखाया। तेरी कोई ना करे पहचान, पहचान विच कदे ना आया। तूं जुग जुग लोकमात बणे महिमान, आपणा फेरा पाया। जे कोई वेखे तेरा सच निशान, तेरा रूप रंग नज़र किसे ना आया। जिस किरपा करें आप भगवान, सो तेरा दरसन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द गुर इक्क उठाया। गुर गोबिन्द शब्दी पूत, पिता पूत वड्याईआ। लेखा जाणे साचे सूत, तन्दी तन्द तन्द बंधाईआ। जुग चौकड़ी आवा जाए ऊत, अन्त अन्त ना कोए वखाईआ। सारे वसदे गए पंज तत्त काया भूतक भूत, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा अन्त इक्क वखाईआ। कलयुग तेरा अन्त दस्से भगवान, आपणा शब्द जणाइंदा। मुहम्मद उम्मत होए शैतान, शरअ शरीअत वेख वखाइंदा। गोबिन्द प्रगटे विच जहान, लोकमात फेरा पाइंदा। पुरख अबिनाशी देवे दान, साची वस्त इक्क वरताइंदा। चार जुग दे चार निशान, चारे बाले गोद सुहाइंदा। खेले खेल खेल महान, हरि ख़ालक भेव रखाइंदा। दोहां थल्ले रखे आण, तेरी लग्गी जड़ उखड़ाइंदा। छोटा बाला मुहम्मद चुकाए तेरा माण, वड्डा कलयुग तेरा पन्ध मुकाइंदा। तीजा चौथा झूजे विच मैदान, मर्द मर्दानगी इक्क वखाइंदा। लख चुरासी कर कुरबान, कलयुग करबला वंड वंडाइंदा। पीर पैग़म्बर होण हैरान, गुर अवतार वेख वखाइंदा। करे खेल हरि भगवान, भेव कोए ना पाइंदा। पंज तत्त नाता तोड़ जहान, पिता पूत ना कोए अख्वाइंदा। पंज प्यारे कर परवान, चार यारी पन्ध मुकाइंदा। साचा अमृत पीण खाण, नाम खण्डा विच फिराइंदा। आत्म परमात्म इक्को आण, परम पुरख मेल मिलाइंदा। वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू सारे गाण, वाह वाह गुरू पुरख अकाल इक्क जणाइंदा।

७८६
११

पंज तत्त काया सब दा मिटणा निशान, वेले अन्त नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वस के गए जगत मकान, मकान फनाह सब नूं आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव दस्से करतारा, करनहार आप अख्वाइंदा। कलयुग आए अन्तिम वारा, अन्त अन्त वेख वखाइंदा। चारों कुण्ट पावे सारा, दहि दिशा फोल फोलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द नाल मिलाइंदा। रवि ससि दए सहारा, एका गुण वखाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां वेख अखाड़ा, निरगुण निरगुण नाच नचाइंदा। लोकमात हो उज्यारा, लख चुरासी आप जगाइंदा। एका शब्द बोल जैकारा, जै जैकार इक्क कराइंदा। चार जुग दा पार किनारा, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। सच संदेसा देवे इक्को वारा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। शब्दी शब्द खेल न्यारा, दिस किसे ना आइंदा। आदि जुगादी साची कारा, करता पुरख आप कमाइंदा। लेखा मंगे वारो वारा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। लोकमात लाए सच दरबारा, सचखण्ड रूप वटाइंदा। साचे तख्त बह सच्ची सरकारा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। पूरब लेखा जाणे जानणहारा, चारे वेद फोल फोलाइंदा। शास्त्र सिमरत नैण उग्घाड़ा, पुराण पुराणी वेख विचारा, गीता ज्ञान पावे सारा, अञ्जील कुरान पड़दा लाहइंदा। खाणी बाणी वेखे वेखणहारा, भेव अभेद आप जणाइंदा। गुर अवतार पुछदा रिहा वारो वारा, जुग जुग साची सेव समझाइंदा। सारे कट के गए वगारा, बण हुक्मरान आपणा हुक्म ना कोए चलाइंदा। अन्तिम डिगे इक्क दुआरा, दोए दोए सीस सर्ब झुकाइंदा। मुहम्मद बैठा अद्धविचकारा, परवरदिगारा राह तकाइंदा। गोबिन्द मंगे इक्क सहारा, पुरख अकाल ओट रखाइंदा। पुरख अकाल जाणे जानणहारा, आप आपणी दया कमाइंदा। सच संदेसा नर नरेसा दिता इक्को वारा, वीह सौ सतारां सतारां हाढ़ी हुक्म सुणाइंदा। चार जुग दे उठो यारा, यार यारी वेख वखाइंदा। मैं लिख लिख सब दा लेखा रख्या वारो वारा, हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाइंदा। धुर संदेसा हाढ़ सतारां, हरि हरि आप सुणाया। उठो सारे करो विचारा, की हरि हरि खेल रचाया। जिस दी गाउँदे आवो वारा, लिख लिख जीवां जगत पढ़ाया। जिस दा तकदे आए सहारा, दोए दोए सीस झुकाया। जिहनूं कहिन्दे रहे परवरदिगारा, बेऐब नाम खुदाया। जिहनूं कहिन्दे राम राम प्यारा, सो राम वेस वटाया। जिस नूं कहिन्दे एकँकारा, आपणी अकल कला जणाया। जिस दे कोलों मंगदे रहे भण्डारा, आपणी खाली झोली भराया। जिस नूं बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह आए विच संसारा, सो आपणा अन्त रिहा समझाया। जिस दा हथ्थ ना आया कोई किनारा, साचा पत्तण ना कोए वखाया। सो प्रगट होया महांबली अवतारा, आप आपणा बल धराया। जोती

७६० ११

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाया। सच संदेसा रिहा घल्ल, हरि जू हरि हरि आख सुणाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी करदा रिहा वल छल, अछल अछल वेस वटाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात आए चल, हुक्मे अंदर सर्ब फिराया। अन्तिम जोती गए रल, आपणा मूल मुकाया। बिन अग्नी गए ढल, सच कुठाली आपे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सारे इक्को वार लए उठाया। सारे उठो करो ध्यान, हरि हरि आख सुणाइंदा। चार जुग जुगत ज्ञान, गुर सतिगुर वेख वखाइंदा। आपणा आपणा दयो ब्यान, दूजा संग ना कोए मिलाइंदा। तख्त बैठा हुक्मरान, आपणा हुक्म सुणाइंदा। शाह पातशाह नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। जुग जुग लेखा मंगे आण, आपणे भाणे सर्ब वखाइंदा। नेत्र खोलो करो पछाण, कवण हरि जू रूप वटाइंदा। जिस नूं मन्नदे रहे निरगुण श्री भगवान, सो कलयुग वेख वखाइंदा। आपणा लेखा दयो आण, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क पुचाइंदा। सच संदेसा गया पुज, हरि शब्दी आप पुचाइंदा। सब दा भेव खुलणा गुझ, हरि पड़दा आप उठाइंदा। लोकमात जा के जगत प्यार विच गए रुझ, आपणा आपणा राह सर्ब चलाइंदा। सब दा दीवा गया बुझ, नज़र कोई ना आइंदा। नाल लै के ना आया कोई कुझ, खाली हथ्थ सर्ब वखाइंदा। मेरे चरनां ताईं कोई गया पुज, जिस आपणी दया कमाइंदा। कोटन कोटि अद्धविचकारे आपणा भार बैठे सुट्ट, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पैंदी रही लुट्ट, ठग्ग चोर यार ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क समझाइंदा। सच संदेसा सुणी बात, गुर पीर अवतार लैण अंगड़ाईआ। बौहड़ी बौहड़ी कलयुग अन्तिम आई वाट, चौकड़ी जुग गए पन्ध मुकाईआ। असीं बड़े खुशी बैठे आपणे घाट, आपणा पन्ध मुकाईआ। कोई ना पुच्छे साची वात, आपणा बल आए रखाईआ। कोई गाए रिहा गाथ, कोई कृष्न रिहा मनाईआ। कोई अष्टभुज मंगे साथ, कोई देवत देव सीस झुकाईआ। कोई कहे भोला नाथ, कोई ब्रह्मे माण वड्याईआ। कोई कहे विष्नूं वसे पास, कोई गणेश सीस झुकाईआ। कोई कहे चार वेद पुजावण आस, कोई कहे पुराण अठारां देण वड्याईआ। कोई कहे गीता ज्ञान त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथा होए सहाईआ। कोई कहे ईसा होए सज्जण साक, सगला संग रखाईआ। कोई कहे मुहम्मद पाकी पाक, पत्तत पुनीत दए कराईआ। कोई कहे नानक जुड़या नात, पंज तत्त सेव रहे कमाईआ। कोई कहे गोबिन्द मिल्या घाट, साचा बेड़ा लए चलाईआ। नानक गोबिन्द कहे वेखो पुरख अबिनाश, साडी चले ना कोए चतुराईआ। असीं वेखण आए रास, हरि जू की की खेल रचाईआ। इक्को वस्त रखी पास, हरि हरि नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सब दा लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। उठो सारे खोल्हो अक्ख, हरि हरि आख सुणाया। निरगुण निराकार अजूनी रहित होया प्रतख, सैभं भंग ना कोए कराया। जिस ने आदि जुगादि निरगुण सरगुण कीता वक्ख, सरगुण निरगुण आपणा खेल कराया। जुग जुग मार्ग देवे दस्स, साचा राह आप चलाया। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा वेस वटाया। अन्तिम सब दा खेड़ा करे भट्ठ, बण भठयारा अग्न तपाया। किसे दा रहिण दा देवे कोई हठ, बिन आपणे नाउँ ना कोए वड्याआ। जो आया सो गया वहीर घत, बण पाँधी पन्ध मुकाया। इक्को गोबिन्द लग्गी लेखे रत्त, रुत्त रुत्तड़ी वेख वखाया। जानणहारा कमलापति, कमल नैण बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क समझाया। सच संदेसा सुणया तेरा, त्रैभवण तेरी वड्याईआ। चार जुग दा हेरा फेरा, दिन चार चार मंग मंगाईआ। दो सौ छपंजा दिन दा होया निबेड़ा, अन्तिम वेला गया आईआ। असीं सारे भुल्ले दस्सीए केहड़ा केहड़ा, तेरे अग्गे ना कोए चतुराईआ। जे बोलीए अग्गे होए झेड़ा, झेड़ा तेरे दर ना भाईआ। तेरा वेख्या खुल्ल्हा वेहड़ा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरे दर ते पा पा गए फेरा, तेरा घट किछ ना जाईआ। तेरी मेहर नज़र विच तेरी मेहरा, मेहरवान तेरी सरनाईआ। असीं आ गए तेरे विच घेरा, रस्ता कोए नज़र ना आईआ। ना कुछ मेरा सब कुछ तेरा, तेरा मेरा एका रंग वखाईआ। तेरे हुक्म अंदर लोकमात लाया डेरा, छप्पर छन्न इक्क छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए समझाईआ। उठो वेखो आए चल, हरि सब दे चलाण रिहा कराईआ। चार जुग दा निकले जन, भरम भुलेखा दए मिटाईआ। सारे सुणो ला के कन्न, कन्ना मुक्ता सब दा दए उडाईआ। जुगा जुगन्तर बेड़ा रिहा बन्न्ह, बन्न्ह बन्न्ह आप चलाईआ। जिसदा भाणा रहे मन्न, सो दस्से इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे चार चार दिन अन्तिम दए मुकाईआ। चार जुग दे मुक्के दिन, वेला अन्तिम आया। विष्नूं कहे मैं रिहा गिण, दिवस रैण ध्यान लगाया। ब्रहमा कहे मैं वेखां भिन्न भिन्न, हरि भिन्नड़ा रूप वटाया। शंकर कहे मैं वेखां चिन्न, चित्रकार नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार चार पन्ध मुकाया। त्रैगुण कहे मेरे बीते दिवस, वेला वक्त गया आईआ। पंज तत्त कहे मेरी मिटी ना हिरस, हरि जू अचरज खेल रचाईआ। करोड़ तेतीसा कहे असीं रहे तरस, साडी तृष्ना ना पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा पन्ध मुकाईआ। तेई अवतार करन पुकार, कूक कूक सुणाया। चार जुग दे मंगे दिन चार चार, उह भी बैठे पन्ध मुकाया। लेखा देणा प्या धुर दरबार, धुरदरगाही मंग मंगाया। अग्गे दिसे ना कोई विचार, विचार करे ना कोई

सलाहया। बिन कलम दवातों होए खुआर, कलम शाही ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। तेई अवतार इक्क दूजे नूं कहिण, मता मते नाल पकाईआ। चलो चलीए चल के वेखीए नैण, हरि जू की की खेल वरताईआ। सानूं लुकया कोई ना देवे रहिण, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सानूं आपणयां जनां कोल देवे बहण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। खुलड़े केस गल पल्लू पाया पाईए वैण, आपणा दुखड़ा हाल सुणाईआ। असीं तैनूं बणाया साक सज्जण सैण, तेरे उत्ते ओट रखाईआ। तूं आया अन्त लेखा लैण, तेरे हथ्थ तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वरताईआ। साचे भगतां हरि जू सद्दा, एका एक जणाया। सारे छड्ड के आओ हद्दां, आपणी हद्द वखाया। मुकामे अंदर हरि कोई बध्धा, जुग जुग गेड़ भुवाया। गृह गृह नाद एका वज्जा, हरि हरि आप सुणाया। लोकमात तुहाढ्ढी रखदा रिहा लज्जा, निरगुण सरगुण वेस वटाया। बिन पड़दिउँ पड़दा कजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। दर दर घर घर फिरदा रिहा भज्जा, बण पाँधी पन्ध मुकाया। किसे दीआं चारदा रिहा मज्झां, किसे दी छप्परी आण छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत अठारां रिहा उठाया। भगत अठारां करन विचार, इक्क ध्यान लगाईआ। चार जुग दे दिन चार, चार आपणा वक्त गए लँघाईआ। अन्तिम वेला होया सिक्दार, बण सिक्दारी हुक्म सुणाईआ। चल के आउणा सच दुआर, घर साचा इक्क वखाईआ। पुरख अबिनाशी लहणेदार, सब दा लहिणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत अठारां बण पाँधी, एका राह तकाया। आसा तृष्ना थक्की मांदी, एका बल वधाया। चारों कुण्ट अन्धेरा आंधी, साचा नूर ना कोए रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। सच संदेसा ईसा मूसा, पैग़म्बर पैग़ाम आप जणाईआ। तन पहनाए काला सूसा, सूरबीर वड वड्याईआ। इक्क वखाए सच हदीसा, पिछली वेखे सर्ब पढ़ाईआ । खाली करे सब दा खीसा, खलकत रोवे मारे धाहींआ। आपणा चिहरा वेखो आपणा शीशा, जो कर्म गए कमाईआ। आपे खाणा आपणा पीसा, हरि जू चक्की इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर बुलाए बेपरवाहीआ। ईसा दोए नेत्र रो, नैणां नीर वहाया। बौहड़ी बौहड़ी उम्मत उम्मती वध्या मोह, मोह मुहब्बत इक्क वखाया। शरअ शरीअत बीज बो, मुहम्मद संग संग निभाया। जीव जंत कोह कोह जगत हलाली नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाया। मुहम्मद रोवे चार यार, यारी यार ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। चारे कुण्ट आई हार, सगला संग ना कोए वखाईआ। मुल्ला मुसायक होए खुआर, ख़लक ख़ुदाए

रही कुरलाईआ। कलमा कलाम ना कोई प्यार, साचा काअबा ना कोए वखाईआ। बेआबा मरे सर्ब संसार, आबेहयात ना कोए पिलाईआ। अद्धविचकार बैठा रोवां ज़ारो ज़ार, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी दस्स के गया इक्क गुफ़तार, आपणा सबक पढ़ाईआ। चौदां सदीआं तेरी रफ़तार, रफ़ता रफ़ता आप चलाईआ। अन्तिम बसता बन्न्ह होवां त्यार, सिर आपणा भार उठाईआ। दस्त बदस्ता दए उधार, कर्ज़ा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल हरि करतारा, एका एक जणाइंदा। नानक निरगुण कहे सति सति जैकारा, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। एका एक एकँकारा, अकल कला वेस वटाइंदा। महांबली इक्क अवतारा, आपणा बल आप धराइंदा। चार वरनां दए सहारा, जागरत जोत जोत जगाइंदा। गोबिन्द बणे इक्क लिखारा, लिख लिख लेख सर्ब समझाइंदा। कलयुग अन्तिम अन्त किनारा, चार जुग दा पन्ध मुकाइंदा। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जाता वेस वटाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सम्बल आपणा आसण लाइंदा। पूत सपूता पावे सारा, बाल अञ्याणा गोद बहाइंदा। अन्त खेल करे न्यारा, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार सद्दे सच दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। सचखण्ड बणाए लोकमात आप बैठ सच्चे दरबारा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुरदरगाही खेल कराइंदा। धुरदरगाही खेल अवल्ला, एका एक कराइंदा। वसणहार सच महल्ला, सच संदेस इक्क सुणाइंदा। जुग जुग फड़ावणहारा पल्ला, एका पल्लू गंढु पुवाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर रला, रल मिल आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत जोत रूप मिला, जोत निरँजण आदि जुगादि वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल अन्तिम अन्त, हरी हरि हरि आप कराईआ। रूप धर श्री भगवन्त आपणा बल जणाईआ। लेखा जाण जुगा जुगन्त, जुग जुग पड़दा रिहा उठाईआ। गुर अवतार वेखे सन्त, भगवन्त मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा एका एक रखाईआ। सच संदेसा सतारां हाढ़, गुर अवतार मन मनाया। पहली चेत लग्गणा इक्क अखाड़, पुरख अबिनाशी लए लगाया। रल मिल सारे करीए विचार, सलाह सलाह नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा दए समझाया। गुर अवतार होए इक्ठे, एका मता पकाया। बिन ढाहिउँ असीं सारे ढट्ठे, आपणी कंड लवाया। करे खेल पुरख समरथे, भेव कोए ना आया। जिस दी गाउँदें रहे गाथे, सो गाथा रिहा सुणाया। जिस दा तकदे रहे साथे, सो आपणा साथ जणाया। जिस दे चढ़दे रहे राथे, रथ रथवाही वेस वटाया। जिस दा दस्स के आए पूजा पाठे, सो साथों पुच्छ पुछाया। आउ रल मिल

सोचीए सानूं केहड़े पए घाटे, घाटा कोई नज़र ना आया। असीं जगत चला के आए हाटे, एका हरि हरि नाम विकाया। अन्तिम मुड़ के वेखण गए ना खाते, कवण मन्ने कवण रिहा भुलाया। आपणी भुल्ल ना दस्सी पुरख अबिनाशे, बैठे मुख शरमाया। कवण बिध पति साडी राखे, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। खाणी बाणी पढ़ पढ़ गा गा दस्सदे रहे खुलासे, हरि का ख़ास भेव ना आया। जिस दी गोपी काहन पाउँदे रहे रासे, मंडल मण्डप नाच नचाया। सो अन्तिम साडे सब दे वेखे तमाशे, वेखो की की हुक्म सुणाया। ना रोईए ना आवण हासे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वरताया। गुर अवतार बणया संग, पीर पैग़म्बर नाल रलाया। आउ रल मिल मंगीए मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहया। तेरा नाउँ वजाउँदे रहे मृदंग, जुग जुग मात सुणाया। तेरी किरपा तेरे दुआरे आए लँघ, तेरी चरन मिली सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सारे कहिण हो दलेर, तेई अठारां दस मता पकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दूर दुराडे रहे वेख, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कोई ना मेटे साडी रेख, लेखा सके ना कोए चलाईआ। साडी चले ना कोई पेश, पेशवा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। सारया मता गया पक्क, इक्क सलाह जणाईआ। नानक निरगुण वल रहे तक्क, नेत्र नैण नैण उठाईआ। तूं सब दा सांझा तेरे उत्ते ना कोई शक्क, सब दा शंका देणा मुकाईआ। परवरदिगार कोले पुच्छो हक़, हक़ हक़ भेव खुल्हाईआ। असीं तेरा मार्ग आए दस्स, बण रैहबर राह चलाईआ। तेरा गा गा आए जस, जस वेद पुराण पढ़ाईआ। तेरे हुक्मे अंदर फस, लोकमात वेस वटाईआ। साडा कोई ना चले वस, तेरे हथ्थ तेरी शहिनशाहीआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा रख, बैठे सीस झुकाईआ। चार जुग दा हाल दस्स, सारे रहे कुरलाईआ। साडी अन्तिम होई बस, वास्ता रहे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। निरगुण नानक करके नाह, एका एक रिहा जणाईआ। मैं हां विच हां रिहा मिला, मैं तूं ना कोए रखाईआ। चाकर ख़ाक बण सेवा आया कमा, चार वरन सेव लगाईआ। चार जुग दा लम्मा राह, पैंडा सके ना कोए मुकाईआ। प्रभ अग्गे मैं देणी ना कोई सलाह, हुक्म चलणा सदा रज़ाईआ। आपणी आपणी करनी लैणी पा, करता पुरख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। नानक कहे जोत नूरानी, एका एक जणाया। चार जुग दा खेल दीवानी, मेरे मन भाया। चौथे जुग होई हैरानी, गुर अवतार रहे घबराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा इक्क लगाया। सच दरबार लगा करतार, हरि जू हरि लगाइंदा। गुर अवतार कर विचार, एका राह वखाइंदा। मुहम्मद उठया बेज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा।

मैं सब नूं करया खुआर, ख़ालक ख़ाक विच रुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। मुहम्मद उठे मारे धाह, कूक कूक सुणाईआ। अल्ला राणी नाल होया निकाह, खावंद बीवी ना कोए प्रनाईआ। मीआं पकड़े ना कोई बांह, मेहरवान नज़र कोए ना आईआ। मैं वेख्या जगत मकान, चौदां तबक फेरी पाईआ। अन्तिम हुंदा दिसे फनाह, ना सके कोई बचाईआ। मेरी उम्मत करया गुनाह, मेरे नेत्र नैण शरमाईआ। गोबिन्द बच्चे नीहां हेठां दिते दबा, जड़्ह आपणी आपे उखड़ाईआ। दो गढ़ी चमकौर दिते भेंट चढ़ा, गोबिन्द आपणा वेस वटाईआ। सीस नाल ताज़ वटा, ताज़ सीस नाल वटाईआ। आपणा सुनेहड़ा गया सुणा, सत्थर सूलां सेज हंढाईआ। अन्तिम आवे बेपरवाह, सब दा लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। मुहम्मद रोवे करे गिरयाज़ार, किरन किरन नीर वहाईआ। बौहड़ी बौहड़ी होया खुआर, खुदी कम्म किसे ना आईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, चन्द चांदना ना कोए चमकाईआ। परवरदिगार मारे मार, ना सके कोए बचाईआ। अद्धविचकार बैठा ना आर ना पार, बेड़ा बन्न्हे कोए ना लाईआ। सतारां हाढ़ गया दरबार, दरबार अंदर वड़ना हुक्म ना कोए सुणाईआ। दूर दुराडा कर निमस्कार, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। मैं बणया गुनाहगार, अवगुण मेरी चतुराईआ। कोई नज़र ना आए यार, यार यारी गए गंवाईआ। अल्ला राणी नार मुटयार, आपणा पल्लू गई छुडाईआ। हाणी हाणी ना करया कोए प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वरताईआ। आपणा भाणा वरताए जग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। दस गज दूर दुराडे लग्गे अग्ग, नेड़े आउणा मूल ना भाइंदा। मेरे नेत्र तक्कण हज्ज, मेरा नैण नैण शरमाइंदा। कौण लावां अग्गे पज्ज, घट घट अन्तर हरि हरि जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। दूर दुराडा कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। आया चल तेरे दरबार, हाढ़ सतारां फेरा पाईआ। अग्गे मिले ना कोए सहार, राह खैहड़ा नज़र ना आईआ। किरपा कर मेरे करतार, अभुल्ल तेरी वड्याईआ। मैं रुल होया खुआर, मेरी कल ना कोए रसाईआ। मैं तुट्टा फल तेरी गुलज़ार, जगत महक ना कोए महकाईआ। बूटा हुल्ले अन्तिम वार, साचा फल ना कोए लगाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, दे मति रिहा समझाईआ। तेरा लहिणा गोबिन्द दए उतार, दूजे हथ्थ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल दस्से अकाल, अकल कला जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल, दयानिध दया कमाइंदा। भगत भगवन्त रिहा उठाल, उठ उठ वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी हल करे सवाल, बण सवाली वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

७६६
११

कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि कराउणा, एका एक जणाईआ। कबीर जुलाहा आप उठाउणा, भेव अभेद समझाईआ। धन्ने जट्ट लहिणा झोली पाउणा, कलयुग अन्तिम माण रखाईआ। नामा छप्पर वेख वखाउणा, बणी छप्परी आप सुहाईआ। अगला लेखा झोली पाउणा, बहत्तर वार दरस दिखाईआ। बहत्तर रूप हरि प्रगटाउणा, एका रात सेव कमाईआ। भिन्नड़ी रैण रंग चढ़ाउणा, रैण भिन्नी खुशी मनाईआ। गीत सुहागी एका गाउणा, गोबिन्द राग अलाईआ। नामे लेखा पूर कराउणा, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। छप्पर पिच्छे दर दरबार सुहाउणा, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। बहत्तर भगत आप प्रगटाउणा, परम पुरख जोत जगाईआ। सच सच हरि खेल खिलाउणा, सच सच दए वखाईआ। सचखण्ड दुआरा लोकमात बनाउणा, छत्ती छत्ती बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। लोकमात सच दरबार, हरि जू हरि हरि आप बणाइंदा। भगतां दए इक्क सहारा, भगवन आपणा खेल खिलाइंदा। नामे तेरा नाम उज्यारा, धन्ने तेरा धन्न वधाइंदा। बिन पढ़यां देवे शब्द भण्डारा, बिन लिखयां लेख बणाइंदा। बिन मंग्गयां देवे दान करतारा, अनडिठड़ी वस्त झोली पाइंदा। बण सेवक सेवा करे विच संसारा, रूप अनूप धराइंदा। महल अटल उच्च मनारा, भगत दुआरा आप सुहाइंदा। तख्त बणाए एकँकारा, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाइंदा। सत्तरां देवे इक्क सहारा, गोबिन्द मेला मेल कराइंदा। गुर चेला वसे इक्क दुआरा, दूई द्वैती पन्ध मुकाइंदा। वरन बरन देवे सच सहारा, ज़ात पात फंद कटाइंदा। राग रागनी पार किनारा, छत्ती राग ना कोए अलाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण निउँ निउँ करन सर्ब निमस्कारा, खाणी बाणी सीस झुकाइंदा। साचे तख्त बह सच्ची सरकारा, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। विष्नूं आए चल दुआरा, ब्रह्मा संग रखाइंदा। भोला नाथ मंगे छारा, धूढ़ी धूढ़ ख़ाक रमाइंदा। बाशक तशका कंठ माला, साचा स्वांग वरताइंदा। एका ओट तेई अवतारा, ईसा मूसा आप समझाइंदा। मुहम्मद तेरा इक्क सहारा, साचे भगत आप बणाइंदा। भगतां अग्गे करीं निमस्कारा, साची सिख्या हरि समझाइंदा। हरि जू वेखे वेखणहारा, आपणा नैण खुलाइंदा। आपे कुदरत आपे कादर आपे करनेहारा, आपे आपणा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। बंक दुआरे वसे भगवान, सचखण्ड खेल बणाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात झुलाईआ। निरगुण वसे सरगुण मकान, दिस किसे ना आईआ। जिस दा लहिणा सो देवे आण, देवणहार इक्क हो जाईआ। जिस दा शब्द सो वेखे ज्ञान, ध्यानी ध्यान विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरे परवरदिगार, तेरी बेपरवाहीआ। मैं सुणया तूं सब दा यार, सगला संग रखाईआ। तेरी महिमा अपर अपार, भेव कोए ना आईआ। मेरे

७६७
११

कलमे आई हार, तेरी कला तेरी चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल वरताईआ। मुहम्मद कहे सुण मेरे मीत, मित्र प्यारे मेरा हाल। अचरज वेखी तेरी रीत, तूं खेल करें कमाल। मैं दस्स के आया वसे विच मसीत, तूं मुर्शद वसे मुरीदां नाल नाल। मेरा काअबा होया पलीत, मेरी उम्मत आए ज़वाल। सदी चौधवीं रही बीत, फल किसे ना दिसे डाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वेख आपणा लाल। तेरा लाल निक्का बाला, दुखियां दुःख सुणाईआ। तेरी तसबी तेरी माला, तेरा नाम खुदाईआ। तू ही शाह तू ही कंगाला, शहिनशाह तू ही अख्वाईआ। तू ही मन्दिर तू ही धर्मसाला, तू ही मस्जिद रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम बिन तेरे सब दा मुख होया काला, ना लाहे कोए छाहीआ। मेरा निकलया अन्त दिवाला, पल्ले गंढु ना कोए वखाईआ। बौहड़ी बौहड़ी होए बेहाला, बहबल हो रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क वखाईआ। मेहर नज़र पा मेहरवान, एका मंग मंगाइंदा। तेरे दर ते डिगा आण, दूर दुराडा सीस झुकाइंदा। तेरे भगत करन ध्यान, मैं इक्को मंग मंगाइंदा। तेरा लेख लेख महान, तेरा लेखा मोहे भाइंदा। तेरे हथ्थ मेरा निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को तेरी ओट तकाइंदा। तेरी ओट तक्की आस, आसा इक्क रखाईआ। चौदां सदीआं ना बुझी प्यास, भर प्याला साकी जाम ना कोए प्याईआ। हाढ़ सतारां हो के गया निरास, पहली चेत ओट रखाईआ। तेरे भगतां मैं होया दास, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। मेरी कराउण बन्द खुलास, बन्दीखाना देणा तुड़ाईआ। मेरा कम्म इक्को ख़ास, फतवा देणा ना कोए गुनाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भगतां दए समझाईआ। तेरे भगतां सच महल्ला, हरि जू वेखण आया। दूर दुराडा करके हल्ला, आपणा पन्ध मुकाया। साथ ना मिल्या राणी अल्ला, इक्क इकल्ला फेरा पाया। बिन तेरे होया झल्ला, जंगल जूह उजाड़ दयां दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भगतां फड़ा पल्ला, पल्लू एका गंढु बंधाया। मेरे भगत मेरा रूप, हरि जू हरि हरि आख सुणाइंदा। मेरा भगत मेरा पूत, पिता पूत खेल कराइंदा। मेरा भगत प्रगट होए चार कूट, दहि दिशा रंग रंगाइंदा। मेरा भगत नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च इक्क वखाइंदा। मेरा भगत पीए अमृत घुट्ट, मधुर प्याला हथ्थ वखाइंदा। मेरा भगत पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, जगत शैतान नेड़ ना आइंदा। मेरा भगत मेरे अंदरों पए फुट, मेरी धार समझाइंदा। मेरे भगत मेरी जोत, मेरे नूर डगमगाइंदा। मेरा भगत मेरी गोत, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। मेरा भगत मेरी ओट, ओट इक्को इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भगत आप वड्याइंदा। मेरा भगत मेरा राग, बिन तन्दी तन्द सुणाईआ। मेरा

भगत मेरा वैराग, बण वैरागी खेल कराईआ। मेरा भगत मेरा सुहाग, बण नारी सेव कमाईआ। मेरा भगत मेरा लाड, दूजा होर ना कोए रखाईआ। मेरा भगत मेरी याद, लोकमात करे शनवाईआ। मेरा भगत सुणे मेरी फ़रयाद, बिन भगतां भगवान घर किसे ना जाईआ। मेरा भगत मेरी हद्द, अग्गे कोई लँघ ना आईआ। मेरा भगत मेरी यद्द, बंसावली इक्क बणाईआ। मेरा भगत लख चुरासी नालों होया अड्ड, जगत जंजाला गया तुड़ाईआ। मेरा भगत जूठ झूठ साक सज्जण सैण गया छड्ड, शरअ शरीअत ना कोए प्रनाईआ। मेरा भगत मेरा भार रिहा लद्द, सीस आपणा आप झुकाईआ। मेरा भगत मेरे नाम पीए मदि, दूजा नशा ना कोए रखाईआ। मेरा भगत मेरे दुआरे जाए वस, दूसर कोए रहिण ना पाईआ। मैं भगतां होया वस, मेरी चले ना कोए वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पिच्छों निरगुण सरगुण अंदर गया फस, निकल किसे पासे ना जाईआ। मेरे भगत साचे मन्दिर बह बह रहे हस्स, घर साचे खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दूर दुराडे रहे नट्ठ, कदम कदम करन धाईंआ। बिन रसना जिह्वा गाउँदे आवण, जस, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। तेरे अग्गे साडी बस, बस बैठे ढेरी ढाहीआ। सानूं आपणयां चरनां हेठ झस, साडी दुरमति मैल धुवाईआ। दीन मज़्बां विच गंवाया तेरा रस, जात पात मेरी सफ़ात गई छुपाईआ। तेरा तीर वज्जा कस, दरगाह कोई धाम नज़र ना आईआ। असीं सारे पै गए विच शक्क, निरगुण की की खेल रचाईआ। जेहड़ा साडा पड़दा बैठा ढक, अज्ज पड़दा रिहा चुकाईआ। बिन अग्नीउँ गए पक्क, बूटा सब दा रिहा वखाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश शरअ नक विच पाई नथ्थ, बण कलंदर रिहा नचाईआ। परवरदिगार करे निबेड़ा हक़ो हक, हक़ीक़त वेखे ख़लक खुदाईआ। दूर दुराडा सानूं दिता डक्क, अग्गे वड़न कोए ना पाईआ। भगतां कोलों असीं रहे झक, साडा झक ना कोए खुलाईआ। लोकमात आया आप अणथक्क, आदि जुगादि थक्क कदे ना जाईआ। बण तरखाण लौहण लग्गा सक्क, शब्द कुराड़ा हथ्थ उठाईआ। वसणहारा घट घट, लख चुरासी फोल फोलाईआ। फोलणहारा चौदां लोक चौदां तबक चौदां हट्ट, लोआं पुरीआं कुण्डा लाहीआ। वेख वखाए नट्ठ नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। तेरा नाम सच संदेसा आए दस्स, धुर दा हुक्म जणाईआ। आत्म परमात्म दे के आए रस, सच्चा अमृत इक्क समझाईआ। तेरा पाणी तीर्थ तट्टां आए झट्ट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा पाईआ। तेरे बणा के आए शिवदुआले गुरदुआर मट्ठ, मस्जिद मसीत राह चलाईआ। बिन तेरे सारे होए भट्ठ, तेरा रूप नज़र कोए ना आईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ज़ात पात अंदर गए फस, बैठे इष्ट भुलाईआ। आपो आपणी माला रहे रट, तेरा नाम लए ना कोए लोकाईआ। तेरे अग्गे वास्ता रहे घत, दोए जोड़ पए सरनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को दे दे सांझी मति, पिछली चले ना कोए चतुराईआ। तेरे

दुआरे सत्थर बैठे घत, सत्थर होए सर्ब लोकाईआ। असीं नेत्र वहाईए ना अथ्थ, गुर अवतार पीर पैग़म्बर भरे ना किसे दी कोई गंवाईआ। साडे दूरो जोड़े हथ्थ, हथ्थो हथ्थ लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। गुर अवतार आए नट्ठे, नट्ठ नट्ठ पन्ध मुकाया। बहत्तर गज़ ते होए इक्ट्ठे, रहे ध्यान लगाया। चार जुग दे विछड़े मिले सके, हरि जू मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा सुणाया। गुर अवतार सुणो ला कर कन्न, हरी हरि हरि आप जणाइंदा। सारे मेटो आपणा जन, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। रसना कहिणा धन्न धन्न, पुरख अकाल हुक्म वरताइंदा। चार जुग दा देवणहारा डंन, एका डंका नाम वजाइंदा। जो घड़या सो देवे भन्न, घड़न भन्नणहार आप अख्वाइंदा। जिस ने सब नूं ल्यांदा बन्नृ, हुक्मी बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा सर्ब समझाइंदा। पिछला लेखा कराए याद, हरि जू हरि हरि आप समझाइंदा। मुहम्मद करी इक्क फ़रयाद, गोबिन्द अग्गे मंग मंगाइंदा। परवरदिगार तेरे नाल लडाए लाड, छोटे सुत खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणा हुक्म आप वरताइंदा। गुर गोबिन्द एका धार, आपणी आप जणाईआ। मैं करां खेल हरि निरँकार, निरँकार मेरा खेल कराईआ। मैं चौथे जुग आया अन्तिम वार, छोटी बुध्ध रखाईआ। पुरख अकाल कर प्यार, निक्का बाला गोद चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खुशी आप जणाईआ। गुर गोबिन्द दए सलाह, सब नूं आख सुणाइंदा। पुरख अकाल बेपरवाह, साचे तख्त डेरा लाइंदा। सब दा लेखा वेखे थाउँ थाँ, भुल्ल कदे ना जाइंदा। सच अदालत मंगे ना कोई गवाह, ज़िमनी फेर ना कोए भराइंदा। वकील दलील ना सके दुड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। ना कोई अपील ना दलील, अरदास ना करे अरज़ोईआ। ना कोई मुसद्दी ना वकील, वकालत नजर कोए ना आईआ। करे खेल ख़लल ख़लील, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीअ। अग्गे सुणे ना कोए अपील, साचा फ़ैसला दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा भेव हरि करतार, आपणे हथ्थ रखाइंदा। पहली चेत दिवस विचार, सम्मत सम्मती मेल मिलाइंदा। दर सद गुर अवतार, ईसा मूसा नाल मिलाइंदा। मुहम्मद मंगे मंग अपार, जन भगतां अग्गे झोली डाहइंदा। साचे भगत देण सहार, दर आया गले लगाइंदा। चल के आउणा वारो वार, तख्त निवासी तख्त सुहाइंदा। विष्नूं लै के फूलणहार, सागों पांग सेज सुहाइंदा। ब्रह्मा गाए आपणी वार, सोहला ढोला इक्क सुणाइंदा। शंकर कर सच श्रृंगार, बाशक तशका गल लटकाइंदा। तन भबूती एका छार, हथ्थ त्रिसूल उठाइंदा।

सुरपति इन्द हो त्यार, करोड़ तेतीसा नाल मिलाइंदा। त्रैगुण माया पंज तत्त पिच्छे पिच्छे आवण रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। सत्त समुंदर आए कर पार, रूप अनूप आप वखाइंदा। समेरू पर्बत कर निमस्कार, दर निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। कबीर जुलाहा करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। नानक कहे तेरी धार, निरँकार तेरा रूप नज़र ना आइंदा। गोबिन्द कहे पुरख अकाल, अकाल अकाल खेल कराइंदा। पुरख अबिनाशी कहे सच दुआर, भगत दुआर हरि भगतां माण रखाइंदा। दो जहानां बेड़ा कर कर पार, साचे दर आप बहाइंदा। करे खेल अपर अपार, रूप अनूप आप वटाइंदा। तख्त निवासी एकँकार, साचे तख्त चरन टिकाइंदा। गोबिन्द सूरा कर त्यार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। शब्दी शब्द वड बलकार, बलधारी आप अख्वाइंदा। साचा खण्डा कर त्यार, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। साचे बस्त्र कर शृंगार, आप आपणा रंग रंगाइंदा। नेत्र नैण खोल्ह उग्घाड़, निराकार दरसन पाइंदा। दोए जोड़ करे निमस्कारी, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। चार जुग गुर अवतार जो बण बण गए लिखारी, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। सम्मत अठारां उतरया पारी, इक्क नौ जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारी, दूआ आपणा पन्ध वखाइंदा। सिफ़र सिफ़र ना कोए आधारी, सिफ़रा सिफ़रे नाल उडाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकारी, नव खण्ड पृथ्मी डंक वजाइंदा। सृष्ट सबाई करे ख़बरदारी, आलस निंद्रा सर्ब गवाइंदा। दर बहा गुर अवतारी, पीर पैग़म्बर लहिणा देण चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करन आया, करनहार करतारा। निरगुण आपणा नाउँ धराया, मात पित ना कोए बणाया। आदि अन्त वेस वटाया, जोती जाता हो रुशनाया। कलयुग अन्तिम खेल खिलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी माया। आपणी माया आपे रंग राता, रंग रतड़ा सच्चा माहीआ। आपे देवणहारा साची दाता, आपे लेखा रिहा मुकाईआ। आपे सुणाउंदा रिहा जुग जुग गाथा, आपे करे अन्त सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग अन्तिम हुक्मे राणा, दो जहानां रईयत वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बण निमाणा, दर हरि हरि सीस झुकाइंदा। सति सतिवादी शाह सुल्ताना, एका हुक्म वरताइंदा। ब्रह्मा छड्डणा पए टिकाणा, ब्रह्म आपणे विच मिलाइंदा। भोला नाथ आप समझाउणा, साची सिख्या इक्क रखाइंदा। अन्त कोई रहिण ना पाउणा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। सुरपति इन्द तुट्टा माणा, अभिमान ना कोए जणाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि निरँकार, आपणा आप वरताईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसार, आपणे विच छुपाईआ। गुरमुख साचा कर उज्यार, सिँघ पाल दए वड्याईआ। शंकर तेरा सच अखाड़, जगत जगदीसा आप

लगाईआ। इन्दर तेरा कर मनजीता जित आपणी आप वखाईआ। पुरख अबिनाशी हो त्यार, दो जहानां वेख वखाईआ। सचखण्ड बणा सच्चा दरबार, साचे भगतां दए वड्याईआ। साचे सन्तां कर प्यार, साचे घर मेल मिलाईआ। गरमुखां खोल्ह इक्क किवाड़, एका मन्दिर दए वखाईआ। लेखा लिख सतारां हाढ़, पहली चेत्र पूर कराईआ। गुर गोबिन्द होया त्यार, पारब्रह्म अग्गे करे अरज़ोईआ। साचा हुक्म देवे सच्ची सरकार, सो सब नूं दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। गुर गोबिन्द उठ बलकार, हरि हरि आप जणाइंदा। दर बैठे तेई अवतार, भगत भगवन्त सीस झुकाइंदा। ईसा मूसा नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, नैणां नीर सर्ब वहाइंदा। मुहम्मद करे इक्क पुकार, आपणा वास्ता इक्को पाइंदा। मेरी मन्न अर्ज सरकार, अर्ज़ी आपणे हथ्थ वखाइंदा। तूं लिख के लेख दिता चौदां सदीआं तेरा रहे उधार, अन्तिम तेरा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी दया कर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। गुर गोबिन्द सुण अरज़ोई, एका अर्ज जणाईआ। बिन हरि दुआर मिले ना ढोई, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। लख चुरासी विच्चों हरिभगत मिल्या कोई कोई, सो हरि जू आपणे नाल मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रही सोई, नेत्र जाग ना कोए खुल्हाईआ। बिन मरिउँ आपे मोई, राए धर्म दए सज़ाईआ। धरत मात दर आ के आपणे खुल्हड़े केस रही खोही, कूक कूक रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे इक्क अरज़ोईआ। तेरे अग्गे इक्क अरदास, एका एक सुणाइंदा। तूं वसें भगतां पास, मैं तेरे भगतां ओट तकाइंदा। दर आयां ना करीं निरास, इक्को तेरी आस जणाइंदा। चौदां सदीआं रखीं खाहश, अग्गे वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भुल्यां मार्ग आपे लाइंदा। तेरी वस्त तेरी वंड, वंडणहार तूं अख्वाइंदा। चौदां सदीआं बद्धी गंढ, एका गंढ पुआइंदा। तेरा नूर मेरा चन्द, चौदस चन्द इक्क चढ़ाइंदा। तूं साहिब सदा बख्शंद, सिर सब दे हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मुहम्मद मंग मंगाइंदा। मुहम्मद मंगे मंग बारां मास, रजव मेलाण मास सुणाईआ। शाबान तेरी आस, रमज़ान तेरी कुड़माईआ। शवाल तेरा प्रकाश, ज़ाकीद तेरी शनवाईआ। बज़ोर तेरी रास, सफ़र तेरी वड्याईआ। मुहरम्म वसणा पास, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी माण वड्याईआ। रबी उल अव्वल, तेरा रंग रंगाइंदा। रबी ओलसानी तेरा संग, एका ओट तकाइंदा। जमादीउलअव्वल सूरा सरबंग, तू ही खेल खिलाइंदा। जमादीउलसानी तेरा तरंग, नज़र किसे ना आइंदा। इक्क तिन्न अठ्ठ इक्क तेरां सौ इकासी चढ़या चन्न, चन्द चांदना सर्ब चमकाइंदा। तूं साहिब सदा

बख्शंद, एका नाया मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। पुरख अकाला हो दयाला, आपणी दया कमाईआ। इक्क नौ रहे रखवाला, चौदां सद पूर कराईआ। बीस बीसा सब दा कढ्ढे दीवाला, पिछला लेखा ना कोए जणाईआ। चार वरन होए बेहाला, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क नौ तेरी झोली पाईआ। इक्क नौ हरि हरि धार, तेरी झोली पाइंदा। तीआ साता अद्धविचकार वंडण वंड वंडाइंदा। वीह सौ बिक्रमी हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। बीस बीसा होए ख़बरदार, पिछला लेखा सर्ब जणाइंदा। अग्गे खेल करे निरँकार, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा माण गवाइंदा। तेरा लहिणा मैनूं मन्ज़ूर, मुहम्मद आख सुणाइंदा। मेरा बख्शीं इक्क कसूर, वास्ता तेरे अग्गे पाइंदा। चरनीं रहिण ना देणा दूर, इक्को चरनां ओट तकाइंदा। मेरा नाता तुट्टा गरूर, होर ना कोए वखाइंदा। चौदां सदीआं पाया फतूर, फतवा इक्को इक्क वखाइंदा। कलयुग मैनूं कीता मजबूर, बण संगी संग निभाइंदा। तेरा जल्वा तक्के कोहतूर, मूसा आपणी होश भुलाइंदा। धन्न खेड़ा धन्न मन्दिर धन्न दुआर धन्न काअबा जिस घर वसे हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणी जोत जगाइंदा। मैं अन्तिम मिलणा तैनूं जरूर, अमाम तेरी आस रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप जणाइंदा। आपणे रंग आपे राता, गुर गोबिन्द करे जणाईआ। उठ दुलारे खोल्ह ताका, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाईआ। चार जुग पिछला साका, गुर अवतारां दए सुणाईआ। केहड़ी गल्ले प्या घाटा, पड़दा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। गुर गोबिन्द गुर आया, आया आपणी वार। प्रभ अग्गे सीस झुकाया, झुक झुक करे निमस्कार। तेरा दर मोहे भाया, शहिनशाह सच्ची सरकार। पुरख अकाल तू ही नज़री आया, तेरा रूप अगम्म अपार। सृष्ट सबाई गया समझाया, उच्ची कूक कूक पुकार। बिन हरि संग कोए ना जाया, अन्तिम सर्ब होण खुआर। जो जो आया सो आपणा राह गया चलाया, एका भुलया हरि निरँकार। पुरख अबिनाशी वेख वखाया, सचखण्ड निवासी वेखणहार। अन्तिम सब नूं दए सज़ाया, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणा वर सच्ची सरकार। देणा वर तेरा भरोसा, तेरी ओट रखाईआ। बच्चयां नाल पिता दा काहदा रोसा, रुस्से लए मनाईआ। गलवकड़ी लै के लए बोसा, मुखड़ा मुख मुख सलाहीआ। तेरा झल्लया ना जाए जोशा, तेरा बल तेरी चतुराईआ। तेरा भाणा ना होवे होछा, देवे सर्ब सज़ाईआ। कलयुग लख चुरासी तत्त होया कोसा, घर घर अग्नी लाईआ। बिन तेरे नामों जीव जंत होया थोथा, ठोकर रिहा खाईआ। मैं दस के आया पुरख अकाल मिले किसे विच्चों

ना पोथा, पुस्तक शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी राह रही जणाईआ। कलयुग जीव ला ला बैठे घोटा, रसना जिह्वा रहे सुणाईआ। अंदरों मन होया खोटा, कूड़ी क्रिया लई प्रनाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद अंदर भरी ना किसे दी पोटा, माया ममता होई हल्काईआ। साध सन्त जत रखे ना कोई लंगोटा, धीरज धीर गए गंवाईआ। हिन्दू मुस्लिम फड़या हथ्थ विच लोटा, तेरा नाम रसना रस ना कोई गाईआ। तेरा गुरसिख होया खोता, मदि पी पी ख़ाक उडाईआ। कलयुग अंदर सब ने मारया गोता, कोई सके ना बाहर कढ्ढाईआ। तेरा नाम ना मिले किसे तोता, वांग गनका दए पढ़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सारे रोता, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरा प्रेम किसे ना पाया तूं जट्टां घर वड़ के लाएं जोता, तूं सब दी जड़्ह दए उखड़ाईआ। तैनूं साडे तिन्न हथ्थ लम्भा इक्को कोठा, गोबिन्द अंदर डेरा लाईआ। जन भगतां देवें बहुता बहुता, बिन मंग्गयां आप वरताईआ। लख चुरासी जाए औतां, पिता पूत ना कोए मिलाईआ। नारी छड्डे आपणा खौता, खौत नार ना कोए हंढाईआ। पंडत पांधे साफ़ कर कर बैठे चौंका, आत्म अन्तर ना कोए सफ़ाईआ। मुल्ला शेख़ मस्जिद अंदर मन्दिर बण सवान भौंका, मसला पढ़ पढ़ रिहा सुणाईआ। आत्म अन्तर साचा अमृत ना किसे तरौंका, अठसठ रहे नहाईआ। हरि का नाम सच श्रृंगार ना करया किसे शौंका, वेसवा रूप सर्ब लोकाईआ। नाम गाना साचे गुट ना बन्न्ह्या पौंचा, बंधी बंध ना कोए पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मंगे इक्को वर, भुली तेरी सर्ब लोकाईआ। तेरी करनी गए भुल्ल, ना चले कोई चतुराईआ। बिन तेरे हरि जू गए रुल, हरि के पौड़े ना कोए चढ़ाईआ। तेरी फुलवाड़ी विच्चों टुट्टा फुल, पत डाल्ह्ही ना कोए महकाईआ। झूठी माया गए रुल, आपणा आप गंवाईआ। भाग ना लग्गा गोबिन्द कुल, चार वरन ना संग निभाईआ। कोई ना तुलया साचे तोल, झूठे कंडे तुली लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। गुर गोबिन्द गोबिन्द तेरा माण, तेरा तेरे विच रखाइंदा। मेरा रूप शब्द निशान, शब्द तेरा नाउँ प्रगटाइंदा। तेरा खेल दो जहान, दो जहानीं आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सालस इक्क बणाइंदा। सच सालस बण जमात, जुम्मला आपणा वेख वखाईआ। चार वरन दी वेख वात, वाता वरन दए समझाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार जो दस्स दस्स गए गाथ, पढ़ पढ़ चले ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सब दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार सुणो संदेसा, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी सब दा मुक्कणा लेखा, अन्त कोए रहिण ना पाइंदा। ना कोई पूजे विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, हनवन्त बीर ना कोए मनाइंदा। खाणी बाणी करे ना कोए आदेसा, गुर

अवतार ना सीस झुकाइंदा। सब दा पिछला चुक्कणा ठेका, ठेकेदार अग्गे कोई नज़र ना आइंदा। मन्दिर मस्जिद गुर दर कढ्ढदे रहे हेका, साचा राग ना कोए अलाइंदा। नर नरायण नज़र किसे ना पेखा, लख चुरासी जीव जंत कुरलाइंदा। किसे हथ्थ ना आए धारी केसा, मूंड मुंडाए मुख शरमाइंदा। रो रो थक्के मुल्ला शेख़ा, मसला हल्ल ना कोए कराइंदा। साध सन्त धर धर भेखा, जंगल जूह उजाड़ डेरा लाइंदा। कलयुग घर घर करदा फिरे झेडां, आपणी खुशी मनाइंदा। लख चुरासी जीव जंत राए धर्म दा वाड़ा भेडां, एका वार बन्द कराइंदा। अन्तिम गोबिन्द मारे ठेडा, सब नूं मूँह दे भार सुटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्म वरते श्री भगवान, दूजा कोए रहिण ना पाईआ। राउ रंक इक्क ज्ञान, एका एक करे पढ़ाईआ। दो जहान इक्क निशान, सच निशाना दए झुलाईआ। गोबिन्द देवे धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। प्रगट होया श्री भगवान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सब नूं मन्नणीं पए आण, बचया कोए रहिण ना पाईआ। पिछला लेखा चुक्या विच जहान, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपणा हुक्म गुर गोबिन्द, हरि जणाइंदा। सर्ब मेटणी पिछली चिन्द, चिंता चिखा सर्ब जलाइंदा। इक्क दूजे दी करन निन्द, निन्दक निन्दया मुख रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि करतारा, गुर गोबिन्द जणाईआ। सब नूं दस सच विहारा, सच सच शनवाईआ। पूजा चुक्के तेई अवतारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद पार किनारा, हरि जू देवे जड़ उखड़ाईआ। एका एक नाम जैकारा, जै जैकार ख़लक खुदाईआ। एका इष्ट इक्क दुआरा एका हरि जू लए मनाईआ। एका नाम इक्क भण्डारा, एका एका वार वरताईआ। मिल्या हुक्म सच्ची सरकारा, सच संदेसा बेपरवाहीआ। गोबिन्द तेरा जगत अखाड़ा, तेरी खेड रचाईआ। बणना इक्को सच्चा लाड़ा, एका घोड़ी दए चढ़ाईआ। भगत मंगण तेरा वाड़ा, दर आपणी अलख जगाईआ। बाकी वेखण सर्ब अखाड़ा, लख चुरासी नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाईआ। सारे उठो दयो इकवाल, हरि जू हरि सुणाइंदा। क्यों चलाई आपणी चाल, लख चुरासी इक्को ब्रह्म जणाइंदा। सूर गाँ खादी क्यों गाल, जल्वा रूप सर्ब वखाइंदा। अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। वेखो गुर अवतार पीर पैग़म्बर पुरख अबिनाशी अग्गे करन सवाल, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप बंधाइंदा। साची धारा बंधे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। शब्दी गुर इक्क प्रताप, गुर गोबिन्द नाम सलाहीआ। रामा कृष्ना आपे थाप, थापन

थाप वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण माई बाप, पिता पूत खेल खिलाईआ। कलयुग अन्तिम इक्क जणाए साचा जाप, एका गुरू करे पढ़ाईआ। जात पात मुक्की वाट, दीन इस्लाम ना कोए रखाईआ। एका पत्तण एका घाट, एका मेला साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राग आप अलाईआ। साचा राग गोबिन्द धार, हरि निरँकारी आप अलाइंदा। मुहम्मद होणा पए खुआर, उम्मत उम्मती डेरा ढाहइंदा। इक्क नौ दए अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पिछला लेखा भोग सब दा दए निवार, अगला लेखा ना कोए समझाइंदा। सरगुण तेरा बन्द होए विहार, बीस बीसा खेल कराइंदा। अग्गे निरगुण करे कार, निराकार हुक्म वरताइंदा। इक्क सत हो उज्जार, इक्क प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। पिछला लेखा जाणा मुक्क, हरि जू हरि हरि आप मुकाइंदा। दूई द्वैती कढ्ढे कुट, गोबिन्द खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। दिन दिहाढ़े पावे लुट्ट, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, भेव कोए ना आइंदा। सिँघ शेर हो शेर गया बुक्क, दो जहान जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाइंदा। कोई ना सके अग्गे लुक, लुकवी आपणी खेल रचाइंदा। सब दी जड़्ह देवे पुट्ट, बिन भगतां बूटा नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतारां लेखा जाए मुक्क, अग्गे वस्त ना कोए वरताइंदा। लहिणा जाणे तीनां लोक, लोक परलोक सोभा पाइंदा। एका नाम सति सलोक, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। चार वरनां देवे मोख, मुक्ती चरनां हेठ दबाइंदा। जगत विकारा देवे झोक, अग्नी अग्ग विच जलाइंदा। सति सतिवादी भोगे भोग, भस्मड़ आपणा रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त धुर संजोग, बण संजोगी मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म दा कटे रोग, कर्म कर्म पार कराइंदा। एका देवे साचा जोग, चरन प्रीती इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा इक्क अखवाइंदा। गोबिन्द कहे इक्को सतिगुर, दूजा कोए नज़र ना आईआ। आदि जुगादी चढ़या घोड़, शाह सवार फेरा पाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां रिहा दौड़, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जन भगतां बुझाए जन्म जन्म दी लग्गी औड़, अमृत मेघ बरसाईआ। बिन नज़रों वेखे करके गौर, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम पकड़नहारा ठग्ग चोर, सार पाश खेल वखाईआ। गोबिन्द हथ्थ फड़ाए डोर, चार वरन बन्धन पाईआ। लेखा रहे ना कोई होर, होड़ा सस्से उपर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँ ब्रह्म वेख वखाईआ। हँ ब्रह्म खेल अपारा, हरि हरि आप जणाइंदा। गुर गोबिन्द बोल जैकारा, फतहि डंका इक्क गजाइंदा। एका हुक्म हरि निरँकारा, घर साचे आप सुणाइंदा। नाता तुट्टे सर्ब संसारा, साचा बन्धन ना कोए पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताइंदा। आपणा खेल हरि

वरताउणा, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सब दा लेखा आप चुकाउणा, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। एका नाया वंड वडाउणा, चार कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। खण्डा खड़ग इक्क चमकाउणा, तेज़ धार आप रखाईआ। चिल्ला तीर इक्क चढ़ाउणा, सच कमंद आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। साचा हुक्म अन्तिम वार, हरि गोबिन्द आप सुणाइंदा। पिछला लेखा सब दा मुक्का विच संसार, हरि जू हरि हरि आप मुकाइंदा। सब ने गाउणा एका पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए जणाइंदा। बीस बीसा खेल निराल, जगत जगदीसा आप कराइंदा। साचा तख्त वेख धर्मसाल, दिलबर आपणा आसण लाइंदा। नंगी कर कर नाम ढाल, जगत विकारा बन्धन पाइंदा। जन भगतां चले नाल नाल, राती सुत्तयां मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पिछला पन्ध मुकाइंदा। पिछला पन्ध रिहा दूर, अग्गे वाट ना कोए जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो बणया रिहा मफ़रूर, कलयुग अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। जुग जुग आपणा करदा करौदा रिहा कसूर, आपे देवण आया सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग सतिजुग इक्को लाईआ। सतिजुग लग्गे विच संसारा, हरि साचा सच लगाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका इष्ट सर्ब समझाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका ठाकर नज़री आईआ। एका नाम इक्क जैकारा, जै जैकार इक्क सुणाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाँई एका धारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे कुड़माईआ। राग नाद ना कोई धुन्कारा, साज ताल ना कोए वजाईआ। कोई सन्त आपणी करनी कर चढ़े ना दस्म दुआरा, सब दा बूहा बन्द कराईआ। जो जन आए हरि दुआरा, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। नेत्र लोचण दए दीदारा, दिवस रैण दरस कराईआ। अर्श कुर्श दए सहारा, दो जहान करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म तीर तफ़ंग, सोहँ मुखी आप चलाइंदा। करे खेल बाल रूप भुझंग, भुझंगी आपणी भेंट चढ़ाइंदा। अस्व अस्वार कस कस तंग, सोलां कलीआं आसण पाइंदा। एका नाम चार कुण्ट, गोबिन्द डंका सर्ब सुणाइंदा। सृष्ट सबाई खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग इक्क चमकाइंदा। नाता तुटना भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया आप गवाइंदा। सब ने गाउणा सुहागी छन्द, सोहँ ढोला आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, पिछला लहिणा सर्ब चुकाइंदा। पिछला लहिणा आप मुकाया, मुक्की कलयुग धार। साचा हुक्म इक्क चलाया, चले विच संसार। सतिगुर पूरा इक्क अख्वाया, इक्क इकल्ला एकँकार। साचा नाम इक्क दृढ़ाया, सोहँ शब्द जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस दरसन पाया, लख चुरासी उतरे पार। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे सीस झुकाया,

विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अन्तिम वार। अन्तिम वार खेल करया, करनहार भगवाना। निरभउ हो कदे ना डरया, जोधा सूरबीर मर्द मर्दाना। भगतां अंदर आपे वड़या, निरगुण रूप गुण निधाना। साचे मन्दिर आपे चढ़या, शाहो भूप बण राजाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारों कुण्ट करे वैराना। चारों कुण्ट होए वैरान, प्रभ आपणी खेल कराइंदा। आपे देवणहारा जीआ दान, जीव जंत आपणे विच समाइंदा। आपे लख चुरासी वेखे मार ध्यान, आपे जूनी जून भवाइंदा। भगत भगवन्त मिले आण, लोकमात दया कमाइंदा। हरि सन्तां करे सति पहचान, सति सतिवादी भेव खुल्हाइंदा। गुरमुख देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। गुरसिखां वखाए इक्क मकान, साचे मन्दिर डेरा लाइंदा। पहली चेत दिवस महान, बीस उन्नीस रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वीह सौ बीस बिक्रमी आपणा मार्ग आपणे हथ्थ रखाइंदा।

निरगुण रूप निराधार, निराकार निरवैर पुरख अबिनाश्या। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह शहिनशाह शाहो भूप शाबाशया। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण खेल अपार, एकँकारा खेले खेल तमासया। आदि निरँजण जोत उज्यार, अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगार, श्री भगवान सति निशान, सति सतिवादी इक्क झुला रिहा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, इक्क इकल्ला खेल अपार, आपे इच्छया आपे पूरी करे आसया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनभउ नूर आप प्रकासया। आपणी इच्छया हरि करतार, आपणा मन्दिर आप प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआर कर त्यार, चार दीवार ना कोई बणाईआ। दीवा बाती कमलापाती कर अकार, निराकार करे रुशनाईआ। तख्त निवासी साचे तख्त कर पसार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, अगम्म अगम्मड़ा धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, करे खेल हरि करनेहार, करता भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग हरि हरि ला, निरगुण निराकार निरवैर खेल कराइंदा। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह हुक्म चलाइंदा। आपणा हुक्म आप वरता, आपे मन्न मन्न खुशी मनाइंदा। आपणा बन्धन आपे पा, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। नारी कन्त आप अख्वा, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। अन्तर अन्तर आप समा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। दाई दाया बण सेव कमा, सेवक साची सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जणनी जन बण बेपरवाह, सुत दुलारा

८०८
११

एका जाइंदा। शब्दी शब्द नाउँ रखा, पूत सपूता गोद बहाइंदा। हथ्थ समरथ सिर टिका, सीस जगदीस इक्क सुहाइंदा। साची इच्छया आप प्रगटा, आपणी भिच्छया झोली पाइंदा। थिर घर दुआरा दए बणा, शब्द सुत विच बहाइंदा। सच संदेसा दए सुणा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। विष्नूं ब्रह्मा शिव रचन रचा, त्रैगुण माया वेस वटाइंदा। पंज तत्त घाड़न लए घड़ा, घड़नहार खेल कराइंदा। लख चुरासी तत्तव तत्त लए मिला, आप आपणा बन्धन पाइंदा। रवि ससि ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोआं लए बणा, धरत धवल जल बिम्ब रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल कर करतार, लख चुरासी दया कमाईआ। विष्नूं ब्रह्मा शिव दए अधार, शब्दी शब्द हुक्म वरताईआ। महल अटल कर मुनार, त्रै पंज पंज त्रै जोड़ जुड़ाईआ। करे कराए साची कार, करता पुरख बेपरवाहीआ। घर विच घर कर त्यार, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। डूँग्घी भँवरी खेल न्यार, दीआ बाती एका एक जगाईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। साचा साकी बण करतार, अमृत आत्म जाम प्याईआ। राग अनादी एका धुन्कार, अनहद नाद वजाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगोचर भेव कोए ना पाईआ। आत्म सेजा खेल न्यार, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाईआ। ईश जीव दए अधार, वंडणहारा एका वंड वंडाईआ। घट घट अन्तर कर पसार, जगत बसन्तर नाल रलाईआ। आसा तृष्ना हउमे हंगता दए अधार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार बन्धन पाईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, जगत वासना विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेख वखाईआ। लख चुरासी हरि जू रच, आपणा खेल कराया। घर घर अंदर रिहा नच्च, मन मति बुध वंड वंडाया। करे खेल भाण्डे कच्च, कंचन रूप नज़र ना आया। सरगुण अंदर निरगुण सच, ना मरे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी जीव जंत उपाया। लख चुरासी चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। तिन्नां मिले ना कोई सच निशानी, लोकमात ना कोई वड्याईआ। पुरख अबिनाशी शाह सुल्तानी, दीनन आपणी दया कमाईआ। आपणा नाउ कर प्रधानी, गुरू गुर रूप वटाईआ। पंज तत्त करे परवानी, काया मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म सुणाए अकथ कहाणी, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। पुरख अकाल नूर नुरानी, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। भेव अभेद लासानी, बेअन्त बेअन्त अन्त कोए ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत बणाए आपणी राणी, साचा कन्त इक्क अख्वाईआ। आपणी खेल करे महानी, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। गहर गम्भीर वड दाता दानी, आपणी दया आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी

८०६
११

हो मेहरवान, तख्त निवासी वेख वखाइंदा । शब्दी सुत इक्क बलवान, गुर गुर नाउँ धराइंदा। जोधा सूरा नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। थिर घर वखाए सच निशान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पतालां आप झुलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मन्ने आण, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। पंज तत्त हो प्रधान, हरि हरि धार गुर गुर शब्द पंज तत्त समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। पंज तत्त अंदर हरि जू धार, जोती जोत डगमगाइंदा। पंज तत्त अंदर शब्द जैकार, गुर गुर रूप वखाइंदा। पंज तत्त अंदर करे ग़फ़तार, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। पंज तत्त दे अधार, आत्म परमात्म एका घर वसाइंदा। पंज तत्त पुरख नार, नार कन्त सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार शब्द शब्द गुर गुर पंज तत्त डेरा लाइंदा। पंज तत्त अंदर शब्द गुर, पुरख अबिनाशी आप रखाइंदा । निरगुण सरगुण नाल जुड़, आपणा बन्धन पाइंदा। आपे जाणे आपणी लोड़, पुरख अकाल वेख वखाइंदा। सचखण्ड निवासी चढ़ चढ़ वेखे साचे घोड़, दो जहानां फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणा नाउँ, गुर गुर झोली पाइंदा। शब्द गुर हरि देवे दात, दानी आपणी दया कमाईआ। लोकमात वेखे मार झात, नेत्र नैण ना कोए रखाईआ। वसणहारा इक्क इकांत, तत्तव तत्त रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म धुर फ़रमाणा, शाह पातशाह साचा राणा, सति सतिवादी आप वरताईआ। सति सतिवादी राजन राज, भूपत भूप दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण रच रच काज, करता पुरख वेख वखाइंदा। शब्द शब्द गुर गुर धुर धुर दिती दात, लोकमात हरि वरताइंदा। आपणी साची सिख्या हरि निरँकार सुणाए बात, बातन आपणा भेव चुकाइंदा। अगम्मी नाद शब्दी राग सुणाए गाथ, रसना कथ कथ फेर अलाइंदा। अनुभव अनडिठ वेखे खेल तमाश, खेलणहारा खेल कराइंदा। आपणी इच्छया शब्दी आस, गुर गुर दास सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया आप वड्याइंदा। पंज तत्त काया देवे माण, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। जिस अन्तर देवे शब्द गुण निधान, गुर शब्द शब्द वड्याईआ। हरि का शब्द गुण गाए श्री भगवान, पंज तत्त तत्त नाल रलाईआ। परा पसन्ती मद्धम सके ना कोए पहचान, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। बैखरी गाए आपणा गाण, रसना जिह्वा ओट तकाईआ। लोकमात होए प्रधान, कलम शाही नाल रलाईआ। कागद उत्ते इक्क निशान, धुर निशाना इक्क वखाईआ । वाहवा गुर सतिगुर वड बलवान, जिस आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि शब्द गुर गुर धार, गुर गुर हरि नाउँ दृढ़ाइंदा। हरि नाउँ सच जैकार, गुर गुर आप अलाइंदा। कलम

शाही लिख लिख कर त्यार, जीव जंत आत्म परमात्म ईश जीव निरगुण सरगुण धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा पड़दा आप उठाइंदा। सतिगुर गुर शब्द पंज तत्त अंदर वड़, आपणा भेव छुपाईआ। निष्अक्खर निराकार आपणा आपे पढ़, पंज तत्त रसना जिह्वा लए हिलाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी गृह मन्दिर अंदर आपे खड़, दर दरवाजा ग़रीब निवाजा आप खुल्ह्राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा धुर फ़रमाण एका एक जणाईआ। धुर फ़रमाण जोत नूरानी, हरि निरँकार आप जणाइंदा। गुर शब्द गाए सच कहाणी, कथनी कथ कथ सुणाइंदा। कलम शाही नाल लिख के बणे बाणी, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाइंदा। आदि जुगादि सतिगुर सच्चा इक्क भगवानी, भगवन आपणा नाउँ रखाइंदा। आपणा हुक्म जुग जुग देवे लोकमात निशानी, गुर गुर सेवा लाइंदा। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ फेर कहे कोई सतिगुर बाणी, बाणी सतिगुर विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगदी इक्को हरि, बाणी सतिगुर सतिगुर बाणी दोहां विचोला इक्क निरँकार अख्वाइंदा।

★ ४ चेत २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू ज़िला अमृतसर ★

आदि पुरख एकँकारा, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। धुरदरगाही सच दरबारा, पुरख अबिनाशी एका लाइंदा। हुक्मी हुक्म सच जैकारा, दो जहानां आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी लोक परलोक वेखणहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड भेव चुकाइंदा। खाणी बाणी पावे सारा, सारंगधर भगवान बीठलो रूप अनूप आप वटाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, विष्न ब्रह्मा शिव ना पावे सारा, बेअन्त बेअन्त श्री भगवन्त आपणी धार आप चलाइंदा। गुर अवतार दे सहारा, पीर पैग़म्बर कर भिखारा, दर दरवेश नर नरेश वस्त अमोलक आप वरताइंदा। निरगुण सरगुण वेखे विगसे वेखणहारा, आदि जुगादी साची कारा, जुग करता खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, हुक्मी हुक्म आप चलाइंदा। साचा हुक्म हरि निरँकार, एकँकार इक्क चलाईआ। शब्दी शब्द सेवादार, दर घर साचे सेव कमाईआ। गुर पीर पैग़म्बर निउँ निउँ करन निमस्कार, सजदा सीस जगदीस झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करया ख़बरदार, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। एका वार हरि निरँकार सद्द सद्द सच्चे दरबार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। आपणी करनी लओ विचार, सतिजुग त्रेता द्वापर नेत्र नैण अक्ख उग्घाड़, अनभेव भेव भेव जणाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ समुंद सागर डूँघी गार, उच्चे टिल्ले पर्बत रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा,

सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। आदि जुगादी साची कारा, जुग करता आप कराइंदा। निरगुण सरगुण वेखणहारा, लोकमात फेरा पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर पार किनारा, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग नेत्र नैण रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। अन्तिम खेल अपर अपारा, पुरख अगम्मड़ा आप समझाइंदा। लेखा जाणे वेद चारा, पुराण अठारां फोल फोलाइंदा। शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरानां वेख अखाड़ा, नव नौ नटुआ नाच नचाइंदा। खाणी बाणी खोलू किवाड़ा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी वेखणहारा, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। लोकमात लगाए सच दरबारा, तख्त निवासी एकँकारा, सोभावन्त आसण लाइंदा। जोती जाता जोत उज्यारा, शब्द अनादी नाद जैकारा, इक्क इकल्ला आप सुणाइंदा। रागी नादी वसे बाहरा, थित वार ना कोए विचारा, घड़ी पल ना कोए जणाइंदा। रवि ससि करन निमस्कारा, ब्रह्मा विष्न शिव रोवे ज़ारो ज़ारा, दर अलख सर्ब जगाइंदा। शाह पातशाह परवरदिगारा, मुकामे हक़ खेल न्यारा, मिहबान बीदो आप खलाइंदा। हक़ हक़ीक़त वेखणहारा, लाशरीक एका धारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कार आप कराइंदा। आपणी कार करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो घल्लदा रिहा गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर सेवा लाईआ। जोती जोत दे उज्यारा, दीआ बाती इक्क टिकाईआ। नाद शब्द धुन जैकारा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। ईश जीव इक्क अखाड़ा, जगदीस वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल पुरख अबिनाश, आदि जुगादी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या जगत तमाश, गुर पीर अवतार आपणी सेवा लाइंदा। कलयुग पाए साची रास, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। पीर पैग़म्बर प्रगटाए साची शाख़, साख्यात वेस वटाइंदा। कलमा कलाम दे दे दात, कायनात आप पढ़ाइंदा। दो दो मेला आबेहयात, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। वाहद सुणाए एका गाथ, हू हू नाअरा आपे लाइंदा। आप जणाए दिवस रात, सूरज चन्न आप चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची किरपा श्री भगवान, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी जो देदां रिहा दान, नाम वस्त अमोलक आप वरताईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप धराईआ। निरगुण सरगुण कर प्रधान, जगत प्रधानगी वेख वखाईआ। काया काअबा खेल महान, पीर पैग़म्बर हरि समझाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, बोध अगाध करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा लेखा पुरख अगम्म, आदि

८१२
११

जुगादि आपणे हथ्थ रखाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोए बणाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता रोग ना कोए रखाइंदा। नेत्र नीर ना विरोले अन्न्, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव हरि करतारा, एका एका वार जणाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार लिख लिख लेख दे दे गए सहारा, जीव जंत जंत समझाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क दातारा, घट घट डेरा लाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। लेखा जाणे शब्दी शब्द गुर अवतारा, गुर गुर आपणी सेव जणाईआ। कलयुग आए अन्तिम वारा, लोकमात फेरा पाईआ। चार वरन दए सरन, सरनगति इक्क रखाईआ। जन भगतां खोल्हे नेत्र हरन फरन, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। नाता तुट्टे मरन डरन, भय भयानक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाईआ। करे रहिमत हरि रहिमान, भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम हक़ निशान, हरि जू हरि हरि आप झुलाइंदा। लोक चौदां चौदां तबक वेखे नट्ठ, पाँधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। पावे सार तीर्थ तट, तट किनारा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल हरि जू आप कराइंदा। हरि खेल करे करतारा, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। सम्मत सम्मती पार किनारा, लोकमात वेख वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, बेअन्त हरि वड्याईआ। राग नाद ना पावे सारा, छत्ती राग नैण शरमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल अपारा, लोकमात रूप अनूप जणाईआ। सचखण्ड वखाए सच दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। तख्त निवासी कर पसारा, सीस जगदीस ताज सुहाईआ। सच संदेसा एका वारा, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दए सुणाईआ। पहली चेत दिवस विचारा, एका नाया जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा रिहा मुकाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाण, हरि जू हरि जणाया। सब दा लेखा चुक्के आण, लोकमात रहे ना राया। नेत्र खोल्हु आपणे आपणे लओ पछाण, लोकमात राह वखाया। दर दुआरे सारे होए हैरान, हरि जू की खेल वरताया। चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी जीव जंत बेईमान, आत्म परमात्म धीरज धीर ना कोए धराया। गृह गृह वसे पंज शैतान, घट घट काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हल्काया। किसे घर दिसे ना गुर का सच निशान, गुर शब्द हिरदे नज़र किसे ना आया। तेई अवतार वेख वेख कुरलाण, बौहड़ी बौहड़ी देण दुहाया। साडी सिख्या ना सक्या कोई जाण, हरि जू तेरा नाउँ भुलाया। तेरे हुक्मे अंदर आए विच जहान, हुक्मी हुक्म सेवा लाया। पंज तत्त वेख नैण शरमाण,

ब्रह्म तत्त किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ तेरी वड्याआ। पुरख अबिनाशी रिहा दस्स, पीर पैग़म्बर आप जणाईआ। लोकमात आए नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जीवां जंतां जो मार्ग गए दस्स, कलमा कलाम इक्क पढ़ाईआ। आपणे नेत्र वेखो आपणा रस, रसना रस नज़र किते ना आईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद नेत्र सुट्टण अथ्थ, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। साडा खेड़ा होया भट्ठ, चारों कुण्ट चार दीवार नज़र ना आईआ। असीं बिन ढाया गए ढट्ठ, साडी हार साडी उम्मत हथ्थ फड़ाईआ। तेरे हुक्म अंदर पहली चेत होया इक्ठ, दर तेरे तेरा दर्शन पाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों प्या हस्स, परवरदिगार खुशी मनाईआ। अंज़ील कुरान लग्गा फट, द्वैती दूर ना कोए कराईआ। चौदां तबक वेखो हट्ट, अग्नी अग्ग रही जलाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक आबेहयात ना सके कोई झट, मक्का काअबा तपे नाल लोकाईआ। चौदां सदीआं की खट्टी गया खट्ट, मुहम्मद नेत्र नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैग़म्बरां रिहा वखाईआ। गुर गुर वेखो करो ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। आपणा आपणा दिउँ ब्यान, सचखण्ड निवासी मंग मंगाइंदा। धुर संदेसा सुणा के गए जगत फ़रमान, कलम शाही लेख बणाइंदा। आत्म परमात्म दस्स दस्स गए ज्ञान, ज्ञान ध्यान जोड़ जुड़ाइंदा। घर घर वेखो हो निगहबान, कवण हुक्म हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। नानक निरगुण नेत्र खोल्ह, नौ खण्ड पृथमी वेख वखाईआ। सतिनाम वस्त ना किसे कोल, खाली हथ्थ सर्ब लोकाईआ। सृष्ट सबाई रही डोल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जूठ झूठ रहे वरोल, सच सुच्च वणज ना कोए कराईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले तीर्थ तटां उत्ते धीआं भैणां करन मखोल, नेत्र नैण नैण उठाईआ। गुर का शब्द निभाया ना कोई कौल, कीता कोल गए भुलाईआ। मंगण वड्याई उपर धरनी धरत धौल, अगला लेखा नज़र किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया आत्म जाम पीता घोल, हरि का नाउँ साचा रंग ना कोए चढ़ाईआ। मैं तोल के आया साचा तोल, नाम कंडा हथ्थ फड़ाईआ। तेरां तेरां तेरां धारन आया बोल, वट्टा सेर ना कोए पाईआ। साहिब सुल्तान सद वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन आत्म ताकी पड़दा खोल्ह, हरि जू मिले चाँईं चाँईंआ। भाग लगाए काया चोल, तेरी चोली दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, चारों कुण्ट भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गोबिन्द सूरा मार ललकार, एका वार जणाइंदा। पुरख अकाल तेरा विहार, भेव कोए ना पाइंदा। मैं नीचां दस्सके आया सच प्यार, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। दे के आया पंज ककार, धीरज जत सन्तोख एका गंढु पुवाइंदा। पंजां प्यारयां दे के आया माण, आपणा रूप वटाइंदा।

कलयुग अन्तिम सारे होए बेईमान, मन की वासना ना कोए बंधाइंदा। रसना खाण पीण जूठ झूठ ख़ाक रहे छाण, सच सुच्च वस्त कोल ना कोए रखाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे गाण, आत्म बाण तीर निराला ना कोए लगाइंदा। तन उत्ते सारे रखण कृपान, अंदर नाम खण्डा ना फिराइंदा। मैं दिवस रैण वेखां मार ध्यान, भुल्ल कदे ना जाइंदा। मेरा भुलया मेरा निशान, मेरा रूप नज़र किसे ना आइंदा। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, शहिनशाह तेरा कीता ना कोए उलटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं साची मंग मंगाइंदा। साची मंग मंगां निरँकार, गोबिन्द एका वार जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते कोटन काल, काल काल ग्रास खाईआ। कलयुग अन्त वरन बरन होए बेहाल, जात पात रही कुरलाईआ। दीन मज़्हब प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। बिन हरि नामे होए सर्ब कंगाल, नाम धन हट्ट ना कोए विकाईआ। आपणी आपणी घालण सारे रहे घाल, पुरख अकाल तेरा इष्ट ना कोए मनाईआ। मैं जीवां जंतां एका वार आया सिखाल, बंस सरबंस भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रख वड्याईआ। तेरे हथ्थ वड्याई पुरख अकाल, मैं निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। तेरा हुक्म दीन दयाल, हरि दाते मोहे भाइंदा। मैं चल के आया तेरे दुआर, दर दुआरे सीस झुकाइंदा। पहली चेत कर प्यार, प्रेम बन्धन एका पाइंदा। गुर अवतार करन पुकार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। तूं करता पुरख करनेहार, तेरी कीती ना कोए उलटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पाणी हार, बण पनिहार सेव कमाइंदा। मैं दर दरवेश बण चोबदार, तेरा फ़रमाणा इक्क जणाइंदा। पीर पैग़म्बर सुणो गुर अवतार, पूरब लेखा सब दा अन्त कराइंदा। बीस बीसा हरि जगदीसा रहिण ना देवे पिछला माण, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म एका वार, एका एक जणाईआ। सब ने रहिणा ख़बरदार, विष्न ब्रह्मा शिव समुंद सागर धरत धवल त्रैगुण पंज तत्त नाल मिलाईआ। करे खेल करता करीम कादर, नबी रसूल पीर पैग़म्बर पूरब लहिणा सब दा रिहा मुकाईआ। अग्गे देवे इक्को आडर, साचे हुक्म गोबिन्द तामील आप कराईआ। लेखा लिखे नाल रत, तेग बहादर तीर मुखी कलम बणाईआ। कलयुग वहण डूँग्घा सागर, कूड़ी क्रिया दए रुढ़ाईआ। साचे भगतां देवे इक्को आदर, आपणा आदरश आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फ़रमाण आपे रिहा अलाईआ। हरि फ़रमान सुणाया संदेस, पहली चेत चेतन करतार। पिछला रहे ना कोई नर नरेश अग्गे लेखा पार किनार। पूजा चुक्के गणपति गणेश, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए अधार। गुर पीर अवतार पैग़म्बर इक्को वार कर लै पेश, अग्गे रख्या ना कोए उधार। सारया सौं जाणा उत्ते लै कर लेफ़, पुरख अबिनाशी

लए सवाल। लोकमात नौ खण्ड पृथमी बिन करसाण दिसे खाली खेत, चारों कुण्ट कुण्ट करलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे साचा हेत, भगवन भगत लए प्रगटाया। गुर पीर पैग़म्बर लहिणा मुक्या, मुक्या विच संसार। भगत भगवन्त गोदी चुक्कया, सतिजुग चलाई साची धार। निरगुण निरवैर पुरख अकाल एका उठया, सब दा लहिणा दए निवार। दीन दयाल ठाकर स्वामी एका तुठया, हरिजन साचे लए उठाल। लुकया रहिण ना देवे कोई किसे गुठया, सतिगुर मेला मेले आण। पंज तत्त तेरा दीपक बुझया, निरगुण जोत होए प्रधान। गोबिन्द भेव खुल्हाए गुझया, कोई रहे ना जगत अञ्याण। लेखा चुक्के एका दूजया, दोआ एका ना कोए निशान। भगत भगवन्त आपे बूज्झया, लेखा जाणे दो जहान। आपे कम्म हरि जू रुझया, आपे घर घर वेखे आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल अवल्ला, आदि पुरख कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे मीआं अल्ला, अलाही नूर डगमगाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे मेटे सला, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ाए पल्ला, शब्दी डोर डोर बंधाइंदा। जिस नूं कहिन्दे वसे निहचल धाम अटल्ला, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। जिस नूं कहिन्दे बोध अगाध सच संदेस घल्ला, गुर पीर अवतारां शब्दी शब्द शब्द पढ़ाइंदा। सो कलयुग अन्तिम निरगुण निहकलंक निराकार अजूनी रहित होया झल्ला, बण झल्ला भगतां पिच्छे फेरा पाइंदा। हथ्थ विच फड़या इक्को भल्ला, दो जहानां नैण शरमाइंदा। सच संदेस पहली चेत एका घल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्क इकल्ला, अकल कल कुलवन्ता आपणी कल प्रगटाइंदा।

★ ५ चेत २०१६ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण हुक्मरान, निरगुण निरगुण हरि जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण वेखणा मार ध्यान, निराकार भेव चुकाइंदा। एकँकारे बणना बलवान, बल धारी आप सुणाइंदा। आदि निरँजण जोती नूर कर निशान, सच निशाना इक्क समझाइंदा। अबिनाशी करते वेख मकान, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। श्री भगवान नेत्र खोल्ह वेखणा दो जहान, दो जहानां वाली हुक्म वरताइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पछाण, भेव अभेदा अछल अछेदा पड़दा लाहइंदा। शब्दी सुत वेख आपणा ज्ञान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। लोकमात लेखा वेख जीव जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप लगाइंदा। निरगुण निरगुण धुर फ़रमाण, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। आपणी कीती लए पछाण, करनी

करता भेव चुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वेख मकान, गृह गृह पड़दा लाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणे नादान, बाली बुध रखाईआ। सुरपति इन्द होया हैरान, हरि का भेव कोए ना आईआ। हरि जू हरि हरि नरायण नर आपणे हथ्थ रखे तीर कमान, साचा चिल्ला इक्क इकल्ला आप चढ़ाईआ। दरगाह साची मुकामे हक़, हक़ीक़त वेखे नूर निशान, ज़ाहरा ज़हूर बेपरवाहीआ। लोक परलोक तोड़नहारा माण, लेखा जाणे श्री भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। निरगुण खेल दस्से अवल्ला, निरगुण आप समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख महल्ला, नव नौ चार फेरा पाईआ। पड़दा लाह समुंद सागर डूँघी डल्ला, उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे चाँईं चाँईंआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फिरना हो के झल्ला, झलक आपणी आप प्रगटाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म फड़या पल्ला, पल्लू गंढु ना कोए पुआईआ। जीव जंत तत्त विकार जूठ झूठ रल्ला, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। मन वासना बूटा फला, जगत तृष्ना पत डाली आपणा रंग वखाईआ। सच सुनेहड़ा किसे ना घल्ला, सीस जगदीस निउँ निउँ ना कोए झुकाईआ। रसना कह कह थक्के अल्ला, आलमीन नज़र ना आए खुदाईआ। मन्दिर मट्ठ शिवदुआले घृत दीपक पवण हवन बला, निरगुण जोत जोत ना कोए रुशनाईआ। किसे ना मिल्या निहचल धाम अटल्ला, पदवी अटल्ल ना कोए पाईआ। कोई कहे राम मेरा फड़या पल्ला, कोई कृष्न सीस झुकाईआ। कोई कहे नानक निरगुण अग्गे खला, कोई गोबिन्द कहे होए सहाईआ। कोई कहे चार वेद हरि जू रल्ला, कोई पुराण अठारां विच समाईआ। कोई कहे गीता ज्ञान श्री भगवान एका घल्ला, सच संदेश नरेश सुणाईआ। कोई कहे अञ्जील कुरान वखाए सच महल्ला, महल अटल कर रुशनाईआ। कोई कहे बाणी बाण निराला मारे अणयाला, आर पार पार आर आप कराईआ। नानक गोबिन्द कहे एकँकारा इक्क दयाला, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर होए सहाईआ। कलयुग अन्त चार वरन अठारां बरन राउ रंक ऊँच नीच होए बेहाला, नेत्र नैण नीर विरोले सर्ब लोकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी धूंआँधार जगत रैण अन्धेरी काला, निरगुण नूर सच प्रकाश चन्द चांदनी ना कोए चमकाईआ। कोई कहे वसे धर्मसाला, धर्म धार ना कोए बणाईआ। पंडत पांधे मुल्ला शेख़ मुसायक ग्रन्थी पन्थी सारे मंगण हाला, आत्म प्रेम साचा नेम ना कोए निभाईआ। अन्तिम सब दा मुखड़ा होए काला, दुरमति मैल धोवे ना कोए छाहीआ। पारब्रह्म परमेश्वर अलख अगोचर अगम्म अथाह आपे चले अवल्लड़ी चाला, वेद पुराण शास्त्र सिमरत भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण हुक्म सुणाईआ। निरगुण हुक्म सच फ़रमाना, हरि साचा सच जणाइंदा। भूपत भूप भूप राजाना, तख्त निवासी खेल कराइंदा। पुरख अकाल वाली दो जहानां, दोए दोए रूप आप

अख्वाइंदा। जोती शब्द खेल निराला, तार सितार आप हिलाइंदा। निरगुण सरगुण पहरे बाणा, जुग जुग एका गुर रूप वटाइंदा। नाद अनादी बोल तराना, त्रैगुण अतीता आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महाना, हरि ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा । लख चुरासी तणयां ताणा, घट घट आपणा रंग रंगाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणा वेस वटाइंदा। कलयुग अन्त हो प्रधाना, बेअन्त खेल कराइंदा। पूरब लेखा नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाना, पाँधी नज़र कोए ना आइंदा। भगतां बन्ने साचा गाना, दरगाह साची सगन मनाइंदा। लोकमात सच निशाना, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। हरिजन जनहरि आत्म अन्तर देवे इक्क ज्ञाना, परमात्म बूझ बुझाइंदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, जगत तृष्ना भुख गवाइंदा। दीपक जोत इक्क महाना, घर घर विच आप टिकाइंदा। अनहद रागी राग तराना, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। आत्म सेजा कर परवाना, साची सेजा सोभा पाइंदा। नारी कन्त खेल महाना, सुरती शब्दी बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कराइंदा। साची कार करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर देंदे रहे सहारा, नग़मा निगहबान सुणाईआ। तालब तुलबा करदे रहे दीदारा, दीद ईद इक्क वखाईआ। कागद कलम लिख लिख हारा, प्रभ अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग अन्तिम शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान खाणी बाणी रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साडा चले ना कोए चारा, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। रसना जिह्वा करन हाराकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। माया खातर करन पवाड़ा, हिरदे हरि हरि ना कोए वसाईआ। साधां सन्तां लाया अखाड़ा, बण वेसवा नाच नचाईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, तत्तव तत्त ना कोए बुझाईआ। धुर दरगाही पारब्रह्म पतिपरमेश्वर किसे ना मिल्या सच्चा लाड़ा, हरि जू कन्त नार ना कोए प्रनाईआ। चारों कुण्ट दिसे विभचार, जगत दुहागण रही कुरलाईआ। गुरमुख विरला सुत्ता पैर पसारा, जिस हरि जू आपणी बूझ बुझाईआ। दिवस रैण राती सुत्तया दए दीदारा, दर दर घर घर फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द करे निमस्कारा, निउँ निउँ सीस जगदीस झुकाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार वेखण वारो वारा, पारब्रह्म तेरी वड्डी वड्याईआ। जुग जुग खेल करे न्यारा, अन्त कोए ना पाईआ। बेअन्त कह कह तेरे कोलों कराया छुटकारा, माण अभिमाण ना कोए रखाईआ। खाणी बाणी कहे तूं सर्ब चन्नां दा तारा, लख लख तेरी सिफ्त सालाहीआ। तूं सब तों वसें न्यारा, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। हुक्मी हुक्म तेरा वरतारा, जुग चौकड़ी हुक्मे विच भुवाईआ। हुक्मे सिफ्त भगत प्यारा, प्यार प्यार नाल प्रनाईआ। हुक्मे अंदर सति विहारा, सति पुरख निरँजण आप कराईआ। हुक्मे अंदर भगत दुआरा, हरि भगवन आप

बणाईआ। हुक्मे अंदर बण बण सेवादारा, बण सेवक सेव कमाईआ। हुक्म अंदर लहिणा देण चुकाया गुर अवतारां, पिछला लेखा रहे ना राईआ। अग्गे सति सति करे वरतारा, सति सतिवादी इक्क रघुराईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, राज राजान आपणा बल आप धराईआ। निरगुण बण बण चोबदारा, दर दरवेश दर दर अलख जगाईआ। वाहवा तेरी कुदरत तूं वेखणहारा परवरदिगारा, तू ही तू ही तेरी तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा हुक्म रखे हथ्थ, दूसर भेव ना किसे जणाइंदा। जुग जुग चलाए मात रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। गुर अवतार मार्ग दस्स, भगत भगवन्त भेव चुकाइंदा। लख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुण्ट आप भुवाइंदा। सर्बकल आपे समरथ, समरथ पुरख वेस वटाइंदा। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चुमारा सेव कमाइंदा। आपणी महिमा जणाए अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। चार जुग दा खेड़ा भट्ठ, अन्त भठयाला इक्क वखाइंदा। पन्ध मुकाया नट्ठ नट्ठ, दो जहानां फेरा पाइंदा। वेखणहारा चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबकां पड़दा लाहइंदा। शब्द निधान हरि मेहरवान अगम्म अगम्मड़ी मारे सट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराइंदा। आपणा बल धरे बल बावन, भेव कोए ना पाइंदा। आपे रामा आपे रावण, रघपत आपणी खेल कराइंदा। आपे कृष्ना आपे काहनन, आपे गोपी नाच नचाइंदा। आपे ईसा मूसा निउँ निउँ करे सलामन, आपे सजदा सीस झुकाइंदा। आपे मुहम्मद चार यार करे गुलामन, गुरबत सब दी आप मिटाइंदा। आपे नानक देवे सतिनाम नामन, हरि हरि नामा आप पढ़ाइंदा। आपे गोबिन्द बोले पुरख अकालण, अकाल पुरख एका नज़री आइंदा। आपे भगत दुआरे बणे सुवालण, बण दरवेश फेरी पाइंदा। लख चुरासी बूटा वेखे बण बण मालण, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। आपे चले अवल्लड़ी चालण, चाल निराली आप रखाइंदा। आपे बण बण वैरागण गुरमुखां चढ़े भालण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाइंदा। आपे कृपानिध गहर गम्भीर गुण सागर हरिजन फड़ाए आपणा दामन, दामनगीर आप हो जाइंदा। आपे सन्त सुहेले गुरू गुर चेले मेल मिलाए आमणो साम्हण, नेत्र नैण नैणा नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। साचा हुक्म हरि हरि धार, हरि जू हरि हरि आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी कर खुआर, कोटन काल पार कराइंदा। कोटन कोटि गुर अवतार, लोकमात सेवा लाइंदा। कोटन कोटि भगत भगवन्त करन जै जैकार, जै जैकार आप अल्हाइंदा। कोटन कोटि साध सन्त खड़े दुआर, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। कोटन कोटि विष्न बण भिखार, दर दर घर घर फेरी सर्ब पुवाइंदा। कोटन कोटि गुरमुख नेत्र नैण

राह तक्कण साचे यार, कवण वेला दरस दिखाइंदा। कोटन कोटि गुरसिख चरन प्रीती मंगण प्यार, पीआ प्रीतम वस्त अमोलक झोली पाइंदा। पुरख अबिनाशी सर्ब जीआं दा सांझा यार, चार कुण्ट दहि दिशा घट घट वेख वखाइंदा। जात पात दीन मज़्हब वसया बाहर, ऊँच नीच राउ रंक ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संदेस नर नरेश निरंतर एका एक जणाइंदा। एका शब्द सुणाए निरंतर, निराकार वड्डी वड्याईआ। सर्ब जीआ गुर एका मन्त्र, गुरदेव नमों सहाईआ। लख चुरासी बुझाए बसन्तर, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घर बैठा सच्चा माहीआ। लेखा जाणे गगन गगनंतर, मंडल मण्डप फेरा पाईआ। घाड़त घड़ बणाई बणतर, भन्नणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। घड़े भन्ने हुक्मे अंदर, हुक्मी हुक्म चलाइंदा। तोड़नहार हँकारी जंदर, नाम खण्डां इक्क उठाइंदा। नव नौ वेखे खण्डर, चारों कुण्ट नैण उठाइंदा। जीव जंत मन वासना बन्दर, आत्म परमात्म मेल ना कोए कराइंदा। जगत अन्धेरा डूँग्घी कंदर, महल अटल ना कोए रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर सर्ब रखाइंदा। हुक्मे अंदर चार जुग, जुग चौकड़ी खेल कराईआ। हुक्मे अंदर औध जाए पुग, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। हुक्मे अंदर लख चुरासी बूटा जाए सुक्क, पत्त डाली
८२०
११
नज़र ना आईआ। हुक्मे अंदर जड़ देवे पुट्ट, ना फेर कोए लगाईआ। हुक्मे अंदर शौह दरयाए देवे सुट्ट, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। हुक्मे अंदर जन भगतां उपर जाए तुठ्ठ, दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। हुक्मे अंदर जाम प्याए घुट्ट, निझर झिरना रस चखाईआ। हुक्मे अंदर निर्मल नूर वखाए जोत, जोती जाता बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर भाग लगाए काया कोट, साचा बंक घर सुहाईआ। हुक्मे अंदर लहिणा देणा चुकाए वरन गोत, एका ब्रह्म ब्रह्म दरसाईआ। हुक्मे अंदर आत्म परमात्म परमात्म आत्म उत्ते होए मोहत, मोह मुहब्बत इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आपणा बन्धन पाईआ। हुक्मे अंदर पाए बंध, बन्दीखाना तोड़ तुड़ाइंदा। हुक्मे अंदर सूरज चन्द, आदि जुगादि सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर ब्रह्मंड खण्ड, लोआं पुरीआं रास रचाइंदा। हुक्मे अंदर जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज नाल मिलाइंदा। हुक्मे अंदर गुण गाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर लेखा जाणे जीउ पिण्ड, काया बंक सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर हक़ीक़त हक़, लाशरीक वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर खेल करे समरथ, समरथ बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर हरि भगत मिलाए नस्स नस्स, मुर्शद मुरीद दया कमाईआ। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण होया वस, सरगुण पंज तत्त चोला आप हंढाईआ। हुक्मे अंदर देवे साचा रस, गोबिन्द अमृत

रस चखाईआ। हुक्मे अंदर खेल तमाश, घट गोपी काहन नचाईआ। हुक्मे अंदर वसे पास, आत्म परमात्म सेज हंढाईआ। हुक्मे अंदर होवे नास, हुक्मे अंदर उत्पत लए कराईआ। हुक्मे अंदर सचखण्ड करे निवास, हुक्मे अंदर थिर घर आपणा चरन टिकाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवे जोत प्रकाश, हुक्मे अंदर शब्दी राग सुणाईआ। हुक्मे अंदर सब दा करे नास, पंज तत्त चोला कोए रहिण ना पाईआ। हुक्मे अंदर एका एक एकँकारा शाहो शाबाश, आपणा हुक्म आपे आप वरताईआ। आपे राजा आपे दास, आपे सेवक आपे मालक आपे चले हुक्म रज़ाईआ। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी इक्को कारज करता करे खास, ख़लासी सब दी दए कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ।

★ ५ चेत २०१६ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू ज़िला अमृतसर ★

हुक्मे अंदर बण दलेर, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। हुक्मे अंदर बण शेर, सिँघ आपणा रूप वटाईआ। हुक्मे अंदर नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ल्या घेर, दो जहान फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर करदा रिहा हेर फेर, जुग जुग वेस वटाईआ। हुक्मे अंदर सब दा लहिणा देणा दए नबेड़, लेखा लेख ना कोए रखाईआ। हुक्मे अंदर लख चुरासी गेड़े गेड़, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। हुक्मे अंदर खेडां रिहा खेड, बिरध बाल जवान रूप नज़र कोए ना आईआ। हुक्मे अंदर छेड़ां रिहा छेड़, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दलेरी इक्क रखाईआ। होए दलेर शाह सुल्ताना, जोर आपणा आप वखाइंदा। मेल मिलाए श्री भगवाना, भगवन आपणा रूप वटाइंदा। बल बावन बन्ने गाना, साचा सगन मनाइंदा। पंचम पंच कर परवाना, पंचम आपणी गोद बहाइंदा। पंचम देवे साचा दाना, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। पंचम हथ्थ सच निशाना, दरगाह साची आप झुलाइंदा। पंचम एका राग तराना, गीत गोबिन्द आप सुणाइंदा। पंचम देवे इक्क ध्याना, चरन कँवल बूझ बुझाइंदा। पंचम खेल करे महाना, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दलेरी इक्क रखाइंदा। सच दलेरी शहिनशाह, शाह पातशाह आप रखाईआ। आदि जुगादि चलाउँदा रिहा राह, बण रैहबर मार्ग लाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला देंदा रिहा सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। गुरू गुर बणदा रिहा मलाह, खेवट खेट बेड़ा मात चलाईआ। जुगो जुग जपाउँदा रिहा नाँ, नाउँ निरँकारा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप रखाईआ। आपणा बल रखे निरँकार,

निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव कोए ना पाइंदा। जोधा सूरबीर बलकार, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। वेखणहार सर्ब संसार, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। चारे खाणी बाणी पड़दा दए उग्घाड़, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बल आप जणाइंदा। साचा बल आपे रख, बली बलवान खेल कराया। निरगुण नूर हो प्रतख, सरगुण हरि समझाया। एका ढोला अगम्मी अलख, सोहँ बोला आपे गाया। सति सतिवादी मार्ग दस्स, गुरमुख सज्जण लए जगाया। भगत भगवन्त कर कर वक्ख, लख चुरासी बन्धन मात तुड़ाया। इक्क खुल्ाई आपणी अक्ख, आपणा भेव जणाया। मेल मिलाया हस्स हस्स, पूत सपूता गोद बहाया। अमृत आत्म इक्को रस, बिन रसना जिह्वा आप छकाया। अठ्ठे पहर जन भगतां गाए जस, बण सेवक सेव कमाया। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां कोलों आया नस्स, हरि जू पल्लू आप छुडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण दलेर लोकमात फेरा पाया। बण दलेर श्री भगवाना, आपणी दया आप कमाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माणा, सिर आपणे भार उठाईआ। भगतां बन्ने साचा गाना, दरगाह साची सगन मनाईआ। बिन रसना जिह्वा गाए तराना, त्रैगुण अतीता रंग वखाईआ। आदि जुगादि नौजवाना, सदा सुहेला एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बण दलेर आया जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एको दीपक गया जग, बाकी दीवे गुल कराईआ। कोई ना चढ़े उपर शाह रग, सब मूँह दे भार सुटाईआ। भगत भगवन्त कर किरपा कीते अड्ड, बिन पढ़यां आपणे नाल मिलाईआ। लख चुरासी दिती छड्ड, सज्जण कोए नज़र ना आईआ। सब दे खाली दिसण हड्ड, काया तत्त तत्त कुरलाईआ। लोकमात निशाना साचा गड्ड, गुर अवतार पीर पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव सारे दर आ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म तेरी लभ्भदे रहे हद्द, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम तूं भगत बणाए आपणी यद्द, साचा बंस इक्क वखाईआ। कोटन कोटि गुर पीर अवतार लोकमात भार गए लद, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तेरा भेव ना जाणे कोए तूं रखे केहड़ी खड्ड, कवण कूटे दए बहाईआ। करया खेल अन्त समरथ, समरथ तेरी वड्याईआ। सति सतिवादी इक्क निशाना साढे तिन्न हथ्थ, अग्गे पिच्छे एथे ओथे दो जहान बणाईआ। तेरी वस्त तेरे हथ्थ, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बण दलेर जन भगतां रिहा दस्स, हरिजन तेरी वड वड्याईआ। मैं तेरा तेरे होया वस, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। तेरे अंदर वड़ के मूँह दे भार गया ढट्ठ, उपर तेरा भार टिकाईआ। तेरे विकार आपणी हथ्थीं कर इक्ट्ठ, बिन अग्नी दयां जलाईआ। तेरा प्रेम वेखां रत्ती रत्त, रत्ती रत्त विच समाईआ। तेरी आस धीरज जत, सति सन्तोख

नेत्र नैणां दरसन पाईआ। तेरी इक्को ब्रह्म मति, पुरख अकाल ओट रखाईआ। साहिब सुल्तान जाणे मित गत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कर किरपा बीजया नाम आपणे वत, बण किरसाणा हल चलाईआ। आप महकाए डाल्ही पत, फुल फुलवाड़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। दो जहानां लए रख, तत्ती वा ना लागे राईआ। कोटन कोटि रवि ससि, गुरमुख तेरे चरनां सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाया नस्स नस्स, दूर दुराडे पहली चेत आ आ दरसन पाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अन्त सानूं ना जाणा छड्ड, दर तेरे देण दुहाईआ। बिन भगतां मैं सब नूं कीता रद्द, हुक्मी हुक्म इक्क जणाईआ। अन्तिम सब दा पड़दा लैणा कज्ज, शब्द दुशाला उपर रखाईआ। कोझा कमला पुरख अबिनाशी ना कोई आचार ना कोई चज्ज, सच प्रीती गुरसिखां कोलों सिखण आईआ। बिन नगारिउँ गया वज्ज, नौबत गुरसिख नाम वजाईआ। बिन डोरिउँ गया बज्झ, प्रेम तन्दी इक्क रखाईआ। हरिजन हरि जू तेरा करके हज्ज, आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, बण दलेर सिँघ शेर आपणा बल रखाईआ।

★ ५ चेत २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह टांगरा ज़िला अमृतसर ★

हुक्मे अंदर सूरा सरबंग, सति पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर खेल सचखण्ड, निरगुण निरवैर पुरख अकाल आप कराइंदा। हुक्मे अंदर देस ब्रह्मण्ड, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी बणत बणाइंदा। हुक्मे अंदर सूरज चन्द, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण दए संग, सगला संग आप निभाइंदा। हुक्मे अंदर भगत भगवन्त मंगे मंग, दाता भिखारी नाउँ धराइंदा। हुक्मे अंदर इक्क पलँघ, साची सेजा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। अनुभव खेल करे निरँकारा, निराकार वड्डी वड्याईआ। सति सतिवादी हो उज्यारा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। महल अटल उच्च मुनारा, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। थिर घर खोल्ह आप किवाड़ा, आपणी बणत आप बणाईआ। सति सरूपी सुत दुलारा, शब्दी शब्द वसाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, भूपत भूप राज राजान आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। पंचम पंच पंच अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाईआ। हुक्मे अंदर साची धार, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। हुक्मे अंदर जल थल महीअल पाए सार, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाइंदा। हुक्मे अंदर खाणी बाणी कर त्यार, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वेस वटाइंदा। हुक्मे अंदर तत्तव तत्त दे अधार, तत्त निवासी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, अकल कल धारी आप कराइंदा। निरगुण सरगुण कर प्रधान, घाड़न घड़त आप घड़ाइंदा। घर विच घर इक्क मकान, बेमकाम आप बणाइंदा। नव नौ खोल्ह दुकान, दर दर आपणा रंग वखाइंदा। भगतन भगवन दे दे दान, साची भगती झोली पाइंदा। एकँकारा नाउँ निधान, नाम वस्त अमोलक झोली पाइंदा। घर विच घर खेल करे महान, गृह मन्दिर आप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाइंदा। भगतन मीता एकँकारा, एका एक वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण पावे सारा, जुग जुग वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, जै जैकार आप सुणाईआ। निर्मल दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती नूर रुशनाईआ। साची हाटी बण वणजारा, काया हट्ट इक्क वखाईआ। साचे मन्दिर वस्त हरि थारा, थिर दरबारी आप जणाईआ। शब्दी शब्द अगम्म अपारा, रागी अनहद नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाईआ। हरिजन मेला एका घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। पंच विकारा चुक्के डर, पंचम जोड़ जोड़ाइंदा। डूँग्घी भँवरी पावे सार, काया कवरी खोज खोजाइंदा। टेढी बंक आपे वड़, ईड़ा पिंगल मोह मिटाइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़्ह, साचे सन्तां आप उठाइंदा। जोत निरँजण आपे धर, बिन तेल बाती आपे डगमगाइंदा। शब्द अनादी अनहद धुन राग सुणाए साचा हरि, तन्दी तन्द ना कोए रखाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठर, निझर झिरना आप झिराइंदा। बजर कपाटी तोड़ गढ़, दूई द्वैती पड़दा आपे लाहइंदा। आत्म सेजा साची चढ़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सुरत निमाणी लए फड़, शब्दी आपणा बन्धन आपे पाइंदा। आप वखाए साचा घर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। आत्म परमात्म मिले वर, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप मिलाइंदा। साचे भगतां हरि हरि मेला, निरगुण सरगुण आप कराईआ। एका घर वखाए गुरू गुर चेला, गुर चेला रूप धराईआ। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, सतिगुर पूरा नाउँ रखाईआ। सर्ब घट वसे इक्क इकेला, घट घट आपे रिहा समाईआ। कटणहारा राए धर्म दी जेला, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जिस सिर हत्थ रखे करतार, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। दूई द्वैती कर खुआर, माया ममता मोह चुकाइंदा। जात पात ऊँच नीच राउ रंक ना कोए विचार, आत्म परमात्म बूझ बुझाइंदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआला ना कोए दुआर, काया गुरुदुआरा इक्क वखाइंदा। दिवस रैण अठ्ठे पहर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बैठा रहे ख़बरदार, आलस निंद्रा विच कदे ना आइंदा। सन्त सुहेले लभ्भे साचे यार, बण पाँधी फेरा पाइंदा। कागद कलम शाही ना कोए विचार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव

कोए ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उच्ची कूक कूक गए पुकार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब सलाहइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अन्त ना पारावार, खाणी बाणी दो जहानी सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहइंदा। राग नाद रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर नीर वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां दरस दिखाइंदा। साचे भगत देवे दरस, हरि दरसी दया कमाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हवस होर ना कोए वधाईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया काअबा फोल फोलाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला चाँईं चाँईंआ। भगतन मेला चाओ घनेरा, गहर गम्भीर आप रखाइंदा। वसणहारा नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। मन मनुआं देवे गेड़ा, मन का मणका आप भुवाइंदा। पंच विकारा चुक्के झेड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। काया मन्दिर वसे खेड़ा, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। खुल्ल्हा करे हरि जू वेहड़ा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। सन्त सुहेला इक्क अकेला निरगुण सरगुण बन्न्हे बेड़ा, खेवट खेटा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आपणे रंग रंगाइंदा। भगत भगवन्त इक्को रंग, एका घर वज्जे वधाईआ। एका सेज इक्क पलँघ, एका मन्दिर आसण लाईआ। एका राग इक्क मृदंग, एका नादी नाद सुणाईआ। एका रस इक्क अनन्द, परमानंद इक्क वड्याईआ। एका प्रकाश एक चन्द, एका नूर नूर रुशनाईआ। एका खेल जाणे ब्रह्मण्ड, जीउँ पिण्ड सोभा पाईआ। एका साहिब दयाल बख़्शंद, बख़्शश आपणे हथ्थ रखाईआ। एका काल ग्रास तोड़े तन्द, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। एका दयाल ख़ुशी कराए बन्द बन्द, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला हरि निरँकार, नर निरँकारा आप मिलाइंदा। महांकाल खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आइंदा। दीन दयाल सतिगुर धार, गुर शब्दी रूप वटाइंदा। अन्त काल ना मारे मार, कल काती मोह मिटाइंदा। साची घाटी एका वार, सतिगुर पूरा आप चढ़ाइंदा। काया ताकी खोल्ह किवाड़, हरि दरसी दरस दिखाइंदा। लहिणा देणा बाकी दए निवार, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। एथे ओथे दो जहानां पावे सार, अग्गे पिच्छे सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्को हरि, जुग जुग वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस शब्दी धार, गुर गुर रूप वटाईआ। गुर गुर शब्द खेल अपार, अपरम्पर आप कराईआ। पंज तत्त तत्त अधार, जगत अधारी वेख वखाईआ। बोध अगाधी इक्क सुनार, गीत संगीत आपे गाईआ। राग नाद ना पाए सार, छत्तीस बैठे नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। हरिजन भगत वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप

वड्याइंदा। हरि पुरख निरँजण लख चुरासी विच्चों कढु, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। इक्क ओंकार लडाए लड, तख्त निवासी आपणी गोद बहाइंदा। आदि निरँजण जोत निरँजण कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। अबिनाशी करता हो हो दास, भगत भगवन्त सेव कमाइंदा। श्री भगवान वेखणहारा खेल तमाश, घट घट आपणी रास रचाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वसे पास, ईश जीव एका दर बहाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल सोभा पाइंदा। पूरी करे सतिगुर आस, दयाल ठाकर दया कमाइंदा। जो जन हरि हरि जपे रसना स्वास, बत्ती दन्द मुख सालाहइंदा। तिस जम का कटे फास, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। वेले अन्त ना होए उदास, सतिगुर आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका दर बहाइंदा। भगत वसेरा साचे घर, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। निरभउं चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए रखाइंदा। अजूनी रहित लख चुरासी जून पार कर, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। पुरख अकाल पुरख परखोतम दीनन आपणी दया कर, दर घर साचे आप बहाइंदा। निरगुण निरवैर निराकार स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए अग्गे खड़, तत्तव तत्त ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त मेला एका घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा दीआ बाती होर ना कोए रखाइंदा। दीआ बाती ना कोई तेल, अग्नी अग्ग ना कोए लगाईआ। जोती जाता जोती मेल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आप वसाए धाम निवेल, सचखण्ड साचे माण दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त वेखे चाँईं चाँईंआ। साचे घर साचा चाओ, हरि सतिगुर आप रखाइंदा। सन्त सुहेले फड़ फड़ बांहों, आप आपणे घर बहाइंदा। इक्क जपाए आपणा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। आपे पिता आपे माउँ, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद बहाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप उडाइंदा। आदि जुगादि करे सच न्याउँ, साचे तख्त सोभा पाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची माण दिवाइंदा। सदा सुहेला सिर रखे ठंडी छाउँ, अग्नी तत्त तत्त बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आपणे रंग समाइंदा। आपणे रंग आपे राता, रत्ती रत्त ना कोए रंगाईआ। करे खेल पुरख बिधाता, बिध आपणी आप जणाईआ। निरगुण सरगुण जोड़ नाता, जोड़ी आपणी आप बणाईआ। आप सुणाए साचा साका, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। बोध अगाधी इक्को गाथा, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। साहिब सुल्तान हरि समराथा, आपणा खेल आप वरताईआ। गुरमुख हरिजन हरिभगत सगल विसूरा लाथा, हरि सतिगुर दरसन पाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी आवण जावण मात गर्भ मुक्के वाटा, जूनी जून ना कोए फिराईआ। निर्मल जोत नूर प्रकाश करे लिलाटा, लिव

अन्तर आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त मेले आपणे घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा कलयुग अन्तिम खोल्ह, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। शब्द वस्त अनमुलड़ी देवे ना कोई तोले तोल, तोलणहारा नज़र कोए ना आइंदा। सति सतिवादी बोध अगाधी सचखण्ड निवासी बैठा रहे अडोल, धुर फ़रमाणा साचा राणा एका एक सुणाइंदा। जन भगतां अंदर काया मन्दिर अनहद नाद वजाए ढोल, मृदंगा आपणे हथ्थ रखाइंदा। अमृत आत्म परमात्म प्याए पौल, निझर झिरना आप झिराइंदा। इक्क अतीता ठांडा सीता बिन मन्दिर मसीता वसे कोल, सच दुआरे आसण लाइंदा। दिवस रैण रैण दिवस सुरती शब्द करे चोल्ह, सेज सुहञ्जणी जोत निरँजणी पुरख अबिनाशा खेल तमाशा, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। आपे भोगी भोग बिलासा, आपे जाणे आपणी रासा, आपे अन्तर कर कर वासा, आपे बण बण दाई दाया सेव कमाइंदा। भगत भगवन्त इक्क धरवासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग जुगत जग जीवण जीवत आपणे हथ्थ रखाइंदा।

★ ५ चेत २०१६ बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह भलाईपुर डोगरां ज़िला अमृतसर ★

सच तख्त सोभावन्त, हरि जू हरि हरि आसण लाइंदा। सचखण्ड निवासी बेअन्त बेअन्त बेअन्त, भूपत भूप दया कमाइंदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, अलख अगोचर भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी धार चलाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अनभउ प्रकाश बणा आपणी बणत, अजूनी रहित डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्क सुहाइंदा। सच सिँघासण हरि निरँकारा, आदि पुरख आप सुहाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अलखना वड वड्याईआ। शब्द अगम्मी धुर जैकारा, धुर दरबारी आप सुणाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र नैण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ। आपणी कार कर करतार, आदि जुगादि वेस वटाइंदा। खेले खेल निरगुण सरगुण धार, दोए दोए रूप आप वटाइंदा। लख चुरासी कर पसार, त्रैगुण माया बन्धन पाइंदा। पंज तत्त तत्त अखाड़, खाणी बाणी भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल आपे कर कर, करता पुरख वेख वखाईआ। साचे मन्दिर आपे वड़ वड़, सचखण्ड दुआरे दए वड्याईआ। साचा अक्खर आपे पढ़ पढ़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। सति दुआरे आपे खड़ खड़, सति सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा

हुक्म एकँकार, अकल कलधारी वरताइंदा। जुगा जुगन्तर खेल अपार, जुग करता आप कराइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, जोती जाता डगमगाइंदा। नाद अनादी धुन धुन्कार, रागी आपणा राग अल्ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल खेलणहारा, लख चुरासी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण कर पसारा, रूप अनूप आप वटाइंदा। गुर गुर देवे मात सहारा, सतिगुर आपणा रंग वखाइंदा। जोती जाता हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा आप चलाइंदा। सच विहारा चले करतार, चाल निराली आप रखाईआ। सेवा ला गुर अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव कर पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी कर त्यार, लोकमात वंड वंडाईआ। बोध अगाधी कर गुफ़तार, गुफ्त शनीद खेल खिलाईआ। लेखा जाणे बातन ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर वड्डी वड्याईआ। कुदरत कादर करे प्यार, करता करीम इक्क शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि हरि ला, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। पुरख अबिनाशी बण मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आप चलाइंदा। नाम निधाना दे सलाह, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। तख्त निवासी इक्क वखाए साचा थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप वखाइंदा। साची रीती हरि करतारा, आदि जुगादि चलाईआ। हुक्मे हुक्म दे फ़रमाणा, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। सेवक सेवा गुर अवतारा, जुग जुग सेव कमाईआ। दोए दोए जोड़ करन निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। खाली झोली मंगण बण भिखारा, दर दरवेश अलख जगाईआ। अबिनाशी करता पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सदा सदा सद देवणहारा, अतोट अतुट आपणा नाउँ वरताईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका गृह दए समझाईआ। एका दीआ बाती कर उज्यारा, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाईआ। सच संदेसा बोध अगाध, शब्दी शब्द शब्द जणाइंदा। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लडाए लाड, गोदी गोद आप सुहाइंदा। एका देवे साचा नाद, तुरीआ राग राग अल्ाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल करे संसार, वड संसारी दया कमाईआ। पीर पैग़म्बर गुर गुर लए अवतार, सतिगुर आपणा खेल कराईआ। पीर पैग़म्बर कर त्यार, दस्तगीर दस्त बदस्त मिलाईआ। आपे वेखे चोटी चढ़ अखीर, आखर आपणी हद्द वखाईआ। मुकामे हक़ इक्क तौफ़ीक, तौफ़ीक नाम खुदाईआ। इक्क इकल्ला लाशरीक, परवरदिगार बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरा नूरो नूर

प्रकाश ना कोए तारीक, अन्धेरा अन्ध ना कोए रखाईआ। सरगुण करे निरगुण प्रीत, प्रीतीवान बेपरवाहीआ। बैठा रहे सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, घट घट रिहा समाईआ। भेव जणाए हरि अनडीठ, अनडिठड़ी कार आप कमाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां सुणाए आपणा गीत, साचा सोहला आपे गाईआ। लख चुरासी परखणहारा नीत, लिख लिख लेखा सब नूं दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल आप वरताईआ। साची कल अकल कल दाता, आपणी आप वरताइंदा। खेले खेल पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाइंदा। चार जुग चौकड़ी गुरुआं पीरां बध्धा नाता, चरन कँवल जोड़ जुड़ाइंदा। अगम्म अगम्मड़ी सुणाए गाथा, लिखण पढ़ण विच कदे ना आइंदा। सर्ब जीआं बण पित माता, लख चुरासी बाल आपणी गोद बहाइंदा। साध सन्त भगत भगवन्त देवे दाता, नाम निधाना झोली पाइंदा। गुरमुखां मेटे अन्धेरी राता, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाइंदा। गुरसिखां पूरा करे घाटा, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग चौकड़ी मुक्की वाटा, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणा नाउँ जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, तख्त निवासी आप जणाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रधाना, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाईआ। लेखा जाणे वेद पुराणा, शास्त्र सिमरत कर पढ़ाईआ। भेव चुकाए गीता ज्ञाना, अंजील कुरानां नाल रलाईआ। खाणी बाणी खेल महाना, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जोती नूर नूर निशाना, नूर नुराना आप वखाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो श्री भगवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। सच्चा हुक्म सच संदेस, सति सतिवादी आप जणाइंदा। आप उठाए विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, गणपति बल ना कोए जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखणहारा नर नरेश, नर नरायण पड़दा लाहइंदा। एथे ओथे दो जहान खेल खिलाए साचे देस, देस दसन्तर सोभा पाइंदा। आदि अन्त श्री भगवन्त सब दा लहिणा लए वेख, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। गुर पीरां दिता किसे ना आपणा भेत, हुक्मे अंदर सर्ब फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण कर कर हेत, आपणा रंग आप रंगाइंदा। जुग जुग रंग रंगदा, आया रंगणहार करतारा। जुग जुग दो जहान दर दरवाज़ा लँघणा, आया निरगुण सरगुण लै अवतारा। जुग जुग करे खेल सूरे सरबंग दा, जोधा सूरबीर बली बलकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी करे खेल न्यारा। जुग चौकड़ी खेल न्यार, निरगुण निरवैर आप कराईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। चार जुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर पीर अवतार मंगदे रहे अधार, दोए जोड़ जोड़

सीस झुकाईआ। दर दरवेश बणे रहे भिखार, खाली झोली इक्क भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब वेखे थाउँ थाईंआ। थान थनंतर वेखणहारा, नित नवित वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, लोकमात फेरा पाइंदा। शब्द संदेस पहली वारा, सचखण्ड दुआरे आप सुणाइंदा। सच दुआरा विच संसारा, उच्च मुनारा आप बणाइंदा। आप लगाए सच दरबारा, तख्त निवासी आसण लाइंदा। चरन बहाए पीर पैग़म्बर गुर अवतारा, पूरब लहिणा सर्ब वखाइंदा। चारों कुण्ट वेखो नज़ारा, नज़र नज़र इक्क खुल्लाइंदा। आपणा आपणा बोल बोल गए जैकारा, कोटन कोटि नाम सुणाइंदा। कोई सीआं राम प्यारा कोई कान्हा कृष्न अधारा कोई शब्द वजाए नगारा, ईसा मूसा कोए संग रखाइंदा। कोई नाम सति करे प्यारा, कोई फतिह बोल जैकारा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सलाहइंदा। नानक कबीर एका एकँकारा, आदि जुगादि आपणा खेल कराइंदा। गुर अवतार छोटे बाले कर त्यारा, लोकमात सेवा लाइंदा। पंज तत्त कर अकारा, निरगुण धारा जोत जगाइंदा। घड़े भन्ने भन्नणहारा, बण ठठयारा खेल कराइंदा। कलयुग आई अन्तिम वारा, पूरब लहिणा सर्ब चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप समझाइंदा। सच संदेसा समझाइंदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। रुत्त रुत्तड़ी वेख वखाइंदा, जुग चौकड़ी कर गवाह। जोती जोत रूप वटाइंदा, पीर पैग़म्बर गुर अवतार दे दे गए सलाह। साचे मन्दिर आसण लाइंदा, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहा। गोबिन्द मेला मेल मिलाइंदा, शब्दी शब्द डंक वजा। पहली चेत रुत्त सुहाइंदा, भगत फुलवाड़ी आप महका। उपर आपणा आसण डाहइंदा, साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह। गुर पीर अवतार भगत भगवन्त आपणे दर बहाइंदा, एका वार लए बुला। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैणां नीर वहाइंदा, उच्ची कूक मारन धाह। पुरख अबिनाशी सब नूं आप समझाइंदा, आपणा आपणा लेखा वेखो आ। हरि का नाम किसे घर नज़र ना आइंदा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ गुरदुआर रिहा कुरला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण रिहा वखा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नेत्र वेख, वेख वेख रहे शरमाईआ। साडी मिटदी जाए रेख, कलयुग जीव तेरा नाउँ गए भुलाईआ। कबीर कहे मैं दस्स के गया भेत, उच्च महल अटल वसे साचा माहीआ। नानक निरगुण कहे मैं करके गया चेतन चेत, चित वित ठगोरी कोए ना पाईआ। गोबिन्द कहे मैं दस्स के गया भेत, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। अन्तिम सब ने झूझणा लोकमात खेत, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी फुलवाड़ी महकाउणी महीना चेत, रुत्त बसन्ती मुख शरमाईआ। आउ सारे वेखो नेत्र नेत, नैण नैण उठाईआ। हरि जू इक्क इकल्ला खेडां रिहा खेड, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। सुणया संदेसा श्री

भगवान, नेत्र नैण सर्ब उठाया। चारों कुण्ट दिसे बेईमान, साची शरअ ना कोए पढ़ाया। घर घर वड़या पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। रसना जिह्वा करन ज्ञान, आत्म अन्तर हरि ना किसे वसाया। रसना पढ़ पढ़ होए शैतान, पारब्रह्म नज़र किसे ना आया। चार दीवारी वड़ वड़ बैठे अंदर मकान, उपर छप्पर छन्न सुहाया। सचखण्ड ना दिसे किसे निशान, निरगुण रूप ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूजी वेर फेर जगाया। दूजी वेर जगाए जाग, जग जीवण दाता दया कमाइंदा। उठो नेत्र वेखो आपणी उम्मत साक, दीन मज़्ब सर्ब जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी नेत्र वेखो आपणा आपणा हाट, हट हटवाणा भेव खुल्लाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दस्स के आए गाथ, रसना जिह्वा नाल मिलाइंदा। कोई ना दिसे किसे साथ, सगला संग ना कोए निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दरबारी खेल कराइंदा। धुर दरबारी खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराया। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, सच संदेसा आप सुणाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग होया पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आप वरताया। हुक्म वरताए श्री भगवन्त, एका एक जणाईआ। चार जुग बणदे रहे गुर अवतार कन्त, जीव जंत नार हंढाईआ। पंज तत्त काया चोला बणाई बणत, हड्ड मास नाड़ी रक्त बूंद जोड़ जुड़ाईआ। थिर ना दिसे कोई अन्त, ख़ाकी ख़ाक सर्ब मिलाईआ। एका नाउँ आपणा मंत, मन्त्र साचा नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क जणाईआ। सच संदेसा एका वार, हरि जू हरि जणाया। साचे सद्द सच्चे दरबार, दर दरबारे आप बहाया। कलयुग कूड़ा होया पार, लोकमात रहे ना राया। गुर अवतार अग्गे चले ना कोए विहार, सब दा लहिणा झोली रिहा भराया। लोकमात ना आउणा हो त्यार, गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले ना वड़ना कर विचार, धुर फ़रमाणा इक्क समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराया। इकावन बावन बोल जैकारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। शाह पातशाह तेरा खेल न्यारा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। साहिब सुल्तान तूं परवरदिगारा, सच्ची तेरी शहिनशाहीआ। चार जुग लोकमात दस्स दस्स गए धारा, हुक्मी हुक्म सेव कमाईआ। अन्तिम होया पार किनारा, तेरे अग्गे ना चले कोए चतुराईआ। दो दो जोड़ करन निमस्कारा, दर बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। साचा हुक्म देवे करतार, करता आपणा खेल कराइंदा। सतिजुग चले सच विहार, सति सतिवादी आप चलाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्क दुआर, भगत दुआरा आप वखाइंदा। मन्दिर शिवदुआला मट्ठ मस्जिद ना कोए अधार, गृह मन्दिर इक्क सुहाइंदा। तीर्थ तट ना कोए किनार, सरोवर

८३१
११

सर ना कोए जणाइंदा। सो धाम हरि करे उज्यार, लोकमात निशान झुलाइंदा। जिस दर गुर अवतार पीर पैग़म्बर आ के करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। सो दुआरा सचखण्ड लोकमात होए उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा आप मुकाइंदा। गुर अवतार सारे कहिण, रल मिल रहे सुणाईआ। पुरख अबिनाशी साडा चुक्कया लहण देण, लोकमात रहे ना राईआ। असीं तेरा पसारा वेख्या आपणे नैण, दर तेरे दरसन पाईआ। तेरे चरन कँवल भगत जन साचे बहण, जिन्हां देवें माण वड्याईआ। रसना जिह्वा इक्को नाअरा कहिण, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। कलयुग मिटी अन्धेरी रैण, तेरा नूर साचा चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। पुरख अबिनाशी तेरी वड्याई, गुर अवतार सर्ब जस गाइंदा। सतिजुग साची धार चलाई, वेद कतेब भेव ना पाइंदा। साचे भगतां कर कुड़माई, आपणा नाता आप जुड़ाइंदा। एका घर धी जवाई, एका मन्दिर आप सुहाइंदा। एका नेत्र नैण रिहा उठाई, एका मिल मिल खुशी मनाइंदा। एका सोहला ढोला रिहा गाई, एका गीत गोबिन्द अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाइंदा। तेरा संग श्री भगवान, एका एक वेख वखाया। तेरा मन्दिर बेपहचान, नज़र विच किसे ना आया। तूं मिहबान बीदो मेहरवान, महिबान तेरी वड्याआ। सचखण्ड दुआरे खेल महान, सचखण्ड दुआरा लोकमात वखाया। छत्ती जुग दी चुक्की आण, नानक रसना रिहा गाया। छत्ती छत्ती चारों कुण्ट वखाण, छत्ती उपर ध्यान लगाया। छत्ती राग सर्ब कुरलाण, नेत्र नैणां नीर वहाया। चार बाणी होई हैरान, चारे खाणी भेव ना आया। पुरख अबिनाशी इक्क अणयाला लाया बाण, दो जहानां रिहा हिलाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत सन्त सब चरनीं डिगे आण, मस्तक धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाया। रसना कहिण तू ही तू भगवान, तेरा अन्त किसे ना पाया। असीं गा गा गए तेरा गान, गा गा आपणा वक्त लँघाया। तूं साहिब सदा बेज़बान, ज़बाह आपणा आप कराया। तेरा अन्त ना मिल्या किसे निशान, बण पाँधी पन्ध ना कोए मुकाया। नानक कबीर कर कर ध्यान, सचखण्ड दुआरे इक्को चरन तेरा नज़री आया। उपरों रिहों बेपहचान, आप आपणा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वरताया। तेरा खेल सदा बेअन्त, बेअन्त तेरी वड्याईआ। असीं जाणया तूं करया अन्त, अन्त तेरे विच समाईआ। तूं सर्ब जीआं दा साचा कन्त, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देणी इक्क पनाहीआ। दर दुआरे मंग पनाह, सब ने शुकर मनाया। मुहम्मद कहे मेरा बख़्श गुनाह, मेरे पीर पीर खुदाया। दूर दुराडा अद्धविचकार बैठा कोई ना पकड़ें बांह, गोबिन्द अग्गे वास्ता पाया। उह तेरा हुक्म रिहा

८३२
११

सुणा, धुर फ़रमाणा एका गाया। चौदां तबक देणे ढाह, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाया। अल्ला राणी नैण रही शरमा, मुख घूँगट एका पाया। मैं जावां केहड़े थाँ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। कलयुग सेज माणे पुत्तर मां, गुर पीर होए ना कोए सहाया। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मढ्ढ गुर दर वेसवा नाच रहे करा, मन मति आपणी नाल रलाया। तूं वेखणहारा थाउँ थाँ, अभुल भुल कदे ना जाया। एका हुक्म दिता सुणा, गोबिन्द साची सेवा लाया। गोबिन्द आपणा खण्डा रिहा चमका, चन्द चांदनी दए चमकाया। खड़ग खण्डा दए खड़का, दो जहानां वेख वखाया। मेरी सदी चौधवीं देणी पूर करा, तेरे अग्गे वास्ता पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाया। गोबिन्द बणाया साचा जज्ज, दूजा शैशन ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं करे हज्ज, बण हाज़ी फेरा पाईआ। चौदां तबक वेख ला भज्ज, भज्जयां पन्ध ना कोए मुकाईआ। आपणा पड़दा वेख लै कज, दो जहानां लुकण किते ना जाईआ। तेरे बुढ्ढे शेख़ बुढ्ढे होए हड्ड, दाढ़ी रत्तड़ी आपणा रंग वटाईआ। अन्तिम डिगणा डूँग्घी खड्ड, ना सके कोए उठाईआ। दीन इस्लाम उम्मती कलाम कलमा रसूल जाणा छड्ड, रसम आपणे नाल रखाईआ। आपणी हत्थीं शरअ ज़ंजीर जाणी वढ्ढ, मिल्या हुक्म धुरदरगाहीआ। लोकमात विच्चों होणा अड्ड, एथे मिले ठोर ना राईआ। पुरख अकाल सच निशाना देणा गड्ड, दो जहानां आप झुलाईआ। सब दी करे पार हद्द, आपणी हद्द ना किसे वखाईआ। उठो सारे आपणा भार जाओ लद, सिर आपणी गंढ्ढ उठाईआ। चेत महीना मुक्के सब दी पूजा होए बन्द, सीस किसे ना कोए झुकाईआ। चार जुग आपणा आपणा लै ल्या अनन्द, अग्गे अनन्द पुरख अकाल आपणा आप जणाईआ। इक्को गीत सुहागी छन्द, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी सफ़ा दए उठाईआ। सब दी सफ़ा दए चुक, चुकणहार करतारा। सब दा पैंडा गया मुक, चार जुग वेख्या बण वणजारा। सब दी औध गई पुग, अन्तिम पार किनारा। आपणी आपणी चोग लई चुग, रसना जिह्वा दे सहारा। हरि का भाणा ना सके रुक, ना कोई मेटे मेटणहारा। निरगुण शेर एका रिहा बुक्क, मारे भबक विच संसारा। अग्गे सके ना कोई उठ, दो जहान रोवण ज़ारो ज़ारा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कहिण असीं तेरे साचे सुत, तूं साहिब बख्शणहारा। आपणी गोदी लै चुक्क, तेरा तक्कया इक्क सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारा। अगम्म अपार खेल अगम्मा, हरि हरि आप जणाइंदा। सब दा अन्त मुक्कया बन्नां, अग्गे राह ना कोए चलाइंदा। पुरख अकाल दो जहान इष्ट देव गुरू गुर सब ने मन्ना, मन मनसा सर्ब मिटाइंदा। पहलों तारया इक्क जट्ट धन्ना, हुण गुरमुख धन्ने आपणी गोद बहाइंदा। कलयुग जीव ना जाणे अन्न्हा, अज्ञान अन्धेर ना

कोए चुकाइंदा। भगत भगवन्त एका मन्ना, जिस आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा आप चुकाइंदा। पिछला लेखा चुक्के चूक, लोकमात रहिण ना पाईआ। सब दी अरथी देवे फूक, जोत फुंकारा एका लाईआ। अन्त ना सुणे किसे दी कूक, कूक कूक सर्ब कुरलाईआ। हरिजन वेखे साचे पूत, पूत सपूते मेल मिलाईआ। गुर चेला ताणा पेटा एका सूत, तन्दी तन्द बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी राह चलाईआ। सति सतिवादी राह चलाउणा, चले चाल निराली। सतिजुग साचा खेल कराउणा, खेल कराए दो जहानां वाली। पुरख अकाल इक्क मनाउणा, चारों कुण्ट खेल निराली। सोहँ ढोला सब ने गाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां निरगुण सरगुण करे आप दलाली।

★ ६ चेत २०१६ बिक्रमी डा० पाल सिँघ दे गृह भलाईपुर डोगरां ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण साहिब समरथ, महिमा अकथ अकथ वड्याईआ। शब्दी धार गुर गुर वस, गुर सतिगुर वेस वटाईआ। भगत भगवन्त मार्ग दस्स, दो जहानां खेल कराईआ। सन्तन देवे साचा रस, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। गुरमुखां मेल मिलावा हस्स हस्स, निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। गुरसिखां तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। जुग चौकड़ी चरनां हेठां झस्स, कोटन कोटि काल खपाईआ। किसे ना चले कोई वस, विष्न ब्रह्मा शिव देण दुहाईआ। गुर अवतार आपणा पन्ध मुका गए नस्स नस्स, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। एका ओट रखदे गए आस, पुरख अकाल चरन ध्यान लगाईआ। जुगा जुगन्तर खेले खेल तमाश, खेलणहारा बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पूरी करी आस, कलयुग आसा आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी घट घट अंदर रखणहारा वास, नूर नुराना निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। भूपत भूप तख्त निवासी शाहो शाबाश, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पावे रास, गोपी काहन आप नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सतिगुर आपणी खेल कराईआ। हरि सतिगुर पूरा एका हरि, एकँकारा आप अख्वाइंदा। शब्दी शब्द साचा वर, गुर गुर झोली आप भराइंदा। भगत भगवन्त चुकाए डर, भय भउ ना कोए वखाइंदा। सन्तन देवे एका वर, नाम वस्त आप वरताइंदा। गुरमुख सज्जण साचे फड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। गुरसिख लगाए आपणे लड़, फड़ पल्लू गंढु पुवाइंदा। जुग चौकड़ी जाए हर, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीरन पीर घाड़न

घड़, तत्तव तत्त हुक्म वरताइंदा। जुगा जुगन्तर वेस कर, काया चोला आप जणाइंदा। नव नौ बेड़ा पार कर, चार चार पन्ध मुकाइंदा। साचे तख्त आपे खड़, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। चार जुग दे करते एका वार फड़, पिछली करनी सब दी वेख वखाइंदा। दो जहान वखाए घर घर, दोए दोए नेत्र नाल मिलाइंदा। आपणी करनी सब ने लैणी भर, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। पुरख अबिनाशी अग्गे सारे कम्बण थर थर, आपणा बल ना कोए जणाइंदा। तू ही पुरख तू ही नारी नर, नरायण तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। आदि जुगादी घाड़न घड़, घड़ घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। पंज तत्त काया चोला जगत अग्नी जाए सड़, तत्तव तत्त संग ना कोए ल्याइंदा। निरगुण सरगुण आपे ल्या फड़, आपणा बन्धन एका पाइंदा। चरन कँवल ल्या धर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। तेरा अन्त ना पारावार, गुर गुर देण दुहाईआ। तूं सतिगुर सच्चा साहिब दातार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ सेवक सेवादार, बण चाकर सेव कमाईआ। तेरा हुक्म तेरा वरतार, हुक्मे अंदर सर्ब भुवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कट के आए वंगार, लोकमात फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम गए हार, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। घर घर दर दर चार कुण्ट, दहि दिशा दिसे विभचार, सच शृंगार ना कोए कराईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे गए हार, हरि का नाम ना कोए समझाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, पढ़ पुस्तक वाद वधाईआ। काया मन्दिर अंदर खोल्ह ना कोई किवाड़, आत्म ताकी कोए ना लाहीआ। साध सन्त फिरन जंगल जूह उजाड़ पहाड़, बण खण्ड बैठे धूआं लाईआ। अन्तर लग्गी अग्नी हाढ़, त्रैगुण बसन्तर ना कोए बुझाईआ। मन इच्छया वेसवा नार चले नाल नाल, ना कोए सके पल्लू छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी माण वड्याईआ। माण वड्याई तेरे हथ्थ, पुरख अकाल सच्चे दातारा। जिउँ भावें तिउँ लैणा रख, कलयुग आई अन्तिम वारा। सब दे भाण्डे दिसण सख, ना कोई मन्दिर गुरुदुआरा। चारों कुण्ट होया भट्ठ, भट्ठ खेड़ा दिसे संसारा। किसे अन्तर ना धीरज जत, सति सन्तोख ना कोए अधारा। चार कुण्ट चार वरन चलाउण आपणी मति, एका भुल्लया हरि निरँकारा। पढ़ पढ़ शास्त्र सिमरत वेद पुराण गावण जस, हरि जू वसे वेद पुराणां बाहरा। नानक सतिगुर रिहा हस्स, कलयुग भुल्ले जीव गंवारा। गोबिन्द कहे मैं मार्ग आया दस्स, एका पिता पुरख अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। अपर अपार खेल महाना, हरि जू भेव कोए ना पाईआ। तूं आदि जुगादि सच्चा सुल्ताना, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। जोधा सूरबीर मर्द मर्दाना, बल आपणा आप धराईआ। तूं भूपत भूप राज राजाना, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। सचखण्ड निवासी तेरा खेल महाना, दो जहानां वेख वखाईआ। गुर

अवतार पीर पैग़म्बर तेरा सुणदे रहे तराना, सुण तराना लोकमात सुणाईआ। लिख लिख लेख बणया जगत महाना, लिख्या लेख लेखक दए जणाईआ। बिन तेरे नाउँ मिले ना कोए टिकाणा, एथे ओथे ना कोए सहाईआ। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड पृथ्मी रसना जिह्वा दीन मज़्ब गाए गाणा, ज़ात पात वंड वंडाईआ। पंज तत्त इष्ट रखाणा, काया माटी पूजस पूज पुजाईआ। हरि का शब्द ना किसे पछाणा, गुर शब्द नज़र ना आईआ। कागज़ शाही उत्ते रख्या माणा, कलम शाही अन्त कम्म किसे ना आईआ। सारे रल मिल शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान प्रभ अबिनाशी दा करन ध्याना, नेत्र नैण नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी जोधा सूरबीर बली बलवाना, आपणा बल ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलम शाही कागज़ करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाया। तेरा लेखा लिख लिख गए गुर अवतार, पीर पैग़म्बर सेव कमाया। तेरा मार्ग दिसे ना अगम्म अपार, मंज़ल हथ्थ किसे ना आया। कोटन कोटि चढ़ चढ़ गए हार, अद्धविचकारे डेरा ढाहया। अन्तिम तू ही तू ही तू ही कर पुकार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरा नाउँ वड्याआ। असीं दे दे सिख्या गए हार, साडी सिख्या कम्म किसे ना आया। धुर दा लिख्या विक्या हट्ट बाजार, कौडी कौडी मुल पुवाया। रसना कहिण साडा गुरू महाराज, राती सुत्तयां अंदर बन्द कराया। बिन बुलाइआं देवे ना अग्गों अवाज़ आपणा बल ना कोए रखाया। जीव जंत बज्झा विच समाज, साचा भेव ना कोए खुल्हाया। पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ मुशायक तेरे बरदे बण बण तेरे दर दर पढ़दे गए निमाज़, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। भगत कहिण भगवान साडा साजण ल्या साज, सिर साडे हथ्थ रखाया। नानक गोबिन्द कहे एका एक चलाए जहाज, सचखण्ड साचे बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलम शाही दए दुहाया। कलम शाही नेत्र रोए, नैणां नैणां नीर वहाईआ। तुध बिन दुखड़ा सुणे ना कोए, चारों कुण्ट कूक सुणाईआ। तुध बिन प्रकाश करे ना कोई लोए, अन्ध अन्धेरा रिहा छाईआ। मैं लोकमात चार खाणी अग्गे लै के आई ढोए, बाणी बण बण रूप वटाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सारे टोहे, घर घर फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम सारे होए मर्द अध मोए, आपणा बल ना कोए रखाईआ। त्रैगुण माया ममता मोहे, मन वासना होए हल्काईआ। तेरा नाउँ ना जाणे कोए, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। साचा बीज ना कोए बोए, लख चुरासी सिंमल रिहा लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे इक्क अरज़ोईआ। तेरे अग्गे इक्क अरदास, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। मैं लिख लिख लेख तेरा सेवा कीती खास, तेरा गाया सच तराना। कलयुग अन्तिम मेरे विच दिसे ना कोई सास, मेरा तुट्टा माण अभिमाना। मेरी पूरी होई ना आस, कलयुग जीव मिले शैताना। कर किरपा सद्द लै पास, मेहरवान

श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वर दे दे सच्चा दाना। दे वर मेरे भगवन्त, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तूं बणाई मेरी बणत, गुर अवतारां कर पढ़ाईआ। तेरे हथ्थ लेखा अन्त, अन्त तेरे चरनां ओट रखाईआ। पहलां गाउँदे रहे मैनूं सन्त, सतिगुर तेरी ओट रखाईआ। हुण सारे होए नंगत, तेरा नाम ओढण कोए ना आईआ। दर भिखारी बणे मंगत, दर दर फेरा पाईआ। अन्तिम गढ़ बणया हउमे हंगत, हरि के पौड़े ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। मंगां मंग मेरे दातार, चरनी चरन सीस झुकाया। तेरी महिमा लिख लिख गई हार, चार जुग सेव कमाया। गुर अवतार कर कर गए पुकार, तेरा ढोला सोहला मात सुणाया। जीव जंत करे ना कोई विचार, तूं विचार विच कदे ना आया। मैनूं पढ़ पढ़ करन खुआर, दर दर देवण धक्का लाया। मैं नित नित रोवां ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैण नैण उठाया। कलयुग जीव होए विभचार, विभचारी आपणा कर्म रहे कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे मुकाया। मेरा लेखा दे मुका, तेरे दर दर सीस झुकाया। बण निमाणी रही कुरला, चारे बाणी वास्ता पाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्का, वांग सुआन घर घर रिहा दौड़ाया। मैनूं पढ़न वाले तेरा नाम गए भुला, तेरा भय ना कोए रखाया। धीआं भैणां रहे तका, पहलों आपणा नेत्र नैण उठाया। फेर मेरे उत्तों पड़दा लैण लाह, वरका वरका लैण उलटाया। रसना गाउदे चढ़या चाअ, माया राणी नाल प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर साची मंग मंगाया। मंगा मंग बण निमाणी, दर तेरे सीस झुकाईआ। तूं बणाई साची राणी, लोकमात दिती वड्याईआ। तूं सुणाई अकथ कहाणी, गुर अवतारां दे वड्याईआ। मेरा नाउँ धराया बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। बौहड़ी बौहड़ी कलयुग मिले ना कोई सच्चा हाणी, मेरा संग ना कोए रखाईआ। अमृत मिले ना ठंडा पाणी, सांतक सति ना कोए जणाईआ। मैनूं पढ़ण वाले होए शैतानी, शरअ आपणे गल पुवाईआ। मेरे नेत्र नैण शरमानी, उपर अक्ख ना सकां उठाईआ। मैनूं मथ्था टेकण वाले करन बेईमानी, तेरा नाउँ गए भुलाईआ। तूं सर्ब घटा दा जाण जाणी, जानणहार तेरी वड्याईआ। मैं लै के आई तेरी निशानी, कलयुग जीव तेरा निशाना रहे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। अन्तिम लेखा चुका आण, सब दा पन्ध मुकाइंदा। तेरी बेनन्ती कर परवान, आपणे विच रखाइंदा। चार जुग दा मेट निशान, चारे कुण्ट फेरा पाइंदा। सति सतिवादी निगहबान, निगह आपणी आप उठाइंदा। एका नाउँ कर बलवान, लोकमात हुक्म चलाइंदा। लख चुरासी देवे

ज्ञान, ज्ञान आपणा आप प्रगटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी मारे बाण, बाण निराला आप चलाइंदा। लख चुरासी कर पहचान, भगत भगवन्त वेख वखाइंदा। दर दुआरे देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। तूं वीं चरनी डिगीं आण, आपणा भेव खुल्हाइंदा। साचे भगत करन तैनूं परवान, तेरा लड़ नाल लड़ बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाना दए संदेसा, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। करे खेल नर नरेशा, साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण धारे आपणा वेसा, निरवैर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे वज्जे वधाईआ। साचा वर सुण लै बात, हरि बातन आप जणाइंदा। चार जुग तूं गाउँदी रही गाथ, मेरा नाउँ तेरा रंग वखाइंदा। अन्तिम दिसे कोए ना साथ, सगला संग ना कोए निभाइंदा। चार कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। पढ़ पढ़ मुक्के ना तेरी वाट, तूं पढ़यां हथ्थ किसे ना आइंदा। तेरा नेड़े दिसे हाट, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। कर किरपा मेरी मुका वाट, अन्त भगवन्त तेरा दर मोहे भाइंदा। जगत खेल बाज़ीगर नाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। सिर रख हथ्थ निरँकारा, निरगुण नर हरि आप जणाइंदा। तूं आउणा चल दुआरा, भगत दुआरा इक्क वखाइंदा। ओथे करां सच विहारा, गुर अवतारां नाल मिलाइंदा। जिन्हां गाई तेरी वारा, तिन्हां तेरे कोल बहाइंदा। पहलों करन उह निमस्कारा, फेर तेरा सीस झुकाइंदा। तेरा झुकया सीस तेरा पार कराए किनारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा भेव दस्स भगवान, मेरे सच्चे साहिब गुसाँईआ। कवण वेला दर डिगा आण, लै निमाणी गले लगाया। मेरा छुट्टा पीण खाण, दिवस रैण रही कुरलाया। मैनूं सके ना कोई पछाण, मेरा भेव किसे ना पाया। नानक निरगुण चार वरनां दे के ज्ञान, चारे वरन गए भुलाया। अन्तिम सब दी करनी हाण, हरि जू तेरे हथ्थ वड्याआ। गोबिन्द वखा के गया इक्क कृपान, कृपानिध दया कमाया। पंजां मेला विच जहान, पंचम साचा जोड़ जुड़ाया। सच सुच्च दा इक्क विधान, बण बिधाता आप रखाया। अन्तिम दिसे ना कोए जवान, सूरबीर नज़र कोए ना आया। धीरज जत ना किसे मकान, साचा हठ ना कोए रखाया। अंदर वड़या तत्त शैतान, आपणी शरअ रिहा चलाया। एका भुल्लया गुर फ़रमाण, फ़रमाबरदार नज़र कोए ना आया। गोबिन्द सूरा वड बलवान, दो जहानां वेख वखाया। कलयुग अन्तिम होए हैरान, सारे हरि जू रहे भुलाया। कोई मन्ने ना पुरख अकाल, इट्टा पत्थर रहे सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ सर्ब वड्याआ। तेरे हथ्थ वड्याई सच्चे भगवान, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। जुग जुग मेटे तू ही निशान, जगत

निशाना तू ही झुलाईआ। तेरा नाउँ होए प्रधान, सति प्रधानगी मात कमाईआ। तूं आदि जुगादी शाह सुल्तान, दूसर राज ना कोए कमाईआ। तेरा हुक्म इक्क फ़रमान, दो जहानां रिहा झुलाईआ। कलयुग अन्तिम वेख्या आण, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ना कोई सिदक ना ईमान, शरअ शरीअत रही कुरलाईआ। ना कोई मज़्ब ना इस्लाम, इस्म आजम ना कोए वखाईआ। पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरान, साचा मसला हल्ल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल लैणा कर, साडी चले ना कोए चतुराईआ।

★ ६ चेत २०१६ बिक्रमी ऊधम सिंघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ★

तेरा हुक्म जुग चार, हरि जू मन्न मन्न सीस झुकाया। तेरी सेवा जुग चार, बण बण सेवक मात कमाया। तेरा लेखा जुग चार, बण बण लेखणी लेख वखाया। तेरी रेखा जुग चार, निरगुण सरगुण रूप वटाया। तेरा आदेसा जुग चार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्त मंग मंगाया। जुग चार तेरा राग, बण रागनी मात अलाया। जुग चार तेरा वैराग, बण वैरागण आप हंढाया। जुग चार तेरा साक, गुर अवतारां नाल रलाया। जुग चार तेरा नात, बण निमाणी तोड़ निभाया। जुग चार तेरा घाट, लख चुरासी इक्क वखाया। जुग चार तेरी याद, ढोला सोहला आप सुणाया। जुग चार सच फ़रयाद, साधा सन्तां झोली पाया। जुग चार तेरा नाद, अनहद नादी नाद वजाया। जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। जुग चार तेरी धार, लिख लिख मात समझाईआ। जुग चार सुणे भगत पुकार, भगतन नाल सलाहीआ। जुग चार हो उज्यार, निरगुण सरगुण वंडण वंड वंडाईआ। जुग चार दे अधार, ब्रह्म पारब्रह्म उपजाईआ। जुग चार इक्क जैकार, वेद नाद सुणाईआ। जुग चार कर ख़बरदार, छत्ती राग राग उपजाईआ। जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे सेव कमाईआ। जुग चार तेरा नाउँ हरि निरँकारे एका गाया। जुग चार तेरा थाउँ, लोकमात मात सुहाया। जुग चार फड़ फड़ बांहों जीव जंत मात उठाया। जुग चार करे सच न्याउँ, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तेरी ओट रखाया। जुग चार घाली घाल, कीती घाल कहिण ना जाईआ। जुग चार बण दलाल, जगत दलाली सेव कमाईआ। जुग चार हो निराल, निर्मल आपणा रूप दरसाईआ। जुग चार अवल्लड़ी चाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बन्धन पाईआ। जुग चार तेरी करदी रही भाल, दिवस रैण रैण दिवस बण बण पाँधी राहीआ। जुग चार मेरा हल्ल ना होया सवाल, लेखा लिख ना कोए मुकाईआ। बण वैरागण होई बेहाल, बिरहों रोग रिहा सताईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मैं निमाणी कमली कोझी, गुण अवगुण ना कोए रखाईआ। तुध बिन आवे ना कोई सोझी, बाली बुध रही कुरलाईआ। चरन दुआरे तेरे झूजी, आपणा आप आप मिटाईआ। मैं भेव की दस्सां तेरा गोझी, बोध अगाध तेरी शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर भिखक फेरा पाईआ। भिखक दर आए निमाणी, हरि चरनां सीस झुकाया। चार जुग मैनूं कहिन्दे रहे बाणी, बाण निराला तीर चलाया। कलयुग अन्तिम आई हानी, माण मोह ना कोए रखाया। नाता तुट्टा चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज मेला मेल ना कोए रखाया। मैं लख चुरासी जीवां जंतां दस्सदी रही पद निरबाणी, निरबाण पद हथ्थ किसे ना आया। साधां सन्तां तेरी बणाई इक्क कहाणी, कह कह रसना वाद वधाया। कोई चढ़ के वेखे ना तेरी सच निशानी, सच महल्ले फेरा पाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तूं साहिब सच्चा सुल्तानी, तेरा भेव किसे ना आया। पीर पैग़म्बर गुर अवतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर रख हथ्थ समरथ एका ओट तेरी तकाया। एका ओट रखी आस, चौथे जुग जुग कुरलाईआ। कलम शाही ना बुझी प्यास, लिख लिख आपणा लेख चुकाईआ। गुर गुर रसना जिह्वा कर कर गए बिलास, बोल बोल समझाईआ। चार वेद अन्त होए निरास, पुराण अठारां देण दुहाईआ। शास्त्र सिमरत करे ना कोई बन्द खुलास, गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। अंज़ील कुरान ना कटे जम फास, तीस बतीसा ना कोए सहाईआ। खाणी बाणी होई निरास, आसा कोए नज़र ना आईआ। सरगुण निरगुण वसे किसे ना पास, खाली हथ्थ फिरे सर्ब लोकाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर लोकमात बणी दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर पृथ्मी आकाश, सूरज चन्द सेव कमाईआ। सो साहिब पुरख अबिनाश, लोकमात भेव ना किसे जणाईआ। मैं आदि फुट्टी उसदी शाख़, फल आपणा जीवां जंतां रही खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, दर तेरे ओट रखाईआ। इक्को ओट पुरख समरथ, जगत बाणी नैण उठाया। जुग जुग चलाया तेरा रथ, तेरा हुक्म हुक्म मनाया। तेरी महिमा अकथना अकथ, कथ कथ जीव जंत पढ़ाया। अक्खर अक्खर भेत दस्स, वक्खर वक्खर पन्ध तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त कोए ना आया। तेरा अन्त ना दस्से कोई भगवान, चारे बाणी रही कुरलाईआ। परा पसन्ती निगह विच आए तेरा निशान, अनडिठड़े धाम बैठी आसण लाईआ। मद्धम आवे ना कोए ज्ञान, ज्ञान ज्ञान ना कोए चतुराईआ। बैखरी सके गा ना तेरा गान, गा गा गीत ना कोए मुकाईआ। मैं चार जुग तेरा सुनेहड़ा दे दे होई हैरान, जुग जुग तेरा हुक्म अल्हाईआ। कोई कहे मेरा इष्ट वेद पुराण, कोई गीता ज्ञान रिहा मनाईआ। कोई कहे मेरा

लहिणा देणा चुकाए अञ्जील कुरान, साचा मसला इक्क पढ़ाईआ। कोई कहे बाणी मारे निराला बाण, तिन्न पंज पैंतीस अक्खर करे कुड़माईआ। खाणी बाणी अञ्जील कुरान वेद पुराण कहिण पुकार, बिन हरि भगवान, दूसर होर ना कोए सहाईआ। असीं सेवक बण के आए विच जहान, हरि का नाउँ जगत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। खाणी बाणी जगत संदेसा, सदी सदी सदी सुणाया। करे खेल इक्क नरेशा, नर नरायण वेस वटाया। असीं जुग जुग करदे उसदा पेसा, पेशवा इक्को इक्क बेपरवाहीआ। आदि जुगादि रहे हमेसा, ना मरे ना जाया। तिस साहिब सदा आदेसा, निउँ निउँ चरनीं सीस झुकाया। कलयुग अन्तिम धरया वेसा, लोकमात फेरा पाया। जुग चौकड़ी मुकाए लेखा, पूरब लहिणा रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह करे ख़बरदार, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। उठो सारे हो त्यार, चार जुग दी युकती रिहा जणाईआ। पहलों भरदा रिहा भण्डार, अन्त खाली दए कराईआ। थिर रहे ना कोए विच संसार, जो घड़या भन्न वखाईआ। चार जुग जिस दी गौदे रहे वार, सो गावणहारा आपे आईआ। जिस दे अग्गे करदे रहे पुकार, सो पुरख निरँजण फेरा पाईआ। जिस दी दस्सदे रहे ग़फ़तार, गुफ्त शुनीद खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा दए मुकाईआ। लहिणा लैणा हरि मुकाउणा, हरि जू हरि हरि जणाइंदा। अक्खर अक्खर आपणी झोली पाउणा, अगला लेखा पूर कराइंदा। काग़ज़ शाही तेरा पन्ध आप मुकाउणा, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। चौदां विद्या माण गवाउणा, चौदां लोक खोज खोजाइंदा। चौदां तबक डेरा ढाउणा, ढाह ढाह ढेर वेख वखाइंदा। राग रागनी मोह चुकाउणा, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। बोध अगाधी एका नाम जपाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल दो जहान, निरगुण सरगुण हो प्रधान, परम पुरख पूरी सब दी आस कराइंदा।

★ ६ चेत २०१६ बिक्रमी धर्म बीर दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ★

जै जैकार आदि जुगादि, हरिजन हरि जू आप कराइंदा। आत्म अन्तर साची दाद, नाम निधाना झोली पाइंदा। शब्द जणाई बोध अगाध, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, अनडिठड़ा रस आप चखाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, सरन सरनाई इक्क रखाइंदा। भगत सुहेला करे लाड, इक्क इकेला फेरा पाइंदा। जुगा जुगन्तर रखे याद, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। लखमी नरायण माधव माध, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, जै जैकार इक्क जणाइंदा। जै जैकार जगत जुग चार, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, भेव अभेदा भेव खुल्ाइंदा। लेखा जाणे बाणी चार, चारे खाणी रंग रंगाइंदा। रसना जिह्वा कर पुकार, नादी नाद धुन प्रगटाइंदा। कागद कलम लिख लिख लेखा दए संभाल, जीवण जुगत जगत चलाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, जै जैकार सर्ब अल्ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। जै जैकार गुरू गुरदेव, देवत देव सीस झुकाईआ। अलख अगोचर अगम्म अभेव, अलख अलखना सच्चा शहिनशाहीआ। जुग जुग जन भगतां लगाए साचा नेहों, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। अमृत आत्म बरसे मेहों, मेघला आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क सुणाईआ। जै जैकार वज्जे नाद, हरि अनादी आप वजाइंदा। जै जैकार होए ब्रह्माद, विष्न ब्रह्मा शिव हरि जस गाइंदा। जै जैकार सन्त साध, सन्त साजण ढोला लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा इक्क सुणाइंदा। सच जैकारा एका नाउँ, नर निरँकारा हरि जणाईआ। जुगा जुगन्तर लख चुरासी वेखे थाईं थाउँ, थान थनंतर बैठा सच्चा माहीआ। हरि सन्त सुहेले पकड़े आपणी बांहों, लोकमात सेव कमाईआ। सिर रखे ठंडी छाउँ, समरथ पुरख वड वड्याईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। आपे पिता आपे माउँ, हरिजन बाल अञ्याणे गोद बहाईआ। निमाणयां देवे साचा थाउँ, निथावयां आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क जणाईआ। जै जैकार इक्क रघनाथ, रघपत आपणी आप जणाइंदा। सदा सुहेला वसे साथ, सगला संग निभाइंदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं खोज खोजाइंदा। नाम निधाना निरंतर गाथ, निरंतर ब्रह्म आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। जै जैकार सच संगीत, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण हरिभगतां करे सदा प्रीत, नित नवित वेस वटाईआ। एकँकारा ठांडा सीत, सच सिँघासण आसण लाईआ। आदि निरँजण इक्क अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। अबिनाशी करता लख चुरासी परखणहारा नीत, घट घट बैठा आसण लाईआ। श्री भगवान खेल करे अनडीठ, लिखण पढ़ण विच कदे ना आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म निभाए सच प्रीत, प्रीतीवान इक्क अख्वाईआ। हरिजन मेला ना कोई मन्दिर ना मसीत, शिवदुआला मट्ठ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जै नाद इक्क सुणाईआ। जै जैकार वज्जे धुन्कार, गृह आत्म आप सुणाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्यार, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। डूँग्घी भँवरी पावे सार, काया कवरी फोल फुलाइंदा। अमृत आत्म देवे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोत निरँजण

८४२
११

कर उज्यार, दीआ बाती डगमगाइंदा। आत्म सेजा कर त्यार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। एका नाद शब्द धुन्कार, जै जैकार आप अलाइंदा। छत्ती राग ना पावण सार, भेव अभेदा भेव छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा इक्क रखाइंदा। सच जैकारा दो जहान, निरगुण सरगुण आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर देदा रिहा धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। साचे तख्त बैठ श्री भगवान, हुक्मी हुक्म हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह सच जैकारा, गुर अवतारां आप सुणाइंदा। पीर पैग़म्बरां दे सहारा, साची वंडण वंड वखाइंदा। कागद कलम कर त्यारा, शाही साचा मेल मिलाइंदा। शब्दी गुर बण लिखारा, मेला लिख लिख सर्ब समझाइंदा। सृष्ट सबाई बन्ने धारा, खाणी बाणी राग अलाइंदा। आपणा भेव रखे न्यारा, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा एका गाइंदा। सच जैकारा गाए श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। साचे भगतां देवे ज्ञान, आत्म ज्ञान इक्क दिवाईआ। साचे सन्तां देवे निशान, सच निशाना इक्क वखाईआ। गुरमुख साचे दर परवान, गुर गुर मेला सहिज सुभाईआ। गुरसिखां देवे इक्क ध्यान, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। तीर निराला मारे बाण, सोहँ मुखी मुख लगाईआ। बिन हरि नामे दुखी होया सर्ब जहान, जीव जंत रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। जन भगत तेरा जैकारा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। लोकमात दे सहारा, सरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। निरगुण खेल करे निराकारा, अनुभव रूप ना कोए जणाइंदा। काया मन्दिर अंदर हो उज्यारा, सच महल्ले सोभा पाइंदा। अनहद नाद सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप अलाइंदा। दिवस रैण इक्क खुमारा, मदि जाम आप प्याइंदा। दरस देवे अगम्म अपारा, प्रकाश प्रकाश विच समाइंदा। हरिजन तेरा इक्क जैकारा, सोहँ आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सिक्दारा, सीस जगदीस एका ताज टिकाइंदा।

★ ६ चेत २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह रामपुर ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण बेपरवाह, बेअन्त खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण शहिनशाह, शाह पातशाह हुक्म वरताइंदा। एकँकारा बण मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि निरँजण सच सलाह, सलाहगीर इक्क हो जाइंदा। अबिनाशी करता भेव चुका, अनुभव आपणी धार रखाइंदा। श्री भगवान सच निशान झुला, सति पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सीस झुका, निरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। सचखण्ड दुआर इक्क सुहा, सोभावन्त आसण लाइंदा। सच सिँघासण

इक्क वड्या, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। निर्मल दीपक इक्क जगा, जोती जाता डगमगाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए छुहा, चार दीवार ना कोए रखाइंदा। रूप अनूप आप वटा, असुत्ते प्रकाश आप कराइंदा। शाहो भूप राजन राज आप अख्वा, सीस जगदीस ताज सुहाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म सुणा, धुर फ़रमाणा आपे गाइंदा। दर दरवेश फेरा पा, दर आपणे अलख जगाइंदा। वड दातारी आपणा नाउँ धरा, आपणी वस्त आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि करतार, सचखण्ड निवासी आप कराईआ। तख्त निवासी शाहकार, शहिनशाह बेपरवाहीआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। बोध अगाधा इक्क जैकार, जै जैकार आपणा नाउँ वड्याईआ। महल अटल वेख अपार, निहचल धाम दए वड्याईआ। साची इच्छया भर भण्डार, आपणी इच्छया झोली पाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, दूसर संग ना कोए रलाईआ। ठांडा सीता एकँकार, घर साचे सोभा पाईआ। आप आपणा कर पसार, पसर पसारी वेखे चाँईं चाँईंआ। लेखा जाण पुरख नार, नार कन्त सेज हंढाईआ । दाई दाया बण धुर दरबार, सेवक साची सेव कराईआ। सुत दुलारा कर त्यार, पूत सपूता गोद उठाईआ। थिर घर साचे खोल्ह् किवाड़, थिर दरबारा आप बणाईआ। आपे जाणे आपणी कार, करता पुरख हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
८४४ साचे सुत इक्क समझाईआ। साचे सुत सुत सपूत, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। तेरा मेरा एका रूप रेख, रंग नज़र ८४४
११ कोए ना आइंदा। तेरा मेरा एका भेत, अभेव भेव ना कोए खुल्ह्हाइंदा। तेरा मेरा एका हेत, साचा हित आप जणाइंदा। ११
तेरा मेरा खेल एक, एकँकारा आप समझाइंदा। तेरा मेरा एका वेस, वेस अनेका आप वटाइंदा। तेरा मेरा एका देश, देश दसन्तर हरि समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। धुर फ़रमाण सच संदेसा, निरगुण निराकार आप जणाईआ। सचखण्ड निवासी नर नरेशा, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। थिर घर वेखे आपे देसा, आप आपणा रूप वटाईआ। बिन कलम शाही लिखे लेखा, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। वसणहारा साचे देसा, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। आदि जुगादी एकम एका, एकँकारा नाउँ धराईआ। शब्दी सुत साची टेका, पुरख अकाल इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाईआ। आपणा पड़दा आपे चुक्क, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे जो बैठा लुक, थिर घर आपणा खेल कराइंदा। थिर घर वासी आपे बुक्क, आपणा बल आप धराइंदा। आपे नूर निर्मल जोत, आपे शब्दी रूप वखाइंदा। आपे रखे साची ओट, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे वसे साचे कोट, आपे बिन छप्पर छन्न डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क जणाइंदा। धुर फ़रमाणा शब्दी धार, हरि शब्द शब्द जणाईआ। निरगुण निरवैर खेल अपार, निराकार आप कराईआ। अजूनी रहित हो त्यार, मार्ग पन्ध इक्क चलाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, अलख अगोचर खेल कराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव भर भण्डार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। विष्नूं निउँ निउँ करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। ब्रह्मा नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। शंकर करे हाहाकार, खुलड़े केस रिहा वखाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, तेरा भेव ना जाणे कोए राईआ। तेरी करे ना कोए गुफ़तार, तेरा राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, किस बिध होए तेरी वड्याईआ। विष्नूं मंगे दान, प्रभ अग्गे झोली डाहइंदा। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, तेरा भेव कोए ना आइंदा। सचखण्ड वसे सच मकान, थिर घर शब्दी सुत बहाइंदा। हउँ बाली बुध अञ्याण, बल आपणा ना कोए रखाइंदा। नेत्र नैण दोए शरमाण, कँवल नैण वेख वखाइंदा। तेरे चरनां इक्क ध्यान, चरन चरनोदक मंग मंगाइंदा। साची वस्त दे दे दान, बण भिखक झोली डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। भिखक दर बण भिखारी, विष्नूं आपणी झोली अग्गे डाहीआ। एका वस्त दे थारी, अतोट अतुट रखाईआ। तेरे चरन कँवल निभे यारी, प्रीतीवान तेरी प्रीत मोहे भाईआ। तेरा प्रेम मेरा बिवहारी, सच विहारा इक्क समझाईआ। तूं पुरख मैं तेरी नारी, बण नार सेव कमाईआ। तेरी सेज कन्त भतारी, कन्त कन्तूहल इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त देणी वरताईआ। साची वस्त झोली पा, दर तेरे मंग मंगाईआ। तूं घाड़न मेरा ल्या घड़ा, घड़ आपणा रंग चढ़ाईआ। मैं दर तेरे डिगा आ, बण निमाणा सीस झुकाईआ। तूं शहिनशाह शाह पातशाह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मैनूं मार्ग देणा पा, साचा पन्ध इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा जणाईआ। आपणा भेव दस्से भगवान, एका एक दया कमाइंदा। शब्दी शब्द तेरा निशान, सच निशाना इक्क वखाइंदा। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, दूसर अक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। मेरा चरन तेरा ध्यान, इष्ट देव इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त देवे दान, हरि दानी आप वरताईआ। एका दोआं खेल महान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सरगुण अंदर जोत महान, शब्दी राग अलाईआ। निरगुण नूर नौजवान, ना मरे ना जाईआ। सो पुरख निरँजण मेहरवान साची वस्त झोली पाईआ। हँ ब्रह्म दे दे दान, ब्रह्मा तेरी कँवल नाभ टिकाईआ। कँवल कँवला खेल महान, पत डाली फुल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ धार आप समझाईआ। सो धार सति सरूप, एका

दोआ वंड वंडाइंदा। निरगुण निरगुण वसे हरि हर कूट, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। सच पंघूड़ा लैणा झूट, पुरख अबिनाशी आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ब्रह्मा वेता हो त्यार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा दातार, तेरा भेव कोए ना आईआ। तेरा रूप निरगुण निराकार, अजूनी रहित पुरख अकाल नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तेरे अग्गे झोली अड्ड, दोए जोड़ वास्ता पाया। परमात्म आत्म कीता अड्ड, पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटाया। किस बिध वेखां तेरी हद्द, पार किनारा नज़र कोए ना आया। विष्नूं विश्व उपजी यद, बंस सरबंस आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाया। मंगे मंग बण भिखारी, हरि चरनां सीस झुकाईआ। कर किरपा हरि निरँकारी, निर्धन सरधन हो सहाईआ। तूं साहिब वड्डा दरबारी, साचे तख्त आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणा राग आप सुणाईआ। देवे वर ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। मेरा नाउँ तेरी याद, यादगार इक्क बणाईआ। मेरी रसन तेरा स्वाद, बिन रसना जिह्वा आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। साचा हुक्म शब्दी सुत, निरगुण निरँकार निराकार आप सुणाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, भेव कोए ना पाइंदा। ब्रह्मे तेरी सुहाए रुत्त, पारब्रह्म दया कमाइंदा। मेरी धार तेरे अंदर पए फुट्ट, आपणा खेल आप समझाइंदा। शब्दी शब्द पए उठ, उठ उठ बल वखाइंदा। स्वामी ठाकर जाए तुट्ठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, सच प्याला हथ्थ रखाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ तेरी झोली पाइंदा। एका नाउँ खेल अपारा, हरि जू हरि हरि जणाइंदा। तेरे अंदर नादी धारा, अनादी नाद वजाइंदा। तेरा लेखा वेद चारा, लिख लिख आप समझाइंदा। तेरा भेव जुग चारा, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। तेरा रूप चार वरन करे पसारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड वंडाइंदा। तेरा नूर चार कुण्ट होए उज्यारा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वंड वंडाइंदा। करे खेल आप निरँकारा, धुर संदेसा इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द प्रगटाइंदा। ब्रह्मा कहे सुण निरँकार, दर तेरे सीस झुकाया। कवण रूप तेरी गुफ्तार, कवण संदेसा दए अल़ाया। कवण बणे लेख लिखार, लिख लिख लेख दए जणाया। कवण करे सच विहार, बण बिवहारी भेव खुल़ाया। मैं तेरा सेवादार, बण सेवक सेव कमाया। दोए जोड़ करां निमस्कार, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक आप वरताया। मेरा

नाउँ शब्द धार, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। लेखा जाणे वेद चार, चार जुग वंड वंडाइंदा। चारे खाणी कर त्यार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड रंग रंगाइंदा। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। चार जुग गुर अवतार, पंज तत्त काया सेवा लाइंदा। चार जुग भगत भगवन दए अधार, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। चार जुग सन्तन देवे आप दीदार, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। चार जुग गुरमुखां खोल्ह बन्द किवाड़, आत्म परमात्म बूझ बुझाइंदा। चार जुग गुरसिख साचे घोड़े चाड़, वागां आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आवे जावे वारो वार, वेस अनेका आप वटाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कर विहार, हरि शब्दी खेल कराइंदा। गुर अवतार कर सेवादार, पंज तत्त सेवा सच जणाइंदा। पीर पैग़म्बर दे अधार, दस्तगीर संग निभाइंदा। एका बोल सति जैकार, जै जैकारा आपणे नाउँ कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, हरि जू हरि हरि सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा । धुर फ़रमाणा एका वार, आदि पुरख आप जणाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म भण्डार, लख चुरासी बणत बणाईआ। घट घट अंदर जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। घट घट अंदर शब्द धुन्कार, अनहद रागी राग अल्हाईआ। घट घट अंदर खेल महान, गोपी काहन आप नचाईआ। घट घट अंदर सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। घट घट अंदर पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे कुड़माईआ। घट घट अंदर सुंञ मसाण, धूआँधार आप रखाईआ। घट घट अंदर देवे ज्ञान, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण हरि जू वेखे, वेखणहार आप करतारा। जुगा जुगन्तर लाए लेखे, लेखा जाणे गुर अवतारा। लख चुरासी भरम भुलेखे, आप बणाया भरमी गढ़ हँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बोले सच जैकारा। जै जैकार एका वार, आदि पुरख सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरी रीती अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरी वड्याईआ। तेरा भेव ना पाए कोई सार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। हउँ सेवक सेवा करीए विच संसार, वेद कतेब नाल रलाईआ। शास्त्र सिमरत खोल्ह किवाड़, बण हटवाणा हट्ट चलाईआ। अक्खर अक्खर दे ज्ञान, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे पैग़ाम, सच संदेसा मात सुणाईआ। अञ्जील कुरान करन वखाण, तीस बतीसा एका गाईआ। चारे बाणी गुण निधान, चारे खाणी झोली पाईआ। अन्तिम सारे होण हैरान, गुर पीर पैग़म्बर नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे करतार, कुदरत आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे जुग जुग चार, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा।

हुक्मे अंदर गुर अवतार, हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा। हुक्मे अंदर अठ दस होए उज्यार, हुक्मे अंदर पंज तत्त आपणा रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ वखाइंदा। आपणा खेल रखे हथ्थ, भेव कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाया रथ, गुर अवतार देण गवाहीआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पाए नथ, नाम डोरी हथ्थ रखाईआ। आपणी महिमा गणाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सदा सुहेला मार्ग दस्स, एका एक राह वखाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बणे पाँधी सच्चा राहीआ। सच्चा मार्ग जन भगतां दस्स आपणा भेव खुल्हाईआ। एका नूर करे प्रकाश, रवि ससि मुख शरमाईआ। एका करे भोग बलास, आत्म परमात्म लए प्रनाईआ। एका पहने सच लिबास, पंज तत्त चोला आप हंढाईआ। एका वेखे खेल तमाश, पवन स्वास नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी राग आप अल्हाईआ। शब्दी राग गाए करतारा, गावणहारा दिस ना आईआ। जुग चौकड़ी बणदा रिहा वणजारा, दो जहाना हट्ट खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे बूझे बूझणहारा, दूसर समझ विच ना आईआ। रागी नादी वसे बाहरा, कह कह कथ कथ अन्त कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाईआ। साचा भेव खोल्हे भगवन, आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी बन्न्हे बान्हण, सिर आपणे भार उठाइंदा। लेखा जाणे सीता रामण, कृष्ना काहनन वेख वखाइंदा। ईसा मूसा दे निशानण, सच पैग़ाम आप अल्हाइंदा। इक्क मुहम्मद बन्न्हे गानण, चौदां तबक तन्द वखाइंदा। नानक देवे नाम निधानन, नाम सति सति वरताइंदा। गोबिन्द कहे पुरख अकालण, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। आदि जुगादी खेल महानन, ख़ालक ख़लक आप कराइंदा। कलयुग अन्त होए प्रधानन, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। डंक वजाए दो जहानन, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पतालां आप हिलाइंदा। इक्क झुलाए सच निशानन, राज राजानां शाह सुल्तानां तख्तों लाहइंदा। एका देवे सच्चा दानन, लख चुरासी बख्शे मानन, आत्म अन्तर बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी खेल आप कराइंदा। शब्दी खेल गुर गुर सज्जण, सतिगुर पूरा आप कराईआ। नौ खण्ड पृथमी एका सज्जण, लख चुरासी दए बणाईआ। सर्ब जीआं दा पड़दे कज्जण, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जुग जुग काल नगारे सिर ते वज्जण, कूके काल दए दुहाईआ। लाड़ी मौत घर घर आए सद्दण, राए धर्म हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाउँ दए वड्याईआ। विष्नूं कहे तेरा नाउँ, हरि निरँकार मोहे भाया। ब्रह्मा कहे तूं पिता माउँ, मैं तेरी गोद सुहाया। आदि अन्त फड़ना बांहों, इक्क तेरी ओट

तकाया। सदा सद देणी ठंडी छाउं, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जुग जुग करना हक़ न्याउँ, हक़ हक़ीक़त वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग दे समझाया। आपणा मार्ग देणा दस्स, अन्त तेरी ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी होण बस, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आ आ जाण नस्स, तेरे तेरे विच समाईआ। लख चुरासी त्रैगुण माया अंदर रही फस, जगत जंजाल ना कोए तुड़ाईआ। हउमे हंगता तीर मारे कस, गढ़ हँकार ना कोए तुड़ाईआ। जूठ झूठ दर दर घर घर रिहा नच्च, बण नटुआ स्वांग वरताईआ। किसे कम्म ना आवे भाण्डा कच्च, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। एका नाउँ देणा सच्च, मेरे साहिब सच्चे माहीआ। मैं तेरा तूं मेरा इक्क दूजे अंदर जाईए रच, दूई नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्त संदेसा इक्क सुणाईआ। अन्त संदेसा देवे हरि, हरि हरि जू दया कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लड़ लैणा फड़, साचा पल्लू इक्क फड़ाइंदा। सोहँ अक्खर लैणा पढ़, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। सचखण्ड दुआरे जाणा चढ़, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। कलयुग अन्त आवे विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा, डंका वजाए घर घर, राउ रंकां आप उठाइंदा। एका अक्खर चार वरन अग्गे धर, चार जुग दी पिछली कीती आप उलटाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले इक्क इकेले लैण पढ़, जीव जंत लख चुरासी भरम भुलेखे पाइंदा। किरपा कर नरायण नर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ प्रगटाइंदा। एका नाउँ सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। आपणे जिहा आपे हो, हरिभगत आपणे नाल मिलाईआ। आपणा बीज आपे बो, गुरमुख फुलवाड़ी आप महकाईआ। दुरमति मैल देवे धो, गुरसिखां बख्शे चरन सरन सरनाईआ। अमृत आत्म देवे चो, निझर झिरना आप झिराईआ। आदि निरँजण करे लो, जोत निरँजण दए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा वेला अन्तिम आउणा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी फेरा पाउणा, लोकमात वेस वटाइंदा। चार जुग दा लहिणा देणा झोली पाउणा, गुर अवतार दर बहाइंदा। अग्गे मार्ग इक्क वखाउणा, ज़ात पात ना कोए वखाइंदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका घर बहाउणा, दर साचा इक्क वड्याइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन सोहँ ढोला साचा गाउणा, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी तोला बण के फेरा पाउणा, लख चुरासी नाम कंडे तोल तुलाइंदा। मनमुख जीव अन्तिम रोणा, साची सेज मिले ना सौणा, आत्म खाट ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, विष्न ब्रह्मे आप समझाइंदा। विष्नूं तेरा विश्व रूप, सो पुरख निरँजण दए वखाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म सरूप, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। नाउँ निरंकारा चारे कूट, वरन बरन सुणाईआ। नाता तुट्टे जूठ झूठ, सच सुच करे कुड़माईआ। एका उठे साचा पूत, गुर शब्दी नाउँ धराईआ। भगत भगवन्त ताणा पेटा सूत्त, सूत्रधारी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम थान थनंतर, निरगुण निराकार वेख वखाइंदा। चारे कुण्ट लग्गे बसन्तर, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। लख चुरासी भुल्ले गुर का मन्त्र, हरि हरि राग ना कोए अलाइंदा। गारा मिटी बणा बणा बणतर, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। घट घट वासी पुरख अबिनाशी सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, निज आत्म डेरा लाइंदा। अक्खर अक्खर पढ़ाए आपणा मन्त्र, सोहँ साचा जाप जपाइंदा। लेखा जाणे गगन गगनंतर, मंडल मण्डप फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि इक्को नाउँ एका घर वसाइंदा। एका घर इक्क वसेरा, वसावणहारा इक्क अख्वाईआ। एका मन्दिर एका डेरा, एका बैठा आसण लाईआ। एका दूर एका नेड़ा, एका हर घट रिहा समाईआ। एका नगर एका खेड़ा, एका फेरा पाईआ। एका देवे जुग जुग गेड़ा, जुग चौकड़ी आप भुवाईआ। एका करे धरत मात दा खुल्ला वेहड़ा, लख चुरासी आपणी गोद बहाईआ। एका करे हक़ नबेड़ा, सही सलामत सच्चा माहीआ। इक्क चलाए जुग जुग बेड़ा, लोकमात फेरा पाईआ। एका नाउँ वखाए सञ्झ सवेरा, काली रैण कोए रहिण ना पाईआ। एका नाउँ चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा पन्ध मुकाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर शब्दी शब्द पाए घेरा, नव नौ आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा सर्ब वर, वर दाता इक्क हो आईआ।

★ ७ चेत २०१६ बिक्रमी उत्तम सिँघ दे गृह वैरोवाल ज़िला अमृतसर ★

कर खेल पुरख समरथ, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे वस, जोती जोत डगमगाइंदा। आपणी इच्छया आपे कर कर वक्ख, आपणी वंडण आप वंडाइंदा। थिर घर दुआरे शब्दी रख, शाह सुल्ताना आप सुहाइंदा। निरगुण निरगुण देवे रस, रस रसीआ भेव ना आइंदा। कृपानिध कर प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, साची रास आप रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी रूप आप धराइंदा। शब्दी रूप पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। आपणा नूर आपे जम्म, ना कोई पिता ना कोई माईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, करता पुरख नाउँ धराईआ। करे खेल श्री भगवान, बेअन्त वड वड्याईआ। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। थिर

घर देवे आपणा दान, दाता दानी झोली पाईआ। आदि जुगादी नौजवान, सो पुरख निरँजण खेल कराईआ। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, एकँकारा रंग चढ़ाईआ। आदि निरँजण जोत महान, जोती जाता डगमगाईआ। श्री भगवान वेखे आण, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी मंगे दान, भिखक आपणी झोली डाहीआ। पारब्रह्म वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। तख्त निवासी राज राजान, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण निरगुण हुक्मरान, हुक्मी हुक्म इक्क सुणाईआ। थिर घर वेखे खोल्ह दुकान, दर दरवाज़ा आप जणाईआ। शब्दी सुत देवे माण, बाल निधाने एह समझाईआ। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान जगत पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव खोल्ह करतार, हरि करता दया कमाइंदा। थिर घर वेखे वेखणहार, रूप रंग ना कोए जणाइंदा। साचा दीआ कर उज्यार, तेल बाती ना कोए पाइंदा। कमलापाती खेल न्यार, नर निरँकार आप कराइंदा। साची सखी बोल जैकार, जै जैकारा आप सुणाइंदा। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा राह चलाइंदा। साची सिख्या गुर विचार, गुर गुर बूझ बुझाइंदा। एका नाद एका धुन्कार, एका एक सुणाइंदा। इक्क महल अटल मुनार, एका आसण लाइंदा। एका खेल करे निरँकार, नर हरि आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणी बणत बणाइंदा। थिर घर हरि जू घाड़त घड़या, घड़नहार आप निरँकारा। शब्दी शब्द अंदर वड़या, उच्ची बोल बोल जैकारा। आपणा दरस आपे करया, आपे मेलणहारा। आपणा पल्लू आपे फड़या, आपे बणे हरि कन्त भतारा। साची सेजा आपे चढ़या, अलख अगोचर बेऐब परवरदिगारा। साचा अक्खर आपे पढ़या, निअक्खर खेल न्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा कर पसारा। थिर घर पसारा शब्दी रूप, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। आदि जुगादी सति सरूप, सति पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। राज राजान शाहो भूप, भूपत आपणा हुक्म सुणाइंदा। वसणहारा साची कूट, निहचल आपणा धाम वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका घर आप सुहाइंदा। एका घर सोभावन्त, थिर दरबारा आप सुहाईआ। पुरख अबिनाशी हरि बेअन्त, बेअन्त खेल वखाईआ। आप बणाए निरगुण बणत, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। सदा सुहेला एका कन्त, कन्त कन्तूहल वड वड्याईआ। एका नाउँ एका मंत, एका एक करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे हरि जू खड़, थिर घर आपणी वंड वंडाईआ। थिर घर वंडे हरि करतारा, आपणी बणत आप बणाइंदा। करे खेल अपर अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, साचा नाअरा एका लाइंदा। पिता मात जोत अधारा, शब्दी पूत गोद सुहाइंदा।

हँ हँ एका धारा, सोहँ आपणा रूप वखाइंदा। जोती शब्दी इक्क प्यारा, एका गंढु पुवाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर वसाइंदा। एका पुरख एका नारा, एका कन्त हंढाइंदा। एका हुक्म इक्क वरतारा, हुक्मी हुक्म इक्क फिराइंदा। एका डंका इक्क जैकारा, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। एका वणज इक्क वपारा, वणज वपारी इक्क अख्वाइंदा। एका वस्त इक्क भण्डारा, हरि जू एका एक वरताइंदा। एका होए देवणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, थिर घर साचे आप कराईआ। शब्दी सुत देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। नाम निधाना गुण निधान, गुणवन्ता आप समझाईआ। एका राग इक्क तरान, सच तराना आपे गाईआ। भेव खुल्हाए दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका गुण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर आप प्रगटाईआ। शब्दी गुर सूरबीर, बलधारी आप उपाइंदा। आपे चोटी चढ़ बैठ अख़ीर, आखर आपणी खेल वखाइंदा। आपे लख चुरासी विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया मार ज़ंजीर, पंचम आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर इक्क समझाइंदा। शब्दी गुर हरि जणा, एका गुण समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव झोली पा, त्रैगुण नाता जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी घाड़न लैणा घड़ा, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। घट घट दीपक जोत जगा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। घट घट नाद देणा वजा, अनहद नाद हिलाईआ। घर घर सुनेहड़ा देणा सुणा, सो पुरख निरँजण रिहा गाईआ। ब्रह्मा वेता देणा पढ़ा, चार वेद वेद पढ़ाईआ। लोकमात मार्ग ला, लख चुरासी वेख वखाईआ। जुग जुग हरि हरि नाउँ प्रगटा, अनुभव आपणी धार वखाईआ। पंज तत्त चोला माण दिवा, काया बंक बंक वड्याईआ। निरगुण सरगुण रंग चढ़ा, रंग रंगीला इक्क अख्वाईआ। आत्म परमात्म बन्धन पा, ब्रह्म पारब्रह्म वखाईआ। ईश जीव एका घर बहा, जगदीस खुशी कराईआ। आत्म सेजा इक्क सुहा, सुहञ्जणी सेज आप हंढाईआ। गुर शब्द सतिगुर हो बेपरवाह, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जुग जुग बणे मात मलाह, वेस अनेक वटाईआ। गुर अवतार लए प्रगटा, प्रभ आपणी बूझ बुझाईआ। साचा मार्ग दए समझा, जीवण जुगत इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क अख्वाईआ । शब्द गुर इक्को दाता, जुग जुग दया कमाइंदा। खेले खेल पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाइंदा। सरगुण निरगुण बध्धा नाता, जोती जाता जोड़ जुड़ाइंदा। बोध अगाध सुणाए गाथा, अक्खर अक्खर आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादी पिता माता, गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान आपणी गोद बहाइंदा। एका देवे साचा साथा, सगला संग आप निभाइंदा। एका पूजा एका पाठा, इष्ट देव इक्क समझाइंदा। एका मन्दिर एका हाटा, चौदां लोक खेल कराइंदा। एका

तीर्थ एका ताटा, हरि चरन सरोवर इक्क बणाइंदा। एका अमृत एका बाटा, कँवल नाभी आप रखाइंदा। एका मन्त्र एका गाथा, राम नाम इक्क समझाइंदा। एका पुछणहारा वाता, गुर शब्दी नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा खेल कराइंदा। गुर गुर खेल आदि जुगादि अवल्ला, जुग जुग भेव कोए ना पाइंदा। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, सति सतिवादी वेस धराइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, शब्दी डोर आप बंधाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, रल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। सच संदेस गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपे घल्ला, कलमा कलाम आप पढ़ाइंदा। दो जहान श्री भगवान नूर इलाही आपे खल्ला, नूरो नूर डगमगाइंदा। निरगुण निराकार सरगुण धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द वेस वटाइंदा। शब्द गुर वेस अनेका, जुग करता आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर धरया भेखा, भेखाधारी भेव ना राईआ। कलयुग पीर पैग़म्बर लेखा जाणे मुल्ला शेखा, बिस्मिल आपणा खेल कराईआ। नर नरैण भगत भगवन्त नेत्र लोचण एका वेखा, आत्म ताकी बन्द खुल्हाईआ। भेव जणाए मूंड मुंडाए धारी केसा, नर नरेशा बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर जाणे लेखा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। शब्दी गुर खेडे खेडा, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। एका शब्द वड्डा वड, हरि जू हरि हरि आप बणाइंदा। सचखण्ड दुआरे आपणे विच्चों कढ्ढ, थिर घर साचे आप बहाइंदा। लख चुरासी जीव जंत खाणी बाणी लडाए लड, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आप समाइंदा। ना कोई जाणे पार किनारा हद्द, अद्धविचकार सर्ब फिराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हरि का नाउँ वजा के गए नाद, नाद अनादी नाद सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी बोध अगाध, बोध अगाधा भेव जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहे अराध, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। भगत भगवन्त आपे लाध, जुग जुग आपणा मेल मिलाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, आपणी गोद बहाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, एका अक्खर नाउँ पढ़ाइंदा। एथे ओथे दो जहान सुनणहार फरयाद, सतिगुर पूरा नाउँ धराइंदा। साची डोरी आपे बांध, चरन प्रीती इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर गुर सलाहइंदा। शब्द गुर सलौहण जोग, जोगी जती जुगीशर रहे गाईआ। शब्द गुर धुर संजोग, आदि जुगादि मेल मिलाईआ। गुर शब्द कटे रोग, हउमे हंगता रहिण ना पाईआ। गुर शब्द लेखा चुकाए चौदां लोक, लोक परलोक होए सहाईआ। गुर शब्द वखाए सचखण्ड दुआरा साचा कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। गुर शब्द मिलाए निर्मल जोत, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुर दए वड्याईआ। एका गुर शब्दी रंग, रंग रंगीला हरि बणाइंदा।

एका गुर सेज पलँघ, पावा चूल ना कोए रखाइंदा। एका गुर वड तरंग, लोआं पुरीआं आप दौड़ाइंदा। एका गुर डूँग्घी कंदर जाए लँघ, काया मन्दिर अंदर औदां जांदा दिस ना आइंदा। एका गुर अंदर वड़ वजाए मृदंग, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। एका गुर सूरा सरबंग, सूरबीर खेल कराइंदा। एका गुर आवण जावण लख चुरासी मुकाए पन्ध, जन्म मरन गेड़ चुकाइंदा। एका गुर नाता तोड़े जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पार कराइंदा। एका गुर साचा नाम देवे वंड, जगत हट्ट हथ्थ किसे ना आइंदा। एका गुर जुग जुग मेटे भेख पखण्ड, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाइंदा। एका गुर दूई द्वैती भरमां ढाहे कंध, निरगुण जोत साचा चन्द चढ़ाइंदा। एका गुर आत्म परमात्म देवे सच सुगंध, फुल फुलवाड़ी इक्क महकाइंदा। एका गुर सच अनन्द, अनन्द मंगल एका गाइंदा। एका गुर परमानंद, परम पुरख खेल कराइंदा। एका गुर जुग चौकड़ी पाए बंध, बन्दीखाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। एका गुर टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार दया कमाइंदा। एका गुर नाता तोड़े जगत दुहागण नार रंड, हरि जू कन्त इक्क मिलाइंदा। एका गुर आदि जुगादि सुणाए साचा छन्द, जुग जुग ढोला एका गाइंदा। एका गुर दूर दुराडा मुकाए पन्ध, नेरन नेर दरस कराइंदा। एका गुर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क बणाइंदा। शब्द गुर हरि जू हरि हरि, एका एक बणाईआ। जुग चौकड़ी खेल कर कर, नव नौ चार वेख वखाईआ। गुर अवतार हुक्मे अंदर फड़ फड़, साची सेवा इक्क समझाईआ। भगत भगवन्त चुका डर डर, भय भउ दए मुकाईआ। सन्त साजन दरस दिखाए खड़ खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। गुरमुख सज्जण लाए लड़ लड़, आप आपणा बन्धन पाईआ। गुरमुख वेखे साचे घर घर, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। आदि जुगादी देवणहारा वर वर, वर दाता बेपरवाहीआ। लख चुरासी घाड़न घड़ घड़, अन्तिम आपे भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त एका शब्द शब्द जणाईआ। आदि गुर शब्द उपदेश, पुरख परखोतम करे पढ़ाईआ। अन्त गुर शब्द नरेश, शाह सुल्तान वेस वटाईआ। प्रगट होए आपणे देस, देस दसन्तर भेव खुल्हाईआ। निरगुण धारे आपणा वेस, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, मूंड मुंडाया नज़र ना आईआ। लख चुरासी रिहा वेख, घट घट डेरा लाईआ। भगत भगवान दस्से भेत, अभेव आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम करे हेत, हितकारी दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका गुर अख्वाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, गुर गुर कहिण ना जाईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जिस दे अग्गे गुर अवतार पीर पैग़म्बर करदे रहे निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। सो पुरख सुल्तान करे खेल अपारा, अपरम्पर आपणी धार वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग

करे पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। आदि बणाए वेद पुराण शास्त्र सिमरत धारा, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी नाल रलाईआ। चारे खाणी करे हाहाकारा, चार कुण्ट कुरलाईआ। चारे बाणी रोवे ज़ारो ज़ारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। कलम शाही करे पुकारा, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। लिख लिख लेख वखाया सर्ब संसारा, संसार सागर पार ना कोए कराईआ। कलयुग होया धूआँधारा, चारों कुण्ट रैण अन्धेरा छाईआ। ना कोई दिसे मीत मुरारा, साक सज्जण सैण सगला संग ना कोए निभाईआ। पिता पूत ना कोए प्यारा, नार कन्त ना कोए वड्याईआ। एका भुलया हरि निरँकारा, घर घर माया ममता होई हल्काईआ। वरन बरन होए खुआरा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करन लड़ाईआ। अठारां बरन रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। धरत मात कढ्ढे हाढ़ा, खुल्ह्ड़े केस रही वखाईआ। चोरां ठग्गां कलयुग जीवां मेरे उत्ते लाया अखाड़ा, वेसवा नाच रहे कराईआ। चारों कुण्ट अग्ग लग्गी तत्ती हाढ़ा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर श्री भगवान किसे ना लभ्भे साचा लाड़ा, लख चुरासी जीव जंत जगत भोग बिलास कराईआ। अन्तिम अन्त मानस जन्म आए हारा, लख चुरासी पार ना कोए कराईआ। ना कोई सहारा मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआला गुरदुआरा, गुरू गुर नज़र किसे ना आईआ। पंडत पांधे मुल्ला शेख़ ग्रन्थी पन्थी हरि का नाउँ ना किसे विचारा, पढ़ पढ़ रसना जिह्वा रहे गाईआ। घर घर अंदर पंज तत्त तत्त विकारा, सच्चा सतिगुर ना कोए प्यारा, गुर गुर रूप नज़र ना आईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, भेव कोए ना पाईआ। आदि शब्द गुर कर पसारा, मध आपणी धार चलाईआ। सेवा लाए तेई अवतारा, भगत अठारां नाल मिलाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद संदेसा दे चार यारा, चार यारी करे पढ़ाईआ। नानक निरगुण सरगुण बोल सतिनाम जैकारा, जै जैकार गया सुणाईआ। गोबिन्द एका फतहि डंका वज्जा विच संसारा, वरन बरन ऊँच नीच राउ रंक गया जणाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, सब दा लेखा दए मुकाईआ। चार वरन देवे इक्क सहारा, नौ खण्ड पृथमी फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे पार किनारा, सुरपति इन्द आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त शब्द गुर इक्क रहि जाईआ। शब्द गुर इक्को एक, एका एक वड्याईआ। पंज तत्त गुर अवतारां देदा रिहा टेक, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। हुक्मे अंदर लिखाउँदा रिहा लेख, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। बोध अगाधा खोल्ह भेत, अनुभव आपणा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द गुर प्रगटाईआ। शब्द गुरू गुर प्रगट मात, लग मातर सर्ब मुकाइंदा। चार जुग दा वेखे खात, पिछला खाता पूर कराइंदा। चार वरन

मेट अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चढ़ाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ देवे दात, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। दरस दिखाए इक्क इकांत, घर घर आपणा आसण लाइंदा। भरम भुलेखा कढ्ढे भरांत, मन का भय भउ गवाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को ज़ात, आत्म ब्रह्म आपणी अंस वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द धार चलाइंदा। शब्द गुर वड बलवान, लेखा सब दा दए चुकाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात झुलाईआ। जुग चौकड़ी मन्ने आण, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। कागद कलम होए हैरान, हरि का भेव कोए ना आईआ। गुर पीर अवतार ना सके पछाण, बेअन्त बेअन्त कह कह लोकमात गए जस गाईआ। तेरा हुक्मे अंदर खेल महान, तेरा हुक्म सच्ची शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम आपे वेखे आण, वेद व्यासा रख भरवासा एका ओट तकाईआ। ईसा कहे दए दिलासा, मेरा खुदा पिता रूप वटाईआ। मुहम्मद कहे अन्त मेरे वसे पासा, चौदां सदीआं पन्ध मुकाईआ। अमाम अमामां सिर पुरख अबिनाशा, परवरदिगार मेरा गुसाँईआ। नानक कहे निरगुण पूरी करे आसा, एका एकँकार ओट रखाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे खेल तमाशा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जन भगतां करे पूरी आसा, जन्म जन्म दे विछड़े लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द गुर वड्याईआ। एका शब्द होए प्रकाश, हरि प्रकाशी आप कराइंदा। बाकी पिछला लहिणा होए विनास, लोकमात रहिण ना पाइंदा। एका नाउँ रसन स्वास, अजपा जाप आप जपाइंदा। आत्म परमात्म वसे पास, ईश जीव भेव खुल्हाइंदा। एका मन्दिर पाए रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। हरिजन हरि हरि इक्को ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाइंदा। बातन ज़ाहर पुच्छे वात, ज़ाहर ज़हूर दया कमाइंदा। चरन कँवल साचा नात, धरत धवल वड्याइंदा। करे खेल बहु बिध भांत, भेव कोए ना पाइंदा। सर्ब जीआं बणे पित मात, लख चुरासी आपणी गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इष्ट गुरदेव इक्क वखाइंदा। इष्ट देव गुर एका एक ओंकारा, अकल कला अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, निहकलंका नाउँ धराईआ। साचा डंका विच संसारा, निरगुण सरगुण आप सुणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क जैकारा, एका मन्त्र अन्तर करे पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप चौथे जुग आई हारा, चार यारी दए दुहाईआ। पंचम मीता इक्क प्यारा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। जगत जगदीस पावे सारा, सीस एका ताज सुहाईआ। राउ रंकां करे खुआरा, शाह सुल्तान कोए रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई बोले इक्क जैकारा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै, दूजा कोए रहिण ना पाईआ। पहला एका एक एकँकार, अकल कल खेल कराइंदा। दूआ निरगुण सरगुण धार, दोए दोए रूप वटाइंदा। त्रैगुण माया

पंज तत्त एका आठा कर त्यार, एका दूआ आठा मेल मिलाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कोई ना पाए सार, ब्रह्मा वेता निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जगत मनवन्तर गए हार, साता एका मुख शरमाइंदा। परले करे करनेहार, परे आपणा डेरा लाइंदा। जिस बुझाए सो बुझे विचार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। एक दूआ आठा अंक अंक नाल करयां ख़बरदार, बंक बंक आप सुहाइंदा। अठ तत्त रोवण ज़ारो ज़ार, सरगुण निरगुण आस तकाइंदा। निरगुण निराकार कर प्यार, सरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। सरगुण मेला पंज तत्त अधार, त्रैगुण बन्धन आप तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका परले एका दूआ आठा, आठा दूआ एका आपणे रंग वखाइंदा। नव नौ साची धार, चार चार समझाईआ। चार चार खेल अपार, ब्रह्मे चारे मुख गाईआ। चारे वेद कर विचार, चारे कुण्ट कर रुशनाईआ। चारे कुण्ट ख़बरदार, उतर पूरब पच्छिम दक्खण देण दुहाईआ। चारे जुग कर विचार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। चारे खाणी बाणी पसार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रचन रचाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। आपे सब तों वसे बाहर, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। नव नौ हो उज्यार, नव नौ आपणा फेरा पाईआ। एका नईया नौका कर त्यार, नईया आपणे नाम चलाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं रवि ससि सूरज चन्न दे सहार, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ आपणा भेव चुकाईआ। नव नौ चार भेव किसे ना आया, पढ़न लिखण विच ना आईआ। पुरख अबिनाशी आपणा भेव आप चुकाया, भेव जाणे कलम ना शाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर बैठे सीस झुकाया, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे शरमाया, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। किसे तेरा मनवन्तर वंड वंडाया, किसे चौकड़ी बन्धन पाईआ। किसे आपणी परले दए समझाया, महांपरले आपणी खेल रखाईआ। जिस नूं तूं बणाया, तिस तरले कर कर तैनूं मनाया, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। नौ नौ चार चौकड़ी अगला पन्ध आपणे हथ्थ रखाया, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव ना पाईआ। गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गा गा अन्त ना पाया, खाणी बाणी रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, जुग जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ ७ चेत २०१६ बिक्रमी सरमुख सिँघ, गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ★

सति पुरख निरँजण साची कारा, हरि करता आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरवैर भेव ना

आइंदा। हरि पुरख निरँजण अगम्म अपारा, अलख अगोचर वेस वटाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसे धाम न्यारा, निहचल आपणा धाम प्रगटाइंदा। श्री भगवान वड बलकारा, बल आपणा आप जणाइंदा। पारब्रह्म करे खेल आप सच्ची सरकारा, शाह पातशाह रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव आपणा रूप वटाइंदा। अनुभव खेल हरि करतार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची वस्त झोली पाईआ। महल्ल अट्टल उच्च मुनार, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। निर्मल दीआ बाती जोती कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। भूपत भूप राज राजान शहिनशाह बण एकँकार, आपणी कल आप धराईआ। तख्त निवासी साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, करे खेल अगम्म अपार, बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे खुशी मनाईआ। दर घर साचा सच महल्ला, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। पुरख अकाल इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, सोभावन्त सोभा पाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, आपणी धार आप प्रगटाइंदा। सच संदेसा नर नरेशा एका घल्ला, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। निरगुण निरगुण फड़ फड़ पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव हरि निरँकारा, आपणा आपे आप जणाईआ। महल अटल उच्च मुनारा, सचखण्ड दुआरा आप वसाईआ। करे खेल खेल न्यारा, निरगुण निरगुण नूर रुशनाईआ। कमलापाती मीत मुरारा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नारी कन्त कर प्यारा, कन्त कन्तूहल सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खुशी मनाईआ। साचा घर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर एका कन्त, कन्त कन्तूहल आसण लाइंदा। निरगुण निरगुण बणाए बणत, घड़न भन्नण आपणी खेल कराइंदा। आपणा लेखा जाणे आदि अन्त, बेअन्त आपणा नाउँ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा एका एक, आदि पुरख आप प्रगटाईआ। आपणे अन्तर आपणा भेद, हरि भेदी आप छुपाईआ। आदि जुगादी अछल अछेद, अछल अछल आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाईआ। आपणा मेला साचे घर, गृह मन्दिर आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। वेस वटाए नारी नर, नर नरैण भेव चुकाइंदा। आपणी सेजा आपे चढ़, एकँकारा एका रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप वड्याइंदा। दर घर साचा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप वड्याईआ। आपणे

विच्चों आपा कढ्ढ, आपे वेख वखाईआ। आपे करे साचा लड, आपणी गोद सुहाईआ। आप बणाए साची यद, बंस सरबंस आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आपणा भेव आपे चुक्क, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे उठ, अबिनाशी अचुत नाउँ धराइंदा। आपे जाणे आपणी रुत्त, रुत्तड़ी रुत्त ना कोए वखाइंदा। जननी जन बण के जाए साचा सुत, शब्दी शब्द नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंस आप बणाइंदा। शब्दी सुत आपे जा, जननी जन हरि अख्वाइंदा। दाई दाया सेव कमा, सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण निरगुण बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। एका देवे सच सलाह, सति सतिवादी भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे खेल खिलाइंदा। सचखण्ड दुआरे खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा । निरगुण निरवैर पुरख अकाल इक्क इकल्ला, अजूनी रहित वेस वटाइंदा। नारी कन्त फड़ फड़ पल्ला, आपणा संग आप निभाइंदा। आपणे दीपक आपे बला, जोती जोत डगमगाइंदा। आपणे दर आपे खल्ला, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव देवे खोल्ह, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण बोले एका बोल, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण तोले तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। एकँकारा बैठ अडोल, डुल कदे ना जाईआ। आदि निरँजण जाए मौल, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। श्री भगवान करे कौल, निरगुण निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची खेल वखाईआ। सचखण्ड खेल करतारा करता पुरख आप कराइंदा। शब्दी सुत सुत दुलारा, निरगुण आपणी गोद बहाइंदा। साची इच्छया भर भण्डारा, भिच्छया एका एक वरताइंदा। महल अटल कर उज्यारा, थिर घर साचा नाउँ धराइंदा। दर दरवाज़ा खोल्ह किवाड़ा, शब्दी सुत विच बहाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। आदि पुरख आदि कर पसारा, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। सचखण्ड वसे आप निरँकारा, थिर घर शब्दी माण दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग पुरख अगम्म, सुत शब्दी आप चढ़ाईआ। आदि जुगादी एका कम्म, करता पुरख पुरख समझाईआ। सति सतिवादी बेड़ा बन्न, आपणे कंध उठाईआ। एका राग सुणाए कन्न, नादी नाद नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर देवे माण वड्याईआ। थिर घर देवे इक्को माण, हरि आपणी दया कमाइंदा। योधा सूरबीर बलवान, हरि शब्दी सुत प्रगटाइंदा। एका हुक्म धुर फ़रमाण, एका वार सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

हुक्म आप वरताइंदा। शब्द सुत सुण कर ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। तेरा खेल करां महान, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी अंस बणाइंदा। त्रैगुण माया दे दे दान, पंचम झोली पाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, निरगुण सरगुण धार वखाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खेल महान, सूरज चन्द किरन किरन चमकाइंदा। मंडल मण्डप हो प्रधान, जल थल महीअल डेरा लाइंदा। तेरे हथ्थ ज़िमीं असमान, लोक परलोक खेल कराइंदा। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। मेरा चरन तेरा ध्यान, एकँकारा आप समझाइंदा। मेरा महल्ल तेरा मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। मेरा हुक्म तेरा फ़रमान, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप जणाइंदा। साचे सुत जाणा जाग, हरि जू हरि हरि आप जगाइंदा। तेरी गोदी लग्गे भाग, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद सुहाइंदा। तेरे अन्तर इक्क वैराग, आपणा नाउँ जणाइंदा। तेरा मेला कन्त सुहाग, हरि जू कन्त नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगाइंदा। साची सेवा देवे ला, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। लख चुरासी घाड़न लैणा घड़ा, घट घट वेखणा थाउँ थाईंआ। अण्डज जेरज वंड वंडा, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। चारे खाणी बाग़ बणा, लख चुरासी फुल फुलवाड़ी मात महकाईआ। चार बाणी राग अला, भेव अभेद खुल्हाईआ। चारे कुण्ट फेरा पा, चार जुग खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द दए वड्याईआ। साचे शब्द तेरा रूप, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। तेरी महिमा सदा अनूप, भेव कोए ना पाइंदा। तूं वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा तेरा डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। धुर फ़रमाणा एका वार, हरि जू हरि हरि आप जणाया। सुत शब्द रहिणा ख़बरदार, बेख़बर आप जगाया। लख चुरासी कर त्यार, लोकमात वंड वंडाया। निरगुण सरगुण कर प्यार, सरगुण निरगुण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे धन्दे आपे लाया। साचे धन्दे जाणा लग्ग, एकँकारा आप जणाईआ। करे खेल सूरा सरबग, बेअन्त वड वड्याईआ। तेरा दीपक घर घर जाए जग, गृह गृह करे रुशनाईआ। तेरा मन्दिर जाए सज, पंज तत्त मिले वड्याईआ। पुरख अबिनाशी पड़दा लए कज्ज, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जुग जुग तेरा नगारा जाए वज्ज, निरगुण सरगुण आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द करे पढ़ाईआ। शब्दी शब्द एका दात, हरि दाता आप वरताइंदा। जुग चौकड़ी तेरा साथ, सगला संग आप निभाइंदा। निरगुण सरगुण गाए गाथ, सोहला ढोला आप जणाइंदा। आत्म परमात्म मेला कमलापात, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। ईश जीव एका खाट, साचे आसण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर

८६० ११

कर, साची सेवा इक्क लगाइंदा। साची सेवा जुग चौकड़ी हरि निरँकार, एका वार जणाईआ। जुग जुग लैणा मात अवतार, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। गुर गुर खेल अगम्म अपार, गुर गुर आपणी वंड वंडाईआ। सतिगुर पूरा वेखणहार, सति सतिवादी सति समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग एका लाउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाउणा, निरगुण सरगुण वेस वटाया। गुर गुर डंका नाम वजाउणा, शब्दी शब्द शब्द सुणाया। दुआर बंका इक्क सुहाउणा, पंज तत्त मेला सहिज सुभाया। निरगुण सरगुण रंग चढ़ाउणा, रंग रंगीला इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाया। धुर फ़रमाणा एकँकार, एक इकल्ला आप जणाईआ। लेखा जाण गुर अवतार, शब्दी शब्द पढ़ाईआ। लख चुरासी बण वणजार, साचा हट्ट इक्क खुल्हाईआ। तीर्थ तट दे सहार, सर सरोवर माण वड्याईआ। एका ओट समरथ पुरख करतार, दूजी आस ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका लाईआ। साचा मार्ग जुग चार, हरि जू हरि हरि आप लगाइंदा। शब्दी शब्द शब्दी धार, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। ब्रह्मा वेता दे अधार, चारे वेदां वेद सुणाइंदा। अछल अछेदा खेल अपार, भेव कोए ना आइंदा। शास्त्र सिमरत कर त्यार, पुराण पुराणी आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतार, गुर गुर आपणी बूझ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द आप चलाइंदा। हरि की इच्छया शब्द धार, शब्द धार गुरू वड्याईआ। गुर गुर रूप आप निरँकार, सतिगुर पूरा वेस वटाईआ। लख चुरासी पावे सार, घट घट बैठा जोत जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वार, निरगुण निराकार सरगुण आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल शब्द गुर, गुर करता आप कराइंदा। धुरदरगाही साची सुर, गुर अवतारां आप सुणाइंदा। निरगुण नाल निरगुण जुड़, आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क वड्याइंदा। शब्द गुर सूरबीरा, महांबीर इक्क अख्वाइंदा। आदि जुगादि साचा तीरा, तीर निराला नाम चलाइंदा। दो जहानां घत्त वहीरा, लोआं पुरीआं फेरा पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजीरा, शरअ शरीअत मूल चुकाइंदा। लेखा जाणे शाह हकीरा, ऊँच नीच पड़दा लाहइंदा। करे खेल बेनज़ीरा, नज़र विच किसे ना आइंदा। बदलणहार सदा तकदीरा, तकबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। भूपत भूप पीरन पीरा, दस्तगीर सिफ्त सलाहइंदा। आदि जुगादी जोती नूरा, नूर नुराना डगमगाइंदा। हज़रत साहिब हाज़र हज़ूरा, हरि हरि आपणी खेल कराइंदा। नाद अनादी साची तूरा, तुरीआ राग आप सुणाइंदा। सर्बकल आपे भरपूरा, भरतम्बर खेड वखाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। आदि जुगादी इक्क अवतारा, हरि जू हरि हरि आप अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर कर पसारा, निरगुण सरगुण भेव चुकाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, गुर गुर नाउँ प्रगटाइंदा। दो जहानां पावे सारा, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फोलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलारा, ईश जीव जगदीस रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। पुरख अकाल वेस अपारा, हरि जू हरि हरि आप वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन निमस्कारा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। दर दरवेश बणन भिखारा, रसना एका मंग मंगाइंदा। तेरी ओट परवरदिगारा, दूजी आस ना कोए जणाइंदा। जुग चौकड़ी पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। चार वेद लिख लिख थक्का बण लिखारा, चार जुग वंड वंडाइंदा। वेद व्यास मारे नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। पुराण अठारां ना कोए आधारा, पुराण प्राणी ना कोए मिलाइंदा। गा गा थक्का सर्ब संसारा, आत्म रस हथ्थ किसे ना आइंदा। तूं वसणहारा धाम न्यारा, निहचल आपणा आसण सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। तेरे दर इक्को मंग, ब्रह्मा वेता झोली डाहीआ। नव नौ चार चौकड़ी गई लँघ, सेवक बण बण सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम होया नंग, आपणा आप रिहा वखाईआ। लख चुरासी लुकया तेरा अनन्द, आत्म अनन्द ना कोए रसाईआ। रसना जिह्वा जगत विकारा झूठा गंद, हरि का नाउँ ना कोए ध्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकर्मी तेरा कोई ना गाए छन्द, चौदां विद्या होई हल्काईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप जीव जंत पाए डण्ड, डंका नाम ना कोए वजाईआ। बिन तेरे लख चुरासी होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। साध सन्त करन पखण्ड, भेखा धारी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क तेरी ओट रखाईआ। ब्रह्मा रोवे मारे नाअरा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। मेरा ब्रह्म होया कुँवारा, तुध बिन अवर ना कोए प्रनाइंदा। चारों कुण्ट फिरे गंवारा, सति सन्तोख ना कोए दृढ़ाइंदा। बौहड़ी बौहड़ी कढ्ढे हाढ़ा, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। लुट्टया जाए दिन दिहाढ़ा, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। नाता छड्ड गए गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर नज़र कोए ना आइंदा। हाहाकार मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा, सति सति ना कोए वखाइंदा। असति होया जगत वणजारा, जगत वस्त वस्त वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। ब्रह्मा रोवे मारे धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कलयुग अन्तिम पल्लू गए छडा, सगला संग ना कोए निभाईआ। ईसा मूसा मुख रहे छुपा, मुहम्मद नैण ना कोए वखाईआ। अल्ला राणी घूँगट बैठी पा, मुख नक़ाब टिकाईआ। नज़र ना आए बेपरवाह, पर्दानशीं पर्दा ना

सके उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सरन तेरी सरनाईआ। ब्रह्मा रोवे मारे कूक, कूक कूक सुणाइंदा। त्रैगुण माया रही फूक, सांतक सति ना कोए कराइंदा। परमात्म तेरी चुकी चूक, तेरा नाउँ ना कोए ध्याइंदा। लख चुरासी सुत्ती घूक, बांहों फड़ ना कोए उठाइंदा। बिन गोबिन्द बणया ना तेरा कोई पूत, पुरख अकाल ना कोए मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। तेरे अग्गे बैठा झोली अड्ड, दोए जोड़ वास्ता पाया। लख चुरासी विच्चों मैनूं कढ्ढ, आप आपणा दरस दिखाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जावां छड्ड, वेला अन्तिम आया। कवण वेला लएं सद्द, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया। कोटन कोटि ब्रह्मे गए लद्द, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्त हो सहाया। ब्रह्मा रोवे अन्त वार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलयुग अन्तिम धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। आत्म परमात्म ना कोए विचार, चारे बाणी नैण नैण शरमाईआ। साचा डंका ना वज्जे विच संसार, जूठ झूठ पई लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी करया खेल अपार, तेरे हथ्थ तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। ब्रह्मे देवे हरि धरवासा, एका शब्द जणाया। हरि जू वेखे अन्त तमाशा, निरगुण आपे वेखण आया। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे बह बह करे हासा, लोकमात आसण लाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग गुर अवतारा जो देंदा रिहा भरवासा, एका आपणा इष्ट वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त संदेसा दए सुणाया। अन्त संदेसा एका वार, हरि जू आप जणाइंदा। पहली चेत कीआ विहार, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। दर दुआरे सद्द तेई अवतार, पिछला मूल सर्ब चुकाइंदा। भगतां रखे ना कोए उधार, लहिणा सब दे हथ्थ फड़ाइंदा। गुरू गुर करे ना कोई इन्कार, हुक्मी हुक्म सर्ब मनाइंदा। नेत्र नेत्र वखाया सर्ब संसार, जगत खेत्र पड़दा लाहइंदा। आओ आपणे आपणे लओ संभाल, हरि जू एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मार ध्यान, लोकमात वेख वखाया। किसे घर ना दिसया सच ज्ञान, ज्ञान ध्यान नज़र किते ना आया। चारों कुण्ट बीआबान, सिम्मल रुख रिहा लहराया। किसे सन्त ना मिल्या हरि जू आण काया चोली रंग ना कोए चढ़ाया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सारे गाण, गा गा हरि जू हरि ना किसे मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। गुर अवतार वेखण आ, चार युग दी खेल वखाईआ। उठो वेखो बण मलाह, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। जो आपणा आपणा नाम गए जपा, भुलया हरि रघुराईआ। सब दा पड़दा दए उठा, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। रल मिल सारे

करो सलाह, साची मति हरि जणाईआ। वेले अन्त बणो मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। अग्गो सारे कर के गए नांह, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। मुहम्मद कहे मेरे बख्श गुनाह, अद्धविचकार बैठा डेरा ढाहीआ। चौदां तबक होए फनाह, चौदां सदी नाल प्रनाईआ। मेरी मदद कर मेरे खुदा, दस्तगीर तेरी वड्याईआ। परवरदिगार दया कमा, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। अन्तिम लोकमात होणा जुदा, साचा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा वरताईआ। एका हुक्म वरते निरँकार, हरि निरँकारा आप वरताइंदा। गुर अवतारा लथ्था उधार, पिछला लेखा झोली पाइंदा। अग्गे इक्को इक्क इकरार, जन भगतां नाल रखाइंदा। सतिजुग साची चले धार, कलयुग कूड़ा पन्ध मुकाइंदा। नाता तुट्टे वेद चार, शास्त्र सिमरत ना कोए मनाइंदा। गीता ज्ञान ना कोए अधार अञ्जील कुरान ना कोए पढ़ाइंदा। खाणी बाणी इक्क जैकार, गुर गुर शब्दी नाउँ सलाहइंदा। शब्द गुर पूरन अवतार, आदि जुगादि फेरा पाइंदा। पंज तत्त कर्जा दिता उतार, मकरूज नज़र कोए ना आइंदा। प्रगट होए आप निरँकार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सजदा करे सर्ब संसार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतारां कर खुलास, हरि खुलासा आप जणाईआ। चारे बाणी सद्दे आपणे पास, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। कलम शाही मुक्के आस, आस आसावंद पूर कराईआ। करे खेल शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुरू सर्ब वखाईआ। एका गुरू गुरू गुर सतिगुर, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम जाए बौहड़, गोबिन्द लेखा मूल मुकाइंदा। शब्द अगम्मी चढ़ चढ़ घोड़, अस्व अस्वारा फेरा पाइंदा। दो जहानां पन्ध मुकाए दौड़ दौड़, बण पाँधी सेव कमाइंदा। लख चुरासी वेखे रीठा मिट्ठा कौड़, घट घट आपणा पड़दा लाहइंदा। दो जहानां लाया इक्को पौड़, औंदां जांदा नज़र ना आइंदा। जन भगतां हरि जू जाए बौहड़ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चार वरन चार युग वेद जिस नूं गाउँदे रहे ब्रह्मण गौड़, सो ब्रह्मण आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप रखाइंदा। आपणा बल आपे रख, हरि आपणी खेल कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात नालो कीते वख, सचखण्ड दुआरे चरनां हेठ रखाईआ। निरगुण नूर हो प्रतख, जोती जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां खोल्हे इक्को अक्ख, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। सति सतिवादी मार्ग दस्स, साचे पौड़े दए चढ़ाईआ। अमृत आत्म एका झट्ट, अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाईआ। निर्मल जोत जगाए लट लट, नूरो नूर करे रुशनाईआ। शब्द नगारा वज्जे अनहद, आत्म आत्म राग सुणाईआ। आप उपाए साची यद्द, विष्नूं

८६४
११

विश्व दए वड्याईआ। निरगुण सरगुण लडाए लड, प्रेम पंघूड़ा इक्क झुलाईआ। प्रेम अंदर जाए बज्झ, पीआ प्रीतम बेपरवाहीआ। जन भगतां पड़दा लए कज्ज, नाम दुशाला उपर पाईआ। सचखण्ड निवासी साचे तख्त बहे सज, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सतिजुग चलाए सच जहाज, चप्पू अपणा नाम लगाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन मारे इक्क अवाज़, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। दया करे ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे आपणे गले लगाईआ। निरगुण सरगुण रच रच काज, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। लेखा जाणे धुरदरगाही शहिनशाह पातशाह साचा राज, राज भूप इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क प्रगटाईआ। सतिगुर सच्चा हरि हरि नाउँ, आदि जुगादि समाया। पुरख अकाल पिता माउँ, जन जननी ना कोए वखाया। महल अटल अगम्म अथाहो, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। भगत भगवन्त पकड़े बांहों, सन्त सुहेले लए मिलाया। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची आप बहाया। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, कागों हँस उडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुरू शब्द वखाया। एका शब्द गुरू गुर चेला, गुर चेला रूप वटाईआ। एका गुरू सज्जण सुहेला, गुर शब्दी नाउँ धराईआ। एका सतिगुर करे मेला, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। एका वसे सदा नवेला, एका घट घट रिहा समाईआ। एका जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सतिगुर इक्क समझाईआ। सतिगुर सच्चा एकँकार, आदि जुगादि समाया। गुर गुर रूप शब्दी धार, धार धार नाल बंधाया। निरगुण सरगुण कर पसार, बण पसारी वेख वखाया। दीआ बाती कमलापाती कर त्यार, महल अटल करे रुशनाया। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराया। बन्द ताकी खोलू किवाड़, साचा मन्दिर आप सुहाया। साचे राकी हो अस्वार, पुरख अबिनाशी फेरा पाया । लहिणा देणा कर्ज उतार, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां अन्तिम मूल चुकाया। अन्तिम देवे ना कोए सहार, सगला संग ना कोए निभाया। पुरख अबिनाशी होया ख़बरदार, लख चुरासी लए जगाया। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ करन निमस्कार, दर बैठे सीस झुकाया। साडी आई अन्तिम वार, तूं लहिणा रिहा मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताया। साचा खेल वरताए भगवान, कलयुग लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग देवे साचा माण, सति सतिवादी आप प्रगटाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। चार कुण्ट इक्क प्रधान, हरि शब्दी नाउँ वखाईआ। चार कुण्ट इक्क निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। चार युग इक्क विधान, सोहँ मुखीआ मुख सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर पीर अवतार ना वंड वंडाईआ। चार जुग एका नामा, नमो मन्त्र हरि दृड़ाइंदा। चार

युग एका रामा, राम रमइया आप अख्वाइंदा। चार युग एका शामा, एका बंसरी काहन वजाइंदा। चार युग इक्क पैग़ामा, ईसा मूसा सिफ्त सलाहइंदा। चार युग इक्क दमामा, नबी रसूल आप अल्लाइंदा। चार युग एका सति नामा, निरगुण धार आप समझाइंदा। चार युग एका बाणा, निरगुण सरगुण आप वखाइंदा। चार युग एका राणा, पुरख अकाल तख्त सुहाइंदा। चार युग एका भाणा, हरि का भाणा ना कोए उलटाइंदा। चार युग एका खाणा, रसना जिह्वा नाल मिलाइंदा। चार युग एका गाणा, गीत सुहागी इक्क समझाइंदा। चार युग इक्क टिकाणा, हरि चरन ओट वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। चार युग एका राग, हरि रागी आप जणाईआ। चार युग इक्क वैराग, वड वैरागी आप वखाईआ। चार युग एका नाद, अनादी धुंन सुणाईआ। चार युग एका जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। चार युग एका साज, बिन तन्द सितार वजाईआ । चार युग एका सरनी जाणा लाग, सतिगुर पूरा एका नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ । चार युग एका राह, एका घर वखाइंदा। चार युग इक्क मलाह, एका बेड़ा मात चलाइंदा। चार युग इक्क सलाह, सिफ्त सलाही दया कमाइंदा। चार युग एका ना, नाउँ निरँकारा आप वखाइंदा। चार युग एका थाँ, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाइंदा। चार युग पकड़े बांह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। आपणी दया करे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि जुगादी वड प्रताप, वड प्रतापी खेल कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग चौकड़ी गुर अवतारां दस्सदा रिहा जाप, आपणे नाउँ करे पढ़ाईआ। ईसा कहे मेरा बाप, एका नूर नूर खुदाईआ। मुहम्मद कहे मेटे संताप, सगला रोग मिटाईआ। नानक कहे कमलापात, परम पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द कहे वसे साथ, पुरख अकाल विछड़ ना जाईआ। जुग जुग वेखे खेल तमाश, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कोटन कोटि काहन कृष्न पावण रास, कोटन कोटि राम सीता जनक सपुत्तरी रहे प्रनाईआ। एका पुरख पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता नाउँ धराईआ। गुर अवतारां पूरी करे आस, भगतां देवे माण वड्याईआ। सन्तन लेखा जाणे शाहो साबास, गुरमुख मेला सहिज सुभाईआ। गुरसिख होए ना कोए निरास, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क वखाईआ। सतिगुर पूरा हरि हरि एक, दूजा अवर ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि रिहा वेख, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। आपणा दस्से ना किसे भेत, भेव आपणे विच छुपाइंदा। जन भगतां करे साचा हेत, नित नवित वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क लगाइंदा। साचा मार्ग भगत भगवान,

८६६
११

सतिजुग सच जणाईआ। हरिजन हरि जू मिले आण, आप आपणा वेस वटाईआ। निष्अक्खर करे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाईआ। साचा राह चले संसार, वड संसारी आप चलाइंदा। चार वरन इक्क प्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाइंदा। चार वरन इक्क जैकार, सोहँ ढोला इक्क सुणाइंदा। बदलया चोला आप निरँकार, पंज तत्त काया संग ना कोए ल्याइंदा। महांबली उतरया आपणी वार, नानक बोला पूर कराइंदा। सम्बल वसे धाम न्यार, गोबिन्द गुर गुर सालाहइंदा। निहकलंका एकँकार, पिता पूत ना कोए वड्याइंदा। डंका वज्जे अगम्म अपार, ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। चार युग दे गुर पीर अवतार करन निमस्कार, सीस जगदीस सर्ब झुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव धूढ़ी मंगे चरन छार, मस्तक टिक्का मंग मंगाइंदा। भगत भगवन्त दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। कलयुग अन्त खेल न्यार, भेव कोए ना पाइंदा। सच दुआरा कर त्यार, त्रैगुण अतीता वेख वखाइंदा। मन्दिर मसीता शिवदुआले मढ्ढ मारे मार, तीर अणयाला इक्क चलाइंदा। तीर्थ तट किनारा जाए हार, अठसठ मूल ना कोए रखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी बोले इक्क जैकार, सत्तां दीपां एका राग सुणाइंदा। आत्म परमात्म वज्जदी रहे सितार, तन्दी तन्द ना कोए वखाइंदा। वासना गंदी कढ्ढे बाहर, जो जन रसना सोहँ गाइंदा। भागा मंदी सुरत सवाणी लए संभाल, शब्द हाणी आप मिलाइंदा। सारी बाणी चले नाल नाल, जुग जुग वंड ना कोए वंडाइंदा। नानक गाया एका एकँकार, गोबिन्द पुरख अकाल मनाइंदा। मुहमंद कहे मेरा परवरदिगार, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। ईसा कहे मेरा सरदार, पिता पूत गोद रखाइंदा। मूसा दोए जोड़ करे निमस्कार, कोहतूर सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, पारब्रह्म आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैभवण धनी वेस वटाइंदा। चार युग दे विछड़े मेले यार, यारी यारां नाल निभाइंदा। डुब्बदे पाथर लए तार, पाहन आपणा चरन छुहाइंदा। रातीं सुत्तयां लए उठाल, सुरती शब्द शब्द मिलाइंदा। पूरब जन्म घाल जो गए घाल, कलयुग अन्तिम लेखे पाइंदा। गुरसिख तेरे नेड़ ना आए काल, राए धर्म ना हिसाब वखाइंदा। चित्रगुप्त ना बणे दलाल, लाड़ी मौत नाल ना कोए प्रनाइंदा। तेरी सतिगुर करे प्रितपाल, सतिगुरू शब्द अख्वाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां चले नाल नाल, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर पीर अवतारां कोलों होया ना हल्ल सवाल, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब गाइंदा। कोई मन्दिर मस्जिद मढ्ढ वखा के गया धर्मसाल, चार दीवारी बणत बणाइंदा। नानक गोबिन्द कहे पुरख अकाल, घट घट आपणा आसण लाइंदा। गुरमुख विरला करे पहचान, जो गुर का शब्द कमाइंदा। सतिगुर सच्चा मिले आण, घर घर विच मेल कराइंदा। बिन पढ़यां देवे ज्ञान,

८६७
११

आप आपणा नाउँ समझाइंदा। लख चुरासी लोकमात ना सके पछाण, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। पंडत पांधा मुल्ला शेख़ ग्रन्थी पन्थी राग सुण सुण थक्का कान, अनहद राग ना कोए अलाइंदा। माया ममता हउमे हंगता जूठ झूठ मदि पीण खाण, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना होई बलवान, गुर का खण्डा शब्द ना कोए उठाइंदा। ज्ञानी ध्यानी वड विदवानी होए नादान, गुण निधान हथ्थ किसे ना आइंदा। चार वरन होई बेईमान, सच ना दिसे कोई निशान, साचा मन्दिर ना कोए सुहाइंदा। पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरान, काया काअबा साचा हज्ज ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेला आप कराइंदा। सतिजुग सच्चा मेल मिलावा, भगत भगवान आप कराईआ। गुरमुख रखो इक्को दाअवा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। गुरू अवतार भगत भगवन्त साध सन्त बणा के भेजदा रिहा आपणीआं भुजां बाहवां, आपणा बल ना किसे जणाईआ। बिन कलम शाही लिखदा रिहा नावां, ना सके कोए मिटाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकारा कर पसारा गुर अवतारां देवे ठंडीआं छाँवां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता देवणहारा नाम दाता, मेटणहार अन्धेरी राता, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। एथे ओथे देवे साथा, दो जहान खेल तमाशा, वेखणहारा हरि समराथा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कटणहारा वाटा, जन भगतां करे पूरा घाटा, इक्को खोल्हे आपणा हाटा, साचा नाम हट्ट विकाईआ। काया मन्दिर डूँघी कंदर अमृत आत्म इक्को बाटा, रस रसीआ दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला सहिज सुभा, सुबह शाम ना कोए रखाइंदा। सतिजुग रीती दए चला, चाल निराली इक्क रखाइंदा। निरगुण नूर डगमगा, सरगुण अन्धेर मिटाइंदा। एका घर दए वसा, घर घर विच सोभा पाइंदा। एका मन्त्र दए जपा, एका नाम नाम वड्याइंदा। एका टल्ल दए खड़का, एका बांग सदा अलाइंदा। इक्क जैकारा दए बुला, पुरख अकाल इक्क मनाइंदा। इक्क हुलारा दए दवा, पुरीआं लोआं पार कराइंदा। सुन्न अगम्मी डेरा ढाह, थिर घर आपणा राग सुणाइंदा। थिर घर नाद दए वखा, सचखण्ड दुआरे आप बहाइंदा। सचखण्ड दुआरे आप बहा, शरनगत इक्क रखाइंदा। अन्तिम जोती जोत मेल मिला, निरगुण निरगुण विच टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम भगत भगवान दोहा चढ़या चाअ, लख चुरासी जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। अन्तिम राए धर्म देणा फाह, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। पुरख अबिनाशी एका मिथे साह, दिवस दिहाढ़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। मनमुख जीवां लाड़ी मौत नाल करे नकाह, कीता नकाह टुट कदे ना जाइंदा। जो सतिगुर शब्द गए भुला, तिस राम कृष्न नानक गोबिन्द अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। अर्जन बाणी ना

होए सहा, जम का फास ना कोए तुड़ाइंदा। राए धर्म दए सज़ा, अठ्ठ दस कुण्ड आप भुवाइंदा। सारे करन हाए हा, हाहाकार आप मचाइंदा। गुर पीर अवतार पैग़म्बर कहिण निहकलंक गया आ, साडा वस कोए ना जाइंदा। जिस दा नाँ आए ध्या, खाणी बाणी नाल सलाहइंदा। जिस नूं दस्स के आए खुदा, सो खुदा फेरा पाइंदा। जिस दे अग्गे रहिमत मंगदे आए दुआ, सो दोए दोए रूप वटाइंदा। लोकमात पहलों सानूं कीता जुदा, दर दुआरे सद नाता मात तुड़ाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादी जाणे आपणी अदा, एहदा भेव कोए ना पाइंदा। ना कोई वखाए आपणी पार हद्दा, महिदूद आपणी हद्द रखाइंदा। चार जुग बण बण सेवादार, असीं देंदे आए सद्दा, धुर फ़रमाणा हुक्म मात सुणाइंदा। हुक्मे अंदर गुरू अवतार सब बध्धा, पल्लू पल्ला ना कोए छुडाइंदा। पुरख अबिनाशी करे खेल ना बुड्ढा ना नढ्ढा, बाल जवान ना वेस वटाइंदा। नौ खण्ड पृथमी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर डूँग्घी खारी किसे ना लभ्भा, निरगुण हथ्थ किसे ना आईआ। जुगा जुगन्तर लोकमात आवे कर कर अज पज्जा, जन भगतां होए सहाईआ। जुग चौकड़ी लख चुरासी जीव जंत खा खा हरि जू अजे मूल ना रज्जा, आपणी तृष्ना ना कोए बुझाईआ। कलयुग अन्तिम आया भज्जा, महांकाल चरनां हेठ दबाईआ। गोबिन्द नगरी अंदर सजा, सच सिंघासण सोभा पाईआ। बाहरों आपणा पड़दा कज्जा, पंज तत्त ओढनी इक्क वखाईआ। ना कोई लोक रखे लज्जा, जन भगतां लाज आप रखाईआ। बिन नगारिउँ आपे वज्जा, चोट एका एक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग रखे आपणे हथ्थ, हरि मेहरवान मेहरवाना। जुग जुग चलाए रथ, लेखा जाणे दो जहानां। शब्द अनादी एका गथ, बोध अगाध गाए तराना। लख चुरासी देवे साथ, घर घर अन्तिम बन्ने गाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल मर्द मर्दाना। मर्द मर्दाना हरि जू हरि, जोधा सूरबीर बलवान। निरभउ ना रखे भय डर, जुग जुग खेल करे महान। कलयुग अन्तिम जाए हर, नाता तुट्टे विच जहान। सतिजुग साचा धरनी उपर देवे धर, दयावान होए भगवान। भगतां फड़ाए आपणा लड़, लख चुरासी विच्चों कर पछाण। साचे पौड़े जाए चढ़, चढ़ चढ़ वेखे सच मकान। आपणा अक्खर आपे पढ़, आत्म परमात्म दए ज्ञान। सो पुरख निरँजण नरायण नर, हँ ब्रह्म अंस बंस सरबंस करे कल्याण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका नाउँ करे प्रधान। आपणा नाउँ करे प्रधाना, प्रधानगी दो जहान वखाईआ। एका देवे सच परवाना, लख चुरासी हथ्थ फड़ाईआ। एका बन्ने सति सतिवादी गाना, आत्म परमात्म होए कुड़माईआ। भगत भगवन्त खेल महाना, ख़ालक ख़लक विच वखाईआ। आपणा

नाउँ रख विष्नूं भगवाना, विश्व आपणी धार चलाईआ। सोहँ शब्द सच तराना, त्रैगुण अतीता आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल हरि करना, करनहार करतारा। लेखा जाणे चार वरनां, बरन अठारां पावे सारा। जन भगतां खोल्हे नेत्र हरना फरना, नाता तोड़े बन्द किवाड़ा। भय चुक्के मरना डरना, जीवण मरन एका रंग एका घर पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क सहारा, सच सहारा शरन शरना, सरनगति इक्क जणाइंदा। भगवान भगत मिलण दा रखे चाअ, चाउ घनेरा ना किसे जणाइंदा। कलयुग अन्तिम फेरा पा, नाड़ बहत्तर फोल फोलाइंदा। नामे लहिणा दए चुका, बहत्तर रूप अनूप वटाइंदा। कक्खां कुली छप्पर छन्न छुहा, छहबर आपणे नाम लगाइंदा। एका वस्त झोली पा, खाली झोली आप भराइंदा। कीता कौल दए निभा, कीती हरि भुल्ल ना जाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस वटा, बहत्तर भगत आप उठाइंदा। सच महल्ला दए वसा, छत्ती युग दा मूल मुकाइंदा। सति दरबारे आसण ला, सच सिँघासण इक्क सुहाइंदा। साडे तिन्न हथ्थ बंक दए वड्या, रविदास चुमारा नाल मिलाइंदा। जन भगतां अंदर दए बहा, बाहर फेर ना कोए कढाइंदा। जिस सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ल्या ध्या, सो जन जन्म मरन विच ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गुरसिख तेरे अग्गे सीस रहे झुका, जिस सिर सतिगुर हथ्थ टिकाइंदा। लग्गी प्रीती तोड़ लए निभा, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाइंदा। जन्म जन्म दी शाही दए धुवा, दुरमति मैल ना कोए रखाइंदा। जुग जुग विछड़े लए मिला, मिल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। जन भगत दुआरा ल्या वसा, भगतां अंदर आपणा आसण लाइंदा। बाहरों किसे दिसे ना, डूँग्घी कंदर उच्चे मन्दिर साची सेज सुहाइंदा। पहलों पूरब जन्म दे बख्शे सर्ब गुनाह, फेर आपणा दरस दिखाइंदा। जिस जन आपणा दरस दए दिखा, तिस जोती जोत मिलाइंदा। सतिजुग गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दा किसे ना लैणा नाँ, भगत भगवन्त इक्क वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंक आप सुहाइंदा। सुहाए बंक भगत दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। महल अटल उच्च मुनारा ग़रीब निवाज़ा वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां दए सहारा, चरन सरन सरन सरनाईआ। लेखा मुक्के चार यारा, यारी यार ना कोए हंढाईआ। इक्को भगत लग्गे हरि प्यारा, परम पुरख प्रेम निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे देवे दान, सति सतिवादी सच्चा माहीआ।

★ ८ चेत २०१६ बिक्रमी हरी सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ★

हरि मन्त्र नाउँ सतिगुर सति, सति असति जणाइंदा। पारब्रह्म पुरख परमेश्वर पत, हरि पतिवन्ता दया कमाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ब्रह्म मति, जन भगतां आप जणाइंदा। एथे ओथे दो जहानां लए रख, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। बोध अगाध गुण निधाना दस्से गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त भेव चुकाए पुरख समरथ, महिमा कथ आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे रिहा वस, दो जहानां सोभा पाइंदा। जन भगतां एका देवे नाम रस, बण रसया रस वखाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, पूरब लेखा आप चुकाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, डंका शब्दी इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर ठाकर दीन दयाला, दयानिध बेपरवाहीआ। करे खेल जगत निराला, भेव कोए ना पाईआ। लोकमात बणाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। लहिणा देणा चुकाए गोबिन्द सुत छोटे लाला, लालण आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुखां तोड़े जगत जंजाला, त्रैगुण बन्धन रहिण ना पाईआ। चार वरन वखाए राह सुखाला, साचा मार्ग आप लगाईआ। भय चुकाए कलयुग काला, काल ग्रास नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। सतिगुर सज्जण हरि हरि मीत, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। आदि जुगादी ठंडा सीत, अमृत झिरना आप झिराइंदा। शब्द अगम्मी एका गीत, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। सति सतिवादी सति चलाए रीत, सति पुरख खेल कराइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, बीस बीसा राह वखाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क हदीस, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। लेखा चुक्के राग छतीस, छत्ती जुग पन्ध मुकाइंदा। राज राजानां शाह सुलातानां खाली करे खीस, खाली हथ्थ चारों कुण्ट फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सतिगुर आपणी खेल कराइंदा। सतिगुर सज्जण हरि निरँकारा, निरगुण निरवैर इक्क अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर कर पसारा, बण पसारी वेख वखाइंदा। भगतन देवे दरस अपारा, भगवन आपणी बूझ बुझाइंदा। सन्तन बणे मीत मुरारा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। गुरमुखां देवे एका नाम अधारा, सांतक सति सति कराइंदा। गुरसिखां बख्शे चरन धूढ़ी छारा, मस्तक टिक्का नूरी लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा रंग रंगाइंदा। रंग रंगीला मोहण माधव माध, बेअन्त वड वड्याईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लख चुरासी विच्चों लाध, लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। हरिजन हरि जू आप बणाए साचे साध, सन्तन आपणी गोद बहाईआ। त्रैगुण माया विच्चों

काढ, जगत जंजाला दए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म कर कर लाड, साचा बन्धन इक्क वखाईआ। भगत भगवन्त सुणे फ़रयाद, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। आपणा नाउँ चलाया आदि, शब्दी गुर गुर प्रगटाईआ। आपे वेखे अन्त जुगादि, निरगुण निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क हो जाईआ। आदि उपाया सतिगुर हरि, हरि शब्दी शब्द खेल कराइंदा। अन्त वेखे आपे दर दर, घर घर फेरी पाइंदा। योधा सूरबीर बलवान आपणा बल आपे धर धर, चारों कुण्ट कुण्ट निवाइंदा। नाम खण्डा सूरा सरबंगा आपणे हथ्थ आपे फड़ फड़, दो जहाना आप चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी खेल कराइंदा। सतिगुर साहिब सच्चा सुल्तान, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। सुरत सवाणी हाणी एका मिले काहन, नाम बंसरी इक्क सुणाइंदा। साचा सईया लेखा जाणे रमइया राम, रघपत आपणे रंग रंगाइंदा। नबी रसूल देवे सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। लख चुरासी जीव जंत देवणहारा इलजाम, आपणा फतवा आपे लाइंदा। चार युग करे गुलाम, बरदा आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा भेस वटाइंदा। भेस वटाए एकँकारा, ओंकारा वेख वखाईआ। आदि गुर शब्दी धारा, अन्त शब्द गुर सलाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पंज तत्त लेखा गुर अवतारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। निरगुण सरगुण अंदर लगा रिहा अखाड़ा, आप आपणा नाच नचाईआ। सति सतिवादी सति जैकारा, बोध अगाधी नाउँ प्रगटाईआ। रसना जिह्वा गावे वारा, गावत गावत आपणी ख़ुशी मनाईआ। लेखा लेख लिख लिख विच संसारा, जगत लेखा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा वेख वखाईआ। वेखणहारा सतिगुर एक, एका घर सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग वेस, वेस अनेका आप कराइंदा। जन भगतां बख्शे साची टेक, साचा दर इक्क समझाइंदा। घट घट अन्तर जाणे भेत, भेदी आपणा भेव छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा दीन दयाल, दयानिध ठाकर निहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। निहकर्मी कमाए कर्म, कर्म कांड ना कोए जणाईआ। चार वरन दा इक्को धर्म, एक सरन दए सरनाईआ। आत्म ब्रह्म साचा वरन, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। इष्ट गुरदेव स्वामी एका सरनी पड़न, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत हरि का नाउँ साचा पढ़न, गीत गोबिन्द गोबिन्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर मार्ग इक्क वखाईआ। साचा मार्ग सतिगुर घाट, घाटा कोए रहिण ना पाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चढ़ाइंदा। नाम निधाना श्री भगवाना अलख अगोचर सुणाए गाथ, कथनी कथ कथ अलाइंदा।

लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। करे खेल पुरख समराथ, जन भगतां आप जगाइंदा। रातीं सुत्तयां वसे साथ, दिने नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा भेव खुल्हाइंदा। सतिगुर खोल्हे आपणा भेव, जन भगतां माण वड्याईआ। निरगुण करे सरगुण सेव, साचे सन्तां होए सहाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म देवे सच्चा मेव, रसना रस इक्क चखाईआ। गुरसिख लेखे लाए सेव, सेवक आपणे रंग रंगाईआ। हरि की महिमा गा ना सके रसना जिहव, गा गा पन्ध ना कोए मुकाईआ। आदि जुगादि सदा नेहकेव, निहचल धाम बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। निहचल आसण गुरसिख अंदर, दूजा धाम ना कोए बणाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशन चढ़ के बहे साचे मन्दिर, हरि का मन्दिर नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि दासी दास वसणहारा डूँघी कंदर, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा रंग चढ़ाइंदा। सतिगुर पूरा चाढ़े रंग, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। गुरसिख आत्म सेज पलँघ, सच सिँघासण आप सुहाईआ। गुरमुखां अन्तर वजाए मृदंग, अनहद नादी नाद अल्हाईआ। साचे सन्तां देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। भगत भगवन्त चढ़ाए चन्द, बिन सूरज चन्द करे रुशनाईआ। जन्म जुग दी टुट्टी गंढ, आपणा बन्धन आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी भौदयां पाए ठंड, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। जगत रंडेपा चुक्के रंड, विभचार दए गंवाईआ। पंच विकारा खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम खड़काईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, सोहला ढोला आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा शहिनशाहीआ। सतिगुर सच्चा शहिनशाह, हरि हरि साजन मीत। आदि जुगादी बण मलाह, लोकमात चलाए रीत। कलयुग अन्तिम सच सलाह, सोहँ गाउणा साचा गीत। चार वरन दा इक्को नाँ, नाता तोड़े मन्दिर मसीत। ग़रीब निमणयां पकड़े बांह, पत्तत पापी करे पुनीत। जन्म जन्म दे बख्श गुनाह, काया करे ठंडी सीत। जो जन चरनी सीस लए निवा, तिस दा एथे ओथे होए मीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठग्गां चोरां देवणहार पनाह, साहिब दयाल सदा अनडीठ। ठग्ग चोर यार जो दर आए भज्ज, एका ओट रखाईआ। किरपा निध सिन्ध सागर पड़दा देवे कज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ग़रीब निमणयां रखे लज, पति आपणी आप वड्याईआ। प्रेम प्रेम अंदर जाए बज्झ, पुरख अबिनाशी हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। दया कमाए दीनन दीन, दयानिध हरि अख्वाइंदा। गुरसिख गुरमुख मेला जिउँ जल मीन, जल मीन विछोड़ा कदे ना भाइंदा। साहिब दातार दाता वड प्रबीन, परम पुरख परमेश्वर

जन भगतां वेख वखाइंदा। आपणा बल सद रखे महीन, जन भगतां बल मात वखाइंदा। आप बणया रहे मस्कीन, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। आप बणया रहे महीन, बिन भगतां नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां सदा रहे अधीन, निरबल आपणा बल ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा एकँकारा हरि निरँकारा इक्क इकल्ला आप अख्वाइंदा।

★ ८ चेत २०१६ बिक्रमी रूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ★

आदि जुगादी हरि हरि तोला, ब्रह्मण्ड खण्ड तोल तुलाइंदा। आदि जुगादि हरि विचोला, गुर शब्दी रूप वटाइंदा। आदि जुगादी हरि हरि नाउँ सोहला, गीत गोबिन्द सुणाइंदा। आदि जुगादी चुकाए पड़दा ओहला, अनुभव आपणा खेल वखाइंदा। आदि जुगादी पूर कराए कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। आदि जुगादी प्रगट होए उपर धौला, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। आदि जुगादी एका रंग, हरि जू हरि हरि आप चढ़ाइंदा। आदि जुगादी इक्क अनन्द, गृह मन्दिर आप वखाइंदा। आदि जुगादी इक्क मृदंग, मर्द मर्दाना आप वजाइंदा। आदि जुगादी एका छन्द, गीत सुहागी एका गाइंदा। आदि जुगादी एका पन्ध, बण पाँधी आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी किरत आप कराइंदा। आदि जुगादी करनी कर, करता पुरख खेल कराईआ। निरगुण सरगुण वेस धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। भगत भगवन्त आपे फड़, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सन्त दुआरे आपे वड़, डूँघी भँवरी सोभा पाईआ। गुरमुख लगाए आपणे लड़, सुरती शब्दी बन्धन पाईआ। गुरसिख वेखे आपे खड़, महल अटल आसण लाईआ। जुग चौकड़ी देवे वर, गुर अवतार कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल करे बेपरवाहीआ। गुर अवतार देवे ज्ञान, एका आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। धुरदरगाही सच निशान, सचखण्ड निवासी आप वखाइंदा। शाहो भूप राज राजान, आपणा हुक्म वरताइंदा। बोध अगाध गुण निधान, गुण आपणा आप समझाइंदा। सच संदेसा श्री भगवान, नर नरेशा आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा तोला तोले नाउँ, नाउँ आपणा आप उठाईआ। करे खेल अगम्म अथाहो, अलख अगम्म बेपरवाहीआ। दो जहान घट घट वेखे आपणा थाउँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम दए वड्याईआ। साचा नाम सच भण्डारा, सतिजुग त्रेता द्वापर आप वरताइंदा। गुर

अवतार सेवादारा, लोकमात साची सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी पार किनारा, चौकड़ आपणे हथ्थ रखाइंदा। खाणी बाणी भेव न्यारा, भेव अभेदा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अक्खर नाम सर्ब पढ़ाइंदा। चार जुग अक्खर गाथा, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। निरगुण सरगुण देवे साथा, सरगुण खेल करे बेपरवाहीआ। लख चुरासी जीव जंत सरगुण अग्गे टेके माथा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप वरताईआ। एका नाम हरि वरतंता, भेव कोए ना आइंदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। मेल मिलाए साचे सन्तां, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। वेख वखाए नारी कन्ता, नर नरायण भेव जणाइंदा। काया चोली रंग चढ़ाए बसन्ता, उतर कदे ना जाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगता, निवण सो अक्खर इक्क वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर प्रभ दुआर होया रिहा मंगता, दर साचे खाली झोली सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तोला एका तोल तुलाइंदा। साचे तोले तोलया तोल, गुर पीर अवतार आपणे कंडे पाईआ। आप बैठा रिहा अडोल, सचखण्ड सच्चे सच्चा माहीआ। वेले अन्त कल सब दे पड़दे देवे फोल, फोलणहारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा कंडा हरि करतार, एका एक उठाया। सो पुरख निरँजण ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए वखाया। चार युग दी पावे सार, छत्ती छत्ती मेल मिलाया। नव नौ बेड़ा पार, चार चार रहे ना राया। लेखा जाणे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तोला इक्क अख्वाया। तोला बण श्री भगवान, गुर पीर अवतार तोल तुलाईआ। आओ वेखो मात निशान, जो बूटा गए लगाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई होए बेईमान, हक़ीक़त हक़ ना कोए जणाईआ। घर घर वड़या पंज शैतान, दिवस रैण करे लड़ाईआ। पढ़ पढ़ थक्के पंडत पांधे वेद पुराण, शास्त्र सिमरत पड़दा द्वैत ना कोए मिटाईआ। बिस्मिल रूप करे अञ्जील कुरान, शरअ शरीअत साची शरअ ना कोए रखाईआ। उम्मती उम्मत ना कोए ईमान, इबनुलवक्त ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट होए वैरान, साचा घर ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तोल दए तुलाईआ। एका तोल तोले तोलणहारा, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। नानक नाम बणे वणजारा, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। तेरा बोले तेरी धारा, तेरां तेरां अल्लाइंदा। आदि जुगादी तेरा नाअरा, तेरे रंग समाइंदा। बेअन्त बेपरवाह तख्त निवासी एकँकारा, सच्चे शहिनशाह तेरा दर मोहे भाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध तेरा पसारा, हस्त कीट वेख वखाइंदा। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब वसे बाहरा, शरअ बन्धन ना कोए जणाइंदा। जिस जन वखाइें आपणा

८७५
११

घर बारा, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। सो जन बोले तेरा नाअरा, नानक निरगुण नानक सरगुण नानक नूं समझाइंदा। जोती जोत जोत चमत्कारा, नूर नुराना डगमगाइंदा । पारब्रह्म ब्रह्म पसारा, ईश जीव रचन रचाइंदा। निरगुण निरगुण हो न्यारा, निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। निरगुण जोत निरगुण शब्दी धारा, निरगुण सचखण्ड सोभा पाइंदा। निरगुण थिर घर खोल्हे किवाड़ा, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। निरगुण निरगुण करे पसारा, आपणी वंड आप वंडाइंदा। नानक सतिगुर दरगाह साची सचखण्ड दुआरे हरि चरन बोले एका नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। तेरा खेल अगम्म अपारा, भेव कोए ना आइंदा। पुरख अबिनाशी किरपा निध देवे इक्क सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। तेरा मेरा रूप न्यारा, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। नानक गाउणा सोहँ इक्क जैकारा, जै जैकार दो जहान जणाइंदा। आत्म नाम हरि विचारा, अक्खर जोड़ ना कोए जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। सोहँ शब्द जगत वणजारा, आदि जुगादि समाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गा गा गए आपणी वारा, अन्तर आत्म हरि हरि हरि बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कंडा इक्क उठाइंदा। साचा कंडा निरगुण सरगुण धार, सोहँ हरि जू हरि उठाईआ। लख चुरासी तोले तोलणहार, एका वार भार वंडाईआ। भगत भगवन्त लए उभार, पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। सन्त साजन पैज स्वार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात छड्ड के गए घर बार, आपणा पल्लू बन्न्ह ना किसे फड़ाईआ। लिख लिख बाणी बण बण गए लिखार, कातब लेखा इक्क जणाईआ। सर्ब जीआं दा एका यार, परम पुरख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल श्री भगवान, कलयुग अन्त कराइंदा। चार युग दा वेख निशान, कूड़ी क्रिया मूल चुकाइंदा। चार वरन दा इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म आप समझाइंदा। चार वरन दा एका दान, एका वार झोली पाइंदा। चार वरन दा इक्क मकान, काया मन्दिर आप वखाइंदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले तट अन्त मिट जाण, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। जीव जंत साध सन्त इक्को ढोला सारे गाण, सतिगुर साचा आप पढ़ाइंदा। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण जाणी जाण, घट घट आपणा आसण लाइंदा। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, घर घर दीआ बाती डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वेखे मार ध्यान, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशान, सच निशाना हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म अन्तिम देवे आपणा आप ब्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म आपणे संग मिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म साचा मेला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। एका

८७७
११

घर वसे गुरू गुर चेला, चेला गुरू जोड़ जुड़ाइंदा। सतिगुर साहिब सज्जण सुहेला, साख्यात रूप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण तोला इक्क अख्वाइंदा। निरगुण तोले तोल, जीव जंत उठाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, खाली हथ्थ फिरे लोकाईआ। गुरमुख विरले सोहँ जैकारा रहे बोल, आत्म परमात्म गंढु पुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे विच मिलाईआ। हरिजन मेला आत्म घाट, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। हरिजन मेला साचे नाथ, अनाथां होए सहाईआ। हरिजन मेला पुरख समराथ, समरथ पुरख सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे साचा दान, नाम भण्डारा एका वार वरताईआ।

★ ८ चेत २०१६ बिक्रमी सुखदेव सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ★

सतिगुर सच्चा जाणीए, सो पुरख निरँजण शहिनशाह। सतिगुर सच्चा जाणीए, हरि पुरख निरँजण बेपरवाह। सतिगुर सच्चा जाणीए, एकँकारा इक्क मलाह। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि निरँजण नूर रुशना। सतिगुर सच्चा जाणीए, अबिनाशी करता वसे हर घट थाँ। सतिगुर सच्चा जाणीए, श्री भगवान सच निशाना रिहा झुला। सतिगुर सच्चा जाणीए, पारब्रह्म रूप रंग रेख रिहा ना कोए वखा। सतिगुर सच्चा जाणीए, अनभउ प्रकाश रिहा करा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत रिहा डगमगा। सतिगुर सच्चा जाणीए, आपणी इच्छया रिहा प्रगटा। सतिगुर सच्चा जाणीए, सचखण्ड दुआर रिहा बणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, सच सिँघासण रिहा सुहा। सतिगुर सच्चा जाणीए, शाहो भूप आपणा नाउँ रिहा धरा। सतिगुर सच्चा जाणीए, सीस जगदीस ताज रिहा टिका। सतिगुर सच्चा जाणीए, सचखण्ड दुआरे बणे साचा हुक्मरां। सतिगुर सच्चा जाणीए, धुर फ़रमाणा रिहा सुणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, दर दरवेश रिहा कहा। सतिगुर सच्चा जाणीए, निउँ निउँ सीस रिहा झुका। सतिगुर सच्चा जाणीए, नारी कन्त रूप रिहा वटा। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण निरगुण सेजा रिहा हंढा। सतिगुर सच्चा जाणीए, महल अटल रिहा समा। सतिगुर सच जाणीए, आपणी घाड़त रिहा घड़ा। सतिगुर सच्चा जाणीए, दाई दाया बण बण सेवा रिहा कमा। सतिगुर सच्चा जाणीए, आपणी गोदी रिहा सहा। सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्द दुलारा रिहा जा। सतिगुर सच्चा जाणीए, थिर घर आपणा रंग रिहा रंगा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखा। सतिगुर सच्चा जाणीए, सो पुरख निरँजण साचा मीत, सतिगुर सच्चा जाणीए,

हरि पुरख निरँजण इक्क अनडीठ। सतिगुर सच्चा जाणीए, एकँकारा आदि जुगादि चलाए आपणी रीत। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि निरँजण ठाडा सीत। सतिगुर सच्चा जाणीए, अबिनाशी करता पत्तत पुनीत। सतिगुर सच्चा जाणीए, श्री भगवान वसणहारा हस्त कीट। सतिगुर सच्चा जाणीए, पारब्रह्म ब्रह्म रखे एका प्रीत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा गीत। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक गोबिन्द। सतिगुर सच्चा जाणीए, हरि दाता गुणी गहिन्द। सतिगुर सच्चा जाणीए, सूरबीर सदा बख्शंद। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सदा बख्शिंद। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी दीन दयाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण निरगुण उपजाए आपणा लाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, बिन तेल बाती दीपक देवे बाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, बोध अगाधी सुणाए आपणा गाण। सतिगुर सच्चा जाणीए, सति सतिवादी दो जहान वखाए निशान। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण निरगुण देवे दान। सतिगुर सच्चा जाणीए, विष्न ब्रह्मा शिव करे प्रधान। सतिगुर सच्चा जाणीए, त्रैगुण माया खेल करे महान। सतिगुर सच्चा जाणीए, पंज तत्त प्रगटाए आपणा नाम। सतिगुर सच्चा जाणीए, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ बणाए अनडिठ मकान। सतिगुर सच्चा जाणीए, रवि ससि सूरज चन्द वेखे मार ध्यान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक श्री भगवान। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक श्री भगवाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादि झुलाए निशाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका राग सुणाए तराना। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका मन्दिर वसे मकाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका नूर नूर नुराना। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दो जहाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, सो पुरख निरँजण एक। सतिगुर सच्चा जाणीए, देवणहारा साची टेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी करे हेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, अनुभव खोल्हे आपणा भेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, बिन नेत्र लए वेख। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद रखे साया हेठ। सतिगुर सच्चा जाणीए, सूरबीर सुल्तान। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका देवे नाम निशान। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका देवे सच ज्ञान। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका राग सुणाए कान। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका वस्त देवे पीण खाण। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका तीर निराला मारे बाण। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा जाणे दो जहान। सतिगुर सच्चा जाणीए दिवस रैण, रैण दिवस आपणा दर्शन देवे आण। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निमाणयां देवे आपणा माण। सतिगुर सच्चा जाणीए,

निर्धन सरधन पावे सार। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा जाणे वारो वार। सतिगुर सच्चा जाणीए, भरम भुलेखा कढ्ढे विच संसार। सतिगुर सच्चा जाणीए, मूंड मुंडाए ना केस रखाए पंज तत्त ना कोए अकार। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी करे आपणी कार। सतिगुर सच्चा जाणीए, कागद कलम लिख लिख ना पाए सार। सतिगुर सच्चा जाणीए, हर घट अंदर वसे आपे वसे सब तों बाहर। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका देवे अमृत रस रस रसना ठंडा ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक रखाए ओट। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन्म जन्म दा कढ्ढे खोट। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम भण्डारा दए अतोट। सतिगुर सच्चा जाणीए, आलणयों डिगे उठाए बोट। सतिगुर सच्चा जाणीए, निर्मल नूर जगाए जोत। सतिगुर सच्चा जाणीए, अजपा जाप जपाए बिन रसना होट। सतिगुर सच्चा जाणीए, ना कोई वरन ना कोई गोत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपे होए मोहत। सतिगुर सच्चा जाणीए, सोभावन्त करतार। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी बन्ने धार। सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्दी शब्द करे जैकार। सतिगुर सच्चा जाणीए, ब्रह्म ब्रह्मादी खेल करे न्यार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। सतिगुर सच्चा जाणीए, रंगे रंग चलूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, जुगा जुगन्तर जाए ना भूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, पूरब लहिणा चुकाए मूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, आपणा दस्से सच असूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा जाणे कातिल मकतूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका देवे चरन साची धूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, ग़रीब निमाणे कोझे कमले करे कबूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका राग सुणाए माकूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, गुरमुख गुरसिख वेखे पत डाल्ही साचे फूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, दो जहानां कन्त कन्तूहल। सतिगुर सच्चा जाणीए, किरपा करे राए धर्म ना लए मसूल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा सति असूल। सतिगुर सच्चा जाणीए, सागर सिन्ध गहर गम्भीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, निर्मल अमृत प्याए नीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, बजर कपाटी देवे चीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, हउमे हंगता कढ्ढे पीड़। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा जाणे आदि अन्त अख़ीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, तन बस्त्र पहनाए साचा चीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, दो जहानां वेखे घत वहीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, बिरहों मारे निराला तीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, त्रैगुण माया कटे ज़ंजीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, राए धर्म दी कटे भीड़। सतिगुर सच्चा जाणीए, मानस जन्म बन्न्हे बीड़। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बदल दए तकदीर। सतिगुर

सच्चा जाणीए, सेवक सेवादार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जुग जुग लए अवतार। सतिगुर सच्चा जाणीए, खाणी बाणी वसे बाहर। सतिगुर सच्चा जाणीए, वेद चार ना पावण सार। सतिगुर सच्चा जाणीए, पुराण अठारां ना करन विचार। सतिगुर सच्चा जाणीए, गीता ज्ञान इक्क आधार। सतिगुर सच्चा जाणीए, अंजील कुरानां दए भण्डार। सतिगुर सच्चा जाणीए, ईसा मूसा करे श्रृंगार। सतिगुर सच्चा जाणीए, मुहम्मद लेखा जाणे चार यार। सतिगुर सच्चा जाणीए, नानक देवे पद निरबाण। सतिगुर सच्चा जाणीए, गोबिन्द बणाए आपणा लाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, खेले खेल हरि कमाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, घट घट वखाए आपणी धर्मसाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, नेड़ ना आए काल। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे राह सुखाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, जीवण जुगत दाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, एकँकारा पुरख बिधाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण सरगुण जुड़ाए नाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, बोध अगाध सुणाए गाथा। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा जाणे त्रैलोकी नाथा। सतिगुर सच्चा जाणीए, भेव जणाए रामा सुत दसराथा। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक अलखना अलाखा। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण निरवैर पुरख अकाल घट घट रखे वासा। सतिगुर सच्चा जाणीए, भेव खुल्हाए पृथ्मी आकाशा। सतिगुर सच्चा जाणीए, विष्न ब्रह्मा शिव वेखे तमाशा। सतिगुर सच्चा जाणीए, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा करे दासी दासा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां मानस जन्म करे रहिरासा। सतिगुर सच्चा जाणीए, बिन रसना जिह्वा आपणा सुणाए हक़ खुलासा। सतिगुर पूरा जाणीए, साचे सन्तां पूरी करे आसा। सतिगुर सच्चा जाणीए, गुरमुखां देवे इक्क भरवासा। सतिगुर सच्चा जाणीए, गुरसिखां लेखे लाए पवण स्वासा। सतिगुर सच्चा जाणीए, मंडल मण्डप गोपी काहन पाए रासा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला होए इक्को राखा। सतिगुर सच्चा जाणीए, ऊँचो ऊँच महल अटल मुनार। सतिगुर सच्चा जाणीए, त्रैभवण धनी खेल करे न्यार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जुग जुग सेवा लाए गुर अवतार। सतिगुर सच्चा जाणीए, खोल्हे हट्ट बण वणजार। सतिगुर सच्चा जाणीए, तीर्थ तट उपजाए किनार। सतिगुर सच्चा जाणीए, शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणे लिखार। सतिगुर सच्चा जाणीए, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जुग चौकड़ी लेखा जाणे वारो वार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल करे करतार। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक पुरख अगँम। सतिगुर सच्चा जाणीए, ना मरे ना पए जम्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम वस्त रखे साचा धन्न। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां राग सुणाए कन्न। सतिगुर सच्चा

जाणीए, मनमुखां देवे आपे डंन। सतिगुर सच्चा जाणीए, जुग जुग बेड़ा देवे बन्नू। सतिगुर सच्चा जाणीए, करे प्रकाश नेत्र अन्नू। सतिगुर सच्चा जाणीए, बिन मिन्नता जाए मन्न। सतिगुर सच्चा जाणीए, नूर वखाए बिन सूरज चन्न। सतिगुर सच्चा जाणीए, आपे घड़े आपे लए भन्न। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल खेल भगवन। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक एकँकार। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे पसार। सतिगुर सच्चा जाणीए, लख चुरासी दए अधार। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम निधान श्री भगवान जुग जुग वंडे वारो वार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सतिगुर सच्चा जाणीए, शाहो राजन भूप। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी सति सरूप। सतिगुर सच्चा जाणीए, रेख रंग ना कोए रूप। सतिगुर सच्चा जाणीए, वसणहारा चारे कूट। सतिगुर सच्चा जाणीए, लख चुरासी लेखा जाणे ताणा पेटा सूत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देवे आप सबूत। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका दात देवे वंड। सतिगुर सच्चा जाणीए, पंच विकारां करे खण्ड खण्ड। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाता तोड़े सुरत दुहागण रंड। सतिगुर सच्चा जाणीए, दूई द्वैती भरमां ढाहे कंध। सतिगुर सच्चा जाणीए, इक्क जणाए परमानंद। सतिगुर सच्चा जाणीए, इक्क सुणाए सुहागी छन्द। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाता तोड़े बत्ती दन्द। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढु। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा चुकाए जेरज अंड। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला इक्क बख्शंद। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक बोध अगाध। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादि रहे विस्माद। सतिगुर सच्चा जाणीए, सन्त सुहेले लए लाध। सतिगुर सच्चा जाणीए, लख चुरासी विच्चों लए काढ। सतिगुर सच्चा जाणीए, आपणी गोद लडाए लाड। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेट मिटाए वाद विवाद। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका राग सुणाए नाद। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी हद्द। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि पुरख अपारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण निरवैर अजूनी रहित एकँकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण सरगुण खेले खेल अपारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण अतीता ठांडा सीता पंज तत्त करे ना कारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, लख चुरासी मीतन मीता, पत्तत पुनीता, घर घर करे पसारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, आपणा राग सुणाए गीता, जुग जुग चलाए आपणी रीता, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, ठांडा सीता इक्क अनडिठा, सद वसे धाम

न्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आप निरँकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक मलाह। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाउँ निरँकारा दए सलाह। सतिगुर सच्चा जाणीए, फड़ फड़ अन्धे पाए राह। सतिगुर सच्चा जाणीए, उजड़े खेड़े दए वसा। सतिगुर सच्चा जाणीए, झूठे झेड़े दए मुका। सतिगुर सच्चा जाणीए, खुल्ल्हे वेहड़े दए वखा। सतिगुर सच्चा जाणीए, लख चुरासी जेड़े दए कटा। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम बेड़े दए चढ़ा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हा। सतिगुर सच्चा जाणीए, निर्धन रूप निरँकार। सतिगुर सच्चा जाणीए, नेत्र नज़र ना आए विच संसार। सतिगुर सच्चा जाणीए, सचखण्ड वसे धाम न्यार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। सतिगुर सच्चा जाणीए, गुर अवतार रहे जस गाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, कागद कलम शाही लिख लिख रही समझाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादि करे सच न्याएं। सतिगुर सच्चा जाणीए, वसे हर घट थाएँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहे। आदि जुगादि एका सतिगुर, सति पुरख निरँजण खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी सेवा गुर गुर, गुर शब्दी शब्द जणाइंदा। लेखा जाणे धुरदरगाही धुर धुर, धुर धाम वेख वखाइंदा। राग सुणाए आपणी सुर सुर, अनहद नादी नाद वजाइंदा। सुरती शब्द आपे जुड़ जुड़, भेव अभेद खुल्हाइंदा। जोती जाता जुग जुग आपे आए मुड़ मुड़, सरगुण वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त सतिगुर इक्क अख्वाइंदा। आदि अन्त सतिगुर सज्जण, एका एक अख्वाया। मध गुर अवतारां कराए मज़न, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का लाया। आपे घड़े आपे भन्ने आपे दीन दर्द दुःख भंजन, भउ आपणा खेल जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त सच्चा सतिगुर इक्क अख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निराकार अजूनी रहित अनभउ प्रकाश जन्म मरन विच कदे ना आया।

८८२
११

★ ८ चेत २०१६ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ★

सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा जाणे आदि अन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम दृढ़ाए मणीआ मंत। सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्द मिलावा नारी कन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, गढ़ तोड़े हउमे हंगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाता तोड़े भुख नंगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, ज्ञान बोध देवे आत्म पंडत। सतिगुर सच्चा जाणीए, लख चुरासी करे खण्डत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि बणाए बणत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोधा

सूरबीर बलवाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी गाए शब्द तराना। सतिगुर सच्चा जाणीए, दो जहानां मारे इक्क निशाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा जाणे विष्नूं भगवाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, सो पुरख निरँजण गुण निधाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, हँ ब्रह्म देवे माणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, घर विच घर वखाए सच मकाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, अनहद राग सणाए तराना। सतिगुर सच्चा जाणीए, अमृत आत्म देवे पीणा खाणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच जहानां। सतिगुर सच्चा जाणीए, दो जहानां वाली। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादि चले चाल निराली। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका नूर एका जोत पुरख अकाली। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां करे सच दलाली। सतिगुर सच्चा जाणीए, जगत अन्धेरा मेटे रैण काली। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे शाह सुल्तानी। सतिगुर सच्चा जाणीए, अलख अगोचर अगम्म अथाह। सतिगुर सच्चा जाणीए, जुगा जुगन्तर बेपरवाह। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका मन्त्र नाम दए दृढ़ा। सतिगुर सच्चा जाणीए, बिन रसना जिह्वा दए पढ़ा। सतिगुर सच्चा जाणीए, काया मन्दिर अंदर निरगुण नूर करे रुशना। सतिगुर सच्चा जाणीए, आत्म ताकी बजर कपाटी दए तुड़ा। सतिगुर सच्चा जाणीए, आत्म सेजा सच सिँघासण दए सुहा। सतिगुर सच्चा जाणीए, आत्म परमात्म मेला लए मिला। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। सतिगुर सच्चा जाणे कोए, भेव किसे ना आइंदा। सतिगुर सच्चा दो जहानां देवे ढोए, नाम ढोआ इक्क वखाइंदा। सतिगुर सच्चा प्रकाश करे त्रै त्रै लोए, निरगुण नूर नूर प्रगटाइंदा। सतिगुर सच्चा आपे जेहा आपे होए, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल इक्क कराइंदा। साचा खेल हरि हरि सतिगुर, सति सतिवादी आप कराईआ। जुगां जुगन्तर वेस कर कर, करता पुरख फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तर अन्तर आपे वड़ वड़, लख चुरासी वेख वखाईआ। पंज तत्त काया साचे मन्दिर आपे खड़ खड़, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। बोध अगाधा निष्अक्खर विद्या आपे पढ़ पढ़, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अंजील कुरान आपे लए सुणाईआ। निरभउ चुका भय डर डर, भयानक रूप ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा एका माहीआ। सतिगुर सच्चा एका माही, आदि जुगादि समाया। जुग जुग वेस नूर इलाही, इक्क इकल्ला वेस वटाया। गुर अवतारां दए सलाही, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाया। भगत भगवन्त पकड़े बाही, साचे सन्तां लए जगाया। गुरमुखां देवे आपणा थाईं, थाँन थनंतर इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा नाउँ रखाया। सतिगुर सच्चा

एकँकारा, एका एक वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, जुग करता आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वेखणहारा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सच सुनेहड़ा देदां रिहा वारो वारा, पुरख अबिनाशी कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह सतिगुर मीता, एका रंग समाइंदा। आदि जुगादि जाणे रीता, जुग जुग वेस वटाइंदा। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, अमृत एका रस भराइंदा। सदा सुहेला इक्क अकेला, बैठा रहे अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साची खेल करे करतारा, करनहार इक्क अख्वाइंदा। गुर गुर रूप अपर अपारा, शब्दी शब्द वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, सरगुण निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। आपणा खेल पुरख समरथ, सति सतिवादी आप जणाईआ। जुगा जुगन्तर महिमा अकथ, अकथ कथा आप सुणाईआ। निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जन भगतां करे पूरी आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, सोहँ हँसा एका जाप जपाईआ। हँ ब्रह्म कर प्रकाश, प्रकाश प्रकाश विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा खेल करने योग, हरि करता आप कराइंदा। आदि जुगादी धुर संजोग, धुर दरबारी आप मिलाइंदा। कटणहारा हउमे रोग, माया ममता मोह चुकाइंदा। इक्क चुगाए साची चोग, रसना जिवहा रस चखाइंदा। इक्क कराए साचा भोग, आत्म परमात्म एका सेज हंढाइंदा। इक्क सुणाए सच सलोक, विष्न ब्रह्मा शिव आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ढोला आपे गाइंदा। साचा ढोला आपे बोल, आपणा नाउँ लए प्रगटाईआ। आपणे कंडे आपणे तोल, तोलणहारा वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरे रखे आपणे कोल, वस्त अमोलक आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। सतिगुर सच्चा एकँकार, अकल कल वरताइंदा। निरगुण नानक कर त्यार, सरगुण नानक मेल मिलाइंदा। साचा ढोला बोल जैकार, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। सचखण्ड सुहाए बंक दुआर, बंक दुआरी सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सच्ची सरकार, सीस जगदीस ताज़ सुहाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। एका नाम सति अधार, सतिनाम आप पढ़ाइंदा। मित गत जाणे संसार, गति मित आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी बूझ बुझाइंदा। सतिगुर बूझे बूझणहारा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। नानक निरगुण बण वणजारा, सरगुण साचा हट्ट चलाईआ। वस्त अमोलक एका थारा, थिर घर वासी झोली पाईआ। शब्दी शब्द शब्द नगारा, सति अनादी नाद वजाईआ।

गृह मन्दिर अंदर साची सखीआं मंगलचारा, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। दो जहानां इक्को अखाड़ा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नानक सतिगुर सच्चा एका पाईआ। नानक निरगुण सतिगुर सच्चा पाया, पुरख अबिनाशी एकँकार। महल अटल डेरा लाया, सचखण्ड वसे वसणहार। साचा खेड़ा रिहा वसाया, उजड़ ना जाए दूजी वार। तख्त निवासी साचे तख्त आसण लाया, हुक्म हुक्म करे वरतार। धुर फ़रमाणा इक्क जणाया, शब्द अगम्मी बोल जैकार। जै जैकारा राग अलाया, ना कोई तन्द ना सितार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर खेल करे करतार। सतिगुर सच्चा जोती जाता, जोती जोत जोत समाइंदा। आदि जुगादी जाणे गाथा, जुग जुग विद्या आप पढ़ाइंदा। गुर पीर अवतार देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। कोटन कोटि प्रगटा त्रैलोकी नाथा, कोटन कोटि राम सेवा लाइंदा। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव गायण गाथा, कोटन कोटि सीस झुकाइंदा। कोटन कोटि वेद पुराण शास्त्र सिमरत गायण बहु बिध भांता, भेव अभेद ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा आपणा रूप वटाइंदा। सतिगुर साचा साचा रूप, अनुभव आप वटाईआ। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाईआ। निरगुण उपर निरगुण तुठ्ठ, निरगुण आपणी दया कमाईआ। आपणे अन्तर आपे उठ, आपणा बल प्रगटाईआ। आपे माता पिता बणे सुत, जन जनणी आप अख्वाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, जोती जोत जोत रुशनाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा वेस वटाईआ। सतिगुर सच्चा पुरख अकाल, अकल कला अख्वाइंदा। सचखण्ड वसे दीन दयाल, दीनन आपणी दया कमाइंदा। इक्क वसा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाइंदा। थिर घर साचे शब्दी शब्द आप बहाल, सच महल्ला आप वसाइंदा। आदि जुगादि चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। आपणी घालणा आपे घाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। आप उपाए आपणा लाल, गोबिन्द नाउँ धराइंदा। एका मार्ग दस्से सुखाल, पुरख अबिनाशी मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, जगत दलाली आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा एका राह चलाइंदा। सतिगुर सच्चा एका राह, आदि पुरख चलाईआ। नानक निरगुण मेला सहिज सुभा, सो पुरख निरँजण करे कुड़माईआ। हरि पुरख निरँजण सगन मना, एकँकारा रंग चढ़ाईआ। आदि निरँजण जोत जगा, अबिनाशी करता करे रुशनाईआ। श्री भगवान सीस छत्र झुला, पारब्रह्म प्रभ वेखे चाँईं चाँईंआ। एका अक्खर दए पढ़ा, एका नाम नाम जणाईआ। एका मार्ग देवे ला, लख चुरासी बन्धन पाईआ। आत्म परमात्म दए समझा, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। वरन बरन दए मिटा, क्षत्री

८८५
११

ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा सिफ्त सलाहीआ। सिफ्त सलाही सतिगुर मीता, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। करे खेल इक्क अनडिठा, पुरख अकाल आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम जाणे रीता, साची रीती आप बणाइंदा। आदि जुगादी पत्तत पुनीता, पतित पापी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा सतिगुर गुर गुर आप समझाइंदा। सतिगुर देवे सच्ची दात, गुर गुर झोली पाईआ। गुर गुर बन्ने आपणा नात, सतिगुर मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर बैठा रहे इक्क इकांत, गुर गुर सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साची वस्त गुर गुर झोली आप भराईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध आप अख्वाइंदा। खेले खेल पुरख अकाल, भेव कोए ना पाइंदा। गोबिन्द उठाए आपणा लाल, लालण आपणा रंग चढ़ाइंदा। चार वरनां कर दलाल, सच दलाली इक्क समझाइंदा। ग़रीब निमाणयां करे प्रितपाल, फड़ बांहों गले लगाइंदा। अमृत आत्म जाम प्याल, दुरमति मैल धुवाइंदा। साचा मार्ग इक्क वखाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका घर बहाइंदा। एका वस्त सच्ची धन माल, सच ख़ज़ीना आप लुटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा देवे वर, गुर गुर झोली आप भराइंदा। गुर गुर झोली भरे आप, आपणी दया कमाईआ। गोबिन्द बण पिता बाप, पुरख अकाल नाउँ रखाईआ। गोबिन्द जणाए वड प्रताप, गुरमुख गुर गुर गोद बहाईआ। गुरसिख बणाए सज्जण साक, मात पित पिता पूत भेंट चढ़ाईआ। सति सतिवादी खोल्ह हाट, साचा लाहा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर देवे साचा वर, गुर गुर आपणी गंढु पुवाईआ। सतिगुर गुर एका गंढु, हरि जू हरि हरि आप रखाइंदा। गुर गुर आपणी दात देवे वंड, गुरसिखां झोली पाइंदा। गुरसिख नंगी ना होवे कन्ढु, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपणे हथ्थ फड़ तीर कमंद चिल्ला एका नाम चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा गुर गुर आपणी खेल खिलाइंदा। लहिणा देणा गुरसिख, गुर गोबिन्द धार चलाईआ। पुरख अकाल दिती भिख, गुरसिखां आप वरताईआ। आपणी हथ्थीं लेखा लिख, गुरमुखां देवे माण वड्याईआ। तेरा मेरा इक्को हिस, साची वंडण वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द देवे साचा वर, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। गोबिन्द सूरा गुरसिख देणा, देवणहार आप हो जाइंदा। सर्बकला कल भरपूरा, आपणी कल आप वरताइंदा। लेखा जाणे नेड़ दूरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। नाता तोड़ कूड़ो कूड़ा, सच सुच्च इक्क समझाइंदा। करे खेल ज़ाहर ज़हूरा, पड़दा ओहला ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द

देवे एका वर, गुरसिख आपणा रूप बणाइंदा। गुरसिख तेरा मेरा रंग, गोबिन्द गुर गुर आप जणाईआ। तेरी सेज मेरा पलँघ, तेरा प्यार मेरा प्रेम हंढाईआ। मेरा गीत तेरा छन्द, तेरा छन्द जगत शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां देवे माण वड्याईआ। गुरसिख देवे गोबिन्द माण, आपणा माण गवाइंदा। भिच्छया मंगे बण बाल अञ्याण, अग्गे झोली डाहइंदा। पंचम उत्तों हो कुरबान, पंचम आपणी भेंट कराइंदा। पंचम दे इक्क निशान, पंचम एका रंग वखाइंदा। पंचम पंच कर प्रधान, पंचां एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप जणाइंदा। गोबिन्द गुरसिख देवे दाना, आपणी दया कमाईआ। भाग लगाए गढ़ी चमकौर कच्च मकाना, काची गगरी सोभा पाईआ। गुरसिख सच्चा इक्क पहचाना, सिँघ संगत माण वड्याईआ। आपणा बदल्या आपे जामा, आपणा बाणा आप पलटाईआ। करे खेल गुण निधाना, भेव कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर सेवा गुरसिखां सेव कमाईआ। गोबिन्द संगत सिँघ दे वड्याई, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। सीस नाल जगदीस वटाई, छत्र सीस सीस झुलाइंदा। मिल्या माण जट्ट छीबें नाई, कल्गी तोड़ा आप सजाइंदा। धन्न गुरसिख तेरी वड्याई, तुध बिन मेरा संग ना कोए निभाइंदा। पुरख अकाल तेरा होए सहाई, जो तेरी मेरी बणत बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सिँघ संगत मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाया। गल विच पल्लू चरनीं डिगा आ, सिर चरनां उपर टिकाया। मेरी पकड़ सतिगुर सच्चे बांह, तुध बिन नज़र कोए ना आया। मैं आपणे केसां तेरे चरनां चवर लवां झुला, बण सेवक सेव कमाया। तेरा ताज आपणे सीस ना सका उठा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाया। मेरे पिछले बख्शे गुनाह, मेरा नैण तेरे अग्गे शरमाया। मैं मंगां तेरे चरन पनाह, तेरा रूप किस बिध लवां वटाया। गोबिन्द बोले सहिज सुभा, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाया। पुरख अकाल पिच्छों रिहा जणा, गुरसिखां दे माण वड्याआ। गुरसिखां बिनां गुरू कम्म किसे ना आया, निरगुण सरगुण रसना जिह्वा कोए ना गाया। सुर नाल सुर लैणा वटा, पटका सीस सीस बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गे मार्ग लैणा ला, हरि का मार्ग दिस किसे ना आया। गोबिन्द कहे मन्न लै कहिणा, संगत सिँघ समझाईआ। पंज तत्त गुरू कोई मात ना रहिणा, कलयुग अन्त करे सफ़ाईआ। पुरख अकाल वेखणा नैणां, नेत्र लोचण दरसन पाईआ। आदि जुगादि जिस ने साचे तख्त बहणा, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रीती तैनूं रिहा समझाईआ। साची रीती दस्से दयाल, आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे कमाल, हरि करता वेस वटाइंदा। गुरसिख उठाए

साचे लाल, लालण आपणा रंग चढ़ाइंदा। गुरसिख काया बणाए सच्ची धर्मसाल, घर मन्दिर डेरा लाइंदा। गुरसिख अंदर वज्जे अनादी ताल, अनहद राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू आपणा भेव जणाइंदा। संगत सिँघ कलयुग वेला अन्तिम आउणा, गुर सतिगुर आप समझाईआ। पुरख अकाल फेरा पाउणा, तेरा मेरा जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण दीवा इक्क जगाउणा, लख चुरासी करे रुशनाईआ। मेरा दुआर जिस सुहाउणा, सो साहिब सच्चा माहीआ। तेरा लहिणा देणा जिस मुकाउणा, निरगुण दाता पुरख बिधाता एकँकार आपणा बल रखाईआ। साचा सीस जगदीस सुहाउणा, सोभावन्त खुशी मनाईआ। धुरदरगाही सच्चा ताज लोकमात फेर बणाउणा, पंचम पंच पंच वड्याईआ। तेरा मेरा कर्ज़ा आप मुकाउणा, मुकावणहार इक्क अख्वाईआ। तेरे हथ्थीं मेरे सीस बंधाउणा, मेरा सीस जगदीस दए वड्याईआ। तेरा नैण इक्क खुलाउणा, नर नरायण मेल मिलाईआ। कलयुग जीव भेव किसे ना पाउणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरले गीत गोबिन्द एका गाउणा, वाहवा वज्जदी रहे वधाईआ। गुर चेला गुर रूप वटाउणा, चेला गुर आप अख्वाईआ। सोहँ ढोला एका गाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। पुरख अकाल खेल खलाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चार जुग दा पन्ध मुकाउणा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणी गोद बहाईआ। सच संदेसा इक्क सुणाउणा, दो जहानां आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाउणा, जो घड़या भन्न वखाईआ। वरन बरन मेट मिटाउणा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका घर बहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लख चुरासी रसना जिह्वा गाउणा, दूसर होर ना कोए पढ़ाईआ। साचे तख्त पुरख निरँजण डेरा लाउणा, गोबिन्द हुक्मी हुक्म हुक्म जणाईआ। नाम खण्डा चण्ड प्रचण्डा खड़ग इक्क चमकाउणा, चार कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। गढ़ हँकारी सब दा ढाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरसिखां देवे माण वड्याईआ। गुरसिख तेरे सिर दा ताज, सतिगुर सच्चा आप अख्वाइंदा। जुग जुग रखे तेरी लाज, लाजावन्त आप हो आइंदा। कलयुग सतिजुग रचे काज, रच रच काज वेख वखाइंदा। प्रगट होवे देस माझ, सम्बल नगर डेरा लाइंदा। आत्म परमात्म रखे सांझ, ब्रह्म पारब्रह्म वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा भेव चुकाइंदा। सतिगुर पूरा चुकाए भेव, भेद कोए रहिण ना पाईआ। लेखा चुक्के चार वेद, शास्त्र सिमरत पुराण ना कोए पढ़ाईआ। करे खेल अछल अछेद, अछल छल धारी हथ्थ किसे ना आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान श्री भगवान खेडे खेड, बण खिडारी आपणी हद्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग करता करता जुग आप उलटाईआ।

★ ६ चेत २०१६ बिक्रमी कुंदन सिँघ दे गृह माल चक्क ज़िला अमृतसर ★

अलख अगोचर अगम्म अपर, बेअन्त वड वड्याईआ। असुत्ते प्रकाश आपे कर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरे आपे वड़, दर घर साचा आप सुहाईआ। जोती जाता नूर उजाला एका कर, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। भेव खुल्हाए एकँकारा, अकल कला वड्याईआ। सति पुरख निरँजण खेल न्यारा, सो पुरख निरँजण भेव चुकाईआ। हरि पुरख निरँजण निराकारा, निरगुण निरवैर नज़र ना आईआ। एकँकारा कर पसारा, जोती धारा धार प्रगटाईआ। आदि निरँजण नूरो नूर खेल न्यारा, जोती जाता इक्क अख्वाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। श्री भगवान सच हुलारा, सति सतिवादी आप जणाईआ। पारब्रह्म सेवादारा, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अवल्ला, एका एक कराइंदा। आदि जुगादी वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। जोती नूर आपे रल्ला, निरगुण निरगुण विच समाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। धुर फ़रमाणा एका घल्ला, नर नरेश आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे करतारा, बेअन्त वड वड्याईआ। निरगुण निरगुण हो उज्यारा, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण नारी कन्त भतारा, निरगुण साची सेज हंढाईआ। निरगुण वेखे विगसे वेखणहारा, निरगुण आपणे घर सोभा पाईआ। निरगुण दाई दाया बणे अगम्म अपारा, बण सेवक सेव कमाईआ। निरगुण जननी जन बणाए सुत दुलारा, गोदी गोद गोद सुहाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। दीआ बाती ना कोए उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। छप्पर छन्न ना चार दीवारा, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। मंडल मण्डप ना कोए अखाड़ा, लोआं पुरीआं ना रचन रचाईआ। जंगल जूह ना उजाड़ पहाड़ा, समुंद सागर ना कोए रखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। आपणा दस्से सच पसारा, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल बेपरवाह, भेव अभेद जणाइंदा। साचे तख्त सोभा पा, तख्त निवासी हुक्म वरताइंदा। भूपत भूप राज राजान शहिनशाह, आपणा भेव चुकाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणा, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। आपणा पड़दा आपे चुक्क, निरगुण निरगुण दया कमाईआ। निरगुण अंदर निरगुण उठ, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण भण्डार निरगुण देवे अतुट, निरगुण आपणा आप वरताईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह एकँकारा, अकल कला अख्वाइंदा। सचखण्ड वसे सच दुआरा, सोभावन्त सोभा पाइंदा। एका सुत जणे दुलारा, बाली बाला गोद सुहाइंदा। एका मन्दिर कर त्यारा, थिर घर साचा आप वड्याइंदा। शब्दी शब्द कर पसारा, साचे धाम बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा साचे सुत, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण सुहाए आपणी रुत्त, एकँकारा वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि निरँजण सचखण्ड निवासी आपे उठ, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता ठाकर स्वामी आपे तुट्ठ, निहकर्मी कर्म कमाईआ। श्री भगवान इक्क जणाए आपणी ओट, शब्दी शब्द शब्द समझाईआ। पारब्रह्म वखाए किला कोट, थिर घर साचे आप बहाईआ। मेल मिलावा निर्मल जोत, पुरख अकाल अकाल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे करतार, आपणी दया कमाइंदा। निरगुण निरगुण करे विहार, शब्दी शब्द बणत बणाइंदा। शब्दी शब्द सच सलाहकार, सतिगुर हरि हरि आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा सच संदेसा, आदि पुरख जणाईआ। शाहो भूप नर नरेशा, एकँकार वड्डी वड्याईआ। शब्दी तेरा विष्न ब्रह्मा शिव लेखा, लिख लिख लेखा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। निरगुण दाता वड्डा दानी, आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड जोत नुरानी, नूर नूराना डगमगाइंदा। थिर घर गाए आपणी बाणी, बोध अगाध राग अल्हाइंदा। साची वस्त वस्त महानी, सति सतिवादी झोली पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गुण निधानी, तेरा बंस सुहाइंदा। त्रैगुण माया कर प्रधानी, साचा बन्धन पाइंदा। पंज तत्त खेल महानी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आप कराइंदा। एका देवे धुर फ़रमानी, सच संदेसा आप सुणाइंदा। आदि जुगादि अकथ कहाणी, बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निराकार हुक्म वरताइंदा। निराकार हरि निरँकारा, हुक्मी हुक्म आप जणाईआ। शब्दी शब्द कर पसारा, भेद अभेद खुल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरा अखाड़ा, मंडल मण्डप दए वड्याईआ। रवि ससि तेरी किरन किरन उज्यारा, इक्क इक्क इक्क वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द समझाईआ। शब्दी हरि शब्द ज्ञाना, शब्द शब्द जणाइंदा। शब्दी मन्दिर शब्दी मकाना, हरि शब्दी आप वसाइंदा। शब्दी राग शब्द तराना, हरि शब्दी आपे गाइंदा। शब्दी हुक्म शब्द फ़रमाणा, हरि शब्दी सीस झुकाइंदा। शब्दी विष्न शब्दी ब्रह्म निशाना, शब्द शंकर धार बनाइंदा। शब्दी त्रैगुण बन्न्हे गाना, एका तन्द वखाइंदा। शब्दी पंज तत्त वखाए निशाना, निशाना आपणा आप प्रगटाइंदा।

शब्दी महल अटल इक्क मकाना, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां घाड़त आप घड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निराकार अजूनी रहित पुरख अकाल अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। शब्दी शब्द तेरा पसारा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। शब्दी शब्द तेरा अकारा, हरि पुरख निरँजण आप समझाईआ। शब्दी शब्द तेरा अखाड़ा, एकँकारा वेख वखाईआ। शब्दी शब्द सच्चा लाड़ा, आदि निरँजण सोभा पाईआ। शब्दी शब्द नूर चमत्कारा, अबिनाशी करता नूर रुशनाईआ। शब्दी शब्द श्री भगवान दए हुलारा, साचा झूला आप झुलाईआ। शब्दी शब्द पारब्रह्म निउँ निउँ करे निमस्कारा, दर साचे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख सच्चा हरि, सच संदेसा नर नरेशा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एका वार सुणाईआ। सच संदेसा हरि हरि राणा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाना, शब्दी बन्धन एका पाइंदा। त्रैगुण त्रै कर प्रधाना, रजो तमो सतो जोड़ जुड़ाइंदा। पंचम बणाए इक्क मकाना, सेवक बण बण सेव कमाइंदा। सति सतिवादी शाह सुल्ताना, शहिनशाह भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म शब्दी धार, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर सेवादार, साची सेवा इक्क लगाईआ। आपे बणे सच्चा ठठयार, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। लख चुरासी कर त्यार, तिन्न पंज मेला सहिज सुभाईआ। पंज दस्स हो उज्यार, अठ तिन्न वज्जे वधाईआ। नौ दर वेखे वेखणहार, आसा जगत नाल मिलाईआ। काया मन्दिर कर त्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हउमे हंगता विच वसाईआ। शब्दी शब्द खेल न्यार, गुर शब्दी आप समझाईआ। घर विच घर कर त्यार, चार दीवार ना कोए वखाईआ। डूँघी कंदर पावे सार, काया भँवरी सोभा पाईआ। सुखमन टेढी कर त्यार, बंक बंक दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि देवे मत्त, शब्दी सुत दया कमाइंदा। तिन्नां लेखा पंज तत्त, तत्तव तत्त नाल मिलाइंदा। पुरख अबिनाशी महिमा अकथ, भेव कोए ना पाइंदा। लख चुरासी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। आपणा मार्ग रिहा दस्स, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वंड वंडाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण जाए वस, महल अटल आप सुहाइंदा। निरगुण जोत करे प्रकाश, आदि निरँजण जोत निरँजन वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मे शिव हरि मार्ग दस्स, एका बूझ बुझाईआ। लख चुरासी मेरा प्रकाश, रूप नज़र कोए ना आईआ। सरगुण अंदर निरगुण दास, बण सेवक सेव कमाईआ। अन्तर अन्तर भोग बिलास, आत्म सेजा इक्क सुहाईआ। साचे मंडल साची रास, बण गोपी काहन नचाईआ। मेरा मेला सुरती शब्दी रास, बण बण चेला

गुर गुर आपणा रंग वखाईआ। आदि जुगादि ना होए विनास, खेले खेल पृथ्मी आकाश, सचखण्ड निवासी शाहो शबाश, निरगुण निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। निरगुण दाता निरगुण भण्डारी, निरगुण दयावान अख्वाइंदा। निरगुण नूर जोत निरँकारी, निरगुण इष्ट गुरदेव रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर जोती जाता करे खेल न्यारी, आपणा रूप आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी आपणा मेल मिलाइंदा। निरगुण वंड निरँकार, पारब्रह्म प्रभ आप कराईआ। आदि पुरख आदि जाणे आपणा सच विहार, दूसर भेव कोए ना राईआ। शब्दी शब्द इक्क बलकार, जोधा सूरबीर बल आपणा आप धराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण अतीता त्रै त्रै बन्धन पाईआ। घाड़न घड़ बण ठठयार, लख चुरासी वेखे चाँईं चाँईंआ। घर विच घर खेल अपार, गृह मन्दिर आप कराईआ। घर सरोवर ठंडा ठार, अमृत नीर आप भराईआ। घर नाद शब्द धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाईआ। घर जोत निरँजण कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। घर आत्म सेजा पसर पसार, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। घर आत्म परमात्म करे प्यार, निरगुण खेल करे चाँईं चाँईंआ। घर ईश जीव अधार, जगदीस वेख वखाईआ। निरगुण वसे सचखण्ड सच्चे दरबार, सच सिँघासण आसण लाईआ। आपणी इच्छया लख चुरासी कर त्यार, साची भिच्छया आपणी झोली आपे पाईआ। निरगुण सरगुण अंदर वाड़, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। डूँघी कंदर सुत्ता पैर पसार, बेअन्त बेपरवाहीआ। जिस जन किरपा करे आप निरँकार, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। बिन पेखत बिन नेत्र वेखत कोई ना करे विचार, विचार विच कदे ना आईआ। घट घट अंदर कर पसार, रमइया राम रूप आप हो जाईआ। अगला लेखा आपणे हथ्थ रखे करतार, लख चुरासी जून अजून वंड वंडाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर त्यार, चारे खाणी बन्धन पाईआ। चारे बाणी नाद धुन्कार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप सुणाईआ। निरगुण सरगुण पावे सार, गुर शब्दी रूप वटाईआ। पंज तत्त दए अधार, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जुग रीती चलाए विच संसार, गुर अवतार आप प्रगटाईआ। आपणी महिमा आपे दए वखाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणा अक्खर आपे दए सिखाल, बिन पढ़यां करे पढ़ाईआ। साचे भगतां देवे आप ज़माल, नूरी जल्वा आप वखाईआ। साचे सन्तां बण दलाल, सच दलाली इक्क कमाईआ। साचे गुरमुखां चले नाल नाल, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण संग निभाईआ। नानक सतिगुर सचखण्ड वखाई इक्क धर्मसाल, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। बण दाता दानी गृह गृह घट घट जीव जंत साध सन्त लख चुरासी करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। हर घट वसया दीन दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर बूझ बुझाईआ। सतिगुर होए मेहरवान, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। गुर गुर देवे इक्क

ध्यान, एका घर वखाईआ। गुर गुर बोले धुर फ़रमाण, शब्दी शब्द ढोला गाईआ। कलम शाही वखाए निशान, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। रसना जिह्वा करे कलाम, कलमा नबी आप समझाईआ। धुर संदेसा सच पैग़ाम, लोकमात मात सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म दर अग्गे करन सलाम, सही सलामत एका नज़री आईआ। घट घट अंदर करे बिसराम, बिस्त्र सेज इक्क सुहाईआ। सचखण्ड वसे आप भगवान, साचे मन्दिर डेरा लाईआ। आदि जुगादी इक्क निशान, दो जहाना आप झुलाईआ। जुगा जुगन्तर धुर फ़रमाण, गुर गुर बाणी आप पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार दे दे गए ब्यान, लेखा लिख लिख जीव जंत समझाईआ। आदि जुगादी इक्क निगहबान, ना मरे ना जाईआ। बिन किरपा ना सके कोई पछाण, जगत नेत्र कम्म किसे ना आईआ। गोबिन्द सिँघ सूरा बोल जैकारा सुणाए बलवान, पुरख अकाल इक्क सच्चा शहिनशाहीआ। लख चुरासी घर घर अंदर वखाए आपणी धर्मसाल, सच दुआरे बैठा आसण लाईआ। नित नवित कर कर हित, मात पित ना कोई जाणे वार थित, जन भगतां साचे सन्तां आपणी बूझ बुझाईआ। सचखण्ड वसे धाम अनडिठ, आपणा आसण आप सुहाईआ। बिन नानक कबीर दर जा के कोई ना सके वेख, अद्धविचकारे सारे बैठे डेरा लाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला लोकमात गुर गोबिन्द नाल करया हेत, पूत सपूता दए वड्याईआ। वसणहारा नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। बिन सतिगुर पूरे गुरू पाए ना कोई भेत, पढ़यां सुणयां हथ्थ किसे ना आईआ। सदा स्वामी इक्क नेहकामी लख चुरासी रखे आपणी छाया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट रमिआ आपे राम, घट घट जपाए आपणा नाम, घट घट प्याए एका जाम, अमृत आत्म रस चखाईआ। सर्ब व्यापी हरि भगवन्त, आदि जुगादि समाइंदा। सर्ब जीआं दा साचा कन्त, नर नरायण इक्क अख्वाइंदा। सर्ब जीआं बणाए बणत, घड़न भन्नड़हार भेव ना आइंदा। सर्ब जीआं दा मणीआं मंत, आपणा नाउँ पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्क भगवन्त, घर घर सेज हंढाइंदा। सर्ब जीआं दा लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घट घट आपणा आसण लाइंदा। घट घट आसण एकँकार, आत्म सेज सुहाईआ। आत्म परमात्म अग्गे करे पुकार, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरी वड्याईआ। तूं वसे धाम न्यार, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, सरगुण अंदर आपे वड़, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाईआ। पंज तत्त तन काया नाता, सो पुरख निरँजण खेल कराईआ। अप तेज वाए पृथमी आकाश बणाए साथा, त्रैगुण बन्धन बंध बंधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर कर वासा, ईश जीव वड्याईआ। जुग

चौकड़ी वेखे खेल तमाशा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आपणी इच्छया आपे करे पूरी आसा, आसावन्त आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त वेखे चाँईं चाँईंआ। पंज तत्त मेला हरि निरँकार, सरगुण निरगुण दया कमाइंदा। पंज तत्त अंदर सतिगुर धार, गुर गुर शब्द अल्लाइंदा। पंज तत्त अंदर जोत निरँकार, जोती जोत डगमगाइंदा। पंज तत्त अंदर अमृत ठंडा ठार, सच सरोवर इक्क भराइंदा। पंज तत्त अंदर सूरज चन्द करन निमस्कार, मंडल मण्डप सीस झुकाइंदा। पंज तत्त अंदर विष्न ब्रह्मा शिव चरन धूढ़ी मंगण छार, सीस जगदीस राह तकाइंदा। पंज तत्त अंदर सच गुफ़तार, गुफ़त शनीद आप समझाइंदा। पंज तत्त गुर अवतार, पीर पैग़म्बर रूप वटाइंदा। पंज तत्त अंदर धुर फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा । पंज तत्त अंदर नाम ज्ञान, सच ज्ञाना इक्क दृढ़ाइंदा। पंज तत्त अंदर खेल महान, ख़ालक ख़लक आप खलाइंदा। पंज तत्त अंदर चार जुग दी वेखे आण, चारे खाणी चारे बाणी बाण लगाइंदा। पंज तत्त अंदर हरि का मकान, नानक निरगुण सिफ्त सलाहइंदा। पंज तत्त अंदर नानक अंगद देवे दान, आपणी भिच्छया झोली पाइंदा। पंज तत्त अंदर अमरदास कराए इश्नान, अमरापद इक्क वखाइंदा। पंज तत्त अंदर राम दास करे ध्यान, वड ध्यानी मेल मिलाइंदा। पंज तत्त अंदर गुरू अर्जन धुर बाणी लाए बाण, पुरख अबिनाशी एका पाइंदा। पंज तत्त अंदर गुरू ग्रन्थ गुरदेव बणाया विच जहान, चार वरन अठारां बरन जीव जंत सर्ब समझाइंदा। पंज तत्त अंदर तीर कमान, हरि गोबिन्द खण्डा खड़ग हथ्थ उठाइंदा। पंज तत्त अंदर हरिराय दए ब्यान, लिख लिख लेख सर्ब समझाइंदा। पंज तत्त अंदर हरि कृष्ना छोटे बाले दए ज्ञान, गूंगिआं ज्ञान आप समझाइंदा। पंज तत्त अंदर गुर तेग बहादर झुलाया सच निशान, पंज तत्त आपणा भेंट चढ़ाइंदा। पंज तत्त अंदर गोबिन्द सूरा प्रगटया आप बलवान, पुरख अकाल आपणा सुत बणाइंदा। पंज तत्त अंदर पंज प्यारे कर परवान, धुर फ़रमाणा हथ्थ फड़ाइंदा। पंज तत्त अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर मंगण दान, पुरख अबिनाशी अग्गे झोली डाहइंदा। पंज तत्त अंदर नानक गोबिन्द दे दे गया ज्ञान, अक्खर अक्खर जगत समझाइंदा। पंज तत्त अंदर सूरबीर सुल्तान दस्स के गया निशान, सच निशाना इक्क लगाइंदा। पंज तत्त सम्बल घर बणे मकान, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाइंदा। पंज तत्त निरगुण वेस करे श्री भगवान, पंज तत्त आपणे उपर पड़दा पाइंदा। पंज तत्त अंदर गोबिन्द खण्डा चमके दो जहान, नाम खण्डा इक्क उठाइंदा। पंज तत्त अंदर धुर फ़रमाण, पुरख अबिनाशी जुग जुग आप सुणाइंदा। बिनां पंज तत्त हरि जू किसे ना दस्से आपणा नाम, आपणी इच्छया खातर पंज तत्त आपणा डेरा लाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल महान, भेव कोए ना पाइंदा। जिस काया अंदर वसे आप मेहरवान, तिस उपर मेहर नज़र आप टिकाइंदा। जे कोई आ

८६४
११

के मथ्था टेके उहनूं नज़री आए विष्नूं भगवान, पूरन सिँघ पंज तत्त कम्म किसे ना आइंदा। एह झूठी माटी खेल जहान, जगत खेड़ा आप वसाइंदा। जिस ने मिलणा सतिगुर पूरे जाणी जाण, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। राती सुत्तयां गुरसिखां अग्गे खलोवे आण, गोबिन्द आपणा रूप वटाइंदा। कलयुग अन्तिम भरम भुलेखे विच आप भुल्ल गया भगवान, आपणा जोती जामा पाइंदा। जगत नेत्र दिसे ना शाह सुल्तान, आत्म परमात्म नेत्र खेत्र ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आदि जुगादि सदा सद समाइंदा।

★ ६ चेत २०१६ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण करे खेल अपारा, अभेव भेद आप जणाइंदा। सचखण्ड साचे वसे आप निरँकारा, निरगुण निरवैर निराकार आसण लाइंदा। साचे तख्त बहे सच्ची सरकारा, पुरख अकाल दीन दयाल अजूनी रहित डगमगाइंदा। हुक्मी हुक्म करे वरतारा, धुर फ़रमाणा श्री भगवान आप सुणाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, शहिनशाह आपणी कल आप धराइंदा। आपणी इच्छया करे खेल महाना, साची भिच्छया आप प्रगटाइंदा। निरगुण दाता निरगुण देवणहारा दाना, निरगुण भिखक खाली झोली आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, अलख अगोचर आप कराईआ। सूरबीर बण बलवान, बल आपणा आप जणाईआ। हुक्मी हुक्म बण हुक्मरान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। थिर घर साचा खोल्ह मकान, अंदर मन्दिर कुण्डा लाहीआ। शब्दी शब्द नौजवान, हरि निरँकार आप जगाईआ। देवणहारा हरि हरि माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। निरगुण निरगुण देवे ज्ञान, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराईआ। आपणी कल आपे रख, अकल कल खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी हो प्रतख, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। शब्द दुलारा कर कर वस, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मे शिव मार्ग दस्स, साचे मार्ग आपे लाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, भेव कोए ना पाइंदा। बोध अगाधी महिमा अकथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव श्री भगवान, निरगुण दाता आप खुल्हाईआ। धुर दरगाही सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। सचखण्ड दुआरे एका आण, थिर घर आपणा हुक्म मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बख्शे चरन ध्यान, साची सरन सरन सरनाईआ। साचा नाता जोड़ श्री भगवान, भगवन आपणी बूझ बुझाईआ। वस्त अमोलक इक्क

महान, दाता दानी झोली पाईआ। सच भण्डारा पीण खाण, विष्नूं आपणा रंग वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म हो प्रधान, ब्रह्म आपणा रूप वटाईआ। धूआँधार वेख सुंञ मसाण, शंकर कंकर आपणा नाद सुणाईआ। लेखा जाणे हरि भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमाणा सच संदेसा, श्री भगवान आप सुणाइंदा। तख्त निवासी इक्क नरेशा, नर नरायण बल प्रगटाइंदा। आपणा धारे आपे भेखा, भेखाधारी नज़र किसे ना आइंदा। आपे बदले आपणी रेखा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादी इक्क आदेसा, एका निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर खेल अपारा, पुरख अगम्मड़ा आप कराईआ। हुक्मे अंदर जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। हुक्मे अंदर शब्दी धारा, शब्दी शब्द प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे अखाड़ा, हुक्मे अंदर रवि ससि करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव पाए सारा, हुक्मे अंदर आपणा पड़दा लाहीआ। हुक्मे अंदर त्रैगुण माया बण वरतारा, रजो तमो सतो संग मिलाईआ। हुक्मे अंदर पंज तत्त खेले खेल न्यारा, अप तेज वाए पृथमी आकाश बन्धन पाईआ। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण करे पसारा, लख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। हुक्मे अंदर धुर फ़रमाणा, धुर दरबारी आप सुणाईआ। हुक्मे अंदर अनहद गाणा, घर घर आपणा राग अलाईआ। हुक्मे अंदर दीपक दीप महाना, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर पीणा खाणा, रसना जेहवा रस चखाईआ। हुक्मे अंदर इक्क रखाए चरन ध्याना, आत्म परमात्म कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। हुक्मे अंदर नर नरायण, आपणी दया कमाइंदा। हुक्मे अंदर मन्ने कहिण, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण अंदर बहण, बह बह आपणी खुशी मनाइंदा। हुक्मे अंदर खोले नैण, नेत्र ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर चुकाए लहिणा देण, पिछला मूल ना कोए रखाइंदा। हुक्मे अंदर लख चुरासी साक सज्जण सैण, जगत बन्धन आपे पाइंदा। हुक्मे अंदर मात पित भाई भैण, पिता पूत गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर हरि जू राग, अनरागी आप अलाईआ। हुक्मे अंदर सच वैराग, बण वैरागी आप उपजाईआ। हुक्मे अंदर नेत्र जाग, कँवल नैण नैण खुलाईआ। हुक्मे अंदर कन्त सुहाग, निरगुण सरगुण नार कन्त वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप मनाईआ। हुक्मे अंदर गुर गुर धार, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। हुक्मे अंदर विष्न भण्डार, विश्व आपणी वस्त वरताइंदा। हुक्मे अंदर नाद धुन्कार, ब्रह्मा वेता पारब्रह्म पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर लेखा चार, चार वेद मुख सलाहइंदा। हुक्मे अंदर तेज कटार, त्रै

त्रै मुखी त्रिसूल शंकर हथ्थ फड़ाइंदा। हुक्मे अंदर बाशक तशका कर श्रृंगार, कंठ माला आप बणाइंदा। हुक्मे अंदर सांगोपांग बैठ सच्ची सरकार, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। हुक्मे अंदर त्रैगुण माया तत्त विचार, पंज तत्त मेला मेल मिलाइंदा। हुक्मे अंदर लख चुरासी कर अखाड़, घर घर आपणा नाच नचाइंदा। हुक्मे अंदर बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी जोड़ जुड़ाइंदा। हुक्मे अंदर घर विच घर कर त्यार, आत्म परमात्म सोभा पाइंदा। हुक्मे अंदर जोत उज्यार, घर घर दीपक आप जगाइंदा। हुक्मे अंदर शब्द नाद धुन्कार, अनहद रागी राग सुणाइंदा। हुक्मे अंदर आत्म अमृत ठंडा ठार, घर सरोवर आप नुहाइंदा । हुक्मे अंदर धूआँधार, हुक्मे अंदर रवि ससि आप चमकाइंदा। हुक्मे अंदर जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लाइंदा। हुक्मे अंदर समुंद सागर डूँघी गार, जल थल महीअल आपणा खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण कर पसार, वड संसारी आपणा संग रखाइंदा। हुक्मे अंदर वंडे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाउँ प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर चार बाणी बण वणजार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी साचे हट्ट रखाइंदा। हुक्मे अंदर चार वरन दे अधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग वखाइंदा। हुक्मे अंदर चार कुण्ट होवे उज्यार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाइंदा। हुक्मे अंदर गुर गुर लै अवतार, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी कर पसार, हुक्मे अंदर डेरा ढाहइंदा। हुक्मे अंदर घाड़न घड़े बण ठठयार, हुक्मे अंदर भन्न वखाइंदा। हुक्मे अंदर राग नाद जैकार, हुक्मे अंदर सुन्न समाध समाइंदा। हुक्मे अंदर बोध अगाध जैकार, हुक्मे अंदर आत्म अन्तर इक्क लिव लाइंदा। हुक्मे अंदर करे गुफ़तार, हुक्मे अंदर कूक कूक सुणाइंदा। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत वेद दए अधार, हुक्मे अंदर गीता ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर अंजील कुरानां कर त्यार, कलमा नबी आप सिखाइंदा। हुक्मे अंदर पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ मुसायक पाए सार, हुक्मे अंदर दस्तगीर आपणा बन्धन पाइंदा । हुक्मे अंदर सतिनाम कर उज्यार, नाम सति सति समझाइंदा। हुक्मे अंदर वाहिगुरू फतहि बोल जैकार, जै जै जैकार नाअरा लाइंदा। हुक्मे अंदर तेई अवतार, जुग जुग लोकमात वेस वटाइंदा। हुक्मे अंदर अठारां भगत कर श्रृंगार, पंज तत्त काया चोली रंग चढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर ईसा मूसा करया ख़बरदार, बेख़बर आप जगाइंदा। हुक्मे अंदर लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी पड़दा आप उठाइंदा। हुक्मे अंदर नानक गुर गोबिन्द एका जोती जाणे दस अवतार, पिता पूत गोद सुहाइंदा। हुक्मे अंदर खाणी बाणी कर पसार, जगत राणी आप वड्याइंदा। हुक्मे अंदर अठसठ तीर्थ ठंडा पाणी वेखे वेखणहार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणे रंग रंगाइंदा। हुक्मे अंदर सच वरतार, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हुक्मे अंदर सच विहार, हरि पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर सच आधार, एकँकारा

आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर सच उज्यार, आदि निरँजण आप कराइंदा। हुक्मे अंदर सच अखाड़, पुरख अबिनाशी आप लगाइंदा। हुक्मे अंदर साचा नाद, श्री भगवान आप सुहाइंदा। हुक्मे अंदर ब्रह्म ब्रह्माद अपार, ब्रह्म प्रभ वंड वंडाइंदा। हुक्मे अंदर करे लाड, भगत भगवन्त गोद बहाइंदा। हुक्मे अंदर लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणे घर वसाइंदा। हुक्मे अंदर सच निशाना देवे गाड, जुग चौकड़ी आप झुलाइंदा। हुक्मे अंदर खेल कराए मोहण माधव माध, मुकंद मनोहर लखमी नरायण नैण आपणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जगंतर धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा एको एक, इक्क इकल्ला आप जणाईआ। आदि जुगादी साची टेक, दो जहानां आप रखाईआ। जुग चौकड़ी आपे वेख, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपे जाणे आपणा लेख, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, घट घट आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नणा पए भाणा, हरि भाणे सद रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर दुआर मंगदे रहे दाना, दाता दानी वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सच संदेस नर नरेश बोध अगाध देदां रिहा तराना, त्रैगुण अतीता ठांडा सीत आप सुणाइंदा। पुरख अगम्मा मर्द मर्दाना श्री भगवाना, नौजवाना सच सिँघासण पुरख अबिनाशन सोभा पाइंदा। करे खेल साचा कान्हा, नूरो नूर नूर नुराना, आदि जुगादी इक्क तराना, त्रैभवण धनी आप सुहाइंदा। खेले खेल दो जहानां, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां वेख वखाना, धरत धवल आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी आप भुवाइंदा। हुक्मे अंदर हरि जू गेड़ा, नर नरायण आप रखाईआ। हुक्मे अंदर बन्ने बेड़ा, बण खेवट सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर मुकाए झेड़ा, जो घड़या भन्न वखाईआ। हुक्मे अंदर करे खुल्ला वेहड़ा, ख़ालक खलक वेखे खुदाईआ। हुक्मे अंदर एका रंग वखाए सञ्झ सवेरा, रैण दिवस ना कोए वड्याईआ। हुक्मे अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर ढाहया ढेरा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां लख चुरासी छेड़े छेड़ा, पंज तत्त आपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म गुर समझाईआ। साचा हुक्म सतिगुर धुर, धुर दरबारी आप जणाइंदा। लेखा चुक्के देवत सुर, सुरपति नज़र कोए ना आइंदा। पुरख अबिनाशी शाह सुल्ताना एका चढ़या साचे घौड़, अस्व आपणा आप दुड़ाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाला दीन दयाला दो जहानां जन भगतां आपे जाए बौहड़, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। हुक्मे अंदर लख चुरासी जीव जंत वेखे मिट्ठा कौड़ा, कौड़ा रीठा भन्न वखाइंदा । हुक्मे

अंदर एथे ओथे रिहा दौड़, दौड़नहारा दिस ना आइंदा। हुक्मे अंदर दरगाह साची सचखण्ड दुआरे लाए एका पौड़, नाम डण्डा हथ्थ फड़ाइंदा । हुक्मे अंदर लख चुरासी अग्गे पिच्छे देवे तोर, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। हुक्मे अंदर राग गीत, गीत गोबिन्द आप जणाईआ। हुक्मे अंदर जुग जुग रीत, जुग करता आप चलाईआ। हुक्मे अंदर हस्त कीट, निर्धन सरधन रंग वखाईआ। हुक्मे अंदर पतित पुनीत, पापी आप तराईआ। हुक्मे अंदर साजण मीत, बण सेवक सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ रंग वखाईआ। हुक्मे अंदर लाए प्रीत, प्रीतम प्यारा वेस वटाईआ। हुक्मे अंदर ठांडा सीत, अग्नी तत्त तत्त बुझाईआ। हुक्मे अंदर आप अनडीठ, अनडिठड़ी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप सुणाईआ। एका हुक्म हरि हरि, हरि जू आप सुणाइंदा। एका हुक्म दर दरवेश देवे दर दर, दर दर आपणी अलख जगाइंदा। एका हुक्म लख चुरासी वेखे फड़ फड़, घर घर आपणा फेरा पाइंदा। एका हुक्म गृह मन्दिर वेखे चढ़ चढ़, महल अटल सोभा पाइंदा। एका हुक्म आपणी विद्या आपे पढ़ पढ़, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। एका हुक्म सचखण्ड दुआरे खड़ खड़, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। एका हुक्म लख चुरासी लाए जड़् जड़्, बूटा लोकमात लहराइंदा। एका हुक्म लेखा जाणे नारी नर नर, नरायण भेव चुकाइंदा। त्रैगुण माया पंज तत्त अग्नी जाए सड़ सड़, अमृत सीतल धार वहाइंदा। एका हुक्म सीस जगदीस ताज धर धर, साचे तख्त सोभा पाइंदा। एका हुक्म निरभउ चुकाए भय डर डर, भयानक रूप नज़र ना आइंदा। एका हुक्म आवे जावे जम्मे मर मर, जन्म मरन आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग जुग हुक्म श्री भगवन्त, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। लख चुरासी बणाए बणत, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव ना रखाईआ। आपणा नाउँ जणाए साचा मंत, गुर अवतार कर पढ़ाईआ। घर मेला घर चेला घर गुरू घर वेखे नार कन्त, सच सुहाग इक्क हंढाईआ। हुक्मे अंदर रंग चढ़ाए आप बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। हुक्मे अंदर बोध ज्ञाना होवे पंडत, जीउ पिण्ड करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर होए खण्डत, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, आपणा हुक्म आप मनाईआ। धुर फ़रमाणा सारे रहे मन्न, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। पुरख अकाल धन्न धन्न, सच्चा ढोला गाया। आदि जुगादी जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माया। जुगा जुगन्तर बेड़ा बन्न्, लख चुरासी मात वखाया। एका राग सुणाए कन्न, बिनां तन्दी तन्द सितार वजाया।

एका नूर सूरज चन्न, किरन किरन किरन चमकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म सर्ब मनाया। हुक्मे अंदर हरि जू रख, जुग जुग करे पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कर प्रतख, पंज तत्त ज्ञान दृढ़ाईआ। निरगुण अंदर जोत रख, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। आत्म करे आपणे वस, परमात्म बन्धन पाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म अंदर जाए फस, चारों कुण्ट घेरा रिहा वखाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, लोकमात मात जणाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी भगत भगवान गाए जस, जस आप सुणाईआ। त्रैगुण माया ना सके डस्स, पंज तत्त ना कोए लड़ाईआ। मन वासना करे वस, मति बुध ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर रखे सर्ब लोकाईआ। हुक्मे अंदर बैठा लुक, आपणा मुख छुपाइंदा। हुक्मे अंदर बैठा छुप, नज़र किसे ना आइंदा। हुक्मे अंदर वेखे रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। हुक्मे अंदर खेल करे अबिनाशी अचुत्त, चेतन आपणी धार चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर आपे प्या उठ, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर भेजदा रिहा आपणे सुत, सति सतिवादी सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम आप सुहाए आपणी रुत्त, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणा हुक्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्त हुक्म वरते हरि निरँकार, सच संदेसा आप सुणाईआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, जोती जोत करे रुशनाईआ। शब्दी शब्द गुर पसार, गुर करता खेल कराईआ। लहिणा देणा पूरब सब दा दए निवार, बाकी कोए नज़र ना आईआ। करे खेल एका वार, एकँकारा वड वड्याईआ। बिन मात पित प्रगट होया विच संसार, साक सज्जण सैण ना कोए रखाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी साचा हुक्म करे वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सचखण्ड निवासा खेल तमाशा पुरख अबिनाशा आपे वेखे वेखणहार, दूजा संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, मुकामे हक़ हक़ कराइंदा। आदि जुगादी वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, महल अटल इक्क सुहाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, बिस्मिल आपणी धार वखाइंदा। सच संदेस धुर फ़रमाणा आलमीन बेऐब खुदा एका घल्ला, महिबान बीदो आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, लेखा जाणे इलाही अल्ला, हक़ हक़ आपणा रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा साचा राणा श्री भगवाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा देवे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। शब्दी सुत सुत बलवान, सूरबीर नाल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त होया कंगाल, जगत कंगाली झोली पाईआ। गुर अवतार करो संभाल,

पीर पैग़म्बर नाल मिलाईआ। मुरीद मुर्शद गुरू गुरसिख चेले लओ संभाल, जो बैठे हरि हरि ध्यान लगाईआ। नेत्र नैण हरि जू हरि हरि सब नूं लए वखाल, नौ खण्ड पृथमी एका वार फिराईआ। जीव जंत कलयुग माया झूठी छाया करे बेहाल, बहबल रोवे सर्ब लोकाईआ। ना कोई सुणे मुरीदां हाल, घर घर वज्जे झूठा ताल, माया ममता हउमे हंगता नाच रही नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप जगाईआ। हुक्मे अंदर गए जाग, हरि जागरत आप जगाइंदा। चार जुग फड़ाई तुहाढ्ढे हथ्थ वाग, रासां एका एक वखाइंदा। नेत्र खोल्हे रसना बोलो चार वरन लग्गा दाग़, दुरमति मैल ना कोए धुवाइंदा। घट घट अंदर दीपक जोती बुझया चिराग, नेत्र ज्ञान ना कोए खुल्हाइंदा। मनमुखता जीव हँस बणाया काग, जूठा झूठा विष्टा मुख रखाइंदा। किसे ना मिल्या हरि सुहाग, कन्त कन्तूहल ना कोए हंढाइंदा। कलयुग अन्त अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रसना जिह्वा गायण गाथ, आत्म अन्तर ना कोए वसाइंदा। सृष्टी भुल्ली ज़ात पात, ब्रह्म नज़र किसे ना आइंदा। वरन अठारां डुब्बे डूँग्घे खात, फड़ बाहों बाहर ना कोए कढाइंदा। सरगुण नाल जुड़या नात, निरगुण इष्ट ना कोए मनाइंदा। आपणी नेत्रीं वेखो किस नाल देवां साथ, सगला संग कवण निभाइंदा। कलयुग अन्तिम आया घाट, हरि जू बेड़ा आप रुढ़ाइंदा। जूठा झूठा चोला जाणा पाट, काया कफ़नी ना कोए हंढाइंदा। पीर पैग़म्बर वेखो आपणी ज़मात, अल्फ़ ये कवण पढ़ाइंदा। गुर अवतार लभ्भो साथ, गुरमुख बण संग कवण निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हुक्मे अंदर लोकमात पुरख अबिनाशी खोल्ह ताक, झाती एका वार पुवाइंदा। सारे मारन नेत्र झाकी, झलक आपणी ना किसे दिखाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, झूठी रैण अन्धेरा छाईआ। साचा मिले ना कोए साकी, मदिरा जाम पीवे सर्ब लोकाईआ। आत्म चाढ़े ना कोई घाटी, नौ दुआरे रोवण मारन धाहीआ। राए धर्म मंगे बाकी, चित्तर गुपत हिसाब वखाईआ। लाड़ी मौत लभ्भे साथी, लख चुरासी लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क मनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेख लोकमात, आपणा मुख छुपाया। जुग जुग दस्स के आए साची गाथ, अक्खर अक्खर जगत पढ़ाया। अन्त ना कोए सुहेला बिन पुरख समराथ, सगला संग ना कोए निभाया। गुर का शब्द ना रख्या किसे याद, मनमति आपणा राह चलाया। वेले अन्त ना पुछे कोई वात, गुर अवतार बैठे मुख भुवाया। पुरख अबिनाशी लख चुरासी तेरी दात, तेरी वंड वंडाया। लोकमात कट के आए वाट, तेरा नाउँ सुणाया। नानक कहे मैं लेखा चुक्कया जात पात, ऊँच नीच ना कोए वखाया। गोबिन्द कहे मैं ग़रीब निमाणयां बणाया सज्जण साक, झीवर छींबे नाई गोद बहाया। कलयुग जीव भुल्ले

९०१
११

भविख्त वाक्, पुरख अकाल ना किसे मनाया। माया ममता विके वाट, करता कीमत कोए ना पाया। अन्तिम डूँघे सुट्टे खात, लख चुरासी गेड़ दुवाया। जन भगतां पुछे आपे वात, कर किरपा मेल मिलाया। शब्द अगम्मी देवे दात, आपणा हुक्म आप सुणाया। मनमति रहे ना नार कमज़ात, चारे वरनां डेरा ढाहया। आत्म परमात्म सगला साथ, ऊँच नीच ना कोए रखाया। सारे मिल मिल गाओ एका गाथ, सोहँ अक्खर आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म आप वड्याआ। हुक्मे अंदर चुक्के लहिणा, लहणेदार नज़र कोए ना आईआ। हुक्मे अंदर वहण वहणा, रोड़े सर्ब लोकाईआ। हुक्मे अंदर ब्रह्मा विष्न शिव मन्नणा कहिणा, मन्न मन्न शुकर मनाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बरां वखाए आपणे नैणां, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। हुक्मे अंदर भाणा सहिणा पैणा, ना कोई सके सिर उठाईआ। हुक्मे अंदर राजा राणा कोई ना रहिणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। हुक्मे अंदर सूरबीर बलकारी ढैणा, बल आपणा ना कोए धराईआ। हुक्मे अंदर जीव जंत लाड़ी मौत खाए डैणां, घर घर आपणा फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर गुरमुख मिले सतिगुर चरनी बहणा, हरि सतिगुर देवे सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा हुक्म रखे हथ्थ, भेव ना किसे जणाइंदा। गुर अवतार गा गा गए गाथ, गाथा गा गा अन्त ना कोए कराइंदा। खेले खेल पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी धार रखाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल तमाश, बण नटुआ नाच नचाइंदा । जन भगतां होए दासी दास, भगवन सेवक सेव कमाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, गृह मन्दिर अंदर खोज खोजाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। कर्म कर्म दी बुझे प्यास, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला इक्को दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। हरिजन वेखे इक्को घर, घर बंक दए वड्याईआ। हरिजन सज्जण लए वर, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। हरिजन चुकाए भय डर, भउ अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला चाँईं चाँईंआ। हरिजन मेला हरि हरि रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। आत्म सेजा इक्क पलँघ, बसन बनवारी आप हंढाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क तरंग, त्रैगुण अतीता आप उडाइंदा। सति सतिवादी इक्क कमंद, चिल्ला गोशे आप चढ़ाइंदा। नर निरँकारा एका छन्द, सो पुरख निरँजण आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे परमानंद, परम पुरख मेल मिलाइंदा। परम पुरख मेल मिलंना, भेव कोए ना पाईआ। साचा घर इक्क वसंना, वसनीक होए सच्चा शहिनशाहीआ। एका राग सुणाए कन्ना, गीत गोबिन्द अलाईआ।

९०२
११

पंच विकारा देवे डंना, डंका एका नाम वजाईआ। कर वसेरा बिन छप्पर छन्ना, महल अटल इक्क बहाईआ। नज़री आए श्री भगवंना, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आपणा हुक्म हरि जू आपे मन्ना, मन्न मन्न आपणा सीस झुकाईआ। साचा हुक्म देवे जट्ट धन्ना, ग़रीब निमाणयां नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम बण के जट्ट जात पात दा मेटणा बन्ना, नाम हल्ल इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल दो जहान, कलयुग अन्त अन्त आपणा हुक्म आप वरताईआ।

★ १० चेत २०१६ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★

हुक्मे अंदर तख्त राज, राज योग हुक्मी खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर ब्रह्मण्ड काज, ब्रह्म ब्रह्माद हुक्मे अंदर फिराइंदा। हुक्मे अंदर लख चुरासी साजन साज, घट घट अंदर आपणा हुक्म वरताइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण रखे लाज, गुर अवतार हुक्मे अंदर आप फिराइंदा। हुक्मे अंदर शब्द अगम्मी सुणाए अवाज़, नाद धुन राग हुक्मे विच अलाइंदा। हुक्मे अंदर खेल तमाश, दो जहान श्री भगवान मंडल मण्डप रास हुक्मे विच पुआइंदा। हुक्मे अंदर सूरज चन्द प्रकाश, मंडल मण्डप दीप लोआं हुक्मे विच डगमगाइंदा। हुक्मे अंदर पृथ्मी आकाश, धरत धवल जल जल बिम्ब हुक्मे विच उपजाइंदा। हुक्मे अंदर आदि जुगादि करे बन्द खुलास, लख चुरासी जून अजून हुक्मे विच फिराइंदा। हुक्मे अंदर घड़े भन्ने करे नास, हुक्मे अंदर फुल फुलवाड़ी बाग बगीचा मात सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर तख्त ताज, तख्त निवासी आपणा हुक्म मनाइंदा। हुक्मे अंदर भूपत राज, राजन राज वेस वटाइंदा। हुक्मे अंदर चलाए जहाज, बण सेवक सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर रखे लाज, भगत भगवन्त दया कमाइंदा। हुक्मे अंदर रिहा भाज, जुग जुग आपणा भेख वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर राग नाद, हुक्मे अंदर धुन शनवाईआ। हुक्मे अंदर कन्त सुहाग, हुक्मे अंदर रंडेपा आप हंढाईआ। हुक्मे अंदर बण वैराग, वैरागी आपणा खेल कराईआ। हुक्मे अंदर कर त्याग, त्रैगुण अतीता बैठा मुख छुपाईआ। हुक्मे अंदर जाए जाग, आलस निंद्रा हुक्मे विच रखाईआ। हुक्मे अंदर पंज तत्त काया लाए भाग, गुर पीर अवतार प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर जोती नूर जगे चिराग, घट घट दीप करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर दुरमति मैल धोवे दाग़, हुक्मे अंदर ममता मोह मोह फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप वरताईआ। हुक्मे अंदर देवत सुर, सुरपति हुक्मी सेव

कमाइंदा। हुक्मे अंदर बल ज़ोर, बल बावन वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर अगम्मी डोर, शब्दी शब्दी तन्द बंधाइंदा। हुक्मे अंदर चढ़े घोड़, सच सिँघासण आसण लाइंदा। हुक्मे अंदर जाए बौहड़, लोकमात फेरा पाइंदा। हुक्मे अंदर लख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़, काया कवरी फोल फुलाइंदा। हुक्मे अंदर जन्म जन्म दी लग्गी बुझाए औड़, जन भगतां अमृत मेघ बरसाइंदा। हुक्मे अंदर दो जहानां रिहा दौड़, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। हुक्मे अंदर सचखण्ड दुआरे लाए एका पौड़, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। हुक्मे अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। हुक्मे अंदर राग गीत, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। हुक्मे अंदर खेल अनडीठ, अनडिठड़ी आप वखाईआ। हुक्मे अंदर आपणी रीत, पुरख अबिनाशी आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप मनाईआ। साचा हुक्म आपे मन्न, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। सरगुण कहे धन्न धन्न, रसना जिह्वा नाल मिलाइंदा। आपणा बेड़ा ल्या बन्ह, बण खेवट पार लगाइंदा। वसणहारा पंज तत्त तन, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। सरगुण हो के सरगुण देवे डंन, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। सरगुण नाद सरगुण कन्न, निरगुण आपणा नाम जणाइंदा। आपे घड़े लए भन्न, घड़न भन्नण आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। हुक्म मनाए श्री भगवान, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार सीस झुकान, निउँ निउँ सरन सरनाईआ। दाता दानी देवे दान, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। लोकमात सारे गाण, वाहवा वड्डी तेरी वड वड्याईआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण, एका वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे आपणा खेल वरताईआ। हुक्मे अंदर धुर फ़रमाणा, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। हुक्मे अंदर चारे खाणी गाए गाणा, गा गा अन्त ना कोए कराइंदा। हुक्मे अंदर राजा राणा, शाह सुल्तान सीस निवाइंदा। हुक्मे अंदर मन्नणा भाणा, हरि भाणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आपणा सीस झुकाइंदा। हुक्मे अंदर तख्त चढ़ आपणा बल धराईआ। हुक्मे अंदर सरनी पढ़, सीस सीस निवाईआ। हुक्मे अंदर अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। हुक्मे अंदर मंगे वर, दोए जोड़ झोली डाहीआ। हुक्मे अंदर आपे पढ़, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर मन्ने डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपणे उपर लगाईआ। आपणा हुक्म देवे आप, आपणी दया कमाइंदा। आपणे हुक्म अंदर जपे जाप, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। आपणे हुक्मे अंदर करे वड प्रताप, जोती शब्दी खेल कराइंदा। आपणे हुक्मे अंदर बणे माई बाप, पिता पूत गोद सुहाइंदा। आपणे हुक्मे अंदर करे पूजा पाठ, बिन रसना जिह्वा गुण गुण गाइंदा। आपणे हुक्मे अंदर करे

प्रकाश, अजूनी रहित नूरो नूर डगमगाइंदा। आपणे हुक्मे अंदर खेले खेल खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। आपणे हुक्मे अंदर पूरी करे आस, गुर अवतार आपणी झोली पाइंदा। आपणे हुक्मे अंदर घट घट अंदर रखे वास, लख चुरासी आपणा बन्धन पाइंदा। आपणे हुक्मे अंदर पवणी पवण चले स्वास, रसना जिह्वा नाल मिलाइंदा। आपणे हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण बणाए साक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपणे सिर रखाइंदा। आपणा हुक्म आपे दे, आपे सीस झुकाईआ। हुक्मे अंदर लाए नेंह, साचा संग आप निभाईआ। हुक्मे अंदर अमृत बरसे मेह, मेघला आपणी इच्छया लए प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर लख चुरासी करे थेह, जगत ठीकर भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म सिर आपणे आप चलाईआ। आपणे सिर आपणा हुक्म हरि जगदीस, आदि जुगादि लगाइंदा। जुग जुग आपणा पीसन पीस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात चक्की आप चलाइंदा। खाणी बाणी जगत हदीस, रसना जिह्वा आप सुणाइंदा। शाह सुल्तानां राज राजानां हुक्मे अंदर ताज पहनाए सीस, हुक्मे अंदर अन्तिम ख़ाकी ख़ाक मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपे मन्न, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। आपणा हुक्म मन्ने निरँकार, सद भाणे विच समाईआ। साचा हुक्म देवे सच्ची सरकार, शब्दी शब्द शब्द उठाईआ। धुर फ़रमाणा इक्क जैकार, विष्न ब्रह्मा शिव दए हिलाईआ। बोध अगाधी हो उज्यार, त्रै त्रै लेखा दए मुकाईआ। साची साखी विच संसार, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा बाकी अन्तिम वार, लख चुरासी दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हुक्मे अंदर गुर अवतार सेव कमाईआ। आपणा हुक्म देवे बलवाना, बल आपणा आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवाना, हर घट बैठा आसण लाईआ। जोधा सूरबीर मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप वखाईआ। आदि जुगादी साचा कान्हा, सति सरूपी वड वड्याईआ। निहकर्मी कलयुग कर्म रखाए आपणे भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। प्रगट हो श्री भगवाना, सब दा लेखा दए चुकाईआ। आपणे हथ्थ रखे आवण जाणा, जीवण मरन खेल कराईआ। हरिजन वेखे चतुर सुजाना, नाम ज्ञाना इक्क समझाईआ। भगत भगवन्त कर प्रधाना, धुर परवाना हथ्थ फड़ाईआ। हुक्मे अंदर सच निशाना, लोकमात मात झुलाईआ। हुक्मे अंदर भगत मकाना, साढे तिन्न तिन्न वंड वंडाईआ। छत्ती जुग लेखे लाणा, राग छतीसा नाल मिलाईआ। हुक्मे अंदर प्रगट हो श्री भगवाना, आपणा हुक्म आप चलाईआ। हुक्मे अंदर चार जुग चौकड़ी देदां रिहा ज्ञाना, आपणा नाउँ आप समझाईआ। हुक्मे अंदर कलयुग अन्तिम खेल करे महाना, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। आपणा हुक्म सुणाए आ, औदा जांदा नज़र

੬੦੫
੧੧

ना आइंदा। निहकलंक जामा पा, जन भगतां कलंक आप मिटाइंदा। रामा कृष्ना चरना हेठ रखा, चरन कँवल कँवल समझाइंदा। हुक्मे अंदर ईसा मूसा मंगण पनाह, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। नानक निरँकार तू ही तू ही रिहा गा, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। हुक्मे अंदर गोबिन्द पुरख अकाल रिहा ध्या, इक्को इक्को ओट वखाइंदा। हुक्मे अंदर खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराणी अंजील कुरानी लेखा गया लिखा, लिख लिख लेख आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर पीर पैग़म्बर सेवादार बणाए आप खुदा, ख़ालक ख़लक सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप मनाइंदा। धुर फ़रमाणा मन्नणा पैणा, हरि जू हरि हरि आप सुणाईआ। पुरख अबिनाशी साचा कहिणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चार जुग दा देणा देणा, लहिणा अगला आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे नेत्र वेखो नैणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सूरबीर बलवाना लोकमात अन्तिम ढहणा, ना कोई सके बल वखाईआ। लाड़ी मौत खाए डैणां, घर घर आपणा डौरू वाहीआ। चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी भगत भगवन्त इक्को रहिणा, दूसर मिले ना कोए वड्याईआ। भाणा सब नूं सहिणा पैणा, पुरख अबिनाशी हुक्म वरताईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सब ने कहिणा, जै जै जैकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा हुक्म सरगुण रिहा मनाईआ।

★ १० चेत २०१६ बिक्रमी दारा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★

हुक्मे अंदर गुण भरपूर, गुणवन्ता खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण नूर, नूर नुराना डगमगाइंदा। हुक्मे अंदर लेखा जाणे नेड़े दूर, दो जहानां फेरा पाइंदा। हुक्मे अंदर प्रगट होए ज़ाहर ज़हूर, ज़ाहरा आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि हरि नाउँ, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। लेखा जाणे अगम्म अथाहो, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। सच संदेसा पिता माउ, पूत सपूता आप समझाईआ। भगत भगवन्त जुग जुग उठाए फड़ फड़ बांहों, आत्म ज्ञान ध्यान लगाईआ। सरन सरनाई देवे सच्चा थाउँ, थान थनंतर इक्क वखाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउं, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आपणा नाम समझाईआ। साचा नाम हरि निरँकार, जुग जुग आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सार, वेस अनेक वटाइंदा। सेवक सेवा गुर अवतार, लोकमात बूझ बुझाइंदा। पंज तत्त काया हो उज्यार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यार, काया मन्दिर आप जगाइंदा। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। अनहद

शब्द सच्ची धुन्कार, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठार, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। स्वच्छ सरूपी दरस अपार, आत्म सेजा आप वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। हुक्मे अंदर सर्ब संसार, लख चुरासी बन्धन पाइंदा। हुक्मे अंदर वेद चार, ब्रह्मा वेता मुख सलाहइंदा। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत दए अधार, गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर अञ्जील कुरान, काया कुरा वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर गुर गुर बाणी बोल जैकार, जै जैकार नाअरा लाइंदा। हुक्मे अंदर दो जहान वेखे अखाड़, लोआं पुरीआं नाच नचाइंदा। हुक्मे अंदर त्रैगुण माया अग्नी हाढ़, तत्तव तत्त तत्त जलाइंदा। हुक्मे अंदर सतिगुर गुर करे प्यार, गुर शब्दी बूझ बुझाइंदा। हुक्मे अंन्दर भगत भगवन्त लए उभार, दीनन आपणी दया कमाइंदा। हुक्मे अंदर साचे सन्तां सुरती शब्दी शब्दी सुरत लए उठाल, आलस निंद्रा आपे लाहइंदा। गुरमुखां चले नाल नाल, जुग जुग विछड़ कदे ना जाइंदा। गुरसिखां मार्ग दस्से सुखाल, साची रीती आप चलाइंदा। हुक्मे अंदर काल महांकाल, जुग चौकड़ी सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर चित्रगुप्त आपणा लेखा रिहा वखाल, लिख लिख लेख सर्ब जणाइंदा। हुक्मे अंदर राए धर्म अठ दस वखाए जगत धर्मसाल, अठारां दस मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गेड़ा गेड़े विच वखाइंदा। जुग जुग गेड़ा हरि निरँकार, जुग करता आप रखाईआ। नौ नौ चार उतरे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गए हार, हरि का अन्त कोए ना पाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए पुकार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जुग जुग सिख्या दे विच संसार, साची सिख्या इक्क वखाईआ। कागद कलम नाल प्यार, लिख लिख शाही लेख बणाईआ। निरगुण सरगुण कर पसार, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। रसना जिह्वा दे अधार, बाणी बाणी रूप वटाईआ। सिफ्त सलाही सिफ्त कराए अगम्म अपार, सेवक साची सेव लगाईआ। पहलों देवे दरस दीदार, दूजे आपणा राह चलाईआ। तीजे देवे नैण उग्घाड़, चौथे चौथे पद वड्याईआ। पंचम नाद शब्द धुन्कार, छेवें छप्पर छन्न छुहाईआ। सत्तवें सति सतिवादी कर प्यार, सति पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। नज़री आए इक्क अकाल अजूनी रहित बेमिसाल, जोती जाता डगमगाईआ। जुग चौकड़ी हल्ल करे आप सवाल, दूसर संग ना कोए रखाईआ। भगत भगवन्त आपे भाल, लख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। दीपक संग दीपक बाल, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, घर सतिगुर वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाईआ। दया कमा वजाए

डंका, एका नामा नाम जणाइंदा। दूई द्वैती मेटे शंका, शरअ शरीअत ना कोए वखाइंदा। आपे फेरे मन का मणका, मन वासना ना कोए रखाइंदा। लेखा जाणे जीव जन का, घट एका रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप उठाइंदा। साचे भगतां देवे माण, निमाणयां गले लगाईआ। पूरब लहिणा कर्म पछाण, नेत्र नैणां दए दरसाईआ। हरि का लेखा गा ना सके ज़बान, बेज़बां करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाईआ। हरिजन सहायक होवे आप, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मन वासना मेटे पाप, अपराधी गले लगाइंदा। रसना जिह्वा जपाए जाप, बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। अंदर वड़ वड़ करे पाठ, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। घर सरोवर मारे ठाठ, अठसठ तीर्थ मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, आपणी दया कमाईआ। मन वासना करे खुआर, मति मतवाली रहिण ना पाईआ। बुध बिबेकी एका वार, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। त्रैगुण माया सेक ना लाए विच संसार, अग्नी तत्त ना कोए जणाईआ। नाम अमोलक वस्त दए भण्डार, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। गुरसिख मंगण ना जाए किसे दुआर, जिस सतिगुर पूरा मिल्या सच्चा माहीआ। एथे ओथे दो जहानां पैज़ दए स्वार, समरथ पुरख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां आप मिलाईआ। साचे सन्तां मेला जग, जीवण जुगत आप जणाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ कग्ग, कागों हँस उडाइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाइंदा। आत्म सेजा बहे सज, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार जाए भज्ज, नाम खण्डा इक्क वखाइंदा। जगत तृष्ना मन वासना जाए भज्ज, अभिमान ना कोए वधाइंदा। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा गुरसिख पड़दा देवे कज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। घर मन्दिर सच नगारा जावे वज्ज, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। अमृत प्याए प्याला रज, निझर झिरना आप झिराइंदा। सुरत सवाणी शब्द गुरू कराए हज्ज, घर मेला मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख सच रंगाए रंग, रंगणहार करतारा। आत्म सेजा वेख पलँघ, मेल मिलाए नार कन्त भतारा। अठ्ठे पहर इक्क मृदंग, दिवस रैण वज्जे नगारा। करे खेल सूरा सरबंग, पुरख अबिनाशी एकँकारा। सुखमन टेढी बंक पार लँघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम सहारा। सच सहारा नाम ओट, एका एक जणाईआ। भाग लगाए काया कोट, कंचनगढ़ रूप वटाईआ। निर्मल नूर जगाए जोत, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। सतिगुर पूरा इक्को बहुत, गुर गुर घर घर मंगण कोए ना जाईआ। हरिजन आप उठाए आलणयों डिगे बोट, फड़ आपणी

गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेला चाँईं चाँईंआ। गुरसिख मेला आत्म घर, परमात्म दया कमाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, नर नरयण वेस वटाइंदा। सुरत सवाणी लए फड़, शब्दी बन्धन आपे पाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। पंच विकारा जाए मर, मर जीवत आपणा भेव चुकाइंदा। इक्को नज़री आए हरि, दूजा इष्ट ना कोए वखाइंदा। जिस जन उपर सतिगुर पूरा किरपा दए कर, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। जरम कर्म मरन डरन दुःख जाए हर, आत्म सुख इक्क वखाइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले बांहों फड़, त्रैभवण धनी पार कराइंदा। थिर घर साचे आपे वड़, शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। सचखण्ड दुआर पौड़े चढ़, चढ़ चढ़ खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग साचे भगत आप तराइंदा। जुग जुग तारे हरि जू भगत, भगतन आपणी दया कमाईआ। लेखे लाए बूंद रक्त, पंज तत्त दए वड्याईआ। निरगुण निराकार आप जणाए आपणी शक्ति, शरअ शरीअत ना कोए रखाईआ। आपणे हथ्थ रखाए वेला वक्त, थित वार ना कोए समझाईआ। आपे घड़े आपे भन्ने आप बणाए बणत, गुरमुख सज्जण आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, श्री भगवन्त जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। गुरसिख गुर गुर गढ़ तोड़े हउमे हंगत, मेल मिलाए साची संगत, संगत हरि हरि आपणा डेरा लाईआ। नाता तोड़े भुख नंगत, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। गुरसिख सच्चा बोध अगाधा होए पंडत, जगत विद्या पढ़न किते ना जाईआ। नाता तुट्टे जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज ना कोए फिराईआ। लख चुरासी होए खण्डत, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। मानस जन्म ना होए भंगत, सतिगुर आपणी गोद बहाईआ। प्रभ अग्गे आदि जुगादि जुग जुग सारे करदे मिन्नत, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। गुरसिख विरला करके आए हिम्मत, जगत दुआरा पन्ध मुकाईआ। सतिगुर पूरा चौदां लोकां बाहर वखाए आपणी सम्मत, चौदां तबक चरनां हेठ दबाईआ। पुरख अबिनाशी हरि भगतां संग सदा होए परफुल्लत, फुल फुलवाड़ी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, आदि जुगादि आप रहे अडोलत, गुरसिख अडोल आप रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे अनबोलत, अगला बोलया आपणे लेखे विच छुपाईआ।

★ १० चेत २०१६ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ★

मनी सिँघ आया बुड्ढा नड्ढा बाबा, बिहबल रिहा कुरलाईआ। मैं ना जाणा तेरा केडा वड्डा छाबा, जुग चौकड़ी गुर

६०६
११

अवतार विच तुलाईआ। मैं होका देदां रिहा नेड़े नेड़े माझा मालवा दुआबा, तूं ब्रह्मण्डां खण्डां विच रिहा समाईआ। मैं रसना जिह्वा वजौदा रिहा तेरा वाजा, तेरा अनरागी राग हथ्थ कोए ना आईआ। मैं लत्तां पैरां नाल फिरया भाजा, भज्ज भज्ज तेरा पन्ध मुकाईआ। मैं वेख्या तूं मेरा राजा, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त ना पारावार, तेरे अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। तेरे अग्गे की चतुराई, चतुर्भुज भेव ना आया। लिख लिख थक्की मेरी कलम शाही, शहिनशाह तेरा राग ना किसे मुकाया। मैं दे दे गया दुहाई, दोहरा इक्को इक्क सुणाया। तूं पर्दा रिहा पाई, तेरा पर्दा ना कोए उठाया। तेरे हथ्थ तेरी वड्याई, मेरा कीता कुछ ना होया राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त ना पारावर, बेअन्त तेरी वड्याआ। बेअन्त वड्याई मेरे दातार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरे दर मेरा विहार, मेरा घर तोहे सुहाईआ। तूं साहिब कन्त मैं कोझी कमली नार, बिन तेरे रंग बसन्त ना कोए चढ़ाईआ। मैं थक्की मांदी विच संसार, बांदी तेरी सेव कमाईआ। चारों कुण्ट फिरा गांदी, तेरा ढोला साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेअन्त तेरा भेव कोए ना पाईआ। तेरा भेव ना जाणे कोए, भेव अभेद रखाया। पहलों आपणे सिर तों लाहे चन्दोए, पड़दा सब दा दए चुकाया। बिन सतिगुर मिले ना किसे ढोए, खाली मन्दिर रहे कुरलाया। बिन सतिगुर चरन फूलनहार किसे गल ना सोहे, तन माटी ख़ाकी कम्म किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मनी सिँघ देवे वर, तेरा प्रेम प्यार आपणे चरनां विच रखाया। बिन चरनां ना कोए प्यार, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। बिन चरनां ना कोए आधार, जगत आधार ना कोए कराईआ। बिन चरनां ना कोए वपार, दो जहान ना कोए वड्याईआ। बिन चरनां ना कोए सिंगार, जोबन मात ना कोए हंढाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा करके सच विहार, भेव ना किसे जणाईआ। फूलन माला गुंद गुंद हार, गुरसिखां हथ्थ फड़ाईआ। अछल छल करके अक्खां साम्हणे आप निरँकार, वस्त अमानत इक्क रखाईआ। सोलां मग्घर बीस दस सिँघ मनजीता कर त्यार, सदा अतीता इक्क वखाईआ। किसे भेव ना आया की करके गया बण ठग्ग चोर यार, चोरी करदा नज़र किसे ना आईआ। खाली करके गया भाडे घड़े घुम्यार, काची माटी ठीकर कम्म किसे ना आईआ। एथो चुक्या ओथे रख्या आपणा कीता सच विहार, नानक पूरी आस कराईआ। हरि गोबिन्द खिच्च के गया लकार, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। शब्द विचोला बणे आप निरँकार, तोल तोले सच्चा माहीआ। पड़दा ओहला रखे विच संसार, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मनी सिँघ तेरी लज्जया पत्त आप रखाईआ। मनी सिँघ

वेख मार ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। तेरे संगी साथी भगवन्त कर परवान, आपणे रंग रंगाइंदा। दरगाह साची दा सच निशान, लोकमात आप चढ़ाइंदा। सचखण्ड दा सच मकान, भगत दुआर आप बणाइंदा। अंदर बाहर बैठ भगवान, बण सेवक सेव कमाइंदा। तेरा लेखा कर प्रधान, लेखे आपणे विच रखाइंदा। शब्दी मेला तेरा करे आण, पंज तत्त ना कोए वड्याइंदा। चरन कँवल दे के जाए इक्क ध्यान, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। अग्गे दूजा गुरू ना रहे कोई विच जहान, गुरुआं पीरां सद सद पिछला लेखा सर्ब मुकाइंदा। फेर आ के देवे तैनूं माण, आपणा माण वधाइंदा। बिन नेत्रां कर पछाण, बिनां अक्खीआं रंग वखाइंदा। बिन रसना बोल फ़रमाण, बिन दन्दां मुख सलाहइंदा। पंचम जेठ चन्द चन्दोआं देणा ताण, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। बिन हरि चरन किसे मिले ना कोई माण, अभिमान कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आपणे विच रखाइंदा।

★ १० चेत २०१६ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड उसमां ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, आदि जुगादि समाइंदा। हरि पुरख निरँजण हुक्मरान, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। एकँकारा वड बलवान, शाहो भूप आपणा बल आप धराइंदा। आदि निरँजण खेल महान, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता गुण निधान, भेव अभेदा भेव रखाइंदा। श्री भगवान सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे करतारा, अनुभव आपणी धार चलाईआ । आपणी इच्छया भर भण्डारा, साची वस्त आप वरताईआ। आपणा मन्दिर खोल्ह दुआरा, सचखण्ड साचा आप बणाईआ। छप्पर छन्न ना चार दीवारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सच सिँघासण अगम्म अपारा, अलख अगोचर आप बणाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, राज राजान सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, ऊँच अगम्म भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, निरगुण निरवैर निरँकार अजूनी रहित रूप वटाइंदा। जोती जोत प्रकाश प्रकाश आपे बला, नूर नूर नूर समाइंदा। सच संदेस नर नरेश एका घल्ला, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। आसण सिँघासण पुरख अबिनाशन एका मल्ला, पावा चूल ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर

सोभावन्त, सतिगुर पूरा आप सुहाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, निरगुण आपणी धार चलाईआ। पुरख अकाल महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए रखाईआ। आप बणाए आपणी बणत, घाड़त साची लए घड़ाईआ। रूप धराय नारी कन्त, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा साचा माण, सतिगुर पूरा आप रखाइंदा। कर खेल श्री भगवान, आपणी खेल आप जणाइंदा। दाता दानी हो मेहरवान, वस्त आपणी झोली पाइंदा। जोती जाता वड बलवान, बल आपणा आप रखाइंदा। दाई दाया खेल महान, सेवक सेव सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा साचा घर, हरि जू हरि हरि आप उपाइंदा। निरगुण निरवैर अंदर वड़, दर घर साचा आप सुहाइंदा। साचे तख्त आपे चढ़, तख्त निवासी आसण लाइंदा। सीस जगदीस ताज धर, रूप अनूप वटाइंदा। हुक्मी हाकम आपे कर, निउँ निउँ सीस आप झुकाइंदा। दर दरवेश आपे बण, आपणी अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा एका एक, आदि पुरख बणाईआ। एकँकारा आपे रखे आपणी टेक, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। आपणे नेत्र आपा लए पेख, पेखणहारा आप हो आईआ। ना कोई लेखा ना कोई लेख, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। आपे नर आप नरेश, नर नरायण बेपरवाहीआ। वसणहारा साचे देस, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची बणत बणाईआ। बणाए बणत आप बनवारी, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। निर्मल दीआ जोत कर उज्यारी, नूरो नूर डगमगाइंदा। करे खेल अगम्म अपारी, बेपरवाह आपणा राह चलाइंदा। महल अटल उच्च मनारी, सोभावन्त आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दुआरा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप वड्याइंदा। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, हरि आपे वेख वखाइंदा। आपे जाणे पार हद्द, किनारा नज़र किसे ना आइंदा। आपे तख्त बहे सज, साचा तख्त आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे हरि निरँकारा आपणा मता आप पकाइंदा। साचा मता हरि निंरकार, सचखण्ड निवासी आप पकाईआ। इक्क इकल्ला बण गंवार, बैठा आसण लाईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची वस्त आप वरताईआ। निरगुण निरगुण करे प्यार, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण नारी कन्त भतार, निरगुण सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। निरगुण वसे सचखण्ड सच्चे घर बार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल करनेहारा, करता पुरख दया कमाइंदा। आपणे अंदर

बण वणजारा, साचा हट्ट इक्क चलाइंदा। साची वस्त वस्त हरि थारा, निरगुण आपणी आप टिकाइंदा। निरगुण मेला निरगुण चेला निरगुण खेल एकँकारा, अकल कल आपणी आप प्रगटाइंदा। निरगुण वस्त निरगुण भण्डारा, निरगुण होए देवणहारा, निरगुण झोली अग्गे डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड तमाशा पुरख अबिनाशा निरगुण निरगुण आप कराइंदा। निरगुण खेल पुरख अगम्म, भेव कोए ना पाइंदा। करे वेस श्री भगवन, रूप अनूप आप वटाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वसाइंदा। सचखण्ड दुआरा जाए वस, सो पुरख निरँजण आप वसाईआ। हरि पुरख निरँजण पूरी करे आस, एकँकार वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि निरँजण कर प्रकाश, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता हो हो दास, सेवक बण बण सेव कमाईआ। श्री भगवान वसे साथ, सगला संग आप निभाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे खेल तमाश, खेलणहारा आप हो जाईआ। साचे मन्दिर आपणी रास, निरगुण निरगुण आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड वसे आप निरँकारा, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादी हो उज्यारा, रूप अनूप आप वटाइंदा। अलख अगोचर बेपरवाह जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यारा, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। दाई दाया खेल न्यारा, करे कराए करनेहारा, करता पुरख पुरख कराइंदा। जननी जन बण सच्ची सरकारा, पूत सपूता करे प्यारा, पिता पूत खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अबिनाशी अचुत्त, शब्दी जाए साचा सुत, साची गोद आप बहाइंदा। शब्दी सुत गोद सहारा, सतिगुर पूरा आप रखाईआ। निरगुण निरगुण करे प्यारा, निरगुण पिता निरगुण माईआ। करे कराए सच विहारा, बिवहारी वड वड्याईआ। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, आपणी सेवा आप कमाईआ। प्रकाश विच्चों प्रकाश दे आधारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत दए वड्याईआ। शब्दी सुत हरि छोटा बाला, पुरख अबिनाशी आप प्रगटाइंदा। थिर घर बहाए सच्ची धर्मसाला, चार दीवार ना कोए रखाइंदा। आदि पुरख चली अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पाइंदा। सदा सुहेला वसे नाला, विछड़ कदे ना जाइंदा। साचा मार्ग दस्स सुखाला, भेव अभेद खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप उपजाइंदा। शब्दी सुत कर प्यार, हरि सतिगुर खेल कराईआ। आपणी इच्छया आपे धार, कर किरपा मेल मिलाईआ। जननी जन अगम्म अपार, दाई दाया सेव कमाईआ। थिर घर दरबारे आपे वाड़, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादि करे प्रितपाल, प्रितपालक वड गुसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, साचे सुत सुत समझाईआ। साचे सुत देवे ज्ञान, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। साचे सुत देवे ध्यान, हरि जू एका ध्यान जणाइंदा। साचे सुत देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साचे सुत देवे निशान, सति निशाना इक्क वखाइंदा। साचे सुत देवे पहचान, स्वच्छ सरूपी रूप आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप उठाइंदा। शब्दी सुत जाए उठ, सचखण्ड निवासी आप उठाईआ। आदि पुरख अबिनाशी करता जाए तुठ्ठ, अजूनी रहित होए सहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सुहाए रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वज्जे सच वधाईआ। थिर घर वज्जे साचा वाजा, वजावणहारा आप वजाइंदा। करे खेल ग़रीब निवाज़ा, भेव कोए ना पाइंदा। भूपत भूप राजन राजा, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा पड़दा आप उठाइंदा। पूत सपूता साजण साजा, बाल अञ्याणा आप जगाइंदा। आपे रच रच आपणा काजा, आपे ख़ुशी वखाइंदा। आपे सचखण्ड निवासी थिर घर फिरे भाजा, आपणी अलख आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा आप खुल्हाइंदा। थिर घर साचा गया खुल्ह, हरि जू आप खुल्हाया। आप उपाई आपणी कुल, शब्दी वेस वटाया। आपे खेल करे अतुल, तोल सके ना कोए राया। आपे होए सदा अभुल्ल, भुल्ल कदे ना जाया। आपे होए सदा अडुल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहाया। सचखण्ड सुहाए आप निरँकारा, निरगुण आपणा नूर धराईआ। थिर घर खोल्ह आप किवाड़ा, शब्दी सुत दए वड्याईआ। हुक्मी हुक्म सति जैकारा, सति सतिवादी आप सुणाईआ। मेरा तेरा इक्क सहारा, एका घर वज्जे वधाईआ। तेरा मेरा एका नाअरा, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। तेरा मेरा इक्क पसारा, पसर पसारी रिहा समझाईआ। तेरा मेरा इक्क अखाड़ा, निरगुण निरगुण नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। देवे माण पुरख अबिनाशा, आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी पाए साची रासा, थिर घर आपणा खेल कराइंदा। तेरे अन्तर करे वासा, आपणा मेल मिलाइंदा। कर कर मेला शाहो शाबाशा, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। सुत दुलारे तेरी करे पूरी आसा, निरासा रूप ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा साचा गीत, बोध अगाधी हरि जणाइंदा। शब्दी सुत तेरी रीत, पुरख अबिनाशी आप चलाइंदा। चरन सरन सच प्रीत, प्रीतीवान आप बन्नाइंदा। खेल कराए इक्क अनडीठ, नेत्र नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी सिख्या आप समझाइंदा। आदि पुरख देवे सिख्या, लेखा आपणा आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी पाए भिच्छया,

भिखक झोली आप भराइंदा। आप वंडाए साचा हिस्सया, हिस्सा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द सुत समझाइंदा। शब्दी सुत दोए जोड़ कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं साहिब सुल्तान तेरा अन्त ना पारावार, हउँ बालक भेव ना आइंदा। कर किरपा चरन कँवल दे प्यार, एका तेरी ओट रखाइंदा। तेरे हुक्मे अंदर करां कार, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। तूं साहिब सुल्तान परवरदिगार, बेऐब आप अख्वाइंदा। मुकामे हक़ तेरा पसार, नूर नूराना डगमगाइंदा। मैं बरदा चाकर सेवादार, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा देणी कर, तेरे अग्गे सीस झुकाइंदा। तेरे चरनां सीस अग्गे रख, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, मैं चलां तुध रज़ाईआ। तूं मेरा नूर कीता प्रतख, बण मेरा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा देणी कर, इक्को तेरी ओट तकाईआ। इक्को तेरी आस, मेरे हरि परवरदिगारा। सदा वसां तेरे पास, मोहे भाए तेरा दुआरा। तेरे दरस बुझे प्यास, तेरा नूर ठंडा ठारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, थिर घर वसदा रहे दुआरा। थिर घर मेरा वसे दुआर, शब्दी मंग मंगाइंदा। तेरे चरन धूढ़ी मंगा छार, मस्तक टिक्का इक्क लगाइंदा। तेरा नाउँ गीत सुहागी गावा वार, नाउँ निरँकारा इक्क सलाहइंदा। सचखण्ड वेखां तेरा दीदार, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। तूं साहिब सच्चा बख्शणहार, तेरा भेव कोए ना आइंदा। मैं बाल अञ्याणा सुत दुलार, तेरे चरनां सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए भाइंदा। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी दया कमाईआ। तेरी सदा सदा करां प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। तूं उपज्या मेरा लाल, लालण मेरी गोद सुहाईआ। मैं मार्ग दस्सां इक्क सुखाल, हरिबर तेरा नाउँ वड्याईआ। थिर घर वसदी रहे तेरी धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाईआ। दीपक दीआ दिता बाल, ना सके कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका गुण समझाईआ। एका गुण पुरख अकाला, आदि आदि जणाया। तेरा मार्ग दस्सां सुखाला, आपणा भेव खुल्हाया। तेरी गोद बहावां लाला, विष्न ब्रह्मा शिव नाउँ धराया। करां खेल इक्क निराला, एकँकारा रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत सुत वड्याआ। शब्दी सुत सुण बाल निधान, हरि जू आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दिता दान, त्रै त्रै तेरी झोली पाइंदा। त्रै त्रै करन इक्क ध्यान, एका राह वखाइंदा। करे खेल श्री भगवान, तेरी महिमा आप जणाइंदा। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंचम मेला मेल मिलाइंदा। शब्दी शब्द धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क अल्हाइंदा। विष्नूं विश्व लए पछाण, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वंड

वंडाइंदा। शंकर करे इक्क कल्याण, सुन्न अगम्म धूआँधार फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगाइंदा। साची सेवा सुत दुलारे, हरि जू हरि हरि आप लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारे, त्रै पंज मेल समझाईआ। लख चुरासी भाण्डे घड़ बण ठठयारे, घट घट आपणा रूप समाईआ। चारे खाणी कर वणजारे, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रंग रंगाईआ। चारे बाणी बोल जैकारे, चारों कुण्ट कुण्ट सुणाईआ। चारों जुग कर पनिहारे, लोकमात सेव कमाईआ। चार वरन दे सहारे, चार यारी गंढु पुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा आदि पुरख एका वार सुणाईआ। आदि पुरख सच संदेसा, एका वार जणाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोआं वसा देसा, गगन मंडल तेरा राग सुणाइंदा। खाणी बाणी बण नरेशा, नर नरायण भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क समझाइंदा। साची सेवा जाणा लग्ग, हरि हरि आप जणाइंदा। हुक्म वरताए सूरा सरबग, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। लख चुरासी नाता तोड़ जग, जागरत जोत जोत मिलाइंदा। त्रैगुण माया अग्नी अग्ग, तत्तव तत्त तत्त प्रगटाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर बहे सज, नव नौ खेल आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क अलाइंदा। सच संदेसा एका वार, हरि हरि आख सुणाया। लख चुरासी कर त्यार, धरत धवल दए बहाया। जल बिम्ब पाए सार, नीर सरोवर आपणा भेस वटाया। रवि ससि कर उज्यार, किरन किरन नाल चमकाया। ज़िमीं असमान वेख अखाड़, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगाया। साची सेवा कर परवान, हरि शब्द ख़ुशी मनाइंदा। तेरा झुलावां सच निशान, दो जहानां आप वखाइंदा। लख चुरासी जीव जहान, जीवण जुगत जुगत जणाइंदा। खाणी बाणी हो प्रधान, लोकमात वंड वंडाइंदा। आपणा भेव दस्स भगवान, कवण दुआरे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। तेरे अग्गे मंगां मंग, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। जुग चौकड़ी वंडां वंड, लख चुरासी खेल महाना। गीत सुहागी सुणावां छन्द, अनरागी राग तराना। लेखा जाणा बत्ती दन्द, रसना जिह्वा नाल ज़बाना। कर प्रकाश वेखां सूरज चन्द, धरत धवल आकाश ज़िमीं असमाना। लख चुरासी पावां बन्द, बन्दीखाना इक्क वखाना। दो जहानां रखा कंध, करां खेल जगत महाना। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड आपे वंड, हुक्मी हुक्म दयां परवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे सीस झुकाना। दर तेरे झुकया सीस, मेरे सतिगुर सच्चे मीता। एका दे सच असीस, मैं चलावां तेरी रीता। इक्क पढ़ावां धुर हदीस, इक्क जपावां तेरा नामा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान हो मेहरवाना। मेहरवान दयाल प्रभ मीता, आपणी दया कमाइंदा। शब्द सुत तेरी साची रीता, जुग चौकड़ी आप चलाइंदा। आपणा नाम सुणाए अनडीठा, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप समझाइंदा। साची धार सुण कन्न ला, हरि जू हरि जणाईआ। जुग जुग बणां मात मलाह, रूप अनूप वटाईआ। गुर अवतार नाउँ धरा, जीव जंत सेव कमाईआ। नाउँ निधाना आपे गा, लख चुरासी करां पढ़ाईआ। तेरा मार्ग देवा ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। रहिम कमाए हरि रहिमान, रहिमत आपणी आप जणाइंदा। तेरा खेल दो जहान, हरि शब्दी आप वखाइंदा। लोकमात रखाए तेरा माण, आपणा माण ना कोए जणाइंदा। गुर गुर रूप हो प्रधान, तेरा नाद वजाइंदा। ब्रह्मा वेता देवे इक्क ज्ञान, नेत्र नैण नैण इक्क खुल्हाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। चारे वेदां कर वख्यान, चारे जुग सोभा पाइंदा। शास्त्र सिमरत दे ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव प्राणी दे प्राण, पवण सुआसी खेल महान, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। निरगुण सरगुण शब्दी धार, हरि नामे डंक वजाईआ। लिख लिख लेखा जुग चार, चार वेद करे पढ़ाईआ । शास्त्र सिमरत कर त्यार, पुराण अठारां नाल

९१७

११

वड्याईआ। गीता ज्ञान कर उधार, अठ दस बन्धन पाईआ। अञ्जील कुरान खोल्ह किवाड़, तीस बतीसा ढोला गाईआ। खाणी बाणी कर पसार, पसर पसारी वेख वखाईआ। लख चुरासी करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म दए सहार, ईश जीव करे कुड़माईआ। लेखा जाणे जुग जुग चार, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। नव नौ खेल वेखे अखाड़, चार चार आपणा नाच नचाईआ। नव नौ चार दए आधार, जगत अधारी एका माहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बण बण सेवादार, चाकर आपणी सेव कमाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी आवे जावे वारो वार, रूप अनूप आप वटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना पायण सार, लिख लिख लेख ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर ऊँची कूक कूक करन पुकार, सोहला ढोला इक्क सुणाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। तख्त निवासी एकँकार, साचे तख्त बैठा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर खेल वखाईआ। शब्दी गुर एको दाता, जुग जुग वेस वटाइंदा। लख चुरासी सुणाए गाथा, बोध अगाध आप प्रगटाइंदा। आप चलाए आपणा साका, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्बकल आपे समराथा, समरथ पुरख वेस वटाइंदा। समरथ पुरख हरि खेल अपारा, जुग जुग आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे पार किनारा,

थिर कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे पीर पैग़म्बर गुर अवतारा, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। भगत भगवन्त दे सहारा, भगवन आपणी बूझ बुझाईआ। साचे सन्तां खोल्ह किवाड़ा, आत्म ताकी एका लाहीआ। गुरमुखां देवे दरस अपारा, दरसी आपणी दरस दरसाईआ। गरसिखां देवे चरन सहारा, चरन ओट सच्ची सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग औदा रिहा वारो वारा, वेस अनेका रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी कर कर पार किनारा, हरि जू आपणी ख़ुशी मनाईआ। आपे घड़े आपे भन्ने आपे होए वेखणहारा, आपे बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। कार कराए करता पुरख, करनहार अख्वाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए जणाइंदा। लख चुरासी करे परख, हरिजन साचे आप उठाइंदा। बिन नेत्र देवे दरस, बिन अक्खों अक्ख खुल्हाइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, सांतक सति सति वरताइंदा। सति सतिवादी इक्क वखाए अदरश, इष्ट आपणा आप जणाइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श, दो जहानां फेरी पाइंदा। जुग जुग तारे पिछला कर्ज, कर्ज़ा कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत इक्क समझाइंदा। शब्दी सुत सुण कन्न ला, आदि पुरख सुणाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग निरगुण सरगुण बणे मलाह, बेड़ा लोकमात चलाया। शब्दी शब्द दए सलाह, सलाहकार आप हो जाया। चार वेद शास्त्र सिमरत पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान आप सुणा, राग रागनी राग अल्हाया। खाणी बाणी धुर दी राणी बोध अगाध पड़दा दए चुका, चुक्क आपणा मुख वखाया। चार वरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश, चार कुण्ट उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण, चार जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, चार बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी दए सुणा, गीत सुहागी अनरागी आपणा राग अल्हाईआ। अन्तिम चौकड़ वेखे आ, एका एकँकारा खेल करा, चौथे पद रिहा समा, एका चौका मेल मिला, चौदां हट्टां वेखे थाउँ थाँ, चौदां तबकां फेरा पाईआ। चौदां विद्या पकड़े बांह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द रिहा समझाईआ। शब्द सुत दोए जोड़, प्रभ चरनी सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि मोहे तेरी लोड़, तुध बिन मेरा काज ना कोए कराइंदा। दो जहानां वेखणा दौड़ दौड़, इक्क तेरी ओट तकाइंदा। सचखण्ड लगाउणा सच्चा पौड़, उच्चा डण्डा इक्क बणाइंदा। तेरा रूप ब्रह्मण गौड़, दिस किसे ना आइंदा। मैं तेरा सुत दुलारा घर तेरे जम्मया कौर, एको तेरा टिक्का लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला मेल मिलाइंदा। कवण वेला मेलें आण, मेरे साहिब सच्चे गुसाया। मैं जुग जुग मन्नां तेरी आण, दर तेरे सीस झुकाया। तूं दर्शन देणा आण, मेरी पूरी आस कराया। मैं खेलां खेल विच जहान, निरगुण सरगुण रूप वटाया। तेरा हट्ट चलावां दुकान,

६१६ ११

तेरा नाउँ नाउँ वरताया। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, साचे तख्त आसण लाया। कवण वेला होए मेहरवान, मेरा विछोड़ा दए मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, आदि आदि तेरे अग्गे मंग मंगाया। दे दे वर कर इकरार, कौल आपणा आप निभाईआ। जुग चौकड़ी सेवा करां वारो वार, सेवक आपणा नाउँ धराईआ। प्रगट कर गुर अवतार, तेरा नाउँ नाद वजाईआ। पीर पैग़म्बर कर ख़बरदार, कलमा अमाम इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए सहाईआ। देवे वर हरि निरँकारा, आदि आदि सुणाया। जुग चौकड़ी खेल न्यारा, जुग जुग वेस वटाया। अन्तिम चौकड़ पावे सारा, हुक्मी हुक्म आप जणाया। तेरा रूप वखाए तेई अवतारा, भगत अठारां नाल मिलाया। तेरा नूर ईसा मूसा होए उज्यारा, अहिमद मुहम्मद नाल मिलाया। तेरे नाउँ हक़ जैकारा, हक़ीक़त तेरी दए समझाया। तेरा खेल परवरदिगारा, पर्दानशी नज़र किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाया। आपणा भेव दस्से भगवान, भेव अभेद खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता प्रगट होवे विच जहान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सतिजुग कलयुग खेल वेखे आण, वेखणहारा इक्क हो जाईआ। एका नूर वड बलवान, जोती जाता रूप धराईआ। गुर गुर खेल श्री भगवान, सतिगुर पूरा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दए जणाईआ। अन्तिम लेखा हरि करतारा, शब्दी आप जणाइंदा। सतिजुग उपजे अठारां वारा, त्रेता दोए दोए रूप वटाइंदा। द्वापर दोए लाए अखाड़ा, कलयुग आपणा रंग रंगाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी पल्लू आप बंधाइंदा। नानक निरगुण कर त्यारा, पंज तत्त चोला वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, हरि निरँकारा आप सुणाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, सचखण्ड वखाए इक्क दुआरा, चरन कँवल कँवल बहाइंदा। नानक निरगुण करे दीदारा, बिन रसना जिह्वा गाए एकँकारा, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। तेरी कुदरत तेरा पसारा, तूं खुदाई बेऐब परवरदिगारा, राम रहीम तेरा अखाड़ा लख चुरासी चार कुण्ट चार खाणी चार वरन लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ। नानक निरगुण सचखण्ड, सचखण्ड वासी आप बहाइंदा। आपणा नाम देवे वंड, साची वस्त झोली पाइंदा। चार जुग दा भेख पखण्ड, एका वार मिटाइंदा। धुर दरगाही साचा छन्द, सतिनाम पढ़ाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए अनन्द, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। दूई द्वैती भरमां ढाहे कंध, हउमे गढ़ आप तुड़ाइंदा। आत्म परमात्म नंगी होण ना देवे कंड, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती दस दस धार, करे खेल अगम्म अपार, पुरख अकाला दीन

दयाला आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव दस्से खोल्ह, आपणी गाथा आप जणाईआ। चार जुग तोले तोल, तोलणहारा एका माहीआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी नाम मधाणे लए विरोल, जगत रिड़कणा एका पाईआ। सुत शब्द तेरा दुआरा देवे खोल्ह, पुरख अकाल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दए उठाईआ। आपणा पड़दा देवे लाह, किरपा करे गुण निधाना। नानक जोती कर रुशना, खेले खेल जहाना। अन्तिम वेखे चढ़े चाअ, वेस वटाए जोधा सूरबीर बली बलवाना। सुत अनादी एका जा, पंज तत्त देवे सच्चा दाना। गोबिन्द गोबिन्द नाउँ धरा, गोबिन्द पिता गोबिन्द पूत गोबिन्द मेला विच जहाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवाना। श्री भगवान रिहा दस्स, भेव अभेद खुल्हाईआ। शब्दी गुर हो प्रगट, कलयुग डंका दए वजाईआ। सति सतिवादी खोल्हे हट्ट, सति पुरख निरँजण दया कमाईआ। वसणहारा घट घट, गृह मन्दिर अंदर फेरा पाईआ। लख चुरासी वेखे खेल बाज़ीगर नट, बण स्वांगी स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। धुर फ़रमाणा एकँकार, एका एक जणाइंदा। जुग जुग संदेसा देवां विच संसार, वाक् भविख्त आप सुणाइंदा। गुर अवतारां खोल्ह किवाड़, पीर पैग़म्बर पड़दा लाहइंदा। धुर दी बाणी धुर दी धार, धुर दा कलमा आप पढ़ाइंदा। धुर दा गुर धुर अवतार, धुर दा नबी रसूल बणाइंदा। धुर दा हुक्म धुर फ़रमाण, धुर दरबारी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकर्मी आपणा कर्म आप कमाइंदा। निहकर्मी करे आपणी कार, करता पुरख भेव ना आईआ। वेद व्यासा दे अधार, पुराण अठारां चार लख हज़ार सतारां सलोक गणाईआ। उच्ची कूक करे पुकार, कलयुग आए अन्तिम वार, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, ना कोई पिता ना कोई माईआ। जुग जुग करता करे ख़बरदार, ईसा मूसा नैण खुल्हाईआ। मूसा कहे मेरा आए परवरदिगार, नूरी जल्वा नूर वखाईआ। मुहम्मद कहे मेरा सांझा यार, रसूल रसूला सच्चा माहीआ। नानक कहे महांबली उतरे आपणी धार, धारों धार लए प्रगटाईआ। गोबिन्द कहे आए पुरख अकाल, अकल कल आपणा रूप वटाईआ। सम्बल वसे धर्मसाल, धर्मसाला इक्क बणाईआ। त्रैगुण माया तोड़े ज़ंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। भगत भगवन्त लए भाल, लख चुरासी फोल फोलाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव खोल्हे भेद, हरि साचा सच जणाइंदा। अन्तिम लेखा चुक्कणा चार वेद, शास्त्र सिमरत पुराण कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान साध सन्त वेखे खेड, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अनभउ प्रकाशा खेल

तमाशा करे अछल अछेद, वल छल्ल आपणी कार कमाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ समुंद सागर वेखणहारा बालू रेत, उच्चे टिल्ले पर्बत सोभा पाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लख चुरासी परखणहारा अंदर वड़ वड़ काया खेत, सरगुण निरगुण आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव दस्से खोल्ह, खोल्हणहार हरि निरँकारा। कलयुग अन्तिम तोले पूरा तोल, तोलणहारा हो उज्जारा। जुग चौकड़ी पूरा करे कीता कौल, भुल्ल ना जाए विच संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट होए आप निरँकारा। निरँकार होए प्रगट, परगना आपणा दए जणाईआ। चोदां लोक चौदां तबक चरनां हेठ दबाए झट्ट, सीस सके ना कोई उठाईआ। दो जहानां श्री भगवान वेखे हट्ट, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा फेरा पाईआ। भेव चुकाए तीर्थ तट, किनारा कोए नज़र ना आईआ। नाम नगारे लगाए सट्ट, साचा डंका इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए गणाईआ। लेखा जाणे हरि हरि धार, दूसर भेव कोए ना आइंदा। शब्दी सुत रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी आप जगाइंदा। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, रूप अनूप वेस वटाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, समुंद सागर मस बण बण नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। हरि का अन्त ना पारावर, बेअन्त कह कह गए गुर अवतार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मेला आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्तिम मेला मात कराउणा, हरि सतिगुर आप जणाया। निरगुण निरवैर पुरख अकाल रूप वटाउणा, जोती जामा वेस वटाया। साढे तिन्न हथ्थ बंक दुआरा इक्क सुहाउणा, सम्बल नगरी नाउँ धराया। शब्दी गुर गोबिन्द वेस कराउणा नज़र किसे ना आया। जोत उजाला इक्क वखाउणा, दीन दयाला दया कमाया। चार जुग दा डेरा ढौहुणा, ढाह ढाह ढेर ख़ाक मिलाया। राजा राणा तख़्तो लौहणा, सीस ताज़ ना कोए टिकाया। चार वरन दा पन्ध मुकाउणा, आत्म ब्रह्म सर्ब वखाया। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका धाम बहाउणा, एका घर दए वड्याआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां हुक्म सुनाउणा, धुर संदेसा आप अल्हाया। लोकमात हरि खेल खिलाउणा, सतिजुग साचा राह चलाया। जन्म जन्म दे विछड़े मेल मिलाउणा, जुग जुग दा पन्ध मुकाया। बहत्तर भगतां आप उठाउणा, उठ उठ आपणे गले लगाया। साचा मन्दिर इक्क बणाउणा, छत्ती छत्ती मूल ना राया। अंदर वड़ के आसण लाउणा, उपर चढ़ के वेख वखाउणा, दो जहानां वंड वंडाया। सच सिँघासण इक्क रखाउणा, पुरख अबिनाशी दए सुहाया। पंचम मुख ताज पहनाउणा, पंचम आपणा हुक्म वरताया। पंच प्रधान आप बंणाउणा, पंचम राग अल्हाया। पंजां दरगाह माण दवाउणा, पंजां एका घर वसाउणा, करे खेल बेपरवाहया। गोबिन्द सूरा नाल मिलाउणा, साचा चिल्ला

तीर चढ़ाउणा, शब्द कमंद आप उठाया। कल्गी तोड़ा इक्क चमकाउणा, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाउणा, साचा अस्व घौड़ दुड़ाउणा लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाया। लख चुरासी रीठा कौड़ा वेख वखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त मिलावा दए समझाया। अन्त मिलावा करे करतार, कलयुग अन्त वज्जे वधाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां सद्दे सच दरबार, धुर दरबारी आप लगाईआ। चार जुग दी करनी करता दए वखाल, नेत्र नैण सर्ब खुल्हाईआ। उठो वेखो आपणे आपणे लओ संभाल, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाँई गुर अवतार पीर पैग़म्बर नेत्र नैण वेखण उठाल, लोकमात ध्यान लगाईआ। बिन हरि नामे होए सर्ब कंगाल, साची वस्त हथ्थ ना किसे वखाईआ। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले जूठ झूठ कूड़ी क्रिया वज्जे ताल, गुरुदुआरे धीआं भैणां रहे तकाईआ। गुर की बाणी किसे ना वज्जा बाण, आत्म राम ना सके पछाण, एका भुल्लया हरि भगवान, नानक गोबिन्द दए ना गवाहीआ। उम्मत नबी होई हैरान, चारों कुण्ट बेईमान, घर घर शरअ वड़या शैतान, आबेहयात ना कोए प्याईआ। तीस बतीस सारे गाण, मसला हल्ल ना कोए कुरान, काया कुरा ना कोई वखाईआ। मक्का काअबा वेख दुकान, हाज़ी हज्ज ना करे कोई कर ध्यान, नेत्र नैणां नूर नूर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात मारन झाकी, हरि साचा आप वखाइंदा। चारों कुण्ट वेखण ताकी, काया मन्दिर अंदर ताक ना कोई खुल्हाइंदा। साध सन्त पढ़ पढ़ थक्के विद्या साखी, साख्यात सतिगुर नज़र किसे ना आइंदा। लहिणा देणा चुक्के मात ना बाकी, पिछला मूल ना कोई वखाइंदा। ना कोई पड़दा रिहा ढाकी, खुल्ही मैंडी सर्ब वखाइंदा। चारों कुण्ट रैण अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। मिल्या मेल ना कमलापाती, साची सेज ना कोई हंढाइंदा। प्याला प्याए ना कोई साकी, अमृत रस हथ्थ किसे ना आइंदा। शब्द गुर लहिणा देणा देणा बाकी, बाकी तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मेला आप जणाइंदा। अन्तिम मेला श्री भगवान, शब्दी शब्द कराईआ। कलयुग अन्तिम मेट निशान, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। हउमे हंगता माया ममता ना रहे दुकान, आसा तृष्ना ना कोई वधाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए प्रधान, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। मुस्लिम हिन्दू सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वेखो गान, एका नाम एका राम एका कलमा दए पढ़ाईआ। चार खाणी चार बाणी होई नादान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। प्रगट होए नौजवान, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। धर्म झुलाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप उठाईआ। जीव जंत साध सन्त लख चुरासी सारे गाण, पारब्रह्म तेरी वड्डी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी इक्क भगवान, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा मेल रखे हथ्थ, हरि सतिगुर दीन दयाला। चार वरन सुणाए आपणी गाथ, कर किरपा गुर गोपाला। होए सहाई अनाथां नाथ, नाथ अनाथां होए रखवाला। एका अक्खर एका पाठ, एका वखाए सच्ची धर्मसाला। एका तीर्थ एका ताट, एका अमृत प्याए प्याला। एका ब्रह्म एका ज़ात, एका होए सदा रखवाला। एका पुरख बंधाए नात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम करे खेल निराला। कलयुग अन्तिम खेल कराउणा, हरि करता आप जणाईआ। चार जुग दा पन्ध मुकाउणा, कलयुग कूड़ा दए खपाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सति सतिवादी होए सहाईआ। धरत मात दी गोद बहाउणा, साची कुक्ख दए सुहाईआ। जगत भुल्ले नाल रलाउणा, एका बन्धन पाईआ। धुर दरगाही ढोला इक्क सुनाउणा, नानक गोबिन्द गया समझाईआ। सो पुरख निरँजण फेरा पाउणा, हँ ब्रह्म लए प्रनाईआ। सोहँ साचा शब्द चलाउणा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। वरन बरन कोई रहिण ना पाउणा, ज़ात पात नज़र ना आईआ। सोहँ साचा शब्द चलाउणा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। कलमा कलाम ना किसे पढ़ाउणा, सजदा सीस ना कोई झुकाईआ। धरत मसल्ला ना किसे विछाउणा, रोज़ा निमाज़ ना कोई जणाईआ। चौधवीं सदी पन्ध मुकाउणा, चौदां तबकां आपणे विच छुपाईआ। सृष्ट सबाई एक सबक पढ़ाउणा, अल्फ़ ये करे कुड़माईआ। साची याद इक्क रखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जुग जुग हुक्म वरते जग, जग जीवण दाता आप वरताइंदा। करे खेल सूरा सरबग, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। लख चुरासी फूके त्रैगुण माया अग्ग, कूड़ी क्रिया लम्बू लाइंदा। बिन हरि किरपा कोए ना सके बच, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। काया भाण्डा टुट्टे कच्च, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुर गोबिन्द कहे पुरख अकाल प्रगट होवे सच्च, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। साचे भगतां अंदर जाए वस, घर आपणा डेरा लाइंदा। कोटन कोटि कर प्रकाश, रवि ससि मुख शरमाइंदा। अज्ञान अन्धेरा जाए विनास, नूर नुराना चन्द चढ़ाइंदा। गुरमुखां वसे सदा पास, गोबिन्द विछड़ कदे ना जाइंदा। मनमुख सदा रहे उदास, नानक नज़र किसे ना आइंदा। हरिमन्दिर पुरख अकाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी सच्ची करे ना कोई अरदास, जगत विहारा अरदासा सर्ब सुधाइंदा। अन्तिम होणा पैणा नास, अग्गे हो ना कोई बचाइंदा। पुरख अकाल दी पन्थ ख़ालसा साख, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाइंदा। अन्तिम अन्त ख़ालसा ख़ालस वेखे आप, आपणा ख़ालस रूप आप प्रगटाइंदा। लख चुरासी बण बण माई बाप, पिता पूत गोद सुहाइंदा। सतिजुग चलाए आपणा जाप, गुर पीर ना कोए प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे करतारा, करनहार आप अख्वाईआ।

६२३
११

लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर पसारा, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। चण्ड प्रचण्ड दोहरी धारा, नौ खण्ड आप वखाईआ। पृथ्मी आकाशा इक्क अखाड़ा आप लगाए विच संसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। भेव अभेद धर्म अधर्म, हरि जू वेख वखाइंदा। लख चुरासी भुल्ले भरम, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाइंदा। जीव जंत बध्धा वरन बरन, शरअ संगल ना कोई तुड़ाइंदा। बिन गुरमुख किसे ना खुल्ल्हे नेत्र हरन फरन, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। साध सन्त इक्क दूजे नाल लड़न, जगत हँकार विकार ना कोए मिटाईआ। आपणा कीता अन्तिम सारे भरन, चित्रगुप्त हिसाब वखाइंदा। राए धर्म कोलों सारे डरन, अग्गे सीस ना कोई उठाइंदा। लाड़ी मौत घर घर आए वरन, साचा सगन सगन मनाइंदा। गुरमुख विरले लोकमात तरन, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर शब्द जो पल्लू फड़न, अद्धविचकार ना कोई डुबाइंदा। पार किनारा अन्तिम करन, औखी घाटी आप चढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पुरख अकाल दी मंगण सरन, बिन पुरख अकाल आपणी जोत ना कोई मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त मिलावा आप समझाइंदा। अन्त मिलावा साचे देस, देस दसन्तर आप समझाईआ। निरगुण करे निरगुण वेस, सरगुण नज़र किसे ना आईआ। लहिणा देणा चुकाए पीर पैग़म्बर औलीए मुल्ला शेख़, मुसायक कोए रहिण ना पाईआ। पंडत पांधा थक्का मांदा अन्तिम झूझे कलयुग खेत, बचया कोए रहिण ना पाईआ। चार वरन पुरख अबिनाशी इक्को करे हेत, मिल आत्म परमात्म खुशी मनाईआ। रुत्त बसन्ती रहे चेत, चेतन फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणी करनी आप कराईआ। आपणी करनी करे करनेजोग, करनहारा करतारा। जुगा जुगन्तर संजोग विजोग, वेखे विगसे पावे सारा। आदि अन्त रस भोग, भोगी भोगे अगम्म अपारा। हुक्मी हुक्म लोक परलोक, दो जहाना दए सहारा। शब्द अनादी नाद सलोक, गीत गावे गावणहारा आदि जुगादि ना सके कोई रोक, हरि का भाणा अपर अपारा। कलयुग अन्तिम गुरमुख विरला शब्दी खोजे खोज। पढ़ पढ़ थक्का सर्ब संसारा। भगत भगवन्त पुरख अकाल इक्को रखे ओट, इक्को मंगे दरस दीदारा। भाग लगाए दया कमाए काया मन्दिर किला कोट, महल अटल अचल्ल वेखे मुनारा। गुरसिख जगाए निर्मल जोत, मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा। शब्दी शब्द मिलावा ओत पोत, पिता पूत खेल अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी साचा काहन, सचखण्ड वसे सच मकान, थिर घर देवे शब्दी दान, लोकमात वेखे मार ध्यान, आदि अन्त इक्क अवतारा। आदि अन्त इक्क अवतारा, अवर ना कोए वड्याईआ। आदि जुगादी कर पसारा, जुग जुग वेख वखाईआ।

जुगा जुगन्तर साचा नाअरा, बोध अगाध सुणाईआ। कातब लेखक बण बण लिखारा, लिख लिख आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिभगत लए जगाईआ। भगत जगाए आप प्रभ, आपणी किरपा धार। लख चुरासी विच्चों लए लभ्भ, घर घर अंदर मन्दिर पावे सार। अमृत चुआए कँवल नभ, कँवल कँवला खिले गुलज़ार। साचे मन्दिर बहे फ़ब, आत्म सेजा कन्त भतार। अमृत जाम प्याए मदि, दिवस रैण रहे खुमार। अनहद नाद वजाए नद, धुन आत्मक इक्क सुनार। बजर कपाटी पार हद्द, तोड़े गढ़ हँकार। पंच विकारा विच्चों कढ्ढ, देवे नाम अधार। करे प्रकाश अन्धेरी खड्ड, नाता तुट्टे धूआँधार। आत्म परमात्म जाए बज्झ, मेल मिलावा सच्चे घर बाहर। इक्क दूजे दी रखणहारा लज्ज, ईश जीव जीव सहार। अन्तिम पड़दा लए कज्ज, जन्म जन्म दुरमति मैल दए उतार। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले वेखे भज्ज भज्ज, पाँधी आपणा पन्ध निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, राज राजाना शाह सुल्ताना करे मात खुआर।

★ ११ चेत २०१६ बिक्रमी पिण्ड चम्बल संगत ज़िला अमृतसर ★

किरपा करे गुण निधान, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। धुर फ़रमाण, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। बोध अगाधा इक्क ज्ञान, अक्खर वक्खर आप प्रगटाइंदा। लख चुरासी कर पहचान, घट घट आपणा फेरा पाइंदा। सन्त सुहेले देवे माण, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। गुरमुखां देवे इक्क ध्यान आत्म नेत्र इक्क खुलाइंदा। गुरसिखां होए जाणी जाण, आपणी बूझ आप बुझाइंदा। किरपा करे वड मेहरवान, दीन दयाल खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव हरि निरँकारा, जुग करता आप जणाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपारा, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी करे कराए पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा जाणे गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर भेव चुकाईआ। आकाश प्रकाश जाणे रवि ससि सितारा, मंडल मण्डप वेख वखाईआ। ज़िमी असमान वेखे अखाड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान आपणा नैण उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जाणे धारा, आदि जुगादि वड वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पावे सारा, अञ्जील कुरान पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, आदि जुगादि कराइंदा। जुगा जुगन्तर दे सहारा, लख चुरासी अंग लगाइंदा। नाद शब्द बोल जैकारा, धुन अनादी नाद सुणाइंदा। लिख लिख लेख अपर अपारा, लोकमात राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। जुग जुग कार करे करतार, करता पुरख सेव कमाईआ। सेवक लाए गुर अवतार, सतिगुर आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द अगम्मी वस्त न्यार, लोकमात मात वरताईआ। हुक्मी हुक्म खेल न्यार, खेलणहार इक्क सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बन्न्हे धार, कलयुग आपणा रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि वार, कोटन कोटी रूप वटाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, दर बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि मंगण नेत्र नैण दरस दीदार, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्के अन्त ना पारावार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त गए समझाईआ। सचखण्ड वसे आप निरँकार, तख्त निवासी सोभा पाईआ। थिर घर शब्द दुलारा देवे वाड़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ लोक परलोक आपे वेखे सच अखाड़, जगत अखाड़ा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल श्री भगवाना, आदि जुगादि कराइंदा। जुगा जुगन्तर सति निशाना, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। गुर अवतारां धुर फ़रमाणा, पीर पैग़म्बरां आप पढ़ाइंदा। बोध अगाधी इक्क तराना, त्रैगुण अतीता आप सुणाइंदा। निरगुण सरगुण वखाए इक्क मकाना, काया मन्दिर आप सुहाइंदा। दीआ बाती कमलापाती आप जगाए महाना, तेल बत्ती ना कोए पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए करनेहार। वरन बरन फड़ाए पलड़ा, जात पात दए अधार। राज राजाना शाह सुल्ताना सच संदेस घल्लड़ा, धुर दी बाणी धुर दी धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि जुग चार। जुग चार लेखा अपारा, वेद शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। निरगुण सरगुण लए अवतारा, रूप अनूप धराईआ। शब्द अनादी बोल जैकारा, लिख लिख लेख मात वखाईआ। भगतां खोल्हे बन्द किवाड़ा, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। सन्तां देवे नाम खुमारा, शब्द खुमारी इक्क रखाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन दुआरा, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। गुरसिखां देवे इक्क अधारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वारा, कोटन कोटि काल बिताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंडण आप वंडाईआ। साची वंडण वंडे वंड, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणा खेल कराइंदा, चार जुग चार वेद चार खाणी चार बाणी सुणाए छन्द, ढोला सोहला एका गाइंदा। चार वरन चार कुण्ट चार यारी खेल करे बख्शंद, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। नाम निधाना श्री भगवाना खेल महाना जुग चौकड़ी आपे वंड, कोटन कोटि नाउँ प्रगटाइंदा। आत्म परमात्म जन भगतां देवे इक्क अनन्द, दूसर हथ्थ किसे ना आइंदा। लख चुरासी दूई द्वैती हउमे हंगता भरमां कंध, भाण्डा

भरम ना कोए भनाइंदा। त्रैगुण माया बन्दी बन्द, पंज तत्त विकारा करे अन्ध, नेत्र ज्ञान ना कोए खुल्हाइंदा। गुर का शब्द ना बत्ती दन्द, रसना जिह्वा झूठा गंद, आत्म रस हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, जोती जाता वेस वटाईआ। लख चुरासी पावे सारा, दर दर घर घर फेरा पाईआ। रागी नादी वसे बाहरा, वेद कतेब रहे जस गाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी मंगदे आए वारो वारा, बण भिखक झोली डाहीआ। देवणहार वस्त हरि थारा, नाम अमोलक झोली पाईआ। रसना जिह्वा बोल जैकारा, जीव जंत जंत पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि अपरम्पर आप कराइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र नैण ना कोए जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। चारों कुण्ट धूआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। राज भूप ना कोए सिक्दारा, शाह पातशाह नज़र कोए ना आइंदा। घर घर अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, गुर का शब्द ना कोए कमाइंदा। पंज तत्त तपे अंग्यारा, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लग्गा अखाड़ा, वरन बरन नाच नचाइंदा। ऊँच नीच रोवण ज़ारो ज़ारा, जात अजाती ना कोए मिटाइंदा। धर्म ना दिसे कोए दुआरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम काली रैण, नूर नज़र कोए ना आईआ। नाता तुट्टा मात पित भाई भैण, साक सज्जण संग ना कोए रखाईआ। जीवां जंतां साधा सन्तां लाड़ी मौत खाए डैण, माया ममता रूप वटाईआ। हरि का दरस ना पेखे कोई नैण, दोए दोए लोचण रहे शरमाईआ। हउमे हंगता झूठी ममता उच्ची कूक कूक सारे कहिण, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए चुकाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरा अन्ध, साचा रंग ना कोए वखाईआ। रसना जिह्वा खाए गंद, जूठ झूठ नाल मिलाईआ। सुरती शब्द ना मुक्कया पन्ध, पाँधी बण के फेरा कोए ना पाईआ। गृह गृह वड़या इक्क घुमंड, झूठा बुरज ना कोए ढाहीआ। चार वरन पाइन डण्ड, अठारां बरन करन लड़ाईआ। पारब्रह्म तेरी घर घर वंड, मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले गुरुदुआर आपणा हक़ रखाईआ। आत्म सब दी होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम आए निरँकारा, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। सति सतिवादी करे सति विहारा, साचा मार्ग इक्क लगाइंदा। जात पात ऊँच नीच कूड़ी

क्रिया मेट पसारा, साची धारा इक्क बंधाइंदा। राउ रंकां राज राजाना शाह सुल्ताना वखाए इक्क दुआरा, धर्म दुआरा आप इक्क बणाइंदा। सृष्ट सबाई एका नाम एका शब्द इक्क जैकारा, एका नाअरा आप सुणाइंदा। एका मन्दिर एका मट्ठ शिवदुआला एका गुरुदुआरा, गुर गुर आपणा रूप धराइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा एका नूर करे उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। आत्म परमात्म दे सहारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप दृढ़ाइंदा। आपणा नाम एका एक, हरि जू हरि हरि आप प्रगटाईआ। सृष्ट सबाई देवे टेक, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। सर्ब जीआं करे बुध बिबेक, विवेकी आपणा खेल कराईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। पिछली मेटणहारा रेख, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आपणे नेत्र आपे पेख, पेखत पेखत खुशी मनाईआ। नाता तोड़े पीर पैग़म्बर औलीआ मुल्ला शेख, मुसायक कोए नज़र ना आईआ। पंडत पांधा थक्का मांदा अन्तिम कलयुग झूजे खेत, आपणा बल ना कोए धराईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी चार वरनां करे एका हेत, मिल मिल आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख समरथ, आपणा खेल आप कराइंदा। कलयुग लहिणा देवे हथ्थ, सतिजुग आपणा राह चलाइंदा। शब्द अगम्मी मार्ग दस्स, साचा मार्ग आपे पाइंदा। जन भगतां अन्तर आपे वस, हरि जू आपणी बूझ बुझाइंदा। अमृत आत्म देवे रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। तीर निराला मारे कस, मुखी तिक्खी बजर कपाटी आप तुड़ाइंदा। जूठ झूठ माया ममता हउमे हंगता करे भट्ठ, जोती अग्नी लम्बू लाइंदा। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। साध सन्त हरिसंगत मेला कर इक्ठ, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं दा कमलापति, पुरख अबिनाशी आप अख्वाइंदा। लेखे लाए रत्ती रत, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका देवे ब्रह्म मति, मनमति डेरा ढाइंदा। ऊँच नीच राउ रंक पुरख अकाल दा गायन जस, जस वेद पुराण ना कोए सुणाइंदा। तख्त निवासी शाहो शाबासी सचखण्ड दुआरे रिहा वस, लोकमात फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी नव नौ चार करे पूरी आस, आसा आसा नाल मिलाइंदा। जोती जाता पुरख अबिनाशा निरगुण नूर करे प्रकाश, पंज तत्त ना कोए रखाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल सोभा पाइंदा। गोपी काहन वखाए रास, बण बण नटुआ स्वांग वरताइंदा। सन्त सुहेला इक्क अकेला आदि अन्त वसे पास, जुग जुग विछड़ कदे ना जाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया करे नास, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सेवक बण बण सेवा करे दासी दास, पुरख अबिनाशी भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचा लोकमात, हरि जू हरि

हरि आप टिकाईआ। नाम निधाना देवे दात, अनमुलड़ी झोली पाईआ। आदि जुगादि सद वसे साथ, जुग जुग विछड़ कदे ना जाईआ। आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचा धरनी धरन, धवल आप टिकाइंदा। जन भगतां खोल्हे हरन फरन, नेत्र नैण इक्क वखाइंदा। नाता छुट्टे वरन बरन, जीवण मुक्त आप कराइंदा। भय चुक्के वरन बरन, जात पात ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। हुक्मे अंदर जुग चारा, जुग चौकड़ी आप भुवाइंदा। हुक्मे अंदर वेद चारा, ब्रह्मा वेता लिख लिख सीस झुकाइंदा। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत करन पुकारा, हुक्मे अंदर पुराण अठारां वेद व्यासा जस गाइंदा। हुक्मे अंदर गीता ज्ञान दए सहारा, अठ दस आपणा बन्धन पाइंदा। हुक्मे अंदर अञ्जील कुरान लाए नाअरा, मसला हक़ हक़ समझाइंदा। हुक्मे अंदर नानक निरगुण बोले सतिनाम जैकारा, हुक्मे अंदर गोबिन्द फतिह डंका मात वजाइंदा। हुक्मे अंदर थिर रहे ना कोए विच संसारा, जो आया सो उठ उठ जाइंदा। हुक्मे अंदर खाणी बाणी रवि ससि सूरज चन्द सितारा, जंगल जूह उजाड़ समुंद सागर सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर पुरख नारा, हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण धारा, हुक्मे अंदर लख चुरासी बन्धन पाइंदा। हुक्मे अंदर घाड़न घड़े बण ठठयारा, हुक्मे अंदर वेखे विगसे वेखणहारा, हुक्मे अंदर भन्न वखाइंदा। हुक्मे अंदर राती रुती थिती वारा, हुक्मे अंदर घड़ी पल दिवस रैण करे विचारा, हुक्मे अंदर आपणी सेवा आप कमाइंदा। हुक्मे अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, हुक्मे अंदर वेस वटाए तेई अवतारा, हुक्मे अंदर अठारां भगत वजाए नगारा, हुक्मे अंदर लेखा जाणे दस गुरू एका जोत अधारा, जोती जाता आप अख्वाइंदा। हुक्मे अंदर बण वरतारा, हुक्मे अंदर खोल्ह किवाड़ा, हुक्मे अंदर देवणहारा, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाइंदा। हुक्मे अंदर शब्द नगारा, हुक्मे अंदर बोध अगाध लिखारा, हुक्मे अंदर लिख लिख लेखा आप समझाइंदा। हुक्मे अंदर कलयुग अन्तिम प्रगटे निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। हरि का भेव ना कोए सके पा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निरगुण सरगुण गए गा, अन्त आपणा सीस झुकाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला जुग जुग बणे मलाह, बण खेवट खेटा फेरा पाईआ। बण बण पाँधी पन्ध दए मुका, थक्की मांदी सृष्टी लए जगा नाम हलूणा इक्क लगाईआ। कागों हँस लए बणा, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगा, आत्म परमात्म एका रंग रंगाईआ। लख चुरासी वेखे फेरा पा, जन भगतां होए आप सहा, आवण जावण बन्धन दए तुड़ा,

६२६
११

राए धर्म ना दए सजाईआ। साचे धन्दे देवे ला, गीत सुहागी छन्दे दए सुणा, राग अनादी इक्क अल्लाईआ। कलयुग अन्तिम कन्ढे बैठे आ, चार वरन दिसे ना कोए मलाह, सृष्ट सबाई होई दुखदाई नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किसे ना पकड़े कोई बांह, बेड़े फड़ ना कोए चढ़ाईआ। नाता तुट्टा पुत्रां मां, पिता पूत ना कोए सहाईआ। इक्को भुल्या हरि का नाँ, कलयुग क्रिया रही भुलाईआ। कोई खाए सूर कोई खाए गां, आपणा कीता सारे लैण पाईआ। पुरख अबिनाशी राए धर्म हथ्थ छुरी रिहा फड़ा, एका हुक्म सुणाईआ। झटके वाल्यां देणा झटका, हलाली वाल्यां हलका हलका उपर भार पाईआ। तरसा तरसा कढ्ढणी जान, तरस किसे उत्ते ना खाईआ। कोई गुर पीर अवतार अग्गे हो ना सके छुडा, देवे अन्त ना कोए गवाहीआ। नानक हुक्म गए भुला, आत्म परमात्म रंग ना कोए चढ़ाईआ। अन्त सब ने होणा फनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग एका लाईआ। साचा मार्ग लग्गे मात, लागावणहारा आप लगाइंदा। हरिजन वेखे मार झात, झाकी एका नैण पुवाइंदा। नाता तोड़ ज़ात पात, आत्म परमात्म भेव खुल्लाइंदा। निरगुण सरगुण पुछे वात, बातन ज़ाहर पड़दा लाहइंदा। चरन कँवल उपर धवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। पत्तत पुनीत करे पाकी पाक, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेल मिलाए सज्जण साक, साका आपणा आप सुणाइंदा। सोहँ शब्द भविख्त वाक, नानक गोबिन्द ढोला गाइंदा। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी करे खेल तमाश, आपणा चोला आप बदलाइंदा। पुरख अंगमड़ा कदे ना होवे नास, जन्म मरन विच ना आइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान पृथ्मी आकाश, गगन मंडल आपणा हुक्म वरताइंदा ।

★ ११ चेत २०१६ बिक्रमी तेजा सिँघ दे गृह चम्बल ज़िला अमृतसर ★

सचखण्ड निवासी हरि निरँकारा, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। शब्दी सुत उठ बलकारा, बल आपणा आप प्रगटाईआ। सरगुण अन्तिम मात हारा, पंज तत्त दए दुहाईआ। गुर का शब्द ना किसे विचारा, नव नौ पई लड़ाईआ। नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसारा, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ । सच संदेसा शब्दी सुत हरि हरि आख सुणाइंदा। हुक्म देवे अबिनाशी अचुत्त, एका वार जणाइंदा। निरगुण रूप बणया पुरख, तत्तव तत्त ना कोए बणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड नेत्र लोचण पेख, जगत अन्धेरा एका छाइंदा। सच सुच्च मिटी रेख, जूठ झूठ अन्धेरा नज़री आइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप जणाइंदा। सुत शब्द जाए जाग, आपणी लए अंगड़ाईआ। थिर घर साचे लग्गे भाग, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। दो जहान वजाए नाद, एका धुंन सुणाईआ। खबर कराए ब्रह्म ब्रह्मादि, लोआं पुरीआं भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शब्द सुत कहे बोल, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तुं साहिब वसणा मेरे कोल, मैं तेरी ओट तकाईआ। लख चुरासी देवां तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। दो जहानां पड़दा देवां खोल्ह, दर दरवाज़ा इक्क वखाईआ। लख चुरासी अंदर मन्दिर वजावां ढोल, मृदंगा आपणा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं वेखां चाँईं चाँईंआ। शब्द सुत करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं तख्त निवासी एकँकार, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। जुग जुग पंज तत्त देंदा रिहा अधार, काया चोला आप हंढाइंदा। रूप धर धर गुर अवतार, गुर गुर आपणा खेल कराइंदा। अनहद नाद सच्ची गुफ़तार, गुफ़त शुनीद आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। तेरे अग्गे झोली डाह, एका मंग मंगाईआ। तूं पुरख अबिनाशी बेपरवाह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं सचखण्ड वसें साचे थाँ, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। मैं थिर घर बैठा डेरा ला, तेरे चरनां ओट तकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तुध बिन कोई ना दिसे थाँ, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध अग्गे करां अरज़ोईआ। तुध अग्गे करां अरज़ोई अरदास, दोए दोए जोड़ बेनन्तीआ। मैं सेवक तेरा दासी दास, तूं साहिब सुल्तान सोभावन्तीआ। तूं सदा सुहेले वसणा पास, करना खेल नारी कन्तीआ। मेरी पूरी करनी आस, साची सेजा इक्क सुहंतीआ। तेरा नूर जोत प्रकाश, मेरा नाद धुन वजंतीआ। तूं आदि पुरख अबिनाश, मैं जुग जुग खेल वखंतीआ। तूं साहिब सर्ब गुणतास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दीन दयाल सुण बेनन्तीआ। दीन दयाल अन्तरजामी, तेरी वड वड्डी वड्याईआ। तूं आदि जुगादि सदा नेहकामी, निहचल बैठा आसण लाईआ। तूं घट घट दाता अन्तरजामी, तेरा भेव कोए ना आईआ। आदि जुगादि गुर अवतार पीर पैग़म्बर पढ़न तेरी बाणी, तेरी तार सितार हिलाईआ। जुगा जुगन्तर अकथ कहाणी, कथनी कथ कथ आप सुणाईआ। जिस जन देवें आपणी सच निशानी, सो जन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची सरन तेरी तकाईआ। साची सरन तेरी तक्क, आसरा तेरा रखाया। तूं साहिब सुल्तान पुरख समरथ, बेअन्त तेरी शहिनशाहया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाया। गुर गुर गाए तेरी गाथ, शब्दी शब्द नाउँ प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरनां सीस झुकाया। तेरे चरनां सीस गया झुक, झुक झुक सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी पैंडा रिहा मुक्क, गेड़ा गेड़े विच भुवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण तेरी रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। तुध बिन अवर ना कोए सहारा, गुर शब्दी मंग मंगाइंदा। आदि जुगादि तेरा पसारा, तूं कर कर वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, करोड़ तेतीसा तेरा राह तकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा नाम अधारा, तुध बिन लोकमात नज़र कोए ना आइंदा। तेरा राग तेरा धुन्कारा, रागी राग ना कोए अलाइंदा। तेरा मंगल तेरा अखाड़ा, तुध बिन नाच ना कोए नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। दोए जोड़ चरनी ढट्ठ, सुत शब्दी सीस निवाईआ। एका दे दे आपणी वथ, वस्त अमोलक मंग मंगाईआ। तेरे अंदर तेरा हो के जावां वस, दूसर मन्दिर कोए ना भाईआ। तेरा मार्ग देवां दस्स, बण दासी दास सेव कमाईआ। तेरा पन्ध मुकावां नस्स नस्स, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सो पुरख निरँजण दीन दयाला, आपणी दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो प्रितपाला, प्रितपालक सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एकँकारा मार्ग दस्से सुखाला, साचा राह आप जणाइंदा। आदि निरँजण नूर कर उजाला, जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता निभे नाला, सगला संग निभाइंदा। श्री भगवन वखाए इक्क निशाना, दो जहानां आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधाना, साचे तख्त सोभा पाइंदा। शाह पातशाह बण राज राजाना, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। सचखण्ड सुहाए सच मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। दीपक दीआ इक्क महाना, जोती जाता आप जगाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाणा, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। दीन दयाल हरि निरँकारा, आपणी दया कमाईआ। शब्द सुत तेरा बलकारा, बल तेरे विच धराईआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, पंज तत्त गुर अवतार लोकमात गए सेव कमाईआ। अक्खर अक्खर नाम बोल जैकारा, जीव जंत जंत पढ़ाईआ। लेखा लिख लिख गए बण लिखारा, कलम शाही नाल मिलाईआ। सिख्या दे दे गए हारा, मन मति बुध समझ ना राईआ। भिच्छया पा पा वणज कर कर गए वापारा, जगत हटवाणा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। चार जुग गुर अवतार, लोकमात सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या वारो वार, रूप अनूप आप वटाईआ। खाणी बाणी दो जहान कर त्यार, शब्दी राग नाद अलाईआ। कागज कलम ना पावे सार, लिख

लिख थक्की कलम शाहीआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त सब गए पुकार, अन्त कोए ना पाईआ। पंज तत्त काया चोला गए पाड़, जगत निशान ना कोए वखाईआ। इक्क निशाना दस्स के गए विच संसार, बिन हरि निरँकार दूजा कोए रहिण ना पाईआ। चाकर चाक दासी दास बण बण सेवादार, खाकी ख़ाक ख़ाक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। हरि का भेव ना पाए भेद, भेद किसे ना पाया। ब्रह्मा गा गा थक्का वेद, वेद व्यासा पुराण अठारां सोहला गाया। आदि जुगादी अछल अछेद, गुर अवतारां धन्दे रिहा लगाया। लख चुरासी आपे वेख, घट घट आप समाया। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा नाच नचाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी अवल्लड़ा वेस, वेस अनेका रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराया। साचा खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण गुपत ज़ाहरा, दोए दोए आपणी धार चलाईआ। जोत शब्द हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल श्री भगवान, शब्दी शब्द आप जणाइंदा। प्रगट होणां विच जहान, बल तेरा आप धराइंदा। नव नौ चार आई हाण, सगला संग ना कोए निभाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे दे गए ज्ञान, जीव जंत ध्यान ना कोए लगाइंदा। मन बुद्धि होई प्रधान, मति मतवाली खेल खिलाइंदा। हरि का नाउँ ना मिले किसे निशान, सच निशाना ना कोए लगाइंदा। चारे खाणी बेईमान, बेऐब भेव कोए ना पाइंदा। चारे बाणी होई हैरान, हरि का रूप ना कोए दरसाइंदा। चारे वरन होए शैतान, शरीअत हक़ ना कोए रखाइंदा। चारे जुग होए प्रधान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा बल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क वखाइंदा। शब्द गुर वेख मार ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाया। कलयुग वड्डा वड बलवान, लख चुरासी रिहा भुलाया। चार बाणी ना जाणे कोई ज्ञान, पढ़ पढ़ वाद वधाया। चारों कुण्ट फिरे शैतान, घर घर आपणा नाच नचाया। जूठ झूठ होया प्रधान, डौरू डंका रिहा वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाया। सच संदेसा सुण लै मीत, शब्दी शब्द जणाइंदा। कलयुग वेख अन्तिम रीत, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। जगत अन्धेरा गुरदुआर मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ सर्ब कुरलाइंदा। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधा कोए ना रखे साची नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आइंदा। सब दी बुद्धि होई पुलीत, पवित रूप ना कोए वटाइंदा। हरि का गाए ना कोए गीत, गीत गोबिन्द ना कोए गाइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, चौदां तबक सर्ब कुरलाइंदा। करे खेल आप अनडीठ, आलम उल्मा भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, शब्दी शब्द आप जगाइंदा। शब्दी शब्द वेख चार कुण्ट, हरि साचा सच जणाईआ। किसे कूट दिसे ना रुत्त बसन्त, ख़िज़ा आपणी रुत्त वखाईआ। लख चुरासी सेज खाली बिन हरि जू कन्त, नार दुहागण दए दुहाईआ। गुर का शब्द ना मणीआ मंत, मन की वासना ना कोए मिटाईआ। घर घर गढ़ बणया हउमे हंगत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार पई लड़ाईआ। सृष्ट सबाई होई नंगत, बिन हरि नामे पड़दा कोए ना पाईआ। मानस जन्म होणा भंगत, मनुक्ख चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार दए वखाईआ। एका वार लैणा वेख, हरि जू हरि हरि आख आख सुणाया। लख चुरासी मिटणी रेख, रूप रेख ना कोए वड्याआ। पुरख अगम्मा धारे भेस, जोती जाता रूप वटाया। शब्दी शब्द बण नरेश, नर नरायण आप जणाया। जीव जंत होए मलेछ, मैल दुरमति ना कोए धुवाया। बाहरों कर कर बैठे भेख, अन्तर भविक्ख वाक् ना कोए जणाया। किसे नज़र ना आए गुर दस्मेश, दहि दिशा नैण उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव रिहा खुल्हाया। एका भेव खोल्हे करतारा, आपणा आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। भरमे भुल्ला भरम संसारा, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। नाता तुट्टा पुरख नारा, विभचार करे सर्ब लोकाईआ। ना कोई दीसे हरि मन्दिर सच्चा गुरुदुआरा, सतिगुर रूप नज़र किसे ना आईआ। पंज तत्त काया अग्नी लग्गी तत्ती हाढ़ा, तत्तव तत्त रिहा जलाईआ। अमृत मिले ना ठंडा ठारा, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। दीपक दीआ ना होए उज्यारा, जोत निरँजण ना कोए रुशनाईआ। चरन कँवल ना देवे कोई सहारा, धरनी धवल ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी गुर तेरी सेवा इक्क लगाईआ। साची सेवा जाणा लग्ग, सचखण्ड निवासी आप जणाया। प्रगट हो सूरे सरबग, तेरा वेला अन्तिम आया। लख चुरासी हँस होया कग्ग, काग वांग कुरलाया। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गी अग्ग, हवन कुण्ड तपाया। कूड़ नगारा रिहा वज्ज, कलयुग डंका हथ्थ उठाया। कोई ना सके पड़दा कज्ज, गुर अवतार बैठे मुख छुपाया। मक्का काअबा कोई ना हज्ज, पीर दस्तगीर नज़र कोए ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाया। सच संदेसा सुण लै गल्ल, हरि जू आपणी दया कमाईआ। नव नौ चार करदा आया वल छल, गुर अवतार सेव लगाईआ। आप बैठा रिहा निहचल धाम अटल्ल, सचखण्ड डेरा लाईआ। सर्ब व्यापी हो के घट घट गया रल, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। नाम संदेसा घल्ल घल्ल, जीवां जंतां राह चलाईआ। कलयुग अन्तिम चार जुग दा वेखे फल, सतिजुग त्रेता द्वापर पूरब लहिणा वेख वखाईआ। कलयुग अन्धेरा डूँघी डल, सृष्ट सबाई नैण ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, शब्दी सुत एका गुण जणाईआ। गुणवन्ता हरि गुण निधान, एका गुण समझाइंदा। कलयुग मेटणा अन्त निशान, निशाना जगत रहिण ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तुट्टे माण, अभिमान आपणे हथ्थ रखाइंदा। चार वेद होण हैरान, शास्त्र सिमरत पुराण नैण शरमाइंदा। गीता मुक्के अन्त ज्ञान, अठ्ठ दस ना कोए पढ़ाइंदा। अंज़ील कुरान सर्ब कुरलाण, नेत्र नैण नीर वहाइंदा। बाणी मारे निराला बाण, अणयाला तीर हथ्थ किसे ना आइंदा। जीव जंत होए नादान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कूड़ो कूड़ होया प्रधान, सच सुच्च मुख शरमाइंदा। गुर का ज्ञान ना सके कोई वखान, रसना जिह्वा सर्ब हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द आप समझाइंदा। साचे शब्द चढ़या चाअ, सुणया हरि फ़रमाणा। पंज तत्त नाता तोड़या शहिनशाह, नज़र ना आए जगत निशाना। साचा हुक्म दयां वरता, पुरख अबिनाशी तेरा भाणा। विष्न ब्रह्मा शिव अन्त दयां करा, सुरपति इन्द पन्ध मुकाणा। करोड़ तेतीसा डेरा देवां ढाह, बण मर्द मर्द मर्दाना। चार जुग दा पिछला लेखा दयां मुका, अग्गे गाए ना कोई गाणा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पन्ध दयां मुका, अग्गे करे ना कोई सलामा। सचखण्ड दुआरे तेरे चरनां दयां बहा, एका वार दयां पैग़ामा। भगती भगतां दयां दृढ़ा, तेरा भेव खुला। आपणा मार्ग आप लगा, लख चुरासी लहिणा दयां चुका। मनमुख जीव दयां खपा, राए धर्म हथ्थ फड़ा, लाड़ी मौत नाल दयां प्रना। जून अजूनी आप भुवा, लख चुरासी गेड़ा पा। साचे सन्तां लवा उठा, आत्म अन्तिम इक्क ज्ञान दृढ़ा। भेव अभेदा पड़दा लाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, लेखा सब दा दयां मुका। सब दा लेखा मुकावां जग, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। किसे लाउण ना देवां अज्ज पज्ज, लख चुरासी वेखां थाउँ थाईंआ। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्तिम पड़दा सके ना कोए कज्ज, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सरन सच्ची सरनाईआ। तेरी सरन मेरा ज़ोर, ज़ोरावर तेरी वड्याईआ। तेरे हुक्मे अंदर कलयुग देवां तोर, लोकमात रहिण ना पाईआ। तेरे हुक्मे अंदर लख चुरासी देवां फोर, फुरना तेरा पूर कराईआ। तेरे हुक्मे अंदर जीव जंत वेखां रीठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखाईआ। तेरे हुक्मे अंदर फेरा पावां दौड़, बण बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। तेरे हुक्मे अंदर वेस वटावां ब्रह्मण गौड़, पारब्रह्म नाउँ धराईआ। तेरे हुक्मे अंदर दो जहानां लावां पौड़, डण्डा आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरे हुक्मे अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दएं माण वड्याईआ। माण वड्याई तेरे हथ्थ, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। कलयुग अन्तिम करां भट्ठ, मिटे मात निशाना। सतिजुग चले साचा रथ, करे खेल श्री भगवाना। साचे भगतां मार्ग दस्स, एका

राह वखाना। हिरदे अंदर वस वस, देवां धुर फ़रमाणा। आत्म अन्तर इक्को रस, अमृत रस इक्क महाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगां साचा वर, दे दे धुर परवाना। धुर परवाना दे सरकार, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। चौथा जुग रहे विच संसार, संसारी रूप ना कोए वटाईआ। कागज कलम लेखा दयां निवार, लेखा आपणा आप समझाईआ। गुर पीर पैग़म्बर करके गए पुकार, पुकार सुणे सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम आवे परवरदिगार, पर्दा सब दा दए उठाईआ। महांबली उतरे एकँकार, अकल कल आपणी खेल वखाईआ। प्रगट होवे जोधा सूर बली बलकार, पुरख अकाल सच्चा शहिशाहीआ। सब दा लहिणा दए निवार, देणा कोए नज़र ना आईआ। गुर अवतारां पूरब लेखा दए वखाल, जुग चौकड़ी कर गए जो पढ़ाईआ। वेखो आपणे नेत्रां नाल, कवण मार्ग रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुर लेखा जाणे तेरा धुर, धुर दी बाण आप लगाईआ। धुर दी बाण सच्चे शहिनशाह, हथ्थ तेरे वड्याईआ। कलयुग अन्त देणा करा, कर कर खुशी मनाईआ। मुहम्मद मारे एका धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बेऐब मेरे खुदा, मेरी खुदी कम्म किसे ना आईआ। मेरी उम्मत तेरा सबक गई भुला, कलमा तेरा ना कोए जणाईआ। अल्फ़ ये तेरी पट्टी सके ना कोई पढ़ा, आरफ़ भेव कोए ना पाईआ। कातब बण के लेखा सके ना कोए लिखा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। बण गुसताख़ तैनूं गए भुला, गुस्ताख़ी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन सहाई ना कोई दो जहान, दोए दोए नैण मेरे शरमाईआ। नैण मेरे रहे शरमा, अक्ख अक्ख ना कोए उठाइंदा। तूं कलमा दिता पढ़ा, इलाही कलाम इक्क समझाइंदा। आबहयात दिता प्या, सच प्याला इक्क वखाइंदा। नबी रसूलां दिता सिखा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। तीस बतीसा ढोला गा, शरअ हदीस वंड वंडाइंदा। मुख नक़ाब पड़दा पा, बेऐब आपणा मुख छुपाइंदा। पर्दानसीं ना होया खुदा, सुहरत आपणी ना कोए जणाइंदा। रैहबर बण बण मार्ग गया लग्गा, साचा राह आप चलाइंदा। साची वस्त चौदां सद झोली पा, चौदां तबक नज़र नज़र उठाइंदा। बेसबर होया बेपरवाह, सिदक सबूरी ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। करे खेल परवरदिगार, आपणा भेव जणाईआ। उठ मुहम्मद हो त्यार, वेला अन्तिम गया आईआ। नाता तुट्टे चार यार, चार यारी ना संग निभाईआ। अल्ला राणी नार मुटयार, खुल्हड़े केस रही वखाईआ। नेत्र कज्जल ना कोए धार, नैण नैण ना कोए मटकाईआ। हथ्थीं मैंहदी ना कोए श्रृंगार, सूहा वेस ना कोए कराईआ। सीस दोशाला ना कोई प्यार, शाला संग ना कोए निभाईआ। बेहाला हो रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। अल्ला राणी मारे धांह, नेत्र नैण खुलाईआ। तेरा अन्त ना बेपरवाह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मेरा होया ना अजे निकाह, कुँवार कन्या दए दुहाईआ। चौदां सदीआं तेरा राह रही तका, कवण कूटे आए मेरा माहीआ। तेरे उत्तों मेरी फितरत होई फ़िदा, मेरा रूप रंग किसे कम्म ना आईआ। मेरे मीआं ऐ खुदा, खुदी मेरी मोहे ना भाईआ। तेरे नालों ना होवां जुदा, मुहम्मद संग ना कोए रखाईआ। लोकमात विच्चों बाहर कढा, तेरी इक्को ओट तकाईआ। तेरा कलमा नबी रसूलां सकी पढ़ा, उम्मत जावे ना कोए लोकाईआ। वेला अन्त दिसे ना कोई गवाह, कातिल मकतूल भेव कोए ना राईआ। कोई ना पकड़े बांह, यारी यार ना कोए रखाईआ। चार कुण्ट कर गए सारे नांह, अग्गे हथ्थ ना कोए मिलाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर वेख्या थाँ, जल्वा नज़र किसे ना आईआ। कोहतूर फेरा ल्या पा, मूसा नैण ना कोए खुलाईआ। हज़रत कहे ईसा मेरा इक्क खुदा, सब दी हसरत दए मिटाईआ। मैं मंगां चरन तेरे पनाह, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। सिर मेरे हथ्थ टिका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। तुध बिन अवर ना कोए सहारा, मेरे साहिब सच्चे गुसाईआ। चौदां सदीआं पार किनारा, मैं दयां दर तेरे दुहाईआ। आ मिल मेरे परवरदिगारा, मैं दोवें भुजां उठाईआ। चौदां तबकां तेरा नाअरा, एका ऐनलहक़ सुणाईआ। चारों कुण्ट जीव गंवारा, पंज शैतान करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मंगा चरन सच्ची सरनाईआ। चरन सरन दे मीत, मित्र प्यारे तेरी ओट तकाईआ। गली गली मैं गावां तेरे गीत, इक्को ढोला सच्चे माहीआ। मैं फिर फिर आई विच मसीत, तेरा मुसल्ला नज़र किते ना आईआ। तेरा वुज़ू होया पलीत, पाकी पाक ना कोए सफ़ाईआ। तेरा सजदा ना झुके तैनूं सीस, हक़ निमाज़ ना कोए खुदाईआ। तूं बैठा इक्क अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। मैं की जाणा बाल अञ्याणी तेरी रीत, रीत मेरी समझ विच ना आईआ । जुग जुग खेल तेरा बेप्रीत, कोटन कोटि रूप बणाए, कोटन कोटि पीर पैग़म्बर सेवा लाए, कोटन कोटि गुर अवतार लए प्रगटाए, कोटन कोटि घड़े भन्ने भन्नणहार तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। तेरे अग्गे मेरा सजदा, सीस तेरी भेंट चढ़ाया। मेरा नूर तेरा बरदा, बण सेवक सेव कमाया। मेरा ज़ोर तेरे कोलो डरदा, आपणा बल ना कोए रखाया। मैं नाता छड्डया सीस धड़ दा, इक्को तेरा राह तकाया। तूं क्यों नहीं बांहों फड़दा, बेरहिम मेरे खुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्तिम तेरे अग्गे वास्ता पाया। तेरे अग्गे वास्ता पाए तेरी गोली, गुण आपणा ना कोए जणाईआ। तेरे

६३७
११

प्रेम मौला गई मौली, मिल मिल आपणी ख़ुशी मनाईआ। तूं पड़दा चुक्क हौली हौली, मेरा घूँगट देणा उठाईआ। नबी रसूलां हथ्थ फड़ी मौली, तन्दी तन्द रहे बंधाईआ। तूं रख लै आपणी डोली, इक्क तेरी ओट तकाईआ। चार कहार चुक्क लैण तेरी गोली, चार जुग चार यार सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। तेरी गोली तेरे दर, सजदा सीस झुकाया। रहीम रहिमान देणा वर, वर इक्को मंग मंगाया। आप लगाउणा आपणे लड़, कलमा पल्लू इक्क फड़ाया। तेरे मन्दिर जावां वड़, मुकामे हक़ डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर नज़र कोए ना आया। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, रहीम रहिमान दया कमाइंदा। छोटी बाली सुण निधान, गुण निधान आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे शब्द सुत बलवान, पीरन पीरा आप प्रगटाइंदा। तेरा लेखा चुकाए आण, पिछला मूल झोली पाइंदा। चौदां तबक मेटे निशान, चौदां सदीआं डेरा ढाहइंदा। नाता तोड़ अञ्जील कुरान, शरअ शरीअत मूल मुकाइंदा। साचा देवे इक्क ज्ञान, कलमा कलाम आप पढ़ाइंदा। सच संदेसा धुर फ़रमान, सति सतिवादी आप जणाइंदा। चल के आउणा चरन श्री भगवान, सच सिँघासण इक्क वखाइंदा। मुहम्मद मेला नार रकान, एका हुक्म वरताइंदा। दोहां निउँ निउँ करना सलाम, सलाम अलैकम आप समझाइंदा। ज़बराईल असराफ़ील इज़राईल मेकाईल जो देदां रिहा पैग़ाम, पैग़म्बर आपणी झोली पाइंदा। सही सलामत इक्क इस्लाम, इस्म आज़म आप जणाइंदा। महिबान बीदो बी खैर या अल्ला खेल करे महिबान, रहिमत आपणी आप कमाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद बणा आपणे आप गुलाम, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। नबी रसूल ना कोए कलाम, कायनात ना कोए जणाइंदा। आलमीन खेले खेल दो जहान, नज़र नज़रीआ इक्क रखाइंदा। पीरन पीर वड बलवान, कलमा कलाम आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द वड वड्याइंदा। शब्द गुर उठे बल धार, बल एका एक वखाईआ। लेखा चुक्के मुहम्मद यार, यारी यारां नाल निभाईआ। अल्ला राणी तेरी सुण पुकार, पीआ तेरी कूक आपणे विच रखाईआ। तेरा मेला तेरे कन्त भतार, तेरा माही दए कराईआ। ठांडा सीता बैठ सच्चे दरबार, हक़ हक़ीक़त वेख वखाईआ। जगत तारीक मिटे संसार, शरीकत होर ना कोए वधाईआ। इक्क तौफ़ीक परवरदिगार, साचा तोफा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी आपणा बल धराईआ। शब्दी बल प्रगट मात, आपणा बल वखाइंदा। चार युग दा तोड़े नात, नाता आपणा मात जुड़ाइंदा। पिछला लेखा पाए ख़ात, आपणा खाता ना किसे वखाइंदा। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका गाथ, कलमा नबी इक्क पढ़ाइंदा। नज़री

६३८
११

आए एका कमलापात, कँवल नैण नैण मटकाइंदा। दो जहानां सज्जण साक, जगत कुटुम्ब वेख वखाइंदा। भगतां देवे एका दात, नाम वस्त अमोलक झोली पाइंदा। राती सुत्तयां पुच्छे वात, आलस निंद्रा विच कदे ना आइंदा। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। सति पुरख निरँजण वजाए साचा नाद, अनादी सुत नाल मिलाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, दुरमति मैल सर्ब धुवाइंदा। अक्खर वक्खर बोध अगाध, बोध अगाधा आप पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त लख चुरासी विच्चों काढ, हरि जू आपणा मेल मिलाइंदा। साचे सन्त लडाए लाड, गुर गुर आपणी गोद सुहाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे लाध, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरसिखां सुणाए एका राग, छत्ती राग भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर सतिगुर आपणा नाउँ चलाइंदा। सतिगुर नाउँ चलाए निरँकारा, सति सति आप अखवाईआ। सति सति सर्ब पसारा, सति सति वज्जे वधाईआ। सति सति निरगुण उज्यारा, सति सति सरगुण विच समाईआ। सति सति नाम भण्डारा, सति सति सति वस्तू आपणी झोली आप भराईआ। सति पुरख निरँजण साची धारा, सोहँ एका नाउँ वड्याईआ। आत्म परमात्म करे प्यारा, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। गुरसिख कोई ना रहे कुँवारा, जो सोहँ नाउँ ध्याईआ। हरि जू मिले कन्त भतारा, गुरमुख नारी आप प्रनाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता इक्क वखाए सच दुआरा, सचखण्ड साचा सच्चा माहीआ। शब्द अगम्म वज्जे धुन्कारा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। पंचम सखीआं मंगलचारा, गीत गोबिन्द आप अलाईआ। नज़री आए एका एकँकारा, दूजा इष्ट ना कोए जणाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। कलयुग करे पार किनारा, सतिजुग साचा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क हो आईआ। शब्द गुर एको एक, आदि जुगादि समाइंदा। जुग जुग गुर अवतारां देदां आया टेक, हरि हरि आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम सर्ब चुकाए लहिणा लेख, पूरब लेखा झोली पाइंदा। कोई ना रहे पंडत पांधा मुल्ला शेख़, ग्रन्थी पन्थी वंड ना कोए वंडाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर अवतारां एको एक, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोई मूंड मुंडाइंदा। सचखण्ड वसे आपणे देस, जोती जाता डगमगाइंदा। सूरबीर सुल्तान नर नरेश, निहकलंक आपणा नाउँ रखाइंदा। मेल मिलावा दस दस्मेश, गोबिन्द आपणे रंग रंगाइंदा। जगत अवल्लड़ा धरया भेख, भेखा धारी भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरू आप अख्वाइंदा। शब्द गुरू आए आखर, आखर एका ओट सर्ब तकाईआ। निरगुण निर निरगुण मौलया घट घट पाथर, पाथर पाहन दए तराईआ। सेज हंढाई यारड़ा सत्थर, सत्थर सेज आप सुहाईआ। जगत प्यार ना वहाया अथ्थर, भगत प्यार आपणा आप

भेंट कराईआ। सो सतिगुर आदि जुगादि गुरमुखां नालों ना होए वक्खर, वक्खर आपणी धार चलाईआ। जुग जुग शब्द सुनेहड़ा देवे अक्खर, अक्खर नाम रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव एका घर मिलाईआ। एका घर दर दरवाज़ा, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। जुग जुग भगतां रखे लाजा, रूप अनूप वटाइंदा। कलयुग अन्तिम रचया काजा, रच रच आपे वेख वखाइंदा। सम्बल नगरी साजन साजा, गोबिन्द एका रंग चढ़ाइंदा। अंदर वड़ ग़रीब निवाज़ा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे वाजा, सुर ताल ना कोए बणाइंदा। दो जहानां राजन राजा, लोकमात हुक्म वरताइंदा। करे खेल देस माझा, भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग जीव थक्का मांदा, आपणा नैण ना कोए खुल्हाइंदा। गुरसिख विरला गीत सुहागी गांदा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। नज़र ना आए औदा जांदा, निरगुण रूप अनूप वटाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा पीर सांझा, गुर अवतार आप अख्वाइंदा।

★ १२ चेत २०१६ बिक्रमी निरँजन सिँघ, करतार सिँघ दे गृह चम्बल ज़िला अमृतसर ★

गुरसिख मंग सतिगुर आस, आसा पूरन हरि रघुराईआ। जन्म जन्म दी मिटे प्यास, जिस जन आपणा भेव चुकाईआ। मानस जन्म आवे रास, जून अजूनी पन्ध मुकाईआ। लेखे लग्गे पवण स्वास, स्वास स्वासां लेखे पाईआ। मेल मिलावा शाहो शाबाश, शहिनशाह होए सहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख इक्को आस वखाईआ। इक्को आस सतिगुर चरन, चरन ओट इक्क जणाइंदा। नेत्र खुल्ल्हे हरन फरन, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। दाता मिले करनी करन, करता पुरख नज़री आइंदा। नाता तुट्टे जन्म मरन, जीवण मुक्त कराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख इक्को आस वखाइंदा। इक्को आस सतिगुर रंग, रंग रंगीला इक्क वड्याईआ। आत्म अन्तर मेल मिलावा सेज पलँघ, सुहञ्जणी सेज इक्क सुहाईआ। गृह मन्दिर वजाए अनहद मृदंग, अनादी नाद वजाईआ। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जूठ झूठ देवे दंड, बल आपणा आप धराईआ। सुरती शब्दी टुट्टी देवे गंढ, गंढणहार बेपरवाहीआ। आत्म बख्शे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। बिन रसना जिह्वा सुणाए छन्द, गीत सुहागी आपे गाईआ। गुरसिख अन्त होवे ना नंगी कंड, समरथ देवे माण वड्याईआ। एथे ओथे दो जहान रखे ठंड, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। सतिगुर दयाल ठाकर स्वामी साहिब सदा बख्शंद, बख्शश आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आसा चरन भरवासा, चरन चरनोदक चरनामत एका रस प्याईआ।

★ १२ चेत २०१६ बिक्रमी चन्नण सिँघ दे गृह चम्बल ज़िला अमृतसर ★

गुरसिख सच्चा लाल लालण, हरि जू हरि हरि आप बणाइंदा। जुग जुग बणे मात दलालण, जगत दलाली जगत कमाइंदा। लख चुरासी चढ़े भालण, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाइंदा। लहिणा जाणे कृष्न ग्वालण, भेव अभेद ना कोए वखाइंदा। सदा सुहेला करे सदा प्रितपालण, प्रितपालक आपणी दया कमाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजालण, जीवण जुगत इक्क जणाइंदा। साचा मार्ग आए वखालण, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। मेल मिलाए जोत अकालण, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। पूरब लहिणा लेखे पाए घालण, कीती घाल झोली पाइंदा। मानस जन्म हल्ल होया सुवालण, दूजी वार जन्म फेर ना आइंदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसालण, धुर दरबारा आप बणाइंदा। जगत जुग चले अवल्लड़ी चालण, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम पकड़न आया दामन, पल्लू आपणे हथ्थ रखाइंदा। दरगाह साची होए ज़ामन, राए धर्म ना डंन लगाइंदा। सर्ब जीआं घट आपे जानण, घर घर आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। गुरसिख सेवा जगत जुग, हरि करता आप कराईआ। जीवण जीवण जीवत चुग, आपणा बन्धन आपे पाईआ। साहिब सुल्तान गोदी चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। आप सुहाए आपणी कुक्ख, आपे पिता आपे माईआ। मेटणहारा सगला दुःख, चिंता सोग दए गुवाईआ। नाता तुट्टा उलटा रुख, दस दस मास ना कोए तपाईआ। एका देवे साचा सुख, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप तराईआ। गुरमुख वेखे एका घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। किरपा करे करनी कर, करता पुरख वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले आपे फड़, फड़ फड़ आपणा बन्धन पाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, जगत भयानक रूप ना कोए वखाइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, रूप अनूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे अंग लगाइंदा। गुरसिख अंगीकार करे लाए अंग, अंग अंग नाल मिलाईआ। लख चुरासी बन्धन कट, बन्दीखाना इक्क वखाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, रथ आपणे लए चढ़ाईआ। मेल मिलाया नस्स नस्स, जुग चौकड़ी पार कराईआ। कलयुग अन्तिम पूरी आस, आसा अन्त पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मिलावा साचे दर, दर मन्दिर हरि नाम वज्जे वधाईआ।

★ १२ चेत २०१६ बिक्रमी केशो राम दे गृह जंडो के सरहाली ★

सच ज्ञान हरि का नाउँ, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांहों, हरि जू फड़ फड़ गले लगाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची धाम बहाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप उडाइंदा। सदा सुहेला सिर रखे ठंडी छाउँ, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम जिस दृढ़ाइंदा। साचा नाम एका एक, ओंकारा आप जणाईआ। राम नाम जन साची टेक, बिन हरि नामे अन्त ना कोए सहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रिहा वेख, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर साचे भगतां देवे आपणा भेत, अनुभव आपणा भेव खुल्हाईआ। नित नवित करे हेत, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम बुझाईआ। हरि का नाम सच दुआरा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि का नाम सच भण्डारा, हरि पुरख निरँजण आप वरताइंदा। हरि का नाम मीत मुरारा, एकँकारा रंग रंगाइंदा। हरि का नाम जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। हरि का नाम वसे सचखण्ड सच्चे दरबारा, बिन सतिगुर हथ्थ किसे ना आइंदा। हरि का नाम अलख अगोचर अगम्म अथाह, भेव कोए ना पाइंदा। हरि का नाम लिख लिख थक्के वेद चारा, आदि अन्त ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र ज्ञान इक्क समझाइंदा। एका मन्त्र नमो देव, देव आत्मा हरि जणाईआ। आदि जुगादि अलख अभेव, अगोचर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण सरगुण करे सेव, बण बण सेवक सेव कमाईआ। मेल मिलावा रसना जिहव, जिह्वा रसना अंग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाम लोकमात, हरि जू हरि हरि आप चलाइंदा। जन भगतां देवे आपणी दात, धुरदरगाही वंड वंडाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, आत्म परमात्म साचा चन्द चढ़ाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाथ, गा गा आपणा भेव खुल्हाइंदा। पंज तत्त काया चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। एका राम नाम प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। एका रघुपत वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। खेले खेल त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं आपणा पड़दा लाहइंदा। उत्तम रखे आपणी ज़ात, ज़ात पात वरन गोत ना वंड वंडाइंदा। आत्म परमात्म बन्ने नात, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। दरस दिखाए इक्क इकांत, दर घर साचे आसण लाइंदा। खेले खेल बहु बिध भांत, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्त्र नाम इक्क प्रगटाइंदा। मन्त्र नाम एका सति, सति सतिवादी आप प्रगटाईआ। लख चुरासी देवे मति, जीव जंत जंत समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वखाए तत्त, तत्तव तत्त भेव चुकाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, जिस जन आपणा

नाम जपाईआ। त्रैगुण अग्नी विच्चों लए रख, समरथ वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ इक्क समझाईआ। हरि का नाउँ इक्क इकल्ला, आदि जुगादि समाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, अटल्ल पदवी एका पाइंदा। सच संदेस नर नरेश जुगा जुगन्तर गुर अवतारा घल्ला, पीर पैग़म्बर मात पढ़ाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, नज़र किसे ना आइंदा। रसना जिह्वा फड़ाए पल्ला, बत्ती दन्द मुख सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम ज्ञान आप जणाइंदा। सच ज्ञान सतिगुर सरन, दूजी अवर ना कोए वड्याईआ। नाता तुट्टे वरन बरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग वखाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, आत्म ताकी कुंडा लाहीआ। करनी करे करता पुरख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ इक्क वखाईआ। एका नाउँ वखाए बिन नेत्र अक्ख, नैण नैण ना कोए रखाईआ। लख चुरासी विच्चों रखे वक्ख, भेव अभेदा आपणा भेव छुपाईआ। जिस जन मार्ग देवे दस्स, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। गुर अवतारां अन्तर वस, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, आत्म सेज सुहञ्जणी इक्क हंढाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, नूर नूर नूर रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म गाए जस, जस वेद पुराण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आपणे विच समाईआ। एका नाउँ हरि निरँकार, आदि जुगादि समाइंदा। जुग जुग लोकमात करे उज्यार, गुर शब्दी डंक वजाइंदा। सरगुण सरगुण पावे सार, निरगुण निरगुण पड़दा लाहइंदा। अक्खर अक्खर कर प्यार, एका दूआ जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम साचे घर वसाइंदा। साचे घर नाउँ वसेरा, महल अटल इक्क वड्याईआ। आपे जाणे दूर नेड़ा, नेड़ा दूर आपणे हथ्थ वखाईआ। एथे मेटे जगत अन्धेरा, अन्ध अन्धयार दए गंवाईआ। एका रंग वखाए सन्झ सवेरा, जिस जन आपणा नाम नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ दए वड्याईआ। एका नाउँ पुरख निरँजण सो, सति सतिवादी आप प्रगटाइंदा। एका नाउँ करे प्रकाश त्रै लोअ, लोआं पुरीआं आपणा भेव जणाइंदा। एका नाउँ लोकमात चौदां हट्ट देवे ढोआ ढो, ब्रह्मण्ड खण्ड इक्क वसाइंदा। एका नाउँ लख चुरासी बीज देवे बो, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाइंदा। एका नाउँ आदि जुगादी नवां नरोअ, जन्म मरन विच ना आइंदा। हरि का नाम ना जाणे को, बिन बूझे भेव ना कोए पाइंदा। हरि का नाम धार वखाए एका दो, निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। हरि का नाउँ अमृत मेघ देवे चोअ, साचा झिरना इक्क झिराइंदा। हरि का नाम करे साचा मोह, ईश जीव जीव ईश जगदीस बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। साचा नाउँ हँ ब्रह्म धार, पारब्रह्म प्रगटाईआ। साचा नाउँ

निरगुण नाद धुन्कार, अनादी नाद वजाईआ। साचा नाउँ विष्न ब्रह्मा शिव दए अधार, ब्रह्मा वेता हरि जस गाईआ। साचा नाउँ रहे जुग चार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। साचा नाउ चार वेद दए अधार, शास्त्र सिमरत पुराण नाल मिलाईआ। साचा नाउँ गीता ज्ञान कर उज्यार, अठ दस करे कुड़माईआ। साचा नाउँ अंजील कुरान पावे सार, तीस बतीसा ढोला गाईआ। साचा नाउँ खाणी बाणी खोल्ह किवाड़, भेव अभेदा दए जणाईआ। साचा नाउँ वसे सच्चे घर बाहर, दर घर साचे सोभा पाईआ। साचा नाउँ गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साचा नाउँ घट घट रिहा पसार, लख चुरासी रिहा समाईआ। साचा नाउँ लिख लिख पढ़ पढ़ थक्का जगत संसार, अन्त दस्स ना सके कोई राईआ। हरि का नाउँ अलख अगोचर अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी खेल कराईआ। हरि का नाउँ वसे ठांडे दरबार, थिर घर साचे डेरा लाईआ। हरि का नाउँ रवि ससि रहे उच्चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा नाउँ आप सालाहीआ। हरि का नाउँ सिफ्त सलाह, सिफ्त सिफ्त विच ना आईआ। हरि का नाउँ सच मलाह, जुग जुग बेड़ा मात चलाईआ। हरि का नाउँ बख्शे सर्ब गुनाह, जो जन रसना जिह्वा गाईआ। हरि का नाउँ डुब्बदे पाथर लए तरा, पाहन आपणे गले लगाईआ। हरि का नाउ अग्नी जल लए तरा, सिल पूजस वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आपणे हथ्थ रखाईआ। एका नाम रखे हथ्थ, सो पुरख निरँजण वड वड्याआ। जुग जुग जन भगतां देवे आपणी वथ, वस्त अमोलक झोली पाया। सति सतिवादी राग दस्स, अन्तर मन्त्र भेव खुल्हाया। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाया। सुरती शब्दी एका जस, ढोला सोहला इक्क सुणाया। निरगुण सरगुण होए वस, सरगुण अंदर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ निरगुण आप प्रगटाया। आपणा नाउँ श्री भगवान, आदि जुगादि जणाइंदा। जुग करता खेले खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। सांतक सति सति मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। राम राम राम प्रधान, रम्मईआ आपणा खेल कराइंदा। सर्ब जीआं दा साचा काहन, लख चुरासी गोपी आप नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा नाम आप प्रगटाइंदा। एका नाम आदि पुरख आदि आदि प्रगटाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता रोग ना कोए जणाईआ। आपणे उत्ते करके तरस, पारब्रह्म ब्रह्म लए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप दरसाईआ। आपणा नाउँ आपे रख, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म खेल अलखना अलख, हँ ब्रह्म वंड वंडाइंदा। सोहँ रूप हो प्रतख, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। आदि

जुगादी एका मन्दिर रिहा वस, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण नूर निरगुण प्रकाश, निरगुण जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका नाउँ रखाइंदा। एका नाउँ आदि अन्त, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। आदि बणाई आपे बणत, अन्त आपे वेख वखाइंदा। करे खेल पूरन भगवन्त, भेव कोए ना पाइंदा। वेस वटाए जुगा जुगन्त, जुग करता रूप वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मेला नारी कन्त, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क रखाइंदा। साचा नाम हँ ब्रह्म, पारब्रह्म समाया। सो पुरख निरँजण जाणे आपणा कर्म, निहकर्मी भेव किसे ना आया। हँ ब्रह्म ना कोई वरन, अवरन रूप वटाया। सो पुरख निरँजण साची सरन, सरनगति इक्क जणाया। हँ ब्रह्म तरनी तरन, इक्को ओट तकाया। सो पुरख निरँजण घाड़न घड़न, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ इक्क हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप वखाया। आपणा नाउँ श्री भगवाना, आदि जुगादि वखाईआ। निरगुण सरगुण कर प्रधाना, सोहँ धार आप चलाईआ। सचखण्ड अंदर थिर घर मकाना, जोती शब्दी वंड वंडाईआ। एका राग इक्क तराना, त्रैगुण अतीता आप सुणाईआ। खेले खेल नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। शाह पातशाह राज राजाना, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेव लगाना, लोकमात मात प्रगटाईआ। अन्तिम पंज तत्त मेटे सर्ब निशाना, थिर कोए रहिण ना पाईआ । आदि जुगादी इक्क भगवाना, भगवन आपणा खेल कराईआ। आत्म परमात्म मेला दो जहानां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आदि जुगादि वेस वटाईआ। जोती शब्दी खेल गुण निधाना, गुणवन्ता आप वखाईआ। बिन सतिगुर बूझे ना कोए विच जहाना, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। नानक निरगुण दे दे गया निशाना, सति असति समझाईआ। वेद व्यास लिख के गया परवाना, जगत परवानगी हथ्थ फड़ाईआ । चारे वेद देण ब्याना, आपणा भेव खुल्हाईआ। अंजील कुरान करे सलामा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। पीर पैग़म्बर देवे पैग़ामा, करे हक़ पढ़ाईआ। साचे मन्दिर वसे श्री भगवाना, परवरदिगार सच्चा माहीआ। एका कलमा नबी पढ़ाना, रसूला करे आप रसाईआ। एका अल्फ़ी तन हंढाना, पंज तत्त तत्त वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर एका नाउँ आपणा आप चलाईआ। हरि का नाउ चले जग, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, सूरबीर हुक्म वरताइंदा। जन भगतां बुझाए लग्गी अग्ग, अमृत आत्म मेघ बरसाइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। मुर्शद मुरीद वखाए हज्ज, काया काअबा खोल्ह खुल्हाइंदा। बोध ज्ञाना पंडत नद, घर मन्दिर नाद वजाइंदा। सच दुआरे बहे सज, आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप अल्लाइंदा। आपणा नाउँ आलमीन, इलाही अल्ला आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे लोक तीन, चौदां लोक चौदां तबक रिहा समाईआ। निरगुण सरगुण हो अधीन, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। साहिब सुल्तान वड प्रबीन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा नाउँ रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप वड्याईआ। हरि का नाउँ वड्डा वड, भेव किसे ना आया। आपणे अन्तर गुर अवतार कढ्ढ, लोकमात राह चलाया। पार किनारा ना कोई दस्सी हद्द, बेअन्त आप अख्वाया। राग रागनी गा गा गए छन्द, गीत गोबिन्द ढोला गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, नारी कन्त एका रंग वखाया। नारी कन्त निरगुण सरगुण धार, हरि जू हरि हरि आप चलाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। ईश जीव करे श्रृंगार, सोलां इच्छया सोलां कलीआं तन सजाइंदा। सोलां कला जगत अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर बल वधाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अपार, अपरम्पर आप वखाइंदा। लेखा जाणे जुग चार, नव नौ चार चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। एका नाउँ बोल जैकार, जै जैकारा आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए ख़बरदार, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा नाल मिलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, पुरी लोअ गगन पतालां फेरा पाइंदा। रवि ससि दे हुलार, मंडल मण्डप आप जगाइंदा। समुंद सागर वेखे डूँग्घी गार, जल थल महीअल आपणा भेव चुकाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे वेखणहार, नेत्र लोचण नैण इक्क उठाइंदा। लख चुरासी करे बेदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लए उठाल, चार वरन अठारां बरन आप जगाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले वेखे धर्मसाल, घर घर आपणा फेरा पाइंदा। दर दरवेश नर नरेश चार कुण्ट वेखे वजदा ताल, ताल तलवाड़ा कवण हथ्थ रखाइंदा। सृष्ट सबाई जगत अन्धेरा हरि का नाउँ ना सके कोई भाल, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरि के नाम बिन होए सर्ब कंगाल, रम्मईआ राम नज़र किसे ना आईआ। चार कुण्ट होए बेहाल, सुरती शब्द ना कोए बंधाईआ। कलयुग चले अवल्लड़ी चाल, पूरब लेखा सब दा रिहा वखाईआ। किसे दर ना दिसे सच्चा धन माल, झूठी माया लुट्टी सर्ब लोकाईआ। हरि का नाउँ सदा बेमिसाल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर गए मिसल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, साचा नाउँ शब्द ज्ञान देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदेसा नर नरेशा साचे भगत आप समझाईआ। साचे भगतां देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। मेल मिलावा सीआ राम, रघपत आपणा रूप वटाइंदा। नेत्र लोचण पेखत कृष्ना काहन, नाम बंसरी इक्क वजाइंदा। साचा मेला गोपी काहन, साची सखीआं मंडल रास रचाइंदा। चतुर्भुज नौजवान, आदि

शक्ति खेल खिलाइंदा। अष्टभुज हो प्रधान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाइंदा। एका नूर श्री भगवान, रूप अनूप धराइंदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, जुग करता आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जन भगतां देदां आया माण, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान वेद व्यासा लेखा पूर कराइंदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा वसणहारा सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ आपणा बंक वड्याइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत कोई ना सके पछाण, चोटी चोटी नज़र किसे ना आइंदा। एका नाउँ धुर फ़रमान, सच संदेसा आप सुणाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाँई सारे गाण, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवे माण, चार वरन गले लगाइंदा। जात पात राउ रंक राज राजान सर्ब मिट जाण, शाह पातशाह एका हुक्म सुणाइंदा। हरि का नाउँ सदा बलवान, बल आपणा आप वखाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे निशान, जूठा झूठा मन्दिर ढाहइंदा। सतिजुग सति करे प्रधान, सच प्रधानगी इक्क कमाइंदा। एका पुरख इक्क परवान, तख्त निवासी इक्क सुणाइंदा। सोहँ शब्द लख चुरासी रखे आण, बेपहचान नज़र किसे ना आइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी बूझ बुझाइंदा। साचे भगतां मेला विच जहान, बिन पूरन भगती हथ्थ किसे ना आइंदा। पूरब लहिणा लए पछाण, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। साचे सन्तां देवे इक्क ज्ञान, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। गुरमुख दर करे परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुरसिख साचा चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। लख चुरासी जीव अञ्याण, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। पंज तत्त लग्गा मगर शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सर्ब सुहाइंदा। आत्म अन्तर ना कोए ज्ञान, रसना पढ़ पढ़ सर्ब गाइंदा। जिस जन हरि जू हरि हरि मिले आण, तिस आपणा नाम समझाइंदा। एथे ओथे दरगाह साची देवे माण, सचखण्ड दुआरे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ मन्त्र इक्क पढ़ाइंदा।

★ १२ चेत २०१६ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड जौड़े ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण खेल अपारा, आदि आदि आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण करे खेल अपारा, अभेव भेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। एकँकारा वसे धाम न्यारा, महल अटल सोभा पाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। श्री भगवान खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अथाह बेपरवाह दिस किसे ना आइंदा। अबिनाशी करता गुपत ज़ाहरा, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, सच पसारी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे करतार, भेव कोए ना आईआ। निरगुण जोत नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। सचखण्ड कर त्यार, दर घर साचे सोभा पाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, राज राजान आप अख्वाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। दर दरवेश बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। देवणहार वस्त थार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। करे कराए करनेहार, करता पुरख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव पुरख अगम्म, एका एक जणाइंदा। निरगुण निरवैर अजूनी रहित आपे पए जम्म, मात पित ना कोए बणाइंदा। आदि जुगादि आपणा जाणे आपे कम्म, करता पुरख आपणी कार कराइंदा। खेले खेल श्री भगवन, भगवन आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, सच सिंघासण सोभा पाइंदा। सच सिंघासण सोभावन्त, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी महिमा अगणत, अगणत आपणी खेल जणाईआ। वेस वटा नारी कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा भेव खुल्हाईआ। अनुभव भेव खुल्हाए अवल्ला, दिस किसे ना आइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। सच सिंघासण पुरख अबिनाशन एका मल्ला, एकँकारा सोभा पाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी वंड आप वंडाइंदा। आपणी वंड वंडे निरँकार, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा कर त्यार, आपणी इच्छया पूर कराईआ। साची भिच्छया पाए अगम्म अपार, वस्त अमोलक आप वरताईआ। थिर घर साचा कर त्यार, घर घर विच घाड़न लए घड़ाईआ। जननी जन बण सच्ची सरकार, दाई दाया सेव कमाईआ। पूत सपूता शब्द दुलार, थिर घर साचे आप बहाईआ। एका हुक्म एका वार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा पसार, लोआं पुरीआं तेरी गोद बहाईआ। रवि ससि तेरा चमकार, किरन किरन नाल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा परवार, त्रै त्रै लेखा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल करे समरथ, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे आपे वस, थिर घर शब्दी सुत बहाईआ। इक्क सुणाए साचा जस, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाईआ। अन्तर अन्तर आपे वस, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। धुर फ़रमाणा एकँकार, एका एक जणाइंदा। थिर घर साचा खोल्ह दुआर, शब्दी वंड वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसार, निरगुण निरगुण बन्धन पाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, रजो तमो सतो संग निभाइंदा। पंचम मेला अगम्म अपार, रूप

अनूप आप वटाइंदा। निरगुण सरगुण दए अधार, एका बन्धन पाइंदा। घाड़त घड़े बण ठठयार, लख चुरासी जीव प्रगटाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर पसार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आत्म परमात्म दे अधार, ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव खोल्ह किवाड़, साचे मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची वंड श्री भगवान, आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्दी सुत वड बलवान, हरि सतिगुर आप उठाईआ। धुरदरगाही इक्क निशान, सति पुरख निरँजण इक्क वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, दाता दानी सहिज सुखदाईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंचम जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण वेखे आण, बेऐब नाउँ खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग शब्दी धार, गुर सतिगुर आप लगाइंदा। लख चुरासी कर पसार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाइंदा। आत्म परमात्म भेव न्यार, काया बंक बंक वड्याइंदा। घर विच घर कर त्यार, त्रैगुण अतीता खेल कराइंदा। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाइंदा। ठांडा सीता अमृत झिरना झिरे अपार, निझर रस आप रखाइंदा। साची सेजा कर त्यार, कन्त कन्तूहल सोभा पाइंदा। आपणा नाउँ नाद धुन्कार, धुंन अगम्मी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा । साचा खेल करे करतारा, करनहार इक्क अख्वाइंदा। लख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए अधारा, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। सरगुण सरगुण इक्क सहारा, तत्तव तत्त जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी सेवा इक्क समझाइंदा। शब्द गुर उठ बलवान, सो पुरख निरँजण आप उठाईआ। तेरा मेरा इक्क विधान, एका हुक्म रिहा जणाईआ। दो जहानां वेखणा मार ध्यान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तेरा नैण खुल्हाईआ। लख चुरासी देणा माण, मेरा नाउँ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत सुत उठाईआ। शब्दी सुत गया उठ, आपणा बल रखाया। पारब्रह्म प्रभ गया तुठ्ठ, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। लख चुरासी वेखां सुत, जन जननी गोद सुहाया। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बल आप धराया। साचा बल एकँकार, शब्दी शब्द विच समाईआ। विष्न विश्व देवे धार, ब्रह्मा ब्रह्म करे पढ़ाईआ। बिन अधर अक्खर कर त्यार, तुआरफ़ आपणी तारीफ़ सुणाईआ। ब्रह्मा वेता वेखे मुख चार, चारे वेद रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड आपे रिहा पाईआ। आपणी वंड पुरख अकाला, एका एक रखाइंदा। आदि जुगादी दीन दयाला, भेव अभेद खुल्हाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दरगाह साची आसण लाइंदा। आपणी

६४६
११

इच्छया प्रगटाए काल महांकाला, आप आपणा रंग वखाइंदा। निरगुण चले अवल्लड़ी चाला, सरगुण आपणे मार्ग लाइंदा। शब्द अगम्मी बण दलाला, लख चुरासी दलाली आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घाड़न आप घड़ाइंदा। साचा घाड़न हरि जू घड़, आपणी दया कमाईआ । सरगुण अंदर निरगुण वड़, आपणा मुख छुपाईआ। निरगुण अन्तर रिहा पढ़, आपणा राग सुणाईआ। सरगुण सके ना कोई फड़, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। सच महल्ले बैठा चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल कराईआ। ना जन्मे ना जाए मर, जन्म मरन विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म आपणी वंड वंडाईआ। आत्म परमात्म निरगुण धारा, धार धार विच प्रगटाइंदा। आत्म परमात्म खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। आत्म परमात्म कर पसारा, परम पुरख वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म कर उज्यारा, जोत निरंजण डगमगाइंदा। आत्म परमात्म नादी धारा, नाद अनादी आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म दे सहारा, एकँकारा आपणा बन्धन पाइंदा। आत्म परमात्म कर वणजारा, साचा हट्ट इक्क वखाइंदा। आत्म परमात्म वेखे अखाड़ा, पंज तत्त आपणा नाच नचाइंदा। आत्म परमात्म बन्द कराए अंदर बहत्तर नाड़ा, तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म रक्त बूंद करे उरधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आत्म परमात्म खेल अवल्ला, हरि जू आप कराया। आत्म परमात्म फड़के पल्ला, चरनी सीस झुकाया। तुध बिन होए रहां झल्ला, मेरी धीर ना कोए धराया। मैनूं रख्या डूँघी डल्ला, पंज तत्त अंदर बन्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाया। दे मंग मेरे भगवान, आत्मा नैणां नीर वहाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ बाली बाल नादान, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। तुध बिन सुंञा दिसे मकान, काया बंक कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। तुध बिन सहाई ना कोए मीता, संग नज़र कोए ना आइंदा। तेरी कोई ना जाणे रीता, भेव कोए ना पाइंदा। तूं सदा रहें अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। तेरा मन्दिर ठांडा सीता, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाइंदा। तेरा विछोड़ा डूँघा सागर, भेव कोए ना आइंदा। मैं इक्क इकल्ला की करां काया गागर, तुध बिन कम्म किसे ना आइंदा। तूं साहिब सुल्तान मेहरवान मेरा नूर कर उजागर, तुध बिन नूर ना कोए चमकाइंदा। मैं तेरे दर बणां सौदागर, हट्ट तेरे फेरा पाइंदा। तूं निमाणे देणा आदर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा तेरा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। देवे वर श्री भगवाना, आपणी दया कमाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म करे परवाना, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। वेस वटाए नौजवाना, नव नौ आपणी धार चलाईआ। पंज तत्त वखाए इक्क निशाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। आपणा भेव देवे खोल्ह, आदि पुरख अबिनाशा। आदि जुगादि तोले तेरा तोल, लख चुरासी अन्तर वसे पासा। आपणा पड़दा देवे खोल्ह, मंडल साचे पावे रासा, शब्दी शब्द जाए मौल, तेरी पूरी करे आसा। सति सतिवादी एका करे कौल, वेले अन्त ना होए निरासा। निरगुण सरगुण प्रगटे उपर धौल, पंज तत्त करे वासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच दिलासा। सच दिलासा दे भगवान, आपणी दया कमाईआ। आपणा लेखा दस्से महान, लेखा लिखण विच ना आईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी करे परवान, चारे बाणी दए पढ़ाईआ। चार कुण्ट झुलाए निशान, उतर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। चार जुग दए ज्ञान, चार वेद राग अल्हाईआ। चार वरन देवे माण, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप समझाईआ। धुर दी धार एकँकार, आपणी आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, तेरा मेल मिलाइंदा। बोध अगाधा नाम जैकार, लोकमात सुणाइंदा। घर घर दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाइंदा। औखी घाटी देवे चाड़्ह, पार किनारा इक्क जणाइंदा। नाउँ रखाए गुर अवतार, गुर शब्दी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपे लाहइंदा। आपणा पड़दा देवे लाह, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शब्दी गुर बण मलाह, लख चुरासी बेड़ा लए तराईआ। जुग चौकड़ी वंड वंडा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुका, कोटन कोटि काल बिताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रगटा, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम चौकड़ दए समझाईआ। अन्तिम चौकड़ आए मात, थिर कोए रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण देवे दात, पंज तत्त मिले वड्याईआ। गुर अवतार देवे साथ, सगला संग निभाईआ। नाम जणाए पूजा पाठ, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। जुग जुग चलाए आपणा राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। सनक सनंदन संनातन कुमारा, पहला रूप वटाईआ। बराह रूप कर पसारा, दूजा नाउँ धराईआ। यगे पुरष हरि खेल न्यारा, तीजी वंड वंडाईआ। चौथा खेल करे न्यारा, हावग़रीब सच्ची सरनाईआ। पंचम नर नरायण कर पसारा, कपल मुन छेवां आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड आप वंडाईआ। साची वंड हरि निरँकार, आपणी

आप वंडाइंदा। भेव ना पाए वेद चार, भेव अभेद आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यार जोती जाता डगमगाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव चुकाइंदा। भेव चुकाए कपल मुन, मुन मुनीशर भेव ना राईआ। रिषभ देव आपे चुण, आपणी बूझ बुझाईआ। पिरथू जाणे हरि जू गुण, मस्तक आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कछप देवे माण वड्याईआ। कछप देवे आपणा माण, धनंतर माण दिवाइंदा। मोहणी रूप श्री भगवान, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेद अभेदा आप जणाइंदा। भेव अभेदा अगम्म अथाह, एका एक खुल्हाईआ। अछल अछेदा शहिनशाह, वल छल आपणी धार चलाईआ। बावन रूप आप वटा, बल दुआरे मंगण जाईआ। हँसा खेल करे वेस वटा, सुत ब्रह्मा दए पढ़ाईआ। नर सिँघ मेला सहिज सुभा, प्रहिलाद आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरी नरायण रूप वटाईआ। हरी नरायण वेस अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। सतिजुग फड़ाया आपणा पल्ला, वार अठारां नूर चमकाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, लोकमात वेख वखाइंदा। त्रेता फड़ाए आपणा पल्ला, त्रैगुण अतीता आपणा वेस वटाइंदा। धुर संदेस एका घल्ला, परसराम राम मिलाइंदा। रघपत रघनाथ लेखा जाणे दो जहाना, गढ़ हँकारी आप तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए दोए आपणी धार चलाइंदा। दोए दोए रूप अठारां दो बीस, बीस खेल कराईआ। त्रेते मुकी तेरी हदीस, द्वापर आपणा माण वधाईआ। वेद व्यासा पीसण गया पीस, पुराण अठारां ढोला गाईआ। नारद मुन झुकाए सीस, ब्रह्मा वेता रिहा सलाहीआ। सुरस्ती मंगे इक्क असीस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। करे खेल आप जगदीस, मुकंद मनोहर लखमी नरायण रूप वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए दोए आपणा नूर दरसाईआ। दोए दोए रूप कृष्ना कान्हा, एका बंसरी नाम वजाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणी धार चलाइंदा। एका मन्त्र सच ज्ञाना, अठ दस आप पढ़ाइंदा। एका तीर सच निशाना, बिन चिल्ले आप चलाइंदा। रथ रथवाही खेल महाना, बण सेवक सेव कमाइंदा। जन भगतां देवे माणा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। द्वापर मिटे अन्त निशाना, कलयुग आपणा बल वखाइंदा। कूड़ो कूड़ होया प्रधाना, चारों कुण्ट डंक वजाइंदा। धर्म शर्म मिटे निशाना, आपणा बल वखाइंदा। चार वरन दए अभिमाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अवल्ला आप कराइंदा। वेस अवल्ला बोधन बोध, ज्ञान ज्ञान नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म आपे सोध, भेव अभेद खुल्हाईआ। पंज तत्त विकारा करके जोध, एका नूर दए दरसाईआ। भेव खुल्हाए आपणा

गोझ, द्वैती पड़दा आपणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाईआ। आपणा पड़दा आपे लाह, हरि जू खेल कराइंदा। नूरी जल्वा नूर प्रगटा, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। मुकामे हक़ आप खुदा, आपणी इच्छया आप धराइंदा। मौला रूप बण मलाह, बिस्मिल आपणा खेल कराइंदा। मुसल्ला लए उठा, कोहतूर जल्वा आप जणाइंदा। ईसा रंग दए रंगा, पूरी आसा आप कराइंदा। आपणा भेव दए खुल्हा, नूरी नूर नज़री आइंदा। दोए जोड़ पए सरना, पिता पूत खुशी मनाइंदा। मेरे पिच्छे आए मेरा बेपरवाह, लोकमात फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग नूरी अल्ला, आलमीन आप रंगाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए आपणा पल्ला, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। खेल कराए इक्क अवल्ला, ऐनलहक हक़ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुहम्मद मेला सहिज सुभाईआ। मुहम्मद मेला परवरदिगार, परवाना हथ्थ इक्क फड़ाइंदा। धुर संदेसा साचा यार, एका वार, जणाइंदा। धुर फ़रमाना धुर दी धार, धुरदरगाही आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाइंदा। आपणा रंग रंगे करतारा, भेव अभेद जणाया। मुहम्मद बणे दर भिखारा, निउँ निउँ सीस झुकाया। साचा सजदा परवरदिगारा, दर बरदा रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाया। धुर फ़रमाणा एका वार, पुरख अकाला आप सुणाईआ। मुहम्मद तेरी मुहम्मदी धार, चौदां चौदां दए वड्याईआ। अन्तिम लेखा दए निवार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नानक निरगुण प्रगटे विच संसार, पंज तत्त काया चोला लए हंढाईआ। पुरख अबिनाशी करे प्यार, सचखण्ड दुआरे लए बुलाईआ। एका देवे वस्त थार, नाम सति झोली पाईआ। चार वरन करे प्यार ऊँच नीच राउ रंक ना कोए रखाईआ। साची सिख्या विच संसार, साख्यात रूप प्रगटाईआ। अन्तिम बोले इक्क जैकार, जीव जंत सुणाईआ। महांबली उतरे आपणी वार, मात पिता ना कोए जाईआ। निहकलंक जोधा सूरा बली बलकार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग लहिणा दए मुकाईआ। एका जोती दस अवतारा, गुर गुर वेस वटाइंदा। पुरख अकाल वेखणहारा, पेख पेख आपणी खुशी मनाइंदा। शब्दी शब्द सुत दुलारा, गोबिन्द आप प्रगटाइंदा। लोकमात दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका इष्ट अगम्म अपारा, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। उच्ची कुक बोल जैकारा, फतहि डंका इक्क वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल गोबिन्द धार, पुरख निरँजण आप कराईआ। धुर संदेसा पहली वार, लोकमात सुणाईआ। चौथे जुग आए हार, चार यारी रहिण ना पाईआ। पंचम मीता पंच करे प्यार, पंचम साचा ढोला इक्क सुणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर माण वड्याईआ। शब्दी गुर गुर गोबिन्द, सिँघ आपणा रूप वटाइंदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप अख्वाइंदा। अमृत आत्म सागर सिन्ध, भर प्याला जाम प्याइंदा। गुरसिख बणाए आपणी बिन्द, मात पित आप हो जाइंदा। दीन दयाल सदा बख्शंद, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। करे खेल पुरख अकाला, गोबिन्द धार चलाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, अनुभव भेव चुकाईआ। सच संदेसा नर नरेसा देवे इक्क सुखाला, मुहब्बत आपणी आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम मिटे झूठ जंजाला, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दस्से एका धर्मसाला, सत्त दीप एका गुरू इष्ट मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव खोल्हे करतारा, गोबिन्द हरि हरि भेव चुकाइंदा। गुर गोबिन्द बोल जैकारा, सिँघ आपणी भबक लगाइंदा। पुरख अकाल इक्क बलकारा, बल आपणा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल इक्क जणाइंदा। आपणा खेल श्री भगवान, आदि जुगादि कराईआ। गुर गोबिन्द दस्से सच निशान, सृष्ट सबाई दए जणाईआ। कलयुग अन्तिम आए नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, गुर गोबिन्द आख सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी जामा पाउणा, रूप अनूप वटाइंदा। कल कल्की अवतार अख्वाउणा, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाइंदा। सत्तां दीपां डेरा ढाउणा, दो जहानां चरनां हेठ दबाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वक्त चुकाउणा, करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम आए जग, हरि जागरत जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई तपे अग्ग, त्रैगुण अग्नी तत्त जलाईआ। कोई ना करे साचा हज्ज, काया काअबा नज़र किसे ना आईआ। गुर चरन दुआर बहे ना कोई सज, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आत्म रस ना होए कोई मदि, नाम रस ना कोए चखाईआ। आपणा पड़दा ना सके कोई कज्ज, बेपड़द फिरे लोकाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाला सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा सके कोई ना लभ्भ, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणा इष्ट जाण छड्ड, दृष्ट सके ना कोए खुल्हाईआ। बिन हरि नामे खाली होवण हड्ड, पंज तत्त काया कम्म किसे ना आईआ। प्रगट होए पुरख समरथ, निहकलंका नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग आरयू लख चार बत्ती हज़ार, वेद पुराण रहे गाईआ। गोबिन्द लिख लिख लेखा गया निवार, कलयुग कर्म नाल मिलाईआ। भरम भुलेखे जीव गंवार, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। अन्तिम

आया कल कल्की अवतार, निहकलंक नाउँ रखाईआ। शब्द डंका वज्जाए विच संसार, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। साचा खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां रिहा चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल करे निरँकार, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी करे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलयुग मेटे धूआँधार, रैण अन्धेरी दए मिटाईआ। लहिणा देणा मुकाए तेई अवतार, भगत अठारां नाल मिलाईआ। गुर दस बोल जैकार, जै जैकार रहे सुणाईआ। वाह वाह तेरी कुदरत परवरदिगार, ईसा मूसा मुहम्मद सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं आई हार, चौदां तबक देण दुहाईआ। अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नाता छुटे अन्त संसार, अन्त कम्म किसे ना आईआ। प्रगट होया इक्क परवरदिगार, जिस दा कलमा रहे गाईआ। अमाम अमामा सिर सिक्दार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग लाए इक्क दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पहली चेत दिवस विचार, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती जाता इक्क रघुराईआ। निहकलंक एका एक, आदि जुगादि समाइंदा। कलयुग अन्तिम धारे भेख, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया भेव छुपाइंदा। पूरा लेखा करे दस दस्मेश, नानक लेखा ना कोए मिटाइंदा। लहिणा देणा चुकाए मुल्ला शेख़, पीर दस्तगीर नज़र कोए ना आइंदा। जन भगतां करे सच्चा हेत, गुरसिख सज्जण आप मिलाइंदा। लख चुरासी झूजे कलयुग खेत, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग अग्नी तपे बालू रेत, सतिगुर अर्जन गुर गुर बाणी बाण लगाइंदा। कलयुग जीव वेखण खेड, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक हरि अख्वाइंदा। निहकलंक श्री भगवाना, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। वसणहारा धाम मकाना, सम्बल बैठा आसण लाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप प्रगटाईआ। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सुणाए एका गाणा, पुरख अकाल करे पढ़ाईआ। एका मर्द इक्क मर्दाना, सच मर्दानगी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नाउँ धराईआ। निहकलंक नाउँ रख, हरि आपणा खेल कराइंदा। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, पिछला मूल चुकाइंदा। सन्त सुहेले लए रख, गुर चेले मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा। कलयुग अन्तिम फेरा पा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द सूरे चढ़े चाउ, घर आपणे खुशी मनाईआ। चार जुग दा लहिणा दए चुका, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। सृष्ट

सबाई दए इक्क सलाह, पुरख अकाल इष्ट वखाईआ। गुरू शब्द दए पनाह, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाँई एका कलमा दए पढ़ा, एका नाउँ करे रुशनाईआ। खड़ग खण्डा विच ब्रह्मण्डां दए चमका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम लए अवतारा, निरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, दो जहानां आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पार किनारा, जोती जोत मेल मिलाइंदा। गुरमुख साचे दे सहारा, तख्त निवासी तख्त बहाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, भेव अभेदा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर पुरख अकाला, चले चलाए अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पाइंदा। भेव ना पाए कोई जीव, जगत पड़दा ना कोए उठाईआ। अन्तिम सब दा लहिणा मुकणा साढे तिन्न तिन्न हथ्थ सींव, दूसर वंड ना कोए रखाईआ। सीस बहा बन्ने नींव, गोबिन्द बाले छोटे नीहां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल कराईआ। नीहां हेठ छोटे बाल, गोबिन्द सेव लगाईआ। गुर गोबिन्द आपणा दे के गया इकबाल, अन्तिम आवे सच्चा माहीआ। काल महांकाल रखे नाल नाल, आपणे चरनां सेव लगाईआ। जन भगतां करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। त्रैगुण माया तोड़ ज़ंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। सृष्ट सबाई मार्ग दए वखाल, वरन बरन रहिण कोए ना पाईआ। इक्को पूजा रहे अकाल, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम हरि अवतारा, अवर अवर ना कोए जणाइंदा। डूँग्घी भँवरी जगत सागर वेखे गारा, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। नज़र ना आए विच संसारा, बेनज़ीर आपणी नज़र छुपाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। गुरमुख विरला बूझे कर विचारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पुरख अबिनाशी इक्क अख्वाइंदा। निहकलंक पुरख अबिनाश, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। निहकलंक हरि शाहो शाबाश, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निहकलंक हरि सर्ब गुणतास, गुणवन्ता वड वड्याईआ। निहकलंक हरि आदि जुगादि आपणी पूरी करे आपे आस, निरासा रूप ना कोए वटाईआ। निहकलंक हरि लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल पन्ध मुकाईआ। निहकलंक हरि दो जहानां पावे आपणी रास, लख चुरासी गोपी काहन नचाईआ। निहकलंक हरि निरगुण हरि निरवैर पुरख अकाल जन भगतां वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा गुरमुख तेरी पूरी करे आस, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, बिन पवण स्वास आपणी धार चलाईआ। पवण स्वास ना कोए पाणी, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। शब्द गुर गुर बलवानी, बल आपणा आप धराइंदा। गोबिन्द गुर इक्क निशानी, सच निशाना इक्क वखाइंदा। करे खेल शहिनशाह शाह पातशाह सच्चा सुल्तानी, लोकमात वेस वटाइंदा। अगली गाए अकथ कहाणी, चार वरनां आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम मुकणा पन्ध, हरि पाँधी आप मुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए खण्ड खण्ड, गोबिन्द खण्डां इक्क चमकाईआ। लख चुरासी होए रंड, आत्म परमात्म ना कोए हंढाईआ। किसे हथ्थ ना आए निजानंद, निज घर मिले ना सच्चा माहीआ। रसना खा खा थक्की गंद, जूठ झूठ रंग वखाईआ। माया ममता हउमे हंगता झूठी कंध, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। फिरे दुहाई विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। नाता तुट्टे जेरज अंड, सगला मेल ना कोए मिलाईआ। झूठी क्रिया मिटे पखण्ड, सच सुच्च लए प्रगटाईआ। करे प्रकाश साचा चन्द, चन्द चांदनी आप रुशनाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को छन्द, एका गीत अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग डेरा देवे ढाहीआ। कलयुग डेरा जाए ढट्ठ, सतिगुर पूरा आपे ढाहइंदा । ना कोई तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा कोए ना पाइंदा। ना कोई शिवदुआला दिसे मट्ठ, मन्दिर मस्जिद ना कोए वड्याइंदा । प्रगट होए इक्क पुरख समरथ, समरथ आपणी खेल कराइंदा। लख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुण्ट आप भुवाइंदा। लहिणा देणा हथ्थों हथ्थ, बीस बीसा आप चुकाइंदा। वसणहारा घट घट, भेव अभेदा आप जणाइंदा। जन भगतां मारे इक्को सट्ट, नाम खण्डा हथ्थ उठाइंदा। दूई द्वैती मेटे फट्ट, बजर कपाटी पड़दा लाहइंदा। घर वखाए चौदां हट्ट, लोक परलोक डेरा ढाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया आप खपाइंदा। कलयुग क्रिया जाए मुक्क, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। मनमुखता बूटा जाए सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शब्द गुर सूरबीर जाए उठ, एका चिल्ला नाम चढ़ाईआ। सब दी जड़ देवे पुट्ट, ना कोई सके मात लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा फेरा पाईआ। आपणा फेरा पाए हरि हरि, भेव कोए ना पाइंदा। लख चुरासी वेखे घर घर, डूँग्घी कंदर वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले आपे फड़ फड़, गुर चेले नाल मिलाइंदा। लहिणा चुकाए सीस धड़ धड़, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़ खड़, स्वच्छ सरूपी नज़री आइंदा । वेखे खेल जन्मे मर मर, मरन जन्म आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार

९५७
११

जुग दी कीती आप उलटाइंदा। चार युग दा उलटा गेड़ा, चौथे जुग रखाईआ। चार वरन दा चुक्के झेड़ा, चार यारी रहिण ना पाईआ। चार वेद होए निबेड़ा, चारे बाणी दए गवाहीआ। धरत मात दा खुल्ह्ा वेहड़ा, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। जन भगतां बन्ह्े हरि जू बेड़ा, बिन चप्पू मात चलाईआ। अन्त वेला आ गया नेड़ा, बीस बीसा राह तकाईआ। पुरख अकाल ना लाए देरा, दूर दुराडा पन्ध ना कोए रखाईआ। गुरसिख वेखो करके जेरा, निहकलंक कवण खेल वखाईआ। बिन हत्थियारों बिन हथ्थां भेड़ भेड़ा, शाह सुल्ताना देवे ख़ाक मिलाईआ। हरि का भेव जाणे केहड़ा, बिन नानक गोबिन्द समझ किसे ना आईआ। नानक सतिगुर गुर गोबिन्द कहे पुरख अकाल तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ ढोला गाईआ। अन्त विचोला बण के पाए फेरा, एथे ओथे दो जहान आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि पुरख इक्क अख्वाईआ। बुढ्ढा नढ्ढा ना जवान, जगत जवानी ना कोए हंढाईआ। पंज तत्त अन्तर हो ग़लतान, गति मित आपणी मूल ना पाईआ। दर दर मंगदा रिहा दान, बण भिखारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दए समझाईआ। पूरब लेखे लेखे लग्गी ना बुध्ध, बुद्धि कम्म किसे ना आईआ। आपणे आप नाल करदा रिहा युद्ध, हार जित ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म ना आई सुध, बेसुध दए दुहाईआ। डूँघी कंदर काया लुक, आपणा मुख शरमाईआ। अन्त चोला गया छुट्ट, काया कम्म किसे ना आईआ। बिन सद्दयां मात गया उठ, अग्गे मिले ना कोए ढोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा जणाईआ। पूरब लेखा दस्से हाल, अहिवाल नाल मिलाईआ। जगत बुढेपे करया कंगाल, कंगाली मूल ना किसे चुकाईआ। बिन नामे होया बेहाल, बहबल दए दुहाईआ। अन्तिम सिर ते आया काल, काल रिहा कुरलाईआ। दोए जोड़ करया इक्क सवाल, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा जणाईआ। दोए जोड़ बण सवाली, एका मंग मंगाईआ । मेरी झोली दिसे खाली, खाली झोली ना कोए भराईआ। मैं जीवां जंतां करदा रिहा दलाली, बण दलाल लई वड्याईआ। अन्त आई रैण अन्धेरी काली, तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखा रिहा जणाईआ। अन्तिम रोवे मारे धाह, नैण नैण कुरलाया। जगत बुढेपा गया आ, ना सके कोई बचाया। जिस दा ढोला रिहा गा, सो बैठा मुख छुपाया। छोटी सपुत्तरी पल्लू फड़या आ, गलवकड़ी एका पाया। मेरे पिता रो ना, मैं तेरी तूं मेरा मैं तेरी गोद सुहाया। सतिगुर तेरा होए सहा, नाल मेरा मेल मिलाया। बिरध गया प्राण तजा, आस पुत्तरी विच रखाया। पुत्तरी बोलया सहिज सुभा, पुरख अबिनाशी पूरा दए कराया। अन्तिम वेखे बिन नेत्र आ, नैण आपणा

आप खुल्हाया। बिन कर्मां लहिणा दए चुका, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। बिन मरयां मरना दए मिटा, मरन जन्म ना कोए जणाया। बिन पढ़यां दए पढ़ा, अक्खर वक्खर आप सुणाया। जन्म जन्म दी मैल दए धुवा, मेहर नज़र इक्क टिकाया। काया विच्चों काया चोला दए बदला, ओहला पड़दा आप उठाया। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ढोला लैणा गा, मुक्ती चरनां हेठ रखाया।

साध सन्त की करे विचारा, हरि जू गेड़े विच भुवाईआ। आर पार ना कोई किनारा, मँझधार रिहा फिराईआ। पंज तत्त अंदर डूँघी गारा, डूँघी भँवरी रिहा समझाईआ। अठ्ठ पहर नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। भेव ना जाणे अंदर बाहरा, गुपत ज़ाहर ना कोए रखाईआ। गल्ली बातीं ना मिले प्यारा, मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। अंदर अंदर धूआँधारा, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन दरशन दरस किसे ना पाईआ। आउणा जाणा किस घर, पाँधी पन्ध ना कोए रखाइंदा। आपणे कोलों जो आपे रिहा डर, भय अवर क्या वखाइंदा। पंज तत्त अंदर बैठा वड़, चोला काया ना कोए बदलाइंदा। ना कोई चोटी ना कोई जड़, चेतन रंग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दरस वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई साध ना कोई सन्त, पंज तत्त रिहा कुरलाईआ। नार ना मिल्या साचा कन्त, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। भरमे भुल्ला जंत, जंत जंत मिली वड्याईआ। कलयुग माया पाई बेअन्त, ना कोई पड़दा सके उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मूर्ख मूर्ख धन्दे लाईआ। मूर्ख धन्दे गया लग्ग, ज्ञान नज़र कोए ना आइंदा। पंज तत्त अंदर कीता बन्द, पल्लू ना कोए छुडाइंदा। रसना नाल मिलाए बत्ती दन्द, आत्म परमात्म नज़र कोए ना आइंदा। अनरस फिक्का दिसे चन्द, बिन सतिगुर पूरे साचे सन्त सति सलोक ना कोए गाइंदा।

★ १३ चेत २०१६ बिक्रमी बली सिँघ दे गृह पिण्ड कैरों ज़िला अमृतसर ★

हरि का नाउँ वसे अंदर, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। भाग लगाए काया मन्दिर, पंज तत्त मिले वड्याईआ। दूई द्वैती तोड़े जिंदर, एका घर वखाईआ। मन मनुआ ना दौड़े बन्दर, नाम डोरी बन्नृ वखाईआ। कर प्रकाश डूँघी कंदर, निरगुण नूर जोत प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप समझाईआ। हरि का नाउँ वसे

तन, पंज तत्त आपणी दया कमाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, अनादी नाद वजाइंदा। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, गढ़ हँकार तुड़ाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, जोती जाता डगमगाइंदा। वस्त अमोलक देवे धन, सो पुरख निरँजण झोली पाइंदा। मानस जन्म बेड़ा बन्न्, लख चुरासी फंद कटाइंदा। पंच विकारा देवे डंन, ममता मोह मोह मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप दृढ़ाइंदा। साचा नाउँ साचे घर, सतिगुर पूरा आप वसाईआ। मेल मिलाए नरायण नर, नर हरि वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे नाउँ बन्धन पाईआ। लख चुरासी घाड़न घड़, घट घट आपणा नाउँ धराईआ। सच महल्ले आपे चढ़, पुरख अबिनाशी वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क समझाईआ। साचा नाउँ हरि गोबिन्द, गोबिन्द धार जणाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, सगला दुःख गुवाइंदा। मेल मिलावा गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गुर शब्दी रंग वखाइंदा। खुशी कराए बन्द बन्द, लख चुरासी बन्धन मात तुड़ाइंदा। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, निझानंद आप समझाइंदा। दूई दुवैती ढाहे कंध, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। चार वरन एको छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ जणाइंदा। साचा नाउँ हरि निरँकार, आदि जुगादि चलाईआ। गा गा गए गुर अवतार, रसना जिह्वा ढोला सुणाईआ। लेखा लिख लिख गए बण लिखार, काग़ज़ मेला नाल शाहीआ। रसना जिह्वा जीव करन पुकार, बत्ती दन्द मिलाईआ। पीर पैग़म्बर ला ला नाअर, नाअरा हक़ गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा नाउँ हरि का नाम, चार वरन जस गाया। चार जुग खेल श्री भगवान, भगवन आपणा भेस वटाया। गुर अवतारां दे दे दान, मन्त्र अन्तर आप पढ़ाया। लोकमात कर प्रधान, खाणी बाणी सिफ्त सालाहया। भेव ना पाए कोए जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप छुपाया। आपणा नाउँ रखे ओहले, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। पंज तत्त अंदर वड़ वड़ बोले, गुर अवतार सेव कमाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड आपे फोले, घट घट हरि जू वेख वखाइंदा। निरगुण निराकार लख चुरासी आपे तोले, तोलणहारा दिस ना आइंदा। जुगा जुगन्तर सच भण्डारा सरगुण खोल्हे, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप वड्याइंदा। साचा नाउँ हरि करतार, आदि जुगादि वरताईआ। सतिगुर गुर गुर सेवादार, बण सेवक सेव कमाईआ। भगत भगवन्त करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सन्त मंगण बण भिखार, खाली अग्गे झोली डाहीआ। गुरमुख रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरसिख मंगण दरस दीदार, एका ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच रखाईआ। आपणा भेव एका नाउँ, हरि जू आपणे विच छुपाइंदा। जुग जुग जन भगतां पकड़े बांहों, दूसर हथ्थ किसे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा गया न्याउँ, तख़्त निवासी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे बेपरवाहो, बेअन्त वेस वटाइंदा। आदि जुगादी लख चुरासी पिता माउँ, पूत सपूता गोद सुहाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची धाम वखाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, काग काग ना कोए कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क दृढ़ाइंदा। साचा नाउँ हरि का रूप, हरि सतिगुर आप दरसाईआ। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम जाए तुट्ट, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां अमृत देवे घुट्ट, नाम प्याला आप प्याईआ। लख चुरासी आवण जावण जाए छुट, गेड़ा गेड़ ना कोए वखाईआ। मेल मिलाए अबिनाशी अचुत्त, चेतन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप चलाईआ। साचा नाउँ चले मात, चार वरन आप जणाइंदा। चार जुग दी साची गाथ, चार कुण्ट आप सुणाइंदा। चार वेद दा एका पाठ, एका अक्खर हरि पढ़ाइंदा। लेखा जाणे तीर्थ ताट, सर सरोवर वेख वखाइंदा। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द इक्क चढ़ाइंदा। जन भगतां पुच्छे आपे वात, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। वसणहारा इक्क इकांत, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। घट घट वेखे मार झात, सच सिँघासण आसण लाइंदा। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म इक्को ज़ात, वरन बरन ना वंड वंडाइंदा। जन भगतां देवे सच्चा साथ, सगला संग निभाइंदा। लहिणा देणा चुक्के माथ, मस्तक रेखा आप मिटाइंदा। आप चढ़ाए साचे घाट, जिस जन आपणा नाम जपाइंदा। जन्म जन्म दी मुक्के वाट, पाँधी पन्ध ना कोए रखाइंदा। आत्म सेजा साची खाट, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण नैण मटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप प्रगटाइंदा। साचा नाउँ एका एक, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म आपे वेख, पारब्रह्म होए सहाईआ। चार जुग गुर अवतार लिख लिख लेख, जीव जंत गए समझाईआ। प्रभ साचे को इक्क आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जुग जुग करे अवल्लड़ा भेस, भेव कोए ना पाईआ। ना कोई रंग रूप ना रेख, अनुभव आपणी धार चलाईआ। वेख ना सके कोई पंडत पांधा मुल्ला शेख़, नेत्र नैण ना कोए दरसाईआ। जन भगतां करे साचा हेत, नित नवित वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका आपणा नाउँ चलाईआ। एका नाउँ हरि निरँकार, निरगुण आपणा आप चलाइंदा। एका जोती शब्दी धार, गुर शब्दी वेख वखाइंदा। एका ब्रह्म करे प्यार, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाइंदा। एका आत्म दए सहार, परमात्म खेल कराइंदा। एका

ईश होए उज्यार, जीव आपणा रंग वखाइंदा। एका नाद शब्द धुन्कार, जगदीस आपणा राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप चलाइंदा। साचा नाउँ चलाए हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतारां दे दे वर, लोकमात बूझ बुझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी एका घर, दर दरवाज़ा आप जणाईआ। आत्म परमात्म बन्ने लड़, पल्लू एका गंढु दिवाईआ। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। जगत विचोला आपे बण, साचा ढोला एका गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा नाउँ इक्क प्रगटाईआ। साचा नाउँ हरि जू रख, रक्षक आपणी दया कमाइंदा। निरगुण नूर कर प्रतख, सरगुण आपणा आप छुपाइंदा। चार जुग नाउँ कर कर वक्ख, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाइंदा। भगतां अंदर आपे वस, आपणा पर्दा लाहइंदा। एका देवे नाम रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। तीर निराला मारे कस, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। पंच विकारा जाए ढट्ठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। धीरज देवे साचा सति, सन्तोख आपणा नाउँ धराइंदा। करे प्रकाश अन्धेरे पक्ख, किशना सुखला आपणे रंग रंगाइंदा। चार वरन दी पूरी करे आस, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका नाउँ पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं हरि वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। दाता दानी सर्ब गुण तास, गुणवन्ता नाउँ धराइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे खेल तमाश, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाइंदा। सत्तां दीपां एका रास, बण गोपी काहन नचाइंदा। जीव जंत लेखा जाणे पवण स्वास, पवण पवणां विच रहाइंदा। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए निरास, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। सुरपति इन्द रोवे कोई ना देवे साथ, करोड़ तेतीसा मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका नाउँ आप वड्याइंदा। एका नाउँ पुरख अकाल, अकल कला अख्वाईआ। वसणहारा लख चुरासी धर्मसाल, काया बंक बंक वड्याईआ। अनहद नाद वजाए ताल, तलवाड़ा आपणा राग अल्हाईआ। दीपक दीआ एका बाल, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, ऊँच नीच भेव मिटाईआ। लहिणा देणा चुक्के काल महांकाल, जिस जन आपणी दया कमाईआ। एका देवे नाम सच्चा धन माल, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई एका नाम जपाईआ। सृष्ट सबाई एका जाप, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। मेट मिटाए तीनो ताप, त्रैगुण बन्धन आप कटाइंदा। जन्म जन्म दा मेटे पाप, पत्तत पापी आप तराइंदा। इक्क बुझाए आपा आप, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। पुरख अबिनाशी दिसे माई बाप, सगला संग ना कोई वखाइंदा। मेल मिलाए कमलापात, कँवल आपणा नूर दरसाइंदा। बन्द

९६२
११

किवाड़ा खोल्हे ताक, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, आपणी गोद बहाइंदा। निरगुण सरगुण करे लाड, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका नाउँ रखणा याद, लख चुरासी जीव जंत समझाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां हरि जू सुणदा रिहा फ़रयाद, लेखा सब दा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे दस्स, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। लोकमात किसे ना चले कोई वस, भरमे भुल्ली तेरी लोकाईआ। दीनां मज़्हबां विच गए फस, वरन बरन पई लड़ाईआ। ना कोई धीरज ना कोई जत, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। होई प्रधान मनमति, गुरमति बैठी मुख छुपाईआ। बहत्तर नाड़ी उब्बले रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। ना कोई डाल्ही ना कोई पत, फुल फुलवाड़ी ना कोए महकाईआ। राज राजान सत्थर बैठे घत, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग माया त्रैगुण पंज तत्त पाई नथ्थ, चारों कुण्ट रही भुवाईआ। साध सन्त बिन तेरे नाउँ गए ढट्ठ, मूँह दे भार आपणा आप सुटाईआ। सर सरोवर रोवण तीर्थ तट, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। हरि का नाउँ किसे मिले ना मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआले देण दुहाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे खेल समरथ, धरनी धरत धवल खुल्हड़े केस रही वखाईआ। तेरा खेड़ा होया भट्ठ, कलयुग भठयारा अग्नी रिहा लगाईआ। किरपा कर साहिब सुल्तान सर्ब जीआं दे मत्त, मति मन वासना दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम चार वरन रोवे मारे धाह, कूक कूक कुरलाइंदा। कोई ना दिसे सच मलाह, बेड़ा पार ना कोए कराइंदा। एका भुल्लया तेरा ना, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। कलयुग रैण अन्धेरी गई छाँ, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। खा खा थक्के सूर गां, गीत गोबिन्द ना कोए गाइंदा। नाता तुट्टा पुत्रां मां, पिता पूत ना गोद सुहाइंदा। होए विभचार थाँ थाँ, तीर्थ तट सर्ब कुरलाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद अंदर धीआं भैणां रहे तका, तेरा भय ना कोए रखाइंदा। पुरख अबिनाशी हो सहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। चार वेद करन पुकार, पुराण अठारां नाल मिलाईआ। छे शास्त्र रोवण ज़ारो ज़ार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अठ दस ना कोए विचार, अठारां अध्याए ना कोए पढ़ाईआ। अञ्जील कुरान होए बेज़ार, मसला हक़ ना कोए सुणाईआ। नूर इलाही नज़र ना आए कलाम, कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ। मुहम्मद दे दे गया पैग़ाम, पैग़म्बर एका राह चलाईआ। कलयुग अन्तिम झूठ अडम्बर, उम्मत उम्मती गई भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा नाम वर, जगत बन्धन देणा तुड़ाईआ। तेरा नाउँ अनक कल धार, कोटन कोटि रूप वटाइंदा। वरन बरन करन पुकार, कूक कूक नेत्र

रो रो तेरा ध्यान लगाइंदा। कोई ना दिसे मात सहार, चार कुण्ट हाहाकार, दहि दिशा पल्लू ना कोए फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम देणा वर, तुध बिन पार ना कोए लगाइंदा। तुध बिन दिसे ना पार किनारा, चार वरन रहे कुरलाईआ। प्रगट हो विच संसारा, इक्क तेरी ओट तकाईआ। नानक गोबिन्द बोल गया जैकारा, जै जैकार सुणाईआ। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जूठ झूठ सुट्टे डूँघी गारा, शौह दरयाए आप रुढ़ाईआ। जन भगतां देवे इक्क सहारा, आपणे कंध उठाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, नौ खण्ड पृथ्मी करे पढ़ाईआ। सत्तां दीपां इक्क हुलारा, रसना बोल बोल समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लाए नाअरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाईआ। कलयुग अन्त आ भगवान, आपणी दया कमाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्क ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म देवे माण, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। सच भूमका सच अस्थान, घर साचे सोभा पाइंदा। सच मन्दिर सच मकान, घर साचे आसण लाइंदा। घर दीपक जोत जगे महान, घर रागी राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन पल्लू फड़, साचे पौड़े जाए चढ़, साचा बंक आप सुहाइंदा। आप सुहाए साचा बंक, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। एका नाउँ वजाए डंक, दो जहानां दए सुणाईआ। पकड़ उठाए राउ रंक, शाह सुल्तान सोया कोए रहिण ना पाईआ। भेव खुल्हाए मुल्ला शेख़ पंडत, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज आपणा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ मात चलाईआ। एका नाउँ सोहँ ढोला, सो पुरख निरँजण मात चलाइंदा। चार जुग दा चुक्के ओहला, दो जहानां पड़दा लाहइंदा। नानक सतिगुर अन्तर बोला, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। आत्म परमात्म आपे मौला, मौला रूप वटाइंदा। किरपा निध ठाकर स्वामी उलटा करे नाभ कँवला, अमृत झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन इक्को नाम समझाइंदा। एका नाम सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। चार जुग दी मैल धो, निर्मल निर्मल नूर वखाईआ। सतिजुग दा साचा ढो, ढोआ लै के आया सच्चा माहीआ। हरि का भेव ना जाणे को, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। करे प्रकाश त्रै लो, त्रैगुण अतीता इक्क रघुराईआ। जन भगतां अन्तर आत्म बीज देवे बो, फुल फुलवाड़ी मात महकाईआ। आपणे जेहा आपे हो, गुरमुख साचे आपणे रंग रंगाईआ। अमृत मेघ देवे चो, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन इक्क पढ़ाईआ। चार वरन एका नामा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। चार वरनां एका रामा, घट घट आपणा खेल कराइंदा। चार वरनां

९६४
११

एका शामा, गृह गृह आपणी बंसरी नाम वजाइंदा। घर घर अंदर इक्क अमामा, पीर पैगम्बर कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। घर घर अंदर सतिनामा, नाम सति नानक निरगुण आप सुणाइंदा। घट घट अंदर वज्जे दमामा, गोबिन्द डंका आप सुणाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, चार जुग दा पिछला पन्ध मुकाइंदा। अग्गे लेखा जाणे दो जहानां, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म वरताइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को गाणा, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। हँ ब्रह्म देवे माणा, पारब्रह्म गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि का मन्त्र इक्क समझाइंदा। हरि का मन्त्र एका ओट, नाम नाम वड्याईआ। निर्मल नूर जगाए जोत, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। जगत वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सति भण्डारा दए अतोट, निखुट कदे ना जाईआ। नाता तोड़ वरन गोत, एका ब्रह्म दए दरसाईआ। शब्दी गुर जाणे ओत पोत, पिता पूत होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ जन भगतां अंदर आप टिकाईआ। भगतां अंदर नाम धार, भगत भगवन्त आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी खेल न्यार, सतिजुग त्रेता द्वापर वंड वंडाइंदा। कलयुग अन्तिम हो उज्यार, घर घर फेरा पाइंदा। फड़ फड़ बांहों लए उठाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, हस्त कीट रंग रंगाइंदा। एथे ओथे दो जहानां बणे दलाल, जिस जन आपणा नाउँ जपाइंदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, राए धर्म ना डंन लगाइंदा। चित्रगुप्त लेखा सके ना कोए वखाल, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाइंदा। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा आदि अन्त श्री भगवन्त जन भगतां चले नाल नाल, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। सतिजुग मार्ग इक्क वखाल, जीव जंत जंत समझाइंदा । सर्ब जीआं दी इक्क धर्मसाल, गुरदुआरा इक्क बणाइंदा। इक्क अनादी वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम वस्त अमोलक काया गोलक आप रखाइंदा। काया अंदर कर कर वास, आपणा नाउँ जणाईआ। निरगुण नूर नूर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाईआ। जन भगतां करे पूरी आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी बन्द खुलास, जन्म मरन गेड़ चुकाईआ। मात गर्भ ना उलटा वास, जूनी जून ना कोए भुवाईआ । वेखणहार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास, डूँग्घी कंदर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जिस जन आपणा सोहँ नाम जपाईआ। सोहँ नाउँ आत्म परमात्म नाता, दूजा खेल ना कोए वखाइंदा। मेल मिलाए पुरख बिधाता, पुरख परखोतम वेख वखाइंदा। एथे ओथे निरगुण सरगुण सुणाए गाथा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे पुरख समराथा, दूसर भेव कोए ना आइंदा। सतिजुग

सति सतिवादी खोल्हे हाटा, वणज वणज़ारा इक्क जणाइंदा। चार वरनां देवे साथा, दूसर वंड ना कोए वंडाइंदा। सदा सहाई अनाथ अनाथां दीनन आपणे गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा नाउँ प्रगटाइंदा।

★ १३ चेत २०१६ बिक्रमी गंडा सिँघ दे गृह पिण्ड दराज़के ज़िला अमृतसर ★

पुरख अबिनाशी बेपरवाह, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटा, जूठ झूठ रहिण ना पाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म दए सुणा, बोध अगाधी शब्द अलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठा, भेव अभेव खुल्हाइंदा। निरगुण सरगुण रूप वटा, लोकमात वेख वखाइंदा। लख चुरासी पड़दा लाह, आपणी बूझ बुझाइंदा। चारे वरन दए समझा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम होए अन्त, लोकमात रहिण ना पाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। आप उठाए गुरमुख साचे सन्त, मिल साजण खुशी मनाईआ। आपणी महिमा जणाए अगणत, अकथ करे पढ़ाईआ। आत्म अन्तर एका मंत, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, साचा मार्ग इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा दए चुकाईआ। कलयुग लेखा चुक्के मात, थिर कोए रहिण ना पाया। अन्त मिटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर दए गंवाया। नानक गोबिन्द वेखे भविख्त वाक, बण पाँधी पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग एका हुक्म सुणाया। कलयुग हुक्म धुर फ़रमाणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। वेले अन्त छड्डुणा पए टिकाणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथमी बाल अञ्याणा, लख चुरासी दए दुहाईआ। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। जूठा झूठा मुक्के गाणा, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। दीन मज़्हब रहिण ना पाणा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। सृष्ट सबाई नौ खण्ड हरि का नाउँ इक्क ध्याणा, एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा रिहा मुकाईआ। कलयुग उठ उठ बल धार, हरि जू हरि हरि आख सुणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उतरे पार, वेला अन्त अन्त जणाइंदा। रैण अन्धेरी मिटे धूआँधार, चन्द चांदना इक्क चमकाइंदा। नाता तुट्टे जूठ झूठ ठग्ग चोर यार, सच सुच्च इक्क कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया आप मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया हरि भगवान, अन्त अन्त मिटाईआ।

सतिजुग साचे देवे दान, धुर दी दात आप जणाईआ। एका अक्खर नाम ज्ञान, हरि सतिगुर आप पढ़ाईआ। एका मन्दिर सच मकान, सचखण्ड निवासी आप सुहाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाण, सोहँ ढोला आप जणाईआ। बणे विचोला दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणी सेव कमाईआ। लख चुरासी तोला बण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा दए चुकाईआ। कलयुग लेखा चुक्के जग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। नौ खण्ड पृथमी लग्गी बुझे अग्ग, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। सन्त सुहेले साचे सद, गुर चेले संग मिलाइंदा। नाम प्याए साची मदि, अन्तर रस इक्क वखाइंदा। विष्नूं तेरी विश्व यद, बंसावली आप समझाइंदा। ब्रह्मे तेरी ब्रह्म हद्द, पारब्रह्म वंड वंडाइंदा। शब्दी शब्द करे लाड, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग करता फेरी पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लहिणा आप चुकाइंदा। कलयुग लहिणा मुकावणहारा, एका एक एक अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल करे न्यारा, भेव कोए ना पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लै अवतारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे न्यारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। रागा नादां वसे बाहरा, छत्ती राग भेव ना आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान करन पुकारा, उच्ची कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। अंजील कुरान लाए नाअरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। कलजुग अन्तिम खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। सच संदेस एका घल्ला, चौदां लोक रिहा हिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाया पल्ला, एका बन्धन पाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा जाणे मीआं अल्ला, इलाही नूर वेख वखाईआ। वसणहारा थला थला, घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा दए चुकाईआ। कलजुग लेखा नूर इलाही , इलाही नूर आप मिटाइंदा। प्रगट होए ज़ाहर ज़हूरा, ज़ाहरा खेल कराइंदा। वेखणहारा नेड़े दूरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा आप मुकाइंदा। कलयुग लेखा अन्तिम वार, चौथे जुग दए समझाईआ। चार वेद उतरे पार, चार वरन रहिण ना पाईआ। चारे खाणी मारे मार, चारे बाणी लए पढ़ाईआ। अल्ला राणी नैण उग्घाड़, नेत्र नैण दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं आई हार, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। चौदां तबक रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। नबी रसूला आई हार, पीर पैग़म्बर बैठे नैण शरमाईआ। कलमा कलाम ना कोए प्यार, कायनात ना कोए पढ़ाईआ। नाता तुट्टे चार यार, यारी संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा रिहा मिटाईआ। कलयुग लेखा होए पूर, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा।

चारों कुण्ट कुड़यारा कूड़, नव खण्ड आपणा डेरा लाइंदा। किसे गृह ना दिसे जोती नूर, अन्ध अन्धेरा चारों कुण्ट छाइंदा। पुरख अबिनाशी सर्बकला भरपूर, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेख श्री भगवान, आपणी दया कमाइंदा। प्रगट हो विच जहान, निरगुण वेस अवल्लड़ा आप धराइंदा। धुरदरगाही धुर फ़रमाण, धुरदरबारी आप सुणाइंदा। चार वरन दी चुक्के काण, चार जुग दा पन्ध मुकाइंदा। चार वेद ना कोए ज्ञान, चार खाणी ना कोए समझाइंदा। चारे बाणी देवे इक्क ज्ञान, बिन हरि पार ना कोए कराइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, कलयुग आपणा बल आप धराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पड़दा आपे लाहइंदा। सचखण्ड निवासी देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। चारों कुण्ट होए वैरान, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ा लेखा आप मुकाइंदा। कूड़ कुड़यारा जाए नट्ठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नहावण कोए ना जाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, महिमा अकथ इक्क सुणाईआ। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जो जन हरि हरि दरसन पाईआ। जन्म जन्म दी उतरे विस, सगला विसूरा दए गंवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी एका सिख्या लए लिख, साची विद्या आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा अन्तिम लहिणा तेरी चोली आप भराईआ। तेरा लहिणा तेरी गोद, कलयुग अन्त भराइंदा। चार वरन कीता बोध, नौ खण्ड पृथ्मी खेल कराइंदा। सतिजुग दान देवे ज्ञान बोध, बोध ज्ञान भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग लाए जहान, दो जहानां वाली दया कमाईआ। कलयुग कूड़ा मिटे निशान, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, पुरख अकाल फेरा पाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवे दान, एका नाउँ करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर गुरदुआर वखाए मकान, शिवदुआला मट्ठ इक्क जणाईआ। एका गीत गोबिन्द रसना जिह्वा गाण, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। जीव जंत साध सन्त रसना बह बह सारे गाण, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान देवे एका माण, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लहिणा दए चुकाईआ। कलयुग लहिणा बीस बीसा, हरि सतिगुर आप चुकाइंदा। सतिजुग सुणाए सच हदीसा, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे राग छतीसा, अनरागी राग अलाइंदा। एका छत्र झुलाए सीसा, शाह पातशाह वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम बीस बीस, हरि साचा सच जणाईआ। लख चुरासी जाए पीस,

कलयुग चक्की अन्त चलाईआ। त्रैगुण माया सब दा खाली करे खीस, शाह सुल्तान दर दर देण दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क हदीस, सत्तां दीपां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। कलयुग मुक्के अन्तिम पन्ध, पाँधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। कोई ना खाए रसना जूठा झूठा गंद, अमृत रस इक्क चखाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्ड, भेखी कोए नज़र ना आइंदा। आत्म परमात्म गाए छन्द, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। बीस बीसा अन्तिम धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल अपार, महिमा अगणत गिणी ना जाईआ। एकँकारा भेव न्यार, आपणा पड़दा दए उठाईआ। आदि निरँजण हो त्यार, त्रैभवण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़, आपणा नूर दए दरसाईआ। श्री भगवान सत रंग निशाना दए चाड़्ह, दो जहानां आप वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल न्यार, अनुभव आपणा खेल जणाईआ। गुरमुख साजण कर प्यार, सगला संग निभाईआ। साचे सन्तां खोल्ह किवाड़, आत्म परमात्म पड़दा लाहीआ। जन भगतां देवे इक्क दीदार, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। चार वरनां इक्क अधार, घर एका वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राग अल्हाईआ। सतिजुग गाए साचा राग, राग रागनी भेव ना आइंदा। पुरख अबिनाशी कन्त सुहाग, लख चुरासी नार आप हंढाइंदा। आत्म देवे इक्क वैराग, परमात्म खेल कराइंदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल आप धुवाइंदा। सुरती शब्दी डोर पकड़े वाग, वागां आपणे हथ्थ रखाइंदा। दीपक जोत जगाए चिराग़, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। एथे ओथे दो जहान सज्जण साक, हरि सतिगुर संग रखाइंदा। बन्द किवाड़ी खोल्ह ताक, गुरमुख आपणी बूझ बुझाइंदा। नेत्र हरन फरन खुल्ल्हे जाग, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। आपे करे पूरा भविख्त वाक्, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचा चले राह, रैहबर हरि हरि आप अख्वाईआ। निरगुण देवे सरगुण सलाह, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। सर्ब जीआं दा सच मलाह, सो पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर वेखे थाउँ थाँ, जल थल महीअल फेरा पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा हरिजन साचे पकड़े बांह, घर घर विच मेल मिलाईआ। सति जपाए इक्क नाँ, नाउँ निरँकारा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँ ब्रह्म दए प्रगटाईआ। हँ ब्रह्म एका अक्खर, बिन अक्कशर आप जणाइंदा। तोड़नहारा बजर कपाटी पत्थर, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। नेत्र नीर विरोले अथ्थर, भेव कोए ना पाइंदा। पंज विकारा करे सत्थर, बल आपणा आप जणाइंदा। आपे चोटी चढ़ के बैठा सिखर, दिस किसे ना आइंदा। आदि जुगादी मात पित

पिसर, पिता पूत वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा भेव खुल्हाइंदा। सतिजुग भेव जाए खुल्ह, श्री भगवान आप खुल्हाईआ। हरिभगत बणाए साची कुल, कुलवन्ता इक्क रघुराईआ। सच फुलवाड़ी जाए फुल, पत्त डाल्ही आप महकाईआ। सन्त सुहेला साचे कंडे जाए तुल, नाम तोला एका आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा लए प्रगटाईआ। सतिजुग प्रगटे विच जग, जीवण जुगत हरि जणाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ कग, सोहँ हँसा चोग चुगाइंदा। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। सन्त सुहेले आपे सद्द, आपणी बूझ बुझाइंदा। अनहद नाद वजाए नद, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। आत्म सेजा बहे सज, परमात्म आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मार्ग लाइंदा। साचा मार्ग एकँकार, एका एक लगाईआ। लेखा चुक्के जुग चौकड़ी चार, नव नौ रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैण रही वहाईआ। पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ मुसायक दस्तगीर ना कोए अधार, दस्त बरदार होई लोकाईआ। जगत अन्धेरा धूआँधार, सच प्रकाश ना कोए वखाईआ। कागद कलम लिख लिख गए हार, हरि का नाम हिरदे ना कोए वसाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, वसण ठग्ग चोर यार, ठाकुर नज़र कोए ना आईआ। धरनी धरत धवल नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन पुकार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। असीं लिख लिख लेखा दस्स के गए विच संसार, पढ़ पढ़ भेव कोए ना पाईआ। तेरा भुल्या नाउँ हरि निरँकार, साचा वणज ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग तेरी अन्तिम कार, करता पुरख वेख वखाइंदा। सृष्ट सबाई नार विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। गुर का शब्द ना सके कोए विचार, रसना पढ़ पढ़ वाद वधाइंदा। काया मन्दिर अंदर बन्द ना खोल्हे कोई किवाड़, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले जीव जंत फेरा पाइंदा। त्रैगुण अग्नी तपे हाढ़, सांतक सति ना कोए कराइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार लगाया अखाड़, धीरज धीर ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पड़दा आप उठाइंदा। कलयुग पड़दा जाए उठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी सतिजुग उपर गया तुट्ठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कूड़ कुड़यारा कढ्ढे कुट्ट, नाम चण्ड प्रचण्ड चमकाईआ। नौ खण्ड पृथमी पए लुट्ट, शाह सुल्तान रहिण कोए ना पाईआ। सृष्ट सबाई भाग गए निखुट, भावी कूक कूक सुणाईआ। मानस नाता जाए तुट, बन्धन फेर कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सतिजुग साचा खेल कराईआ । सतिजुग उठे साचा सुत, सति पुरख निरँजण आप उठाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना पाईआ। भगतां मौले साची रुत्त, रुत्त बसन्ती इक्क वखाईआ। भाग लगाए पंज तत्त काया बुत्त, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। निरगुण सरगुण अंदर पए उठ, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग आपणा खेल कराईआ। सतिजुग खेल करे समरथ, कलयुग कूड़ा पार कराईआ। सति सतिवादी चलाए रथ, सतिगुर पूरा हो सहाईआ। चार वरनां एका मार्ग दस्स, एका राह दए वखाईआ। इक्क सुणाए साची गथ, सोहँ ढोला आपे गाईआ। दरगाह साची दी साची वथ, सृष्ट सबाई झोली आपे पाईआ। घर मन्दिर बह बह गाए जस, काया बंक बंक सुहाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलावा हस्स हस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग मार्ग एका लाईआ। सतिजुग मार्ग आत्म परमात्म नाता, नर नरायण जोड़ जुड़ाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखणहारा खेल तमाशा, त्रैगुण आपणा पड़दा लाहइंदा। साचे मन्दिर बह बह पाए रासा, गोपी काहन आप नचाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए भरवासा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा बन्धन पाइंदा। सतिजुग साचा बन्धन पाए डोर, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्दी गुर बन्नणहारा पंज चोर, चोरी करन कोए ना जाईआ। तत्त विकार ना पाए शोर, छुरी हक़ आप चलाईआ। लहिणा चुकाए तोर मोर, तेरा मेरा आपणा रूप वखाईआ। पावे सार अन्ध घोर, डूँग्घी भँवरी फोल फोलाईआ। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण चढ़े साचे घोड़, अगम्मी घोड़ा आप दुड़ाईआ। कलयुग अन्तिम चौथे जुग जोती मारे पौड़, गोबिन्द मीता सच्चा माहीआ। लख चुरासी वेखे रीठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या जणाए जन, जन जननी आप अख्वाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, नादी नाद वजाइंदा। बन्नणहारा मनुआं मन, मन वासना आप मिटाइंदा। भाग लगाए काया पंज तत्त तन, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। पंच विकारा देवे डंन, शरअ शरीअत ना कोए वखाइंदा। सच वसेरा बिन छप्परी छन्न, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। जो घड़े सो देवे भन्न, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। सतिजुग बेड़ा आपे बन्नॄ, बण खेवट खेटा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप चलाइंदा। साची धारा भगत भगवन्त, लोकमात चलाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी खेल कराईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाए जुगा जुगन्त, गुर अवतार नाउँ धराईआ । कलयुग अन्तिम खेल करे श्री भगवन्त, महिबान बीदो बी खैर या अल्लाह, भेव कोए ना पाईआ। आप

उठाए गुरमुख साचे सन्त, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। एका नाउँ मणीआं मंत, मन का मणका दए भुवाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरिसंगत मेला सहिज सुभाईआ। नाता तुट्टे भुख नंगत, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्तिम वेस कर, सतिजुग साचा मात धर, सोहँ सो करे कुड़माईआ। सोहँ शब्द धुर दी धार, धरनी धरत धवल टिकाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, जगत नेत्र दिस ना आइंदा। अन्तर अन्तर वज्जे सितार, तन्दी तन्द ना कोए रखाइंदा। रसना जिह्वा ना कोए विचार, बत्ती दन्द ना कोए सलाहइंदा। गुफ़त शनीद एका कार, ज़ाहर ज़हूर वेस वटाइंदा। जन भगतां पैज दए संवार, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सच महल्ला कर त्यार, उच्च अटल्ला आप बणाइंदा। छत्ती युग दा कर्ज उतार, मकरूज आपणा कर्ज़ अदा कराइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म देवे एका वार, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। कलयुग रहे ना विच संसार, सतिजुग साचा मार्ग लाइंदा। दोहां विचोला आप निरँकार, लहिणा देणा देणा लहिणा सब दी झोली पाइंदा। भाणा सहिणा सर्ब संसार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मात धर, साचा शब्द आप वरताइंदा। साचा शब्द साची वस्त, हरि सतिगुर आप वरताईआ। गुरमुखां देवे दस्त बदस्त, जगत उधार ना कोए कराईआ। एका रंग वखाए कीट हस्त, ऊँचां नीचां एका घर बहाईआ। एका नाम खुमारी देवे मस्त, जो जन सोहँ ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। समरथ पुरख साचा नाउँ, कलयुग अन्त आप चलाइंदा। निथांव्यां देवे साचा थाउँ, दरगाह साची आप बहाइंदा। चार वरनां पकड़े बांहों, वरन बरन ना कोए रखाइंदा। जन भगतां बणे पिता माउँ, साचे सन्त गोद सुहाइंदा। गुरमुख जपाए एका नाउँ, निरगुण निरँकार एका घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग देवे जीआ दान, नौ खण्ड पृथमी इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव जगदीस मेल मिलाइंदा।

★ १४ चेत २०१६ बिक्रमी समुंद सिँघ दे गृह पिण्ड माढ़ी मेघा ज़िला अमृतसर ★

सचखण्ड निवासी एकँकार, अकल कल हरि अख्वाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, महल अटल डेरा लाइंदा। निरगुण निरगुण खेल करे अपार, भेव कोए ना पाइंदा। शब्दी शब्द खेल अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा राग अलाइंदा। लख चुरासी

कर त्यार, त्रैगुण माया बन्धन पाइंदा। पंचम मेला जोड़ संसार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, आदि पुरख कराईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा भेव चुकाईआ। रवि ससि सूरज चन्द मंडल मण्डप देवे दान, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। लख चुरासी कर परवान, जोत निरँजण दीआ बाती इक्क टिकाईआ। नाद अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुर फ़रमाण, गृह मन्दिर आप सुणाईआ। निरगुण सरगुण कर परवान, लेखा जाणे जीव जहान, ईश जीव बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपणा बन्धन पंज तत्त, निरगुण सरगुण आप रखाइंदा। पुरख अकाल इक्क समरथ, महिमा अकथ आप जणाइंदा। जुग जुग चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। गुर अवतारां मार्ग दस्स, साचे धन्दे आपे लाइंदा। हिरदे अन्तर आपे वस, आपणी बूझ बुझाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। दो जहान श्री भगवान आपे पाए आपणी रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। आपणी खेल करे करतार, कुदरत करता वेख वखाईआ। लख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण अतीता वेखे चाँईं चाँईंआ। मन्दिर अंदर खोल्ह किवाड़, साची सेजा आसण लाईआ। शब्द अगम्मी इक्क धुन्कार, धुंन अनादी आप सुणाईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। आत्म परमात्म कर प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। वसणहारा धाम न्यार, लोकमात वेस वटाईआ। जुग करता होए ख़बरदार, आपणी ख़बर आप सुणाईआ। लेखा जाणे वेद चार, शास्त्र सिमरत पुराण अठारां आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा रखे हथ्थ, भेव कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। जुग चौकड़ी महिमा अकथ, कथनी कथ कथ आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। भेव खुल्हाए साचे सन्त, भगत भगवन्त दए वड्याईआ। जुग जुग तोड़े गढ़ हउमे हंगत, माया ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आपणी किरत कमाईआ। करनी करता करनेहारा, आदि जुगादी खेल कराइंदा। लख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लाइंदा। गुर अवतार सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। आदि पुरख अबिनाशी करता अलख अगोचर अगम्म अथाह, भेव अभेदा भेव ना कोए जणाइंदा। मेल मिलावा विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीस देवी

देव सुरपति राजा इन्द गुणी गहिन्दा आपणा खेल कराइंदा। आदि शक्ति नूर नुराना चतुर्भुज भेव खुल्हाए गुझ, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आपणा राह चलाइंदा। जुगा जुगन्तर चले राह, रैहबर हरि रघुराईआ। निरगुण सरगुण दए सलाह, एका अक्खर कर पढ़ाईआ। पत्तत पुनीता ठांडा सीता बणे आप मलाह, लख चुरासी बेड़ा आप उठाईआ। एकँकारा हरि निरँकारा सति जैकारा शब्द सुणाए आपणा नाँ, साचा ढोला आपे गाईआ। निरगुण सरगुण पड़दा ओहला दए चुका, दूई द्वैती आत्म ताकी कुण्डा लाहीआ। महल अटल कर रुशना, घर विच घर दए वखा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। कूड़ा धन्दा आप लगा, ख़ाकी पन्ध दए भुला, मनमति नाल रलाईआ। पंच विकारां दए तपा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हल्का, सांतक सति ना कोए कराईआ। जुगा जुगन्तर दीनन दुखियां दर्द लए वंडा, हँकारी गढ़ दए तुड़ा, नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। करे खेल इक्क इकल्ला, बेपरवाह बेअन्त अख्वाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर फड़ौदा आया पल्ला, साचे भगतां संग निभाइंदा। जोती शब्दी निरगुण सरगुण आपे रला, लख चुरासी काया मन्दिर डूँग्घी कंदर सोभा पाइंदा। सच संदेस नर नरेश श्री भगवान एका घल्ला, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। वसणहारा जलां थलां, समुंद सागर उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाइंदा। आपणे दीपक आपे बला, नूरी नूर इलाही अल्ला, नूर नुराना डगमगाइंदा। मुकामे हक़ आपे खल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा खोल्ह दातारा, हरि जू आपणी दया कराईआ। लेखा जाणे जुग चारा, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। वेख वखाणे वेद चारा, शास्त्र सिमरत नाल रलाईआ। लहिणा देणा चुकाए गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर औलीए मुल्ला शेख़ मुसायक बाकी कोए रहिण ना पाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारा, आपणी धार आप समझाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह, आपणी खेल खिलाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, बेमकाम फेरा पाइंदा। आदि जुगादि ना होए फनाह, बिस्मिल आपणी धार चलाइंदा। रैहबर बण आप खुदा, खुदी तकबर सर्ब मिटाइंदा। एका हक़ीक़त दए जणा, सही सलामत नज़री आइंदा। कलमा अमाम दए पढ़ा, कायनात आप सुणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां तबक चौदां लोक फेरा पा, त्रैभवण धनी आपणी खेल कराइंदा। कागद कलम लिख लिख थक्की छाह, अन्त ना पाया बेपरवाह, बेअन्त बेअन्त नानक निरगुण निरगुण गाइंदा। साचा ढोला

इक्क सुणा, चार वरन गया समझा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगा, आत्म परमात्म कर कुड़माईआ। जगत विचोला बण मलाह, जोती जोत कर रुशना, शब्दी सुरत मेल मिला, आत्म अन्तर जगत बसन्तर दए बुझा, अमृत मेघ दए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग खेल करे करतारा, करनहार आप अख्वाइंदा। नौ सौ चुरानवे जुग विष्न ब्रह्मा शिव दए सहारा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवन्त नाल मिलाइंदा। साचे सन्तां खोल्ह किवाड़ा, अन्तर मन्त्र बूझ बुझाइंदा। आदि जुगादि खेल ब्रह्माद, शब्द अनाद दो जहानां आप सुणाइंदा। आपणे विच्चों आपा काढ, पूत सपूता करे लाड, जोती जाता पुरख बिधाता लख चुरासी बन्ने नाता, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मध आप हंढाइंदा। कलयुग मध खेल अवल्ला, एका एक एक कराईआ। आप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। बिस्मिल हो के आपे रल्ला, आलमीन इक्क खुदाईआ। सच संदेस नर नरेस एका घल्ला, मुहम्मद करे सच पढ़ाईआ। तीस बत्तीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हदीस इक्क सुणाईआ। सच हदीस एका वार, एकँकारा आप जणाइंदा। बन्द किवाड़ा खोल्ह दुआर, दर दरवाज़ा आप वखाइंदा। दर दरवेश बणे भिखार, नर नरेश सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। मुहम्मद उठ करे विचार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरी किरपा परवरदिगार, तेरा नूर मोहे नज़री आईआ। तेरा जल्वा अपर अपार, बेपरवाह तेरी शहिनशाहीआ। मैं बैठा दर भिखार, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। कलयुग मिल्या मीत मुरार, गलवकड़ी रिहा पाईआ। आपणा दस्से सारा हाल, चार लख बत्ती हज़ार मेरी आयू लिख लिख लेख समझाईआ। मैं कूड़ कुड़यारा गया हार, चारों कुण्ट कुण्ट ललकार, जीव जंत जंत समझाईआ। मेरा कोई ना करे प्यार, रलीआं माणे ना विच संसार, दुहागण नार ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जगत विचोला साचा ढोला कलयुग पड़दा ओहला दए चुकाईआ। कलयुग मेला संग मुहम्मद, मुहम्मद संग मेल मिलाइंदा। पुरख अबिनाशी चाढ़े रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा वजाए मृदंग, घर घर नाद सुणाइंदा। दाता दानी सूरा सरबंग, दयावान आपणी दया कमाइंदा। तेरा लेखा चौधवीं चन्द, चन्द चांदनी आप चमकाइंदा। चौदां सद तेरा पन्ध, बण पाँधी राह चलाइंदा। चौदां तबकां तेरा छन्द, हक़ हक़ीक़त इक्क वखाइंदा। अन्तिम करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग हथ्थ रखाइंदा। नानक गोबिन्द करे तेरी वंड, वंडण वंड आप वंडाइंदा। लेखा चुक्के जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दा

जगत लेखा जुग करता आप रखाइंदा। जुग करता करने योग, योग जुगीशर भेव ना आईआ। हरि करता जाणे धुर संजोग, गुर अवतारां मेल मिलाईआ। गुर करता कटणहारा दूई द्वैती रोग, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाईआ। हरि करता लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां तबकां चरनां हेठ दबाईआ। हरि करता आदि जुगादि इक्क जणाए आपणी ओट, दूसर नज़र कोए ना आईआ। आदि पुरख निर्मल जोत, शब्द गुरू गुरू समझाईआ। लख चुरासी किला कोट, बंक दुआरा दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, करे खेल साचा नर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। हरि जू हरि नर नरायण, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे कहिण, रसना कह कह सर्ब सुणाइंदा। गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा पुरख अकाल नेत्र पेखे नैण, नैण नैण नाल मिलाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम सब दा चुकाए लहण देण, बाकी नज़र कोए ना आइंदा। सृष्ट सबाई बणे साक सज्जण सैण, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाँई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणे गले लगाइंदा। ज़ात पात बणाए साक सज्जण भाई भैण, घर साचे मेल मिलाइंदा। तन बस्त्र इक्क पहनाए साचा गहिण, नाम खण्डां तन चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आप मुकाइंदा। जुग जुग लेखा जाए चुक्क, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गए उठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरा घुप, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे छुप, कलयुग जीव कूड़ी क्रिया रहे कमाईआ। ना कोई मानस ना मनुख, मानव आपणा रंग ना कोए वखाईआ। सृष्ट सबाई भुलया अबिनाशी अचुत्त, चेतन रूप ना कोए वखाईआ। आपणी जड़ आपे रहे पुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल मिलाईआ। नाता जुड़्या जूठ झूठ, सच सुच्च ना कोए कुड़माईआ। किसे दर ना दिसे बसन्ती रुत्त, पत्त डाली ना कोए महकाईआ। सेज सुहाए मात पुत्त, भैण भाई ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी श्री भगवाना वाली दो जहानां, कलयुग अन्तिम मनमुख जीव धरत मात दी गोद रहिण ना पाईआ। घर घर दर दर पई फुट्ट, जगत वासना रही लुट्ट, सांतक सति ना कोए कराईआ। बिन हरि नामे खाली बुत्त, राम कृष्न नानक गोबिन्द ईसा मूसा मुहम्मद नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। लहिणा चुक्के चार यारा, यारी जगत ना कोए निभाइंदा। चार कुण्ट झूठ अखाड़ा, आसा तृष्ना नाच नचाइंदा। त्रैगुण माया तत्ती हाढ़ा, पंचम तत्त तत्त जलाइंदा। ना कोई पुरख ना कोई नारा, साची सेज ना कोए हंढाइंदा। ना कोई शब्द नाद जैकारा, जै जैकार ना कोए अलाइंदा। नेत्र रोवे मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआल गुरदुआरा, हरि गुरू गुर नज़र किसे

ना आइंदा। पढ़ पढ़ करे ना कोए विचारा, रसना वाद सर्ब वखाइंदा। गोबिन्द नानक लिख लिख गया लिखारा, लेखा लेख ना कोए समझाइंदा। वेद व्यास करे पुकारा, कलयुग अन्तिम प्रगट होवे पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत दए सहारा, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। ईसा दोए जोड़ करे निमस्कारा, मेरा परवरदिगार मेरे पिच्छे मेरा राह तकाइंदा। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैण ना कोए उग्घाड़ा, अमाम अमामा मिहबान बीदो आपणा खेल खिलाइंदा। लोकमात आए एकँकारा, अकल कल आपणी आप वरताइंदा। सृष्ट सबाई वेखे विच संसारा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल पुरख समरथ, कलयुग अन्त अन्त कराईआ। लख चुरासी पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ रखाईआ। पूरब लहिणा होवे बस, अग्गे पन्ध ना कोए रखाईआ। चार वरनां पूरी करे आस, इक्क इकल्ला शहिनशाहीआ। घट घट जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे पृथमी आकाश, गगन मंडल आप सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रखे पास, सगला संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाईआ। निरगुण नाउँ हरि निरँकारा, आपणा आप जणाइंदा। जोती जोत हो उज्यारा, पंज तत्त चोला आप तजाइंदा। सम्बल वसया धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ आसण लाइंदा। नाम खण्डा तेज़ कटारा, दो जहाना आप वखाइंदा। तिक्खीआं रखे आपे धारा, लोहार तरखाण ना कोए बणाइंदा। बाडी बणया आप करतारा, लोकमात वेस वटाइंदा। इक्को रख्या तिक्खा आरा, दो जहानां चीर चिराइंदा। कलयुग मेटे रैण अन्धयारा, अन्ध अन्धेरा मात गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खण्डा आप समझाइंदा। साचा खण्डा नाम निधान, हरि जू हरि हरि आप बणाइंदा। लहिणा देणा चुकाए ज़िमीं असमान, ज़ाबर ज़बर खेल कराइंदा। हँकारीआं तोड़े गढ़ अभिमान, अभिमानी कोए रहिण ना पाइंदा। राज राजानां मेटे निशान, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। नौ खण्ड पृथमी करे वीरान, आपणा तरस ना कोए कमाइंदा। गुरमुख सज्जण लए पछाण, लख चुरासी विच्चों आप उठाइंदा। एका देवे साचा दान, नाम दान झोली पाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म कर परवान, आप आपणा रंग वखाइंदा। साचा मन्दिर इक्क मकान, गृह हट्ट सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा खेल कराइंदा । निरगुण खेल निहकलंक, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। दो जहानां वजाए डंक, डौरू आपणे हथ्थ उठाईआ। आप उठाए राउ रंक, सोया कोए रहिण ना पाईआ। साचा नाम फड़े धनश, चिल्ला होर ना कोए उठाईआ।

६७७
११

रथ रथवाही बणे बेअन्त, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल कर अन्तिम अन्त, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। लख चुरासी वेखे जीव जंत, घट घट पड़दा आपे लाहइंदा। गुरमुख मेले साचे सन्त, बण विचोला दया कमाइंदा। लेखा जाणे नार कन्त, कन्त कन्तूहल सेज सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेस वटाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, दूजी कुदरत आप वखाईआ। तीजे नैण खोल्ह किवाड़ा, चौथे पद करे रसाईआ। पंचम वेख इक्क अखाड़ा, छेवें घर खुशी मनाईआ। सत्तवें सति सतिवादी साची धारा, अठ्ठां तत्तां आप जणाईआ। नौवे नौ दर खोल्हे आप किवाड़ा, दसवें आपणा रंग रंगाईआ। बीस सौ हो उज्यारा, वीह दस खुशी मनाईआ। दस इक्क दे सहारा, साढे तिन्न हथ्थ मूल चुकाईआ। दस दो दे अधारा, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। दस तिन्न इक्क अखाड़ा, राज राजाना शाह सुल्ताना माटी ख़ाक वखाईआ। दस चार चौदां सच बहारा, जन भगतां एका इक्की पाईआ। दस पंज पंदरां अठसठ तीर्थ वेखे वेखणहारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणे चरनां हेठ रखाईआ। दस छे सोलां सोलां शिगारा सोलां इच्छया भर भण्डारा, कलयुग कूड़ी क्रिया दए वखाईआ। दस सत्त सतारां करे खेल न्यारा, प्रगट हो विच संसारा, जगत जगदीस सीस ताज़ इक्क टिकाईआ। दस अठ अठारां वीह सौ बिक्रमी करे प्यारा, राशटरपति करे ख़बरदारा, खड़ग खण्डा इक्क वखाईआ। बीस बीस अपर अपारा, इक्क नौ वणज वणजारा नौ इक्क जगत अखाड़ा, जीव जंत जंत जणाईआ। अग्ग लग्गे तत्ती हाढ़ा, ना कोई सके मात बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाया नाया इक्क उन्नीसा, लेखा जाणे मूसा ईसा काला सूसा तन पहनाईआ। काला सूसा तन मुख नक़ाब, बेनक़ाब खेल कराइंदा। लेखा जाणे दो दो आब, दो जहानां वेख वखाइंदा। भेव चुकाए ज़ाहर बातन बात, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाइंदा। चार वरन सुणाए एका गाथ, साचा ढोला आप सुणाइंदा। लहिणा देणा सब दा चुक्के मस्तक माथ, पूरब झोली आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका नाया नाया एका घर घर भेड़ भिड़ाइंदा। घर घर भेड़ देवे भेड़, भेव ना किसे जणाईआ। सम्मत उन्नीं मास दस दर दर छेड़ां देवे छेड़, छेकड़ आपणे हथ्थ रखाईआ। देवणहारा उलटा गेड़, नौ खण्ड रिहा भुवाईआ। धरत मात दा खुल्ला वेहड़, एका वार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा बेपरवाहीआ। बीस बीसा चढ़े सम्मत, सिम्मत हरि हरि वेख वखाइंदा। उतर पूरब पच्छिम दक्खण लेखा जाणे कर कर आपणी हिम्मत, दूजा बल ना कोए जणाइंदा। भेव ना जाणे कोई पंडत, मुल्ला शेख

ੳ੭੬ ६७६

११

मुसायक पीर मसला हल्ल ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, लेखा चुकाए जेरज अंडत अंडत जेरज आपणे लेखे पाइंदा। बीस बीसा हाढ़ सतारां, सति सति समझाईआ। सृष्ट सबाई कर खुआरा, एका नाअरा दए लगाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, परवरदिगार आप खुदाईआ। राम रहीम नज़री आए अगम्म अपारा, कान्हा कृष्ना बंसरी नाम वजाईआ। मुकंद मनोहर लखमी नरायण दे सहारा, कँवल नैण नैण मिलाईआ। कलमा कलाम कायनात बोल जैकारा, हक़ हक़ इक्क वखाईआ। सतिनाम नाम सति वणजारा, सति सरूप नज़री आईआ। फतहि डंका अन्तिम वारा, वाहिगुरू आपणे नाम वजाईआ। सृष्ट सबाई चार वरन चार कुण्ट चार खाणी चार बाणी एका गाए नाअरा, आत्म परमात्म वड वड्याईआ। बीस बीसा हरि जगदीसा छत्र झुलाए एका सीसा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान सति जैकारा, दो जहान सुणाए एका वारा, बिन रसना जिह्वा करे पढ़ाईआ। ऊँच नीच ज़ात पात वरन बरन ना कोए अखाड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म एका घर वखाईआ। गुरमुख विरला पावे सारा, सतिगुर बुझाए बुज्झणहारा, एका दूजा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा एका एक सुणाईआ। सच संदेसा सुनणा कान, बिन कन्नां आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण सदा मेहरवान, मेहर आपणी आप रखाइंदा। हरि पुरख निरँजण दानी दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप वखाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, सति सतिवादी नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता करे परवान, धुर परवाना इक्क सुणाइंदा। श्री भगवान सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे माण, निर्धन आपणे गले लगाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क दुकान, हरि जू आपणे हट्ट विकाइंदा। चार वरन दा इक्क मकान, गृह मन्दिर इक्क वखाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क इमान, एका इष्ट प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल एका नज़री आइंदा। पुरख अकाल एको एक, एका एक अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर गुर अवतारां देवे टेक, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत भगवन्त कर बुध बिबेक, विवेकी आपणा रंग रंगाइंदा। बिन नेत्र लए वेख, लोचण नैण ना कोए खुल्हाइंदा। हरि का रूप मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, मूंड मुंडाए ना सोभा पाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेश, जुग जुग सेव कमाइंदा। सदा सुहेला इक्क अकेला नर नरेश, तख्त निवासी सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन इक्क ज्ञान, सच उपदेश आप सुणाइंदा। सच संदेस इक्क उपदेश कर उत्पत, आपणी उत्पत लए समझाईआ। सर्ब जीआं देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। निरगुण निरगुण बुझे तत्त, ईश जीव

होए कुड़माईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। सर्ब जीआं प्रभ रखे पत्त, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी गाए इक्को जस, जस वेद पुराणा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं देवे इक्क ज्ञान, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ ।

★ १४ चेत २०१६ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड नारला ज़िला अमृतसर ★

सति पुरख निरँजण शाह सुल्तान, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण वड बलवान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। हरि पुरख निरजंण हुक्मरान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। एकँकार वड बलवान, बल आपणा आप धराइंदा। आदि निरँजण जाणी जाण, जानणहार इक्क अख्वाइंदा। अबिनाशी करता मर्द मर्दान, साचा बल आप प्रगटाइंदा। श्री भगवान धुर निशान, दरगाह साची आप झुलाइंदा। पारब्रह्म दर बण दरबान, अलख अलख इक्क जगाइंदा। सचखण्ड दुआरे खेल महान, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। पुरख अकाल हो मेहरवान, आपणी भिच्छया आप वरताइंदा। देवणहारा साचा दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचे घर वंडे वंड, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। थिर घर बैठ सूरा सरबंग, आपणी बणत आप बणाईआ। लेखा जाणे सूरज चन्द, रवि ससि किरन किरन किरन रुशनाईआ। भेव खुल्हाए कोटन ब्रह्मण्ड, गगन मंडल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, श्री भगवान आप सुहाइंदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा खेल कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए बणत, घाड़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। नाउँ निरँकारा मणीआं मंत, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे वेख वखाइंदा। आपणा खेल वेखणहारा, एका एक अख्वाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, दरगाह बैठा आसण लाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। शब्द सुत सुत दुलारा, अबिनाशी अचुत्त सेव समझाईआ। राती रुत्त जाणे विच संसारा, अनुभव आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। साचे मन्दिर आपे वस, आपणा पड़दा लाहइंदा। आपणे अन्तर आपे होया वस, दूसर होर ना कोए रखाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। आपणा नूर कर प्रकाश,

जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म अन्तर धार, हरि जू हरि हरि आप मनाईआ। निरगुण सरगुण वेखणहार, निराकार वड्डी वड्याईआ। अजूनी रहित खेल करे अपार, मूर्त अकाल नूर रुशनाईआ। घट घट वेखे वेखणहार, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। धुर संदेसा एका वार, नर नरेशा आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदार, आलस निंद्रा दए गंवाईआ। शब्दी नाद धुंन जैकार, गुर शब्दी शब्द अल्हाईआ। नाल रलाए वेद चार, शास्त्र सिमरत आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा एकँकार, अकल कल आपणा आप जणाइंदा। चार जुग दी पावे सार, चौकड़ आपणे हथ्थ रखाइंदा। चार वरन दे अधार, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क अल्हाइंदा। धुर फ़रमाणा सच संदेसा, पारब्रह्म जणाईआ। नर नरायण धरया वेसा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केसा, मूंड मूंडा ना रूप वटाईआ। सचखण्ड दुआरे एका बैठा, थिर घर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। हरि वड्याई वड्डा वड, आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया आपणे विच्चों कढ्ढ, पंज तत्त आपणा बन्धन पाइंदा। शब्द अनाद विच ब्रह्माद सुणाए नद, अनादी नाद आप वजाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पतालां जाणे पार हद्द, हदूद आपणी आप वंडाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग वेखे हो प्रगट, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। लोक परलोक दो जहान खोल्हणहारा हट्ट, साची वस्त इक्क वरताइंदा। वसणहारा तीर्थ तट, तट किनारा सोभा पाईआ। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ आप जणाइंदा। सदा सुहेला चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। देवे प्रकाश रवि ससि, किरन किरन चमकाइंदा। आपणी करे आपे पूरी आस, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। हुक्मे अंदर पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां उपर डेरा लाइंदा। करे खेल हरि शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा बल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क जणाइंदा। सच सुनेहड़ा एका वार, इक्क इकल्ला दए सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होणा ख़बरदार, बेख़बर आप जगाईआ। करोड़ तेतीसा दए हुलार, सुरपति इन्द नाल मिलाईआ। चारे जुग नेत्र दए उग्घाड़, आलस निंद्रा रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी बेपरवाहीआ। कागद कलम ना लिखणहार, हरि का लेख ना कोए जणाईआ। राह तक्कण वेद चार, पुराण अठारां रहे जस गाईआ। अठ दस इक्क ज्ञान, गीता ज्ञान इक्क प्रगटाईआ। एका हुक्म एका हुक्मरान, एका सेवक सेवा सच

समझाईआ। इक्क तौफीक मेहरवान, महिबान वड वड्याईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, शब्द संदेसा मात सुणाईआ। एका कलमा अञ्जील कुरान, एका तुलबा ईसा मूसा मुहम्मद रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाईआ। धुर फ़रमाणा श्री भगवाना, एका एक जणाइंदा। चार जुग वेखो मार ध्याना, बिन नेत्र आप वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बन्नदा आया गाना, साचा सगन मनाइंदा। नौ खण्ड पृथमी राज राजाना, सत्तां दीपां हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा अन्तिम कल, कल कल्की हरि सुणाइंदा। चार जुग करदा रिहा वल छल, कोटन कोटि काल बिताइंदा। निरगुण सरगुण अंदर रल, सरगुण लोकमात प्रगटाइंदा। निरगुण सवाल करदा गया हल्ल, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, महल्ल साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग हरि निरँकारा, निरगुण निराकार आप रंगाईआ। रूप रंग ते वसे बाहरा, दिस किसे ना आईआ। करे खेल गुपत ज़ाहरा, भेव कोए ना पाईआ। जुग जुग प्रगटाए पीर पैग़म्बर गुर अवतारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द सुणाए एका नाअरा, बोध ज्ञान करे पढ़ाईआ। निर्मल दीआ कर उज्यारा, जोत निरँजण आदि निरँजण करे रुशनाईआ। अमृत बख्शे ठंडा ठारा, निझर झिरना इक्क झिराईआ। अनहद नाद सुणे धुन्कारा, रागी राग आप अलाईआ। साचा मन्दिर कर त्यारा, घर घर विच बंक सुहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मेल मिलाए अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। साचा भेव हरि भगवन्त, आपणा आप जणाइंदा। वेस वटाया जुगा जुगन्त, जुग करता नाउँ धराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणाए बणत, आपणा गेड़ा आप चलाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कीता अन्त, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। कोटन कोटि नाउँ मणीआं मंत, रसना जिह्वा मिल मिल गाइंदा। लख चुरासी एका कन्त, कन्त कन्तूहल खेल कराइंदा। भगतां काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। साचे सन्तां गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। गुरमुखां बणाए साची बणत, गुर गुर आपणा भेव खुलाइंदा। गुरसिख नाता तोड़ भुख नंगत, नाम निधाना झोली पाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, मन मति बुध हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कराइंदा। जुग जुग कार करावणहारा, तख्त निवासी इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार प्रगटावणहारा, पीर पैग़म्बर दए सहारा, दस्तगीर सच्चा माहीआ। शब्दी शब्द बोल जैकारा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत खाणी बाणी करे पढ़ाईआ। आपे वसे सब तों बाहरा,

बेअन्त कहे लोकाईआ। हुक्मे अंदर सति वरतारा, सति सतिवादी कार कराईआ। कोई ना दिसे हुक्मे बाहरा, गुर अवतार सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी बीते वारो वारा, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी किरत आप कमाईआ। करनी किरत करता पुरख, करनहार कमाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्त ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता ग़म ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी लए परख, नाम कसवटी हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां देवे आपणा दरस, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत्त बुझाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हवस होर ना कोए रखाइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एका एक सुणाइंदा। इक्क संदेसा एका वार, एका एक जणाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयार, रैण अन्धेरा छाईआ। सूरज चन्न ना कोई पाए कोई सार, तत्तव तत्त ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। ब्रह्म मति भुल्ला सर्ब संसार, मनमति करी कुड़माईआ। गृह गृह मन्दिर धूआँधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म हरि निरँकारा, कलयुग अन्त अन्त वरताइंदा। प्रगट हो निहकलंक नर अवतारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड दा सच वणजारा, लोकमात वेख वखाइंदा। चार जुग दा जग पनिहारा, सेवक आपणी सेव कमाइंदा। दो जहान दा इक्क सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। आपणी खेल करे करतारा, भेव कोए ना पाइंदा। प्रगट हो विच संसारा, निहचल आपणा धाम सुहाइंदा। पूरब जुग पावे सारा, लहिणा हर घट वेख वखाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। भूपत भूप राज राजाना श्री भगवाना, हुक्मराना इक्क अख्वाइंदा। शब्द अगम्मी हरि बिबाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक रखाइंदा। इक्क बिबाणा आपे रख, आपणी दया कमाईआ। निरगुण निराकार हो प्रतख, अकल कल वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवन्त मार्ग दस्स, रैहबर बणे आप खुदाईआ। चार जुग चार वरन चार वेद करे वेस, बचया कोए रहिण ना पाईआ। चौदां लोक चौदां तबक दो जहान वेखे नस्स, बण बण पाँधी राहीआ। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, औंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। तीर निराला पुरख अकाला शब्द अगम्मी मारे कस, लख चुरासी आर पार वखाईआ। किरनी किरन नूर जाणे रवि ससि, मंडल मण्डप धरत धवल पृथ्मी आकाश गगन मंडल आपणा खेल कराईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे दास, खेले खेल खेल तमाश, गोपी काहन श्री भगवान आपणा नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा धुर दी बाण, हरि जू हरि हरि

आप जणाइंदा। चार जुग दे विछड़े गुर अवतार इक्ठे करे आण, इक्क इक्क नाल मेल मिलाईआ। नेत्र खोल्हो करो ध्यान, वेखो मात लोकाईआ। आपणा दयो ब्यान, सच ब्याना लिख लिख लेखे पाईआ। उच्ची कूक सर्ब कुरलाण, कूक कूक देण दुहाईआ। लिख लिख आए वेद पुराण, शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी जीवां जंतां कर पढ़ाईआ। कलयुग अन्त होया बलवान, चारों कुण्ट फिरे शैतान, शरअ हदीस ना कोए रखाईआ। पंज तत्त बे ईमान तेरा नाउँ भुलया गुण निधान, साडी चले ना कोए चतुराईआ। नेत्र नैण सर्ब शरमाण, तेरा भेव कोए ना पाण, बेअन्त तेरी वड्याईआ। धुरदरगाही तूं सच्चा हुक्मरान, आदि जुगादि तेरी मन्न के आए आण, सीस जगदीस तेरा हथ्थ टिकाईआ। तेरे चरन कँवल इक्क ध्यान, तेरा शब्द सच बिबाण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। किरपा कर श्री भगवान, आपे दे जीआ दान, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा अछल अछेदा, आपणा पड़दा आप उठाईआ। आपणा पड़दा देवे लाह, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। सच संदेसा दए सुणा, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। सब दा पन्ध दए मुका, पाँधी कोए नज़र ना आईआ। दर दुआर लए बुला, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस रहे झुका, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। समुंद सागर नेत्र नैणां नीर रहे वहा, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। धरत धवल रही कुरला, खुल्हड़े केस रही वखाईआ। पर्बत उच्चे टिल्ले मारन धाह, समेरू एका नैण नैण चरन विच लगाईआ। रवि ससि रहे शरमा, साडा नूर कम्म किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग उत्ते पड़दा बैठे पा, पल्लू किसे ना कोए उठाईआ। त्रैगुण माया आपणा घूँगट रही वखा, लख चुरासी पड़दा पाईआ। पंज तत्त रहे जला, अग्नी अग्ग अग्ग लगाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कलयुग अन्तिम वेख होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। असीं दे के आए सच निशान, लिख लिख लेख जगत समझाईआ। भगत नेत्र खोल्ह वेखण आण, नैण नैण मिलाईआ। ग़रीब निमाणया मिले ना कोई थाँ, थान थनंतर मिले ना कोए वड्याईआ। निर्धन पकड़े ना कोई बांह, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। साची दिसे ना कोई मां, पिता पूत ना कोए भाईआ। कलयुग जीव काग वांग रहे कुरला, जूठ झूठ मुख विशटे नाल भराईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। करे खेल बेपरवाह, आपणा बल आप प्रगटाईआ। तेई अवतार लए उठा, सन्त कुमारा हुक्म सुणाईआ। बराह हाव गरीव यगे पुरष नरायण एका कलमा दए पढ़ा, दत्ता त्रै एका रंग वखाईआ। रिखप देव पिरथू लए सुणा, मत्तस कछप आपणा हुक्म वरताईआ। धनंतर एका हुक्म दए जणा, मोहणी आपणा रूप वटाईआ। हँसा चोग दए चुगा, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर सिँघ आपणी खेल

वखाईआ। नर सिँघ खेल बल बावन, बलधारी आप कराइंदा। आपे होया सतिजुग जामन, सतिजुग वेला अन्त ल्याइंदा। करे खेल श्री भगवानन, भेव कोए ना आइंदा। भगत भगवन्त पकड़े दामन, पल्लू आपणा हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरी नरायण आपणा रूप वटाइंदा। हरी नरायण रूप धर, धरनी धरत धवल वेख वखाइंदा। सतिजुग चुकाए भउ डर, भयानक रूप ना कोए वटाइंदा। भगत भगवन्त अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी दरस कराइंदा। त्रेता त्रिया मात धर, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणा रंग रंगाइंदा। एका पंडत लए फड़, परस परसराम प्रनाइंदा। राम रूप आपे धर, दसरथ बेटा घट घट लेटा आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा साचा राणा, वेद व्यासा करे खुलासा, लख चार हज़ार सतारां सलोक आप गिणाइंदा। गोबिन्द मेला सच्चे शाही, पुरख अकाल इक्क मिलाईआ। पूत सपूता गोद बहाई, फतहि डंका इक्क वजाईआ। वाहवा वाहिगुरू रिहा ध्याई, जात पात वरन गोत पन्ध मुकाईआ। जुग करता आपणा खेल गया समझाई, गुर अवतार सेवा लाई, साची सेवा इक्क रखाईआ। कलयुग अन्तिम सृष्ट सबाई गई भुलाई, जीव जंत साध सन्त साचा भेव कोए ना पाईआ। दुरमति मैल मस्तक लग्गी शाही, वेले अन्त ना कोई धुवाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पूरब लेखा कढ्ढणहारा भरम भुलेखा, भरम आपणा आप तुड़ाईआ। भरम भुलेखा कढ्ढे करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। कल कल्की अन्तिम लए अवतार, कल कलेश सर्ब गुवाइंदा। डंक वजाए एकँकार, राउ रंक आप सुणाइंदा। दो जहानां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। हुक्मी हुक्म करे वरतार, हुक्मे अंदर सर्ब भुवाइंदा। भाणा मन्नणा पए अन्तिम वार, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। गुर अवतार करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। तूं साहिब सच्ची सरकार, साचे तख्त सोभा पाइंदा। तेरी गा के आए वार, बत्ती दन्द दन्द सलाहइंदा। कलयुग आउणा अन्तिम वार, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सगला संग निभाइंदा। कूड़ी क्रिया करे खुआर, साचा राह चलाइंदा। वरन बरन जात पात मारे मार, कमलापात मेल मिलाइंदा। एका नैण खोलू किवाड़, निज नेत्र मेल मिलाइंदा। बजर कपाटी देवे पाड़, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। अमृत बख्शे ठंडा ठार, सच सरोवर इक्क नुहाइंदा। घर घर विच दीआ बाती कर उज्यार, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। साचा साकी बण गुर दातार, नाम प्याला इक्क प्याइंदा। अठ्ठे पहर रहे खुमार, एका रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला पन्ध आप मुकाइंदा। पिछला पन्ध मुक्के धन्दा, लोकमात रहिण ना पाईआ। मानस कोई ना रहे गंदा, जूठ झूठ दए मिटाईआ। बण तरखाण फड़या हथ्थ विच

९८६
११

रंदा, लख चुरासी साफ़ कराईआ। आपणी हथ्थीं वढ्ढे गंढ्ढा, नाम कुहाढ़ा हथ्थ उठाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्डा, तिक्खी आरी रिहा चलाईआ। इक्क सुणाए साचा छन्दा, जीव जंत करे पढ़ाईआ। इक्क उठाए साचा खण्डां, दो जहानां रिहा चमकाईआ। साहिब दयाल सदा बख्शंदा, हरिजन साचे लए तराईआ। ठाकर स्वामी देवे इक्क अनन्दा, निज आत्म करे रसाईआ। पतिपरमेश्वर प्रकाश करे बिन सूरज चन्दा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, पूरब लेखा दए मुकाईआ। पूरब लेखा जाए मुक्क, श्री भगवान आप चुकाइंदा। कलयुग कूड़ा जाए उठ, लोकमात रहिण ना पाइंदा। सति सतिवादी साचा सुत, सतिजुग साचा हरि जगाइंदा। धरत मात दी रखे कुक्ख, कुक्ख सुलखणी आप कराइंदा। उज्जल करे मात मुख, मुख मुखड़ा आप वड्याइंदा। चार वरन दा मेटे दुःख, जात पात ना कोए जणाइंदा। भगत सुहेले गोदी चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल अन्तिम वार, हरि कलयुग आप कराईआ। हरिजन मेले चार जुग दे विछड़े यार, गुरसिख आपणा बन्धन पाईआ। भगत भगवन्त लए उधार, भगतन आपणे लेखे लाईआ। साची शक्ती इक्क उज्यार, आदि शक्ति शक्ति रुशनाईआ। चतुर्भुज खेल बलकार, हरिजन भुजां उपर उठाईआ। लेखा जाणे विच संसार, वड संसारी सच्चा माहीआ। आदि भवानी खेल न्यार, सच निशानी दए जणाईआ। नूर नुरानी हो उज्यार, अल्ला मीआं खेल कराईआ। बिस्मिल जाणे आपणी कार, बिन करद हलाल कराईआ। मुकामे हक़ परवरदिगार, सच भूमिका रिहा सुणाईआ। हक़ हक़ीक़त खोल्ह किवाड़, भेव अभेद समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जगत अन्धेरा दए गंवाईआ। जगत अन्धेरा होए दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। सब दा तोड़े माण गरूर, गुरबत कोई ना होर वखाइंदा। प्रगट होए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा वेस वटाइंदा। सर्बकला आपे भरपूर, आपणी कल आप वरताइंदा। जन भगतां मेले फड़ ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे गए अल्ला मीआं निर्मल नूर, अलाही नूर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा आप चुकाइंदा। कलयुग लेखा चुकाए मात, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। जन भगतां बणे सज्जण साक, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। पूरा करे नानक गोबिन्द भविख्त वाक्, वेद व्यासा लिख्या मेट ना कोए मिटाईआ। जुग जुग पूरी करे आस, आसावन्त तृखा सर्ब बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा लए जगाईआ। सतिजुग साचा जाए जाग, जगावणहारा आप जगाइंदा। लोकमात

लग्गे भाग, वडभागी आपणी दया कमाइंदा। जन भगतां अन्तर इक्क वैराग, बण वैरागी आप उपजाइंदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल आप धुवाइंदा। नूर नुराना जगे चिराग़, चन्द चांदनी मुख शरमाइंदा। त्रैगुण अग्नी बुझे आग, तत्तव तत्त ना कोए जणाइंदा। एका मेला कन्त सुहाग, हरि जू नारी कन्त खेल कराइंदा। जुग जुग दी रखे याद, आपणी याद ना कदे भुलाइंदा। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी खेल कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बन्ने ताग, अन्तिम सगन मनाइंदा। लख चुरासी दिती दाद, झोली आपणी फेर पाइंदा। साचे भगतां करे लाड, दूसर हथ्थ किसे ना आइंदा। सति निशाना देवे गाड, दो जहानां आप झुलाइंदा। करे खेल मोहण माधव माध, मधुर बैण आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करे आप, भेव ना किसे जणाईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, पिता पूत खेल कराईआ। आपे जाणे आपणा वड प्रताप, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आप प्रगटाए साचा जाप, सतिजुग साचे माण दिवाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे नाप, चरनां हेठ रखाईआ। निरगुण सरगुण कमलापात कँवल नैण नैण मटकाईआ। वेखणहारा मार झात, दो जहानां ताकी आप खुल्लाईआ। आदि जुगादी पाकी पाक, पत्तत पुनीत बेपरवाहीआ। सतिजुग खोल्ले साचा हाट, बण हटवाणा हट्ट चलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप एका लाहा लैण खाट, हरि नामा वणज आप कराईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को जात, अज़ाती रूप ना कोए वटाईआ। नाम निधाना साची गाथ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म निभाए साथ, निरगुण मेला चाँईं चाँईंआ। ब्रह्म पारब्रह्म उतारे आपणे घाट, साचे पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। सृष्ट सबाई एका जाप, एका मार्ग दए लाईआ। एका माई एका बाप, एका गोद सुहाईआ। एका दिवस एका रात, एका वंड वंडाईआ। एका सेजा एका खाट, घर घर आसण लाईआ। एका पूजा एका पाठ, एका पढ़ पढ़ करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर मस्जिद दस्से माठ, गुरदुआरा इक्क वखाईआ। एका साहिब पुरख समराथ, कोटन कोटि रूप वटाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैग़म्बर चार जुग गौदे आए जस, कलयुग अन्तिम आपणा रूप वटाईआ। आपणा खेल करे हस्स हस्स, चिंता ग़म ना कोए जणाईआ। जन भगतां मार्ग दस्स दस्स, साचे पौड़े रिहा चढ़ाईआ। प्रीतीवान प्रीत अंदर फस फस, आपणा बन्धन आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण जुगत जागरत जोत जोती जाता इक्क समझाईआ। जोती जाता पुरख अकाल, अगम्म अगम्मड़ी खेल कराइंदा। लेखा जाणे काल महांकाल, दीन दयाल भेव ना आइंदा। सचखण्ड वसणहारा सच्ची धर्मसाल, लोकमात सचखण्ड दुआरा आप बणाइंदा। छत्ती युग दा इक्क निशान, छत्ती छत्ती बन्धन पाइंदा। बहत्तर भगत कर प्रधान, बहत्तर नाड़ी जोत जगाइंदा। एका नामा कर परवान,

छप्पर छन्न लेखा लाइंदा। एका धन्ने देवे दान, जट्ट आपणे रंग रंगाइंदा। वाहवा खेल करे श्री भगवान, भेव कोए ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैग़म्बर चरन कँवल बैठे जस सारे गाण, वाहवा वड्डी तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा वेखे खेल पृथ्मी आकाशा, आप आपणा फेरा पाईआ। आपणा फेरा पाए जग, दिस किसे ना आइंदा। निरगुण नूर सूरा सरबग, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाइंदा। हरिजन मेल मिलाए हँस बणाए फड़ फड़ कग्ग, सोहँ हँसा चोग चुगाइंदा। दो जहानां रखे लज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पंज तत्त काया सिँघ शेर जूठा झूठा भाण्डा गया भज्ज, तत्तव तत्त ना कोए रखाइंदा। निरगुण सेजे बैठा सज, सच सिँघासण आसण लाइंदा। धुर दरगाही नगारा गया वज्ज, ताल तलवाड़ा ना कोए सुणाइंदा। सरगुण नालों निरगुण होया अड्ड, अड्ड हो के निरगुण सरगुण विच डेरा लाइंदा। संगी साथी भाई भैण साक सज्जण मात पित पुत्तर धीआं गया छड्ड, आपणा संग ना कोए रखाइंदा। दो जहानां मुका पन्ध, सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। गोबिन्द ढोला सुणाए छन्द, निरगुण आपणी खेल कराइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वंडण वंड, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। नंगी ना होवे कन्ढ, आपणी करवट आप बदलाइंदा। लहिणा देणा चुकाए सूरज चन्द, ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाइंदा। लेखा चुक्के सुरपति इन्द, करोड़ तेतीसा वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम होए रंड, जगत रंडेपा छाइंदा। टुट्टी सके ना कोई गंढ, गंढणहारा आप तुड़ाइंदा। सतिजुग सीतल चढ़े चन्द, सीतल धारा आप प्रगटाइंदा। जन भगतां करे खुशी बन्द बन्द, ज़ात पात ना कोए वखाइंदा। अठ्ठे पहर दिवस रैण इक्क अनन्द, अनन्द मंगल एका गाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर श्री भगवान नौजवान गीत सुहागी गाए छन्द, सोहला ढोला आपे गाइंदा। साची वंडण मात वंड, वस्त अमोलक सतिजुग झोली पाइंदा। सोहँ शब्द सदा अखण्ड, गोबिन्द खण्डा इक्क खड़काइंदा। नानक निरगुण गाया बत्ती दन्द, रसना जिह्वा नाल मिलाइंदा। कलयुग अन्त प्रगटाए गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आत्म परमात्म सच ज्ञान सर्ब दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म साचा मेला, मिल मिल खुशी मनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म गुरू चेला, गुर गुर रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला सगला संग निभाईआ। एकँकारा इक्क अकेला, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। जुग चौकड़ी आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी खेल कराईआ। नर हरि नरायण वड बलकारी, बल आपणा आप धराइंदा। आदि जुगादी खेल न्यारी, जुग करता आप कराइंदा। कलयुग बाजी गई हारी, हार जित आपणे हथ्थ वखाइंदा। लुट्टी

जाए चार यारी, यारी यार ना कोए रखाइंदा। पंचम पंच करे जैकारी, पंच परवान पंच प्रधान पंचे दरगाह आप सुहाइंदा। पंचां उपर इक्क हुक्मरान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। सतिजुग साचा चले विच जहान, जीव जीव जीव दया कमाइंदा। हँ ब्रह्म पारब्रह्म सोहँ अक्खर सारे गाण, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को दाता, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, दो जहान वेखे खेल तमाशा, लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाशा, लख चुरासी आपणी झोली आपे पाइंदा।

★ १५ चेत २०१६ बिक्रमी मनी सिँघ दे गृह पिण्ड सिद्धवां ज़िला अमृतसर ★

सतिगुर पूरा सच्चा हरि, आदि पुरख इक्क अख्वाइंदा। सति पुरख निरँजण देवणहारा वर, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसणहारा साचे घर, एकँकारा सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। आदि निरँजण निर्मल दीआ बाती जोत धर, बिन तेल बाती डगमगाइंदा। अबिनाशी करता सच सिँघासण आपे खड़, राजन राज शाह सुल्तान आपणा वेस वटाइंदा। श्री भगवान हो मेहरवान निरगुण निंरकार आपणा नाउँ पढ़, बिन अक्खशर आपे गाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सरन सरनाई आपे पड़, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। तख्त निवासी किरपा निध ठाकर स्वामी दया कर, आपणी दया आप कमाइंदा। आपणी इच्छया देवे वर, निरगुण झोली आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाइंदा। सतिगुर सच्चा एकँकारा, आदि जुगादि समाईआ। सचखण्ड वसे सच मनारा, महल अटल करे रुशनाईआ। तख्त निवासी वड सिक्दारा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। आपणी इच्छया कर वरतारा, थिर घर साची बणत बणाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, बेअन्त बेपरवाहीआ। वेस वटाए नारी नारा, कन्त कन्तूहल साची सेज आप सुहाईआ। दाई दाया बण करतारा, आपणा खेल आप कराईआ। पूत सपूता एका जाया, शब्दी नाउँ रखाईआ। समरथ पुरख सिर हथ्थ टिकाया, थिर घर साचे दए बहाईआ। सच संदेसा इक्क सुणाया, एकँकारा करे पढ़ाईआ। निरगुण निरगुण बन्धन आपे पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर सच्चा शहिनशाहीआ। सतिगुर सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह हरि अख्वाइंदा। सचखण्ड निवासी बण मलाह, थिर घर बेड़ा आप चलाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल करा, आदि पुरख निरँजण रंग रंगाइंदा। वसणहारा साचे थाँ, दरगाह साची धाम वड्याइंदा। आपणा पड़दा दए खुल्हा, भेव अभेद जणाइंदा। शब्दी सुत मेला मेल मिला, मिल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। साचे मार्ग देवे पा, धन्दा

हरि जू इक्क रखाइंदा। निरगुण छन्दा दए सुणा, अक्खर ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा दया कमाइंदा। सतिगुर सच्चा दीन दयाल, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, घर मन्दिर सोभा पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सुरती शब्द वेखे लाल, लालन आपणी गोद सुहाईआ। थिर घर करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप समझाईआ। आपणा गुण श्री भगवन्त, शब्दी शब्द जणाइंदा। निर्मल जोत महिमा अगणत, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध तेरी धार चलाइंदा। आप बणाई तेरी बणत, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। आपे नाउँ आपे मंत, नाम नामा आप दृढ़ाइंदा। आपे होए सोभावन्त, सच भूमका थान आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा पड़दा लाहइंदा। सतिगुर आपणा पड़दा लाह, निरगुण निरगुण खेल कराईआ। शब्द दुलारा एका जा, जन जननी बणे पिता माईआ। सिफ्ती सिफ्त देवे सिफ्त सलाह, आपणी सिफ्त आप जणाईआ। निरगुण निरगुण मार्ग देणा ला, एका मार्ग रिहा वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रचन रचा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं आपणा बन्धन पाईआ। त्रैगुण माया झोली पा, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाईआ। पृथ्मी आकाश खेल करा, जल थल महीअल रूप वटाईआ। रवि ससि नूर चमका, दो जहानां वेस वटा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार वखाईआ। लख चुरासी घाड़त लैणा घड़ा, घड़ भाण्डे वेखे थाउँ थाँ, जेरज अंड वंड वंडा, उत्भुज सेत्ज बन्धन पा, आपणा नाउँ आपे गा, ब्रह्मा वेता लए पढ़ा, चारे वेद समझाईआ। चारे बाणी राग अल्ला, करे खेल बेपरवाह, निरगुण सरगुण दए समझा, तत्तव तत्त तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा सच्चा माहीआ। सतिगुर सच्चा एका एक, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण कर कर वेस, लख चुरासी घाड़त आप घड़ाइंदा। घट घट अंदर हो प्रवेश, जोत निरँजण वंड वंडाइंदा। नौ दुआरे नौ खण्ड रेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया बंक बंक वड्याइंदा। काया बंक घाड़न घड़, सतिगुर आपणी खेल खिलाइंदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश फड़, आपणा मेला आप मिलाइंदा। रक्त बूंद देवे वर, हड्ड मास नाड़ी रत्त जोड़ जुड़ाइंदा। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, जगत वासना विच भराइंदा। आसा तृष्ना हउमे हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार बहाए घर घर, साची खेल खिलाइंदा। सरगुण उपर निरगुण किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। मन मति बुध बंधाए लड़, पल्लू एका एक फड़ाइंदा। घर विच करे त्यार घर, घर घर विच सोभा पाइंदा। सुखमन टेढी बंक अद्धविचकारे रखे घड़, ईड़ा पिंगल पहरेदार बणाइंदा।

निरगुण दीआ बाती कमलापाती जोत निरँजण अंदर धर, बजर कपाटी कुण्डा लाइंदा। अनहद शब्द अनादी धुन, राग रागनी हरि जू एका एक अलाइंदा। आत्म परमात्म खेल कर, सरगुण अंदर निरगुण वड़, साची सेजा सोभा पाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म वेखे खड़, वेखणहारा दिस ना आइंदा। ईश जीव चेतन जड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया सतिगुर पूरा आपणा वेस वटाइंदा। पंज तत्त काया खेल अस्थूल, हरि करता आप खिलाईआ। सूखम रूप ना जाए भूल, अभुल बेपरवाहीआ। कारन जाणे आपणा असूल, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी घाड़न घड़, घट घट वसे सच्चा माहीआ। लख चुरासी घाड़न घड़या, घड़ घड़ हरि जी वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वेस करया, कर कर वेस अनेक वटाइंदा। पंज तत्त चोला आपे फड़या, त्रैगुण बन्धन पाइंदा। निरभउ भय लख चुरासी वखाए डरया, डर एका एक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया घाड़न घड़, मन मति बुध डेरा लाइंदा। मन मति बुध रख आपणी धार, धार धार विच प्रगटाईआ। दिस ना आए विच संसार, नेत्र नैण ना कोए वखाईआ। मनुआं मन फिरे सिक्दार, नौ दुआरे फिरे चाँईं चाँईंआ। मति मतवाली दे सहार, जगत बुद्धी बूझ बुझाईआ। करे खेल आप करतार, भेव ना किसे जणाईआ। आपणी इच्छया हो त्यार, साची भिच्छया दए वरताईआ। नाम निधाना गुण विचार, घट घट अंदर आप टिकाईआ। त्रैगुण माया पड़दा देवे डार, ना सके कोए उठाईआ। काया कवरी डूँघी भँवरी करे खेल अपार, गहर गवरी नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी वस्त नाम निधान, हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। काया मन्दिर वेख मकान, घर साचे आप टिकाइंदा। आपे होए निगहबान, सदा सुहेला दया कमाइंदा। इक्क इकल्ला नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। सच संदेसा देवे आण, धुर फ़रमाणा छन्द जणाइंदा। शब्द जणाई श्री भगवान, गुर गुर वेख वखाइंदा। गुर गुर रूप आप मेहरवान, निरगुण निरगुण रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा खेल रखे हथ्थ, भेव कोए ना पाइंदा। आदि पुरख हो प्रतख, प्रतख रूप वटाइंदा। शब्दी गुर मार्ग दस्स, लख चुरासी आप पढ़ाइंदा। घट घट अंदर आपे वस, आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण नूर करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दे निशाना, लोकमात वेख वखाईआ। आत्म परमात्म कर परवाना, सच परवाना इक्क फड़ाईआ।

निरगुण निरगुण बन्ने गाना, सरगुण सगन मनाईआ। वंडे वंड दो जहानां, वंडणहारा सच्चा माहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल करे महाना, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख सच्चा हरि, सतिगुर सच्चा इक्क सलाहीआ। सतिगुर सच्चा आदि जुगादि, हरि हरि आप अख्वाइंदा। गुर गुर देवे साची दाद, गुर शब्द रूप प्रगटाइंदा। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खेल कराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर अंदर वजाए नाद, धुन अनादी इक्क अलाइंदा। भेव अभेदा अछल अछेदा आपे दस्से बोध अगाध, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त आपे लाध, निरगुण सरगुण सन्त सुहेले मेल मिलाइंदा। गुर गुर देवे आपणी दाद, गुरमुख झोली पाइंदा। गुरसिख रखणहारा लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। दो जहानां श्री भगवाना शब्द अगम्मी मारे अवाज़, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। सतिगुर सज्जण रच रच काज, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा दया कमाइंदा। सतिगुर सच्चा सर्ब गुणवन्त, एका एक अख्वाईआ। गुर गुर मेला जुगा जुगन्त, जुग करता वेस वटाईआ। सति पुरख निरँजण बणाए बणत, सति सतिवादी सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा जाणे गुरमुख सन्त, भगत भगवन्त भेव चुकाईआ। गुर अवतार गायण बेअन्त, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुरमुख मेला नारी कन्त, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाईआ। नाता तोड़े भुख नंगत, नाम निधाना झोली पाईआ। मानस जन्म ना होए भंगत, लख चुरासी लए कटाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा निरगुण सरगुण लाए अंगत, अंगीकार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह सतिगुर मीत, गुर गुर दया कमाइंदा। गुर गुर चलाए आपणी रीत, जुग जुग नाउँ प्रगटाइंदा। वसणहारा घर ठांडे सीत, घर साचे सोभा पाइंदा। आदि जुगादी इक्क अतीत, त्रैगुण आपणा खेल खिलाइंदा। बनावणहारा मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले मसीत, अन्तिम आपे हरि हरि ढाहइंदा। लख चुरासी परखणहारा कौड़े रीठ, घर घर बैठा वेख वखाइंदा। आदि जुगादी पत्तत पुनीत, पत्तत पावण लेखा जाणे बल बावन, तोड़णहारा गढ़ हँकारी रावण, राम रम्मईआ आपणा खेल कराइंदा। राधा कृष्ना एका दामन, सुरती शब्दी होए ज़ामन, दो जहानां पल्लू आपणी गंढु पुवाइंदा। नूर इलाही इक्क कलामण, देवणहार श्री भगवानन , मुकामे हक़ हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। जपावणहारा सति नामन, देवणहारा ब्रह्म ज्ञानन, दस्सणहारा धर्म निशानन, सच निशाना इक्क जणाइंदा। लेखा जाणे दो जहानन, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां देवे चानण, जोती जाता आप अख्वाइंदा। एका सतिगुर वड बलवानन, गुर गुर देवे जुग जुग दानन, दाता दानी आपणी वस्त आप वरताइंदा। खाणी बाणी अञ्जील कुरानी वेद पुराणी रसना गा गा सर्ब

वखानण, खाणी बाणी नाल मिलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां भगतां सन्तां देवे आपणी सच निशानी, आपणा अन्त ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि खेल ब्रह्माद, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेव लगाइंदा। पीर पैग़म्बर सेवादार, हरि सेवक इक्क समझाईआ। सच संदेसा करे ख़बरदार, बेख़बर आप सुणाईआ। बेसबर होए परवरदिगार, सबर विच कदे ना आईआ। लख चुरासी घड़े भन्ने बण ठठयार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, दर बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि रवि ससि पाँधी बण बण गए हार, आपणा पन्ध ना कोए मुकाईआ। कोटन कोटि बोल जै जैकार, लोकमात डंका गए वजाईआ। कोटन कोटि पंज तत्त काया कर अकार, अन्तिम ख़ाकी ख़ाक समाईआ। कोटन कोटि बण बण लिखार, लिख लिख लेखा जगत लोकाईआ। हरि का अन्त ना पारावार, बेअन्त कहे लोकाईआ। जुग चौकड़ी वेखे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग लेखा दए उतार, कर्ज़ा कोए रहिण ना पाईआ। प्रगट होए आप निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। रूप रंग ना वेखे कोई विच संसार, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कोटन कोटि साध सन्त जंगल जूह फिरन उजाड़ पहाड़, तीर्थ तट्टां फेरा पाईआ। अंदर वड़ वड़ गायन तेरी वार, तेरा भेव किसे ना आईआ। सुन्न समाधी ना पाए कोए सार, अक्खीं मीट मीट ध्यान लगाईआ। पंज नाद ना वज्जे धुन्कार, धुंन आत्मक ना कोए सुणाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करया खेल आप अपार, सब दा लेखा दए मुकाईआ। सत्तां दीपां काया मन्दिर अंदर धूआँधार, निर्मल नूर ना कोए रुशनाईआ। फड़ फड़ सुट्टे डूँग्घी गार, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। कलयुग कूड़ा कूक करे पुकार, उच्ची कूक रिहा सुणाईआ। कलयुग जीवां आई हार, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। रसना जिह्वा झूठ विकार, रस नाम ना कोए चखाईआ। गढ़ हँकारा काम क्रोध लोभ मोह बलवान, बल आपणा आप जणाईआ। मगर लग्गा पंज शैतान, शरअ शरीअत रही कुरलाईआ। मुल्ला शेख मुसायक ना दिसे कोई ईमान, सूरत सति ना कोए समझाईआ। पंडत पांधे थक्के मांदे होए बेईमान, साचे तीर्थ तट ना कोए नुहाईआ। ग्रन्थी पन्थी किसे ना मिल्या सच निशान, पुरख अकाल ना वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम जोधा सूरबीर बली बलवान, सतिगुर पूरा एका एक आपणा वेस वटाईआ। जन भगतां देवे सति सरूरा, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। आत्म अन्तर नूरी नूरा, नूर नुराना करे रुशनाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। दिवस रैण आत्म परमात्म हाज़र हज़ूरा, हरि जू आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर पूरा फेरा पाईआ। सतिगुर पूरा पाए फेरी, एकँकार आपणी दया कमाइंदा। कलयुग मिटे रैण अन्धेरी, अमावस रूप ना कोए वटाइंदा। लख चुरासी मनमुखतां करे ख़ाक ढेरी, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाइंदा। दो जहानां करे खेल श्री भगवाना आपे जाणे आपणी हेरी फेरी, अछल अछल भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्को हरि, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जुग जुग नाउँ हरि निरँकारा, आपणा आप प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, भेव अभेद खुल्हाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, आपणा पड़दा रिहा उठाईआ। हँ ब्रह्म कर प्यारा, आपणा मेल मिलाईआ। सोहँ शब्द सच जैकारा, सुरती शब्दी बन्धन पाईआ। सतिनाम नाम वणजारा, घर एका हट्ट वखाईआ। गुरमुखां देवे आप अधारा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर वड्डा सति पुरख, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। जन भगतां देवे अन्तर दरस, बन्द ताकी आपे लाहइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, दस्म दुआरी सोभा पाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, आप आपणा तरस कमाइंदा। जन भगतां मिलण दी रखे ग़रज़, ग़रज़ आपणी आप वधाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पूरा करदा आया फ़र्ज़, कलयुग अन्तिम सेव कमाइंदा। चार वरन चार जुग चार वेद चार कुण्ट चार खाणी चार बाणी देवे वरज़, धुर फ़रमाना इक्क सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त पुरख अबिनाशी अग्गे कर कर गए अर्ज़, ओट एक सर्ब तकाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तुध बिन नौ खण्ड पृथ्मी साचा राग सुणाए ना कोई एक तर्ज़, ताल तलवाड़ा जगत रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा जीआं दान, लख चुरासी कर परवान, चार वरनां देवे इक्क ज्ञान, सुरती शब्द खेल महान, मन्दिर अंदर काया मकान, घट घट वासा पुरख अबिनाशा, खेल तमाशा मंडल रासा, जोती जाता पुरख बिधाता, मेटणहार अन्धेरी राता, एका नाम सुणाए गाथा, लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, चार वरन चढ़ाए एका राथा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सतिगुर एका नज़री आइंदा।

★ १५ चेत २०१६ बिक्रमी मोता सिँघ दे गृह कलसीआं ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण पूरन भगवन्त, नर हरि आपणी खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, रूप अनूप आप वटाइंदा। एकँकारा महिमा अगणत, लिखलिख लेख ना कोए मुकाइंदा। आदि निरँजण सोभावन्त, जोती जाता डगमगाइंदा।

श्री भगवान लेखा जाणे नारी कन्त, कन्त कन्तूहल सेज सुहाइंदा। श्री भगवान सद बेअन्त, बेअन्त आपणी धार वखाइंदा। पारब्रह्म जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आपणे विच समाइंदा। आपणी धार हरि निरँकार, आदि पुरख आपणे विच रखाईआ। निरगुण निरवैर अजूनी रहित हो त्यार, अनभउ प्रकाश कराईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार कर उज्यार, नूर नुराना एका एक करे रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, सति सतिवादी आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा भेव खुल्हाईआ। निरगुण खेल पुरख अगम्म, भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादि जाणे आपणा कम्म, करता पुरख कार कमाइंदा। आपणी कुक्खों आपे जम्म, पिता पूत खेल कराइंदा। आप प्रगटाए आपणा नाम, नाउँ निरँकार आप अख्वाइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, सचखण्ड निवासी दरगाह साची आप चलाइंदा। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणा पड़दा लाहइंदा। निरगुण निरगुण देवे दान, दाता दानी साची वस्त इक्क वरताइंदा। शब्दी शब्द शब्द प्रधान, सच प्रधाना आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल पुरख अबिनाशा, हरि हरि आपे आप कराईआ। साचे मंडल पावे रासा, करे खेल बेपरवाहीआ। आपे वेखे आपणा सति तमाशा, सति सतिवादी साचा माहीआ। आपे इच्छया आपे आसा, आसा पूर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणे विच समाईआ। आपणी इच्छया आपे धार, आपणी खेल कराइंदा। शब्दी शब्द हो उज्यार, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अपार, आपणी कल आप धराइंदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, साची सेज हंढाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहर, गुपत ज़ाहर आपणा रूप धराइंदा। प्रगट हो हरि निरँकार, निराकार निरवैर आपणी खेल कराइंदा। दाई दाया अगम्म अपार, सेवक साची सेव कमाइंदा। जननी जन बण निरँकार, साची गोद आप सुहाइंदा। बंस सरबंस कर त्यार, आपणा लेखा आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकेला सज्जण सुहेला विश्व आपणा रूप वटाइंदा। विश्व रूप विश्व धार, एका एक प्रगटाईआ। अबिनाशी करता हो उज्यार, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपे वेखे वेखणहार, सचखण्ड निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता, रूप अनूप धराइंदा। शब्दी शब्द देवे दाता, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। निरगुण निरगुण चलाए राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, आपणा बल आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी

धार एकँकार, जोती जोत कर पसार, विष्न आपणा रूप वटाइंदा। आपे विष्न आपे विष्नूं, विश्व आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एका बन्धन पाईआ। एका जोती एका ज़ात, एका खेल कराइंदा। एका पिता एका मात, पूत सपूता इक्क अख्वाइंदा। एका दान एका दात, बण दातार आप वरताइंदा। एका नाउँ एका गाथ, बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। एका मन्दिर एका देवे साथ, सगला संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत सुत धार, विष्नूं विश्व कर त्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। शब्दी सुत विष्नूं बाला, हरि हरि आप उपाईआ। करे खेल आप निराला दिस किसे ना आईआ। श्री भगवान इक्क अकाला, अकल कल वरताईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, थिर घर आपणी बणत बणाईआ। सुन्न अगम्मी हो उजाला, नूर नूर करे रुशनाईआ। साचा मार्ग इक्क सुखाला, विष्नूं विश्व दए समझाईआ। आपणी इच्छया महांकाला, आपणा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाईआ। आदि पुरख खेल अपारा, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। विष्नूं हरि कर पसारा, भगवन आपणी धार चलाइंदा। धुरदरगाही धुर फ़रमाणा, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। तेरा मेरा इक्क टिकाणा, चरन कँवल कँवल चरन इक्क वखाइंदा। मेरा नाउँ तेरा बिबाणा, सच बिबाणे आप बिठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा एका वार, एकँकारा आप जणाईआ। उठ दुलारे हो त्यार, साची सिख्या हरि समझाईआ। साची वस्त दए भण्डार, अमोलक आप वरताईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, हुक्म हाकम इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंस बंस आपणी खेल कराईआ। विष्नूं तेरा नूर बंस, नूर नुराना हरि जणाइंदा। अकाल पुरख आपणी अंस, तेरा रंग रंगाइंदा। खेले खेल रूप सहँस, सहँसर आपणी धार बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं एका गुण समझाइंदा। विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सचखण्ड मन्दिर इक्क मकान, सचखण्ड निवासी आप वखाइंदा। दीवा बाती जगे महान, गुर गुर नूर डगमगाइंदा। दूसर अवर ना कोए निशान, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। आदि पुरख अबिनाशी करता देवणहारा साचा दान, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। वेखे विगसे मार ध्यान, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं आपणा गुण जणाइंदा। विष्नूं नेत्र नैण खोल्ह, हरि साचा सच जणाईआ। मेरा नाउँ अगम्मी ढोल, सचखण्ड वजाए सच्चा माहीआ। तोलणहारा तोले तोल, एका तोला बणके आईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, ना डोले कोए डुलाईआ।

९९६
११

तेरे अन्तर जाए मौल, भेव अभेद खुलाईआ। एका वस्त देवे नाभ कौल, अमृत आत्म इक्क भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। विष्नूं उठ उठ बल धार, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरे अन्तर मेरा प्यार, प्यार प्रेम नाल वंडाइंदा। तेरे अन्तर अमृत धार, आपणा रस आप चखाइंदा। तेरे अंदर मेरी गुलज़ार, पत्त डाली आप महकाइंदा। तेरे मन्दिर मेरे विहार, बिवहारी आप समझाइंदा। पारब्रह्म करे खेल अपर अपार, ब्रह्म आपणी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्नूं एका गुण जणाइंदा। विष्नूं गुण गुण भगवान, हरि साचा सच जणाईआ। खेले खेल वाली दो जहान, दोए दोए तेरा रूप वखाईआ। तेरे अन्तर हो प्रधान, आपणा बल लए प्रगटाईआ। कँवल कँवलां गुण निधान, गुण आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर ज़हूर आप प्रगटाईआ। नूर ज़हूर एकँकार, पारब्रह्म प्रभ खेल कराइंदा। विष्नूं अंदर जोती धार, शब्दी रंग चढ़ाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठार, हरि जू आपणा आप सुहाइंदा। कँवल कँवला कर उज्यार, ब्रह्मा वेता पारब्रह्म प्रगटाइंदा। साचा मीता अगम्म अपार, आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुंआंधार सुन्न अगम्म आपणा भेव चुकाइंदा। सुन्न अगम्म खेल न्यारा, निरगुण हरि हरि आप कराईआ। सूरज चन्द ना कोए सितारा, मंडल मण्डप ना कोए वखाईआ। पीर पैग़म्बर ना कोई गुर अवतारा, साध सन्त नज़र कोए ना आइंदा। समुंद सागर ना कोई खारा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चा टिल्ला पर्बत ना कोए बणाईआ। लोअ पुरी ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए अखाड़ा, पंज तिन्न अठ्ठ नाच ना कोए नचाईआ। करे खेल आप करतारा, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी कुक्खों हो उज्यारा, आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धूआँधार खेल अपार, विष्न ब्रह्मा दए अधार, शंकर आपणी धूढ़ बणाईआ। शंकर धूढ़ चरन ख़ाक, हरि ख़ालक आप बणाइंदा। आदि जुगादी पाकी पाक, पुनीत आपणा नाउँ धराइंदा। तिन्नां मेला एका साक, सज्जण एका घर वखाइंदा। एका खोल्हे आपणा ताक, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। धुरदरगाही भविख्त वाक, सच संदेसा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, विष्न ब्रह्मा शिव शब्दी गोद बहाइंदा। शब्दी गुर गुर गुर खेल, हरि करता आप कराईआ। निरगुण निरगुण कर कर मेल, मेल मिलावा वेखे सहिज सुभाईआ। करे प्रकाश बिन बाती तेल, जोती जाता डगमगाईआ। तिन्नां विचोला सज्जण सुहेल, विष्नूं आपणे चरन लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाईआ। धुर दी धार हरि भगवन्त, विष्नूं आप जणाइंदा। तेरा मेरा खेल

६६७
११

नारी कन्त, नर नरायण खुशी मनाइंदा। तेरी सेजा मेरी बणत, बसन बनवारी दया कमाइंदा। मेरा नाउँ तेरी मंत, एका ओट जणाइंदा। मेरी महिमा सदा अगणत, लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्नूं झोली आप भराइंदा। विष्नूं झोली देवे भर, सच भण्डार हरि वरताईआ। निरभउ चुकाए भउ डर, भयानक रूप ना कोए जणाईआ। इक्क नुहाए साचे सर, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे वेख वखाईआ। निरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म सच संदेस, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण इक्क नरेश, नर नरायण नाउँ धराइंदा। आदि अवल्लड़ा करया वेस, एकँकारा रूप वटाइंदा। आदि निरँजण वसे साचे देस, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता तख्त निवासी रिहा वेख, सच सिँघासण आसण लाइंदा। श्री भगवान लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म खोल्हणहारा भेत, आपणा पड़दा आप चुकाइंदा। विष्नूं तेरे संग करे हेत, आपणा बन्धन पाइंदा। वसे सदा नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। धुर फ़रमाणा एकँकार, आपणा आप जणाईआ। विष्नूं तेरा विश्व पसार, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा कर त्यार, शंकर मेला सहिज सुभाईआ। तिन्नां विचोला हरि करतार, शब्दी डोर बंधाईआ। त्रैगुण माया दए सिक्दार, पंज तत्त आप वरताईआ। लख चुरासी घाड़त घड़ बण ठठयार, साची सेवा इक्क समझाईआ। निरगुण सरगुण दए अधार, आप आपणा पड़दा लाहीआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे खेल अपार, रवि ससि दए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचन रचाए भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। विष्न वेखणा मार ध्यान, नेत्र नैण इक्क जणाईआ। पुरख अबिनाशी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, साचे तख्त डेरा लाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। देवणहारा साचा दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लख चुरासी कर प्रधान, नौ खण्ड पृथमी वंड वंडाईआ। सत्तां दीपां इक्क निशान, सति सतिवादी हथ्थ वखाईआ। सर्ब जीआं दा एका काहन, लख चुरासी गोपी नाच नचाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए रूप आप वटाईआ। शब्द संदेसा धुर फ़रमाण, ब्रह्मा वेता करे पढ़ाईआ। चारे वेद करे कल्याण, चारे जुग दए समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पाए आण, चारे खाणी नाल रलाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर प्रधान, लोकमात मात वखाईआ। सच संदेसा ढोला गाए आण, निरगुण

सरगुण करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, हरि जू आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं आपणा भेव खुल्हाईआ। विष्नूं नेत्र आपणा खोल्ह, बिन नेत्र हरि जणाइंदा। आदि पुरख सुणाया अगम्मी बोल, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। सचखण्ड निवासी तोलया तोल, तोलणहारा नज़र ना आइंदा। लख चुरासी अंदर जाए मौल, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। लख चुरासी खेल करतार, कुदरत कादर आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, शब्दी शब्द वंड वंडाईआ। लेखा जाणे जुग चौकड़ी चार, कोटन कोटि काल नाल रलाईआ। गुर अवतार कर त्यार, पंज तत्त दए वड्याईआ। ब्रह्म पारब्रह्म लए उधार, आत्म परमात्म रंग चढ़ाईआ। साचा सोहला गाए आपणी वार, जुग जुग नाउँ प्रगटाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी बाणी आप सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग विच संसार, विष्नूं तेरी सेवा इक्को वार समझाईआ। गेड़ा आवे जावे वारो वार, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगाईआ। साची सेवा श्री भगवान, पुरख अबिनाशी आप लगाइंदा। विष्न दर करे परवान, निउँ निउँ सीस चुकाइंदा। तूं साहिब मेरा सुल्तान, हउँ सेवक सेव कमाइंदा। तूं रहिणा निगहबान, इक्क तेरी ओट तकाइंदा। मैं मन्नां तेरी आण, दूजा हुक्म ना कोए मनाइंदा। तेरे चरन रखां ध्यान, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। मैं सुणदा रहां धुर फ़रमाण, धुरदरगाही जो आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देणी कर, तेरे चरनां सीस निवाइंदा। तेरे चरनां रखां सीस, विष्नूं रो रो नीर वहाइंदा। तूं साहिब सच्चा जगदीस, तेरा भेव कोए ना आइंदा। मैं छत्र वेखां तेरे सीस, तेरा मन्दिर मोहे भाइंदा। तेरी कोई ना करे रीस, तुध जेहा होर नज़र कोए ना आइंदा। जुग चौकड़ी मैं तेरा पीसण लवा पीस, बण सेवक चक्की चलाइंदा। जुग जुग मन्नां तेरी हदीस, तेरे हुक्मे कार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे इक्को मंग मंगाइंदा। दर तेरे मंगां मंग, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। आपणे चरन धूढ़ी देणा रंग, रंग चढ़े इक्क महाना। तेरा नाम मिले तरंग, लेखा चुक्के विच जहाना। तेरा शब्द वज्जे मृदंग, तेरा धुंन तराना। मैं तेरा दर्शन करां लँघ, दर आ तेरे दरबाना। तूं मेरी कटी भुख नंग, देवणहारा सच्चा दाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा देणी कर, विष्नूं दर होए निमाणा। होए निमाणा दोए जोड़, चरनां सीस झुकाईआ। सति पुरख तेरी साची लोड़, तुध बिन होर ना कोए सहाईआ। मैं पन्ध मुकावां दौड़ दौड़, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए सहाईआ। कवण वेला होए सहाया,

६६६
११

दीनन दया कमा। आदि पुरख प्रभ बेपरवाहया, आपणा भेव दे जणा। आदि मार्ग तूं ही लाया, अन्त देवे किवें मुका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे समझा। आपणा लेखा दस्स भगवान, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी सेवा करां विच जहान, बण सेवक सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखण आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फेरा पाईआ। तेरे भगत होण प्रधान, तेरी भगती तेरा जस गाईआ। तेरे सन्त तेरे निशान, लोकमात मिले वड्याईआ। तेरे गुरमुख तेरी करन पछाण, दूसर भेव कोए ना पाईआ। गुरसिख रखण चरन ध्यान, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। तूं पारब्रह्म शहिनशाह सुल्तान, ब्रह्म तेरी अंस वड्याईआ। तेरा सरबंस विच जहान, विष्न ब्रह्मा शिव ढह ढह पए सरनाईआ। विष्नूं मंगे एका दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्त मेरे भगवन्त आपणा मेला मेले सहिज सुभाईआ। सहिज सुभाई हरि हरि मेला, कवण वक्त कराइंदा। जुग चौकड़ी खेल खेले गुरू गुर चेला, चेला गुर रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। पारब्रह्म मेरा दस्स अन्तिम वेला, मेरा अन्त कवण कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१००० आपणा पड़दा आप उठाइंदा। विष्नूं सुणदा रहे याद, हरि जू हरि जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर अवतार पीर १०००
पैग़म्बर सुणदा रहे फ़रयाद, हरि जू साची सेव लगाइंदा। निरगुण सरगुण दे दे दाद, लोकमात प्रगटाइंदा। आपणे विच्चों आपा काढ, शब्द गुर सलाहइंदा। लेखा लिख सन्त साध, भगत भगवन्त दया कमाइंदा। गृह गृह आपणा वजाए नाद, अनादी धुंन आप सुणाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे लाध, हरि जू हरि हरि मेल मिलाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, गुरसिख आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी विच संसार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। अन्तिम चौकड़ वेखे आप निरँकार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। पंज तत्त काया चोला देवे तेई अवतार, भगत अठारां बन्धन पाईआ। एका जोती दस गुर धार, गुर गुर रूप वटाईआ। एका जल्वा नूर कर उज्यार, ईसा मूसा संग मुहम्मद काला सूसा तन छुहाईआ। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड पृथ्मी धूआँधार, सत्तां दीपां अन्धेरा छाईआ। चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान जाए हार, हरि का भेव ना कोए खुल्ल्हाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त नार कन्त होए विभचार, धीरज जत ना कोए रखाईआ। नाता तुट्टे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर ना कोए सहार, मुल्ला शेख़ पंडत पांधा साचा मार्ग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न तेरा भेव जणाईआ। विष्न वेखणा कर विचार, हरि जू हरि हरि आप

सुणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी उतरे पार, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। चार जुग दा लेखा सब नूं दए वखाल, वाक् भविख्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप रखाइंदा। संग रखाए काल महांकाल, दीन दयाल दया कमाइंदा। राए धर्म दए बहाल, अद्धविचकारे डण्डा लाइंदा। चित्तर गुपत लख चुरासी लेखा दए वखाल, लिख लिख आपणे हथ्थ रखाइंदा। लाड़ी मौत करे शृंगार, धर्म राए दी जगत सपुत्तरी एका एक उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, साची सिख्या दए समझाईआ। साची सिख्या लैणी सिख, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी पाए भिख, आपणी भिच्छया नाम वरताइंदा। लख चुरासी लेखा लिख, लिख लिख आपणे विच रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडे हिस, साचा बन्धन आप रखाइंदा। कलयुग अन्तिम जूठी झूठी चक्की जीव जंत जाण पिस, पीसण पीस हरि जू सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं तेरा लेखा अन्त जणाइंदा। अन्तिम लेखा हरि करतारा, एका एक जणाईआ। कलयुग अन्तिम होए उज्यारा, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। नाउँ रखाए निहकलंक अवतारा, कल कल्की फेरा पाईआ। जोधा सूरबीर बली बलकारा, बल आपणा आप रखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ हथ्थ मुनारा, लोकमात दए वड्याईआ। आपे बणे लक्कड़हारा, बण बाडी सेव कमाईआ। तिक्खा
१००१ रखे नाम आरा, दो जहाना चीर वखाईआ । करे खेल अगम्म अपारा, बण तरखाण वेस वटाईआ। एका नाउँ बोल जैकारा, १००१
११ सिँघ शेर नाउँ रखाईआ। सृष्ट सबाई वेखे धूआँधारा, रैण अन्धेरी छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा ११
कर, अन्तिम लेखा रिहा जणाईआ। अन्तिम लेखा हरि निरँकार, निरगुण आप जणाइंदा। विष्नूं रहिणा ख़बरदार, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। चार जुग लिख लिख लेखा जाण गुर अवतार, लोकमात सर्ब जस गाइंदा। प्रगट होवे महांबली अवतार, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सरगुण लेखा जगत विहार, पंज तत्त काया चोला जगत हंढाइंदा। यारां नाल बणया रहे यार, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। बण शिकारी खेडे शिकार, आपणा शिकार किसे ना हथ्थ फड़ाइंदा। अंदरे अंदर मार ललकार, लहिणा आपणा आप चुकाइंदा। सन्त मनी सिँघ खोल्ह किवाड़, आपणा भेव जणाइंदा। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा खेल दस्से भगवान, भेव कोए ना पाईआ। कलयुग जूह विच फिरे जवान, नज़र किसे ना आईआ। जामा लए घर तरखाण, तृखा सब दी दए बुझाईआ। सन्त मनी सिँघ दे ज्ञान, नेत्र ज्ञान इक्क खुल्हाईआ। सज्जण घर साक सैण ना सके कोई पछाण, पहचान विच कदे ना आईआ। झूले दे दे पंज तत्त करया खेल महान, हथ्थ पैर अंग अंग अंग

हिलाईआ। जड़ पुटदा रिहा ज़िमीं असमान, नज़र किसे ना आईआ। खाण पीण रख्या विच जहान, जूठा झूठा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं एका गुण समझाईआ। विष्नूं वेला अन्तिम आउणा, हरि हरि आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी वेस वटाउणा, नानक गोबिन्द राह तकाइंदा। मुहम्मद सजदा इक्क कराउणा, कलमा इक्क पढ़ाइंदा। ईसा आसा पूर कराउणा, परवरदिगार वेस वटाइंदा। वेद व्यासा लेखा लेखे लाउणा, उच्चे टिल्ले पर्बत पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आपणा रूप वटाइंदा। सिँघ शेर नाउँ रखाउणा, शेर सिँघ भेव ना किसे जणाइंदा। कलयुग चोला आप हंढाउणा, बावन अक्खरी बवन्जा साल अंक अंक नाल वंडाइंदा। आपणा लेखा आप मिटाउणा, भस्मड़ आपणा रूप वटाइंदा। पंज तत्त अग्नी भेंट चढ़ाउणा, त्रैगुण लम्बू आपे लाइंदा। आपणा लेखा आप मुकाउणा, ख़ाकी ख़ाक तन मिलाइंदा। जोती जोत हरि अख्वाउणा, नूरो नूर डगमगाइंदा। सचखण्ड दुआरे फेरा पाउणा, साचे तख़्त सोभा पाइंदा। वीह सौ बिक्रमी आपणा हुक्म आप वरताउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। छब्बी पोह दिवस सुहाउणा, रुत्त बसन्ती आपणे लेखे लाइंदा। आपणा रूप आप वटाउणा, सचखण्ड निवासी थिर घर आपणा कुण्डा लाहइंदा। थिर घर दवारिउँ शब्द गुर नाल मिलाउणा, गोबिन्द खेल कराइंदा। लोकमात फेरा पाउणा, सम्बल आपणा बंक वड्याइंदा। तेरा मेला आप कराउणा, आपणा पल्लू हथ्थ फड़ाइंदा। तेरा लेखा तेरे नेत्र वखाउणा, लोकमात फिराइंदा। लख चुरासी डेरा ढाउणा, ब्रह्मा मूल ना कोए रखाइंदा। शंकर जोती जोत मिलाउणा, भोला नाथ पन्ध मुकाइंदा। करोड़ तेतीसा आपणे विच छुपाउणा, सुरपति इन्द रहिण ना पाइंदा। साचा मार्ग एका लाउणा, एका राह चलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां चार जुग दा लहिणा देणा मात मुकाउणा, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। पुरख अबिनाशी निहकलंक नरायण नर कलयुग अन्तिम आपणा नाउँ धराउणा, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप उठाउणा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। सच संदेस नर नरेश दो जहानां आप सुनाउणा, सो पुरख निरँजण आपे गाइंदा। हं बंहम आत्म परमात्म ईश जीव एका घर बहाउणा, गृह मन्दिर इक्क प्रगटाइंदा। विष्नूं तेरा रंग चढ़ाउणा, रंग रंगीला आपणी दया कमाइंदा। भगवन ढोला सब ने गाउणा, जै जैकार आप कराइंदा। महाराज शेर सिँघ नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां पुरख अकाल दीन दयाल क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका इष्ट नज़री आउणा, दूसर अवर ना कोए रखाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआल मट्ठ गुरदुआर आपणा नूर टिकाउणा, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। तीर्थ तट अठसठ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणा चरन छुहाउणा, चरन दुआरे खिच्च बहाइंदा। रवि ससि मुख शरमाउणा, कलयुग अन्तिम अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दो जहानां फेरा पाउणा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप

धराइंदा। निरगुण सरगुण खेल करतार, हरि करता आप कराईआ। सरगुण रूप अगम्म अपार, पंचम जेठ दए वड्याईआ। छब्बी पोह हो त्यार, सचखण्ड वसया सच्चा माहीआ। जोती जोत दे अधार, शब्दी मेला गोबिन्द माहीआ। जगत विचोला बण निरँकार, साढे तिन्न हथ्थ बंक वड्याईआ। नौ खण्ड पृथमी कलयुग अन्तिम करे खुआर, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एका आसण लाईआ। एका आसण गया लग्ग, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। प्रगट हो सूरा सरबग, रूप अनूप वटाइंदा। सन्त सुहेले फड़े जग, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। सन्त मनी सिँघ अंदर नाद नगारा गया वज्ज, सो पुरख निरँजण आप वजाइंदा। भगत भगवन्त लए सद, जुग जुग दा पन्ध मुकाइंदा। गुरमुखां करे पार हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। गुरसिख सज्जण बणाए साची यद्द, बंस सरबंस आप वड्याइंदा। नाम निधाना अमृत प्याए साची मदि, मधुर रस इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त चोला रख्या पड़दा ओहला आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। पंज तत्त अंदर ओहला रख, आपणा आप गया छुपाईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, करे खेल बेपरवाहीआ। घनकपुर वासी बोल अलख, इक्क जैकारा दए लगाईआ। सन्त मनी सिँघ मार्ग दस्स, आपणा भेव गया समझाईआ। निरगुण नूर करे प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जन भगतां वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। विष्नूं होणा ना अन्त उदास, प्रभ मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जगत सिँघासण पुरख अबिनाशन आपणा आप हंढाईआ। जगत सिँघासण जगत रीत, नीतीवान खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण करे प्रीत, साची प्रीत आप निभाइंदा। वसणहारा धाम अनडीठ, लोकमात फेरा पाइंदा। चार जुग चार वरन चार कुण्ट जिस दे गौंदे रहे गीत, सो गोबिन्द वेस वटाइंदा। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ बन्द ना कोए कराइंदा। आदि जुगादि रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, चौदां तबकां भेव चुकाइंदा। चौदां लोकां इक्क हदीस, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। जूठ झूठ कूड़ कुड़यारी जीव जंत चक्की रिहा पीस, कलयुग हथ्था आपणे हथ्थ रखाइंदा। पुरख अबिनाशी लेखा जाणे एका नाया उन्नीस, दूआ सिफ़रा बीसा नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं एका गुण समझाइंदा। विष्नूं एका गुण जाण, जानणहारा आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे महान, भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात दए झुलाईआ। चार जुग दे कर परवान, भगत भगवन्त लए मिलाईआ।

एका देवे धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी आप सुणाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका गृह दए वड्याईआ। एका नाद एका धुन्कान, एका राग दए सुणाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाण, धुर फ़रमाणा इक्क प्रगटाईआ। एका विष्नूं इक्क भगवान, एका आपणा बन्धन पाईआ। एका होए निगहबान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। एका लेखा चुकाए आण, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। एका साचे सन्तां लए पछाण, लख चुरासी फोल फोलाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, सच प्रधानगी शब्द गुर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल करना, करता पुरख कार कमाइंदा। ज़ात पात ऊँच नीच गढ़ तोड़े वरना बरना, आत्म ब्रह्म सर्ब जणाईआ। दो जहान श्री भगवान नौ खण्ड पृथ्मी रखाए एका सरना, इष्ट देव इक्क जणाईआ। रसना जिह्वा आत्म परमात्म अक्खर एका पढ़ना, सोहँ ढोला साचा गाईआ। जीव जंत साध सन्त कलयुग अन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकार सब ने करना, बचया कोए रहिण ना पाईआ। निरगुण रूप सरगुण अंदर आपे वड़ना, सुरती शब्द मेल मिलाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़ना, चढ़ चढ़ आपणे महल्ल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा सोहला इक्क सुणाईआ। साचा सोहला सुणाए गीत, भेव अभेद खुल्हाइंदा।
१००४ सतिजुग साची चले रीत, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। नज़री आए पुरख अकाल इक्क अतीत, त्रैभवण धनी वेस वटाइंदा। १००४
११ लख चुरासी लए जीत, सिँघ शेर बल वखाइंदा। सिँघ शेर होया अनडीठ, नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ११
घट घट आपणी जोत जगाइंदा। गुरमुखां करे सच प्रीत, ग़रीब निमाणे कमले कोझे आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं लेखा आप चुकाइंदा। विष्नूं लेखा जाणा चुक, अन्त रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा गुरसिख गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सिँघ शेर पए बुक्क, एका भबक लगाईआ। राज राजान ना सके कोई लुक, लुकया पड़दा दए उठाईआ। कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों कढ्ढे कुट्ट, जूठ झूठ दए खपाईआ। कलयुग जड़ देवे पुट्ट, सतिजुग बूटा आपे लाईआ। सन्त मनी सिँघ सुहाए तेरी रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना राईआ। हरिसंगत बणाए आपणे सुत, नारी कन्त ना कोए वखाईआ। चेत बसन्ती रहे रुत्त, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। गुरसिख लोकमात विच्चों आपे चुक्क, सचखण्ड दुआरे दए बहाईआ। ध्रू निउँ निउँ रिहा पुच्छ, प्रभ मेरी चली अन्त ना कोए चतुराईआ। मैं तेरे चरनां बहां झुक, एका मंग मंगाईआ। मेरे धाम आया तेरा सच्चा सुत, सिँघ सवरन मिली वड्याईआ। ब्रह्मा नेत्र रो रो प्या उठ, उच्ची कूक दए दुहाईआ। मेरा

१००५
११

ब्रह्म बूटा रिहा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। मेरा पैंडा गया मुक्क, तेरे गुरमुख मिली वड्याईआ। सिँघ पाल गया ढुक, मेरा लेखा गया चुकाईआ। तेरे चरनां हेठां बहां लुक, उपर तेरा पड़दा पाईआ। शंकर रोवे मारे धांह, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। कलयुग अन्तिम गया आ, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, आपणा खेल कराइंदा। लोकमात जामा पा, सिँघ शेर नाउँ धराइंदा। नौ खण्ड पृथमी जंगल जूह वेख्या थाँ थाँ, सत्त दीप चरनां हेठ दबाइंदा। गुरमुख सूरा ल्या उठा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मेरा वेला ल्या चुका, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। हथ्थों त्रिसूल रिहा सुटा, बाशक तशका गलों लाहइंदा। मैं चला तेरी रजा, जिउँ भावें तिउँ चलाइंदा। तेरा गुरमुख मेरे आसण बैठा आ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। सुरपति रोवे करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। करोड़ तेतीसा ना कोए अधार, बैठा मुख छुपाईआ। सच संदेसा आया एका वार, एका हुक्म जणाईआ। बीस दस खेल अपार, सोलां सोलां वंड वंडाईआ। इक्क उन्नीसां कर त्यार, ठांडा सीता लए उठाईआ। मनजीता आए चल दुआर, मेरा लहिणा दए मुकाईआ। मंगां भिक्ख बण दुआर, खाली झोली रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी मिले सरन सरनाईआ। मिले सरनाई सरनगति, इक्को ओट तकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी रत्त, तेरे विच समाईआ। गुरमुख तेरा नूर होए उत्पत, दो जहान करन रुशनाईआ। बल बावन सत्थर बैठा घत्त, एका सेज विछाईआ। तूं साहिब पुरख समरथ, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। मेरा लहिणा चुकाउणा हथ्थो हथ्थ, दूआ अद्ध वंड वंडाईआ। तिन्न युग सत्थर रिहा घत, तेरे चरनां हेठ सीस टिकाईआ। कलयुग अन्तिम एका वस्त झोली घत्त, राजन राज मंग मंगाईआ। आपणयां भगतां रख पत, लोकमात दे वड्याईआ। तेरे दुआरे जाण वस, भगत दुआरा इक्क बणाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां आपणे दर लैणा सद्द, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सच्चो सच कहिणा वीह सौ वीह बिक्रमी चुक्के हद्द, अग्गे लेखा कोए रहिण ना पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे भगतां देवे जीआं दान, साचे सन्तां जोती नूर नूर महान, गुरमुख दर दुआरे मेले आण, साचे सिखां देवे इक्क निशान, सच निशाना श्री भगवाना वाली दो जहानां एका एक वखाईआ। सच निशाना सोहँ ढोला, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। आप चुकाए पड़दा ओहला, दूई द्वैत ना कोए रखाइंदा। चार वरनां ऊँचां नीचां राउ रंकां क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दुआरा एका खोला, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। निरगुण निराकार सरगुण बणया तेरा तोला, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। शब्दी हो के बणया विचोला, पंज तत्त नज़र किसे ना आइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच्चा बोला, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। सतिगुर

परसादि सति वस्त, सति सतिवादी हरि वरताइंदा। गुरमुखां रखे सदा मस्त, नाम मस्ती इक्क चढ़ाइंदा। एका रंग रंगाए कीट हस्त, हस्त कीट विच आप समाइंदा। खोल्हणहारा हरि जू दृष्ट, आपणी दृष्टी एका पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति परसादि आप बणाइंदा। सति परसादि सच सिंघासण, सति पुरख निरँजण आप बणाईआ। लहिणा देणा चुक्के पृथमी आकाशन, जो जन रसना रस रस खाईआ। लख चुरासी कटे फासन, राए धर्म ना दए सजाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसन, निरासा गुरसिख कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे पवण सुवासण, रसना जिह्वा वेख वखाईआ। जन भगतां होवे दासी दासन, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति परसादि इक्क बणाईआ। सति परसादि हरि का रस, गुर सतिगुर आप बणाइंदा। जन भगतां अन्तर जाए वस, वस किसे ना आइंदा। गुरसिख तेरा गाए जस, जस वेद पुराण ना कोए अल्हाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, लख चुरासी राह वखाइंदा। पन्ध मुकाया नस्स नस्स, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि आप वरताइंदा। सति परसादि सति सति भोग, सति सतिवादी आप लगाईआ। निरगुण सरगुण होया संजोग, महाराज शेर सिँघ करे कुड़माईआ। नाता तुट्टा लोक परोलक, अवण गवण ना कोई फिराईआ। सचखण्ड गाउणा इक्क सलोक, साचा सोहला सच्चे माहीआ। अद्धविचकार ना सके कोई रोक, विष्न ब्रह्मा शिव राए धर्म गुरसिख निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अगम्म अथाह एका ओट, एका मिले सच सरनाईआ। शब्द मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत आप मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति परसादि जिस खुवाईआ। सति परसादि सति स्वाद, रसना जिह्वा ना गुण जणाइंदा। जन भगतां देवे आदि जुगादि, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, सन्त सुहेले मेल मिलाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। गुर चेले लडाए लाड, गुरसिख आपणा भेव खुल्हाइंदा। सदा सुहेला हरिजन विच रिहा आदि जुगादि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति परसादि जिस अन्तर आप टिकाइंदा। सति परसादि अन्तर रखे आप, आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दा कटे पाप, दुरमति मैल धोवे शाहीआ। इक्क जणाए पूजा पाठ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ । बजर कपाटी जाए पाट, द्वैती पड़दा रहे ना राईआ। इक्क वखाए साचा हाट, सतिगुर पूरा आप खुल्हाईआ। गुरमुख तेरी अन्तिम कटे वाट, पाँधी बण बण ना फेरा पाईआ। गुर का रस लैणा चाट, रसक रसक एका मुख सलाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, हरिसंगत लाए आपणे घाट, बण खेवट खेटा जगत मलाह बेपरवाह पार किनारा इक्क रखाईआ।

१००६
११

★ १६ चेत २०१६ बिक्रमी श्रृंगारा सिँघ दे गृह कलसीआं ज़िला अमृतसर ★

सतिगुर निशाना गुरसिख, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। वस्त अमोलक नाम भिख, हरि भिखक झोली आप भराइंदा। एथे उथे दो जहानां लेखा लिख, लिख लिख आपे वेख वखाइंदा। लख चुरासी नेत्र पेख, हरिजन आपणे बाहर कढाइंदा। पूरब लहिणा मस्तक रेख, जगत रेखा आप मिटाइंदा। शब्द अगम्मी नाम संदेस, सदा सुहेला आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी अवल्लड़ा वेस, निरगुण सरगुण आप वटाइंदा। सचखण्ड निवासी नर नरेश, हुक्मी हुक्म आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना गुरमुख इक्क वखाइंदा। गुरमुख निशाना लोकमात त्रैगुण अतीता आप झुलाईआ। सति पुरख निरँजण दे दे दात, आपणा नाउँ वड्याईआ। सेवा करे बण बण पिता मात, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। चरन कँवल उपर धवल एका बन्ने साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला पुरख अबिनाशी देवे साथ, आपणा संग निभाईआ। साढे तिन्न हथ्थ चलाए काया राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। अठ्ठे पहर पूजा पाठ, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। दुरमति मैल आपे काट, पत्तत पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख निशाना झुल्ले जग, सतिगुर सच्चा आप झुलाईआ। शाह पातशाह सूरा सरबग, शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण सरगुण खेल अलग्ग अलग्ग, जगत विछोड़ा आपणा भेव ना किसे जणाईआ। जिस जन बुझाए लग्गी अग्ग, तिस आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख निशाना रिहा झुल्ल, जुग करता आप झुलाइंदा। दो जहानां पाए मुल, कीमत करता आप चुकाइंदा। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्ता खेल कराइंदा। सति सतिवादी बूटा ना जाए हुल, पत्त डाली फुल्ल आप लगाइंदा। लोकमात ना जाए रुल, हरि जू आपणी गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे दर रखाइंदा। गुरसिख तेरा सच्चा दर, पुरख अबिनाशी वेखण आईआ। जुगा जुगन्तर वेस कर, लोकमात फेरा पाईआ। डूँग्घी भँवरी अंदर वड़, सच दुआरे कुण्डा लाहीआ। निरभउ भय रखाए ना कोए डर, चिंता सोग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे दर मंगाईआ। गुरसिख तेरा साचा दर, हरि मन्दिर आप बणाइंदा। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा आदि अन्त लए फड़, आपणा पल्लू हथ्थ वखाइंदा। साचे पौड़े जाए चढ़, राह विचकार ना कोए अटकाइंदा। रसना जिह्वा रही लड़, आत्म परमात्म बन्धन ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरसिख आपणे संग

रखाइंदा। गुरसिख तेरा सच्चा संग, एथे ओथे घट ना जाईआ। तेरी मेरी इक्को मंग, तूं मेरा मैं तेरा दूजा साक ना कोए बणाईआ। तेरा घर मेरा अनन्द, अनन्द तेरा चन्द सीतल धार वहाईआ। मेरा नाउँ तेरा छन्द, तेरा छन्द खेल सूरा सरबंग, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख तेरा वड्डा माण, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। लख चुरासी पुण छाण, तेरी बणत बणाइंदा। तेरी घाड़त घड़ी बण तरखाण, बाढी आपणा रूप वटाइंदा। लोकमात ना सके कोई पहचान, नज़रीआ नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाणे श्री भगवान, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरमुख सज्जण चतुर सुजान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चा आप सालाहइंदा। हरिजन सच्चा सालाहण योग, गुरसिख तेरे नाम वड्याईआ। बिन गुरसिख तेरे सतिगुर किसे नाल ना करे संजोग, लोकमात ना होए कुड़माईआ। आत्म सेजा भोगे ना भोग, परमात्म मेल ना किसे थाँईंआ। गुरसिख गुर गुर इक्क दूजे दी रखण ओट, बिन गुरसिख सतिगुर कम्म किसे ना आईआ। गुरसिख तेरा नूर मेरी जोत, मेरी जोत तेरी रुशनाईआ। गुरसिख तेरी काया मेरा कोट, मेरा कोट तेरा गढ़ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१००८ कर, गुरसिख सच्चा इक्क बणाईआ। गुरमुख सच्चा बणाए आप, दूसर होर ना कोए जणाइंदा। आपे जाणे वड प्रताप, १००८

११ वड प्रतापी वेख वखाइंदा। कोटन कोटि जन्म दे उतारे पाप, दुरमति मैल आप धुवाइंदा। मेटणहारा रोग संताप, साची ११

सिख्या इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। गुरसिख रंगे आपणे रंग, रंगणहार करतारा। आत्म सेजा वेख पलँघ, करे खेल न्यारा। अनहद शब्द धुंन मृदंग, हरि वजाए वजावणहारा। आपे वेखे अंदर लँघ, आवण जावण करे खेल अपारा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान देवे इक्क अनन्द, अनन्द मंगल सुणाए साची वारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख निशाना झुल्ले युग चारा। युग चार झुल्ले निशान, सतिगुर पूरा आप झुलाईआ। करे खेल श्री भगवान, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सिँघ शेर शेर नौजवान, बिरध बाल रूप नज़र कोए ना आईआ। लेखा जाणे ज़िमीं असमान, गगन मंडल आपणा हुक्म वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे मार ध्यान, घर घर आपणा पड़दा लाहीआ। सत्त दीप झूठी दिसे दुकान, साचा हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख साचे आप पहचान, आपणी बूझ बुझाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा देणा चुक्या आण, कर्म कर्मगत कोए रहिण ना पाईआ। धूढ़ी चरन कराया सच इश्नान, अठसठ तीर्थ नाता तोड़ तुड़ाईआ। चरन छुहाया जिस दर आण, सो दर दो जहान सोभा पाईआ। देवत

सुर रिख मुन विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब जस गान, जै जैकार सुणाईआ। धू प्रहिलाद नेत्र नैण शरमाण, दूर दुराडे वेखण चाँईं चाँईंआ। करया खेल श्री भगवान, लोकमात जोत जगाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां देवे दान, साचा नाम इक्क वरताईआ। चार जुग गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां भगतां सन्तां देदां आया आपणा ज्ञान, अक्खर अक्खर कर पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, किरपा करे वाली दो जहान, गुरसिखां एका वार आपणी बूझ बुझाईआ। जो जन गाए सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, गुरसिख साचा गया समझाईआ। सतिगुर मीता ठांडा सीता निरगुण दाता पुरख बिधाता अग्गों मिले आण, आप आपणा कुण्डा लाहीआ। लोकमात दे गुरसिख प्रधान, सचखण्ड दुआरे रिहा वसाईआ। सिँघ चेत चेतन रूप कर परवान, पिछला चेता भुल्ल कदे ना जाईआ। हथ्थ विच खूंडा दे दे डांग, वेखणहारा जीव शैतान, जगत शरअ नाल लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख आपणे दर बहाईआ। गुरमुख दर वड़या जा, जा जा खुशी मनाइंदा। वाहवा तेरी महिमा बेपरवाह, अन्त कोए ना पाइंदा। असीं लोकमात शरमिंदे हो हो तैनूं कहिन्दे रहे सच्चे पातशाह, निउँ निउँ चरनां सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख वखाया एका घर, घर साचा इक्क वड्याइंदा।
गुरसिख कहे अग्गों पुकार, सतिगुर तेरी वड वड्याईआ। तेरा भेत ना पाया विच संसार, बण संगी संग निभाईआ। धन्न भाग तूं साडी निमस्कार करी परवान, अन्त परवाना हथ्थ फड़ाईआ। आपणे नाल मिलाया आण, मिल मिल आपणी खुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा लेखे पाईआ। सतिगुर पूरा प्या हस्स, हस्स हस्स सुणाइंदा। मैं एथे ओथे सिखां वस, मेरा वस कोए ना जाइंदा। प्रेम प्यार अंदर गया फस, राह खैहड़ा नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण सरगुण हो हो गावां तुहाड्डा जस, काग़ज़ कलम शाही नाल रलाइंदा। जस गा गा करां ना बस, तुहाड्डा निशान मात झुलाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां चार जुग दा मार्ग दस्स, साचा राह आप चलाइंदा। अंदरे अंदर जावां वस, रूप रेख रंग ना कोए रखाइंदा। भाग लगावां साढे तिन्न हथ्थ, हथ्थो हथ्थ लेखा आप चुकाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क अकथ, साची कथनी आप सुणाइंदा। गुरसिख चलावां साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। होए निमाणा गुरसिख दुआरे जावां ढट्ठ, आपणा बल ना कोए रखाइंदा। गुरसिख निशाना मन्दिर गुरदुआरा मस्जिद मट्ठ, अठसठ तेरा नाउँ प्रगटाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुरमुख आप पछाण, आपणा लेखा गुरसिखां हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख

मेरी सच्ची ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। गुरसिख मेरी वड करामात, लोकमात करे रुशनाईआ। गुरसिख मेरी साची गाथ, पढ़ पढ़ थक्के लोकाईआ। गुरसिख मेरी साची दात, लख चुरासी भण्डारा इक्क वखाईआ। गुरसिख मेटे अन्धेरी रात, आपणा नूर चन्द चढ़ाईआ। गुरसिख मेरा सज्जण साक, दूजा बंधप ना कोए रखाईआ। गुरसिख मेरा पाकी पाक, पत्तत पुनीत आप वखाईआ। गुरसिख मेरा जाणे भविख्त वाक, दूसर भेव ना कोए राईआ। मैं वसां गुरसिख घाट, दूजा खेड़ा ना मोहे भाईआ। मैं विक्या गुरसिख हाट, आपणा तन भेंट चढ़ाईआ। जोती अग्नी बण लिलाट, धूआँधार विच समाईआ। दो जहानां कट के वाट, रूप अनूप वटाईआ। गुरसिख अंदर खोल्ह ताक, आपणा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। गुरमुख अंदर आपे वड़, वड़ वड़ खुशी मनाइंदा। लोकमात ना सके कोई फड़, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। शब्द अगम्मी साचा ढोला आपे पढ़, पढ़ पढ़ आपणा राग अल्हाइंदा। जन भगतां उपर किरपा कर, किरपन आपणा मेल मिलाइंदा । दरस दिखाए अग्गे खड़, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे माण, निमाणयां आपणे गले लगाइंदा। तेरे अंदर आपणा आप देवां रख, घर ख़ज़ाना दयां वरताईआ। तेरा रूप कर प्रतख, परम पुरख सलाहीआ। तेरे मन्दिर साचा रस, छत्ती भोजन रहे शरमाईआ। चार पदारथ होवण वस, घर वज्जे सच्ची वधाईआ। पुत्तर धीआं प्यार प्रेम अंदर जायण फस, गलवकड़ी इक्को पाईआ। दूजी वार मिलणा हस्स हस्स, सतिगुर पूरे दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा बूटा आपे लाईआ।

★ १६ चेत २०१६ बिक्रमी बीबी पारो खालड़ा ज़िला अमृतसर ★

काया अन्तर ब्रह्म प्रकाश, पारब्रह्म प्रभ नूर दरसाईआ। अज्ञान अन्धेर होए विनास, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। सुरती शब्दी साची रास, गोपी काहन खेल कराईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जिस जन आपणा रंग वखाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला निरगुण सरगुण वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। लख चुरासी जम की फाँसी कटणहारा बन्द खुलास, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। मात गर्भ ना दस दस मास, उलटा बिरख ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रकाश जिस दिवाईआ। सच प्रकाश साचे घर, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। काया अन्तर आपे वड़, डूँघी भँवरी वेख वखाइंदा। पंच विकारा लए फड़, आसा तृष्ना माया ममता, हउमे हंगता डेरा ढाहइंदा। आपणी

किरपा आपे कर, घर घर विच खेल कराइंदा। सुखमन टेढी बंक पार कर, रूप अनूप आप दरसाइंदा । निर्मल जोत दीआ बाती आपे धर, जोत निरँजण डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। काया अन्तर खेल अपारा, घर घर विच आप जणाईआ। खोल्ह्णहारा बन्द किवाड़ा, आत्म ताकी कुण्डा लाहीआ। शब्द अनादी धुंन जैकारा, रागी राग सुणाईआ। अठ्ठे पहर मंगलाचारा, दिवस रैण खुशी मनाईआ। बिन तेल बाती एका दीपक कर उज्यारा, घर घर विच करे रुशनाईआ। आत्म सेजा कर प्यारा, सेज सुहञ्जणी दए वड्याईआ। सुरती शब्द पुरख नारा, नारी कन्त मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए अधारा, अंस बंस आप सुहाईआ। आत्म परमात्म बण वणजारा, साचा वणज इक्क कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। करे प्रकाश बिन तेल बाती, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। भगतन मेला भगवन्त कमलापाती, कँवल नैण नैण आपणा आप खुल्हाइंदा। अमृत देवे बूंद स्वांती, निझर झिरना आप झिराइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी राती, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। शब्द अगम्मी सुणाए साखी, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। खोल्हणहारा बन्द ताकी, दर दरवाज़ा इक्क रखाइंदा। आत्म परमात्म देवे झाकी, पड़दा ओहला आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रकाश इक्क समझाइंदा। सच प्रकाश गुर का ज्ञान, गुर गुर शब्द शब्द वड्याईआ। दिवस रैण इक्क ध्यान, सुरती शब्दी बन्धन पाईआ। काया मन्दिर सच मकान, घर ठाकर नज़री आईआ। स्वामी खेल करे मेहरवान, अनुभव आपणा रूप दरसाईआ। सति सतिवादी हो प्रधान, सति पुरख निरँजण आपणी खेल वखाईआ। ईश जीव देवे दान, जगदीस खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच नूर नूर दरसाईआ। नूर नुराना एकँकार, कँवल नैण आप अख्वाइंदा। जन भगतां देवे दरस दीदार, भगतां दरसन आपे पाइंदा। जुगा जुगन्तर साची कार, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाइंदा। रूप अनूप राम रम्मईआ खेल अपार, ग़रीब निमाणे आपणे गले लगाइंदा। गढ़ हँकारी तोड़ संसार, साचा खेल आप जणाइंदा। मुकंद मनोहर लखमी नरायण नेत्र आपणा इक्क उग्घाड़, चौदां लोक चरनां हेठ रखाइंदा। भगत भगवन्त मेल मिलाए विच संसार, आत्म परमात्म बूझ बुझाइंदा। नाम बंसरी अगम्म अपार, मधुर धुंन आप सुणाइंदा। साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द आप अल्हाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रकाश आत्म परमात्म पड़दा आप उठाइंदा। आत्म परमात्म पड़दा चुक्क, आपणा भेव खुल्हाईआ। काया मन्दिर अंदर जो बैठा लुक, रूप अनूप लए प्रगटाईआ। जन्म जन्म दी मेटे तृष्णा भुख, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रकाश

जुगा जुगन्तर आपणे नाम दए वड्याईआ। हरि का नाउँ वड्डा वड, भेव कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर दो जहानां निशाना गड्ड, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप झुलाइंदा। भेव अभेदा किसे ना जणाए आपणी हद्द, पार किनारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। बोध अगाधा इक्क वजाए साचा नद्द, तुरीआ राग नाद अलाइंदा। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाइंदा। जन भगतां साचा साजण साज, भगवन आपणा भेव खुलाइंदा। नाम अमोलक देवे दात, काया चोली आप भराइंदा। बैठा रहे इक्क इकांत, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। सन्त सुहेला साचे सन्तां पुच्छे वात, सतिगुर आपणा रूप वटाइंदा। चरन कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाइंदा। अन्तर आत्म इक्क प्रकाश, बण प्रकाशी आप प्रगटाइंदा। हरि का नूर ना होए विनाश, अबिनाशी आपणा नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर साचा खेल कराइंदा। काया मन्दिर साचा रंग, हरि रंग रंगीला आप रंगाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नाद अनादी इक्क मृदंग, अनहद राग सुणाईआ। डूँघी भँवरी आपे लँघ, आपणे मन्दिर आपे सोभा पाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। अंदर बाहर इक्को अनन्द, निजानंद अनन्द रसाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, कोटन कोटि रवि ससि प्रकाश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी

भगती लाईआ। साची भगती हरि भगवान, आदि जुगादि दृढ़ाइंदा। सति सतिवादी धुर फ़रमाण, नाम निधाना आप सुणाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, जीव जंत लख चुरासी घर घर आपणा आसण लाइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण बन्धन पाइंदा। बणे विचोला विच जहान, जीवण जुगत इक्क जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर आपे वेखे आण, रामा कृष्ना रूप वटाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, नौ खण्ड पृथ्मी खेल कराइंदा। सत्तां दीपां एका आण, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर देवे ज्ञान, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां लोकमात देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क जणाइंदा। लेखा जाणे वेद पुराण, शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी आपणा हुक्म वरताइंदा। भगत भगवन्त लए पछाण, साचे सन्तां देवे माण, चरन कँवल उपर धवल एका ओट रखाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निरगुण रूप श्री भगवान, जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्यान, चारों कुण्ट आपणा नैण उठाइंदा। रैण अन्धेरी मेटे आण, कूड़ी क्रिया मोह मिटाइंदा। साचा मार्ग श्री भगवान, लोकमात इक्क लगाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवे इक्क ज्ञान, ऊँच नीच जात पात वरन बरन ना

कोए रखाइंदा। सर्ब जीआं इक्क निशान, सच निशाना इक्क बणाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर सोभा पाइंदा। एका तीर्थ तट इश्नान, सर सरोवर इक्क वखाइंदा। एका रसना एका गाण, एका नाम जपाइंदा। एका इष्ट श्री भगवान, दृश्ट सब दी आप खुल्हाइंदा। घट घट आप करे बिसराम, गृह गृह आपणी सेज सुहाइंदा। खेले खेल रम्मईआ राम, रम्मईआ राम नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाणे घनईआ शाम, छहबर आपणे नाम लगाइंदा। पीर पैग़म्बर दे पैग़ाम, हक़ हक़ीक़त आप समझाइंदा। आदि जुगादी एका नाम, जुग जुग लोकमात वरताइंदा। कलयुग अन्तिम खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। एका मन्त्र एका ज्ञान, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। अन्ध अन्धेरा मिटे विच जहान, काया बंक बंक वड्याइंदा। नूरी जोत प्रकाश करे महान, प्रकाशी आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म परमात्म सोहँ ढोला जगत विचोला सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। सच प्रकाश मिले घर, घर घर विच आप वखाईआ। पंच विकारा चुक्के डर, पंचम नाद शब्द धुंन शनवाईआ। पंचम मेला आपे कर, पंचम वज्जे सच वधाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा दीन दयाला आपणी किरपा देवे कर, कृपानिध ठाकर स्वामी आपणी बूझ बुझाईआ। नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। एका रंग रंगाए सन्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। भगत भगवन्त इक्क दूजे नूं कहिण तूं मेरा मैं तेरा, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच सच प्रकाश, प्रकाशवान आप वखाईआ।

मुक्त विचारी जगत निमाणी, नेत्र नैणां रो रो नीर वहाईआ। जिस जन सतिगुर सच्चा मिले शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। चरन कँवल कँवल चरन रखाए इक्क ध्यानी, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। शब्द अगम्मी चाड़्ह बिबाणी, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। सचखण्ड वखाए सच निशानी साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। गुरसिख तेरी मुक्के आवण जाणी, लख चुरासी फंद कटाईआ। इक्क वखाए पद निरबाणी, पद निरबाण आपणा रूप दरसाईआ। गुरमुख मेला गुर गुर हाणी, सतिगुर आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, सो गुरमुख जगत मुक्ती आपणयां चरनां हेठ दबाईआ। जगत मुक्ती गुरमुखां कोलों रही डर, नेत्र वेखण ना पाईआ। जिनां पुरख अकाल एकँकार एक ल्या वर, एका घर वज्जी वधाईआ। नाता बणाया पुरख नार, नार कन्त एका रूप समाईआ। सचखण्ड दुआरे सोभावन्त, साचे मन्दिर वज्जे वधाईआ। गुरमुख लेखा चुक्के आदि अन्त, अन्त आपणी

जोत मिलाईआ। सतिगुर पूरा श्री भगवन्त, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा दर, सो गुरसिख किसे दुआरे मुक्ती मंगण ना जाईआ। मुक्ती जुगती भगतां दासी, दासी बण बण सेव कमाईआ। गुरमुख सच्चा सचखण्ड दा सच्चा वासी, कबीर जुलाहा कूक कूक गया सुणाईआ। निरगुण मेला निरगुण पुरख अबिनाशी, आत्म परमात्म एका दर सोभा पाईआ। जिस जन कलयुग अन्त मिल्या घनकपुर वासी, सो जन जन्म मरन विच ना आईआ। लख चुरासी कटे फाँसी, राए धर्म ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपे फड़, फड़ फड़ आपणा मेल मिलाईआ। पढ़े पढ़ाए जीव जंत, जगत विद्या नाल कुड़माईआ। हरि का रूप हरि भगवन्त, हरि शब्द करे शनवाईआ। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। घर मेला घर सुहाग घर सेज नारी कन्त, घर कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। गल्लां बातां करे जीव जंत, जीवण जुगती सतिगुर आपणी शब्द रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल कर, रसना भेड़ ना कोए वखाईआ।

★ १६ चेत २०१६ बिक्रमी सुरजन सिँघ दे गृह पिण्ड भुच्चर ज़िला अमृतसर ★

सतिगुर पूरा हरि सरबंग, जन भगतां दया कमाइंदा। साचे सन्तां देवे इक्क अनन्द, अनन्द आपणा रस चखाइंदा। गुरमुखां सेज सुहाए इक्क पलँघ, आत्म सेजा सोभा पाइंदा। जन भगतां साचे मन्दिर वजाए मृदंग, नाम मृदंगा हथ्थ उठाइंदा। दो जहानां मेटे पन्ध, पाँधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। निरगुण सरगुण सुणाए छन्द, गीत गोबिन्द आपे गाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी आपणा बन्धन पाइंदा। करे प्रकाश साचा चन्द, नूर नुराना नूर धराइंदा। जगत विकारा खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां वेख वखाइंदा। भगतन मेला आदि जुगादि, हरि भगवन आप कराईआ। साचे सन्तां देवे दाद, साची वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख सज्जण लख चुरासी विच्चों लाध, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। गुरसिख मारे इक्क अवाज़, बिन रसना जिह्वा आप सुणाईआ। लेखा जाणे ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर साजण साज, जुग जुग आपणा भेव चुकाईआ। त्रैगुण आपणा रच रच काज़, नौ खण्ड पृथ्मी वेखे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी आप चलाए जहाज़, साचा बेड़ा आपणे कंध उठाईआ । गुरसिख विरले रखे लाज, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह भगत भगवन्त, आपणी धार चलाइंदा। लेखा जाणे साचे सन्त, हरि सज्जण दया कमाइंदा। गुरमुख महिमा गाए अगणत, अगणत कल आपणी खेल वखाइंदा। गुरसिखां देवे एका मंत, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। मानस जन्म बणाए बणत, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म वेख वखाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, चार वेद अन्त किसे ना आइंदा। लेखा जाणे खाणी बाणी उत्भुज सेतज जेरज अंडत, घट घट आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर धुरदरगाही साचा मन्त्र साचे भगतां आप सुणाइंदा। साचा मन्त्र साचा नाद, अनादी आप जणाईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, आपणी खोज आपे खोज खुजाईआ। लख चुरासी साजण साज, घर घर वसे सच्चा माहीआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले दो जहान श्री भगवान रखे लाज, लाजावन्त आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे होए सहाईआ। गुरसिख सच्चे दयावान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग त्रेता द्वापर सतिजुग आपे वेखे आण, जुग जुग आपणा रूप वटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी देवे नाम निधान, खाणी बाणी आपणा राह चलाइंदा। वेद पुराण जगत निशान, अञ्जील कुरान सच निशाना इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा जीव जंत आप समझाइंदा। जीव जंत सन्त साध, हरि सतिगुर दया कमाईआ। शब्द अगम्मी देवे दाद, जुग जुग आपणी आप वरताईआ। निरगुण सरगुण चलाए जहाज़, साचा चप्पू नाम लगाईआ। शाहो भूप राजन राज, हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करता पुरख बेपरवाह आदि जुगादी सिफ्त सलाह, सलाहगीर गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाल मिलाईआ। पीर पैग़म्बर शब्द सलाह, जुग जुग आप जणाइंदा। गुर अवतार नाल मिला, जोती जाता डगमगाइंदा। रैहबर बण आप खुदा, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। घर घर नाअरा दए लगा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। जुग जुग वेस आप वटा, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। लिख लिख लेखा दए समझा, खाणी बाणी राह चलाइंदा। अन्तिम सब दा पन्ध दए मुका, लोकमात रहिण कोए ना पाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार इक्को ओट गए तका, बिन पुरख अकाल सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। हरि का ढोला गए गा, काया चोला सर्ब बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर जगत बसन्तर आप बुझाइंदा। जगत बसन्तर बुझे अग्ग, अग्नी तत्त रहिण ना पाईआ। किरपा करे सूरा सरबग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण सरगुण हो प्रगट, परम पुरख वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाया हट्ट, बण हटवाणा

सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल पुरख समरथ, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। निरगुण निराकार अजूनी रहित पुरख अकाल दीन दयाल आपणा नूर कर प्रकाश, जोती जोत जोत नूर रुशनाईआ। जन भगतां होवे दासी दास, गुरमुखां बण सेवक सेव कमाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा रूप आप वटाईआ। कलयुग अन्तिम रूप अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, लोकमात फेरा पाइंदा। पावे सार जलां थलां, जल थल महीअल आपणी धार वखाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, नूर नूर विच टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम गुरमुखां फड़ाए आपणा पल्ला, शब्दी डोर नाल बंधाइंदा। दूई द्वैती मेटे सल्ला, माया ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंगे साचा लाल, लालन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख उठाए अञ्याणे बाल, बाली बुध दए समझाईआ। चरन कँवल वखाए सच्ची धर्मसाल, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। सदा सहाई चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। आत्म अन्तर वज्जे ताल, धुंन अनादी अनहद राग अलाईआ। दीआ बाती एका बाल, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। एका मार्ग दए वखाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका राह चलाईआ। एका नाम दए सखाल, साची सिख्या इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन आपणे संग मिलाईआ। हरिजन मेला सगला साथा, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। खेले खेल त्रैलोकी नाथा, त्रैलोकी नंदन भेव चुकाइंदा। भगत भगवन्त लहिणा देणा जाणे मस्तक माथा, पूरब लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख वेखे जन्म जन्म दा घाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। वस्त अमोलक नाम धन, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। वेख वखाए जननी जन, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। गुरसिख भाग लगाए काया तन, पंचम तत्त तत्त वड्याईआ। एका राग सुणाए कन्न, अनरागी आप अलाईआ। मन वासना कढ्ढे मन, मन ममता दए चुकाईआ। करे प्रकाश नेत्र अन्न, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। नज़री आए श्री भगवान, महाराज शेर सिँघ होए सहाईआ। सोहँ नाअरा सति जैकारा आप सुणाए दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका नाद सुणाईआ। कूड़ कुड़यारा देवे डंन, जूठ झूठ दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख विरले लए तराईआ। गुरमुख तारे आप प्रभ, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणा मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे साची यद्द, साचा बंस आप वड्याइंदा। वेखणहारा आर पार किनारा हद्द, साचे पत्तण आपणा

१०१६
११

डेरा लाइंदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले कलयुग अन्त श्री भगवन्त चरन दुआरे आपे सद्द, एका सद्दा नाम रखाइंदा। अमृत रस आत्म प्याए साची मदि, दिवस रैण खुमार रखाइंदा। जीवां जंतां नालों करे अड्ड, आप आपणा बन्धन पाइंदा। नाता तुट्टे अन्धेरी खण्ड, डूँग्घी कंदर ना कोए भुवाइंदा। गुरसिख गाए सोहँ छन्द, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। निज आत्म देवे निजानंद, निज आपणा रस चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, नेहकंलक नरायण नर, गुरसिख आपणे अंग लगाइंदा। गुरसिख अंगी अंगीकार, आपणे अंगन आप बहाईआ। नाम सरंगी सच सितार, बहुरंगी आप सुणाईआ। वरभण्डी खेल करे अपार, ब्रह्मण्डी वेखे चाई चाँईंआ। लख चुरासी नार रंडी रोवे ज़ारो ज़ार, हरि जू कन्त नज़र किसे ना आईआ। भेख पखण्डी करन खुआर, दर दर घर घर बैठे धूंणीआँ ताईआ। वासना मंदी जगत दुआर, मन्दिर मस्जिद मट्ठ सच सुगंधी नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी किरपा निध ठाकर स्वामी साचा बन्दीखाना कर त्यार, कलयुग वेले अन्त एका हुक्म सुणाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, नव नौ करे पुकार, सति सति ना कोए अधार, ब्रह्म मति ना कोए जणाईआ। प्रगट होवे आप निरँकार, वेखे विगसे वेखणहार, गुरमुख सज्जण लए उभार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। गुरमुख तेरा वड्डा माणा, हरि सतिगुर आपणे घर रखाइंदा। तेरा मानस जन्म होया परवाना, प्रभ जू आपणे लेखे पाइंदा। तेरा अन्तर आत्म इक्को गाना, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। तेरा सुहेला मर्द मर्दाना, पुरख अबिनाशी एका मर्द रूप वटाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए आपणी खेल चलाइंदा। तख्त निवासी तख्तो लाहे राजा राणा, शाह सुल्तान सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। लख चुरासी मन्नणा पैणा भाणा, सद भाणे विच रखाइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ सुजाना, जिस जन आपणा भेव खुल्हाइंदा। अठ्ठे पहर दिवस रैण चरन कँवल दए ध्याना, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचा आप वड्याइंदा। गुरसिख वड्याई तेरी जग, जग जीवण दाता आप कराईआ। तेरी बुझे त्रैगुण अग्ग, तेरे अन्तर अमृत मेघ बरसाईआ। मेल मिलावा उपर शाह रग, रघुबंस होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत आपणा नूर आपणे नाल मिलाईआ।

प्रेम प्यार सच्चा स्वागत, सचखण्ड निवासी एका एक रखाईआ। जुग जुग पहलों गुर अवतारां पाई आदत, आपणा

१०१७
११

राह चलाईआ। बिन रसना जिह्वा दस्स दस्स इबादत, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। लोकमात निरगुण सरगुण निरगुण करदा गया सिफ़ारस, हरि का नाउँ ढोला गाईआ। गुरसिख तेरा मेरा इक्क तुआरफ़, तरफ़ बतरफ़ वंड ना कोए वंडाईआ। बिन गुरसिख सतिगुर पूरे नूं देवे कोई ना ढारस, लख चुरासी कम्म किसे ना आईआ। इक्क दूजे दे दोवे वारस, वसीअत लिख लिख आपणी हथ्थीं हथ्थ फड़ाईआ। कलयुग अन्त ना मंगे कोई आड़्त, सौदा होर ना कोए कराईआ। जिस घड़या तेरा घाड़त, सो तैनूं वेखण आईआ। तूं रल के मेरी कर सिफ़ारश, गुरसिख आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा गुरसिख दरस दरस गुरसिख आपणी आपणे लेखे पाईआ। सतिगुर घर ना कोई वंड, घड़ी पल थित वार बरस मास ना कोए रखाईआ। वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, घट घट आपणा आसण लाईआ। दीन दयाल सर्ब गुणवन्ता जन भगतां सदा बख्शंद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत लोचण भेख पखण्ड, बिन सतिगुर अन्त ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे गुरसिखां जगत रीती कोलों पल्ला रिहा छुडाईआ।

१०२८ ११

★ १६ चेत २०१६ बिक्रमी अर्जण सिँघ दे गृह भरोभाल ज़िला अमृतसर ★

सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, सति सरूपी खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण आदि जुगादि, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण वेखणहारा खेल तमाश, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। एकँकारा सर्ब गुणतास, गुणवन्ता आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आदि निरँजण कर प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी आस, आसा आपणी आप प्रगटाइंदा। श्री भगवान पावे रास, साचा मंडल आप सुहाइंदा। पारब्रह्म दासी दास, सेवक सेवक खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा खेल आप कराइंदा। आदि आदि खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। अजूनी रहित भेव न्यारा, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। आपणी इच्छया कर पसारा, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरा कर त्यारा, महल अटल इक्क सुहाईआ। निर्मल दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती आप सुहाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, इक्क इकल्ला सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह इक्क इकल्ला, अकल कल खेल कराइंदा। वसणहारा साचे धाम उच्च महल्ला, अटल्ल आपणी धार वखाइंदा। दीपक दीपक जोती आपे बला, तेल बाती ना कोए रखाइंदा। निरगुण निरगुण पकड़े पल्ला, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, रूप अनूप प्रगटाइंदा। रूप अनूप हरि करतारा, आपणा आप धराईआ। साचे मन्दिर कर पसारा, आपे वसे चाँईं चाँईंआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, राज राजान आपणा नाउँ धराईआ। सच सिँघासण अगम्म अपारा, अलख अगोचर आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड साचा सच दुआर, हरि साचा खेल कराइंदा। इक्क इकल्ला एकँकार, पुरख अकाला आसण लाइंदा। तख्त निवासी वड सिक्दार, धुर फ़रमाण हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा भेव रखे हथ्थ, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी पुरख समरथ, समरथ आपणा नाउँ प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआरे चलाए साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। तख्त निवासी साचे तख्त बहे सज, आप आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, हरि जू आपे वेख वखाइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे वड़, हरि जू आपे सोभा पाइंदा। वेस वटाए नारी नर, कन्त कन्तूहल साची सेज आप सुहाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण धर, निरगुण मेला आपणा बन्धन पाइंदा। दाई दाया आपे बण, दर घर साचे साची सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जननी जन एका घर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दुआरे पुरख नार, नर हरि आपणा खेल कराईआ। आपणी इच्छया कर श्रृंगार, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला खेल अपार, अकल कल आपणा भेव चुकाईआ। निरगुण अंदर निरगुण प्यार, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल बेपरवाह, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। अबिनाशी करता चलाए राह, आपणा मार्ग आपे लाईआ। श्री भगवान होए सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि निरँजण कर रुशना, जोती जाता डगमगाईआ। एकँकारा सच वखाए एका थाँ, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। हरि पुरख निरँजण आपणा नाउँ आप प्रगटा, आप आपणा बल समझाईआ। सो पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाह, सीस जगदीस ताज सुहाईआ। धुर फ़रमाणा इक्क सुणा, हुक्मी हुक्म आपणा बन्धन पाईआ। जननी जन बण सुत दुलारा लए जा, गोदी गोद आप सुहाईआ। निरगुण पिता निरगुण मां, निरगुण बाला आपणे अंग लगाईआ। शब्द दुलारा पकड़े बांह, हरि जू हरि आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क उपजाए साचा सुत, करे खेल अबिनाशी अचुत्त, दूसर भेव कोए ना पाईआ। सुत दुलारा एका बाल, सचखण्ड निवासी इक्क प्रगटाईआ। आपणी गोदी लए उठाल, निरगुण मेला चाँईं चाँईंआ। आपणी इच्छया आप प्रगटाए सच्ची धर्मसाल, घर घर विच बणत

बणाईआ। थिर घर दुआरा कर त्यार, निरगुण दीवा बाती इक्क टिकाईआ। सुत दुलारा दए बहाल, एका आपणा हुक्म सुणाईआ। सदा सुहेला वसे नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, शब्द सुत दए वड्याईआ। शब्द सुत दे दिलासा, थिर घर साचे हरि बहाइंदा। सचखण्ड निवासी इक्क भरवासा, चरन कँवल कँवल जणाइंदा। मेरा नूर तेरा प्रकाशा, तेरा प्रकाश मेरा नूर धराइंदा। तेरे अन्तर मेरा वासा, मेरा वासा तेरी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर आपणा हुक्म वरताइंदा। थिर घर हुक्म श्री भगवान, आपणा आप जणाईआ। सुत दुलारे उठ नादान, नर नरायण आप उठाईआ। सति सतिवादी इक्क निशान, सति पुरख निरँजण रिहा वखाईआ। भूपत भूप राज राजान, तख्त निवासी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा हरि हरि गीत, नर निरँकारा आप जणाइंदा। निरगुण चलाए निरगुण रीत, निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। निरगुण वसे सदा अतीत, सति सतिवादी खेल कराइंदा। निरगुण सज्जण निरगुण मीत, पिता पूत निरगुण आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। थिर घर रंगाए आपणा रंग, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। निरगुण रूप निरगुण सेज निरगुण पलँघ, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण नाम निरगुण मृदंग, निरगुण शब्द धुंन शनवाईआ। निरगुण सूरबीर सूरा सरबंग, निरगुण मन्दिर अंदर वेखे लँघ, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, शब्द सुत दए वड्याईआ। शब्द सुत हरि देवे माण, पारब्रह्म बेपरवाहया। तेरा मेरा इक्क मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। चार दिवार ना कोए निशान, दर दरवाज़ा नज़र कोए ना आया। निर्मल दीआ इक्क महान, जोती जोत डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस नर नरेश एका एका वार सुणाया। एका एक खेल अपारा, इक्क इकल्ला आप कराईआ। लेखा जाणे सुत दुलारा, बिन लिखयां दए समझाईआ। तेरा करे वड पसारा, पसर पसारी बेपरवाहीआ। तेरा हट्ट तेरा वणजारा, तेरे दर खुल्ल्हाईआ। तेरा घर तेरा भण्डारा, तेरे हथ्थ वरताईआ। तेरा नाउँ तेरा नगारा, तेरा नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। सच सुनेहड़ा एकँकार, एका एक जणाइंदा। शब्द सुत हो त्यार, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। तेरा करे सच प्यार, प्यार प्यार नाल मिलाइंदा। निरगुण निरगुण देवे धार, धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत हरि समझाइंदा। शब्द

सुत उठ कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। तेरा झुलावां सति निशान, सति सतिवादी रंग रंगाईआ। तेरा खेल करां महान, आपणा बल धराईआ। तेरी गोदी तेरा रूप धरां आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द खेल समझाईआ। शब्द सुत देवे दात, मेहरवान दया कमाइंदा। थिर दुआरे पुच्छे वात, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। तेरी मेरी इक्को ज़ात, अज़ाती वंड ना कोए रखाइंदा। तेरा मेरा इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। तेरा मेरा इक्को साक, पिता पूत बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी तेरा रथ बणाइंदा। शब्दी रथ लए बणा, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी दे सलाह, साची सिख्या इक्क समझाईआ। निरगुण बणया निरगुण मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली देवां पा, तेरा बंस वड्याईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तेरी इच्छया घाड़न देवां घड़ा, गगन मंडल सोभा पाईआ। त्रैगुण रंग देवां रंगा, रंग उतर कदे ना जाईआ। पंचम मेला दयां मिला, अप तेज वाए पृथमी आकाश तेरा संग निभाईआ। साची सेवा इक्क समझा, एका राह चलाईआ। लख चुरासी घाड़न लैणा घड़ा, घड़ घड़ आपे वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी होए सहा, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सेवा इक्क लगाईआ। शब्द सुत उठ बलवान, आपणा खेल कराइंदा। एका सुणया धुर फ़रमाण, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। विष्नूं विश्व कर परवान, ब्रह्म पारब्रह्म प्रगटाइंदा। शंकर मेला सुंञ मसाण, धूआँधार खेल कराइंदा। तिन्नां विचोला बण मेहरवान, शब्द ढोला एका गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बन्धन इक्क वखाइंदा। साचा बन्धन एका डोर, शब्द तन्द बंधाईआ। हुक्मे अंदर आपे तोर, हुक्मी हुक्म रिहा समझाईआ। निरगुण निरगुण वेखे दौड़, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द दए वड्याईआ। साचे शब्द तेरा पसारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए अधारा, त्रैगुण साचा संग निभाइंदा। पंचम खेल करे अपारा, घाड़त घड़न आप घड़ाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, तत्तव तत्त वेस वटाइंदा। लख चुरासी बण ठठयारा, घड़ भाण्डे आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता, नूर कर उज्यारा घर घर मन्दिर अंदर आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर देवे वर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाइंदा। शब्द गुर कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। मैं सेवा करां बण सेवादार, भुल्ल कदे ना जाईआ। लख चुरासी कर त्यार, घट घट आपणा बन्धन पाईआ। चारे खाणी वंड विच संसार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म वरताईआ। चारे बाणी बोल जैकार, साचा नाअरा इक्क सुणाईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, धुंन

अनादी आपे गाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दे अधार, ब्रह्म वेता करे पढ़ाईआ। चारे वेद कर उज्यार, जागरत जोत जोत जगाईआ। चारे युग कर प्रधान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बन्धन पाईआ। चारे वरन वरन निशान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका मार्ग पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी मंग मंगाईआ। गुर शब्द सूरा वड बलवान, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। जुग चौकड़ी खेल करां महान, लोकमात वेख वखाइंदा। घर घर अंदर हो प्रधान, आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्त मिलाइंदा। कवण वेला होए मेला, शब्दी शब्द मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, आपणी दया कमाइंदा। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण अचरज खेल आपे खेला, खेलणहारा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा देवे मात, शब्दी शब्द वड वड्याईआ। युग चौकड़ी खेल दिवस रात, राती रुत्ती वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे दात, दात अनमुलड़ी आप वरताईआ। वेखणहारा खेल तमाश, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आपणी इच्छया आपे पूरी करे आस, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा खेल रखे हथ्थ, आपणी दया आप कमाइंदा। जुग जुग चलाए साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, रूप अनूप आप वटाइंदा। गुर गुर रूप हो प्रगट, शब्दी शब्द डंक वजाइंदा। आत्म परमात्म कर कर दास, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर निवास, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी माण दिवाइंदा। गुर शब्दी तेरा रंग, हरि जू हरि हरि आप चढ़ाइंदा। लख चुरासी वज्जे मृदंग, गृह तेरा नाद सुणाइंदा। शाह पातशाह सूरा सरबंग, सति सिँघासण सोभा पाइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, किरन किरन ना कोए रुशनाइंदा। बोध अगाधा एका छन्द, पुरख अबिनाशी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी मार्ग एका लाइंदा। शब्दी मार्ग गुर अवतार, सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। जुग जुग सेवा विच संसार, निरगुण सरगुण लए कमाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जीव जंत करे पढ़ाईआ। धुर फ़रमाणा सति लिखार, लिख लिख लेखा मात समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वार, कलयुग आपणा रूप वटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करे खेल अगम्म अपार, अपरम्पर आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द देवे माण वड्याईआ। गुर शब्द तेरा नाद, अनादी आप वजाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बोध अगाध, गीता ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। अञ्जील कुरान बिस्मिल रूप हो विस्माद, कलमा कलाम

नबी रसूल आप पढ़ाइंदा। नाम सति साची दाद, धुर मन्त्र आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरी वंड वंडाइंदा। शब्दी वंड अगम्म अपार, हरि साचा आप कराईआ। जुग चौकड़ी रहिणा ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए जणाईआ। जोती जाता हो उज्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दे अधार, आपणा भेव खुल्हाईआ। वेस वटाए गुर अवतार, जीव जंत जंत पढ़ाईआ। काग़ज़ कलम शाही कर त्यार, लिख लिख लेखा जगत समझाईआ। उच्ची कूक कूक पुकार, भेव अभेद खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी कर खुआर, नाता मातलोक तुड़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत करना ख़बरदार, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। साचे सन्तां वसे नाल नाल, सांतक सति कराईआ। साचे गुरमुखां करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। गुरसिख वेखे शाह कंगाल, नाम निधाना झोली पाईआ। शब्द सुत चार जुग तेरा हल्ल कराए तेरे कोलों सवाल, दूसर पट्टी ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे इक्क समझाईआ। सुत दुलारे कर विचार, हरि साचा सच जणाइंदा। सेवा लाए नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वारो वार, हुक्मी हुक्म इक्क समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कर उज्यार, गुर पीर अवतार तेरा बन्धन पाइंदा। पंज तत्त काया चोला खेल न्यार, निराकार आप कराइंदा। साचा नाउँ वेख विचार, जीवां जंतां साधां सन्तां झोली पाइंदा। अन्तिम सब दा लहिणा देणा कर्ज उतार, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म हरि सुणाइंदा। एका हुक्म अन्तिम सुण, गुर शब्दी सीस निवाइंदा। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, भेव कोए ना आइंदा। मैं लख चुरासी जुग जुग वेखां छाण पुण, नाम मधाणा एका पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्त मिलाइंदा । अन्तिम वेला दस्स भगवान, तेरे अग्गे सीस निवाया। जुग चौकड़ी सेवा करां विच जहान, बण सेवक सेव कमाया। भगतां देवां भगती दान, सन्तन साचा नाम दृढ़ाया। गुरमुखां देवां इक्क ज्ञान, गुंग मुख आप पढ़ाया। गुरसिखां राग सुणावां कान, रसना जिह्वा ना कोए हिलाया। अमृत आत्म देवां पीण खाण, निझर झिरना इक्क झिराया। शब्द अनादी धुर फ़रमाण, जुग जुग आप सुणाया। लिख लिख लेखा कर परवान, जगत परवाना दयां फड़ाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग झुले तेरा निशान, निशाना नज़र किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्त होए सहाया। आपणा वेला दस्स अन्त, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ । तूं साहिब सच्चा श्री भगवन्त, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं आदि बणाई मेरी बणत, आपे बणया पिता माईआ। मैं तेरी महिमा गा गा थक्का अनक, भेव कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१०२३
११

आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला आपणा नूर नूर मिलाईआ। वेला अन्तिम दस्स मेरे मीत, तुध अग्गे मेरी अरज़ोईआ। चार जुग गावां तेरे गीत, विष्न ब्रह्मा शिव कर पढ़ाईआ। गुर अवतार चलावण रीत, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। तेरा खेल करां अनडीठ, नज़र किसे ना आईआ। मैं इक्को मंगां सच प्रीत, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। तूं बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। मैं खेल करावां लोकमात मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ जगत बणाईआ। जुग चौकड़ी वेख रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त आपणा बन्धन आपे पाईआ। कवण वेला पाए बन्धन, दोए जोड़ बन्धन सीस झुकाइंदा। जुग जुग तेरा नाउँ देवां साचा नंदन, अनन्द अनन्द अनन्द इक्क वखाइंदा। तूं आदि जुगादी टुट्टी गंढुण, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी सदा बख़्शंदन, हउँ भिखक मंग मंगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा सुणावां छन्दन, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां मात प्रगटाइंदा। तूं सब नूं देवणहारा दंडन, तेरी कीती ना कोए उलटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अन्तिम तेरे मिलण दी इक्को आस रखाइंदा। तेरे मिलण दी इक्को आस, मैं हरि जू हरि रखाईआ। जुग चौकड़ी पावां रास, गोपी काहन मात नचाईआ। लख चुरासी वेख खेल तमाश, गृह गृह आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी करे नास, तेरी खुशी मनाईआ। सेवां करां बण दासी दास, चलां तेरी हुक्म रज़ाईआ। कवण वेला सद्दें आपणे पास, आपणा मेला लएं मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी ओट रखाईआ। तेरी ओट मेरे भगवान, दूजी आस ना कोए रखाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मात निशान, निरगुण सरगुण आप झुलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देवां दान, नाम तेरा झोली पाइंदा। लोकमात दे के जाण सारे ब्यान, बिन हरि अन्त पार ना कोए कराइंदा। तेरा जस रसना जिह्वा सारे गाण, अन्तर आत्म ध्यान सर्ब लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। तेरे अग्गे झोली इक्को रख, एका आस रखाईआ। कवण वेला होएं प्रतख, मेरे साहिब सच्चे गुसाँईआ। मेरी पूरी करनी आस, इक्को तेरी वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दो जहान चोदां लोक आपणा मार्ग दस्स, अवण गवण फेरा पाईआ। सचखण्ड दुआरे बहे हस्स, थिर घर मेरा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा पड़दा दे खुल्ाईआ। आपणा पड़दा आपे खोल्, दर तेरे सीस निवाया। आपणा अक्खर आपे बोल, निष्अक्खर लए प्रगटाया। आपणा तोल आपे तोल, तोलणहार बेपरवाहया। आपणा कर आपे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाया। कवण वेला उपर आए धौल, धरनी धरन धवल चरन

छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दे जणाया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। शब्दी सुण ला कान, इक्क ध्यान लगाईआ। नव नौ चार सर्ब मिट जाण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। अन्तिम चौकड़ खेल करे महान, श्री भगवान बेपरवाहीआ। चार वेद कर प्रधान, शास्त्र सिमरत नाल मिलाईआ। पुराण अठारां जगत ज्ञान, गीता ज्ञान करे रुशनाईआ। साचा कलमा अंजील कुरान, काया कुरा आप वखाईआ। नाम सति कर प्रधान, वाहिगुरू डंका इक्क वजाईआ। फतहि आपणे हथ्थ रखे बलवान, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। तेई अवतार कर प्रधान, तेरा संग रखाईआ। भगत अठारां देवे माण, बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ। दस्स गुर एका जोती नूर महान, नूर नुराना नुर करे रुशनाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। अठारां बरन इक्क निशान, हरि का नाउँ दए समझाईआ। सच संदेसा विच जहान, बिन पढ़यां आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी अन्त दए जणाईआ। शब्दी सुत सुण लै बात, दाता दानी आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे दे जाण गाथ, गाथा हरि जू आपणी आप सुणाइंदा। निरगुण सरगुण हो हो चला के जाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। अक्खर वक्खर दे दे जाए पाठ, पूजा आपणा नाउँ समझाइंदा। देवे सार तीर्थ ताट, अठसठ आपणा खेल कराइंदा। चौदां लोक खोल्ह हाट, बण वणजारा सेव कमाइंदा। चौदां तबक एका दात, नूर इलाही आप धराइंदा। आपे बण पाकी पाक, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। परवरदिगार खोल्ह ताक, पीर पैग़म्बर दस्तगीर आप पढ़ाइंदा। आपणी रखे इक्को ज़ात, दूसरी जात ना कोए बणाइंदा। लिख लिख लेखा कलम दवात, कायनात आप पढ़ाइंदा। तेई अवतार अन्तिम मंगण साथ, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। भगत अठारां टेकण माथ, चरन धूढ़ मंग मंगाइंदा। गुर दस पुच्छणहारा आपे वात, निरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे मार झात, झाकी आपणी आप जणाइंदा। कलयुग वेख अन्धेरी रात, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। शब्दी तेरा रखे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। जिस नूं लभ्भदे रहे त्रिलोकी नाथ, सो तिन्नां लोकां चरनां हेठ दबाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवणहारा दात, रूप अनूप आप वटाइंदा। ना कोई पिता ना कोई मात, गोदी गोद ना कोए सुहाइंदा। ना कोई वरन ना कोई जात, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, सच संदेसा नर नरेशा विष्न ब्रह्मा शिव आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि बिन दूजा नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई दूजा होए जग, जीवण जुगत ना कोए जणाईआ। लख चुरासी वेखणहारा वेखे सूरा सरबग, सूरबीर बेपरवाहीआ। निरगुण खोल्हे सरगुण हट्ट, साची वस्त इक्क टिकाईआ।

करे खेल पुरख समरथ, आपणा वेला अन्त दए समझाईआ। वेद व्यासा लिख लिख गया गाथ, कलयुग अन्तिम आए निहकलंक सच्चा माहीआ। ईसा कहे मेरा खुदावंद मेरा देवे साथ, कदे ना होए जुदाईआ। नानक कहे महांबली उतरे आपणे घाट, जननी जन ना कोए वड्याईआ। गोबिन्द कहे कल कल्की देवे मेरा साथ, सगला संग निभाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मेरा खेल आदि जुगादि, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपे लाहीआ। आपणा पड़दा देवे लाह, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। शब्दी ओट लैणी रखा, एका ओट वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लहिणा देणा दए चुका, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। सुरपति राजा इन्द दए मिटा, करोड़ तेतीसा मुख छुपाइंदा। गुर अवतारां चार जुग दा लहिणा दए मुका, पीर पैग़म्बर झोली आप भराइंदा। खाणी बाणी अञ्जील कुरानी वेखे थाउँ थाँ, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां देवे हिला, आपणा हुक्म इक्क वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, वेला अन्तिम इक्क समझाइंदा। वेला अन्तिम श्री भगवन्त, एका एक जणाईआ। कलयुग अन्तिम माया पए बेअन्त, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। भरमे भुल्ले साध सन्त, हरि का भेव कोए ना पाईआ। नारी सेज ना माणे कन्त, विभचार सर्ब लोकाईआ। घर घर होए गढ़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, मुल्ला शेख़ ना कोए चतुराईआ। मानस जन्म सब दा होए खण्डत, नाम खण्डा हथ्थ ना कोए उठाईआ। कलयुग जीव नार दुहागण होए रंडत, सच सुहाग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरी रात, लोकमात अन्धेरा छाइंदा। कोई ना गाए साची गाथ, रसना जिह्वा सर्ब हिलाइंदा। ना कोई सहाई तीर्थ ताट, तट किनारा ना कोए वड्याइंदा। किसे ना मिले साचा नात, सतिगुर हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त अन्त आप समझाइंदा। अन्तिम हरि जू देवे दस्स, आपणा भेव खुल्हाईआ। पंज तत्त काया पंज विकारा होए वस, मन मनुआ आप भुवाईआ। गुर का शब्द गुरदुआरयों जाए नस्स, सतिगुर नज़र किसे ना आईआ। त्रैगुण माया अंदर जीव जाण फस, ना कोई सके फंद तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दए वड्याईआ। शब्द गुर हरि खोल्हे भेव, अभेद आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरी सेव, निरगुण सरगुण विच वखाइंदा। तेरा नाउँ अमृत रस मेव, लख चुरासी जिह्वा आप चखाइंदा। लेखा जाणे वड देवी देव, देवत सुर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रूप अन्त समझाइंदा। तेरा रूप सुत दुलारे, अन्त हरि जणाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धारे, किरपा निध बेपरवाहीआ। गोबिन्द

लाल करके तैनूं पुकारे, लोकमात दए वड्याईआ। चारे जुग बणाए तेरे दुलारे, अन्तिम तेरीआं नीहां हेठ दबाईआ। चार वरन होण खुआरे, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट झूठ ललकारे, सच सुच्च नज़र कोए ना आईआ। गुर का शब्द ना कोए विचारे, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। धीआं भैणां करन वणज वपारे, लोकमात हट्ट चलाईआ। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले होण खुआरे, धीआं भैणां नैण तकाईआ। चारों कुण्ट होए अन्धयारे, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धरनी धरत धवल करे पुकारे, खुल्ल्ड़े केस दए दुहाईआ। कलयुग जीव मेरी पत्त रहे लिताड़े, मेरे नक्क नथ्थ सुहाग रहिण ना पाईआ। चारों कुण्ट लग्गे वेसवा अखाड़े, कलयुग डौरू डंका रिहा वजाईआ। साध सन्त करन विभचारे, धीरज जत सति सन्तोख ना कोए निभाईआ। सर सरोवर अठसठ तीर्थ नारी पुरष नंगे छाला रहे मारे, अछल अछल तेरा भय ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। शब्दी सुत तेरा रूप, गोबिन्द धार चलाइंदा। तेरा नाउँ चार कूट, नौ खण्ड पृथ्मी डंका इक्क वजाइंदा। इक्को ताणा पेटा होए सूत, एका चरखा नाम वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा साचा रूप, गोबिन्द नाउँ धराइंदा। आपणा पड़दा देवे चुक्क, करे मेहर मेहर मेहरवाना। गोबिन्द सूरा जाए उठ, जोधा मर्द मर्द मर्दाना। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे चारे गुठ, दहि दिशा हो प्रधाना।
१०२७ शब्दी शब्द सुहाए रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाना। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, लेखा जाणे दो जहाना। जोती जोत सरूप १०२७
११ हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेखे मार ध्याना। कलयुग अन्तिम मार ध्यान, लख चुरासी वेख वखाईआ। ११
शरअ शरीअत होई बेईमान, बेपरवाह ना कोए मिलाईआ। घर घर वड़या जगत शैतान, पंचम तत्त करे लड़ाईआ। मेरा नाउँ गुर का शब्द ना वज्जे किसे बाण, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। उच्ची कूक कूक सर्ब गाण, आपणी कूक ना सुणाए कोए सच्चे माहीआ। जीव जंतां दे दे थक्के ज्ञान, आपणा ज्ञान, नेत्र ना कोए खुल्लाईआ। बिन हरिनामे होए खिज़ा, बसन्ती रुत्त ना कोए वड्याईआ। सिंमल रुक्ख जगत लहराण, फल फुल रहिण ना पाईआ। गोबिन्द मंगे एका दान, पुरख अकाल अग्गे झोली डाहीआ। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान जगत वड्याईआ। तेरा मन्दिर सच अस्थान, सच भूमका इक्क सुहाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। मैं तक्कां तेरी आण, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। तूं आउणा विच जहान, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम लेखा हरि निरँकार, आपणा आप जणाइंदा। कलयुग आए अन्तिम वार, अन्त सब दा आप कराइंदा। निरगुण निरवैर हो त्यार, लोकमात वेस वटाइंदा। नाउँ रख निहकलंक नरायण नर अवतार, कल कल्की फेरा पाइंदा। नाम

खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां आप वखाइंदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, जेरज अण्डज आप हिलाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां मारे मार, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। भगतां सन्तां करे प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आत्म ब्रह्म करे बहाल, पारब्रह्म आपणा मेल मिलाइंदा। निहकर्मी करे साचा कर्म, कर्म कांड ना कोए जणाइंदा। नाता तोड़े वरन बरन, एका रूप वखाइंदा। पुरख अबिनाशी साची सरन, गोबिन्द गुर समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक शब्दी आप भराइंदा। आदि पुरख आदि दिता वर, अन्तिम मेला सहिज सुभाईआ। जुग चौकड़ी जाए हर, गुर पीर अवतार जावण पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द पल्लू लए फड़, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर, साची भूमका सोभा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जाए झड़, जूठ झूठ दए खपाईआ। रैण अन्धेरी चुक्के डर, भयानक रूप ना कोए जणाईआ। मनमुखता दूर देवे कर, मन वासना दए खपाईआ। गुरमति मात इक्को धर, नानक गोबिन्द करे पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी मिले घर, घर घर वज्जे वधाईआ। एका अक्खर जीव जंत साध सन्त भगत भगवन्त लैण पढ़, दूसर होर ना कोए पढ़ाईआ। चौदां विद्या चुकाए डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दए समझाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण जामा पाउणा, जोती जोत डगमगाइंदा। ईसा मूसा पन्ध मुकाउणा, काला सूसा तन छुहाइंदा। संग मुहम्मद डेरा ढाउणा, चार यारी पन्ध मुकाइंदा। हक हक़ीक़त वेख वखाउणा, लाशरीक फेरा पाइंदा। जगत तारीक मेट मिटाउणा, नूरी चन्द इक्क चढ़ाइंदा। चौदां तबक पड़दा लौहणा, मुख नक़ाब ना कोए रखाइंदा। साचा अस्व इक्क दौड़ाउणा, दो जहानां चरनां हेठ दबाइंदा। साचा ढोला एका गाउणा, नबी रसूलां आप पढ़ाइंदा। दीन मज़्हब कोई रहिण ना पाउणा, इस्म आज़म आपणा रूप जणाइंदा। मिहबान बीदो खेल कराउणा, बिस्मिल आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव आप समझाइंदा। कलयुग अन्त आए भगवान, आपणा रूप वटाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात झुलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रखे आण, हुक्मी हुक्म हुक्म मनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान सर्ब जस गाण, हरि का भेव कोए ना पाईआ। शरअ हदीस ना दिसे कोए ईमान, अमानत साचा नाम ना कोए रखाईआ। पंच विकारा होए गुलाम, जगत गुलामी ना कोए तुड़ाईआ। साचे नबी ना कोए सलाम, असराईल ज़बराईल मेकाईल असराफ़ील ना देवे कोई पैग़ाम, सच संदेसा ना कोए अल्हाईआ। मुकामे हक हक पैग़ाम, पुरख अबिनाशी इक्क सुणाईआ। दामनगीर सब दा पकड़े दामन दाम, साची जामनी आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द शब्द वड्याईआ। शब्द सुत रखणा याद, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। कलयुग अन्त सुणे फ़रयाद, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। आपणे विच्चों आपा काढ, लोकमात सोभा पाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी देवे आपणा दान, लख चुरासी आप वरताइंदा। एका शब्द एका गाथ, एका मन्त्र सच जणाइंदा। एका खेल इक्क तमाश, एका वेस वटाइंदा। इक्क रथवाही एका राथ, एका बण बण सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, शब्दी सुत मेल मिलाइंदा। शब्दी सुत तेरा मेला, श्री भगवान आप कराईआ। निरगुण गुरू निरगुण चेला, गोबिन्द मेला पुरख अकाल सच समझाईआ। निरगुण सज्जण निरगुण सुहेला, निरगुण सगला संग निभाईआ। निरगुण जाणे आपणा वक्त वेला, सरगुण भेव कोए ना पाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलयुग अन्तिम आपणा खेला, रूप अनूप वटाईआ। वसणहारा धाम नवेला, सम्बल बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत देवे वर, अन्तिम बांहों फड़ फड़, बांहों गले लगाईआ। अन्तिम बांहों लए फड़, समरथ दया कमाइंदा। सम्बल नगर आपे वड़, आपणा आसण लाइंदा। साचे पौड़े आपे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। अद्धविचकार ना जाए अड़, सचखण्ड दुआरे आपणा चरन टिकाइंदा। थिर घर आपणा अक्खर पढ़, शब्दी गुर आप पढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम लेखा जाणे नारी नर, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। किला तोड़े हँकारी गढ़, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सम्मती आपणा खेल कराइंदा। सम्मती सम्मती खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। चार जुग दा अन्त किनारा, आपे दए वखाईआ। शास्त्र सिमरत कहिण आयू लख चार बत्ती हज़ारा, लिख लिख कलम शाहीआ। गुण अवगुण गोबिन्द विचारा, कर्मां लग्गी झूठी छाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे खुआरा, वेखणहारा ख़लक खुदाईआ। चारों कुण्ट साचे भगत करन पुकारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तुध बिन अवर ना कोए सहारा, मन्दिर मस्जिद मट्ठ तेरा रूप नज़र किते ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी घर घर होया हँकारा, हरि के पौड़े ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्तिम वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग वेखे अन्तिम थान थनंतर, दो जहानां फेरा पाइंदा। लोकमात लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त सर्ब जलाइंदा। चार वरन पढ़ पढ़ थक्के मन्त्र, मन वासना बन्द ना कोए कराइंदा। कोई ना चढ़े साचे गगन गगनंतर, घर बंक ना कोए सुहाइंदा। आपणी बिध ना जाणे कोई अन्तर, आत्म परमातम ना कोए मिलाइंदा। कलयुग आपणे हथ्थ रखा जगत मन्त्र, जूठ झूठ नाल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत देवे वर, कलयुग अन्तिम तेरा मेरा

इक्को घर, लोकमात समझाइंदा। लोकमात इक्क दुआरा, हरि शब्द सुत जणाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वसे मुनारा, मुनी ऋषी भेव कोए ना पाइंदा। तेरा नाद वज्जे धुन्कारा, धुन अनादी आप अलाइंदा। मेरा नूर होए चमत्कारा, जोती जोत डगमगाइंदा। लख चुरासी पावे सारा, घर घर वेख वखाइंदा। गुरमुख साचे लए उभारा, आप आपणा भेव चुकाइंदा। चरन कँवल दे सहारा, धरत धवल आप वड्याइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठारा, निझर झिरना रस झिराइंदा। निरगुण दीआ कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। आत्म सेजा कर प्यारा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। सुरती शब्दी इक्क दुआरा, कन्त भतार मेल मिलाइंदा। रंग रलीआं माणे अगम्म अपारा, दिस किसे ना आइंदा। कलयुग जीव करे ख़आरा, नौ खण्ड पृथ्मी एका धक्का लाइंदा। सम्मत सम्मती खेल करे अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। वीह सौ अठारा बिक्रमी पार किनारा, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। एका नांयां लगा अखाड़ा, नौ इक्क आपणा बन्धन वखाइंदा। दस दस बीस बीस बीस जगदीस आपणा पड़दा लाहइंदा। नव नौ वज्जे नगारा, चार चार सुणाइंदा। कलयुग करे पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाइंदा। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सोहण इक्क दुआरा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। एका नाउँ हर घट थाउँ सुणाए आप जैकारा, सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म आप पढ़ाइंदा। हँ ब्रह्म दए अधारा, पारब्रह्म सच सहारा, दो जहानां पार किनारा सोहँ नाउँ जणाइंदा। सतिजुग चले सच विहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्दी चेला हरि हरि गुर गुर गुर चेला आपणे घर बहाइंदा। आपे घर आपे ताकी, आपे बंक सुहाईआ। आपे भविख्त वाकी, आपे पूर कराईआ। आपे गोबिन्द बणया साकी, भर प्याला अमृत जाम प्याईआ। आपे लहिणा देणा चुकाए बाकी, पूरब लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे करे वसेरा तन ख़ाकी, आपे नूरो नूर डगमगाईआ। आपे खोले चौदां हाटी, आपे चौदां तबक वणज कराईआ। आपे करे खेल बाज़ीगार नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। आपे गुरमुखां चाढ़े साची घाटी, सचखण्ड आप बहाईआ। आपे दीआ आपे बाती, आपे नूर करे रुशनाईआ। आपे अमृत बूंद स्वांती, गुरमुखां मुख चुआईआ। आपे मेटे अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। आप सुणाए साची गाथी, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। आपे सज्जण साचा साखी, सगला संग निभाईआ। आपे खेल करे बहु बिध भांती, आपे उत्तम रखे ज़ाती, वरन बरन ना वंड वंडाईआ। आपे होए कमलापाती गुरमुख नार लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्दी धार जोत उज्यार, आपणा रूप वटाईआ। आपे शब्द आपे नाद, धुंन नाद आप अलाईआ। आपे सन्त आपे साध, आपे सतिगुर रूप वटाईआ।

आपे नाम निधाना गाए बोध अगाध, बोध अगाध आपे करे पढ़ाईआ। आपे मोहण माधव माध, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप अख्वाईआ। आपे जुग जुग रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। आपे शाह पातशाह करे सच्चा राज, साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्त भगत भगवन्त लख चुरासी विच्चों लए काढ, आप आपणी गोद बहाईआ। एथे ओथे करे लाड, दो जहानां होए सहाईआ। शब्दी गुर वेखे हरि रघुनाथ, रघुपत आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्त दए समझाईआ। कलयुग अन्त मुक्कणा, मुकावणहार करतारा। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेट मिटावणहारा। तीर निशाना कदे ना उकणा, गोबिन्द मारे अन्तिम वारा। कूड़ी क्रिया बेड़ा डुब्बणा, जूठ झूठ रहे ना विच संसारा। पुरख अकाल शेर एका बुक्कणा, नौ खण्ड पृथमी मारे नाम भबकारा। शाह सुल्तान दिन दिहाढ़े लुट्टणा, राज राजानां करे खुआरा। जूठा झूठा बूटा पुटणा, देवे अन्त हुलारा। लख चुरासी कलयुग पौदा सुकणा, अमृत देवे ना कोए ठंडा ठारा। गुरमुख विरले आवण जावण चुक्कणा, जिस मिल्या आप निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादी आपे गुर अवतारा।
१०३१ आदि जुगादी एका गुर, सतिगुर आपणा खेल कराईआ। आदि जुगादी लेखा जाणे धुर, धुर दी बाण आप रखाईआ। चार १०३१
११ वरन दी साची सुर, हरि सुरती शब्द मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम ११
वर, एका नाया नाया एका, इक्क नौ वेखे थाउँ थाईंआ। थाउँ थाईं वेखणहारा, दिस किसे ना आइंदा। कलयुग अन्तिम करे खुआरा, लोकमात मेट मिटाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद पार किनारा, अल्ला राणी मुख नक़ाब पड़दा आपे लाहइंदा। कलयुग खेल करे अपारा, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। बीस बीसा ठांडा दरबारा, सति सतिवादी आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचे भगतां आप जगाइंदा। गुरमुख साचे जाणा जाग, सतिगुर शब्द आप जगाईआ। अन्तर आत्म इक्क वैराग, बण वैरागी आप वखाईआ। आत्म परमात्म वज्जे नाद, अनादी धुन धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप जगाईआ। गुरमुख जागे दयानिध जगाए दीनन आपणी दया कमाईआ। जुग जन्म दे विछड़े लए मिलाए, मेलणहारा बेपरवाहीआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर पर्बत नज़र किसे ना आए, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। जिस जन रहिमत रहीम रहिमान आप कराए, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। राती सुत्तया लए मिलाए, घर घर फेरा पाईआ। रामा कृष्ना नानक गोबिन्द ईसा मूसा मुहम्मद रूप आप वटाए, अनूप आपणा खेल कराईआ। एका सृष्ट सर्ब सुखदाए, दृष्ट इष्ट इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले लए फड़, गुर चेले आपणे घर बहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल विच जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण, निरगुण आपणा आप सेवा लाईआ।

★ १७ चेत २०१६ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ★

शब्द सुत तेरा साथ, पुरख अकाल आप निभाइंदा। किरपा कर लोकमात, अलौकक आपणी खेल कराइंदा। सच भण्डारा इक्को ख़ात, गुण निधाना आप रखाइंदा। जन भगतां पुछे अन्तिम वात, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। एका बख्शे नाम दात, नाउँ निरँकारा आप वरताइंदा। चार वरनां मेटे ज़ात पात, ऊँच नीच भेव चुकाइंदा। निरगुण नूर करे प्रकाश, हरि जू साचा चन्द चढ़ाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पूरी करे आस, लहिणा देणा सर्ब मुकाइंदा। वेखणहारा पृथ्मी आकाश, गगन मंडल खोज खोजाइंदा। दो जहानां खेल तमाश, पुरख अबिनाशी आपणा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आप कराइंदा। शब्द सुत साचे गुण, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। अन्त पुकार लए सुण, बेअन्त वड्डा शहिनशाहीआ। लख चुरासी छाण पुण, भगत भगवन्त लए जगाईआ। राग सुणाए साची
१०३२ धुन, अनादी आपणा नाद वजाईआ। भेव ना जाणे कोए रिख मुन, अभेद आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, १०३२
आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करना, कलयुग अन्त अन्त जणाईआ। निरगुण नूर एका धरना, धरनी धरत धवल वड्याईआ। जीव जंत चार वरन आपे वरना, कन्त कन्तूहल आपणा नाउँ धराईआ। गुर अवतारां आपे फड़ना, घट घट आपणा फेरा पाईआ। शब्द अगम्मी दो जहानां एका पड़ना, पढ़ पढ़ आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। मेल मिलावा अन्तिम कल, नर हरि आपणा आप जणाइंदा। करे खेल अकल कल, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण जोती शब्दी आपे रल, सरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। सम्बल नगरी धाम मल्ल, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत भेव खुलाइंदा। सम्बल नगर सच मकाना, बेमुकाम आप बणाईआ। वसणहार श्री भगवाना, दिस किसे ना आईआ। तेरा नाउँ मर्द मर्दाना, गुर गुर आपणा रंग वखाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवाना, बल एका एक जणाईआ। पावे सार दो जहाना, दोए दोए आपणी धार चलाईआ। शब्द अगम्मी इक्क तराना, त्रैगुण अतीता आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्त मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्त मिलावा हथ्थ करतार, निरगुण निरगुण आप

जणाइंदा। शब्द सुत तेरी सेवा अपर अपार, जुग चौकड़ी आप लगाइंदा। तेरे हुक्मे अंदर गुर अवतार, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा बन्धन आपे पाइंदा। तेरा बन्धन पाए हरि, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी पार कर, पार किनारा दए समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता निरगुण रूप मात धर, आप आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला आपणे घर वखाईआ। तेरा मेला साचे घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। जुग चौकड़ी जाण हरि, हरि जू आपणा पन्ध मुकाइंदा। प्रगट होए नरायण नर, नर नारी खेल कराइंदा। सन्त सुहेले आपे फड़, गुरमुख आपणा बन्धन पाइंदा। गुरसिखां अंदर आपे वड़, आपणी बूझ आप बुझाइंदा। अलख अगोचर ना जन्मे ना जाए मर, जीवण मरन आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी मेला गुरू गुर चेला, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। हरि सतिगुर जाणे जाणी जाण, जानणहार आप अख्वाईआ। कलयुग अन्त करे पहचान, बेपहचान आपणी दया कमाईआ। दर घर साचे मेले आण, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। आत्म परमात्म वेखे मार ध्यान, ब्रह्म पारब्रह्म दए वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान सर्ब मिट जाण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। खाणी बाणी ना कोए ज्ञान, ध्यान ध्यान ना कोए जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी जगत
१०३३ वासना होए शैतान, शरअ घर घर करे लड़ाईआ। राज भूप होण बेईमान, सच सुच्च ना कोए रखाईआ। जूठ झूठ झुल्ले १०३३
११ निशान, सच निशाना ना कोए उठाईआ। नेत्र रोवण ज़िमीं असमान, कूक कूक देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, ११
आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वेले अन्त तेरा रूप आपे वेख वखाईआ। अन्तिम वेखे तेरा रूप हरि जू आपणी दया कमाइंदा। करे खेल शाहो भूप, शहिनशाह आपणी धार चलाइंदा। आदि जुगादी सति सरूप, सति सति आपणा रंग रंगाइंदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फोल फोलाइंदा। आपणा अन्तिम कलयुग देवे आप सबूत, वेद पुराण भेव कोए ना पाइंदा। पंज तत्त काया ना कोए कलबूत, बिन रसना जिह्वा कलमा आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचे सुत रखणी आस, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होए पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणा खेल आप कराइंदा। निरगुण हो के वसे निरगुण पास, निरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। एथे ओथे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड लोअ पुरी देवे धरवास, चरन दुआर इक्क वखाइंदा। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल पावणहारा रास, तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची बूझ आप बुझाइंदा। साची बूझ लैणी बुझ, हरि सतिगुर आप जणाईआ।

तेरा मेरा एका नूर किसे ना आवे कोई सुध, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण निराकार तेरे अस्व उपर बहे कुद्द, सच सिँघासण एका आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरि शब्दी मेल मिलाईआ। जोती शब्दी निरगुण मेला, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। आपे गुरू आपे चेला, चेला गुर आप अख्वाईआ। एथे ओथे सज्जण सुहेला, सगला संग रखाईआ। नव नौ चार चौकड़ी अन्तिम वेला, थित वार ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करतारा, कलयुग अन्त अन्त कराइंदा। नाउँ निहकलंक नरायण नर अवतारा, लोकमात फेरा पाइंदा। जूठ झूठ कराए पार किनारा, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। सृष्ट सबाई दए आधारा, लख चुरासी एका ओट जणाइंदा। चार वरनां करे पार किनारा, आत्म ब्रह्म सर्ब समझाइंदा। शब्द अनाद बोल जैकारा, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। महल अटल उच्च मुनारा, घर घर विच आप वखाइंदा। दीआ बाती इक्क उज्यारा, कमलापाती डगमगाइंदा। शब्द अगंमी सच धुन्कारा, धुन आत्मक राग अल्हाइंदा। वज्जदी रहे इक्क सितारा, तन्दी तन्द ना कोए रखाइंदा। आपे गावत गावणहारा, सुनणहार आप हो जाइंदा। आपे वेखे वेखणहारा, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी कार आप कराइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, हक हक़ीक़त इक्क वखाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। सीता सुरती राम प्यारा, रहिमत आपणी आप कमाइंदा। नाम बंसरी इक्क जैकारा, कान्हा कृष्ना नाद सुणाइंदा। नाम सति वणज वपारा, सति सतिवादी वंड वंडाइंदा। फतहि डंका विच संसारा, वाहवा सतिगुर आप वजाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे वेखणहारा, सत्तां दीपां फेरा पाइंदा। लख चुरासी खोल्हणहारा बन्द किवाड़ा, घर घर आपणी ताकी लाहइंदा। गुरमुख साचे लए उभारा, गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। साचे सन्तां दए हुलारा, नाम हलूणा इक्क लगाइंदा। साचे भगतां लगाए इक्क अखाड़ा, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। मेल मिलावा सुत दुलारा, जोती जोत बन्धन पाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। राज भूप बण सिक्दारा, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जुग चौकड़ी खेल करदा रिहा वारो वारा, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दोए जोड़ कर कर गए निमस्कारा, सीस जगदीस सर्ब झुकाइंदा। अन्तर आत्म परमात्म अग्गे मंगदे रहे बण भिखारा, खाली झोली सर्ब वखाइंदा। कृपानिध ठाकर स्वामी देवे वस्त देवणहारा, नाम अमोलक आप वरताइंदा। रसना जिह्वा बोल जैकारा, अक्खर अक्खर बण लिखारा, चार जुग दी जुगती धारा, जीवण जुगत सर्ब समझाइंदा। पढ़ पढ़ लेखा अगम्म अपारा, रसना जिह्वा गाए वारा, बत्ती दन्द मुख सालाहइंदा। एको ओट

एकँकारा, इक्को चोट शब्द नगारा, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद इक्क इकल्ला आप लगाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे वेखणहारा, गुर शब्द मेल मिलाए विच संसारा, जोती नूर नूर चमत्कारा, अन्ध अन्धेर अन्धेर मिटाइंदा। रागी नादी वस्से बाहरा, धरत धवल ना कोए मुनारा, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरा, घट घट आपणा डेरा लाईआ। चार जुग दा बण वणजारा, निरगुण सरगुण करदा आया उधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुर शब्दी आपणा रंग रंगाईआ। जोती शब्दी एका धार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। नव नौ चार उतरया पार, अगला मार्ग आपणे हथ्थ रखाईआ। पिछला लहिणा कर्ज़ उतार, अग्गे एका हुक्म वरताईआ। आत्म ब्रह्म सर्ब पसार, ईश जीव जीव समझाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, परवरदिगार इक्क अख्वाईआ। सचखण्ड वसे धाम न्यार, सच महल्ले सोभा पाईआ। निरगुण नूर नूर उज्यार, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। शब्दी सुत सुत बलकार, आदि जुगादी आप प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी दे सहार, सरगुण आपणी धार वखाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे अपार, आप आपणा बल धराईआ। शब्द दुलारा लए उठाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण जोत दीपक आपे बाल, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। कृपानिध दीन दयाल, अचरज खेल आप कराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर जिस दी करदे रहे भाल,
१०३५ सो पुरख निरँजण आपणा फेरा पाईआ। लेखा जाणे गोबिन्द लाल, लालन भुल्ल कदे ना जाईआ। अन्तिम आपणा हल्ल १०३५
११ करे आप सवाल, चार जुग लिख लिख पट्टी गए पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर काल महांकाल, त्रैकाल दरसी आपणी खेल कराईआ। ११
आपणी चले अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पाईआ। जन भगतां मार्ग दस्से सुखाल, निरगुण आपणी बूझ बुझाईआ। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, गुर शब्दी सेव कमाईआ। सुरत सुवाणी ना होए बेहाल, गुर गुर एका कन्त मनाईआ। सतिगुर साहिब दीन दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। लेखा जाण शाह कंगाल, गुरमुख आपणे संग मिलाईआ। शब्द विचोला बण दलाल, पुरख अकाल पल्लू दए फड़ाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद वड्डा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, शब्द गुर मेला सहिज सुभाईआ। शब्द गुर जोती धार, जोती जाता आप बणाइंदा। एका मन्दिर कर प्यार, एका घर सोभा पाइंदा। एका हुक्म सति वरतार, सति सतिवादी आप जणाइंदा। एका नाम शब्द जैकार, जै जैकारा आप अलाइंदा। एका विष्न ब्रह्मा शिव दए प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका जुग चौकड़ी होए उज्यार, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। एका सेवा लाए गुर अवतार, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। एका शास्त्र सिमरत वेद पुराण बोले जैकार, जै जैकार आपणे नाउँ कराइंदा। एका लख चुरासी करे पसार, त्रैगुण आपणा

बन्धन पाइंदा। एका पंज तत्त घड़े घाड़, घड़नहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी खेल आप समझाइंदा। शब्दी खेल हरि जू अन्त, एका एक जणाईआ। वेस वटाए श्री भगवन्त, नूर नुराना कर रुशनाईआ। तेरी महिमा जणाए अगणत, बेअन्त वड वड्याईआ। पकड़ उठाए साचे सन्त, सन्त सुहेला सच्चा माहीआ। देवे वड्याई विच्चों जीव जंत, जीवण जुगत इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त आप वरताईआ। एका वस्त देवे निरँकार, शब्दी शब्द जणाइंदा। कलयुग अन्तिम आए वार, पिछली वारता सर्ब मुकाइंदा। तेरा मेरा होए प्यार, दूजा विच ना कोए रखाइंदा। तेरा मेरा नाउँ होए उज्यार, दूजा डंक ना कोए वजाइंदा। तेरा मेरा वसे घर बाहर, सच घराना इक्क बणाइंदा। तेरा मेरा लग्गे दरबार, दरबान दरवेश दूजा नज़र कोए ना आइंदा। तेरा मेरा होए अधार, सच अधारता इक्क वखाइंदा। तेरा मेरा सच श्रृंगार, दूजी इच्छया ना कोए वधाइंदा। तेरा मेरा इक्क पसार, बण पसारी खेल कराइंदा। तेरा मेरा इक्क विहार, बिवहारी आपणी धार चलाइंदा। तेरा मेरा इक्क जैकार, जै जैकार हरि जणाइंदा। मेरा नाउँ पुरख अगम्म अपार, मेरी सो कोए ना पाइंदा। तूं शब्दी मेरा सुत दुलार, जन जननी मैं अख्वाइंदा। तेरा घाड़न घड़या अपर अपार, घड़ आपे वेख वखाइंदा। तेरा महल अटल मुनार, थिर घर साचा आप बणाइंदा। आपणे विच्चों कढ्ढी तेरी धार, धार धार विच्चों उपाइंदा। रंग चाड़ अपर अपार, रंगत तेरी इक्क वखाइंदा। आपणा रंग कर त्यार, मृदंग हथ्थ फड़ाइंदा। आपणा अनन्द अपर अपार, तेरे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पुरख अकाल एका नर, शब्दी सुत अग्गे धर, निरगुण निरगुण आपणा भेव आप चुकाइंदा। सो पुरख निरँजण निरगुण धार, निराकार आप जणाईआ। सचखण्ड दुआरे कर उज्यार, नूर नूराना डगमगाईआ। थिर घर खोल्ह आप किवाड़, शब्द दुलारा इक्क बहाईआ। करे खेल अपर अपार, जुग चौकड़ी भेव कोए ना पाईआ। कलयुग आए अन्तिम वार, दयावान आपणी दया कमाईआ। लोकमात महल्ल उसार, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। गुर चेला वसे इक्क दुआर, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल करे प्यार, गोबिन्द शब्दी मेल मिलाईआ। साचा ढोला विच संसार, बण विचोला आप सुणाईआ। पड़दा ओहला दए उतार, मुख घूँगट ना कोए रखाईआ। निरगुण चोला बदले आप निरँकार, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जोती शब्दी शब्दी जोत आपणा रंग वटाईआ। सो पुरख निरँजण अन्तिम धार, आपणी आप जणाइंदा। शब्दी सुत कर प्यार, नूर नूर वंड वंडाइंदा। चार जुग किसे ना पाई सार, हरि का भेव ना कोए खुल्हाइंदा। सोहँ रूप आप निरँकार, पिता पूत

१०३६
११

वंड वंडाइंदा। सो रूप पुरख अकाल, हं शब्दी गोद सुहाइंदा। कलयुग अन्तिम मेला विच संसार, साचे घर आप कराइंदा। नेत्र नैण ना कोई वेखे पावे सार, रूप रंग ना किसे वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा मेल मिलाइंदा। शब्द सुत मेल मिलावा, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम रखणा दाअवा, एका ओट रखाईआ। निरगुण पकड़े तेरीआं बाहवां, आपणी गोद सुहाईआ। सदा सुहेला देवे ठंडीआं छाँवा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी धार आप वहाईआ। शब्दी धार सोहँ रूप, जोती नूर दरसाइंदा। आपे जाणे हरि जू भूप, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। लेखा लिखे पूत सपूत, पिता पूत खेल खिलाइंदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा वंड वंडाइंदा। आत्म परमात्म ताणा पेटा इक्को सूत, एका रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मेला आप मिलाइंदा। हँ ब्रह्म मेलणहारा, सो पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। शब्दी शब्द बण वणजारा, हरि हरि आपणा हट्ट चलाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, आपणा पड़दा आप उठाईआ। कलयुग अन्त करे सच विहारा, बिवहारी आपणी कार कमाईआ। साचे भगतां दए हुलारा, नाम धक्का एका लाईआ। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़ा, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप समझाईआ। भगत भगवान एका रंग, हरि हरि आपणा भेव खुल्हाइंदा। सन्त साजन मंगे मंग, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। गुरमुख दुआरा वेखे लँघ, आपणा पन्ध मुकाइंदा। गुरसिख देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच जणाइंदा। जगत विकारा खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, हरि सतिगुर आपणी गंढु पुवाइंदा। मानस जन्म देवे ठंड, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। गुरसिख नार सदा सुहागण लोकमात ना होए रंड, जगत रंडेपा आप मुकाइंदा। भगत भगवन्त ना देवे कंड, करवट आपणी ना कदे बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शब्दी शब्द मेल मिलाइंदा। शब्दी जोती एका रास, एका घर वज्जे वधाईआ। एका नूर इक्क प्रकाश, एका दीपक रिहा जगाईआ। एका खेल इक्क तमाश, एका ख़ालक ख़लक रिहा वखाईआ। एका भगतां करे पूरी आस, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। एका निरगुण सरगुण वसे पास, आपणा पड़दा आपे लाहीआ। कलयुग अन्तिम गुरमुखां करे बन्द खुलास, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। मात गर्भ ना फेरा पाए दस दस मास, उलटा बिरख ना रूप वटाईआ। लेखे लग्गे रसन स्वास, जो जन रसना हरि गुण गाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए प्यास, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। काया करे सांतक सांत, सति सति आपणा नूर समाईआ। पंच विकारा पाश पाश, खण्डा खड़ग इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे आप तराईआ। गुरमुख साचा तरे जग, सतिगुर पूरा आप तराइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। आप चढ़ाए सच जहाज़, साचा बेड़ा आप भराइंदा। वेले अन्तिम रखे लाज, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाइंदा। गुरसिख तेरा रच रच काज, हरि जू आपणी खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलावा साचे घर, गुर शब्दी दया कमाइंदा। शब्द गुर साचा मीता, पुरख अकाल जोत रुशनाईआ। आदि जुगादि जाणे आपणी रीता, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे अनडीठा, दिस किसे ना आईआ। भन्नणहारा कौड़ा रीठा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। गुरमुखां बणे साचा मीता, मित्र प्यारा नाउँ धराईआ। मेट मिटाए लहिणा देणा हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। गुरमुख विरले वसया चीता, चेतन आपणी बूझ बुझाईआ। लख चुरासी परखे नीता, नीतीवान आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण आप उठाईआ। गुरमुख विरला जाए उठ, जिस जन सतिगुर दया कमाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, रस रसीआं रस वखाईआ। निर्मल नूर जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। निज आत्म कर कर वास, आपणा भेव खुलाईआ। सदा सुहेला वसे पास, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां आपणा संग निभाईआ। गुरमुख निभाए तेरा संग, हरि मेहरवान मेहरवाना। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड पृथ्मी भुख नंग, हरि का नाम देवे ना कोई दाना। साधा सन्तां नंगी होई कंड, घर मिले ना श्री भगवाना। जीवां जंतां छड्डया परमानंद, जूठ झूठ रसना गुण वखाना। दीन दयाल साहिब सदा बख्शंद, गुरमुखां बख्शे एका चरन ध्याना। जन्म जुग दी टुट्टी देवे गंढ, किरपा करे गुण निधाना। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, सति पुरख निरँजण धुर फ़रमाणा। लेखे लग्गे बत्ती दन्द, जो जन रसना गाए गाणा। निमस्कार निमस्कार करन सूरज चन्द, विष्न ब्रह्मा शिव करे ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख विरले देवे एका ब्रह्म ज्ञाना। एका ब्रह्म ज्ञान देवे ज्ञानत, ज्ञान ध्यान भेव ना राईआ। पुरख अबिनाशी आत्म परमात्म देवे सच पछानत, आपणी पहचान होर ना किसे समझाईआ। एका नाम देवे सच अमानत, वेले अन्त आपणे खाते लए पाईआ। शब्द विचोला बण बण दए जमानत, साची जामनी आप रखाईआ। आदि पुरख पुरख अबिनाशा सही सलामत, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे करे पढ़ाईआ। हरिजन पढ़ना इक्को अक्खर, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। बजर कपाटी तोड़े पत्थर, हँ ब्रह्म पारब्रह्म

मेल मिलाइंदा। पंच विकारा लाहे सत्थर, सीस फेर ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप तराइंदा। गुरमुख तरे तरे विच संसार, तारनहारा सतिगुर इक्क अखवाईआ। कलयुग अन्त सुण पुकार, बेअन्त फेरा पाईआ। साध सन्त गए हार, हरि का पल्लू ना कोए फड़ाईआ। घर घर करन झूठ विभचार, सति सति ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार करन पुकार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा फेरा आपे पाईआ। कलयुग अन्तिम पाए फेरा, महांबली हरि बलवाना। मेटणहारा अन्ध अन्धेरा, निरगुण निरगुण करे खेल महाना। गुरमुख मेले ना लाए देरा, भेव खुल्हाए वाली दो जहानां। सति पुरख निरँजण होए दलेरा, निरगुण नूर जोत महाना। एका नाउँ नौ खण्ड पृथ्मी पाए घेरा, जूठ झूठ मिटे निशाना। गुरसिख लेखा चुक्के तेरा मेरा मेरा तेरा, रसना जिह्वा गाए सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना।

★ १७ चेत २०१६ बिक्रमी मंगल सिँघ दरबारा सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल जिला अमृतसर ★

जुग जुग जो रिहा लुकया, लुकणहारा आपणा पड़दा लाहीआ। निरवैर हो के आपे बुक्कया, नाउँ निरँकारा डंक वजाईआ। सूरबीर हो के उठया, बल आपणा आप धराईआ। दो जहानां वेखे चार गुठया, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुरपति राजा इन्द साध सन्त गुर अवतार कोए ना रहे सुत्तया, आलस निंद्रा सब दा रिहा मुकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुतया, बेअन्त बेपरवाहीआ। कलयुग आपे जाणे आपणी रुत्तया, रुत्त रुत्तड़ी आपे वेख वखाईआ। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख विरले आपे पुछिआ, आपणा दुखड़ा आप सुणाईआ। अन्त मिलण दा वेला ढुक्कया, ढोआ लै के आया सच्चा माहीआ। निरगुण बण बण लागी कटदा फिरे बुतीआं, घर घर फेरा पाईआ। पहलों रविदास चुमारे कोलों गंढुवौंदा रिहा जुतीआं, हुण कब्वुयां गंढु वखाईआ। आप उठाए रूहां सुतीआं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। लुकवा खेल पुरख अबिनाशा, जुग जुग आप कराइंदा। सरगुण वेंहदा आया तमाशा, सचखण्ड निवासी सचखण्ड आसण लाइंदा। आपणा नाउँ दे दे भरवासा, जगत धरवास इक्क वखाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी अकासा, आकाश आपणा नूर प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। लुकया रिहा बैकुंठ धाम, बुरका आपणा ना आप उठाईआ। कोटन कोटि लभ्भ लभ्भ गए राम, रम्मईआ राम राम ध्याईआ। कोटन कोटि रास पा पा गए घनईआ

शाम, साचा काहन आपणी सेवा रिहा लगाईआ। कोटन कोटि ईसा मूसा मुहम्मद दे दे गए पैग़ाम, आपणा पैग़ाम धुर दरगाह ना सके पुचाईआ। नानक निरगुण पाया एका माण, सरगुण नानक नाल मिलाईआ। लुकया रिहा श्री भगवान, नज़र किसे ना आईआ। आपे हो अन्त मेहरवान, नानक सद्दया चाँईं चाँईंआ। करया खेल अनडिठ मकान, आपणा नूर नूर दरसाईआ। निरगुण नानक निरगुण चरनी डिग्गा आण, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। वाहवा तेरी खेल मेरे मेहरवान, भेव कोए ना पाईआ। बिन नेत्र पेख्या दस्सया जाए ना सच निशान, तेरा लुकया रूप नज़र किते ना आईआ। बण भिखक मंगां दान, तूं देवणहार वड बलवान, देदयां तोट कोए ना आईआ। कोटन कोटी जीव तेरा दस्सया नाउँ लोकमात सारे गाण, तेरा दरस नज़र किते ना आईआ। तेरी दस्स के ना गया कोई सच पहचान, पंज तत्त चोला गुरू गुरू रूप धराईआ। मैं तेरी किरपा तेरा दरसन डिठा आण, तेरा रूप रंग नज़र कोए ना आईआ। एका नूर जोत महान, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, क्यों लुक लुक मुख छुपाईआ। क्यों लुकया मेरे गोपाल, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। क्यों भुल्ले आपणे लाल, गुर अवतार तेरा राह तकाइंदा। तेरा नाउँ जगत दलाल, सच दलाली मात कराइंदा। मैं कीता इक्क सवाल, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। कवण वेला लोकमात मिलें आण, आपणा नूरी नूर दरस वखाइंदा। पुरख अबिनाशी हो दयाल आपणी दया कमाइंदा। नानक तेरा रूप दस दस धार, जोत निरँकार आप उठाए आपणा लाल, गोबिन्द आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। नानक सुण साचे मीत, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। तेरी मेरी साची रीत, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। मैं बैठा रहां अतीत, अतीत तेरा दुआरा सुहाइंदा। मैं सुणावां सच्चा गीत, तूं सुण सुण राग अलाइंदा। तेरा लेखा विच हस्त कीट, कीट जीव जंत विच समाइंदा। तेरी जोती करे प्रीत, प्रीतम आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। नानक निरगुण अग्गों बोल, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं आदि जुगादि रहें अडोल, ना डोले ना कोए डुलाईआ। मेरे नाल करीं कौल, कवण वेले आपणा दरस दएं वखाईआ। प्रगट होवें उपर धवल, धरनी देवें माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव रिहा खुलाईआ। लुक छुप करी कार, जुग जुग खेल कराया। निरगुण सरगुण कर त्यार, साची सेवा मात समझाया। वेंहदा रिहा जुग चौकड़ी जुग चार, नव नव आपणी धार रखाया। शब्दी शब्द संदेसा दे संसार, साची सिख्या सिख समझाया। नानक तेरे नाल करां इकरार, कीता कौल भुल्ल ना जाया। कलयुग आवे अन्तिम वार, आपणा पड़दा दयां उठाया। निरगुण

नूर कर उज्यार, लोकमात वेख वखाया। जुग जुग दे विछड़े साचे सन्त मेला आण, भगत आपणे रंग रंगाया। अंदर वड़ वड़ करां पछाण, लख चुरासी कोलों मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक वखाया एका घर, धुरदरगाही दिता वर, हुक्मी हुक्म आप सुणाया। सुणया हुक्म धुर दरबार, सतिगुर नानक खुशी मनाईआ। रसना कहे महांबली उतरे आपणी वार, खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे बच्चिआं करे प्यार, गुरमुख साचे सुत उठाईआ। कलयुग भाण्डे कच्चयां जीवां करे खुआर, खुआरी मेटे ना कोए लोकाईआ। आपणा दरस दए वखाल, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आपणा पड़दा देवे लाह, मुख नक़ाब ना कोए रखाइंदा। कूड़ा घूँगट दए उठा, नेत्र नैण नैण मटकाइंदा। स्वच्छ सरूपी दरस दए दिखा, शाहो भूपी आपणी दया कमाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पा, दहि दिशा पड़दा लाहइंदा। सन्त सुहेले लए जगा, जीवण जुगत आप जणाइंदा। बांहों फड़ फड़ लए उठा, आपणा लेखा आप समझाइंदा। गुरसिख तूं मेरा मैं तेरा दोहां वसणा एका थाँ, साचा धाम आप वड्याइंदा। ओथे दूसर कोई जाए ना, बण पाँधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर मात धर, आप आपणा नूर प्रगटाइंदा। निरगुण नूर ज़ाहर ज़हूर, ज़ाहरा अपणा खेल कराईआ। लुक लुक जुग चौकड़ी करदा रिहा कसूर, आपणा कसूर ना किसे समझाईआ। हुक्मी हुक्म देंदा रिहा ज़रूर, आपणी ज़रूरत ना किसे बुझाईआ। कोटन कोटि उतारे आपणे पूर, आपणा बेड़ा भर के आपणा अन्त कदे ना कराईआ। कलयुग अन्त प्रगट हो सर्बकला भरपूर, आपणी दया आप कमाईआ। जन भगतां देवे इक्क सरूर, अमृत रस रस चखाईआ। जिस नूं कहिन्दे गए वसे दूर, सो नेरन नेरा हो हो दरस कराईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च गंढु एका पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बण बण पंज तत्त काया गुरसिखां देंदा रिहा चरन धूढ़, कलयुग अन्तिम निरगुण रूप गुरसिखां चरन धूढ़ लैण आपे आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी बणया रिहा मूढ़, बेअकल आपणी अकल ना किसे जणाईआ। हरि का कोई ना जाणे सच शऊर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लुक लुक आपणा वक्त लँघाईआ। लुक लुक वक्त लँघाए संसार, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। गुरमुख विरला करे अंगीकार, जिस जन आपणे अंग लगाईआ। अंदर वड़ वड़ खोल्हे आप किवाड़, घर मन्दिर फेरा पाईआ। किसे नज़र ना आए करता पुरख करनेहार, लख चुरासी रही कुरलाईआ। गुरमुख विरले करे आप प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दर घर दर्शन देवे आण, आपणा

पड़दा ना कोए रखाईआ। वेखो पड़दा गया लथ्थ, हरि जू हरि हरि आप उठाइंदा। जिस दी गाउँदे रहे गाथ, सो गाथा आपणी आप सुणाइंदा। जिसनूं कहिन्दे रहे पुरख समरथ, सो समरथ पुरख आपणा वेस वटाइंदा। बिन पकड़यां बिन बन्नयां जन भगतां होया वस, वस हो हो सेव कमाइंदा। सेवा कर करे ना बस, आपणा फ़र्ज पूर कराइंदा। सचखण्ड लै जाए हस्स हस्स, हँस मुख आपणा राग सुणाइंदा। गुरसिख मार्ग देवे दस्स, कोल बह बह समझाइंदा। पिता पूत इके घर जाईए वस, फेर विछोड़ा कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आपणी गोद सुहाइंदा।

★ १७ चेत २०१६ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ★

निरगुण आपणा पड़दा देवे लाह, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। शब्दी गुर बणाए मलाह, साचा मार्ग एका लाईआ। निरगुण सरगुण दए सलाह, साची सिख्या इक्क प्रगटाईआ। लख चुरासी एका नाँ, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाईआ। काया
१०४२ मन्दिर वखाए सच मका, घर घर विच बंक सुहाईआ। सति सतिवादी इक्क निशा, सच निशाना इक्क झुलाईआ। जोती १०४२
११ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाईआ। हरि का पड़दा जाए लथ्थ, हरि जू हरि हरि ११
आपे लाहइंदा। करे खेल पुरख समरथ, निरगुण आपणा बल धराइंदा। शब्द अगम्मी एका वथ, दो जहानां आप वरताइंदा। जुगा जुगन्तर महिमा अकथ, कथ कथनी आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा पड़दा हरि जू लौहणा, निरगुण आपणी दया कमाईआ। लोकमात फेरा पाउणा, रूप अनूप वेस वटाईआ। साची नगरी आसण लाउणा, सम्बल देवे माण वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ बंक वडिआउणा, वड वडा खेल कराईआ। आपणा भेव आप खुल्हाउणा, अभेद करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। पड़दा लाहे हरि करतार, आपणी दया कमाइंदा। निरगुण जोत कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। तख्त निवासी बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाइंदा। जुग चौकड़ी सच विहार, निरगुण सरगुण राह चलाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, खाणी बाणी वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर पार, लेखा सब दा आपणे विच छुपाइंदा। कलयुग अन्तिम आए वार, दो जहानां वाली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, आपणा आप कराईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण,

लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त, आत्म परमात्म देवे इक्क ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। ईश जीव करे कल्याण, इक्क वखाए सच मकान, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव देवे खोल्ह, खोल्हणहार करतारा। शब्द अगम्मी एका बोल, चार वरन सुणाए सच जैकारा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तोले एका तोल, निरगुण सरगुण बणे वणजारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारा। अगम्म अपार खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी धार चलाईआ। लख चुरासी दूई द्वैती मेटे सल्ला, हउमे हंगता माया ममता दए गंवाईआ। शब्दी गुर फड़ाए पल्ला, घर घर आपणा बन्धन पाईआ। पंच विकार करे ना हल्ला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए लड़ाईआ। धाम वखाए इक्क अटल्ला, महल्ल अचल्ल बेपरवाहीआ। आपणे नूर आपे बला, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। सच संदेस एका घल्ला, धुर फ़रमाणा रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाईआ। पड़दा उठाए श्री भगवान, दूई द्वैती मेट मिटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क ज्ञान, चार वरन अठारां बरन आप समझाइंदा। एका नाउँ धुर फ़रमाण, सच संदेसा राग अल्हाइंदा। आत्म परमात्म खेल महान,
१०४३ पंज तत्त काया चोला सेज हंढाइंदा। घर लेखा चुक्के सच मकान, गृह मन्दिर आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, १०४३
११ आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपे लाहइंदा। पड़दा लाहे दीन दयाल, आपणी दया कमाईआ। घर विच घर ११
वखाए सच्ची धर्मसाल, घर बैठा सच्चा माहीआ। घर दीवा बाती जगाए लाल गुलाल, रंग रंगीला आपणा रंग रंगाईआ। अनहद शब्द वजाए ताल, ताल तलवाड़ा आपणा आप वखाईआ। अमृत आत्म ठांडा दए प्याल, निझर झिरना आप प्याईआ। साचे तख्त दए बहाल, तख्त निवासी होए सहाईआ। नाता तोड़े अन्तिम काल, राए धर्म ना दए सजाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा गुरमुख गुरसिख करे सदा प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, पंज तत्त करे कुड़माईआ। ब्रह्म मति इक्क सिखाल, मन मति दए गंवाईआ। शब्दी गुर चले नाल नाल, सुरती शब्द शब्द समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूई द्वैती डेरा आपे ढाहीआ। दूई ढाहे कंध, माया पड़दा आप उठाइंदा। गीत सुणाए सुहागी छन्द, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। जन भगतां देवे इक्क अनन्द, परमानंद आप वखाइंदा। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीखाना तोड़ तुड़ाइंदा। होए प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोत निरँजण डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणा दरस दिखाइंदा। गुरसिख देवे हरि जू दरस, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा।

अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत्त बुझाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, पूरब लेखा झोली पाइंदा। कलयुग अन्तिम करया तरस, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन भेव आप खुल्हाइंदा। हरिजन भेव खोल्हे आप, हरि आपणी दया कमाईआ। सति जपाए एका जाप, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। धुरदरगाही इक्को दात, जन साचे झोली आपे पाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी रात, चन्द चांदनी दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाईआ। दया कमाए स्वामी ठाकर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। भाग लगाए काया गागर, घर घर विच खेल कराइंदा। निर्मल कर्म कर उजागर, हरिजन आपणी बूझ बुझाइंदा। वणज कराए बण सौदागर, नाम वस्त झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा नाम सति समझाइंदा। साचा नाम सोहँ ढोला, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। सतिजुग बणे जगत विचोला दो जहानां मेल मिलाईआ। आप उठाए पड़दा ओहला, भेव अभेद खुल्हाईआ। उलटा करे नाभ कँवला, अमृत मेघ बरसाईआ। देवे वड्याई उपर धवला, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सोहँ निष्अक्खर आप पढ़ाईआ। सोहँ अक्खर अजपा जाप, हरि जापत जपत कराइंदा। मेटणहार तीनो ताप, त्रैगुण अग्नी आप बुझाइंदा। जन्म जन्म दे लाहे पाप, पत्तत पापी पार कराइंदा। आत्म परमात्म बणाए सज्जण साक, सगला संग वखाइंदा। बन्द किवाड़ा खोल्हे ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा जाप आप प्रगटाइंदा। साचा जाप सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। आपणे जेहा आपे हो, गुरमुख आपणे नाल मिलाईआ। जन्म जन्म दी मैल धो, निर्मल नीर नीर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाम हरि का रंग, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण खेल करे सूरा सरबंग, सरगुण आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम मुकणा पन्ध, थिर मात रहिण ना पाइंदा। सतिजुग चढ़ना साचा चन्द, सति सतिवादी आप चढ़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी गाउणा एका छन्द, सोहँ ढोला आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अबिनाशी करता करता पुरख जगत विचोला आप अख्वाइंदा।

★ १७ चेत २०१६ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह गगोबूआ ज़िला अमृतसर ★

गुरसिख गुर गुर देवे देणा, देवणहार इक्क अख्वाइंदा। जन्म जन्म दा मुक्के लहिणा, लहिणा आपणे खाते पाइंदा। दरस दिखाए नेत्र नैणां, नैण नैणां नाल मिलाइंदा। तन बस्त्र पाए इक्को गहिणा, नाम रंगीला रंग चढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द साक सज्जण साचा सैणा, सगला संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख झोली आप भराइंदा। गुरसिख झोली मात भर, हरि जू आपणी दया कमाईआ। जुग जुग देवणहारा वर, दाता दानी बेपरवाहीआ। निरभउ चुकाए भय डर, भय आपणा इक्क रखाईआ। चरन सरोवर नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धुवाईआ। काया मन्दिर आपे वड़, आपणा पड़दा लाहीआ। साचे पौड़े आपे चढ़, साचा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला सहिज सुभाईआ। लहिणा देणा हथ्थ निरँकार, जुग जुग खेल कराइंदा। साचे भगतां करे प्यार, प्रेम आपणा इक्क सिखाइंदा। साचे हट्ट बणे वणजार, नाम हट्ट इक्क खुल्हाइंदा। साचे घर कर उज्यार, घर घर विच दीप जगाइंदा। गृह मन्दिर सुणाए नाद शब्द धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाइंदा। साची सखीआं मंगलाचार, घर साचे रास रचाइंदा। गुरसिख प्रेम वज्जे तार, बिन तन्दी तार इक्क हलाइंदा। आत्म परमात्म दे अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म पावे सार, दूई द्वैती पड़दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लहिणा गुर गुर देणा, साचा खेल आप कराइंदा। देवणहार पुरख समरथ, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जुग जुग जन भगतां देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। साचे सन्तां मार्ग दस्स, आपणा भेव खुल्हाईआ। गुरमुखां अन्तर आपे वस, आपणी बूझ बुझाईआ। गुरसिखां देवे इक्को रस, निझर झिरना अमृत आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा एका घर वखाईआ। एका घर पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणा आप प्रगटाइंदा। निरगुण सरगुण रखे वास, सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म भगतां पूरी करे आस, आपणी आसा पूर आप वखाइंदा। लहिणा देणा तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन मंडल पन्ध आप मुकाइंदा। घर विच घर वखाए रास, गोपी काहन नचाए नाच, मधुर धुन आप सुणाइंदा। सदा सुहेला इक्क अकेला सतिगुर पूरा वसे पास, साचे मन्दिर आसण पुरख अबिनासण आपणा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख लहिणा लोकमात, गुर सतिगुर आप चुकाईआ। आवण जावण चुक्के वाट, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। एका नाम सुणाए साची गाथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां पुच्छे वात, पारब्रह्म

ब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे होए सहाईआ। गुरमुख लहिणा देवे जग, जग जीवण दाता दया कमाइंदा। जगत तृष्ना मेटे अग्ग, दूजी हवस ना कोए वखाइंदा। सति सन्तोखी बन्ने तग्ग, नाम डोर इक्क रखाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लख चुरासी नालों करे अलग्ग, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा रूप प्रगटाइंदा। त्रैगुण माया डस्से ना डसणी नग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लेखा आप वखाइंदा। गुरसिख लेखा धुर दरबार, धुर दरबारी आप जणाईआ। मानस जन्म पैज दए संवार, जिस जन आपणा मेल मिलाईआ। मात गर्भ उलटा रुख दुःख दए निवार, हवन कुण्ड ना कोए तपाईआ। दरस दिखाए आप निरँकार, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। गुरमुख तेरा लेखा लिख्या ना जाए विच संसार, ब्रह्मा वेता दए दुहाईआ। भेव ना पाइन वेद चार, पुराण अठारां रहे कुरलाईआ । भगत भगवान वसण इक्क दुआर, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। महल अटल उच्च मुनार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। तख्त निवासी एकँकार, साचे तख्त बैठा शहिनशाहीआ। हुक्मी हुक्म करे वरतार, हुक्मे हुक्म सर्ब भुवाईआ। हुक्मे अंदर लहिणा

१०४६ देणा कर्ज दए उतार, मकरूज आपणा पल्ला आप छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन १०४६

११ लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन लेखा थान थनंतर, दो जहानां वाली वेख वखाइंदा। पावे सार गगन गगनंतर, गगन ११

मंडल आपणा फेरा पाइंदा। नौ खण्ड पृथमी वेखे लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त ना कोए बुझाइंदा। चार जुग दा भुल्लया मन्त्र, नमो सति सति नाम राम अकसर नज़र किसे ना आइंदा। चार वरन अठारां बरन काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए ग़ुलाम, जगत ग़ुलामी ना कोए तुड़ाइंदा। पीर पैग़म्बर काया मन्दिर अंदर सुणाए ना कोए पैग़ाम, शरअ शरीअत घर घर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख विरला आप उठाइंदा। गुरमुख उठे जाए जाग, सतिगुर साचा आप जगाईआ। आत्म अन्तर दए वैराग, वैरागी आपणा भेव खुल्लाईआ। पंज तत्त काया साजण साज, निरगुण सरगुण आपणा बन्धन पाईआ। घर घर विच करे आपणा काज़, सुरती शब्द शब्द कुड़माईआ। सच संदेसा देवे मार अवाज़, बोध अगाधा नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख बुझे गुर गुर ज्ञान, गुर दीनन दया कमाइंदा। चरन कँवल इक्क ध्यान, सरन सरनाई इक्क समझाइंदा। धुर फ़रमाणा सति निशान, दो जहानां आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लहिणा गुरमुख झोली आप भराइंदा। गुरमुख झोली भरे करतारा, करता आपणी किरत कमाईआ। लोकमात जुग जुग बणे वरतारा, निरगुण सरगुण

वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे निराकारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी इक्क भण्डारा, धुरदरगाही लै के आईआ। सोहँ नाउँ बोल जैकारा, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। साचे मन्दिर मेल मिलाए मेलणहारा, घर घर विच खुशी मनाईआ। नाद अनादी इक्क धुन्कारा, धुन आत्मक राग सुणाईआ। गुरमुख तेरा पिछला लहिणा कर्ज़ उतारा, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। बांहों पकड़ उठाए अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा राह चलाईआ। एका वणज इक्क वपारा, एका हट्ट दए वखाईआ। एका सतिगुर सज्जण मीत मुरारा, पुरख अकाल नज़री आईआ। पंज तत्त ना कोए सहारा, गुर शब्द होए सहाईआ। लहिणा देणा चुक्के विच संसारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, लख चुरासी विच्चों आप पछाण, आपणा बन्धन नाम डोर एका पाईआ।

★ १७ चेत २०१६ बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे गृह गगोबूआ ज़िला अमृतसर ★

१०४७ गुर किरपा हरि जाणया, हरि किरपा गुर मीत। गुर किरपा रंग माणया, हरि किरपा घर मिल्या ठांडा सीत। गुर किरपा हरि जाणया, हरि किरपा गुर मिल्या इक्क अतीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर करे सच प्रीत। गुर किरपा हरि पेख्या, हरि किरपा गुर सज्जण पाया एक। गुर किरपा मिटी रेख्या, हरि किरपा सतिगुर साचे लिख्या लेख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आपणे देस। हरि का देस अगम्म अथाह, हरि जू हरि हरि आप बणाईआ। गुर गुर वेस आप प्रगटा, पंज तत्त दए वड्याईआ। बण विचोला शहिनशाह, साचा हुक्म सुणाईआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाईआ। एका नाउँ दए सलाह, साची सिख्या सिख समझाईआ। गुर किरपा हरि मिल्या आ, हरि किरपा गुर हरि जस रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि किरपा गुर मेला जग, गुर किरपा हरि वेखे चाँईं चाँईंआ। हरि किरपा गुर चरनी जाए जन लग्ग, गुर किरपा देवे सच निशानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, आपणी जाणे अकथ कहाणीआ। अकथ कहाणी सतिगुर धार, गुर गुर शब्दी रूप वटाईआ। नाम नाम नाम जैकार, जै जैकार गीत अल्लाईआ। अक्खर वक्खर कर उज्यार, साची घाड़त आप घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर हरि हरि आपणा नाउँ रखाईआ। आपे हरि नरायण, निरगुण आपणा खेल खलाइंदा। आपे गुर

गुर खोले आपणा नैण, आपणी बूझ आप बुझाइंदा। आपे सरगुण सज्जण सैण, सगला बंधप आपे पाइंदा। आपे रसना आपे कहिण, आपे गा गा गीत सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा रंग रंगाइंदा। हरि किरपा गुर वेखे रंग, गुर किरपा हरि रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। हरि किरपा गुर मेला सेज पलँघ, गुर किरपा हरि देवे माण वड्याईआ। हरि किरपा गुर गुर इक्क अनन्द, गुर किरपा सूरा सरबंग होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर आपणी खेल कराईआ। आपणा खेल सतिगुर सति, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। आपणी किरपा गुर गुर मति, गुर ज्ञान ज्ञान दृढ़ाइंदा। आप विरोलणहारा तत्त, तत्तव आपणा भेव खुलाइंदा। आप प्रगटाए ब्रह्म रत्त, रत्ती रत्त ना कोए जणाइंदा। आपे करनहार उत्पत, आपे आपणे विच छुपाइंदा। आपे खाली भाडें करे सख, खाली भर आप वखाइंदा। आपे देवणहारा वथ, साची झोली आप भराइंदा। हरि किरपा गुर मार्ग देवे दस्स, गुर किरपा हरि होए अन्त सहाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर किरपा हरि बूझे बूझ, गुर सतिगुर आप बुझाइंदा। नाता तुट्टे एका दूज, दूज एका नज़र कोए ना आइंदा। नेत्र खोले एका तीज, त्रैलोआं पन्ध मुकाइंदा। चौथे पद आपे भेज, भिन्नड़ा
१०४८ रंग आप रंगाइंदा। पंचम नाता तोड़ हस्त कीट, हद्द एका एक बुझाइंदा। छेवें छहबर लाए अनडीठ, आपणी रहिमत आप कमाइंदा । सत्तवे सति सतिवादी ठांडा सीत, अतीत आपणा आसण लाइंदा। नौ दुआर मन्दिर मस्जिद चार दीवारी गायण गीत, रसना जिह्वा सर्ब हलाइंदा । दस्म दुआरा घर अनडीठ, बिन गुर किरपा नज़र किसे ना आइंदा। हरि किरपा गुर पाया पत्तत पुनीत, गुर किरपा हरि पत्तत पापी पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा खेल कराइंदा। गुर किरपा मिले भगवान, भगवन किरपा गुर गुर संग रखाईआ। गुर किरपा हरि जाणी जाण, हरि किरपा गुर गुर बूझ बुझाईआ। गुर किरपा मिले नाम निशान, हरि किरपा जोती जोत जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर आपणा बन्धन पाईआ। गुर सतिगुर गुर गुर एका बन्धन, शब्दी शब्द डोर बंधाइंदा। भेव ना पाए त्रैलोकी नंदन, हरि जू आपणा पड़दा ना कोए उठाइंदा। दोए जोड़ सर्ब करन बन्धन, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी आपे होए बख्शंदन, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी ताणा पेटा जाणे तन्दन, तन्दी तन्द नाल बंधाइंदा। जन भगतां चाढ़े आपणे नाम रंगण, रंग रंगीला एका रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर दीआ गुर गुर हित, हरि सज्जण आप

जणाईआ। करे खेल नित नवित, जुग जुग वेस वटाईआ। सन्त प्यारा करे खेल मात पित, पिता पूत पूत सहाईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुत्त, साची रुत्त आप वखाईआ। गुरमुख फुलवाड़ी पई फुट, पत्त डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा भेव खुलाईआ। गुरमुख फुलवाड़ी फुल्लया फुल, फूलन बरखा हरि हरि लाइंदा। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्ता दया कमाइंदा। गुरसिख तेरी कीमत पाए मुल, दूसर कीमत ना कोए चुकाइंदा। नाम कंडे तोले तोल, तोलणहारा फेरा पाइंदा। लख चुरासी विच्चों विरोल, तेरी सुगंधी आपणे विच टिकाइंदा। सोहँ धारा आपे बोल, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। निज घर वासी वसे कोल, घनकपुर वासी वेख वखाइंदा। जोत प्रकाश सदा अडोल, अनडोलत आपणी धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा साहिब सुल्तान इक्क अख्वाइंदा। साहिब सुल्तान सतिगुर मित, मित्र प्यारा आप अख्वाईआ। जन भगतां करे साचा हित, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। काया मौली खिड़ी रुत्त वेखे फुलवाड़ी अबिनाशी अचुत्त, अबगत आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर एका नाउँ वड्याईआ। गुर सतिगुर नाउँ वड्डा वड, हरि जू हरि हरि आप प्रगटाइंदा। जुगा जुगन्तर आपणे विच्चों कढ्ढ, लोकमात धराइंदा। अन्त अन्त अक्खर रूप जाए छड्ड, सति आपणे विच मिलाइंदा। आपणे नालों कर अड्ड, आपे विच छुपाइंदा। अग्गे मार्ग आपे दस्स, जुग जुग राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सतिगुर खेल कराइंदा। जुग जुग राह इक्क इकल्ला, सदा सदा समझाईआ। सतिजुग फड़ाए सच्चा पल्ला, एका पल्लू गंढु बंधाईआ। सच संदेस एका घल्ला, नर नरेश करे पढ़ाईआ। सच सिँघासण साचे मल्ला, साचे तख्त सोभा पाईआ। जोती शब्दी आपे रल्ला, रल मिल आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी ढोला आपे गाईआ। शब्दी ढोला सतिगुर रंग, हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण निरँकार निराकार वजाए मृदंग, सारंगी सारंग हथ्थ ना कोए उठाइंदा। साचे तख्त बैठ सूरा सरबंग, राग नाद आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क प्रगटाइंदा। सतिगुर सच्चा सोहँ रूप, गुर गुर नाउँ रखाईआ। पावे सार चार कूट, उतर पूरब पच्छिम दक्खण आपणा हुक्म वरताईआ। नाता तोड़े जूठ झूठ, एका वणज दए वखाईआ। गुरसिख बणाए सच सपूत, पुरख अबिनाशी पिता गोद सुहाईआ। लख चुरासी मानस मानुख जीव जंत चारे खाने जाए ऊत, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण आप मिलाईआ। सतिगुर मेला विच संसार, गुर शब्दी सेव कमाइंदा। कलयुग अन्तिम कर प्यार, गुरमुख साचे वेख वखाइंदा।

मानस जन्म पैज संवार, आपणा बन्धन पाइंदा। एका शब्द गुण विचार, गुर गुर बूझ बुझाइंदा। एका अक्खर बोल जैकार, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। बण विचोला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाइंदा।

★ १७ चेत २०१६ बिक्रमी कर्म सिँघ दे घर गगोबूआ ज़िला अमृतसर ★

निरगुण सरगुण इक्क अधार, हरि जू हरि हरि आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्यार, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण कर उज्यार, हरि जू जोती दीप दीप जगाइंदा। निरगुण सरगुण कर वणजार, नाम निधाना वस्त वरताइंदा। निरगुण सरगुण बोल जैकार, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। निरगुण सरगुण किरपा धार, अमृत रस रस चुआइंदा। निरगुण सरगुण खोल्ह किवाड़, आपणा पड़दा लाहइंदा। निरगुण सरगुण अग्नी अग्ग देवे साड़, सीतल सति सति कराइंदा। निरगुण सरगुण अंदर पावे सार, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। निरगुण ब्रह्म कर त्यार, पारब्रह्म निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। निरगुण आत्म कर उज्यार, निरगुण परमात्म वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खेल कराइंदा। साचा घर सच महल्ला, हरि जू हरि हरि आप वसाइंदा । वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, निरगुण निरगुण वंड वंडाइंदा। सरगुण फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू हथ्थ ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणा खेल कराइंदा। निरगुण दाता बण वरतार, सरगुण इच्छया पूर कराईआ। सरगुण मंगे बण भिखार, निरगुण अग्गे झोली डाहीआ। निरगुण देवणहारा एकँकार, सरगुण सदा सदा सहाईआ। सरगुण ढह ढह पए दुआर, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। निरगुण इक्क बोल जैकार, आपणा नाउँ नाउँ समझाईआ। सरगुण पावे साची सार, सारंगधर आपणा खेल कराईआ। निरगुण अंदर निरगुण कर उज्यार, निरगुण मेल मिलाए चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वेखे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण मंडल निरगुण रासा, निरगुण गोपी काहन नचाइंदा। निरगुण पृथ्मी निरगुण अकासा, निरगुण मंडल मण्डप सोभा पाइंदा। निरगुण आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सरगुण तेरा वेखे तमाशा, बण नटुआ नाट नचाइंदा। सरगुण मंगे इक्क धरवासा, निरगुण अग्गे झोली डाहइंदा। निरगुण शहिनशाह शाह पातशाह शाह शाबासा, आपणी रहिमत आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। निरगुण दाता निरगुण दानी, निरगुण झोली आप भराईआ। निरगुण नूर नूर निरगुण जोत नूरानी, निरगुण प्रकाश प्रकाश समाईआ। निरगुण अकथ कथा जाणे सच कहाणी, कह कह आपणा हुक्म वरताईआ। सरगुण सुण सुण गाए बाणी, रसना

जिह्वा नाम मिलाईआ। निरगुण देवे सच निशानी, सरगुण लोकमात वखाईआ। करे खेल बेपहचानी, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा बन्धन पाईआ। सरगुण रखे निरगुण आस, निरगुण सरगुण ओट तकाईआ। दोहां मेला एका रास, एका घर वज्जे वधाईआ। बणे विचोला पुरख अबिनाश, सेवक साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। निरगुण खेल सरगुण रंग, हरि साचा सच जणाइंदा। सरगुण सेज निरगुण पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण नाउँ सरगुण मृदंग, बण मृदंगा आप वजाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण वेस अवल्ला, भेखाधारी आप कराईआ। आदि जुगादि अछल अछला, वल छल आपणी खेल वखाईआ। जोती शब्दी आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। शब्दी गुर पंज तत्त गुर अवतार फड़ाए पल्ला, नाम डोरी बन्धन पाईआ। सच संदेस नर नरेश एका घल्ला, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां लोकमात करे पढ़ाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सचखण्ड वसे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। निरगुण सरगुण लाए बाण, तीर निराला इक्क चलाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क निशान, जगत निशाना इक्क वखाइंदा। गुर अवतार दे ज्ञान, गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। रसना जिह्वा गए वखान, लिख लिख लेख मात रखाइंदा। रसना जिह्वा कर कल्याण, साचा कलमा सर्ब पढ़ाइंदा। वेखणहार इक्क भगवान, नेत्र नैण दिस किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी वेखे आण, नित नवित खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर प्रगट हो विच जहान, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराइंदा। निहकलंक श्री भगवान, भगवन आपणी खेल कराइंदा। निरगुण देवे निरगुण दात, निरगुण झोली आप भराइंदा। सरगुण बध्धा सरगुण नात, सरगुण नाता मात जुड़ाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाथ, साचा ढोला आप सुणाइंदा। निरगुण निरगुण चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। सति सतिवादी साची गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सोहँ शब्द नाता तोड़े जात पात, वरन बरन विच ना आइंदा। आत्म परमात्म इक्को ज़ात, अज़ात अज़ाती ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण पढ़ाए अक्खर, आख़र आपणा भेव जणाईआ। जगत विकारा करे सत्थर, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। तोड़णहारा तोड़े बजर कपाटी पत्थर, आपणा पड़दा दए उठाईआ। नेत्र नीर विरोले अथ्थर, नैण नैणां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। निरगुण सरगुण बणाए तत्त, तत्तव तत्त आप रखाइंदा। आदि जुगादी ब्रह्म मति, पारब्रह्म वड्याइंदा। निरगुण रूप सदा सति, असति रूप ना कोए वखाइंदा। कलयुग अन्त होए उत्पत, जोती जामा भेख वटाइंदा। भगत सुहेले आपे रख, आपणी बूझ बुझाइंदा। साहिब दयाल स्वामी कर प्रतख, लख चुरासी विच्चों आप वड्याइंदा। साचा मार्ग एका दस्स, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। हिरदे अन्तर आत्म आपे वस, आपणा मेल मिलाइंदा। घर प्रकाश कर रवि ससि, नूरो नूर डगमगाइंदा। गुरमुख पूरी करे आस, जन्म जन्म दा फंद कटाइंदा। लख चुरासी बन्द खुलास, मात गर्भ ना फेर तपाइंदा । गुरसिख कोई ना रहे निरास, जिस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणा दरस कराइंदा।

★ १७ चेत २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह गगोबूआ ज़िला अमृतसर ★

सतिगुर पूरा श्री भगवान, आदि जुगादि अख्वाइंदा। सतिगुर पूरा सच मकान, सचखण्ड दुआर आप सुहाइंदा। सतिगुर पूरा राज राजान, शाहो भूप वेस वटाइंदा। सतिगुर पूरा नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। सतिगुर पूरा वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क प्रगटाइंदा। सतिगुर पूरा वसे सच अस्थान, सच भूमका आप बणाइंदा। सतिगुर पूरा वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। सतिगुर पूरा नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। सतिगुर पूरा गुण निधान, गुण अवगुण ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा नाउँ रखाइंदा। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा ना मरे ना पए जम्म, जन्म मरन विच ना आईआ। सतिगुर पूरा बेड़ा आपे बन्नृ, आदि जुगादि चलाईआ। सतिजुग पूरा करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सतिगुर पूरा वसणहारा बिन छप्पर छन्न, चार दीवार ना कोए वड्याईआ। सतिगुर पूरा लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणी धार वखाईआ। सतिगुर पूरा एका एक श्री भगवान, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी खेल कराईआ। सतिगुर पूरा सो पुरख, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिंता दुःख ना कोई जणाईआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणी परख, परखणहारा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा निरगुण निरवैर निराकार आपणा कराए दरस, दरसी आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क वड्याईआ। सतिगुर पूरा श्री भगवान, एका एक खेल कराइंदा। सतिगुर पूरा सच निशान, सचखण्ड

दुआरे आप झुलाइंदा। सतिगुर पूरा हुक्मरान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। सतिगुर पूरा दर दरबान, दर आपणे सीस झुकाइंदा। सतिगुर पूरा दाता दानी देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सतिगुर पूरा करे परवान, आपणी इच्छया पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा भेव छुपाइंदा। सतिगुर पूरा एकँकार, अकल कल अख्वाईआ। सतिगुर पूरा अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणा नाउँ रखाईआ। सतिगुर पूरा शाह सिक्दार, तख्त निवासी वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ लए प्रगटाईआ। सतिगुर पूरा साचा नाउँ, आदि आदि प्रगटाइंदा। सतिगुर पूरा अगम्म अथाहो, बेपरवाह भेव ना आइंदा। सतिगुर पूरा आपे पिता आपे माउँ, बालक आपणी गोद बहाइंदा। सतिगुर पूरा देवणहारा ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिगुर पूरा वसणहारा साची दरगाह करे सच न्याउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। सतिगुर पूरा श्री भगवन्त, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा आदि अन्त, मध आपणी धार चलाईआ। सतिगुर पूरा महिमा अगणत, लेखा लिख ना कोए समझाईआ। सतिगुर पूरा खेले खेल नार कन्त, कन्त सुहाग आप हो जाईआ। सतिगुर पूरा आपणा नाउँ आपे मंत, मन्त्र आपणा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सतिगुर वड्डा दीन दयाला, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। सतिगुर वड्डा वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण आसण लाइंदा। सतिगुर वड्डा दीआ बाती करे उजाला, नूर नूर नूर धराइंदा। सतिगुर वड्डा आपे जाणे आपणा राह सुखाला, साचा मार्ग आपे लाइंदा। सतिगुर वड्डा करे कराए सदा प्रितपाला, प्रितपालक आपणा नाउँ धराइंदा। सतिगुर वड्डा आदि जुगादि होए रखवाला, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराइंदा। सतिगुर सच्चा आपणा नाउँ रख, पुरख अकाल खुशी मनाईआ। निरगुण दुआरे निरगुण हो प्रतख, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। आपणे मन्दिर आपे वस, आपे बंक सुहाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राह चलाईआ। आपे पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बण पाँधी फेरा पाईआ। आपणा गाए आपे जस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। सतिगुर पूरा साची इच्छया, सचखण्ड निवासी आपणी आप प्रगटाइंदा। आपे पाए निरगुण भिच्छा, भिखक आपणी झोली आप भराइंदा। आपणी सिख्या आपे सिखा, सिख सिख आपणी खुशी मनाइंदा। आपणा लेख आपे लिखा, लिख्या लेख ना कोई मिटाइंदा। आपणा वन्डया आपे हिस्सा, सचखण्ड साची वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी खेल कराइंदा। सतिगुर करे साचा खेल, खेलणहार इक्क

अख्वाइंदा। निरगुण निरगुण कर कर मेल, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। धार रखाए गुर गुर चेल, चेला गुर रूप वटाइंदा। वसणहारा धाम नवेल, दर घर साचा आप सुहाइंदा। अचरज करे पारब्रह्म प्रभ खेल, आपणा रूप धराइंदा। कर प्रकाश बिन बाती तेल, निरगुण नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। आपणी दया आप कमा, आपे वेख वखाइंदा। सतिगुर पूरा बेपरवाह, आपणा बेड़ा आप चलाइंदा। साची नईया दए टिका, सचखण्ड दुआरे आप सुहाइंदा। साचा सईआ लए मिला, आप आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुर आपणी सिख्या आपे पाइंदा। आपणी सिख्या आपे पा, सचखण्ड साची खुशी मनाईआ। सतिगुर पूरा करे खेल सहिज सुभा, भेव कोए ना राईआ। आपणा नाता लए जुड़ा, पुरख बिधाता अंग लगाईआ। नारी कन्त सेज हंढा, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। जननी जन बण बेपरवाह, सुत दुलारा एका जाईआ। दाई दाया सेव रिहा कमा, साची सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दुआरे जोत जगा, थिर घर घाड़त लए घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी वंड आप वंडाईआ। सतिगुर वंडे साची वंड, वंडणहारा आप अख्वाइंदा। थिर घर रखाए आपणा अनन्द, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाइंदा। लेखा जाणे सुत दुलारे चन्द, पूत सपूते आप वड्याइंदा।
१०५४ ११ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा खेल कराइंदा। सतिगुर खेल शब्दी गुर, पूत सपूता जाया। निरगुण नाल निरगुण जुड़, आपणा बन्धन पाया। आपे आसा आपे तृष्ना आपे मन्दिर आपे बौहड़, आपणा मेला आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर साची सेव लगाया। साची सेवा गुर गुर धार, शब्दी वंड वंडाइंदा। तख्त निवासी एका वार, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण आपणा बन्धन पाइंदा। पंज तत्त देवे इक्क अधार, लख चुरासी घाड़न घड़ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर पूरा पुरख अकाल, एका एक अख्वाईआ। शब्दी सुत साचा लाल, आपणी गोद सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाए हो दयाल, दयाल आपणी दया कमाईआ। त्रैगुण माया संग रखाए नाल नाल, पंचम एका जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर शब्द दए समझाईआ। शब्द गुर दिती वड्याई, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आप उपजाई, धी जवाई खेल कराइंदा। एका मंगल एका ढोला एका सोहला रिहा गाई, गीत गोबिन्द आप अल्लाइंदा। एका घर रिहा वसाई, एका जोड़ जुड़ाइंदा। एका करता एका भुगता एका कार रिहा कमाई, करनी किरत इक्क समझाइंदा। एका राग एका नाद एका शब्द धुंन रिहा सुणाई, नाउँ निरँकारा

१०५४ ११

इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा गुर गुर सेवा इक्क लगाइंदा। गुर गुर सेवा कर परवान, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, खाणी बाणी वंड वंडाइंदा। धुरदरगाही धुर फ़रमाण, गुर गुर राग अल़ाइंदा। गुर गुर देवे आपणा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुग चौकड़ी जग निशान, अक्खर वक्खर आप धराइंदा। आत्म परमात्म दे ज्ञान, सच निशाना इक्क वखाइंदा। तख्त निवासी श्री भगवान, साचे तख्त बैठा सोभा पाइंदा। एका हुक्म धुर फ़रमाण, गुर शब्दी शब्द अल़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर सेवा मात कराइंदा। गुर गुर सेवा चार जुग, जुग चौकड़ी राह चलाईआ। अन्तिम औध जाए पुग, थिर कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी बूटा जाए सुक्क, पत्त डाल़ी ना कोए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर लेखा वेख वखाईआ। गुर गुर लेखा विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर मंग मंगाइंदा। अक्खर अक्खर कर आधार, वक्खर वक्खर खेल कराइंदा। अल्फ़ ये एका धार, नुकता नून ना कोए बणाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, तिन्न पंज जोड़ जुड़ाइंदा। पैंती अंक कर त्यार, अंक अंक नाल प्रगटाइंदा। गुर गुर नाद शब्द धुन्कार, गुर गुर आपणा राग अल़ाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते निरँकार, सतिगुर आपणा हुक्म सुणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर पंज तत्त चोला देणा विच संसार, शब्दी गुर गुर समझाइंदा। सच भण्डारा बण वरतार, मेरा नाउँ इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा बूझ बुझाइंदा। सतिगुर पूरा बुझाए बूझ, भेव अभेद खुल़ाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार जाण झूझ, हरि चरन दुआरे आपणा आप भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमाणा गुर गुर धार, सतिगुर साचा आप जणाइंदा। कलयुग सतिजुग त्रेता द्वापर आवे जावे वारो वार, जुग जुग वेस वटाइंदा। वेखे विगसे वेखणहार, सचखण्ड निवासी नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर सेवा आपे लाइंदा। गुर गुर सेवा जाए लग्ग, शब्दी आपणी सेव कमाईआ। तेरा हुक्म साहिब सरबग, सिर आपणे लए टिकाईआ। जिउँ भावे तिउँ, लैणा रख, मैं चलां तुध रज़ाईआ। जुगा जुगन्तर मार्ग दस्स, जीवां जंतां करां पढ़ाईआ। साचे भगतां अन्तर वस, तेरा भेव खुल़ाईआ। साचे सन्तां मेला हस्स हस्स, आत्म परमात्म कर कुड़माईआ। गुरमुखां मार्ग एका दस्स, साचा मन्दिर दयां वखाईआ। गुरसिखां पूरी करां आस, गुर गुर आपणा भेव चुकाईआ। जुग जुग वेखां खेल तमाश, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। अन्तिम कर कर विनास, अबिनाशी तेरे विच मिलाईआ। दोए जोड़ करां अरदास, अन्त अरदासा दयां सुधाईआ। तूं साहिब वसें मेरे पास, तेरा विछोड़ा झल्लया

ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, गुर शब्दी मंग मंगाईआ। गुर शब्द मंगे इक्को मंग, सतिगुर अग्गे झोली डाहइंदा। तेरा मेरा मेला डोर पतंग, दो जहानां खेल कराइंदा। मैं सुणावां तेरा छन्द, ढोला सोहला तेरा नाउँ वड्याइंदा। जुग चौकड़ी मुक्के पन्ध, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला सतिगुर गुर आपणे विच मिलाइंदा। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। गुर शब्द रखणा इक्क ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जुग चौकड़ी रहे ना विच जहान, लोकमात निशान मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निरगुण सरगुण सारे गाण, गा गा खुशी मनाईआ। एथे ओथे दो जहान मन्नण आण, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। अन्तिम कलयुग सारे कट्ठे हो के मंगण दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। चार जुग दा विगड़े अन्त विधान, साची हकूमत हाकम ना कोए कमाईआ। राज राजान शाह सुल्तान होण बेईमान, सच सुच्च ना कोए रखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, जीवण जुगत हथ्थ किसे ना आईआ। उच्ची कूक कूक कुरलाए अञ्जील कुरान, कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ। सतिनाम ना करे कोई परवान, नाम सति ना कोई समाईआ। पंच विकारा मगर शैतान, घर घर डौरू डंका रिहा वजाईआ। गुर पीर अवतार दूर दुराडे वेखण मार ध्यान, लोकमात ना कोए सहाईआ।

सारे कहिण प्रगट हो श्री भगवान, इक्को तेरी ओट तकाईआ। तुध बिन तेरा झुलाए ना कोए सच निशान, लोकमात सचखण्ड दुआरा ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी रिहा समझाईआ। गुर शब्दी सुणना ला कर कन्न, हरि करता आप जणाइंदा। आदि बेड़ा दिता बन्नू, मध गुर अवतार सेव कमाइंदा। अन्तिम ठीकर देवे भन्न, घड़न भन्नणहार आप हो जाइंदा। करे खेल श्री भगवान, निरगुण एका रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आप खेल दस्से भगवन्त, गुर शब्दी सच जणाया। कलयुग वेला आए अन्त, निरगुण नूर करे रुशनाया। लख चुरासी वेखे जीव जंत, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाया। भेव खुलाए मुल्ला शेख़ पांधे पंडत, जगत विद्या मात भुलाया। लहिणा देणा चुकाए जेरज अंडत, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे हुक्म रखाया। कूड़ कुड़यारा करे खण्डत, नाम खण्डा इक्क चमकाया। किसे दुआरे ना जाए मंगत, सर्बकला भरपूर आप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त लेखा दए वखाया। अन्तिम लेखा लोकमात, हरि सतिगुर आप जणाईआ। शब्द गुर तेरी पुछे वात, पुरख अकाल होए सहाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जगत अन्धेरा देवे काट, अज्ञान, अन्ध दए मुकाईआ। कलयुग पूरी करे वाट, सतिजुग साचा राह चलाईआ। गुर गुर शब्दी तेरी गाथ,

सतिगुर पूरा आप पढ़ाईआ। आत्म परमात्म देवे साथ, ब्रह्म पारब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला लए मिलाईआ। तेरा मेला हरि मिलाउणा, सतिगुर सच्चा सच जणाइंदा। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। निहकलंक नाउँ रखाउणा, साचा डंका नाम वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव उठाउणा, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी पड़दा लौहणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम सतिगुर धार, सो पुरख निरँजण आपणी आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, एकँकारा नाल मिलाईआ। आदि निरँजण कर पसार, जोती जाता घर घर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता इक्क वखाए ठांडा दरबार, लोकमात वज्जे वधाईआ। सतिजुग झुलाए सच निशान, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक्क निशान उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल आदि जुगादि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए जणाईआ। आपणा भेव सतिगुर खोल्हे, आपणा पड़दा आप उठाईआ। सचखण्ड निवासी साचा नाउँ इक्को बोले, बिन रसना जिह्वा गाईआ। दो जहान श्री भगवान ब्रह्मण्ड खण्ड आपे तोले, तोलणहारा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा वेस वटाईआ। सतिगुर आपणा वेस वटाउणा, हरि सतिगुर आप वटाइंदा। कल कल्की आप अख्वाउणा, गोबिन्द मेला मेल मिलाइंदा। साचा मन्दिर आप सुहाउणा, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। गुर शब्दी खण्डा इक्क चमकाउणा, ब्रह्मण्डां आप वखाइंदा। तिक्खीआं दोवें धार कराउणा, लुहार तरखाण ना कोए घड़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाउणा, निउँ निउँ सजदा सर्ब कराइंदा। गुर पीर अवतार पैग़म्बर नेत्र नैण ना किसे उठाउणा, चरन ध्यान सर्ब लगाइंदा। पिछला कीता आप उलटाउणा, अगला मार्ग आपे लाइंदा। सतिजुग साचा राह चलाउणा, कलयुग कूड़ा खाते पाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यारा आप अख्वाउणा, पुरख अकाल रूप वटाइंदा। दो जहानां नाम इक्क जपाउणा, इष्ट देव इक्क वखाइंदा। साचा मन्दिर इक्क बनाउणा, नौ खण्ड पृथमी आप वड्याइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका घर बहाउणा, जात पात ना कोए रखाइंदा। वरन बरन डेरा ढाउणा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका माण दवाइंदा। साचा छन्द इक्क सुनाउणा, खुशी बन्द बन्द कराउणा, बन्दीखाना तोड़ तोड़ाइंदा। गुरमुख साचा चन्द चढ़ाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर आपणी दया आप कराइंदा। सतिगुर साचा सर्बकला भरपूर, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। भगत भगवन्त उपजाए आपणा नूर, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। साचे सन्त आपणा भेव दस्से ज़रूर, दूई द्वैती पड़दा दए उठाईआ। गुरमुखां वसे नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां जन्म जन्म दे बख्शे

सर्ब कसूर, जिस जन आपणा दरस कराईआ। लख चुरासी त्रैगुण माया तपे इक्क तन्दूर, अग्नी तत्ती आपे लाईआ। लेखा वाचे आप हज़ूर, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा हो प्रतख, आपणा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर पूरा हो प्रतख, आपणा खेल कराइंदा। सन्त सुहेले लए रख, भगत दुआरे आप बहाइंदा। शब्द अगम्मी अन्तर आत्म पाए नथ्थ, डोरी तन्द आप खिचाइंदा। करे वासा मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ, लहिणा हथ्थो हथ्थ मुकाइंदा। बोध अगाधा नाउँ दस्स, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। नूर नुराना कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। गुरमुख सज्जण पूरी आस, आसावन्त आप कराइंदा। सतिगुर पूरा वसे पास, जगत विछोड़ा मात कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा भेव चुकाइंदा। सतिगुर भेव देवे चुक्क, लोकमात रहिण ना पाईआ। सिँघ रूप पए बुक्क, शेर आपणी भबक लगाईआ। परख अकाल दीन दयाल सूरबीर पए उठ, बल आपणा आप धराईआ। जन भगतां उपर पए तुठ्ठ, दीन दयाल होए सहाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, सति सरूर इक्क वखाईआ। आवण जावण जाए मुक्क, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। लोकमात चों बूटा पुट्ट, सचखण्ड दुआर लगाईआ। कबीर जुलाहा अग्गे रिहा पुच्छ, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। सानूं आपणा नाउँ दस्सदा रिहों कुछ, तेरा भेत कोए ना आईआ। दर्शन देंदा रिहों लुक लुक, लोक लज्जया रखी इक्क शरमाईआ। कलयुग अन्तिम आपणा खेल करे अतुट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर पूरा सिफ्त सलाहीआ। सतिगुर पूरा सिफ्त सलाह, सिफ्त विच कदे ना आइंदा। ना कोई ग्रिफत कर सके खुदा, बन्धन मात कोए ना पाइंदा। जन भगतां मार्ग दए वखा, साचा राह आप चलाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस वटा, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। चार वरन अठारां बरन दए पढ़ा, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर गुर गुर रंग रंगाइंदा। सतिगुर रूप एका सो, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। गुर गुर रूप हँ ब्रह्म बीज बो, लख चुरासी फुलवाड़ी मात लगाईआ। दोहां विचोला आपे हो, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। अन्तिम कलयुग धुरदरगाही ढोआ देवे ढो, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा नाउँ आप समझाईआ। सतिगुर नाउँ सदा सति, सति सति विच समाइंदा। सतिगुर नाउँ इक्क मति, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। सतिगुर नाउँ सदा समरथ, महिमा अकथ कथ जणाइंदा। सतिगुर नाउँ चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। सतिगुर नाउँ हर घट जाए वस, घट घट आपणा आसण लाइंदा। सतिगुर नाउँ मनमुखां कोलों जाए नस्स, दिस किसे ना आइंदा । सतिगुर नाउँ प्रेम प्यार अंदर जाए फस, फसया बाहर ना कोए कढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

१०५८
११

आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर साचा नाउँ इक्क प्रगटाइंदा। अन्तिम नाउँ सतिगुर मीत, एका एक जणाईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, काया बंक दुआर इक्क वखाईआ। सतिगुर बैठा विच अतीत, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सतिजुग चलाए साची रीत, सति पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी जीव जंत चार खाणी चार बाणी विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द सोहँ गाए गीत, गीत सुहागी इक्क सुणाईआ। आत्म परमात्म होए प्रीत, प्रीतीवान सच प्रीत लगाईआ। गुरमुखां काया ठांडी सीत, ठांडे दरबार लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा साचा राह चलाईआ। सतिगुर पूरा ठाकर स्वामी, ठोकर नाम लगाइंदा। आदि अन्त सदा निहकामी, निहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। जुगा जुगन्तर अन्तरजामी, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। बोध अगाध निष्अक्खर आपे पढ़े बाणी, साची बाणी आप सुणाइंदा। आपे होए अकथ कहाणी, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। करे खेल आप सुल्तानी, शहिनशाह आपणे हुक्म वरताइंदा। सतिगुर पूरा करे मेहरवानी, जात पात पन्ध मुकाइंदा। सतिजुग देवे सच निशानी, साचा मार्ग एका लाइंदा। चार वरनां बणे आप बानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग अन्त जीव रहे ना कोए अभिमानी, हंगता गढ़ सर्ब तुड़ाइंदा। दीन मज़्हब शरअ ना रहे शैतानी, लाशरीक खेल कराइंदा। तीर निशाना मारे इक्को कानी, तुफंग मृदंग इक्क वजाइंदा। सृष्ट सबाई दिसे फानी, लासानी आपणे जेहा होर ना कोए बणाइंदा। सतिगुर पूरा सतिजुग साचे देवे इक्क निशानी, गुरमुख साचे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाइंदा।

★ १८ चेत २०१६ बिक्रमी इन्दर सिँघ दे गृह झुबाल ज़िला अमृतसर ★

किरपा करे पुरख समरथ, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। धुरदरगाही साची वथ, सति सतिवादी आप वरताइंदा। जुग जुग खेल अलखना अलख, अलख अगोचर आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सति सतिवादी मार्ग देवे दस्स, साचा राह आप चलाइंदा। चार वरनां मेल मिलाए हस्स हस्स, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाइंदा। जन भगतां पूरी करे आस, आत्म परमात्म रंग रंगाइंदा। गृह मन्दिर काया अंदर कर जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। समरथ पुरख इक्क दातार, दाता दानी हरि अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतार, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जीव

जंत जंत समझाईआ। लेखा लिख अगम्म अपार, साची सिख्या सिख समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग लहिणा देणा कर्ज उतार, कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड निवासी हो त्यार, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, हरि पुरख निरँजण आपणा पड़दा आपे लाहीआ। एकँकारा कर पसार, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि निरँजण जोत अधार, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता खेल करे अपार, अजूनी रहित रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ होया ख़बरदार, आपणा हुक्म आप वरताईआ। लख चुरासी करे बेदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता आपणा भेख वटाईआ। नाउँ रख निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। मात पित ना कोए संसार, जननी जन ना कोए अख्वाईआ। शब्द अगम्मी साची धार, धुर दरबारी आप प्रगटाईआ। महल अटल अटल्ल मुनार, साढे तिन्न हथ्थ बंक दए वड्याईआ। गोबिन्द लेखा अपर अपार, अपरम्पर आपे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि जुगादि जुगा जगंतर आपणा मार्ग आपे लाईआ। जुगा जुगन्तर सच्चा राह, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, निरगुण सरगुण सेव कमाइंदा। एकँकारा आपणा भेव दए खुल्हा, भेव अभेदा आप जणाइंदा। आदि निरँजण अन्ध अन्धेरा दए गवा, साचा नूर इक्क चमकाइंदा। अबिनाशी करता साचा नाउँ दए समझा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। श्री भगवान सच निशाना दए झला, दो जहानां इक्क वखाइंदा। पारब्रह्म खेल करे बेपरवाह, बेअन्त आपणी कल आप वरताइंदा। सचखण्ड दुआरे सोभा पा, साचे तख्त आसण लाइंदा। शाहो भूप बण हुक्मी दए सुणा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार आप कराइंदा। साची कार हरि निरँकार, आदि जुगादि आप कराईआ। शब्द गुर गुरू कर त्यार, गुर गुर आपणा नाउँ वटाईआ। सच संदेसा एका वार, सचखण्ड निवासी आप सुणाईआ। पुरख अबिनाशी वसणहारा ठांडे दरबार, महल अटल बैठा आसण लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए अधार, त्रैगुण आपणा बन्धन पाईआ। पंज तत्त काया वेख अखाड़, घर घर आपणा भेव चुकाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ करे रुशनाईआ। घर विच घर कर त्यार, बैठा बंक सुहाईआ। निरगुण सरगुण दए अधार, आपणी बूझ बुझाईआ। अनहद शब्द नाद सच्ची धुन्कार, बिन तन्दी तन्द वजाईआ। अमृत आत्म ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, बिन तेल बाती दीपक करे रुशनाईआ। आत्म सेजा हो उज्यार, ब्रह्म पारब्रह्म उठाईआ। आत्म परमात्म खेल अपार, घर साचे

वज्जे वधाईआ। साची सख़ीआं मंगलचार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, करता पुरख आप कराईआ। निरगुण सरगुण लेखा विच संसार, हरि जू आपणा आप उपाईआ। नाउँ रख गुर अवतार, लख चुरासी जीव जंत सेव कमाईआ। धुर फ़रमाणा बोल जैकार, हरि का नाउँ करे पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई इक्क अधार, एका इष्ट वखाईआ। एका साहिब सच्चा सुल्तान, साचे तख्त बैठा आसण लाईआ। एका होए हुक्मरान, आदि जुगादि आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म तेरी मन्नण आण, हुक्मे चलण सर्ब रज़ाईआ। शब्दी गुरू गुर बलवान, ना मरे ना जाईआ। निरगुण सरगुण देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। सुरती शब्दी खेल गोपी काहन, नाम बंसरी इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। समरथ पुरख एकँकार, अकल कला अख्वाइंदा। वसणहारा सचखण्ड दुआर, थिर घर आपणा रूप वटाइंदा। शब्द अगम्मी कर त्यार, पूत सपूता सेवा लाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड गगन पाताल, लोआं पुरीआं कर पसार, रवि ससि सूरज चन्द मंडल मंडल आपणा नूर धराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे अधार, करे खेल अगम्म अपार, साची सेवा एका वार, निरगुण आप समझाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़ बण ठठयार, आपे वेखे वेखणहार, महल अटल आपणा आप छुहाइंदा। धुर फ़रमाणा धुर दी धार, शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद रागी राग अल्ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। आपणा नाउँ आपे रख, नर निरँकार खुशी मनाईआ। सरगुण रूप हो प्रतख, आपणा पड़दा दए उठाईआ। लख चुरासी नालों वसणहारा वक्ख, लख चुरासी अंदर आपणा आप दए छुपाईआ। सतिगुर मार्ग आपे दस्स, गुर गुर करे पढ़ाईआ। घट घट अंदर कर प्रकाश, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खेल तमाश, नौ दर वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख आपणी खेल कराईआ। समरथ पुरख करनेयोग, करता पुरख आप कराइंदा। निरगुण सरगुण करे संयोग, सच संयोग आप हंढाइंदा। नारी कन्त आत्म परमात्म भोगे भोग, भस्मड़ आपणा खेल वखाइंदा। आदि जुगादि ना होए वियोग, जिस आपणा रंग रंगाइंदा। ना कोई चिंता हरख़ सोग, दुःख रूप ना कोए वटाइंदा। लहिणा देण चुकाए चौदां लोक, त्रैभवण धनी आपणा मेल मिलाइंदा। गुर का शब्द इक्क सलोक, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका हुक्म वरताइंदा। हरि का भाणा सके ना कोई रोक, गुर गुर सिख्या मात समझाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल इक्को ओट, दूसर अन्त ना कोए छुडाइंदा। जुगा जुगन्तर तन नगारे लाए चोट, शब्द डंका इक्क वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख आपणी धार चलाइंदा। समरथ पुरख इक्क इकल्ला, आदि जुगादि

खेल कराइंदा। जुग जुग खेल करे अछल अछला, भेव कोए ना पाइंदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एका मल्ला, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। जोती शबती आपे रल्ला, निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल पंज तत्त फड़ाए आपणा पल्ला, नाम बन्धन एका पाइंदा। बिन तेल बाती साचा दीपक आपे बला, घर घर प्रकाश वखाइंदा। सच संदेस नर नरेश जुगा जुगन्तर एका घल्ला, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। साचा राह पुरख समरथ, जुग जुग आपणा आप चलाईआ। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। लख चुरासी पाए नथ्थ, शब्द डोरी तन्द रखाईआ। बोध अगाधा निरगुण सरगुण सुणाए आपणा जस, जस वेद पुराण गा ना सके कोई राईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग चलाए मात रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। रथ रथवाही हरि निरँकार, जुग जुग सेव कमाइंदा। जन भगतां पावे आपे सार, लख चुरासी विच्चों वेख वखाइंदा। साचे सन्तां करे प्यार, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। बंक दुआरी खोल्ह किवाड़, आत्म बन्द ताकी आपे लाहइंदा। त्रैगुण माया देवे साड़, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। घर विच घर दए वखाल, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। गुरमुख वेखे आपणे लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाइंदा। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, सतिगुर पूरा सच सिँघासण सोभा पाइंदा। नूरी जल्वा जोत जलाल, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाइंदा। नाता तोड़ काल महांकाल, आप आपणा मेल मिलाइंदा। गुरसिखां राह दए वखाल, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोड़नहारा जगत जंजाल, जागरत जोत जोत जगाइंदा। सतिगुर पूरा दीन दयाला, दीनन आपणी दया कमाईआ। जन भगतां होए सदा रखवाला, समरथ पुरख सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग चली अवल्लड़ी चाला, रामा कृष्ना सेवा लाईआ। कलयुग अन्तिम होए निराला, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, भेव कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। बिन मात पिता पए जम्म, जन्म मरन विच कदे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर बेड़ा बन्न्ह, कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। जन भगतां बेड़ा आपे बन्न्ह, आपणे कंध उठाइंदा। एका वस्त देवे नाम धन, चोर यार लुट्ट कोए ना जाइंदा। दिवस रैण लाए ना कोई संन, साचे मन्दिर आप रखाइंदा। गुरमुख वासना मारे मन, मन मनसा मेट मिटाइंदा। भाग लगाए पंज तत्त तन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी दया कमाइंदा। जुग जुग दयानिध किरपा कर, हरिजन

हरि हरि वेख वखाइंदा। लेखा जाणे घर घर, गृह गृह आपणा फेरा पाइंदा। भगत भगवन्त आपे फड़ फड़, साचा बन्धन आप बंधाइंदा। काया मन्दिर अंदर डूँग्घी कंदर उच्चे पौड़े आपे चढ़ चढ़, सच महल्ले डेरा लाइंदा। निष्अक्खर विद्या आपे पढ़ पढ़, लख चुरासी जीव जंत आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस श्री भगवान, निरगुण आपणा आप वटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी अन्त मिटया निशान, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार दे दे गए ज्ञान, जीव जंत जंत समझाईआ। हरि का शब्द गुर बलवान, आदि जुगादि आपणा बल रखाईआ। पंज तत्त मिटे निशान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग खेल पुरख अबिनाशा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। नव नौ चार वेख तमाशा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। गुर अवतारां दे दिलासा, रैहबर आपणा राह वखाइंदा। चरन कँवल इक्क भरवासा, पुरख अकाल ओट जणाइंदा। प्रभ मिलण दी सारे रख के गए आसा, लोकमात वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्लाइंदा। आपणा भेव श्री भगवन्त, आदि जुगादि आप खुल्लाईआ। मेल मिलाए साचे सन्त, सति सतिवादी रंग चढ़ाईआ। बन्धन पाए नारी कन्त, आत्म सेजा आप सुहाईआ। एका नाउँ मणीआ मंत, मन वासना दए गंवाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता दए मिटाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, चौदां विद्या रही कुरलाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी सदा अखण्डत, अखण्ड अखण्ड आपणी धार चलाईआ। वसणहारा जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ। जुग जुग खेल करे करतारा, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाइंदा। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, निहकलंक आपणा नाउँ रखाइंदा। नाम खण्डा तेज कटारा, ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा। जोधा सूरा वड बलकारा, गुर गोबिन्द नाल मिलाइंदा। नानक निरगुण सतिनाम बोल गया जैकारा, जै जैकार चार वरन जणाइंदा। नौ खण्ड पृथमी बन्नृणहारा साची धारा, जात पात वरन गोत ना कोए रखाइंदा। इक्को नाम बोल जैकारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। एका मन्दिर खोल्ह दुआरा, भगत भगवन्त आप बहाइंदा। एका दरस अगम्म अपारा, साचे सन्तां आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणी गोद सुहाइंदा। गुरमुख गोद गोदी चुक्क, जुग जुग खुशी मनाईआ। हरि का बूटा गुरमुख कदे ना जाए सुक्क, दो जहान सदा लहराईआ। लोकमात लए पुट, सचखण्ड साचे दए लगाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना पाईआ। कलयुग आई अन्तिम रुत्त, पुरख अबिनाशी वेखे चाँई चाँईआ। गुरमुख उठाए आपणे सुत, सतिगुर

१०६४
११

गुर पूरा दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां देवे माण वड्याईआ। माण वड्याई भगत जन, हरि सतिगुर आप दवाइंदा। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। आपणा राग सुणाए कन्न, चारे बाणी विच मिलाइंदा। सच वसेरा बिन छप्परी छन्न, गुर चरन दुआरा इक्क वखाइंदा। गुरमुख सच्चा जाए मन्न, जिस जन आपणा भेव खुल्हाइंदा। राए धर्म ना देवे डंन, लख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग साचे सन्तां आप तराइंदा। साचे सन्तां देवे तार, सति पुरख निरँजण हथ्थ वड्याईआ। इक्क वखाए सच्चा घर बार, घर आपणे लए मिलाईआ। अठ्ठे पहर जोत उज्यार, दिवस रैण ना वंड वंडाईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, एका वज्जदी रहे शनवाईआ। एका नज़री आए एकँकार, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां आपणे दर बहाईआ। साचा दर दर दरवाज़ा, हरि दर्दी आप खुल्हाइंदा। आदि जुगादि होए ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। निरगुण सरगुण हो हो करे काजा, करता पुरख कार कमाइंदा। गृह मन्दिर अंदर वजाए आपणा वाजा, अनहद नादी राग सुणाइंदा। नित नवित कर कर हित जन भगतां फिरे पिच्छे भाजा, साची सेव कमाइंदा। सेवादार बणे वड राजन राजा, गुरमुखां साची सेव आप कमाइंदा। एथे ओथे दो जहानां गुरसिख तेरी रखे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस कीआ देस विच माझा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन आपे पाइंदा। बन्धन पाए नाम डोर, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। बन्नणहारा पंजे चोर, पंचम वासना दए मिटाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, आपणा नूर दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले चाँईं चाँईंआ। हरिजन मेला अन्त कल, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। लख चुरासी भुलाए कर कर वल छल, अछल अछल आपणा खेल कराइंदा। जन भगतां अंदर जोती शब्दी सुरती धार आपे रल, अकाल मूर्त नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे मेल मिलाइंदा। गुरसिख मेला सतिगुर संग, हरि सतिगुर दया कमाईआ। गुरसिख नूर सतिगुर रंग, हरि रंग आप चढ़ाईआ। गुरसिख नाद सतिगुर मृदंग, हरि अगम्मी अगम्म करे पढ़ाईआ। गुरसिख मन्दिर सतिगुर वेखे लँघ, घर घर विच फेरा पाईआ। गुरसिख प्रेम सतिगुर अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम गुरसिख आपणे संग मिलाईआ। गुरसिख संग सतिगुर साथ, सगला संग निभाइंदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाइंदा। अन्त उतारे आपणे घाट, घाटा मानस जन्म कोए रहिण ना पाइंदा। लख चुरासी

मुक्के वाट, मात गर्भ ना फेर फिराइंदा। चरन कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। भरम भुलेखा चुक्या जात पात, वरण गोत ना कोए रखाइंदा। पुरख अबिनाशी बणया सज्जण साक, मात पित भाई भैण नार कन्त आपणा रूप वखाइंदा। गुरसिख दूजे विके ना हाट, सतिगुर पूरा कीमत आपणे घर पाइंदा। कलयुग अन्त मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा । चार वरन जणाए एका पूजा पाठ, सरोवर सर इक्क वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा वखाए इक्को मठ्ठ, काया अंदर साची धर्मसाल आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, लख चुरासी मार्ग इक्क वखाइंदा। लख चुरासी मार्ग इक्क, एकँकारा इक्क जणाईआ। धुर फ़रमाणा देवे साची सिख, सिख्या इक्को इक्क पढ़ाईआ। चार वरनां ऊँचां नीचां पाए नाम भिख, खाली कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल साहिब अनडिठ, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख विरले कर कर हित, आप आपणा मेल मिलाईआ। बण बण आपे मात पित, पूत आपणी गोद सुहाईआ। मानस जन्म गुरमुख लए जित, जिस मिल्या हरि रघराईआ। बिन नेत्र पए दिस, घर साचे फेरा पाईआ। सतिगुर पूरा कदे ना करे पिठ, मेहरवान आपणी करवट ना कदे बदलाईआ। गुरमुख रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द दुशाले लए लपेट, कलयुग ख़ाकी ख़ाक नेड़ लग्गण ना पाईआ। जोती जोत

१०६५ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। १०६५

११ गुरसिख रंगे हरि जू रंग, रंगणहारा इक्क अख्वाइंदा। आत्म सेजा वेख पलँघ, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। आत्म परमात्म ११

इक्क अनन्द, निजानंद आप दरसाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म गाए छन्द, ढोला सोहला बण विचोला आप सुणाइंदा। लेखा चुक्के बत्ती दन्द, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख वड्डा वड वड्याइंदा। गुरसिख वड्डा वड बलवान, सिँघ इन्दर नाउँ रखाईआ। नाम गुरज हथ्थ विच जहान, बुरज हँकारी देवे ढाहीआ। सूरज चन्न रवि ससि सीस झुकाण, विष्न ब्रह्मा शिव नैण उठाईआ। धन्न भाग जिस मिल्या लोकमात भगवान, श्री भगवान आपणी दया कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां होए सहाईआ।

★ १८ चेत २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भोजीआं ज़िला अमृतसर ★

सचखण्ड निवासी साची कारा, हरि करता आप कराइंदा। तख़्त निवासी बण सिक्दारा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, दो जहानां आप जणाइंदा। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सारा, लोआं पुरीआं आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण सरगुण कर पसारा, लख चुरासी डेरा लाइंदा। शब्दी शब्द गुर अवतारा, पुरख अकाल खेल कराइंदा। वंडण वंड वंडे अगम्म अपारा, भेव अभेद आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, आदि जुगादि आप कराईआ। सचखण्ड वसणहारा सच मकान, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपराहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि जू एका एक कराइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, दोए दोए आपणा खेल वखाइंदा। लख चुरासी वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र लोचण नैण ना कोए रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, बण सेवक सेव कमाइंदा। त्रैगुण माया जगत अखाड़ा, पंचम तत्त नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। साचा भेव पुरख अबिनाश, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दुआरे कर प्रकाश, थिर घर आपणा नूर वखाईआ। मंडल मण्डप पावे रास, ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाईआ। धुर दी धार साहिब सुल्तान, साहिब आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचे तख़्त बैठ सुल्तान, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाइंदा। निरगुण निरगुण कर परवान, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। निरगुण नाम शब्द धुन्कान, निरगुण नादी नाद सुणाइंदा। निरगुण थिर घर वसे मकान, पूत सपूता वेस वटाइंदा। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। निरगुण लख चुरासी हो प्रधान, तत्तव तत्त खेल कराइंदा। निरगुण वंडे वंड महान, आपणी वंड आप कराइंदा। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क बबाण, पुरख अबिनाशी आप वखाइंदा। नाउँ निरँकारा कर प्रधान, गृह गृह आपणा डंक वजाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी देवे गान, चारे खाणी सोभा पाइंदा। चारे वेद कर प्रधान, चारे मुख मुख सालाहइंदा। चारों कुण्ट कुण्ट निशान, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण बण काहन, आत्म परमात्म आपणा बन्धन पाइंदा। पारब्रह्म लेखा जाणे ईश जीव जगत महान, जोती जाता पुरख बिधाता नूर नूराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख

१०६६
११

एका हरि, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी कल अकल कल धार, भेव अभेद जणाईआ। निरगुण सरगुण कर पसारा, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। काया महल अटल मुनार, घर घर विच सोभा पाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। बूंद स्वांती ठंडी ठार, अमृत रस चुआईआ। बोध अगाधी एका धुन्कार, धुंन आत्मक आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका बन्धन पाईआ। निरगुण बन्धन सरगुण तन्द, भेव कोए ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी करे खेल सूरा सरबंग, दो जहानां वेस वटाइंदा। वेखणहारा खण्ड ब्रह्मण्ड, लोअ पुरी गगन पताल ब्रह्मांड आपणा नाद वजाइंदा। लेखा जाणे आदि जुगादि, मध आपणी खेल कराइंदा। सुत दुलारे देवे दाद, शब्दी शब्द गुर प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। आपणा मार्ग निरगुण धार, सरगुण करे मात कुड़माईआ। गुर शब्द कर त्यार, सतिगुर साची सेव समझाईआ। लहिणा देणा विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, आपणा पड़दा आप उठाईआ। साचा पड़दा पुरख अगम्म, आपणा आप उठाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, नेत्र लोचण नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि करे आपणा कम्म, करता पुरख आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी बेड़ा बन्न्ह आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप समझाइंदा। धुर दी धार एकँकार, आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, शब्दी बन्धन एका पाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। लख चुरासी तन श्रृंगार, तत्तव तत्त मेल मिलाईआ। चारे खाणी कर उज्यार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, नाउँ निरँकारा दए समझाईआ। वेस करे अपर अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, जीव जंत करे पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी हुक्मी हुक्म करे खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर एका दए वड्याईआ। शब्द गुर कर प्रधान, लोकमात सेव लगाइंदा। चौदां लोक दे ज्ञान, त्रैभवण वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पाए आण, सूरज चन्न हुक्मे विच फिराइंदा। नाउँ निरँकारा धुर फ़रमाण, जीव जंत जंत जणाइंदा। आपणी वंड वंडे महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाउँ रखाइंदा। देवणहारा जीआ दान, जीवण जुगत आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। नाउँ निरँकारा आपे रख, सचखण्ड साची खुशी मनाईआ। थिर घर दुआरे हो प्रतख, आपणा रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी टेक मथ्थ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं साहिब सुल्तान समरथ, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरे दुआरे गया ढठ्ठ, गुर

शब्दी मंग मंगाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, इक्क तेरी ओट रखाईआ। मैं आदि जुगादि गावां तेरा जस, तेरा नाउँ सिफ्त सालाहीआ। तूं मेरे अन्तर जाणा वस, मैं इक्को आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर देवे माण वड्याईआ। थिर घर वसे सुत दुलारा, शब्दी नाउँ धराइंदा। सचखण्ड वसे हरि निरँकारा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जाता हो उज्यारा, पुरख बिधाता आपणा हुक्म वरताइंदा। छोटा बाला शब्दी सुत चरन कँवल बंधाए नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। दरस दिखाए इक्क इकांता, अनुभव आपणा रूप वखाइंदा। आपे पिता आपे माता, पूत सपूता आपणी गोद बहाइंदा। पुरख अबिनाशी देवणहारा दाता, साची वस्त आप वरताइंदा। साचे सुत छोटे बाले चार जुग गाउँणी गाथा, गुर अवतार रूप वटाइंदा। धुर दी बाणी धुर दा साका, धुर दरबारी आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर शब्दी सुत समझाइंदा। शब्दी सुत सुण छोटे बाल, हरि साचा सच जणाईआ। सरगुण बणाए तेरी धर्मसाल, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। करे खेल दीन दयाल, आपणी दया आप कमाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर करे पढ़ाईआ। शब्दी गुर जाणा पढ़, निष्अक्खर हरि पढ़ाइंदा। लख चुरासी अंदर जाणा वड़ रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सरगुण रूप लैणा वर, निरगुण बन्धन पाइंदा। जोत प्रकाश एका कर, नूर नुराना नूर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा आदि पुरख एकँकार, एका वार सुणाइंदा। एका वार हरि जू मीत, शब्दी शब्द शब्द पढ़ाईआ। दो जहानां चले रीत, साची रीत इक्क वखाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं बैठा रहां अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। लख चुरासी तेरी करे प्रीत, प्रीतीवान प्रीत सिखाईआ। तूं गाउणा ढोला गीत, एका राम नाम पढ़ाईआ। तेरा मेला कर अनडीठ, गृह मन्दिर नज़र किसे ना आईआ। तूं वसणा हस्त कीट, राउ रंक एका रंग रंगाईआ। तूं रहिणा ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दए वड्याईआ। शब्द गुर वड्डा वड, हरि जू आपणा आप प्रगटाइंदा। आपणी कुक्खो आपे कढ्ढ, ब्रह्मण्ड खण्ड आप वसाइंदा। दो जहान लडाए लड, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पार किनारा ना कोई जाणे हद्द, बेअन्त आपणा नाउँ रखाइंदा। पूत सपूता आपे सद, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। लोकमात बणाउणी साची यद, भगत भगवन्त आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत सेवा इक्क समझाइंदा। साचे सुत सेवा कर, हरि करता आप जणाईआ। सचखण्ड निवासी देवे वर, थिर घर तेरी झोली भराईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भय आपणा

१०६८
११

इक्क वखाईआ। अजूनी रहित ना जन्मे ना जाए मर, जन्म मरन ना कोए रखाईआ। साचे तख्त बहणा चढ़, तख्त एका सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी खेल कर, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। गुर अवतार आपणा खेल कर, जीव जंत जंत सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दए वड्याईआ। गुर शब्द हो त्यार, हरि साचा सच जणाइंदा। लोकमात लै अवतार, गुर गुर तेरा वेस वटाइंदा। पीर पैग़म्बर तेरी धार, धार धार नाल मिलाइंदा। भगत भगवन्त तेरा खेल न्यार, भगवन आपणा वेस वटाइंदा। साचे सन्त कर त्यार, त्रैगुण अतीता आप बुझाइंदा। गुरमुखां खोल्ह मात किवाड़, साची हाटी आप जणाइंदा। गुरसिखां मार्ग दस्स सुखाल, साचा राह आप चलाइंदा। आदि जुगादी इक्क अवतार गुर सतिगुर बूझ बुझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, रूप अनूप वेस वटाइंदा। नाम निधाना बोल जैकार, खाणी बाणी राह चलाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत कर त्यार, पुराण पुराणी पुराण मिलाइंदा। गीता ज्ञान इक्क अधार, अठ दस बन्धन आपे पाइंदा। अञ्जील कुरान बोल नाअरा, सच हदीस आप जणाइंदा। लाशरीक परवरदिगार, शरअ विच कदे ना आइंदा। सति नाम बोल जैकार, नाम संदेसा सर्ब समझाइंदा। एका डंका वज्जे संसार, आदि पुरख आप वजाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग रहिणा ख़बरदार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाइंदा। करोड़ तेतीसा पनहार, इन्द निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। मरगिंद खेल करे अपार, गुणी गहिन्द भेव कोए ना पाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। हुक्मी हुक्म करे वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। लख चुरासी पाउणी सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाइंदा। साची सेवा जाणा लग्ग, हरि जू हरि हरि आख सुणाया। कराए खेल सूरा सरबग, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाया। निरगुण निरगुण होए अलग्ग, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाया। नाम नगारा जाए वज्ज, वजावणहारा रिहा समझाया। लोकमात हो प्रगट, गुर अवतार नाउँ धराया। साचा खोल्हणा एका हट्ट, बण वणजारा हट्ट चलाया। इक्क वखाउणा साचा तट, हरि चरन दुआरा सोभा पाया। एका नाम लैणा रट, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाया। एका मेला कमलापति, पुरख अबिनाशी कन्त हंढाया। चार जुग गाउणा जस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण नाल मिलाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करना खेल हस्स हस्स, हँस मुख आप सुणाया। अन्तिम बोल इक्क अलख, अलख अलखणा लैणा मनाया। सिर चरनां हेठां रख, पुरख अबिनाशी लैणा ध्याया। करे खेल हरि समरथ, समरथ आपणा राह चलाया। जुग चौकड़ी देवे मथ्थ, मथणहारा भेव ना आया। लख चुरासी पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ उठाया। वसणहारा घट घट, लख चुरासी रिहा समाया। करे खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। साचा मार्ग हरि जू दस्स, सुत शब्दी सेवा लाया। जोती जोत सरूप

१०६६
११

हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा राह आप चलाया। चले राह विच संसार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण करे साची कार, करता पुरख सेव कमाईआ। एकँकारा कर पसार, अकल कल धारी वेख वखाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार दो जहान करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबार, सचखण्ड सिँघासण इक्क सुहाईआ। श्री भगवान सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे इक्क ज्ञान, आत्म अन्तर कर पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, गुर अवतार नाउँ धराईआ। धुरदरगाही गाए गान, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। शब्दी शब्द कर परवान, साचा ढोला इक्क सुणाईआ। बण विचोला श्री भगवान, पड़दा ओहला दए उठाईआ। जुग चौकड़ी वेखे आण, रूप अनूप आप वटाईआ। साचे भगत करे परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। साचे सन्तां वेखे आण, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। गुरमुख चरन कँवल रहे ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। गुरसिख वेखे बाल अंञाण, फड़ बांहों गोद बहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल करे महान, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग अन्त मिटे निशान, सतिगुर साचा हरि समझाईआ । शब्दी सुत वेखणा मार ध्यान, अबिनाशी अचुत्त खेल कराईआ। रुत्त बसन्ती होए जहान, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। धुर संदेसा सज्जण सुहेला, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। हरि का अन्त ना जाणे कोई वेला, बेअन्त बेअन्त सर्ब गुण गाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी वसणहारा धाम नवेला, दर घर साचे आसण लाइंदा। अन्त करे खेल गुरू गुर चेला, अवतार पीर पैग़म्बर जोती शब्दी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे आप वखाइंदा। शब्द दुलार वेख नेत, हरि नैण नैण जणाईआ। कोटन कोटि जुग झूजण आपणे खेत, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। बिन पुरख अकाल कोए ना करे साचा हेत, साचा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पन्ध आप समझाईआ। शब्द सुत बण पाँधी, हरि साचा सच जणाइंदा। लख चुरासी ढोला तेरा गांदी, गीत गीत नाल मिलाइंदा। सुरत सवाणी होई आंधी, अन्ध अन्धेर ना कोए गवाइंदा। लख चुरासी भाउँदी थक्की मांदी, अन्तिम पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा आप लगाइंदा। साची सेव करां भगवान, सुत शब्द करे अरजोईआ। तेरा झुलावां सच निशान, दो जहानां देवां ढोईआ। तेरा नाउँ करां प्रधान, ब्रह्मण्ड खण्ड त्रै लोईआ। लख चुरासी होणा प्रधान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। चारे बाणी बोल गाण, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दयां सुणाईआ। चारे कुण्ट वेखां मार ध्यान, दहि दिशा फोल फोलाईआ।

सरगुण अंदर करां आपणा आप मकाम, निरगुण हो हो डेरा लाईआ। धुर संदेसा देवां आण, गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाउँ धराईआ। साचा कलमा पढ़ावां आण, कायनात करां शुनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, इक्को तेरी ओट रखाईआ। इक्को रखी तेरी ओट, सुत शब्द सीस झुकाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप, घर घर आपणा फेरा पाइंदा। तेरी वंड निर्मल जोत, जोती जाता नूर धराइंदा। मेरा छन्द इक्क सरोत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहइंदा। देणा वर मेरे निरँकार, सुत शब्दी मंग मंगाईआ। सेवा करां बण सेवादार, साची चाकरी आप निभाईआ। अन्तिम चौकड़ वेखां विच संसार, लोकमात रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा जाणा तेई अवतार, तरफ़ बतरफ़ ना कोए बणाईआ। भगत अठारां दए अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा मार्ग साचा लाईआ। तेरा मार्ग गुर अवतार, लोकमात मात चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखां वारो वार, वेस अनेक वटाइंदा। रामा कृष्ना दए अधार, भेव अभेदा भेव खुल्हाइंदा। कलयुग खेल करां अपार, तेरा हुक्म इक्क सुणाइंदा। मुकामे हक़ हो त्यार, लाशरीक नाउँ धराइंदा। तेरा रूप परवरदिगार, पारब्रह्म आप वटाइंदा। साचा कलमा कर तिअर, नबी रसूलां आप पढ़ाइंदा। बिस्मिल रहे आप निरँकार, आपणा बल ना कोए धराइंदा। पंज तत्त काया कर शृंगार, ईसा मूसा सोभा पाइंदा। काला सूसा अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर वंड वंडाइंदा। शब्दी गुर वड बलवाना, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कलयुग करां खेल महाना, भेव कोए ना पाईआ। धुर धुरगाही इक्क तराना, तेरा राग सुणाईआ। सच संदेसा दयां पैग़ामा, पीर पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। बण के बहवां सच अमामा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, इक्क तेरी आस तकाईआ। तेरी आस रखी मीत, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। मैं खेल करावां मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ बणत बणाइंदा। लख चुरासी परखां नीत, घट घट आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे सीस झुकाइंदा। तेरे अग्गे सीस जाए झुक, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना जुग चौकड़ी पैंडा जाए मुक्क, रहिण ना पाए विच जहाना। कवण वेला पए उठ, बणे मर्द मर्द मर्दाना। पूत सपूते उपर जाएं तुट्ठ, करें खेल दो जहानां। नाउँ रखाइें अबिनाशी अचुत्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरन सीस झुकाना। देणा वर मेरे गोबिन्द, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। कवण वेला मेटें चिन्द, सगली चिन्द गंवाईआ। प्रगट होएं गुणी गुहिन्द, गहर गम्भीर आपणा पड़दा दएं उठाईआ। आपणा नाउँ रखाइें सागर सिन्ध, सागर इक्क दइें

समझाईआ। लहिणा देणा चुकाइें विष्न ब्रह्मा शिव सुरपति इन्द, करोड़ तेतीसा रहिण ना पाईआ। भगत भगवान बणाइें आपणी बिन्द, सुत अनादी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर नज़र कोए ना आईआ। दे वर मेरे निरँकार, हउँ बालक मंग मंगाइंदा। सेवा करां जुग चौकड़ी वारो वार, कोटन कोटि काल बिताइंदा। अन्तिम चौकड़ खेल अपार, तेई अवतार सेव लगाइंदा। भगत अठारां दे अधार, ईसा मूसा मुहम्मद जोड़ जुड़ाइंदा। एका जोती दस अवतार, गुर गुर नाद वजाइंदा। भेव खुल्ला ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म समझाइंदा। नाम सत्त पाई दाद, निरगुण नानक सरगुण आप पढ़ाइंदा। चार वरनां एका हाट, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए वखाइंदा। मिटे रैण अन्धेरी रात, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। पुरख अबिनाशी सज्जण साक, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। करे कराए पाकी पाक, पतित पुनीत आप कराइंदा। निर्धन सरधन पुछे वात, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साचा ढोला साची गाथ, गुर सूरा आप जणाइंदा। एथे ओथे देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। एका मंगां साची दात, मेरे साहिब सच्चे गुसाँईंआ। कवण वेला वेखें मार झात, मेरे साहिब बेपरवाहीआ। कवण वेला लख चुरासी दइें नज़ात, निज आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों प्या हस्स, सुत शब्दी आप जणाइंदा। गुर अवतारां मार्ग देवां दस्स, आपणी बूझ आप बुझाइंदा। वेद व्यासा जाए लिख, मूसा नैण नैण उठाइंदा। ईसा वंड के जाए हिस, मुहम्मद शरअ नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव जाणी जाण, सो पुरख निरँजण रिहा जणाईआ। नानक निरगुण दस्स के जाए पद निरबाण, बेअन्त वड वड्याईआ। महांबली उतरे अन्तिम आण, मात पित ना कोए बणाईआ। सुत दुलारा एका ओट रखे अकाल, पुरख अबिनाशी इक्क मनाईआ। गोबिन्द सूरा नौजवान, नौ खण्ड डेरा आपे ढाहीआ। साचा चिल्ला तीर कमान, दो जहानां आप वखाईआ। एका मंगे साचा दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कलयुग अन्त आए श्री भगवान, कल कल्की वेस वटाईआ। सम्बल वसे सच मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। नाता तोड़े ज़िमीं असमान, गगन मंडल भेव चुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव अन्त कुरलाण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन ध्यान, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। भगत सन्त मन्नण आण, दर बैठण सीस झुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जीव जंत होण शैतान, पंज चोर करे लड़ाईआ। वरन बरन करे बेईमान, बेऐब खुदा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। आपणा भेव दस्से भेत, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। सुत दुलारे लैणा वेख, कलयुग अन्तिम चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। किसे ना करे कोई हेत, पिता पूत बन्धन ना कोए वखाइंदा। कूड़ी क्रिया खेडे खेड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर नाच नचाइंदा। गुर का दरस ना सके कोई पेख, जगत नेत्र जगत राह तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आपणा भेव दस्से गोपाल, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई होए बेहाल, बहबल रोवे दए दुहाईआ। कोई ना करे किसे प्रितपाल, राज राजान ना होए कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा जणाईआ। साचा लेखा साहिब सुल्तान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम कूड़ कुड़यार होए बलवान, आपणा बल रखाइंदा। साचा मन्दिर दिसे ना कोए मकान, गुर दर हट्ट ना कोए चलाइंदा। नाम वणज ना कोए जहान, जीवण जुगत ना कोए समझाइंदा। गुर का शब्द ना कोए ध्यान, सुरती शब्द ना कोए मिलाइंदा। कूड़ कुड़यारा रसना जिह्वा पीण खाण, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। धीआं भैणां सर्ब तकाण, नेत्र नैण ना कोए शरमाइंदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले सारे रोवण ज़ारो ज़ारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी एह समझाइंदा। गुर शब्दी रखणा याद, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। तेरी किसे कोल ना रहे दाद, सुंझी होए जगत लोकाईआ। साध सन्त करन अपराध, जूठीआं झूठीआं धूंणीआँ ताईआ। किसे गृह ना वज्जे साचा नाद, आत्म धुंन ना कोए सुणाईआ। रसना जिह्वा सारे रहे अराध, अन्तर आत्म ना कोए वसाईआ। मेट मिटाए ना कोए वाद विवाद, जगत वासना होए हल्काईआ। काम क्रोध कोई ना सके विच्चों काढ, आसा तृष्ना पल्लू ना कोए छुडाईआ। सतिगुर शब्द करे ना कोई लाड, नानक गोबिन्द जाण भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव दस्से खोल्ह, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी तोलणहारा साचा तोल, नाम कंडा हत्थ उठाइंदा। जुगा जुगन्तर लख चुरासी लए फोल, पड़दा ओहला आप चुकाइंदा। जन भगतां वसे सदा कोल विछड़ कदे ना जाइंदा। गुरमुख सज्जण लए विरोल, लख चुरासी आपणा नाम मधाणा पाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ वजाए ढोल, समुंद सागर डूँघी कंदर आपणा हुक्म सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम साची वस्त रहे ना किसे कोल, खाली भाण्डे सर्ब कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम लेखा आप समझाइंदा। अन्तिम लेखा लिखे लेख, लिखणहार करतारा। गुर शब्दी नेत्र नैण पेख, कलयुग धन्दूकारा। सच सुच्च मिटे रेख, जूठ झूठ होए पसारा। पिता पूत धीआं रिहा वेख, नार

कन्त करे विभचारा। कोई ना दिसे मुल्ला शेख़, मुसायक पीर दस्तगीर कोई ना होए ज़ाहरा। बिन सतिगुर पूरे कोई ना दस्से भेत, पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारा। अगम्म अपारा अन्तिम अन्त, हरि जू आपणा खेल कराईआ। वेखणहारा साध सन्त, लख चुरासी फोल फोलाईआ । आपणी माया पा बेअन्त, बेअन्त दए भुलाईआ। घर घर बणाए गढ़ हउमे हंगत, माण अभिमान नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम हरि का नाउँ भुल्ले सर्ब लोकाईआ। सर्ब लोकाई जाणा भुल्ल, अभुल्ल आप भुलाइंदा। कोई ना तुले साचा तुल, कलयुग आपणा हिस्सा आप वंडाइंदा। भाग लग्गे गुरमुख कुल, जिस जन हरि जू आपणा भेव खुल्हाइंदा। एका देवे नाम अनमुल्ल, तेरा रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम तेरा लहिणा देणा आप मुकाइंदा। लहिणा देणा शब्दी सुत, तेरा आप चुकाईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुत्त, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। सचखण्ड निवासी आपे पए उठ, मात पिता ना कोए बणाईआ। आप सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। खोल्हे भेव हरि निरँकारा, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। कलयुग आए अन्तिम वारा, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। निरगुण नूर करे उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। नाउँ रख निहकलंक नरायण नर अवतारा, लोकमात फेरा पाइंदा। सचखण्ड बणाए सच दरबारा, धुर दरबारी आसण लाइंदा। लहिणा देणा चुकाए तेई अवतारा, भगत अठारां नाल मिलाइंदा। लेखा जाणे दस गुरू गुर धारा, गुर शब्दी वंड वंडाइंदा। पुरख अबिनाशी अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणा हुक्म आप वरताइंदा। पूरब लहिणा कर्म विचारा, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। प्रगट हो विच संसारा, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। एका नाम बोल जैकारा, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। इक्क कराए वणज वपारा, साचा हट्ट आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाइंदा। आपणा पड़दा चुक्के ओहला, भेद अभेद खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चार कुण्ट लख चुरासी आपे मौला, घट घट आपणा नूर धराईआ। शब्द अनाद सुणाए ब्रह्माद आपे गाए आपणा ढोला, ढोला साचा आप सुणाईआ। सच दुआरा एकँकारा आदि जुगादि एका खोल्हा, गुर अवतारां रिहा दसाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत पायण रौला, अन्त कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त आप जणाईआ। कलयुग आए अन्तिम अन्त, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। प्रगट होए श्री भगवन्त, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। सतिजुग बणाए साची बणत, कलयुग कूड़ा मेट मिटाइंदा। चार वरन इक्को मंत, हरि आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। भगत भगवन्त वेखे सन्त, सन्त साजण मेल मिलाइंदा।

सुरती शब्दी मेला नारी कन्त, आत्म सेजा आप हंढाइंदा। गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। मानस जन्म ना होए भंगत, लख चुरासी फेरा फेर ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी जोती मेला आप मिलाइंदा। शब्दी जोती साचा मेला, हरि जू हरि हरि आप मिलाईआ। गोबिन्द मेला गुरू गुर चेला, गुर सतिगुर आप जणाईआ। निरगुण सरगुण सज्जण सुहेला, साचा संग निभाईआ। कलयुग आया अन्तिम वेला, भेव कोए ना पाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख विरले चढ़े तेला, जिस साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक आपणा नाउँ डंक वजाईआ। साचा डंका वज्जे मात, सो पुरख निरँजण आप वजाइंदा। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, जगत अन्धेरा रहिण ना पाइंदा। सतिजुग साचे बन्ने नात, धरत मात गोद बहाइंदा। किरपा करे कमलापात, कँवल नैण आप खुलाइंदा। जन भगत बणाए साचे साक, भगत दुआरा आप सुहाइंदा। नाता तुट्टे जात पात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाइंदा। सर्ब जीआं वखाए इक्को घाट, तीर्थ तट सर सरोवर अवर ना कोए वड्याइंदा। आत्म परमात्म साचा पाठ, इष्ट देव इक्क बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। करे खेल पुरख अकाल, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। नाउँ रख दीन दयाल, दीनन होए सहाईआ। सेवा लाए कलयुग काल, लख चुरासी दए मिटाईआ। राए धर्म लेखा दए वखाल, चित्रगुप्त नाल मिलाईआ। लाड़ी मौत करे श्रृंगार, नेत्र नैणां कजला पाईआ। चारों कुण्ट वेखे वारो वार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी आई हार, जीव जंत देण दुहाईआ। उम्मत उम्मती गई हार, नबी रसूल दए ना कोए गवाहीआ। अल्ला राणी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, खुलड़े केस रही वखाईआ। चौदां तबक करन पुकार, सच तबलीग़ ना कोए सुणाईआ। ख़ालक ख़लक वेखे वेखणहार, बेऐब परवरदिगार साचा माहीआ। सदी चौधवी आई हार, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्के चार यार, चौथे जुग वंड वंडाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पंचम पंच करे परवान, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। पंजां देवे एका माण, पंच बणाए सच विधान, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। सति सतिवादी फड़ाए हथ्थ निशान, सत्तरंगा आप झुलाईआ। सत्त दीप मन्नण आण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। शाहो भूप बणे भगवान, सीस जगदीस ताज टिकाईआ। लख चुरासी वेखे काहन, मुकंद मनोहर लखमी नरायण रूप वटाईआ। सर्ब जीआं देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सोहँ अक्खर कर प्रधान, सतिजुग प्रधानगी हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, चार वरनां एका गुण समझाईआ। एका गुण चार

१०७५
११

वरन, नर हरि नरायण आप जणाइंदा। खोलणहारा हरन फरन, नेत्र ज्ञान आप खुल्हाइंदा। नाता तोड़े मरन डरन, लख चुरासी फंद कटाइंदा। किरपा करे करनी करन, करता पुरख दया कमाइंदा। त्रैगुण अग्नी गुरमुख कदे ना सड़न, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। दरगाह साची साचे वड़न, हरि साचा मेल मिलाइंदा। सतिगुर चरन जो जन फड़न, पुरख अकाल गोद सुहाइंदा। सोहँ अक्खर जो जन पढ़न, जन्म मरन फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे देवे दान, दाता दानी आपणी वस्त आप वरताइंदा।

★ २० चेत २०१६ बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह डल्ले वाल ज़िला जलन्धर ★

सो पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, सति सतिवादी खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। एकँकारा शाह सुल्तान, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। श्री भगवान सति निशान, दरगाह साची आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। इक्क इकल्ला बण हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, धुरदरगाही भेव ना आइंदा। आपणी इच्छया कर गुण निधान, साची इच्छया आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा खेल पुरख समरथ, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दुआरे आपे वस, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, बण पाँधी आप चलाईआ। निरगुण निरगुण पूरी करे आस, आसा पूर आप हो जाईआ। गृह मन्दिर इक्क प्रकाश, बिन बाती तेल कराईआ। करे खेल शाहो शाबाश, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा भेव हरि निरँकार, इक्क इकल्ला आपणे हथ्थ रखाइंदा। वेस वटाए पुरख नार, नारी कन्त आप हो जाइंदा। पूत सपूता इक्क दुलार, शब्दी सुत आपे जाइंदा। दाई दाया अगम्म अपार, बण सेवक सेव कमाइंदा। देवे वस्त वस्त अपार, अनडिठ आप वरताइंदा। थिर घर खोल्ह आप किवाड़, घर घर विच सोभा पाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए दीवार, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। इक्क इकल्ला खेल अपार, अकल कल धारी आप कराइंदा। साचे सुत दे प्यार, सीस जगदीस आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सच महल्ल दए बहाल, उच्च अटल्ल आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा।

निरगुण जोत वेस अवल्ला, शब्दी धार चलाईआ। शब्द गुर वसे सच महल्ला, सति पुरख निरँजण सतिगुर साचा आप बहाईआ। निरगुण नाल निरगुण रला, निरगुण वंड निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाल सच संदेस नर नरेश एका घल्ला, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोआं आकाश प्रकाश बिन तेल बाती दीपक आपे बला, नूर नूर नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा खेल श्री भगवान, हरि जू आपणे हथ्थ रखाइंदा। शब्द सुत वड बलवान, जोधा सूरबीर आप प्रगटाइंदा। धुर फ़रमाणा वड परवान, एकँकारा एका वार सुणाइंदा। सति सतिवादी दे दे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, त्रै पंज मेला जोड़ जोड़ाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क ज्ञान, बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। नेत्र नैण इक्क ध्यान, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। बोध अगाध धुर फ़रमाण, पुरख अबिनाशी आप सुणाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। चारे बाणी दो जहान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी साचा ढोला आपे गाइंदा। निरगुण सरगुण खेल महान, तत्तव तत्त आपणी गंढु पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे रंग वखाइंदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। लख चुरासी दे अधारा, घट घट आपणा वेस वटाईआ। मन्दिर
१०७७ अंदर हो उज्यारा, गृह गृह करे रुशनाईआ। धुन अनाद नादी धारा, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाईआ। अमृत आत्म ठंडा ठारा, १०७७
११ निझर झिरना आप रखाईआ। बजर कपाटी लाए ताला, माया पड़दा आपे पाईआ। आपे वसे डूँघी गारा, अन्ध अन्धेर ११
ना कोए चुकाईआ। आपे करे खेल निराला, आत्म सेजा इक्क सुहाईआ। आपे होए गुर गोपाला, गोबिन्द आपणा रूप धराईआ। आपे वसे काया सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड वसणहारा साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणी धार चलाईआ। निरगुण सरगुण गुर गुर वेस, गुर शब्दी खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी एकँकारा नर नरेश, वेस अतीत आप वटाइंदा। धुर फ़रमाणा धुर दा राणा सदा सद सुणाए संदेस, नाम ढोला साचा सोहला एका गाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी आपे वेख, कोटन कोटि आपणे नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण पाए बन्धन, नाम निधाना लाए चन्दन, नेत्र नैण ज्ञान ध्यान श्री भगवान आपणा भेव खुल्हाइंदा। साचा भेव सरगुण धार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। गुर गुर अन्तर हो उज्यार, हरि जू आपणा रूप वखाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतार, सति संदेसा दए सुणाईआ। पुरख अकाल मीत मुरार, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। हरि का नाम सच जैकार, चारे खाणी चार वरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, गुर सतिगुर आपणा खेल वखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। सरगुण रूप सतिगुर जगत बुझाए लग्गी बसन्तर, बिन सतिगुर अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। सतिगुर पूरा सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, पड़दा ओहला ना कोए रखाइंदा। साचा नाम जपाए मन्त्र, हरि नामो मन्त्र आप दृढ़ाइंदा। मानस जन्म बणाए बणतर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लहिणा देणा तोड़ गगन गगनंतर, गृह मन्दिर अंदर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। जुग जुग खेल श्री भगवान, आपणा आप जणाईआ। भगत भगवन्त लए पछाण, सन्त सुहेले साचे सज्जण मेल मिलाईआ। गुरमुखां देवे नाम दान, नाम वस्त झोली पाईआ। गुरसिख गुर गुर आपे वेखे आण, दीनन आपणी दया कमाईआ। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे इक्क ध्यान, नेत्र नैण अवर ना कोए रखाईआ। सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म नाम सति सति सति देवे इक्क ज्ञान, वाह वा गुरू वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, गुर गुर आपणा खेल कराईआ। गुर सतिगुर खेल अवल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। बिन गुरमुख सच्चे कोई ना फड़े पल्ला, दूसर नज़र किसे ना आइंदा। गुरसिख जोती सतिगुर रल्ला, सतिगुर गुर शब्द आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त एका हरि, सतिगुर आपणा भेस वटाइंदा। सतिगुर भेख वटाए पंज तत्त, तत्तव तत्त ना कोए जणाईआ। अन्तर रखे ब्रह्म मति, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई मार्ग देवे दस्स, चार वरन करे पढ़ाईआ। जन भगतां अन्तर जाए वस, आप आपणा पड़दा लाहीआ। गुरमुखां तीर निराला मारे कस, अणयाला इक्क चलाईआ। पंच विकारा जाए ढह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। करे प्रकाश बिन रवि ससि, नूर नूर नूर रुशनाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर पूरा शाहो शाबाश, डुब्बदे पाथर पार कराईआ। बिन सतिगुर पूरे अन्त कोई ना चले साथ, साक सज्जण सैण सगला संग ना कोए निभाईआ। हरि का नाउँ गुर का मन्त्र गुरसिख तेरा पूजा पाठ, साची सिख्या गुर समझाईआ। मिटे अन्धेरा झूठी रात, कलयुग रैण रहिण ना पाईआ। मेल मिलावा हरि कमलापात, कँवल नैण नैण आपणे अंग लगाईआ। एथे ओथे दो जहान पुच्छे वात, सतिगुर पूरा सदा सदा सहाईआ। सगल विसूरे जायण लाथ, जो जन सतिगुर साचे दरसन पाईआ। अन्तिम उतरे आपणे घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम मुक्के वाट, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करे खेल बहु बिध भांत, निरगुण सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। नाता तोड़े जात पात, वरन गोत ना कोई दात, आत्म ब्रह्म श्री भगवान, जीव जंत साध

सन्त दए जणाईआ। एका राग सुणाए कन्न, पंच विकारा देवे डंन, भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, सांतक सति सति कराईआ। साचा देवे नाम धन्न, आप वसाए बिन छप्परी छन्न, सच महल अटल इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा सदा सदा सहाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध आपणी दया कमाइंदा। नाता तोड़ काल महांकाल, हरि जू सगला संग निभाइंदा। त्रैगुण माया कट जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। पंचम पंच ना होए बेहाल, पंचम नाद धुंन सुणाइंदा। पंचम वेखे गुरसिख लाल, गुर गुर आपणी गोद बहाइंदा। सतिगुर पूरा गुरसिख तेरी करे सदा प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला चले नाल नाल, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग गुर सतिगुर आपणा नाउँ रखाइंदा। सतिगुर नाउँ आपणा रख, गुर गुर दए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रतख, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप करे रुशनाईआ। इक्क जैकारा बोल अलख, अलख अलखना दए सुणाईआ। हरिजन हरि जू कर कर वक्ख, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। सति सतिवादी मार्ग दस्स, दस्म दुआरा मेल मिलाईआ। सुरती शब्दी मेला हस्स हस्स, हँस मुख मुख सलाहीआ। गुरमुख गुरसिख सतिगुर गुर इक्क दुआरे जायण वस, एका घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख गुर गुर इक्को रंग, सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। इक्क सेज इक्क पलँघ, एका बैठा आसण लाईआ। एका नाम इक्क मृदंग, धुंन नाद इक्क सुणाईआ। एका सूरबीर सरबंग, शाह पातशाह इक्क अख्वाईआ। एका जुग जुग वंडे वंड, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे हथ्थ रखाईआ। एका घट घट गृह गृह तन मन्दिर अंदर देवे सच अनन्द, निजानंद इक्क वखाईआ। एका वाहिगुरू वाह वाह गुर गुर गाए छन्द, बन्दी बन्द बन्द तुड़ाईआ। एका नाम खण्डा रखाए चण्ड प्रचण्ड, तिक्खी धार रखाईआ। सतिगुर पूरा जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, आपणी हथ्थीं गंढ पुवाईआ। गुरसिख नार होए ना रंड, सतिगुर कन्त इक्क हंढाईआ। दीन दयाल साहिब सदा बख्शंद, बख्शश आपणी आप कराईआ। जो जन दर दुआरे मंगे मंग, गुरू गुर देवणहारा अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। लेखा जाणे डूँग्घी कंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख एका घर वसाईआ। गुरसिख गुर गुर साचा घर, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। सरगुण अंदर निरगुण वड़, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ । गुरमुख सेजा सतिगुर चढ़, सतिगुर सेजा गुरसिख पल्लू लए फड़, फड़या पल्लू छुट कदे ना जाईआ। सतिगुर रूप ना पुरख ना नारी नर, नर नरायण एका नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर एका नाद सुणाईआ। गुर का नाद गुरसिख धुन, शब्द

शब्द शनवाईआ। हरिजन विरला लए सुण, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लख चुरासी छाण पुण, जीव जंत फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा पुरख समरथ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, नव नौ चार वेख वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अंजील कुरान खाणी बाणी गाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। गुर अवतारां मार्ग दस्स, पीर पैग़म्बरां अंदर वस, दस्तगीरां आपणा पल्लू नाम फड़ाईआ। दो जहान श्री भगवान, निरगुण सरगुण वेखे नस्स नस्स, चौदां लोक चौदां भवन चौदां तबक चौदां विद्या आपणे विच छुपाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अनडिठड़ा देवे आपणा सबक, बिन लिखण पढ़न करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सच्चे देवे वर, एका राम राम नाम वड्याईआ। राम नाम हरि का नाउँ, पंज तत्त राम नज़र कोए ना आईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी वसे हर घट थाउँ, घट घट आपणा आसण लाईआ। जुगा जुगन्तर करे सच न्याउँ, गुर शब्दी वेस वटाईआ। भगत सुहेले पकड़े बांहों, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, पुरख अकाला दीन दयाला वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, गुरमुख वेखे साचा लाला, लालन लाल आपणी गोद बहाईआ। गुरसिख लाल लाल अनमुल्ला, करता कीमत आपे पाइंदा। लोकमात कदे ना रुला, खाकी ख़ाक ना कोए मिलाइंदा। साचे कंडे नाम तुला, तोलणहारा आप तुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त श्री भगवन्त गुरसिख मेला नारी कन्त, आत्म सेजा गृह मन्दिर अंदर आप सुहाइंदा। गृह मन्दिर अंदर सतिगुर मीत, हरि सज्जण आसण लाईआ। शब्द अगम्मी ढोला गाए गीत, तार सितार ना कोए हिलाईआ। करे खेल आप अनडीठ, अनडिठड़ी धार चलाईआ। जीवण जुगत दस्से रीत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। पत्तत पापी कर पुनीत, पवण एका रसन स्वास चलाईआ। उणंजा गाए एका गीत, चार नौ वज्जे वधाईआ। नौ नौ चार हरि जू जाए जीत, जित हार आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवी जाए बीत, बीस बीसा ख़ुशी मनाईआ। गोबिन्द मेला इक्क अतीत, त्रैगुण अतीता आप कराईआ। सति सतिवादी सतिजुग चलाए साची रीत, नौ खण्ड पृथ्मी एका इष्ट गुरू मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर शब्द शब्द सलाहीआ। गुर शब्द साचा सुत, मित्र प्यारा इक्क अख्वाइंदा। घर घर करे लख चुरासी हित, जो जन ध्यान लगाइंदा। ना कोई पुच्छे वार थित, घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। वेस वटाए नित नवित, जुग जुग खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गुरसिख गुर गुर एका घर वसाइंदा।

★ २० चेत २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह ठीकरी छन्ना ज़िला करनाल ★

सति पुरख निरँजण बेपरवाह, हरि हरि आपणी धार चलाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, खेवट खेटा खेल कराइंदा। दो जहानां वेस वटा, अनुभव आपणा नूर धराइंदा। अजूनी रहित आप अख्वा, निरभउ निरवैर आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध मुका, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वेख वखा, सचखण्ड निवासी आपणा पड़दा लाहइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पा, गगन पातालां एका नैण उठाइंदा। खाणी बाणी वेद पुराण शास्त्र सिमरत अंज़ील कुरान जाणे आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। जुगा जुगन्तर बुझाए बसन्तर, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, निरगुण रूप किसे वसे ना घट, घट घट आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। सति सतिवादी दीन दयाला, दयानिध वड वड्याईआ। आदि जुगादि मध चले अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार शब्दी शब्द राह दए सुखाला, साची सिख्या इक्क समझाईआ। आत्म परमात्म सदा सुहेला चले नाल नाला, विछड़ कदे ना जाईआ। भगत भगवन्त बण दलाला, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए करनेहार। निरगुण सरगुण फड़ाए पलड़ा, लख चुरासी पाए सार। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सच संदेस एका घलड़ा, बोध अगाधी बोल जैकार। काया मन्दिर अंदर आत्म परमात्म आपे रलड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म वेखे वेखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल करे अपार। जुग जुग खेल करे अपारा, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जीव जंत करे पढ़ाईआ। दो जहाना श्री भगवाना निरगुण सरगुण दए इशारा, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख अन्त ना कोए मुकाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ । चार वेद रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुराण अठारां करन पुकारा, शास्त्र सिमरत नाल मिलाईआ। गीता ज्ञान ना कोए किनारा, अठ दस कुरलाईआ। अंज़ील कुरान सर्ब कुरलाण, तीस बतीसा जगत हदीसा सच अमाम पैग़ाम पैग़म्बर सर्ब सुणाईआ। नाम सति सति वणज़ारा, शब्दी शब्द डंक अपारा, आप वजाए वजावणहारा गुर गुर मेला सहिज सुभाईआ। आपणी इच्छया दए भण्डारा, भगत भगवन्त सति वरतारा, सति सतिवादी वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। सन्तन मेला उच्च दरबारा, घर विच खोल्हे आप किवाड़ा, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ । गुरमुख तार सच्ची धुन्कारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल पुरख समरथ, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाइंदा।

कलयुग अन्तिम हो प्रगट, निरगुण साचा खेल वखाइंदा। वेखणहारा नौ खण्ड पृथ्मी दीप सत, सति सतिवादी आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव चुकाइंदा। कलयुग अन्तिम भेव अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, अनडिठ नज़र किसे ना आईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, भगत दुआरे दए वड्याईआ। जोती शब्दी आपे रल्ला, जोती जाता जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह भगतन मीता, आपणी दया कमाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीटा, ऊँच नीच आपणा रूप दरसाइंदा। करनहारा मिट्ठा रीठा, कूड़ कुड़यारा आप मिटाइंदा। सदा सुहेला ठांडा सीता, सतिगुर आपणा नाउँ धराइंदा। जुग चौकड़ी चलाए रीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम पावे सार, नौ नौ चार पन्ध मुकाईआ। लेखा जाण गुर अवतार, पूरब लहिणा झोली पाईआ। पीर पैग़म्बर दए सहार, चरन कँवल बख्शे इक्क सरनाईआ। भगत भगवन्त दे सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सन्त साजण लए उभार, घर मन्दिर सहिज सुभाईआ। गुरमुख साचा कर त्यार, गुर सतिगुर गोद बहाईआ। गुरसिख वेखे आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी होए दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, सतिगुर बैठा दिवस रैण वेखे चाँईं चाँईंआ। अठसठ तीर्थ गृह मन्दिर दए वखाल, जगत नहावण ना कोए नहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गुरमुख देवे माण वड्याईआ। गुरमुख माण ब्रह्म मति, पारब्रह्म जणाइंदा। आत्म अन्तर एका तत्त, तत्तव आपणा नाउँ रखाइंदा। सति सन्तोख देवे धीरज जत, मन मणका आप भुवाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए तपाइंदा। जानणहारा मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख रंग अपर अपार, अनडिठड़ा आप चढ़ाईआ। नेत्र पेखे ना कोए संसार, लोचण नज़र किसे ना आईआ। जन्म जन्म दए स्वार, मरन मरन दए कटाईआ। वरन बरन कर खुआर, साची सरन आप समझाईआ। धरनी धर एकँकार, अकल कल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। साचा भेव पुरख अकाल, आदि अन्त जणाइंदा। गुरमुख सज्जण वेखे लाल, आप आपणी गोद बहाइंदा। कलयुग अन्तिम मार्ग देवे इक्क सुखाल, शास्त्र सिमरत वेद भेव ना पाइंदा। माण तोड़ काल महांकाल, कालख टिक्का मस्तक लाहइंदा। सतिगुर साहिब हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सिर रखे हथ्थ पुरख समरथ, समरथ वड्डी वड्याईआ। आपणा नाउँ जणाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। कलयुग अन्त चलाए रथ, साचा बेड़ा आप उठाईआ। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, दो जहानां लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाईआ। हिरदे अंदर आपे वस, आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा देवे खोल्ह, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। गुरमुख तोले आपणे तोल, नाम कंडा इक्क रखाइंदा। आत्म परमात्म धारा साची बोल, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। निरगुण सरगुण वसे कौल, विछड़ कदे ना जाइंदा। सदा सुहेला रखे आप अडोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मात आप वड्याइंदा। जन भगतां देवे नाम दात, हरि नामा आप वरताइंदा। कल मिटे अन्धेरी रात, सति सति सति प्रगटाइंदा। एका अक्खर प्रगटाए गाथ, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। सो पुरख निरँजण देवे साथ, सगला संग आप हो जाइंदा। हरिजन मेला साचे घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे आप वड्याइंदा। गुरमुख तेरा वड्डा माण, हरिसंगत संग समाईआ। कलयुग अन्त कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। मिल्या मेल श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ । सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात दए झुलाईआ। चार वरन दा इक्क ध्यान, एका इष्ट प्रगटाईआ। चार बाणी इक्क ब्यान, चारे खाणी दए समझाईआ। चारों कुण्ट इक्क ज्ञान, चार वरन आप जणाईआ। चार यारी मेट निशान, चौथे जुग पन्ध मुकाईआ। जन भगतां निज आत्म निज घर दरसन देवे आण, दर्दी आपणा दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सदा सदा सलाहीआ। गुरसिख सदा सलाहवण योग, हरि सतिगुर आप सलाहइंदा। जन्म जन्म दा कट कट रोग, अनरागी आपणा मेल मिलाइंदा। मेल मिलावा धुर संजोग, धुर संजोगी आप अख्वाइंदा। नाता तोड़ चौदां लोक, त्रैभवण धनी आपणा रंग रंगाइंदा। काया बंक वेखे साचा किला कोट, गृह मन्दिर आप वड्याइंदा। सन्तन नगारे लग्गे चोट, नाद अनादी आप सुणाइंदा। आलणयो डिगे उठाए बोट, साची गोद आप सुहाइंदा। मेल मिलावा निर्मल जोत, नूर नूर नूर समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप वड्याइंदा । गुरसिख वड्याई लोकमात, हरि साचा सच जणाइंदा। नाम निधाना इक्को दात, एका दान वरताइंदा। कल मिटे अन्धेरी रात, भगतन साचा चन्द चढ़ाइंदा। दो जहानां वेखे खात, डूँघा खाता आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप वड्याइंदा। गुरमुख वड्डा सचखण्ड, हरि साचा दए वड्याईआ। लेखा चुक्के कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड नज़र कोए ना आईआ। चरनां हेठ रखाए सूरज चन्द, मंडल

मण्डप पन्ध मुकाईआ। अक्खर अक्खर ना कोए छन्द, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। दूई द्वैती बजर कपाटी ना कोई पत्थर, सिला रूप ना कोए वटाईआ। आत्म सेजा सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा आप वखाए आपणा सत्थर, दूजा सत्थर ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त देवे वड्याईआ। कलयुग वड्याई अन्त, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। आत्म परमात्म नाउँ मणीआ मंत, मन का मणका आप भुवाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। पारस करे साचे सन्त, कंचन आपणा रूप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे आप तराइंदा। गुरसिख तेरा वेख तेज, दो जहान नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, गुर अवतार देण गवाहीआ। भगत भगवान सुंञी होण ना देवे सेज, कन्त कन्तूहल साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा नूर आप चमकाईआ। गुरसिख तेरा नूर नुराना, पीर पैग़म्बर वेख वखाइंदा। चौदां तबक करन सलामा, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद ज़बराईल मेकाईल असराईल असराफ़ील देदां रिहा पैग़ामा, कलमा नबी नबी पढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम परवरदिगार खेल करे महाना, बेऐब नज़र किसे ना आइंदा। मुर्शद मुरीद सुणाए गाणा, धुर फ़रमाणा आप अलाइंदा। तीर्थ तट होए हैराना, करे खेल श्री भगवाना, दूजा संग ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम आपणी खेल कराइंदा। तीर्थ तट मारन धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती खुल्हड़े केस रही वखा, भोला नाथ ना नैण उठाईआ। त्रिबैणी नैणी कोई ना वेखे आ, संगम फेरा कोए ना पाईआ। दुरमति मैल सके ना कोई धुवा, निर्मल नीर ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट होए हैरां, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कलयुग अन्तिम साडा मिटदा जाए निशां, सच निशाना ना कोए झुलाईआ। अन्त पकड़े ना कोई बांह, रविदास कसीरा भेंट ना कोए चढ़ाईआ। एथे ओथे मिले ना कोई थाँ, दो जहानां नज़र कोए ना आईआ। उच्ची कूक रहे कुरला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। तीर्थ तट रहे रो, नेत्र नैण नीर वहाया। नौ खण्ड पृथमी मिले ना ढोआ ढो, साचा संग ना कोए निभाया। निरगुण सरगुण टुट्टा मोह, माया ममता पड़दा पाया। आत्म परमात्म सके ना छोह, जगत अन्धेरा ना कोए गंवाया। साची करे ना कोए लो, नेत्र ज्ञान ना कोए खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा वेस आप धराया। तीर्थ तट हो इक्ट्ठे, सारे देण दुहाईआ। कलयुग अन्तिम मूँह दे भार ढट्ठे, ना सके कोए उठाईआ। प्रगट होया पुरख समरथे, जिन्हा साडी बणत बणाईआ। जिउँ भावे तिउँ सानूं रखे, साडी

चले ना कोए चतुराईआ। साडे भाण्डे होए सखे, अमृत नजर किते ना आईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती चीर लथ्थे, उत्ते पड़दा कोए ना पाईआ। साध सन्त जगत विकार विच फसे, तट बैठे डेरा लाईआ। कूड़ कुड़यारा कन्ढे उत्ते हस्से, सच सुच्च नज़र किसे ना आईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार अंदर वड़ वड़ नच्चे, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। गुरमुख विरला कोई बचे, जिस सतिगुर आपणी गोद बहाईआ। कलयुग अन्तिम भाण्डे कच्चे, थिर कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। गंगा उठी नेत्र खोल्ह, आपणा नैण खुल्हाईआ। जमना कहे इक्को बोल, कूक कूक सुणाईआ। सुरस्ती कहे मेरे कुछ ना कोल, खाली हथ्थ रही वखाईआ। गोदावरी कहे गोबिन्द मेरे कोलों उठ गया अडोल, मैं कोझी कमली सार ना पाईआ। भोला नाथ सुत्ता रहि गया अनभोल, शंकर नैण ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम सारया नाल मार गया रौल, भेव किसे ना आईआ। दर दर आ के तोल गया तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। साडे खाली कर गया खोल, वस्त विच रहिण ना पाईआ। उच्ची सुणा के गया इक्को बोल,
१०८५ आउणा चल सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे आप वड्याईआ। जमना गंगा सुरस्ती गोदावरी रोवण अथ्थ, नेत्र नैणां नीर वहाया। तीर्थ तट बैठे सत्थर घत, वेले अन्त ना कोए सहाया। कलयुग मारी सब दी मति, बुद्धी सति ना कोए रखाया। चारों कुण्ट खाली हट्ट, वस्त हथ्थ किसे ना आया। कूड़ी क्रिया रही नच्च, कलयुग डौरू डंका नाल वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। कलयुग तेरी कूड़ी धार, सो पुरख निरँजण पार कराईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, जोती जाता भेख वटाईआ। सन्त सुहेले लए विचार, गुर चेले मेल मिलाईआ। नाता तोड़ तीर्थ तट किनार, आपणा दुआर दए समझाईआ। देवे माण विच संसार, वड संसारी दया कमाईआ। जिस दा गुर पीर अवतार मंगदे रहे दीदार, सो साहिब सतिगुर लोकमात फेरा पाईआ। सानूं अन्तिम आई हार, तीर्थ तट देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे रिहा प्रगटाईआ। तीर्थ तट सारे कहिण एका मता पकाया। चलो चल के वेखीए नैण, पुरख अकाल कवण वेस वटाया। गुरमुखां चुकाए लहण देण, आपणा नाउँ झोली पाया। साडा बणे ना कोई साक सैण, सज्जण कोए नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। तीर्थ तट करन विचार, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। किस बिध जाईए सच दरबार, सच वस्त नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करया विभचार, दुरमति मैल ना कोए धुवाईआ। आपणा आप गए हार, हरि की पौड़ी दूजे किसे ना सके चढ़ाईआ। जीव जंत मारे ठार ठार, ठोकर नाम ना किसे लगाईआ। मानस होए अन्त

खुआर, जगत खुआरी ना कोए चुकाईआ। आपणा आप गए हार, साडा बल नज़र कोए ना आईआ। इक्क इकल्ला प्रगट होया हरि निरँकार, सब दा लहिणा गया मुकाईआ। लख चुरासी करे भाल, गुरमुख आपणे लए जगाईआ। चार जुग दे विछड़े मेले आपणे नाल, जन्म जन्म लेखा दए चुकाईआ। गुरसिखां पिच्छे आपणी घाल रिहा घाल, निरगुण निरवैर पुरख अकाल घर घर आए दरस दिखाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद हरि जू वड्डा माहीआ। चरन धूढ़ एका वार दए नुहाल, दूजी वार मैल ना लागे राईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, काल फास रिहा कटाईआ। चलो चल के करीए सारे सवाल, प्रभ चरनां सीस टिकाईआ। सानूं फेर कदों करे बहाल, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। असीं तेरे निक्के बाल, निक्की निक्की चाल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप जगाईआ। वेखो गुरसिख गया जाग, हरि सतिगुर आप जगाइंदा। घर साचे लग्गा भाग, वड भागी आप लगाइंदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, निर्मल नीर नीर प्याइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, हँस मुख मुख सलाहइंदा। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम इक्को नाद, पारब्रह्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे इक्को दान, गुरसिख दूजे घर मंगण ना जाइंदा।

१०८६ १०८६

११ ११

★ २१ चेत २०१६ बिक्रमी सौदागर सिँघ दे गृह ठीकरी छन्ना ज़िला करनाल ★

दर दरवेश तीर्थ तट, आपणी दर्द रहे जणाईआ। पुरख अबिनाशी मैल कट, सगला संग ना कोए निभाईआ। कूड़ कुड़यारा रख्या हट्ट, सति असति होई लड़ाईआ। नव नौं खेड़ा दिसे भट्ठ, साचे गृह ना वड्याईआ। मन वासना सृष्ट सबाई रही नट्ठ, आत्म तृप्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। किरपा कर गुण निधान, गुण अवगुण ना कोए वड्याईआ। शाह पातशाह तूं सच सुल्तान, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। सदा सुहेला इक्क इकेला देवणहारा दान, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। नेत्र पेख्या दो जहान, पेख पेख नैण रहे शरमाईआ। धरती धवल ना मिले माण, धरनी धूढ़ी ख़ाक ख़ाक उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। दे वर सच भगवान, तेरे अग्गे इक्क अरज़ोईआ। साडा मिटदा जाए निशान, निशाना मात ना कोए झुलाईआ। साध सन्त कलयुग जंत होए बेईमान, साची शरअ ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया कर इश्नान, दुरमति मैल ना कोए धुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

वर, खाली झोली रहे वखाईआ। खाली झोली कलयुग अन्त, वस्त कोए नज़र ना आईआ। तेरी महिमा प्रभ बेअन्त, बेअन्त तेरी वड्याईआ। गढ़ तुट्टा हउमे हंगत, साडी चले ना कोए चतुराईआ। अठसठ भुख नंगत, साचा नाम धन हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। तट किनारा खण्डर खण्डत, डूँग्घी भँवर रिहा दरसाईआ। ज्ञान बोधा नज़र ना आए कोए पंडत, पिण्डी पिण्ड ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध अग्गे मंग मंगाईआ। तुध अग्गे सर्ब अरदास, निउँ निउँ सीस झुकाया। सच वस्त ना किसे पास, खाली हथ्थ रहे वखाया। कलयुग अन्तिम होणा नास, जित नज़र कोए ना आया। करे ना कोए बन्द खुलास, बन्दीखाना ना कोए तुड़ाया। शिव जी नज़र ना आए उपर कैलास, केशव तेरा भेव कोए ना पाया। जुग चौकड़ी रखदे रहे तेरी आस, नेत्र नैण उठाईआ। अन्त बुझाए ना कोई प्यास, तृष्ना जगत ना कोई मिटाया। बिन तेरे होए निरास, आसा पूर ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरनां ओट रखाया। तेरे चरनां इक्को ओट दोए जोड़ जोड़ निमस्कार। जन्म जन्म दा कट खोट, दुरमति मैल मैल उतार। इक्क लगाउणी साची चोट, साचा नाम जै जैकार। इक्क भण्डारा देणा अतोट, निखुट ना जाए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बणीए अन्त भिखार। बणे भिखारी दर दरवेश, अल्फ़ी नज़र कोए ना आईआ। तीर्थ तट खुल्हड़े केस, मीढीं सीस ना कोए गुंदाईआ। कलयुग अन्त चले ना कोए पेश, चार जुग दा पेशा रहिण ना पाईआ। ना कोई सहाई विष्न ब्रह्मा शिव महेष गणेश, गणपति संग ना कोए निभाईआ। नव नौ खाली दिसे देस, चार चार ना कोए शनवाईआ। नज़र ना आए बाशक शेष, सांगोपांग ना कोए वखाईआ। अन्त करे ना कोई हेत, बैठे मुख भुवाईआ। तीर्थ तट किनारा सुंञा खेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन मिले कोए ना ढोईआ। देणा वर हरि निरँकार, एका मंग मंगाईआ। कलयुग अन्तिम आई हार, बल बैठे आप गंवाईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, साचा चन्द नज़र कोए ना आईआ। अन्त ना करे कोई प्यार, मित्र प्यारा संग ना कोए रखाईआ । लेखा लिख लिख मार रिहा मार, तेरा हुक्म चले सच रज़ाईआ। पाणा गंढुणहारा रविदास चुमार, साडा चमड़ा रिहा लाहीआ। तेरा हुक्म हुक्म वरतार, तेरे हुक्मे अंदर तेरी शाहीआ। तूं आदि जुगादि खेलणहार, तेरी खेल नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बण बण गए तेरे सेवादार, बण याचक सेव कमाईआ। अन्तिम मंगदे रहे दर दुआर, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहे पुकार, आपणा पल्लू गए छुडाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तेरी वड्डी वड वड्याईआ। हउँ

१०८७ ११

पापी अपराधी गुनाहगार, आपणा गुण ना कोए जणाईआ। तूं साहिब सुल्तान बख्शणहार, बख्शश रहिमत तेरी सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निथाव्याँ देणा सच्चा थाईंआ। निथाव्याँ देणा सच्चा थाउँ, थान थनंतर नज़र कोए ना आइंदा। कलयुग अन्त भगवन्त पकड़ना बांहों, तुध बिन अवर ना कोए उठाइंदा। तख्त निवासी करना सच न्याउँ, हक़ हक़ीक़त भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणे हुक्मे अंदर सर्ब चलाइंदा।

★ २१ चेत २०१६ बिक्रमी महिंदर सिंघ दे गृह गढ़ी लागरी ज़िला करनाल ★

सचखण्ड हरि सच वसनीक, सो पुरख निरँजण डेरा लाइंदा। महिबान बीदो इक्क तौफ़ीक, मेहरवान खेल कराइंदा। आदि पुरख लाशरीक, बेऐब परवरदिगार नाउँ धराइंदा। आदि जुगादि वसणहारा मुर्शद मुरीद, नज़दीक दूर नेड़ ना कोए रखाइंदा। चौदां तबक दो जहान लोक चौदां मिटाए तारीक, प्रकाश आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। सचखण्ड दुआरा मुकामे हक़, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। नूर इलाही

१०८८
११

पुरख समरथ, समरथ वड्डी वड्याईआ। एका नाअरा बोल अलख, हू हू आपणा नाउँ समझाईआ। महल अटल आपे वस, सच महिराब करे रुशनाईआ। जुग जुग मार्ग मात दरस, गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरीआं लोआं वेखे नस्स नस्स, ज़िमीं असमान फेरा पाईआ। भगत भगवन्त अन्तर वस, मुरीद मुर्शद लए मिलाईआ। तीर अणयाला मारे कस, नाम निधाना इक्क रखाईआ। जुग चौकड़ी सुणाए आपणा जस, जस वेद पुराण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल पुरख अथाह, एकँकारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। बेऐब बण मलाह, बेपरवाही रूप धराइंदा। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाह, साची सिख्या इक्क वखाइंदा। नव नौ चार फेरा पा, सति सति आपणा रंग वखाइंदा। पंज तिन्न जोड़ जुड़ा, अठ तत्त वंड वंडाइंदा। बंक दुआरा इक्क सुहा, घर सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण वेस वटा, सरगुण निरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। नाम मृदंग इक्क वज्जा, अनहद नादी नाद अल्लाइंदा। सर सरोवर इक्क प्रगटा, तीर्थ तट इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपणा खेल कराइंदा। तीर्थ तट सच किनारा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ दए समझाईआ। काया अंदर खोल्ह किवाड़ा, घर घर विच

दए वखाईआ। दीआ बाती इक्क उज्यारा, जोत निरँजण नूर रुशनाईआ। आत्म परमात्म करे प्यारा, घर मेला सहिज सुभाईआ। अलख अगोचर अगम्म वजाए सच्ची सितारा, निरगुण तन्दी तन्द हिलाईआ। साची सखीआं मंगलाचारा, घर साचे वज्जे वधाईआ। नूर इलाही हो उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। हक़ हक़ीक़त एका नाअरा, बहॅक़ आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणी धार चलाईआ। सचखण्ड निवासी साची धार, सो पुरख निरजंण आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, एकँकारा नूर प्रगटाइंदा। आदि निरँजण वेखे विगसे करे विचार, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबार, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। श्री भगवान सति सतिवादी सति हुलार, दो जहानां आप रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, सगला संग आप हो जाइंदा। ब्रह्म ब्रह्म दए अधार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण सरगुण दे अधार, सरगुण निरगुण संग रखाइंदा। जगत विचोला बण एकँकार, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। शब्द गुर गुर कर त्यार, गुर करता खेल कराइंदा। पंज तत्त काया देवे माण, तत्तव तत्त तत्त समझाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। वस्त अमोलक नाम सच्चा धन माल, सच खजाने आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणा राह चलाइंदा। सचखण्ड निवासी राह अवल्ला, जुग करता आप चलाईआ। सरगुण निरगुण फड़ाए पल्ला, पल्लू नज़र किसे ना आईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, लोकमात फेरा पाईआ। पावे सार जलां थलां, घट घट आपणा आप रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, जुग जुग आप कराइंदा। निरगुण सरगुण लए अवतारा, गुर गुर वेस वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण वेखे अखाड़ा, नौ खण्ड पृथमी पड़दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। जुग जुग खेल पुरख समरथ, निरगुण सरगुण आप कराईआ। ब्रह्मा वेता देवे वथ, चार वेद झोली पाईआ। चार खाणी वंडे हथ्थो हथ्थ, अण्डज जेरज उत्भुज सेतज नाउँ धराईआ। चार बाणी बोल अकथ, परां पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। पंज तत्त काया वेखे तत्त, रत्ती रत्त, रत्त रत्त रंगाईआ। वस्त अमोलक मन बुध मति, हरि आपणी अनक टिकाईआ। निरगुण मेला ब्रह्म तत्त, पारब्रह्म आपणी अंस सुहाईआ। करे खेल कमलापति, दूसर संग ना कोए रलाईआ। बोध अगाध महिमा अकथ, बिन रसना जिह्वा गाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, निरगुण सरगुण धन्दे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर देवे माण वड्याईआ। गुर करता गुर करनेहारा, गुर शब्दी वड

वड्याईआ। गुर सेवक गुर भिखक मंगण मंगणहारा, आदि जुगादि भेव कोए ना पाईआ। गुरसिख गुर गुर अवतारा, गुर समरथ पुरख नाम वड्याईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, गुर गुर आपणा रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वारा, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। नव नौ चार खेल न्यारा, अनुभव आपणी धार रखाईआ। भेव ना जाणे कोई परवरदिगारा, बेअन्त बेअन्त कहे सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सजदा सीस जगदीस दोए जोड़ करन निमस्कारा, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। तूं वसे सचखण्ड सच्चे दुआरा, तख्त निवासी तख्त सोभा पाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, भिखक झोली सर्ब वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग खेल विच संसार, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। गुर गुर रूप लए अवतार, शब्दी शब्द डंक वजाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, साचे सन्त वेख वखाइंदा। गुरमुख वेखे आपणे लाल, गुरसिख साची गोद सुहाइंदा। त्रै त्रै नाता तोड़ जंजाल, पंचम पंच मोह चुकाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, जगत वणजारा फेरी पाइंदा। वेखणहारा हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे नैण, हरि जू नज़र किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण

१०६०

११
अंजील कुरान खाणी बाणी सारे कहिण, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। भगत भगवन्त आदि जुगादि बणे साचा साक सज्जण सैण, सगला संग आप अख्वाईआ। कबीर जुलाहा कहे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हरिजन साचे आवे लैण, रूप अनूप आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए करनेहार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फड़ाया पलड़ा, सेवा ला गुर अवतार। पीर पैग़म्बर सच संदेस एका घलड़ा, धुर दी बाणी धुर दी धार। घट घट अंदर आपे रलड़ा, करे खेल गुपत ज़ाहर। सच सिंघासण एका मलड़ा, आत्म सेजा ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त करे कराए साची कार। साची कार अन्तिम कल, हरि जू आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण रूप अछल अछल, भेव कोए ना पाइंदा। उच्च महल्ले बैठा चढ़, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान लए फड़, एका डोरी नाम बंधाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी सचखण्ड निवासी सद्दे आपणे घर, घर साचा अन्त वखाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण खेल रिहा कर, दो जहानां फेरा पाइंदा। नव खण्ड जीव जंत साध सन्त आपणा लेखा गया हर, हरि का भेव कोए ना आइंदा, त्रैगुण अग्नी रहे सड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुकम आप वरताइंदा।

साचा हुक्म धुर फ़रमाण, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे महान, महिमा गणत गणी ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लिख लिख दे के गए ब्यान, आपणी जामनी मात भराईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी झुलाए इक्क निशान, सत्तां दीपां कर रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन गंवाए माण, अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। एका इष्ट वखाए श्री भगवान, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। एका अक्खर दए ज्ञान, जगत वक्खर करे पढ़ाईआ। एका मारे तीर निशान, अणयाला आप चलाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका बंक दए समझाईआ। एका नाद शब्द धुन्कान, एक रागी राग अलाईआ। एका अमृत आत्म रस पीण खाण, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। एका आत्म सेजा करे परवान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। साचा रूप श्री भगवन्त, पुरख अबिनाशी आप धराइंदा। गुरमुख वेखे साचे सन्त, सन्त सुहेले आप प्रगटाइंदा। हरिजन मेला नारी कन्त, गृह मन्दिर वेख वखाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। मेल मिलावा साची संगत, संकट कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जगत बसन्तर आप बुझाइंदा। जगत बसन्तर पाए ठंड, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जन भगतां एका नाम देवे वंड, विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जुग चौकड़ी टुट्टी गंढु, अन्तिम आपणा बन्धन पाईआ। गुरमुख नंगी ना होवे कंड, समरथ दए माण वड्याईआ। लख चुरासी खण्ड खण्ड, खड़ग खण्डां इक्क चमकाईआ। जीव जंत नार दुहागण दिसे रंड, हरि जू कन्त नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आप, सो पुरख निरजंण बेपरवाहया। लख चुरासी माई बाप, पिता पूत भेव चुकाया। जानणहारा पूजा पाठ, तीर्थ तट फोल फोलाया। बैठणहारा इक्क इकांत, घर घर आपणा फेरा पाया। कलयुग वेख अन्धेरी रात, निरगुण आपणा रूप धराया। जन भगतां पुछे आपे वात, आप आपणा मेल मिलाया। आत्म परमात्म इक्को गाथ, एका मन्त्र दए दृढ़ाया। आप उतारे साचे घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाया। खेले खेल बाज़ीगार नाट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। सतिजुग खोल्हे साचा हाट, बण हटवाणा हट्ट चलाया। गुरमुख विरला लाहा लए खाट, कलयुग जीव गूढ़ी नींद आप सुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा मार्ग आपे लाया। आपणा मार्ग श्री भगवान, कलयुग अन्त दए जणाईआ। नाता तुट्टे जीव जहान, बन्धन फेर ना कोए बंधाईआ। लेखा चुक्के जूठ झूठ पीण खाण, सच सुच्च दए वखाईआ। तीर्थ तट ना कोए इश्नान, आत्म सरोवर दए नुहाईआ। गृह

१०६१ ११

मन्दिर अंदर इक्क धुन्कान, धुन अनादी दए सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे गाण, रसना जिह्वा तन हिलाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। नानक गोबिन्द लेखा लिख लिख जीव जहान, जीवण जुगत गया समझाईआ। अन्तिम आए निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। कूड़ी क्रिया मेटे निशान, सति निशाना दए चढ़ाईआ। चार वरनां ऊँचां नीचां राउ रंकां देवे इक्क ज्ञान, एका नाम नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग आपणा वेस आप धराईआ। आपणा वेस करे करतार, निरगुण निरगुण भेव ना राया। कलयुग आए अन्तिम वार, कल कल्की नाउँ रखाया। सम्बल वसे धाम न्यार, बंक दुआरा सोभा पाया। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, धुर दी बाणी आप अल्लाया। नाम खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाया। दो जहानां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेस वटाया। कलयुग अन्तिम हो प्रतख, प्रभ आपणी खेल कराईआ। सन्त सुहेले करे वक्ख, गुर गुर आपणी दया कमाईआ। इक्को मार्ग देवे दस्स, एका हरि करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म श्री भगवन्त, कलयुग अन्त आप जणाइंदा। नाता तुट्टा जीव जंत, जीवण जुगत ना कोए समझाइंदा। जगत माया पई बेअन्त, बेअन्त नज़र किसे ना आइंदा। घर घर गढ़ हउमे हंगत, जूठी झूठी क्रिया ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नूर आप प्रगटाइंदा। आपणा नूर आपे धर, नूर नुराना वेख वखाईआ। गुरमुख सज्जण लए वर, आप आपणा मेल मिलाईआ। दर दरवेश आए दर, दर आपणी अलख जगाईआ। नर नरेस लए फड़, फड़ फड़ आपणा बन्धन पाईआ। काया बंक सच महल्ले जाए चढ़, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त लेखा सब दा लेखे पाईआ।

★ २१ चेत २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह कौमी फारम ज़िला करनाल ★

सो पुरख निरँजण हरि बेअन्ता, बेअन्त वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण आदि अन्ता, निरगुण निरवैर आपणा खेल कराईआ। एकँकार जुगा जुगन्तर सोभावन्ता, सच सिँघासण साचे आसण लाईआ। आदि निरँजण नूर नुरंता, दो जहान

करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता धुर फ़रमाणा साचा हुक्म इक्क सुणंता, जै जैकार आप कराईआ। श्री भगवान आप बणाए आपणी बणता, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म खेले खेल श्री भगवन्ता, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह एका धार चलाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्ता, अजूनी रहित आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्चे अस्थान, निरगुण नूर नूर प्रगटाइंदा। तख्त निवासी श्री भगवान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। राज राजान भूपत भूप शहिनशाह शाह पातशाह वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। नाद अनादी बोध अगाधी शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, सच संदेसा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साची खेल करे करतारा, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे दुआरा, निरगुण निरगुण आपणा वेस धराईआ। खोल्हणहारा थिर घर किवाड़ा, घर विच घर घाड़न लए घड़ाईआ। कर प्रकाश खेल तमाश वेखे वेखणहारा, शब्दी सुत अबिनाशी अचुत, थिर घर साचे आप वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल श्री भगवान, आदि जुगादी आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचे तख्त बैठ मेहरवान, मेहर नज़र इक्क तकाइंदा। सुत दुलारा कर बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। करे खेल दो जहान, अनुभव आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग रंग चलूल, सो पुरख निरँजण आप रंगाईआ। आदि अन्त श्री भगवन्त करता करनी ना जाए भूल, साची किरत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, महल अटल करे आप रुशनाईआ। करे रुशनाई साचे बंक, बंक दुआरी सोभा पाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी धार चलाइंदा। निरगुण नूर हरि भगवन्त, जोत उजाला डगमगाइंदा। लेखा जाणे नारी कन्त, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। निरगुण निरगुण बणाए बणत, शब्दी शब्द आपणा भेव खुल्हाइंदा। नाउँ निरँकारा एका मंत, नाम मन्त्र सति दृढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए बणत, त्रै त्रै मेला मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी आपणा भेव आप चुकाइंदा। आदि जुगादी भेव अभेदा, पुरख अबिनाशी आपणे विच छुपाईआ। करे खेल अछल अछेदा, अछल अछल आपणा रूप वटाईआ। विष्नूं विश्व धार वेखा, साची रेखा आप लिखाईआ। ब्रह्मे लाए मस्तक लेखा, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। भेव अभेद चारे वेदा, बिन अक्खर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा सच संदेसा नर नरेसा एकँकारा आप सुणाईआ। एकँकारा सति ज्ञान, हरि

शब्दी शब्द जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे माण, आत्म परमात्म वेस वटाइंदा। अनाद अनादी एका ज्ञान, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। लिख लिख लेखा लिख्त महान, लोकमात मात प्रगटाइंदा। वंडे वंड जीव जहान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा रंग रंगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। चारे बाणी इक्क फ़रमाण, चारे खाणी आप समझाइंदा। चारे वेद कर प्रधान, चारों कुण्ट राह वखाइंदा। चार वरन वरन निशान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अलख निरँजण आपणी खेल कराइंदा। अलख निरँजण अगम्म अथाह, भेव अभेद जणाईआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, लख चुरासी बेड़ा आप चलाईआ। गुर गुर रूप आप प्रगटा, शब्दी ढोला लए गा, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। काया चोला लए हंढा, पड़दा ओहला एका पा, तत्तव तत्त विच समाईआ। जोती नूर कर रुशना, अनहद नादी नाद वजा, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजा, भेव अभेदा अपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वसे घर, घर मेला सहिज सुभाईआ। घर मेला सच महल्ल, काया बंक बंक वड्याइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, पंज तत्त आपणा संग निभाइंदा। सच संदेसा एका घल, गुर गुर ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। वसणहारा जल थल, महीअल आपणा खेल कराइंदा। जोती शब्दी आपे

१०६४ रल, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त १०६४

११ आपणा भेव आप खुल्लाइंदा। आदि अन्त भेव अवल्ला, भेव कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, दो जहानां ११

वेख वखाईआ। सच संदेस जुगा जुगन्तर आपे घल्ला, गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण फड़ाए आपणा पल्ला, नाउँ निरँकारा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आपणी करनी किरत कमाईआ। जुग करता हरि करनेहारा, एका एक अख्वाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। शब्दी सुत सुत दुलारा, थिर घर साची बणत बणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव घाड़न घड़े बण ठठयारा, पंज तत्त आपणा मेल मिलाइंदा। लख चुरासी वेखे विगसे वेखणहारा, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। गुर अवतार दे सहारा, पंचम तत्त तत्त अखाड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, रागी नादी वसे बाहरा एका राग अनडिठड़ा आप अलाइंदा। पीर पैग़म्बर करन निमस्कारा, बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। मुकामे हक़ वसे वसणहारा, करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर रूप अनूप दिस किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी पावे सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण गुर गुर धार, सो पुरख

निरँजण आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी कर खुआर, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आपणी वार, वार थित ना कोए रखाईआ। सीस नवायण तेई अवतार, भगत अठारां ध्यान लगाईआ। दस दस गुर करन निमस्कार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारे खाणी करे पुकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चारे बाणी आई हार, हरि का रूप ना कोए दरसाईआ। रवि ससि सूरज चन्द चल चल होए खुआर, अन्त पाँधी बण पन्ध ना कोए मुकाईआ। ज़िमीं असमान डिगण मूँह दे भार, ब्रह्मण्ड खण्ड ना सके कोई खलार, लोआं पुरीआं गगन पातालां पई दुहाईआ। नौ खण्ड पृथमी रोवे ज़ारो ज़ार, धरत धवल खुलड़े केस रही वखाल, मीढीं सीस ना कोए गुंदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग खेल खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, कोटन कोटि रूप वटाइंदा। जन भगत फड़ाए एका पल्ला, दूसर हथ्थ किसे ना आइंदा। साचे सन्तां आपे मिला, मिल मिल खुशी मनाइंदा। गुरमुख जोती आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए धराइंदा।
१०६५ गुरसिखां देवे एका नाम सुखल्ला, हरि नाम मन्त्र दृढ़ाइंदा। लख चुरासी भुलाए कर कर वल छल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। १०६५
११ लेखा जाणे राणी अल्ला, आलमीन आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। ११
साचा खेल पुरख अगम्म, एकँकारा आप कराईआ। ना मरे ना पए जम्म, जूनी जून ना कोए फिराईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, करता पुरख आपणी करनी किरत कमाईआ। दो जहानां बेड़ा बन्नृ, निरगुण सरगुण रिहा तराईआ। आपे घड़े आपे लए भन्न, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे सूरज चन्न, ज़िमीं असमाना फोल फोलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव राग सुणाए कन्न, करोड़ तेतीसा आलस निंद्रा देवे लाहीआ। आपे बण जननी जन, पिता पूत खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता आपणा वेस आप वटाईआ। जुग करता हरि करने योग, आदि पुरख आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गुर अवतार पीर पैग़म्बर करदा रिहा संजोग, बण संजोगी खेल कराईआ। अन्तिम दो जहान श्री भगवान कटदा रिहा वियोग, जगत विछोड़ा रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां तबकां चरनां हेठ रखाईआ। आदि जुगादी सति सलोक, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण इक्को ओट, पुरख अकाल रखाईआ। तन नगारे लाए चोट, जगत नगारा दए वजाईआ। वेखणहारा कोटन कोटी कोट, घर घर आपणा आसण लाईआ। एका नूर निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप

१०६६
११

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख समरथ, एकँकार आपणा नाउँ धराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। कलयुग अन्त हो प्रगट, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। धुर फ़रमाणा एका दस्स, लख चुरासी जीव जंत आप पढ़ाइंदा। भगत जनां हरि हिरदे वस, आत्म अन्तर मेल मिलाइंदा। साचे सन्तां करे प्रकाश, कोटन रवि ससि, निरगुण नूर जोत डगमगाइंदा। गुरमुखां पूरी करे आस, जन्म जन्म दा लहिणा झोली पाइंदा। गुरसिखां होए दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। साचे मंडल पावे रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल वेख वखाइंदा। एका वस्त रखे पास, आदि जुगादि आप वरताइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर निवास, त्रैभवण धनी आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। लख चुरासी पवण स्वास, पवण उणंजा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि अन्त अन्तिम कल, कल करता वेख वखाईआ। वसणहारा सच महल्ल, उच्च अगम्म बेपरवाहीआ। निरगुण रूप लोकमात आया चल, रेख रंग ना कोए जणाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन बैठा मल्ल, बंक दुआर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार वेखे थाउँ थाईंआ। थान थनंतर पावे सारा, त्रैगुण अतीता वड वड्याईआ। लख चुरासी जगत बिवहारा, बण बिवहारी खेल कराईआ। प्रगट हो गुर अवतारा, गुर अवतार नाउँ जणाईआ। शब्दी शब्द बोल जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। हक़ हक़ीक़त बोल नाअरा, मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला, एका नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, अन्त आपणा आपणे लेखे लाईआ। अन्त वेखे वेखणहारा, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। दो जहान करे पसारा, बण पसारी वेख वखाइंदा। लख चुरासी बण ठठयारा, घड़ घड़ आपे भन्न वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, बण जाचक सेव कमाइंदा। गुर अवतार सच संदेसा देवणहारा, हरि का नाउँ मात प्रगटाइंदा। हरि का नाउँ जगत वणजारा, साचा हट्ट इक्क खुल्हाइंदा। वस्त अगम्मी एका थारा, थिर घर वासी आप वखाइंदा। गुरमुख विरला आए दुआरा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया आपणी धारा, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेख अखाड़ा, सत्तां दीपां पड़दा लाहइंदा। बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। बहत्तर नाड़ अग्नी तत्त, तत्तव तत्त रिहा जलाईआ। गृह गृह उब्बले जगत रत्त, रत्ती रत्त ना कोए सुकाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना देवे कोए ब्रह्म मति, मन मति करी कुड़माईआ। जूठे झूठे विके हट्ट, साचा हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। फिर फिर थक्के तीर्थ तट, दुरमति मैल ना कोए धुवाईआ। दूई द्वैत

ना निकलया वट, माया ममता मोह ना कोए चुकाईआ। रसना जिह्वा मणका मणका रहे रट, मन का मणका ना कोए भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर वेखणहारा थाउँ थाईंआ। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा हरि जू आया। नौ खण्ड पृथ्मी धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। साक सज्जण सैण ना करे कोई प्यार, पिता पूत हित ना कोए रखाया। नार कन्त ना कोए भतार, जगत विभचार रिहा कमाया। आत्म धुंन ना कोए जैकार, रसना जिह्वा होई हल्काया। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, हरि का भेव किसे ना आया। चार वरन रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोई धराया। बरन अठारां डिगे मूँह दे भार, ना सके कोए उठाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर धक्का रहे मार, जो हरि हरि नाउँ गए भुलाया। कलयुग होया वड बलकार, आपणा बल रिहा रखाया। नाल रलाया मुहम्मदी यार, चार यारी गंढु पुवाया। ईसा मूसा एका नाअर, काला सूसा तन छुहाया। हक़ हक़ीक़त ना सके कोई विचार, लाशरीक नज़र किसे ना आया। कागद कलम लिख लिख गई हार, बण कातब लेख ना किसे मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेस वटाया। कलयुग वेखे अन्तिम वार, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर सतिगुर करे ना कोई प्यार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। नानक गोबिन्द घर मन्दिर ना दिसे किसे संसार, नेत्र मूंद सुत्ती सर्ब लोकाईआ। नाम सति ना कोए अहार, जूठ झूठ विष्टा मुख रखाईआ। फतहि डंका ना कोए जैकार, मन वासना ना कोए मिटाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया बलवान, कलयुग जीवां रिहा अन्त दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वेख वखाईआ। खेल वेखे सचखण्ड निवासी, दिस किसे ना आइंदा। एका नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान भेव खुल्हाइंदा। त्रैभवण अवण गवण ब्रह्मण्ड खण्ड करे दासन दासी विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म सुणाइंदा। गुर अवतारां करे पूरी आसी, अन्तर अन्तर जो ध्यान लगाइंदा। पीर पैग़म्बर होए बन्द खुलासी, बन्दीखाना आप तुड़ाइंदा। लेखा जाणे धरत आकाशी, आकाश आकाशा उपर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा सब दा आप चुकाइंदा। लहिणा देणा चुकाउणा मात, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम सब दी पुछे वात, लुकया कोए रहिण ना पाइंदा। लख चुरासी खोल्हणहारा ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। आत्म परमात्म साचा साक, ब्रह्म पारब्रह्म साक सैण आप हो जाइंदा। शब्दी शब्दी बन्न्हे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। अक्खर वक्खर सुणाए गाथ, साचा ढोला आपे गाइंदा। मेटणहारा जात पात, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। पाए सार कायनात, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फोलाइंदा। सर्ब जीआं दा कमलापात, लख चुरासी नारी कन्त आप हंढाइंदा। अन्तिम वेखे आपणा घाट, पार किनारा ना किसे जणाइंदा। गुर

अवतार गा गा थक्के गाथ, पुरख अकाल ओट सर्ब धराइंदा। कलयुग अन्तिम आए अन्धेरी रात, जगत अन्धेरा चारों कुण्ट छाइंदा। प्रगट होए पुरख समराथ, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाइंदा। आपणा खेल रचे निरँकारा, निरगुण भेव कोए ना पाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करया पार किनारा, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अपरम्पर आपणा रूप वटाइंदा। जननी जन ना कोए सुत दुलारा, मात कुक्ख ना कोए वड्याइंदा। पिता पूत ना कोए हुलारा, बाली बुध ना कोए जणाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण धारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। गोबिन्द मेला विच संसारा, पुरख अकाल आप कराइंदा। सम्बल वेखे धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ बंक वड्याइंदा। लेखा चुक्के रविदास चुमारा, गंगा आपणे चरन दबाइंदा। भगतन खोल्हे बन्द किवाड़ा, नेत्र नैण नैण जणाइंदा। मेट मिटाए अग्नी हाढ़ा, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे हरि, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक आपणा नाउँ जणाईआ। लख चुरासी खै कर, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आप प्रगटाईआ। साची धार पुरख अकाल, एका एक एक प्रगटाइंदा। कलयुग अन्तिम हो दयाल, दीन दयाल दया कमाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क धर्मसाल, साचा मन्दिर इक्क सुहाइंदा। एका दीपक दीआ बाल, जोती जाता डगमगाइंदा। एका मार्ग लाए सुखाल, सुख आत्म इक्क जणाइंदा। एका नाता शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। एका वस्त नाम धन माल, जीवां जंतां आप वरताइंदा। एका सिख्या दए सिखाल, साची सिख्या गुर गुर शब्द जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, वेस अवल्ला आप धराइंदा। वेस अवल्ला आपे रख, रक्षक आपणा खेल कराइंदा। सच दुआरे हो प्रतख, प्रतख आपणी धार चलाइंदा। तीर्थ तट सर सरोवर भाण्डे करे सख, अमृत एका नाम वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी साध सन्त, कलयुग जीव कोए ना सके रख, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। अन्तिम खेड़ा होए भठ, सत्थर यार ना कोए हंढाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर गुरमुख वेखे नट्ठ नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका नाम वजाइंदा। एका डंका वज्जे नाद, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, हर घट रिहा समाईआ। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण जोत कर प्रकाश, निहकलंका नाउँ रखाईआ। लेखा चुकाए पृथ्मी आकाश, प्रिथम आपणे नाउँ दए वड्याईआ। साचे

१०६८
११

मंडल पावे रास, रूप अनूप आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका दए सुणाईआ। एका डंका हरि का नाउँ, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। आप सुणाए सभनी थाउँ, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। तख्त निवासी करे सच न्याउँ, अदल अदालत इक्क कमाइंदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांहों, निर्धन आपणे गले लगाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची आप बहाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, जिस जन सोहँ हँसा माणक मोती आपणा नाउँ चोग चुगाइंदा। सदा सुहेला एथे ओथे, दो जहानां देवे ठंडी छाउँ, समरथ पुरख महिमा अकथ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म वरते निरँकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चार युग रोवण ज़ारो ज़ार, चार यारी दए दुहाईआ। चार कुण्ट करे पुकार, चार वरन पई लड़ाईआ। चारे खाणी होई गंवार, चारे बाणी गई भुलाईआ। चौथे पद ना पाए कोई सार, साचा मन्दिर ना कोए वखाईआ। मार्ग दस्स दस्स गए गुर अवतार, लोकमात कर पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर कर कर गए ख़बरदार, बेख़बर सार किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा वेस आप वटाईआ। आपणा वेस वटाए करतार, करता पुरख भेव ना आइंदा। सचखण्ड लगाए सच दरबार, लोकमात आप समझाइंदा। भगत भगवन्त कर प्यार, साचा बंक आप वड्याइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा शब्द सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम सब दा लेखा लिख्या विच संसार, बाकी कोए लैण ना आइंदा। लहिणा देणा देवे आप निरँकार, मकरूज कर्जा सब दा वेख वखाइंदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, नाम निधान आप चमकाइंदा। तिक्खीआं रखे दोवें धार, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। गुरमुख साचे लए उभार, मनमुख शौह दरयाए आप रुढ़ाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद अध विचकारे करन विचार, पार किनारा ना कोए जणाइंदा। तेरे अग्गे सजदा परवरदिगार, सही सलामत तू ही नज़री आइंदा। तेरी नज़र मेहर कर्म देवे तार, नज़रीआ नज़र इक्क वखाइंदा। बण खादम होईए खिदमतगार, दूजा खिताब ना कोए भाइंदा। सजदा करीए तेरे दरबार, दर दरबारा तेरा इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, खाली झोली सर्ब वखाइंदा। खाली झोली बैठे अड्ड, परवरदिगार रहे वखाईआ। बौहड़ी बौहड़ी लोकमात विच्चों ना कढ्ढ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मुहम्मद कहे चौधवीं सदी मेरे खाली होए हड्ड, रत्ती रत्त नज़र कोए ना आईआ। चार यारी साथ गई छड्ड, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। उम्मत उम्मती होई बस, नबी रसूल ना कोए सफ़ाईआ। इक्क कलमा तेरा गाईए जस, सच कलाम मोहे भाईआ। मेरी पूरी कर आस, सदी चौधवी दए दुहाईआ। चौदां तबक

१०६६
११

ना होण निरास, आसा आसा विच मिलाईआ। मैं कलयुग दिता साथ, तेरे चलया हुक्म रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरना सजदा सीस झुकाईआ। तेरे चरनां सीस जाए झुक, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। मेरा पैंडा रिहा मुक्क, अन्त दिसे ना कोए सहाईआ। उम्मती बूटा रिहा सुक्क, आबे हयात ना कोए प्याईआ। जुग चौकड़ी तूं बैठा रिहा लुक, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। कलयुग अन्तिम प्या उठ, नूरी जल्वा कर रुशनाईआ। इक्क प्यार करया साचे सुत, गोबिन्द आपणा पूत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह ढह पए सरनाईआ। तेरी सरनाई गए ढट्ठ, होए बाल नादान। लेखा चुक्के तत्त अठ्ठ, अठ तत्त कर परवान। तूं वसणहारा घट घट, घट घट मेरा रमज़ान। मैं पन्ध मुकाया नट्ठ नट्ठ, तेरी चरनीं डिगा आण। आपणी वस्त झोली घत, मैं बाली बुध अञ्याण। साची दे आपणी मति, तेरी मति करां परवान। पुरख अबिनाशी कहे आप समरथ, लेखा चुक्के अंजील कुरान। सब ने एका नाउँ लैणा रट, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। चार जुग दा मिटे फट, चार वरन होए कल्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त श्री भगवन्त जुग जुग आपणा खेल जाणे आप भगवान।

११ ११

★ २२ चेत २०१६ बिक्रमी चानण सिँघ दे घर पिण्ड हंडोला ज़िला करनाल ★

पंज तत्त काया जगत सरीर, त्रैगुण बन्धन तत्त रखाईआ। आत्म अन्तर साचा नीर, सच सरोवर इक्क जणाईआ। काया हाडी तन जगत पीड़, दुखड़ा दुःख दुःख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुखियां दर्द दए मिटाईआ। काया रोग जाए लथ्थ, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। मस्तक लेख लेखा देवे लिख, पूरब लेखा आप चुकाइंदा। जन्म कर्म दी लथ्थे विस, विख अमृत रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख सुख एका रंग वखाइंदा। दुःख सुख एका रंग, गुरमुख हरि हरि दया कमाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे मंग, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। आत्म सेजा सच पलँघ, घर मन्दिर दए वखाईआ। नाद शब्द वज्जे मृदंग, धुंन आत्मक इक्क सुणाईआ। कटणहारा भुख नंग, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। सच महल्ले इक्क अनन्द, एका घर वज्जे वधाईआ। रोग सोग होए खण्ड, जो जन हरि हरि नाम ध्याईआ। रसना जिह्वा गाए हरि हरि छन्द, बत्ती दन्द सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दुःख दर्द दए गंवाईआ। दुःख दर्द लथ्थे तन, तत्ती वाउ ना लागे

राईआ। सांतक सति कर के मन, मन वासना दए मिटाईआ। एका देवे नाम धन, साची वस्त झोली पाईआ। जगत विकारा देवे डंन, एका डंका नाम वजाईआ। कूड़ी क्रिया करे खंन खंन, खण्डा खड़ग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया दुःख पंज तत्त नाड़ बहत्तर वेखे रत्त, रत्ती रत्त आपणा भेव खुल्हाईआ। रोग सोग मिटे चिंता दुःख, दर्दी दर्द आप गवाइंदा। काया अंदर साचा सुख, घर घर विच मेल मिलाइंदा। उज्जल करे मात मुख, जिस जन आपणा नाउँ जपाइंदा। आवण जावण लख चुरासी कटे दुःख, दूजा दुःख नेड़ ना कोए आइंदा। सफ़ल करे मात कुक्ख, जन जननी वेख वखाइंदा। मात गर्भ ना होए उलटा रुख़, जो जन रसना सोहँ ढोला गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण जुगत जग दाता इक्क समझाइंदा। जीवण जीवण सति सति, सांतक सति कराईआ। गुर उपदेश ब्रह्म मति, पारब्रह्म वड्याईआ। हरि सरनाई एका नात, दूजा नाता ना कोए बणाईआ। रसना जिह्वा गाए गाथ, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। सगल विसूरे जाइन लाथ, जो जन आए सरनाईआ। लहिणा चुकाए मस्तक माथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दुःख दर्द दलिद्दर तन मन्दिर अंदर रहिण ना पाईआ।

११०१ ११०१

११ ११

सो पुरख निरजंण साची धार, सति सतिवादी आप चलाइंदा। निरगुण सरगुण लए अवतार, जुगा जुगन्तर खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर पार, अन्तिम आपणे विच छुपाइंदा। कलयुग खेल करे अगम्म अपार, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी धूआँधार, जगत अन्धेरा एका छाइंदा। साचा नूर ना कोए उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण वेस पुरख समरथ, एकँकारा आप वटाईआ। चार जुग दी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना कोए जणाईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, बण रथवाही वेस वटाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां मार्ग रिहा दस्स, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। दो जहान रखे वस, नाम डोरी बन्धन पाईआ। कलयुग अन्तिम कर प्रकाश, निरगुण आपणा नूर प्रगटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर निवास, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां करे पूरी आस, साचे सन्तां मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। गुरमुखां होए दासी दास, गुर गुर आपणी सेव कमाईआ। गुरसिख पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। साहिब दयाल सुख अनन्द सर्ब गुणतास, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण अंदर पाए रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ।

कलयुग अन्तिम करे बन्द खुलास, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। जूठ झूठ होए नास, माया ममता दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह चलाईआ। जुग जुग मार्ग हरि गोबिन्द, गोबिन्द आपणी धार चलाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी साहिब बख्शंद, बख्शश आपणे हथ्थ रखाइंदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। कलयुग धार वेखे सागर सिन्ध, नौ खण्ड पृथ्मी सर्ब कुरलाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। जुग जुग खेल हरि निरँकारा, आदि जुगादि कराईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। लेखा जाणे तेई अवतारां, भगत अठारां भेव चुकाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद खोल्ह किवाड़ा, चार यारी वेखे थाउँ थाईंआ। नानक गोबिन्द इक्क सितारा सति नाम जगत वणजारा, चार वरन अठारां बरन एका राह चलाईआ। धुरदरगाही इक्क जैकारा, डंका वज्जे अगम्म अपारा, फतहि आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दोए जोड़ जोड़ करन पुकारा, पुरख अबिनाशी तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त कह कह लोकमात गए जस गाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अंजील कुरान लिख लिख गए वारा, खाणी बाणी बोध अगाध इक्क समझाईआ। गुर गुर रूप सदा न्यारा, शब्दी शब्द शब्द जैकारा, डंका एका नाम वजाईआ। दीआ बाती करे उज्यारा, कमलापाती खेल न्यारा गृह मन्दिर अंदर महल अटल बैठा आसण लाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआरा, थिर घर पावे आपे सारा, सुन्न अगम्म वेखणहारा धूआँधारा, लोक परलोक आपणा हुक्म वरताईआ। अवण गवण वेख अखाड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड दए सहारा, ज़िमीं असमाना इक्क निशाना श्री भगवाना आप झुलाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधाना, नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, लख चुरासी बन्न्हे गाना, जीव जंत साध सन्त लुकया कोए रहिण ना पाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआल वेख वखाना, तीर्थ तट होए प्रधाना, अठ सठ वेखे गुण निधाना, गुण आपणा ना किसे जणाईआ। एका राग शब्द तराना, आत्म परमात्म देवे ज्ञाना, ब्रह्म पारब्रह्म वखाना, ईश जीव करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर अवतार आपणी सेवा लाईआ। गुर अवतार साची सेवा ला, हरि जू आपणा हुक्म वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल करा, कलयुग अन्तिम वंड वंडाइंदा। रसना जिह्वा कूक कूक सर्ब गए सुणा, हरि की ओट ओट सर्ब तकाइंदा। महांबली नर नरायण कलयुग अन्तिम उतरे आ, लोकमात दिस किसे ना आइंदा। पुरख अकाल वेस वटा, सम्बल बैठे डेरा ला, गोबिन्द इक्को आस रखाइंदा। कलयुग कूड़ा दए मिटा, सतिजुग साचा राह चला, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी एका खोज खुजाइंदा । धुर फ़रमाणा नाद अनादी नाउँ निधाना बोध अगाधी बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप

११०२
११

हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस हरि, हरी हरि आपणा खेल कराइंदा। नाउँ रखा नरायण नर, नर हरि आपणा रूप वटाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख भेव ना आइंदा। सच महल्ले आपे चढ़, शाह पातशाह राज राजान आपणा नाउँ धराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुरपति इन्द करोड़ तेतीसा लए फड़, फड़ फड़ आपणा बन्धन पाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अंज़ील कुरान खाणी बाणी वेखे चोटी जड़्, मध आपणी धार चलाइंदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गुरमुख गुरसिख सज्जण लए फड़, फड़ फड़ आपणी बूझ बुझाइंदा। पंच विकारा काम क्रोध लोभ मोह जाए झड़, झूठी तृष्ना आसा नाल मिटाइंदा। एका नाद सुणाए शब्द धुन्कारा, निर्मल दीआ कर उज्यारा काया मन्दिर अंदर साचा बंक आप वड्याइंदा। लख चुरासी हाहाकारा, नौ खण्ड पृथ्मी रोवे ज़ारो ज़ारा, आत्म परमात्म मेल ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ आप धराइंदा। जुग जुग नाउँ हरि निरँकार, आपणा आप प्रगटाईआ। कोटन कोटि रसना जिह्वा रहे उच्चार, अन्त कोए ना पाईआ। लिख लिख लेख ना सके कोई विचार, बण लेखक पन्ध ना कोए मुकाईआ। ब्रह्मा वेता गया हार, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। जगत विद्या चौदां लोक चौदां तबक होई खुआर, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। आत्म परमात्म ना कोए अधार, ईश जीव ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर आपणा वेस आप वटाईआ। कलयुग अन्तिम वेस अवल्ला, श्री भगवान आप कराइंदा। लेखा जाणे राणी अल्ला, ऐनलहक खोज खोजाइंदा। मुहम्मद मुहम्मदी फड़ाए पल्ला, यार यारी पड़दा लाहइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। परवरदिगार नर नरेश आप फड़ाए आपणा पल्ला, नूर नूर नाल मिलाइंदा। नव नौ होए झल्ला, दहि दिशा फेरा पाइंदा। वेखणहारा डूँग्घी डल्ला, काया भँवरी फोल फोलाइंदा। आपे खाहिश आपे अल्ला, आपे मुहम्मद नूर वखाइंदा। आपे वसे निहचल धाम अटल्ला, कोहतूर आपणी जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता साचा मन्त्र आप दृढ़ाइंदा। साचा मन्त्र इक्को नाम, हरिजन हरि हरि करे पढ़ाईआ। शब्द अगम्मी धुर पैग़ाम, पीर पैग़म्बर दए समझाईआ। शाह सुल्ताना सच इमाम, सच सिँघासण सोभा पाईआ। निहकर्मी करे आपणा काम, कर्म कांड ना कोए वखाईआ। चार वरन भुल्ले हरि का नाम, सतिनाम सति सति नज़र किसे ना आईआ। पंच विकारे पाई शाम, अन्ध अन्धेरा गया छाईआ। मन मति बुध ना कोई सयाण, साची सिख्या ना कोए वखाईआ। वेखणहार श्री भगवान, लख चुरासी अंदर बैठा ध्यान लगाईआ। राज राजान शाह सुल्तान होए बेईमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे पन्ध, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दो जहान नूर नुराना चढ़े साचा चन्द, सो पुरख निरँजण इक्क चढ़ाईआ। रसना जिह्वा एका गीत बत्ती दन्द, बन्धन सब दे दए तुड़ाईआ। सति सतिवादी इक्क वखाए आत्म अनन्द, अनन्द अनन्द विच मिलाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, गुरमुख साचे लए उठाईआ। आप सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला आपे गाईआ। नाता तुट्टे नार दुहागण रंड, हरि कन्त कन्तूहल लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, रूप अनूप आप वटाईआ। निहकलंक नर नरायण, हरि जू नज़र किसे ना आइंदा। रसना कोई ना सके कहिण, कह कह सिफ्त ना कोए सालाहइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप चुकाए लहिणा देण, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां बणे साक सज्जण सैण, कूड़ा बन्धन मोह मिटाइंदा। दरस दिखाए लोचण नेत्र नैण, अक्ख प्रतख आप खुल्हाइंदा। गीत सुहागी एका गायन, गोबिन्द गुर गुर समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पुरख अकाल इक्क अख्वाइंदा। पुरख अकाल निहकलंक, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। नाम निधान वजाए डंक, विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाईआ। लेखा जाणे राउ रंक, ऊँच नीच वेखे थाउँ थाईंआ। नव नौ कढ्ढे शंक, संसा कोए रहिण ना पाईआ। इक्क सुहाए साचा बंक, जिस दुआरे आसण लाईआ। गुरसिख देवे वड्याई जिउँ जन जनक, जन जननी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका नाउँ लए प्रगटाईआ। एका नाउँ हरि निरँकार, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाइंदा। एका नाम वणज वपार, एका वस्त अमोलक झोली पाइंदा। एका मन्दिर खोल्ह किवाड़, घर घर विच आप वखाइंदा। मेट मिटाए अग्नी तत्ती हाढ़, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। लेखा जाणे पुरख नार, नारी नर ना वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। कूड़ी क्रिया होए दूर, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। ग़रीब निमाणयां प्रभ बख्शे एका नूर, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। दर्शन देवे हाज़र हज़ूर, हरि के पौड़े लए चढ़ाईआ। मन वासना तुट्टे गरूर, गफ्लत कोए नज़र ना आईआ। आत्म अन्तर इक्क सरूर, सच खुमारी दए चढ़ाईआ। सर्बकला आप भरपूर, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे लेखे लाईआ। गुरमुख लेखा सदा अलग्ग, लख चुरासी बन्धन ना कोए रखाइंदा। किरपा करे सूरा सरबग, समरथ सिर आपणा

हथ्थ टिकाइंदा। दीपक जोती जाए जग, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, काग हँस रूप वखाइंदा। त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, तत्तव तत्त ना कोए बुझाइंदा। धुर दरबारे आपे सद्द, नाम सदा इक्क रखाइंदा। नौ दुआरे करे पार हद्द, जगत तृष्ना मोह मुकाइंदा। दस्म दुआरी बहे सज, गुरमुख साचा सोभा पाइंदा। एका नाद अनादी जाए वज्ज, अनहद आपणी सेव कमाइंदा। अमृत जाम प्याए रज्ज, तृष्ना भुख सर्ब मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। गुरसिख तेरा रंग अमोल, नज़र किसे ना आईआ। जगत कंडा ना सके कोई तोल, तोला नज़र कोए ना पाईआ। जो जन हरि का नाउँ रसना जिह्वा रिहा बोल, अनबोलत आप समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चार वरन अठारां बरन साची वस्त किसे ना कौल, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। नेत्र रोवे धरनी धरत धौल, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। गोबिन्द कीता सच्चा कौल, कलयुग वेले अन्तिम प्रगट होए सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी साची ओट तकाईआ। साची ओट रखी आस, एका नैण नैण उठाया। कलयुग अन्त बुझा प्यास, जगत तृष्ना दे गंवाया। सद वसां तेरे पास, पुरख अबिनाशी दर तेरा मोहे भाया। सतिजुग साचा कर प्रकाश, जन भगतां मेल मिलाया। तेरे सन्त होए उदास, कलयुग ठोकर रिहा लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सिर रख हथ्थ करतार, आपणी दया कमाईआ। धरनी तेरी सुण पुकार, निहकलंक फेरा पाईआ। मेट मिटाए जगत विभचार, विभचारी कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, साचे सन्त संग निभाईआ। गुरमुखां बणे आप दलाल, जगत वणज़ारा आप अख्वाईआ। गुरसिख वेखे साचे लाल, लालन आपणी गोद उठाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। नाता तोड़े शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। सदा सुहेला वसे नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म देवे माण, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ।

★ २२ चेत २०१६ बिक्रमी करनैल सिँघ दे घर पिण्ड खरका ★

सो पुरख निरँजण खेल अपार, हरि पुरख निरँजण आप कराइंदा। एकँकारा धुर फ़रमाणा, धुर दरगाही आप जणाइंदा। तख्त निवासी राज राजान, शाहो भूप भेव खुल्हाइंदा। थिर घर वेखे मार ध्यान, शब्दी सुत आप समझाइंदा। विष्नूं देवे

इक्क ज्ञान, बिन अक्खर आप सुणाइंदा। ब्रह्मे उठ बाल नादान, पुरख अबिनाशी खेल वरताइंदा। शंकर देवे इक्क फ़रमाण, सच संदेसा आप अलाइंदा। आदि जुगादी इक्क भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचा हुक्म वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। इक्क इकल्ला वड जरवाणा, बल आपणा आप वखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्याना, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। त्रैगुण माया देवे तराना, रागी आपणा राग सुणाईआ। पंज तत्त तत्त निशाना, सच निशाना आप लगाईआ। लख चुरासी वेखे मार ध्याना, घट घट आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म आप वरताईआ। सचखण्ड निवासी खेल अपारा, एकँकार आप कराइंदा। निरगुण नूर हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। शब्दी शब्द सति जैकारा, बोध अगाधा आप अलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदारा, त्रै पंज नाल उठाइंदा। करोड़ तेतीसा दए हुलारा, सुरपति नैण आप खुलाइंदा। रवि ससि सूरज चन्द पावे सारा, मंडल मण्डप खोज खुजाइंदा। ज़िमीं असमान वेखे अखाड़ा, गगन मंडल आपणा फेरा पाइंदा। धुरदरगाही धुर दी कारा, करता पुरख आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, आदि पुरख आप जणाईआ। लख चुरासी एका गाण, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। गृह मन्दिर अंदर वेखे मार ध्यान, बंक दुआरी सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण खेल महान, खेलणहारा दिस ना आईआ। पंचम तत्त तत्त बलवान, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। मन मति बुध खेल महान, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आपे रिहा वखाईआ। साचा रंग पुरख अगम्म, अलख अगोचर आप जणाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। पवण स्वास ना लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। दो जहानां बेड़ा बन्न्, आपणे कंध उठाइंदा। दे प्रकाश सूरज चन्न, किरन किरन किरन चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप समझाइंदा। आपणा हुक्म हरि निरँकार, आदि जुगादि चलाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता वेखे चाँईं चाँईआ। गुर अवतार दे अधार नाम शब्द बोल जैकार, जै जैकार आप सुणाईआ। धुर दी बाणी धुर दी धार, बोध अगाध इक्क विचार, लिख लिख लेख दए समझाईआ। निष्अक्खर वक्खर हो त्यार, करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव आपे दस्स, नर हरि आपणी खेल कराइंदा। निरगुण

नूर कर प्रकाश, लख चुरासी डेरा लाइंदा। आत्म परमात्म देवे धरवास, ब्रह्म पारब्रह्म जणाइंदा। नव नौ खेल तमाश, चार चार आपणा रंग रंगाइंदा। आदि जुगादि दे धरवास, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। गुर अवतारां पूरी करे आस, आपणी इच्छया साची भिच्छया झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा एका वार, एकँकार आप जणाईआ। शब्दी शब्द कर त्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। विष्नूं देवे भण्डार, विश्व आपणा रूप दरसाईआ। ब्रह्मा वेता खोल्ह किवाड़, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। शंकर भोला नाथ बाशक तशका तन श्रृंगार, कंठ माला इक्क समझाईआ। निरगुण सरगुण कर उज्यार, घट घट दीपक जोती बाल, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। प्रगट कर गुर अवतार, आपणी जोती आपे बाल, शब्दी गुर बण दलाल, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप समझाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। वेखणहारा मार ध्याना, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। चारे खाणी सुणाए एका गाणा, चारे बाणी आप प्रगटाइंदा। चारे जुग देवे माणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महाना, रूप अनूप आप दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। आपणा मार्ग लोकमात, निरगुण सरगुण आप लगाईआ। जुग जुग

११०७ ११०७

११ ११

वेखे मार झात, बन्द ताकी आप खुल्हाईआ। भगत भगवन्त वसे साथ, सगला संग आप निभाईआ। सन्तन देवे साची दात, नाम अमोलक झोली पाईआ। गुरमुखां सुणाए अगम्मी गाथ, अनहद नादी नाद वजाईआ। गरुसिख चढ़ाए साचे राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। करे खेल प्रभ कमलापात, कँवल नैण वड्डी वड्याईआ। जुग जुग वेखे खेल तमाश, वेखणहारा बेपरवाहीआ। गुर अवतार आत्म परमात्म पाए रास, गोपी काहन आप नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा हुक्म श्री भगवन्त, आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी खेल बेअन्त, भेव कोए ना पाइंदा। आपणी महिमा जणाए अगणत, गुर अवतार सेव लगाइंदा। इक्को अक्खर नाम मंत, मन मणीआ आप दृढ़ाइंदा। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत, जागरत जोत जोत प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस हरि निरँकार, एका एका एक वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वार, कोटन कोटि काल बिताईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, दर बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा ब्रह्म कर पसार, अन्तिम बैठे डेरा ढाहीआ। कोटन कोटि शंकर दोए जोड़ करन निमस्कार, नेत्र नैण नैण झुकाईआ। कोटन कोटि विष्नूं दे भण्डार, प्रभ इक्को ओट रखाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार, चरन कँवल मंगण सच सरनाईआ।

११०८
११

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, निरगुण नर हरि नरायण आप कराइंदा। जुग चौकड़ी वेखे विगसे वेखणहारा, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। शास्त्र सिमरत बण लिखारा, वेद पुराण सर्ब जस गाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह सब तों वसे न्यारा, बेअन्त आपणी धार रखाइंदा। दो जहानां पावे सारा, दोए दोए आपणा रूप वटाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलकारा, बल आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़े बण ठठयारा, अन्तिम आपे भन्न वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। पीर पैग़म्बर उच्ची कूक रसना बोल नाअरा, कलमा अमाम इक्क सुणाइंदा। मुकामे हक़ परवरदिगारा, लाशरीक डेरा लाइंदा। तौफीक इक्क सांझे यारा, दर साचे सोभा पाइंदा। सच पैग़ाम एका वारा, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। उम्मती उम्मत कर पसारा, परम पुरख हरि वेख वखाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर दी धार, करता पुरख आप वरताईआ। ना कोई मेटे मेटणहारा, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे हुक्म फराईआ। भगत भगवन्त दे हुलार, साचे सन्तन खोल्ह किवाड़, निज आत्म मेल मिलाईआ। गुरमुखां गुर गुर करे प्यार, गुरसिख देवे दरस दीदार, नैण नैण नाल मिलाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, साख्यात रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। जुग चौकड़ी पाए बन्धन, बन्धनहार आप निरँकारा। गुर अवतारां लाए चन्दन, नाम सति सति वणजारा। नानक मेला अलख निरँजण, अलख अगोचर अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण खेल अपारा, निरगुण खेल अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। सरगुण फड़ाए पलड़ा, हरि पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। एकँकारा सच संदेस एका घलड़ा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बलड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। अबिनाशी करता सच सिँघासण एका मलड़ा, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। श्री भगवान दर दुआरे आपे खलड़ा, दर दरवेश नर नरेश आपणी फेरी पाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म फड़ाए आपणा पलड़ा, ईश जीव गंढु पुवाइंदा। सति संदेस हरि का नाउँ जुगो जुग आपे घलड़ा, लिख लिख आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा खेल हरि निरँकार, एका एक जणाईआ। नव नौ चार उतरे पार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहिण ना पाईआ। कलयुग आवे अन्तिम वार, नौ खण्ड पृथ्मी अन्धेरा छाईआ। सत्त दीप धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। गोबिन्द सूरा वड बलकार, एका लेखा लेख

जणाईआ। कल कल्की लए अवतार, पुरख अकाल सच्चा माहीआ। वसणहारा धाम न्यार, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे खुआर, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। कूड़ी क्रिया मारे मार, जूठ झूठ दए निवार, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आपणी खेल कराईआ। हुक्मे अंदर आप भगवान, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। हुक्मे अंदर खोलू दुकान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी रचन रचाइंदा। हुक्मे अंदर धुर फ़रमाण, चारे वेद वेद पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत लेख पुराण, गीता ज्ञान आप समझाइंदा। हुक्मे अंदर अंजील कुरान, तीस बतीसा आपे गाइंदा। हुक्मे अंदर खाणी बाणी कर प्रधान, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाइंदा। हुक्मे अंदर तेई अवतारां देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर भगत अठारां दए ज्ञान, गुर शब्दी नाद वजाइंदा। हुक्मे अंदर ईसा मूसा संग मुहम्मद दए पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर नानक निरगुण सरगुण देवे सतिनाम, नाम सति आप रखाइंदा। हुक्मे अंदर गोबिन्द मेला विच जहान, पिता पूत खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर चार जुग करे प्रधान, हुक्मे हुक्म आप फिराइंदा। हुक्मे अंदर चार वरन खेल महान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड वंडाइंदा। हुक्मे अंदर सब दा लेखा चुकाए आण, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, धुर फ़रमाणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। धुर फ़रमाणा सच संदेस, सति सतिवादी आप जणाईआ। तख़्त निवासी इक्क नरेश, एकँकारा वड वड्याईआ। कलयुग अन्त अवल्लड़ा वेस, पुरख अकाला आप वटाईआ। लेखा जाणे सांगोपांग बाशक शेष, विष्नूं विश्व धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा खेल रखे हथ्थ, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। जुग जुग चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। नाम निधाना महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए जणाइंदा। सर्बकला आपे समरथ, समरथ पुरख भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, निहचल धाम डेरा लाइंदा। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, दो जहानां नाद अलूाइंदा। चौदां लोक वेखे हट्ट, चौदां तबक कुण्डा लाहइंदा। ज़िमीं असमाना मेटे फट, आपणा पड़दा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्त आपणी खेल कराइंदा। आदि अन्त खेल करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता आपणा वेस वटाईआ। निहकलंका लए अवतार, मात पित ना कोए बणाईआ। साक सज्जण सैण ना कोए संसार, बंधप भाई ना कोए अख्वाईआ। करे खेल अगम्म अपार, जोती जाता आपणा नूर धराईआ। हुक्मे अंदर कर अवतार, लोकमात दए वड्याईआ। पूरब लहिणा

कर्म विचार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। आत्म ताकी खोल्ह किवाड़, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। अमृत आत्म ठंडा ठार, निझर झिरना दए झिराईआ। अनहद नाद शब्द धुन्कार, अनरागी राग सुणाईआ। आत्म सेजा कर प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म गोद उठाईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द आप सुणाईआ। कलयुग अन्तिम वेखणहार, नव नौ आपणा फेरा पाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। वरन बरन करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तीर्थ तट ना कोए सहार, अठसठ बैठे मुख भुवाईआ। जगत अन्धेरा धूआँधार, रैण अन्धेरी एका छाईआ। हरि का नाउँ ना कोए प्यार, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। घर घर दिसे जगत विभचार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। नाता तुट्टा पुरख नार, नार कन्त सेज ना कोए सुहाईआ। धरनी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलयुग जीव कूड़े कुड़यार, कूड़ी क्रिया रहे कमाईआ। आत्म ब्रह्म ना कोए उज्यार, पारब्रह्म ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम धारे बल, बल आपणा आप रखाइंदा। सृष्ट सबाई रिहा छल, अछल अछल आपणी धार चलाइंदा। मन वासना गया रल, मन ममता मोह वधाइंदा। कूड़ी क्रिया गया ढल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाइंदा। कलयुग कूड़ा वड बलवान, आपणा बल रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी झूठ निशान, चार कुण्ट जणाईआ। चार वरन होए बेईमान, बेवा रूप सर्ब लोकाईआ। आपणा आप ना सके कोई पहचान, माया पड़दा ना कोए उठाईआ। नानक गोबिन्द दे के गया धुर फ़रमाण, नाम सति सति समझाईआ। चार वरनां एका माण, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, गुरदुआरा इक्क समझाईआ। एका नाद इक्क धुन्कान, एका राग राग अलाईआ। छत्ती राग होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जीव जंत सर्ब कुरलाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नाता छुट्टा अञ्जील कुरान, काया काअबा ना कोए वखाईआ। भेव चुक्या ज़िमीं असमान, सत सत वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहारा हर घट थाईंआ। हर घट वेखे थान थनंतर, हरि जू आपणा वेस वटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गी बसन्तर, त्रैगुण अग्न ना कोए बुझाइंदा। हरि का नाउँ ना गाए कोई मन्त्र, रसना जिह्वा सर्ब कुरलाइंदा। फिरी दरोही गगन गगनंतर, ज़िमीं असमान अन्धेरा छाइंदा। लख चुरासी ना बणाए कोई बणतर, तीर निराला बाण ना कोए लगाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। वेखणहारा पारब्रह्म ब्रह्म निरंतर, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस रख,

अवल्लड़ी धार चलाईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, दो जहानां करे रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सद, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम आई हद्द, पार किनारा रिहा वखाईआ। आपणा आपणा भार जाणा लद, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी एकँकारा इक्क इकल्ला पए गज्ज, फतहि डंका इक्क वजाईआ। जो घड़या सो जाए भज्ज, भन्नणहार वेख वखाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां उच्चे मन्दिर जाणे तज, तख्त ताज कोए रहिण ना पाईआ। नाता तुटणा मक्का काअबा हाजी हज्ज, निउँ निउँ सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करे खेल सूरा सरबग, धुर फ़रमाणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, इक्क संदेसा दए सुणाईआ। इक्क संदेसा श्री भगवान, चार जुग आप सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चुक्की काण, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, नेत्र नैण हरि खुलाइंदा। लोकमात खेल महान, पुरख अकाल आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी हो प्रधान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। भगत भगवन्त कर परवान, आपणा लेखा आपे लाइंदा। गुर अवतार इक्क निशान, नाम निशाना आप जणाइंदा। पीर पैग़म्बर इक्क ईमान, सही सलामत नज़री आइंदा। चार वेद वेखे आण, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। शास्त्र सिमरत होए हैरान, हरि जू की खेल वरताइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होया विच जहान, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। वेद व्यासा मंगे दान, खाली झोली अग्गे डाहइंदा। मूसा निउँ निउँ करे सलाम, ईसा एका मंग मंगाइंदा। मुहम्मद कहे मेरा अमाम, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। सतिगुर नानक कहे श्री भगवान, महांबली आपणा खेल कराइंदा। गुरू गोबिन्द मंगे दान, पुरख अकाल एका वस्त झोली पाइंदा। अन्तिम मेला विच जहान, दोए दोए आपणा रूप वखाइंदा। प्रगट होए विच जहान, दो जहानां वाली फेरा पाइंदा। तेरी सेजा करे परवान, साचे तख्त आसण लाइंदा। नाम खण्डा तेज़ कृपान, ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा। कलयुग नाता तोड़े विच जहान, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम आए अन्त, अन्त अन्त दए कराईआ। प्रगट हो श्री भगवन्त, भगवान भगत लए मिलाईआ। लेखा चुक्के जुगा जुगन्त, जुग करता आप चुकाईआ। सतिजुग बणाए साची बणत, साचा मार्ग आपे लाईआ। लख चुरासी गढ़ तोड़े हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क समझाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक ना कोई रहे पंडत, गुर का शब्द ज्ञान दृढ़ाईआ। एका माण उत्भुज सेत्ज जेरज अंडत, चार खाणी एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लहिणा दए मुकाईआ। कलयुग अन्तिम लहिणा जाए मुक, सो पुरख निरँजण आप चुकाईआ। मनमुखां मुख पए थुक्क, मुख थुक्की

सर्ब भराईआ। गुरमुख सज्जण सुहेले गुरू गुर चेले सतिगुर गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क आपणी खुशी मनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सिँघ शेर हो पए बुक्क, चौदां लोक चौदां तबक एका भबक लगाईआ। लख चुरासी बूटा जाए सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। सतिजुग साचा धरत मात दी वारे कुक्ख, जन जननी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणा खेल वरताईआ। अन्तिम वरते खेल जग, जीवण दाता आप वरताइंदा। सृष्ट सबाई लग्गे अग्ग, अग्नी तत्त ना कोए बुझाइंदा। नव नौ होया हँस कग्ग, काग हँस रूप ना कोए वटाइंदा। जगत खुआरी पीती मदि, नाम खुमारी ना कोए चढ़ाइंदा। नेत्र नैण मन्दिर मस्जिद गुरदुआर धीआं भैणां रहे तक्क, सति सन्तोख ना कोए रखाइंदा। कलयुग अन्त मन मुखता पाई नकेल नक्क, चारों कुण्ट सर्ब फिराइंदा। करे निबेड़ा हक्को हक़, साचे तख़्त आसण लाइंदा। गुरमुख विरले लए रख, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता आपणा वेस वटाइंदा। वेस वटाए आप करतारा, करनी किरत आप कमाईआ। भगतां खोल्ले इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा दए समझाईआ। महल अटल उच्च मुनारा, महिफल आपणी इक्क वखाईआ। दीपक दीआ इक्क उज्यारा, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, तन्दी तन्द सितार ना कोए हिलाईआ। साची सखीआं इक्क अखाड़ा, गुरमुख मिल मिल राग अल्लाईआ। नाता तुट्टे पुरख नारा, आत्म परमात्म होए कुड़माईआ। शब्द अगम्मी इक्क नगारा, अपरम्पर आप वजाईआ। गुरमुख साचे करे प्यारा, मुख गुर आप सालाहीआ। लख चुरासी उतरे पारा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। आवण जावण रहे ना विच संसारा, चित्रगुप्त लेखा लिख ना कोए वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे शंगारा, नेत्र नैण कज्जल धार ना कोए पवाईआ। सतिगुर गुरसिखां करे सच प्यारा, वेले अन्त अन्त सहाईआ। नाम वखाए इक्क बिबाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सब दा लेखा आप चुकाईआ। सब दा लेखा मात चुकाउणा, सम्मत सम्मती वेख वखाइंदा। गुरमुख गुरसिख आप मिलाउणा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। साचा बंक इक्क सुहाउणा, घर घर विच सोभा पाइंदा। जात पात वरन गोत पन्ध मुकाउणा, निर्मल जोत इक्क वखाइंदा। गढ़ हँकारी आपे ढाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर साची कार, हरि करता आप कमाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उतरे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलयुग क्रिया कर खुआर, जगत खुआरी दए वखाईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, लोकमात दए वड्याईआ। दोहां विचोला सिरजणहार, जुग जुग आपणी कार कराईआ।

कलयुग करे अन्त निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। बीस बीसा होया ख़बरदार, जगत जगदीसा वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निउँ निउँ करन सर्ब निमस्कार, सजदा सीस जगदीस कराईआ। आपणा हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरसिख साचे लए निकाल, लख चुरासी आपे मथ वखाईआ। गोबिन्द मेला गोबिन्द लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। नाता तोड़ काल महांकाल, दीन दयाल देवे इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका हुक्म आप समझाईआ।

जिन्ना चिर ना करे हां, मैं लैणा ना मुख भुवाया। मैं उठ के पकड़ां तेरी बांह, क्यों देवे धक्का लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, सुत शब्द रिहा सुणाया। पुरख अबिनाशी गया हार, बच्चे आपणी जिद ना छड्डी। तेरा निरगुण बण के करां प्यार, नाता तोड़ां पंज तत्त काया हड्डी। करां खेल विच संसार, मेरी जोत आए तेरे प्रेम बद्धी। नाउँ रखां निहकलंक नरायण नर अवतार, चार जुग दी बणी रहिण ना देवां कोई गद्दी। साचा करां इक्क विहार, पिछली मेटां वदी सुदी। विष्न ब्रह्मा शिव दयां उठाल, वरभण्डी पावां आपणी डण्डी। करां खेल इक्क
१११३ कमाल, लख चुरासी करां रंडी। तेरे मित्र लवां उठाल, दीन दयाल बण बण बख्शंदी। गोबिन्द सुणाए मुरीदां हाल, सुणया १११३
११ आप सूरे सरबंगी। चरनां हेठ दबा के काल महांकाल, जन भगतां वंड वंडी। तेरा हल्ल करां सवाल, जोती जोत सरूप ११
हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, शाह सुल्तान नूर नुराना श्री भगवाना वसणहारा दुआरा सचखण्डी। सुण सुत मेरे साचे लाल, तेरा प्यार दयां जणाईआ। जुग चौकड़ी बीतन चार, नौ नौ डेरा ढाहीआ। गोबिन्द सुत होए उज्यार, लोकमात खेल कराईआ। कलयुग जड़्ह दए उखाड़, आपणी आहुती एका पाईआ। आपणे बाले नीहां हेठां दए सवाल, चले हुक्म रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। सुत शब्द कहे पुकार, की प्रभ खेल रचाया। गोबिन्द बणे सुत दुलार, क्यों बाले नीहां हेठ दबाया। जिस ने तक्कया तेरा सहार, तिस नूं देवे क्यों कोई सजाया। जिवें तूं मेरे नाल करे प्यार, तिउँ पुत्रां गोबिन्द गोद बहाया। पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार, सुण मेरे शहिजादे तैनूं आपणे दस्से ना नानके दादे, दादा नज़र कोई ना आया। कलयुग अन्तिम मैं आपणे करे वाहदे, गोबिन्द पिता तेग बहादर उहदरे एका घर लादे साची सेवा आप कराया। अन्त बहाए इक्क अहाते, महिदूद आपणी हद्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाया। वाह मेरे दाता बेपरवाह, मैं भुलया बाल अंञाणा।

जिउँ भावें तिउँ लै चला, तूं दाता सुघड़ सयाणा। मैं जुग जुग सेव लवां कमा, मन्ना तेरा भाणा। तूं वेले अन्त लैणा मिला, मैं होया दर निमाणा। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका दे सच फ़रमाणा। कलयुग वेला अन्तिम जाणा आ, करे खेल हरि महाना। गोबिन्द लेखा जाणा लिखा, पुरख अकाल ओट तकाणा। अन्तिम आवे बेपरवाह, जिस दा भेव किसे ना पाणा। सम्बल डेरा लए ला, ना कोई मन्दिर ना मकाना। उच्चे टिल्ले बैठे आ, पर्बत दिसे ना कोई निशाना। तेरा मेरा ढोला लवे गा, सोहँ इक्क अक्खर पढ़ाना। आपणी किरपा आपे लए कमा, प्रगट हो श्री भगवाना। तेरा मेला लए मिला, नाता तोड़ जहाना। लोकमात जोत दए जगा, जोती जोत जोत रंगाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप खुलाना। साचा सुत होया दयाल, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम मेले आपणा लाल, तूं लालन गोद बहाईआ। एथे ओथे मेरी करे प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। मैं ऐथे वेखां तेरा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जिथे बैठा डेरा लाईआ। जगत अन्तिम सारे होए कंगाल, तेरा नाउँ हट्ट किसे नज़र ना आईआ। तेरा दुआर किथों लओं भाल, नित उठ उठ दरसन किस दुआरे करन जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहलों दे दे इक्को वर, बिन तेरे दुआरे कोई होर ना माण वड्याईआ। पुरख अबिनाशी गया मन्न, अग्गों आख सुणाया। उठ लाडले पुत्त मेरे चन्न, तेरा नूर करां रुशनाया। तेरी दात साचा धन, लोकमात दयां वड्याईआ। तेरा राग भगतां कन्न, एका वार दयां सुणाया। कलयुग अन्तिम बेड़ा बन्न्ह, गुरमुख साचे लवां प्रगटाया। पंज विकारा देवां डंन, माया ममता मोह तुड़ाया। भाग लगावां पंज तत्त तन, थिर घर नूर जोत रुशनाया। इक्क वजावां अनहद धुन, धुन आत्मक राग सुणाया। लख चुरासी छाण पुण, हरिभगत लवां उठाया। आपे जाणां आपणा गुण, हरि का भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचे हरि, आपणा हुक्म आप सुणाया। सुण सुत मेरे छोटे लाले, बाली बुध जणाईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल निराले, करे बेपरवाहीआ। गुरमुख साचे आप उठाए, भगतां नाउँ वड्याईआ। गोबिन्द चले नाल नाले, आपणी सेव कमाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले करे खाले, वाहवा वड वड्याईआ। साध सन्तां कढ्ढे दवाले, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अठसठ तीर्थ मरन पाले, पड़दा उपर ना कोए पाईआ। काग़ज़ां उपर पाए दोशाले, हरि का रूप नज़र कदे ना आईआ। गोबिन्द दस्सया पुरख अकाले, इक्को इष्ट वखाईआ। तेरे पिच्छे घालन घाले, भगतां लए मिलाईआ। चारों कुण्ट फेरी पाए, राती सुत्तयां वेख वखाईआ। पहलों आपणा हाल सुणाए, फेर हाल पुच्छण जाईआ। गुरमुख रखे आपणे नाले, आपणा संग निभाईआ। देवे वड्याई सिंघ पाले, ब्रह्मा माण चुकाईआ। शंकर

१११४
११

तुट्टे आपे डाले, जगदीसे वज्जे वधाईआ। इन्दर निभे ना अन्तिम नाले, गया पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरा वर, तेरे अग्गे वखाईआ। तेरा वर तेरे अग्गे धरना, हरि जू आख सुणाया। पुरख अबिनाशी मेल करना, भेव किसे ना पाया। चार कुण्ट वंडी, चार वरना, बरन अठारां नाल मिलाया। चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता कुरान सब ने पढ़ना, खाणी बाणी ओट रखाया। गोबिन्द कह के जाए इक्को सरना, पुरख अकाल बेपरवाहया। कलयुग अन्तिम आवे तरनी तरना, गुरमुख साचे लए तराया। निरभउ होए कदे ना डरना, भय सृष्ट सबाई रिहा वखाईआ। आदि जुगादी जिस घाड़न घड़ना, सो भाण्डे रिहा भन्नाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा सुणाया। छोटा बाला कहे पुकार, हरि पुरख सुणाईआ। मेरे नाल कर इकरार, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। कलयुग आवें अन्तिम वार, निरगुण नूर लवें प्रगटाईआ। मेरा मेला मेलें विच संसार, आपणी धार धार विच छुपाईआ। साचे भगतां करें प्यार, मेरा बंस बणाईआ। राह तक्कण जुग चार, नेत्र नैण उठाईआ। कोटन कोटि बीतण काल, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार सेवादार, जुग जुग सेव कमाईआ। नानक निरगुण करे पुकार, महांबली उतरे आए वाहो दाहीआ। गोबिन्द तक्कया इक्क सहार, पुरख अबिनाशी सब दा लेखा दए मुकाईआ। मैं करां तेरा प्यार, नेत्र तेरे दरसन पाईआ। सचखण्ड दिसे ना कोए दरबार, लोकमात नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ढह के जाणा दर, बिन तेरे दर ना कोई मेरी वड्याईआ। एका वर दे भगवान, मैं साची मंग मंगाईआ। एथे झुल्ले तेरा सति निशान, लोकमात नज़र ना आईआ। एथे वेस शाह सुल्तान, सीस आपणे ताज टिकाईआ। एथे होवें हुक्मरान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। एथे वसें सचखण्ड मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। ओथे दस्स तेरा की निशान, किस बिध आपणा नाम लएं प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, इक्को आस रखाईआ। इक्को आस लई रख, मेरे मेहरवाना। किवें रूप होएं प्रतख, लोकमात मात प्रधाना। कवण बिध भगतां करें पक्ख, देवें नाम गुण निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, कवण नगर डेरा लाउणा। पुरख अबिनाशी खोले भेत, आपणा भेव खुलाईआ। तेरे संग करां हेत, आपणा मेल मिलाईआ। जन भगतां वेखां काया खेत, अकार खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। आपणा लेखा दस्से हाल, हरि जू दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल महान, निरगुण वेस वटाइंदा। तेरी प्रीती निभे नाल, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। गुरमुख साचे लए पछाण, लख चुरासी वेख वखाइंदा। आपणी किरपा

देवे दान, अभ्यास जोग ना कोई कराइंदा। धूढ़ी बख्शे इक्क इश्नान, दुरमति मैल धुवाइंदा। दर्शन देवे दर घर आण, तृखा भुख, मिटाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भेव कोए ना पाइंदा। पहलों बणाए सच निशान, लोकमात चढ़ाइंदा। सति सतिवादी इक्क ध्यान, एका घर वखाइंदा। पंचम मुख कर परवान, पंचम ताज सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। आपणा पड़दा देवे लाह, रखे माण वड्याईआ। भगत भगवन्त लए जगा, नेत्र नैण खुल्हाईआ। साची संगत लए बणा, हरिसंगत नाउँ रखाईआ। एका संगत विच लए बहा, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। मंगत बणे बेपरवाह, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। भुखां नंगा लभे थाँ, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। हउमें हंगता गढ़ तुड़ा, एका वार दरसाईआ। हँ ब्रह्म भेव चुका, कर प्रेम मिलाईआ। सतिजुग ढोला साचा गा, पिछली करे सफ़ाईआ। सब दा हौला भार दए करा, खाल्ही हथ्थ फराईआ। अन्तिम डोला कोई चुक्के ना, चार जुग देण दुहाईआ। साचा सोहला कोई ना सके गा, भुलया बेपरवाहीआ। भोले भाले लए मिला, गुरमुख आपणे आप जगाईआ। सृष्ट सबाई विच्चों लए उठा, सुत्तयां जाग ना किसे खुल्हाईआ। मनमुखां दर दए दुरका, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाईआ। सुत शब्द तेरी आसा पूरी दए करा, तेरी तृष्ना भुख मिटाईआ। जिवें सचखण्ड दुआर ल्या बणा, इक्क घर त्रै त्रै वंड वंडाईआ। पहलों घर चरन टिका, दूजे नेत्र नैण रुशनाईआ। तीजे सीस रिहा ताज़ टिका, एका करे सच्ची शहिनशाहीआ। चौथे चरनां हेठ दबा, चार कुण्टां वेख वखाईआ। शब्दी विष्न ब्रह्मा शिव एका धार बन्हा, चार चार कुड़माईआ। चारे वेद आप सुणा, आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्तिम सचखण्ड दुआरा लए बणा, जन भगतां दए माण वड्याईआ। बहत्तर नाड़ी ताणा पेटा जो ल्या रचा, बहत्तर देवां इक्क सरनाईआ। साता सति सतिवादी खेल करा, सिफ़रा अग्गे जोड़ जुड़ाईआ। सत्तर लिख्या सहिज सुभा, सो पुरख निरँजण पूर कराईआ। अन्त सिफ़रा अग्गों दए उठा, सतिवादी आपणा नाउँ धराईआ। सृष्टी सारी होई फ़नाह, नज़र कोए ना आईआ। पीर पैग़म्बर ना देवे कोई पनाह, गुर अवतार मुख शरमाईआ। चार जुग दी क्रिया दए मिटा, पिछली मुके सर्ब पढ़ाईआ। अग्गे आपणा नाम धरा, पुरख अकाल दए सालाहीआ। एका इष्ट दए वखा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। सब दा झेड़ा दए मुका, हिन्दू मुस्लिम सिख ना कोए अख्वाईआ। चारे वरन दए खपा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रहिण ना पाईआ। एका मन्दिर दए वखा, जिथे वसे हरि रघुराईआ। कोई पांधा पत्तरी ना सके खुल्हा, मस्तक तिलक ना कोई लगाईआ। कोई जञ्ञू ना रिहा वखा, धरती बेड़ा ना कोए बंधाईआ। हथ्थ यंतरी ना रिहा उठा, कुण्डल रेख ना कोए वखाईआ। ना कोई रिहा हिसाब लगा, नछत्र गृह ना वंड वंडाईआ। सूरज चन्द ना कोई रिहा सीस झुका,

१११६
११

१११७
११

जल पाणी ना भेंट चढ़ाईआ। तेरी मन्नत ना कोई रिहा मना, सरोवर तारी कोए ना लाईआ। तसबी माला ना कोई दिती फड़ा, मन का मणका ना कोए भुवाईआ। बस्त्र पीले ना दए रंगा, निहकलंक नेड़ ना कोए रखाईआ। पटका सीस दिता बंधा, अल्फ़ी नज़र ना कोए आईआ। लब दिती ना किसे कटा, दाढ़ी मुछ ना मूंड मुंडाईआ। कलमा दिता ना किसे पढ़ा, सजदा करे ना कोए टिकाईआ। मसल्ला दिता ना कोए वछा, वुज़ू बांग ना कोए लगाईआ। कन्नां विच ना देण अज़ां, ना कोई मंगे खुदाईआ। छाती उपर गोडे आपणे ना लए झुका, नक्क ख़ाक नाल ना कोए रगड़ाईआ। निडर होया बेपरवाह, पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। ना कोए मन्त्र रिहा पढ़ा, ना कोए आहुती रिहा पाईआ। ना कोई ज्वाला रिहा मना, ना कोई जोत करे रुशनाईआ। ना कोई शंकर संधूर रिहा लगा, ना कोए ब्रह्मा वड वड्याईआ। ना कोई विष्नूं रिहा मना, दोए दोए जोड़ पए सरनाईआ। ना कोई पूजा पाठ रिहा करा, पंज वेले निमाज़ ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई सरघी वेला रिहा उठा, खिज़र निझर वेला ना कोए जणाईआ। हिज़री आपणा हज़ करे आपे बेपरवाह, फिकरा फिकर ना कोए रखाईआ। ना कोई संख ल्या वजा, कूक कूक ना कोई सुणाईआ। आसा वार ना रिहा लगा, सब दी पूरी आस कराईआ। बिन पढ़यां बिन पाणी ठरया बिन अग्नी सड़या सब दे दुखड़े दए गवा, उज्जल मुखड़े दे करा, बख्शे सर्ब सच्ची सरनाईआ। जुग जुग दे भुक्खड़े दए रज़ा, एका अमृत जाम प्याईआ। रुलदे फिरदे आपणी गोदी लए उठा, गुरमुख बाल अञ्याणे आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंडत पांधे मुल्ला शेख़ ग्रन्थी पन्थी पुट्टी मेख़, साची विद्या एका एक पढ़ाईआ। साची विद्या हरि जू ढोला, एका आख सुणाइंदा। जिस वखाया गोबिन्द होला, सो आपणा सुत नाल रलाइंदा। निरगुण तोला नानक नाम सच दुआरा इक्को खोल्ह्, हरि शब्दी सुत वसाइंदा। आपे बणया भाला भोला, दिस किसे ना आइंदा। पंज तत्त अंदर करया ओहला, पूरन कह कह नाम सुणाइंदा। वेखो हरि जी खेल खेला, गोबिन्द भउ चुकाइंदा। चारों कुण्ट पैंदा रौला, हरि हरि नज़र किसे ना आइंदा। सिख कहिन्दे साडे नाल कर के गया कौला, अन्तिम कल मेल मिलाइंदा। पंडत कहिन्दे ब्रह्मण गौड़ उच्चे टिल्ले पर्बत वसया ओहला, आपणा पड़दा पाइंदा। मुल्ला शेख़ कहिन्दे साडा मौला, इक्क अमाम वेस वटाइंदा। पुरख अबिनाशी कहे मैं सब तों वसां ओहला, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत सज्जण तेरा करे विहार, लोकमात हरि साची कार, सच दुआरा अगम्म अपार, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा। आदि बणाया सचखण्ड, सच सच वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्त विच वरभण्ड, पुरख अबिनाशी करे रुशनाईआ। जन भगतां वंडी इक्को वंड, पिछला लेखा पूर कराईआ। अंदर अंदर वड़े साहिब बख़्शिंद,

बिन पुछयां अग्गे लँघ कदे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी धार आदि जुगादी कार, सार आपणे हथ्थ रखाईआ। सार शब्द तेरी सारी लए सार, सार कोए ना पाइंदा। चार जुग हद्द, शब्दो शब्दी खेल खिलाइंदा। सार शब्द रखे सब नूं बाहर, आपणे विच छुपाइंदा। कलयुग अन्तिम कर त्यार, भगतां झोली पाइंदा। दरगाह उपर होए तेरा विहार, बिन तेरे ना किसे सिखाइंदा। मेरे भगत तेरा करन दीदार, तेरी ईद चन्द खुशी मनाइंदा। तेरी गफ्लत होई बेदार, दर्दीआं दर्द वंडाइंदा। तेरी उल्फ़त कर कर थक्का संसार, तूं उल्फ़त विच कदे ना आइंदा। तूं जगत मुहब्बत तों वसया बाहर, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। तेरा कलबूत ना कोई निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। शब्द सुत वेख मनारा, छब्बी पोह खुशी मनाईआ। वाहवा कुदरत तेरी मेरे परवरदिगारा, बेऐब तेरी खुदाईआ। तेरे भगतां वेख्या करया दीदारा, दृष्ट इष्ट नाल मिलाईआ। तूं ढाडी बण बण गावें वारां, जुग जुग आपणी सिफ्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच मुनारा इक्को इक्क वखाईआ। सच मुनारा इक्को रहिणा, एका एक सुहाईआ। हरि का मन्नणा सब ने कहिणा, भुल्ल कोए ना जाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब ढहणा, ख़ाकी ख़ाक उडाईआ। अन्त भगत भगवन्त इक्ठे हो के बहणा, वज्जे सदा वधाईआ। एथे ओथे ओथे एथे इक्क दूजे दे दरसन करने नैणा, नेत्र नेत्र नाल मिलाईआ। एह हरिसंगत बणी भाई भैणा, पुरख अबिनाशी मेल मिलाईआ। चार वरन दा चुक्या लहिणा देणा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। पाओ नेत्र नाम साचा गहिणा, तन बस्त्र दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। वाह भगत तूं वड्डा वड, हरि वड्डा आप वड्याइंदा। जिस सचखण्ड दुआरयों ल्यांदा कढ्ढ, आपणी सेवा लाइंदा। जिस आदि बणाई आपणी यद्द, सो अन्तिम बंस सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत भगत दुआरे आप बहाइंदा। भगत दुआरे भगत बहण, हरि हरि खेल कराया। इक्क दूजे नूं उठ उठ कहिण, हरि का भेव किसे ना पाया। की पता की देवे देण, देवणहार इक्को आया। साडी इक्को भगती दरसन कीता नैण, पूजा पाठ ना कोए वखाया। धन्न भाग प्रभ आया लैण, आपणी डोली लए बहाया। गुरमुख तैनूं कोई ना पावे वैण, तेरे सीस हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरे भगत सुहाया। वाह भगत तेरा वड बल, बल बावन मिली वड्याईआ। जिस नूं छलया करके छल, सो अछल अछल बण के आया पाँधी राहीआ। जिस दी आदि जुगादि जुग जुग सुणदे रहे गल्ल, सो गलवकड़ी रिहा पाईआ। जिस दा सवाल किसे कोलों ना होया हल्ल, सो गुरमुखां हल्ल सवाल कराईआ। जिस दे

अंदर बिन नानक ना कोई गया रल, सो गुरमुखां अंदर रल रल आपणी खुशी मनाईआ। जिस दा पीर पैग़म्बर लभ्भदे गए फल, सो ग़रीब निमाणयां घर घर आ फल खुवाईआ। जिस दे कोलों मंगदे गए बल, सो बल धारी गुरमुखां देवे माण वड्याईआ। जिस नूं कहिन्दे रमिआ जल थल, सो गुरमुखां अंदर डेरा लाईआ। कलयुग अन्तिम निर्धनां होया वल, निरँकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात दया कमाईआ। दया कमाए दीन हरि दाता, भगत माण वड्याईआ। अन्तिम आ के पुछे वाता, निरगुण फेरा पाईआ। इक्को घर सुणाए साचा साका, एका नाम वड्याईआ। अन्तिम पड़दा हरि जू ढाका, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। उत्ते चढ़ के बणया रहे राखा, दिवस रैण सेव कमाईआ। एथे ओथे गावे गाथा, जन भगतां रिहा सलाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग सब तों टिकाउँदा रिहा माथा, कलयुग अन्तिम आपणा सीस भगतां अग्गे झुकाईआ। मेल मिलाया पिता पित माता, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। कलयुग मिटी अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। जिस अमृत प्याया फड़ के बाटा, सो वेखे चाँईं चाँईंआ। चारों कुण्ट प्या घाटा, एका रूप नज़र किसे ना आईआ। बालू रेत अंदर रल्लया आटा, ना कोई सके बाहर कढ्ढाईआ। अन्तिम राए धर्म तों खुल्हावे खाता, आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार करन बातां, इक्क दूजे हाल सुणाईआ। असीं दीन मज़्हब दे दे आए दातां, जगत वंड वंडाईआ। अन्त तोड़ण आया नाता, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत मिली वड्याईआ। हरिभगत तेरा पूजा पाठ, हरि जू इक्क बणाया। आपे जपे दिवस रात, आपणी सेव कमाया। तुसीं सौणा बण इकांत, डर भउ ना कोए जणाया। दरस दिखाए बिध बिध भांत, रूप अनूप आप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। साचा मन्दिर गया सज, हरि सज्जण आप सुहाया। छब्बी पोह पड़दा कज, जन भगतां दया कमाया। निरगुण विच्चों गया वज्ज, दूजा डंका नाम लगाया। गुरमुखां कराए इक्को हज, मक्का काअबा डेरा ढाया। मुहम्मद दर दुआरे सद्द, भगतां चरनी रिहा पवाया। अन्तिम कीता अड्ड, पिच्छे दिता भुवाया। करया खेल पुरख समरथ, वेद किताब भेव ना आया। जा के अल्ला राणी रिहा दस्स, नेत्र नैणां नीर वहाया। मेरा कोई ना चलया वस, खाली हथ्थ फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग साचा मन्दिर इक्क बणाया। हरि का मन्दिर डिठा अपारा, मुहम्मद दए दुहाईआ। उपर ओथे चले ना कोई चारा, हरिजन बैठे डेरा लाईआ। जिन्हां मिल्या मीत मुरारा, सिर बैठा हथ्थ टिकाईआ। मैं चौदां सदीआं रिहा कुँवारा, मेरी सार किसे ना पाईआ। नाता छड्ड गए चार यारा, विच भगतां बैठे डेरा लाईआ। मेरी कोई ना सुणे पुकारा, दरोही खुदा

दी पई दुहाईआ। मेरा नज़र ना आए परवरदिगारा, मेरी चोटी रिहा मुनाईआ। मेरा मकबरा करे हाहाकारा, कन्नी तन ना कोए दसाईआ। अल्फ़ ये वक्त विचारा, मेरी ख़त्म होई पढ़ाईआ। कातब बण बण बणया लिखारा, लिख लिख आयत शरायत सुणाईआ। अन्तिम हरि जू वरका पाड़ा, लेखा रिहा मुकाईआ। बणके आया सच्चा लाड़ा, बेऐब सच्चा माहीआ। लुट्टी जाए दिन दिहाढ़ा, ना सके कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। मिल्या माण हरि दुआर, दुआरका वासी चरनी सीस झुकाइंदा। चल के आए घनईआ लाल, कृष्न कृष्न फेरा पाइंदा। राम दोए जोड़ करे प्रणाम, नैण चरनां नाल रगड़ाइंदा। ईसा मूसा दर दुआरे करन सलाम, सजदा हरि जू इक्क वखाइंदा। मुहम्मद जन भगतां करे पहचान, पुरख अबिनाशी राह वखाइंदा। दर आ के मंगे दान, खाली झोली अग्गे डाहइंदा। अग्गे चार बैठे जवान, जिन्हां वेख नैण शरमाइंदा। अजीत सिँघ वड बलवान, मुहम्मद दाढ़ी अध विच रखाइंदा। ना हिन्दू ना मुस्लिमान, सिख रूप ना कोए रखाइंदा। मेरा सांझे यार नाल इमान, शरीअत विच कदे ना आइंदा। चारों कुण्ट दिसे बेईमान, बेपरवाह पड़दा पाइंदा। अग्गे सवरन सिँघ दस्से मकान, तीर तम्बर ना कोए रखाइंदा। समला सत्थर दिसे ना कोई म्यान, खंजर कोई ना बाहर चमकाइंदा। गोबिन्द दिता इक्क ज्ञान, पुरख अकाल मनाइंदा। मुहम्मद तेरा छड्डया ईमान, ईमाना वाला नजरी आइंदा। जिस नूं झुक के इक्क वार करी सलाम, सो सही सलामत आपणी गोद बहाइंदा। घर आ के देवे पैग़ाम, सुत्तयां आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। नरायण सिँघ ना खोल्हया नैण, अक्ख नाल ना अक्ख मिलाईआ। जिस दा गोबिन्द बणया साक सज्जण सैण, सीस सीस नाल वटाईआ। अन्तिम आया लहिणा देणा देण, निरगुण रूप धराईआ। मुहम्मद एथे की आया लैण, अग्गों बोल रिहा सुणाईआ। जिस पीर पैग़म्बर सारे साचा मुर्शद कहिण, सो मुर्शद मुरीदां हाल रिहा सुणाईआ। जा मिल आपणी अल्ला राणी डायण, जो तैनूं रही खाईआ। साडी संगत जुड़ी भाई भैण, ना सके नाता तुड़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार दूर शरमाइन, पुरख अबिनाशी रिहा डराईआ। असीं छड्ड दिते साक सज्जण सैण, नाता तुट्टा सर्ब लोकाईआ। पढ़ाई छड्डी ऐन गैन, एका अल्फ़ आपणा हक़ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच चबूतरे बैठा आसण लाईआ। चबूतरे बैठा हरि जी चढ़, एका चौकड़ी लई लगाईआ। फेर अग्गे दा हाल सुणाया मेरी कटार ना आवे किसे कम्म, मेरी शमशीर दए दुहाईआ। मेरी चमढ़ी तेरे बांझों गई सड़, मुहम्मद काअबा गया मैं अद्धविचकार बैठा आर मैनूं पार ना कोए लँघाईआ। पुछ पुछ के आया तेरा दर, लोकलाज गंवाईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा कर, मेरे ख़लक

खुदाईआ। तक्क खलक मैं रिहा डर, मेरी शखशीअत ना कोए वड्याईआ। मेरी हैसीअत गई हर, तेरी असलीअत नज़र ना आईआ। तूं नूर नुराना नूर धर, लोकमात फेरा पाईआ। भगतां अंदर बैठा वड़, दिस किसे ना आईआ। तोबा तोबा तोबा किस बिध लईए फड़, तेरा रूप रंग नज़र कोए ना आईआ। झुक झुक सजदा करीए दर, बेदर्द दर्द लिता वंडाईआ। मूँह दे भार डिगिआं लैणा फड़, तूं बख्शणहार बख्शिश रहिमत आपणी आप कमाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, एका हाल सुणाईआ। तेरा वखावा इक्को यार, जिस नाल तेरी चतुराईआ। तिस कलमे कर प्यार, जो कलमा अमाम अख्वाईआ। तूं बण साढनी अस्वार, दलाल साचे दए चढ़ाईआ। मुल्ल पावे आप निरँकार, कीमत दए चुकाईआ। चल के आउणा दूजी वार, पहली चेत दिवस सुणाईआ। फिर पाए सब दी सार, बेख़बर रहिण कोए ना पाईआ। बेसबर प्याला ठोकर देवे मार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। वाहवा गुरसिख तेरा जामा जन्म जन्म विच आया।

★ ★ ★ ★ ★